Digitized by the Foundation USA

Arya Nov-Dec 1943 G.K.U.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

151489

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

पुस्तकालय
14,Arya
151489

साप्ताहिक पत्र :- आर्य :-
२९ नवम्बर १९४२ से ३ जनवरी १९४३ से
दिसम्बर १९४३ तक ५
पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
जिला: सहारनपुर

वार्षिक मूल्य ४)

रहता है उसका उस
है। इसलिए अव
स्वरूप को सदैव
में भी सत्य ज्ञान
है। अगर हमारे
ति आजाएं तो हम
दुःखों के पाश में
स २ आनन्द की
ता है। बस यही

ह।
र विश्व

ये नियमों को स्व-
रूप, उनकी रचना ही
के लिये निश्चित कर दिये
रहते हैं। परन्तु मनुष्य में
। वह जैसा भी चाहे अपनी
। प्रभु ने मनुष्य के लिये आचार
नका वेद शास्त्र में प्रतिपादन किया
क पालन में मनुष्य को स्थिर रहने वाला
होता है। कई वार इन नियमों के पालन में
दुःख भी हो जाता है। परन्तु यह क्षणिक दुःख असल
में स्थायी सुख का कारण होता है। यदि हम इस क्षणिक दुःख
को सहलें तो हमारा स्थिर, शास्वत मंगल होगा। वास्तव में
तो प्रभु के नियमों के पालन में हमें यह क्षणिक दुःख नहीं होता
यह क्षणिक दुःख भी इसलिये होता है कि हम किसी विशेष

नादि
'एषां' यह
को सूचित करता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

14,Arya
151489

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-मन्त्री

—साप्ताहिक पत्र—

151489

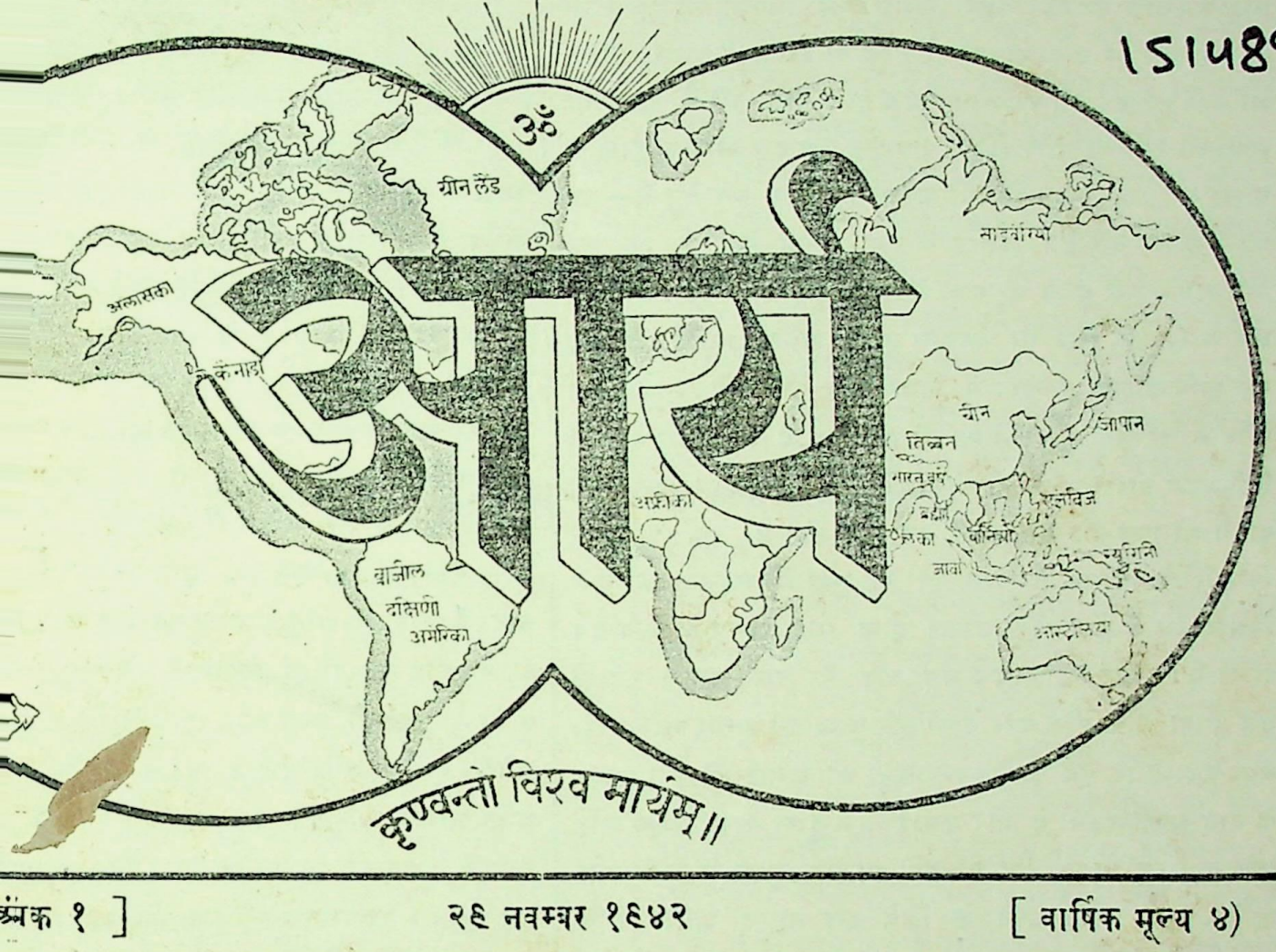

अंक १] २६ नवम्बर १६४२ [वार्षिक मूल्य ४)

साप्ताहिक स्वाध्याय

बड़ा अधिष्ठाता

मधिष्ठाता अन्तिकादिव पश्यति।
न्मन्यते चरन्त्सर्वं देवा इदं विदुः॥

अथर्व० ४।१६।१

एषां) इन लोकों का (अधिष्ठाता) वश में
मौ (बृहत्) महान् है, वह (अन्तिकात्-इव)
ा सा, प्रत्येक वस्तु को (पश्यति) देख रहा है
ी (तायन्) स्थिर खड़ा हुआ, तथा (चरन्)
हुआ (मन्यते) सोचता विचारता है (इदं)
सब को (देवाः) दिव्य शक्तिशाली भगवान्
लेते हैं।

लोक लोकान्तर हैं भगवान् उन सब के अधिष्ठाता
पृथिवी, चन्द्र आदि जड़ पदार्थ तथा मनुष्यादि
दोनों का ही वाचक है। मन्त्र का 'एषां' यह
दोनों प्रकार के ही लोकों को सूचित करता है।

भगवान् इन दोनों प्रकार के पदार्थों के अधिष्ठाता हैं। वे इन दोनों ही प्रकार के असंख्य पदार्थों को अपनी सर्वोपरि विद्यमान शक्ति के कारण वश में रखते हैं। वे इन सब के अधि अर्थात् ऊपर स्थाता अर्थात् रहने वाले शासक होकर इन्हें अपने नियमों में चलाते हैं। कोई भी जड़ और चेतन पदार्थ इस अधिष्ठाता के नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकता। यह अधिष्ठाता कोई छोटी-मोटी शक्ति वाला अधिष्ठाता नहीं है। यह बृहत् है, बहुत महान् है। इतना महान् है कि सारे विश्व ब्रह्माण्ड को अपने नियमों के शासन में रखता है।

जड़ पदार्थ तो इस अधिष्ठाता के बनाये नियमों को स्वभाव से ही नहीं तोड़ सकते। उनका स्वरूप, उनकी रचना ही ऐसी है कि जो नियम प्रभु ने उनके लिये निश्चित कर दिये उन पर वे प्रलय काल तक चलते रहते हैं। परन्तु मनुष्य में स्वभाव से कर्म की स्वतन्त्रता है। वह जैसा भी चाहे अपनी शक्ति के अनुसार कर सकता है। प्रभु ने मनुष्य के लिये आचार के कुछ नियम बनाये हैं। जिनका वेद शास्त्र में प्रतिपादन किया गया है। इन नियमों के पालन में मनुष्य को स्थिर रहने वाला सच्चा सुख प्राप्त होता है। कई वार इन नियमों के पालन में क्षणिक दुःख भी हो जाता है। परन्तु यह क्षणिक दुःख असल में स्थायी सुख का कारण होता है। यदि हम इस क्षणिक दुःख को सहलें तो हमारा स्थिर, शास्वत मंगल होगा। वास्तव में तो प्रभु के नियमों के पालन में हमें यह क्षणिक दुःख नहीं होता यह क्षणिक दुःख भी इसलिये होता है कि हम किसी विशेष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation 2021

प्रभु के बनाये वैयक्तिक और सामाजिक नियमों का पूर्ण रीति [illegible] करने के अभ्यासी हो जायें तो हमें कभी क्षणिक दुःख भी नहीं हो सकते। पर जो क्षणिक दुःख होते भी हैं वे स्थायी सुख की भूमिका मात्र होते हैं। परन्तु हम इस क्षणिक दुःख से घबरा कर प्रभु के इन नियमों का पालन बन्द कर देते हैं—उन का भंग कर देते हैं। अज्ञान से हम समझ लेते हैं कि यह नियम भंग हमें दुःख से बचा देता है। कई बार कई नियमों के भंग से क्षणिक सुख भी मिलता हुआ प्रतीत होता है। परन्तु यह क्षणिक सुख वास्तव में स्थिर दुःख की भूमिका होता है। और जो क्षणिक सुख की प्रतीति भी होती है वह इसलिये होती है कि हम उससे पहले और नियमों का थोड़ा-बहुत पालन करके अपने को सुख का अधिकारी बना चुके होते हैं। इस प्रकार पूर्व नियमों के पालन से प्राप्त हो रहे सुख में वर्तमान कालिक नियम भंग से प्राप्त होने वाला दुःख कुछ समय के लिये दब जाता है। परन्तु यह नियम भंग यदि देर तक चलता रहे तो हमें इतना शक्ति हीन और इसीलिये दुःख का इतना अधिकारी बना देता है कि पूर्व के नियम-पालनों की कमाई भी कुछ समय के बाद जाती रहती है और हमारे लिये दुःख के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता। यह जो हम क्षणिक दुःख से बचने और क्षणिक सुख प्राप्त करने के लिये इस महान् अधिष्ठाता के नियमों का भंग करते रहते हैं, इससे कोई यह न समझ ले कि उस अधिष्ठाता को हमारा यह नियम भंग पता ही नहीं लगता। ऐसी बात नहीं है। वह अधिष्ठाता हमारे बहुत समीप है। वह हमारे आत्मा में भी अनुप्रविष्ट है। इसलिये हमारे स्थूल नियम भंग तो उससे छिपे रहते नहीं, हमारे मन के विचार तक भी उससे छिपे नहीं रहते। मनुष्य स्थिर खड़ा-खड़ा जो सोचता विचारता है उस सब को दिव्य शक्ति वाले भगवान् जानते रहते हैं। हमारे मन और कर्म की कोई भी बात इस पैनी आंखों वाले अधिष्ठाता से छिपी नहीं रहती।

इसलिये हे प्राणी यह जान कर कि उस अन्तर्यामी अधिष्ठाता से कुछ भी छिपा नहीं रहता, हमारे द्वारा होने वाला उसके नियमों का भंग उसे तत्काल पता लग जाता है, तू पाप सङ्कल्प और पाप कर्मों से हट जा। यदि तू उस सब से अधिष्ठाता, सब के स्वामी, प्रभु के नियमों के भंग रूप पाप कर्मों से नहीं हटेगा तो तुझे दुःख समुद्र में ही डूबते रहना पड़ेगा। प्रभु के नियम तोड़ कर कोई सुखी नहीं हो सकता।

मन्त्र में "देवाः" यह पद बहुवचनान्त है। प्रभु तो एक है। फिर भी उनके लिये जो यह पद बहुवचन में आया है उसे आदरणीय समझना चाहिये। जिसका भाव यह है कि प्रभु में सब के आदर करने योग्य बड़े-बड़े दिव्य गुण हैं।

हे मेरे आत्मा! सब के अधिष्ठाता उस प्रभु के समीप जाकर पाप से सदा दूर रहो।

अध्यात्म सुधा—

धर्म

[ले०—श्री रमणलाल वसन्तलाल देशाई, अनु०—

कर्म उपासना और ज्ञान ये तीनों धर्म धर्मों के यही मार्ग हैं। मनुष्य खड़ा रह कर करता है या पद्मासन लगाकर; रुद्राक्ष की या अकीक की; मन्दिर में जाय या मस्जिद में; तिलक लगाए; जटा रक्खे या दाढ़ी बढ़ा अनुकूल पड़ता है वह वही काम करता है। प्र कि यह आचार प्रभु के निकट ले जाता है या की ओर नहीं ले जाता है तब सारा आचार नि कर्म दुष्कर्म हैं और सब धर्म अधर्म है।

हरि का नाम लेते हुए मूर्छित होने वाला अल्ला के नाम पर आंसू गिराता हुआ अली; गा कहता और नाचती हुई मीराबाई; ध्यानस्थ योग करते हुए पादरी, इनमें कौन सुपथ पर है कौन न अपेक्षा नृसिंह भक्ति पूर्ण है या मीरा की अपेक्ष भक्ति अधिक तीव्र है? इस प्रकार के झगड़ों की क्या है? भक्त को प्रभु का सांनिध्य मिलना चाहि है। प्रभु की उपासना करते हुए कोई रोये या हंसे गाये या नाचे, यह सब व्यक्ति की अपनी भाव करता है।

प्रभु का स्वरूप क्या है? ज्ञान और वाणी कर थक गई, उस प्रभु के स्वरूप का वर्णन कौन है? मनुष्य की जिज्ञासा वृत्ति ने उसे गहन कान्तार अलंघ्य पर्वत मालाओं को लांघ कर उसे देखने किया। मानव को लगता है कि उसी का तेज ह चन्द्र में दिखाई दे रहा है। कभी २ ऐसा भी अनु कि यह अन्तर्यामी तो हृदय में ही वास कर रह ऐसा भी भास होता है कि जगत् की प्रत्येक गति पर प्रभु का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है। किसी समय शिशु में प्रभु का मृदुहास्य दिखाई देता है, और कभ केसरी की गर्जना में उसका शब्द गूंज उठता है। प्र स्वरूप क्या है?

"मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना"

कोई भक्त उसे पिता के रूप में देखता है। व ईसा के शरीर में कीलें जड़ी जा रही थीं, उसे प्र पिता के रूप में दीखा, वह पुकार उठा—'हे दयास मेरा वध करने वाले जल्लादों को क्षमा कर'।

मुहम्मद प्रभु को शान्ति तथा व्यवस्था का स है। इस्लाम का अर्थ ही शान्ति स्थापना है।

हमने मन्दिर, मन्दिर और मीनारों को बहुत में बनाया है। मठ, देवालय, उपाश्रम और पगोड़ों क

(शेष पृष्ठ ४ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. N. L. 5004.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

आर्य

२९ नवम्बर १९४२ रविवार

आर्य समाज की मांग

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष नहि कश्चिच्छृणोति माम् ।
धर्मादर्थश्च कामश्च सधर्मः किं न सेव्यते ॥

हाभारत के युद्ध के समय वेदव्यास कृष्ण द्वैपायन ने धर्म ाई दी थी । आकाश में भुजाएं उठाकर उस समय की को धर्म का पालन करने की प्रेरणा की थी । उन्होंने किया था कि धर्म की आवाज़ को कोई नहीं सुनता । त्यदर्शी महात्मा ने घोषणा की थी कि इस धर्म से ही कार के अर्थ और काम (अभीष्ट वस्तुएं) मिल सकते हैं । आज आर्य समाज भी वेदव्यास और वेदवक्ता वेदोद्धारक यानन्द का प्रतिनिधि होकर मानव समाज के सामने न्नव धर्म के उच्च सिद्धान्त को रखना चाहता है । इस मनुष्य मनुष्य का शत्रु बन रहा है । मनुष्य समुदायों ना प्रतिपक्षी समझ कर एक दूसरे के नाश में प्रवृत्त हैं । में—पंजाब में हिन्दू मुसलमान सिख—आपस में अर्थ ाम का उपभोग करने के लिये एक दूसरे को अपने ा रखने की योजना कर रहे हैं । यह पाकस्तान का लन, पंजाब को टुकड़ों में विभक्त करने की योजनाएं ाम की सिद्धि प्राप्त करने के लिये ही की जारही हैं । इस प्रतिस्पर्धा में 'धर्म' की दुहाई को कोई नहीं सुनता । धर्म वाले अपनी सिख रियासत कायम करना चाहते हैं, ान पाकस्तान द्वारा इस्लाम की रक्षा करना चाहते हैं, क्रम चलाना चाहते हैं । धर्म द्वारा अर्थ काम की सिद्धि ा करने के स्थान पर अर्थ काम के द्वारा धर्म रक्षा की ी जा रही है । धर्म-संस्थाओं के नेता भी इस उलझन ा रहे हैं । इस समय आर्य समाज ही एक ऐसा संगठन देता है, जो मानव धर्म का प्रचार कर सकता है । यह क अर्थ काम के कीचड़ से अलग है । संसार के दूसरे ें—अफ्रीका यूरोप मे मानव धर्म का खून किस तरह है—यह आज किसी से छिपा नहीं है । युरोप के राष्ट्र पशुओं की भांति आत्म रक्षा और शत्रुदलन में लगे हुए ैं किसी की नहीं सुनता । रोम के पोप, समय समय ार को शान्ति का संदेश देने का यत्न करते रहते हैं । रेडियो पर कई दिनों और रातों के जागरण में तैय्यार किये गये संदेश सुनाए जाते हैं—परन्तु संसार के प्रलयकारी संहारी महायुद्ध पर उसका कोई असर नहीं होता ।

इस दशा में विचार शील व्यक्तियों के सामने प्रश्न उपस्थित होता है कि आर्य समाज क्या करे ! आर्य समाज वेदों में प्रतिपादित मानव धर्म का उपदेश संसार को कैसे सुनाए । मनुष्य को एक दूसरे मनुष्य को भाई समझने के लिये कैसे प्रेरित करे । आर्य समाज की इस समय यह मांग है कि उसे कोई सुझाए कि वह किस प्रकार से वैदिक धर्म के संदेश को स्वदेश तथा युरोप और अफ्रीका के लोगों तक पहुँचाएं । हम भी इस लेख द्वारा आर्य भाइयों के सामने यह प्रश्न उपस्थित करना चाहते हैं ।

आर्य समाज के पास संसार को शान्ति देने वाला अमोघ अचूक मंत्र है । प्राणि-मात्र को परमात्मा की सन्तान समझने का आदेश है । परन्तु प्रश्न यह है कि क्या इस आदेश को—इस महा-मंत्र को हम मानव जनता तक इस प्रकार से पहुँचा सकते हैं, जिससे वह इस मंत्र के प्रभाव से प्रभावित हो सके । ऋषि दयानन्द ने इस मन्त्र का उच्चारण किया—मानव धर्म का उपदेश देकर बिछड़े हुए मनुष्य समुदायों को मिलाना चाहा । हिन्दु, मुसलमान, ईसाई, भारतवासी अमरीकावासी सब को एक सूत्र में ग्रथित करने के लिये आर्यसमाज का निर्माण किया । उन्हें इसमें सफलता भी हुई । इस सफलता का मुख्य कारण यह था कि उन्हों ने इस दिव्य मंत्र को अपने जीवन में सिद्ध किया हुआ था । वह क्रियात्मिक तौर से मनुष्य मात्र को, प्राणिमात्र को परमात्मा की सन्तान समझते थे । उनका कोई शत्रु नहीं था । मनुष्यों की रक्षा तथा उन्नति के लिये आर्य समाज का निर्माण किया । पशु मात्र तथा प्राणिमात्र की रक्षा तथा उन्नति के लिये गोकरुणानिधि में मार्ग प्रदर्शन किया । गोरक्षा आन्दोलन किया । उनके व्यक्तित्व में ऐसा आकर्षण था कि मतभेद रखने वाले भी उनकी ओर खिंचे आते थे । क्योंकि उनका जीवन दिव्य मंत्र का जीता जागता नमूना था । आज हमें अपने जीवनों को टटोलना चाहिए कि क्या हमारे जीवन इस मंत्र का संदेश पहुँचाने के योग्य भी हैं कि नहीं । इसकी एक मात्र परख यह है कि हम देखें कि हमारे हृदयों में प्राणि-मात्र से प्रेम करने की भावना क्रियात्मिक रूप में कितने अंश में विद्यमान है । हमें इस भावना के बढ़ाने का यत्न करना चाहिए । यदि हमारे हृदयों में यह भावना होगी तो मित्र और द्वेषी हमारी ओर स्वयं आकृष्ट होंगे—हमारी बात को सुनेंगे ।

आर्य पुरुषो ! इस समय आर्य समाज की मांग यही है कि अपने हृदयों में मानव धर्म के आदर्श को अङ्कित करो । भाई भाई से प्रेम करे— शत्रुओं से प्रेम करो । तभी हम सच्चे धर्म का संदेश संसार के परस्पर लड़ते हुए मनुष्य समुदायों तक पहुंचा सकेंगे ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य के प्रेमियों से निवेदन—

इस अङ्क से साप्ताहिक आर्य लाहौर से प्रकाशित होने लगा है। पंजाब सरकार ने साप्ताहिक आर्य से ५००) की जमानत ली हैं। डिक्लरेशन आदि लेने के कारण, पत्र पिछले दिनों आप तक नहीं पहुंच सका। हमारे पास कई ग्राहकों के शिकायती पत्र भी आए कि उन्हें आर्य नहीं मिला। इस अङ्क के पहुंचने के साथ उनकी यह शिकायत दूर हो जाएगी। २४ नवंबर को साप्ताहिक आर्य का डिक्लेरेशन स्वीकार हुआ है और २८ २६ को यह अङ्क प्रकाशित हो रहा है। इस अल्पकाल में हम साप्ताहिक आर्य के कई स्थिर आवश्यक अंक इस अङ्क में पूर्ण रूप से नहीं दे सके। आगामी अङ्क से यह कमी पूरी कर दी जायगी।

इन दिनों कागज़ की कमी तथा महंगाई के कारण हम आर्य की पृष्ट संख्या नहीं बढ़ा सकते। इसलिए सम्भवतः पृष्ट संख्या कम ही रहे। परन्तु उपयोगी विषयों की दृष्टि से हम इसे आर्य समाजी गुरुकुल प्रेमी तथा हिन्दी भाषा भाषियों के लिये अधिक से अधिक उपयोगी बनाएंगे। विशेष रूप से पंजाब में हिन्दी भाषा आन्दोलन के लिए इसे प्रबल साधन बनाएंगे। परन्तु इन सब कामों के लिए हमें तभी सफलता मिल सकती है यदि आर्य के प्रेमी, आर्य परिवार की संख्या बढ़ाने, इसके लिए अधिक सहायता इकट्ठी करने में हमें सहयोग देंगे। आर्य व्यापारी व्यावसायिक धंधों वाले भाई विज्ञापन आदि देकर पत्र की सहायता कर सकते हैं। इन आशाओं के साथ हम यह अङ्क लाहौर से प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है सब के सहयोग से साप्ताहिक आर्य पंजाब का प्रभाव शाली मुख्य साप्ताहिक बन जाएगा।

आर्य समाज बच्छोवाली का वार्षिकोत्सव—

आर्य समाज बच्छोवाली का वार्षिकोत्सव पंजाब के आर्यों का प्रान्तीय महोत्सव समझा जाता है। आर्य समाज के इतिहास में इस प्राचीन उत्सव की विशेष महत्ता मानी जाती है। इस अवसर पर पंजाबी आर्य जनता वर्ष भर के लिये धार्मिक व आत्मिक भोजन प्राप्त करती है। आर्य समाजिक जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी व्याख्याता उपदेशक जनता के मार्ग प्रदर्शन के लिये अपने विचारों को जनता के सामने उपस्थित करते हैं। हम आशा करते हैं कि व्याख्याता और श्रोता दोनों इस अवसर से पूर्ण लाभ उठाने का यत्न करेंगे। वर्ष भर के लिये अपने अपने आर्य समाजों के लिये कार्य क्रम निश्चित करेंगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

है। मुझे तो जगत् एक महामन्दिर लगता है जिसकी छाया में सब देव और सब देवालय आ जाते हैं! जिसके रंग मण्डप में हिन्दू-हिन्दू रहता हुआ पूजा कर सकता है। मुसलमान-मुसलमान रहता हुआ घुटने टेक कर नमाज पढ़ता है और ईसाई क्रौस को नमस्कार करता है। पद्मासनस्थ बौद्ध और अग्नि के उपासक पारसी साथ २ ही पूजा करते हैं। इसी महा मन्दिर में संसार के प्रत्येक मनुष्य को जीवन, ज्ञान और सौन्दर्य का साक्षात्कार होता है।

सौभाग्य-साधन

[स्वामी आत्मानन्द, गुरुदत्त भवन, लाहौर]

हों विश्व के इतिहास में श्री स्वामि विरजानन्द से।
धुन के धनी देखा कहां ऋषिराज श्री दयानन्द से॥
श्री लेखराम समान वैदिक धर्म के दृढ़ प्रेम में।
मरता हुआ मिलता नहीं इतिहास में कोई हमें॥ १

श्रद्धेय श्रद्धानन्द का गुण गेय गायेगा न जो।
नित जाति-हित उस सा सभी संकट उठायेगा न जो॥
हतभाग्य! भारतवर्ष का सौभाग्य कैसे लायेगा?
निज धर्म की अभिवृद्धि का यह श्रेय कैसे पायेगा?॥

रावी के बाढ़ पीड़ितों की सहायता

सभा के उपदेशक म० रामचन्द्र जी ने शाहदरा के। पास तथा रावी की जलबाढ़ से पीड़ित देहातियों में घूम उनमें दवाई वितीर्ण की।

\+ + +

इसी प्रकार सभा ने रोहतक हिसार में भी उपदेशकों पं० रामसिंह जी के निरिक्षण में पीड़ित भाइयों की सहा की।

आर्य दानी महानुभावों से निवेदन है कि वह इस कार्य में धन जन भाव और वस्त्र दवाई देकर सभा की सहायता करें।

मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजा

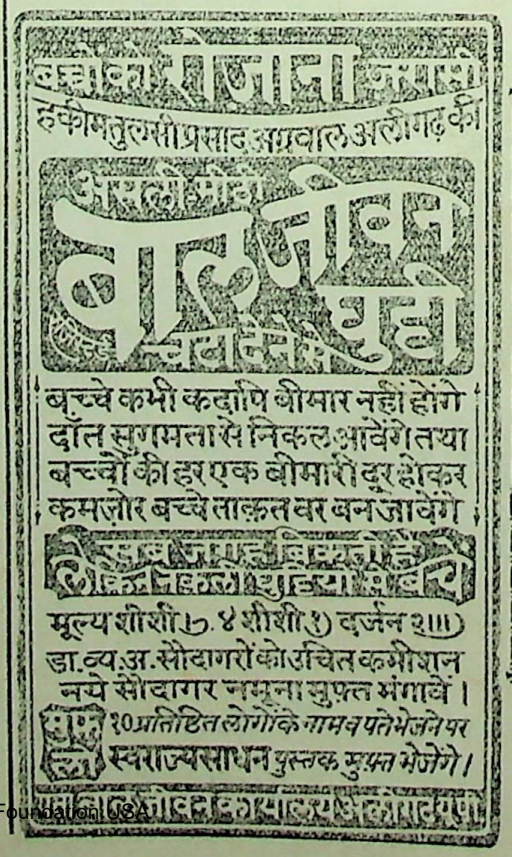

के
साप्ताहिक
आर्य
—में—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. N. L. 5004.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

र्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत धर्मार्य सभा की अन्तरंग सभा ता० १५।१०।४२ की कार्यवाही

अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई और सन्पुष्ट हुई।

ज्ञापन का विषय सं० २ क ऋग्वेद १०।८५।४४ में वृकामा है या देवकामा है।

थर्ववेद १४।२।१७,१८ में शुद्ध पाठ देवृकामा है या है प्रस्तुत हो कर सार्वदेशिक सभा के सं० मन्त्री देव जी विद्यावाचस्पति ने देवकामा, देवकामा द्ध विवाद के दोनों पक्षों के प्रमाणों को सदस्यों के स्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान समय में ऋग्वेद स्त संस्करण उपलब्ध होते हैं उनमें वैदिक यन्त्रालय छपे संस्करणों को छोड़ कर अघोरचक्षुरपतिनी..... ।।४४ के मन्त्र में 'वीरसूर्देवकामा स्योना' यह पाठ ाता है किन्तु ऋषि दयानन्द ने संस्कार विधि के रण में इस मन्त्र को दो जगह उद्धृत किया है और पाठ देवृकामा दिया और उसी के अनुसार अर्थ सिसे श्री पं० सातवलेकर जी आदि ठीक नहीं मानते दिक यन्त्रालय के पंडितों की मूल सिद्ध करने का हैं किन्तु संस्कार विधि प्रथम संस्करण को देखने ा दयानन्द के जीवन काल में सन् १८७७ में एशिया-म्बई में छपा था विवाह प्रकरण में पृ० ८४ और ९१ त्र ऋग्वेद तथा पारस्कर गृह्य सूत्र से और पृ० ९३ वेद १४।२।१७,१८ से इसके साथ मिलता जुलता मन्त्र उद्धृत है यह निश्चयपूर्वक कहा जासकता है कि नन्द के विचार में ऋग्वेद का १०।८५।४० में शुद्ध ामा ही है न कि देवकामा। यहां तक कि पृ० ९१ ापे की भूल से ऋग्वेद का पाठ 'वीरसूर्देवकामा स्योन' सो संस्कार विधि प्रथम संस्कार के शुद्धि पत्र में ,, ५ पर उस ९१ पृष्ठ का उल्लेख करते हुए लिखा।

,,	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
,,	९	देवका	देवृका

ठीक है कि वैदिक यन्त्रालय अजमेर के ऋग्वेद संहिता ण को छोड़ कर अन्य किसी संस्करण में जो अब होते हैं ऋग्वेद के मन्त्र में देवृकामा पाठ नहीं पाया न्तु कई पुरानी हस्तलिखित पुस्तकों तथा संस्करणों यह पाठ पाया जाता था इसके कई प्रबल प्रमाण होते हैं। उदाहरणार्थ सन् १८६१ में सेन्ट पीटर्स ी एक विस्तृत संस्कृत शब्द कोष (Sanskrit War- के नाम से Cotto Bohelingk और Rudolph नामक विद्वानों ने सम्पादित किया उसके पृ० ७६६ ामा शब्द का पता ऋग्वेद १०।८५।४४ और अथर्व दिया है। यह यूरोप में सब से प्राचीन संस्कृत शब्द उससे यह स्पष्टतया प्रमाणित होता है उपर्युक्त महत्व- कृत कोष बनाने के समय में ऋग्वेद का देवृकामा पाठ लिखित वा मुद्रित संस्करणों में १०।८५।४५ पर अवश्य रहा होगा। यह संस्कृत कोष पुराना होने के कारण अमाननीय है यह श्री पं० सातवलेकर जी आदि का कथन ठीक नहीं सब से प्राचीन होने के कारण उसका महत्व बढ़ता है घटता नहीं।

२. सन् १९१२ में प्रो० मैक्डोनेल एम० ए० पी० एच० डी० (Boden professer of Sanskrit in the University of Oxford and Prof. A. B. Kerth M. A. D. C. L. Acting Deputy professer of Sanskrit in the University of Oxford ने लन्दन में vedic Index of names and Subjects.

नामक पुस्तक छपवाई थी जिसके पृ० ७७८, ७७९ पर देवृ शब्द पर टिप्पणी है और देवृकामा शब्द का पता ऋग्वेद १०।८५।४४ और अथर्व १४।२।।८ दिया है। इससे स्पष्ट है कि १९१२ में भी प्रो० मैक्डोनेल और कीथ के सामने ऋग्वेद के संस्करणों में देवृकामा यह पाठ अवश्य था।

३. विहटनी कृत अथर्व वेद के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका में भी ऋग्वेद में देवृकामा होने का संकेत किया गया है।

(ख) अथर्व वेद के १४।२।१७ और १८ मन्त्रों में पाठ देवृ-कामा है इसके प्रमाण तो अत्यधिक हैं। अथर्ववेद सायण भाष्य भाग ३ के जो निर्णय सागर बम्बई में सन् १८९८ में छपा पृ० ३०७ पर मूल मन्त्र और पद पाठ दोनों में देवृकामा ही पाठ है।

बर्लिन में सन् १८५५ और फिर १८५६ में प्रकाशित प्रो० राथ और ह्विटनी द्वारा सम्पादित अथर्ववेद संहिता में पृ० ३०८ पर अथर्व वेद १४।२।२।१७,१८ दोनों मन्त्रों में देवृकामा पाठ है। सन् १८८४ में श्री सेवक लाल कर्शन दास द्वारा सत्य नारायण प्रेस बम्बई में प्रकाशित अथर्व वेद संहिता में भी दोनों मन्त्रों में १४।२।१७,१८ देवृकामा ही पाठ है। श्री स्वामी नित्यानन्द जी विश्वेश्वरानन्द जी कृत अथर्ववेद पदानाम् अकारादि वर्णक्रमानुक्रमणिका जो सन् १९०७ में निर्णय सागर प्रेस बम्बई में छपी पृ० २१ पर 'देवृकामा' पर १४।२।१७,१८ अथर्व ऐसा ही उल्लेख है। सन् १९३५ में श्री पं० सातवलेकर जी ने भी अथर्ववेद के सुबोध भाष्य में १४ कांड के प्रथम सूक्त के १७,१८ दोनों में देवृकामा ही पाठ लिखा था और उसका देवर की इच्छा या कामना पूर्ण करने वाली पृ० ३४३५ यह अर्थ किया था। इस प्रकार अथर्व वेद में शुद्ध पाठ देवृकामा होने की अनेक प्रबल साक्षियां हैं। श्री पं० जयदेव जी शर्मा विद्यालंकार चतुर्वेद भाष्यकार तथा अन्य विद्वानों के पत्र पढ़े जाने और उपस्थित विद्वानों में विचार विनिमय के [illegible] निर्णय हुआ कि ऋषि दयानन्द सम्मत पाठ ऋग्वेद और अथर्व वेद दोनों में देवृकामा ही है जिसकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वार्षिक मूल्य ४)

रहता है उसका उस
ता है। इसलिए अ
क स्वरूप को सदै
समें भी सत्य ज्ञा
ता है। अगर हमा
भांति आजाएं तो ह
ो दुःखों के पाश मे
जिस २ आनन्द की
होता है। बस यही
धन
लालचन्द
का किया,
ा जिया ?
भोगवश,
ना नहीं।
ं कीच में,
ा जिया ?
न जग में,
जगह।
जगत् में,
ा जिया ?
ज्योतिमय,
वास है।
हृदय में,
जिया ?

पुष्टि में अनेक प्रबल प्रमाण उपलब्ध होते हैं। किन्तु इस विषयक अन्तिम निर्णय देने से पूर्व अभी ऋग्वेद के हस्तलिखित और मुद्रित प्राचीन संस्करणों की अधिक खोज करनी चाहिये।

३. विज्ञापन का विषय सं० ३ पं० देवराज जी विद्यावाचस्पति के पत्र पढ़े गये कि धर्मार्य सभा एक विस्तृत और पूर्ण वैदिक कर्म पद्धति का निर्माण करावे। निश्चय हुआ कि यह विषय सार्वदेशिक सभा को विचारार्थ भेजा जाये। इस सिफारिश के साथ कि यह कार्य महत्वपूर्ण और उपयोगी है। यह भी निश्चय हुआ कि श्री प्रो० लाहाचन्द्र जी गाजरा के २५।७।४२ के पत्र में उल्लिखित विधियों के निर्माण का विषय भी वैदिक कर्म पद्धति के निर्माण कार्य के साथ संयोजित किया जाये।

४. विज्ञापन का विषय सं० ४ वैदिक देवता स्वरूप विषयक विचार उपस्थित होकर निश्चय हुआ कि इस विषय में ऋषि दयानन्द जी निरुक्तादि सम्मत अभिप्राय स्पष्ट है कि मन्त्रों का प्रतिपाद्य विषय देवता कहाता है। इसी दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने बृहद्देवता आदि से भिन्न देवता अनेक मन्त्रों के माने हैं। बृहद्देवतादि को उन्होंने प्रामाणिक नहीं माना प्रतीत होता। ऋषि दयानन्द ने जहां वेद भाष्यों में बृहद्देवतादि से से भिन्न देवता लिखे हैं वे किन प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर लिखे हैं इस विषय में अभी अधिक अनुसन्धान करना चाहिये।

५. विज्ञापन का विषय ५ पं० विश्वनाथ जो पुरोहित आर्य समाज गुरुकुल विभाग लायलपुर का ८।५।४२ का पत्र पढ़ा गया कि समस्त आर्य जगत् में विवाह की एक जैसी पद्धति के प्रचलन की व्यवस्था की जाय। निश्चय हुआ कि उन्हें लिखा जाय कि लोकाचार की ओर ध्यान न देकर संस्कार विधि को पद्धति को मान्य समझना चाहिये।

(ख) यह भी निश्चय हुआ कि निम्न सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जाय जो संस्कार विधि के आधार पर विवाह की एक पद्धति तैयार करें और उस पद्धति को अन्तरंग सदस्यों में सम्मति के लिये भेजा जाय।

१. श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०
२. श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
३. श्री पं० नारायण दत्त जी सिद्धान्तालंकार।

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

सूचना

सर्व साधारण की सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि सार्वदेशिक सभा के मासिक मुख पत्र सार्वदेशिक का आगामी आर्थात् दिसम्बर ४२ का अंक श्री स्व० श्रद्धानन्द जी महाराज की बलिदान जयन्ती के उपलक्ष्य में बलिदानांक के नाम से प्रकाशित होगा।

—सम्पादक "सार्वदेशिक"

एक कहानी— —भावना के

आर्य्य राज्य

[लेखक—श्री विष्णुमित्र नाहन स्टेट]

अरे ऐसा अन्धेर, ऐसी नादरशाही, गुण्डों जैस राज्य, देवियों पर आक्रमण, ऐसा साहस, ऐसा अन्य अधर्म, और वह भी सबके सामने, और एक आर्य राज्य वह भी राजा के जानते हुए, हा शोक राज्य में अन्धेर प अब तो यह राज्य डूबने को है। जल्द डूब जायगा। यह अन्याय ईश्वर से न देखा जायगा। पाप की नाव डूब हमारी मान प्रतिष्ठा धन दौलत जान व माल की रक्षा हो इस राज्य में तो अब बहु बेटियों का स्वच्छन्द बाहर कठिन हो गया है। देवियों का सम्मान ? किन देवियों क अपने सतीत्व की रक्षा के लिये धधकती चिताओं में अ की भस्म कर किसी पर पुरुष को अपने पवित्र अंगों को न दिया उन देवियों का आज सम्मान इस राज्य में नहीं है अपमान हो हमारी प्रतिष्ठा धूल में मिले, हमारा सर्वस्व लु हमारे सम्बन्धि और नन्हें नन्हें बच्चे कारागार में डाले ज कुछ कहने का साहस करें कोड़े खायें, हमें रोने भी न दि शोक न करें हड़ताल न करें—कैसा अन्धेर है। हमारी ललनायें बाहर न निकलने पायें। सदा घर की काल कोठरी रहें। और सड़ा करें। इतना होने पर भी यदि कभी गर्मी पर चली जांय उनसे जबरन बलात्कार किया जाय समय यदि कोई उनके सतीत्व की रक्षा में सहायता करे तो विद्रोह का अपराध लगा कर उसे न्याय व सुव्यवस्था के कठोर से कठोर दण्ड दिया जाय। हाय हाय कितना बड़ा कितना बड़ा अन्याय। वह भी आर्य देश में और आर्य की आंखों के सामने। राजधानी के अन्दर हा वसुन्धरे यह चार देख कर भी तेरा हृदय विदीर्ण क्यों नहीं होता। फट जा। ता कि तेरे अन्दर यह पाप की नौका गर्क होजाय दिनों के बाद महाराज की आज्ञा को पाकर आज अपने निकालने का साहस किया है। देखें महाराज क्या निर्ण हैं। मैं नहीं चाहता था कि अपने मुख से राजकुमार य उच्च अधिकारी अथवा पुलिस अफसर के विरुद्ध कुछ कहूं करूं विवश हूं। इतना कह इस वृद्ध ब्राह्मण के चुप होने सीन मुख महाराज लम्बी आह भरकर आकाश की ओर मामला साफ है। अपराध विवरण सुनने से पहिले ही सिद्ध होचुका है। मैंने अपराधियो को अपनी सफाई पूरा अवसर देदिया था अब कोई कार्य्यवाही शेष नहीं रह पर अन्याय देवियों का अपमान घोर पाप है। मुझे न्य होगा। न्यायासन पर बैठ जो न्याय नहीं करता और तिरस्कार करता है वह पापी है। ईश्वर और देश का इसमें पुलिस की कार्य्यवाही बेजा थी पुलिस ने प्रजा होकर भक्षक का काम किया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. N. L. 5004.

1 30 A.M.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

ार्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का, पंजाब तथा सिंध प्रान्तों में नदियों की बाढ़ से पीड़ित जनता की सहायतार्थ किया गया कार्य्य

इस वर्ष के जुलाई तथा अगस्त मास में सिंध प्रान्त में नदी के बाढ़ से लाखों व्यक्तियों को कई प्रकार से नुक- पहुंचा, कई ग्रामों के ग्राम ही तबाह हो गये बहुत से लोग भी गये और फिर सिन्ध प्रान्त में बीमारी ने अपना दौरा ारम्भ कर दिया ऐसी अवस्था को देखकर आर्य्य प्रतिनिधि पञ्जाब ने पञ्जाब तथा सिंध प्रान्तों में नदियों की बाढ़ ीड़ितों की सहायता के कार्य्य को अपने हाथ में ले लिया! ज्ञानचन्द जी सभा उपप्रधान को इसका अधिष्ठाता तथा श्री ीलाल जी को सहायक अधिष्ठाता नियत किया गया। सभा स्तिष्ठित उपदेशक पण्डित सदाशिवजी को तार देकर बुलाया ,, और शीघ्र ही सक्खर जाने के लिये नियत किया गया वहां पहुंच गये। छे दिन तक वहां सब प्रकार की अवस्था ेते रहे, फिर उन्होंने एक विस्तृत रिपोर्ट भेजी। जब सिंध पीड़ित की सहायता का कार्य्य आरम्भ हो गया सभा ाननीय कोषाध्यक्ष ला० नारायणदास जी कपूर की ारा से लाहौर सिंध सभा ने बहुत सा धन एकत्रित करके नारायणदास कपूर की कोठी पर इस कार्य्य के लिये ध्न सभा के सपुर्द कर दिया। इस से कार्य्य करने के बहुत सा उत्साह पैदा हो गया, धन की बहुत सी फिकर ी सभा के माननीय प्रधान ला० किशनचन्द जी kay cal , वालों ने दूर करदी और कार्य्य ठीक तौर पर पण्डित दाशिव जी ने सभा की आज्ञानुसार आरम्भ कर दिया।

इस काम के लिये श्री सभा प्रधान पं० बुद्धदेव जी की ओर हिन्दी और अंग्रेजी में अपीलें छपी, और पत्रों द्वारा भी णा की गई। इस अपील से सभा में काफी रुपया आगया।

पण्डित सदाशिव जी ने सिंध के तीनों प्रान्त, लड़काना तथा सक्खर में घूम कर यह निश्चय किया कि आर्य्य तिनिधि सभा को अपने हाथ में चार कार्य्य लेने चाहियें।

१. बाढ़ पीड़तों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना।
२. बीमारों की सेवा।
३. कपड़ों से पीड़ितों की सहायता।
४. धन से पीड़ितों की सहायता।
५. बीमारों की सेवा :—

नदी बाढ़ के पश्चात् बीमारी का पड़ जाना निश्चय था, : सभा ने पहिले ही इस अवस्था को रोकने के लिये तथा ने के लिये उपाय सोचने आरम्भ किये। रोकने के सम्बन्ध लोगों में बहुत सी कुनीन इत्यादि बांटी गयी, और इसी ार से मलेरिया इत्यादि को रोकने के लिये दवाइयां दी गयीं।

और जिन प्रान्तों में मलेरिया आरम्भ हो गया। वहां थायी हस्पताल खोले गये और हर एक हस्पताल पर डाक्टर वैद्य, कम्पौन्डर इत्यादि का पूरी २ प्रकार से प्रबन्ध किया गया, जो लोग देसी दवाई खाना चाहते थे, उनको देसी दवाई का प्रबन्ध किया गया, और अङ्गरेजी दवाई वालों को अङ्गरेजी का अब सब प्रकार की दवाई हस्पतालों में दी जा रही है, हर एक हस्पताल पर ५००) के लगभग खर्च आ रहा है। और कार्य्य बहुत सुन्दरता से हो रहा है। हमारे हस्पताल बहुत ही गुणकारी और लाभ दायक साबित हो रहे हैं, हाजी गोठ घोटकी नापड़ा, कोटमार महम्मद एक और दादू इत्यादि स्थानों से वहां के लोगों की धन्यवाद की चिट्ठियां आ रही है। और सब जनता हिन्दू क्या और मुसलमान क्या, हमारे कार्य्य को बहुत ही सराहते हैं।

इन हस्पतालों के अतिरिक्त हमारे वैद्य ग्राम २ में जाकर दवाइयां बांटते हैं, और घर २ में बीमारों को देख भाल कर रहे हैं, हमारे हस्पतालों में से हज़ारों की संख्या में बीमारों की सहायता की जा चुकी है।

हमारे वैद्यों के पास सफरी बक्स हैं, जिनमें २ औंस की २२ तथा ३ औंस की १६ शीशियां आजाती हैं, उन बक्सों में सर्व प्रकार की दवाइयां लेकर ग्राम २ में घूमते हैं और बिमारों की सेवा की जारही है।

१. बाढ़ पीड़ितों को सुरक्षित स्थानों पर लेजाने का प्रबन्ध, सब से पहिले किया गया। हमारे कार्य्य कर्त्ताओं ने उनको स्कूलों समाज मन्दिरों में स्थान दिला २ कर लोगों की सहायता की। किराये पर मकान दुखियों के दुख को हटाने का पूरा यत्न किया गया इस प्रकार से बहुत से लोगों की जानें बचाई गयीं।

उसके साथ २ सब लोगों का खाने पीने का पूरा प्रबन्ध किया गया और हर एक की सहायता हर प्रकार से की गयी।

(क) कई लोगों को छावड़ियां लगाने के लिये थोड़ा २ धन दे दिया गया और इस प्रकार से उनको अपने परिवार का पेट पालने के लिये पुनः खड़ा कर दिया गया।

(ख) कई ऐसी व्यक्तियां थीं, जिनको कुछ दिनों के लिये थोड़ा धन चाहिये था पुनः वह स्वयं ही सुरक्षित जगहों पर चले गये।

(ग) बहुत संख्या ऐसी थी, जिनको कि खाना इत्यादि दोनों समय आर्य्य प्रतिनिधि सभा के कैम्प से मिलता था, इस कार्य्य में सखर के माननीय व्यक्ति ला० वोसाराम जी ने बहुत कार्य्य किया, जिसके लिये सभा उनका अति धन्यवाद करती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य जगत के समाचार

वेद प्रचार विभाग

[यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग]

१. सब आर्य्य समाजों की सेवा में निवेदन हैं कि वे ।) निधि का धन जो भी उनके पास एकत्रित किया हुआ है स्वयं सभा कार्य्यालय में भेजदें । इस बात की प्रतीक्षा न करें कि सभा के किसी उपदेशक के आने पर ही वे धन उनको दिया जायगा ।

२. श्री स्वामी सेवकानन्द जी महाराज सर्वथा निस्वार्थ भाव से ही सभा के साथ सहयोग कर रहे हैं वे सभा से किसी प्रकार की दक्षिणा या मार्ग व्यय इत्यादि स्वीकार नहीं करते । आज कल वे सीमा प्रान्त में प्रचार कर रहे हैं । सब समाजों का कर्त्तव्य है कि स्वामी जी महाराज जहां २ पधारें वे उन्हें मार्ग व्ययादि देने का स्वयं ध्यान रखें । श्री स्वामी जी महाराज बड़े तपस्वी तथा त्यागी संन्यासी हैं ।

३. सभाने मंडल प्रचार प्रणाली को जारी कर दिया हुआ है और प्रत्येक मंडल में उपदेशक तथा भजनीक महानुभाव कार्य्य कर रहे हैं । सभा इस बात का ध्यान कर कि प्रचार के कार्य्य को अधिक विस्तृत किया जिन २ स्थानों पर अभी तक प्रचार नहीं हुआ वे को सूचित करने की कृपा करें ताकि वहां प्रचार का किया जाये ।

४. इस वर्ष सभा ने प्रचार प्रणाली में परिवर्त्तन करने निश्चय किया है और उसके अनुसार आर्य्य समा प्रेरित किया जा रहा है कि वे उत्सवों की व प्रणाली को बदल कर यज्ञ तथा कथा द्वारा उत्सव बहुत सी आर्य्य समाजों ने सभा की इस नवीन य के अनुसार कार्य्य करना प्रारम्भ भी कर दिया है । है कि तीन वर्षों में वेदप्रचार प्रणाली में पूर्ण तथा उ परिवर्त्तन हो सकेगा इस वर्ष सनौर, कुल्लू, भद्रवाह कि वाड, बिरला लाइनजदेहली, संजरपुर, खानपुर, च थल, करतारपुर, सीतापुर,जंडियाला मिमांवाली कुरे फा जिलका, सवाटू इत्यादि आर्य्य समाजों ने कथा अपने उत्सव मनाये हैं आर वेदप्रचार निधि में गत से अधिक धन देने की कृपा की है । आर्य्य समाज गं टोबाटेक सिंह उडलसपुरा इत्यादि अन्य समाजों ने कथा द्वारा उत्सब करने का निश्चय कर लिया है

५. सलना (नाभा) में नई समाज की स्थापना हो गई इस वर्ष बल्ला (करनाल) पाडा (करनाल) सोह पटियाला छाजो मांगा अटाइल, बालन्थ (रोहत शेखूपुरा (कपूर्थला) ईश्वर नगर (लाहौर) बारा (कश्मीर) छःहरटा (अमृतसर) रामगढ़ (गुडगा बालूगंज (शिमला) अमलोट इत्यादि समाजें स्थ हुई हैं ।

६. सभा का यत्न है कि इस वर्ष ग्रामों में विशेष प्रचार जाये इसके लिये बड़ी २ आर्य्य समाजों से यह प्रा है कि वे अपने यहां प्रचार कराने के लिये आग्रह न ताकि जो समय उनके लगेगा उस समय ग्रामों में होसके और अपने पुरोहितों द्वारा ग्राम प्रचार में सह

७. ४ से ६ दिसम्बर को फाजिलका, जड़ावाला, काल मुलतान शहर, पठानकोट, मण्डी बहाउद्दीन आर्य्य स के उत्सव हैं ।

८. १० से १३ दिसम्बर को बाहरा (जम्मू) में रामचन्द्र की यादगार में वीर मेला मनाया जा प्रत्येक आर्य्य समाज का कर्त्तव्य है इस पवित्र सभा की सहायता करें सभा की ओर से ला० अनन जी पं० बलदेव जी तथा वसावाराय जी वीर मेला के धन एकत्रित कर रहे हैं । आर्य्य समाजों से प्रार्थ कि उनकी इस कार्य्य में सहायता करें ।

पुरुषों के साथ २ पशुओं की चिकित्सा भी की जारही है, हमारे कोटमीर महम्मद तथा नापड़े के हस्पतालों में पशुओं की चिकत्सा इतनी अधिक रूप से हो रही है, कि बहुत से और इलाकों से चिट्ठियां आरही हैं । कि और भी प्रबन्ध किया जावे अवश्यकतानुसार प्रबन्ध किया जा रहा है ।

अब शरद ऋतु आरही है, अब: हमारे प्रोग्राम के अनुसार कपड़ा भेजना आवश्यक है । इसके लिये सभा की ओर से पण्डित ज्ञानचन्द जी श्री शादी लाल जी भिन्न २ व्यक्तियों को मिले । श्री बिडला जी को मिलकर बहुत सी सहायता मिली और फगवाड़े के प्रसिद्ध दानी ला० मलावाराम तथा ला० गेंद जीने ला० भागराम जी द्वारा सिंध पीड़ितों के लिये कम्बल भेजने के लिये हम को पत्र भेजा है । जो कि हम को शीघ्र ही कम्बल भेज देवेंगे ।

उकाड़ा सतलुज काटन मिलज़ में से दश हज़ार रुपये का कपड़ा हमने भेज दिया है, जो कि पीड़ितों की सहायता के लिये शीघ्र ही पहुंच जायगा ।

इस सारे कार्य्य को स्वयं देखने के लिये श्री उपप्रधान पण्डित ज्ञानचन्द जी सखर गये और उनकी सम्मति है, कि कार्य्य बहुत ही अच्छी प्रकार से चल रहा है ।

सिन्ध पीड़ित विभाग गुरुदत्त भवन लाहौर ला० किशन चन्द जी, तथा सिन्ध सभा का बहुत २ धन्यवाद करती है, और सर्वदा आशा रखती है, कि वह शुभ कार्य्यों में सर्वदा ही इसी प्रकार से सहायता करते रहेंगे जैसी कि अब की है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होक

Regd. N. L. 5004.
1 30 A.M.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-मन्त्री

गुरुकुल पुस्तकालय
23-2-52

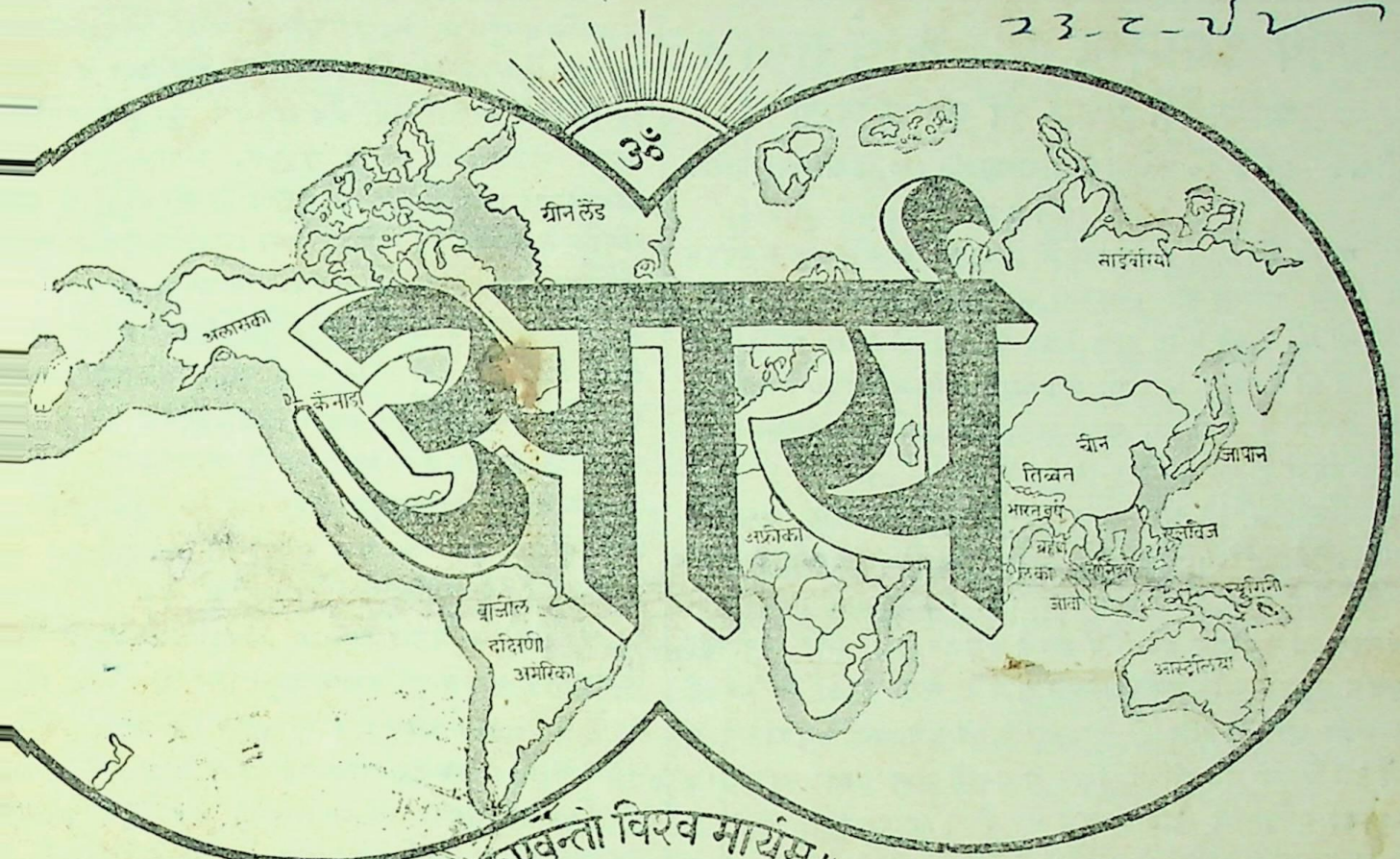

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२४, अंक २] ६ दिसम्बर १९४२ [वार्षिक मूल्य ४)

साप्ताहिक स्वाध्याय

अस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे विदुच्छसि सूनरि।
नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघेहवम्॥

ऋ० म० १। १०। ४

(सूनरि) उत्तम देवी (विभावरि) विविध प्रकाशयुक्त
मघे) चित्र विचित्र धनसे सुशोभित स्त्री (बृहता) बड़े
) रमणीय स्वरूप विमानादि यान से अथवा विद्यमान
से (विश्वस्य) सब संसार के प्राणियों को (प्राणनम)
क्ति (जीवनम्) और जीवन जीवन शक्ति व जीविका के
को (व्युच्छसि) विविध प्रकार से वास कराती है।
धि) हे देवि तू हमारी प्रार्थना को सुन।

ी संसार की प्राणशक्ति और जीवन शक्ति का स्रोत है।
न देवियों को शिक्षित करें—तो वह मनुष्य जाति को
साधनों द्वारा सब प्रकार के सुख प्राप्त कराती है।

कृतिक संसार में जिस प्रकार उषाकाल—अथवा उषाएं
कृतिक सौन्दर्य की आदि स्रोत हैं, उसी प्रकार स्त्रियां
भी मानवीय ऐश्वर्य का स्रोत हैं। यदि हम अपने घरों में विद्या का प्रकाश और धन सम्पत्ति का संग्रह करना चाहते हैं तो हमें अपनी कन्याओं को उषा की भांति अनेक गुणों की खान बनाना चाहिए। उसके लिये हमें अपनी कन्याओं को पाठशालाओं और गुरुकुलों में भेज कर शिक्षित करना चाहिए।

कन्या गुरुकुल के लिये धन संग्रह करो

दिसम्बर मास कन्या गुरुकुल देहरादून मास के नाम से मनाइये। 'कन्यानां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्' की व्याख्या करते हुए ऋषि ने कन्याओं के लिये गुरुकुल खोलने का आदेश दिया है।

आवश्यक सूचना

आर्य के ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि अभी तक आर्य को एल नम्बर नहीं मिला। इसलिये पत्र के भेजने में विलम्ब हो रहा है। यह दो अङ्क इसीलिये इकट्ठे तीन पैसे में भेज रहे हैं। एल नम्बर मिलने पर यथावत् प्रकाशित होगा। —मैनेजर 'आर्य'

—लेखकों और समाचार पत्रों के सम्पादकों से निवेदन है कि वह भविष्य में पत्र व्यवहार इस पते पर किया करें।

सम्पादक—आर्य्य
[illegible] भवन, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज

आन्तरिक सुधार की आवश्यकता

(लेखक—प्र० स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किस पवित्र और उच्च उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की यह बात आर्य समाज के नियमों को देखने और आर्य शब्द के अर्थ को भली भांति समझने से स्पष्टतया ज्ञात होती है। आर्य समाज के १० नियमों में षष्ठ नियम में महर्षि ने आर्य समाज के उद्देश्य को इन उत्तम और उदार शब्दों में प्रकट किया था।

"आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" किसी एक ग्राम, नगर, प्रान्त या देश का ही नहीं किन्तु सारे संसार का उपकार करना। इससे बढ़कर उच्च और उदारता सूचक उद्देश्य और क्या हो सकता है। सन् १८७५ में बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना करते हुये महर्षि दयानन्द ने जो २८ नियम निर्धारित किये थे उनमें प्रथम यह था "सब मनुष्यों के हितार्थ आर्य समाज का होना आवश्यकता है।"

"सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिये" नियम सं० ४।

"सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्यासत्य का विचार करके करने चाहिये" नियम सं० ५।

"सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य बर्तना चाहिये" नियम सं० ७।

"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये" नियम सं० ८।

"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये" नियम सं० ९।

"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें" नियम सं० १०।

इत्यादि नियमों की सर्वोपयोगिता और सार्वभौमता तथा उपादेयता में किसी को ज़रा भी सन्देह नहीं होसकता। वेद शास्त्रों के अनुसार आर्य शब्द का अर्थ ही ईश्वर का सच्चा पुत्र "आर्य, ईश्वर पुत्र: निरुक्तेः श्रेष्ठ, धार्मिक, सदाचारी, न्याय पथावलम्बी, उदार चरित, शान्ति चित्त, कर्तव्य परायण व्यक्ति हैं ऐसे पुरुषों का समाज ही आर्य समाज बन सकता है। इसीलिये बम्बई में निर्धारित नियमों में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट लिखा था कि, इस समाज में सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी सभासद् बनाये जायेंगे" नियम सं० ८।

इस समाज में प्रधानादि सब सभासदों को परस्पर प्रीति पूर्वक, अभिमान, हठ दुराग्रह और क्रोधादि दुर्गुणों को छोड़ कर उपकार और सुहृदभाव से निर्वैर हो कर स्वात्मवत् सबके साथ वर्तना होगा"। सं० २२।

"मनुष्य उन नियमों के अनुकूल आचरण करने वाला, धर्मात्मा सदाचारी हो उसको उत्तम सभासदों में प्रविष्ट करना, इसके विपरीत को साधारण समाज में रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से निकाल ही देना। परन्तु यह काम पक्षपात से नहीं करना, किन्तु योग्यायोग्य पुरुष सभासदों के विचार से ही किये जायें अन्यथा नहीं" नियम सं० २४।

सामाजिक सुधार, शिक्षा प्रसार तथा लोकोप अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है। इस बात से विरोधी भी इनकार नहीं कर सकते। गुरुकुल, क कन्या पाठशाला, कन्या गुरुकुल, अनाथालय, दलितोद्धार सभा, शुद्धि सभा इत्यादि संस्थाओं के समाज ने भारत को धार्मिक तथा सामाजिक दशा जो प्रयत्न किया वह अत्यन्त अभिनन्दनीय था औ प्रयत्न अब भी जारी है किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत आर्य समाज के प्रशंसनीय कार्य की प्रगति बढ़ाने दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उसके उच्च उद्देश्य की पू आन्तरिक सुधार की बड़ी भारी आवश्यकता है पूर्व की बात है। एक वृद्ध आर्य सज्जन मुझे सुना आज से ३०, ४० वर्ष पूर्व आर्यों की सत्यनिष्ठता इतनी जमी हुई थी कि एक मुकदमे में एक यूरोपि ११ साक्षियों के विरुद्ध १ आर्य समाजी की साक्षी विश्वसनीय मानते हुये उसके अनुसार निर्णय दिया व कहते थे कि अब अवस्था बहुत बदल गई प्रतीत होत अनेक आर्यों के अन्दर सत्यपरायणता के अभाव के पर विश्वास करना भी कठिन हो गया है। स्व फूलसिंह जी के जीवन की इस घटना से कि आ में प्रवेश करते ही उन्होंने न केवल रिश्वत करदी बल्कि रिश्वत में ली हुई लगभग ४५०० राशि को उन्होंने लौटा दिया यह बात स्पष्टत होती है कि आर्य समाज के अन्दर प्रवेश मनुष्य प्रकार नवजीवन का संचार कर देता था परन्तु वश अब वह सत्यनिष्ठता, विश्वास पात्रता, और उ सदाचारमय जीवन अनेक आर्यों के अन्दर दिखाई आर्यों के अन्दर पहले जो स्वाध्याय शीलता और ध स्वार्थ उत्साह था जिसका सबसे उत्तम उदाहरण संयु में एक लगभग अशिक्षित आर्य चौकीदार का "५००० सोने वालो जागो" इन शब्दों से रात को पहरा देकर प्रकाश की सैकड़ों प्रतियां बिकवाने और कई स्थानों समाज की स्थापना कराने का है (जैसे कि श्री महात्म राम स्वामी जी आदि वृद्ध महानुभावों द्वारा ज्ञात उसकी अब न्यूनता प्रतीत होती है। सन्ध्या हव प्रार्थना स्वाध्याय वैदिक यज्ञ और संस्कार आदि विषय का पालन करने वाले आर्य सज्जनों विशेषत: आर्य प संख्या सन्तोष जनक नहीं है। वस्तुत: पारिवारिक ज आर्य बनाने की ओर अब तक पर्याप्त ध्यान नहीं दि यद्यपि यह निश्चित बात है कि जब तक परिवारों वैदिक आचार विचार प्रवेश नहीं कर जाते तब वैदिक धर्म और आर्य समाज का सच्चा प्रचार नहीं इन सब बातों का ध्यान में रखते हुये आन्तरिक सुधा लन को जोर से चलाने की आवश्यकता है जिसके नि श्यक अंग होने चाहिये।

१—प्रत्येक आर्य पुरुष और स्त्री अपने वैयक्तिक अधिक से अधिक पवित्र सत्यमय और निष्कलंक प्रयत्न करे।

(२) पारिवारिक जीवनों को आर्य और वैदिक नुकूल बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जा पारिवारिक सत्संगों की आयोजना की जाय। जिनमें के सब नर नारि बालक बालिकायें मिलकर संध्य

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya Haridwar. Digitized by eGangotri Foundation USA

Regd. N. L. 5004.

1 30 A.M.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म॰

आर्य

रविवार ६ दिसम्बर १९४२

आर्य देवियों का तीर्थ स्थान

कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव

२६,२७,२८ दिसम्बर को कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षि-त्सव होगा। कन्या गुरुकुल आर्य समाज के रचनात्मक कार्य ज्वलन्त उदाहरण है। कन्यागुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्दके शुभ ल्प और आचार्य रामदेव जी की अनथक लगन का जीता ाता प्रतिनिधि है। श्रीमती आचार्य विद्यावती जी पिछले १८ से निष्काम भाव से कन्या गुरुकुल का संचालन कर रही ब्रह्मचारिणियों की मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का ाकांश श्रेय आचार्य जी को है। इन दिनों श्री अमृतराम जी क्ष कन्या गुरुकुल—वृद्धावस्था में भी इस संस्था के लिए य दे रहे हैं। उनके नेतृत्व में पंजाब में तथा भारतवर्ष के २ शहरों में कन्या गुरुकुल की भिक्षा मंडलियां धन संग्रह रही हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने भी पंजाब की आर्य ाजों के नाम कन्या गुरुकुल के लिये दानराशि नियत की सभा के उपदेशक तथा प्रचारक समाजों में पहुँचकर इस राशि को प्राप्त करने का यत्न कर रहे हैं। सभा कार्यालय पत्र व्यवहार द्वारा इस दानराशि को गुरुकुल में पहुँचाने की ा कर रहा है। मैं पंजाब के आर्य समाजों से विशेष रूप से ध करना चाहता हूँ कि वह दिसम्बर मास को 'कन्या कुल मास' के रूप में मनाएं। अपने २ शहरों में साप्ताहिक मेलनों में कन्या गुरुकुल के सम्बन्ध में व्याख्यान कराएं संग्रह करें, योग्य कन्याओं को गुरुकुल में भिजवाएं।

कन्या गुरुकुल में वर्तमान समय की शिक्षा पद्धति के साथ वेद संस्कृत तथा आर्य संस्कृति की शिक्षा दी जाती है। रे भारतवर्ष में यही एक अद्वितीय संस्था है जहां कन्याओं वेद की शिक्षा दी जाती है। कन्याओं की यही राष्ट्रीय ्था है जहां इतनी बड़ी संख्या में कन्याओं को आश्रम निवास साथ शिक्षा दी जाती है। इस समय कन्या गुरुकुल में ० छात्रा हैं। वर्त्तमान समय की मंहगी तथा आर्थिक शिथि-ा के कारण संचालकों को आर्थिक संकट तंग कर रहा है। को दूर करने के लिये हरेक भाई को धन जन और समय र इस संस्था की सहायता करनी चाहिए। स्वामी श्रद्धा द के शुभ संकल्प और आचार्य रामदेव के स्मारक को पूर्ण ने का यत्न करना चाहिए। सभा ने आचार्य रामदेव स्मा- रूप में कन्या गुरुकुल के लिये १ लाख रुपये की अपील की । अभी तक इसनिधि में ४५ हजार रुपया आया है शेष धन ता को शीघ्र पूर्ण करना चाहिए।

आर्य समाज वच्छोवाली का वार्षिकोत्सव—

२८, २९ नवम्बर को आर्य समाज वच्छोवाली का वार्षिको-त्सव सफलता पूर्वक समाप्त होगया। २८०००) के लगभग दान राशि प्राप्तहुई। व्याख्याताओं तथा उपदेशकों की दृष्टिसे उत्सव सफलता पूर्वक समाप्त हुआ। व्याख्याताओं ने आर्य जनता को व्यक्तिगत चरित्र उन्नत करने तथा आर्य संस्कृति की रक्षा के लिये विशेष प्रेरणा की। श्री नारायण स्वामी जी, श्री अभेदानन्द जी, श्री धरेन्द्र शास्त्री जी आदि पंजाब से बाहर के आए हुए सज्जनों के व्याख्यान जनता को विशेष रूप से पसन्द आए।

उत्सव पर युवक सम्मेलन, कवि सम्मेलन, आरोग्य सम्मे-लन और सर्वधर्म सम्मेलन भी किये गये। यह भी विशेष रुचिकर थे। संकीर्तन प्रतिवर्ष की भांति किया गया। उपस्थिति की दृष्टि से भी उत्सव सफल रहा।

२८-११-४२ के आर्य-युवक-सम्मेलन के प्रस्ताव—

शनिवार को आर्य समाज वच्छोवाली के अवसर पर आर्य युवक सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकार हुए।

१. यह सम्मेलन आर्य-युवकों से अनुरोध करता है कि वे अपनी धर्म-पुस्तकों के अध्ययन के लिये अवश्य समय निकालें; और इन धर्म-पुस्तकों को अच्छी प्रकार ध्यान-पूर्वक पढ़ें।

२. यह सम्मेलन आर्य-युवकों से अनुरोध करता है कि वे आर्य-भाषा हिन्दी को अवश्य पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं; तथा अपने वही खाते का हिसाब किताब और पत्रों पर पते भी हिन्दी में लिखें; और अपने हस्ताक्षर भी हिन्दी में ही करें।

३. आर्य-जाति की शारीरिकोन्नति के लिये आर्य-युवक सम्मेलन युवकों से बल पूर्वक आग्रह करता है कि वे व्या-याम द्वारा अपनी शारीरिकोन्नति की अधिक से अधिक वृद्धि करें।

४. यह सम्मेलन समस्त युवकों से आग्रह करता है कि पार-स्परिक भेद-भावना को भुला कर आंतरिक कलह को जाग्रत न होने दें; तथा संकट के समय दूसरे की सहायता करें।

दो शोक जनक मृत्यु—

सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय केसरचन्द्र जी का देहान्त होगया है। म० केसरचन्द जी ने २६ वर्ष तक सभा के साथ मिल कर पंजाब में भजनोपदेशों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया। आपके भजन मनोरंजक और पंजाबी लहजे के होते थे। आपकी इस असामयिक मृत्यु पर हमें हार्दिक खेद है परमात्मा उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दें और उनके पुत्रों तथा सम्बन्धियों को धैर्य धारण कराएं।

इन्हीं दिनों चम्बा रियासत के कर्मवीर श्री० म० रामशरण जी की धर्मपत्नी का बीमारी के बाद देहान्त हो गया है। श्री मास्टर जी के इस महा दुःख में हम हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और मास्टर जी को तथा उनके परिवार को धैर्य दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यजुर्वेद की शुद्धता की चर्चा

(ले०—पं० श्री दा० सातवलेकर, स्वा० मं०, औंध जि० सातारा)

सन्मान्य पत्र 'आर्य' के इस वर्ष के अङ्क ४६ (ता०२१।७।४२) में श्री स्वा० वेदानन्द तीर्थ जी ने स्वाध्याय मण्डल द्वारा प्रकाशित वेदों की—विशेषतः यजुर्वेद की शुद्धाशुद्धता की चर्चा की है। जिस समय हमारा यजुर्वेद मुद्रित हुआ उस समय वह पुस्तक हमने कई यजुर्वेद पाठशालाओं में शुद्धीकरण के लिये रखी और फी अशुद्धि एक रु० पारितोषिक भी देने की घोषणा की। इससे जो मुद्रण दोष हुए उनका हमें पता लगा। निर्दोष मुद्रण के लिये ऐसा ही करना होता है।

इसी समय इस पुस्तक की एक प्रति उक्त स्वामि जी के पास गयी थी। और उन्होंने उनकी अशुद्धियां बताने की कृपा की थी। सब अशुद्धियों का एक पृष्ट छाप कर हमने अपने यजुर्वेद में लगा दिया था और श्री स्वा० वेदानन्द जी को वैदिक धर्म मासिक में पर्याप्त धन्यवाद भी दिये थे।

इस समय स्वा० वेदानन्द जी ने इसी तरह सहायता करने का वचन भी दिया था। स्वाध्याय मण्डल के किसी भी प्रकाशित ग्रंथ में जो भी अशुद्धि होगी, वह किसी ने बतायी तो उसका हम धन्यवाद करते हैं। क्योंकि इसी तरह ग्रंथ की निर्दोषिता कभी न कभी बन सकती है। हम अपनी अशुद्धियों को छिपाने के इच्छुक नहीं हैं, इतना ही नहीं, पर जो सबसे प्रथम अशुद्धि बताता है उसको प्रति अशुद्धि एक रु० प्राप्त करने का अधिकार भी है। इसलिये आगे भी स्वामी जी जो अशुद्धियां बतावेंगे उन में से जो सत्य होंगी उनको स्वीकार किया जायगा।

हमारा लेख वैदिक धर्म में प्रकाशित हुआ, जिसमें स्वामी जी को धन्यवाद दिये थे। और मैंने यह समझा कि यहाँ यह विषय समाप्त हुआ। पर वैसा नहीं हुआ। श्री स्वा० वेदानन्द जी ने इनकी अशुद्धियों को एक वार 'आर्य मित्र' में छपवाया और साल के बाद फिर वैसा ही लेख अब 'आर्य' में भी छपवाया। श्री स्वामी जी और भी कई वार इस लेख को छपवाना चाहेंगे, तो उनकी संतुष्टि के लिये वे वैसा कर सकते हैं।

इस लेख में आपने यजुर्वेद (पृ० ६३) १३।५८; (पृ० ६५) १४।२२ और (पृ० ६७) १४।३१ में "लोकं ता इन्द्रं" ये तीन पद अनावश्यक हैं और ये यहां न होते हुए हमारे यजुर्वेद में ये यहां सधिक छापे हैं। ऐसा लिखा है और इसके लिये शतपथ का प्रमाण दिया है। इसका विचार करना है।

मुद्रित पुस्तकों के प्रमाण

(१) मुंबई में निर्णय सागर प्रेस में भाष्यद्वय समेत यजुर्वेद छपा है। सन् १९१२ में यह ग्रंथ मुद्रित हुआ है। इस में उक्त तीनों मन्त्रों में 'लोकं ता इन्द्रं' ये तीन पद हैं।

(२) श्री वेंकटेश्वर मुद्राणालय में संवत १९६९ में यजुर्वेद छपा है। इस में उक्त तीनों मंत्रों में 'लोकं ता इन्द्रं' पद हैं।

(३) जर्मनी में इससे भी पूर्व भाष्यद्वय समेत यजुर्वेद छपा और उसमें काण्व पाठ भेद भी दिये हैं। इसमें भी उक्त तीनों मंत्रों के अन्त में ये तीन पद हैं।

(४) यजुर्वेद मुंबई मुद्रित (खुला पत्रा) इसमें उक्त पर उक्त तीनों पद हैं।

(५) काशी में मुद्रित सभाष्य यजुर्वेद में उक्त पद हैं

(६) बंगाल में बंगाक्षरों में बड़ा बृहदग्रंथ यजु छापा है। इस में भी उक्त तीनों पद हैं।

इस तरह जितने भी यजुर्वेद भारतवर्ष में अथवा छपे हैं, उन सब में उक्त तीनों मन्त्रों में उक्त तीनों पद छपे हैं। केवल अजमेर वैदिक यंत्रालय के मुद्रित यजुर्वेद में इ मंत्रों में ये तीनों पद नहीं हैं।

काण्व संहिता का प्रमाण

शुक्ल यजुर्वेद की ऐसी ही काण्व संहिता है। वाज और काण्व में थोड़ा हेर फेर है, पर करीब करीब संहि सी ही है।

यजुर्वेद	काण्व संहिता	काण्व पाठ
१३।५८	१४।६५	लोकं पृण ता अस्येन्द्रं वि
१४।२२	१५।२४	,, ,,
१४।३१	१५।३५	,, ,,

तीनों स्थानों का (वाजसनेयी) यजुर्वेद पाठ 'लोकं त है और उन्हीं मंत्रों का काण्व संहिता का पाठ 'लोकं अस्येन्द्रं विश्वाः' है। अर्थात जहां वा० यजुर्वेद में तीन वहां काण्व संहिता में छः पद हैं।

'लोकं ता इन्द्रं' ये तीन मन्त्रों के प्रथम पद लिये काण्व संहिता में प्रत्येक मन्त्र के दो दो पद लिये हैं। भर में जहाँ पूर्वस्थान में कहा मंत्र ही आगे लेते हैं, वहां तरह एक या दो पद लेते हैं और इस प्रतीक से ही वे पू लेने होते हैं। अब इन तीन पदों से जो मंत्र लेने हैं वे १२।५४।५५।५६ हैं देखिये—

लोकं पृण छिद्रं पृषा० ॥५४॥
ता अस्य सूददोहसः० ॥५५॥
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्० ॥५६॥ वा० यजु० १२। ५ काण्व० १३। ५५।५

इन मंत्रों को देखने से पता लग जायगा कि 'लोकं ता ये इन तीन मंत्रों के तीन प्रथम पद हैं। यह वा० यजुर्वेद का है। और 'लोकं पृणता अस्येन्द्रं विश्वा' वहां उक्त तीन मं पहिले दो पद लिये हैं। यह काण्व संहिता का पाठ है।

अर्थात् ये प्रतीक उक्त तीन मंत्रों के हैं।

अब स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी का यह कहना है कि पथ में इन तीन पदों की सूचना नहीं है और केवल 'प्रजा यहां तक ही सूचना है। इस विषय में कहना इतना ही जहां जहां प्रतीक सूचित मंत्र हैं वहां शतपथ में कहीं भी ख्या नहीं हैं। यजुर्वेद में बीसियों स्थानपर प्रतीक हैं, उन प्र से सूचित कई मंत्र लिये भी जाते हैं। पर उनकी व्याख्या स्थान पर नहीं होती। इसका कारण इतना ही है कि उ व्याख्या एक वार शतपथ ने की होती है। इसलिये दुबारा निर्देशमात्र कर देता है। ऐसा निर्देश यहां भी है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

ा० ८।१।२९ में 'प्रजाभ्यः' तक व्याख्या करने के
दिष्ट का तस्योक्यो बन्धुः।' कहा है। तीन इष्टि-
के तीनों मन्त्र पहिले कह दिये हैं। (उक्तो बन्धुः)
ान से देखने योग्य हैं।

ज़रा इसका पूर्व स्थान में सम्बन्ध देखिये। श०
।३३ में 'अथ लोकं पृथामुपदधति' यह प्रारंभ है।
लोकं पृण०' यजु० १५।५४ है जो यहां 'लोकं' प्रतीक
है। उक्त ब्राह्मण का आगे का वाक्य 'तस्या उपरि
त्रिवृत्' इत्यादि है। इसमें (उपरि बन्धुः) ये पद
ान में (उक्तो बन्धुः) कहा है। इस तरह 'लोकं ता
तीन पदों का जहां निर्देश है वहां त्रिवृत इष्टिका के
पहिले कहे हैं ऐसा कहा है और जहां इन मन्त्रों
आने का स्थान है वहां 'लोकं पृण' आदि तीन मन्त्रों
ध (उपरि बन्धुः) आगे आवेगा, ऐसे स्पष्ट संकेत
किया है। इस तरह शतपथने इन तीनों मन्त्रों का
था स्थान पूर्व और उत्तर दोनों स्थानों पर किया है।
के अतिरिक्त कात्यायन श्रौतसूत्र १७।६।५९ तक इन
विनियोग है। और यदि ये मन्त्र यहां नहीं लिये
ा कर्म नहीं हो सकेगा, जो इन मन्त्रों से करना
।

तरह शतपथ, कात्यायन श्रौतसूत्र तथा यज्ञकर्म इन
ध्यों का विचार करने से ये मन्त्र सूचक तीन पद यहां
सा स्पष्ट दीखता है।

ने प्रमाण देखने के पश्चात् ही हमने ये पद यहां यथा
रखे हैं।

लिखित ग्रन्थों की साक्षी

सीक, त्र्यंबकेश्वर में यजुर्वेदी घनपाठी खानदानी विद्वान
काण्वशाखा के म्हैसूर मद्रास आदि स्थान में भी
काशी आदि स्थानों में भी हैं। जहां वंशपरंपरा से
ठन-पाठन चलता है वहां के लिखित ग्रन्थ करीब
क काण्व और वाजसनेयी यजुर्वेद के हमने मंगवाये
स्थान के पदों की पड़ताल की, तो सब ही लिखित
उक्त तीनों स्थानों में ये तीनों पद ठीक तरह मिले।
हमने छापे हैं।

मौखिक साक्षी

ुर्वेद के घनपाठी विद्वान महाराष्ट्र में तथा काशी में
। इन की साक्षी से भी उक्त तीनों स्थानों में उक्त
हैं।

दोनों साक्षियां इस समय यहां हमारे पास हैं, कोई
हां देख सकता है।

नी पड़ताल करके हमने उक्त पाठ निश्चित किया है।
श्रौतसूत्र, लिखित ग्रंथ, मौखिक वेद पाठ, तीनों वेद
ा मुद्रित ग्रन्थ, इतने प्रमाण हमारे पास हैं। काण्व
सनेयी पाठ भी हैं। इतने प्रमाण देखने से इस विषय
का हमारा मुद्रित पाठ ही शुद्ध है और जो पूज्यपाद स्वा० वेदानन्द जी ने लिखा वह सब अशुद्ध है।

विद्वान लोग इन प्रमाणों को देखें, विचारें और शुद्ध पाठ का निर्णय करें।

(पृष्ठ २ का शेष)

भजन, कीर्तन, स्वाध्यायादि करें और वेद की कथा हो। वैदिक यज्ञ और संस्कार शुद्ध रूप में परिवारों में प्रचलित हों न कि पौराणिक और वैदिक विधियों की खिचड़ी पकाई जाये जैसे कि आज कल प्रायः किया जाता है। प्रत्येक परिवार में इसी प्रकार प्रातः व सायंकाल सब नर नारी बालक बालिका मिलकर प्रेम से सन्ध्या, हवन, भजन, कीर्तन, स्वाध्याय करते हुए वैदिक वायु मण्डल बनाने का पूर्ण यत्न करें। प्रत्येक गृहस्थ सज्जन एक पत्नीव्रत और आर्यदेवी पतिव्रता का शुद्ध आदर्श स्थापित करे।

(३) आर्यों का सामाजिक जीवन भी ऐसा पवित्र हो कि उनकी सत्यनिष्ठता, प्रेम, त्याग, सेवा तथा परोपकार भावना से सब स्वयं प्रभावित होकर, आर्य समाज के प्रति आकर्षित हों। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग आदि का कार्यक्रम ऐसा हो जो श्रोताओं के लिए स्फूर्ति दायक और नवीन दिव्य जीवन संचारी हो जो तभी सम्भव हो सकता है जबकि केवल पूर्ण सदाचारी वेदज्ञ विद्वानों को ही वेदि से बोलने का अधिकार दिया जाय और भजनादि द्वारा भक्ति का सच्चा वायुमण्डल उत्पन्न किया जाय। आर्यसमाजों के अधिकारी वही चुने जांय जो न केवल आर्य सिद्धान्तों के ज्ञाता और वैदिक धर्म के प्रचार की लगन रखने वाले हों किन्तु जो तन, मन, धन से वेद की पवित्र आज्ञाओं का पालन करने वाले हों, केवल संख्या वृद्धि के लिए प्रयत्न न करते हुए सभासदों की गुण वृद्धि की ओर विशेष कर ध्यान दिया जाय।

(४) जन्म मूलक जाति भेद और अस्पृश्यता का क्रियात्मक आचरण द्वारा विरोध करने का साहस आर्यों के अन्दर हो। जात-पात तोड़ कर विवाहादि सम्बन्ध किये जांय केवल गुणकर्म स्वभाव देखकर ही विवाह सम्बन्ध निश्चय किया जाय। शुद्ध हुए व्यक्तियों के साथ समानता और प्रेम का व्यवहार किया जाय अन्यथा शुद्धि आन्दोलन कभी यथार्थतया सफल नहीं हो सकता।

(५) वेदों के स्वाध्याय और उनके अनुसार आचरण करने की ओर अतिविशेष ध्यान दिया जाय।

(६) प्रत्येक आर्य नर नारी के अन्दर कम से कम इतनी देश भक्ति अवश्य हो कि वह राष्ट्रभाषा का अच्छा अभ्यास करे। शुद्ध स्वदेशी वस्त्रों और यथा सम्भव अन्य सब स्वदेशी वस्तुओं के ही प्रयोग का व्रत ले इस प्रकार करने से आर्यसमाज अपने उच्च उद्देश्य की पूर्ति में अधिक सफल हो सकेगा, इसमें सन्देह नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संन्यासाश्रम

(श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दीनानगर)

[श्री पं० भीमसेन जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य में सन्यासाश्रम विषयक एक लेख लिखा है, जिस में उन्होंने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि जो अकर्म सन्यास करते हैं वह उचित नहीं है, और कर्म सन्यास ही होना चाहिए ।]

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश तथा संस्कार विधि में अकर्म-सन्यास भी माना है। इस लिए पण्डित जी को अकर्म-सन्यास का खण्डन करना उचित नहीं है। वह लिखते हैं कि जितने युवा-सन्यासी २५ वर्ष से न्यून आयु के हों उनको ब्रह्मचर्याश्रम में प्रविष्ट होने की प्रेरणा करनी चाहिए संभवतः पण्डित जी को ज्ञान नहीं है कि 'आर्य समाज की मथुरावाली जन्मशताब्दी में आर्य-सन्यासियों ने यह निश्चय किया था कि ३० वर्ष की आयु होने से पूर्व किसी को सन्यास न दिया जाए। उस समय से किसी आर्य सन्यासी ने २५ वर्ष वाले युवा को सन्यास ही नहीं दिया है तो अब प्रेरणा किस को करें कि वह सन्यासी न रहे। फिर पण्डित जी लिखते हैं कि गृहस्थाश्रम योग्य आयुवाले सन्यासियों को भी नियम-पूर्वक गृहस्थाश्रम में आना चाहिए। यह तो पण्डित जी भी जानते हैं कि पंजाब में स्त्रियों की संख्या न्यून तथा पुरुषों की अधिक है। और पहले भी कितने ही पुरुष हैं जिन्हे स्त्रियां नहीं मिलती जिन की इच्छा भी गृहस्थ बनने की है। पण्डित जी पहले उनके लिए प्रबन्ध कर लें, यदि पुनः स्त्रियां अधिक हुई तो इन पर कृपा करें। न चेत् इन को वापस बुलाने से लाभ के स्थान हानि ही होगी। पुनः पण्डित जी ने शुक्रनीति का प्रमाण भी लिखा है। यह तो उनके लिए है जो स्त्री-सन्तान को त्याग कर आय। जहां तक मुझे ज्ञात है आर्य-समाज में एक भी ऐसा नहीं है। एक सन्यासी पूर्व था जिसे हमने वापस कर दिया था। इसलिए पण्डित जी को भ्रम है। उन को स्वयं इसे दूर करना चाहिए।

पण्डित जी ने कुछ सन्यासियों के नाम उल्लेख किये हैं। परन्तु उन पर मैं कुछ लिखना उचित नहीं समझता। मैं केवल एक बात और लिखना चाहता हूँ। पण्डित जी पुनः पुनः संकर शब्द का प्रयोग करते हैं। संकर शब्द के अर्थ हैं दो विरोधी धर्मों का एकत्र होना। ज्ञात होता है पण्डित जी आयु की दृष्टि से युवा सन्यासियों को सन्यास और गृहस्थ-धर्म का संकर मानते हैं, किन्तु उनकी यह भूल हैं। सन्यास लेने वाले के लिए आयु प्रधान नहीं है, वह गौण है। सन्यास के लिए प्रधान निर्बन्ध, वैराग्य ही है। इस लिए महर्षि दयानन्द जी ने जाबाल के वचन से भी लिखा है कि जिस दिन वैराग्य हो उसी दिन सन्यास ग्रहण करे। यदि उसको वृद्धावस्था में भी, गृहस्थ में सन्तानोत्पादन करके भी वैराग्य उदय नहीं होता तो वह सन्यास का पात्र नहीं है। और मेरा अनुभव है कि जिन सज्जनों ने वृद्ध होकर सन्यास लिया, वह अपनी सन्तान का मोह नहीं त्याग सके। उनको अपनी पुत्री पुत्री, की सन्तान, पुत्र तथा पुत्र की सन्तान की चिन्ता उतनी ही रही जितनी सन्यास लेने से पूर्व थी। यह बात आर्य-समाज में पौराणिक सन्यासियों में भी ऐसी ही है। उनको वैरा होता। इसलिए सन्यासाश्रम को संकर वह करते है वैराग्य के सन्यास लेते हैं। और वैराग्य के लिए निर्बन्ध लगाना दुःसाध्य ही नहीं अपितु असंभव है।

मैं पण्डित जी से एक प्रार्थना और करना चा वह सन्यासियों को वेतनभोगी बना कर अपने अधि अधीन रखने की अनुचित चेष्टा न करें। इन्हें सन्याहि सन्यासी ही रहने देना चाहिए। और यह धारण चाहिए कि सन्यासियों में वैराग्य हो बिना वैराग्य के शोभा नहीं देता। आप आयु के विवाद में न पड़ कर की ओर ध्यान देंगे तो सन्यासी आप का साथ देंगे आश्रम का सुधार भी हो जाएगा। सांकर्य वैराग्य उत्पन्न किया है, युवकों ने नहीं, यह निश्चय कर लेना च

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

वार्षिक दीर्घावकाश के बाद विद्यालय नियम हो गया है। पढ़ाई जोरों से चलरही है। अंग्रेज़ी श्री आनन्दधन जी M. A, L. L. B और विज्ञा के लिये गुरुकुल के सुयोग्यस्नातक श्री पं० यज्ञदत्त लङ्कार के अध्यापकवर्ग में सम्मिलित हो जाने अध्यापक वर्ग की शेष कमी भी पूरी हो चुकी है। पक महानुभाव अपने २ विषयों की पढ़ाई में दत्तचि

मलेरिया ज्वर का प्रकोप पहिले की अपेक्षा हो चुका है तथापि थोड़ा २ अभी चला जा रहा है महोदय प्रयत्न कर रहे हैं कि बाकी रहा प्रकोप भ हो जावे। गुरुकुल के चिकित्सालय से ब्रह्मचारियों कुलवासियों के सिवाय आस पास के गांवों के भाई आदि का लाभ लेते हैं अतः चिकित्सालय को सहन करना पड़ता है। कुनीन आज २२) रु० पौंड रु० पौंड हो चुकी है। मलेरिया ज्वर में कुनीन प्रद सिद्ध हुई है परन्तु बढ़ती महंगी के कारण गु बोझ उठाने में असमर्थ है अब तक जैसे तैसे का गया। किन्तु अब स्टौक ख़तम होजाने से हम बाधि हैं। क्या कोई दानी पुण्यात्मा दो एक पौंड कुनीन मंगाने के लिये धन भेजकर ब्रह्मचारियों और ग्रामी के कष्ट को हलका करने में हमारी सहायता करके भागी बनेंगे। ब्रह्मचारियों के संरक्षक महानुभावों प्रार्थना है कि समर्थ और श्रीमन्त संरक्षक महोदय भी सहायता हमारी करें तो वह ब्रह्मचारियों की नि हमारे बड़े सहायक हो सकते हैं। जो दानी महानुभ चारियों और गरीबों के लिये गुरुकुल के चिकि की सहायता करना चाहें वह अपना दान का पं मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, ज़िला करनाल के भेजने की कृपा करें।

निवेदक
प्रियव्रत मुख्याधिष्ठा

Regd. No. L. 5004.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

कहानी— —भावना के आधार पर

आर्य्य राज्य

ले०—पं० विष्णुमित्र भू० पू० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कुरुक्षेत्र]

— गतांक से आगे —

युवराज का यह कार्य जघन्य है। वह षड्यन्त्र में सम्मि- ा ही नहीं प्रत्युत यह सारी लीला उसीकी है। एक युवराज जो राज्य का उत्तराधिकारी हैं पुत्र तुल्य प्रजा के साथ का यह व्यवहार कदापि क्षन्तव्य नहीं। मानाकि इस बुढ़ापे प्यारे युवराज लोकपाल के वियोग का मुझे असह्य दुःख ा उसकी माता को मुझ से बढ़ कर दारुण दुःख होगा। ा दुःख कि शायद वह एक दम पागल और अचेत हो ागी पर होजाय। मैं भी प्यारे युवराज लोकपाल का पिता ू हूं पर अपने राज्य का राजा भी तो हूं। एक आर्य्य ा मोह में फंसकर अधर्म नहीं कर सकता और न्याय से ू नहीं मूंद सकता। मुझे वही करना होगा जो कि आर्य्य ा को करना चाहिये। मैं आर्य्य हूं मुझे आर्य्यत्व का ामान है। मोह और दया की दलदल में फंस जाना एक र्य्य राजा को शोभा नहीं देता। मुझ से पहिले प्राचीन ाओं वे धर्म और न्याय की खातिर अपने प्राण दिये और ों से प्यारे पुत्र और प्राणों से प्यारी स्त्री का परित्याग ा पर धर्म न्याय को नहीं छोड़ा।

मन्त्रिन्! मैं इस विषय में जो फैसला दे चुका हूं लोक- को बुलाकर भरी सभा में निःशंक होकर सुनाओ। आज्ञा ही हथकड़ी डाले हुए युवराज लोकपाल को लाया गया। ण्ड मिलता है यह मन्त्री के मुख से सुनने के लिये ुक प्रजा-निस्तब्ध खड़ी है। चित्र लिखित की तरह कोई ा सांस तक नहीं लेता। सन्नाटा छाया हुआ है। एक कोने ुवराज लोकपाल की माता की आंखों से अश्रुओं की झड़ी हुई है। अवरुद्ध कण्ठ से और बड़ी कठिनता से राज ने इस प्रकार कहना प्रारंभ किया। युवराज को आजीवन ावास और इस अधर्म में युवराज का साथ देने वाले ्याधीश और पुलिस अफसरों को सात सात वर्ष कड़ी और पच्चीस २ हजार का जुर्माना, राजाज्ञा सुनते ही लाखों ों से कड़ी सजा कड़ी सजा की एक साथ आवाज़। वृद्ध ाण ने दोनों हाथ उठाकर कहा अहा आर्य्य राज्य में न्याय। के आज्ञा सुना देने पर महाराज धर्मराज ज्योंहि सायं- ीन नित्य कृत्य के लिये अपने प्रार्थना भवन द्वार पर पहुंचे ि द्वारपाल ने एक घबराये हुए नगर रक्षक को महाराज ामने लाकर खड़ा किया। द्वारपाल के चले जाने पर ान्तुक ने महाराज के चरणों पर गिर कर गिड़गिड़ा कर । महाराज मैं निरपराध हूं मेरे हाथ से सैर से वापिस ा हुआ एक बालक मारा गया। बालक ने काली वर्दी नी हुई थी। अन्धेरे में कोई क्रूर हिंसक पशु समझ कर मैंने पर फायर करदिया जब वह गिर पड़ा पास जाने पर मालूम कि वह एक सुन्दर बालक है। युवराज उसके पीछे आरहे थे बन्दूक की आवाज सुन वहां पहुँचे। मैं भी उन्हें समीप आया जान पकड़े जाने के भय से भाग पड़ा।

श्रीमन् मुझे बचाओ! शरणागत की रक्षा करो। राजा ने सहायता का वादा कर निरपराध शरणार्थी आगन्तुक को अपने बगीचे में ही ठहरने की अनुमति देदी। ताकि वह समय पा कर अन्यत्र चला जाय। उसके जाने के साथ ही महाराज के सामनें एक शव लाया गया। घातक का पीछा करने वाले भृत्यों ने जब घातक का हुलिया बयान किया और राजमहल की तरफ ही उसके भागने का जिकर किया तब महाराज को निश्चय होगया कि इस बालक का वही घातक है जिसे मैंने रक्षार्थ वचन दिया है। बालक के शव को लाने वाले भृत्यों को भेजकर महाराज ने बालक के हाथ की नाड़ी को देखा। और हाथ से उसके मुख पर पड़े कपड़े को उठाकर ज्योंही देखा त्योंहि हा! धर्मपाल कह कर कटे कदली स्तम्भ की तरह धरनी पर गिर पड़े। होश आने पर आश्चर्य और दुःख के वेग को संभाल कर बगीचे का ताला खोल उस पुत्र घातक पापी से कहा कि ऐ मनुष्य! जिसको तूने मारा है वह मेरा कनिष्ट पुत्र धर्मपाल था। तेरा अपराध ऐसा है जिसके लिये तुझे कठोर से कठोर दण्ड दिया जाय पर मैंने धर्म पूर्वक अपना वचन तुझे बचाने के लिये दिया है अतः अपने वचन का पालन करूंगा। उसी समय स्वयं अस्तबल से अपना एक घोड़ा लाकर उससे कहा कि जब तक रात्रि का अन्धेरा तुझे छिपाये रहता है भाग जाओ। तेरे हाथ खून से कलुषित हैं। परमात्मा न्यायी है। मैं बड़ी नम्रता से उस परमपिता का धन्यवाद करता हूं जिसने मेरे धर्म पर धब्बा नहीं लगने दिया। रातो रात यह दुःख दायी घटना सारी नगरी में फैल गई। प्रातः अभी सूर्य्य भी उदय नहीं हुआ था कि शोक ग्रस्त प्रजा ने दूसरा दुःख दायक समाचार सुना कि महाराज, युवराज लोकपालके जघन्य कार्य्य से और छोटी उमर में ही कनिष्ट पुत्र धर्मपाल के मारे जाने से अपने अन्दर ही कुछ कमी देख एकान्त वास करने के लिये गंगा के किनारे किसी तपोवन में चले गये हैं। इधर महाराज के चले जाने पर पास के राजा शूरसिंह ने अवसर जानकर नगरी पर चढ़ाई करदी। नगरी पर आक्रमण की आशंका से मंत्री धीमान् ने पहिले ही प्रबंध कर रखा था। शत्रु को निकट आया समझ केवल एक सौ सैनिकों को जिन्होंने नगरी की रक्षा के लिये अपनी सेवायें दी हुई थीं उन्हें एक स्थान पर व्यूह बनाकर खड़ा कर दिया और उन्हें समझा दिया कि जिस समय शत्रु निकट आजाय शस्त्र छोड़ कर सफैद झंडी लेकर खड़े हो जाओ। सैनिकों ने वैसा ही किया। बिना सैनिकों के आत्म समर्पण कर देने से शत्रु सेना उन सैनिकों के चारों ओर आकर खड़ी होगई और नगर प्रवेश के मनसूबे बान्धने लगी। उसी समय एक ऐसा धड़ाका हुआ जिसके साथ ही तमाशबीन प्रजा की एक पार्टी ने कहा कि—बलि वेदी पर मर मिटने वालों की जय—इतने में ही दूसरी पार्टी ने कहा कि—नृप विहीन नगरी पर आक्रमण-कारी का क्षय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

[पं० यशपाल जी अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

(१) आर्य्य समाज अम्बाला छावनी का उत्सव १३ से १५ नवम्बर को बड़ी धूम धाम से मनाया गया इस उत्सव में श्री पं० ज्ञानचन्द जी सभा उप प्रधान, श्री पं०प्रियव्रत जी आचार्य उपदेशक विद्यालय, श्री पं० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार इत्यादि महानुभावों के व्याख्यान तथा श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी तथा म० देशराज जी के भजन हुए। उत्सव बड़ी सफलता पूर्वक समाप्त हुआ। श्री पं० यशपाल जी अधिष्ठाता वेद प्रचार की अपील पर १०००) भिन्न २ संस्थाओं के लिये एकत्रित हुआ।

इसके अतिरिक्त इन तिथियों में आर्य्य समाज रावलपिंडी सदर, सुजानपुर, रामगली, गऊशाला कैथल, गऊशाला कोटनिक्का के उत्सव बड़ी सफलता पूर्वक समाप्त हुए। मुझे यह लिखते हुए यह प्रसन्नता है कि सब आर्य समाजें अपने उत्सवों पर यथाशक्ति उदारता से वेदप्रचार निधि की सहायता कर रहीं हैं।

(२) सभा का कार्य्य बहुत बढ़ रहा है इसलिये सभा ने इस मास श्री म० जय प्रकाश जी धनुर्धर म० देवकी नन्दन जी म० दुर्गादत्त जी म० मेलाराम जी तथा म० धर्मपाल जी इन पांच भजनीकों की सेवाएं प्राप्त की हैं। सभा के बढ़ते हुए कार्य्य को दृष्टि में रखते हुए आर्य्य समाजों का यह कर्त्तव्य है कि वे बड़ी उदारता से वेद प्रचार निधि की सहायता करें।

(३) इस मास में अमरनाथ जी भजनोपदेशक के प्रयत्न से टिब्बी, लुण्डां (डेरागाजी खां) तथा आर्य समाज अम्बाला छावनी के प्रयत्न और स्वामी निर्भयानन्द जी बेधड़क के प्रचार से हीरा मिस्त्री चौक अम्बाला में नई समाजें स्थापित हुई हैं।

(४) ४-६ दिसम्बर को निम्न उत्सव नियत हुए हैं और उनका प्रबन्ध निम्न प्रकार से किया गया है।

लड़ांवाला—आचार्य प्रियव्रत जी ला० चिरंजीलाल जी वानप्रस्थी, म० चिरंजीलाल जी प्रेम, पं० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार, म० हंसराज जी, म० मेहरचन्द जी तथा म० जय प्रकाश जी।

कालाबाग—श्री स्वामी सेवकानन्द जी, महाराज पं० तीर्थ राम जी पं० गुरुदत्त जी म० शमशेर सिंह जी म० गुलशन लाल जी।

मण्डी बहाउद्दीन—पं० पूर्णचन्द जी सिद्धान्त भूषण, म० देशराज जी।

फाजिलका—स्वामी ज्ञानचन्द जी म० भक्तराम जी।

(५) आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पं० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार तथा म० मेहरचन्द जी लाय होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सम्बन्ध में कर रहे हैं।

(६) आर्य्य समाज रिसालपुर (पेशावर) का वार्षिक १६. १२. ४२, को निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान ड० मुन्शीराम जी।

उप प्रधान म० रामलाल जी।

मंत्री म० मुलखराज जी।

उप मंत्री म० प्रीतमचन्द जी।

,, ,, म० भगवान दास जी।

कोषाध्यक्ष म० ओ३म् प्रकाश जी।

(७) जिला डेरा गाज़ीखां में वेदप्रचारणी सभा जाम उत्साह से प्रचार का कार्य्य कर रही है। जिला डेरा खां की सब आर्य्य समाजों को धन से वेद प्रचारणी की सहायता करनी चाहिये।

(८) जब से श्री पं० जयदेव जी वेदालंकार ने गुरुकुल मु के कार्य्य को सम्भाला है तब से गुरुकुल उन्नति पर अग्रसर हो रहा है। यह निश्चय है कि उनके प्र गुरुकुल की पुरानी शिथिलता दूर हो जायेगी। जिल गाज़ीखां तथा जिला मुलतान की समाजों का विशे से यह कर्तव्य है कि वे विशेष रूप से गुरुकुल की सह करें। सभा को मालूम हुआ है कि म० राजपाल कि मंडली इन ज़िलों में किसी गुरुकुल के लिये धन संग्र रही है। आर्य्य समाजों को यह सूचना देना आवश्य कि म० राजपाल तथा उनके गुरुकुल का आर्य्य प्रति सभा पंजाब से कोई सम्बन्ध नहीं है। सब आर्य्य स को गुरुकुल मुलतान की सहायता करना अपना क समझना चाहिये।

(९) आर्य्य समाज टिब्बी लुण्डां में नई आर्य्य समाज स्थ हुई हैं उन्हें मंदिर के लिये स्थान मिल गया है जिला गाज़ीखां की समाजों का कर्त्तव्य है कि उन्हें मंदिर नि के कार्य में सहयोग दें।

(१०) श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने इस वर्ष बड़ी पूर्वक हरियाना प्रान्त में प्रचार के कार्य्य में सभा के सहयोग करना स्वीकार किया है। वे १५ दिसम्बर बालमुकन्द जी भजनोपदेशक को साथ लेकर रोहतक का दौरा करेंगे। यह निश्चय है कि उन के सहय ज़िला में नवीन प्राणों का संचार होगा। मैं सभा की से स्वामी जी महाराज का हार्दिक धन्यवाद करता

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

Regd. N. L. 5004.

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार, सभा-म.

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

संख्या २४, अंक ६] ३ जनवरी १९४३ [वार्षिक मूल्य ४)

जीवात्मा कैसे मुक्त हो सकता है

(३)

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति॥

तैत्तिरी०। (आनन्दवल्ली। अनु० १)

(यः) जो जीवात्मा (गुहायाम्) अपनी बुद्धि और (परमे व्योमन्) आत्मा में (निहितम्) स्थित (सत्यम्) सत्य (ज्ञानम्) ज्ञान और (अनन्तम्) अनन्त (ब्रह्म) आनन्दस्वरूप परमात्मा को (वेद) जानता है, वह (ब्रह्मणा) व्यापकरूप ब्रह्म में स्थित होकर (विपश्चिता) उस अनन्त विद्यायुक्त ब्रह्म के (सह) साथ (सर्वान्) सब (कामान्) कामों को (अश्नुते) प्राप्त होता है अर्थात् जिस जिस आनन्द की कामना करता है उस २ कामों को प्राप्त होता है। यही मुक्ति कहाती है।

—दयानन्द

भावार्थ—संसार में प्रत्येक मनुष्य यह चाहता है कि वह इस दुनियां में आकर पूर्ण सुखी हो और वह जिस२ पदार्थ की कामना करे वह उसे प्राप्त हो। परिणामतः वह इसके लिये प्रयत्न भी करता है। परन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे जिन२ साधनों का अवलम्ब करना चाहिए उनकी उपेक्षा करता हुआ वह अतिरिक्त उपायों को ही अपनाता है।

इस मन्त्र के अन्दर मुक्ति अर्थात् तत्तत्कामनाओं की पूर्ति के साधन का वर्णन है। जब जीवात्मा सत्य ज्ञान और अनन्त परमात्मा के स्वरूप को भली भांति समझ लेता है तो उसका अपना ज्ञान भी सत्य और ज्ञानमय तथा उदार हो जाता है। यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह जिस परिस्थिति और वातावरण में रहता है उसका उस पर असर पड़ कर ही रहता है। इसलिए अ जीवात्मा परमात्मा के उपर्युक्त स्वरूप को सदै अपने सामने रखता है तो उसमें भी सत्य ज्ञा और उदारता का अवतार होता है। अगर हमारे जीवन में यह तीन गुण भली भांति आजाएं तो हम सद्सद् विवेक के कारण कभी दुःखों के पाश में नहीं फंस सकते और हम जिस२ आनन्द की कामना करते हैं वह पूर्ण होता है। बस यही मुक्ति है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यर्थ जीवन

रचयिता—राय साहब लालचन्द

जिन स्वार्थ वश भटका किया,
जग में जिया तो क्या जिया ?
जग में रहा निज भोगवश,
अपने को पहचाना नहीं।
दिन दिन फंसा यहां कीच में,
ऐसा जिया तो क्या जिया ?
वह प्रेम मय भगवान जग में,
व्यापता है सब जगह।
उस को न देखा जगत् में,
यों ही जिया तो क्या जिया ?
सब के हृदय में ज्योतिमय,
भगवान का ही वास है।
उसको न देखा हृदय में,
निष्फल जिया तो क्या जिया ?

एक स्वाध्याय—

हज़ार आंखों वाले गुप्तचर

[लेखक—श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यावाचस्पति लाहौर]

[४]

उत यो द्यामतिसर्पात् परस्तान्न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः ।
दिव स्पशः प्रचरन्तीदमस्य सहस्राक्षा अति पश्यन्ति भूमिम् ॥ अथर्व०४।१६।४

अर्थ—(यः) जो (द्यां) द्युलोक को (उत) भी (परस्मात्) परे (अतिसर्पात्) लांघ कर चला जाय (सः) वह (वरुणस्य) वरुण (राज्ञः) राजा से (न) नहीं (मुच्यातै) छूट सकेगा (अस्य) इस वरुण के (स्पशः) गुप्तचर (दिवः) द्युलोक से (इदं) इस भू लोक तक (प्रचरन्ति) फिर रहे हैं (सहस्राक्षाः) सहस्रों नेत्रों वाले के (भूमिं) भूमि को (अतिपश्यन्ति) पार करके भी देख लेते हैं।

गत मन्त्र में यह बताया गया था कि वरुण महाराज सारे विश्व में व्याप्त हैं और सारा विश्व उनकी कुक्षि में में पड़ा है। क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड से परे भी व्यापक हैं इसी लिये उनकी आंखों से कोई भी नहीं बच सकता गत मन्त्र के ध्वनि से निकलने वाले इसी भाव को प्रस्तुत मन्त्र में सुस्पष्ट करके बतलाया गया है।

यदि कोई व्यक्ति उड़ कर द्यु लोक से परे भी चला जाय तो भी वह राजा वरुण की पकड़ से छूट नहीं सकता । यदि वहां वरुण भगवान की पहुंच न होती तो वह छूट भी जाता। पर प्रभु तो द्युलोक में भी है और त्रिलोक से परे भी हैं। इस लिए वहां पहुंच कर भी उनकी पकड़ से कोई बच नहीं सकता । इसी भांति यदि कोई व्यक्ति भूमि के गर्भ में भी जा छिपे तो भी वो भी वह भगवान् की पकड़ से बच नहीं सकता । क्योंकि भगवान् भूमि के आवरण को पार कर के भी देखते है। सर्वत्र व्यापक प्रभु की दृष्टि से भला कोई स्थान कैसे छिपा रह सकता है ?

भगवान् द्वारा पकड़े जाने को एक आलंकारिक रूप में वर्णन करके कहा है कि द्युलोक से लेकर पृथिवी तक सर्वत्र भगवान् के गुप्तचर फिर रहे हैं। इन गुप्तचरों की सहस्रों आंखें हैं। इसलिए इनकी आंखों से कोई भी नहीं बच सकता सर्वत्र फिर रहे, सहस्रों आंखों वाले ये वरुण भगवान् के गुप्तचर भगवान् को सब बातों के समाचार दे देते हैं । कहीं पर भी कोई व्यक्ति क्यों न हो उसके सब विचारों और उसकी सारी चेष्टाओं को ये गुप्तचर भगवान् को निवेदन कर देते हैं।

ऊपर के मन्त्र में, तथा अन्यत्र भी अनेक मन्त्रों में, भगवान् को सर्वव्यापक कहा गया है। इसके साथ ही ऊपर प्रथम मन्त्र में, तथा अन्यत्र भी अनेक स्थलों में, प्रभु को सर्वद्रष्टा भी बतलाया गया है। इस लिये सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा प्रभु को किसी स्थान पर हो रही किसी बात को जानने के लिये किसी गुप्तचरों की आवश्यकता नहीं हो सकती । इस लिये वरुण के गुप्तचरों का यह वर्णन स्पष्ट ही अलंकारिक है। प्रभु ने विश्व ब्रह्माण्ड में भाँति भाँति के जो नियम बना रखे हैं वे ही उनके गुप्तचर हैं । जब कहीं पर स्थित कोई व्यक्ति प्रभु के किसी नियम को भंग करता है तो उस व्यक्ति का नियम भंग उस प्रभु को झट पता चल जाता है । जैसे वह नियम ही गुप्तचर बन कर भगवान् को अपने भंग की सूचना दे रहा हो। इस अलंकार का तात्पर्य इतना ही है कि पाठकों के मन पर यह बात अच्छी तरह अंकित हो जाय कि हमारा कोई भी पापाचरण, कोई भी नियम भंग सर्वज्ञ प्रभु की आंखों से बच नहीं सकता। आध्यात्मिक अर्थ में तो वरुण के गुप्तचरों का यह वर्णन अलंकारिक ही होगा। परन्तु वरुण के *अधिराष्ट्र अर्थ में यह वर्णन आलंकारिक न होकर बिल्कुल तात्विक होगा।

हे मेरे मन ! प्रभु के गुप्तचर सर्वत्र हैं। तू जो भी पाप करेगा उसे वे झट प्रभु को कह देंगे। तू कहीं चला जा वहीं वे तुझे देख लेंगे । इस लिये तू कभी पाप में प्रवृत्त न हो।

* अधिराष्ट्र अर्थात् राजनीति शास्त्र सम्बन्धी अर्थों में वरुण के क्या अर्थ होंगे इसके लिए हमारा "वेदों के राजनैतिक सिद्धान्त" नामक ग्रन्थ देखना चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

श्रद्धानन्द-सप्ताह समारोह

२० दिसम्बर से गुरुकुल विश्वविद्यालय में अपूर्व समारोह के साथ श्रद्धानन्द-सप्ताह का कार्यक्रम प्रारम्भ होगया। प्रातःकाल ४ बजे महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों और उपाध्यायों ने समस्त गुरुकुल में प्रभात फेरी की। सूर्योदय होने पर उमड़ती हुई भीड़ ने गुरुकुलीय बैण्ड बाजे के साथ कुल-पताकाभिवादन की विधि सम्पन्न की। तत्पश्चात् खेलों का प्रोग्राम शुरु हुआ। हाकी में सबसे पहला मैच गुरुकुल के स्नातकों का ब्रह्मचारियों के साथ हुआ। खिलाड़ियों और दर्शकों, दोनों में उत्साह की मात्रा अधिक दृष्टिगोचर होती थी। हाकी के अतिरिक्त बालीबाल, फुटबाल, कबड्डी आदि के सान्मुख्य भी विशेष उल्लास के साथ होते रहे। साथ ही अन्धा युद्ध, बाधा दौड़, ५ मील की हर दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, दाह कबड्डी तथा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

श्रद्धांजलि

समर्पक:—प्र० स० धर्म देव विद्यावाचस्पति साहित्य भूषण, स० मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

१. गुरुवर के पावन चरणों में,
हो मेरा सौ बार प्रणाम।
नव-जीवन संचार करे,
जिनका मृतकों में भी शुभनाम॥
जिनकी करुणा से श्रुति अमृत,
का था मैंने पान किया।
दिव्य भक्ति पीयूष पिला कर,
मुझे उन्हीं ने तृप्त किया॥

२. उनका सरल विमल दिल श्रद्धा
का था अति सुन्दर मन्दिर।
शान्ति सलिल बहता था शीतल
निर्मल नित जिसके अन्दर॥
जो आता सम्पर्क उसी में,
श्रद्धा घर कर जाती थी।
चिन्ता निर्बलता व्याकुलता,
सभी दूर भग जाती थी॥

३. वीर केसरी का वह गर्जन,
जब सुनने में आता था।
भय के सारे भूतों को वह,
कोसों दूर भगाता था॥
ऐक्य संगठन बिगुल बजाया,
जब निर्भय सन्यासी ने।
बिछुड़े भाई गले लगाये,
लाखों प्रभु विश्वासी ने॥

४. जहाँ कहीं अन्याय दमन का,
चक्र चला उसने देखा।
बाजी अपने प्राणों तक की,
उसे लगाते जग देखा॥
जलियाँ वाला बाग उपद्रव,
अथवा सिक्खोंका गुरु बाग।
अत्याचार जहाँ भी पाया,
वहीं लगा दी उसने आग॥

५. त्याग त्याग कहते हैं सारे,
किन्तु कहां वह त्याग मिले।
तन मन धन सर्वस्व समर्पक,
कहाँ धर्म अनुराग मिले॥
इससे बढ़ कर कहो दान क्या,
जो उसने कर दिखलाया।
धर्म वेदि पर निज बलि देना,
हँसते हँसते सिखलाया॥

६. क्यों न धन्य अपने को मानें,
जिन ने ऐसे गुरु पाये।
माता पिता मित्र सब ही का,
नेह निभाते गुरु पाये॥
करें कृपा प्रभु उनके होवें,
हम सब सच्चे अनुयायी।
बना यज्ञ मय जीवन अपना,
होवें सब के सुखदायी॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्य

रविवार ३ जनवरी १९४३

कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

२४, २५, २६, २७, २८ दिसम्बर के १९४२ को कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव समारोह के साथ समाप्त हुआ। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी श्री पं० बुद्धदेव जी सभा प्रधान श्री पं० ज्ञान चन्द जी सभा उपप्रधान, भीमसेन सभा मंत्री. पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार अधिष्ठाता वेदप्रचार प्रो० सुखदेव जी गुरुकुलोपाध्याय सम्मिलित हुए। श्रीमती अंगिरादेवी ज सुपुत्री स्वर्गीय सेठ रघुमल [illegible] धर्मपत्नी ला० हंसराज जी गुप्ता ने कन्याओं [illegible] पारितोषिक वितरण किया। ८ स्नातिकाओं ने गुरुकुल शिक्षा समाप्त की। श्री पं० बुद्धदेव जी सभा प्रधान के प्रधानत्व में दीक्षान्त संस्कार हुआ। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने दीक्षान्त भाषण दिया। पं० ज्ञानचन्द जी सभा उपप्रधान ने कन्या गुरुकुल प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और २७ दिसम्बर ४२ की दुपहर को कन्यागुरुकुल लिये धन संग्रह की अपील की। अपील पर ३२०००) की प्रतिज्ञाएं इनमें से २३०००) नकद प्राप्त हुआ। वेदारम्भ संस्कार में ३० नई कन्याएँ प्रविष्ट हुई।

सर सिकन्दर का स्वर्गवास

२६ दिसम्बर १९४२ की रात को ११ बजे, पंजाब प्रान्त के प्रधान मंत्री सर सिकन्दर का हृदयगति के बन्द होने के कारण अकस्मात स्वर्गवास हो गया। आभी दो तीन दिन आपके परिवार में ३ विवाह सामारोह हुए। अभी इस मंगलावसर पर बधाईयों के तार आरहे थे। बई तार मृत्यु घटना से दो तीन घण्टा पूर्व आप थे। इस असामयिक मृत्यु घटना को जिसने सुना वही स्तम्भित हो गया। हम इस अवसर पर सरकिन्दरके परिवार के साथ समवेदना प्रकट करते हैं। सर सिकन्दर पंजाब एसेम्बली की युनियनिस्ट पार्टी के नेता थे और इसी हैसियत से पंजाब के प्रधान मन्त्री थे। उनकी नीति से मत भेद होते हुए भी इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि वह पंजाब के मुसलमान समाज्यों के प्रभावशाली नेता थे। वह स्वभाव के मिलनसार और व्यवहार कुशल थे। पंजाब के साम्प्रदायिक संघर्ष की तीव्रता को उनके मिलनसार स्वभाव ने उग्ररुप लेने से पर्याप्त मात्रा तक रोके रखा। सर सिकन्दर का प्रभाव केवल पंजाब तक ही सीमित नहीं था। भारतीय सरकार तथा ब्रिटिश सरकार भी उनकी सम्मति तथा प्रभाव से पर्याप्त लाभ उठाते रहे हैं। वर्तमान महायुद्ध में उन्होंने इंगलैण्ड अमरीका आदि को पर्याप्त सहायता दी। पंजाब के राजनैतिक क्षेत्र में युनयनिस्ट पार्टी में उनकी मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ है उस स्थान को दायित्व के साथ संभालने वाला कोई व्यक्ति दृष्टि गोचर नहीं होता।

शिक्षा का आदर्श

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में, भारतवर्ष के अनेक शिक्षालयों में दीक्षान्त संस्कार हुए। इन्दौर में श्रीयुत जयकर ने दीक्षान्त भाषण दिया। लाहौर में पंजाब के शिक्षा मंत्री श्रीयुत हई ने भाषण दिया। अनेकों भारती युवक शिक्षित होकर जीवन संग्राम में उतरे। इन्हीं दिनों कन्या गुरुकुल में भी श्रीयुत महात्मा नारायण स्वामी जी ने आर्य जाति की शिक्षा का वैदिक आदर्श जनता के सामने उपस्थित किया। कुछ दिन पूर्व हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री राधाकृष्णन् ने कलकत्ते में इसी विषय पर भाषण देते हुए भारतीय संस्कृति में शिक्षा के आदर्श की चर्चा की। पंजाब युनिवर्सिटी में दीक्षान्त भाषण देने वाले श्री० हई पंजाब सरकार के शिक्षा मन्त्री हैं। उनके भाषण में सरकारी दफ्तरी ढंग से पंजाब में हुई शिक्षा विषयक उन्नति का उल्लेख किया गया है। श्रीयुत जयकर ने अपने भाषण में कहा है कि साधारणतया यह समझा जाता है कि युद्ध के समय में, शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर विचार करने का अनुकूल अवसर नहीं होता। परन्तु उन्हों ने कहा कि उनकी सम्मति में युद्ध के अवसर पर विचार शील व्यक्ति के सामने शिक्षा विषयक समस्याएँ ज्वलन्त रूप में उपस्थित होती हैं। और उनकी गंभीरता पर मनुष्य का ध्यान जाए विना रहता। जिन जातियों ने अपनी शिक्षा पद्धति को भोगवाद की ओर प्रवृत्त करने वाली बनाया होता है वह फ्रांस की भाँति आपत्ति के समय संकट में पड़ जाती हैं। जिन जातियों ने शिक्षा पद्धति में तपस्या तथा त्याग को मुख्य रखा होता है वह इस प्रकार संकट के समयों में घबराती नहीं। हमारे देश की अवनति शिथिलता का मुख्य कारण यह है कि इस समय हमारे देश में जो शिक्षा पद्धति तथा पद्धतियां प्रचलित हैं उन में आदर्शवाद तथा राष्ट्रीयता की भारी कमी है। सरकारी शिक्षा पद्धति का मुख्य उद्देश्य योग्य कर्मचारी, वकील तथा व्यवसायी पैदा करना है। अध्यापक और विद्यार्थी का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि वह धनोपार्जन के लिये अपने आपको अधिकसे अधिक उपयोगी बनाने का यत्न करता है। कई अवस्थाओं में जो शिक्षा दी जाती है वह निरुद्देश्य होने के साथ २ रोटीन के तौर पर दी जाती है। यह कमी तभी दूर की जा सकती जब कि अध्यापक शिक्षा का आदर्श धनोपार्जन योग्यता को न मान कर स्वावलम्बी मनुष्य बनाना मानते हैं। अथवा कम से कम अध्यापक विद्यार्थियों को वैतनिक गुण के रूप में शिक्षा देना ही अपना कर्त्तव्य न समझते हों। अपितु कर्त्तव्य बुद्धि से राष्ट्र की सेवा की भावना से निर्वाह योग्य जीविका लेकर विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं। विद्यार्थी भी यह न समझते हों कि यह वैतनिक गुरु है।

आर्य समाज शिक्षा के जिस आदर्श को के सामने रखता है, उसका एक मूलभूत सि यह है कि अध्यापक विद्यार्थी के साथ आ का सम्बन्ध स्थापित करके उसे शिक्षित चाहते हैं। विद्यार्थियों को राष्ट्र की सम्पत्ति उसे अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने वाला चाहते हैं। दूसरा मुख्य सिद्धान्त यह है कि वाले विद्यार्थी और कम से कम अपने शिक्ष में जन्म मूल तक तथा सामाजिक ऊँच भावों से दूर रह कर भाई भाई के सम्बन्ध से शिक्षा समाप्त करने के बाद, शिक्षणालय विदा होने के बाद भेद भाव हो—परन्तु कम से शिक्षाकाल में उनके अन्न पान रहन सहन के भेद भाव न हो, हम यह भी कह सकते हैं कि कल के साम्यवादी जिस साम्यवाद को समाज में सार्वजनिक जीवन के हरेक पहलू में करना चाहते हैं, आर्य विचारक उस साम्यवाद ब्रह्मचर्य दशा में स्थापित करना चाहते थे। चर्याश्रम समाप्त होने पर आचार्य उसके स्व आदि को देखकर उसे विविध क्षेत्रों में भि भागों पर ब्राह्मण क्षत्रिय आदि वर्णों के धर्म प करने के लिये प्रवृत्त करना था। वर्तमान समय भारतवर्ष में जो शिक्षा स्कूलों कालेजों में दी ज है वह विद्यार्थिदशा में ही उनके छोटे बड़े ग अमीर आदि के भेद भाव को पदा करते हैं। संस्कृति के आदर्श के अनुसार द्रोणाचार्य और द्रुपद गुरुकुल में रहते हुए एक ही गुरु से शि लेते थे। कृष्ण सुदामा—गुरुकुल में रहते हुए ही गुरु के चरणों में समान रूप में बैठते थे। अ भी हमारे देश में विशेषता हिन्दू जाति में इस की भारी आवश्यकताएँ हैं कि हमारे शिक्षणाल छूत, अछूत ब्राह्मण क्षत्रिय आदि के जन्म तक भावों को प्रकट करने वाले चिह्न सर्वथा मिटा जाएँ। सरकारी शिक्षणालयों में तो जन्म मूल भेद भाव के साथ २ हिन्दु मुसलमान भेद भावों आधार पर भी भेद भाव पैदा होते हैं। इस स भारतवर्ष के विविध समाजों में जो अनेक दिखाई देती है जिसके दूर करने लिये राजनैति नेता आज कर रहे हैं—उसका एक मुख्य उ यह है कि शिक्षणालयों में इस प्रकार के भेदभ विलकुल न हों। पंजाब के शिक्षा मंत्री श्री हई एकता भ्रातृभाव पर बल दिया है-परन्तु क्या उ पता नहीं कि पंजाब सरकार शिक्षा विभाग दिशा में अध्यापकों और विद्यार्थियों के चुनाव कई प्रकार के जन्म मूलक तथा साम्प्रदायिक भावों को ध्यान में रखकर कार्य करता है।

हमारी सम्मति में, वर्तमान महायुद्ध की भय रता ने इस आवश्यकता को और भी अधिक रूप से हमारे सामने रख दिया है। भारतवर्ष विचार शील शिक्षा शालियों को चाहिए कि युरोप की अथवा सरकार द्वारा स्वीकृति प्रचलित शिक्षा पद्धति को छोड़ कर आर्य संस्कृति के शि सम्बन्धी आदर्श को जनता के सामने रखें। में देश का भला है। इसी शिक्षा पद्धति से राष्ट्र हो सकता है।

—समाचार प्राप्त हुआ है कि सर सिकन्द स्थान पर मेजर खिजर हयात [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ान-पद्धति और आर्यसमाज

ी पं जयदेव शर्मा विद्यालंकार चतुर्वेद भाष्यकार)

आज चतुर्दिक एकता का पाठ बड़े ऊँचे स्वर पढ़ा जा रहा है। जिस ओर दृष्टिपात करो, ता की आवश्यकता पर बल दिया जाता है क्या र्मिक क्षेत्र क्या राजनैतिक सभी क्षेत्रों में एकता लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं। ब्रिटिश साम्राज्य ओर से भारत की स्वतन्त्रता की मांग को विदे- थ भारतमन्त्री हिन्दू-मुसलिम एकता न होने के हाने को लेकर टालते जारहे हैं। हम भी एकता विषय को ही लेकर कुछ विचार करने के लिये स्थित हुए हैं। किन्तु हमारी एकता का विषय —इस लेख का शीर्षक।

मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमारे ड़े २ तेता मौखिक व लेख-बद्ध एकता करण का यत्न तो अवश्य करते हैं किन्तु उसे क्रियात्मक प देने के लिये आगे पग नहीं बढ़ाते। हवन पद्धति विषय में नेता और पण्डित वर्ग के अतिरिक्त मारी प्रान्तीय और सार्वदेशिक समाजों ने जो पेक्षा रीति धारण की है वह असह्य है। क्योंकि न सभाओं के द्वारा ही सारे समाजों का सूत्र- ंचालन होता है। यदि नायक ही सचेत न होगा ी अनुयायियों के संचित रहने की आशा दुराशा- ात्र है। यही कारण है कि आजतक आर्यसमाज ऋषि दयानन्द के किसी भी उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल न हो सका। इसे आप आक्षेप न समझें क्योंकि यह एक कटु तथ्य है जिस पर हमें शान्त हृदय से विचार करना चाहिये। मेरा यह अभि- प्राय नहीं है कि आर्यसमाज ने कुछ नहीं किया और वह देश और जाति के लिये निकम्मा सिद्ध हुआ। किन्तु उसने स्वसामर्थ्यानुकूल देश जाति ही नहीं समस्त संसार की पर्याप्त सेवा की है। हां मैं यह पौनः पौन्येन अहूंगा कि ऋषि दयानन्द की उद्देश्यपूर्त्ति आर्यसमाज अभी तक नहीं कर सका। इसके कारणों में से एक कारण अनैक्य भी है।

अब मैं अपने अभीष्ट विषय पर आता हूं। दैनिक हवन-विधि से लेकर बड़े २ यज्ञों की विधि तक में आर्यसमाज में महान् अन्तर पाया है। आप किसी आर्य सज्जन के घर जांयें विधि देख कर आश्चर्य करेंगे। किसी समाज के सा० अधिवेशन में सम्मि- लित हों हवन पद्धति जानते हुये भी अनजान सिद्ध होंगे। संस्कारों में पहुँचें वहां भी मौन धारण ही भला प्रतीत होगा। यह क्यों? क्योंकि हमारी हवन-पद्धति की भी आज एकता नष्ट हो चुकी है। जबकि अभी हवन का यथेष्ट प्रचार भी नहीं होपाया है। क्या इस कमी को भी कभी आपने दूर करने का उद्योग किया? क्यों करते 'यह तो तुच्छ बात है' यह कह कर ही टाल दिया होगा।

ऋषि दयानन्द की प्रामाणिकता को न सही (?) एकता की दृष्टि से ही कम से कम एक पद्धति का प्रचार किया होता तो उन हवन-प्रिय नवीन जनों का कितना कल्याण होता जो कि नई २ विधियां देख कर ही दृढ़ संकल्प नहीं होते।

मैं दैनिक अग्निहोत्र विधि पर विस्तृत विचार न करते हुये केवल इसके लिये संस्कार विधि के गृहस्थाश्रम प्रकरणस्थ प्रकरणस्थ दै० अ० विधि की ओर संकेत कर आर्यसमाजों के सा० अधिवेशनों की पद्धति पर आज विचार करूँगा।

मेरे विचार से हवन-पद्धति की अनेक रूपता का कारण स्वाध्याय न्यूनता ही है। क्योंकि यदि मनन पूर्वक पद्धति पर विचार किया जाता तो ऐसा न होता और क्योंकि हवन का सामान्य प्रकरण संस्कार विधि से लिया गया है जो कि संस्कारों की समान पद्धति प्रत्येक संस्कार में बार २ * न लिखनी पड़े इस दृष्टि से ऋषि ने उसे (सामान्य प्रकरण को) लिखा है। और उसका हम मनन करते नहीं। बस उठाया और आदि से अन्त तक समाप्त कर दिया। इसी लिये यह सभी गड़बड़ है। सामान्य प्रकरण केवल विधि भाग नहीं है अपितु सामान्य विषय का प्रकरण है जिसमें सामान्य प्रकरण का विधि भी है। अस्तु, मैं इस लेख को अधिक न बढ़ाता हुआ। स्व-स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप सा० अधिवेशन की जैसी पद्धति (ऋषि दयानन्दकृत) समझी है उसे माननीय नेतृ-गण पण्डित वर्ग व प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक सभाओं के विचारार्थ नीचे लिख रहा हूँ :—

अथ साप्ताहिक हवन पद्धति

आदि में निम्न लिखित मन्त्रों का पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान् वा बुद्धिमान् पुरुष ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना स्थिर चित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगा के करे और सब लोग उसमें ध्यान लगा कर सुनें और विचारें।

अथेश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना:

ओ३म् विश्वानि.....। +

इतीश्वर प्रार्थनोपासना प्रकरणम्।

———

अथ स्वस्ति वाचनम्

.....। †

इति स्वस्तिवाचनम्

———

अथ शान्ति प्रकरणम्

.....। §

इति सामान्य प्रकरणम् §

———

* देखो संस्कार विधि की भूमिका।

+ आदि आठों मन्त्र अर्थ सहित। † स्वस्ति- वाचन के सारे मंत्र। § शान्ति प्रकरण के सारे मंत्र।

§ इन तीनों का विनियोग संस्कार विधि के गृहा- श्रम प्रकरणान्तर्गत अतिथि यज्ञ के पश्चात्—'इस प्रकार पक्षयाग अर्थात् जिसके घर में अभाव से अग्निहोत्र [तात्पर्य, दैनिक अग्निहोत्र से है] न होता हो

[अथ आचमनम्]

अपने २ जल पात्र से सब जो जो कि यज्ञ क को बैठे हों वे इन मन्त्रों से तीन २ आचमन अर्थात् एक २ से एक २ बार आचमन करें, मन्त्र ये हैं।

ओं अमृतोपस्तरणमसि०.....आ

[यथ अङ्गस्पर्श]

ओं वाङ्म आस्येस्तु०.....आ

[अथ समिधाचयनम्]

.....

[अथ अग्न्याधानम्]

.....

[अथ अग्नि प्रदीपनम्]

.....

[अथ समिदाधानम्]

.....

[अथ पंच आज्याहुतयः]

.....

[अथ जलसिञ्चनम्]

.....

[अथ आधारावाज्य भागाहुतयः]

.....

[अथ दैनिक षोडशाहुतयः]

.....

इसके पश्चात्—सं. वि. सामान्यप्रकरण में ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि.....आ चार मंत्र हैं—वे मेरी समझ में यहां करने आ श्यक नहीं (क्योंकि वे चौल समावर्तन विवाह में मुख्य हैं) किन्तु इनके स्थान में— सङ्गच्छध्वं०, सहृदयं सामनस्यम्०, सगानी अ इन चार मन्त्रों से मुख्याहुति दी जावें। तदन ओं त्वन्नो आदि आठ आहुतियां दी जावें।*

सं. वि.—पौर्णमासी और अमावस्या के नैत्यिक अग्निहोत्र की आहुति देवें।

तदनन्तर चार आधारावाज्य भागाहुतियां चार व्याहृति आहुतियां देकर १ स्विष्टकृत् होमा और १ प्राजापत्याहुति देकर ओं सर्व० से पूर्णाहुतियां दें। बस।

तो सर्वत्र पक्ष यागादि में.....पृष्ठ ४-१३ में प्रमाणे ईश्वरोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण यथा योग्य करें।' इस विधान के अनुसार किय क्योंकि समाज मन्दिर(घर)में दैनिक अग्निहोत्रमें समस्त सभासद् वहाँ नहीं पहुँचते हैं।

* दैनिक १६ आहुति दें जिनमें चार 'आ वाज्य भागाहुति ऊपर आचुकीं। शेष १२ यहाँ १६ सायंकाल की चार आहुति मिलाकर हैं। समाज में क्योंकि एक ही समय हवन होगा। सायंकाल की भी आहुति देनी चाहिये देखो पंच यज्ञ विधि—एकस्मिन्काले सर्वाभिर्वा 'कोई कहे आहुतियां पाठ में क्यों दें और दें तो पहले क्यों तो देखो—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थ प्रतिनिधि सभा पंजाब का, पंजाब तथा सिंध प्रान्तों दियों की बाढ़ से पीड़ित जनता की सहायतार्थ किया गया कार्य

[श्री ला० शादीलाल जी भल्ला एम० ए० एल० एल० बी० स० अधिष्ठाता]

नवम्बर १९४२ के आर्य में श्री मन्त्री जी र से भूमिका के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा के पंजाब तथा सिंध प्रान्तों में नदियों की से पीड़ित जनता की सहायतार्थ किये गये पार प्रकाश डाला गया था, अब मैं आर्य में या इस कार्य की रिपोर्ट अवलोकनार्थ अर्पण हूं।

स्त वर्ष जुलाई तथा अगस्त मास में सिंध में सिन्ध नदी के बाढ़ से, तथा पञ्जाब प्रांत वी नदी के बाढ़ से इन स्थानों की जनता को र रूप का कष्ट सहन करना पड़ा, कृषक जनता त्तियों की खेतियां नदी के बाढ़ में आगई, ग्राम म बाढ़ में फंस गये, और पशुओं तथा जनता हुत से कष्ट का शिकार होना पड़ा, बहुत सी नाष्ट हो गई, यह सारी स्थिति पत्रों द्वारा पता ऐसी स्थिति को देखकर आर्य्य प्रतिनिधि पंजाब के नेताओं ने अपनी पुरानी मर्यादा को ख रखते हुए इस समय सहायता का कार्य अपना कर्तव्य समझा, और तुरन्त ही गा बुला कर निश्चय किया कि कार्य झटपट भा कर दिया जावे, सभा की ओर स यह श्री पं० ज्ञानचन्द जी सभा उपप्रधान तथा मेरे किया गया। पुनः श्री स्वामी सेवकानन्द जी पण्डित सदाशिव जी को तारें दी गयीं कि रन्त आकर सिन्ध प्रान्त में चले जावें। श्री जी न आ सके, और पण्डित सदा शिव जी गस्त को लाहौर पहुँच गये और १५-८-४२ नाश ३:-४-६६ को सायंकाल सात बजे ब्रह्मचारी वेदप्रकाश (उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी) के साथ सक्खर पहुंच गये। पण्डित सदा शिव जी को श्री भगवानन्द जी भूत मन्त्री आर्य समाज सक्खर से अकस्मात ही भेंट हो गई पण्डित जी ने उनको अपने आने का प्रयोजन बताकर आर्यसमाज के वर्तमान अधिकारियों को बुला देने की प्रेरणा की। आठ बजे के लगभग सारे ही कार्य कर्ता आ गये, महाशय नवीनदास जी मन्त्री आर्यसमाज बिसती जो कि सक्खर आये हुए थे, भी सम्मिलित हुए, ११ बजे रात तक परामर्श होता रहा, इन सज्जनों ने कहा कि "यदि सभा के अधिकारी दस दिन पहले आजाते, तो बहुत ही अच्छा होता, स्थानिक आर्य्य कोईकार्य नहीं कररहे, इधर विशेष ध्यान न देने का कुछ विशेष कारण भी था, यहां के लोगों ने सिन्ध प्रतिनिधि सभा को हाथ बटाने के लिये लिखा था, परन्तु वह चुप रहे।

पण्डि सदा शिव जी को इन लोगों से बातचीत करके यहाँ की स्थिति का जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त हुआ, वह अधोलिखित प्रकार से था :—सक्खर तथा लाड़काना ज़िलों को बाढ़ से हानि पहुंची है, सक्खर ज़िले के लोगों की सहायता के लिये प्रत्येक केन्द्र सक्खर तथा लाड़काना ज़िले के लोगों के लिये लाड़काना मुख्यकेन्द्र हैं। सक्खर ज़िलेके लोग बाढ़ पीड़ित इलाकों के सुरक्षित स्थानों पर लाये गये। लाड़काना ज़िले के लोगों को अभी तक लाया जा रहा था। लाड़काने के लोगों को जेकबाबाद, शिकारपुर तथा लाड़काना खास में लाया गया। सक्खर ज़िले के सखर में जमा किये गये। उस समय कार्य करने करने वाली मुख्य २ समितियां निम्नलिखित थीं—

१. कांग्रेस।

२. हिन्दू महासभा।

३. गवर्नमेंट।

४. सक्खर के खास २ यथा बज़ाज़ लोहे इत्यादि एसोशियेशन, मन्यारी वाले तथा अन्य कई सेवक यह भी काम कर रहे थे, सब से अधिक कार्य्य कांग्रेस की ओर से हो रहा था, सक्खर के केन्द्र में उस समय निम्नलिखित आवश्यकतायें थीं—

१. वस्त्र।

२. औषधियां (कुनीन, मक्खियों से बचने के लिए तेल आदि, इंजेक्शन का सामान, योग्य डाक्टर इत्यादि।

वस्त्रों के विषय में पण्डित सदाशिव जी का विचार था कि [illegible] में ही खरीद किए में बहुत अन्तर है और बहुत सा सामान वहां ही खरीद करने से सुभीता रहेगी इससे खर्च भी कम होगा इस कारण नकद रुपया की सहायता वहाँ अपेक्षित समझी गयी। उस समय यह विचार था कि तीन मास तक यह कार्य चलेगा, अतः वस्त्र और औषधियों का कार्य अपने ऊपर मुख्यतः ले लिया।

दो कार्य और भी ऐसे थे जिनके लिये हमारे कार्यकर्ताओं ने पहिले से ही विचार करना प्रारम्भ कर दिया, अर्थात् उस समय बाहर से लाये गये लोग वहां के स्थानिक स्कूलों में ठहराये गये। परन्तु थोड़े दिनों तक स्कूलों के खुल जाने पर लोगों ने किराये के मकानों का प्रबन्ध कर के देना आवश्यक समझा और पानी सूखने पर ग्रामों में लोगों को मकान भी बना कर देने के लिए सोचा गया यह सारी स्थिति तो सक्खर में थी।

इसके पश्चात् कार्यकर्ताओं को लड़काना ज़िले की परिस्थिति की जांच के लिए भेजा गया और वहाँ से वापिसी पर रिपोर्ट मांगी गयी। लड़काना ज़िले की परिस्थिति को जांच करके रिपोर्ट मिली कि सक्खर ज़िले की अपेक्षा लड़काना ज़िले में अपार हानि हुई है उस समय लड़काना शहर के भिन्न २ ठिकानों पर लोग नीचे लिखे अनुसार ठहरे हुये थे:—

(शेष फिर)

(पृष्ठ २ का शेष)

गोला फेंकने की प्रतिस्पर्धाएँ भी हुई जिनमें ब्र० रामचन्द्र तेज दौड़ में सर्व प्रथम (१०० गज, १०½ सेकण्ड में) हुए। दूर-दौड़ में ब्रजनन्दन, ऊँची कूद में जगदीश (४ फीट १० इंच), लम्बी कूद में शान्ति निरूपण (१७॥ फीट), गोला फेंकने में रमेशचन्द्र (२६॥ फीट, वज़न ४ सेर) सर्व प्रथम आए। अन्तः प्रान्तीय तथा वर्णान्तर सान्मुख्यों के कारण क्रीड़ा भूमि सजीव प्रतीत होती थी। हाकी का फायनल मैच, कुश्ती दंगल तथा श्रद्धानन्द-बलिदान दिवस की सभा २४ दिसम्बर को हुए।

विविध सम्मेलन

२० से २३ दिसम्बर तक रात्रि के समय विभिन्न तिथियों में गुरुकुल में आप बीती सम्मेलन, कविता-गल्प सम्मेलन, संगीत सम्मेलन का आयोजन किया गया। आप बीती सम्मेलन में ब्र० अमरसिंह, श्री भाई सोमदत्त जी, श्री डा० नित्यानन्द जी तथा श्री प्रो० देशबन्धु जी की आपबीती अत्यन्त उपयोगी और मनोरंजक रही। कविता गल्प सम्मेलन में ब्र. श्याम सुन्दर का संगीत उत्कृष्ट कोटि का माना गया।

इन सभी सम्मेलनों, क्रीड़ाओं और शारीरिक प्रदर्शनों के अवसरों पर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री प्रो० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति तथा स० मुख्याधिष्ठाता श्री प्रो० देशबन्धु जी विद्यालंकार नियमित रूप से उपस्थित होकर ब्रह्मचारियों की शारीरिक और मानसिक उन्नति का निरीक्षण करते रहे और उत्साह वर्धित करते रहे।

हरेक आर्य
तथा
पंजाब के आर्य सामाज
को
आर्य का ग्राहक
ब न ना
चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य जगत के समाचार

आर्यसमाज लायलपुर के समाचार

(१) श्रद्धानन्द बलिदान उत्सव

२५ दिसम्बर शुक्रवार प्रातः ८॥ बजे से १२ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर गु० कु० विभाग में लायलपुर की तीनों आर्यसमाजों और समस्त हिंदु संस्थाओं की ओर से अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्रीमान् सेठ रामनारायण बरमानी की अध्यक्षता में धूमधाम के साथ मनाया गया। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। चौ० मक्खनलाल की वकील, पं० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार, श्री पं० गणेशदत्त जी शास्त्री सनातनधर्म लायलपुर इत्यादि महानुभावों के व्याख्यान और आर्य कन्या पाठशाला की कन्याओं तथा आर्य हाईस्कूल के बालकों के भजन, कविता, निबन्ध पाठ इत्यादि हुए। स्नातक मण्डल लायलपुर शाखा तथा श्री सेठ दीवानचन्द जी बरमानी प्रधान समाज की ओर से बालक बालिकाओं को इनाम भी बांटे गये।

श्री पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार पुरोहित आर्यसमाज की अपील पर श्रद्धानन्द शुद्धि निधि प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए २६) तत्काल इकट्ठे हुए जो कि सभा को भेज दिये जायेंगे। यह उत्सव सब दृष्टि से सफल रहा।

(२) दैनिक सत्संग

आर्य समाज मन्दिर में प्रतिदिन प्रातः ८ से ९ तक सत्संग होता है जिसमें हवन—भजन-संकीर्तन के पश्चात् श्री पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार पुरोहित समाज वेद की कथा करते हैं। श्री पंडित जी की कथा बड़ी मनोहर और प्रभावशाली होती है। सत्संग में उपस्थिति आगे की अपेक्षा पर्याप्त बढ़ गई है।

(३) पारिवारिक सत्संग

समाज की ओर से प्रति वृहस्पतिवार बारी २ से प्रत्येक आर्य सभासद् के घर में शाम को ५ बजे से सत्संग होता है जिसमें हवन-सन्ध्या प्रार्थना भजन के पश्चात् श्री पुरोहित जी का उपदेश होता है। ये पारिवारिक सत्संग बड़े सफल हो रहे हैं और प्रचार का अच्छा साधन बन रहे हैं। —मन्त्री

शोक सभा

आर्य्य समाज बस्ती गुजरात तिथि १५-१२-४२ को श्री ला० उत्तम चन्द जी बी. ए. के सभापतित्व में देश भक्त श्री ला० विहारीलाल जी जिज्ञासु प्रबन्धकर्ता गुरुकुल वेट सोहनी की असामयिक मृत्यु पर शोक सभा मनाई गई और दिवंगत के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित की गई परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वे आप की आत्मा को सद्गति प्रदान करे। —प्रेमचन्द वैद्यमन्त्री

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषत् की परीक्षायें

लेखक—प्र० स्ना० धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार, विद्यावाचस्पति, स०मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

गत २६ वर्षों से भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषत् सिद्धान्त सरोज, सिद्धान्त रत्न, सिद्धान्त भास्कर और सिद्धान्त शास्त्री मासिक धार्मिक परीक्षाओं के आयोजन द्वारा आर्य कुमारों और कुमारियों में विशेषतया और सभी आर्य सज्जनों में तथा देवियों में साधारणतया धार्मिक स्वाध्याय शीलता की प्रवृत्ति को जो बढ़ा रही हैं उस की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है। उन परीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य परीक्षा मन्त्री श्री पं० धर्मेन्दु के शब्दों में विशेषतः आर्यकुमार और कुमारियों को अपना साधारण शिक्षण प्राप्त करते हुए वैदिक साहित्य वा आर्य ग्रन्थों से परिचय करना तथा साधारणतया सभी परीक्षा देने वाले आबालवृद्ध स्त्री पुरुषों को धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय के पथ का पथिक बनाना और उन्हें आर्य समाज की ओर आकर्षित करना है। जैसे शरीर को बलवान और स्वस्थ रखने के लिये हमारे लिये भोजन का नियमित रूप से सेवन अत्यावश्यक है और अनिवार्य है ऐसे ही मन और आत्मा की शक्ति की वृद्धि के लिये वेदादि सत्यशास्त्रों के स्वाध्याय की आवश्यकता होती है। इसी लिये शास्त्रकारों ने ब्रह्मयज्ञ को जिसमें सन्ध्या और स्वाध्याय सम्मिलित हैं दैनिक पंच महायज्ञों में से प्रथम स्थान दिया है। स्वाध्यायोऽध्येतव्यः 'स्वाध्यायान्मा-प्रमदः' इत्यादि ऋषि प्रोक्त वचन इसी स्वाध्याय का विधान करते हुए उसमें कभी प्रमाद न करने का आदेश करते हैं। मनुष्य जीवन की पवित्रता के लिये स्वाध्याय अत्यावश्यक है क्योंकि इस के द्वारा पवित्र भाव हृदय में अंकित हो जाते हैं। ऋषि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे महात्माओं के जीवन चरित्र भी स्फूर्ति दायक होने से मनुष्य जीवन को पवित्र बनाने में विशेष रूप से सहायक होते हैं अतः इन परीक्षाओं में "हमारे स्वामी" "स्वामी श्रद्धानन्द" "आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न" "श्रीमद्दयानन्द प्रकाश" इत्यादि ग्रन्थों को स्थान दिया गया है। ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्योद्देश्य रत्न माला, यज्ञ विधि, गोकरुणानिधि, इत्यादि ग्रन्थ धर्म के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने कितने उपयोगी हैं यह लिखने की आव नहीं क्योंकि यह अब सर्व सम्मत बात ऋषि की इन अमर कृतियों ने अन्ध भटकते हुओं के लिये सचमुच प्रकाश स्त काम किया है और लाखों की आंखें खोल ऐसे ग्रन्थ रत्नों का इन परीक्षाओं में व मता से समावेश किया गया है। वैदिक तुलनात्मक अनुशीलन की भी बड़ी आव है जिस से दृष्टि विशाल बन सके इस "धर्म का आदि स्रोत", "आस्तिकवाद", सिद्धान्त", 'विश्व की पहेली", इत्यादि ग्र इन परीक्षाओं में यथोचित स्थान दिया आर्यकुमार और कुमारियों को अपने दे समाज का इतिहास जब तक ज्ञात न हो वे अपने को समाज और देश की सच्च के योग्य नहीं बना सकते इसलिये स्वर्गीय रामदेव जी कृत भारतवर्ष के इतिहास तथ हरिश्चन्द्र जी विद्यालङ्कार कृत आर्यसमाज हास की भी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में लित किया गया है। इस प्रकार इन पर की पाठ्यविधि पर एक सरसरी दृष्टि ड पाठक और पाठिकाओं को इसकी उपयो ज़रा भी सन्देह नहीं रहेगा। ऐसा मे विश्वास है। परीक्षा देने से जो आत्म वि उत्पन्न होता है तथा निश्चित पाठ्यक्रम चल है वह अन्यथा होना अत्यन्त कठिन है वर्तमान विद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षा के शोचनीय अभाव की पूर्ति के लि इन परीक्षाओं में सम्मिलित होना अत्यन्त योगी है। इस लिये मेरा सब आर्य कुमा कुमारियों से, आर्य युवकों और युवतियों रोध है कि आर्य कुमार परिषत् की प्र जनवरी मास में होने वाली इन परीक्ष अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित स्वाध्याय और धर्म ज्ञान का लाभ उठा इसका यथार्थ अपने अपने ग्रामों और न परीक्षा केन्द्र खुलवायें जो पांच परीक्षार्थि होने पर खुल सकते हैं। हमारी बहिनें ओर जितना अधिक ध्यान देंगी उतना ह सन्तति का वायुमंडल धार्मिक बन सकेग इस प्रकार आर्य समाज की सच्ची उन्नति

आर्यसमाज मियांवाली

आर्य्य समाज मियांवाली में दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक श्री पं० तीर्थ राम जी आर्य्योपदेशक की भगवत गीता पर मनोहर कथा होती रही। जनता में कथा का प्रभाव बहुत अच्छा रहा। कथा से पूर्व मुं० गुलशन लाल जी के आध घण्टा भजन होते रहे इस अवसर पर आर्य्य समाज की ओर से १५) तथा आर्य स्त्री समाज की ओर से ५) वेद प्रचार फण्ड में दान दिये।

—पत्र व्यवहार करते समय चिट नं० का अवश्य दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रैस लिमिटेड, १७ सोहनलाल

Regd. N. L. 5004.

सम्पादक—भीमसेन सभ

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ७

वार्षिक मूल्य ४)

१० जनवरी १९४

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

गृहस्थी भी मुक्त हो सकते हैं।

(४)

ओ३म् सनात्सनीड़ा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः।
पुरु सहस्रा जनयो न पत्नीर्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्रयाणम् ॥

ऋ० मण्डल अ० ११। सू० ६२। म० ३

भावार्थ—जैसे पति लोग अपनी स्त्रियों, बहनों और भाइयों तथा विद्यार्थी लोग आचार्यों की सेवा से सुख और विद्याओं को प्राप्त होते हैं वैसे धर्मात्मा विद्वान् स्त्री पुरुष लोग घर में बसते हुए मुक्ति को प्राप्त होते हैं।

—दयानन्द

पदार्थः—जैसे (अवाता) हिंसारहित (अवनीः) भूमि सब की रक्षा (पुरु सहस्रा) बहुत हजारह (जनयः) उत्पन्न करने हारे पति (पत्नीः) (न) जैसे अपनी स्त्रियों की रक्षा करते हैं वैसे जो (सनीडा) समीप में वर्तमान (अमृताः) नाश रहित विद्वान् लोग (सहो भिः) विद्यायोग धर्मवालों से (सनात्) सनातन (व्रता) सत्यधर्म के आचरणों की (रक्षन्ते) रक्षा करते हैं और जैसे (स्वसारः) बहनें (अह्रयाणम्) लज्जा को अप्राप्त अपने भाई की (दुवस्यन्ति) सेवा करती हैं वैसे जो विद्या और धर्म ही को सेवते हैं वे को मुक्ति प्राप्त होते हैं।

इस मानव संसार में मनुष्य की आत्मा संघर्ष से खिन्न होकर अनेक वार दुखों से मुक्ति पाने के लिये सांसारिक सम्बन्धियों पति पत्नियों, भाई बहनों से सम्बन्ध विच्छेद करने को तैयार हो जाती है। और समझती हैं कि ऐसा करने से उसे शान्ति मिलेगी। ऐसे व्यक्तियों के लिये इस वेद मंत्र में उपदेश दिया गया है कि जैसे पति पत्नी की रक्षा करता है, बहन भाई की सेवा करती है, उसी प्रकार से विद्वान् लोग-दुःख से मुक्ति पाने वाले सत्य-धर्म-विद्या आदि व्रतों की सेवा कर दुःखों से मुक्ति या छूट पाते हैं।

गृहस्थ में रहते हुए, पति पति पत्नी और भाई बहन के सम्बन्धों को निभाते हुए भी मनुष्य आत्मा के स्वरूप को पहचान कर—आत्मा की भूख को शान्त करने के लिये सत्य धर्म और विद्या का सेवन कर सकता है।

आत्मिक शान्ति के लिये, सत्य भाषण धर्माचरण और विद्या का संचय करना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति घर बार छोड़ कर भी इन नियमों का पालन नहीं करता तो उसे जंगल पहाड़ तीर्थ आश्रम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज के समाचार

—रूस की लाल सेना स्तालिनग्राद से १५ मील दूर है। डान नदी के नीचे [illegible] इसने २४ घंटों में ५० मील पर कब्जा किया है। उत्तरी काकेशस में रूसियों ने १५ शहर और गांवों पर अधिकार कर लिया है।

—उत्तरी अफ्रीका में जर्मन सेना पति जनरल आम नीम कमांण्डर इन चीफ बनाए गये हैं।

—इटली के टुरीन और नेपल्स में फौजी कानून घोषित कर दिया गया।

—अमरीका ७८वीं कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन ६ जनवरी को हुआ। ४३५ प्रतिनिधि और ९६ सीनेटर उपस्थित थे।

—अमरीका के प्रतिनिधि मि० फिलिप्स कराची पहुँच गये हैं।

—बंगाल के प्रधान मन्त्री मि० हक पर्मनैण्ट सैटल मैण्ट के समाप्त करने के लिये जनता के सामने दो स्कीमें पेश कर रहे हैं।

—सिंध के भूत पूर्व प्राइम मिनिस्टर मि० अल्ला-बख्श ने हिंदू महासभा के अखण्ड भारत समर्थक प्रस्ताव का विरोध किया है।

—आस्ट्रेलिया से १५००० टन गेहूँ भारतवर्ष में आरहा है।

—अलाहाबाद में छोटे सिक्के और खाने की वस्तुएं न मिलने से बहुत तंगी हो रही है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए सर सप्रू आदि ने एक कमेटी बनाई है।

—सिन्ध गवर्नमेंट ने सिन्ध प्रान्त से आटे के बाहिर जाना बन्द कर दिया है। गेहूँ और चावल जमा करना प्रारम्भ कर दिया है।

—न्यूयार्क में २२ जर्मन और गिरफ्तार किये गए हैं

द्वारा अपने भाई बहनों की सेवा करता है पति पत्नी इन साधनों से एक दूसरे की रक्षा करती हैं तो उन घरों में चाहे वे आलीशान हों या साधारण—आत्मि

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर देशनेताओं की श्रद्धाञ्जलियां

बलिदानोत्सव

२४ दिसम्बर को बड़े समारोह के साथ गुरुकुल भूमि में अमरशहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदानोत्सव मनाया गया। प्रभातफेरी के पश्चात् बैण्डबाजे के साथ, कुलवासियों की विशाल भीड़ ने कुलपताकाभिवादन की विधि सम्पन्न की। तदनन्तर गुरुकुल की परिक्रमा करता हुआ जुलूस सभाभवन में पहुँचा। उमड़ते हुए जन-संघट के कारण सभा-स्थल खचा खच भर गया था। महा-विद्यालय के ब्रह्मचारियों और प्रोफेसरों ने बड़ी क्षमता के साथ अमरशहीद की दूर-दर्शिता, आत्माभिमान, आदर्शनेतृत्व, उदार दृष्टि, आदि गुणों का कीर्तन किया। श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार तथा श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक ने उनके चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। विविध-दौड़ाओं में विजेता ब्रह्मचारियों को पारितोषिक वितरण के अनन्तर सभा समाप्त हुई।

इस अवसर पर निम्न संदेश प्राप्त हुए हैं

मैं श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर गुरुकुल के प्रति अपनी सद्भावनाएं तथा स्वामी जी के प्रति श्रद्धानीत श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूं।

यह सम्भव है कि लोग मुझे और मेरे राजनैतिक रुख को गलत समझलें। परन्तु मैं आप सब को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आर्य संस्कृति के प्रति प्रेम ने ही मुझे अपने रुख में इतना दृढ़ किया है। मैं उस संस्कृति की रक्षा के लिये उद्यत एवं तत्पर हूं और मेरा रुख इस विषय पर गंभीर चिन्तन का परिणाम है। चाहे लोग कुछ भी कहें।

—श्री राज गोपालाचार्य

---

२३ दिसम्बर समस्त हिन्दुओं के लिये स्मरणीय दिन है। इस स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर सम्पूर्ण भारतवर्ष के हिन्दू तीव्र दुःख के साथ यह स्मरण करेंगे कि उस वीर सन्यासी ने हिन्दुओं के पुनरुद्धार के लिये किस प्रकार अपने जीवन की आहुति दी थी। परमेश्वर करे कि उनका आदर्श उदाहरण हमें प्रेरणा दे और हमारे पथ को वर्तमान संकटपूर्ण समय में प्रकाशित एवम् आलोकित करे।

—श्रीयुत श्याम प्रसाद मुकर्जी

"आज वह दिन पुनः उपस्थित हुवा है जब श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी हम से अलग हुए थे। इस पुण्यावसर पर यह विचार हर्षप्रद है कि स्वामी जी की बसीयत अभी तक विनष्ट नहीं हुई है। आदर्श विलुप्त हो जावेगा। हमारे पूर्वजों की सर्वोत्कृष्ट बपौती आर्य-संस्कृति ही है। इसकी अनवच्छिन्नता तथा उत्तरोत्तर वृद्धि एवम् उन्नति इस बात पर आश्रित है कि कितने पूर्णतया सुशिक्षित कार्य कर्ता उस महान कार्य को करते हैं जिसके लिए स्वामी जी जिये और मरे। इन कार्य कर्ताओं का सतत प्रवाह होना चाहिये जो एक सन्तति से दूसरी सन्तति तक, एक सदी से दूसरी सदी तक निरन्तर चलता रहे। परन्तु यदि यह प्रवाह रुक जावेगा, या कार्य कर्ताओं के गुणों में कमी आ जायगी तो हमारी नैतिक मृत्यु प्रारम्भ हो जायगी। स्वामी जी ने इस सत्य को देखा और अपने कार्य को सुस्थिर एवं वस्तुतः लाभप्रद बनाने के लिये गुरुकुल की स्थापना की। परमेश्वर करे कि उनका आदर्श कभी कष्ट न हो और जो उनके चरण-चिन्हों पर चलने की आकांक्षा रखते हैं वे अपने सामने सत्य और शिव के दीपक को सदा प्रज्वलित रखें जिससे वे उन स्वार्थी नेताओं के मिथ्या प्रकाश से पथ-भ्रष्ट न हों जिनके उद्देश्य दुनियां के हैं, दुनियावी हैं।"

—श्रीयुत यदुनाथ सरकार
के.टी., सी. आई. ई., डी. लिट.

यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान-दिवस मनाने जा रहे हैं। स्वामी जी का नाम लेते ही हृदय में एक अपूर्व सेवा-मधुर वीर भाव का आविर्भाव होता है। ऐसे पुण्य चरित व्यक्ति का बलिदान-दिवस एक राष्ट्रीय पर्व होना चाहिये। आप उसका आयोजन कर के देश को जीवन और मृत्यु का सच्चा अर्थ सुनाने का ही उपयोग कर रहे हैं। मैं इस उत्सव पर श्री स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूं।

—श्री क्षितिमोहन सेन जी, आचार्य शान्ति निकेतन

ऋषि दयानन्द के मिशन की पूर्ति में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना सर्वस्य बलिदान कर दिया। उनका जीवन हम सब के लिये ज्योतिः स्तम्भ का कार्य करता है।

मैं इस शुभ अवसर पर स्वामी जी की पुण्य स्मृति में अपनीं सद्भावनाएं अर्पित करता हूं।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय

[श्री स्वामी अभयदेव जी विद्यालङ्कार
भूतपूर्व आचार्य गुरुकुल कांगड़ी।]

धर्मसेवा या सच्ची लोक जागृति का कौन सा ऐसा कार्य है जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) का दृश्य या अदृश्य हाथ न था, पर फिर भी उनकी असली अपनी कृति जिसमें उनकी आत्मा उंडेली गई थी—उनकी आदर्शकृति तो गुरुकुल जगत् के रूप में श्रद्धानन्द सदा अमर

—अभय

श्री स्वामी ने बहुत प्रकार से धर्म, जाति देश की अपूर्व सेवाएं की जिनके लिये भा उनका ऋणी है। परन्तु गुरुकुल को स्थापित प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली-के उद्धार करने कार्य ऐसा है जिससे स्वामी श्रद्धानन्द जी का सदा अमर रहेगा और केवल आर्य-समाज किन्तु आर्यावर्त की शिक्षा के इतिहास में उन नाम स्वर्णाक्षरों से लिखा जावेगा।

—गंगा प्र
(प्रधान सा० सभ

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी हिन्दी प्रचार लगन रखते थे। उन्होंने सहस्रों रुपयों का घ उठा कर अपने प्रसिद्ध उर्दू पत्र 'सद्धर्म प्रचार' को हिन्दी करा दिया था! उनकी बलिदान दि की पुनीत स्मृति में प्रत्येक कुलवासी को हिन्दी प्रचार का व्रत लेना चाहिये।

मैं स्वामी जी के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अ करता हूं।

—नारायण स्वाम

"स्वामी जी के कार्य बहु-मुखी थे। प्रत्ये सामाजिक कार्य में उन्होंने देश व जाति के लि अद्वितीय सेवाएं अर्पित की। यह उचित एव उपयुक्त है कि उनका बलिदान दिवस मनाया ज और उनके प्रति श्रद्धाञ्जलियां समर्पित की जायं में हृदय से उन सब के साथ हूं जो इस पर्व मना रहे हैं।"

—सर गोकुलचन्द नार

"स्वामी श्रद्धानन्द जी भारतीय राष्ट्रीय जी के प्रमुख व्यक्तियों में से थे। उनका व्यक्तित्व सब को प्रेरणा देता था जो उनको जानते थे। क्या थे और उन्होंने क्या किया इसका स्मरण उनके बाद में आने वाली सन्तति के लिये सम रूप से स्फुरणा देने वाला है। मैं उनके प्रति वि रूप से श्रद्धाञ्जलि इसलिए अर्पित करता हूं क्यों उन्होंने इलाहबाद में भी शिक्षा प्राप्त की थी औ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मुझ से पहले के स यतियों में से एक थे। परमेश्वर करे कि गुरु के गुरुजन तथा शिष्य गण उनके पद चि पर चलने में सफल हो सकें।"

अमरनाथ झा—वाइसचान्स

आवश्यकता

आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भ लाहौर के लिये दो लेखकों की आवश्यकता है जायदाद का काम, अदालती कार्यवाही भूमियों नाप तोल तथा प्रबन्ध का काम भली प्रकार जा हो और दूसरा टाईप तथा एकौऊंट जानता हो हिन्दी उर्दू और अंग्रेजी तीनों भाषाओं का जा आवश्यक है। प्रार्थना पत्र सभा मन्त्री के नाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य

रविवार १० जनवरी १९४३

आर्य समाजों के वार्षिकनिर्वाचन

आर्य सभासदों से आवश्यक निवेदन

दिसम्बर मास से आर्यसमाजों के वार्षिकनिर्वा- आरम्भ हुए हैं। आने वाले महीनों में स्थानीय समाजों के अधिकारियों के निर्वाचन होंगे। के बीच में कई बार स्थानीय समाजों के सभा- की ओर से स्थानीय आर्यसमाज के अन्द- झगड़ों के सम्बन्ध में सभा के पास आवेदन आते है। इनमें वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी विरुद्ध कार्यवाहियों के विषय में शिकायतें जाती हैं। इनमें से अधिकांश शिकायतें दूर हो ी हैं, यदि आर्यसमाजों के अधिकारी तथा सद वार्षिक निर्वाचन के समय आर्य समाज ायम-उपनियमों के अनुसार कार्य करने की विशेष रूप से ध्यान दें। आर्य सार्वदेशिक ने समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं सहमति के साथ इन संशोधित नियमोंका प्रका- किया है। हरेक आर्य सभासद का कर्तव्य है ह इन नियमों के पालन करने में तत्पर रहे स्थानीय समाज के अधिकारियों को प्रेरित कि वे इन नियमों के अनुसार काम करें। हम इस प्रसंग में आर्यसामाजिक जनता का दो आवश्यक नियमों की ओर ध्यान खींचना शयक समझते हैं।

(१) सदाचार विषयक उपनियम।

इस नियम के पालन द्वारा आर्य सभासदों को समाज के सदाचार के स्टैंडर्ड को उन्नत करने यत्न करना चाहिये। इसके लिये यह योजना क्त हो सकती है कि इस अवसर पर आर्य सदों से घोषणा पत्र भरवाने की प्रथा जारी ाय। इस घोषणा पत्र में आर्य सभासद् इस की घोषणा करें कि उसने वर्ष भर, यथाशक्ति चार के नियम का पालन करने का यत्न किया इसी प्रकार से शतांश के सम्बन्ध में भी णा की जाय कि सभासद अपने ज्ञान के अनुसार शा कीलगभग मात्रा देरहा है। यदि आर्य सभा- इन दो बातोंकी ओर विशेष ध्यान देंगे तो आर्य ा में आत्मिक शुद्धि और आर्थिक शुचिकी मात्रा कई व्यक्ति विनय की भावना से इस प्रकार के

हैं—वह धर्मभीरू की भावना से सोचते हैं कि कहीं इस घोषणा से वह अनजाने अहंकार, मिथ्या भाषण तो नहीं कर रहे। ऐसे सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि यह घोषणा उन्हें सत्यभाषण और आत्मनिरीक्षण की ओर प्रवृत्त करती है। इससे अहंकार दूर होता है, और पवित्रता के लिये आवश्यक, अपने दोष देखने की आदत पड़ती है।

आर्य सभासदों में जब अधिक संख्या में ऐसे स्वभाव वाले लोग होंगे तो वहां झगड़े स्वयं ही कम हो जाएँगे। ज़्यादातर झगड़े वहीं पैदा होते हैं जहाँ सभासद दूसरों के दोष देखते हैं, और अपने गुण ही गुण देखते हैं।

(२) आर्य समाज के नियमों में एक यह भी नियम है कि कोई व्यक्ति लगातार एक पद पर तीन साल से ज़्यादा न रहे। इस नियम के पालन पर भी विशेष बल देना चाहिए। इससे जहां नए व्यक्ति कार्य क्षेत्र में आते हैं वहां पुराने अधिकारियों को बिना पदाधिकारी हुये सेवा भाव तथा विनीत भाव से आर्य सभासद होकर समाज की सेवा करने की आदत हो जाती है।

(३) आर्य समाज के अधिकारियों को यह कोशिश करनी चाहिये कि वार्षिक निर्वाचन के पूर्व ही आर्य समाज के वर्ष भर के आय—व्यय के ब्योरे का निरीक्षण कराकर उसे वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित किया करें।

आशा है कि आर्य भाई अपने स्थानीय वार्षिक निर्वाचनों में इन तीन बातों की ओर विशेष रूप से ध्यान देने का प्रबन्ध करेंगे।

अखण्डभारत और पाकिस्तान—

राष्ट्रीय महासभा के नेता कैद में हैं। भारतीय स्वाधीनता का प्रश्न उनकी अनुपक्षणीय अनुपस्थिति के कारण ब्रिटिशसाम्राज्य तथा उनके मित्रराष्ट्रों की राजनीतिक चर्चाओं में विशेष रूप से बार २ सामने आता है। इस प्रश्न को हल करने का यत्न किया जाता है परन्तु वह प्रश्न दिन प्रतिदिन अधिक जटिल और पेचीदा हो रहा हैं। इसी प्रश्न को हल करने के लिये हिन्दू महासभा, अखण्ड भारत आंदोलन चलाना चाहती है और इसी उद्देश्य से हिन्दू महासभा ने कानपुर के वार्षिक अधिवेशन में इस आन्दोलन के लिये 'कार्य समिति' भी बनाई है। उधर मुसलिम लीग के नेता लोग पाकिस्तान के लिये जी-जान से कोशिश कर रहे हैं। श्रीयुत सप्रू तथा श्री राजगोपालाचार्य जैसे कुछ नेता मध्यम—मार्ग ढूँढ़ने में लगे हुए हैं—परन्तु अभी तक इन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। हमारी सम्मति में भारतीय स्वाधीनता का प्रश्न राजनीतिक प्रश्न है, इस समस्या को साम्प्रदायिक दृष्टि-

करने का मुख्य साधन यह है कि राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से भारतीय राष्ट्र को संगठित किया जाय। तभी अखण्ड भारत और पाकिस्तानके समर्थकों में स्थायी समझौता हो सकता है; अन्यत्र नहीं। धर्म सभ्यता के सम्बन्ध में साहिष्णुता की नीति ही कामयाब हो सकती है।

लायलपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन

हम अनिवार्य कारणों से लायलपुर के पंजाब प्रांतीय हिंदी सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित नहीं हो सके। परन्तु वहां के जो समाचार हमें प्राप्त हुए हैं, उनसे पता लगता है कि यह वार्षिक सम्मेलन सब दृष्टियों से सफल रहा। प्रतिनिधियों तथा दर्शकों की उपस्थिति की दृष्टि से पंजाब के मुख्य २ शहरों से हिन्दीप्रेमी बड़ी संख्या में पधारे थे। हिन्दी प्रेमियों का शहर में शानदार जलूस निकला। आर्थिक दृष्टि सेभी ३००) धनसंग्रह हुआ। इसके लिये हम प्रान्तीय सम्मेलन की स्वागत समिति के अधिकारियों तथा सदस्यों को बधाई देते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि प्रान्तीय सम्मेलन के नये अधिकारी आगामी वर्ष में प्रांत में हिंदी प्रचार के आन्दोलन को स्थिर रूप से संगठित करने का यत्न करेंगे।

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन,

आर्ष साहित्य की रक्षा करो

इसी अंक में पाठक युक्त प्रान्तीय सरकार की ओर से काशी संस्कृत परीक्षाओं की पाठविधि में स्वेच्छाचरिता का वर्णन पढ़ेंगे। ऋषि दयानन्द ने आर्षसाहित्यके पुनरुज्जीवनके लिए विशेष आंदोलन किया था। आर्यसमाज भी उसी दिशा में यत्न कर रहा है। आर्य समाज की प्रेरणा तथा आन्दोलन से काशी की संस्कृत परीक्षाओं में आर्ष साहित्य तथा ऋषिदयानन्दकृत वेदभाष्य को वैकल्पिक विषय (Alternative subject) के रूप में स्थान प्राप्त हो चुका था। परन्तु अचानक ही युक्तप्रांतीय सरकार ने इस प्रबन्ध को बदल दिया है। आर्य्य सभ्यताभिमानी तथा भारतीय ऋषियों के भक्तों को चाहिये कि १० जनवरी से पूर्व २ तक प्रतिवाद सूचक प्रस्ताव पास करके गवर्नर यू० पी० के पास भेज दें। प्रस्तावों का स्वरूप उस आवेदन पत्र में अंकित है। इस विषय में संगठित आंदोलन तथा प्रबल लोकमत पैदा करना हरेक भारतीय आर्य्य सभ्यताभिमानी का कर्तव्य है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शेष लेखमाला ! सर्पविद्या

विष और विष यन्त्र

[लेखक—श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार, बादामी बाग, लाहौर ।]

(३)

[गतांक से आगे]

प्रभाव तथा लक्षण

प्राणी पर कार्य करने की दृष्टि से विविध सांपों का विष अनेक क्रियाशील तत्वों का मिश्रण होता है। फनियर और मण्डली के विषों को अधिक सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है और उनसे परीक्षण किये गये हैं। ये दोनों विष शरीर पर दो भिन्न तरीकों से कार्य करते हैं। दर्वीकर विष मुख्यतया वात केन्द्रों पर कार्य करता है और पक्षाघात तथा श्वासावरोध उत्पन्न करता है। कुछ हद तक यह रक्त पर भी कार्य करता है। मण्डली विष का कार्य रक्त पर है। यह दो तरह से कार्य करता है।

१—रक्त को जमा कर अङ्ग में तन्तुओं का नाश (gangrine) उत्पन्न करने से और २. रक्तवाहिनियों की स्तर पर कार्य करके, परिणामतः प्रचुर रक्तस्राव उत्पन्न करने से।

कौलुब्रीन (colubrin) और मण्डली (viperin) सर्पविषों में से अधिक में रुधिर के रक्ताणुओं का नाश करने वाला तत्व (haemolytic principle) होता है। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि विष के प्रभाव से एरिथ्रोसाइट्स (erythrocytes) पहले इकट्ठे होजाते हैं फिर कुछ समय बाद विलीन होना प्रारम्भ हो जाते हैं और यह इस बात पर निर्भर करता है कि सांप किस प्रकार का है तथा विष की शक्ति कितनी है। विष के जमाने की शक्ति ७५° से ८०° शतांश के बीच में नष्ट हो जाती है, यदि यह तापमान तीस मिनिट तक रखा गया है। रुधिर के रक्ताणुओं को नाश करने की शक्ति में विविध विष एक ही समान नहीं होते। फनियर के विष में यह गुण सबसे अधिक होता है। इसके बाद क्रमशः निम्नलिखित सांपों के विषों का नाम लिया जाता है—जलीय मौकेसिन (water moccassin), ताम्रशिर (copper head) और कर्कर सांप (rattle snake)। विष की यह प्रतिक्रिया सब प्राणियों में एक जैसी नहीं होती। विष के बहुत हलके घोलों में कुत्ते के रक्ताणु बहुत शीघ्र और सुगमता से नष्ट हो जाते हैं जब कि बैल के रक्ताणुओं पर बहुत ही थोड़ा प्रभाव पड़ता है। इन दोनों के मध्य के प्राणी हैं—भेड़, गिनिपिग, सूअर और और खरगोश आदि। यह भेद रुधिर में लेसिथीन (lacithin) की असमता के कारण कहा जाता है। लेसिथीन की उपस्थिति में विष के बहुत उच्च विलयनों में भी बैल के रक्ताणु विश्लिष्ट किये जा सकते हैं। विष को

से विष की रक्ताणु विश्लेषक (haemolytic) शक्ति पर ज़रा सा ही प्रभाव पड़ता है। ऐक्टन और knowles (१९१३-१४) ने दिखाया है कि अधिकतर विषों में ये चीज़ें होती हैं—(क) हिमरोरजीन (haemorrhagin), इस में सूक्ष्मतर रक्तवाहिनियों के अन्दर की स्तर के एण्डोथीलियल कोष्ठों (endothelial cells) को नष्ट करने की शक्ति है। यह तन्तुओं में रक्तस्राव कर देता है जिससे त्वचा के नीचे खून के नीचे नीले धब्बे (ecchymosis) बन जाते हैं। (ख) साइटोलाइसीन (cytolysin), यह खून के लाल और सफ़ेद दोनों अणुओं को विलीन कर देता है। (ग) फ़ाइब्रीन फ़र्मेण्ट (fibrine ferment), यह रक्तवाहिनियों के अन्दर बाहर खून को जमाने का काम करता है। जमे हुए खून का ज़रा सा कतरा भी जब फेफड़े में पहुंचता है तो मृत्यु श्वासावरोध से होजाती है। (घ) वातनाड़ीविष (neurotoxin), यह केन्द्रीय वात-संस्थान और वात-नाड़ियों के शिरों पर भी कार्य करता है।

साधारण रक्तमस्तुके जीवाणुनाशक (bactericidal) गुण को नष्ट करने की शक्ति भी विष में कही जाती है। Weech और Ewing (१८९४) ने समझाया है कि दर्वीकर विष से विषाक्त प्राणियों में जो शीघ्र सड़ांद उत्पन्न हो जाता है वह इस गुण के कारण होती है। साधारण मस्तु की जीवाणु नाशक शक्ति में यह कमी इस कारण होती है कि विष रक्तमस्तु के पूरक (serum complement) को स्थिर कर देता है। रक्तमस्तु के (intermediary body पर विष का कोई प्रभाव नहीं होता।

विभिन्न प्रकार के सांपों के विष लक्षण और उन में भेद।

कौड़िये सांप (Krait) के काटने पर कभी-कभी मृत्यु से पहले ही मांसपेशियां कठोर होने लगती हैं और मरने के एक या दो दिन बाद तक इसी तरह रहती हैं। मांसपेशियों की कठोरता के सम्बन्ध में इसलिए सांप के काटने से मृत्यु में और सामान्य मृत्यु में भेद नहीं किया जा सकता। दर्वीकर दंश से मृत्यु के कुछ उदाहरणों में देखा गया है कि मांसपेशियों में किसी प्रकार की कठोरता नहीं आती। कई दिनों और सप्ताहों तक मृत देह सुरक्षित रखी गई है तब भी कठोरता नहीं आई। मण्डली दंश से मृत्यु के बाद सड़ांद सम्बन्धी परिवर्तन बहुत जल्दी होने लगते हैं। फनियर का दंश शिरा के अन्दर है तो मृत्यु सहसा हो जायगी और सड़ांद काफ़ी

जुलाई के गरम दिनों में भी कई बार म मांसपेशियों की कठोरता नहीं नज़र आती किसी उदाहरण में डेढ़-दो मास तक कोई परिवर्तन होते नहीं देखे गये और शर कुल ताज़ा और स्वस्थ नज़र आता थ उदाहरणों में मालूम होता है कि फनियर बहुत अधिक परिमाण में शरीर में प्रवि गया था। भारत में यह विश्वास प्रचलि साँप से मारे हुए को जलाने या दफ़नाने में नहीं करनी चाहिए। गांव वाले पर्याप्त स रोगी के स्वस्थ हो जाने की प्रतीक्षा करते दूर दूर के विशेषज्ञों की चिकित्सा से भी ज नहीं आता तब उसके साथ मरे हुए का करते हैं।

धनुस्तम्भ (tetanus) में और कुचले में जिस तरह मरने से पहले अकड़ान होती तरह कौड़िया, मण्डली (daboia) और (echis) के विषों में मृत्यु से कुछ घण्टे पू पेशियां अकड़ जाती हैं। त्वचा पर रक्ति मण्डली (Russell's viper) के विष जाते हैं और ये अच्छा होने पर भी तथा बाद भी कुछ दिन तक रह सकते हैं। सर्प शरीर के किसी भाग के बाल खींचने से गि है मरने के बाद भी यह लक्षण रहता है स्वस्थ हो जाने पर नहीं।

फनियर और लैकिसिस (lachesis) के कुछ उदाहरणों में, जिनमें अचेतनावस्था का घटना एक मुख्य लक्षण था, प्रजनन एक विशेष अनुभूति पाई गई है। इसकी रोगी को अच्छा होने के बाद भी रहती है युवा लड़कियों और स्त्रियों ने अच्छा होने बयान दिये हैं कि चिकित्सा काल में कु तक उनमें काम का आवेग बहुत हो गया था, और उनके पति किसी पर-पुरुष ने उनके साथ अचेतनाव सम्भोग किया था। पुरुषों को ऐसा प्रतीत जैसे अचेतनावस्था में उन्हें स्वप्नदोष हो ग इन बयानों की जब छानबीन की गई तो उदाहरण में ऐसा नहीं मिला जिसमें स्त्री किसी ने सहवास किया हो। चिकित्सा का केवल घर के सदस्य ही उपस्थित होते है रोगी के साथ सहानुभूति रखने वाले पास-प अनेक सज्जन भी सदा उपस्थित रहते हैं। स्त्रियों की इस स्मृति का आधार केवल भ्र फनियर और लैकिसिस से विषाक्त लोगों में अष्ठीला ग्रन्थि (prostait gland) के स्खलन हो जाता है विशेषकर अचेतनाव मृत्यु से ज़रा पहले कभी कभी मल निकल

(क्रमशः)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का, पंजाब तथा सिंध प्रान्तों में नदियों की बाढ़ से पीड़ित जनता की सहायतार्थ किया गया कार्य

[श्री ला० शादीलाल जी भल्ला एम० ए० एल० एल० बी० स० अधिष्ठाता]

[गतांक से आगे]

१.	पंचायती कन्या विद्यालय	१५०
२.	सुधार सभा	८०
३.	सिन्ध स्कूल	२८४
४.	आर्य्य समाज मन्दिर	३२
५.	भाई बन्द पञ्चायत	७७
६.	आमिल सुधार सभा	४७
७.	सीतलसिंह जी खरी	४०
८.	धर्मशाला स्टेशन का रास्ता	५२
९.	म्यूनिसपल गर्ल्स स्कूल	७५
१०.	गंगाराम की धर्मशाला	६६
११.	अखाड़ा नहर के पीछे	११४
१२.	प्रभुदास की मण्डी	२२८
१३.	मण्डियों वाली पञ्चायत	
	नारायणसिंह स्कूल	
	वेढामल की मण्डी	१४७
१४.	पंचायती थला	१६
१५.	गुरुनानक दवरी	१५
१६.	धर्मदास का ठिकाना	४
१७.	मनीहारी पञ्चायत	३९
१८.	१–शहमहम्मद स्कूल	
	२–मन्दिर	
	३–भाई मढ़ी का मन्दिर	२००
१९.	१–जनाना हस्पताल	
	२–तराटिया पञ्चायत	
	३–सिनेमा घर	
	४–जमनादास का बंगला	५६०
२०.	पूशनी मोरी	
	पाठशाला	
	इञ्जन	६००
२१.	तीनों छोलदारी	२५
२२.	,,	२०
२३.	,,	२०
२४	शहर के बाहर	१००

कुच्छ हिन्दू अपने रिशतेदारों के पास तथा कुच्छ किराये के मकान लेकर ठहरे । इसी प्रकार कुच्छ मुसलमान ठहरे हुए थे, इसी प्रकार कुल ७४१ हिन्दू तथा मुसलमान ३३ ठिकानों पर ठहरे हुए थे।

सेठ राधामल की मन्त्रित्व में बहुत से ऊपर लिखित स्थानों पर अनाज मण्डी तथा शहर की पञ्चायतों का प्रबन्ध था (संख्या १८, १९ सात स्थानों पर)।

१७ स्थानों का प्रबन्ध सरकार की ओर से था। रही थी।

५ मुसलिम स्थानों का प्रबन्ध सरकार की ओर से था। और कांग्रेस ने भी यथा शक्ति सहायता की।

दादू ज़िले का सिन्ध बाढ़ से बहुत ही नुकसान हुआ। हैदराबाद में दादू ज़िले के नौ हज़ार के लगभग आदमी पड़े हुए हैं, कुछ और २ स्थानों पर भी चले गये, दादू सर्वथा खाली होगया था, और केवल ३० या ३५ की संख्या वहां रह गई होगी—शहर की रक्षा मिलटरीके सपुर्द थी, और लोगों के खाने का प्रबन्ध एक होटल में किया गया था, और ज़िले के बड़े २ ग्राम नाथनशाह, लद्धाणा, माड़ो, थदडी जादो शहीद, भान, बूवक, टेलटी सर्वथा डूब गये थे, और कक्कर, कठिया, वेगोडेरो, फूल जी ग्राम, जोई इत्यादि कसबों के इर्द गिर्द पानी ही पानी खड़ा था।

रेलवे लाइनें बह गई, हैदराबाद में आये हुए लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ा, लोग वृक्षों के नीचे ठहरे हुए थे, उस समय स्थान का प्रबन्ध अति आवश्यक समझा गया, इस कार्य्य को भी हमारे कार्यकर्ताओं ने अपने ज़िम्मे लिया, और निभाया।

यह थी स्थिति सक्खर, लाडकाना और दादू की। सारी ओर दृष्टि उठाकर देखने के पश्चात और दूसरे प्रसिद्ध व्यक्तियों की सम्मति लेने के पश्चात हम ने यह निश्चय किया, कि इस समय तो बहुत सी संस्थाऐं बड़े उत्साह से कार्य्य कर रही हैं, सहायता भी दी रही है, और इन कामों में यदि कहीं कहीं त्रुटि रहती हो, उसको पूरा किया जावे, परन्तु दिक्कत तो आगे चल कर उपस्थित होगी। पानी के कम होते ही लोग अपने २ ग्रामों की ओर जावेंगे और उन स्थानों के लोग—जहां पानी उतर गया है—अभी से जाने आरम्भ हो भी गये हैं, पानी के नीचे होने पर और आश्विन के आरम्भ होते ही बड़े ज़ोर से मलेरिया फैलने की आशंका हो रही है, गांवों में दुर्गन्ध के कारण हैज़ा भी फूट पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं। आटे की बड़ी किल्लत हो जावेगी। इन सब बातों का ध्यान रख कर हमने अपनी शक्ति का बहुत बड़ा अंश इस ओर लगाने का विचार बना लिया और आने वाले भयङ्कर कष्ट का सामना करने के लिये प्रयत्न भी आरम्भ कर दिया।

यह सारी की सारी रिपोर्ट आने पर और कार्य का निश्चय करने के पश्चात हम ने ज़्यादा एकत्र करने के लिये श्री प्रधान सभा पं० पत्रों द्वारा घोषना की गयी, और प्रसिद्ध दानि और सारी समाजों को भिन्न २ लिखा गया।

समाजों और दानियों की ओर से धन आना आरम्भ हो गया, इसी समय सभा के कोषाध्यक्ष ला० नारायणदास जी कपूर की प्रेरणा से लाहौर सिन्धी सभा ने बहत सा धन एकत्रित करके सभा को सौंप दिया और धन एकत्रित करके देने का आश्वासन दिलाया उस समय तक हमारे पास निम्नलिखित रुपया आ चुका था:—

रवी वर्मा स्टील वर्कस अम्बाला शहर	२५)
ला० नन्दलाल जी	२५)
ला० हरभगवानदास जी	२५)॥
राय साहब अमृतराय जी	२५)
सिन्धी रिलीफ एसोसिएशन (ला० किशनचन्द जी द्वारा)	१०००)
कर्मसिंह जी ठेकेदार	२५)
श्री० लक्ष्मी देवी जी अमृतसर	५०)
आर्य्य समाज चूनान	११)
,, ,, नवां शहर	१०)
,, ,, बहादुर गढ़	१०)
ला० रामलाल जी रावलपिण्डी	१००)
श्री० मिलखा सिंह जी देहली	५१)
ला० हंसराज जी	५१)
ला० मोहनलाज जी	८०)
आर्य्य समाज लाहौर छावनी	७३
,, ,, जडांवाला	५४॥)
ला० किरपाराम जी, बेलीराम ब्रादर्स	५००)
	२६१४॥)

उसके पश्चात् आज तक जो रुपया एकत्रित हुआ, उसकी सूची निम्नि लिखित है।

आर्य्य स्त्री समाज क्वेटा	१२५)
ला० लक्ष्मीदास जी शाहपुर	८२ ८
ला० तोलाराम मोहनदास भक्कर	१०१)
राय साहब लक्ष्मणदास मोहनलाल	२०)
आर्य्य समाज फिरोज़पुर शहर	२५)
,, रामपुर राजौरी	१५)
ला० चिरंजीत लाल जी वानप्रस्थी	५०)
श्री० सीतादेवी जी D.G. Khan	५०)
प्रधान सिन्ध रीलीफ कमेटी	२५००)
पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा ट्रस्ट	१००)
सेठ रजूमल लक्ष्मीदास	१२५)
सेठ भगतराम कन्नूमल	२००)
श्रीमती विश्वदेवी सिबी	४२)
मास्टर गुरुदास जी भक्कर	२५)
आर्य समाज पिण्डी भट्टियां	३१॥)
प्रधान सिन्ध रीलीफ कमेटी	५०००)
भल्ला शू कम्पनी	२५)
पीड़ित सहायता निधि	१६७॥)
सिन्ध रीलीफ कमेटी	३०००)
आर्य समाज बोहड गेट मुलतान	२६)

विविध दानियों द्वारा इस समय तक ११५०१।८ इस निधि में प्राप्त हो चुका है।

इसके अतिरिक्ति सिन्धी सभा की ओर से ७००० और भी मिलने की आशा है, हमारा कार्य फरवरी तक चलेगा, जिसके लिये रु० पूरा हो जावेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

दक स्वाध्याय—

वह पलकों की झपकन भी गिन लेता है

[श्री पं० प्रियव्रत जी आचार्य वेदवाचस्पति]

[५]

सर्वं तद् राजा वरुणो विचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात् ।
संख्याता अस्य निमिषो जनानामक्षानिव श्वघ्नी निमिनोति तानि ॥ अथर्व ४।१६।५॥

अर्थ—(यत्) जो (रोदसी) द्युलोक और पृथिवी लोक के (अन्तरा) बीच में है (यत्) और जो परस्तात् इनसे परे है (तत्) उस (सर्वं) सब को (राजा) राजा वरुण (विचष्टे) अच्छी तरह देखता है (जनानाम्) मनुष्यों की (निमिषः) पलकों के झपकने भी (अस्य) इसके (संख्याताः) गिने हुए हैं (इव) जैसे (श्वघ्नी) जूआ खेलने वाला (अक्षान्) पासों को (निमिनोति) वश में करके फैंकता है, वैसे ही यह राजा वरुण (तानि) पलकों के उन झपकनों को (निमिनोति) वश में करके फैंकता है अर्थात् झपकाता है।

पिछले मन्त्र में जो बात कही गई थी उसी को प्रस्तुत मन्त्र में फिर प्रकारान्तर से कहते हैं। द्यु लोक और पृथिवी लोक के बीच में जो कुछ है, और इनसे परे भी जो कुछ है, राजा वरुण उस सबको देखता है। द्युलोक के ही विस्तार का पहले तो कोई अन्त नहीं है। फिर जब यह कहा कि द्युलोक और पृथिवी लोक से परे भी जो कुछ है, उसे भी वरुण जानता है तो इसकी यह ध्वनि है कि अनन्त आकाश में जो कुछ है उस सबको वह जानता है। क्योंकि द्युलोक और पृथिवी लोक से परे जो कुछ है वह तो अनन्त आकाश ही है। वहां भी जो कुछ है वह भी वरुण का ज्ञात है। क्योंकि वरुण भगवान् उस अनन्त आकाश में भी व्यापक हैं। भगवान् से जगत् की कोई भी जड़ और चेतन वस्तु छिपी नहीं है। और चेतन वस्तुओं का भी कोई विचार और कोई चेष्टा भगवान् से अज्ञात नहीं है। यहां तक कि हमारी पलकों के झपकने तक भी प्रभु के गिने हुए हैं। जैसे जुआ खेलने वाले के हाथ में पासे पूरी तरह वश में होते हैं, वह उन्हें अपनी मुट्ठी में से निकाल कर जब चाहे तब फैंकदे, और जब चाहे तब न फैंके, वैसे ही हमारी पलकों के झपकने भी प्रभु के वश में हैं। जब तक वह चाहते हैं तभी तक हमारी आंखें झपक सकती हैं, तभी तक हमारा जीवन रह सकता है। जब वे नहीं चाहेंगे तब हमारी आंखें नहीं झपक सकेंगी, हम निर्जीव होकर चेष्टाहीन हो जायेंगे। हमारे कर्मानुसार जब तक भगवान् आवश्यक समझते हैं तभी तक हमारा जीवन और उससे जन्य हमारी पलक मारना आदि नाना चेष्टायें स्थिर रहती हैं। हमारे कर्मानुसार जिस समय भगवान् हमारी इन चेष्टाओं को बन्द करना चाहते हैं, उससे आधा क्षण भी अधिक समय तक इन चेष्टाओ को स्थिर रखने का सामर्थ्य हम में नहीं है। इन सब का संचालन वस्तुतः उस महाप्रभु के हाथ में है। पलकों का झपकना एक उदाहरणमात्र है। यह पलकों का झपकना जड़ और चेतन संसार के सब पदार्थों की जीवन-सत्ता और उनकी सब क्रियायें प्रभु के हाथ में हैं। अपनी नियम व्यवस्था के अनुसार संसार के किसी पदार्थ को भगवान् जब तक रखना चाहते हैं तभी तक वह रहता है और तभी तक उसकी सब क्रियायें रहती हैं। जब भगवान् नहीं चाहते, भगवान् के नियमों में बंधा हुआ वह पदार्थ तभी अपनी सत्ता और अपनी क्रियाओं को खो बैठता है। भगवान् के नियमों से बाहर होकर एक पत्ता भी हिलने का सामर्थ्य नहीं रखता है।

यहां श्वघ्नी के दृष्टान्त का इतना ही तात्पर्य है कि जैसे पासे उसकी मुट्ठी में होते हैं, पूर्णतया उसके वश में होते हैं, वैसे ही संसार का प्रत्येक पदार्थ वरुण भगवान् की मुट्ठी में है, पूर्णतया उनके वश में है। इस से अधिक भाव यहाँ श्वघ्नी के दृष्टान्त का नहीं लिया जा सकता। जैसे श्वघ्नी बिना किसी नियम के पासों को जब चाहे तब फैंक देता है और जब न चाहे तब नहीं फैंकता है, पासों के फैंकने और न फैंकने में केवल श्वघ्नी की इच्छामात्र कारण है, अपनी इच्छा से भिन्न और किसी नियम का ध्यान वह नहीं रखता है, वैसे ही भगवान् भी जब चाहें तब बिना किसी नियम के खाली अपनी इच्छामात्र से किसी पदार्थ या प्राणी के साथ जो चाहे व्यवहार कर सकते हैं ऐसा नहीं समझा जा सकता। दृष्टान्त का सर्वांश में ग्रहण नहीं हुआ करता, वह तो केवल एक अंश को स्पष्टता से समझाने के लिये दिया जाया करता है। भगवान् श्वघ्नी की तरह मन मानी नहीं कर सकते। भगवान् की इच्छा पर नियमों का बन्धन है। यह और बात है कि ये नियम पदार्थों के स्वभाव को ध्यान में रखकर स्वयं भगवान् ने ही बनाये हैं। भगवान् समय समय पर किसी जड़ और चेतन पदार्थ से जो व्यवहार करते हैं वह अपने बनाये इन नियमों के अनुसार ही करते हैं। इन नियमों का उल्लंघन करके भगवान् मनमाना आचरण नहीं कर सकते। भगवान् को वेद में स्थान-स्थान पर ऋतंभर, व्रतपा, व्रतपति, यम आदि नामों से कहा गया है। इन नामों का अर्थ यह है कि भगवान् विश्व में नियमों को बनाने वाले, उनके संचालक और रक्षक हैं। वेद में अन्यत्र वर्णित प्रभु के इस गुण के आधार पर हमें श्वघ्नी के दृष्टान्त का वही भाव समझना चाहिये जो अभी ऊपर दिखाया गया है।

मन्त्र में जूआ खेलने वाले को श्वघ्नी कहा गया है। यह शब्द जूए के खेल पर बड़ा सुन्दर प्रकाश डालता है। श्वघ्नी का अर्थ होता है जो 'कल' अर्थात् अपने धन का, अपना तथा अपने सम्बन्धियों का धन का स्वामी होना चाहता है। परन्तु धनी के स्थान में जुआरी प्रायः अपने पूर्ण संचित को भी नष्ट कर बैठता है। और धन नष्ट हो से उसका अपना और अपने सम्बन्धियों का नाश हो जाता है। उन्हें भांति भाँति के कष्ट पड़ते हैं। इसी लिए ऋग्वेद के द्यूत सूक्त में खेल कर धन कमाने के प्रकार की बड़ी निन्द गई है। इस सूक्त में जो बात विस्तार से कही है, वही श्वघ्नी नाम में संक्षेप से बड़ी सुन्दरता से दी गई है।

हे मेरे मन! जिस प्रभु ने हमारे पलकों के कने तक को जाना हुआ है। भला तू पाप करके प्रभु से कहां बच सकेगा? तेरा कलयाण इसी कि तू पाप के मार्ग पर चलना ही बन्द करदे।

श्री चमूपति साहित्यविभाग के प्रका

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों स्वाध्याय से विंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २॥) Imomrtal Sayings ofDayan
जीवन ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला
स्वाध्याय संग्रह ॥।) वैदिक धर्म की जय
वैदिक स्वर्ग ॥।) यास्क युग
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास
देव यज्ञ ।) Glimpses ofDayanan
पीयूषबिन्दु ।=) त्रिदेव निर्णय
निरुक्त का मूल वेद में

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे पर मिल सकेंगी।

Hindu America
Light of Truth

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य विभ
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

साप्ताहिक आर्य

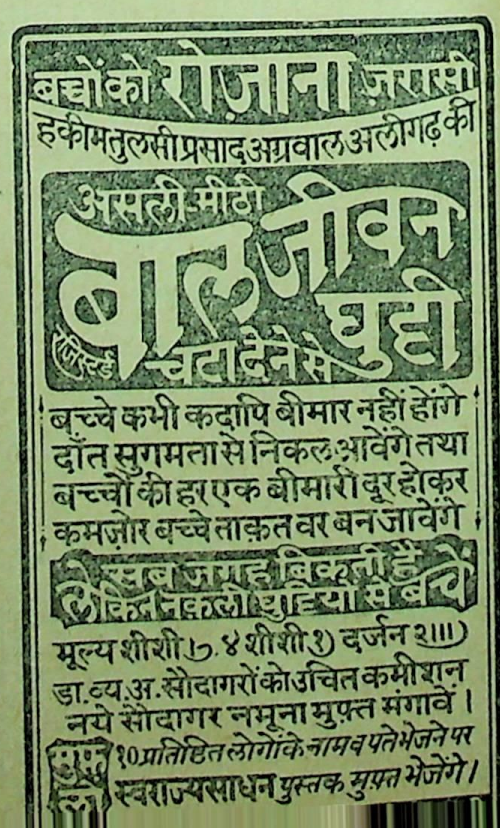

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Digitized by eGangotri Foundation

आर्य समाजों की सेवा में आवश्यक निवेदन

मलिखित प्रस्ताव स्वीकार करके भेजें

ाी में संस्कृत विद्या के प्रचार के लिए गव-
स्कृत कालिज की स्थापना ईस्ट इण्डिया
के शासन काल में सन् १७९२ ई० में हुई
सकी स्थापना वेद उपवेद आदि १८
के विस्तार के लिए हुई थी। उस समय
८ ई० तक यह कालेज एक ही ढंग से चलता
१९१८ ई० से इसकी उन्नति का सूत्रपात
स उन्नति का विवरण नीचे के अंक में देते

द्रों की यू०पी० में यू०पी० से योग
संख्या स्वी० पा० बाहिर स्वी०
शा० पा०शा०

१३	४२	११	५३
२३	३९६	१२०	५१६
३९	७४६	२०२	९४८
४६	९२६	३२०	१२४६

१२ ई० तक विद्यार्थियों की संख्या ९-१०
ी. सन् १९४१ ई० में यह संख्या १६ हज़ार
पहुंच गई। इन परीक्षाओं के केन्द्र न
० पी० में बढ़े अपितु यू० पी० से बाहिर
बाड़ौदा, राजपूताना, दिल्ली आदि प्रान्तों
नका विस्तार हुआ।

ामेंट संस्कृत कालेज की परीक्षाओं की
को लक्ष्य में रखते हुए गवर्नमेंट ने आव-
मझा कि उसके पाठ्य क्रम में आवश्यक
और वृद्धि की जावे। क्यों कि इससे
ी पाठ्यक्रम चल रहा था वह एकदेशीय
नुसार सन् १९३२ में प्राचीन न्याय तथा
व्याकरण का भी इस पाठ्यक्रम में समावेश
इसका श्रेय उस समय के प्रिंसपलों म० म०
न्नाथ झा तथा म० म० पं० गोपीनाथ कवि-
को है। इसके पश्चात् सन् १९३८ में गव-
की नियुक्ति की हुई कमेटी ने इस पाठ्यक्रम
भी उन्नत किया, जिसमें महामहोपाध्याय
न्नाथ तर्कभूषण प्रिंसिपल संस्कृत विभाग
निवर्सिटी—तथा महामहोपाध्याय पं० ए०
ामी शास्त्री आदि जैसे प्रसिद्ध विद्वान् थे,
इ उन्नत क्रम यह था कि उन्हों ने मध्यमा में
ीन व्याकरण का समावेश किया। तथा वेद
फ्या, सर्वन्याय, निम्बार्क तथा वल्लभवेदांत
द्ध दर्शनादि विषयों को पाठ्यक्रम में बढ़ा
इस कमेटी के पाठ्यक्रम सम्बन्धी निश्चय
सरकार की आज्ञा से सन् १९४० से प्रायेण
में परिणत होने लगे, और इसी के अनुकूल
ाली बन कर गवर्नमेंट की ओर से प्रकाशित

हमें प्रामाणिक सूत्र से पता लगा है कि
अलग रहे, प्राचीन व्याकरण तथा प्राचीनन्याय जैसे परमोपयोगी विषयों तक को भी शास्त्री और आचार्य परीक्षाओं से सन् १९४४ से हटा देने का निश्चय किया है, जो लगभग ९-१० वर्ष से निरन्तर चल रहे हैं, जिनमें छात्रों की संख्या आशा से अधिक बढ़ रही है।

इसलिये हमारी इस सभा की यह सम्मति है, कि—

(१) संस्कृत शिक्षा बोर्ड के इस निर्णय को, कि प्राचीन न्याय और प्राचीनव्याकरण को नव्यन्याय और नव्यव्याकरण में मिला कर एक विषय बना दिया जावे, सरकार कदापि स्वीकार न करे, क्योंकि गोलमाल शब्दों में इस प्रस्ताव का यही अभिप्राय है, कि प्राचीन न्याय और प्राचीन व्याकरण को सदा के लिये हटा दिया जावे।

(१) जो पाठ्यक्रम यू० पी० गवर्नमैण्ट ने सन् १९४२ के प्रारम्भ में रद्द कर दिया है, उनमें से इन आवश्यक विषयों को फिर ले शीघ्रता से इस प्रकार जारी कर दिया जावे, जिससे उन बहुसंख्यक विद्यार्थियों की पढ़ाई में बाधा न पड़े, जिन्हों ने कि इन विषयों को लेकर परीक्षाएँ देना आरम्भ किया हुआ है।

(३) यदि गवर्नमेंट इस विषय में अंशतः या सर्वाङ्गता से और अधिक अनुसन्धानादि करना चाहती है तो प्रसन्नता से करे परन्तु ऐसी अवस्था में जिन विद्यार्थियों ने इन विषयों को लिया हुआ है उनको अपने विषयों को बराबर जारी रखते हुए अन्तिम आचार्य तक परीक्षा देने की अनुमति तत्काल दी जावे।

आर्य्य जगत के समाचार

अम्बाला छावनी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव ता० २०--१२ ४२ को निम्न प्रकार हुआ:--

प्रधान:— श्री व० बुलाकीदास जी।

उपप्रधान—१. श्री डा० शभ० डी० चौधरी जी।
२. श्री डा० लालचन्द जी।

मन्त्री:— सदानन्द आर्य।

उपमन्त्री:—१. प० प्रेमसागर जी
२. श्रीमती सुवीरां देवी जी।

कोषाध्यक्ष:—ला० किशोरीलाल जो।

पुस्तकाध्यक्ष:--पं० जगदीशचन्द जी।

प्रतिष्ठित सभासद:—श्री ए० स० ला० अमृतरायजी

इसके अलावा ४ सभासद अंतरंग सभासद चुने गये:—

२४-१२-४२ को अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानंदजी का बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। वर्षा होने के बावजूद भी आर्य्यसमाज जी की सेवा में श्रद्धांजलि पेश की गई। उन की जीवनी पर कई एक सज्जनों के बड़े प्रभावशाली व्याख्यान हुये और बलिदान दिवस बड़ी कामयाबी से समाप्त हुआ।

सप्ताह सतसंग बड़े उत्साह पूर्वक हो रहे हैं। और यत्न हो रहा है कि इससे अधिक उत्साह वाले बनाए जाएं —मन्त्री समाज

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा अजमेर का ५४ वां वार्षिक अधिवेशन।

ता० २५-२६ दिसम्बर सन् ४३ को प्रान्त के आर्य प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सानन्द समाप्त हुआ सर्व सम्मति से श्री प्रो० घीसुलाल जी M.A. एडवोकेट प्रधान तथा दे० भ० श्री० कुंवरचांदकरण जी शारदा मन्त्री और श्री० पं० भगवान् स्वरूप जी न्याय भूषण सहायक मन्त्री चुने गये। वेद प्रचारार्थ ५ लाख रुपया एकत्र करने की योजना साथ स्वीकृत किया गया। आर्य परिवार सम्बन्धी योजना को कार्य रूप में परिणत करने का प्रस्ताव पास हुआ।

फिरोज़पुर शहर के समाचार

आर्य समाज फिरोज़पुर शहर में प्रातःकाल का सत्संग देर से जारी है। आजकल यजुर्वेद भाष्य का पाठ हो रहा है। १६।१२ ४२ को म० मदनजित की माता का स्वर्गवास हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार बड़ी श्रद्धापूर्वक हुआ श्री पं० गंगाशरण जी का योग के ऊपर व्याख्यान हुआ और १३ दिन महाशय जी के गृह पर दोनों समय हवन यज्ञ होता रहा। ५१) दान किया गया। मन्त्री आर्य समाज

आर्य्य समाज पेशावर शहर के समाचार

स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में २४ दिसम्बर शाम के ५॥ बजे से हवन किया गया। उसके अनन्तर श्री अचरजराम जी टंडन की अध्यक्षता में उत्सव मनाया गया। सभी आर्य, सिक्ख, सनातन धर्मी, भाई उपस्थित थे। जिसमें दीवान चिरञ्जीलाल जी वकील तथा और कई महानुभावों के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। मास्टर विशनदास जी जग्गी की सरस कविता भी हुई। [मन्त्री]

—गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी का ४१ वां वार्षिकोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में ता० २३ से २६ अप्रैल ४३ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर होने वाले दीक्षान्त संस्कार पर कलकत्ता विश्वविद्यालय के भूत पूर्व वाईस चांसलर बंगाल के प्रसिद्ध नेता डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी दीक्षान्त भाषण देंगे। इन्द्र

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद-प्रचार विभाग

[पं० यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार प्रचार अधिष्ठाता]

(१) बड़े दिनों की छुट्टियों में जालन्धर शहर, आदमपुर, कुलाची, मनीमाजरा, चिन्तपुरणी, बामल, महतपुर, मरसिमा इत्यादि आर्य समाजों के उत्सव बड़ी सफलता पूर्वक समाप्त हुए।

(२) २४ से २६ दिसम्बर को आर्यसमाज जालन्धर शहर का उत्सव बड़ी धूमधाम से समाप्त हुआ। कहा जाता है कि इस उत्सव में जितनी उपस्थिति हुई उतनी गत कई वर्षों से कभी नहीं हुई थी। पंडाल हर समय धर्म प्रेमी आर्य पुरुषों और देवियों से भरा रहता था। इस उत्सव पर पं० बुद्धदेव जी सभा प्रधान आचार्य प्रियव्रत जी पंडित मुनीश्वर देव जी, स्वामी ज्ञानानन्द जी पं० रामस्वरूप जी पराशर म० चिरञ्जीलाल जी प्रेम इत्यादि उपदेशकों के व्याख्यान विशेष प्रभाव उत्पन्न करने वाले थे। पं० बुद्धदेव जी तथा पंडित प्रियव्रत जी के व्याख्यान विशेष पसन्द किये गये। म० जयप्रकाश जी म० हंसराज जी म० भक्तराम जी म० देशराज जी तथा स्वामी स्वरूपानन्द जी ने अपने भजनों से जनता को आर्य समाज का सन्देश दिया। इस सफलता के लिये आर्यसमाज के अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

(३) जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है कि जिला लाहौर में ग्राम प्रचार पर विशेष बल दिया जा रहा है। पं० रामचन्द्र जी प्रचारक अधिष्ठाता वेदप्रचार के निरीक्षण में ग्राम प्रचार कर रहे हैं। ऐसी आशा करनी चाहिये कि इस वर्ष लाहौर जिला में कई आर्यसमाजें स्थापित हो सकेंगी और ऐसे स्थानों पर प्रचार किया जा सकेगा जहां कि पूर्व आर्य समाज का प्रचार कभी नहीं हुआ था।

(४) सभाकी तरफसे ज़िला अमृतसरमें स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती ने ग्राम प्रचार का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। प्रारम्भ में वे ज़िला अमृतसर के बड़े २ ग्रामों में जहां अभी तक आर्य समाज का प्रचार नहीं हुआ, वहां पधार कर प्रचार करेंगे।

(५) इस समय ज़िला स्यालकोट में स्वामी योगानन्द जी तथा म० रामनाथ जी, ज़िला लाहौर में पं० रामचन्द जी तथा म० बलदेव जी तथा ज़िला अमृतसर में स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती ज़िला मुजफ्फर गढ़ में पं० तीर्थराम जी, म० गुलशनलाल जी वेदप्रचार की नई स्कीम के अनुसार मंडल के ढंग पर कार्य कर रहे हैं।

(६) पं० शान्तीप्रकाश जी सिद्धान्तभूषण तथा म० तेजभान जी भजनोपदेशक को गुजरात तथा झेलम के मंडल में नियत किया गया है। इन दोनों महानुभावों ने अपने मंडल का दौरा प्रारम्भ कर दिया है। इस मास यह दालमिया सीमेन्ट फैक्टरी बस्ती पिण्ड दाननखां, सरोवा, चकबाल, तलागंग आदि स्थानों पर प्रचार करेंगे।

(ख) म० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार तथा महाशय मेहरचन्द जी भजनोपदेशक का मंडल सरगोधा लायलपुर झंग नियत किया गया है। इस पास में यह खुशाब, शेरकोट, झंग, पीरमहला अहमदपुर स्याल मेला कोट मूलचन्द मीरकोट सिद्धानादि स्थानों में प्रचार करेंगे।

—इन दिनों गुरुदत्त भवन हाल में प्रतिदिन दैनिक सत्संग होता है। श्री चिरंजीत लाल जी वानप्रस्ती धर्मकथा करते हैं। जनवरी मास में आप ही कथा करेंगे। दैनिक संध्या हवन के साथ कीर्तन भी होता है

(७) साप्ताहिक आर्य नियम पूर्वक प्रकाशित हो रहा है। जो आर्य समाजें आर्य पत्र की ग्राहक नहीं हैं उनका कर्तव्य है कि शीघ्र ही ४) भेज कर इसके ग्रहक बन जायें।

गुरुकुल की विशेष परीक्षाएं

हिन्दू जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उसकी संस्था गुरुकुल कांगड़ी की प्रबन्ध कर्तृ विद्या सभा ने गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की शिक्षा का अवसर वाह्य विद्यार्थियों को भी देने का निश्चय किया है। इसके लिए संस्कृत, हिंदी वेद, संगीत, सम्पादन कला, इतिहास, गृह विज्ञान, धर्म शास्त्र आदि विषयों में छात्र परीक्षाओं की आयोजना की गई है।

छात्र परीक्षाओं की पूर्ण योजना बन चुकी है। इनकी पाठ विधि, नियम और पुस्तकों की सूची यन्त्रालय में जा रही है। आशा हैं आर्य संस्कृति के प्रेमी तथा विद्याव्यसनी भाई और बहनें इस योजना का पूरा लाभ उठाएंगे।

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) का वार्षिकोत्सव तथा नए प्रवेश

"श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का १३ वां वार्षिकोत्सव फाल्गुन कृष्णा १३ से फाल्गुन शुक्ला १ सं० १९९९ वि० तदनुसार ता० ४ मार्च से ७ मार्च १९४३ ई० तक वृहस्पति शुक्र-शनि, रवि को बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। सब महानुभावों से से निवेदन में कि वे सपरिवार इष्ट मित्र सहित उत्सव में सम्मिलित हों और लाभ उठावें।

ता० ३ मार्च को नूतन ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जायेंगे। जो अपने बालक प्रविष्ट कराना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय से प्रवेश फार्म मंगा कर शीघ्र भर कर भेजदें। और नियत तिथिपर अपने बालक को प्रविष्ट करावें।"

आपका हितैषी व्रतानन्द
आचार्य वमुख्याधिष्ठाता

देश विदेश के समा

—गत सप्ताह अखिल भारतवर्षीय हिन्दू का वार्षिक अधिवेशन कानपुर में बैरिस्टर कर के सभापतित्व में शुरू हुआ। भिन्न २ ५०० प्रतिनिधि तथा ५००० दर्शक उ स्थत थे।

अपने सभापति के भाषण में उन्होंने पाकिस्तान योजनाकी असम्भवता पर वि करते हुए हिन्दुओं को सेना में भर्ती अस्पृश्यता का समूल नाश करने के लिए धिक प्रेरित किया।

—अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेदिक म ३१ वां अधिवेशन बड़े दिनों की छुट्टियों में राजवैद्य जीवाराम कालिदास शास्त्री पतित्व में (गोण्डल स्टेट) युनिवर्सिटी पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। रा नाथ ने उद्घाटन समारम्भ किया।

—कलकत्ता कार्पोरेशन के श्रमजीवी क ने बंगाल सरकार से उनकी तकलीफों पर भूतिपूर्ण विचार होने का आश्वासन मि हड़ताल को वापिस ले लिया है!

—भारत सरकार ने बी. एन. डबल्यू रे रोहेलखण्ड कुमायूं रेलवे खरीद कर १ ज अपने हाथ में ले लिया है।

—फ्रेञ्च सोमालीलण्ड की डीगालकी प्र ने अमरीका और मित्रराष्ट्रों के साथ मिल झौता कर लिया है।

—बम्बई और पंजाब सरकार ने खाक के ऊपर से प्रतिबन्ध हटा लिये हैं।

—अखिल भारतवर्षीय हिन्दु महा आगामी वार्षिक अधिवेशन पंजाब में अ होना निश्चित हुआ है।

—श्रीयुत पं० मदन मोहन मालवीय जी वर्षगांठ सारे हिन्दुस्तान में ३१ दिस मनायी गई।

—ब्रिटिश युद्ध समिति के भारतीय सर रामस्वामी मुदालियर ने सर बि बाजपेयी के साथ वाशिंगटन में मि० क हल के साथ ३० दिसम्बर को मुलाकात

—आल इण्डिया मुसलिम लीग अधिवेशन ईस्टर की छुट्टियों में बम्ब निश्चित हुआ है।

—रूसी सेना ने वेलिक लुकी जो स ३० मील उत्तर में है, फिर से जर्मन से लिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन सभा-मन्त्री

Regd. N. L. 50

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अं[illegible]

वार्षिक मूल्य ४)

१७ जनवरी १९४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

GURUKULA KANGRI DELY. 18 JAN. 1 3 SAHARANPUR

अध्यात्म सुधा

[[आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों के लिये आर्य में 'अध्यात्म सुधा' तथा वैदिक स्वाध्याय के स्तम्भों का विशेष रूप से संकलन किया जाता है। समाजों के अधिकारियों को इससे लाभ उठाना चाहिये।]

(५)

अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्

हरेक कन्या पाठशाला, स्कूल, कालेज में कोई न कोई शिल्प अवश्य हरेक विद्यार्थी को सिखाना चाहिए।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व। तद्ब्रह्मेति। स तपोऽनप्यत। स तपस्तप्त्वा। इति प्रथमोऽनुवाकः।

अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्

अन्नाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। अन्नेनैवजातानि जीवन्ति। अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। भृगुवल्ली। तैत्तिरीयोपनिषत्।

उपनिषत्कार ऋषि शिष्य की योग्यता के भेद [illegible] ब्रह्म का स्वरूप निरूपण करते हैं। ब्रह्म का [illegible] सामान्य लक्षण इस प्रकार से है।

जिस शक्ति से यह सब दृश्यमान भूत-पदार्थ [illegible] होते हैं। उत्पन्न हुए जिस शक्ति से जीते [illegible]। जीने के बाद पुनः जिसमें विलीन हो जाते हैं। [illegible] ब्रह्म है। प्रारम्भिक श्रेणी के शिष्य ने ऋषि [illegible] इस व्याख्या पर विचार किया। उसने देखा [illegible] सब दृश्यमान चर् जगत् अन्न से पैदा होता [illegible]। मनुष्य, पशु, पक्षी अन्नसे—अन्नसे उत्पन्न वीर्य [illegible] पैदा होते हैं। उत्पन्न होकर अन्न—भोजन द्वारा [illegible] हैं।

फिर मल, मूत्र, मट्टी आदि के रूप में अन्न [illegible] मूल कारण में संनिविष्ट हो जाते हैं। इस [illegible] 'अन्न' को ही ब्रह्म समझना चाहिए। और [illegible] की अर्चना और उपासना हरेक व्यक्ति को [illegible] चाहिये।

'अन्न ब्रह्म' है इसकी सचाई को आज अधि[illegible] मनुष्य दिन रात आटा आदि खाद्य पदार्थों [illegible] महंगाई तथा कमी के कारण अनुभव कर रहे [illegible]। उपनिषत् वाक्य की सचाई का अनुभव करने [illegible]

आम तौर पर हम लोग अदृश्य परमात्मा ब्रह्म की खोज के लिये अपने आत्मा को ज्ञानाग्नि से पवित्र करने का यत्न करते हैं। आत्मा को ज्ञानी और पवित्र बना कर ही हम परमात्मा के—सच्चिदानन्द ब्रह्म के दर्शन कर सकते हैं। इसी प्रकार से सद्-ब्रह्म अन्न के दर्शन करने के लिये हमें शरीर को क्रियाशील और शक्तिशाली बनाना चाहिये।

भारतवर्ष में विशेषतया हिन्दू जाति की दोष पूर्ण दान प्रथा ने अधिकांश भारतियों को दूसरों का मुहताज तथा पराश्रित बना दिया है। अन्न ब्रह्म की उपासना का एक मात्र मुख्य उपाय यह है कि हममें से हरेक व्यक्ति कोई न कोई उत्पादक श्रम (productive lebour) का कार्य अवश्य करे। प्राचीन आर्य लोगों ने कृष करना, गौ चराना तथा अन्य इसी प्रकार के कार्य नियत किये हुए थे। बड़े बड़े ज्ञानी ब्राह्मण भी शारीरिक परिश्रम करना मुख्य कर्म समझते थे। कणाद मुनि खेतों में से कणों का संचय करते थे ऋषि—शिष्य गोपालन करते थे। श्रीकृष्ण जैसे राजकुमार भी गोपालन में लगते थे।

करते थे। जब जातियों में [illegible] परिश्रम करने की आदत कम हो गई, शारीरिक श्र[illegible] करने वाले चर्मकार, किसान, धोबी आदि क[illegible] छोटी जाति का समझा जाने लगा तभी से हम लोग अन्न के लिये दूसरों के मोहताज बन गये भारतवर्ष की विविध जातियों के रहन सहन क[illegible] देखें तो पता चलता है कि शारीरिक परिश्र[illegible] द्वारा अन्न ब्रह्म की उपासना करने वाली जातिय[illegible] आज इस संकट के समय में भी औरों की अपेक्ष[illegible] प्रसन्न है [illegible] करने से, परिश्रम करने से शरी[illegible] की मैल दूर होती है। यदि हम अपने शरीर क[illegible] पवित्र करना चाहते हैं तो हमें कोई न कोई शारीरिक श्रम का काम करना चाहिये। तभी हम अन्नब्रह्म के दर्शन कर सकेंगे। अदृश्य ब्रह्म की उपासना के लिये ज्ञान द्वारा आत्मिक श्रम करना चाहिए। ज्ञान की साधमा के जिये सत्य साधना द्वारा मन को पवित्र करना चाहिए। अन्नब्रह्म के दर्शन के लिये शारीरिक श्रम—उत्पादक श्रम करना चाहिये। यदि हम लोग इन दिनों यथा शक्ति कुछ न कुछ उत्पादक श्रम करने में लगेंगे तो हमें किसी न किसी अंश में अन्न ब्रह्म के दर्शन होंगे। तभी हम विज्ञान ब्रह्म और आनन्द ब्र[illegible] के दर्शन कर सकेंगे। बिना अन्न ब्रह्म के दर्शन के सच्चिदानन्द ब्रह्म के दशन नहीं हो सकते। हमें इस सचाई को हर समय अपने सामने रखना चाहिये। और यही इस उपनिषद् वाक्य का कहना है। इस दृष्टि से विद्यालयों में शिल्प सिखाने की व्यवस्था करनी चाहिये।

—भारतीय समाचार पत्रों में और भारतीय सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों में अखबारों पर लगाई गई पाबन्दियों के सम्बन्ध में झगड़ा चल रहा था। सरकार ने पाबन्दियां उठाली हैं। समाचार पत्रों ने भी सरकारी विज्ञप्तियां तथा सरकारी अफ़सरों के भाषण भी छापने की अनुमति दे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिक स्वाध्याय—

प्रभु के पाश

(ले०—श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति)

ये ते पाशा वरुण सप्त सप्त त्रेधा तिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः।
सिनन्तु सर्वे अनृतं वदन्तं यः सत्यवाद्यस्ति तं सृजन्तु ॥
[५] अथर्व ४ । १६ । ६

अर्थ—(वरुण) हे वरुण (ये) जो (ते) तेरे (सप्त सप्त) पंचज्ञानेन्द्रिय, मन और बुद्धि इन सात अथवा शरीर की सात धातुओं से सम्बन्ध रखने वाले (त्रेधा) उत्तम, मध्यम, अधम भेद से तीन प्रकार के (रुशन्तः) दुष्टों की हिंसा करने वाले (विषिताः) अच्छी तरह से बांधे हुए (पाशाः) पाश (तिष्ठन्ति) पड़े हैं (सर्वे) वे सब (अनृतं) असत्य (वदन्तं) बोलने वाले को (सिनन्तु) बांध (यः) जो (सत्यवादी) सत्यवादी है (तं) उसे (अतिसृजन्तु) छोड़ देवें।

पिछले मन्त्रों में यह बताया गया था कि वरुण सर्व द्रष्टा हैं, वे सब स्थानों में रहने वाले सब व्यक्तियों के विचारों और आचरणों को भली भांति जानते हैं। प्रस्तुत मन्त्र में यह दिखाया गया है कि वे भगवान केवल द्रष्टा मात्र ही नहीं हैं। वे अधर्माचारी दुष्ट व्यक्ति को अपने पाशों से भी पकड़ लेते हैं। उन के सात प्रकार के पाश हैं। फिर इन सात के तीन तीन भेद और होकर ये इक्कीस पाश हो जाते हैं। ये पाश विषित हैं, इन्हें बहुत अच्छी तरह बांधा गया है, बहुत अच्छी तरह से बनाया गया है। अर्थात् इन्हें इस प्रकार का अच्छा बनाया गया है कि कीई भी अपराधी इन्हें तुडाकर इनके बन्धन से निकल नहीं सकता। फिर ये पाश इस प्रकार के हैं कि दुष्ट लोगों की इनसे खूब हिंसा होती है, इन्हें इनसे खूब अच्छी तरह दण्डित होना पड़ता है। फिर ये पाश इस प्रकार के हैं कि सत्यवादी को ये छोड़देते हैं, उसे नहीं पकड़ते। इसीलिये सत्यवादी को इनसे डरने की आवश्यकता नहीं है। यहां सत्यवादी शब्द उपलक्षण होकर आया है। धर्म के सत्य आदि सभी अंगों का पालन करने वाले लोगों को यह शब्द सूचित करता है। क्योंकि धर्म के सम्पूर्ण अङ्गों का आधार वस्तुतः सत्य ही है। परन्तु जो असत्यवादी है, जो धर्म के सत्य आदि अङ्गों का भङ्ग करने वाले अधर्माचारी पापी लोग हैं उन्हें वरुण के ये पाश पकड़ कर बांध लेते हैं। दुष्टों के लिये ये पाश भयावने हैं।

वरुण के अधिराष्ट्र अर्थ में उसके इन पाशों का अर्थ कुछ भी हो, परन्तु यह स्पष्ट है कि इस के आध्यात्मिक अर्थमें वरुणके पाशों का यह वर्णन केवल आलंकारिकही मानना पड़ेगा। क्योंकि वरुण अर्थात् सब के वरण करने योग्य और सब को पाप से बचाने वाले परमात्मा का कोई शरीर नहीं है, निराकार ही नहीं जा सकती। तब परमात्मा अर्थ में उनके इन पाशों का क्या अर्थ होगा और वे इन पाशों से अपराधी को किस प्रकार बांधते हैं? इस पाश-बंधन का वस्तुतः जो अभिप्राय है वह इस प्रकार है। हमारे आत्माको लोक और अपवर्ग का साधन भूत जो यह शरीर मिला है उस में हमें पाँच ज्ञानेंद्रिय मन और बुद्धि ये सात शक्तियें मिली हैं। फिर ये सातों शक्तियें उत्तम, मध्यम और अधम भेद से तीन-तीन प्रकार की और हो जाती है। किसी को उत्तम प्रकार की ज्ञानेन्द्रियें, मन और बुद्धि मिली है। किसी को मध्यम प्रकारकी मिली है और किसी को अधम प्रकार की। ये ही सातों शक्तियाँ जो धर्माचारी के लिये मंगल का कारण बनजाती हैं। अधर्मचारी की इन शक्तियों को प्रभु उसके पापकर्मों के प्रति फल के रूप में भांति-भांति से दूषित और क्लेशित कर देते हैं। और इस प्रकार ये शक्तियें उस के दुःख का कारण बन जाती हैं। जैसे कोई किसी को पाशों में—हथकड़ियों, बेड़ियों और जालों में—बांधकर दुःखी कर दे वैसे ही भगवान् हमारी इन शक्तियों को क्लेशित और दूषित करके अधर्मियों को दुखित कर देते हैं। इसलिये मानो ये एक प्रकार से वरुण के पाश हैं। अथवा हमारे शरीर में जो रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और वीर्य नामक सात धातुएं हैं उन्हीं का ग्रहण मन्त्र के सात शब्द से कर लेना चाहिये। फिर वात पित और कफ़ अथवा सत्त्व रज और तम की प्रधानता से इन सात धातुओं के कारण ही हमारे शरीर के सब अंग-प्रत्यंग, इन्द्रियां तथा मस्तक बनते हैं। भगवान् अधर्माचारी की इन धातुओं में विकृति पैदा करके उसके विभिन्न अंगों को क्लेशित करके उसे दुःखी कर देते हैं। विकृतिको अवस्था में अधर्माचारी के दुःख का साधन होने के कारण इन सात धातुओं को वरुण का पाश कह दिया गया है। भगवान् जब किसी आत्मा को दुःख देते हैं तो इन्हीं सात को साधन बना कर देते हैं।

मन्त्र के "सप्त सप्त" इस शब्द को प्रायः एक पद माना जाता है। इसे एक पद मान कर इसका अर्थ इस प्रकार किया जाता है जैसे "सप्त" "सप्त" ये दो पृथक् पद हों। और इस प्रकार त्रेधा पद को इसके साथ मिलाकर यह अर्थ कर दिया जाता है कि तीन प्रकार के सात सात अर्थात् इक्कीस। सायणादि ने ऐसा ही अर्थ किया है। यदि "सप्त" ऐसा अर्थ नहीं किया जा सकता। "सप्त सप्त" एक पद मानकर तो इसके दो ही अर्थ हो सकते एक तो सात और सात अर्थात् चौदह। और दूसरा सात गुणा सात अर्थात् उनञ्चास। त्रेधा" पद इसके साथ जोड़ने पर इसके दो ही अर्थ हो सकते एक तीन गुणा चौदह अर्थात् बयालीस। दूसरा तीन गुणा उनञ्चास अर्थात् एक सौ सैंतालीस। 'सप्त सप्त" को एक पद मान कर इसका तिगुना इक्कीस ऐसा अर्थ नहीं हो सकता। इसके लिये इक्कीस अर्थ करने के लिये या तो 'सप्त सप्त" "सप्त" इस प्रकार दो पद मानने चाहिये। और इस प्रकार प्रचलित पद पाठकों को छोड़ देना चाहिये अथवा "सप्त सप्त" इस एक पद का अर्थ इस रीति से करना चाहिये। इस में पहले सप्त का सात अर्थ में संख्यावाची मानना चाहिये दूसरे सप्त को संख्यावाची न मान कर सम्बन्ध अर्थ का वाचक मानना चाहिये। सम्बद्ध अर्थ यह सप्त शब्द "षप समवाये" धातु से "क्त" प्रत्यय होकर बनेगा। जो सातों से समवेत सम्बद्ध हो, उसे "सप्त सप्त" कहेंगे। यह पद बहुवचनान्त है, विभक्ति का, लुक् हो जाने से प्रतीत नहीं होरही। यह "सप्त सप्त" पद पास विशेषण है। अर्थात् वरुण के पाशों का सात धातु आदि के साथ सम्बन्ध है। फिर ये सात धातु आदि सम्बन्धी वरुण पाश त्रेधा अर्थात् तीन प्रकार के हैं। इस प्रकार इक्कीस संख्या की प्राप्ति भी हो गई और यह सूचना भी मिलगई कि वरुण पापि को दण्डित करने के लिये अपने पाश किसे बना हैं। इन पाशों का शरीर की धातुओं से सम्ब है। अर्थात् वरुण भगवान् शरीर की धातुओं अ को ही साधन बनाकर दुष्टों को दण्डित क हैं। ये ही उनके पाश है।

हे मेरे मन! तुम प्रभु को सर्वत्र विद्यमान ज कर पाप से परे रहो। नहीं तो वह तुम्हें भी पा में बांध लेगा।

श्री चमूपति साहित्यविभाग के प्रकाश

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २॥) Immortal Sayings ofDayanan
जीवन ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला
स्वाध्याय संग्रह ॥) वैदिक धर्म की जय
वैदिक स्वर्ग ॥) यास्क युग
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास
देव यज्ञ ।) Glimpses ofDayanand
पीयूषबिन्दु ।-) त्रिदेव निर्णय
निरुक्त का मूल वेद में

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे द पर मिल सकेंगी।

Hindu America
Light of Truth

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य विभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

लेखमाला

आर्य

रविवार १७ जनवरी १९४३

गुरुगोविन्दसिंह जी का जन्म दिन

१२ जनवरी १९४३ को पंजाब के मुख्य शहरों सिक्ख भाइयों ने गुरु गो वन्द सिंह जी का जन्म न मनाया। लाहौर में इस अवसर पर जलूस या कीर्तन भजन मंडलियों ने मुख्य २ बाज़ारों में रिक्रमा कर जनता को गुरु गोविंदसिंह जी के पुण्य रित्र सम्बन्धी भजन तथा गीत सुनाए।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने समय में, अत्याचारी शासकों से जनता की रक्षा करने के लिये बरी यत्न किये। इसके लिये अपने चारों पुत्र भी लि कर दिये। अपने कार्य को पूरा करने के लिये, त्याचारियों को दण्ड देने के लिये बन्दा वैरागी ो पंजाब में भेजा। बन्दा वैरागी ने सच्चे शिष्य लाधिकारी के रूप में अत्याचारियों का दमन या। परिणामतः पंजाबियों का अपना राज्य थापित हुआ। महाराजा रणजीत सिंह ने हिन्दु-सलमान-सिक्ख वज़ीरों की सहायता से पंजाब की नता को स्वराज्य अथवा अपना राज्य दिलाया।

परन्तु पंजाब के भाग्यों में अभी स्वराज्य नहीं ल्खा था। महाराजा रणजीतसिंह के अदूरदर्शी तःराधिकारियों की अदूरदर्शिता के कारण पंजाब फिर से विदेशी शासकों, अंगरेजों के हाथ में चला या। आज पंजाब में पंजाब की जनता पराधीन ई अनेक प्रकार के कष्टों को भुगत रही हैं। कई कार के यत्नकिये जाते हैं कि पंजाब पूर्ण स्वराज्य ो प्राप्त करे परन्तु पारस्परिक अविश्वास तथा ट के कारण इस में सफलता नहीं होती।

आज के शुभ दिन हमें फिर से इस उद्देश्य की ोर ध्यान देना चाहिए। इस समय पंजाब आर्थिक राजनैतिक और साम्प्रादयिक मुसीबतों में फंसा आ है।

पंजाब की उपजाऊ भूमि में सब कुछ है, परन्तु जाबी—लाहौर, अमृतसर जैसे शहरों में अन्न कष्ट पीड़ित हो रहे हैं। राजनैतिक मुसीबतों का तो हना ही क्या है? अनेकों पंजाबी देशभक्त जेलों में जरबंद हैं। साम्प्रदायिक मुसीबतोंकी झलक पंजाब सम्बली में और मास्टर तारासिंह के अदूरदर्शिता र्ण बयानोंमें दिखाई देती है। मास्टर तारासिंह जी ी संकीर्ण साम्प्रदायिक दृष्टि का ही परिणाम है कि ाज गुरुगोविन्द सिंह जी के व्यक्तित्व को केवल गोविन्दसिंह जी के तेज ने, महाराजा रणजीत सिंह के नेतृत्व में राजतेज को जन्म दिया। उनके यहां हिन्दू मुसलमान सिक्ख सब को उन्नति करने का अवसर था। परन्तु अब अदूरदर्शी नेता मतभेद के कारण दूसरों के साथ असहयोग कर बैठते हैं। इसी साम्प्रायिक संकीर्णता का एक उदाहरण हिन्दी उर्दू गुरुमुखी की समस्या में दिखाई देता है। गुरुगोविन्द सिंह जी हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि थे। विचितनाटक उनकी हिन्दी कविता का ज्वलन्त उदाहरण है। उन्होंने कई पंडितों को संस्कृत पढ़ने के लिये काशी भेजा था। परन्तु आज मास्टर तारासिंह जी जैसे नेता गुरुमुखी और उर्दू को ही अपनाने में लगे हुए हैं। हिन्दी संस्कृत को अपनाने में उन्हें संकोच होता है। गुरु गोविन्द सिंह दूरदर्शी नेता थे वह इस बात को समझते थे कि पंजाब तथा भारत वर्ष को विदेशी सभ्यता के आक्रमणों से बचाने का मुख्य उपाय यह है कि हिन्दी और संस्कृत के आधार पर साहित्य निर्माण किया जाय। हम चाहते हैं कि सिक्ख जतना आज के शुभ दिन गुरुगोविन्दसिंह जीके पदचिह्नों पर चलने का संकल्प करें। उनकी भांति हिन्दी संस्कृत को अपनाए। उनकी भांति वीर वन्दावैरागी जैसे वीरोंको उदारता के साथ कार्य करनेका अवसर दे। यदि सिक्ख ऐसा करेंगे तो गुरुगोविन्द सिंह का सन्देश राष्ट्र के कोने कोने में गूंज उठेगा। गुरु गोविन्दसिंह जी के व्यक्तित्व ने गुरुओं के संदेश को भारत के एक ओर से दूसरे छोर तक पहुँचाया था। परन्तु इस कार्य में उनके सफल होने का मुख्य कारण उनकी उदारता और दूरदर्शिता थी।

लोड़ी का शुभ पर्व

१३ जनवरी १९४३ को पंजाब में लोहडी का समारोह धूमधाम से मनाया गया है। इस वर्ष संसार व्यापी महायुद्ध का इस पर्व पर भी प्रभाव दिखाई दे रहा है। खांड तथा अन्य खाद्य वस्तुओं की मंहगाई के कारण हरेक पंजाबी तंगी महसूस करता है। लोड़ी के पर्व की मुख्य आकर्षक वस्तु अग्नि है, परन्तु इस वर्ष साधारण जनता को घर की रसोई आदि के लिये भी लकड़ी मुश्किल से मिल रही है। लोहड़ी के लिये लकड़ियों का जुटाना भी कठिन हो गया है। इन कारणों से सम्भवतः साधारण जनता उत्साहसे यह पर्व न मना सकेगी। परन्तु इन वाह्य साधनों के कम होने पर भी लोहड़ी का पर्व हमारे लिये एक विशेष आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संदेश देता है। भारतीय संस्कृति का मुख्य अंग 'यज्ञ' है। लोहड़ी के दिन छोटे बड़े सब मिलकर अग्नि प्रदीप्त करते हैं। इसे प्रदीप्त करने के लिये हरेक भाई अपना २ हिस्सा शक्ति के अनुसार श्रद्धा पूर्वक भेंट करता है। प्रचण्ड अग्नि ज्वालाएँ गावों शहरों के वातावरण को निरोग करने में सहायक होती है। यह पर्व ऋतु-व्यक्ति अपने आत्मा को पवित्र करने की ओ प्रवृत्त होता है। यह दृश्यमान अग्नि सब दृश्यमा प्राकृतिक मलों को दग्ध करता है। उसी प्रकार से मानसिक और शारीरिक इन्द्रिममल को दूर करने के लिये हमें अपने "आत्मा" की अग्नि को, ज्ञान की ज्वालाको अपने हृदयों में प्रदीप्त करना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में भी यदि हम इस अवसर पर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इस त्योहार को मनायेंगे तो यह पर्व हमारे जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन में सहायक सिद्ध होगा।

विश्वव्यापी महायुद्ध की चिनगारियां:—

विश्व व्यापी महायुद्ध की चिनगारियां भारतवर्ष के वातावरण में भी आपहुँची हैं। चटगांव के बाद कलकत्ता नगर पर भी जापानियों ने बम वर्षा की हैं। ये सन्तोष की बात है कि इस बम वर्षा ने कलकत्ता नगर निवासियों में कोई विशेष आतंक पैदा नहीं किया। नगर निवासियों ने दिलेरी के साथ सरकारी रक्षा विभाग के कर्मचारियोंके साथ मिलकर इनका मुकाबिला किया। अमरीका के युद्ध मैदान में आ जाने के कारण जापान अब भारत पर मुश्किल से ही आक्रमण कर सकेगा। यह बम वर्षा नाम मात्र ही है। इधर चीन के साथ ब्रिटिश और अमरीका वालोंने जो नई संधियां की हैं उनके कारण भी चीन वाले अधिक उत्साह से जापान वालों का मुकाबिला करेंगे। भारतीय ब्रिटिश सरकार को चाहिये कि वह इस महायुद्ध को भारतीय जनता का युद्ध बनाने के लिये यहां शाघ्र से शीघ्र राष्ट्रीय सर कार स्थापित कर दे। इससे मित्र राष्ट्रों को जो नैतिक बल मिलेगा—उसका मुकाबला जर्मनी जापान तथा इटली की सम्मिलित शक्तियां नहीं कर सकेंगी। अब भी समय है आशा है भारतीय सरकार तथा इंगलैंड के राजनैतिक दूर-दर्शी नेता इस सचाई को समझ कर भारतीय जनता के उत्साह को द्विगुणित करने में सहायक सिद्ध होंगे।

आर्य परिवार से निवेदन

हमारे पास आर्य भाइयों के पत्र आ रहे है कि हम इस पत्र में शिशु संसार तथा महिलासंसार आदि अनेक विविध रुचि के स्तम्भ खोलें। इस सम्बन्ध में हम आर्य के प्रेमी पाठकों से निवेदन करना चाहते हैं कि इन दिनों कागज़ की कमी के कारण हम आर्य की पृष्ठ संख्या बढ़ाने में असमर्थ हैं। बिना पृष्ठसंख्या बढ़ाये यह विविध स्तम्भ जारं नहीं किये जा सके। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा पंजाब के आर्य समाजों के लिये आवश्यक सामग्री देने के बाद जो स्थान शेष रहेगा उसमें हम कभी २ इन विषयों पर भी लेख दिया करेंगे। परन्तु नियम पूर्वक प्रत्येक अंक में यह सब विषय संनि विष्ट नहीं किये जा सकते। आशा है पाठक गण हमारी इस विवशता को ध्यान में रखते हुये उदा रता के साथ आर्य को अपनायेंगे। स्थान की इस कमी को अनुभव करते हुये ही हमने इस अंक से प्रथम पृष्ठ के मुख्य ब्लाक तथा लेखों के हैडिंग ब्लाक छापने बन्द कर दिये हैं। साथ ही हम आर्य के प्रेम पाठकों से निवेदन करना चाहते हैं कि उन्हें चाहि कि वह अपने २ प्रभाव क्षेत्रों में आर्य के अधिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ओ३म् शब्दान्तर्गत रहस्य

(ले० पं० भीमसेन जी वेदालङ्कार)

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने "ओ३म्" इस शब्द को परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम बताया है। इसका कारण यह है कि 'ओ३म्' इस शब्द से परमात्मा के जितने गुणों का बोध होता हो उतने गुणों का बोध किसी भी अन्य परमेश्वर के नाम से नहीं होता। 'हरि', परमात्मा के इस नाम से केवल परमात्मा का एक गुण ही व्यक्त होता है अर्थात् परमात्मा सब के दुःखों का हरण करने वाला है। इसी प्रकार 'विष्णु' इस नाम से भी परमात्मा के सर्व व्यापित्व रूपी एक ही गुण का बोध होता है। अन्य परमत्मा के नामों से भी परमेश्वर के सिर्फ एक या दो ही गुणों का ज्ञान होता है। परन्तु 'ओ३म्' यह परमात्मा का एक ऐसा नाम है जिसके तीन अक्षर 'अ' 'उ' और 'म्' उसके अनेक नामों को प्रकट करते हैं। अकार से 'विराट् अग्नि" और विश्वादि का ज्ञान होता है। उकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजस आदि। मकार ईश्वर; आदित्य और प्रज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि 'अ', 'उ' और 'म्' इन तीन अक्षरों से इन उपर्युक्त गुणों का बोध कैसे होता है ?

इस लेख के अन्दर हम इसी विषय पर ही संक्षेप से विचार करना चाहते हैं। इस व्याख्या के अनन्तर हमें यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाएगी कि परमात्मा को 'अ', 'उ' और 'म्' अर्थात् ओ३म् क्यों कहते हैं।

परमात्मा को 'अ' 'उ' और 'म्' क्यों कहते हैं इस बात को हम यहां निम्न उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं। लोक व्यवहार का एक नियम है कि जिस पदार्थ में किसी दूसरी व्यक्ति के गुण पाये जाते हैं उसको दूसरे का नाम दे दिया जाता है। एक बच्चा यदि बन्दर के समान चञ्चल और चपल हो तो उसको कह दिया जाता है कि यह तो बन्दर है। यदि कोई रागी अपनी संगीत कला में पूर्णतया निपुण है और उसमें गन्धर्व के गुण पाये जाते हैं तो उसका नाम भी गन्धर्व पड़ जाता है। श्रद्धेय लाजपतराय जी अपने भाषणों में बब्बर शेर की तरह दहाड़ा करते थे अतएव केसरी के गुण के कारण उनको पंजाब केसरी का नाम अथवा उपाधि दे दी गई। अगर कोई मनुष्य जड़ बुद्धि है और सैंकड़ों प्रयत्न करने पर भी उसका मस्तिष्क काम नहीं करता तो उसका कह दिया जाता है कि यह तो 'पत्थर' है। इसका यह अभिप्राय नहीं कि वह पूर्णरूप से पत्थर है अपितु भाव यह है कि चूंकि पत्थर का गुण 'जड़ता' पाया जाता है इसलिए उसको 'पत्थर' यह नाम देदिया जाता है। इसी प्रकार परमात्मा के अन्दर भी 'अ' 'उ' और 'म्' वर्णमाला के इन तीन अक्षरों के कुछ गुण पाये जाते हैं, इसलिए सिर्फ इसी युक्ति के आधार पर परमेश्वर को भी अ, उ और म् अर्थात् 'ओ३म्' यह नाम दे दिया गया है। सारांश यह है कि परमात्मा में उपर्युक्त तीन अक्षरों के गुण होने के कारण उसको ओ३म्' कहा जाता है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि 'अ' 'उ' और 'म्' इन तीन अक्षरों के वे कौन से गुण हैं जो परमात्मा में भी पाये जाते हैं और इसलिए परमात्मा को 'ओ३म्' कहा जाता है। इस लेख के अन्दर हम केवल 'अ' इस एक अक्षर पर ही विचार करेंगे।

देवनागरी लिपि का पहिला अक्षर 'अ' है, इस में विराट्त्व का गुण पाया जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि यह अक्षर वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण के अन्दर सूक्ष्म रूप से विराजमान है। आप किसी भी वर्ण का उच्चारण करें कीजिये उसके कन्दर सूक्ष्म रूप से अ का उच्चारण होता ही है। व्यञ्जन वर्णों के उच्चारण से यह चीज़ और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगी। क ख ग आदि आप किसी भी वर्ण का उच्चारण, अन्त में अ अक्षर लगाये बिना नहीं कर सकते। आप कितना ही प्रयत्न करें तो भी क ख आदि का उच्चारण करते हुए अन्त में अ का उच्चारण होगा ही। सारांशतः 'अ' अक्षर के बिना किसी भी अन्य अक्षर की सत्ता का अनुभव होना असम्भव है और क्योंकि यह अक्षर अन्य सब अक्षरों में विराजमान (विराट्= विपूर्वक राजृधातु) है इसलिए अ इस अक्षर को विराट् कहा जाता है।

अ अक्षर का यह उपर्युक्त विराटत्व गुण परमात्मा में भी विद्यमान है। ईश्वर संसार के हर एक पदार्थ में व्यापक है और विराजमान है। 'अ' अक्षर की तरह अगर परमात्मा की सत्ता भी संसार के पदार्थों में से निकाल दी जाय तो ये वस्तु दृश्य मूर्त और व्यक्त अवस्था में हमारे सामने नहीं आ सकतीं। परमात्मा ही दुनिया का धर्ता और कर्ता है।

अब पाठकों के आगे यह चीज़ स्पष्ट हो गई होगी कि 'अ' अक्षर में जो विराटत्व का गुण पाया जाता है। वह परमात्मा में भी पाया जाता है इसलिए पूर्व दिये हुए उदाहरणों के अनुसार अगर परमात्मा को 'अ' यह नाम दे दिया गया है तो वह युक्तियुक्त और लोक व्यवहार के अनुकूल है।

'अग्निः'—'अ' अक्षर के अन्दर दूसरा गुण अग्नित्व का पाया जाता है। अर्थात् अ अक्षर अग्नि है। अग्नि के यद्यपि अन्य अनेक अर्थ हैं परन्तु परन्तु यहां हम 'अग्नि' इस शब्द का अर्थ 'अग्रणी' यह लेते हैं। वर्णमाला के अन्दर 'अ' अक्षर का स्थान सबसे पहिला है। इसलिए 'अ' इस वर्ण को अग्नि अर्थात् अग्रणी कहना सार्थक ही प्रतीत होता है।

परमात्मा भी संसार के [illegible] में [illegible] है। विश्व के अन्दर जो भी [illegible] दिखाई देते हैं उनका प्रारम्भ [illegible] प्राचीन हो परन्तु परमात्मा उन सब से ही अर्थात् अग्रणी है।

'अ' अक्षर के इस अग्रणीत्व गुण के पर में पाये जाने के कारण परमात्मा को भी 'अ' नाम दे दिया है।

विश्व—'अ' अक्षर में तीसरा गुण वि अर्थात् यह अक्षर विश्व है। विश्व इस श 'विष्लृ व्याप्तौ' यह धातु है। परिणामतः वि इस शब्द का अर्थ 'व्यापक' है। अ अक्षर विश्वत्व गुण है। अ की व्यापकता का वर्ण विराट् शब्द की व्याख्या में कर चुके हैं।

अ अक्षर का यह गुण परमात्मा में भी मान है। परमेश्वर भी संसार के सब पदा व्यापक है अतः 'अ' अक्षर का उपर्युक्त गुण मात्मा में पाये जाने के कारण उसको भी 'अ' गया है।

इस लेख में हमने सिर्फ 'ओ३म्' इस नाम तीन अक्षरों अक्षरों में से अ की व्याख्या हुए यह बताया है कि परमात्मा को 'अ' यह क्यों दिया जाता है। अगले लेखों में 'उ' और 'म्' की व्याख्या करके इस बात को तथा स्पष्ट करेंगे कि परमात्मा को 'ओ३म्' कहते हैं।

साप्ताहिक आर्य

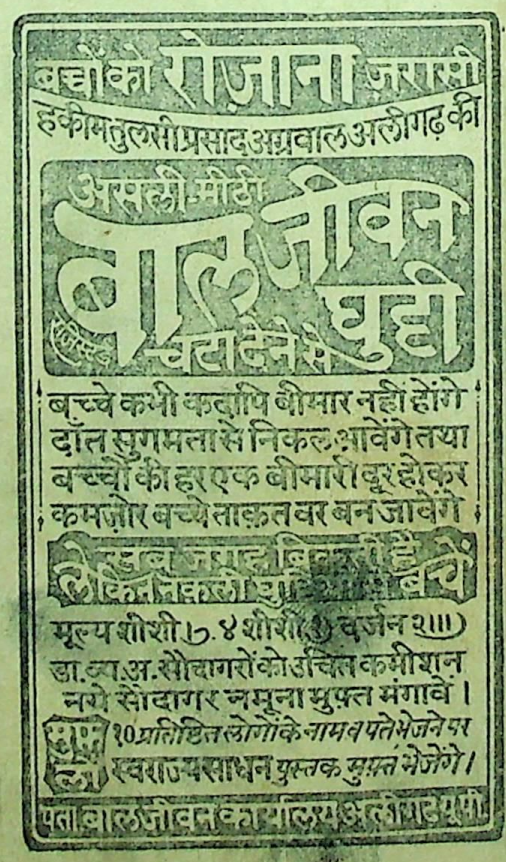

हर एक आर्य तथा पंजाब के
आर्य समाज को
आर्य का ग्राहक
—बनना चाहिये—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लेखमाला ! सर्पविद्या

विष और विष यन्त्र

[लेखक—श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार, बादामी बाग, लाहौर ।]

(४)

एक आदमी की हत्या कर दी गई है और रे प्रकट करते हैं कि सांप के काटने से उस ौत हुई है। मौत वास्तव में सांप के काटने से या नहीं इस बात का निर्णय करने के लिए ातों को देखें।

ारे शरीर की भली भांति परीक्षा करें और हीं विषैले दांतों के निशान तो नहीं। विषैले आमतौर पर दो निशान छोड़ते हैं जो आपस ाभग एक तिहाई इञ्च की दूरी पर अलग बने होते हैं। आदमी का रंग साफ़ है तो ा लाल रंग के और व्यक्ति का रंग काला है न्ह ताम्रवर्ण दीखते हैं। दोनों निशान ऐसे होते हैं जैसे पिन चुभोई गई हो। एक या निशानों पर खून विद्यमान हो भी सकता है ाहीं भी। प्रायः कहा जाता है कि विषैले के काटने पर दांतों के केवल दो निशान पडते ाह ठीक है, पर सदा नहीं। दर्वीकर या ी के दंश एक दो तीन और कभी कभी इससे ध्यिक निशान छोड़ते हैं। यह इस बात पर करता हैं कि सांप ने काटा किस तरह से क बार अच्छी तरह काट पाया है तो दोनों दांतों के गढ़ने से दो निशान बन जायंगे। हो कर काटा है और ठीक तरह नहीं काट ो केवल एक ही विषैला दांत गाड़ने से एक पड़ेगा। एक बार काट कर तुरन्त दुबारा ान पर काट लिया है तो चार या तीन बन सकते हैं। फनियर और कौड़िया कभी न्त दो बार काट लेते हैं।

भिन्न सांपों के विष लक्षणों को ध्यान से । नथुनों में और गालों के अन्दर बलगम ी लार मृत्यु के बाद भी कई दिनों या तक उपस्थित होती हैं। लार में खून ो सकता है। आंखें सूजी हुई हो सकती ड़े के विष में लालास्राव सर्वथा अविद्य- सकता है।

ों या किसी खुण्डे हथियार की चोट से ब्बे पड़ जाते हैं ऐसे निशान (macular शरीर में किसी भी हिस्से में हो सकते ाली के वास्तविक विषैले दंश में ये नीले शरीर के किसी भी हिस्से में पैदा हो । इस लिए यह निश्चित कहना कठिन कि ये मुक्के आदि के निशान हैं या मंडली लिये ज़ोरदार शब्दों में प्रचार करते हैं। यद्यपि संसार में बहुत थोड़े सांप ही विषैले होते हैं जिस से मानव समाज को खतरा हो सकता है। यद्यपि स्वेछा से सांप मनुष्य की कोई सेवा नहीं करते फिर भी सांपों का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी उदर पूर्ति के लिए कीड़े मकौड़े, चूहे, मूसे आदि मनुष्य के शत्रुओं को मार कर अपना भोजन बना लेने के कारण उष्ण प्रदेशों में बहुत उपयोगी कार्य करता है। इंगलैण्ड में तृण सर्प (grass snake) चूहों और मूसों को मारने का शुभ कार्य करते हैं।

स्त्रियों के जूते, हैण्डबैग, आदि के लिए कुछ अर्से से सांपों की खाल की मांग बहुत बढ़ जाने से कुछ ऊष्ण प्रदेशों में सांपों की आबादी में इतनी अधिक कमी हो गई हैं कि कृषि विशेषज्ञों को उनकी रक्षा का प्रयत्न करना पड़ा है।

संसार में वायु में जो विष व्याप्त है सांप उस को चूस लेते है और इस प्रकार से वायुमण्डल को विष रहित करते हैं। अथर्ववेद का एक स्थल इस प्रकार है। 'जगती आक्रान्त हुई। सांपों ने उसे कहा—हे विषवती ! यहां आओ। पृथिवी सांपों की ओर चली गई। धृतराष्ट्र, ऐरावत, वैशालेय, तक्षक आदि सांपों ने उसे दोहा। पृथिवी का सारा विष अलाबुपात्र में दुह लिया गया। वह विष सांपों के पास है। *"संसार को निर्विष करने के महान् उपकार के कारण ही शायद सांपों के लिए पूजा भाव रहे हों—'धरती में रहने वाले सब सांपों को नमस्कार हो†'।

सांपो के क्षत शरीरों से लगभग पचास प्रति शतक चर्बी प्राप्त की जाती है, यह भी कहा जाता है कि भारत के कुछ हिस्सों में इस चर्बी से घी बनाया जाता है। एक अजगर के शरीर से घृत पन्द्रह बीस सेर तक भी निकल आता है। कुछ जातियां सांप खाती हैं। उदर पूर्ति के लिये स्वादु प्लेटों को तय्यार करने में उन देशों में सांपो का बहुत मूल्य होता है। कहा जाता है कि अब भी अकेले टोकियो में करीब हज़ार सांप रोज़ खाये जाते हैं। सिर काट कर फेंक दिया जाता है। और खाल उतार कर मांस पका लिया जाता है। मनुष्य को सर्वभक्षी कहना अतिशयोक्ति नहीं। दक्षिणीय भारत में सांप की खालों को कमाने का काम अच्छा होता है। फनियर की खालों की कीमत ज्यादा होती है। ये खालें भारत से बाहर भी जाती हैं।

सर्प का विष बेचा जाता है। खोज करने वाली प्रयोगशालाग्रें और वैद्य लोग खरीदते हैं। विष दो रूपों में बिकता है—(१) सूखा और (२) द्रव सूखा विष चूर्ण रूप में होता है और इसका भाव बम्बई की हैफ़किन इंस्टिटयूट में पचास रुपये प्रति ग्राम है। एक ग्राम लगभग एक माशे के बराबर होता है। इसलिए एक रत्ती का मूल्य करीब सवा छः रुपये और तोले का मूल्य लगभग छः सौ रुपये बैठता है। सोने भाव इतना बढ़ जाने पर भी सोने की अपेक्षा सांप का ज़हर प्रायः दस गुणा अधिक मेंहगा है।

मण्डली (Russells vipr) का विष तीन हज़ार में एक और दस हज़ार में एक के बिलयनों में बिकता है। फणियर का विष पांच, दस, पन्द्रह, बीस, और पच्चीस भूषिक इकाईयों (mouse units) में मिलता है। एक घन सैन्टीमीटर (c. c.) के एम्प्यूलों में भरे हुए उपर्युक्त दोनों विषों के विलयनों का मूल्य प्रति एम्प्यूल दस आने है।

विष दो प्रकार का होता है। (१) मण्डली वंश (viperine family) का जो मुख्यतया रक्तसंस्थान पर कार्य करता है। (२) इन दो उपवंशों (mufa milies) का, जिनमें फन वाले सांप (Elapina) और समुद्रीय सांप (Hydro phino) होते हैं। इन दोनों उपवंशों का विष वात संस्थान पर काम करता है और श्वास संस्थान का पक्षाघात कर देता है।

इन दो विषों के विभिन्न गुणों का आधुनिक विज्ञान सफलता पूर्वक उपयोग कर रहा है। मानवता के लिए अभिशाप रूप रोगों जैसे कैन्सर हीमो फ़लिया, मृगी, क्षय, और जलत्रास (hydrophalna) आदि पर इन घातक विषों से हमले किये जा रहे हैं और किन्हीं अवस्थाओं में अच्छी सफलता मिली है। आधुनिक चिकित्सा में सर्पविष महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रहे हैं। कैन्सर की चिकित्सा में दर्वीकर विष और रक्त स्राव की आकस्मिक चिकित्सा में मण्डली विष का प्रयोग ऐसे तथ्य हैं जिसमें सन्देह की गुञ्जाइश नहीं। समय स्वयं बतायेगा कि इन विषों में दूसरे कितने रहस्य छिपे पड़े हैं।

* सोदक्रामत्, सा सर्पानागच्छत्, तां सर्पा उपाह्वयन्त, विषवत्येहीति ॥ तस्यास्तक्षको वैशालेयो वत्स आसीदलाबुपात्रं पात्रम्। तां धृतराष्ट्र ऐरावतोऽधोक्, तां विषमवाधोक्। तद्विषं सर्पो उपजीवन्ति। अथर्व०८।१४।१३-१६

सांपो के उपयोग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश विदेश के समाचार

—अमेरिकन कांग्रेस के ७८वें अधिवेशन में सन्देश देते हुए प्रे० रूज़वेल्ट ने कहा कि:—

"यद्यपि आगामी वर्ष एक महान् संघर्षका साल है तोभी इसका परिणाम बहुत अच्छा रहेगा।"..... "इस समय भी हम चीन को उतना ही लड़ाई का सामान पहुँचा रहे हैं जितना पहिले बर्मा रोड से पहुंचाते थे।"... "प्रशान्त सागर में हमारी सिर्फ डिफेन्स करने की नीति खतम होने को है। अब हमारा उद्देश्य जापान को लड़ाई में आने के लिए बाधित करना है। पिछले साल हमने जापान को सिर्फ रोक रखनेका काम किया था परन्तु इस साल हमारा आगे बढ़ने का पक्का इरादा है।"

"कुछ समय के बाद जापान देखेगा कि हम उनके द्वीप पर ही हवाई हमला करके बम्ब गिरायेंगे।"

"उत्तर अफ्रीका में हमने और संयुक्त राष्ट्र ने एक विशाल जहाज़ी बेड़ा पहुँचा दिया है। उससे धुरी शक्ति का पश्चिमी अफ्रीका से दक्षिण अमेरिका में आक्रमण करने का डर सर्वथा नष्ट हो गया है।

"इस समय लगभग हमारे १५ लाख सैनिक, नाविक और उड़ाके अमेरिका से बाहिर सारे संसार में भिन्न भिन्न स्थानों पर काम कर रहे हैं।

"१९४२ में हमने ४८००० फौजी हवाई जहाज बनाये जो जर्मनी, इटली और जापान तीनों की सम्मिलित उत्पत्ति से भी अधिक थे। पिछले सिर्फ दिसम्बर मास में हमने ५५०० युद्ध विमान तैयार किये।"

"इस युद्ध में हमें सिर्फ उन बुराइयों का ही जिनके विरुद्ध हम लड़ रहे हैं ख्याल नहीं रखना है परन्तु उन अच्छाइओं का भी ध्यान रखना है जिनकी प्राप्ति के लिए हम कशमकश कर रहे हैं।

—सिन्ध गर्वनमेंट ने अपने प्रान्त से चावलों की निर्यात बन्द कर दी है।

—रूसी सेनाओं ने कोटलनिकोव से ५० मील दक्षिण पश्चिम में स्थित ज़िमोवनिकी शहर तथा रेलवे स्टेशन को जर्मन सेनाओं से वापिस ले लिया है।

—काकेशस पर प्रत्याक्रमण करने के दिन से रूसी सेनाएं अब तक ८५ मील बढ़ कर कूबा तक पहुँच गई हैं।

—रूस की प्रसिद्ध युद्धनेत्री मैरिना रोस्कोवा का देहान्त हो गया है। युद्ध कला में निपुणता के कारण युद्ध से पहिले इनको Hero of Soviet Unien की उपाधि दी गई थी।

—जर्मनी से हस्तगत किये हुए प्रदेश में हालैण्ड के बन्दी भूत मन्त्रियों में से अब तक सात

—फ्रान्सीसी पश्चिमी अफ्रीका के एडमिनिस्ट्रेटर मि० बोइससन ने जनरल गिराड के साथ मन्त्रणा करके यह घोषणा की है उत्तरी अफ्रीका में उनके ५००० सैनिक मित्र राष्ट्रों के साथ मिलने के लिए तैयार हैं।

—लड़ाई के प्रारम्भ से अब तक अमरीका की आरम्ड फोर्स में से ६११२६ सैनिक काम आ चुके हैं।

—नीदरलैण्ड की रानी को जो इस समय ओटावा में रह रही है लगभग २०जनवरी को तृतीय सन्तान होने वाली है। सम्भवतः उनको पुत्र हो और वह हालैण्ड का भावी सम्राट् अपने जन्म से सर्व प्रथम ओटावा को ही अलंकृत करे।

—जनरल नेहरिंग के स्थान पर ट्यूनिशिया में जनरल वॉन आरनिम को कमाण्डर इन चीफ़ नियुक्त किया गया है।

—ट्यूनिस और नेपल्स में मार्शल ला उद्घोषित कर दिया गया है।

—प्रे० रूजवेल्ट के वैयक्तिक प्रतिनिधि मि० विलियम फिलिप्स ने 'इण्डियन रिइन्फोर्समैण्ट कैम्प' और 'इण्डियन रैस्ट कैम्प' में भेंट देते हुए कहा—"भारतीय सेनाओं की प्रशंसा के विषय में मैंने बहुत कुछ सुना हुआ था परन्तु आज पहिली वार मैंने उनको देखा है। जिस शारीरिक स्वास्थ्य और फुर्तीले पन से वे ड्रिल करते हैं उस से सिद्ध होता है कि वे ऊँचे दर्जे के लड़ाके हैं।

—उत्तर अफ्रीका में मित्र राष्ट्र की वायु सेना के कमांडर-इन-चीफ के पद पर मेजर जनरल कार्ल स्पैटज को नियुक्त किया गया है।

—बर्मा में मित्र राष्ट्रों का जापान के साथ संघर्ष चल रहा है। मायु नदी के दोनों ओर अराकान जिले में मित्रराष्ट्र बर्मा में हमला कर रहे हैं।

—सीरियन मन्त्रि मण्डल ने अपने पदों से त्याग पत्र दे दिया है। उसके स्थान पर जमाल उलशी के प्रधान मन्त्रित्व में नये मन्त्रि-कण्डल ने काम संभाल लिया है।

—टर्की के सम्पादक जो भारत में आरहे हैं बगदाद के रास्ते रवाना हो चुके हैं।

—झील चैड से बढ़ती हुई आज़ाद फ्रांसीसी सेनाओं ने त्रिपोलिटानिया में प्रवेश कर कुछ शहर और गांव भी हस्तगत कर लिये है।

—जिनोआ में आर. ए. एफ. के आक्रमणों के कारण १६०००० लोग तम्बुओं में रह रहे हैं।

—विरोधी विमानों को नष्ट करने वाली किरण के आविष्कर्ता निकोला टेंस्ला का ८६ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया है।

—८ जनवरी को रूसी सेना काकेशिया में सिर्फ एक दिन में ही ४० मील रोटव की तरफ़ बढ़ीं।

—मद्रास गवर्नमेंट ने स्थानीय समाचार पत्रों

कारण उनकी दी हुई सुविधायें छीन ली हैं।

—भारत वर्ष के हाई कमिश्नर सर ए हक ने साइक्लोन-पीड़ित बंगाल के लिये गवर्नर द्वारा सञ्चालित फण्ड की सहायता में एक फंड जमा करना शुरू किया हैं।

—दिल्ली में रूजवेल्ट के वैयक्तिक प्र मि० विलियम फिलिप्स से प्रेस कानफरे जब प्रश्न किया गया कि 'क्या वे क बद्ध नेताओं से मिलेंगे तो उन्हों ने उत्तर दि 'मैं इस प्रश्न का उत्तर इस समय नहीं दे स मि० फिलिप्स का दिल्ली में जब एक निर्माता के साथ परिचय कराया गया त ने उससे हँसी में कहा—(Treat me K "मेरे ऊपर कृपा दृष्टि रखना"

मैडगास्कर के नव नियुक्त राजदूत लांजेंटिल होम एक युद्ध जलयान द्वारा वह गए हैं।

—इस मास की समाप्ति तक 'रिज़ आफ इण्डिया' सम्भवतः दो रुपये के नो करेगा।

—हूर आन्दोलन के नेता पीर पग सम्पत्तिभूत ४ लाख रुपये की मूल्य वाली ८ की ईंटे संघड़ के पास से जमीन में गढ़ी हुई ने प्राप्त की है।

—लाहौर मेडिकल कॉलिज के विद्यार्थी सिंह की किसी व्यक्ति ने १७ दिसम्बर की र हत्या कर डाली है। घातक के पता लगा व्यक्ति को २००० इनाम देने की उद्घोषणा पु की है।

—आगा खान ने "सिंध फ्लड रिलीफ़ के लिए १०००० रुपया दान दिया है। इस में उन्हों ने सिन्ध के प्रधान मन्त्री सर हुसैन हिदायतुल्ला को स्विटज़र लैंड से ता सूचित किया है।

—सिन्ध गवर्नमेंट की विज्ञप्ति के इ कराची के नागरिक क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति या होटल ५ मन से अधिक गेहूँ या आटा पास नहीं रख सकते। १५ जनवरी के बाद उ परिमाण से अधिक मात्रा रखने वाले को ३म की सजा दी जायगी।

—९ जनवरी को प्रकाशित नये बर्ष के आर्डिनेन्स के अनुसार शत्रु को किसी भी सहायता करने वाले व्यक्ति को मौत की स जायगी।

—पंजाब एसम्बली के विरोधी दल ने ला० भीमसेन जी सचार तथा प्रताप के स मि० वीरेन्द्र को सियालकोट जेल में तबदी दिया गया है।

—पंजाब गवर्नर के नये हुक्म के अनुसा में कोई भी फैक्टरी ऐक्ट के अंदर आने वाली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल कांगड़ी

स्वास्थ्य-समाचार

ल के ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य इनदिनों है। हस्पताल रोगियों से खाली है। गुरु- अपनी नवीन गोशाला का दूध ब्रह्मचारियों न्न पर्याप्त मात्रामें दिया जा रहा है। दुग्धकी और शुद्धता का प्रभाव ब्रह्मचारियों के सेहत अच्छा पड़ रहा है।

नये बालकों का प्रवेश

बालकों का निर्वाचन २३ से २६ अप्रैल ४३ र की छुट्टियों में गुरुकुल के वार्षिकोत्सव र पर होगा। जो सज्जन अपने बालकों ल में प्रविष्ट कराने के इच्छुक हैं उन्हें शीघ्र ना पत्र भेज कर स्वीकृति प्राप्त कर लेनी

म्मावली तथा प्रवेश फार्म 'कार्यालय गुरुकुल (सहारनपुर) से मंगवाइये।

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी

श्रद्धानन्द-मार्ग का सुधार

कुल में अब तक सड़कें कच्ची ही थीं जिसके गाड़ियों को कुछ अंश में असुविधा का करना पड़ता था। अब मुख्याधिष्ठाता जी न्दिशा में विशेष ध्यान देकर सड़कों को पक्की का विचार कर लिया है और अधिक जन- था कर इस कार्य को प्रारम्भ कर दिया है। न्द-मार्ग पर लगभग २ फर्लांङ्ग तक ईंट जा चुकी हैं और इंजन मँगवाकर सड़कों ा करने का कार्य शीघ्र ही शुरु कर दिया । उदार दानी महानुभावों से आशा की कि वे इस सर्वजन-हितकारी कार्य में सह- कर पुण्य के भागी बनें।

शोक-समवेदना

लकुल के वस्तु भण्डार के अध्यक्ष श्री पं० ा वेदालंकार की धर्म पत्नी का १॥ वर्ष की ी के बाद गत ३जनवरी की रात्रि को दुःखद- मान हो गया। पण्डित जी ने उनके स्वास्थ्य के लिए अपनी शक्ति से बढ़ कर यत्न किया ईश्वरेच्छा के सामने किसी की चलती नहीं। वंगत आत्मा को सद्गति तथा दुःखी परिवार में दें।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

रुकुल इन्द्रप्रस्थ का २७ वां वार्षिकोत्सव २६, था २८ फरवरी १९४३ शुक्र, शनि और रवि- को बड़े समारोह के साथ मनाया जाना निश्चित । उत्सव की सफलता के लिये अभी से

गुरुकुल कमालिया

श्रीयुत् महाशय सुखदयाल जी संस्थापक गुरुकुल कमालिया

श्रीयुत् महाशय सुखदयाल जी ने १९२१ ई० में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के जीवन से प्रभावित होकर तथा गवर्नमैण्ट-पोस्ट-आफ़िस के निरीक्षण सम्बन्धी कार्य को छोड़ने के पश्चात् उन्होंने किसी स्वास्थ्य-प्रद प्रदेश के समीप गुरुकुल स्थापित करने का निश्चय किया। और १९२७ ई० में गुरुकुल कमालिया स्थापित हुआ।

गुरुकुल खोलने की धुन में दिनरात लगे रहने के कारण तथा अपने अनथक परिश्रम के कारण और अपने दृढ़ विश्वास पर बिना किसी सहायक की अपेक्षा किये श्री महाशय जी ने अकेले ही इतनी बड़ी धन-राशि को मियाँ चन्नू, चीचावतनी, मिन्ट गुमरी, उकाड़ा, टोबाटेकसिंह, तान्दलियाँ वाला, जड़ांवाला इत्यादि इलाकों से एकत्रित किया। उनका यह प्रयत्न सराहनीय है। अब, क्योंकि; तीन वर्ष से लगातार अस्वस्थ रहने के कारण तथा शारीरिक शक्ति के क्षीण होने के कारण वे इस कार्य को चलाने में अशक्त थे, इसलिये उन्हें इस कार्यभार से मुक्त कर दिया गया है। इस महान् कार्य का उन्होंने अपने हित के लिए नहीं, किन्तु देश तथा समाज के हित के लिए जिस लग्न तथा जिस दक्षता से संचालन किया है; हम किन शब्दों में वर्णन करें। हमारे हृदय ही इसके साक्षी हैं और हम उनके स्वास्थ्य की परमप्रभु परमात्मा से शुभ-कामना करते हैं।

—गुरुकुल कमालिया के मुख्याधिष्ठाता श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज द्वारा टोबाटेकसिंह के गुरुकुल प्रेमियों से ८१०) एकत्र हुआ है। गुरु-कुल कमेटी उन सब दानियों का धन्यवाद करती है। डी० डी० चौधरी प्रधान गुरुकुल कमालिया कमेटी

गुरुकुल मुलतान

शोक प्रस्ताव

गुरुकुल निवासियों की यह शोक सभा गुरुकुल उप सभा के भूतपूर्व उपप्रधान "देशभक्त" अखबार के ओजस्वी सम्पादक तथा सच्चे समाज सुधारक श्री भक्त बिहारीलाल जी के आकास्मिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रगट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य और शक्ति प्राप्त हो। ओम्प्रकाश मु० अ०

आर्य समाज संसार

आर्य समाज मिठाटिवाना के समाचार

आर्य समाज मन्दिर में पिछले ६ मास से दैनिक सन्तराम जी वानप्रस्थी स्वाध्याय सुमन से कथा करते हैं।

(२) अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस २४ दिसम्बर को मनाया गया प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् पं० सन्तराम जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला रात्री को वैदक पुत्री पाठशाला में भजनों के पश्चात् डाक्टर ओ३म् प्रकाश जी प्रधान आर्य समाज तथा म० कुन्दन लाल ने स्वामी जी के जीवन की कुछ घटनाएं रखीं और उनसे शिक्षा ग्रहण करने की ओर जनता का ध्यान दिलाया।

(३) म० रूपचन्द मंत्री आर्य समाज के सुपुत्र तथा मास्टर अमीरचन्द जी की अकाल मृत्यु पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किया गया परमात्मा मृतक आत्माओं को शान्ति देवें। —मंत्री

आर्य समाज लुध्याना के समाचार

आर्य समाज दालबाज़ार लुध्याना का वार्षिको-त्सव ति० ८ मार्च १९४३ से १५ मार्च १९४३ तक समाज मन्दिर दाल बाज़ार के विशाल भवन में बड़े उत्साह व समारोह से मनाया जावेगा उत्सव पर बड़े बड़े प्रसिद्ध संन्यासी तथा उपदेशक व भजनीक पधार रहे हैं।

नोट—रहने का तथा भोजन का प्रबन्ध समाजकी ओर से होगा। गिरधारीलाल दीवान सभा मन्त्री

आर्य समाज कोल्हापुर के समाचार

(१) गत मास की २३ तारीख को आर्य समाज कोल्हापुर (श्रद्धानन्द स्मारक मन्दिर) में समाज के प्रधान श्रीयुत डा० अविनाशचन्द जी बोस के सभापतित्वमें श्री "श्रद्धानन्द दिवस" बड़े समारोह के साथ मनाया गया। गुरुकुलके विद्यार्थियों ने भी इस में बड़े उत्साह ते भाग लिया। प्रो० जी० एस० देशपांडे, श्रीयुत दत्तात्रेय जी मालक, श्री शंकर त्रिदुत डोणे आदि के स्वामी जी के चरित्र पर बोध-प्रद व्याख्यान हुए।

(२) कोल्हापुर आर्य समाज का वार्षिक साधा-रणाधिवेशन १७ जनवरी को होगा।

आर्यसमाज नारायणगढ़ की सहायता करो

आप को यह जान कर हर्ष होगा कि आर्य्य समाज नारायण गढ़ की भूमि जिस के सम्बन्ध में अभियोग चल रहा था सभा के हक में उसका फैसला हो गया है परन्तु अभियोग के कारण यहां के आर्य्य भाइयों की दशा इस काबिल नहीं कि मन्दिर बनाया जा सके। आर्य्य भाइयों तथा सभाओं से प्रार्थना है कि इस समाज के मन्दिर निर्माण के कार्य में अवश्य सहायता प्रदान करने का अनुग्रह करें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद-प्रचार विभाग

[पं० यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार प्रचार अधिष्ठाता]

(१) आर्य समाजों को सेवा में कई बार प्रार्थना की गई है कि दीवाली के अवसर पर ।) निधि का धन शीघ्र सभा कार्यालय में भेज दें मुझे दुःख से लिखना पड़ता है कि अभी तक बहुत कम आर्य समाजों ने इस ओर ध्यान दिया है और सभा कार्यालय में ।) निधि में केवल ७००) ही प्राप्त हुआ है । मैं आर्यसमाजों से बलपूर्वक अनुरोध करता हूं कि वे चार आना निधि का एकत्रित धन शीघ्र सभा कार्यालय में भेज दें और जिन समाजों ने एकत्रित नहीं किया है वे भी इस रविवार तक एकत्रित कर के भेज दें।

(२) जिन आर्य समाजों के उत्सव नहीं हुए हैं उनकी सेवा में प्रार्थना है कि वे फरवरी मास में उत्सव की तिथियां नियत करके शीघ्र सभा को सूचित कर दें। जिन्हों ने मार्च अप्रैल में उत्सव करने हैं उन्हें भी अभी से अपनी तिथियां नियत कर लेनी चाहिये, ताकि उत्सव इस प्रकार से नियत किये जायें कि एक ही तिथियों में बहुत से प्रबन्ध करने में कठिनाई न हो।

(३) पंजाब की मुख्य तथा बड़ी आर्य समाजों से मैं बल पूर्वक यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि वे अपने यहां प्रचार के लिये सभा को बाधित न किया करें क्योंकि उनके यहां तो काफ़ी प्रचार होता ही रहता है । यत्न यह होना चाहिए कि जो समय उनके यहां लगना हो वह किसी छोटी समाज में लग जायें।

(४) आर्य समाज लोहारू के मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया है और सभा की तरफ से पंडित क्षेमचन्द जी के निरीक्षण में यह कार्य हो रहा है। मन्दिर निर्माण के लिये धन की बहुत आवश्यकता है सब आर्य भाईयों से प्रार्थना है कि वे इस कार्य के लिये शीघ्र सभा को सहायता भेजने की कृपा करें।

(५) लोहारू में सभा की तरफ से पाठशाला चल रही है जिसका मासिक खर्च लगभग २०) है यदि कोई आर्य सज्जन एक वर्ष के लिए २०) मासिक भेजने की कृपा करें तो उन का बहुत धन्यवाद होगा।

(६) सब आर्य समाजों का यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि जब कोई उपदेशक महानुभाव उनके यहां प्रचारार्थ पधारें तो उन्हें स्टेशन पर लेने और छोड़ने का प्रबन्ध अवश्य करें।

(७) आर्यसमाज का जीवन ही संगठन में है आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का गौरव इसी बात में रहा है कि इसका संगठन बहुत दृढ़ है और आर्यसमाजों का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे अपने उत्सवों पर प्राईवेट प्रबन्ध सर्वथा न करें और सभा के सहयोग से ही कार्य करें इसी में उनका तथा सभा का गौरव है।

(८) कई एक पुरुषों का यह काम सा हो गया है कि वे सभा के विरुद्ध आर्य समाजों में असन्तोष फैलाने का यत्न करते रहते हैं। आर्य पुरुषों को सावधान रहना चाहिए। मुझे हर्ष है कि ऐसे लोगों के प्रोपेगेण्डा का कोई प्रभाव नहीं हो रहा है और आर्य समाजें सभा के साथ पूर्ण सहयोग दे रही हैं। आर्य जनता को प्रसन्नता होगी कि सभा का प्रत्येक विभाग बड़ी सफलता से चल रहा है। आर्य जनता को सभा के साथ पूर्ण सहयोग करना चाहिए।

(९) वेद प्रचार का कार्य दिनों दिन बढ़ रहा है इसके लिये सभा ने कई एक विद्वानों तथा उत्तम भजनोपदेशकों की नियुक्तियां की हैं जैसे श्री पं० क्षितीशकुमार जी स्नातक श्री ठाकुर प्रवीण सिंह जी श्री म० जयप्रकाश जी धनुर्धर, श्री म० देवकी नन्दन जी श्री म० मेलाराम जी (जो पूर्व प्रादेशिक सभा में कार्य करते थे)

वीर मेला बटहरा का २०वां उत्सव

ला. अनन्तरामजी अधिष्ठाता रामचन्द स्मारक बटहरा

धर्मवीर म० रामचन्द जी की स्मृति में जम्मू रियासत के बटहरा ग्राम में जहां कि दलितोद्धार का काम करते हुये १९८६ विक्रमी को धर्मवीर का बलिदान हुआ था और जहां की पवित्र भूमि पर आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाबकी ओरसे धर्मवीर के मिशन पर जारी रखने के उद्देश्य से उनका स्मारक स्थापित किया गया हुआ है प्रति वर्ष वीर मेला लगता है। चनांचि इस काम में अब बीसवां वीर मेला गत २६-२७-२८ मार्ग शीर्ष को बड़े समारोह से मनाया गया और वह सर्वथा निर्विघ्न तथा बड़ी सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पं० बलदेव जी भजन उपदेशक और म० बसावाराम जी प्रचारक वीर मेला की तय्यारी तथा प्रबन्ध में सहायता देने तथा प्रचार करने के लिये कई मास पहले से यहां लगाये गये।

इन के अतिरिक्त मेले में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पं० रामस्वरूप जी शान्त आर्य उपदेशक, पं० जयप्रकाशजी धनुर्धर देहली निवासी और पं० देशराजजी भजनोपदेशक भी पधारे।

कुंवर जोरावर सिंह जी मथुरा निवासी मन्त्री ने जो कि आर्य समाज बच्छोवाली के गत वार्षिकोत्सव पर विशेष तौर पर पधारे हुये थे इस मेले में आकर उसकी रौनक को बढ़ाया। स्यालकोट से आर्य समाज के अनथक कार्यकर्ता पं० बनवारी लाल जी बी० ए० वैदिक मिशनरी ने भी अपने उत्साही सहकारी का बजीरचन्द जी पेनशनर सहित मेले होकर उसकी शोभा को बढ़ाया। समाज के प्रधान लाला सीताराम ने भी दोनों दिन अपने कई एक नगर सहित मेला में दर्शन देते रहे। यह सन्तोष का स्थान है कि मेले में अगणि अतिरिक्त ब्राह्मण, राजपूत, महाजन, भाई अर्थात् हर श्रेणी जाति तथा धर्म के और पर्याप्त संख्या में सम्मिलित हुए दिनों में उपस्थिति इतनी न थी। किन्तु उपस्थिति का कोई ठिकाना न था। की संख्या में जिधर देखा जाता लोगों तथा चहल पहल दृष्टि गोचर होती लोग लारियों और ताँगा में, कुछ लोग शुतरों पर और कुछ लोग किश्तियों के और पैदल आने वाले यात्रियों की तो ही न थी। मेले में घोड़सवारों की इतन थी कि वहां स्वयं ही बिना किसी प्रय घोड़ादौड़ हो गई जो कि जनता की बड़ी जकता का कारण हुई।

रियासत की ओर से महकमा ग्राम सुधार के कार्यकर्ता भी अपने वस्तुओं सहित मेले में पधारे हुये थे। तालीम की ओर से अखनूर के श्रीहरि स्कूल के विद्यार्थी गण का स्काउट पार्टी जगन्नाथ जी की अध्यक्षता में मेले अपने कर्तव्य और काम को बड़े उत्साह रही थी।

मेले में हवन यज्ञ के अतिरिक्त खूब शाली तथा बड़े सरस और मनोहर भज पं० रामस्वरूप शान्त जी ने दो दिन रात मैजिक लालटैन द्वारा बड़े शिक्षा दायक औ शाली व्याख्यान दिये जिससे जनता बड़ी और प्रभावित हुई। पं० बनवारी लाल जी का भी बड़ा मनोहर उपदेश हुआ कुंवरजो जी भजनोपदेशक ने आवेशोत्पादक वक्तृ दिल हिला देने वाले भजनों से वह आ समय बांधा कि जनता उनकी प्रशंसा में वाह २ कर उठी। पं० जयप्रकाश जी धनु हंसराज जी तथा म० बलदेव जी भजनोपदे के रसीले और मनोहर भजन भी जनता दिलचस्पी तथा आकर्षण का कारण बने

—लाहौर बिजली कम्पनी ने पंजाब के खिलाफ हाईकोर्ट में अपील की थी। ने बिजली कम्पनी के हक्क में फैसला कर और पंजाब गवर्मेण्ट को फैसले तक कर का हुक्म दिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

सम्पादक—भीमसेन सभा-मन्त्री

Regd. N. L. 5004

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक
वार्षिक मूल्य ४)
२४ जनवरी १९

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

[६]

आत्मिक प्रासाद की चाबी सत्य है

(श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की सम्पादकों से आशा)

सत्य मूलानि सर्वाणि, सत्यान्नास्तिपरं पदम् ।

र्व्व का मूल सत्य ही है, फिर उससे ऊपर ा पद हो सकता है। जिस जगदम्बा की ही मनुष्य का परम पुरुषार्थ है उसके क प्रासाद की चाबी सत्य ही है। सत्य से ात्मा की प्राप्ति होती है। इसीलिये सत्य न वैदिक धर्म के प्रचार के लिये मैंने "सद्धर्म्म क" साप्ताहिक पत्र वैशाख सम्वत् १९४६ में ा था।

सद्धर्म्म प्रचारक' की प्रतिज्ञा थी कि 'न भय से ा से और न मोह से' वह कभी भी सत्य को गा और इसीलिये चौथाई शताब्दी तक उसने जनता को, अपनी बुद्धि और योग्यतानुसार, का सीधा मार्ग दिखाया।

सद्धर्म्म प्रचारक' जिस समय फार्सी लिपि में कलता था, उस समय कुछ सप्ताह तक देव लिपि में हरद्वार से 'सत्यवादी' निकलवाया परन्तु प्रबन्ध की शिथिलता और मेरे गुरुकुल में बंधे रहने के कारण यह पत्र न चल सका। सका अन्त्येष्टि संस्कार भी वैदिक रीति से और ग्राहकों से प्राप्त धन उन्हें लौटा दिया

दिल्ली में गत वर्ष सत्यवादी को फिर वित किया गया। परन्तु फिर भी उसका एक पत्र के साथ साथ सम्पादित करना संचा- के लिये कठिन हो गया। इस समय..... वादी को ....

....मुझे संतोष दिलाया है कि गुरुकुल विश्व लय कांगड़ी से द्विजन्मा ब्रह्मचारी उत्पन्न

इस समय भारत भूमि में जत्थे बन्दी का राज है। बिना किसी जत्थे का आश्रय लिये कोई भी समाचार पत्र जीवित नहीं रह सकता और न कोई व्यक्ति उसके बिना लोक सेवा तथा धर्म सेवा का काम कर सकता है। ऐसे निराशा जनक समय में..... पुनर्जीवित करने का संकल्प किया है। सत्यवादी को सार्थक बनाने का साहस करके.....मुझे आशा की झलक दिखाई—इसके लिये मेरे हृदय से आशीर्वाद निकलता है और यदि सत्यवादी ने अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का प्रमाण दिया तो मुझे भी अपने धार्मिक विचार आर्य जनता तक पहुँचाने का अवसर मिलेगा। क्या मैं आशा करूं कि सत्यवादी का..... सम्पादक जत्थेबन्दियों से मुक्त रह कर सिंहवत् सीधे मार्ग की ओर अपने पाठकों को निर्देश करेगा और सन्त कबीर के उस वचन को न भूलेगा जहां उन्होंने कहा है—

सिंहों के नहीं लोहंड़े, हँसों की नहीं पांत।
लालों की नहीं बोरियां, साध न चलैं जमात॥

... ...

२१ फरवरी १९२५ में मथुरा शताब्दी के अवसर पर लेखक ने लाहौर से सत्यवादी साप्ताहिक सम्पादित और प्रकाशित करने के समय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी से सत्यवादी के लिये अपना सन्देश भेजने का निवेदन किया था। उस समय श्री स्वामीजी ने उपरिलिखित संदेश भेजा था उस संदेश में से व्यक्तिगत बातों को छोड़ कर शेष संदेश आर्य के पाठकों तथा लेखकों के सामने उपस्थित किया जा रहा है। इस संदेश में स्वामी जी ने पत्र सम्पादकों पत्र संचालकों लेखकों

रखा है। समाचार पत्र और निर्वाचन सम्बन्धी चर्चाएं प्रजा सत्तावाद के [illegible] पृष्ठ २ पर समाचार पत्रों की [illegible] और निर्वाचनों की धूलि से [illegible] कर्ताओं, प्रधान मन्त्री तथा [illegible] और मनों में विक्षोभ और ग्लानि के भाव पैदा हो जाते हैं। और उनमें से कई निराश होकर आर्य समाज के संगठन से पृथक् होकर अपना २ पृथक् कार्य क्षेत्र बनाने लगते हैं और अपने संगठनों को निर्वाचन तथा समाचार पत्र चर्चाओं से पृथक् रखना चाहते हैं। एक तरह से समालोचनाओं की आंच से, अपने को, प्रतीत हो रहे सत्य को, बचाना चाहते हैं। और अहंकार भाव से इस बात को भूल जाते हैं कि वह सत्य को बचाने वाले नहीं हैं, अपितु सत्य ही उन्हें बचाने वाला है।

अपने इस भ्रम में उलझ कर वह सत्य की रक्षा के लिये जत्थेबन्दियां बनाने लगते हैं। परन्तु यहां भी उन्हें निराश होना पड़ता है।

ऐसे समयों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपरिलिखित संदेश में अंकित आदेश के अनुसार सत्य का सहारा लेकर कबीर की वाणी के अनुसार साधु को (सत्यवादी, सत्यमानी और सत्यकारी व्यक्ति ही साधु कहाते हैं—ऋषि दयानन्द ऋग्वेद भाष्य) जत्थेबन्दियों से पृथक् रह कर नियमानुमोदित, प्रजा सत्तावाद प्रमाणित सभा समितियों द्वारा ही काम करना चाहिये। तभी हम सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक आन्दोलनों में काम करते हुये भी आत्मिक प्रासाद में प्रविष्ट हो सकेंगे। परन्तु इसके लिये हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि 'सांच को आंच नहीं' और सत्य ही आत्मिक प्रासाद की चाबी है। और इसी सत्य से आत्मा और परमात्मा की प्राप्ति होती है और इसी से आत्मिक शान्ति मिलने के बाद परमात्मा के दर्शनों से आनन्द मोक्ष सुख मिल सकता है।

—भीमसेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दैनिक स्वाध्याय—

पाप का झण्डा गिरा दो

(ले०—श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति)

[६]

शतेन पाशैरभिधेहि वरुणैनं मा ते मोच्यनृतवाङ् नृचक्षः ।
आस्तां जाल्म उदरं भ्रंशयित्वा कोश इवाबन्धः परिकृत्यमानः ॥

अथर्व० ४ । १६ । ७ ॥

अर्थ—(वरुण) हे वरुण (एनं) इस—असत्य वादी को (शतेन) सैंकड़ों (पाशैः) पाशों से (अभिधेहि) बांध ले (नृचक्षः) हे मनुष्यों को पहचानने वाले (अनृतवाक्) असत्य भाषी (ते) तुझ से (मा) मत (मोचि) छुट जाये (जाल्मः) दुष्ट व्यवहारी पुरुष (उदरं) अपने ऊंचे पाप के झण्डे को (भ्रंशयित्वा) गिरा कर (परिकृत्यमानः) कटे हुए (अबन्धः) आश्रय हीन (कोशः) फूल के डोडे की (इव) तरह (आस्ताम्) पड़ा रहे।

पूर्व मन्त्रों में वरुण भगवान् के सम्बन्ध में यह जो वर्णन किया गया था कि वह सर्व द्रष्टा है और अधर्माचारी को अपने पाशों से बांध कर दण्डित करता है उस पर वेद का स्वाध्यायी उपासक गम्भीरता से विचार करता है। और इस गम्भीर विचार के परिणाम स्वरूप इस परिणाम पर पहुँचता है कि हमारे कर्मानुसार भांति-भांति के दुःख भोग रूप जो पाश वरुण भगवान् द्वारा हम पर बांधे जाते हैं वे वस्तुतः हमारे मंगल के लिये हैं। यदि भगवान् हमें इस प्रकार हमारे पाप कर्मों को प्रतिफल के रूप में दण्डित न करते तो संसार में आचार के क्षेत्र में बड़ी घोर अव्यवस्था छा जाती। सामान्य मनुष्यों को धर्म के, कर्तव्य के, सही मार्ग पर चलाने वाले भय और प्रलोभन ये ही दो कारण है। यदि हमें धर्म के, कर्तव्य के, सही मार्ग पर चलने से कुछ भी मिलने की आशा न हो अथवा कर्तव्य से गिर जाने पर किसी प्रकार का भी दण्ड मिलने का भय न हो तो हम में से अधिकांश मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन कभी नहीं करेंगे। यदि भगवान् हमारे अनाचरणों का प्रतिफल दुःख देकर हमें दण्डित करने वाले न होते तो हमें सही मार्ग पर चलाने वाला एक बड़ा भारी कारण अर्थात् भय बिल्कुल न रह जाता। और इस भयहीन अवस्था में अधिकांश व्यक्ति सत्य, न्याय, दया आदि सद्गुणों का कभी भी पालन न करते और इस प्रकार कर्तव्य के क्षेत्र में बड़ी अव्यवस्था मच जाती भगवान् पापियों को अपने पाशों में बांध कर जहां कर्तव्य क्षेत्र की इस अव्यवस्था को रोकते हैं वहां वे इस बंधन द्वारा पापी के आत्मा को निर्मल, निष्पाप बना कर उसे मोक्ष सुख का अधिकारी बना देते हैं और इस प्रकार अपराधी को दण्डित करते हुए भी वे उस पर मंगल की वर्षा कर रहे होते हैं। क्योंकि भगवान की इच्छा है कि संसार का प्रत्येक पान तो निष्पाप आत्मा ही कर सकता है। पाप को दण्ड देकर प्रभु उसे निष्पाप बनाते हैं। अपने को दुःख मिलने पर अथवा दूसरे किसी को दुःख मिलता देख कर मन में विचार उठता है कि न्यायकारी प्रभु बिना किसी दुष्ट कर्म के यह दुःख नहीं दे सकते थे। इस लिये मिल रहा यह दुःख सूचित करता है कि हमने इस जन्म में या पूर्व जन्म में कोई अधर्म कार्य अवश्य किया है। न जाने किस पाप कर्म का यह फल है। इसलिये दुःखों से बचने के लिये आवश्यक है कि हम सभी प्रकार के पाप कर्मों को छोड़ दें। यह विचार मन में उत्पन्न होकर हमारे पाप छुड़ा देता है। पाप छूट जाने से हमारा आत्मा निर्मल हो जाता है। आत्मा के निर्मल होने का फल मोक्ष सुख की प्राप्ति होता है। और हमें यह परम सुख प्राप्त कराना ही भगवान् का अभीष्ट था। इस प्रकार भगवान् के दण्ड में भी हमारा मंगल छिपा है। जब उपासक विचार द्वारा इस निर्णय पर पहुँचता है तो उसके मनमें जो उद्गार उठते हैं उन्हीं को प्रस्तुत मन्त्र में प्रकट किया गया है।

वह मन्त्र के शब्दों में भगवान् को सम्बोधन करके सहसा चिल्ला उठता है कि हे वरुण मेरा या अन्य किसी का जो कोई भी आत्मा असत्यवादी है अर्थात् अधर्माचारी है आप उसे झट अपने पाशों में बांध लीजिये। कोई भी पापाचारी आप के इस पाश बन्धन से बच कर निकलने न पावे। हे वरुण आप नृचक्षः है—मनुष्यों को पहचानने वाले हैं। इसलिये हमें पूर्ण विश्वास है कि आप पहिचानकर पापी को ही दण्डित करेंगे। पुण्यात्मा को आप के पाश बन्धन का कोई भय नहीं है। पर पापी को हे वरुण आप बिल्कुल मत छोड़िये। जैसे शाखा से तोड़ा हुआ फूल का डोडा आश्रय हीन होकर गिर पड़ता है वैसे ही दुष्ट व्यवहारी पापी लोग भी आपके पाशों में बंधने के कारण अपने पाप कर्म के ऊँचे किये हुए झण्डे को गिराके पड़े रहें। आप से दण्डित होने के कारण वे पापी आत्मा पाप का झण्डा ऊँचा न कर सकें। प्रभो हम पापी आत्माओं को आप अपने पाश बान्धन में अवश्य बांधिये। क्योंकि आप का यह बन्धन देखने में दुःखदायी लगने पर भी असल में व्यक्ति और समाज के लिये बड़ा मंगलकारी है। आप दण्ड नहीं देंगे तो पाप कर्मों में पड़े हमारे आत्मा की दुष्ट प्रवृत्ति कभी नहीं छूट सकेगी और इस प्रकार हम पाशधारी वरुण कम से कम मैं तो आपके से बचना नहीं चाहता। प्रत्युत मैं तो उन गत करता हूँ। हे प्रभो! मुझे शीघ्र से शी पाशों में बांधकर निष्पाप और निर्मल की

गत मन्त्र में वरुण के इक्कीस पाशों हुआ था। कोई यह न समझ ले कि वरुण इतने ही पाश हैं, उसके पास पापी को के इतने ही साधन हैं। इसलिये प्रस्तुत कहाकि—हे वरुण! अपने सैकड़ों पाशों से बांधिये। भगवान् के पास पापी को दण्ड के साधन थोड़े नहीं हैं जिन्हें बीस-इक्क संख्या में गिनाया जासके। यह संख्यायें का एक प्रचार मात्र हैं। वस्तुतः तो भग पापी को दण्ड देने के साधन सैकड़ों हैं— कोई निश्चत संख्या नहीं है। जहां वे हमा के अंगों को क्लेशित करके हमें दुःखी कर वहां के और भी अनेक प्रकार से हमें दण्ड सकते हैं। उस पाशी के पाश असंख्य हैं।

हे मेरे मन! उस पाशी भगवान् के पा गिनत पाश हैं। तू पाप करके उनके बन्धन नहीं सकता। तू प्रभु के आश्रय में जाकर प्रवृत्ति को ही छोड़दे। इसी में तेरा कल्याण

प्रश्न पिटारी

पूज्य महोदय, सादर नमस्ते। निम्न शंकाओं का उत्तर देने की कृपा करें—

(१) 'ओमावसोः सदनं सा द' कहते हुए के वरण करते समय कई जगह यजमान अन्नादि भेंट करता है ऐसा कई स्थानों गया है। इस के लिये क्या उचित है?

(२) वाम देव गान कैसे किया जाता है वेदगान न आता हो तो क्या करना चाहिये।

(३) चूड़ा कर्म बाल के बार पिता संस्कार विधि में स्पष्ट नहीं लिखा, कई स्था सतरह १७ बार और कई स्थानों पर पां मूंडते देखा गया है।

इस संस्कार में अथर्व० का० ८। सू० १७ का जो मन्त्र लिखा है वह वेद से नहीं लि

(४) गृहाश्रम प्रकरण में शाला कर्म लि "ओं अच्युताय भौमाय स्वाहा" इस मन्त्र आहुति देकर ध्वजा का स्तम्भ जिस मे लगाई हो खड़ा करे" ऐसा लिखा है पर इस हवन करने के सम्बन्धमें कुछ नहीं लिखा। अन्दर और चारों ओर बाहर वेदियां बनाने है पर कुछ ज्ञात नहीं होता कि यह आहुति जा सकती है जब कि मुख्य द्वार पर पह किया नहीं गया वहां अभी तक तो आ आदि क्रिया ही नहीं की गई। और यह सारी की सारी अस्पष्ट सी प्रतीत होती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य

रविवार २४ जनवरी १९४३

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के उपाय

वर्तमान महायुद्ध की भयंकरता को देखकर ार के विचारशील दार्शनिक अन्तर्राष्ट्रीय न्ति स्थापित करने के उपायों को सोच रहे हैं। ानैतिक नेताओं के सूत्रधार इसका उपाय यह झते हैं कि युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद हरेक राष्ट्र अपनी सैन्य शक्ति इस प्रकार से ठित करे कि कोई दूसरा राष्ट्र उस पर आक्रमण ने का साहस न कर सके। साम्यवादी तथा युनिस्ट इसका उपाय यह समझते हैं कि ाज के आर्थिक संगठन को इस ढंग से बदला या कि इसमें पारस्परिक संघर्ष और स्पर्धा के ान पर सहयोग का भाव पैदा हो, व्यक्तिकी सब क्रियाँ राष्ट्र-तथा समाज के लिये अर्पित समझी या। हमारी सम्मति में दोनों उपाय शान्ति ापित करने के स्थान पर अशान्ति पैदा करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने का एकमात्र य उपाय मानव धर्म है। हरेक मनुष्य दूसरे ुष्य को अपने जैसा समझे देश भेद जाति भेद कारण कोई किसी से घृणा न करे। आर्य ाज और वैदिक धर्म इसी उपाय द्वारा संसार आन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करना चाहता है। र्य समाज यह भी समझता है कि यह अन्त- ट्रीय शान्ति तभी स्थापित हो सकती है यदि ार के राष्ट्रों में राष्ट्रीय शान्ति स्थापित हो। ट्रों में शान्ति तभी स्थापित हो सकती है—याद ट्रके परिवारों में शान्ति हो। पारिवारिक शान्ति लिये हरेक मनुष्य के लिये 'मानव धर्म'का पालन ना आवश्यक है।

प्रचार प्रणाली में परिवर्त्तन की आवश्यकता

शपाल जी सिद्धान्तालंकार अधि० वेदप्रचार विभाग]

आर्य्य प्रतिनिधि सभा कई वर्षों से यह अनु- ब करके रही है कि वेद प्रचार की वर्त्तमान प्रणाली परिवर्त्तन (Radical change) की आवश्य- ा है। उत्सवों का जो वर्तमान ढंग है उस से ड़ी देर के लिये कुछ चहल पहल तो हो जाती है न्तु विशेष लाभ नहीं होता। व्याख्यानों के पीछे ाख्यान होते चले जाते हैं परन्तु उन व्याख्यानों ्चिर स्थायी प्रभाव नहीं होता। व्याख्यानों के ख्य जनता को याद नहीं रहते। इसमें कोई संदेह ों कि आर्य्य समाज के प्रारम्भिक दिनों में इस भी आवश्यकता थी। धनी समाजें सभाओं के ाओं के अतिरिक्त प्राइवेट प्रबन्ध भी करती हैं और चले गये उनके व्यक्तित्व जीवन से जनता कोई लाभ नहीं उठा सकती। उपदेशकोंका बहुत सा समय रेल गाड़ियों में खर्च हो जाता है। सभा का बहुत सा धन किरायों के अर्पण हो जाता है। इस प्रणाली में परिवर्त्तन करने का प्रश्न कई बार सभा के सामने आया परन्तु इसको क्रियात्मक रूप नहीं दिया जा सका। एक आध वर्ष के लिये इस दिशा में कुछ प्रयत्न भी किया गया परन्तु कई कारणों से उसमें सफलता न मिली। इस वर्ष सभा के अधिकारियों ने इस बात का निश्चय किया कि इसमें परिवर्त्तन किया जाये, और इसका उत्तर-दायित्व मेरे सपुर्द किया गया। ५० वर्षों से जो प्रणाली चल रही है उस में परिवर्तन करना कितना कठिन है। अपने कुछ मासों के अनुभव से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूं कि यदि यत्न किया जाये तो तीन वर्षों में परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त हो सकती है। क्योंकि जब कोई कार्य्य करना ही होता है तो कठिनाइयों की परवाह नहीं की जाती। वेद प्रचार प्रणाली में निम्न परिवर्त्तन करने का विचार है और इसे क्रियात्मक रूप भी दिया जा रहा है।

(१) सब उपदेशक महानुभावों के मंडल नियत कर दिये जायें और यत्न किया जाये कि उपदेशक महानुभाव अपने मंडलों से बहुत कम बाहर जायें। उपदेशकों की संख्या बढ़ाई जावे और प्रत्येक उपदेशक महानुभावों के पास २० से अधिक आर्य समाजें न हों। वे कम से कम प्रत्येक स्थान पर ५दिन रह कर प्रचार करें। इस समय में उपदेशकों का यह कर्त्तव्य होगा कि वे आर्य्य परिवारों में नवजीवन पैदा करने का यत्न करें। आर्य पुरुषों को हिन्दी, संस्कृत, सन्ध्या अग्निहोत्र इत्यादि सिखायें और सच्चे अर्थों में अपने यजमानों के पुरोहित बनने का यत्न करें। व्याख्यानों पर विशेष बल न देकर पारस्परिक मेल द्वारा धर्म का प्रचार करें।

(२) यत्न किया जायगा कि प्रत्येक उपदेशक मास में ८ दिन अपने मुख्य स्थान में रह कर अपने परिवार के मध्य में रहें और पारिवारिक जीवन की मधुरता का लाभ उठाने के साथ २ अपने हैड-क्वार्टर की समाज को उन्नत करें और उसे सच्चे अर्थों में अपने मंडल की आर्य्यसमाज activeties का केन्द्र बनायें।

(३) उत्सवों के सम्बन्ध में यह निश्चय किया गया है कि प्रत्येक ज़िले में अधिक से अधिक तीन उत्सव वर्त्तमान ढंग से किये जायें शेष आर्य्य समाजों के उत्सव कथा द्वारा किये जायें। अर्थात् सात दिन के लिये एक योग्य उपदेशक तथा एक योग्य भजनीक को एक स्थान पर भेजा जाये। उस समाज में प्रातः यज्ञ तथा उपदेश हों तथा रात को कथा हो यही यज्ञ तथा कथा उस समाज के उत्सव समझे जायें और इसी पर वेद प्रचार का धन एकत्रित कर लिया जाये। इस में सन्देह नहीं कि कई आर्य्य समाजों को जिन के आधीन कोई संस्था हो इसमें यह आपत्ति होती है कि इस प्रकार से धन कम आयेगा और इस से संस्था के संचालन में कठिनता होगी। परन्तु मेरा विचार है कि यदि यत्न किया जाये तो इस विषय में भी साधारण जनता की मनोवृत्ति को बदला जा सकता है और जनता कथाओं द्वारा उत्सव करने पर भी समाज को धन देने में संकोच न करेगी। परन्तु पंजाब में सैंकड़ों समाजें ऐसी हैं जिन के आधीन कोई संस्था नहीं है और उन्हें इस नई रीति से उत्सव करने में कोई कठिनता नहीं हो सकती। आज कल प्रायः यह देखा जाता है, कि समाज के अधिकारियों को उत्सवों के प्रबन्ध से सर्वथा अवकाश नही मिलता और वे उपदेशकों के व्या-ख्यानों से कोई लाभ नहीं उठा सकते। यदि नवीन प्रणाली के अनुसार उत्सव किये जायें तो सब आर्य पुरुष प्रातःकाल सपरिवार यज्ञ में सम्मिलित हों और सायंकाल जनता कथा से लाभ उठाये। इस प्रकार से लगातार आठ दिन तक उस शहर में एक धार्मिक वायुमंडल पैदा हो जाता है। और इस प्रकार से जनता पर इस प्रचार का स्थिर प्रभाव होता है। लोगों को अपनी शंकायें दूर करने का अवसर मिलता है उपदेशक महानुभावों की सङ्गति में बैठ कर स्वाध्याय करने का अवसर मिलता है। और उनके जीवन से लाभ उठाने का भी अवसर उन्हें प्राप्त होता है। तथा उपदेशक महानुभावों को भी अपना जीवन अधिक से अधिक उन्नत बनाने तथा अपनी योग्यता बढ़ाने का अवसर मिलेगा।

हमें आर्य जनता को यह सूचना देते हुए प्रसन्नता होती है कि इस समय तक कथाओं द्वारा २५ उत्सव हो चुके है और इन के द्वारा २५००) वेद प्रचार को प्राप्त हुआ है। इस से यह तो स्पष्ट है कि कथाओं द्वारा उत्सव करने पर भी धन प्राप्त हो सकता है। जिन समाजों ने कथाओं द्वारा उत्सव किये हैं हैं उनके नाम ये हैं। रानौर, कुल्लू भद्रवाह, किशनवाड, तीमारपुर, कगोलबाग, संजरपुर, खानपुर, क्वेटा, करतारपुर, सीतपुर, साधू आश्रम बजवाडा, जंडियाला गुरु, मियांवाली करेड़ियां, सपाटू, फ़ाज़िलका, कुलाचो, डेरा इस्माईलखां, टौनी देवी, माडी इण्डस, डेरा गोपीपुर,

---

नोट—प्रायः सब उपदेशक महानुभावों के मंडल नियत कर दिये गये हैं यद्यपि इस विषय में अभी बहुत कम सफलता हुई है तथापि यह यत्न किया जा रहा है कि लाहौर अमृतसर, स्यालकोट; रोहतक, करनाल, हिसार, गुड़गांवा, अम्बाला, बाङ्गडा, हुश्यारपुर, लायलपुर, झंग, सरगोधा, तथा मुलतफ्फरगढ़ डेरा गाजीखां, बहावलपुर स्टेट आदि जिलों में नियत उपदेशक महानुभावों को अपने २ मंडल से बाहर न भेजा जाये। हमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ओ३म् शब्दान्तर्गत रहस्य

(ले०—पं० भीमसेन जी वेदालङ्कार)

आर्य के पिछले अङ्क में 'ओ३म्' शब्द की व्याख्या करते हुए हमने बताया था कि परमात्मा को यह नाम क्यों दिया गया है। साथ ही हमने इस विषय पर भी विचार किया था कि 'अ' इस अक्षर के आधार पर परमात्मा को विराट्, अग्नि और विश्व क्यों कहते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि 'अ' अक्षर की व्याख्या हमने पिछले लेख में पूर्णतया कर दी थी। उस लेख में हम ओ३म् के अगले अक्षर 'उ' पर ही विचार करेंगे।

यदि हम वर्णमाला के ५वें अक्षर 'उ' के गुणों पर ज़रा गम्भीरता से विचार करें तो हमें मालूम होगा कि उस अक्षर में कुछ एक खास विशेषतायें पायी जाती हैं। देवनागरी लिपि का पूर्ण परिचय रखने वाला एक छोटा सा बच्चा भी यह बात जानता है कि 'उ' अक्षर जब किसी व्यञ्जन के बाद आता है तो यह उसके नीचे उ की मात्रा (ु) के रूप में स्थान ले लेता है। 'कुल' खुर' 'गुरु' इत्यादि शब्दों में यह चीज़ पूर्णतया स्पष्ट दिखाई देती है। उपर्युक्त रचना में 'उ' अक्षर क ख आदि व्यञ्जनों का आधार सा दिखाई देता है। एक कल्पना करने वाला काल्पनिक यहभी कल्पना कर सकता है कि जिस प्रकार ज़मीन के ऊपर निकले हुए पौदे पहिले ज़मीनके गर्भ में रहते हैं बाद में ही उसके ऊपर निकलते हैं, इसी प्रकार 'उ' के ऊपर निकले हुए क ख ग आदि व्यञ्जन भी एक प्रकार से 'उ' के गर्भ से निकले हैं। उपर्युक्त कल्पना से यह सिद्ध हुआ कि 'उ' यह वर्ण अन्य अनेक अक्षरों (हिरण्य) को अपने गर्भ में धारण करता है। इस उपर्युक्त गुण के कारण अगर 'उ' इस अक्षर को 'हिरण्य गर्भ' कह दिया जाय तो इसमें कोई भी दोष नहीं दिखाई देता।

उ अक्षर का यह हिरण्यगर्भत्व रूप गुण हमें परमात्मा के अन्दर भी दिखाई देता है। परमात्मा भी हिरण्य अर्थात् संसार के सब पदार्थों को अपने गर्भ में धारण करता है। वही संसार के चराचर पदार्थों का पूर्ण आधार है। इसलिये पूर्व लेख में दिये हुये उदाहरणों के अनुसार परमात्मा और 'उ' इन दोनों में समान गुण होने के कारण परमात्मा को भी 'उ' कहा जा सकता है। इस विवेचन से यह बात पूर्ण स्पष्ट हो गई है कि परमात्मा को 'उ' क्यों कहते हैं और 'उ' अक्षर से परमात्मा का हिरण्यगर्भत्व गुण किस प्रकार प्रकट होता है।

वायुः—'उ' अक्षर में दूसरा गुण यह है कि यह 'वायु' है। संस्कृतमें वायु यह शब्द 'वा गति गन्धनयोः' इस धातु से बना हुआ है। इसलिये वायु जाता है क्यों कि यह गति करती है और बहती है। "परिणामतः 'उ' अक्षर वायु है" इस वाक्य का यह अर्थ हुआ कि यहवर्ण अन्य वर्णोंमें गतिकर सकता है अर्थात् उनमें बह सकता है स्वर होनेसे 'उ' अक्षरका क ख गआदि व्यञ्जनों केसाथ बड़ीआसानी से उच्चारण किया जा सकता है कहने का तात्पर्य यह कि 'उ' वर्ण इन व्यञ्जनोंमें अच्छी तरह बह सकता है—उन के साथ अच्छी तरह मिल सकता है। इसके विपरीत एक व्यञ्जन दूसरे व्यञ्जन के साथ उसी निकटतासे उसके अन्दर प्रविष्ट हो नहीं बैठ सकता (नहीं बह सकता) जिस प्रकार एक स्वर। दो संयुक्त व्यञ्जनों का उच्चारण करते हुए वाणी में एक प्रकार का आघात (jerk) सा मालूम होता है। परन्तु जब व्यञ्जन के बाद किसी 'उ' आदि स्वर का संयोग होता है तब यह वाणी का jerk नहीं सुनाई देता। कहने का अभिप्राय यह है कि 'उ' यह वर्ण अन्य स्वरों की तरह व्यञ्जनों में बहुत सरलता से वह सकता है—गति कर सकता है।

'उ' वर्ण का इतर व्यञ्जनों में बहने का यह गुण परमात्मा में भी दिखाई देता है। परमात्मा भी संसार के सभी पदार्थों में व्यापक होने से उनमें गतिकरता है—उनमें बहा सा रहता है। इस प्रकार परमात्मा और 'उ' वर्ण में समान गुण होने के कारण उस को भी तद्गुण सम्पन्न होने से पूर्व लेख में दर्शित उदाहरणों के अनुसार 'उ' यह नाम दे दिया गया गया है।

तैजसः—तैजस शब्द का अर्थ है तेजस्वी अर्थात् उग्र। परिणामतः 'उ अक्षर तैजस है' इस वाक्य का अर्थ यह होगा कि 'वह वर्ण उग्र है'। इस वाक्य को स्पष्ट करने के लिये हमें 'उ' अक्षर के उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिये। 'उ' के आस पास के स्वरों के उच्चारण में एक अपनी अपनी विशेषता पाई जाती है। यदि हम तन्मयता से अ अक्षर के उच्चारण को सुनें तो हमें मालूम होगा कि उसका उच्चारण अपने अगले इ, उ आदि स्वरों से अधिक सौम्य है। इसके उच्चारण में इतनी उग्रता या भयानकता नहीं है। 'इ' के उच्चारण में हमें एक सूक्ष्मता का गुण दिखाई देता है। इस वर्ण को बोलते हुए उसमें एक प्रकार की बारीकी अर्थात् पतली सी ध्वनि सुनाई देती है। परन्तु इन दोनों वर्णों से अगले वर्ण 'उ' का जब हम उच्चारण करते हैं तो उसमें उग्रता और भयंकरता सी मालूम होता है। अगर आप एक बच्चे के सामने एक दम ज़ोर से 'अ' इस वर्ण का उच्चारण करें तो मैं समझता हूं कि बच्चा इससे डरेगा नहीं। इसी प्रकार ज़ोर से इ का उच्चारण करने पर भी उसको विशेष भय नहीं मालूम होगा। इसके विपरीत यदि हम एक दम उसके सामने 'उ' इस वर्ण को ज़ोर से बोलें तो प्रतीत होगा कि वह एक दम उच्चारण को अधिक भयंकर उग्र अर्थात् तैजस जाय तो यह युक्ति युक्त मालूम होता है।

परमात्मा भी 'उ' अक्षर की तरह उग्र तैजस है। परमात्मा पूर्ण न्यायकारी होने से भी किसी के अपराध क्षमा नहीं करता। इस वह सच्चे अर्थों में उग्र है। उसके तेज से क्या क्या रंक, क्या विद्वान् या मूर्ख सभी आ होते हैं। इसलिये परमात्मा भी तैजस है।

परमात्मा और उ अक्षर के अन्दर (तैजस भाव) रूपी यह गुण समान होने से आत्मा को भी 'उ' यह नाम लोक-व्यवहार अनुसार दे दिया गया है। इस बात को हम लेख में भली भांति स्पष्ट कर चुके हैं कि अगर व्यक्ति के गुण दूसरे में विद्यमान हो तो उस पहिले का नाम दे दिया जाता है।

आज के लेख से हम इस परिणाम पर कि 'उ' अक्षर के हिरण्यगर्भत्व, वायुत्व और भाव आदि गुण परमात्मा में भी पाये जाते लिये परमात्मा को 'उ' यह नाम देना यथ प्रतीत होता है। इस विवरण से यह बा स्पष्ट हो गई है कि परमात्मा के नाम के 'उ' अक्षर से उपर्युक्त तीन गुण किस प्रकार होते हैं।

अगले लेख में हम 'ओ३म्' के तीसरे अक्ष पर विचार करके इस विषय से सम्बद्ध इस त्रयी को समाप्त करेंगे।

(क्र

साप्ताहिक आर्य

बच्चों के रोजाना जरूरी
हकीम तुलसीप्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की
अमृतोपम
बालजीवन घुट्टी
बच्चे कभी कदापि बीमार नहीं होंगे
दाँत सुगमता से निकल आवेंगे तथा
बच्चों की हर एक बीमारी दूर होकर
कमज़ोर बच्चे ताक़तवर बन जावेंगे
हर जगह बिकती है
लिखिए तफ़सील मुफ़्त
मूल्य शीशी ७, ४ शीशी ३) दर्जन २॥)
डा. व्य. अ. सौदागरों को उचित कमीशन
नये सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।
१० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पते भेजने पर
स्वराज्यसाधन पुस्तक मुफ़्त भेजेंगे।
पता—बालजीवन कार्यालय अलीगढ़ (यू.पी.)

हर एक आर्य तथा पंजाब के
आर्य समाज को
आर्य का ग्राहक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection Digitized by eGangotri S3 Foundation USA

ऋग्विधान और नियोग

ा० श्री स्वा० वेदानन्द तीर्थ जी महाराज, लाहौर)

ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में
ाक सिद्धान्तों की जैसी विशद व्याख्या की है,
ी इस से पूर्व किसी आचार्य्य ने नहीं की प्रतीत
ी। ऋषि के ये सिद्धान्त आरम्भ में लोगों को
ोखे प्रतीत हुए। ऋषि ने अपने इन वैदिक
द्धान्तों के प्रतिपादन के साथ अन्य मतों की
ालोचना भी की ताकि उन के पाठक तुलनात्मक
ष्टि से उन के सिद्धान्तों की परीक्षा कर सकें।

ऋषि के समय जो लोग पितृपरम्परा से आये
ाणिक मतों का रूप धारण किये वैदिक धर्म्म
हीन मान अन्य मतों में प्रवेश करने को तय्यार
अन्य मतों का ऋषिकृत समालोचना को पढ़
कर वे अन्य मतों में जाने से रुक गये। इस से
य्य मतवादियों का ऋषि और ऋषिप्रतिपादित
द्धान्तों से विरोध करना अस्वाभाविक न था।
ाणिक धर्म्म के कर्णधारों ने भी ऋषि के
द्धान्तों को कल्पित बता कर विरोध किया। ये
ों प्रकार के विरोध अज्ञान मूलक हैं। ऋषि को
सी से वैर विरोध न था। ऋषि लिखते हैं—
जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं उन
ो मैं प्रसन्न नहीं करता। इन्हीं मत वालों ने
ापने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा
परस्पर शत्रु बना दिया है। इस बात को
ाट सर्व सत्य का प्रचार कर सब को
क्यमत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीति-
ुक्त कराके सब से सब को सुखलाभ पहुंचाने के
लिये मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।" (सत्या-
र्थप्रकाश के अन्त में)

इस प्रकार के निर्वैर, द्वेषशून्य, सर्वहितकारी
ात्मा का विरोध करना वास्तव में 'सर्वहित'
विरोध करना है।

आज दोनों प्रकार के विरोधी ऋषि के सिद्धांतों
आगे धीरे धीरे सिर झुका रहे हैं। मुसलमानादि
तवादियों का ऋषिकृत समालोचना के प्रकाश से
पने मूलाधार ग्रन्थों के अर्थ परिवर्त्तन तथा
द्धान्तों की नई व्याख्या इस का प्रबल प्रमाण
। हां, ऋषि का एक ऐसा सिद्धान्त है जिस पर
प्रकार के विरोधी अपना विरोध अभी नहीं
ड़ सके, वह है नियोग। पौराणिकों का विशेष
ाग्रह युक्त कथन है कि स्वामी ने इस अवैदिक
द्धान्त को वैदिकों में क्यों स्थान दिया और इस
लिये सत्यार्थ प्रकाश में ऋग्वेद १०।१८।८
स्थ 'उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं.....' जो प्रमाण
ख्या है, वह ठीक नहीं है, उसके अर्थ में स्वामी
ी ने खींचातानी की है। ऐसे महानुभावों के लिये
र उन्हींके माननीय ग्रन्थ 'ऋग्विधान'* से एक
प्रमाण उपस्थित करते हैं। 'ऋग्विधान' ऋग्वेद के मन्त्रों का विनियोग [किस विषय में किस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये] बताता है। वहां इस मन्त्र के संबन्ध में लिखा है कि—

भ्रातुर्भार्यामपुत्रस्य सन्तानार्थं मृते पतौ।
देवरोऽन्वारुरुक्षन्तीमुदीर्ष्वेति निवर्त्तयेत्॥

ऋग्विधान ३।८ ४–५

अर्थात् पति के मरने पर पति के साथ ही परलोक गमन की इच्छा करती हुई, पुत्ररहित भाई की पत्नी को देवर सन्तान के लिये 'उदीर्ष्व.....' इस मन्त्र से हटाए।

पति के भाई को, आजकल की संस्कृत में देवर कहते हैं।

'ऋग्विधान' का यह श्लोक बताता है कि पुत्र-रहित भाई के मरने पर उसकी पत्नी को पति के साथ चितारोहण करने के लिये रोके, उसमें प्रमाण 'उदीर्ष्व.....' यह मन्त्र है। रोकने का प्रयोजन है सन्तान। अर्थात् मृतपतिक स्त्री में देवर सन्तान उत्पन्न करे। यह नियोग का एक प्रकार है।

इस श्लोक से सिद्ध होता है कि (१) ऋग्विधान के समय नियोग प्रचलित था अर्थात् भाई अपने पुत्रहीन भाई की पत्नी से नियोग द्वारा सन्तान उत्पन्न करता था। (२) उदीर्ष्व.....' मन्त्र का विनियोग नियोग में किया जाता था।

अतः ऋषि दयानन्द की इस मन्त्र की व्याख्या परम्परा प्राप्त है, कपोलकल्पित नहीं।

———

आर्य समाज संसार

पंजाब आर्य युवक परिषद्

तिथि २८–१२–४२ दोपहर के दो बजे आर्य-वीरदल के सदस्य तथा आर्य-युवक-समाजों के कार्यकर्त्ता गुरुदत्त भवन में एकत्र हुए, जिस में श्री प्रो० भगवानदास जी ने आर्य संस्कृति पर भाषण दिया, तथा देवराज जी बी. ए. (आनर्ज़) ने परिषद् के प्रोग्राम पर प्रकाश डाला जिस में दैनिक सत्संग, स्वाध्याय तथा हिन्दी प्रचार मुख्यतया सम्मिलित हैं।

तथा १ जनवरी १९४३ को परिषद् की कार्य कारिणी के सदस्यों ने जिन में ला० नारायणदास जी कपूर, देवराज जी, मोहनलाल जी, ओंकारनाथ जी तथा जितेन्द्रकुमार जी सम्मिलित हैं, आर्य-वीरदल के शिविर पर आर्य-युवक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को एक प्रीतिभोज दिया जिस में पं० ज्ञानचन्द्र जी प्रो० भगवानदास तथा प्रो० ओंप्रकाश जी ने विशेष भाग लिया सब सज्जनों ने अपने २ जीवन की कोई न कोई विशेष घटना सुना कर भोज को और भी रोचक बना दिया।

वाल, भेरा, मलकवाल, मंडी बहाउद्दीन, डिंगा, जेहलम तथा रावलपिंडी की युवक-समाजों का दौरा किया, जिस में आर्य-युवकों के सामने परि-षद् का इस वर्ष का कार्य-क्रम रखा गया, और उस पर पूर्ण रूप से आचरण करने की प्रेरणा की गई।

———

आर्य समाज खिजराबाद का उत्सव

आर्यसमाज खिज़राबाद का वार्षिकोत्सव २ से ४. १. ४३ तक बड़ी धूम धाम से मनाया गया। सभा की ओर से पं० मुनीश्वर देव जी, पं० पूर्ण चन्द जी, पं० रामदत्त जी, पं० वीरेन्द्रकुमार जी तथा स्वामी वेधड़क आदि पधारे थे। वर्षा के होते हुए भी जनता ने बहुसंख्या में सम्मिलित होकर धर्मपिपासा को मिटाया।

साधुराम मन्त्री

आर्य प्रचारक इटारसी का ध्यान रखें

मध्य प्रदेश में इटारसी जी० आई० पी० रेलवे का एक बड़ा जंकशन है यहां आर्यसमाज के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। उस आर्य समाज के मन्त्री जी ने हमें प्रेरणा की है कि हम आर्य उप-देशकों और विद्वानों से प्रार्थना करें कि वे जब इटारसी स्टेशन से गुज़रा करें तो इटारसी उतर कर प्रचार कार्य में उन्हें सहायता प्रदान किया करें। भोजन और ठहरने का उक्त समाज उचित प्रबन्ध करेगी। तदनुसार पत्रों में यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है। आशा है आर्य विद्वान और उपदेशक महानुभाव इटारसी समाज की प्रार्थना पर उचित ध्यान देंगे।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, देहली

आर्य समाज खिजराबाद का वार्षिक चुनाव

वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ है—

(१) प्रधान म० जयकृष्ण दास जी ( ) उप-प्रधान म० परशुराम जी (३) मंत्री म० बनारसी दास (४) उपमन्त्री म० सुरजाराम (५) कोषाध्यक्ष म० मनोहरलाल (६) पुस्तकाध्यक्ष म० साधूराम बज़ाज़। अंतरंग सभा के सदस्य—(१) म० दीना नाथ (२) डा० सदाराम जी (३) म०अड्डाराम (४) म० फकीरचन्द्र (५) म० केशोराम जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के समाचार

—पंजाब युनिवर्सिटी के अपने गजट के द्वारा इस बात की सूचना मिली है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की १०वीं श्रेणी क से उत्तीर्ण विद्या-धिकारी प्रमाणपत्र वाले विद्यार्थी पंजाब युनिव-र्सिटी की शास्त्री परीक्षा दे सकते हैं।

— श्री स्वामी अभयदेव जी के गुरुकुल के आ-चार्य पद से त्यागपत्र देने पर विद्या सभा ने श्रीयुत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

—श्रीयुत पं०बुद्धदेव जी ने गुरुकुल का आचार्य नियत होने के बाद १७-१-४३ को अंतरंग सभा में सभा के प्रधान पद से त्याग-पत्र दे दिया है। सभा ने उनके स्थान पर श्री रा० सा० अमृतराय जी सभा उप प्रधान को सभा का प्रधान निश्चित किया है। श्री रा० सा० अमृतराय जी के स्थान पर श्री से० रामनारायण बिर्मानी लायलपुर निवासी को सभा का उपप्रधान निश्चित किया है है। श्री युत पं० बुद्ध देव जी श्री सेठ रामनारायण जी के रिक्त स्थान पर अन्तरंग सभा और कार्य-कारिणी के सदस्य नियत किये गये हैं।

—जिन समाजों ने अभी तक १९९८ का दशांश नहीं भेजा उन्हें चाहिये कि वह शीघ्र ही दशांश भेजें। सभा की ओर से ऐसी समाजों को आवश्यक सूचना दी जा रही है। सभा के नियमों के अनुसार दशांश न भेजने पर समाज के प्रति-निधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित न हो सकेंगे। इसलिये समाजों को १९९८ का दशांश शीघ्र महीने तक भेज देना चाहिये।

—अंतरंग सभा ने आर्य समाजों के झगड़ों को निपटाने तथा शांति स्थापित करने के लिये एक न्यायोपसभा बनाई है। इसके सभासद् निम्नलि-खित सज्जन हैं। श्री रा० सा० अमृतराय जी, श्री पं० ज्ञानचंद जी, श्री भीमसेन जी।

—आर्य समाज के उपनियम सं० १९ की व्या-ख्या आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने निम्न प्रस्ताव स्वीकार किया है :—

निश्चय हुआ है कि यदि आर्य समाज के उप-नियम सं० १९ के अनुसार आर्य समाजों के अभीष्ट सदस्यों की संख्या किसी विषय के प्रस्तुत करने के लिये अंतरंगसभाका अधिवेशन बुलानेके लिये मन्त्री आर्यसमाज को लिखे और अन्तरंग सभा की बैठक एक सप्ताह तक न बुलाई जावे तो यह Requis-itionists अपनी शिकायत प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा को लिखें, जिस पर प्रांतीय सभा की अंतरंग सभा अथवा उस द्वारा नियत न्याय-उपसभा आर्य समाज के प्रधान को लिखेगी कि वे समाज की अन्तरंग सभा का अधिवेशन एक सप्ताह के भीतर बुलावें। यदि फिर भी अन्तरंग सभा न बुलाई जावे तो आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा अथवा उसके द्वारा नियत न्यायउपसभा एक सप्ताह के भीतर आर्यसमाज की अन्तरंग सभा का अधि-वेशन बुलाने का स्वयं प्रबन्ध करेगी।

—प्रो० भन्साली ने ६१ दिन के बाद अपना उप वास तोड़ दिया है। और सी० पी० गवर्नमेंट ने चिमूरके (Chimur news) समाचार के प्रकाशन सम्बन्धी प्रतिबन्ध उठा लिये हैं।

—२० जनवरी ४३ को जर्मन हवाई जहाज़ों ने दिन में दोपहर को इंगलैंड पर बम बरसाये। उससे २४ आदमी मारे गये। जर्मनी के ११ हवाई

देश विदेश के समाचार

—जर्मन हाई कमाण्ड की रिपोर्टों के अनुसार रूसी सेनाओं ने वोरोनेज़ और लेनिनग्राड के क्षेत्रों पर भी जर्मन सेनाओं पर प्रत्याक्रमण शुरू कर दिये हैं।

—स्टाकहोम की रिपोर्ट के अनुसार जर्मन कर्मचारियों का एक कमिशन रीच में मनुष्य बल को प्राप्त करने के लिये दौरा कर रहा है। २० लाख आदमियों को एकत्रित करना इसका उद्देश्य है।

—रूसी सेनाओं की प्रगति उत्तरी काकेशिया में उसी प्रकार जारी है। रूसी सेनाओं के आर्म-वीर और वोरोशिलाव इन दोनों शहरों के निकट आ जाने से जर्मन सेनाओं को खतरा पैदा हो गया है।

—जापान के प्रधान मन्त्री जनरल टोजो ने विचार विनिमय तथा प्रचलित परिस्थिति को अपने राजनीतिज्ञों के सामने स्पष्ट करने के लिये एक गोल मेज़ कांफ्रेंस बुलाई है।

—टोकियो के एक समाचार के अनुसार जापान में अमरीकन और अंग्रेजी नाचों तथा गीतों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। इनके प्रयोग करने वाले व्यक्ति को कैद की सज़ा दी जायगी।

—१५ जनवरी के समाचार के अनुसार रूसी सेनाएं रोस्टव से केवल ६० मील पर रह गई हैं। ज़ेवेन्टनोई को जो कि रोस्टव प्रदेश का एक गांव है रशियन सेनाओं ने फिर से अपने हाथ में ले लिया है।

—मिलिटरी कमेन्टेटर किम्मारेक 'सनटेलिग्राफ' में लिखते हुए कहते हैं कि १९४३ की वसन्त ऋतु में टर्की को बड़े भयङ्कर दिनों का सामना करना पड़ेगा। उनके कथनानुसार तब मित्रराष्ट्र सब वर्तमान मोर्चों से मुक्त होकर बालकन प्रदेश में नया मोर्चा खड़ा करेंगे। परिणामतः धुरी राष्ट्र वहां पर कोई प्रतिकार की योजना करेंगे।

—चीनी सेनाओं ने क्वांगशान तथा लोशान को फिर से हस्तगत कर लिया है। वे सिनयांग की तरफ पश्चिम में बढ़ रही हैं।

—रशियन मोर्चों पर लड़ते २ थक जाने के बाद जर्मन सैनिकों को विश्रान्ति के लिये फ्रांस में भेजा जाता था। परन्तु वहां भी दिन रात फ्रांसीसी विद्रोहियों की धमकियों के कारण उनको आराम नहीं मिल रहा।

—ब्रिटिश सेनाएं मायु नदी पर स्थित रेथ-डांग के बहुत निकट पहुंच गई हैं। यहीं जापानी सेनाएं उपर्युक्त सेनाओं को रोकने का जी तोड़

पीर पगारो को मध्य प्रांत से सिंध वापिस लाकर फौजी अधिकारियों को हा दिया गया है।

—लड़ाई के प्रारम्भ से अब तक भा 'इण्डियन एयर फोर्स' और 'रायल एयर फ लिये ५ करोड़ ३७ लाख से अधिक रु० दे

—मद्रास गवर्नमेंट ने ३ जनवरी क समाचार पत्रों से सहूलियतें छीन ली थीं उ कुछ को वापिस दे दी है।

—अहमदाबाद मिलमालिक संघ के सेठ सेकरलाल बल्लभ भाई के कथनानुसार बाद शहर में गरीब लोगों के लिये शीघ्र ही कपड़े की दुकानें खुलेंगी जिसमें गरीबों को भाव से ५० प्रतिशत कम दर पर कपड़ा मि

—मि० के० ऐच० रलियाराम ने यह प दिया है कि सर सिकन्दर हयात खान के स के रूप में गवर्नमेंट और जनता की तरफ से गार्डन लाहौर में सिकन्दर पहाड़ी पर एक भवन (Music Hall) बनाया जावे।

—यह अफवाह कि भारतीय सरकार लिया के लिये ताम्र मुद्राएं तैयार कर रही है, कुल गलत है।

—पंजाब विद्यार्थी संघ तथा पंजाब मुस विद्यार्थी संघ ने सब विद्यार्थियों और शिक्षण से सम्बद्ध व्यक्तियों से अपील की है कि वे प के सब स्कूलों और कालिजों को नियन्त्रित पर कागज़ देने के लिये 'स्कूल कालिज स्टे डिपोज' खोलने की मांग करें।

—जनवरी मासके पिछले भागमें लाहौर ह के चीफ़ जस्टिस सर डगलसयंग अपने आफि चार्ज सर ट्रैवर हैरिज़ को देकर विदा हो गये

श्री चमूपति साहित्यविभाग के प्रका

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २॥) Immortal Sayings ofDayana
जीवन ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला
स्वाध्याय संग्रह ॥) वैदिक धर्म की जय
वैदिक स्वर्ग ॥) यास्क युग
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास
देव यज्ञ ।) Glimpses ofDayanan
पीयूषबिन्दु ।-) त्रिदेव निर्णय
निरुक्त का मूल वेद में

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे पर मिल सकेंगी।

Hindu America
Light of Truth

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य ।वि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विद्यालय के ब्रह्मचारियों का तोल पौष १९९९

ब्रह्मचारी	नाम संरक्षक	भार स्टोन	भार पौण्ड
मा श्रेणी			
न्द्र देव	गेन्दनलाल जी	३	५
वीर	गुरूवचन सिंह जी	३	५
न्द्र	रूपचन्द्र जी	२	८
चन्द्र	शालिग्राम जी	३	५
पाल	सरनाम सिंह जी	३	१
न्द्र	कुञ्जबिहारी लाल जी	२	१२
यस्वरूप	गुद्दड़राम जी	२	१२
मोहन	प्रभुसिंह जी	३	१
माण	लक्ष्मण सिंह जी	३	२
शाचन्द्र	गदाधर प्रसाद जी	२	६
देव	सद्गुरु प्रसाद जी	३	२
बन्धु	पृथ्वीचन्द्र जी	३	२
मेन्द्र कुमार	श्रीमती प्रेमदेवी जी	३	—
सिंह	निर्भयराम जी	२	८
याकेतु	कन्हैयालाल जी	२	९
मदेव	जैसाराम जी	३	—
गेश्वर	अमरदत्त जी	३	१०
वीर	देवी सहाय जी	३	२
य किशोर	पूरणमल जी	३	२
तेन्द्र	धर्म मित्र जी	४	४
तेन्द्र सिंह	सोहन सिंह जी	३	४
रत्नकुमार	भद्रदेव जी	३	६
ीर चन्द्र	श्री व्रजलाल जी	३	४
विकुमार	श्री टी० आर० नायडू	३	१
द्वितीय श्रेणी			
र्मवीर	चुन्नी लाल जी	४	११
रायण	श्री लक्ष्मी नारायण जी	४	१३
त्यनारायण	श्रीमती कमला देवी जी	४	२
ताप नारायण	लक्ष्मी नारायण जी	३	१०
राचन्द	पन्नालाल जी	३	११
मदत्त	रामगोपाल जी	४	—
मेशचन्द्र	शुगनचन्द्र जी	४	६
म प्रकाश	जगत्प्रकाश जी	३	५
भा शंकर	महावीर प्रसाद जी	२	१०
सुदर्शन	गुरु वचन सिंह जी	४	—
जितेन्द्र	बैजनाथ लल्लूमल जी	४	२
जा भूषण	बालक राम जी	३	८
न्द्रदेव	श्री अभयदेव जी	३	१०
विक्रमसिंह	राजेन्द्र सिंह जी	४	१
अविनाशचन्द्र	वैकुण्ठनाथ जी	३	६
देवेन्द्र	शिव सेवक जी	३	११
पृथ्वीराज	छगुण सिंह जी	३	६
णवीर सिंह	शिवचन्द्र जी	३	४
सन्तोषकुमार	व्रज मोहन जी	३	४
अजयकुमार	श्रीमती प्रेमदेव जी	२	११
हरिश्चन्द्र	कृष्ण मुरारी जी	३	८
अशोक कुमार	राजबल जी	४	६
वासुदेव	टुअरशाह जी	३	९
धर्मदेव	दुःखीलाल जी	३	१३
नरेन्द्र	बारुसिंह जी	३	९

नाम ब्रह्मचारी	नाम संरक्षक	भार स्टोन	भार पौण्ड
सत्यपाल	लक्ष्मदास जी	३	१०
कृष्णचन्द्र	मूलचन्द्र जी	३	—
धर्मवीर	देवी सहाय जी	३	—
जगदीश	देवदत्त जी	३	४
श्याम सुन्दर	हुक्मचन्द्र जी	३	१०
सुरेशचन्द्र	कन्हैया लाल जी	४	१
राजेन्द्र कुमार	चुन्नीलाल जी	४	३
राम कृष्ण	तिलक धारी जी	३	८
सुमत्प्रकाश	रोढ़ामल जी	३	३
भूपाल	दीपचन्द जी	३	११
यशपाल	चुन्नीलाल जी	छुट्टी	
देशराज	बनवीर सिंह जी	३	१३
नरेन्द्र कुमार	रामगोपाल जी	३	१०
भूदेव	जगन्नाथ प्रसाद	४	१०
विश्व प्रकाश	म० विश्वनाथ जी	४	५
विनय कुमार	रामनाथ जी	२	६
अशोक कुमार	लालचन्द जी	३	१३
निर्मल कुमार	केवलराम जी	३	८
सुखदेव	नेवन्दराम जी	३	९
तृतीय श्रेणी—			
सन्तकुमार	झम्मन लाल जी	४	८
ओम् प्रकाश	जीयाराम जी	३	१३
हरिकृष्ण	बाबू राम जी	५	—
केशव कुमार	यज्ञ दत्त जी	४	६
चन्द्र भूषण	कालिका प्रसाद जी	४	४
मनोहर	पुन्नामल जी	३	१०
महेन्द्र कुमार	बूलचन्द जी	३	३
भुवन मोहन	श्याम कृष्ण जी	३	५
केशव कुमार	मंगत राम जी	४	६
देश बन्धु	बुद्धसिंह जी	४	६
उदयभानु	भूदेवसिंह जी	छु०	
सुभाषचन्द्र	जानकी प्रसाद जी	३	—
महेन्द्रकुमार	भूकन शरण जी	३	१३
चन्द्रपाल	उमराव सिंह जी	३	६
दयानन्द	बाबू रावकृष्ण	४	१२
जगदीश	हरनाम सिंह जी	५	६
लोकनाथ	फूल चन्द वर्मा	४	—
राजेन्द्र	विट्ठलदास जी पंचोटिया	३	९
जगदीशचन्द्र	भगवान दास जी	३	१
हरिदेव	वैद्यनाथ, हीरालाल जी	४	६
राजपाल	दुर्गा प्रसाद जी	४	६
सत्य प्रकाश	ईश्वरदास जी	४	१
राम गोपाल	लक्ष्मण सिंह जी	३	१२
चन्द्रसेन	गेंदनलाल जी	४	१२
देवव्रत	श्री मिट्ठनलाल जी	४	५
महिपाल	ज्योति प्रसाद जी	५	९
मन मोहन	चन्द्रवती जी सूद	४	—
देशराज	श्री देवलीसिंह जी	४	९
धर्मवीर	श्री हरिश्चन्द्र जी	४	६
गोपाल	श्री केशरसिंह जी	४	२
विश्व मित्र	श्री नन्दलाल जी	४	३

नाम ब्रह्मचारी	नाम संरक्षक	भार स्टोन	भार पौण्ड
श्री कृष्ण	श्री मूलचन्द जी गुप्ता	३	६
व्रजलाल	श्री फूलचन्द जी गुप्ता	४	१२
आर्य वीर	श्री गंगा विष्णु जी	३	७
ओम् प्रकाश	स० दुलीचन्द जी I.M.D.	३	१०
जगदीश नारायण	डा० राम नारायण जी	४	—
रामचन्द्र	Mr. G. M. Chetty	४	१०
कृष्ण कुमार	म० जीवनदास जी	३	१२
मदन मोहन	श्री देवीशरण जी	३	४
योगेन्द्रनाथ	म० हर प्रसाद सिंह जी	३	७
बाल कृष्ण	श्री वेनीलाल जी	३	८
श्याम विलास	म० श्याम सुन्दरलाल जी	३	१३
वेद प्रकाश	श्री प्रकाश चन्द्र जी	४	२
चन्द्र कान्त	श्री पी० वी० आचार्य	४	२
अमर सिंह	चौ० डिगराम जी	३	६
गोपाल शंकर	श्री माधोराम नन्दकिशोर	३	६
राजेन्द्रकुमार	श्री कबूलसिंह जी	४	८
सत्यपाल	श्रीमती पुष्पावती जी	४	४
देवप्रकाश	अयोध्या प्रसाद जी	३	७
महेन्द्रकुमार	श्री चुन्नीलाल जी	५	९
सोमप्रकाश	श्री अमरसिंह जी	४	५
रामनाथ	श्री रघुवरदत्त जी भर्तरि	४	
रविप्रकाश	म० रामप्रकाश जी शर्मा	४	९
कैलाश चन्द्र	श्री ला० बनवारी लाल जी	४	५
बलवीर	श्री भगवानदास जी सर्राफ	४	१२
वेदप्रकाश	श्री कुलदीप चन्द्र जी	४	२
चतुर्थ श्रेणी—			
ज्ञानचन्द्र	श्री सोहनलाल जी	५	—
सोमदत्त	श्री सीताराम जी	४	७
रघुनाथ	म० रामललित जी मिश्र	५	२
कर्मेन्द्र	P. Kotayya naidu	४	१
सत्यप्रिय	म० लक्ष्मण दास जी आर्य	५	
रणवीर	श्री सौदागर महतो	४	५
राजेन्द्र विहारी)	श्री सम्मन महतो	५	३
मनमोहन	म० गया प्रसाद जी	४	२
विजय कुमार	म० गोविन्द राम जी	४	३
राजेन्द्रनाथ	म० हरप्रसाद सिंह जी	६	४
सुरेन्द्रनाथ	,, ,,	३	१२
राजेन्द्र	म० हुक्म चन्द्र जी	४	१३
ओम प्रकाश	म० पोहकरमल ज	४	[illegible]
परमानन्द	डा० शालिग्राम जी	५	[illegible]
सत्यदेव	श्री रामचन्द्र जी	३	१[illegible]
राजकिशोर	ला० पूरनमल जी	४	
वीरेन्द्र	श्री शेरसिंह जी	५	
जयकिशोर	श्री माधोराम जी	४	
रमेश चन्द्र	श्री बाबूराम जी गुप्ता	३	
गुरुदेव	श्री मुन्नी लाल जी	३	१[illegible]
शिवदत्त	म० नित्यानन्द जी	४	
मधुसूदन	श्री रामभरोसेलाल जी	४	१[illegible]
दमनेश	चौ० कदमसिंह जी	५	
इन्द्रजीत	श्री कुन्दनलाल जी	३	
ईश्वरचन्द्र	श्री चुन्नीलाल दत्त जी	४	

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मचारी	नाम संरक्षक	भार स्टोन	पौण्ड
लक्ष्मण	श्री राधेलाल जी	४	१
दिलीप चन्द्र	म० शम्भूलालजी	३	८
दीनबन्धु	जग्गूराम जी suntur	४	६
देशबन्धु	श्री श्यामसुन्दरलालजी गुप्ता	४	६
सत्यव्रत	श्री गोधूसिंह जी	५	
सूर्यकुमार	चौ० भरतसिंह जी	५	१
यशवन्त	श्री लक्ष्मीनारायण जी	३	७
रूपनारायण	श्री तीर्थराम राम जी	४	३
धर्मदत्त	म० कनकसिंह जी	५	१२
योगेन्द्रनाथ	श्री मित्रलाल जी	४	८
वेदानन्द	म० शिवनारायण जी मिश्र	५	१२
रामनाथ	पं० रघुवंश लाल जी	५	१०
देवदत्त	डा० मूलचन्द जी	४	
ज्ञानचन्द्र(छो०)	म० मंगतराम जी त्यागी	४	७
वेद प्रकाश	म० लक्ष्मण लाल जी	४	४
श्री कृष्ण	श्री गुलाब चन्द जी	५	४
विश्वबन्धु	श्री छेदालाल जी	४	१
श्याम बिहारी	श्री श्यामसुन्दर लाल जी	३	१२
कल्याण	श्री कबूलसिंह जी	५	४
रामचन्द्र	म० दाताराम जी माथुर	३	७
प्रेमकुमार	श्री लालचन्द्र जी गर्ग	५	
सहदेव	म० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	४	१२
चन्द्रकिशोर	म० नवलकिशोर जी	४	७

पंचम श्रेणी—

रवीन्द्रनाथ	Mr.N.K. Gamapaiah	४	४
महेन्द्र प्रताप	श्री बुद्धसिंह जी आर्य	४	१२
राजकुमार	म० गंगाविशन जी	छु०	
वेदप्रकाश(झांसी)	म० भोलानाथ जी	४	
सत्येन्द्र	म० जगनलाल जी गुप्त	३	१३
वेदप्रकाश	म० ईश्वरदास जी	५	३
इन्द्रसेन	म० वीरसेनजी दुसाज	छु०	
मोहन चन्द	म० मोतीलाल जी	४	७
रामकृष्ण	म० ब्रह्मदत्त जी	छु०	
लोकनाथ	श्री भगीरथ जी शास्त्री	४	२
जगन्नाथ	म० कीर्तिसिंह जी	४	७
रामप्रकाश	श्रीमती कटोरी देवी जी	५	१३
जगदीश	म० वीरभानु जी	४	
वेदव्रत	म० रामकृष्ण जो शुक्ल	४	३
राजकिशोर	श्री माधव राम जी	५	३
कर्मवीर	Syt. R.L.Chowdhry	६	१
महेन्द्र कुमार	श्री मंगलसेन जी	६	१
युद्धवीर	श्री सूरजभान जी	५	८
देवव्रत	श्री सतीप्रसाद जी ओझा	४	
कांति कृष्ण	श्री द्वारिकाप्रसाद जी	४	६
सर्वमित्र	पं० रामेश्वर जी	४	६
गिरीश चन्द्र	शान्ति स्वरूप जी	५	८
विश्वदेव	डा० रूपसिंह जी	५	५
केशरी कृष्ण	श्री गोपाल शास्त्री	४	५
सुखदेव	श्री धौल वीर राम जी	५	२
लाल कृष्ण	सेठ हजारीमल जी	४	५
जयदेव	म० हीरालाल जी	४	६
वीरेन्द्र	गंगाराम जी	४	७
रामकुमार	म० मंगरूलाल जी	४	८
ब्रह्म कुमार	श्री बा० दुःखीलाल जी	४	५
सूर्य प्रकाश	म० लक्ष्मीदयालजी मुख्तार	५	१

गुरुकुल समाचार

श्री विरला जी का आगमन

गत सप्ताह दानवीर श्री सेठ जुगल किशोर बिरला अपनी कारद्वारा दिल्ली से गुरुकुल पधारे। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति व आचार्य श्री पं० बुद्धदेव विद्यालङ्कार ने मान्य अतिथि का स्वागत किया। तत्पश्चात् बिरला जी ने गुरुकुल भूमि में अपनी ओर से निर्मित किये जाने वाले वेद-मन्दिर का उत्तम रीति से अवलोकन किया। सन्ध्या काल हो जाने के कारण दूसरे दिन आने का वायदा कर के बिरला जी हरिद्वार चले गये। अगले दिन श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी के साथ वे पुनः कुल-भूमि में पहुंचे और बड़ी सूक्ष्मता पूर्वक भली भाँति वेद मन्दिर का निरीक्षण किया। भवन की भव्यता और सुन्दरता को देख कर वे प्रसन्न हुये। इमारत को और भी अधिक सुन्दर तथा आलीशान बढ़ाने के लिये उन्हों ने अपने इञ्जीनियर को कुछ आवश्यक निर्देश दिये। इसकी उपयोगिता को बनाने के लिये कतिपय परिवर्तन तथा परिष्कार का भी आदेश किया अब तक इस आदर्श-मन्दिर पर बिरला जी लगभग साठ हज़ार रुपया खर्च कर चुके हैं। मन्दिर के दोनों ओर पक्ष भवन बनाने का निश्चय भी उन्हों ने किया है। मन्दिर के चारों ओर एक कम ऊँची दीवार रहेगी। बीच के मैदान को फुलवाड़ी से सुसज्जित किया जायगा। यह सब कार्य वार्षिकोत्सव से पूर्व ही समाप्त हो जाय ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है।

कार्याधिक्य के कारण गुरुकुल में सिर्फ एक घण्टा ठहर कर बिरला जी चले गये।

बलरामपुर हाकी-टूर्नामेंट

गत तीन वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी का हाकी दल महाराजा बलरामपुर द्वारा कराए जाने वाले टूर्नामेंट में सफलता पूर्वक भाग लेता रहा है। गत वर्ष गुरुकुल दल ने इस टूर्नामेंट का विजयोपहार जीता था। इस वर्ष भी यहाँ के दल ने पूरी तैयारी के साथ इस टूर्नामेंट में हिस्सा लिया है। श्री पं० रामेश्वर जी सिद्धान्तालङ्कार की अध्यक्षता में यह दल ६ जनवरी को प्रस्थान कर चुका है और प्रथम मैच में शाहजहाँ पुर की टीम से ३ गोल से विजयी हुआ है।

राजेन्द्र	श्री मती गंगामूर्ति जी	४	३
राज बहादुर	Mr. SangappaDewan	४	४
मदन मोहन	म० ज्ञानचन्द्र जी मलहोत्रा	५	५
प्रेम स्वरूप	श्री माधव राम जी	४	६
हरिप्रकाश	श्री बलदेव सिंह जी	५	५
वीरेन्द्र	श्री रमेश चन्द्र जो	६	१
धीरेन्द्र	श्री बलवन्त सिंह जी	५	१
लाजपत	श्री मुकुन्दलाल जी	५	६
मदन गोपाल	श्री मोहनलाल जी		

गुरुकुल कांगड़ी भूमि में वाटिकाएं

५—६ वर्षों से गङ्गापार की पुरानी भूमि बीरान पड़ी हुई थी जिसका कुछ नहीं लिया जा रहा था। गत वर्ष गुरु नवीन अधिकारियों का ध्यान इस वि विशेष रूप से आकृष्ट हुआ और पहली कृ के जीर्णोद्धार के लिए यत्न आरम्भ हो मकानों की मरम्मत का जो कार्य प्रारम्भ गया था वह कुछ दिनों में यहां के वार्षिक आने तक पूरी तरह समाप्त हो जायगा। अ जङ्गली झाड़-झंखाड़ों को उखाड़ कर २०० भूमि आबाद करली गई है और उसमें भो लिए अन्न पैदा किया जा रहा। सारी भू शीघ्र ही आबाद करने की कोशिश जारी है

इस भूमि में पूर्व-समय से ही, थोड़ी २ दूर ६ कुओं के बने होने के कारण पौधों की सिंच पर्याप्त सुविधा है। गुरुकुल के अधिकारि विचार किया है कि इस भूमि को विविध-फल वृक्षों की वाटिकाओं से समृद्ध किया तदनुसार इस भूमि को अनेक प्लाटों विभक्त किया जाय। एक प्लाट ५० वृक्षों रखा जायगा। अब तक इस भूमि में गु की ओर से २०० नीबू, ५० बनारसी आंवले ५० कलमी आम के वृक्ष लगाए जा चुके हैं। २ जाति वाले फलों के पौधे २५ से १००) तक के भाव से मिलते हैं। जो सज्जन अपने ना कुछ वृक्ष, एक अथवा एक से अधिक प्लाट लग चाहें वे सहर्ष इस पुण्य कार्य में सहयोग दे स हैं। अभी समय है, प्लाट समाप्त हो जाने पर जनता की मांग पूरी करने में विवश होंगे।

स्वास्थ्य-समाचार

ब्र. ब्रजनन्दन श्रेणी १२ श्लेष्मज्वर, मदन शिवकुमार ५, धर्मवीर २, रमेशचन्द्र १, यो १ म श्रेणी मलेरिया ज्वर। गत सप्ताह उप ब्रह्मचारी रोगी हुए थे अब सब स्वस्थ हैं। दिनों ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है।

(आर्य विरक्त वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापु

शोक प्रस्ताव

आज ता० १६।१।४३ को में सेठ गण्डू शाह पट्टी निवासी की अचानक मृत्यु का समाचार कर आश्रम निवासियों को बड़ा दुःख हुआ आश्रम में एक कुटी बनवाई थी जिस में व समय २ पर आकर आप आत्मिक शान्ति के निवास किया करते थे।

आश्रम वासी आप के परिवार के साथ हा सहानुभूति प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रा कि भगवन् दिवङ्गत आत्मा को शान्ति प्रदान निश्चय हुआ कि इस प्रस्ताव को समाचार प्र प्रकाशित किया जाय और एक प्रति उनके सु की सेवा में भेजी जाय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक —भीमसेन सभा-मन्त्री

Regd. N. L. 5004,

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक १०

वार्षिक मूल्य ४)

३१ जनवरी १९४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

[८]

स्वामी रामतीर्थ के अध्यात्मिक अनुभव

आत्म ज्योतिष्कोऽयं पुरुषः । उपनिषद्

[यह जीवात्मा अपने ज्ञान की जोत से चमकता है] उपनिषद् ।

आत्मानुभव की भीष्म प्रतिज्ञा

प्रकार की दृढ़ प्रतिज्ञा करके तीर्थराम जी
से तपोवन में जाने के लिये रवाना हुए।
आप हरिद्वार पहुंचे। कोई एक सप्ताह तक
हीं ठहरे। आप लाहौर से अपनी तीन
की तनख्वाह साथ लेकर चले थे। वह
न्होंने हरिद्वार में साधु और गरीबों के लिये
में खर्च कर डाली। इस प्रकार एक
भी पास न रखकर, नंगे पैर, नंगे सिर
ल में उपनिषदों की पोथी का एक पुलि-
ये आत्मानुभव करने का दृढ़ संकल्प
राम जी हृषीकेश की ओर चल पड़े।
में दो तीन दिन ठहर कर तपोबन के
ह्मपुरी नामक स्थान में आ पहुंचे। इस
निकट ही गंगा बहती है। गंगा के पवित्र
आसन जमा कर तीर्थराम जी यह प्रतिज्ञा
ठ गये कि ब्रह्मानन्द! राम अब तेरे द्वार
ना देकर बैठा है। 'राम' मजनू न बनकर
ी बनायगा। राम अब कफनी ओढ़ कर
पर बैठ गया है। बिना तेरे उठाये अब
से हटने वाला नहीं। तेरे सिवा और
सामर्थ्य है कि जो इसे यहां से हटाये?
तुझे अपने अधीन कर लेगा तभी यहां
। राम को अब अपने शरीर की बिल-
ब्याह नहीं। इसी समय तीर्थराम जी ने
ला को इस प्रकार चिठी लिखी थी—
जी! आप का पुत्र अब घर नहीं लौटेगा
विद्यार्थियो! तुम्हारा गुरु अब तुमसे न
प्यारे सम्बन्धियो! तुम्हारा सम्बन्ध
के लिये कितने दिन मनौती मानेगी? पिता जी! आपकी सारी आशाओं और मनसूबों पर लेखनी की एक ही फटकार से पानी फिर जायगा। राम के स्वानन्द की लहर में या तो देश काल और निमित्त ही लोप हो जायंगे, नहीं तो कम से कम राम की शरीर तो अवश्य ही गंगा प्रवाह में अदृश्य हो जायेगी! शरीर और मन का अब अन्त होगा। मृत्यु के पश्चात् सभी की अस्थियां गंगा में जाती हैं। पर राम को यदि आत्मानुभव न हुआ, और देह बुद्धि की बदबू बाकी रह गई तो जीते हुए ही राम की हड्डियां और मांस दोनों भागीरथी की मछलियों को अर्पण किये जायंगे।" मन को इतना मज़बूत बना कर गंगा तट पर बैठ जाने के बाद तीर्थराम जी के अन्तः करण की क्या अवस्था थी उसका आप ही ने इस प्रकार वर्णन कर रखा है —"आंखों से आंसुओं की वर्षा हो रही है। ठंडी और दीर्घ सांसें निकल रही हैं। तेज़ हवा के समान आंसुओं की वर्षा का मानो वह साथ कर रही है। बाहर आंसुओं की धारा! और भातर आंसुओं की धारा!! आंसुओं के प्रवाह के साथ अन्तःकरण के साथ ये उद्गार निकलते हैं —भगवती गंगे! राम का सर्वस्व तुम्हारे चरणों में अर्पण है। फूल और बतासे के एवज़ में 'राम' अपनी हड्डियां और मांस तुम्हारी भेंट करता है। अब राम अपना मन तुम्हारे तटवासी वानरों को दिये देता है, और बुद्धि तुम्हारे प्रवाह को सौंप देता है। राम अपने पाप पुण्यों को गला कर उसकी ज्योति से तुम्हारी आरती करता है। आत्मस्वरूप में इस तरह डूब कर पठ जाता धारण करके। यही नहीं, किन्तु जल, भूमि और आकाश इन सब को अब 'राम' ही बना कर छोड़ता हूं। तुम और मैं इसमें भेद ही न रहने दूंगा। तुममें—आत्मस्वरूप में पूर्णरूप लीन न हो जाऊं तो मेरा नाम 'राम' नहीं।

इस समय की अन्तःस्थिति का आपकी लेखनी द्वारा और भी इस प्रकार वर्णन किया गया है— "सन्ध्या समय है! 'राम' एक छोटी सी पहाड़ी के शिखर पर बैठा हुआ है। कैसी विचित्र अवस्था! यह न तो उदासीनता कही जा सकती है, न दुःख कहा जा सकता है, और न कौटम्बिक मनुष्य का कुशल मंगल ही कहा जा सकता है इसे जागृतावस्था कहा जाय या सुषुप्ति! सच पूछिये तो तीन अवस्थाओं में से किसी अवस्था से भी इस अवस्था की तुलना नहीं हो सकती। कदाचित् यह देहातीत अवस्था होगी। परन्तु अहा! कैसी रसपूर्ण अवस्था है।

प्रेमसमर्पण

(बरवा-छन्द)

मम सर्वस स्वीकारहु, कृपानिधान!
अर्पहुं दोऊ कर जोरे, श्री भगवान!

स्वीकारहु हाथन को, हे महाराज।
तुम सेवा के कारण, अप्यों आज।

हृदय मम स्वीकारहु, हे निष्काम!
तुव मूरति हिय-भासै, सुख को धाम।

गोर नैन स्वीकारहु, हे जगदीस!
भक्ति धुन्ध होई जांय, नवावों सीस।

चित्त मोर स्वीकारहु, अहो सुजान!
मंदिर होय तुम्हार. हेतु नहिं आन।

अस न रहे कछु मोपै, होय जो मोर।
तुम ही में सब फुरै, न दूसरि ठौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

उसके पाप का फल देने के प्रकार

(ले० श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति)

[८]

यः समाम्यो वरुणो यो व्याम्यो यः संदेश्यो वरुणो यो विदेश्यः ।
यो वै दैवो वरुणो यो मानुषः ॥ अथर्व० ४ । १६ । ८

अर्थ—(यः) जो (वरुणः) वरुण (सम्+आम्यः) समुदाय भर में फैल जाने वाले संक्रामक रोगों वाला है (यः) जो (व्याम्यः) वैयक्तिक रोगों वाला है (यः) जो (संदेश्यः) समूह भर में आपत्तियें लाने वाला है (यः) जो (वि-देश्यः) विशेष-विशेष व्यक्तियों पर आपत्तियें लाने वाला है (यः) जो (दैवः) दैवी आपत्तियें लाने वाला है (यः) जो (मानुषः) मानुषी आपत्तियें लाने वाला है ।

पिछले मन्त्र में वरुण के सैंकड़ों पाशों की ओर, उसके दण्ड देने के साधनों की ओर, निर्देश किया गया था । प्रस्तुत मन्त्र में उन साधनों में से कुछ का स्पष्टीकरण किया गया है । भगवान् समाम्य हैं । आम शब्द रोग का वाचक है । यह शब्द "अम रोगे" धातु से बनता है । आम के साथ सम् उपसर्ग लगने से समाम शब्द बनता है । यहां सम् उपसर्ग संग्रह का, सम्पूर्णता का, समूह का द्योतक है । जो रोग समूह को लग जाने वाले हों उन्हें समाम कहेंगे । वरुण समूह के रोग भेजने में चतुर हैं इस लिये वे समाम्य हैं । इसी प्रकार वरुण व्याम्य भी हैं । क्योंकि वे व्याम अर्थात् वैयक्तिक रोगों के भेजने में चतुर हैं । भगवान् के इन विशेषणों का भाव यह है कि मनुष्यों के अधर्माचरणों का फल देने के लिये वे कभी तो उनमें वैयक्तिक रोग भेज देते हैं और कभी सामूहिक रोग । जो इस प्रकार के रोग हैं जो एक व्यक्ति से दूसरे में नहीं जाते वे व्याम हैं, वैयक्तिक रोग हैं । ऐसे रोग जिस व्यक्ति को लगते हैं उसी तक रहते हैं । परन्तु जो रोग ऐसे हैं जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्तियों में भी चले जाते हैं, और इस प्रकार समूह भर में फैल जाते हैं, उन संक्रामक रोगों को समाम या सामूहिक रोग कहा जाता है । भगवान् इन दोनों ही प्रकार के रोगों द्वारा पापाचारियों को दण्डित करते हैं । उनके दण्ड का साधन होने से ये रोग एक प्रकार से वरुण भगवान् के पाश हैं । भगवान् के पाश केवल रोगों तक ही सीमित नहीं हैं । रोगों के अतिरिक्त उनके पास और भी अनेक प्रकार के पाश हैं । इस लिये कहा कि वरुण संदेश्य और विदेश्य हैं । जो कष्ट और विपत्तियें समूह के पास भेजी जायें उन्हें संदेश कहेंगे और जो व्यक्तियों के पास भेजी जायें उन्हें विदेश कहेंगे । संदेश और विदेश का यहां शब्दार्थ तो केवल इतना है कि जो क्रमशः समूह और व्यक्ति के पास भेजा जाये । परन्तु क्योंकि यहां वरुण के पाशों का, अपराधी को दण्ड देने का, वर्णन चल रहा है और समाम्य और व्याम्य शब्दों द्वारा रोग का स्पष्ट वर्णन भी किया गया है इसलिये साहचर्य के बल पर हमने संदेश और विदेश के अर्थ में कष्ट और विपत्ति का अध्याहार कर लिया है । भगवान् वरुण सामूहिक विपत्तियें और वैयक्तिक विपत्तियें भेजने में चतुर हैं इसलिये वे संदेश्य और विदेश्य हैं । ये सामूहिक और वैयक्तिक विपत्तियें अनेक प्रकार की हो सकती हैं । इसे स्पष्ट करने के लिये मन्त्र में आगे कहा है कि वरुण भगवान् दैव हैं और मानुष हैं । जो देवों से सम्बन्ध रखे वह दैव कहलाता है और जो मनुष्यों से सम्बन्ध रखे वह मानुष कहलाता है । भगवान् का जल, अग्नि, भूमि, वायु, सूर्य, विद्युत् आदि देवों से सम्बन्ध है इसलिये वे दैव हैं । और उनका मनुष्यों से भी सम्बन्ध है इस लिये वे मानुष भी हैं । वरुण का इन देवों और मनुष्यों दोनों से सम्बन्ध होने के कारण वे इनके द्वारा ऊपर वर्णित सामूहिक और वैयक्तिक विपत्तियें भेज देते हैं । भाव यह है कि कभी तो व्यक्तियों और समूहों पर वे दैवी विपत्तियें भेज देते हैं और कभी मानुषी विपत्तियें भेज देते हैं । प्रदेशों के प्रदेशों में जल विप्लव आगया, भयङ्कर आंधी के द्वारा उन्हें भारी हानि हो गई, आग लग जाने से उन्हें संकट सहने पड़े, असह्य गरमी पड़ने और वर्षा न होने से उनकी खेतियें सूख गईं, भूकम्प आ जाने से उन्हें घोर विपत्ति सहनी पड़ी, विद्युत्पात से उनकी भयङ्कर क्षति होगई—इस प्रकार की समूह भर को सताने वाली विपत्तियें सामूहिक दैवी विपत्तियें हैं । और इन्हीं जल आदि के द्वारा पृथक् पृथक् व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले कष्ट वैयक्तिक दैवी विपत्तियें हैं । कहीं भयङ्कर युद्ध छिड़ गये, कहीं एक या अधिक डाकुओं ने मिल कर नगरों को लूटना आरम्भ कर दिया, इस प्रकार की मनुष्यों द्वारा समूहों को प्राप्त होने वाली विपत्तियें सामूहिक मानुषी विपत्तियें हैं । और एक या अधिक मनुष्यों द्वारा पृथक पृथक व्यक्तियों को जो कष्ट आते रहते हैं वे वैयक्तिक मानुषी विपत्तियें हैं । इस प्रकार भगवान् के पाशों का, उनके दण्ड देने के साधनों का, कोई अन्त नहीं है । वे पापी को भांति भांति से दण्डित कर सकते हैं । यदि हम किसी तरह उपाय करके उनके किसी एक साधन से प्राप्त होने वाले दुःख से बच भी गये तो वे अपने असंख्य साधनों में से किसी [illegible] द्वारा हमें उतना ही दुःख दे देंगे । [illegible] का फल दुःख भोग किये बिना कोई व्य[illegible] सर्वग्राही पाशों से बच नहीं सकता ।

हे मेरे मन ! प्रभु पापी को अनेक प्र[illegible] के पापकर्मों का फल दे डालते हैं । पा[illegible] से कोई बच नहीं सकता । यदि तू कष्ट चाहता है तो पापाचरण को त्याग दे । मंगल मिलेगा ।

दैनिक स्वाध्याय के लिए उपयु[illegible]

१. वैदिक विनय (२य और ३य भा[illegible] (१ भाग समाप्त) आचार्य अभ[illegible] मू० १) प्रति भाग
२. सोम सरोवर—ले० श्री पं० चमूप[illegible] ए । मू० सजिल्द १॥), अजि[illegible]
३. वेद गीतांजलि—संग्रहकर्ता मुख्या[illegible] कुल कांगड़ी । मू० २)
४. स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश ([illegible] संगृहीता ला०लब्भूराम जी नै[illegible]
५. बृहत्तर भारत—ले० श्रीयुत पं० [illegible] वेदालङ्कार । मू० ४॥।)
६. आत्म मीमांसा—ले० श्रीयुत प्रो० [illegible] खन्ना । मू० २)
७. ब्रह्मचर्य सन्देश—ले० श्रीयुत प्रो० [illegible] सिद्धान्तालङ्कार मू० २)
८ शिक्षा मनोविज्ञान—लेखिका श्री[illegible] वती जी लखनपाल एम.ए.बी.[illegible]
९. स्त्रियों की स्थिति—लेखिका श्री[illegible] वती जी लखनपाल एम.ए.बी.[illegible]
१०. सन्ध्या सुमन—ले० श्री पं० नि[illegible] वेदालङ्कार । मू० १)
११. जल चिकित्सा विज्ञान—ले० श्री[illegible] राज जी विद्यावाचस्पति मू० १[illegible]
१२. हिन्दी निरुक्त भाष्य—ले० पालिर[illegible] पं० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार
१३. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या—लेखक प्रियरत्न 'आर्ष' । मूल्य १॥)

इसके अतिरिक्त निम्न उत्तम पुस्त[illegible] कुल पुस्तक भण्डार से मिल सकती है[illegible]

१. ब्राह्मण की गौ
२. भारतवर्ष का इतिहास (तीन भाग[illegible]
३. गुरुकुल प्रार्थना एकादशी
४. फन फिनायल साजी (उर्दू में)
५. रंगाई, धुलाई व ड्राईक्लीनिंग (उर्दू[illegible]

मिलने का पता

पुस्तक[illegible]

गुरुकुल कांगड़ी, जिला[illegible]

हर एक आर्य तथा पंजा[illegible]
आर्य समाज को
आर्य का ग्राह[illegible]
—बनना चाहिये—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य

रविवार ३१ जनवरी १९४३

...ां आर्य समाज मंदिर की आवश्यकता

५०००) की अपील

न कई वर्षों से लोहारू में आर्य समाज के
र्यों में कई प्रकार की बाधाएं उपस्थित
थीं। परन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
त्नान के कारण ये बाधाएं दूर हो गई
वहां सभा की ओर से पाठशाला चलाई
हैं। सभा की ओर से प्रचार का स्थिर
ड्या गया है। सभा के उपदेशक प० क्षेम
वहां विशेष रूप से प्रचार का कार्य कर
परन्तु अभी तक धनाभाव के कारण वहाँ
न्दिर नहीं बन सका। रियासत की ओर
ना मंदिर बनाने के लिए ज़मीन मिल चुकी
त्तु वहां के नियमों के अनुसार यदि मार्च
ज्ञ मंदिर न बना तो रियासत ज़मीन को
ले सकती है। इसके लिये ५०००) की
ीं जा चुकी है। सभा के वेद प्रचार विभाग
से समाजों के नाम धन भेजने के लिए
ी भेजी जा रही है। हरेक आर्य समाज
से कम २५) इसके लिये अवश्य भेजने
समय बहुत थोड़ा रह गया है। सभा के
भी इसके लिये प्रयत्न कर रहे हैं। परंतु
स्थानों पर नहीं पहुंच सकते। इसलिये
ल द्वारा मैं पञ्जाब आर्य समाजों तथा
आर्य महानुभावों से बल पूर्वक निवेदन
कि वह शीघ्र ही लोहारू के आर्य समाज
क निर्माण के लिये अधिक से अधिक दान
जने का कष्ट करें। धन मन्त्री आर्य प्रति
भा पञ्जाब के गुरुदत्त भवन के नाम पर
वाहिये। छोटी से छोटी दान राशि भी
द पूर्वक स्वीकार की जायगी।

की प्रश्न पिटारी:—

र्य के गत अङ्क में हमने पृष्ठ दो पर 'प्रश्न
नाम का स्तम्भ जारी किया है। उसमें
पण्डित रामशरणजी की ओर से एक प्रश्न
शित किया है। इसी प्रकार से समय २
ासुओंकी ओरसे जो प्रश्न आएंगे वे भी प्रका
ये जाएंगे। यदि कोई स्वाध्याय शील
व उन प्रश्नों के उत्तर हमारे पास भेजेंगे
ी प्रकाशित किये जाएंगे। प्रश्न प्रकाशित
दो सप्ताह तक प्रतीक्षा की जायेगी। इसके
पा की ओर से उत्तर प्रकाशित किये जाएंगे
शा है स्वाध्याय शील आर्य जिज्ञासु इस
से लाभ उठाएंगे और अपनी शंकाओं को
चर्चा के लिये उत्साह बढ़ाएंगे।

आर्य अध्यापिकाओं की आवश्यकता:—

बड़े शोक की बात है कि इतने वर्षों से आर्य कन्या पाठशालाओं के स्थापित होने पर भी अभी तक आर्य समाज की ओर से आर्य अध्यापिकाओं को शिक्षित करने वाला कोई शिक्षणालय स्थापित नहीं हो सका। सरकारी शिक्षा पद्धति से ट्रेंड अध्यापिकाएं आर्य समाज तथा आर्य समाज की आर्य कन्या पाठशालाओं की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती। आये दिन आर्य पाठशालाएं हमारे पास आर्य अध्यापिकाएं भेजने के लिये पत्र लिखती हैं। इस सम्बन्ध में हम आर्य शिक्षा समिति गुरुदत्त भवन लाहौर तथा कन्या महा विद्यालय जालन्धर के अधिकारियों का इधर ध्यान खींचना चाहते हैं। दोनों संस्थाओं ने आर्य जनता की सहायता तथा सहयोग से जो शक्ति तथा प्रभाव संचित किया है उस से उनका आर्य जनता की इस मांग को पूर्ण करना नैतिक और धार्मिक कर्तव्य है।

गुरुकुल कमालिया:—

पिछले कुछ दिनों में श्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कमालिया के बीमार हो जाने से गुरुकुल कमालिया के प्रबन्ध में कुछ अव्यवस्था हो गई थी। अब श्री टेकचन्द जी वानप्रस्थी, श्री सत्यभूषण जी वानप्रस्थी और श्री स्वामी कृष्णानन्द ने श्री जी०डी० चौधरी केसाथ सम्मिलित होकर गुरुकुल कमालिया के प्रबन्ध की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर ले ली। इन लोगों के यत्न से गुरुकुल कमालिया में ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़ रही है। धन संग्रह भी हो रहा है। लायलपुर में टोवा टेकसिंह और मंडियों के दानी महानुभावों को चाहिए कि इन महानुभावों को पूर्ण सहयोग दें। गुरुकुल कमालिया के मकानात तथा अन्य प्रबन्ध गुरुकुलीयता के अनुकूल हैं। हम आशा करते हैं कि आर्य भाई इन महानुभावों के यत्न को सफल करने में कोई बात उठा न रखेंगे।

विवाह योग्य आर्य कन्याओं तथा आर्य युवकों की सूची

समय समय पर आर्य भाई अपनी सन्तानों के विवाह सम्बन्ध के लिए बहुत चिंतित होते हैं और सभा कार्यालय से इस विषय में सहयोग तथा सहायता चाहते हैं। इस विषय में कई बार कई प्रकार से यत्न किए गए परन्तु सफलता नहीं हुई। अब हमने निश्चय किया है कि सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य में इसके लिये विशेष स्थान दिया जायगा। सभा कार्यालय में भी इसके लिये प्रबन्ध किया जायगा। हम आर्य में इस प्रकार की आवश्यकताएं नाम संकेत के बिना आयु शिक्षा तथा कुलीनता के परिचय के साथ निःशुल्क प्रकाशित किया करेंगे, उससे जो भाई लाभ उठाना चाहेंगे उन्हें वे केस दिखा दिए जाएंगे।

इन दिनों हमारे पास एक आर्य सज्जन महोदय के अपने १९ वर्षीय सुशील और आज्ञाकारी लड़के भवण परीक्षोत्तीर्ण कन्याके लिए वरकी आवश्यकता निरामिष भोजी और सरकारी नौकरी करते हैं। कन्या स्वस्थ है।

समय पर अनुकूल वर न मिलने से निरामिष भोजी आर्य कन्याओं के मांसाहारी वरों के साथ विवाह हो जाते हैं इससे आर्य समाज की शिक्षा का प्रभाव लुप्त हो जाता है। आर्य पुरुषों को गुण कर्मानुसार जन्म मूलक जाति बन्धन तोड़कर आर्य परिवारों में ही विवाह सम्बन्ध करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए तभी हम आर्य वर्णाश्रम मर्यादा को स्थापित कर सकेंगे। आशा है आर्य भाई इस अवसर से अवश्य लाभ उठाएंगे।

अन्न कष्ट और आर्यसमाज:—

इसी अङ्क के अम्बाला समाचारों में पाठक आर्य समाज अम्बाला की ओर से जनता के अन्न कष्ट को दूर करने की योजना किये जाने का समाचार पढ़ेंगे। हम आर्य समाज अम्बाला छावनी के अधिकारियों को इस पुण्य कार्य के लिये बधाई देते हैं।

इधर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने भी गुरुदत्त भवन में जनता के अन्न कष्ट को दूर करने के लिये 'अन्न डिपो' खोलने के लिए सरकार के साथ पत्र व्यवहार जारी किया हुआ है। निश्चय तथा स्वीकृत मिलने पर सभा भी इसके लिए प्रबन्ध करेगी। इस प्रसङ्ग में हम स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारियों का ध्यान इधर खींचना आवश्यक समझते हैं। उन्हें चाहिए कि वह स्थानीय तथा ज़िला के अधिकारियों से मिलकर अपने २ स्थान में साधारण जनता के कष्ट को दूर करने की व्यवस्था करें।

सत्यार्थ प्रकाश का पं० चमूपति जी कृत उर्दू अनुवाद—

स्वर्गीय पं० चमूपति जी ने आर्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब की ओर से सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम भाग का उर्दू अनुवाद तैयार किया था। प्रथम संस्करण २००० छपा था। वह समाप्त हो गया था। चिर काल से आर्य जनता उसके अभाव को अनुभव कर रही थी। कागज़ की मंहगाई के कारण अभी तक उसका मुद्रण तथा प्रकाशन रुका पड़ा था। परन्तु अब जनता की तीव्र मांग तथा उसकी आवश्यकता को अनुभव करते हुये उसका दूसरा संस्करण निकालने का निश्चय किया गया है। यह संस्करण घटिया और बढ़िया दो तरह के कागज़ों पर छपेगा। साधारण जनता के लिये घटिया कागज़ पर छपेगा और भेंट आदि तथा पुस्तकालयों के लिये बढ़िया कागज़ पर। कागज़ की भिन्नता को दृष्टि में रखते हुये सस्ता संस्करण और बढ़िया संस्करण प्रकाशित होगा। यह संस्करण भी सीमित मात्रा में छप रहा है। यदि कोई आर्य समाजें या आर्य संस्थाएं या दानी महानुभाव अपने नाम से विशेष प्रतियाँ छपवाना चाहें तो सभा कार्यालय को सूचित करें। सभा उनकी आवश्यकता को दृष्टि में रख कर उतनी कापियां ज़्यादा छपा लेगी। मुद्रण कार्य शीघ्र प्रारम्भ होने वाला है, अतः इस विषय में आर्य समाजों को शीघ्र अपना निश्चय सभा कार्यालय में भेजना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

ओ३म् शब्दान्तर्गतरहस्य

(ले०—पं० भीमसेन जी वेदालङ्कार)

'आर्य' के पिछले दो अंकों में हम ओ३म् शब्दान्तर्गत 'अ' और 'उ' इन दो अक्षरों की विस्तृत व्याख्या करते हुए बता चुके हैं कि इन दो अक्षरों से किस प्रकार परमात्मा के विराट, अग्नि वा विश्व तथा हिरण्यगर्भ, वायु और तैजस आदि नाम प्रकट होते हैं। इस लेख में हम 'ओ३म्' के तीसरे अक्षर 'म्' की विवेचना करते हुये यह बताने का प्रयत्न करेंगे कि इस अक्षर से परमात्मा के ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञ इत्यादि नाम किस प्रकार प्रकट होते हैं। तदनन्तर इस विषय पर भी प्रकाश डालेंगे कि परमात्मा को 'अ' और 'उ' की तरह 'म्' क्यों कहा जाता है।

(१) ईश्वर—'ओ३म्' यह संस्कृत भाषा का व्याकरण सिद्ध शब्द है। संस्कृत भाषा पर सरसरी नज़र दौड़ाने पर एक नवशिक्षित भी समझ लेता है कि इसमें 'म्' व इसके रूपान्तरों अनुस्वार (ं) आदि का बाहुल्य है। स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत व्यवहार भानु की एक विनोदयुक्त कथा से भी यह बात स्पष्ट होती है। एक मन्दमति शिष्य बारह मास तक संस्कृत का अध्ययन करता है परन्तु फिर भी वह न इस भाषा को लिख सकता है और न ही बोल सकता है। निराश हो कर वह गुरु जी के पास जाकर अपने दुख को प्रकट करता है। गुरु जी कहते हैं—"बेटा! यह भाषा पढ़ने पढ़ाने से नहीं आया करती। जब तक इस भाषा को जानने वा पढ़ने का गुरुमन्त्र न सीखोगे तब तक सैकड़ों वर्ष प्रयत्न करने पर भी यह भाषा तुम्हें नहीं आ सकती।" शिष्य अत्यन्त विनीत भाव से गुरु के चरणों पर पड़ जाता है और वह मन्त्र सिखाने के लिये गुरु जी से प्रार्थना करता है। 'भक्तों के बस भगवान्'। बस, करुणा के परमावतार गुरु जी अपने प्रियतम शिष्य को वह अमूल्य कुञ्जी दे देते हैं जो अब तक उन्होंने किसी दूसरे शिष्य को न दी थी। शिष्य को कहते हैं—"बेटा किसी हिन्दी के शब्द या वाक्य की संस्कृत बनाने की सहज युक्ति यह है कि उसके अक्षर के ऊपर अनुस्वार अर्थात् बिन्दु लगाते चले जाओ। बस यह हिन्दी की संस्कृत बन जायेगी। इस नियम के अनुसार लोटा, जल, रोटी, दाल, शाक आदि शब्दों की संस्कृत लोटां, जलं, दालं, शाकं इत्यादि बड़ी आसानी से बन जायगी।" इस गुरुमन्त्र के अनुसार बना हुआ एक श्लोक भी स्वामी जी वहां देते हैं—

वांपं आंजां नंमं स्कूंत्यं पंरं पांजं तंथैंबं चं।
मंयां भंगंवांनं दांसेंनं गींतां टींकां करौंभ्यंहंम्॥

इस उपर्युक्त विनोदक कथा से भी यह बात ज्ञात होगी कि संस्कृत में 'म्' अक्षर या उसके कहा जाय कि संस्कृत भाषा में 'म्' अक्षर का ईश्वरत्व (प्रचुरता – essentiality) है तो यह उचित ही प्रतीत होता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि 'म्' अक्षर संस्कृत भाषा में ईश्वर है, अर्थात् यह वर्णमाला के अन्य अक्षरों से अधिक ऐश्वर्य सम्पन्न है—सामर्थ्यवान् है, इसका प्रयोग संस्कृत में सब अक्षरों से अधिक होता है।

परमात्मा भी दुनिया के हर एक पदार्थ का essence होने के कारण तथा सामार्थ्यवान् होने के कारण ईश्वर कहलाता है। जिस प्रकार उपरिदत्त उदाहरणों के अनुसार अगर संस्कृत भाषा में से 'म्' अक्षर निकाल लिया जाए तो उसमें फोक के सिवाय और कुछ नहीं बचता, इसी प्रकार अगर परमात्मा भी दुनिया के पदार्थों में से अपनी शक्ति व सत्ता खींच ले तो मट्टी के ढेर के सिवाय और कुछ नहीं रहेगा। कहने का अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार संस्कृत भाषा में 'म्' अक्षर ईश्वर है उसी प्रकार संसार के पदार्थों में परमात्मा ईश्वर है। 'म्' का यह गुण परमात्मा में होने के कारण उस को भी प्रथम तथा द्वितीय लेख में दिए हुये उदाहरणों के अनुसार 'म्' यह नाम दे दिया गया है।

(२) आदित्यः—'आदित्य' शब्द "दो अवखण्डने (टूटना)" इस धातु से बना है। तदनुसार इस धातु से बने 'दित्य' का अर्थ होगा 'टूटनेवाला' अगर इस शब्द के आदि में नकारार्थी अ लगाकर उससे पूर्व आ उपसर्ग लगा दिया जाए तो आदित्य शब्द बन जायेगा। उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार आदित्य शब्द का अर्थ "बिलकुल न टूटने वाला" होगा। इसलिये "म' अक्षर आदित्य है"। इस वाक्य का अर्थ यह हो जायगा कि 'म अक्षर कभी भी नहीं टूटता' इस चीज़ को हमें अधिक स्पष्ट तथा समझने के लिए म् के उच्चारण की तरफ़ ज़रा ध्यान देना चाहिए।

पवर्ग में होने के कारण 'म'का उच्चारण स्थान ओष्ठ है। अगर हम दोनों ओष्ठोंको निरन्तर मिलाये रख कर 'म्' उस वर्ण का उच्चारण करने का प्रयत्न करें तो हम देखेंगे कि इस अक्षर का न तोड़ते हुए भी निरन्तर उच्चारण किया जा सकता है। इस अक्षर का लगातार बिना किसी बाणी के स्खलन व व्यवधान के उच्चारण किया जा सकता है। इसलिये इसको न टूटनेवाला वर्ण अर्थात् 'आदित्य' कहा जाता है। इस संक्षिप्त व्याख्या से पाठकगण समझ गये होंगे कि 'म्' को आदित्य क्यों कहा जाता है। वर्ण माला के व्यञ्जनों में कोई भी ऐसा अन्य वर्ण नहीं है जिसको निरन्तर बिना स्खलन के साथ बोला जा सके।

'म्' अक्षर की तरहपर मात्मा भी आदित्य है। अनादि काल से अनन्त काल तक परमात्मा की सत्ता चली आती है, और चली जाती रहेगी। होता। जिस प्रकार सिन्धु आदि प्रवाह निरन्तर सारा वर्ष भर चल और बरसाती नदियों की तरह स इसी प्रकार परमात्मा का सत्ता रूप विच्छिन्न नहीं होता। इससे यह स की तरह परमात्मा भी आदित्य है। से व्यक्त 'न टूटने का गुण' म् और समान रूप से पाये जाने के कारण भी 'म्' कह दिया गया है।

(३) प्राज्ञः—'प्रकर्षेण ज्ञाताः प्रा शब्द का अर्थ है। हिन्दी में प्राज्ञ है प्रसिद्ध। 'म्' अक्षर देवनागरी की किस प्रकार प्राज्ञ अर्थात् प्रसिद्ध है इस 'ईश्वर' शब्द की व्याख्या में स्पष्ट परमात्मा भी संसार के सभी पदार्थों प्रसिद्ध वह व्यक्ति होता है जो अपने सद्गुणों के द्वारा मनुष्य मनुष्य की में समाया हुआ है। परमात्मा जितन मन और वाणी पर आरूढ़ है उतना दुनियां का प्राणी नहीं है। परिणाम वर्ण के प्राज्ञ-इस नाम द्वारा प्रकटीभू मात्मा में भी पाया जाता है इस लि को भी म् कह दिया जाता है। अब प पूर्णतया स्पष्ट हो गया होगा कि परम क्यों कहते हैं।

आर्य में तीन सप्ताह से आती हु माला को तन्मयता से पढ़ने के पश्चात् पाठक को यह समझ में आ सकता है इस नाम के अन्दर कितना रहस्य न यह छोटा सा तो परमात्मा का नाम है से परमात्मा के जितने गुणों का बोध ह गुणों का और किसी भी परमात्मा के होता। यही कारण हैं कि सागर में 'ओ३म्' परमात्मा का सबसे मुख्य न जाता है।

इस अंक के साथ 'ओ३म् शब्दान्त इस लेखत्रयी को हम यहां समाप्त करते

आर्य समाज जगाधरी

आर्यसमाज जगाधरी का वा २६-२-४३ से २८-२-४३ तक शुक्र आदित्यवार होना निश्चय हुआ है।

आर्यसमाज बटाला के समा

लोहड़ी से ५ दिन पहले पं० पूर्ण की कथा करते रहे और म० हंसराज द्वारा प्रचार किया। लोहड़ी वाले दिन कवि दरबार महाकवि शांत जी की हुआ स्वामी जी के उपकारों पर भी गई। २६-२७-२८ फरवरी को सालाना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

आर्य समाज संसार

आर्यसमाज अम्बाला छावनी

(१) आर्य समाज के पास १०—१—४३ को अम्बाला छावनी के गरीब भाइयों की दरख्वास्तें आईं कि उनको आटा, चीनी आदि न मिलनेसे बहुत तकलीफ हो रही है और खासतौर पर मज़दूर लोगों को सारा दिन खराब करने पर भी आटा, चीनी नहीं मिलती। इस दर्दनाक हालत को देख कर आर्यसमाज की अंतरंग सभा की बैठक ११—१—४३ की रात को हुई, जिसमें निम्न लिखित सज्जनों की उपसमिति बनी:—

(१) रा०सा० ला० अमृतराय जी, (२) डा० लालचंद जी, (३) डा० मोहनलाल जी, व (४) डा० एम०डी० चौधरीजी। और यह भी पास हुआ कि यह समिति Cantonment Magistrate से मिलें और सब हालात को उनकी सेवा में रखें कि आर्य समाज के गरीब भाइयों की सहायता के लिए डिपो खोलने की आज्ञा देवें— Cantonment Magistrate श्रीमान् चौधरी भीमसिंह जी की सेवा में १३—१—४३ को डेपुटेशन हाजिर हुआ उन्होंने डपुटेशन के मेंबरों की बातों को बहुत ध्यान पूर्वक सुना, और आर्यसमाज के एक सदस्य के नाम से आटा का डिपो खोलने की आज्ञा दे दी। १४—१—४३ से आर्य समाज की ओर से आटा का डिपो खुल गया है। और रा० ब० बनारसी दास की मिल से हर रोज १४ बोरी आटा मिलता है जो कि गरीब तथा दलित भाइयों को Control Rate पर बांटा जा रहा है और आर्य स्त्री समाज की ओर से विधवा तथा बहुत ही गरीब परिवारों को मुफ़्त बांटा जायगा। इस कार्य में जनता आर्यसमाज की बड़ी प्रशंसा कर रही है और चौ० भीमसिंह जी Cantonment Magisterate ने आर्य समाज के कार्य की बहुत प्रशंसा की है कि आर्य समाज के डिपो का कार्य बड़ी अच्छी प्रकार चल रहा है।

(प्रस्ताव)

(२) आर्यसमाज की अंतरंग सभा डेपूटेशन के मेम्बरों तथा चौ० भीमसिंह जी Cantonment magistrate का वृहद् २ धन्यवाद करती है कि उन्हों ने डिपो खोलने की आज्ञा देकर आर्य समाज को गरीब भाइयोंकी सेवा करने का मौका भी दिया है।

(३) साप्ताहिक सत्सङ्ग बड़े उत्साह पूर्वक हो रहे हैं, और सभासद अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।

(४) २४—१—४३ की अन्तरङ्ग में निम्न प्रकार का प्रस्ताव स्वीकार हुआ है:—

"आर्य समाज गुरुकुल विभाग अम्बाला छावनी की अन्तरङ्ग सभा रा० सा० ला० अमृत

परमात्मा का धन्यवाद करती है जिसकी कृपा से रा० सा० ला० अमृतराय जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान चुने गये हैं रा०सा० जीने तन मन और धन से जो सेवा आर्य समाज की की है और कररहे हैं। यह सभा विशेष रूप से सराहती है।

भवदीय—सदानन्द आर्यमन्त्री

आर्यसमाज कादियां में बलिदान मेला

आर्यसमाज कादियां में बलिदान मेला ता० ५-६-७ मार्च १९४३ शुक्र, शनि, रवि को धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमें बड़े २ संन्यासी महात्मा विद्वान् पधारेंगे।

वीर जी का अनशन

धर्मप्राण पं० श्री रामचन्द्र जी शर्मा "वीर" अपनी तपस्या तथा महान् आंदोलन से समस्त भारत और जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, ब्रिटेन, फ्रांस आदि योरुपके देशोंमें प्रसिद्ध हो चुके हैं। उसबार 'वीरजी' १५ जनवरी से जयपुर में अनशन कर रहे हैं, यह उपवास निम्नलिखित मांगों के लिये है:—

१—जयपुर राज्य की ८६ प्रतिशत हिन्दू जनता की उपेक्षा कर के राज्य के समस्त न्यायालयों में उर्दू फ़ारसी भाषा प्रचलित है। जिससे जनता को अनेक कठिनाइयां सहनी पड़ती हैं। राज्य को चाहिए कि शीघ्र ही हिन्दी-भाषा और देव-नागरी लिपि को राज्य के समस्त विभागों में प्रचलित करने की कृपा करें।

२—जयपुर राज्य गो-पालक राज्य रहा है। किन्तु कुछ वर्षों से राज्य के जङ्गलों में चरने वाली गौवों पर कर लगा दिया है। यह कर गाय रखने वालोंसे जंगलात द्वारा प्रतिवर्ष लिया जाता है। हिंदू-राज्य में गौवों पर कर लगाना धार्मिक दृष्टि से तो अनुचित है ही, साथ ही गो-वंश की उन्नति में भी बाधाजनक है। राज्य से प्रार्थनाकी जाती हे कि इस कर को तत्काल छोड़ने की आज्ञा दें।

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये वीरजी ने डेढ़ मास पूर्व ही आजाद चौक की सभा में अनशन करने का संकेत किया था। जयपुर राज्य-हिन्दू-सभा के वृहदधिवेशन में भी यहदोनों मांगें प्रस्तावों के रूप में सर्व सम्मति से स्वीकृत हो चुकी हैं। उसी समय वीर जी ने एक जनवरी से अनशन करने को स्पष्ट घोषणा की थी किंतु वाईस दिसम्बर की विराट सभा में जयपुर की जनता तथा हिन्दू सभा के पदाधिकारियों के विशेष अनुरोध करने पर वीरजी ने अपने अनशन की अवधि बढ़ा दी। और हिन्दू-ध्वजा की साक्षी से १५ जनवरी को अवश्यमेव अनशन प्रारम्भ करने की दृढ़ प्रतिज्ञा तथा घोषणा करदी।

जयपुर राज्य के प्राइममिनिस्टर सर मिर्ज़ा इस्माईल साहब को भी "वीरजी" ने अपने अनशन

अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने प्राणों की आ देने को उद्यत हो गए हैं। राष्ट्र भाषा हिन्दी राष्ट्रीय सम्पत्ति गो-माताके हितार्थ वीरजी का बलिदान अनुपम है। किन्तु भारत की हिन्दू-स तथा समस्त हिंदू-संस्थाओं एवं जयपुर की प्रजा का कर्तव्य है कि "वीरजी" को प्राणों आहुति नहीं होने दे।

निवेदक—युगलकिशोर नाटाणी, जय

कलकत्ता में गोरे सैनिकों के लिए वेश्यालय खोले जा रहे हैं

इस समाचार से बड़ी सनसनी फैली हुई है कलकत्ते में सभ्य नागरिकों से इसलिए मक खाली कराये जा रहे हैं कि वहां गोरे सैनिकों लिये वेश्यालय खोले जा सकें। ये वेश्याल ऐसे इलाके में खोले जा रहे हैं, जहां उच्च श्रेणी लोग रहते हैं। इस घटना से जहां हिंदुओं को भ क्षोभ हुआ है वहां सबसे पहले ईसाई पत्रों ने इस विरोध में अपनी आवाज़ बुलन्द की है। कलकत्ता प्रसिद्ध ईसाई पत्र "डायोसेसन रिकार्ड" ने इस रहस्योद्घाटन करते हुए बताया है कि मार्कि स्ट्रीट से लेकर रिपन स्ट्रीट तक के मकान वालों पास पुलिस वेश्याओं को लेकर पहुंची है और व के लोगों को मकान खाली करने के वास्ते कह र है। उन अधिकारियों से तद्विषयक शिकायत क कहा गया बताते हैं कि सैनिकों की शारीरिक अ मानसिक स्वस्थता के लिये वेश्यालय नितां आवश्यक हैं।

इस सम्बन्ध में मद्रास के प्रख्यात ईसाई प साप्ताहिक गार्डियन ने अपने विचार इस प्रक व्यक्त किये हैं—"हमें इस कार्य की निन्दा करने कोई हिचकिचाहट नहीं है, लेकिन साथ ही य बातें उन हिन्दु और मुसलमानों के सामने की जा रही है जिन्हें हम ईसाई मत की खूबियां बतलाक ईसाई बनाने का कार्य कर रहे हैं। हम भारत अंग्रेज़ स्त्रियों व ब्रिटेन की स्त्रियों से अपी करते हैं कि वे इस योजना का विरोध करें। ईसा संस्थाओं को भी इसका आन्दोलन करना चाहिये

गुरुकुल कुरुक्षेत्र समाचार

१—ऋतु उत्तम हो गया है। मलेरिया का ज़ो घट गया है। सब ब्रह्मचारी आनन्द प्रसन्न हैं।

२—सालाना परीक्षायें निकट होने के कार पढ़ाई ज़ोर से चल रही है।

३—सालाना जलसा मार्च मास में होगा। न बालकों के प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजने चाहिये

४—गत मास में निम्न विशेष दान प्राप्त हुए ह दानी महोदयों का हार्दिक धन्यवाद है। और गुरुकुल प्रेमियों को इस मँहगी में अपने कुल खुले दिल से सहायता करनी चाहिये।

१५४०) श्री सेठ ब्रह्मानन्द जी भरतिया दिल्ल

५००) श्री सेठ बनारसी दास प्रहलाद राम कराची।

२५०) श्री मा० श्री रामजी शर्मा दिल्ली व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श विदेश के समाचार

देश समाचार

—पंजाब बाल-सहायक मण्डल ने बच्चों के रीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति के ए लाहौर में 'मैकलैगन रोड' पर एक बाल-नोद-केन्द्र खोला है। वहां बालोपयोगी समाचार , विचित्र वस्तु संग्रह, मैजिक लैन्टर्नस, गृह र बाह्य क्रीडा इत्यादि साधनों का प्रबन्ध किया रा है। श्रीमती ब्रिजलाल नेहरू इस मण्डल की ान हैं।

—लाहौर ओरिएण्टल कालिज के प्रिन्सिपल ास्त्रीमहोपाध्याय श्रीयुत पं० माधव शास्त्री भण्डारी ा १३ जनवरी को ५० साल की आयु में लाहौर में र्गवास हो गया है। शास्त्री जी का जन्मस्थान ले (महाराष्ट्र) है। इन्दौर और काशी में आपने ाध्ययन किया था। काशी में १० साल उपा-ाय का काम करते के पश्चात् आप लाहौर में ७ साल से उपर्युक्त कालिज में प्रिंसिपल का काम र रहे थे। उनकी मृत्यु से संस्कृत भाषा का एक काण्ड पण्डित हमारे से पृथक हो गया है। पर ात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—पं० गोदावरी मिश्र और प्यारीशङ्कर ने ० रूजवेल्ट के प्रतिनिधि मि० विलियम फिलिप्स ने २१ जनवरी शुक्रवार को मुलाकात की। उन्होंने ताया कि:—विलियम फिलिप्स की भारतीय समस्याओं के प्रति बड़ी सहानुभूति दिखाई देती है। आशा है वे अमरीका में भारत का असली चित्र लोगों के सामने रक्खेंगे। भारतीयों की बुद्धिमता और अच्छे व्यवहार की उन्होंने बहुत प्रशंसा की।'

—सक्खर के नेहमू कलानी नामक एक २० साल के विद्यार्थी को सक्खर के नजदीक रेल्वे के के रस्ते से फिश प्लेट हटाने के दण्ड के रूप में मृत्युकी सजा दी गई है।

—भारतीय सरकार आस्ट्रेलिया से २ लाख टन गेहूं खरीदने का विचार कर रही है। आस्ट्रेलिया गवर्नमेण्ट ने भी हिन्दूस्तान को १ करोड़ बुशल गेहूं देने की समर्थता प्रगट की है। मि० एन० आर० सरकार के कथानानुसार वहां से गेहूं लाने के लिए जलयानों की भी व्यवस्था की जा रही है।

—अखिल भारतीय हिन्दू महा सभा की कार्यकारिणी सभा १३—१४ फरवरी को नई दिल्ली में होगी।

—पैसे की मुद्रा की जमा करने की हानिकर प्रथा को रोकने के लिए गवर्नमेण्ट फरवरी मास में एक नये आकार की पैसे की मुद्रा प्रचलित करने लगी है। यह आकार में गोल होगी और इसके बीच में एक गोल छिद्र होगा। जहां प्रचलित पैसे

—भारतीय सरकार के सदस्य श्री एन० आर० सरकार की २३ जनवरी की घोषणा के अनुसार गेहूँ के विक्रय मूल्य के ऊपर से नियन्त्रण (control) उठालिया गया है।

—दक्षिण पूर्व बंगाल में २३ तारीख की रात को और चिटागांग में दोपहर को जापान के हवाई जहाजों ने हमला किया।

—अखिल भारतीय हिन्दुमहासभा के जनरल सेक्रेटरी डा० मुञ्जे अमेरिकन प्रतिनिधि मि० विलियम फिलिप्स से २७ जनवरी को मुलाकात करेंगे?

—सीलोन में भारतीय श्रम के नेता मि० थानु पिल्ले ने जो २५ जनवरी को देहली में आये है श्रीयुत अणे से सीलोन की श्रम की मांग के विषय में बात चीत की। वे अगले दिन एमिग्रेशन कमिटी के सदस्यों को भी मिलेंगे और उनसे प्रेरणा करेंगे कि वे भारतीय श्रमजीवियों को अब आगे सीलोन में जाने की इजाज़त न दें।

—टर्की के डैलीगेशन ने भारत में घोषणा की है कि हम पहले टर्की हैं बादमें मुसलमान।

युद्ध-समाचार

रूस:—

पूर्व दक्षिण दिशा से रोस्टव की तरफ बढ़ती हुई रूसी सेनाओं ने प्रोलेटार्स्क को लेकर सालस्क को भी जीत लिया है। जो कि रोस्टव रेलवे पर एक मुख्य जंकशन है।

—काकेशिया में रशियन सेनाएं निरन्तर उत्तर पश्चिम को बढ़ रही हैं। कुबान क्षेत्र के मुख्य केन्द्र आरमवीर को उन्होंने हस्तगत कर लिया है।

—शीत ऋतु के २ मास के प्रत्याक्रमण में रूसी सेनाएं वोलगा नदी से लगभग ३०० मील पश्चिम की तरफ़ बढ़ चुकी हैं।

—गत सप्ताह में रूसी सेनाओं ने शत्रु से वोरोशिलावस्क को वापिस ले लिया है। वोरोशिलावग्राड से वे अब केवल १२ मील पर रह गई हैं।

— एक जर्मन विज्ञप्ति के अनुसार स्टालिनग्राड के चारों तरफ़ पड़ा हुआ जर्मन सेना का घेरा दिन प्रति दिन छोटा होता जा रहा है।

—२५ जनवरी को रशियन सेनाओं ने वोरेनेज़ को फिर से हस्तगत कर लिया है। परिणामत: कुर्स्क पर हमला करना रूस के लिए बिलकुल आसान हो गया है।

प्रशांत महासागर:—

—दक्षिण पश्चिम प्रशान्त महासागर में जापान के मुख्य केन्द्र रबाल पर मित्रराष्ट्रों ने २५ जनवरी को ज़बरदस्त हवाई हमला किया। हमले के कारण लगी हुई आग का भयङ्कर दृश्य ७५मीलसे दिखाई दे रहा था।

अफ्रीका:—

—उत्तर अफ्रीकामें 'एट्थआरमी'ने हाम्स और टरहूना ये दो बन्दर जर्मनी से छीन लिए हैं। अमरीका के युद्ध मन्त्री मि० स्टिमसन के अनुसार त्रिपोली को जीतना अब कुछ घण्टों का काम रह

—मि० चरचिल ने १९४० के क्रिस्टमसमें प्रति करते हुए मुसोलिनी को धमकी दी थी कि तुम्हारा अफ्रीका का राज्य शीघ्र ही नष्ट भ्रष्ट देंगे। तदनुसार आज चर्चिल की प्रतिज्ञा पूरी हुई

त्रिपोली जोकि त्रिपोलितानिया की राजधानी को पूर्ण रूप से एटथ आरमी ने हस्तगत कर लि है। परिणामत: अफ्रीका में इटली का साम्र पूरे अर्थों में समाप्त हो गया है।

बर्मा:—

—२५ जनवरी को शाही हवाई फौ ने दक्षिण पश्चिमी बर्मा में जापान की १० फ मोटर लारियों पर हमला किया। अनेकों जाप मारे गए और घायल हुए।

—मायु और रेथडांग के क्षेत्रों में शाही जापानी सेनाओं में जबरदस्त युद्ध हो रहा जापानी सेना अपने संरक्षण के लिए जीतोड़ प्र कर रही है।

विदेश-समाचार

—चाईना गवर्नमेण्ट ने धुरी राष्ट्रों के वि लड़ाई की उद्घोषणा कर दी है।

—मास्को रेडियो के अनुसार पिछले ६ सप्ता में रूस में ७ लाख ५० हज़ार जर्मन सैनिक क आए। इनमें से मरे हुए की संख्या लगभग लाख है।

हवाई हमले की सम्भावना से बैंकाक खाली करने की व्यवस्था की जा रही है।

—उत्तरी अफ्रीका के 'ओटन रिपब्लिकेश ने तिथिक्रम की एक मनोरञ्जक गणना करते बताया कि १९४३ में हिटलर का पूर्ण विनाश जायगा।

—सोवियट के अध्यक्ष म० शेरवेकव के नानुसार गत दो मास के रशिया के प्रत्याक्र में १९ जनवरी तक ५ लाख जर्मन मौत के उतारे गए। २ लाख बन्दी कर लिए गए हैं।

—सीलोन गवर्नमेण्ट ने कागज़ के प्रयोग नियन्त्रण करते हुए विज्ञापन, विवाह, निमन्त्र कलेण्डर आदि की लम्बाई चौड़ाई का प्र निश्चित कर दिया है।

—अफ्रीका में त्रिपोली के विजय से इटली बेचैनी सी मची हुई है।

—प्रशान्त महासागर में इमर्जन्सी के स जापानी हवाई जहाज़ों के आश्रय के लिए के बनाये हुए तैरने वाले विशाल द्वीप बनाये हैं। यह द्वीप इन्धन के स्टेशनों का भी काम देते

—आज कल इंगलैंड का दैनिक युद्ध व्य करोड़ ४० लाख पौंड है।

—वेटफास्ट में एक अवसर पर भाषण हुए प्रे० रूज़वेल्ट ने कहा "इसमें कोई सन्देह कि बर्लिन की तरफ बढ़ने के लिये हमारा लम्बा और कठिन है परन्तु हम वहां निश्च पहुंच कर रहेंगे।"

—कैसा विपद्ग्रस्त के पास चर्चिल रूज़वेल्ट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद-प्रचार विभाग

[ले०—यशःपाल जी अधिष्ठाता वेद प्रचार]

(१) कादियां में पं० लेखराम स्मारक मण्डल स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य है कि प्रति वर्ष ४—५—६ मार्च को ज़िला गुरुदास पुर की सब आर्य समाजों की सहायता से बलिदान मेला किया जाया करे। इस वर्ष इस मेले को सफल बनाने के लिये आर्य्य प्रतिनिधि सभा की तरफ़ से म० हंस राज जी भजनोपदेशक १० फ़र्वरी से ज़िला गुरुदास पुर का दौरा करेंगे। पंजाब की सब आर्य समाजों को साधारणतया तथा ज़िला गुरुदास पुर की आर्यसमाजों को इसे सफल बनानेका पूरा२ यत्न करना चाहिये और भारी संख्या में इस मेले में उपस्थित होकर स्वर्गीय पंडित लेखराम जी के प्रति अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करना चाहिये।

(२) लोहारू में आर्य समाज मन्दिर बनना प्रारम्भ हो गया है। परन्तु मन्दिर निर्माण के लिए सभा को धन की बहुत आवश्यकता है। सब आर्य समाजों की सेवा में निवेदन है कि वे कम से कम २५) की राशि इस कार्य के लिये सभा को भेजने की कृपा करें। इस मास के अन्दर आर्य समाज मन्दिर का बन जाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि दो मास तक मंदिर निर्माण का कार्य न हुआ तो आर्य समाज के गौरव की हानि होगी और लोहारू स्टेट में आर्य समाज के प्रचार में बाधा उत्पन्न होगी।

(३) आर्य समाजों की सेवा में कई बार लिखा जा चुका है कि चार आना मिशनफण्ड का धन जो कि उनके पास जमा पड़ा है, उसे शीघ्र सभाकार्यालय में भेज दें। परन्तु इस विषय में आर्य समाजों ने पूरी तरह से अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया है और इस निधि में अब तक बहुत कम धन आया है। आर्य समाजों को चाहिए कि चार आना निधि का धन शीघ्र ही सभा कार्यालय में भेज दें।

(४) आर्य समाजों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि खालडा ज़िला लाहौर में पं० रामचन्द जी आर्योपदेशक तथा म० बलदेव जी भजनोपदेशक के प्रयत्न से आर्यसमाज स्थापित हो चुकी है। जिस के प्रधान डा० टेकचंद जी; मन्त्री डा० ख़ज़ानचन्द जी तथा कोषाध्यक्ष पं० शामचन्द जी निर्वाचित हुए हैं।

(५) आर्य समाज कसौली का वार्षिक चुनाव पं० वीरेन्द्र कुमार उपदेशक की प्रधानता में निम्न प्रकार हुआ:—प्रधान पं० गोविन्द राम जी, उपप्रधान लाला संतराम जी, कोषाध्यक्ष श्री बिहारी लाल जी, पुस्तकाध्यक्ष म० लछमन दास जी,

आशा है कि पं० गोविन्दराम जी के प्रयत्न से आर्य्य समाज कसौली में नव जीवन का संचार होगा।

(६) जामपुर निवासी चौधरी सोभराज जी तथा म० गणेशदत्त जी के प्रयत्न से वेद प्रचारिणी सभा ज़िला डेरागाज़ी खानमें अतिप्रशंसनीय कार्य कररही है ज़िलेकी सब आर्यसमाजों को इस सभा का पूर्ण सहयोग करना चाहिए। इस समय सभा की तरफ़ से पं० तीर्थराम जी तथा म० आशानन्द जी की चिमटा मण्डली ज़िला डेरा गाजीखां में प्रचार का कार्य कररही है। सब आर्य समाजों का कर्त्तव्य है कि वेद प्रचार के लिए अधिक से अधिक सहायता देने की कृपा करें।

(७)सभा का वर्ष समाप्त होने में केवल ३ मास रह गए हैं। बजट को पूरा करने के लिए अभी २००००) की और आवश्यकता है। वेद प्रचार ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। वेद प्रचार निधि का पूरा करना प्रत्येक आर्य समाज का कर्त्तव्य है। क्यों कि वेदप्रचार के लिए आर्यसमाजों के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान से भी धन प्राप्त होना कठिन है। आर्य समाजों को इस विषय में अपने कर्तव्यों का स्वयं पालन करना चाहिये। आर्य समाजों को यह नहीं सोचना चाहिये कि जिस समय अधिष्ठाता वेद प्रचार घाटा पूर्ति के लिए स्वयं धन संग्रह के लिये आयें उसी समय सहायता की जाए। परन्तु इस निधि के लिये आर्य समाजों को स्वयं ही अधिक से अधिक धन भेजना चाहिए।

(८) आजकल सिबी (बिलोचिस्तान) में हज़ारों पुरुष बाहर से आये हुए हैं। उन लोगों तक आर्य समाज का सन्देश पहुँचाने के लिए सभा ने श्री पं० गुरुदत्त जी स्तानक तथा म० आत्मदेव जी भजनोपदेशक को सिबी भेजा है। वे वहां १० दिन तक कथा कर के आर्य समाज का संदेश देने का यत्न करेंगे।

(९) श्री पण्डित क्षेमचन्द जी आर्योपदेशक की धर्म पत्नी का लम्बी बीमारी के पश्चात् राजयक्ष्मा से देहान्त हो गया है। सभाकी तरफ से उन के तथा अन्य दुखित सम्बन्धियों के साथ हार्दिक समवेदना है।

(१०) सभा की प्रार्थना पर श्री स्वामी मंगलानन्द जी महाराज ने १६ फरवरी से ३१ अप्रैल तक सभा के साथ सहयोग देना स्वीकार कर लिया है। वे पहले१ मास ज़िला लुधियाना तथा जालन्धर की आर्य समाजों का दौरा करेंगे उसके पश्चात् आर्य समाजों के उत्सवों में सम्मिलित होने की कृपा करेंगे। उनका प्रोग्राम तिथिवार शीघ्र ही आर्य में प्रकाशित कर दिया जायगा। मैं सभा की तरफ से उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

(११) गुरुदत्त भवन में प्रातःकाल प्रति दिन दैनिक सत्संग होता है जिसमें लाला चिरंजीत लाल जी वानप्रस्थी बड़ी मनोहर कथा कर रहे हैं। म० बलवन्त राय जी संगीताचार्य्य के भजन होते हैं।

(१२) आज कल श्री पं० दलपति जी, श्री पूर्णचन्द जी, श्री पं० हरदयालु जी, श्रीमती द्रौपदी देवी जी, श्री म० हरपाल जी और म० हरिश्चन्द्र जी अवकाश पर हैं।

(१३) प०हरपालजी आर्योपदेशक की धर्मपत्नी चार मास से प्लूरिसी से पीड़ित हैं तथा श्री पं० हरदयालु जी का पुत्र सख्त बीमार है। परमात्मा से प्रार्थना है कि इनको शीघ्र आरोग्यता प्रदान करे।

(१४) श्रीमती द्रौपदीदेवी जी उपदेशिका के सुपुत्र म० ज्ञानचन्द जी का विवाह कुमारी शान्ता देवी सुपुत्री पं० चरणदास जी प्रधान आर्य समाज लाकाना (सिन्ध) के साथ १८ जनवरी को बड़े समारोह से गुजरात में हुआ है। हम वर वधू को दीर्घ आयु के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(१५) आर्यसमाज बिकटगंज मरदान का वार्षिकचुनाव निम्न प्रकार से हुआ। प्रधान मास्टर लेखूराम जी, उपप्रधान म० दीवानचन्द जी मंत्री म० नानक चन्द जी, उपमंत्री बाबा महन्त सिंह जी, कोषाध्यक्ष बा० नौनतराम जी निर्वाचित हुए

घोषणा पत्र

इस सभा से सम्बद्ध जिन आर्य्य समाजों प्रतिनिधि सभा में हैं उनमें से निम्नलिखित आ समाजों से १९९८ का दशांश अभी तक प्राप्त न हुआ है। एक नोटिस पूर्व भेजने पर भी दशां नहीं आया। अन्तरंग सभा ने उन्हें २०—२—४३ त सभा कार्यालय में दशांश पहुंचा देने का ए अवसर और दिया है अतः उन्हें चाहिये २१—२—४ से पूर्व अपना १९९८ का दशांश भेज दें। १९९९ समाप्त हो रहा है। अतः यथा समय यह दशां भी भेजने का ध्यान रखें।

करनाल, शाहदरा देहली, जण्डियालागु नौशहरा ढाला, लोंधरा, मजीठा, स्यालकोट शह फुलखन, खेम करण, फिलौर, पक्की ठट्टी, कालांवाल जतोई, पिण्डी भट्टियां, शाहदरा लाहौर, मोरिण्ड काहनानौ, विशनाह, थम्बड, मुलतान शहर, को रियां, खुड्डीयां, खानगढ़, सन्तनगर लाहौर, सर सिद्ध, सुचानियां, सरगोधा, वडोर, महतम, झें अतरा, शाहदरामिल्ज़, कालेकी, लालकुर्ती अम्बा शुनाहबाद, ननकानासाहिब, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कस झंग शहर, मिण्टगुमरी।

सभा मंत्री

दयानन्द उपदेशक विद्यालय

दयानन्द उपदेशक विद्यालय की वार्षि परीक्षायें २२ मार्च से आरम्भ होंगी। पढ़ा समाप्ति पर आ रही हैं। विद्यार्थी मनोयोग पू तय्यारी में लगे हुए हैं। सब विद्यार्थी निरोग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

वार्षिक परीक्षाएँ तथा शारीरिक उन्नति

गुरुकुल विश्वविद्यालय के अन्तर्गत वेद, आयुर्वेद तथा साधारण महाविद्यालयों की वार्षिक परीक्षाएँ १७ मार्च ४३ से प्रारम्भ होंगी। छात्र-गण परीक्षा की तैयारी बड़ी लगन तथा उत्साह से कर रहे हैं। साथ ही ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य को उन्नत करने के लिए गुरुकुल के आचार्य तथा आश्रमाध्यक्ष भली प्रकार मनो योग दे रहे हैं। सायंकाल सन्ध्या हवन से पूर्व न्यूनातिन्यून एक घण्टा शारीरिक पुष्टि के लिए व्यायाम आदि करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से श्री पं० अशोक कुमार वेदालंकार आगए हैं और ब्रह्मचारियों को लाठी, गतका, जिम्नास्टिक आदि सिखा रहे हैं। श्री बिरजा जी द्वारा नियुक्त दूसरे व्यायाम-शिक्षक रिंग्स, बोझ उठाना, पैरललबार, मांस पेशी निर्माण सम्बन्धी शिक्षा पाश्चात्य-पद्धति से अच्छी तरह दे रहे हैं। इन सब प्रकार के व्यायामों में ब्रह्मचारी सन्तोषजनक उन्नति कर रहे हैं।

आचार्य जी की उपदेश-माला

प्रतिदिन प्रातःकाल की सन्ध्या के अनन्तर महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के बीच आचार्य श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार 'व्रत-महिमा' विषय पर एक सुन्दर, सारगर्भित तथा विद्यार्थि-जीवन के लिए परमोपयोगी उपदेश माला दे रहे हैं। इस विषय पर अब तक लगभग २५ उपदेश हो चुके हैं और सम्भवतः अभी इतने ही और भी होंगे। इन उपदेशों द्वारा आचार्य जी ने बड़ी सुन्दरता से यह समझाया कि किस प्रकार एक व्रती-ब्रह्मचारी अपने व्रत के प्रभाव से अन्तःकरण के मद, मोह, अहंकार, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या आदि समस्त दुर्गुणों पर विजय पा लेता है। इसी विषय पर एक सरस व्याख्यान स्थानीय आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में भी आचार्य जी ने गत २३ जनवरी को दिया।

आयुर्वेद-महाविद्यालय

गुरुकुल का आयुर्वेद-महाविद्यालय उन्नति की दिशा में प्रगति शील है। श्रद्धानन्द-सेवाश्रम का कार्य आयुर्वेद-महाविद्यालय के साथ होने से विद्यार्थी सहज ही रोग पहिचानना और उसकी उपयुक्त चिकित्सा करना सीख जाते हैं। गत ३ मासों में मलेरिया और टायफायड के दिनों में आयुर्वेद महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने जनता की प्रशंसनीय सेवा की। इस समय भी आस पास के इलाकों से पर्याप्त संख्या में रोगी यहां आते हैं और उत्तम परिचर्या से नीरोग होकर सन्तुष्टभाव से घर चले जाते हैं। अब तक इस चिकित्सालय में ५० रोगियोंके रहनेके लिए प्रबन्ध है। गरीबोंको औषधि के अतिरिक्त खान-पान, वस्त्र, बिस्तर आदि भी गुरुकुल से दिया जाता है। श्रद्धानन्द-सेवाश्रम को को और भी अधिक विशाल तथा पूर्ण बनाने का विचार गुरुकुल के अधिकारियों का है। ताकि पब्लिक की अधिक से अधिक भलाई हो सके उदार दानी महानुभावों से योग्य सहायता अपेक्षित है।

आयुर्वेद महाविद्यालय के शिक्षा-विभाग में इस मास दो प्रोफेसरों की वृद्धि हुई है जिन में से प्रथम गुरुकुल के भूत पूर्व प्रोफेसर श्री डा० राधाकृष्ण जी B. Sc. M. B. B. S. हैं। ये शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान आदि का अध्यापन करेंगे। दूसरे श्री प्रो० चम्पत स्वरूप जी B. Sc. हैं। ये विद्यार्थियों को वनस्पति शास्त्र, प्राणि-शास्त्र आदि विषय पढ़ावेंगे। इनके अतिरिक्त अन्य एक प्रोफेसर भी शीघ्र ही आने वाले हैं। इस प्रकार आयुर्वेद-महाविद्यालय का शिक्षा विभाग सर्वथा पूर्ण हो जायगा।

गुरुकुल में एक्स-रे का प्रबन्ध

६ मास पूर्व कानपुर के सेठ श्रीयुत पद्मपति सिंहानिया ने आयुर्वेद महाविद्यालय को ५ हज़ार रुपया इसलिए प्रदान किया था कि उससे एक एक्स-रे प्लाण्ट खरीद कर जनता की सेवा की जाय। किन्तु महायुद्ध के कारण उतने दामों में अच्छा एक्स-रे प्लाण्ट न मिल सका। अब दानी-महानुभाव ने ८ हज़ार रुपए में अच्छा एक्स-रे खरीद लेने के लिए स्वीकृति दे दी है; तदनुसार कम्पनी को आर्डर दे दिया गया है। आशा है कुछ दिनों में गुरुकुल में एक्स-रे आ जावेगा।

स्वास्थ्य-समाचार

ब्र० सत्य विजय १२ श्रेणी टान्सिल, रमेश १४, प्रतापनारायण २ चोट, बलदेव ११, सत्येन्द्र ५, सुखदेव २, वासुदेव २, रमेशचन्द १म. मलेरिया ज्वर, राजेन्द्र (पटना) १ फोड़ा, जगदीश (रुड़की) ३ शीतपित्त, राजेन्द्र २ नेत्राभिष्यन्द। गत सप्ताह उपरोक्त ब्रह्मचारी रोगी हुए थे अब सब स्वस्थ हैं।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी

आर्य संस्कृत का सर्व श्रेष्ठ विद्या मन्दिर है। यह मुख्य जातीय संस्था ४० वर्ष से निरन्तर देश की सेवा कर रही है। प्रातः स्मरणीय अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वैदिक संस्कृत और वैदिकसाहित्य के पुनरुद्धार के लिये इस संस्था की नींव डाली थी।

इस विशाल संस्था का वार्षिकोत्सव जो मास अप्रैलमें ईस्टर की छुट्टियोंमें मनाया जाता है निकट आरहा है। मैंने रुग्णावस्था तथा शारीरिक दुर्बलता होते हुए भी गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य भाइयों के भरोसे धन संग्रह का कार्य प्रारम्भ दिया है। मुझे विश्वास है कि गुरुकुल के प्रेमी सज्जन तथा मेरा मित्र मण्डल पवित्र में अधिक से अधिक सहायता कर मेरा उ बढ़ाएंगे और अपने अपने भाग का धन आनन्द-आश्रम लुधियाना के पते पर भेज कृतार्थ करेंगे।

आप का पुराना सेवक—लब्भूराम

—श्यामार्य गुरुकुल राजौर में ता० देवद अम्बुतमा बुजुर्ग जि० पो० नांदौर में श्री पं० लाल जी की स्मृति में दक्षिण हैदराबाद में गया है।

श्री चमूपति साहित्यविभाग के प्रका

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २।) Immortal Sayings ofDayan
जीवन ज्योति १।) दयानन्द रत्न माला
स्वाध्याय संग्रह ।॥) वैदिक धर्म की जय
वैदिक स्वर्ग ॥) यास्क युग
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास
देव यज्ञ ।) Glimpses ofDayanan
पीयूषबिन्दु ।-) त्रिदेव निर्णय
निरुक्त का मूल वेद में

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे पर मिल सकेंगी।

Hindu America
Light of Truth

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य वि
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

साप्ताहिक आर्य

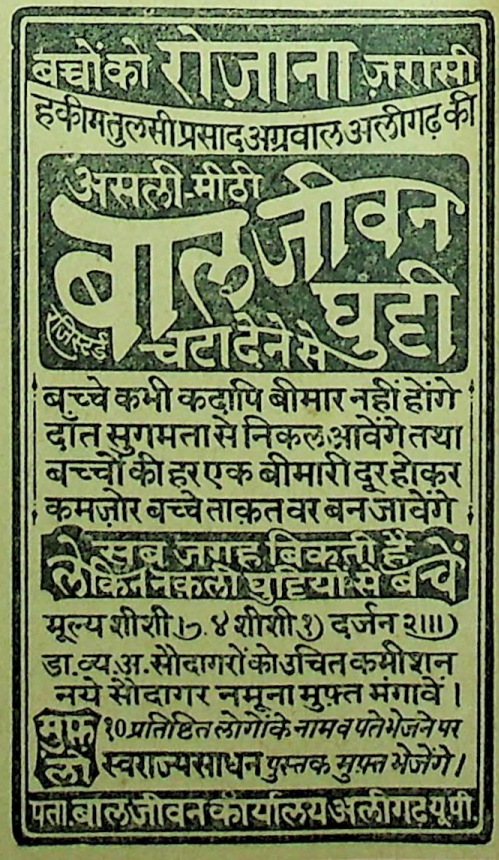

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित

सम्पादक—भीमसेन सभा-मन्त्री

Regd. N. L. 5

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ११

वार्षिक मूल्य ४)

७ फरवरी १९४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

[६]

ओ३म् जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वा न आसनि ।

हे विद्वान् पुरुष ! (आसनि) अपने मुखमें (हव्या) भोजन करने योग्य पदार्थों को (जुह्वानः) खाने वाला (त्वम्) तू (यः जो (विदुषां व्यवहारः) विद्वानोंका आहार व्यवहार (सप्रथस्तमं) अतिविस्तारयुक्त (देवप्सरस्तमं) विद्वानों को अत्यन्त ग्रहण करने योग्य व्यवहार (वचश्च) और वचन है (तं) उसको (जुषस्व) सेवन कर ।

ये मनुष्या युक्ताहारैर्ब्रह्मचारिणः स्युस्ते शरीरात्म सुख माप्नुवन्ति ।

ऋग्वेद भाष्य दयानन्द ऋ० म० १ । सू० ७५ । म० १ ।

जो मनुष्य युक्ति पूर्वक भोजन पान और चेष्टाओं से युक्त ब्रह्मचारी हों वे शरीर और आत्मा के सुख को प्राप्त होते हैं ।

शारीरिक सुख और आत्मिक सुख की प्राप्ति के लिये हरेक जीवात्मा यत्नशील है। इस वेदमन्त्र में दोनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति के साधन बताए गये हैं । इसमें विद्वान् को प्रेरणा की गई है कि हमें अपना आहार विहार भोजनाछादन नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य पूर्वक बिताना चाहिए ।

जैसा भोजन वैसा मन—जैसा मन वैसा वचन । यदि हमारा भोजन खान पान नियम पूर्वक होगा तो हमारा मन और वचन भी नियम पूर्वक होंगे जो लोग मिताहार विहारी नहीं होते उनका वाणी पर संयम नहीं होता । वाणी पर संयम करने के लिये सत्य संयत वाक् होने के लिये हमें भोजन आहार विहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए । इसी भावना को मनुस्मृति में इस श्लोक से प्रकट किया गया है ।

सायं प्रातर्द्विजातीना मशनं स्मृति चोदितम् ।
नान्तरा भोजनं कुर्यादग्निहोत्र समो विधिः ॥

मनुष्य को दैनिक अग्नि होत्र की भांति मुख्यतया भोजन के विषय में भी भारी अन्तर है । पशु प्रायः हर समय जब भी भोजन मिल जाय खाते रहते हैं । पशु वृत्ति वाले मनुष्य भी हर समय या जब भी कुछ मिल जाय खाना शुरू कर देते हैं । परन्तु इससे शारीरिक और आत्मिक सुख के स्थान पर दुःख मिलता है हमें इस वृत्ति को रोकना चाहिए । गीत में भी—

'युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

श्लोक द्वारा बताया है कि योगाभ्यास करने वाले को भी तभी सुख प्राप्त होगा यदि उसका खान पान जागरण शयन और आहार विहार नियम पूर्वक नियत समय पर होगा ।

इसलिये इस वेद मन्त्र के आदेशानुसार हमें आत्मिक सुख के लिये अपनी दिन चर्या को नियमानुकूल बनाने का विशेष यत्न करना चाहिए ।

—भीमसेन

अदिति

(एक आध्यात्मिक पत्रिका)

यह पत्रिका योगिराज श्रीअरविन्द का संदेश आप तक पहुँचायेगी, उनकी योगसाधना-पद्धति, दर्शन आदि विषयक सिद्धान्तों, विचारों का प्रकाशन करेगी । वे जिस विज्ञानमय तत्त्व तथा उस के द्वारा होने वाले जिस आध्यात्मिक पूर्ण जीवन, मनुष्य के दिव्यत्व, देव जाति व दिव्यसृष्टि का वर्णन करते हैं उसका प्रतिपादन करेगी ।

आज संसार भर में नित्य नये आन्दोलन चलते दीखते हैं । उन सब का उद्देश्य कोई विशेष सुधार होता है । परन्तु श्री अरविन्द की गम्भीर दृष्टि यह बतलाती है कि हमारे सब दुःखों की जड़ में हमारी राग-द्वेष वाली सुक्ष्म मनुष्य चेतना है । इस चेतना की अपूर्णताओं को दूर कर देना ही सब कष्टों का एकमात्र उपाय वर्षों से निरन्तर प्रयत्न में लगे हुए हैं ।

निश्चय ही, यह सन्देश बड़े महत्व का है । को ही हिन्दी-भाषा-भाषियों को सुनाना इस पत्रि का लक्ष्य है । यह हिन्दी जगत् के सम्मुख श्रीअर की योग-साधना, दर्शन, काव्य, कला, स आदि सम्बन्धी सब विचारधाराओं क —भीमसेन आशा करते हैं कि हिन्दी संसार × अरविन्द के जीवन-दायक विच करेगा । होते रहे ।

इस पत्रिका का 'अदिति' नाम के पश्चात् जो ही पसंद किया हुआ है । यह हमें इस अ हिंदू लिए उनका आशीर्वाद है । हम विश्वास-पूर्वक इ शुरू करते हैं और सहयोग की आशा करते हैं ।

इस पत्रिका का प्रथम अंक शीघ्र ही फर्वरी मा में निकल जाय ऐसा संकल्प है । यह पत्रिका अभी ज तक कि कागज़ की तंगी है त्रैमासिक रूप में प्रक होगी, पीछे से मासिक करदी जायगी । इसका अगा मूल्य ४) होगा । ग्राहक बनने आदि के सम्बन्ध पत्र-व्यवहार "प्रबन्धक 'अदिति', डाकपेटी ८५, न देहली" इस पते से कीजिए ।

आपका बन्धु
अभय देव
सम्पादक 'अदिति'

मार्गशीर्ष पूर्णिमा १९९९

लोहारू आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण के लिए पहिले भी अपील की जा चुकी है । यदि १ मार्च तक वहां मन्दिर न बन सका तो रियासत अपने नियमों के अनुसार इस जमीन को वापिस ले सकती है । इस लिए पंजाब की प्रत्येक आर्य समाजों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे कम से कम पच्चीस पच्चीस रुपये शीघ्र ही सभा के कार्यालय में भेज कर अपने कर्त्तव्य का पालन करें ।

यशपाल
अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

दक स्वाध्याय—

ाता-पिता तुझे न बचा सकेंगे!

(ले०—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति)

[६]

स्त्वा सर्वैरभिष्यामि पाशैरसावामुष्यायणामुष्याः
त्र । तानु ते सर्वाननुसंदिशामि ॥

अथर्व ४।१६।६

अर्थः—(आमुष्यायण) हे अमुक पुरुष के पुत्र, और (अमुष्याः) अमुक स्त्री के (पुत्र) पुत्र [अपराधी पुरुष] (त्वा) तुझे (सर्वैः) सब (पाशैः) पाशों से (अभिष्यामि) बांधता हूं (तान्) उन (सर्वान्) सबको (उ) निश्चय से (ते) तेरे लिये (अनुसंदिशामि) भेजता हूँ ।

ऊपर के मन्त्र में वरुण को समाम्य आदि विशेषणों से कहा गया था। और इससे भी ऊपर के मन्त्र में वरुण की अन्य कई प्रकार से महिमा कही ... प्रस्तुत मन्त्र में वरुण भगवान् स्वयं बोलते ... ते हैं कि हे पा... ...चारी व्यक्ति उपर्युक्त ... तुझे अपने पाशों से बांधता ... कृत पाश बन्धन में सन्देह न ... प्रस्तुत मन्त्र में वे उत्तम पुरुष में ... जिसका भाव यह है कि भगवान् ... मुंह से कह रहे हैं कि पापी को ... में अवश्य बंधना पड़ता है इस लिये इसमें किसी को सन्देह नहीं होना चाहिये । मन्त्र में भगवान् अपराधी को अमुक पुरुष और अमुक स्त्री के पुत्र इस प्रकार के शब्दों में सम्बोधन कर रहे हैं जिसका भाव यह है कि पापाचारी व्यक्ति अपने अपने पिता* और माता को समझ लें। पुनः यहां पर पापाचारी के माता पिता की ओर निर्देश करने का भाव यह है कि कोई चाहे किसी छोटे से छोटे बड़े से बड़े पिता का पुत्र हो और चाहे किसी छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी माता की सन्तान हो यदि वह पापाचारी है तो उसे वरुण के पाशों में बंधना ही पड़ेगा। किसी का ऊँचा या छोटा जन्म वरुण द्वारा मिलने वाले उसके पाप कर्म के फल कष्ट भोग से उसे बचा नहीं सकता। वरुण की दृष्टि में जन्म और जाति का पक्षपात नहीं है। वरुण के पाशों से बचने का एक ही उपाय है वह यह कि हम अपने आप को सर्वथा निष्पाप और निष्कलंक बना लें।

हे मेरे मन! तू भी अपने पापकर्मों को त्याग दे। नहीं तो तुझे भी उनके फल भोगने के लिये कष्ट के बन्धन में बँधना पड़ेगा। कोई सम्बन्धी तेरी रक्षा न कर सकेगा।

*अधिराष्ट्र अर्थ में इस मन्त्र का जो भाव होगा वह हमारे 'वेदों के राजनैतिक सिद्धान्त" ग्रन्थ में पढ़िये।

हमारे देश का पशु धन

पृष्ठ ५ का शेष

परन्तु फिर भी सवारी और टांगों के लिये इस जानवर को पालना अत्यन्त आवश्यक है। मार्ग शून्य, जंगलों, नदी के किनारों में यात्रा के लिये यही एक प्राणी अत्यधिक उपयोगी है। नदी तीर, तालाब, बाग, बगीचे या और अन्य स्थान जहां घोड़ों की चरने की उत्तम व्यवस्था हो सके वहां अब भी किसान लोगों के लिए घोड़ों की पालना अधिक लाभप्रद होगा।

गधे—गधा जानवरों में अछूत समझा जाता है। परिणामतः इसको पीढ़ियों से उत्तम चारा न मिलने के कारण यह दुर्बल, तुच्छ, तथा हीन माना जाने लगा है। ईजिप्ट, ईरान और दक्षिण इटली में गधे को तुच्छ न समझा जाकर इस की उपयोगी प्राणियों में गणना की जाती है। वहां सवारी, भारवाहन, पानी, खेती, वा तेल के कोल्हू के लिये इसका बहुत उपयोग होता है। हिन्दुस्तान में भी यदि इस प्राणी की अस्पृश्यता को दूर कर दिया जाए तो गांवों, पहाड़ी प्रदेशों में गरीबों के लिये यह एक अत्यन्त उपयोगी जानवर सिद्ध हो सकता है।

पंजाब और सरहद प्रान्त में इस प्राणी की नसल को सुधारने का कुछ प्रयत्न शुरू हुआ है। झालावार व अहमदाबाद के गधे सफेद व सशक्त होने के कारण महाराष्ट्र में इनके समूहों के समूह बिकते हैं। परन्तु नसल को सुधारने का काम धोबी कुमार इत्यादि लोग तो गरीबी के कारण कर ही नहीं सकते और अधिक सवर्ण लोग इस प्राणी को अस्पृश्य समझते हैं। इस लिये समझ में नहीं आता कि यह उपयोगी काम कैसे किया जाय। इसका एक मात्र उपाय यह है कि जिस प्रकार हम मनुष्यों में अस्पृश्यता दूर कर रहे हैं वैसे इस प्राणी में से भी अछूतन निकाल दिया जाए। परिणामतः इसके स्पृश्य समझ कर अगर हमने इस प्राणी का संरक्षण किया तो इससे गरीब लोगों को अत्यधिक फायदा होगा।

बकरी:—पशुशास्त्र को समझने वाले विद्वान् लोगों का कहना है कि अगर हम भारत की दूध देने वाली बकरी की भिन्न २ नसलों को सुधारने का प्रयत्न करें तो उसका दूध ५ सेर तक भी बढ़ सकता है। बकरी को 'गरीबों की गाय' कहना पूर्ण रूप से यथार्थ प्रतीत हैं। यह जानवर खेतों में बचे खुचे घास झंखाड़ खाकर जीता है। घर में इस के लिये कोई विशेष चारे का खर्च नहीं आता। इसलिये बकरी को पालने में कोई खास खर्च नहीं पड़ता। यद्यपि इसको महार मांग और चमार लोग ही अधिक पालते हैं तो भी हमें उस प्राणी को अपनाने में अपना अपमान न समझना चाहिये। बकरी का दूध छोटे बच्चों, दुर्बल मनुष्यों ... रोग के रोगियों के लिये अत्यन्त उपयोग... है। बकरियों का खाद खेती की फसल ... अन्य खादों की उपेक्षा दुगुना तिगुना प्रभाव... है। गांव और देहात के लोग किसानों ... सहकार्य करके अगर बकरियों के रेवड़ों ... तो इससे उनको बहुत लाभ हो सकता है।

बकरी की एक ऐसी भी नसल है जिस... की शालें बनती हैं। योरुप और अमरीका ... बालों का बहुत अधिक मात्रा में व्यापार ... इस नसल का मूलस्थान एशिया माइनर है ... स्तान के उत्तर भाग में इस नसल का प्रस... के कारण वहां भी इसके बालों का खूब ... होता है। दुःख है कि हिंदुस्तान के अन्य ... में भी जहां यह व्यापार हो सकता है हम ... ध्यान अभी तक नहीं गया।

भेड़ें—यह प्राणी ऊन के लिये प्रसि... इसकी भी नसलें भिन्न २ प्रांतों में हैं, परन्तु ... सुधारने के लिये हमने विशेष ध्यान नहीं ... योरुप के सब देशों तथा अमरीका ने स्पेन से ... जाति की लम्बी ऊन वाली भेड़ें अपने देश ... जाकर उनको बढ़ाने का प्रयत्न किया है।

भेड़ों के खाद का भी खेती के लिये बहुत ... योग होता है। क्योंकि इस प्राणी पर भी ... की तरह अधिक खर्च नहीं पड़ता इसलिये ... बहुत आसानी से पाला जाता है। भेड़ का ... गाढ़ा और मक्खन वाला होने के कारण ... दूध में मिला कर उसका घी भी बनाते हैं। ... (मद्रास) में भेड़ें ३—४ सेर दूध देती हैं।

उपर्युक्त लेख से स्पष्ट है कि हमें भार... पशु सम्पत्ति की तरफ ध्यान देने से हमें ... प्रकार के लाभ हो सकते हैं।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं ...
रत्नधात...

[ब्र० प्रताप एकादश गुरुकुल कांगड़ी]

अग्नि की स्तुति मैं करूँगा,
यज्ञ का जो है पुरोहित।
देव है, द्युतिमान है जो,
और प्रति ऋतु में सुपूजित।

सुखों का दाता सखे! जो
और दुःख जिसको विगर्हित।
रत्न का धाता तथा जो,
रत्न-दाता भी सुपरिचित

अग्नि की स्तुति मैं करूँगा,
यज्ञ का जो है पुरोहित॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य

रविवार ७ फरवरी १९४३

गुरुकुल आंदोलन

फ़रवरी, मार्च अप्रैल से गुरुकुल पर्व शुरू होता
कारवरीमें गुरुकुल इन्द्रप्रस्थका वार्षिकोत्सव है।
में गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव होना
चात हुआ है। अप्रैल में ईस्टर के दिनों में गुरु-
कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव होगा।
अलावा रोहतक गुडगांवा लुधियाना आदि
रुकुलों के उत्सव भी इन्हीं दिनों के आस पास
हैं।

ह म इस अवसर पर आर्य जनता का ध्यान
ल आंदोलन की ओर आकृष्ट करना चाहते
वर्तमान युग में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली—
ा आर्य जाति की शिक्षा पद्धति को जीवित
ा रूप में संचालित करने का श्रेय आर्यसमाज
प्राप्त है। इस समय स्वदेश-विदेश सब जगह
लित शिक्षा पद्धतियों में भारी परिवर्तन की आ-
कता अनुभव की जा रही है। भारत में प्रच-
शिक्षा पद्धतियों में अंग्रेज़ीपन तथा कृत्रिमता
ंशा को दूर कर भारतीयत्व और स्वाभाविकता
स्थान देने का यत्न किया जा रहा है। गुरु-
आंदोलन के कारण इन विचारों के फैलने
ाफ़ी सहायता प्राप्त हुई है। आर्य समाज में
समय जो जागृति चेतनता और असन्तोष
ईं देता हैं उसका मुख्य कारण गुरुकुल आंदो-
है। गुरुकुल आन्दोलन ने आर्य समाज के
स्वावलम्ब और मौलिकता की भावना
की है। भारत की अन्य सुधारक संस्थायें
श्चियन जातियों तथा पाश्चात्य विचारों के
चौंध में आकर अपने पन को भूल कर उनके
चलने लग गई थीं। इन संस्थाओं ने शिक्षा
के लिये अपने नेताओं तथा कार्यकर्ताओं को
भेजना आवश्यक समझा। परन्तु आर्य-
जा ने गुरुकुल आन्दोलन को चलाकर इसकी
देश देशान्तरों के स्वतन्त्र विचारकों को
ष्ट किया। स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व ने
विदेश यात्रा किये बिना प्रतिभाशाली विदे-
ों को गुरुकुल की ओर आकृष्ट किया। पं० गुरु-
के मौलिक विचारों तथा अलौकिक प्रतिभा
नेक धर्मों के विद्वानों को आर्य समाज की
की छान बीन करने वाले विचारों की ऊष्मा से
युरोपियनों को गुरुकुल तथा आर्य समाज की ओर
आकृष्ट किया। पंजाब में व्यक्तियों की दृष्टि से
गुरुकुल आंदोलन के चलाने वाले पं० गुरुदत्त जी
स्वामी श्रद्धानन्द जी और आचार्य रामदेव जी कहे
जा सकते हैं। वर्तमान समय का गुरुकुल आन्दो-
लन इन तीन व्यक्तियों के प्रयत्नों का फल है।
समयानुसार इस समय गुरुकुलों में कई परिवर्तन
अपेक्षित हैं। गुरुकुलों के संचालक इस दिशा में
सोच भी रहे हैं। परन्तु यह परिवर्तन तभी हो
सकते हैं यदि आर्य जनता तथा गुरुकुल प्रेमी इस
गुरुकुल पर्व में गुरुकुल के प्रति अपने कर्तव्य का
पालन करेंगे। इस लेखमाला द्वारा हम आर्य के
पाठकों के सामने गुरुकुल आंदोलन को सफल
बनाने के उपायों पर प्रकाश डालेंगे। परन्तु इस
लेख को समाप्त करते हुए हम आर्य भाइयों तथा
गुरुकुल प्रेमियों से बल पूर्वक निवेदन करना चाहते
हैं कि वे स्वर्गीय पं० गुरुदत्त जी, स्वर्गीय स्वामी
श्रद्धानन्द जी तथा स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी की
स्मृति में उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने के
लिये इन तीन महीनों में विशेष यत्न करें। अपने
सन्तानों को गुरुकुल में भेजें। गुरुकुल के लिये
धन-संग्रह करें। धन संग्रह के लिये आई हुई भिक्षा
मंडलियों को सहयोग दें।

× × × ×

द्वाबा कालेज जालंधर—

मुझे पं० ज्ञानचन्द जी सभा उपप्रधान के साथ
२ फ़रवरी को जालंधर शहर जाने का मौका हुआ।
वहां ३. २. ४३ को दुपहर ला० वृन्दावन जी के
साथ जालंधर में आर्य समाज के शिक्षणालयों के
देखने का भी अवसर मिला। द्वाबाहाई स्कूल और
कन्या महाविद्यालय जालंधर तो पुरानी संस्थाएं हैं।
आर्य समाज के इतिहास में इन संस्थाओं का स्मर-
णीय स्थान है। इनको इस वार भी देखा। परिवर्तित
अवस्थाओं के कारण इनमें कुछ परिवर्तन हो रहे हैं।
आशा है यह परिवर्तन आर्य समाज और आर्य
जाति के गौरव को व्यापक और बढ़ाने की दृष्टि से
किये जायेंगे। इन दोनों संस्थाओं के इलावा द्वाबा
कालेज को देखने का अवसर मिला। इसकी शानदार
बिल्डिङ्ग और युनिवर्सिटी शिक्षा पद्धति की कालेज
विभाग की उच्च से उच्चशिक्षा (फिजिक्स कैमिस्ट्री
बायालोजी) का साधन सम्पन्न उत्तम प्रबन्ध देख
कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। कालेज के प्रिंसिपल श्री
रा० स० मुकन्दलाल जी धवन प्रसिद्ध आर्य समाजी
व्यक्तियोंमें सुपरिचित हैं। इस समय कालेजमें ४०० विद्यार्थी शिक्षा पारहे हैं। अभी कालेज को खुले हुए लगभग १॥ साल का अरसा हुआ है। इतने थोड़े समय में इतिहास, अर्थशास्त्र आदि विषयोंके साथ सायंस बायोलोजी आदि का साधनयुक्त प्रबन्ध कालेज के खोलने के लिये संचालकों को जो यत्न करना पड़ा था—जिस विरोध का सामना करना पड़ा—वह भी ख़ास बात है। इस कालेज को सफलता पूर्वक संस्थापित करने तथा संचालित करने का मुख्य श्रेय श्री० ला० वृन्दावन जी और श्री रा० स० मुकन्दलाल जी धवन प्रिंसिपल को है। श्री वृन्दावन जी ने दिन रात—वृद्धावस्था में भ्रमण कर इसके लिये धन संग्रह तथा सामान संग्रह करने में अनुकरणीय यत्न किया। श्री रा० सा० मुकुन्दलाल जी धवन के व्यक्तित्व ने कालेज की शिक्षा के Standard को आकर्षक बनाने में विशेष भाग लिया है। जालंधर, हुशियारपुर तथा द्वाबा के आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब से सम्बद्ध आर्य पुरुषों तथा आर्य समाजों को चाहिए कि अपने पुत्रों को अवसर आने पर इसी कालेज में भेजें। जालन्धर डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल पं०मेहरचन्दजी की दलबन्दी पूर्णभावनाओं के कारण लाचारी में यह कालेज खोलना पड़ा है। इसलिये इस विषय में समाजों को उनके द्वारा फैलाये भ्रमों से सावधान रहना चाहिए। —भीमसेन

× × × ×

शुद्धि आंदोलन नवीन नहीं है:—

अन्य नव मुसलिम बराबर शुद्ध होते रहे।

(१) कासिम की सिंध विजय के पश्चात जो हिन्दू मुसलमान बना लिये गये थे, उनको पुनः हिंदू धर्म में दीक्षित किया गया।

(२) अरब विजेता जो सिंधु नदी के पश्चिमी किनारे पर बस गये थे, अपनी राज शक्ति का ह्रास होने पर हिन्दू समाज में सम्मिलित कर लिए गये।

(३) दिल्ली के महाराज जैपालका पौत्र सुखपाल जिसे महमूद गज़नवी के शत्रु अब्दुल्लअली ने मुसल-मान बना लिया था, मुलतान का शासक बनने पर फिर हिंदू समाज में सम्मिलित हो गया।

(४) अलाउद्दीन खिलज़ी के पुत्र मुबारक के प्रेमी तथा उत्तराधिकारी खुसरो शाह ने पुनः अन्य मित्रों के सहित हिंदू धर्म स्वीकार कर के राज-भवन में मूर्तियाँ स्थापित कर दीं और इस प्रकार हिंदू राज शक्ति का पुनः उद्धार किया था।

(५) फिरोज़शाह तुग़लक के समय में अनेकों मुस्लिम महिलाओं तथा नवयुवकों के मूर्ति पूजा तथा हिंदू धर्म स्वीकार करने में सहयोग देने के दण्ड स्वरूप मूर्तियों सहित एक ब्राह्मण अग्नि में भस्म कर दिया गया।

(६) जैनुल आबदीन, शाह कश्मीर ने विगत शासन काल में इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले हिंदुओं को हिंदू होजाने के लिये आज्ञा प्रदान की, तदनुसार सैकड़ों नव मुसलिम पुनः हिंदू धर्म में दीक्षित हुये।

(७) शेरशाह के शासन काल में गढ़राय सैन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय शिक्षा के संचालकों का कर्त्तव्य !

[लेखक—श्री पं० विष्णुमित्रजी, भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कुरुक्षेत्र]

श्री० डा० गजानन श्रीपत खेर देशान्तरों में सैर करने के बाद लिखते हैं कि इस समय दुनियां में राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक हलचल मची हुई है। उसकी लहर भारतवर्ष में भी आ पहुंची है।

पुराने ढंग की समाजरचना और आर्थिक व्यवस्था के विषय में युवकों का मन सशंक हो उठा है। वे चाहते हैं कि समाज के ढांचे को जड़मूल से बदल कर उसे नया रूप दे दिया जाय।

योरोपमें जैसे राष्ट्रवादी, समाजवादी, फ़ासिस्ट कम्यूनिस्ट आदि दलों का संघर्ष चल रहा है उसी तरह हमारे यहां भी इन दलों की स्थापना होने की पूरी संभावना है। इसलिये विचार शील व्यक्तियों को इस पर विचार करना चाहिये कि हमारे समाज का पुनः संगठन किस रूप में हो, जो हमारे समाज की विचारधारा और मनोवृत्ति के अनुकूल हो। जिसमें योरोपीय समाज शास्त्र की अच्छी बातों को लेते हुए भी हमारे अपने समाज की विशेषताओं का पूरा ध्यान रखा गया हो। आगे चल कर वे कहते हैं कि जिस तरह जर्मनी में हिटलर ने अपने नवयुवकों की मनोवृत्ति को पहिचान कर राष्ट्रीय समाज नाम से एक तीसरा रास्ता निकाल कर नवयुवकों को अपने पीछे लगा लिया है इसी तरह भारतीय युवकों के अन्तःकरण को समझ कर यदि हमारे नेताओं ने अपने नये सिद्धान्त के निर्माण की योग्यता दिखाई तो उन्हें भी युवक वर्ग का समर्थन प्राप्त हो सकेगा अन्यथा नहीं। श्री डाक्टरजी का उपरोक्त विचार भविष्य के लिये एक चेतावनी है। यदि हमने इस पर विचार किया तो हमारा भविष्य सुखमय होगा अन्यथा बहुत विपत्ति की संभावना है।

इतिहास के पढ़ने वालों को मालूम है कि हिटलर ने एक ऐसे सिद्धान्त का निर्माण किया था जो कि नवयुवकों को आकर्षण करने वाला था। वह यह कि उसने नवयुवकों के लिये एक वर्दी नियत की, उनकी अभिवादन पद्धति निश्चित की, उन्हें स्वास्तिक चिह्नांकित पताका दी, और इनमें सैनिक अनुशासन उत्पन्न किया। जिस समय अमेरिका के विद्यार्थी व्यक्तिस्वातन्त्र्य का नाम लेकर स्वच्छन्द विहार करते थे उस समय जर्मन विद्यार्थी अपने नेता के चरणों पर अपना सर्वस्व रख कर उसके अनुशासन और बन्धन के आधीन कार्य्य कर रहे थे। इससे साफ जाहर होता है कि जब तक युवकों के सामने कोई प्रभावोत्पादक लक्ष्य और नेता नहीं होता तब तक चार ज़ोर पर रहता है। हां उनको यदि कोई आकर्षक लक्ष्य रखने वाला नेता मिल जाय तब वही युवक अपनी सारी स्वाधीनता उसके चरणों में रखने को तैयार हो जाते हैं। अतः जो युवकों की मनोवृत्ति को समझ कर व्यवहार करता है वही चतुर नेता कहलाता है। वर्तमान जर्मनी में नवयुवकों का खूब आदर और मान है प्रौढ़वय के विद्यार्थी नाज़ी दल के सदस्य हो सकते हैं।

दूसरी ओर रूस में नवयुवक वर्ग और प्रौढ़ वर्ग का कोई भेद ही नहीं। बच्चा मां के पेट से बाहर आते ही रूसी नागरिक हो जाता है। हम भारतवासी विद्यार्थी वर्ग की ओर जिस दृष्टि से देखते हैं रूस की दृष्टि इससे भिन्न है।

हमारी दृष्टि यह है कि विद्यार्थी अवस्था अर्थात् विद्याभ्यास समाप्त होने तक अर्थात् २० व २५ वर्ष की आयु तक का उनका समय समाज से अलग वायु मण्डल में बीतना चाहिये। व्यवहार और समाज के कठोर बातावरण की आंच उन्हें न लगनी चाहिये। भावार्थ यह कि उन्हें दुनिया की हवा न लगने पावे। संरक्षक वा समाज उनके लिये पैसा दिया करें और वे केवल मौज उड़ाया करें। पैसा कमाने में क्या २ कष्ट होते हैं इसका उन्हें ध्यान न आना चाहिये। यहां तक ही नहीं, उन्हें अपने माता पिता और परिवार का भी ख्याल न आना चाहिये। इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र बनाये गये हैं। पर इसका परिणाम हमें उलटा ही नज़र आया है। क्यों कि प्राचीन और अर्वाचीन भारतीय परिस्थिति में इस समय विशेष अन्तर आगया है। शिक्षा केन्द्रों के अलग होने पर भी शहरों का असर उनपर पड़े बिना न रहा।

ऐसा कहने का मेरा यह तात्पर्य कदापि नहीं कि जिन्हों ने ऐसे उपयोगी नियमों का निर्माण किया उन्हों ने भूल की। मेरा मतलब यह है कि वे नियम अपना स्वराज्य होने पर शिक्षा की सारी जिम्मेवारी अपने हाथ में आने पर ही चल सकते हैं। इस समय ऐसे शिक्षा केन्द्रों को बनाते हुए एक बड़ी भारी और भूल हमसे हुई है कि हम शिक्षाकेन्द्रों में यह उपदेश देते रहे हैं कि प्यारे बच्चो कल तुम्हें नागरिक बनना है और सांसारिक क्षेत्र में जाना है अतः उसकी तैयारी करो। मानो नागरिक कर्त्तव्य कोई ऐसी वस्तु है कि जिसका पाठ संस्थाओं में याद किया जाय, और उसके अनुसार काम बाहर निकल कर किया जाय। पर विद्यार्थी अवस्था के सम्बन्ध में रूस के तथा अन्य पाश्चात्य जगत् के विचार इस से सर्वथा विपरीत हैं। वहां के नेताओं का ख्याल है कि ज्ञान और कर्म को एक हल के दो बैलों की तरह एक ही जूए में जोतना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यार्थी अवस्था में नागरिक रूप से अपने कर्त्तव्यों को कर अपने दायित्व युक्त कार्यों को कर भावार्थ यह कि उन देशों ने शिक्षा के स व्यवहारिक ज्ञान भी शिक्षा से अलग नहीं

परिणाम स्वरूप रूसी युवकों ने १५-२ में अपनी सम्पूर्ण जाति को साक्षर बना ४०-५० वर्ष के स्त्री पुरुषों को वहां के ने ही पढ़ाया। रूस की सारी खेती को मलकीयत बनाने के काम में १५ हजार नि ने सरकार की मदद की। ज़मीन के नीचे रे के लिये सुरंग बनाने का काम जब आरम्भ तब उसके लिये सरकार के पास इतना था। रूस के विद्यार्थियों ने यह काम अ लिया मज़दूरों की तरह काम करके सुरंग भाग तैयार कर दिया। जिसके उपलक्ष्य में में रूसी सरकार ने युवक की एक विश मूर्त्ति स्थापित की। आजकल रूसी विद्यार्थी और कालेज में पढ़ते हुए कारखानों में बराबर काम करते हैं और व्यवहारिक शि हैं। अमेरिका में व्यवहारिक ज्ञान के लि निक और औद्योगिक प्रदर्शनियें दिखाई ज और वे हमारे यहां से भिन्न प्रकार की क्योंकि वह तो स्कूल और कालिजों के वि के उपयोग के लिये की जाती हैं पैसा क लिये नहीं। इनमें वैज्ञानिक और औद्योगिक पर व्याख्यान भी होते हैं। व्याख्यान के गैस की बत्ती का इतिहास, हवाई जहाज़, का इमारत के लिये उपयोग, टेलीफ़ोन, ऐक्स किरणों के चमत्कार, बिजली का व्य उपयोग इत्यादि। इन व्याख्यानों के अतिरि विषयों के चित्रपट भी दिखाये जाते हैं। जहाज, टेलीफोन, रेडियो आदि की भिन्न की मैशीनें भी रखी जाती हैं। जिन्हें बच्चे ही नहीं प्रत्युत बेरोक टोक उन्हें चलाकर सकते हैं। शिक्षा का यही क्रम जापान इंगलैंड में पाया जाता है। वहां के विद्यार्थी पाठ पढ़ते हुए पांच सात रुपये कमाकर घर ले आते हैं। मसलन घड़ी के पुर्ज़े पड़े उन्हें यथा स्थान लगा देना है शाम को जो घड़ियें तैयार कर सकेगा उसके मुताबिक वह ही लाभ उठा सकेगा। दूसरी तरफ़ हमारे लयों के संचालक शिक्षणालयों में वस्तुपाठ चित्र लटका कर सन्तुष्ट हो जाते हैं। दूसरे की तरह ऐसे शिक्षाक्रम के चलाने की उ स्वामी श्रद्धानन्दजी में थी। शोक है कि वह के कारण और कुछ सहायकों के उपेक्षा कारण शायद ऐसा न कर सके। फिर भी ह के पार लोहे का कारखाना, बढ़ई का क फोटो सीखने का प्रबन्ध, कृषि का प्र देखा है। ब्र० श्वेतकेतु की मैशीन जि बैलों के अरहट चलाया जाता था औ

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बढ़ाने वाले यन्त्र का निर्माण हमने अपनी
ों से देखा है। रूस के विद्यार्थियों की तरह
चारियों के प्रबन्ध को आर्य जनता अभी तक
भूली। ऐसे वैज्ञानिक और औद्योगिक कार्य्य-
का प्रचार गुरुकुलों में होना चाहिये। ऐसे
र्य्यक्रम के बढ़ने से अधिक वस्तुओं का निर्माण
लगता है। वस्तुओं के सस्ती होने से उनका
बहार गरीबों के लिये भी सुलभ हो जाता है।
र की व्यवस्था यदि हमारे यहां भी होने लगे
प्रश्न यह उठता है कि ऐसा होने से क्या
लोग केवल जड़वादी और सुखवादी तो न
जायेंगे। यदि यही परिणाम होना है तो आज
ही इस नई सभ्यता को दूर ही से प्रणाम
या जाय। पर दूसरी ओर यदि ऊंची रहन
हन और अध्यात्मिक वृत्ति का विरोध न हो
जन साधारण की रहन सहन सुधारने का
ना क्यों न किया जाय।

प्रायः हम यह कल्पना कर लेते हैं कि पाश्चा-
देशों के सभी सुख सम्पन्न लोग जड़वादी,
वार्थी, सुख लोलुप ही होते हैं। हमारी यह
ल्पना गलत है क्योंकि उन देशों के प्रत्येक वर्ग
भी आप को ऐसे लोग मिलेंगे—जो चरित्र,
स्वार्थत्याग, समाज सेवा, और अध्यात्मिक
क्ति की दृष्टि से उच्च दिखाई देंगे। अर्थात् ऐहिक
श्चार्य उनके चरित्रोत्कर्ष में बाधक नहीं हुआ।
रे विचार में ऊंची रहन सहन और ऊंचे विचार
र स्पर विरोधी नहीं हैं। वे दोनों जिस तरह
लग अलग सुख से रह सकते हैं वैसे ही एक
साथ भी रह सकते हैं। आज दुनियां में भौतिक
न्नति और अध्यात्मिक उन्नति की बहस नहीं
ही। अब सब की सम्मति यही है कि इन दोनों
का समन्वय अर्थात् मेल होना चाहिये। ऊंची
हन सहन के विषय में पश्चिम वालों के आदर्श
को सामने रखते समय हमें ऐसा सुधार कर
ना चाहिए जो ऐहिक दृष्टि के साथ साथ जगत
को अध्यात्मिक और तात्विक दृष्टि भी देता हो।
स हमें अपनी त्याग वृत्ति को छोड़ कर पाश्चात्यों
की भोग वृत्ति ग्रहण करनी चाहिए। पर इस
भोग वृत्ति को अध्यात्मिक विचारों के नियंत्रण में
खना होगा। ऐसी अध्यात्मिक भूमि पर स्थित
ह कर हम पश्चिम वालों के सांसारिक जीवन
और ऊंची रहन सहन की कल्पना यदि ग्रहण
कर लें तो मानो हम उनसे भी कुछ अधिक कर
दिखायेंगे। ऐहिक दृष्टि से उनके बराबर होजायेंगे
और मानसिक तथा अध्यात्मिक दृष्टि से उनसे
बार अंगुल ऊंचे ही रहेंगे। यदि ऐसा न करेंगे तो
उसका जो परिणाम होना है वह अभी से दिखाई
दे रहा है।

आप जानते हैं कि सुख समृद्धि के समय मनुष्य
के मनमें अधिक विचार नहीं उठते पेट खाली रहने

हमारे देश का पशु धन

(केसरी से उद्धृत)

ईश्वर ने हिन्दुस्तान में पशु सम्पत्ति की जो विशाल प्रचुरता उत्पन्न की है उसकी हम लोगों को अब तक पूरी कल्पना ही नहीं है। इस अमूल्य धन को संभालने और इसका पालन पोषण का का काम हमने गरीब और अबोध जाति के लोगों के हाथ में दिया हुआ है। परिणामतः इस धन के लाभ और उपयोग से हम लोग अबतक सदा वंचित रहे हैं। हम हिन्दु लोग गो-वर्धन के अतिरिक्त और किसी भी पशु की उन्नति के लिये कुछ विचार ही नहीं करना चाहते। परन्तु पाश्चात्य देश सब प्रकार के पशुओं के संगोपन व पालन पोषण के लिये पूरा प्रयत्न कर रहे हैं। हमें भी इस तरफ़ अवश्य ध्यान देना चाहिये।

दूध देने वाले जानवर—(१) शाहीवालगौएं हिन्दुस्तान में सब से अधिक दूध देने वाली गाये हैं। ये प्रतिदिन १५ से २० सेर तक दूध देती हैं। उत्तरीय हिन्दुस्तान में इसका विशेषतया प्रसार दिखाई देता है। (२) सिंधी गायें भी रोज़ १५ १६ सेर दूध देती हैं। इस जाति की गाये बहुत समय तक जीवित नहीं रहती। अनुभव से ऐसे ज्ञात होता है कि कोंकण प्रदेश में ये गाएं अधिक समय तक जीवित रह सकती हैं। मद्रास में होसूर कैटल फार्म में इस जाति की गायों का खूब सवर्धन हो रहा है। इस जाति की गायें चीन तक फैली हुई दिखाई देती हैं। (३) हरियाना की गाएं भी अच्छा दूध देती हैं। ये प्रतिदिन १० १२ सेर तक दूध देती हैं। इस जाति का अधिकतर प्रसार संयुक्त प्रान्त और दक्षिण -पंजाव में है।

शहरों में रहने वाले ग्वालों को इन तीनों ही प्रकार की गायों के पालने से दूध बेचने के काम में भैंसों के रखने से भी अधिक फायदा हो सकता है।

किसानों के लिये दुकामी गायें— उपर्युक्त जातियों से भिन्न गाय का एक और प्रकार भी है जिसको 'दुकामी गाय' कहते हैं। ये किसान लोगों के लिये अधिक उपयोगी होती हैं। इनसे दो लाभ होते हैं। एक तो ये गाये प्रति दिन ५—६ सेर दूध देती हैं। इससे इन के दूध को बेचने से पर्याप्त मात्रा में फायदा हो सकता है। इसका दूसरा फायदा यह होता है कि इससे उत्पन्न हुए२ बैल भार वाहन और कृषि के काम के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। पंजाब में हिसारमें इस प्रकार की नसल को उन्नत करने का अगर प्रयत्न किया जाय तो उपर्युक्त दोनों प्रयोजन भली भांति सिद्ध हो सकते हैं।

भैंस—दिल्ली प्रदेश की मुर्हा जाति की तथा जाफराबाद, सूरत और मेहसाना की गुजराती भैंसे अधिक दूध देने वाली समझी जाती हैं। यद्यपि न्यूनाधिक संख्या में इस जाति का सारे देश में प्रसार है तो भी महाराष्ट्र में इसकी संख्या अधिक है। इस नसल की भैंसों के दूध में मक्खन की मात्रा अधिक होने के कारण मक्खन घी, पेड़े, बर्फ़ी, चाय और कहवा इन पदार्थों के लिये लोग इनका दूध ही उपयोग में लाते हैं। इस नसल के लिये दाना पानी का खर्च अधिक होने के कारण इनको पूरी तरह से संभालने में बहुत कठिनाई होती है। जब यह भैंसे ज़रा बूढ़ी हो जाती है तो लोग इनको कसाईयों के हाथ में बेच देते हैं। इसके सिवाय इस जाति के भैंसे की तरफ़ न मिलने के कारण वर्ण संकर हो जाने से उनका दूध कम हो जाता है। ग्वाले भी इनका दूध इतनी अधिक मात्रा में निकाल लेते हैं कि बछड़े को पर्याप्त मात्रा में दूध नहीं मिलता। इसलिये वे शीघ्र ही मर जाते हैं और इनके शुद्ध वंशकी प्रग भी रुक जाती है।

हिन्दुस्तान में लोक संख्या बहुत अधिक होने के कारण व उसका अधिक विस्तार गांव देहातों में होने से दूध की प्राप्ति के लिए सभी दूध देने वाले जानवरों का संगोपन हमारे देश में अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु मक्खन, घी व दूध इतर पदार्थों का व्यापार अगर देशमें बढ़ाना हो। भैंसों का भी संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है।

घोड़े—इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम जहाज़, रेल, मोटर, सायकल आदि साधनों की प्रगति के कारण आज कल इस प्राणी की उपयोगिता दिन प्रति दिन कम होती जा रही है एक समय था जब सेना के अंगभूत भीमथड़ी महाराष्ट्रीय घोड़े मद्रास से अटक तक तो द्वारिका से कटक तक दौड़ लगाया करते परन्तु अब बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि समय इस प्राणी को पालने की ज़रूरत नहीं र

है। पढ़ते समय मां बाप से पैसे मिल रहे थे। तब तक सब कुछ ठीक था पर पढ़ाई समाप्त होने पर एक दम विद्यार्थियों के दिल में आता है कि क्या सांसारिक क्षेत्र में उतरने पर कहीं हमें भी इधर उधर भटकती हुई बेकारों की टोलियों में तो न शामिल होना होगा। बस इस प्रकार के विचार उठने ही न पायें, इसलिये शिक्षा के संचालकों का और शिक्षा के सहायकों का यह परम कर्तव्य है कि वे संस्था में जिस शिल्प (दस्तकारी) को कुल पिता चलाना चाहते थे उसके चलाने का शीघ्र प्रयत्न करें। ताकि हमारी संस्था के विद्यार्थी देश-सेवा समाज सेवा के अतिरिक्त वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या—आर्थिक समस्या के हल करने में भी समर्थ हो सकें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश विदेश के समाचार

देश समाचार

लाहौर में टर्किश प्रेस डेलिगेशन के नेता म० फलेह रिजकी अट्टे से पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देते हुये उन्होंने कहा कि टर्की की राजनीति में धर्म का कोई स्थान नहीं है। हम पहले तुर्क हैं और फिर मुसलमान। अगर कोई मौलवी हिंदू स्थानसे आकर हमारी राज्य व्यवस्था में धर्म को घुसेड़ने का प्रयत्न करे तो हम इस बात को कभी भी सहन न कर सकेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि टर्की में धर्म का आदर अवश्य होता है परन्तु यह वैयक्तिक विषय है। "पैन इस्लामिक फिडरेशन" की आयोजना हमें पसन्द नहीं है।

—मौलाना जाफर अली ने म० अट्टे से एक सवाल करते हुये कहा—"टर्की तथा हिंदुस्तान के मुसलमानों में धर्म का निकट सम्बन्ध है। जिस प्रकार हमने टर्की को आपत्ति के समय मदद दी थी उसी प्रकार तुर्क लोगों को भी परदेशीय मुसलमानोंकी समस्याओं से तटस्थ न रहना चाहिए। इसका उत्तर देते हुये म० अट्टे ने कहा कि "हिंदुओं ने भी उस समय टर्की के साथ सहानुभूति प्रकट की थी और मदद की थी। हिन्दुओं की सहायता का आधार धर्म का बन्धन न हो कर स्वातन्त्र्य-प्रियता ही थी। हम मुसलमानों के घरेलू प्रश्नों में हस्ताक्षेप नहीं कर सकते।"

—एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए टर्किश डेलीगेशन के नेता ने कहा कि हम कुरान के पुराने अर्थों को न मान कर आधुनिक व्याख्या को ही ठीक समझते हैं।

—सिन्ध सरकार द्वारा नियुक्त सिन्ध युनिवर्सिटी कमेटी ने यह सिफारिश की है कि सिंध प्रान्त की अपनी एक अलग युनिवर्सिटी स्थापित की जाय। बम्बई युनिवर्सिटी सिंध प्रान्त की आवश्यकताएं पूरी नहीं कर सकती।

—कामन्स में मि० एटली से मि० सोरेन्सेन ने अब यह कहा कि जेलबद्ध कांग्रेस के नेताओं से अन्य नेताओं को मुलाकात करने के प्रतिबन्ध उठा लिया जाय तो मि० एटली ने उत्तर दिया कि भारतीय सरकार उस विषय में पहिले ही निर्णय कर चुकी है। उस विषय में पुनर्विचार के लिये मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता।

—लंडन में भारतीय राष्ट्रसभा समिति की ओर किंग्सवेहाल में तथा इंडियन लीग की ओर हालबार्नहाल में दो स्थानों पर स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया।

—प्रो० मन्साली को पिछले बुद्धवार को सेवा ग्राम में लाया गया है। दिन प्रति दिन उनके स्वास्थ्य में प्रगति हो रही है।

—गुजरात ज़िले में लोगों की तरफ से पंजाब के गवर्नर सर बर्ट्रेण्ड ग्लैंसी को युद्ध सहायता के लिये ४ लाख ५० हज़ार रुपये का एक चेक भेंट किया गया है।

—चीफ़ जस्टिस सर मारिस ग्वायर को जो हो रहे हैं दिल्ली युनिवर्सिटी का १९४४ तकवाईस चांसलर नियुक्त किया गया है।

—बीकानेर के महाराज का २ फरवरी को बम्बई में बीकानेर भवन में प्रातः ५-२५ पर देहान्त हो गया है।

विदेश समाचार

—'न्यूयार्क टाईम्स' के कथनानुसार वाशिंगटन के कोरियन सर्कलस को पहुंची सूचना से ज्ञात होता है कि जापान के प्रधान मन्त्री टोजो आगामी सितम्बर मास से पहिले २ चीन के आगे एक सन्धि का प्रस्ताव रखनेकी आयोजना कर रहे हैं।

—फ्रेंच मोरक्को के उपनगर कासाब्लांका में चर्चिल और प्रे० रूज़वेल्ट की १० दिन की मुलाकात समाप्त हो चुकी है। युद्ध प्रारम्भ होने के बाद से यह उनकी ४ थी भेंट है। रूस को अधिक से अधिक किस प्रकार मदद पहुंचाई जा सकती हैं यही इस सम्मिलन का मुख्य उद्देश्य था। इस कांफ्रेंस में स्टालिन को भी निमन्त्रण दिया गया था परन्तु देश की अनिवार्य युद्ध परिस्थिति के कारण वह उपस्थित नहीं हो सका। कांफ्रेंस के बाद प्रेज़िडेंट रूज़वेल्ट ने यह भी कहा कि हमने चीन को जापान के विरुद्ध सहायता करने के निश्चय को भी फिर से दुहराया है।

—पार्लिया मेंट के भूतपूर्व सदस्य तथा 'वेटरन ट्रेड यूनियन' के नेता मि० बेन टिलेट का लण्डन में देहान्त हो गया है। मृत्यु के समय उनकी आयु ८२ साल की थी।

—पोलिश प्रधान मन्त्री सिकोर्सकी ने एक स्थान पर उद्घोषणा करते हुये कहा है कि लड़ाई के प्रारम्भ से अब तक ३५००० पोल लोगों को कैद करके उनको 'कसेन्ट्रेशन कैम्प' में ले जाया गया है।

—कैरो के युगोस्लाव क्वार्टर की सूचना के अनुसार सन् १९४२ में २७००० सर्ब लोग जर्मन अधिकारियों से मौत के घाट उतारे गये।

—अमरीका अपने कारखानों से दो दिन में ११ जलयान की रफ़्तार से जहाज बना रहा है।

—मि० चर्चिल और उसकी पार्टी ने टर्की में पदार्पण किया! वहां के प्रेज़ीडेंट इनेन्यु के साथ उन्हों ने योरुप की परिस्थिति पर विचार विनिमय किया।

युद्ध-समाचार

रूस:—

—खारकव और कुपिआन्स्क की तरफ बढ़ती हुई रूसी फौजें कुपिआन्स्क से ५० मील पूर्व तक पहुंच चुकी हैं।

—जनरल अरन्यूको की सेना ने सालस्क को जीतने के बाद अन्य भी अनेक महत्त्वपूर्व गांव हस्तगत कर लिये हैं। रशियन सेना रोस्टव से अब वह केवल ३० मील ही दूर रह गई है।

—२८ जनवरी को रूसी सेनाओं ने वोरोनेज़ से ५० मील पश्चिम में तथा कुर्स्क से ७० मील पूर्व में स्थित कस्टरनाय रेलवे जंकशन को हस्तगत कर लिया है।

रेडियो से २१ जनवरी को भाषण करते जर्मन सिक्सथ आर्मी स्टालिनग्राड पालस के नेतृत्व में पूरी शक्ति के साथ कर परन्तु सफलता की कोई आशा नहीं है।

—रूसी सेनाओं ने मास्को टैगनराग कुर्स्क से १५ मील पर विच्छेद कर दिया है

—जर्मन सेनाएं अब खारकव से और कुर्स्क से ४५ मील की दूरी पर ही रह

बर्मा:—

—२६ जनवरी की रात को शाही ह ने मध्य बर्मा में टोंग के स्थान पर जापा अड्डे पर आक्रमण किया। इसके अतिरिक्त नदी के अराकान किनारे पर 'वाटर ट्रांस नुकसान पहुंचाने तथा अक्याब क्षेत्र में शत्रु नस्थ एक गांव पर बम बरसाने का भी मिला है।

—चीन और बर्मा की सीमा पर मां निकट जापानी और चीनी सेनाओं में भयंक हो रही है। यूनान प्रान्त के दक्षिण प टेकेङ्ग पर जापानी सेनाओं के नेन्ली को पा के प्रयत्न को चीनी फौजों ने विफल कर दिया

अफ्रीका:—

बिशी रेडियो के अनुसार प्रथमतः टेबे चारों तरफ़ केन्द्रित अमेरिकन सेना ने टयूनी में आक्रमण प्रारम्भ कर दिया है। २३ अ जनवरी को बाईज़र्टा के कुछ निश्चित स्थानों प बरसाये गये। टयूनीशिया और सिसली के दो शत्रु विनाशिकाओं पर भी बम पड़े।

—उत्तरी अफ्रीका में जनरल गिराड के क्वार्टरों ने उद्घोषणा की है कि उनकी सेन टयूनीशिया के दक्षिण पूर्वी कोने के सिरे को आधीन कर लिया है।

—मित्र राष्ट्र सेनाएं त्रिपोली के पश्चिम में न्तर बढ़ती हुई जुआरा के निकट जर्मन सेना संघर्ष कर रही हैं। नये समाचार से अब ज्ञात हुआ है कि जुआरा को भी एट्थ आ जीत लिया है।

प्रशान्त महासागर:—

—जर्मन रेडियो के अनुसार जापान के मन्त्री मि० टानी ने यह घोषणा की है कि " यट यूनियन" के प्रति जापान की उस नी कोई परिवर्तन नहीं आया जिसका आधार के अप्रिल में किया गया 'सोवियट जापान स्थता समझौता' है।

चीन:—

—चीनी हाई कमाण्ड के कथनानुसार सेनाओं ने ६ जनवरी को उत्तरी चीन पर आ करते हुए विषैली गैसों का उपयोग किया जनवरी को काङटुङ प्रांत के किनारे पर सेनाओं ने दो जहाजों द्वारा उतरने का प्रयत्न परन्तु चीनी सेनाओं ने भयङ्कर नुकसान पहुं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद-प्रचार विभाग

—यशःपाल जी अधिष्ठाता वेद प्रचार]

सभा का वर्ष समाप्त होने में केवल २॥ ...ये हैं जिन २ आर्य्य समाजों के उत्सव अभी ...त नहीं हुए वे सभा की अनुमति से अपने ...ी तिथियां नियत करलें। सभा उत्सवों की ...इस प्रकार से नियत करना चाहती है जिस ...ाय कम हो अर्थात् एक लाईन पर उत्सव ...जायें और उपदेशकों का एक ग्रुप ही ...न के सब उत्सवों को भुगता दे।

—आर्य्य समाजों की सेवा में यह सानुरोध ...है कि वे सभा के प्रबन्ध पर ही सन्तुष्ट ...मनोवृत्ति पैदा करें। अमुक उपदेशक के ... ही उत्सव किया जायगा, और अमुक ...के आने पर ही वेद प्रचार का धन दिया ...याह मनोवृत्ति हानि कारक है। सभा के ...देशक ही योग्य हैं अतः आर्य्य समाजों को ...के प्रबन्ध के सम्बन्ध में सभा का सहयोग ...ा चाहिये।

—वेद प्रचार ही आर्य्य समाज का मुख्य ...है। आर्य्य समाजों को अपने उत्सवों पर वेद ...लिये अधिक से अधिक धन देने का यत्न ...ा हिये। यह प्रथा कितनी सुन्दर होगी यदि ...समाजों के अधिकारी उत्सव की समाप्ति ...प्रचार का नियतधन अति श्रद्धा पूर्वक ...क महानुभावों को दे दिया करें। और धन ...उपदेशक महानुभावों को आर्य्य समाज के ...ियों से आग्रह न करना पड़े। अधिष्ठाता ...र का समय भी धन मांगने के स्थान पर ...र के कार्य्य को भली प्रकार व्यवस्थित ...लगे।

—आर्य्य समाजों की सेवा में प्रार्थना की ...कि लोहारु में मंदिर निर्माण के कार्य्य पर ...के लगभग व्यय होगा यह मंदिर १ मार्च ...जाना चाहिये। यदि १ मार्च तक मंदिर न ...ा और स्टेट ने अपनी दी हुई भूमि वापिस ...ी इस से आर्य्य समाज के गौरव को कितनी ...ंचेगी। इसलिये सब आर्य्य समाजों को ...र्त्तव्य का तुरन्त ही पालन करना चाहिये ...धिक से अधिक धन सभा कार्यालय में शीघ्र ...ना चाहिये। सभा की ओर से समाजों के ...प्पील भी भेज दी गई है।

—।) निधि के धन के सम्बन्ध में कई बार ...जा चुका है। समाजों को शीघ्र ही इस विषय ...ा कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। और ...ाना निधि का एकत्रित धन सभा कार्यालय ... देना चाहिये।

—मंडल प्रणाली को सफल बनाने का पूर्ण ...किया जा रहा है। ज़िला लाहौर में पं० राम ...ी तथा म० बलदेव जी, अमृतसर में स्वामी शिवानन्द जी ज़िला काङ्गड़ा में पं० सत्यदेव जी तथा म० शमशेरसिंह जी, जिला गुज़रात तथा झेलम में पं० शान्ति प्रकाश जी तथा मेला राम जी, ज़िला अम्बाला में पं० मुनीश्वर देव जी तथा स्वामी बेधड़क जी, ज़िला स्यालकोट में स्वामी योगानन्द जी म० रामनाथ जी, ज़िला झंग लायलपुर में पं० क्षितीशकुमार जी तथा म० मेहरचन्द जी, ज़िला डेरागाजी खां में पं० तीर्थराम जी तथा म० आशानन्द जी की चिमटा मंडली बड़ी लगन से कार्य्य कर रहे हैं। यत्न किया जा रहा है कि इन्हें कम से कम ज़िला से बाहर भेजा जाये यदि आर्य समाजें सभा का पूर्ण सहयोग करेंगी और उत्सवों के तरीके में उचित परिवर्तन हो जायेगा तो आर्य्य समाज के प्रचार का कार्य्य बहुत बढ़ जायगा।

७—पं० रामस्वरूप जी तथा भद्रपाल जी को पटियाला स्टेट में कार्य के लिये नियत कर दिया गया है। सुविधा को दृष्टि में रखते हुए इनका हैड क्वार्टर नाभा रक्खा गया है।

८—म० जय प्रकाश जी धनुर्धर को अम्बाला मंडल में नियत किया गया है। और उनका हैड क्वार्टर अम्बाला होगा।

९—म० हंसराज जी भजनोपदेशक सभा को कुत्ते ने काट खाया था परमात्मा की कृपा से अब उन्हें आराम है।

१०—उपदेशक महानुभावों की सेवा में प्रार्थना है कि वे साधारण सभा के निश्चय के अनुसार वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में एक व्याख्यान जरूर दिया करें।

फर्वरी मास के उत्सव तथा प्रबन्ध

करनाल—५ से ७ फर्वरी पं० समरसिंह जी पं० मुनीश्वरदत्त जी पं० हरदयाल जी पं० रामस्वरूप जी शान्त, म० भक्तराम जी, म० भद्रपाल जी, म० जय प्रकाश जी, म० शिव नारयण जी, म० बालमुकन्द जी, म० भगवानसिंह जी।

नोट—श्री पं० ज्ञानचन्द जी सभा उप प्रधान से भी उत्सव पर पधारने की प्रार्थना की गई है।

गौंदर—८ से १० फर्वरी पं० हरदयालू जी, पं० समरसिंह जी तथा उनकी मंडली।

मानसा—९ से ११ फर्वरी पं० रामस्वरूप जी शान्त, पं० मुनीश्वर देव जी, पं० द्रौपदी देवी जी, स्वामी आत्मानन्द जी, म० भक्तराम जी, म० भद्रपाल जी।

नूह—१२ से १४ फर्वरी पं० हरदयालू जी पं० मुनीश्वर देव जी पं० द्रौपदी देवी जी पं० रामस्वरूप जी म० जयप्रकाश जी म० बालमुकुन्द जी।

रसोला—१२ से १४ फर्वरी स्वामी आत्मानन्द जी पं० समरसिंह जी तथा उनकी मण्डली।

माजरा—१५ से १७ फर्वरी पं० हरदयालू जी पं० समरसिंह जी तथा उनकी मण्डली।

ठोल—१५ से १७ फर्वरी पं० रामदत्त जी पं० रामस्वरूप जी शान्त पं० मुनीश्वरदेव जी पं० द्रौपदी देवी जी म० भक्तराम जी म० भद्रपाल जी स्वामी निभर्यानन्द जी।

रोहां—१५ से २१ फर्वरी पं० सत्यदेव जी म० शमशेरसिंह जी।

छोत—१९ से २१ फर्वरी स्वामी आत्मानन्द जी पं० समरसिंह जी तथा उनकी मण्डली।

खाखन—१९ से २१ फर्वरी पं० रामदत्त जी पं० रामस्वरूप जी शान्त पं० मुनीश्वर देव जी पं० द्रौपदी देवी जी म० भक्तराम जी म० भद्रपाल जी स्वामी निभर्यानन्द जी।

डेरा इस्माईल खां—१९ से २१ फर्वरी पं० तीर्थराम जी पं० गुरुदत्त जी पं० शान्ति प्रकाश जी म० मेलाराम पं० हरिचन्द जी।

शेष फर्वरी मास के उत्सवों का प्रबन्ध अगले अंक में दिया जायेगा।

श्री चमूपति साहित्यविभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत	२॥)	Immortal Sayings of Dayanand	।
जीवन ज्योति	१॥)	दयानन्द रत्न माला	।)
स्वाध्याय संग्रह	॥।)	वैदिक धर्म की जय	॥।)
वैदिक स्वर्ग	॥।)	यास्क युग	॥।)
स्वर्ग	।=)	सभा इतिहास	२)
देव यज्ञ	।)	Glimpses of Dayanand	१।)
पीयूषबिन्दु	।-)	त्रिदेव निर्णय	॥।)
		निरुक्त का मूल वेद में	।-)

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने पर कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे दाम पर मिल सकेंगी।

Hindu America	५)
Light of Truth	३)

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य विभाग
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

हर एक आर्य तथा पंजाब के

आर्य समाज को आर्य का ग्राहक

—बनना चाहिये—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी का ४१वां वार्षिकोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में ता० २३ अप्रैल से २६ अप्रैल तक बड़े समारोह से मनाया जायगा। उत्सव की तय्यारियां अभी से प्रारम्भ हो गई हैं। आशा की जाती है कि इस वर्ष का उत्सव अपनी अनेक विशेषताओं के कारण विशेष महत्वपूर्ण होगा। अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि वे प्रवेपार्थ प्रार्थनापत्र गुरुकुल कार्यालय से शीघ्र मंगा लेवें।

डा० श्याम प्रसाद मुकर्जी दीक्षान्त भाषण देंगे

इस वर्ष के उत्सव पर दीक्षान्त भाषण के लिए बंगाल के प्रसिद्ध नेता तथा हिन्दु महासभा के कार्य कर्ता—प्रधान श्रीयुत डा० श्याम प्रसाद मुकर्जी एम० ए०, बी० एल० डी० लिट्, बार-एट-ला, भूत-पूर्व वाइस चान्सलर कलकत्ता-विश्व-विद्यालय को निमन्त्रित किया गया था। हर्ष का विषय है कि उन्होंने नव-स्नातकों को दीक्षान्त-भाषण देना स्वीकार कर लिया है।

गुरुकुल में शिल्प-शिक्षा

देश के उत्थान में शिल्प-शिक्षा की महत्वपूर्ण स्थिति को अनुभव करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल में शिल्प महा-विद्याजय खोलने की योजना कुछ वर्ष पूर्व बनाई थी, किन्तु धनाभाव के कारण अब तक इस योजना को क्रियात्मक रूप न दिया जा सकता था। अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा गुरुकल के अधिकारियों ने शीघ्र ही गुरुकुल विश्व-विद्यालय के साथ शिल्प महाविद्यालय की योजना को चालू करने के लिये ३ लाख रुपए की अपील निकाली है। जिसमें से डेढ़ लाख की धन राशि से शिल्प महाविद्यालय का भवन तय्यार किया जायगा तथा डेढ़ लाख की मशीनें और अन्य उपकरण लगाए जाएंगे। शिल्प-शिक्षा को इसी वर्ष प्रारम्भ कर देने के विचार से गुरुकुल के अधिकारियों ने ५०००) व्यय करने की स्वीकृति देदी है। लड़ाई के इन दिनों में मैशीनरी मंहगी हो गई है फिर भी प्रयत्न करके एक छोटा सा वर्कशाप तय्यार कर लिया गया है जिसमें आवश्यक यन्त्र पर्याप्त मात्रा में इकट्ठे किये गए हैं। लोहे, का खराद, बर्मा वगैरह लगाकर उनको बिजली से चलाने का प्रबन्ध कर लिया गया है। गत २० जनवरी से यहां ऐच्छिक श्रेणी प्रारम्भ कर दी गई है। जिन ब्रह्मचारियों को शिल्प-विद्या की विशेष दिलचस्पी है वे भली प्रकार इसका अध्ययन कर रहे हैं। ऐसा प्रबन्ध किया जा रहा है कि आगामी साल से इसको पृथक विभाग का रूप दे दिया जाय। शिल्प-श्रेणी के दाखिले आदि का निश्चय हो जाने पर समाचार-पत्रों द्वारा उसे प्रकाशित कर दिया जायगा। आशा है कि आर्य जनता गुरुकुल में प्रारम्भ की जाने वाली इस शिल्प-शिक्षा का हार्दिक स्वागत करेगी।

स्वास्थ्य-समाचार

रमेशचन्द्र	१४	चोट
हरिश्चन्द्र	२	अस्थि भंग
रामकुमार	५	ज्वर
धर्मवीर	२	,,
रमेश	१	,,
सत्यस्वरूप	१	,,
चन्द्रपाल	३	दाह

गत सप्ताह उपरोक्त ब्र० रोगी हुए थे। अब सब स्वस्थ हैं।

गुरुकुल मुलतान

सब ब्रह्मचारी स्वस्थ व आनन्द प्रसन्न हैं। विद्यार्थियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। दानवीर श्री जुगलकिशोर जी बिड़ला के व्यय से एक व्यायाम शिक्षक भी नियुक्त कर दिए गए हैं।

विद्यार्थियों को दूध अपनी गौशाला का, आटा अपनी खरास से पिसवा कर एवं सब्ज़ी अपनी वाटिका की दी जा रही है यही कारण है कि चिकित्सालय बिलकुल खाली है।

विद्यार्थियों का शारीरिक निरीक्षण प्रतिपक्ष श्री डा० रामलाल जी व कविराज पुरुषोत्तम देव आयुर्वेदालंकार करते रहते हैं। श्री पं० जयदेव जी वेदालंकार जिला डेरागाज़ी खान से ३००) धन संग्रह करके अभी लौट रहे हैं। १० विद्यार्थियों के माता पिताओं ने अपने बच्चे भेजने का भी वायदा किया है।

श्री पं० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा ने ५०) दान दिया है। पं० जी शीघ्र ही ज़िला मिंटगुमरी, फ़िरोज़पुर आदि का दौरा करेंगे आशा है धनी दानी व आर्य संस्कृति प्रेमी सज्जन उनका अच्छा स्वागत करेंगे।

मुख्याधिष्ठाता

आर्य समाज संसार

आर्य समाज लाहौर (वच्छोवाली) का वार्षिक अधिवेशन

यह अधिवेशन ता० ३१ जनवरी ४३ को हुआ इसमें निम्नाङ्कित अधिकारी चुने गये हैं:—

प्रधान—श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा (अमृत धारा) उपप्रधान—श्री ला०रोशनलाल जी (स्वा सि), श्री ला० हंसराज जी बी.ए., श्री ला० नन्दलाल जी आर्य, मन्त्री—श्री पं० भीमसेन जी विद्यालङ्कार। उपमन्त्री—श्री विश्वनाथ जी एम. ए., श्री साधुराम जी, श्री पं० देवीशंकरजी, श्री मा० सोहन लाल जी। कोषाध्यक्ष—श्री ला० ऋषीकेश जी, श्री डा० प्रेमनाथ जी। पुस्तकाध्यक्ष—श्री लाला ताराचन्द्र जी।

आर्यकुमार सभा सुलतानपुर लोदी

आर्यकुमारसभा सुलतानपुर लोदी बड़े उत्साह से काम कर रही है। इस सभा का साप्ताहिक सत्सङ्ग प्रतिशनिवार को प्रातः नियमपूर्वक होरहा है। सभा के कार्यक्रम को [illegible] तथा आकर्षक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। [illegible] सभा प्रति शुक्रवार को सायंकाल [illegible]

आर्यसमाज जगाधरी का

आर्य समाज जगाधरी का वार्षि[illegible] २६-२-४३ से २८-२-४३ तक होना था। परन्तु जिस धर्मशाला में [illegible] उत्सव होता है वह उपर्युक्त तिथि कारण से खाली नहीं हो सकती। [illegible] की तिथियां बदल दी गई हैं। अब जगाधरी का उत्सव ४-३-४३ से मनाया जायगा।

आर्य-समाज गोजरा के सम्

(१) सभा की ओर से श्री पं० हि[illegible] म० मेहरचन्द जी भजनीक सहित [illegible] पधारे। दैनिक सत्संग में श्रीपं०जी [illegible] देश तथा म० मेहरचन्द जी के रसी[illegible] रहे। साप्ताहिक सत्संग में श्री पं[illegible] उपदेश हुआ, वह अति प्रभावशाली योग्यता को प्रकट करता था। दिये समय में अपने वचनों को जिस योग्[illegible] को समझा २ कर समाप्त किया, [illegible] हिस्सा था। सभा में ऐसे व्यक्तियों [illegible] वश्यक है। इस कार्य के लिये यहां स[illegible] याद किया जाता है। वहां परमात्मा ऐसे योग्य पुरुषों के उपदेश सुनने को

(२) इन्हीं दिनों हमारे उपप्रधान [illegible] लाल जी के दुकान के प्रवेश संस्कार [illegible] श्री पं० जी ने हवन यज्ञ कराया। जह[illegible] अपना दक्षिणा आर्य समाज को दान [illegible] समाज और १) पाठशाला को दान [illegible] दोनों महानुभावों का धन्यवाद किया [illegible]

मुलतान प्रान्तीय आयुर्वेद म

मुलतान २ फरवरी को स्थानीय [illegible] साधारण अधिवेशन में यह प्रस्ताव सर्व[illegible] स्वीकृत हुआ है। "यह सभा निश्चय [illegible] अखिल भारतीय आयुर्वेद महामंडल के [illegible] प्रान्त (ज़िला मुलतान, मुज़फ्फरगढ़, [illegible] लायल पुर, झंग, डेरागाज़ीखान) भर [illegible] ध्यान आकृष्ट करने के लिए, प्रान्तीय [illegible] ठन करने के लिए तथा जनता का ध्[illegible] चिकित्सा की ओर दिलाने के लि[illegible] प्रान्तीय आयुर्वेद महा मण्डल" की [illegible] जाती है। बाकायदा संगठन होने तक [illegible] कार्यकारिणी का भी चुनाव हुआ जि[illegible] श्री पं० बलदेव जी शर्मा और मन्त्र[illegible] लक्ष्मणदत्त जी और कविराज पुरुषोत्तम दे[illegible] लंकार कोषाध्यक्ष श्री पं० इन्द्रमुनि जी [illegible] सर्वसम्मति से चुने गए।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri and eGangotri

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रैस लिमिटेड, १७ सोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रक

सम्पादक —भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N.°L. 5004.

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

त्येक आर्य को शारीरिक,
मानसिक तथा आत्मिक
उन्नति के लिए इसका
ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या
वार्षि
२१ फरव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

[११]

[महात्मा गांधी जी ने १० फर्वरी से आत्म-शुद्धि तथा य रक्षा के लिये अनशन व्रत शुरू किया है। इस अवसर पर ात्मा गांधी जी ने वायसराय को जो पत्र लिखा है, वह त्मशुद्धि तथा आत्मनिरीक्षण का मार्ग दर्शक है। महात्मा धी जी इस अनशन द्वारा अपनी आत्मा को ईंधन बनाकर नाग्नि और तपोग्नि को प्रदीप्त कर रहे हैं। परमात्मा से र्थना है कि यह आत्मिक अग्नि पारस्परिक अविश्वास को र कर भारतीय राष्ट्र के वातावरण को उद्दीप्त और तेजस्वी ाएँ। —भीमसेन]

प्रिय लार्ड लिनलिथगो! आज यह मैं अपने व्यक्तिगत आप के पास भेज रहा हूं। मैंने पुराने झगड़े का निपटारा ने के लिए कई बार बाईबल के आदेशों को भंग किया है। लक आप के विरुद्ध मुझे जो कटु अनुभव हुये हैं उन्हें अपने थ में रखते हुए मैं इस पुराने वर्ष को शान्ति पूर्वक गुजर दिना चाहता हूं। मैंने सोचा था कि हम दोनों एक दूसरे मित्र हैं और अभी भी वही प्रेमभाव बनाए रखेंगे। ९ अग-१९४२ के बाद से आजतक जो घटना घटी हैं उन पर विचार ते हुए मैं यह नहीं सोच सकता कि आप अब मुझे मानते हैं नहीं। अभी तक जितने वायसराय भारत में आये उनसे मेरा ना गहरा सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका जितना कि आप साथ हुआ है।

मेरी गिरफ्तारी के बाद प्रकाशित की गयी विज्ञप्ति, राजा को आपका उत्तर तथा मेरे विरुद्ध मि०ऐमरी के लांछन आदि ार करते हुए मैं आप को यह बता सकता हूं कि आपने मेरे अन्य सहकर्मियों पर अवश्य ही सन्देह प्रगट किया है। आज भी मैं आप को पहले की ही भांति मित्र बना हुआ हूं कोई कार्यवाही करने के पूर्व मुझ से मिलकर बातचीत द्वारा नहीं आपने सन्देह को दूर कर लिया। ऐसा होने पर का सन्देह दूर हो सकता था। दूसरे लोग मुझे जैसा झते हैं वैसा मैं स्वयं समझने योग्य हूं किन्तु इस मामले री तरह विफल हुआ हूं। मुझे मालूम हुआ है कि इस हुये हैं वे सचाई से बिलकुल परे हैं। मैं अभी सकता हूं किन्तु इन दुःख पूर्ण बातों पर आंसू डालना नहीं चाहता हूं।

आप यह भली भांति जानते हैं कि १९१४ के अन्त में मैं मनुष्य मात्र में हिंसा के बदले में अहिंसा और सचाई का प्रचार करने अफ्रीका से वापस लौट आया। सत्याग्रह का कानून पराजय का हाल नहीं जानता। जेल यात्रा इस सन्देश के प्रचार के लिये उपर्युक्त मार्ग हैं, परन्तु इसकी सीमा भी निर्धारित है। मैंने अपना कर्त्तव्य समझ कर अहिंसा प्रचार का कार्य आरम्भ किया। मुझे आशा है कि कभी न कभी जिन लोगों के हाथ में सत्ता है वे यह अवश्य ही महसूस करेंगे कि उन्होंने एक निर्दोष व्यक्ति के विरुद्ध गलतियां की हैं। मैंने ६ मास का समय प्रदान किया है जिसकी अवधि अब एक तरह से निकट पहुंचती जा रही है। इसी प्रकार मेरे धैर्य का भी अन्त होता जा रहा है। सत्याग्रह का कानून, जैसा कि मैं जानता हूं ऐसे संकट पूर्ण समय में भी हमें ऐसे प्रश्न को हल करने का मार्ग दिखाता है, जो एक छोटे वाक्य में यह है कि —"अनशन कर आत्म शुद्ध करलो। वही कानून आमरण अनशन करने से भी मना करता है। यदि मैं इससे परे रह सकता हूं तो जहां तक सम्भव हो सकेगा मैं बचने की कोशिश करूंगा। आप मेरी गलती या गलतियों को बताइये। मैं अपने सम्बन्ध में आप को अनेको यथार्थ प्रमाण दे सकता हूं। आप मुझे बुला सकते हैं अथवा ऐसे किसी दूसरे आदमी को भेज सकते हैं; जो विश्वास पात्र हों और साथ ही आपके विचारों से पूर्णतया परिचित भी हो। यदि आप समझौता करना चाहते हैं तो इसके लिये और भी बहुत से रास्ते हैं। क्या मैं शीघ्रातिशीघ्र पत्रोत्तर के लिये आशा करूं? नव वर्ष हम लोगों के लिये शान्ति-पूर्ण और मंगलमय सिद्ध हो। मैं हूं, आपका परम हितैषी मित्र, मोहनदास कर्मचन्द गांधी।

—भारतीय व्यापारी मण्डल बम्बई की समिति ने वायसराय से यह अपील की है कि वे महात्मा गान्धी को मुक्त कर देश की राजनैतिक अशान्ति को दूर करें।

—महात्मा गान्धी के उपवास के समाचार को सुनकर ११ फरवरी को दो पहर को प्रो० भन्साली ने भी फिर से उप-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकु
कोत्सव
२६ अप्रैल
उत्सव की
आशा की
अनेक विद्
होगा। अप
के इच्छुक
प्रार्थनापत्र

डा०

इस वर्ष
बंगाल के
कर्ता—प्रधा
एम० ए०, बं
पूर्व वाइस
निमन्त्रित
उन्होंने नव-
कार कर लि

देश के
स्थिति को
पंजाब ने गु
की योजना
के कारण
न दिया जा
पंजाब तथा
गुरुकुल विश्व-
की योजना
की अपील
राशि से शि
जायगा तथा
करण लगाए
प्रारम्भ कर
रियों ने ५००
लड़ाई के इन
फिर भी प्रयत्
कर लिया गय
मात्रा में इकट्ठे
वगैरह लगाकर
कर लिया गया
श्रेणी प्रारम्भ
शिल्प-विद्या
इसका अध्ययन
रहा है कि अ
का रूप दे दिय
का निश्चय हो
प्रकाशित कर
जनता गुरुकुल
शिक्षा का हार्दि

श्री

वैदिक स्वाध्याय—

देवों का असुर

(ले०—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति)

[११]

अयं देवानामसुरो विराजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः। ततस्परि ब्रह्मणा शाशदान उग्रस्य मन्योरुदिमं नयामि ॥ अथ० १।१०।१

अर्थ०—(अयं) यह (देवानाम्) देवों का (असुरः) प्राणदाता, बुद्धिदाता और गतिदाता वरुण भगवान् (विराजति) अपनी महिमा से संसार में खूब चमक रहा है (हि) क्योंकि (सत्या) संसार में सत्ता रखने वाले सब सत्य पदार्थ अथवा सत्य ज्ञान, सत्य भाषण और सत्यकर्म (राज्ञः) राजा (वरुणस्य) वरुण की (वशा) वेद रूपी वाणी (सत्या) सत्य है, सत्य ज्ञान से युक्त है (ततः) इसलिये (ब्रह्मणा) उसके वेद ज्ञान से (परिशाशदानः) तीक्ष्ण अर्थात् निर्मल बुद्धि होता हुआ मैं (इमं) अपने इस आत्मा को (उग्रस्य) पापियों के लिये उग्र स्वभाव वाले वरुण के (मन्योः) क्रोध से (उन्नयामि) मुक्त करता हूं।

सबके वरणीय और सब को बचाने वाले वरुण भगवान् देवों के असुर होकर चमक रहे हैं। जल, पृथिवी, वायु अग्नि, सूर्य, विद्युत् आदि जड़ देव और विद्वत्पुरुष रूप चेतन देव, जितने भी संसार में देव हैं वरुण भगवान् उन सब के असुर हैं। असुर का अर्थ है प्राणदाता, बुद्धिदाता और गति दाता। संसार के भांति भांति के देवों में जो प्राण है, जो जीवन है, वह सब उनको प्रभु से ही प्राप्त होता रहता है। उनका जीवन और उनकी सत्ता जितने समय तक भी बने रहते हैं वे प्रभु की महिमा और इच्छा के कारण ही बने रहते हैं। जिस क्षण भगवान उनमें प्राण रखना नहीं चाहते, जिस समय भगवान् उन्हें नष्ट करना चाहते हैं, उस क्षण से आगे संसार के किसी भी तो देव में अपने प्राण, अपनी सत्ता रख सकने की शक्ति नहीं है। न केवल इन देवों का प्राण—इनके शरीर का जीवन और सत्ता—ही वरुण की महिमा और इच्छा पर निर्भर है प्रत्युत इन की गति, इन की नाना भांति की चेष्टायें भी उसी वरुण के आधार पर हैं। आकाश में परिभ्रमण करने वाले पृथिवी, चन्द्र, सूर्यादि महा पिण्डों की ज्योतिष शास्त्र द्वारा जानी जाने वाली प्रचण्ड गतियों से लेकर एक तृण के हिलने तक की सभी गतियें जो संसार के जड़ और चेतन देवों में पाई जाती हैं उन सबका अन्तिम आधार वरुण भगवान् ही है। ये सब देव वरुण देव के निर्धारित नियमों में रह कर ही अपनी अपनी भांति भांति की गतियें कर रहे हैं। जिस क्षण भगवान् इनकी गतियों को छीनना चाहेंगे उससे अगले क्षण में इनमें कुछ भी गति करने का सामर्थ्य नहीं रह जायेगा। उस समय ये सब गति शून्य हो जायेंगे। और जिस समय बन्द करना चाहेंगे उस समय संसार संसार नहीं र उस समय प्रलय हो जायेगी। फिर वरुण भगवान क रत्व यहीं समाप्त नहीं हो जाता। चेतन देवों के लि वह बुद्धिप्रदाता होने के कारण भी असुर है। यह कि हमारे आत्मा स्वभाव से ज्ञानस्वरूप है। परन्तु रावस्था में आत्मा का यह स्वाभाविक गुण जिस म मस्तिष्क की सहायता से प्रकाशित होता है वह मस्ति अपने कर्मानुसार वरुण देव की कृपा से ही प्राप्त हो यदि हमारे कर्म उत्कृष्ट हैं तो हमें उत्कृष्ट मस्तिष्क होता है और यदि हमारे कर्म मध्यम या निकृष्ट हैं मध्यम या निकृष्ट श्रेणी का प्राप्त होता है। संसारावस्था हमारी बुद्धि की सूक्ष्मता और स्थूलता का कारण यही मस्तिष्क होता है। भगवान् हमारे कर्मानुसार इस म के प्रदान द्वारा हमारी स्वाभाविक ज्ञानशक्ति को भ दूसरे की अपेक्षा से कम या अधिक कर देते हैं प्रकार ब्रह्म का वह असुरत्व उनकी महिमा का सूचक और अपनी इस असुरत्व की महिमा के कारण संसार में सर्वोपरि विराजमान होकर चमक रहे हैं की आंखें हैं, जो संसार के पदार्थों पर गम्भीरता से विचारते हैं उन्हें सचमुच वरुण भगवान् असुर होकर हुए दिखाई देते हैं।

भगवान् में यह असुर होने की, सबके प्राणदाता, दाता और बुद्धिदाता होने की शक्ति किस कारण है? लिये कहा, क्योंकि सब "सत्य" वरुण के "वश" में लिये वे सब के असुर होकर चमक रहे हैं। सब "स वरुण के "वश" में हैं इस कथन का एक अभिप्राय है कि संसार के सभी सत्य अर्थात् सत्ताधारी पदार्थ भगवान् के वश में हैं। जो जिसके वश में होता है प्राण, गति और बुद्धि तो अपने उस वशकर्ता से भी होती है। क्योंकि जगत् के सब जड़ और चेतन सत्यदेव भगवान के वश में हैं। इसलिये इन देवों को प्राण, गति बुद्धि वरुण से ही प्राप्त हो सकती है। परन्तु ये सब सत्य सत्ताधारी देव वरुण के वश में ही क्यों है? इसका उत्तर इसी वाक्य में आगया कि सब "सत्य" व "वश" में हैं। सब सत्य ज्ञान, सत्य भाषण और सत्य वरुण भगवान के वश में हैं। कोई ऐसा सत्यज्ञान, सत्य सत्यकर्म नहीं हैं जो वरुण भगवान्में न हो। दूसरे शब्दों भगवान पूर्ण सत्यज्ञानी, पूर्ण सत्यभाषी और पूर्ण सत्य हैं। संसार के सब पदार्थों का भगवान् को पूर्ण सत्यज्ञा वेद के रूप में भगवान् ने अपने सत्यज्ञान का पूर्ण भाषण किया है—उनकी इस वेदवाणी में एक भी पद त्य का द्योतक नहीं है। और भगवान् सृष्टि चक्र को के लिये जो कर्म कर रहे हैं वे भी पूर्ण सत्य पर और इसी लिये पूर्ण सत्यकर्म हैं। जिसमें जितना ही सत्यज्ञान, सत्यभाषण और सत्यकर्म होगा दूसरे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने ही अधिक अंश में उनके लिये असुर होगा—प्राणदाता
न्नदाता और बुद्धिदाता होगा। भगवान् में सब से बढ़कर
या है। उनके सत्यज्ञान, सत्यभाषण और सत्यकर्मों की
ई भी तुलना नहीं कर कर सकता। उनमें सत्य की पूर्णता
सत्य की पराकाष्ठा है। इसीलिए विश्व के सब जड़ और
तना उनके वश में हैं और इसीलिये वे विश्व के सब जड़
र चेतन के असुर हैं—प्राणदाता, गतिदाता और बुद्धि-
ता है।

संसार के सब पदार्थों को सत्य नाम से कहने की एक
भी ध्वनि है कि ये सब पदार्थ वस्तुतः सत्ता रखते हैं।
मिथ्या नहीं हैं। इनकी जो सत्ता प्रतीत हो रही है, वह सत्य
कल्पित नहीं है। साथ ही, जब सब पदार्थों को वरुण
ाभगवान के वश में कहा तो इसकी यह भी ध्वनि है कि
ब सभी कुछ वरुण के वश में है तो पापी व्यक्ति को समझ
ना चाहिये कि वह भी उनके वश में है। वह उनकी पकड़
बाच नहीं सकता। उसे पाप का फल भोगना पड़ेगा। उस
बचने का एक ही उपाय है कि वह मन्त्र के उत्तरार्द्ध में
ई अनुसार वेद के स्वाध्याय से अपने आप को निर्मल
ना ले।

मन्त्र के "वशा" और "सत्या" पद यदि बहुवचनान्त
ने जायें तब तो इन का वह भाव होगा जो अभी ऊपर
ताया गया है। परन्तु ये दोनों पद एकवचनान्त भी हो सकते
। उस अवस्था में "सत्या" को स्त्रीलिंग "वशा" शब्द का
शेषण मानना होगा। वशा वैदिक साहित्य में वाणी को
हते हैं। और फिर वाणी शब्द वेदविद्या का वाचक होता है।
रुण की "वशा सत्या" है, मन्त्र के इस कथन का अर्थ यह
ना कि भगवान् वरुण की वेदवाणी के रूप में दी हुई विद्या
त्य है उसमें जो कुछ कहा गया है वह सर्वथा सत्य है। इस
थन का तात्पर्य यह होगा कि क्योंकि भगवान् सत्यज्ञानमयी
दविद्या के उपदेष्टा हैं इस लिये वे भी सत्यज्ञानी और सत्य
र्मी बन जाते हैं। क्योंकि पूर्ण सत्यविद्या पूर्ण सत्यज्ञानी और
त्यकर्मी से ही निकल सकती है। और इस प्रकार क्योंकि
गवान् पूर्णसत्य ज्ञानी और सत्यकर्मी है इसीलिये वे सब के
सुर हैं—प्राणदाता, गतिदाता और बुद्धिदाता हैं।

मन्त्र के पूर्वार्द्ध में इस प्रकार भगवान् की महिमा का
र्णन करके इसके उत्तरार्द्ध में उपासक कहता है कि मैं उस
र्णमय प्रभु से मिलने वाले सत्यज्ञानमय ब्रह्म तथा वेद का
वाध्याय करके अपने आपको तीक्ष्ण बना लेता हूं-निर्मल बना
ता हूं। और इस प्रकार मेरे पापाचारी होने की अवस्था में
या वरुण का-प्रचण्ड शक्ति शाली प्रभु का जो क्रोध मुझ
र पड़ता उससे अपने आपको बचा लेता हूं। तात्पर्य यह है कि
त्यमय भगवान् के सत्यमय वेद का स्वाध्याय और मनन
रने से उपासक भी सत्यज्ञानी बन जाता है। और उसके
त्यज्ञानी बन जाने से उस के आत्मा पर के पापाचरण जन्म
क्त दग्ध हो जाते हैं, वह स्वच्छ, निर्मल, निष्पाप निकल आता
पापचरण न हो सके। वेद का गहरा स्वाध्याय और मनन करने से हमारा अज्ञान फट जाता है इसीलिये फिर हमसे कोई पापाचरण नहीं हो सकता। जब हम से कोई पापाचरण ही नही होता तो भगवान् वरुण का क्रोध भी हम पर नहीं गिर सकता। उनके क्रोध का पात्र तो पापाचारी व्यक्ति ही होते हैं।

मन्त्र में भगवान् के क्रोध को मन्यु कहा है। मन्यु और क्रोध में भेद समझ लेना चाहिये। मन्यु शब्द "मन्" धातु से बनता है जिसका अर्थ होता है विचार करना। इसलिये मन्यु का अर्थ हुआ वह क्रोध जो विचार पूर्वक किया जाये। जब क्रोध विचार पूर्वक नहीं होता, केवल क्षणिक आवेश में आकर किया जाता है, वह एक तो क्रोध करने वाले व्यक्ति को पागल सा बना देता है—उसके होश हवास गुम कर देता है, और दूसरे वह क्रोध दूध की उबाल की तरह थोड़ी देर तक ही रह कर ठण्डा पड़ जाता है। उसमें स्थिरता नहीं होती। परन्तु जो क्रोध विचार पूर्वक किया जाता है उसमें आवेश का स्थान नहीं होता और इसीलिये वह क्रोध करने वाले को पागल नहीं बनाता—उसके होशहवास को गुम नहीं करता। दूसरे यह क्रोध क्षणिक नहीं होता, इसमें स्थिरता होती है। जब तक वह बात नहीं मिट जाती जिसके लिये क्रोध किया जाना आवश्यक समझा गया था तब तक वह क्रोध शान्त नहीं होता। क्रोध में अन्धा उबाल और अस्थिरता होती है और मन्यु में विचारमयी शान्तमुद्रा और स्थिरता होती है। भगवान् का क्रोध मन्यु है। इसीलिये वे सदा शान्त मुद्रा में रहते हैं परन्तु अपने इस मन्यु को तब तक हम पर से नहीं हटाते जब तक हम पापाचरण से परे हट कर निष्पाप नहीं बन जाते।

हे मेरे आत्मा! प्रभु के वेद ज्ञान का गम्भीर स्वाध्याय करके अपने आपको निर्मल बनाले। फिर तू उस प्रभु के मन्यु से मुक्त हो जायेगा।

वसन्त स्वागत

[रचयिता चौधरी गंगा प्रसाद जायसवाल "गंगा", डुमरावँ।]

अबाई ऋतुनायक की जान। हुए हैं सबके पुलकित प्राण॥
बेला मोगरा दौना गेंदा, चम्पक और गुलाब।
सबके हिय में साहस भरि भरि, मुख पै लाये आब॥
चतुर्दिक लख पड़ता शुभ रंग। मनोहर धवलधार है गंग॥१॥
कनइक केतकि कमल निवारी, गुलसब्बो गुलनार।
खिली चमेली औ हीना भी, कलियानी कचनार॥
अहा, सरसो के पीले फूल। हवा जब बहती, जाते झूल॥२॥
आम-मञ्जरी मोर-पंख सम, सिर पै शोभित ताज।
"गंगा" हृदय-कली मुरझी थी, विकसित है वह आज॥
चहूँ दिशि उमड़ पड़ा आनन्द। मगन हैं, मनो सच्चिदानन्द॥३॥
शीतल मंद सुगन्ध चहूँ दिशि, बहता आज समीर।
सेमर फूल फुले रतनारे, प्रकट कोष गम्भीर॥
देख, हिय उठती आज उमंग। प्रिया से मिलन चहे सब अंग॥४॥
भौंरा गूंज कूकते कोयल, बोलते विविध विहग।
मनो नाच गाना बाजा का, जमा हुआ है रंग॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकु
कोत्सव
२६ अप्रैल
उत्सव की
आशा की
अनेक वि
होगा। अ
के इच्छुक
प्रार्थनापत्र

डा०

इस व
बंगाल के
कर्ता—प्रधा
एम० ए०,
पूर्व वाइस
निमन्त्रित
उन्होंने नव
कार कर लि

देश के
स्थिति को
पंजाब ने
की योजना
के कारण
न दिया जा
पंजाब तथा
गुरुकुल विश्व
की योजना
की अपील
राशि से शि
जायगा तथा
करण लगाए
प्रारम्भ कर
रियों ने ५०
लड़ाई के इन
फिर भी प्रय
कर लिया गय
मात्रा में इकट्ठे
वगैरह लगाक
कर लिया गय
श्रेणी प्रारम्भ
शिल्प-विद्या
इसका अध्यय
रहा है कि अ
का रूप दे दि
का निश्चय ह
प्रकाशित कर
जनता गुरुकुल
शिक्षा का ह

श्री वि

आर्य

रविवार २१ फरवरी १९४३

सुधार के नाम पर बिगाड़

२१ फर्वरी को प्रतिवाद सभाएं करो

"प्रतिवाद प्रस्ताव प्राइम मिनिस्टर पंजाब और गवर्नर पंजाब के पास भेजो।"

पंजाब एसम्बली में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा और रा० ब० गोपालदास जी की ओर से पंजाब हिन्दू धर्म स्थान प्रबन्धक बिल पेश किया जा रहा है। कहने को तो इस बिल का उद्देश्य मन्दिर सुधार बताया जाता है, परन्तु यदि इस बिल की धाराओं का अध्ययन किया जाय तो पता लगता है कि इसका उद्देश्य सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रभाव क्षेत्र को बढ़ा कर, पंजाब में हिन्दुओं के पारस्परिक भेदभावों को बढ़ाकर जन्म के जात पात मानने वाले जन्माभिमानियों की ताकत बढ़ाना है। २१ फर्वरी को पंजाब के आर्य हिन्दु भाईयों को सार्वजनिक सभाएं करके इस बिल का विरोध करना चाहिए, निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार करके प्राइम मिनिस्टर पंजाब के पास भेजना चाहिए।

"यह सभा पंजाब एसम्बली में पेश किये जाने वाले पंजाब हिन्दू धर्म स्थान प्रबन्धक बिल का घोर विरोध करती है। इस बिल के पास होने पर हिन्दुओं में जात पात के बन्धन दृढ़ हो जायेंगे। हिन्दू सिक्ख एक दूसरे से दूर हो जायेंगे। सुधारक हिन्दुओं को हिन्दु सनातन धर्म से बाहर निकालकर, सनातन धर्म सभा पंजाब में रूढ़ियों के बंधनों को अधिक जटिल बनादेगी।" हरेक वेदाभिमानी आर्य सभ्यताभिमानी का कर्तव्य है कि वह इसबिल का विरोध करे और हिन्दुओं में असहिष्णुता तथा अनुदारता के भावों को फिर से पैदा न होने दे।"

प्रस्ताव की एक प्रति मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पास भी भेजें।

इस बिल की कलई खोलने के लिये इस बिल की धाराओं के विषय में निम्न लिखित जानकारी जनता के सामने रखी जाती हैं।

(१) हमारा सब से बड़ा एतराज़ बिल की क्लाज़ ९ और १० पर है, जिन में "सनातन धर्म" और "हिन्दू" की परिभाषा की गई है। ये क्लाज़ें नीचे दी जाती हैं

(२) क्लाज़ ९—कोई हिन्दू जो यह स्वीकार करता है कि ईश्वरकृत हैं, जो जन्म की जात-पात में विश्वास रख और उन धार्मिक व आध्यात्मिक सिद्धान्तों को अपने बाधित मानता है, जिन की शिक्षा निम्नाङ्कित ग्रन्थों रामायण, महाभारत, स्मृतियों और पुराणों में से किसी में दी गई है, उसके सम्बन्ध में यह समझा जायेगा कि सनातन धर्मावलम्बी हैं।

(३) क्लाज़ १०—"हिन्दू" का मतलब हिन्दुस्तान कोई ऐसा बाशिन्दा है जो सिख न हो, जो हिन्दुओं की लित जातों में से किसी एक में पैदा हुआ हो, जो गाय आदर करता हो, जो इस बात की घोषणा करे कि वह है, और अन्य देशों के मज़हबों जैसा कि इस्लाम, ई पारसी या यहूदी में से किसी मत के सिद्धान्तों मानता हो।

(४) हिन्दुओं पर ऐसे बिल के ठोंसने का परि यह होगा कि वे एक बार फिर जन्म की जात-पात में जायेंगे, जिनसे अब वे प्रायः स्वतन्त्र हो चुके हैं अथवा वाले हैं, और इस प्रकार सुधार के उस तमाम का पानी फिर जायेगा जो पिछले एक सौ वर्षों से सुधार किया है।

(५) "हिन्दू" की जो परिभाषा बिल में की गई उसका परिणाम यह होगा कि सिख हिन्दुओं से कट जा यद्यपि ज़रूरत इस बात है कि हिन्दू और सिख परस्पर मिल जायें। "हिन्दू" की यह परिभाषा हिन्दू-महासभा परिभाषा के नितान्त विरुद्ध है। मन्दिर सुधार के तो भी तरीके हो सकते हैं, मगर हिन्दू-सिख एकता ऐसा म कार्य है जिसे हानि पहुंचाना बुद्धिमत्ता नहीं।

(६) पंजाब के हिन्दू पुरोहित-शाही के अत्याचार बहुत कुछ आज़ाद हो चुके हैं, क्योंकि यहां के पण्डे पुरो अपनी मान-मर्यादा और धन सम्पत्ति को खो बैठे हैं। यह बिल पास हो गया तो सब मन्दिर और मठ उनके अ कार में चले जाने से एक बार वे फिर हिन्दुओं की कि के मालिक बन जायेंगे।

(७) समष्टि रूप से भी हिन्दुओं को इस बिल से नया लाभ नहीं होगा, प्रत्युत वे अपने पुराने अधिकारों से हाथ धो बैठेंगे। केवल जात-पात के विश्वास रखने संकीर्ण हिन्दुओं का छोटा सा समूह, जो पण्डों के झुकने को तय्यार होगा, इस बिल से लाभ उठा सकेगा।

(८) सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा के संशोधन के सार ब्राह्मण पुजारियों को वह अधिकार दिया गया है कि ज़िला कमेटियों और केन्द्रिय बोर्ड में अपने प्रतिनिधियों चुनाव करके भेजें, मगर ट्रस्टियों, मैनेजरों और दूसरे ध मानी और सुशिक्षित गैर-ब्राह्मण हिन्दुओं को, जो मन्दि और धर्मशालाओं को चला रहे हैं किसी चुनाव में होने की इजाज़त नहीं दी गई। सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा इसी संशोधन के आश्रित सब ब्राह्मण पुजारियों को वोट

CC-0. Gurukul Kangri Deemed University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...अथवा न रखते हों, मगर गैर-ब्राह्मण पुजारियों को इस ...धिकार से वंचित रखा गया है, हालांकि वे सैंकड़ों की ...या में पाये जाते हैं।

(९) अन्य प्रांतों में भी मन्दिर सुधार बिल पास हुए हैं, ...र कहीं ऐसा बिल पास नहीं हुआ है जैसा कि पंजाब के ... तजवीज़ किया गया है। पंजाब बिल अत्यन्त हानिका... हैं। यू० पी० में तो जो "बद्रीनारायण मन्दिर बिल" पास ...ा है उसमें यह अंकित कर दिया गया है कि प्रबन्धकर्तृ ...टी का एक सदस्य हरिजन होगा। लेकिन यह गिल पंजाब ...जो आर्यसमाज और सिख मत की भूमि है, उदार विचारों ...नाश कर के जात-पात और छूत-छात को सुदृढ़ कर ...ा।

(१०) हमने इस लेख में बिल के प्रस्तावकों के सम्बन्ध में ...ा है कि उनका उद्देश्य इतना मन्दिरों का सुधार करना ...ं जितना इन की आड़ में शक्ति सम्पादन करना है। हमारे ...विचार की इस बात से पुष्टि होती है कि उन्हों ने पंजाब ...ना सब मन्दिरों और तत्सम्बन्धी जायदादों को बिल की ...से बाहिर रखा है जो इस समय उनके अपने या उन जैसे ...रे पूंजीपतियों के कब्जे में हैं। इससे यह स्पष्ट प्रकट है कि ...सारे मन्दिरों व उनकी सम्पत्तियों पर बिल के द्वारा कब्जा ...के अपनी शक्ति को बढ़ाने की चेष्टा करते हैं। हिन्दुओं ...भलाई के नाम पर उनका चीख पुकार करना ढोंगमात्र है ...र सरमायादारी के हथकण्डे हैं। अब हम नीचे लाहौर के ...उन धर्मस्थानों के नाम अंकित करते हैं जिनकी मासिक ...य हज़ारों रुपयों की है, और जिन्हें बिल की ज़द से बाहिर ...ा है—

(१) रत्नचन्द का तालाब (शाहालमी गेट के बाहिर)

(२) मेलाराम का तालाब (रेलवे स्टेशन के निकट)

(३) मूलचन्द का मन्दिर व धर्मशाला (रेलवे स्टेशन के बाहर)

(४) भाई मनोहर लाल का मन्दिर (शहालमी गेट के बाहर)

(५) वंशीधर का मन्दिर (अनारकली बाज़ार)

(६) छोटे लाल का मन्दिर (अनारकली बाज़ार)

...इन मन्दिरों के मालिक लाहौर के विख्यात सनातन धर्मी ...त हैं, और उनमें से कुछ इस बिल के प्रेरक भी हैं।

(११) पंजाब में सिख और आर्यसमाज दो बड़ी सुधारक ...क्तियां हैं और हिन्दू जनसाधारण उनके प्रचार से प्रभावित ...जा रहे हैं। अंतर्जातीय विवाहों की प्रथा लोकप्रिय हो ...ा है। सनातनधर्मी आर्यसमाजी बनते हैं और ऐसा भी ...ा है कि आर्यसमाजी फिर सनातनधर्मी बन जाये हिन्दुओं ...र सिखों में रोटी-बेटी का सम्बन्ध जारी है। बहुत से ...दू घरानों में गुरु ग्रन्थ साहिब की पूजा होती है। इस बिल ...पश्चात् यह मेल-मिलाप भी समाप्त हो जायगा। सनातन ...ों एक नई जात बन जायेंगे, और आर्यसमाजियों व सिखों और मठों के प्रबन्ध में कोई अधिकार नहीं मिलेगा। इस समय सुशिक्षित और आत्माभिमानी हिन्दू जात-पात और पोपडम में विश्वास नहीं रखते। जब तक उनका मुख बन्द न कर दिया जाय तब तक उदार विचारों के कुचले जाने की आशा नहीं हो सकती। और बिल का अभिप्राय भी यही है कि इन लोगों को जात-पात की जंजीरों में जकड़े रहना नहीं चाहेंगे तो हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म से अलग कर दिये जायेंगे। ऐसी दशा में उदार हिन्दू या तो जात-पात और पण्डों के अधीन हो जायेंगे या निराश होकर मन्दिरों और मठों से पृथक रहेंगे, अथवा आर्यसमाजी व सिख बन जायेंगे अर्थात् बिल के पास हो जाने से पण्डे पुजारी एक बार फिर हिन्दुओं पर शासन करने लगेंगे, जात-पात के कानून बनायेंगे, और अन्धविश्वास फैलेगा। हिन्दुओं के पंख कट जायेंगे, और उन्हें पिंजरे में बन्द कर दिया जायगा, ताकि पण्डे पुरोहित उन से अपना मन बहला सकें।

दलितोद्धार विभाग

(रामस्वरूप पाराशरी मंत्री दलितोद्धार सभा गुरुदत्त भवन--लाहौर)

(१) सभा का कार्यक्षेत्र बढ़ जाने के कारण सभा ने चार नये कार्य कर्ताओं की और नियुक्ति की है।

(२) श्री पं० बनवारी लाल जी B. A. (स्यालकोट) सदा से दलितोद्धार के कार्य में बड़ी तत्परता दिखाते रहे हैं। मेरी प्रार्थना पर उन्होंने हमें समय देना स्वीकारकर कृतार्थ किया है।

(३) म० धर्मपाल जी तथा म० बसावाराम जी की मण्डली ज़िला स्यालकोट के ग्रामों में दौरा कर रही है। यह मण्डली ग्रामों में दलित कहलाने वाले भाइयों के छोटे २ उत्सव करायेगी। पं० बनवारी लाल जी B. A. की देख रेख व उनके सहयोग से यह मण्डल कार्य कर रहा है। जनता को इस मण्डली से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहियें।

(४) पं० भगवद्दत्त जी और म० जैमलसिंह की मण्डली ज़िला करनाल के ग्रामों में प्रचार कर रही है।

(५) म० सुखदेव जी की मण्डली एक ढोलकी वाले सहित अंबाला ज़िला में प्रचार कर रही हैं।

(६) कुछ उपदेशकों का कार्यक्षेत्र निम्न प्रकार है :—

ठा० प्रतापसिंह जी सरहद्दी सूबा—पं० रामदत्त जी गौतम अंबाला प्रान्त, म० हज़ारीलाल जी सरगोधा प्रान्त, पं० प्रीतम चंद्र जी, नरेन्द्र जी, म० बलराज जी, पं० अमरनाथ जी कांगड़ा प्रान्त, ठा० उदयसिंह जी नार नौल (पटियाला), पं० रामदेव जी जिला मियांवाली, पं० सुरेन्द्रपाल जी चीचावतनी, म० सुरेन्द्रनाथ जी गुलशन मण्डी बहाउद्दीन, पं० रामचन्द्र जी स्नातक पिण्डी भट्टियां आदि।

(७) धनपतमल दीवानचंद धर्मार्थ औषधालय चिचैयां जिला कांगड़ा, लगभग डेढ़ वर्ष से इस सभा द्वारा संचालित है। औषधालय का काम बड़ा सन्तोषजनक है। इलाके की गरीब जनता को इससे बहुत लाभ पहुंचा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल कांगड़ी

५००) रुपये का सात्विक दान

नवलगढ़ (बीकानेर) के सेठ श्रीयुत मनसुखराय जी गत सप्ताह गुरुकुल कांगड़ी पधारे। आपने गुरुकुल के विद्यालय, कालिज, गोशाला, रसायन शाला, फार्मेसी आदि सभी विभागों को बड़ी दिलचस्पी से देखा और सर्व प्रकार से सन्तुष्ट होकर ५००) का मासिक दान दिया। इस पवित्र दान के लिये दानी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं।

स्वास्थ्य समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। गत मास ब्रह्मचारियों के तोल में सन्तोष-जनक वृद्धि हुई। विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों का मासिक शारीरिक निरीक्षण नियमित रूप से हो रहा है। सर्दी का प्रकोप धीरे २ हटता जा रहा है। इस ऋतु-परिवर्तन के समय चिकित्सक-गण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की पूरी २ निगरानी रखते हैं।

गुरुकुल मुलतान के समाचार

जनता को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि गुरुकुल मुलतान पं० जयदेव जी वेदालङ्कार के मुख्याधिष्ठातृत्व में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। श्री पण्डित आर्यसमाज मुलतान छावनी के पुरोहित पं० बलदेव कृष्ण जी के साथ गुरुकुल के लिए चन्दा मांगने के लिए दौरा कर रहे हैं। आर्य समाजों और जनता को चाहिये कि वे गुरुकुलार्थ उनको पूर्ण आर्थिक सहायता देकर पुण्य के भागी बनें।

मन्त्री आ. प्र. स. पं.

गुरुकुल नारसेन के समाचार

(१) आजकल गुरुकुल में नये मकान बनवाये जारहे हैं। हस्पताल, कूप, स्नानागार रहट इत्यादि बन चुके हैं। नया आश्रम, यज्ञशाला तथा विद्यालय की पक्की छत उत्सव से पूर्व ही बनकर तैयार हो जायगी।

(२) गतसप्ताह गुरुकुल के चन्दे के लिए देहरादून में एक डेपूटेशन गया था। वहां की जनता से गुरुकुल को ५००) प्राप्त हुए। दानी महानुभावों में श्री ला० बाबूराम जी आढ़ती १०० रु० श्री ला० काशीराम जी फूलचन्द जी ५१), श्री बा० अमरनाथ जी ठेकेदार की धर्मपत्नी श्रीमती दयावती देवी जी ५१) रु०, तथा श्री डा० केशव चन्द्रसेन ५१) रु० के नाम विशेष प्रशंसनीय हैं।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का २७वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का २७वां वार्षिकोत्सव २७, २८ फर्वरी शनिवार और रविवार को गुरुकुल भूमि तुगलकाबाद में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। कवि सम्मेलन, आर्य धर्म सम्मेलन आर्ययुवक सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन, और विविध सम्मेलनों की आयोजन की जा रही है। प्रसिद्ध पहलवानों के कुश्ती और ब्रह्मचारियों के शारीरिक खेलों का शानदार प्रदर्शन होगा अन्त्याक्षरी करेंगे। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पं० ध वेदालङ्कार आजकल देहली में गुरुकुल के लिए धन कार्य और उत्सव को सफल बनाने का आयोजन क लोगों के लिये सवारी का विशेष प्रबन्ध किया जा जिसकी सूचना जनता को बाद में दी जाएगी।

गुरुकुल कमालिया लायलपुर

जब से श्री आचार्य सत्यभूषण जी वानप्रस्थी ने से गुरुकुल की बागडोर अपने हाथ में ली है, गुरुकुल दिन उन्नति कर रहा है। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ विद्यार्थियों का स्वास्थ्य, रहन सहन व वेष उत्तम हो नये वर्ष से गुरुकुल निशुल्क कर दिया जायगा। श्रेणियां खोल दी जावेंगी। वसन्तोत्सव बड़े समारोह से में मनाया गया। सैकड़ों कमालिया निवासी देवियों और ने इस उत्सव में भाग लिया। विद्यार्थियों के लेज़िय खेलों को देख कर जनता बहुत प्रसन्न हुई और गु दान दिया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिक महोत्सव १२, १३, तदनुसार २९, ३० फाल्गुन तथा १ चैत्र दिन शुक्र, श को कुलभूमि में बड़े समारोह के साथ मनाया जाएगा।

१२ ता० वरोज़ शुक्रवार को थानेसर शहर में कीर्त्तन" निकाला जाएगा।

१४ ता० रविवार को प्रातः नये ब्रह्मचारियों का तथा वेदारम्भ संस्कार होगा। जो सज्जन अपने बाल गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहते हैं, वे अभी कार्यालय मंगवाकर और भरकर भेज दें। जिससे कि फौर्म की उनको शीघ्र मिल सके, और वे उत्सव पर अपने बाल साथ ले सकें। उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार के ब्रह्मचारी नियम पूर्वक प्रविष्ट हो सकता है। अतः महोदय देर न करें।

उत्सव पर जो सज्जन दुकानें लाना चाहें, वह भी ही मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल क्षेत्र से पत्र व्यवहार करें उनकी योग्य व्यवस्था की जा सके। पत्र व्यवहार निम्न करें— प्रियव्रत विद्यालङ्कार, मुख्याधिष्ठा

डाक० गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (करन

आर्य समाज संसार

आर्य समाज सिरसा

आर्य्य समाज मन्दिर सिरसा का वार्षिक चुनाव प्रकार से ता० २४—१—४३ को हुआ।

प्रधान श्री ब० कृष्णलाल जी, उपप्रधान श्री बा० शंकर जी, मन्त्री श्री जीवणदास जी, उपमन्त्री श्री बा० दास जी वकील, कोषाध्यक्ष पं० वेदव्रत जी, पुस्तकाध्य मा० गणपतदास जी, निरीक्षक श्री बा० हुक्मचन्द जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश विदेश के समाचार

पंजाब समाचार

—पंजाब में खांड की कमी को पूरा करने के लिए यू. पी. ...ट ने ३लाख मन गुड़ पंजाबको देने की इजाज़त दे दी है। ...खिल भारतवर्षीय किसान सम्मेलन जो पंजाब में प्रथम ...हो रहा है अमृतसर ज़िलेके भकना स्थान पर पूरी तरह से ...य्यां हो रही हैं।

—पंजाब विद्यार्थी संघ ने मि. जिना को निम्न तार भेजा ...—"पंजाब के विद्यार्थी आप से प्रार्थना करते हैं कि आप ...ी जी से समझौते के लिए मिलें और उनकी जेल से ...की मांग करें।"

देश समाचार

—बंगाल गवर्नमेण्ट ने कांग्रेस के आन्दोलन में गिरफ्तार ...हुए १८ वर्ष से कम आयु वाले व्यक्तियों को इस शर्त पर ...का निश्चय किया है कि उनके माता पिता यह पूर्ण विश्वास ...यें कि उनका मुक्त लड़का या लड़की फिर किसी जनता में ...न्ति उत्पन्न करने वाले आन्दोलन में भाग न लेंगे।

—६ मास की कैद के बाद महात्मा गान्धी ने कांग्रेस के ...लगाये प्रतिबन्धों को हटाने के लिए २१ दिन का उपवास ...कर दिया है। उनका यह अनशन आमरण नहीं है इस ...के पानी को सुपच्य बनाने के लिए उसमें सिट्रस का रस ...कर पीयेंगे।

—तीसरे दिन महात्मा गान्धी का स्वास्थ्य बिलकुल ठीक ...। चौथे दिन उनकी जी मचलाहट शुरू रही नींद भी ठीक ...से नहीं आयी। गान्धी जी ने निवास स्थान के बगीचे ...पना दैनिक भ्रमण बन्द कर दिया है।

—सर पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास और सेठ घनश्यामदास ...ा ने देहली में वायसराय की एक्सीक्यूरिव कौन्सिल के ...ीय सदस्यों के साथ महात्मा गान्धी के उपवास से उत्पन्न ...ता पर विचार विनिमय किया।

—प्रो० अब्दुल मजीद खान ने महात्मा गान्धी के विषय में ...ते हुए कहा कि:—"महात्मा गान्धी संसार के सब धर्मों ...च्चतम आदर्शों और मानवीयता के साहित्य में भद्रतम ...र्यों के प्रतिनिधि हैं। आचार के आदर्श की दृष्टि से महा-...गान्धी का मनुष्यों में वह स्थान है जो पहाड़ों में मौण्ट ...स्ट का है। उनका प्रेम स्वर्ग के समान ऊंचा, समुद्र की ...गहरा संसार की तरह विशाल है।.....इस शताब्दि के ...प्रधान मनुष्यों में पथ प्रदर्शन का काम करने के लिए पर-...ा ने अपनी शक्ति को महात्मा गान्धी के रूप में प्रगट ...ा है।"

—डा. विधानचन्द्रराय महात्मा गान्धी को मिलने के लिए ...फरवरी को कलकत्ता से रवाना हो रहे हैं।

—नेशनल हेरल्ड के सम्पादक मि. के. रामराव छः मास ...कैद की अवधि की समाप्तिपर लखनऊ डिस्ट्रिक्ट जेल से ...

—कपूरथला रियासत जेल में कुछ अकाली बन्दियों ने भूख हड़ताल शुरु कर रक्खी थी। महाराजा साहेब के अधिक उत्तम भोजन देने के आश्वासन मिलने पर उन्होंने अपनी भूख हड़ताल बन्द कर दी है।

—नासिक के स्थानीय कार्य कर्त्ता मि. रामाचार्य दामोदर पदामनी ने महात्मा गांधी की सहानुभूति के रूप में उपवास प्रारम्भ कर दिया है।

—हूर आन्दोलन को खतम मरने के लिए जब से प्रयत्न शुरू हुए हैं तब से अब तक ४००० से अधिक हूर कैद किये जा चुके हैं। इन में १००० के लगभग स्त्रियां हैं।

—पंजाब कृषक प्रजामण्डल, फ्रीडम ग्रुप के अध्यक्ष प्रो० पी० ए० वाडिया, कराची रुई संघ तथा विजिआनाग्राम के महाराज कुमार सर विजय ने वायसराय को अपनी पृथक् २ तारें भेज कर महात्मा गान्धी को कैद मुक्त करने की अपील की है। अलाहाबाद के कम्यूनिस्ट लोगों ने भी उपर्युक्त आशय का एक प्रस्ताव पास किया है।

—महात्मा गान्धी के उपवास से उत्पन्न स्थिति पर विचार विचार करने के लिए १८ फरवरी को नई देहली में सर तेज बहादुर सप्रू के सभापतित्व में मि० अलाबक्श, श्री राजगोपालाचार्य, मि० के. एम. मुन्शी, डा० श्यामप्रसाद मुसर्जी मि० फजलुल हक आदि नेताओं के आने की पूर्ण सम्भावना है।

विदेश समाचार

—कौण्ट सियानो को जिनको इटली के परराष्ट्र मन्त्रित्व के पद से पृथक् किया गया था उनको 'होलीसी' का इटालियन राजदूत निश्चित किया गया है।

—फ्रेंच जनरल गिरांड और बर्गेरेट की धर्मपत्नियों को जर्मन लोगों ने कैद कर लिया है।

—डर्बी में ९ फरवरी को प्रातः ३-३५ पर भूकम्प का धक्का पहुंचा। कोई नुकसान नहीं हुआ।

—भारतमन्त्री मि. एमरी के कथनानुसार हिन्दुस्तान की मत अव्यवस्था के दिनों में ६०२२९ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया था जिनमें से १ दिसम्बर तक थी ३९४९८ व्यक्ति कैद में थे। इसी अन्तर में पोलिस को ४७० और मिलिटरी को ६८ अवसरों पर गोली चलाने के लिए बाधित होना पड़ा।

—जर्मन की कीलस्थित वर्कशाप को इस प्रकार नष्ट भ्रष्ट किया गया कि जर्मन लोगों की यू बोट को निर्माण के लिए जेचोस्लोवेकिया की स्कोडा वर्क्स पर जाने के लिए बाधित होना पड़ा।

अब्राहमलिंकन के जन्मोत्सव पर भाषण करते हुए प्रे० रूजवेल्ट ने कहा कि ट्यूनिशिया की लड़ाई की समाप्ति पर यूरोप में मित्रराष्ट्र चिर प्रतीक्षित द्वितीय मोर्चे को खड़ा करेंगे।

—रोम रेडियों की घोषणा के अनुसार सि. मुसोलिनी की गवर्नमेंट से कुछ 'अण्डर सेक्रेटरीज़' ने त्यागपत्र दे दिया है।

—पर्शिया के प्राईम मिनिस्टर ने पार्लियामेंट में बढ़ते हुए अविश्वास के कारण अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है। १ साल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

पं० यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार वेद प्रचार अधिष्ठाता

१. शिवरात्रि का दिन आर्य समाज के लिये विशेष महत्व रखता है। इस दिन आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को परमार्थतत्व का बोध हुआ था। इसलिये को इस बोधरात्रि भी कहते हैं। इस वर्ष शिवरात्रि ४ मार्च को है। प्रत्येक आर्य समाज को यह दिन बड़े समारोह से मनाना चाहिये। प्रत्येक समाज में प्रातःकाल जलूस निकाले जायें और ऋषि के जीवन पर व्याख्यान कराये जायें शिवरात्रि से पूर्व प्रत्येक आर्य समाज में ऋषि जीवन की कथा की जाये। शिवरात्रि के दिन प्रत्येक आर्य पुरुष स्त्री तथा बालक से ।) एकत्रित किया जाये। सभा ने इसके लिये ।) मिशन फण्ड स्थापित किया हुआ है।

२. २६ फाल्गुण १२ मार्च ४३ लेखराम बलिदान दिवस है प्रत्येक आर्य समाज को बड़े समारोह से यह दिन मनाना चाहिये। और शहीद के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित करनी चाहिये। और शुद्धि के कार्य्य को जारी रखने के लिये अधिक से अधिक धन सभा कार्य्यालय में एकत्रित करके भेजना चाहिये।

३. श्री पं० सत्यदेव जी आर्य मुसाफिर तथा म० शमशेर सिंह जी भजनोपदेशक के प्रयत्न से गांव भदसाली ज़िला हुश्यार पुर में आर्य समाज स्थापित हो गई है। और समाज के २०-२२ समासद भी बन गये हैं। यह ग्राम म० शमशेर सिंह जी भजनोपदेशक की जन्म भूमि है।

४. सौंधंल जिला करनाल में म० अमरसिंह जी भजनोपदेशक के प्रयत्न से आर्य समाज स्थापित हो चुकी है। और इसका प्रथम उत्सव बड़ी धूम धाम से २३ से २५ फर्वरी को मनाया जा रहा है। मैं अन्य उपदेशक महानुभावों से भी प्रार्थना करता हूं कि वे भी अपने २ स्थानों पर आर्य समाज स्थापित करने का यत्न करें।

५. फर्वरी मास के उत्सव तथा प्रबन्ध—

सौंधंल—२३ से २५ तक पं० रामदत्त जी, पं० रामस्वरूप जी, पं० मुनीश्वर देव जी, म० भक्तराम जी, म० भद्रपाल जी, म० जय प्रकाश जी तथा पं० समरसिंह जी की हरयाना प्रान्त की मंडली।

बटाला—२६ से २८ तक श्री ला० चिरंजीतलाल जी, श्री पं० हरदयालू जी, श्री पं० रामस्वरूप जो पराशरी, श्री म० चिरंजीलाल जी प्रदेश, म० बलराज, म० हंसराज जो म० शमशेर सिंह जी।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ—२६से २८ तक श्री पं०भीमसेन जी सभा मंत्री श्री आचार्य प्रियव्रत जी म० शिवनारायण जी।

इलाहाबाद—२६ से २८। श्री स्वामी मंगलानन्द जी, श्री पं० रामस्वरूप जी शास्त्री, श्री पं० रामदत्त जी, श्री पं० विष्णुमित्र जी म० भक्तराम जी म० आशानन्द जी म० तेजभान जी।

सिंदी—२६ से २८। श्री पं० द्रौपदीदेवी जी, श्री म० ह
करोल बाग—२६ से ४ मार्च। श्री पं० मुनीश्वरदेव ज
अमरसिंह जी।
सदौल—२७ से १ मार्च पं० समरसिंह जी तथा उन
आसिया मुहल्ला पेशावर—२६ से ४ मार्च। पं० गुरु
क्षितीशकुमार जी, म० मेहरचन्द जी।

युद्ध समाचार

रूस—

रूस की लाल सेना ने अब तक १ लाख वर्ग प्रदेश शत्रुओं से वापिस ले लिया है।

—स्टैलिनो से ५० मील दूरी पर स्थित कैमोस्यक शन को लाल सेना ने फिरसे हस्तगत कर लिया है।

—नवीन समाचारों से ज्ञात हुआ है कि कुर्स्क, और बाईलग्राड इन तीनों शहरों को भी रूसी सेना अपने कब्ज़े में कर लिया है।

—टर्की में आये कुछ यात्रियों से ज्ञात हुआ है सेनाओं की बलगेरियन किनारे पर उतरने की सम्भ जर्मन लोगों को इससे बड़ा खतरा सा अनुभव होने वे तट पर विशेषतः बर्गस और वर्ना में किलेबन्दी कर

—रूसी सेनाओं ने लोज़ोवाया को भी हस्तागत क है। वे अब नीपर नदी की तरफ़ बढ़ रही हैं। नवीन सम के अनुसार क्रैस्नोडार जर्मनी से छीन लिया गया।

—नीपर नदी के मोड़ की तरफ सोवियट टैंक १ घण्टे की चाल से बढ़ रहे हैं। नवीन खबर के अनुस सेनाएं नीप्रोपेट्रोव्हास्क से केवल ५० मील दूर रह गई हैं

—मित्रराष्ट्रों के हवाई जहाजों ने गत सप्ताह फ्रान्स, नेपल्स और सिसली पर भिन्न २ समय पर ह किये।

बर्मा—

—६ फरवरी को माण्डले के पास इरावदी नदी प सगाइंग शहर के रेलवे-क्षेत्र पर शाही हवाई सेना के वि बाम्बर्स ने जबरदस्त हमला किया।

—डोनबेक और रीथडांग के पास जापानी से प्रत्याक्रमण किये परन्तु उनको अपने उद्देश्य में असफ वापिस लौटना पड़ा।

अफ्रीका—

—उत्तरी अफ्रीका में ट्यूनिशिया के दक्षिण में सि पास को जर्मन सेनाओं ने अमरीकन फौजों से छीन लिय

—चर्चिल की घोषणा के अनुसार जनरल ईसेन ह उत्तरी अफ्रीका में मित्रराष्ट्रों का कमाण्डर-इन-चीफ़ नियु गया है। जनरल अलेग्जेंडर उनके नीचे डेयुटी कमाण्ड चीफ़ का काम करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित हो

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय
ऊ-३-४३

अत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक १५
वार्षिक मूल्य ४)
७ मार्च १९४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००२ पुस्तकालय गुरुकुल कां. (Sa

अध्यात्म सुधा

[१३]

'मन्युरसि मन्युंमयि धेहि'

बिना विचारे हृदय में गुस्से का जो भाव पैदा होता है, ... क्रोध कहते हैं। मनन पूर्वक किसी ऊंचे आदर्श की रक्षा ...लिए रुकावट डालने वाली शक्ति को क्षण करने का जो ...वा हृदय में पैदा होता है, उसे मन्यु कहते हैं।

कोई ऊंचा आदर्श सामने नहीं है, केवल मात्र दिल को ...न्द न आने के कारण स्वभाव में तीव्रता आने पर मनुष्य ...पे से बाहर हो जाता है। परन्तु मनन पूर्वक, विचार पूर्वक ...स्मा करने वाले का क्रोध अपने संयम में रहता है। ऐसे ...म्मी के क्रोध को मन्यु शब्द से कहा जाता है।

परमात्मा भी दुष्टों पर क्रोध कर दण्ड देते हैं। परन्तु ...ड देते समय वह अपराधी की कर्म मर्यादा से पार नहीं ...रते। वह उसको यथोचित दण्ड देते हैं। एक अपराध के ...रण सारे जीवन को नष्ट नहीं करते। इसी लिये वेद में प्रर्थना ...गई है कि हे परमात्मन्! आप मन्युस्वरूप हैं हमारे अन्दर ...यु धारण कराइए। हम लोग मित्र तथा पड़ोसी की छोटी २ ...ों से अप्रसन्न होकर, उससे असहयोग कर लेते हैं, उसके ...ा के वैरी बन जाते हैं। गुस्से में आकर उसकी एक बुराई ...कारण उसकी अच्छी बातों की भी निन्दा करने लगते हैं। ...णाम यह होता है कि घरों में शत्रुता स्थिर हो जाती है। ...ध के वश में हुआ आदमी प्रतिकार कुछ नहीं करता, दिल ...ल २ कर मर जाता है। परन्तु मन्यु को धारण करने वाले ...म पूर्वक रुकावट डालने वाले को नष्ट करके, आगे कदम ...ते हैं।

आज आर्य हिन्दू जाति इसी क्रोध की शिकार बनी हुई ...दलित भाइयों के एक दो दोषों के कारण उन्हें नीच समझ ...॥ उनकी अधिकार याचना को सुनकर, गुस्से में कांपने ...ती है। परिणाम यह है कि आर्य जाति के असली शत्रु उसी ...ार निश्चित है। यदि आर्य जाति ने विचार किया होता कि ...दलित भाइयों को धोखे से या प्रलोभनों से धर्म भ्रष्ट किसने ...ा है तो उनके हृदय में उन नीच विधर्मियों के प्रति मन्यु का ...पैदा होता है; परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इसलिए आर्य जाति कमजोर हो गई। अत्याचार तथा अन्याय क... के दिल में जोश नहीं पैदा होता—अन्याय क... पैदा नहीं होता—वह मनुष्य नहीं है। मन्यु ही मनुष्य ...ा है। मन्यु के ही बल पर ऋषि दयानन्द ने राजाओं तथा मठाधिकारियों को फटकार बताई थी। इसी मन्यु के कारण राजा रामचन्द्र ने रावण का विध्वंस किया था। अर्जुन ने इस मन्यु के वश हो कर, जयद्रथ का वध किया था। आज हम लोगों ने अपनी कमजोरी को छिपाने के लिये 'क्षमा' अहिंसा आदि नए २ शब्द बना लिए हैं। महात्मा गान्धी की अहिंसा आत्मज्ञानियों के लिए है। जब तक हम आप, शारीरिक सुख दुःख को अनुभव करते हैं, तब तक हमें इस आध्यात्मिक स्वप्न का आनन्द नहीं लेना चाहिए।

जिस प्रकार रात के स्वप्न मनुष्य को कमजोर बनाते हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक स्वप्न संसारी सुख दुःख अनुभव करने वालों को कमज़ोर बना देते हैं। मन्यु, बल तथा शक्ति की निशानी है। क्रोध कमजोरी तथा लाचारी की बिशानी है मन्यु धारण करने वाला बोलता कम है। सोचता ज्यादह है। क्रोधी पुरुष सोचता कम है, बोलता बहुत है। आज हमारी जाति हमारे नेताओं की अधिक संख्या क्रोधी पुरुष की तरह, प्लेट-फार्मों तथा अखबारों में शोर मचा रही हैं, परन्तु मन्यु धारण कर, आपत्ति का मुकाबला करने का संकल्प नहीं करते। परमात्मन् बल दो कि हम आप की तरह मन्यु धारण कर, सिद्धान्त की रक्षा तथा सचाई के लिए संसार में भयंकर प्रलय ला सकें। लोग आराम तथा एश की ज़िन्दगी में मस्त हैं, उन्हें जगाने के लिए हमारे अन्दर मन्यु का भाव पैदा कीजिए।

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक उन्नति

श्री पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य अमृतधारा कृत नवीन उर्दू पुस्तक अभी-अभी प्रकाशित हुई है। जिस में हर प्रकार के व्यायाम तथा आसनों द्वारा शरीर बल को बढ़ाने की विधि बड़ी उत्तमरीति से पेश की गई है। मूल्य ॥।)

श्री चमूपति साहित्य विभाग
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

स्वयं उसके भक्त बनो और दूसरों को बनाओ

[ले०—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति]

—गतांक से आगे—

यहां एक प्रश्न हो सकता है कि वरुण का मन्यु हमें निष्पाप किस प्रकार बनायेगा। इसका समाधान यह है कि हमारे विभिन्न पापों के कारण वरुण का मन्यु हम पर गिरता है। इसी के फल स्वरूप हमें भांति-भांति के दुःख भोगने पड़ते हैं। जब हमने और अपने आस पास के प्राणियों को मिल रहे भांति-भांति के कष्टों पर विचार करेंगे तो हमारे मन में विचार उठेगा कि भगवान् तो न्यायकारी हैं, इस लिये वे किसी को भी यों ही अकारण कोई दुःख नहीं दे सकते। हम सब को जो दुःख मिल रहे हैं उनका कोई कारण अवश्य होगा। वह कारण हमारे दुष्कर्म ही हो सकते हैं। इसलिये हमें जो दुःख मिल रहे हैं वह हमारे दुष्कर्मों के ही कारण हमें मिल रहे हैं। हम नहीं कह सकते हमारे कौन से दुष्कर्म का फल हमारा कौन सा दुःख है। इस लिये अच्छा यही है कि हम अपने सभी दुष्कर्म त्याग दें। जब हम में कोई भी दुष्कर्म न रह जायेगा तो हमें कोई भी दुःख नहीं मिल सकेगा। इस विचार का फलस्वरूप हम पापाचरण को छोड़ कर निष्पाप बन जाते हैं। इस प्रकार भगवान् का मन्यु हमें निष्पाप बनाने में सहायक होता है।

जब तक हम पापाचरण से सर्वथा मुक्त नहीं हो जाते तब तक भगवान् का मन्यु हम पर गिरना बन्द नहीं हो सकता। क्योंकि हमारा कार्य भी पापाचरण भगवान् से छिपा नहीं रहता। वह हमारे सब प्रकार के दुग्ध अर्थात् हमारे द्वारा होने वाले धर्माचरण के दोषों को—अधर्माचरणों को भली भांति जानते रहते हैं। किसी पापाचारी के मन में यह भूत नहीं रहनी चाहिये कि उसका कोई ऐसा भी पापाचरण हो सकता है जिसे राजा वरुण न जान पाते हों। नहीं, वह हमारे एक-एक पाप को देखते रहते हैं। इसी लिये मन्त्र में कहा है 'कि हे उग्र तुम हमारे सब प्रकार के दुष्कर्मों को जानते हो।'

मन्त्र के प्रथम चरण में उपासक ने कहा था कि हे महाराज मैं आप को नमस्कार करता हूं, आपके आगे झुकता हूं, आप की भक्ति करता हूं। परन्तु किसी सच्चे उपासक को केवल इतने से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये कि वह स्वयं प्रभु का भक्त है स्वयं अपना जीवन धार्मिक रखता है। उसे अपने चारों ओर के लोगों को भी प्रभु भक्त धार्मिक, बनाने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। इसी अभिप्राय से मन्त्र में कहा है कि "मैं सहस्रों औरों को भी प्रेरणा करता हूं कि वे आप को नमस्कार करें, आप की भक्ति करें।" इस प्रकार मन्त्र के इस वाक्य की यह स्पष्ट सूचना है कि वैदिक उपासक का जीवन संसार से पृथक् होकर वन-पर्वत की किसी एकान्त गुफा में बैठे रहने वाले क्रिया हीन तापस का नहीं होना चाहिये। प्रत्युत उसका जीवन संसार में रह कर आप की भक्ति और धार्मिक पवित्रता का सौरभ सहस्रों मनुष्यों तक पहुँचाने वाले क्रिया शील प्रचारक का होना चाहिये।

जो लोग इस प्रकार का ज्ञान और भक्तिमय पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं और दूसरों को भी ऐसा पवित्र जीवन व्यतीत करने में सहायता पहुंचाते हैं उन्हें जहां आध्यात्मिक लाभ होते हैं वहां सांसारिक लाभ भी उन्हें अनेक प्राप्त होते हैं इसे सूचित करने के लिये मन्त्र में कहा है कि "यह आपक सौ वर्ष तक जीता रह सके।" ऐसे उपासक की की लम्बी आयु होती है, ऐसी स्पष्ट सूचना इ से निकलती है। फिर यह दीर्घ आयु की प्रति अन्य लाभों का उपलक्षण मात्र है। दीर्घ आयु के सहायक आदि पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र स्वास्थ्यप्रद ग अनेक सांसारिक सुखों का ग्रहण भी इस दीर्घ आयु के वर्णन में समझना चाहिये। इस प्रकार इस वर्ण भी स्पष्ट सूचना मिलती है कि वैदिक भक्ति मार्ग में रिक सुखों को सर्वथा त्याज्य नहीं समझा जाता है। उपादेय बताया गया है। हां, इतनी बात अवश्य सांसारिक सुख ब्रह्ममय पवित्र जीवन के सहकारी अ ही निकलने वाले होने चाहियें, उस जीवन के विरो होने चाहियें।

हे मेरे मन! तू अपना जीवन प्रभु-नमस्कार का, आगे झुकने का, प्रभु भक्ति का, बना और अपने चारों वाले सहस्रों नर नारियों के जीवन को भी प्रभु-भक्ति दीक्षित कर। इस तरह पर चलने से तुझ पर प्रभु बरसेगी।

भगवान् के व्रत में दुःख कहां

[लेखक—रा० सा० लालचन्द जी]

पूषन तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन।
स्तोतारस्तइहस्मसि॥ यजु० २

हे पूषन! पुष्टि करने वाले भगवन! आपके अटल नि आपके परोपकार रूपी व्रत में हम कभी दुखी न हों। यहां स्तुति करते रहें आपको आदर्श जानकर आचरण करें।

पूषन! रक्षक पालक देव,
तुम हो दिव्य शक्ति के दाता।
अटल नियम अपने में स्थिर हो,
सब के त्राता पिता विधाता॥

यज्ञदेव! इस विश्वयज्ञ
तुम हो सब के हितकारी
पूर्ण व्रती हो व्रत में आप
सदा तुम्हीं मंगल कारी

तेरे व्रत में व्रते सभी हम,
तुझ सम नियम निभाते हों।
सब के हित में अपने हित को,
अर्पित करते जाते हों॥

तेरे व्रत में सुख ही सुख है,
दुख न लेश भी आता है।
जो हो व्रती व्रतों में तेरे,
शक्ति तुझ से पाता है॥

जग में तुम आदर्श रूप
सकल दिव्य गुण धाम
अनुगत तेरे हों हम सब
करें सतत गुण गान

हों प्रसन्न तव महिमा गाकर,
जगत बने सुख धाम।
ध्यान धरें तेरा हृदय में,
तुम हो प्राणाराम॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य

रविवार ७ मार्च १९४३

पंडित लेखराम जी की पवित्र स्मृति

६ मार्च का दिन आर्य समाज के इतिहास में स्मरणीय न है। इस दिन लाहौर शहर में पण्डित लेखराम जी का बलि- न हुआ था। इस बलिदान ने आर्य समाज के आन्दोलन को प्रेरणा और उत्साह दिया था। पंजाब के आर्य समाजों था आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने उनकी पुण्य स्मृति में लराम स्मारक निधि स्थापित की थी और आर्य मुसाफिर प्रकाशित किया था। इस निधि तथा पत्र द्वारा आर्य माज के साहित्य निर्माण कार्य को विशेष रूप से उन्नत किया या। इस समय आर्य समाज के विद्वान् पण्डित लेखराम जी ने प्रारम्भ किये गये लेख सम्बन्धी कार्य को किस प्रकार रहे हैं, इस पर विशेष प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं सन्तोष की बात है कि आर्य समाज का साहित्य दिन दिन उन्नत हो रहा है। आर्य समाजों तथा आर्य प्रतिनिधि भाओं और आर्य विद्वानों को चाहिए कि आर्यसमाज के हित्य निर्माण के कार्य के लिये यथाशक्ति प्रयत्न करें और साहित्य को आकर्षक और प्रभावशाली बनाएं।

इसके लिये धन संग्रह करके विद्वानों द्वारा कार्य कराने की वस्था करें। पण्डित लेखराम जी ने आर्य समाज की जो वा की है वह आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी यगी।

पण्डित लेखराम जी के धर्म प्रचार कार्य के इलावा उनका क्तिगत जीवन भी विशेष रूप से धर्म प्रचारकों के लिये क.पंण रखता है। उनकी निर्भयता, लगन, सादगी और ध्यवसाय शीलता तथा ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध भक्ति र्य जनता के लिये अनुकरणीय चीजें हैं।

उन दिनों की विपरीत परिस्थितियों में पण्डित लेखरामजी व्यक्तिगत और पारिवारिक सुख को तिलाञ्जलि दी और हर थ्य कहीं से भी धर्म प्रचार की मांग आने पर वहां जाने में नाच नहीं किया। पंजाब में पण्डित लेखराम जी से पहले भी प्रचारक ने इस्लाम की समालोचना करने का साहस किया था। पण्डित लेखराम जी ने इस्लाम के गढ़ में दिया मिर्ज़ाईयों के मुख्यस्थान में—जिस निर्भयता से ालोचना की उसकी दाद उनके विरोधी भी देते हैं। उनका ज्ञान जिस प्रकार से हुआ उससे पता चलता है कि वह प्रकार से तथा धर्म जिज्ञासुओं के साथ प्रेम और ब्यवहार करते थे। ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध क्त—उनके द्वारा लिखे गये ऋषि जीवन चरित्र से प्रकट होती इस भक्ति भावना से प्रेरित होकर ही उन्होंने ऋषि जीवन

इस अवसर पर हम आर्यसमाज के सभासदों तथा आर्य-समाज के प्रचारकों से बलपूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि वह पं० लेखराम जी की तरह आर्य समाज के साहित्य निर्माण के कार्य में अपनी शक्ति लगाएं। उनके पदचिह्नों पर चलते हुए विधर्मियों को विश्वास और प्रेम से अपनाने का यत्न करें। उनसे नफरत न कर उन्हें अपना भाई समझ कर उनके लिये आवश्यकता होने पर—आत्म बलिदान करनेमें भी संकोच न करें।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का वार्षिकोत्सव :—

२७, २८ फर्वरी को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का वार्षिकोत्सव मनाया गया। उत्सव सफलता पूर्वक समाप्त होगया। इस अवसर पर मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी पं० इन्द्र जी, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी तथा पं० बुद्धदेव जी, भीमसेन सभा मन्त्री तथा पं० प्रियव्रत जी आचार्य दयानन्दोपदेशक विद्यालय और पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार के भाषण हुए। रविवार प्रातःकाल ब्रह्मचारियों को दीक्षान्त संस्कार कराया गया। शनिवार को कविता सम्मेलन भी हुआ। रविवार सायंकाल खेलें कुश्तियां भी हुई। इस अवसर पर दिल्ली से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिये ११०००) के लगभग दान प्राप्त हुआ। रेल-गाड़ियों तथा लारियों की कमी के होते हुए भी दिल्ली के आर्य भाई बड़ी मात्रा में सम्मिलित हुए। उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुआ। इसके लिये गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के कार्यकर्ताओं का यत्न तथा उत्साह प्रशंसनीय था।

श्री सुखलाल जी का स्वर्गवास :—

कमालिया गुरुकुल के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता श्री म० सुखदयाल जी का देहान्त हो गया है। श्री सुखदयाल जी ने गुरुकुल कमालिया की सेवा तन मन धन और लगन के साथ की। पिछले १०-१५ सालों से आप ही इसके लिये धन संग्रह तथा प्रबन्ध का काम करते रहे हैं। पिछले कई महीनों से आप बीमार थे। लाहौर में आकर विशेष औषधोपचार भी कराया गया। परन्तु रोग दिन प्रतिदिन भयंकर होता गया। अन्त में उनका शरीरान्त होगया। इस दुःख में हम उनके सुपुत्र तथा अम्बन्धियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

गुरुकुल कांगड़ी की छात्र परीक्षाएं

जनता लाभ उठाये

हिन्दू जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि गुरु-कुलीय छात्र परीक्षाओं के अन्तर्गत संस्कृत, हिन्दी, वेद, संगीत, सम्पादन कला, इतिहास, गृह विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि विषयों की परीक्षाओं की आयोजना की गई है। इन परीक्षाओं को बाह्य छात्र तथा छात्रायें भी दे सकेंगे। परीक्षाएँ गुरुकुल में तथा समिति द्वारा स्वीकृत केन्द्रों में भी ली जाया करेंगी।

प्रत्येक विषय के प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा तीन खण्ड होंगे। हर खण्ड में चार पत्र होंगे। तीन पत्र उपर्युक्त पेच्छिक विषयों में से किसी एक में होंगे चौथा पत्र धर्मशिक्षा का अनिवार्य विषय का होगा। तीनों खण्डों की परीक्षा अलग अलग या एक बार में भी दी जा सकेगी। तीन खण्ड उत्तीर्ण होने पर प्रत्येक विषय की 'प्रवीण' उपाधि दी जायगी। परीक्षाशुल्क ४), ६), १०) क्रमशः प्रत्येक खण्डका देना होगा।

छात्र परीक्षाओं की नियमावली और पाठ विधि छप चुकी है। जिन विद्या व्यसनी भाई बहनों को इस योजना से लाभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बीज से वृक्ष रूप में लाओ.

(ले० श्री पं० विष्णु मित्र जी गुरुकुल कांगड़ी)

ऋषि के कथनानुसार यह आर्य्य समाज का दावा ही नहीं प्रत्युत वह ५० वर्ष से कहता भी चला आ रहा है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। जिस में बीज रूप से सब विद्यायें भरी पड़ी हैं। पर शोक से लिखना पड़ता है कि आज तक आर्य्य समाज के किसी वेद वेत्ता ने वेद के अनुसार एक भी नया आविष्कार करके न दिखाया जनता मानती नहीं। इतना इतना कह देने से कि वेदों में रेल तार और विमानों की रचना का ज़िकर है तो वह झट पूछ बैठती है कि इनके बनने से पहिले आपने इनका ज़िकर क्यों नहीं किया आर्य्य समाज के विद्वान् इसका समाधान यह कह कर किया करते हैं। नं० १ परंपरा से जो वेदों के पठन पाठन की प्रणाली थी उस के न रहने से उनमें आये हुए पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान जाता रहा अतः ऐसी विद्याओं का जो कि वेदों में बीजरूप से विद्यमान हैं निकालना कठिन हो रहा है।

नं० २ जिन अस्त्र शस्त्रों का वर्णन रामायण और महाभारत आदि प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में है उसको देखकर यह निःसंकोच कहा जासकता है कि उस समय जितना भौतिक उन्नति थी उसका शतांश भी पाश्चात्य विद्वान् अभी तक नहीं कर पाये। उदाहरण के लिये चन्द्रकान्त मणि को ही लीजिये। इसके द्वारा चन्द्रमा से पानी बनाया जाता था और साधारणतया बरसाया भी जाता था। सुश्रुत में इस जल का लाभ इस प्रकार बतलाया है।

रक्तोष्णं शीतलं हलादि ज्वर दाह विषाप हम्।
चन्द्र कान्तोद्भवं वारि पित्तघ्नं विमलं स्मृतम्।

यह सब वैदिक विज्ञान का ही प्रभाव है।

नं० ३ हमारे पूर्वज ज्ञान विज्ञान की अन्तिम सीमा तक पहुँचे हुए थे। पर उनका महान् लक्ष्य सदैव परमात्मा की प्राप्ति थी। और शान्ति ही अन्तिम ध्येय था यही समझ कर वे भौतिक उन्नति की ओर से हट कर अध्यात्मिक उन्नति की तर्फ लग गये। हम देख रहे हैं कि वर्तमान वैज्ञानिक संसार धीरे २ शारीरिक और मानसिक बल खोता जा रहा है उसके शरीर से वह शक्ति हटती जाती है जो साहस के समय कठिन कामों के करने के लिए उत्साह दिलाती है। वैज्ञानिक उन्नति यंत्रों का आविष्कार करके शारीरिक श्रमों में कमी कर देती और यन्त्राश्रित मनुष्यों के शरीर निर्बल हो जाते हैं। शारीरिक निर्बलता के साथ हृदय भी निर्बल होजाता है और हृदय की निर्बलता के कारण मस्तिष्क स्थिर नहीं रहता। फल यह होता है कि मनुष्य भीरु होजाता है उसके पास जब तक बन्दूक रहती है तभी तक वह शेर रहता है। पर बन्दूक के छूटते ही या उसके कार्तूसों के खतम होते ही उसके देवता कूच कर जाते हैं और वह घबरा कर आत्म समर्पण कर देता है। इसी से हमारे पूर्वज समझते थे कि भौतिक उन्नति द्वारा वास्तविक बलबुद्धि का विकास नहीं होता प्रत्युत ह्रास ही होता है और भीरुता बढ़ती है अतः इस भौतिक उन्नति का सर्वथा ध्यान छोड़ दिया गया।

नं० ४ भौतिक उन्नति ने पाश्चात्य जगत् को चेतन जगत् का विरोधी बना दिया है और किस प्रकार उस से संसार का अनिष्ट हो रहा है। इस जड़ उपासना और चेतन अवहेलना हैं। यही कारण है कि वहां के विद्वानों ने इस उन्नति की अनिष्टता पर प्रकाश डालने के लिये अनेक और लेख लिखने शुरू कर दिये हैं उन्हीं में से जर्मनी के एडाल्फ जस्ट नामी विद्वान् ने लिखा है कि—(१) वैज्ञानिक निकदूड तलाश ने ज़िन्दा पशुओं के शरीर कर आंख कान हृदय पेट आदि को निकाला इस बेदर्द के लिये वर्तमान साइंस जवाबदेह है। (२) विज्ञान के भूकम्प आने से पहिले पशु पक्षी भाग जाते हैं। पर मनु ख़बर नहीं होती। विज्ञानवादियों का कमीशन भी पता कुछ खबर न पासका और भूकम्प आगया। (३) भौति अध्यात्मिक सिद्धान्त में बड़ा अन्तर है। दोनों परस्पर हैं (४) जीवन संग्राम धीरे २ कम होजायगा। परन्तु वह नष्ट न होगा जब तक भौतिक उन्नति का नाश न हो जाय अध्यात्मिक जीवन फिर से आरम्भ न हो। (५) ई ईश्वर प्राप्ति पर विश्वास होना है वह भौतिक उन्नति के से निकल कर परमेश्वर के प्रकाशमय मार्ग में आता है अन्त में उसका मोक्ष होजाता हैं। उपरोक्त उद्धरण प्रो० जस्ट को, रिटर्न टु नेचर, नामी पुस्तक से दिये गये सज्जन देखना चाहें देख सकते हैं। अस्तु। आर्य्य की ओर से दिये गये उपरोक्त समाधानों से आजकल की जिस पर कि पाश्चात्य सभ्यता का रंग चढ़ चुका है सन्तुष्ट न होगी जब तक कि वेद का स्वाध्याय करने विद्वन् मण्डली कोई वेद से नया आविष्कार करके न दि अतः स्वाध्यायशील विद्वानों का परम कर्तव्य है कि बीजरूप से रखी हुई विद्याओं को वृक्ष रूप में लाने क करें। अब मैं पाश्चात्य जगत् में रेल-तार-बिजली-ग्रा आदि के अतिरिक्त जो नये आविष्कार हुये हैं उनका कुछ सा ज़िकर करके इस लेख को समाप्त करूंगा।

पाश्चात्य जगत ने अपने ज्ञान से जो कुछ कर दि है उसका कुछ नमूना अब आपके सामने रखता हूं ताकि किसी आविष्कार के करने की आपके अन्दर भी उमंग पै तो आप इन आविष्कारों के अतिरिक्त किसी दूसरे आवि को करने का यत्न कर सकें जो कि इनसे नया हो। (शेष

श्री चमूपति साहित्यविभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्य से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २।)	Immortal Sayings of Dayanand
जीवन ज्योति १॥)	दयानन्द रत्न माला
स्वाध्याय संग्रह ॥।)	वैदिक धर्म की जय ॥
वैदिक स्वर्ग ॥।)	यास्क युग
स्वर्ग ।=)	सभा इतिहास
देव यज्ञ ।)	Glimpses of Dayanand
पीयूषबिन्दु ।-)	त्रिदेव निर्णय
	निरुक्त का मूल वेद में ।-

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने पर कमिशन दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे दाम पर मिल सकेंगी।

Hindu America ५) Light of Truth

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य विभाग
गढ़वाल भवन, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों का तोल माघ १९९९

ब्रह्मचारी	नाम संरक्षक	भार स्टोन	भार पौण्ड
...श्रेणी			
...द्र देव	गेन्दनलाल जी	३	—
...ीश	गुरुवचन सिंह जी	३	२
...द्र	रूपचन्द्र जी	२	८
...चन्द्र	शालिग्राम जी	३	—
...ाल	हरनामसिंह जी	२	१२
...द्र	कुञ्जबिहारी लाल जी	३	—
...स्वरूप	गुद्दडराम जी	२	१०
...ोहन	प्रभुसिंह जी	३	४
...ण	लक्ष्मण सिंह जी	३	—
...चान्द्र	गदाधर प्रसाद जी	२	८
...वा	सद्गुरु प्रसाद जी	३	२
...बन्धु	पृथ्वीचन्द्र जी	३	—
...द्रा कुमार	श्रीमती प्रेमदेवी जी	२	८
...सिंह	निर्भराम जी	२	५
...तु	कन्हैयालाल जी	२	८
...देव	जैसाराम जी	२	१०
...श्वर	अमरदत्त जी	३	१९
...ीश	देवी सहाय जी	३	—
...किशोर	पूरणमल जी	४	—
...द्र	धर्म मित्र जी	४	—
...द्र सिंह	सोहन सिंह जी	३	२
...कुमार	भद्रदेव जी	३	८
...चन्द्र	श्री व्रजलाल जी	३	—
...कुमार	श्री टी० आर० नायडू	३	—
...कुमार	श्री केवलराम जी	३	६
...य श्रेणी			
...ीश	चुन्नी लाल जी	४	९
...याण	श्री लक्ष्मी नारायण जी	४	१८
...नारायण	श्रीमती कमला देवी जी	४	—
...नारायण	लक्ष्मी नारायण जी	३	६
...चन्द	पन्नालाल जी	३	८
...त	रामगोपाल जी	३	१०
...चन्द्र	शुगनचन्द्र जी	४	४
...काश	जगत प्रकाश जी	३	—
...शंकर	महावीर प्रसाद जी	२	१०
...न	गुरु वचनसिंह जी	३	१०
...द्र	बैजनाथ लल्लूमल जी	३	१२
...भूषण	बालक राम जी	३	८
...व	श्री अभयदेव जी	३	६
...सिंह	राजेन्द्र सिंह जी	३	१२
...शचन्द्र	वैकुण्ठनाथ जी	३	३
...	शिव सेवक जी	३	८
...राज	छगुण सिंह जी	३	६
...र सिंह	शिवचन्द्र जी	३	—
...प्पकुमार	व्रज मोहन जी	३	२
...कुमार	श्रीमती प्रेमदेव जी	२	१०
...चन्द्र	कृष्ण मुरारी जी	३	८
...क कुमार	राजबल जी	४	४
...व	टुअरशाह जी	३	६

नाम ब्रह्मचारी	नाम संरक्षक	भार स्टोन	भार पौण्ड
वेदप्रकाश	मीरीमलजी देहली	४	—
सत्यपाल	लक्ष्मदास जी	३	[illegible]
कृष्णचन्द्र	मूलचन्द्र जी	२	१२
धर्मवीर	देवी सहाय जी	२	१२
जगदीश	देवदत्त जी	३	३
श्याम सुन्दर	हुक्मचन्द्र जी	३	८
सुरेशचन्द्र	कन्हैया लाल जी	४	—
राजेन्द्र कुमार	चुन्नीलाल जी	४	३
राम कृष्ण	तिलक धारी जी	३	५
सुमत्प्रकाश	रोढ़ामल जी	३	—
भूपाल	दीपचन्द जी	३	६
यशपाल	चुन्नीलाल जी	छुट्टी	
देशराज	बलवीर सिंह जी	३	१०
नरेन्द्र कुमार	रामगोपाम जी	३	६
भूदेव	जगन्नाथ प्रसाद	४	९
विश्व प्रकाश	म० विश्वनाथ जी	४	३
विनय कुमार	रामनाथ जी	२	६
अशोक कुमार	लालचन्द जी	३	१०
सुखदेव	गोवन्दराम जी	३	६
तृतीय श्रेणी			
सन्तकुमार	झम्मन लाल जी	४	६
ओम् प्रकाश	जीयाराम जी	३	१०
हरि कृष्ण	बाबूराम जी	४	१०
चेशत कुमार	यज्ञ दत्त जी	४	—
चन्द्र भूषण	कालिका प्रसाद जी	४	—
मनोहर	पुन्नामल जी	३	८
महेन्द्र कुमार	बूलचन्द जी	३	—
भुवन मोहन	श्याम कृष्ण जी	३	२
केशव कुमार	मंगत राम जी	४	४
देश बन्धु	बुद्धसिंह जी	४	४
उदयभानु	भूदेवसिंह जी	छु०	
सुभाषचन्द्र	जानकी प्रसाद जी	३	१२
महेन्द्रकुमार	भूकन शरण जी	३	१०
चन्द्रपाल	उमरावसिंह जी	३	५
दयानन्द	बाबू रावकृष्ण	४	१०
जगदीश	हरनाम सिंह जी	५	७
लोकनाथ	फूल चन्द वर्मा	३	१२
राजेन्द्र	विट्ठलदास जी पंचोटिया	३	[illegible]
जगदीशचन्द्र	भगवान् दास जी	३	—
हरिदेव	वैद्यनाथ हीरालाल जी	४	४
राजपाल	दुर्गा प्रसाद जी	४	[illegible]
सत्य प्रकाश	ईश्वरदास जी	१	[illegible]
राम गोपाल	लक्ष्मण सिंह जी	३	८
चन्द्रसेन	गेंदनलाल जी	४	[illegible]
देवव्रत	श्री मिट्ठनलाल जी	४	२
महिपाल	ज्योति प्रसाद जी	५	८
मन मोहन	चन्द्रवती जी सूद	३	१२
देशराज	श्री देवली सिंह जी	४	६
धर्मवीर	श्री हरिश्चन्द्र जी	४	४
गोपाल	श्री केशरसिंह जी	३	१२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य वीर	श्री गंगा विष्णु जी	३	४
ओम् प्रकाश	स० दुलीचन्द जी I. M. D.	३	८
जगदीश नारायण	डा० राम नारायण जी	३	६
रामचन्द्र	Mr. G. M. Chetty	४	—
कृष्ण कुमार	म० जीवनदास जी	३	८
मदन मोहन	श्री देवीशरण जी	३	—
योगेन्द्रनाथ	म० हर प्रसाद सिंह जी	३	६
बाल कृष्ण	श्री बेनीलाल जी	३	१०
श्याम विलास	म० श्याम सुन्दरलाल जी	३	१०
वेद प्रकाश	श्री प्रकाश चन्द्र जी	३	१२
चन्द्र कान्त	श्री पी० वी० आचार्य	३	१२
अमर सिंह	चौ० डिगराम जी	३	४
गोपाल शंकर	श्री माधोराम नन्दकिशोर	३	३
राजेन्द्रकुमार	श्री कबूलसिंह जी	४	७
सत्यपाल	श्रीमती पुष्पावती जी	४	३
देवप्रकाश	अयोध्या प्रसाद जी	३	६
महेन्द्रकुमार	श्री चुन्नी लाल जी	५	१०
सोम प्रकाश	श्री अमर सिंह जी	४	२
रामनाथ	श्री रघुवरदत्त जी भर्तरि	४	—
रविप्रकाश	म० रामप्रकाश जी शर्मा	४	८
कैलाश चन्द्र	श्री ला० बनवारी लाल जी	४	०
बलवीर	श्री भगवानदास जी सर्राफ	४	८
वेदप्रकाश	श्री कुलदीप चन्द्र जी	३	१२

चतुर्थ श्रेणी—

ज्ञानचन्द्र	श्री सोहनलाल जी	४	१०
सोमदत्त	श्री सीताराम जी	४	६
रघुनाथ	म० रामललित जी मिश्र	५	—
कर्मेन्द्र	P. Kotayya naidu	३	१२
सत्यप्रिय	म० लक्ष्मण दास जी आर्य	५	—
रणवीर	श्री सौदागर महतो	४	३
राजेन्द्र बिहारी	श्री सम्मन महतो	५	२
मनमोहन	म० गया प्रसाद जी	४	—
विजय कुमार	म० गोविन्द राम जी	४	—
राजेन्द्रनाथ	म० हरप्रसाद सिंह जी	५	—
सुरेन्द्रनाथ	" "	३	१०
राजेन्द्र	म० हुक्म चन्द्र जी	४	८
ओम् प्रकाश	म० पोहकरमल जी	३	८
परमानन्द	डा० शालिग्राम जी	५	४
सत्यदेव	श्री रामचन्द्र जी	३	६
राजकिशोर	ला० पूरनमल जी	४	१
वीरेन्द्र	श्री शेरसिंह जी	५	४
जयकिशोर	श्री माधोराम जी	४	६
रमेशचन्द्र	श्री बाबूराम जी गुप्ता	३	४
गुरुदेव	श्री मुन्नीलाल जी	३	७
शिवदत्त	म० नित्यानन्द जी	४	४
मधुसूदन	श्री रामभरोसेलाल जी	४	१०
रमनेश	चौ० कदमसिंह जी	५	२
इन्द्रजीत	श्री कुन्दनलाल जी	३	७
ईश्वरचन्द्र	श्री चुन्नीलाल जी दत्त	३	१०
रामेश्वर	श्री रामललित जी मिश्र	५	२
लक्ष्मण	श्री राधेलाल जी	४	—
दीपक चन्द्र	म० शम्भूलाल जी	३	६
दीनबन्धु	अग्गूराम जी suntur	३	४
देश बन्धु	श्री श्यामसुन्दरलालजी गुप्ता	४	४
सत्यव्रत	श्री गोधूसिंह जी	५	—

रूपनारायण	श्री तीर्थराम राम जी		
धर्मदत्त	म० कनकसिंह जी		
योगेन्द्रनाथ	श्री मिश्रलालजी		
वेदानन्द	म० शिवनारायण जी मिश्र		
रामनाथ	पं० रघुवंश लाल जी		
देवदत्त	डा० मूलचन्द जी		
ज्ञानचन्द्र (छो०)	म० मंगतराम जी त्यगी		
वेद प्रकाश	म० लक्ष्मण लाल जी		
श्री कृष्ण	श्री गुलाबचन्द जी		
विश्वबन्धु	श्री छेदालाल जी		
श्याम बिहारी	श्री श्यामसुन्दर लाल जी		
कल्याण	श्री कबूलसिंह जी		
रामचन्द्र	म० दाताराम जी माथुर		
प्रेमकुमार	श्री लालचन्द्र जी गर्ग		
सहदेव	म० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा		
चन्द्रकिशोर	म० नवलकिशोर जी		

पंचम श्रेणी

रवीन्द्रनाथ	Mr. N. K. Gamapaiah		
महेन्द्र प्रताप	श्री बुद्धसिंह जी आर्य		
राजकुमार	म० गंगाविशन जी		
वेदप्रकाश (झांसी)	म० भोलानाथ जी		
सत्येन्द्र	म० जगनलाल जी गुप्त		
वेदप्रकाश	म० ईश्वरदास जी		
इन्द्रसेन	म० वीरसेनजी दुसाज		
मोहन चन्द	म० मोतीलाल जी		
रामकृष्ण	म० ब्रह्मदत्त जी		
लोकनाथ	श्री भागीरथ जी शास्त्री		
जगन्नाथ	म० कीर्तिसिंह जी		
रामप्रकाश	श्रीमती कटोरी देवी जी		
जगदीश	म० वीरभानु जी		
वेदव्रत	म० रामकृष्ण जी शुक्ल		
राजकिशोर	श्री माधव राम जी		
कर्मवीर	Syt. R.L. Chowdhry		
महेन्द्र कुमार	श्री मंगलसेन जी		
युद्धवीर	श्री सूरजभान जी		
देवव्रत	श्री सतीप्रसाद जी ओझा		
क्रांति कृष्ण	श्री द्वारिकाप्रसाद जी		
सर्वमित्र	पं० रामेश्वर जी		
गिरीश चन्द्र	शांति स्वरूप जी		
विश्वदेव	डा० रूपसिंह जी		
केशरी कृष्ण	श्री गोपाल शास्त्री		
सुखदेव	श्री धौल वीर राम जी		
बालकृष्ण	सेठ हजारीमल जी		
जयदेव	म० हीरालाल जी		
वीरेन्द्र	गंगाराम जी		
रामकुमार	म० मंगलालाल जी		
शिवकुमार	श्री बा० दुःखीलाल जी		
सूर्य प्रकाश	म० लक्ष्मीदयाल जी मुख्तार		
राजेन्द्र	श्री मती गंगामूर्ति जी		
राज बहादुर	Mr. Sangappa Dewan		
मदन मोहन	म० ज्ञानचन्द्र जी मलहोत्रा		
प्रेम स्वरूप	श्री माधव राम जी		
हरिप्रकाश	श्री बलदेव सिंह जी		
वीरेन्द्र	श्री रमेश चन्द्र जी		
धर्मेन्द्र	श्री बलवन्त सिंह जी		

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

[पं० यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार वेद प्रचार अधिष्ठाता]

मार्च मास के उत्सव तथा प्रबन्ध ।

...दापुर लम्बा १ से ७ मार्च पं० द्रौपदी देवी जी ठा० प्रताप सिंह म० देशराज जी ।

...चाद ५ से ७ । पं० तीर्थराम जी पं० रामदयालू जी, पं० हरदयालू जी, ठाकुर प्रतापसिंह, म० आत्मदेव जी म० हजारीलाल जी, म० हरिश्चन्द ।

...चरी ५ से ७ । पं० रामस्वरूप जी पाराशरी, प्रो० सुखदेव जी, पं० मुनीश्वर देव जी, ला० चिरंजीलाल जी म० भक्तराम जी, म० बालमुकन्द, म० बलराज जी ।

...ट्यां ५ से ७ । पं० शान्ति प्रकाश जी, म० लक्ष्मण जी म० हंसराज जी, म० दुर्गादास जी ।

...ाला ५ से ७ । स्वामी मंगलानन्द जी, पं० हरपाल जी, पं० पूर्णानन्द जी पं० रामदत्त जी, स्वामी स्वरूपानन्द जी, म० देवकीनन्दन जी ।

...ौल्ली ५ से ७ । पं० सत्यदेव जी, स्वामी शिवानन्द जी, म० अमरसिंह जी, म० गुलशनलाल जी, म० भगवान सिंह जी, स्वामी बेधड़क जी ।

...ज ५ से ७ । म० चिरंजीलाल जी, पं० समरसिंह जी, पं० रामस्वरूप जी शान्त, म० भद्रपाल जी, म० जयप्रकाश जी धनुर्धन ।

...ड़ ६ से ११ । स्वामी शिवानन्द जी, म० चिरंजीलाल जी प्रेम, पं० मुनीश्वरदेव जी, म० भद्रपाल जी म० जयप्रकाश ...ान ८ से १४ । पं० रामस्वरूप जी शान्त, म० अमरसिंह जी

...बाज़ार लुधियाना १२ से १४ । प्रो० सुखदेव जी पं० राम स्वरूप जी पराशरी, म० चिरंजीलाल जी प्रेम, स्वामी मंगलानन्द जी, म० हरिश्चन्द जी, म० शमशेरसिंह जी, म० जय प्रकाश जी धनुर्धर ।

...सा १२ से १४ । स्वामी शिवानन्द जी, पं० सत्यदेव जी, पं० क्षेमचन्द जी, म० गुलशनलाल जी, म० देवकी नन्दन जी ।

...सवाला १२ से १४ । ला० चिरंजीलाल जी वानप्रस्थी, पं० क्षितीशकुमार जी, स्वामी योगानन्द जी, म० आशानन्द जी की चिमटा मंडली, म० हसराज जी, म० रामनाथ जी

...ा १२ से १४ । पं० हरदयाल जी, पं० पूर्णचन्द जी, पं० भीमसेन सभा मन्त्री, स्वामी स्वरूपानन्द जी, म० हज़ारी लाल जी, म० बलराज जी ।

...ाली १२ से १४ । पं० शान्ति प्रकाश जी, म० देशराज जी ।

...मा १२ से १४ । पं० ज्ञानचन्द जी, पं० यशपाल जी, म० गुलदत्त जी, म० मेहरचन्द जी, म० मेजाराम जी ।

...कु० कुरुक्षेत्र १२ से १४ । पं० मुनीश्वरदेव जी, पं० प्रियव्रत जी, म० भक्तराम जी ।

...ड़ा १२ से १४ पं० अमरसिंह और उनके साथ हरयाना प्रान्त ...की मंडली ।

...रां १२ से १४ । पं० हरदयालू जी, पं० तीर्थराम जी, पं० द्रौपदी देवी जी, म० आत्मदेव जी, म० प्रतापसिंह जी ।

आर्य समाज संसार

आर्य्य समाज किला गुजरसिंह लाहौर

आर्य समाज किला गुजरसिंह का वार्षिक चुनाव १३ जनवरी १९४३ को आर्य समाज मन्दिर में हुआ था। जो निम्न प्रकार है—प्रधान म० ओ३म् प्रताप जी, उपप्रधान म० ज्ञानचन्द जी, हीरालाल जी तथा म० हंसराज जी, मन्त्री म० कृष्णविक्रम जी, उप मन्त्री नन्दसिंह जी, कोषाध्यक्ष दयाराम जी ।

कृष्णविक्रम मन्त्री

आर्य्य समाज खुशाब

तिथि २३ । २ । ४३ को आर्य समाज खुशाब का वार्षिक चुनाव हुआ । जिस में अधिकारी सर्व सम्मति से चुने गए। जो कि नीचे लिखे हुए हैं—प्रधान दीवान राजपाल नन्दा आनरेरी मेजिस्ट्रेट । उपप्रधान मलिक दयाराम गवर्नमेंट कन-ट्रैक्टर, सहायक प्रधान दीवान ज्ञानचन्द साहिब नन्दा, मन्त्री वैद्य गोविन्दराम कविराज, उपमन्त्री महाशय रामशरण जी, कोषाध्यक्ष जीवनदास बोहरा रिटायर्ड पलेटियर, पुस्तकाध्यक्ष म० रामनरायण जी ।

मन्त्री

गोविन्दराम

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

गुरुकुलोत्सव पर सार्वदेशिक-आर्य-सम्मेलन का महत्व पूर्ण आयोजन

गुरुकुल-विश्वविद्यालय कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति के निमन्त्रण पर सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने निश्चय किया है कि गुरुकुल कांगड़ी के आगामी वार्षिकोत्सव पर ईस्टर की छुट्टियों में एक विशाल सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन किया जाय इसमें आर्य दृष्टि से जातीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर विचार किया जायगा। सम्मेलन को सफल बनाने के लिए गुरुकुल के अधिकारी प्रयत्न शील हैं।

गान्धी जी की रिहाई के लिए वायसराय को तार

महात्मा गान्धी के अनशन प्रारम्भ कर देने पर गत १० फरवरी को समस्त कुलवासियों की विराट् सभा हुई जिसमें महात्मा जी के दीर्घायुष्य के लिए भगवान से प्रार्थना की गई। गुरुकुल वासियों की ओर से वायसराय को एक तार दिया गया जिस में बिना शर्त महात्मा जी की रिहाई के लिए जोर दिया गया।

स्वास्थ्य समाचार

सत्यपाल	१४	श्लेष्मज्वर
सत्येन्द्र	५	मलेरियाज्वर
लोकनाथ	५	,,
वेदव्रत	५	,,
चन्द्रसेन	३	,,
ज्ञानचन्द्र	४	,,
देशबन्धु	४	मास
वेदप्रकाश	३	,,
देशराज	३	शातपित्त

गत सप्ताह उपरोक्त ब्र० रोगी हुए थे। अब सब स्वस्थ हैं। वि० ब्र० सत्यपाल को अभी ज्वर और खांसी है। आशा है कि शीघ्र आराम आजावेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्या-गुरुकुल समाचार

आजकल ऋतु सुहावनी होने से कन्याओं का स्वास्थ्य उत्तम। चिकित्सालय भगवान की कृपा से प्रायः खाली रहता है। कन्याएं वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी में जोरों की पढ़ाई पर लगी हुई है। विद्यालय विभाग की परीक्षाएं मार्च के अन्त पर तथा महाविद्यालय की मई के अन्त पर होंगी।

कन्या-गुरुकुल में कन्याओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जारही है। आज कल २५५ कन्याएं गुरुकुल में हैं, अनेकों बालिकाओं के प्रवेश के लिये प्रार्थना पत्र आरहे हैं किन्तु स्थानाभाव के कारण अब प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ेगा।

स्थान की तंगी के कारण विद्यालय में सभाद्वारा पास किये नक्शे के अनुसार विद्यालय भवन के फिलहाल ४ कमरे बनाये जारहे हैं। आज कल चिनाई का काम जोरों पर हैं और आशा की जाती है कि यह चार कमरे दो मास तक तैयार होजावेंगे और इस प्रकार पढ़ाई के स्थान की तंगी का प्रश्न हल हो जावेगा।

जगत बापू महात्मा गान्धी जी के लम्बे उपवास से जहां सारे देश में एक गहरी चिंता व्याप्त हो गई है उसका प्रभाव कन्या गुरुकुल पर पड़े बिना कैसे रह जाता। अतएव पूज्य गांधी जी के सानन्द उपवास समाप्त तथा दीर्घजीवी होने के लिये कन्याओं तथा कार्यकर्त्री देवियों की एक सभा हुई जिसमें भगवान् से उनके उपवास की सकुशल समाप्ति और दीर्घजीवन के लिये प्रार्थना करते हुए पूज्य महात्मा जी को तार द्वारा सूचित किया।

हिज इक्सलेन्सी वायसराय महोदय से प्रार्थना की गई है कि वे शीघ्रतिशीघ्र गान्धी जी को बिनाशर्त रिहा करने की उदारता दिखावें।

कई एक कन्याओं ने सहानुभूति में उपवास रखा और प्रतिदिन पूज्य महात्मा जी के दीर्घआयु के लिये गायत्री मन्त्र का जाप करती हैं।

आचार्या
विद्यावती सेठ

गुरुकुल कमालिया

शुभ विवाह

"श्री स्नातक वेदप्रकाश जी वेदालंकार का शुभ विवाह जाम्पुर में ला० नोतनदास जी की सुपुत्री कुमारी सरलादेवी के साथ १० मार्च को होना निश्चित हुवा है सब स्नातक बन्धु तथा उनके हाथी सप्रेम निमन्त्रित हैं।

विनीत
रणवीर विद्यालंकार

गुरुकुल दयानन्द वैदिक आश्रम गदपुरी

गुरुकुल दयानन्द वैदिक आश्रम गदपुरी जिला गुड़गांवा का आठवां वार्षिक उत्सव ता० २०, २१. २२, फरवरी ४३ को समारोह सहित मनाया गया। पं० जगत कुमार जी शास्त्री मंत्री अखिल भारतीय श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट देहली, श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु, स्वा० ब्रह्मानन्द जी, पं० सत्यदेव जी, पं० रामसेवक जी लतरीव चौ० छज्जूसिंह जी प्रेमी के प्रभावशाली व्याख्यान और भजन हुवे। पं० जगत कुमार जी की अपील पर गरीब ग्रामीण जनता से ४५०) रु० मिले। बिहारी सिंह जी की बहिन गोदावरी जी ने १०१) रु० दिये। देहली निवासी ला० बैजनाथ बाला प्रसाद ने हाल में ही १००) दिये थे।

निर्वाचन

आगामी वर्ष के लिये निम्न पदाधिकारी चुने

प्रधान—पं० जीवन लाल जी टप्पे वाले।
मंत्री—ला० जगन्नाथ जी।
अधिष्ठाता—चौ० किशनलाल जी।

शोक प्रस्ताव

"गुरुकुल कमालिया निवासियों की यह सभा निर्माता महाशय सुखदयाल जी की आकस्मिक मृत्यु प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को शांति प्रदान करें।" वेदप्रकाश वेदा

दैनिक स्वाध्याय के लिए उपयुक्त

१. वैदिक विनय (२य और ३य भाग)—ले० (समाप्त) आचार्य अभय देव जी। मू० १) प्र
२. सोम सरोवर—ले० श्री पं० चमूपति जी एम मू० सजिल्द १॥), अजिल्द सवा रु०
३. वेद गीतांजलि—संग्रहकर्ता मुख्याधिष्ठाता कांगड़ी। मू० २)
४. स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश (तीन भाग) ला० लछमूराम जी नैयड़ ३।) सैट
५. बृहत्तर भारत—ले० श्रीयुत पं० चन्द्रगुप्त जी वेद मू० ४॥।)
६. आत्म मीमांसा—ले. श्री. प्रो. नन्दलाल जी खन्ना
७. ब्रह्मचर्य सन्देश—ले० श्रीयुत प्रो० सत्यव्रत जी न्तालङ्कार मू० २)
८ शिक्षा मनोविज्ञान—लेखिका श्रीमती चन्द्राव लखनपाल एम.ए.बी.टी. मू० २)
९. स्त्रियों की स्थिति—लेखिका श्रीमती चन्द्राव लखनपाल एम. ए. बी. टी, मू० १।)
१०. सन्ध्या सुमन—ले० श्री पं० नित्यानन्द जी वेदा मू० १)
११. जल चिकित्सा विज्ञान—ले० श्रीयुत पं० देवरा विद्यावाचस्पति मू० १॥।)
१२. हिन्दी निरुक्त भाष्य—ले० पालिरत्न श्रीयु चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार। मूल्य ७).
१३. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या—लेखक श्रीयुत पं० ब्र 'आर्य'। मूल्य १॥)
१४. त्रिफला—ले० रामेशवेदी आयुर्वेदालंकार। मू

इसके अतिरिक्त निम्न उत्तम पुस्तकें भी पुस्तक भण्डार से मिल सकती हैं:—

१. ब्राह्मण की गौ ॥)
२. भारतवर्ष का इतिहास (तीन भाग) ५॥)
३. गुरुकुल प्रार्थना एकादशी)॥
४. फन फिनायल साजी (उर्दू में) २)
५. रंगाई, धुलाई व ड्राईक्लीनिंग (उर्दू में) ॥)

मिलने का पता:— पुस्तक भण्ड

गुरुकुल कांगड़ी, लि सहा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित हो

सम्पादक —भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य

संख्या २४, अंक १६

वार्षिक मूल्य ४)

१४ मार्च [illegible]३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

GURUKUL KANGRI ... SAHARANPUR 23 P.M.

अध्यात्म सुधा

[१४]

भगवान् का साक्षात्कार

महात्मा जी के उपवास की समाप्ति पर प्रभु का धन्यवाद ने के लिए हुई कलकत्ते की एक सभा में विश्वविद्यालय छात्रों और कार्यकर्त्ताओं के सामने डाक्टर विधानचन्द्र राय महात्मा जी के उपवास से सम्बन्ध रखने वाले जिन तथ्यों प्रकाश में लाया है उस से प्रतीत होता है कि केवल उच्च अध्यात्मिक शक्ति के कारण ही महात्मा जी ने यह उपवास आश्चर्यजनक सफलता पूर्वक सम्पन्न किया है।

'मैं नहीं जानता कि प्रभु ने इस अवसर पर मेरी क्यों की, सम्भवतः इस कारण कि वे मुझ से अभी और कार्य आदन कराना चाहते हैं।" ये शब्द थे जो महात्मा जी ने उपवास की समाप्ति पर कहे।

महात्मा जी के जीवन की रक्षा करने के लिए सर्वशक्ति-परमेश्वर की अपने हृदय के अन्तस्तल से स्तुति करने के 'महान् भक्त की उस तपस्या' के अपने अनुभव डाक्टर ने बताये जो उन्होंने स्वयं प्रत्यक्ष किये थे। उन्हों ने कहा कि सारा उपवास एक प्रकार का धार्मिक कृत्य था। महात्मा जी ने निश्चित रूप से यह जतला दिया था कि उन यह इच्छा नहीं है कि वे अपनी जीवनलीला को समाप्त दें। २१ दिन का उपवास उन्होंने इस लिए किया था कि उतने समय के लिए तपस्या में से गुज़रना चाहते थे।

पानी के साथ निम्बू का रस वे इसलिए लिया करते थे कि उपवास के कारण शरीर में जो विजातीय द्रव्य बड़े परिमाण में पैदा हो रहे हैं उन्हें बाहर निकलने का पर्याप्त अवसर मिलता है। डाक्टर राय कहते हैं कि विजातीय द्रव्यों को निकालने का यही एक तरीका था जिसे महात्मा जी स्वयं तथा डाक्टर जान सकते थे।

अनन्त में लीन

भाषण को ज़ारी रखते हुए डाक्टर राय ने कहा, 'महात्मा जी ने अपना उपवास उपासना से आरम्भ किया और उपासना से समाप्त किया और इस सारे समय उन्होंने अपने [illegible] डाक्टर और नर्सें उनको देख भाल करती [illegible] सदा ऐसी अवस्था में हुआ करते थे जैसे एक महान् शक्ति के सम्पर्क में हों। मैं आप को और आपके द्वारा सारे देश को विश्वास दिला सकता हूं कि उनका सारा उपवास काल, मृत्यु के साथ उनका युद्ध करने का तरीका और उपवास के सफल अन्त के लिए जिस तरह उन्हों ने हर घड़ी धैर्य से प्रतीक्षा की यह सब प्रत्यक्ष करना एक गौरव की बात थी। यह एक यज्ञ देखना था, एक भक्त को उपासना में देखना था और जब यह उपासना समाप्त हुई मैंने उन्हें आंखें मूंदे दरवाज़े पर झुके देखा। मैं साहस पूर्वक कह सकता हूं कि अपने हृदय में सर्वशक्तिमान् प्रभु की उपस्थिति को अनुभव करके उन्होंने उपवास भंग किया।"

सर्वशक्तिमान् ने सब कुछ बदल दिया

डाक्टर राय ने कहा, "महात्मा गांधी हमारे लिए बचा लिये गये हैं। हमारे में से कोई भी नहीं जानता कि इस में कौन सी शक्तियें कार्य कर रही थीं। एक दिन हमने बयान दिया था कि यदि उपवास बन्द न किया गया तो उन्हें बचाना कठिन होगा। इसी बात को हम अनुभव कर रहे थे और इसी का हमें भय था। उस अभागी सायंकाल, रात्रि और अगले प्रातःकाल का प्रत्येक मिनिट महत्व पूर्ण था। परन्तु लहर ने पलटा खाया तथा सर्वशक्तिमान् ने सब कुछ बदल दिया। हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे साथ और भी बहुत वर्षों तक जीवित रहें।"

जब मैं चेतना में न रहूं

शुश्रूषा करने वाले डाक्टरों को महात्मा गांधी ने कह दिया था कि यदि मैं चेतना में न रहूं तो मुझे किसी प्रकार की पुष्टिदायक चीज न दी जाय। डाक्टर राय ने बताया कि उन की इस इच्छा का डाक्टरों ने पालन किया। जितना पानी उन के लिए आवश्यक था, मतली के कारण वे उतना पानी नहीं ले सकते थे तो उस में पोटासियम साइट्रेट, सोडियम साइट्रेट या मिठ्ठे का रस मिला कर लेने के लिए वे तय्यार हो गये थे। ज्योंही वे आवश्यक परिमाण में पानी लेने के योग्य हो गये उन्होंने पानी के साथ मिठ्ठे का रस मिलाना बन्द कर दिया था।

इस प्रसंग में डाक्टर राय ने रासबिहारी घोष का उदाहरण दिया। रक्त में मूत्र विष संचार कर जाने पर भी

(शेष पृष्ठ २ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

सत्यधर्म राजा

[ले०—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति]

[१४]

यदुवक्थानृतं जिह्वया वृजिनं बहु ।
राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुञ्चामि वरुणादहम् ।

अथर्व० १ । १० । ३

अर्थ—हे मेरे आत्मा (पत्) जो, तूने (जिह्वया) अपनी जिह्वा से (अनृतं) असत्य (उवक्थ) बोला है, और जो तूने (बहु) बहुत सा (वृजिनं) पाप किया है [उसके कारण वरुण भगवान् तुझ पर क्रुद्ध हो जाते हैं] (अहं) मैं (सत्य धर्मणः) सत्यधर्म वाले (राज्ञः) सब के राजा (वरुणात्) वरुण भगवान् से (त्वा) तुझे (मुञ्चामि) छुड़ाता हूं ।

सब के राजा वरुण भगवान् सत्यधर्म हैं। उन्हें सत्य से अगाध प्रेम है। वे स्वयं भी सत्य नियमों पर चलते हैं और सारे विश्व ब्रह्माण्ड को भी सत्य नियमों पर चलाते हैं। इस प्रकार सत्य नियमों पर चलने-चलाने के कारण सत्य का धारण करने वाला होने से उन्हें सत्यधर्मा कहा जाता। ये सत्य के प्रेमी सत्यधर्मा भगवान् हम मनुष्यों में भी जो कि भगवान् के अमृत पुत्र हैं, सत्य के विरोधी जीवन को सहन नहीं कर सकते। हमारे जीवन के असत्य पर, झूठ पर, पाप पर उन्हें भारी मन्यु आता है। यह असत्य चाहे भाषण का हो और चाहे कर्म का। वह पाप चाहे जिह्वा द्वारा मिथ्या बोल कर किया जाये और चाहे किसी अन्य इन्द्रिय द्वारा, मिथ्या कर्म द्वारा किया जाये वरुण भगवान् के मन्यु का, क्रोध का विषय बनता है। और इसीलिये असत्यवादी और असत्यकारी पापी पर भगवान् का क्रोध गिरता है। उसके फल स्वरूप उस असत्यकर्मी को अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं। जो वरुण भगवान् के मन्यु जन्य दुःखों से बचना चाहें उन्हें असत्याचरण को, पाप को, त्याग कर पूर्व वर्णित वेद-विहित सत्यमार्ग पर चलना चाहिये और प्रभु की भक्ति करनी चाहिये। ऐसा करने से मनुष्य निष्पाप हो जाता है और इस प्रकार वरुण के पाशों से, वरुण की पकड़ से, छूट जाता है। जो व्यक्ति इस मन्त्र में वर्णित रीति से अपने आत्मा को सम्बोधन करता है और सत्यधर्मा भगवान् की असत्य द्वेषिता को स्मरण करके सदा अपने आप को सत्य के पवित्र मार्ग पर चलता रहता है उसे कभी भी वरुण के पाश-बन्धन का भय नहीं रहता।

हे मेरे मन! प्रभु सत्यमार्ग हैं। तेरे असत्य पर उन्हें मन्यु आ जाता है। वे तुझे अपने पाशों में बांध लेते हैं। यदि तू उनकी पकड़ से बचना चाहता है तो अपने आप को तू भी सत्यधर्मा बनाले।

(१ पृष्ठ का शेष)

उन्होंने शिरा या किसी अन्य मार्ग से किसी भी चीज़ को ग्रहण करने में प्रबल विरोध किया था। इस मामले में उन्होंने डाक्टरों को जो कठोर निर्देश दिये थे उसका पालन भी इमानदारी से किया गया था जैसा कि इस उदाहरण में महात्मा जी के आदेशों का पालन किया गया है।

अनन्त के सागर में

(श्री जगदीश बी. ए.)

[अत्यन्त गम्भीर और कल्पना की ऊंची उड़ान लेने वर्ष के नवयुवक की अप्रकाशित पुस्तक से।]

युद्ध—सौदामिनि ! चञ्चले !! इस समय संसार में स्थायी शान्ति स्थापन करने के लिये लंगर हूं, अपने जहाज़ को संग्राम सागर में छोड़ रहा हूं, भयंकर हंसी से मेरा जी छुड़ा रही है ?

'युद्ध लोलुप' ! देव संघर्ष से तो मेरी उत्पत्ति हुई, इतनी अस्थिर हूं, तो फिर मानव संघर्ष से क्या पैदा उसमें कहां तक स्थिरता होगी ?

× × ×

पूंजीवाद—नीच ! कायर !! सगर सागर! उछल कूद, यह भीषण गर्जना तर्जना, किस बा दर पर आये की तो प्यास न बुझाई गर्जना है तो तरह गर्ज ! किस तरह सर्वस्व लुटा संसार को देता है, सच्चा साम्यवादी है।

हंसकर सागर ने उत्तर दिया "वह भी तो मेरा ही चंद टुकड़े फैंक भिखमंगों को मुंह बन्द करने के लिये भेजता हूं.....तुम लोग क्या समझो धनियों के हथकंडे

× × ×

विदेशी रोशनी

चाँद ! बड़ी भोर ही
तुम्हारा चेहरा
कितना उतर गया है !
तुम्हारे असंख्य सितारे
इतना बड़ा परिवार
उन सब का क्या हुआ ?
कहाँ गए ?

चाँद का मुख और भी फीका पड़ गया "आह! रौशनी ने,
सबको मार डाला"

× × ×

फुलका—फुलके ! प्रचण्ड अग्नि से लोहित हुई लगाए जाने पर भी तेरे में वह कौनसी खुशी है जिस इतना फूल रहा है ?

'क्षुधा पीड़ित प्राणी ! भूख की आग तुझे खा रही है देख तो मैं जला जा रहा हूं, परन्तु मुझे खाने से तुझे मिलेगी, यह सोच कर मैं फूला नहीं समाता।

× × ×

तुरही—तुरही ! तेरी ऐसी धृष्टता कहीं भी देखी न गई। भला कह तो, तेरे में ऐसा कौनसा शौर्य है, संघर्ष में तेरी ही आवाज़ आती है। तू क्यों संसार में की सी लहरें उठा क्रान्ति पैदा करती है ?

"देखते नहीं ! मेरा पेट खाली है"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य

रविवार १४ मार्च १९४३

लोहारू में आर्यसमाज मंदिर की आवश्यकता

३-४ मार्च को मुझे लोहारू जाने का अवसर मिला। सभा की ओर से आर्यसमाज लोहारू का मन्दिर बनाने के लिये अपील प्रकाशित की जा चुकी है। इसके लिये आवश्यक बातों का निश्चय करने के लिये मैं वहां गया था। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि वहां के आर्य भाईयों में आर्यसमाज के लिये उत्कट लगन और उत्साह है। वहां की पाठशाला में ७० विद्यार्थी शिक्षा पारहे हैं। लोहारू दरबारकी ओर से आर्यसमाज मन्दिर और आर्य कन्या पाठशाला के लिये १७५ फी. लम्बी और १०० फी. चौड़ी ज़मीन मिली है। चारदीवारी बनाई जा रही है। वस्तुओं के मंहगा हो जाने के कारण धन की कमी महसूस की जारही है। लोहारू का पुराना कस्बा अच्छी हालत में नहीं है। मकान पुराने हैं और कुछेक टूटे फूटे हैं। जहां अब पाठशाला लगती है वह मकान भी ऐसीही हालतमें है। विद्यार्थियों को वृक्ष के नीचे बैठा कर पढ़ाते हैं! उधर रेगिस्तान तथा मट्टी प्रधान प्रदेश होने से बालकों को बहुत कष्ट होता है। समाज मन्दिर का सत्संग लगाने के लिये कोई अच्छा स्थान नहीं है। लोहारू की नयी मंडी दिन प्रति दिन उन्नति कर रही है। कलकत्ता आदि से मारवाड़ी आकर वहां भारी व्यापार कर रहे हैं। इस इलाके में लोहारू की मण्डी भारी मण्डी है। आर्य समाज मन्दिर भी इसी नई मंडी में बन रहा है। समाज मन्दिर तथा पाठशाला बन जाने से इन व्यापारियों में भी समाज का प्रचार अच्छी तरह से हो सकेगा। इस समय तक सभा के पास इस निधि में जितना धन प्राप्त हुआ है—उससे सारी आवश्यकताएं पूरी नहीं होंगी। आर्य पुरुषों को चाहिए कि इधर विशेष रूप से ध्यान दें।

यदि आर्य महानुभाव इस जगह अपने किसी पूजनीय—प्रिय व्यक्ति का स्मारक बनवाना चाहें तो उनके लिये भी यह उत्तम अवसर है। पाठशाला और आर्य समाज में कमरे बनने हैं। उन कमरों पर स्मारक पत्थर लग सकता है। १०००) रु० तक की राशि से यह कार्य हो सकता है।

सभा ने अपने एक उपदेशक महानुभाव को वहां नियत कर दिया है जो धर्म प्रचार के साथ २ मन्दिर निर्माण के कार्य का निरीक्षण भी कर रहा है।

मैं फिर आर्य भाइयों से सानुरोध निवेदन करता हूं कि वह इधर ध्यान दें। मन्दिर बन जाने के बाद वहां मन्दिर उद्घाटन समारोह के साथ विशेष उत्सव करने का भी विचार है।

—भीमसेन

संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी से पत्र-व्यवहार

आदरणीय प्रधान जी, सादर नमस्ते!

सेवा में विनम्र प्रार्थना यह है कि कई आर्य समाजों के अधिकारियों की मैंने ऐसी दशा देखी कि वे प्रधान तथा मन्त्री आदि उच्च पदों पर बहुत समय से विराजमान हैं और हुक्का सिगरेट का प्रयोग करते हैं कई को ऐसा देखा कि वे मृतक श्राद्ध करते तथा साँझ गूंगा इत्यादि पीर पूजते और समस्त अवैदिक प्रथाओं पर चलते। अग्निहोत्र तो रही दूर की बात संध्या तक नहीं करते। और आर्यसमाज के नियमों तक का पता नहीं उपनिषदों आदि की तो बात रही दूर। विवाह आदि सर्व पौराणिक रीति से होते हैं। बालकों के वैदिक संस्कार का नाम नहीं लेते अस्तु, और वार्षिक चुनाव के समय अपना अधिकार जमाये रखने के लिये बड़े-बड़े षड्यंत्र रचते हैं। प्रायः अनेक व्यक्ति आर्यसमाजों की ऐसी दशा देखकर समाजों से पृथक रहना ही उचित समझते हैं। मेरे तुच्छ विचार में ५० या १०० अनार्य आर्य सभासदों से, २० या २५ वास्तविक आर्य सभासद अच्छे हैं। जहाँ तक मैं विचार सका हूँ आर्य समाजों में झगड़े का कारण सबसे अधिक यही है कि अनार्य घुसे हुए हैं। अतएव निम्नलिखित प्रश्न आपकी सेवा में भेज रहा हूं। उचित उत्तर से कृतार्थ करें, असीम कृपा होगी।

१—क्या हुक्का और सिगरेट का प्रयोग करने वाला व्यक्ति आ० स० का आर्य सभासद हो सकता है?

२—क्या मृतक श्राद्ध करने वाला व्यक्ति आर्य सभासद हो सकता है।

३—क्या दोनों समय संध्या न करने वाला व्यक्ति आर्य सभासद हो सकता है?

४—क्या हुक्का और सिगरेट के प्रयोग करने वाले व्यक्ति को या मृतक श्राद्ध करने वाले को, या दोनों समय संध्या न करने वाले व्यक्ति को आर्य सभासदों में से पृथक कर देना चाहिये? और क्या ऐसे सभासदों को सहायक बना देना चाहिये?

उत्तर

सिद्धान्त स्पष्ट है। आदर्श आर्य सभासद को इन सब बातों से बचना चाहिये। परन्तु मैं निकालने के पक्ष में नहीं हूँ। प्रेमपूर्वक सिद्धांतों का प्रचार करना चाहिये। यदि आदर्श आर्य सभासदों की संख्या पर्याप्त हो तो वे आदर्श व्यक्तियों को ही अधिकारी चुनेंगे और शिकायत न होगी। कटु आलोचना को मैं हितकर नहीं समझता।

यों तो नियम है कि यदि एक पुरुष अपनी त्रुटियों के कारण रोगी है तो दूसरे को भी उसकी त्रुटियों का अनुकरण न करना चाहिये, अन्यथा उसका भी रोग बढ़ेगा। परन्तु समाज की उन्नति को दृष्टि में रखकर मैं समाज के प्रेमी संचालकोंसे अपील करूंगा कि वे अपनी ऐसी त्रुटियोंसे भरसक बचने का यत्न करें मेरा अपना विश्वास यह है कि यदि वातावरण उन्नत किया जाय और वैर भाव, बदला, या ईर्षा आदि से बचकर दूसरे के अवगुणों को प्रेम पूर्वक अपने आदर्श से सुधारा जावे तो बहुत कुछ उन्नति हो सकती है। खींचातानी से तो रस्सी टूटने की अधिक संभावना है। सिद्धांत और आदर्श तो हमें सबको ज्ञात है। कान खींचने में तो बुराई नहीं, परन्तु इतना न खींचिये कि कि कान ही उखड़ जावे। —गंगाप्रसाद उपाध्याय

(आर्य मित्र से उद्धृत)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बीज से वृक्ष रूप में लाओ

(ले० श्री पं० विष्णु मित्र जी गुरुकुल कांगड़ी)

—गतांक से आगे—

विद्युत् और उसकी लहरें

वैज्ञानिक कहते हैं कि विद्युत् के स्वतंत्र कण प्रत्येक परमाणु के अतिरिक्त आकाश में भी सर्वत्र व्याप्त हैं। उन्हें जब कारणवश कोई झटका लगता है तब वह झटका उसके क्षत्र द्वारा आकाश में लहरें पैदा कर देता है। इन लहरों को १८८८ में हर्ट ने अपनी प्रयोगशाला में देखा। यह जानकर इटली के नवयुवक मारकोनी ने म० गान्धी जी की तरह—

इहासने शुष्यतु मे शरीरं, त्वगस्थि मांसं विलयं च यातु।
अप्राप्य राज्यं हृयकल्प दुर्लभं नैवासनात्कायमतश्च लिष्यते।

अपनी सारी आयु इन्हीं किरणों की खोज में अर्पण कर दी। उसने इन लहरों को रेडियो के रूप में संसार को दिया। सुना जाता है कि इन्हीं लहरों की बदौलत—बिजली की मशीनों को कई मील दूर से चलाया जा सकता है। जहाज़ों, रेलों, मोटरों तथा कारखानों को एक ही आदमी दूर से चला सकता है। इन्हीं लहरों के प्रताप से आज एक स्थान से दूसरे स्थान पर चित्र भेजा जा सकता है। अभी कुछ दिन हुए कि पत्रों में आपने पढ़ा होगा कि बम्बई और देहली में ऐसे स्टेशन बन गये हैं। जिनमें युद्ध के चित्र अमेरिका से रेडियो द्वारा कुछ ही मिण्टों में भारत पहुंच जाया करेंगे। इसके अतिरिक्त बिना किसी चालक के हवाई जहाज़ उड़ाये जासकेंगे। यह और भी खूबी की बात होगी कि उड़ने के साथ साथ यह जहाज़ प्रत्येक संभव उपाय से शत्रु के निशाने से बचने के लिये कोशिश भी करेंगे।

अभी कुछ मास हुए कि अमेरिका के चार जंगी जहाज़ तथा दो पनडुब्बियों की नकली लड़ाई में युद्ध का पूरा नाटक खेला गया था। जबकि उनमें मनुष्य एक भी न था। न्यूयार्क में गलियों की भीड़ भड़क्कों में भी बिना ड्राइवर की मोटरकारें स्वयं अपने मार्ग का इशारा देती हुई कभी स्वयं तेज़ कभी धीरे चलाई जा चुकी हैं। हैरानी की बात है कि आज अमेरिका के किसान घर के बरामदे में बैठकर अपने परिवार के साथ हंसते और खेलते हुए अपने सारे खेतों में हल चलाते हुए दिखाई देते हैं। जहां एक उपदेशक एक सभा में बैठा हुआ श्रोताओं को उपदेश दे सकता था वहां आज वह यदि चाहे तो सारे संसार को अपना भाषण सुना सकता है।

ऋतु का नियन्त्रण

इन विद्युत की लहरों ने ऋतु पर भी विजय पाना आरम्भ कर दिया है। वेद (ज्ञान) के पुजारियों का कहना है कि जितनी देर के लिये जैसी भी ऋतु चाहें ला सकते हैं। गर्मी, सर्दी, बरसात प्रातः कालीन सुहावना समय और मध्यान्ह की कड़कती धूप कृत्रिम बना सकते है। यही नहीं प्रत्युत बादलों से इच्छानुसार वर्षा भी कर सकते हैं।

रोग परीक्षा और उसका इलाज

विद्युत के द्वारा रोगों का जानना और उनका इलाज करना शहरों में आजकल जारी है। हृदय की गति बन्द हो जाने पर उसे बिजली के कम्पन देकर पुनः चालू किया जा सकता है। [illegible] शरीर के भीतर का सारा हाल जान लेना

कुछ चकित करने वाले परीक्षण

पाश्चात्य विद्वान् कुछ नये परीक्षणों में लगे हुए उन्हें कुछ सफलता भी हो रही है। अब उनका [illegible] जीव के बनाने और मुर्दों को ज़िन्दा करने में लग रहा जाता है कि एक व्यक्ति को जिसे फांसी दी गई थी [illegible] द उसके दिल को निकाल कर कुछ घण्टों के लि हरकत पैदा करदी। एक कुत्ते का सिर काट कर जीवित रखा गया। जैसे कि सांप का शरीर और भिजाई कट जाने पर भी उसमें चेतनता बनी रहती है निक, सिरल ने मुर्गी के अण्डे में से बढ़ते हुए बच्चे के टुकड़ा काट कर एक विशेष प्रकार के घोल में रख उचित गर्मी दी। वह दिलका टुकड़ा आज २५ वर्ष से कर रहा है।

कुछ और चमत्कार

जर्मनी के एक डाक्टर ने १२ साल के अन्धे को मनुष्य का कोर्निया लगा कर आखें ठीक कर दी हैं गंजों के सिर पर बालों वाली खाल लगाई जारही है। पुरुषों के रक्त को अस्वस्थ पुरुषों में डालकर उन्हें बनाया जा रहा है। इसी नियम को वे वनस्पति जगत् चालू कर रहे हैं। अमेरिका के कृषि विशारद ने ताड़ के पर भिन्न २ प्रकार के १६ फलों की टहनियों का पेवन्द कर १५ प्रकार के फल वाला उसे बना दिया। मैंने सुना है कि पछाद रियासत नाहन में एक पौदा है जिसके नासपाती की शकल का है उसपर नासपाती की कलम कर सुन्दर नासपाती का वृक्ष बना दिया है। अब तो [illegible] संभव दिखाई दे रहा है कि जंगली और व्यर्थ के पेड़ों पर तरह की कलमें लगाकर उनको लाभदायक पेड़ों में बदल जाय पाठक वृन्द अभी लिखने को बहुत कुछ है पर लेख जाने के कारण इसे यहीं समाप्त करता हूं।

हिन्दू मुसलिम मिलाप कैसे हो?

एक अनुकरणीय घटना

जडांवाला २६-२-४३ प्रातःकाल आर्यसमाज मंदि संध्या हो रही थी कि इस समाज के प्रतिष्ठित सभासद श्री हुकमचन्द जी को एक आवश्यक सूचना मिली और वह संध्या छोड़कर ही चले गये। मुझे आश्चर्य हुआ कि म ईश उपासना और सत्संग के अति प्रेमी सज्जन हैं। इनक सा आवश्यक कार्य है कि जिसके लिए यह सन्ध्या पूरी सके। पश्चात् पता मिला कि एक मुसलमान सज्जन की कन्या एक हिन्दू नवयुवक के साथ घर से निकल गई है उसके पिता म. जी से सहायता लेने आये हैं। म. जी सारा कार्य छोड़कर इस सेवा में लग गये। थाना में रिपो के जहां शहर में खोज आरम्भ कर दी वहां के भिन्न २ स पर फोन भी कर दिये। और लाहौर पुलिस को भी फोन गया परिणाम यह हुआ कि पोलिसने दोनों को पकड़ लिय अब कन्या घर पहुँच गई है।

हिंदु मुसलिम मिलाप इन्हीं बातों से हो सकता है हमारे मुसलमान भाई भी हिंदुकन्याओं के किसी मुसलम साथ निकल जाने पर ऐसा सहायता करें और इसे [illegible] धार्मिक रूप न दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्म फल मीमांसा

(प० विश्वनाथ जी आर्योपदेशक)

संसार में प्रत्येक प्राणी की यह इच्छा रहती है कि मुझे सुख दुःख न हो, और इसकी सब चेष्टायें इसी उद्देश्य से हुआ ती हैं परन्तु आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है फल भोगने में न्त्र, इस लिये इसका यह उद्देश्य पूरा नहीं होता। इसकी ज्ञता से इसे आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक ा अनिच्छा पर भी होते हैं. इसी प्रकार सुख भी। परन्तु ा क्या नियम है यह अवैदिक मतावलम्बी नहीं बतला ते। पुनर्जन्म का सिद्धान्त ही इस ग्रन्थी को खोल सकता परन्तु इस सिद्धान्त के मानने वाले भी बहुधा भ्रम-मूलक ों पर विश्वास रखते हैं अतएव इस विषय को यथार्थ सम- की आवश्यकता है।

इष्टानिष्ट प्राप्ति वा वियोग रूप सुख दुःख का कारण ब्ध पुरुषार्थ तथा यदृच्छा है। प्रायः किसी सुख दुःख के यह तीनों मिलकर कारण बन जाया करते हैं। एक बालक न्न से आग को खिलौना जानकर हाथ लगाता है तो अग्नि संयोग से यह दुःख अपने उलटे पुरुषार्थ का फल है। यदि ी दुष्ट कर्म के फल रूप में शासक न्यायाधीश इसका हाथ नी आज्ञा से आग में रखवाता है तो यह न्याय जन्य कर्मफल ारब्ध है। यदि स्वयं अग्नि कहीं से उड़कर लग जाय अथवा ी दुष्ट मनुष्यने द्वेषसे इसे अग्नि लगा दी तो यह यदृच्छा है। तु सांसारिक न्यायाधीश रागद्वेष अथवा अज्ञान से न्यूना- अथवा निर्दोष को भी दण्ड दे देते हैं अतएव ऐसी अव- में यह भी यदृच्छा में परिगणित हो जाता है। अतएव लौकिक प्रारब्ध वह है जो ईश्वर की ओर से दूसरे जन्म के में जीव को कर्मफल के रूप में दी जाती है।

प्रारब्ध के सम्बन्ध में विचारणीय बात यह है कि जैसे ार में न्यायजन्य फल वह कहलाता है जो न्यायाधीश की ा से दिया जावे इसी प्रकार प्रारब्ध वह है जो ईश्वर की य प्रेरणा से मिले और विशेष प्रेरणा सिवाय दूसरे जन्म ौर कुछ नहीं और दूसरे जन्म में भी योग शास्त्र के कथना- र:—

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः

(१) जाति—मनुष्य पशु पक्षी आदि। मनुष्य आदि में भी य कुल सभ्यासभ्य वर्ण विशेष (२) आयु, शारीरिक गठन स्थ्य, रुग्ण दशा, विशेष आयु तक स्थिर रहने वाला शरीर भोग—धन ऐश्वर्य देश विदेश इत्यादि। परन्तु एक जन्म व कर्मों का फल नहीं दिया जा सकता अथवा किसी की विशेष आयु से पूर्व ही मृत्यु होगई इस अवस्था में कर्मफल अन्य जन्म में भोगता है और यह संचित कर्म- कहलाता है इस प्रकार पुनर्जन्म में गत जन्म और उससे न्मों का संचित कर्मफल मिला करता है।

कई आर्य भाईयों को भी यह भ्रम है कि यह जाति आयु नियत है इसमें परिवतन नहीं हो सकता परन्तु कर्म फल न्तःद्धान्त ऐसा नहीं। देखो, एक भृत्य अपने एक मास का अपने कर्मफल के रूप प्राप्त कर लेता है तो उसे वेतन ोग करने बढ़ाने घटाने का पूरा अधिकार रहता है। कोई चोर लूट ले तो भी स्वामी पर उत्तरदायित्व नहीं होता त्कार ईश्वर की ओर से पुनर्जन्म में जाति, आयु, भोग फल दे दिया जाता है। आगे स्वकर्म अथवा यदृच्छा से

अर्थ—विश्वामित्र आदि ने अपने तप के प्रभाव से इस प्रारब्ध प्राप्त जाति और आयु में उन्नति कर ली। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य ब्रह्मचर्य व्यायामादि से आयु में और पुरुषार्थादि से भोग में वृद्धि कर सकता है और इसके विपरीत हानि भी। इसी प्रकार यदृच्छा से भी परिवर्तन हो सकता है।

मनुष्य को संसार में जो सुख दुःख हानि लाभ होता है उसमें प्रारब्धादि में केवल एक ही कारण नहीं होता किन्तु पुरुषार्थ प्रारब्ध और यदृच्छा तीनों कारण होते हैं। दो विद्यार्थी इकट्ठे पढ़ते हैं। दो एक जैसा काम करते हैं परन्तु उनमें एक पुरस्कार प्राप्त करता है और दूसरा अनुत्तीर्ण हो जाता है। इसमें प्रारब्ध कारण है अर्थात् एक विद्यार्थी का नैसर्गिक मस्तिष्क उत्तम है दूसरे का घटिया, परन्तु यदि उत्तम मस्तिष्क वाला विद्यार्थी पढ़ने का काम न करेगा तो केवल अच्छे मस्तिष्क से विद्या की प्राप्ति नहीं हो सकेगी अतएव प्रारब्ध के साथ पुरुषार्थ की भी आवश्यकता है यदृच्छा का अर्थ है देश कालतथा अन्य व्यक्तियों का अनुकूल तथा प्रतिकूल प्राप्त होना। जन्म के साथ सम्बन्ध रखने से यह स्वकर्म सिद्ध भी होसकती है, परन्तु जब ये दोनों कारण न हों तो यदृच्छा नाम पड़ता है। ऊपर के दृष्टान्त में किसी पाठशाला के योग्य अथवा अयोग्य अध्यापकों का जो विद्यार्थियों पर प्रभाव है वह यदृच्छा है। किसी नदी को पार करने के लिये दो यात्री ३ घंटा की देरी से चले पहला जब गया तो नदी पादगम्य थी वह १० मिनट में पार हो गया दूसरा आया तो नदी में बाढ़ आचुकी थी। इसे नौका का प्रबन्ध करना पड़ा और नदी पार करने में अधिक श्रम और समय लगाना पड़ा। यह यदृच्छा है। वास्तव में सब कार्य पुरुषार्थही से सिद्ध होते हैं। प्रारब्ध और यदृच्छा इसके सहायक मात्र होते हैं। वेद शास्त्र का भी यही मत है।

अपक्रामन् पौरुषेयाद्वृणानो दैव्यं वचः प्रणीतिरभ्या वर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह। अथर्व ७।१०५।१॥

अर्थ—अपने पुरुषार्थ से प्रारब्ध का वचन स्वीकार करते हुए यदृच्छा से उत्पन्न विघ्नों को दूर करता हुआ अपने मित्रों की सहायता और अच्छी नीति से सफल बन।

एवं दृढ़ा च दैवाच्च स्वभावात्कर्मणां फलम्। महा० वन० ३२।२

अर्थ—इस प्रकार दृढ़ (यदृच्छा) दैव (प्रारब्ध) के योग से पुरुषार्थ का फल मिलता है।

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति।
अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्।

ऋग्वेद प्रथम म० २।३

[ब्र० प्रताप एकादश गुरुकुल कांगड़ी]

अग्नि है यह पूज्य मेरी,
पूजते जिसको सदा से
वर्तमान अतीत से री!
अग्नि है पद पूज्य मेरी,
ईश जो सब को यहां पर
दिव्य भावों को जनाता
और जो नित पोषणात्मक
ऐश्वर्य हमें दिलाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रश्न पिटारी

[२]

[ले०—अभयशरण आयुर्वेदालंकार पुरोहित आर्य समाज बन्नू]

प्रश्न पिटारी के आने वाले उत्तर सभा की ओर से व्यवस्था रूप में आवें तो अधिक अच्छा होगा ताकि वे कार्य रूप में भी लाए जा सकें।

१—क्या उन सभी मन्त्रों के बाद घृतशेष पानी के पात्र में डालना चाहिए जिन के अन्त में इदन्नमम आता है। अथवा केवल गर्भाधान संस्कार में ही जहां कि स्पष्ट वर्णन है। आर्य-समाजों के दैनिक व साप्ताहिक हवन यज्ञों में घृत शेष अन्य पात्र में बून्द रूप से इदन्नमम से टपकाया जाए या नहीं। इसमें आचार्य पं० बुद्धदेव जी तथा पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की भिन्न भिन्न प्रकार से स्वामी जी के मत की आलोचना है। सभा की क्या व्यवस्था है। यदि डाला जावे तो उसे क्या करें। उसे यदि मुख पर लगाया जावे तो किसी मन्त्र के उच्चारण के साथ (कौन से मन्त्रों) अथवा यों ही लगालें। समाज में होने वाले हवनों में क्या किया जाए और कैसे।

२—क्या आर्यों का अपना कोई वेष है। यज्ञ करते हुए (पूर्व मीमांसा में सुना है धोती का वर्णन किया है) धोती अन्य वेशों से श्रेष्ठ है अथवा नहीं? यज्ञ का बाह्य चिन्ह धोती है सब आर्य (हिन्दू मात्र) परम्परा से संस्कारों पर वही पहनाते भी हैं। अतः यज्ञों के लिए धोती का प्रचार किया जाना चाहिए अथवा नहीं। यज्ञ का वेश धोती ही है अगर वह न हो अथवा प्रबन्ध न हो सके तब अन्य वेश में आना चाहिए (क्योंकि यह बाह्य चिन्ह है जैसे चोटी) अथवा यह बात नहीं और यज्ञ का वेष केवल शुद्ध वस्त्र ही हैं चाहे वे पतलून या पाजामा सलवारादि कोई भी क्यों न हों। यह प्रश्न आर्यावर्त के ही आर्यों के विषय में प्रष्टव्य है। आर्य समाज में होने वाले पर्वों पर तथा गृहों में होने वाले संस्कारों पर धोती को मुख्यता अन्य वेषों से दी जाए व नहीं।

आर्यों (हिन्दुमात्र) के पंडित जन क्या इसी लिए यज्ञों के समय धोती बांधते हैं कि यह उनका यज्ञ का वेष है अथवा उनके लिए भी आवश्यकता नहीं यदि उनके लिए आवश्यक है तो यजमानों के लिये क्यों नहीं? आज वेष धोती नहीं रहा यह उत्तर नहीं होसकता। देश काल और परिस्थिति को अनुकूल बनाना आर्यों का कर्तव्य है। नियम और व्यवस्था को देश काल और पात्र के अनुसार लागू करना और बात है, पर व्यवस्था और नियम क्या है?

३—समाजके दैनिक व साप्ताहिक सत्संग और गृहमें होने वाले संस्कारों में पूर्णाहुति से पूर्व ३ वार गायत्री की आहुति दें अथवा नहीं (उत्तर से पूर्व पञ्च महायज्ञ विधि को देव यज्ञ का अन्तिम प्रकरण और सत्यार्थ प्रकाश का यज्ञ प्रकरण तथा गायत्री मन्त्र की व्याख्या का देख लेना अधिक सहायक होगा)।

सन्ध्या जो समाजों में सम्मिलित रूप से हो उसमें शन्नो देवी से आचमन किया जावे या यों ही उच्चारण मात्र हो। यदि किया जावे तो सन्ध्या में कितनी वार शन्नो देवी का उच्चारण हो। समाजों को प्रति सत्संगी के लिए जल पात्र (अपनी सामर्थ्य अनुसार) का प्रबन्ध करना चाहिए व नहीं?

४—(क) समाज के सत्संग में होने वाली संमिलित सन्ध्या में "हे ईश्वर दयानिधे!" को भी पढ़ा जाना चाहिए व नहीं जो कि नमः शंभवायच से पूर्व "अथ समर्पणम्" लिख

(ख) अघमर्षण के पश्चात शन्नो देवी फिर नहीं।

(ग) और इसके बाद जब सम्मिलित सन्ध्या गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थ विचार पूर्वक.....परब्रह्म द्वारा प्रार्थना करे।

अथवा अघमर्षण के बाद सीधा ही मनसा परिक्र करदें। क्या करें, कैसे करें, यदि प्रार्थना करें तो हो निश्चित व अनिश्चित (अघमर्षण के पश्चात)।

प्राणायाम मन्त्रों के बाद प्राणायाम के लिए सन्ध्या में विराम हो अथवा नहीं यदि हो तो कम कितनी देर हो। यह भी उत्तर देने का कि प्राणायाम मन्त्रों का भी उच्चारण उच्चस्वर से केवल मन में ही हो। अगर उच्च स्वर से हो तो कर से पूर्व व बाद में।

यह प्रश्न ज्ञान की दृष्टि की अपेक्षा विधि भाग अधिक पूछे हैं अतः सभा की व्यवस्था भी होनी चाहे विद्वान् से विद्वान् ही उत्तर क्यों न दें।

क्या सभा ऐसा प्रबन्ध करने की कृपा करेगी समाजों में कम से कम दैनिक सन्ध्या हवन की एक प्रचलित करे।

नोट—उत्तर देते हुए सन्ध्या को सम्मिलित किया जाता है उसे कैसे किया जाए यह प्रश्न समझा

संम्मिलित सन्ध्या में यदि अघमर्षण के शन्नोदे मन्त्र पर एक प्रार्थना हो और फिर नमः शंभवाय ईश्वर दयानिधि! से भी प्रार्थना हो तो जो प्रथा नमः शंभवाय च के बाद स्वतन्त्र प्रार्थना की प्रचलित रहनी चाहिए व नहीं।

शंकायें—

१—ऋषि दयानन्द जी महाराज ने ओ३म् का हुए प्रत्येक अ. उ. म इन अक्षरों के तीन २ अर्थ लि किस लिये लिखे हैं? यह तो श्री पं० भीमसेन जी वेद तीन लेखों से विदित होता है। परन्तु केवल भावना से नहीं कर सकते उन अर्थों का कोई आधार भी चा अर्थ किसी कोश में, ब्राह्मण या और किसी ग्रन्थ में होंगे। स्वाध्याय शील महानुभावों से प्रार्थना है वि विषय पर अवश्य प्रकाश डालें। प्रमाण आवश्यक है

२—सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि ने देव, ऋषि, पि तर्पण लिखा है। यह मेरी समझ में नहीं आया कि वे आश्रम के होते हैं। और वहां लिखे अनुसार देव और विशेष भेद प्रतीत नहीं होता। देव, ऋषि, पितर इ ऊंची श्रेणी किसकी है? तीनों में परस्पर भेद क्या है

३—कोई एक ऐसा वेद मंत्र जिसमें चारों वेदों ऋक्, यजु, साम और अथर्व नाम आये हों और यजु और साम में से किसी एक वेद में आया हो आ आशा है विज्ञ महोदय अवगत करायेंगे। मन्त्र अर्थ नहीं चाहिये।—मंजुनाथ दयानंद उप०वि०गुरुदत्त भव

लेखकों से

लेख सुपाठ्य अक्षरों में हाशिया छोड़ कर लिखने सूचनाएं बहुत संक्षेप में लिखी जानी चाहिए।

उत्तर अवश्य पाने के लिए पत्र के साथ डाक व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदर्श जीवन के प्रतीक

स्व० श्रीयुत सुख दयाल जी

[ब्रह्मचारी सहदेव, त्रयोदश श्रेणी गुरुकुल काङ्गड़ी]

यह उक्ति लोक प्रसिद्ध है कि मनुष्य भगवान् की सर्वो-कृति है। इसलिये मनुष्य-योनि में जन्म ग्रहण करना स्व-सौभाग्य का सूचक है। मनुष्यों में भी जो आदर्श जाय—वह देह-त्याग के अनन्तर भी जीवित रहता है। ता के एक कवि के शब्दों में —

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवति।

इसका अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन-काल सर्गों को प्रकाश देता है, अथवा अपने गुणों से मानव-न को प्रभावित करता है—उस मनुष्य का नाम मरने के तब भी सर्वसाधारण के हृदय में अंकित रहता है। उस ीवन इतना आकर्षणमय होता है कि दूसरे भी उसे अपना य-स्थान समझ कर उसकी छत्र-छाया में विश्राम लाभ हैं। वही व्यक्ति संसार में जीवित हैं—जिन के जीवित पर दूसरों का जीवन निर्भर करता है।

आर्य-संसार को यह जानकर अत्यन्त वेदना होगी कि एक योग्य सदस्य इस संसार को छोड़कर सदा के लिए अज्ञात कोनेमें चला गया है। मेरे विचारमें वह उस भगवान् ोड़ में बैठा है, जिनकी प्रतिक्षा में भगवान् सदा रहते हैं। र में ऐसे ही व्यक्तियों का यश चिरस्थायी रहता है जो कार-प्रिय होते हैं और ऐसे ही व्यक्ति भगवत्कृपा के पात्र हैं। आइये, आज हम सब तप और त्याग की मूर्ति श्रीयुत दयाल जी के जीवन की झांकी लें।

आर्य समाज का सौभाग्य है कि स्वामी श्रद्धानन्द जैसे उसका नेतृत्व और पथ-प्रदर्शन करते रहे हैं। स्वामी क्षा के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित करने वाले—इस नाम ात हैं। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली से उन्हें उतना प्रेम था कि के प्रत्येक कोने में गुरुकुलों का जाल बिछा हुआ देखना थे। स्वामी जी के ही कथनानुसार सुखदयाल जी ने कमालिया की नींव डाली। जिसकी आधार शिला श्री आचार्य रामदेव जी के पवित्र कर कमलों द्वारा ई थी और उद्घाटन देवतास्वरूप श्री पूज्य भाई परमा-जी ने किया था। महाशय जी ने गुरुकुल के लिए सर्वस्व कर दिया। यदि मैं यह कहने का साहस करूं कि सुख-जी श्रद्धानन्द जी के सच्चे अर्थों में शिष्य थे तो इस में अत्युक्ति नहीं होनी चाहिए। स्वामी जी की तरह उन्होंने कुल की स्थापना कर के सब से पहले अपने बच्चों को किया। जो कहा, सो किया। लोगों ने मज़ाक उड़ाई उसकी उन्होंने उपेक्षा की। आज उन के सुपुत्र गुरुकुल के स्नातक बन चुके हैं। हम अनुभव करते हैं कि तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं के लिए क्रियात्मक व्य-की ही आवश्यकता है। जब तक समाज में तप, त्याग गुणता का समावेश न होगा, हमारा समाज निष्प्राण । यही चीज़ें समाज के व्यक्तियों का जीवन आदर्शमय में सहायक सिद्ध होती हैं।

हमारे विचार में वर्तमान समय में हमारा देश राष्ट्रीय की अत्यन्त आवश्यकता अनुभव कर रहा है। आर्य ने गुरुकुलों का उद्घाटन करके शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय ओं को प्रोत्साहन देने में पर्याप्त ख्याति प्राप्त की है। नौकरी को लात लगादी। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनसे निवेदन किया था कि समाज-सेवा के लिए आपको स्वतन्त्र रूप से ही कार्य करना चाहिए। स्व० सुखदयाल जी उन दिनों पोस्ट आफ़िस के इन्सपैक्टर थे। शिमला तथा क्वेटा में रहने वाले साथी अंग्रेज़ उनकी सादगी और कर्मनिष्ठता को देखकर आश्चर्य करते थे। सरकारी ओहदे पर रहकर वे पर्याप्त उन्नति कर सकते थे। परन्तु आर्य समाज तथा गुरुकुल की सेवा के लिए उन्होंने अपने जीवन की बाज़ी लगा दी। गुरुकुल के स्नातकों से तथा गुरुकुल जैसे वातावरण में पले हुवे व्यक्तियों से उन को अत्यन्त स्नेह था। उनका कथन था कि परमेश्वर आगामी जीवन में मुझे गुरुकुल का विद्यार्थी होने का सौभाग्य प्रदान करे, तो मैं अपने को धन्य समझूंगा। एक समय किसी व्यक्ति ने उन के सम्मुख गुरुकुल के स्नातकों का मज़ाक उड़ाया। इस से वे क्षुब्ध चित्त हुवे और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने विद्यार्थियों को सर्वगुण सम्पन्न बनाने का प्रयत्न करूंगा, जिस से जन साधारण उनके विषय में असंभव कल्पना न कर सके।

वे अपने नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति थे। प्रभावशाली थे और उत्तम नागरिक थे। कमालिया के अतिरिक्त ज़िला झंग और लायलपुर में भी उनका नाम लोकप्रिय हो चुका था। उन में वे सब गुण विद्यमान थे, जिनका एक आदर्श व्यक्ति में होना अनिवार्य है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि श्रीयुत सुखदयाल जी आदर्श-जीवन के प्रतीक थे।

ऐसे व्यक्तियों के दुःखाक्रान्त होने पर हमारी वेदना की कोई सीमा नहीं रहती। वे कई महीनों से रुग्ण थे। रुग्णता का कारण उनका कठोर परिश्रम था। मैं उन के जीवन से भली भांति परिचित हूं। क्योंकि भगवान् की कृपा से उनकी छत्र छाया में ८ वर्ष तक रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यदि समाज उनके गुणों का अनुकरण करेगा तो उसका अभ्युदय शीघ्रातिशीघ्र होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

श्रीयुत सुखदयाल जी की मृत्यु का समाचार सुनकर हमें असीम दुःख की अनुभूति होती है। वे एक संस्था गुरुकुल कमालिया का संचालन कर रहे थे। हमें आशा है कि इस संस्था का ध्यान करना प्रत्येक आर्य का प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए। यदि इन बच्चों का पालन-पोषण उचित रीति से न हो सका तो हमें यही कल्पना करनी चाहिए कि हम अपने बच्चों के साथ उपेक्षा पूर्ण व्यवहार करते हैं। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि वह आर्यों को अपने बच्चों की रक्षा करने का सामर्थ्य प्रदान करे। अन्त में मैं दिवंगत आत्मा के लिए सद्गति प्राप्ति की कामना करता हुआ शोक संतप्त परिवार से सहानुभूति प्रकट करता हूँ।

बरात के बिना विवाह

जडांवाला में एक आर्य भाई हैं जो मेरी तरह यह समझते है कि बरात का रिवाज प्राचीन नहीं है और विवाहों में अप व्यय का कारण भी बरात ही है। समृद्धिशाली होने पर भी अपनी कन्याओं और लड़कों का व्याह बिना बरात के करना चाहते हैं। जात पात का भी कोई विचार नहीं। जो आर्य भाई इच्छुक हों वे मेरे साथ पत्र व्यवहार करें। विश्वनाथ पुरोहित आर्य समाज जडांवाला।

वधू की आवश्यकता

एक आर्य युवक आयु २८ साल, मैट्रिक पास, प्रेस फोटो-ग्राफर मासिक लगभग ६०) लायलपुर निवासी के लिए एक सुशीला गृह कार्य में दक्ष, आर्य कन्या की आवश्यकता है। जात-पात का कोई बन्धन नहीं। पत्र व्यवहार का पता—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

—वार्षिकोत्सव की तैयारियां—गुरुकुल-विश्वविद्यालय कांगड़ी का ४१वां वार्षिकोत्सव आगामी ईस्टर की छुट्टियों में ता० २३ अप्रैल से २६ अप्रैल तक अपूर्व समारोह के साथ मनाया जायगा। उत्सव में अब सिर्फ सवा मास शेष रह गया है अतः तैयारियां जोर शोर से शुरू हो गई हैं। हाल ही में प्रबन्ध-समिति की बैठक हुई जिसमें श्री मुख्याधिष्ठाता जी ने गुरुकुल के वार्षिकोत्सव को हर दृष्टि से कामयाब बनाने के लिए कुछ योजनाएँ पेश कीं जिन पर प्रोफेसरों तथा अधिकारियों ने उत्तम रीति से विचार किया। इस वर्ष युद्ध की असाधारण परिस्थिति तथा अन्न आदि की मंहगाई के कारण वार्षिक बजट पर जो असर पड़ा है उस कमी को पूरा करने के लिए भारत के विभिन्न शहरों में गुरुकुल की ओर से डेपूटेशन भेजा जायगा। आशा है आर्य संस्कृति प्रेमी उदार जनता इस पुण्य कार्य में हर प्रकार से सहायता करके गुरुकुल के प्रति अपने उत्कृष्ट प्रेम का परिचय देगी तथा अपनी प्यारी संस्था पर किसी प्रकार का घाटा न आने देगी।

—गुरुकुल कांगड़ी। महात्मा गान्धी जी के २१ दिन अनशन की सकुशल समाप्ति पर आज सारे गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में प्रसन्नता की लहर फैल गई। महात्मा जी के स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिये प्रतिदिन जो सामूहिक प्रार्थना की जा रही थी उसका अन्त आज प्रातःकाल एक सभा के साथ हुआ जिसमें परम प्रभु परमात्मा का धन्यवाद किया गया कि उसने भारतवर्ष और मानव समाज पर कृपा करके महात्मा जी की इस संकट से प्राणरक्षा की है। प्रर्थना की गई कि महात्मा जी अपने इस जीवन काल में स्वतंत्रता देख लें।—मुख्याधिष्ठाता।

— गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का २७वाँ वार्षिकोत्सव विशेष समारोह से २७, २८ फरवरी को मनाया गया। उपस्थिति आशातीत थी श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्यायके सभापतित्व में "आर्यधर्म सम्मेलन" और श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन की कार्यवाही हुई। श्री पं० बुद्धदेव जी, श्री पं० भीमसेन जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब श्री प्रो० इन्द्र जी श्री पं० रामचन्द्र जी दहेलवी, पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, आदि प्रसिद्ध विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुए। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० धर्मवीर जी वेदालंकार ने इस वर्ष अपील पर ११०००) ग्यारह हज़ार रुपयों के दान की घोषणा सुनाई। श्री ला० बद्रीदास जी धर्मपत्नी श्री मती यशोदा देवी जी ने अपने स्वर्गीय पति के स्मारक में कमरा बनवाने के लिये २०००), श्री सेठ जुगल किशोर जी बिरला ने ३०००), ला० श्री राम जी गोटेवाले ने २५००), ला० झम्मन दास जी द्वारा २७६१), ला० रलाराम मेलाराम जी १५११), ला० लक्ष्मण दास रामचन्द्र जी लोहिये ने १५१), इनके अतिरिक्त कई महानुभावों ने १००) प्रदान किये। इन महानुभावों का गुरुकुल की ओर से हार्दिक धन्यवाद किया जाता है। वालीबाल के मैच, ब्रह्मचारियों के चित्ताकर्षक शारीरिक खेलें तथा मशहूर पहलवानों की कुश्तियां हुईं। श्री पूज्य महात्मा गान्धी जी की दीर्घायु के लिये प्रतिदिन उत्सव में प्रार्थना होती रही।

आर्य समाज संसार

—आर्यसमाज प्रागपुर का निर्वाचन इस प्रकार प्रधान, लाला जैशीराम जी। उपप्रधान, लाला द जी। मंत्री, प० पृथ्वीचन्द्र जी आर्य। उपमन्त्री अमरचन्द्र जी। कोषाध्यक्ष लाला बद्रीदास जी। ध्यक्ष, डाक्टर सन्तराम जी। अंतरंग सभासद बलदेवचन्द्र जी, लाला गुरबक्शराम जी, श्रीमती देवी जी, श्रीमती लीलावती देवी जी, श्रीमती देवी जी।

—आर्य्य समाज बटाला का वार्षिकोत्सव २६, फरवरी को बड़ी धूर धाम से हुआ। इस दिन पूर्व श्री चिरंजीव लाल जी वानप्रस्थी मनोहर कथा द्वारा मुग्ध करते रहे। उत्सव में श्री वानप्रस्थी स्वा० स जी महाराज, हरदयाल जी, पं० शिवदत्त जी चिरंजीवलाल जी प्रेम के व्याख्यान हुए। १ मार्च को स समाज को बड़े समारोह से हुआ।

—जड़ांवाला आर्य समाज मन्दिर में प्रातःकाल हवन के पश्चात् पं० विश्वनाथ जी वेदमन्त्रों की विद्वत्ता ख्या करते हैं। कुछ आर्य भाई हिंदी संस्कृत पढ़ते हैं और कन्यायें सायंकाल पं० जी के साथ मिल कर संध्या और भजन बोलती हैं। पिछले दिनों प० बेधड़क ठा० प्रकाश सिंह जी पधारे और अपने मनोहर भजनों कृतार्थ किया।

देश विदेश के समाचार

—साहित्य परिषद्। समस्त साहित्य सेवकों की सूचना दी जाती है कि लाहौर में साहित्य परिषद् स्थापना की गई है, जिसका अधिवेशन प्रति रविवार को दोपहर को परिषद् के कार्य्यालय शाहलमी दर्वाज़ा, जौड़ेमोरी में हुआ करेगा। इसमें अच्छे अच्छे कवियों, चार्य्यों तथा कहानी लेखकों की कविताएं, गीत तथा क हुआ करेंगो। दर्शन देकर कृतार्थ करें

—१० मार्च की स्नोविंग विज्ञप्ति में कहा गया है हुई जर्मन सेना की कुछ डिविज़नों ने दुबारा तय्यार हो और यान्त्रिक सेनाओं के साथ मिल कर फ़रवरी के एक भयानक आक्रमण किया, जिसके कारण लाल क्रास्नोग्राद, लोगोवाया, पावलोग्राद, क्रामारोस्टकाया, कोवो, स्लेव्यास्क और लिसिचास्क को खाली करना पड़

—अमेरिका के युद्ध विभाग की रिपोर्ट के अनुसार उधार पट्टे में भारत को साढ़ उनतीस करोड़ डालर यता दी गई है।

—युद्ध मन्त्री श्री हेनरी एल० स्टिम्सन ने अपी कि १९४३ के अन्त तक अमेरिकन सेना में ८२ लाख भरती हो जांय।

—सिविल सप्लाई कमिश्नर ने सूचित किया है कि में प्रायः ६ लाख २६ हज़ार परिवारों को बम्बई में रा दिये गये हैं और शेष ५० हज़ार दिये जाने को हैं।

—केन्द्रीय असेम्बली में श्री वियोगी ने प्रस्ताव रख भारत रक्षा विधान के कार्यों तथा वायसराय के आ की जांच करने के लिए एक कमेटी बनाई जाय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रेस लिमिटड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित हो
गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४,

वार्षिक मूल्य

२१ मार्च १

२००१ मुख्याधिष्ठाता जी
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

[१५]

आचार्य श्रद्धानन्द का अमर लेख

आचार्य की हृदय रूपी गुफ़ा में केवल एक ख़ज़ाना नहीं उस गुफ़ा के अन्दर एक और कोष भी है जिसका पता चारी को तब ही लग सकता है जब कि वह पहली भिक्षा पचाने के योग्य बन जावे। तप पूर्वक गुरुकुल में निवास ता हुआ ब्रह्मचारी द्यौ और पृथिवी—दोनों प्रत्यक्ष लोकों की या प्राप्त कर लेता है। 'लोक-दर्शने'—प्रत्यक्ष होने से ही तो सब लोक कहलाते हैं। परन्तु इन प्रत्यक्ष लोकों से परे, इनसे ऊँचा वह है जिसकी प्राप्ति ही जीवन का परमोद्देश्य है। तिक पृथ्वी को भौतिक सूर्य प्रकाशित करता है, परन्तु हृदय-न्दिर को प्रकाशित करने का अधिकार आत्मिक सूर्य को ही जो कि जीवात्मा को भी मन्दिर बना कर उसे प्रकाशित त्मा है, और भौतिक इन्द्रियों से अगम्य है। इसी भाव की ाख्या उपनिषत् में की है—

य आत्मनि तिष्ठन् आत्मनोऽन्तरो, यमात्मा न वेद, स्यात्मा शरीरम्। आत्मनोऽन्तरे यमयति, स ते आत्मा न्तर्यामी, अमृतः॥

भावार्थ—जो परमात्मा जीवात्मा में स्थित और जीवात्मा भिन्न है, जिसको जीवात्मा नहीं जानता कि वह मुझ में ाप्यक है, जिस परमात्मा का जीवात्मा शरीर है, जो उसे यम में रखता है, वही अविनाशी स्वरूप तेरा भी आत्मा है—क्को तू जान।

पृथिवी और द्यौ की प्रत्यक्ष विद्या आचार्य की हृदय रूपी फा में एक कोष है, परन्तु इनसे भी परे परोक्ष दूसरा ख़ज़ाना। यदि ब्रह्मचारी देवमंडल में शामिल होना चाहता है—र्थात् यह चाहता है कि विद्या व्रत स्नातक बन कर जब यह ुकुल से लौटे तो देवगण उसकी अगुआई करें तो उसे प्रत्यक्ष परे परोक्ष विद्या के लिये आतुर होना चाहिये। कहा भी है—

"परोक्ष प्रिया इव हि देवाः, प्रत्यक्षद्विषः।"

जब प्रत्यक्ष विद्या के लिये तप की आवश्यकता है तब देने वाला भी है। पृथिवी और द्यौ की अपर मात्र होने से गौण है, उससे ऊपर परा विद्या मुख्य है; क्योंकि वह परमोद्देश्य तक पहुँचा देती है। उस मुख्य विद्या की रक्षा ब्रह्मचारी तप से करता है।

तब वह ब्रह्म को जानता हुआ केवल उसी का हो रहता है। यही कैवल्य है। यही निर्वाण है।

प्रसिद्ध लोकोक्ति अब तक चली आती है—

'गुरु बिनु ज्ञान न पावे चेला' गुरु के बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना निर्वाण नहीं (ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः)।

इसलिये गुरु की परम आवश्यकता है।

वास्तव में परम गुरु हमारे अन्दर है, बाहर है, उससे सारा ब्रह्माण्ड आच्छादित है; परन्तु जब तक हृदय के अन्दर उसे देख न लें तब तक समीप होते हुवे भी हम उससे बहुत दूर हैं। इन्हीं दर्शनों के लिये 'गुरु' की ज़रूरत है। उस परम प्रकाश की ज़रूरत है। उस परम प्रकाश की झलक तो बिजली की चमक की तरह कभी न कभी मूढ़ पुरुष भी देखता है; परन्तु उस झलक के ओझल होने पर फिर उसे भूल जाता है। उसके दर्शन गुरु=आचार्य की कृपा के बिना नहीं होते—परन्तु जब एक बार सचमुच दर्शन हो जावें और जीवात्मा 'अपने परम गुरु को पहिचान लेवे' तब वह उसी का हो रहता है। फिर आचार्य की सहायता की आवश्यकता नहीं रहती। प्रधान आचार्य की संरक्षा में जाकर साधारण आचार्य की क्या ज़रूरत है? प्राणी तब उसी का हो रहता है। इस संसार को ऐसे आचार्यों की आवश्यकता है जो स्वयं नित्य उसके सहवास में रहते हुवे अपने शिष्यों को उसी का बना देवें। 'अथर्व वेद' में कहा है—

अर्वागन्यः परो अन्यो दिवस्पृष्ठात्, गुहा निधी निहितौ ब्राह्मणस्य। तौ रक्षति तपसा ब्रह्मचारी, तत् केवलं कृणुते ब्रह्म विद्वान्॥ ११। ५। १०॥

—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर २५ फ़रवरी को 'आर्य' का गुरुकुलाङ्क निकलेगा। जो समाजें या आर्य महानुभाव इस विशेषाङ्क की अधिक प्रतियां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

वैश्वानर समुद्र

[ले०—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति]

[१५]

मुञ्चामि त्वा वैश्वानरादर्णवान्महतस्परि ।
सजातानुग्रेहा वद ब्रह्मचाप चिकीहि नः ॥

अथर्व० १ । १० । ४

अर्थ—(त्वा) तुझ को, हे मेरे आत्मा (वैश्वानरात्) सब लोगों के हितकारी (महतः) महान (अर्णवात्) इस संसार समुद्र से (परिमुञ्चामि) मैं छुड़ाता हूं (उग्र) हे उग्र शक्ति वाले मेरे आत्मा (इह) इस संसार में (सजातान्) समान रूप से उत्पन्न होने वाले (नः) हम मनुष्यों को (ब्रह्म) वेद का (आवद) उपदेश करते रहो (च) और (चिकीहि) हमें ज्ञानवान् बनाते रहो, जिससे हम (अप) सब दोषों से अपगत अर्थात दूर हो जायें ।

यह संसार एक समुद्र है । और वैश्वानर समुद्र है—सब लोगों का हितकारी समुद्र है । यदि हम इसमें रहते हुए बुद्धि-मत्ता से जीवन व्यतीत करें तो यह हमारे लिये बड़ा हितकारी हो जाता है । इसके द्वारा हमें अनेक प्रकार के सुख-मंगल प्राप्त होते हैं । यहां तक कि इसके पदार्थों का क्रमिक ज्ञान प्राप्त करते हुए हम एक दिन पर-ब्रह्म का स्वरूप पहचानने में भी समर्थ हो जाते हैं । इस प्रकार बुद्धिमान् अभ्यासी के लिये यह जगत् सांसारिक सुखों का कारण तो बनता ही है साथ ही उस के लिये ब्रह्मज्ञान का सहायक होकर मोक्षानन्द की प्राप्ति का भी साधन बन जाता है । ऐसे बुद्धिमान् व्यक्ति इस संसार समुद्र की विभिन्न विषय रूप लहरों पर आनन्द के साथ तैरते हुए बिना किसी भय के बिना किसी आपद्-विपद् के इसके परले किनारे जा लगते हैं—ब्रह्म प्राप्ति रूप अपने ठिकाने पर जा पहुँचते हैं । परन्तु जो इसमें रहते हुए बुद्धि से काम नहीं लेते उनके लिये यह संसार-समुद्र बड़ा भयानक बन जाता है । उनके लिये इसमें सुख कुछ भी नहीं रहता है । सर्वत्र उनके लिये दुःख ही दुःख रहता है । वे सदा इसी में डूबते-उतराते रहते हैं । उन अज्ञानियों की इसमें ऐसी अवस्था होती है जैसी तैरना न जानने वाले अथवा भग्न-नौ यात्री की किसी समुद्र में पड़ जाने पर होती है । उन्हें अपने उद्धार का—कल्याण का—कोई मार्ग नहीं सूझता । जो पुरुष सूक्त के पूर्व मन्त्रों में वर्णित रीति से अपना जीवन व्यतीत करते हैं उन्हें इस संसार समुद्र में फंस जाने का कोई भय नहीं रहता । वे व्यक्ति तो सदा अपने आत्मा को उत्साह भरे शब्दों में सम्बोधन करते रहते हैं कि हे मेरे आत्मा मैं तुझे इस संसार समुद्र से छुड़ा लूंगा—इसके भयों में नहीं पड़ने दूंगा । अज्ञानी और असत्याचरणी पर भगवान् का जो मन्यु गिरता है जिसके कारण ही यह संसार-समुद्र भयजनक बन जाता है भगवान् के उस मन्यु-पाश में मैं तुझे नहीं बंधने दूंगा । तू तो इस समुद्र की लहरों पर निरापद् होकर आनन्द से तैरता चला जा ।

इस प्रकार के तत्वदर्शी व्यक्ति केवल अपना ही कल्याण करके सन्तुष्ट नहीं रहते । वे अपने आत्मा को सदा औरों का कल्याण करने के लिये भी प्रेरित करते रहते हैं । वे अपने आत्मा से कहते रहते हैं कि हे मेरे आत्मा जिस ब्रह्म अर्थात [illegible] के द्वारा और जिस ब्रह्म अर्थात प्रभु-भक्ति के द्वारा [illegible] औरों को भी करते रहो और इस प्रकार उन्हें भी [illegible] रहो जिससे उनके दुःख दारिद्र्य के कारणभूत उनके दूर हो जायें । मन्त्र में बोल रहा उपासक अपने से भि यों के लिये "नः" अर्थात् "हम" इस सर्वनाम का प्र रहा है । जिसका भाव यह है कि उपासक को अपने व्यक्तियों को पराया समझ कर उनके कल्याण में उ करनी चाहिये प्रत्युत उन्हें अपना समझ कर उनके लिये भी भरपूर चेष्टा उसे करनी चाहिये ।

यहां आत्माओं के लिये "सजात" शब्द का प्रयो गया है । सजात का शब्दार्थ एक साथ उत्पन्न है । यहां आत्माओं के अनादि जन्म के अभिप्राय सजात कहा है । सब आत्मा अनादि होने के कार अनादि जन्म के रूप में एक साथ उत्पन्न होने वाले जन्म का वर्णन एक आलंकारिक वर्णन मात्र है । वेद आत्मा को "अज" अर्थात् कभी उत्पन्न न होने वाला इसलिये इस सजात शब्द का भाव वही लेना चाहिये लिया है । तभी वेद के दोनों प्रकार के वर्णनों की सं सकेगी ।

मन्त्र में अपने आत्मा के लिये "उग्र" स किया गया है । उग्र का अर्थ होता है, प्रबल शक्ति जिससे पापी लोग भय खावें । आत्मा के इस विशेषण ध्वनि है कि वैदिक उपासक को शारीरिक दृष्टि से भी शक्ति वाला होना चाहिये । उसे वेद-पाठ और प्रभु-भक्ति कर अपने शरीर की उपेक्षा करके उसे दुर्बल नहीं चाहिये । उसे मानसिक और आत्मिक के साथ-साथ शा उन्नति का भी पूरा ध्यान रखना चाहिये । उसकी सर्व उन्नति होनी चाहिये । उन्नति एकांगी नहीं होनी सबल शरीर वाला व्यक्ति ही वेद प्रचार और प्रभु भक्ति का सर्वमंगलकारी वह कार्य कर सकता है जिसकी ओर के उत्तरार्द्ध में उपासक का ध्यान खींचा गया है ।

जो पुरुष मन्त्र में वर्णित रीति से अपने आत्मा को धन करके उसे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक सब से सशक्त बनाते रहते हैं और अपने तथा समाज के में सदा प्रयत्नशील रहते हैं वे इस संसार-समुद्र को लहरों में हंसने वाला आनन्द सागर बना कर सबसु "वैश्वानर"—सब पुरुषों का हितकारी—कर जाते हैं ।

हे मेरे आत्मा ! तू अपने आप को उग्र बना । अपने ओर के सब नर-नारियों में वेद के ज्ञान का प्रचार कर प्रकार अपने और अपने साथियों को निर्मल और निष्पा कर इस संसार समुद्र को वैश्वानर—सब का हितक बना डालो ।

(३ पृष्ठ का शेष)

संसार के एक बड़े भाग में मनुष्य समाज खून की होलि रहा है । मंहगी और महासमर के महासंकट के कारण को खाने पीने की वस्तुएँ भी नहीं मिलती । रंग गुलाल खर्चना—महा अँधेर है । हम होली मनाने वालों—तथा सुधारकों से बलपूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि यह इ होली का उत्सव रंग गुलाल उड़ाकर न मनाएँ—उन्हें इन मन को मैल धोकर यथार्थ में भाई भाई की सहायता कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार २१ मार्च १९४३

आर्य समाज का सार्वजनिक जीवन

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। यदि कोई व्यक्ति स्वतन्त्र रूप समाज से निरपेक्ष अथवा उदासीन होकर जीवन यात्रा तीत करना चाहे तो वह ऐसा नहीं कर सकता। यदि किसी ट व परिवार के लोग ऐसा निरपेक्ष जीवन व्यतीत करने के ये विशेष यत्न करेंगे तो उसका परिणाम यह होगा कि वह ने राष्ट्र व समाज को बड़ी भारी हानि पहुँचाएंगे। यदि ई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को समाज सेवा के लिये सर्वथा ा देगा तो वह भी हमारी सम्मति में समाज के लिये अनुकरणीय उदाहरण नहीं है।

इस समय आर्यसमाज के सार्वजनिक जीवन में उपरि निर्दिष्ट प्राकार की प्रवृत्तियां दिखाई दे रही हैं। आर्य समाज के वैयक्तिक सम्बन्धी झगड़ों से खिन्न होकर कई व्यक्ति समाज को ोड़ कर व्यक्तिगत उन्नति, आत्म चिन्तन परमात्म चिन्तन में— थवा व्यक्तिगत सांसारिक ऐश्वर्य को बढ़ाने में प्रवृत्त हो रहे हैं ीक कहते हैं कि हमें समाज से क्या?

दूसरी तरफ कई ऐसे व्यक्ति हैं जो समाज और सोसायटी सुधार की धुन में इतने मस्त हो जाते हैं कि उन्हें नैत्यिक न्ध्या, वैयक्तिक पारिवारिक कर्तव्यों के पालन की भी फुर्सत हीं रहती। यह लोक सेवा और महत्वाकांक्षा और समाज वा के मद में मस्त हुए दिन रात समाज सेवा की धुन में लगे रहते हैं। उन्हें इतनी भी फुर्सत नहीं होती कि वह अपने न्तानों की शिक्षा तथा उनके रहन सहन पर आंख रख सकें। रिणाम यह होता है कि उनके पुत्र आर्य समाज से घृणा करने गते हैं। यदि घृणा न भी करें तो उन्हें समाज के प्रति विशेष ाकर्षण नहीं रहता। साथ ही साथ इन दिनों आर्य समाज के द्वानों तथा नेताओं के पारस्परिक रूचि भेद और स्वभाव भेद छोटे २ मतभेदों को उग्र रूप दे दिया है। इन उग्रतम भेदों ो देखकर साधारण जनता दुविधा में पड़ कर 'इधर जायें या ध्र जांय' की चिन्ता में लगी रहती है और कई बार यह भी ोशिश करती है कि किसी एक को नाराज़ क्यों करें। समाज या उसकी अन्तरंग सभाओंमें जानाही बन्द करदेते हैं। परंतु छेक लोग संन्ध्या हवन नित्य स्वाध्याय के समयों में भी इन ार्वजनिक उलझनों को सुलझाने में लगे रहते हैं। परिणामतः माज का सार्वजनिक जीवन असंगठित तथा छिन्न भिन्न हो हा है। इस दशा में कोई व्यक्ति आगे बढ़ने का यत्न नहीं रता। दूसरी सोसायटी या समुदाय भी किसी एक व्यक्ति को माज का निर्विघ्न नेता स्वीकार कर उसके साथ बात चीत रने में, उसे विचार सम्मेलनों में बुलाने में संकोच करता है। ह सोचते हैं किस को बुलाएँ और किस को न बुलाएँ। जब ूसरी सोसायटियों के नेता राष्ट्र के व्यापक सार्वजनिक ीवन में आगे आते हैं और वहां आर्य समाज के नेताओं के ाम दिखाई नहीं देते तो आर्य भाई दिल मसोस कर रहजाते और सोचते हैं कि यह क्या हुआ है—राष्ट्र के सार्वजनिक

मैं समझता हूं कि उपरिनिर्दिष्ट विचार धारा आर्य के कई पाठक महानुभावों के हृदयों में उठती है—इसका हल भी वह सोचते होंगे—मैं यहां आर्य भाइयों के विचारार्थ इस परिस्थिति को सुलझाने के लिये निम्न लिखित विचार उपस्थित करता हूं।

(१) प्रथम हमें यह समझना चाहिए कि हम आर्य समाज में जो भी कार्य, सार्वजनिक आन्दोलनों के सम्बन्ध में करते हैं वह कर्तव्य बुद्धि से करते हैं। वह समाज पर अनुग्रह की भावना से नहीं करते। इस लोक सेवा अथवा समाज सेवा से प्रतिफल की आशा नहीं करनी चाहिए। जिस समय कार्य कर्ताओं के हृदयों में यह भाव पैदा होते हैं कि देखो हमने समाज की इतनी सेवाकी, इतने उत्सव कराए, इतना धन संग्रह कराया, फिर भी समाज ने हमारी बात नहीं सुनी उस समय मनुष्य समाज को छोड़ कर निरपेक्ष होकर या तो आत्मा-परमात्मा के चिन्तन में लगने की कोशिश करता है—या व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक ऐश्वर्य व सम्पत्ति को बढ़ाने में लग जाता है। एक सीमा से दूसरी पराकाष्ठा तक पहुँचता है। यदि इस समय यह सज्जन सोचें कि हमारे सार्वजनिक जीवन में क्या कमी है, उसे दूर करें और समाज के सार्वजनिक जीवन में यथा शक्ति काम करें तो उन्हें भी निराशा नहीं होगी और समाज को भी लाभ होगा।

(२) दूसरी बात जिसकी तरफ़ हमें ध्यान देना चाहिए वह यह कि हमें अपने व्यक्तिगत तथा पारिवारिक जीवन की उन्नति को सामाजिक सेवा पर कुर्बान नहीं करना चाहिए। उदाहरणार्थ व्याख्यानों को सुनने के लिये संध्याहवन नहीं छोड़ने चाहिए। इसी प्रकार सभाओं तथा समाजों के अधिवेशनों में सम्मिलित होने के लिये नियत समय के भोजन, नियत समय के शयन तथा स्वाध्याय को नहीं छोड़ना चाहिए। (विशेष को छोड़कर) यदि हम इस प्रकार कार्य करेंगे तो आर्यसमाज का सार्वजनिक जीवन आकर्षक और प्रभावशाली बन सकेगा। आशा है आर्य भाई इस विषय में अपने विचार प्रकट करेंगे।—भीमसेन।

होली का उत्सव—

२१ मार्च को होली का त्यौहार आरहा है। पौराणिक भावनाओं के अनुसार इस दिन होलिका-दहन हुआ था। हिन्दु जाति में प्रचलित दन्तकथाओं के अनुसार इस दिन छोटे बड़े सब आपस के भेद भावों को छोड़ कर एक होकर आनन्द प्रमोद करते हैं। कई भाई इसे शूद्रों का त्यौहार कहते हैं। इस दिन साधारण लोग भले घरों में रंग भरी पिचकारियों से आपस में हंसी मज़ाक करते हैं। कई दशाओं में यह हंसी मज़ाक आपत्ति जनक सीमा तक पहुँच जाता है और आपस में वैमनस्य दूर करने के स्थान पर वैमनस्य को बढ़ा देता है। अनगिनित लोग हंसी मज़ाक के मद में ही गलियों में से गन्द लेकर एक दूसरे पर फेंकते हैं। भला आदमी इन दिनों बाज़ार में नहीं निकल सकता। इस होलिकोत्सव का प्रारम्भ किस प्रकार से हुआ—इस विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। परन्तु इस अवसर पर दो बातें स्पष्ट दिखाई देती हैं। ऋतु परिवर्तन और उसके उपलक्ष्य में साधारण जनता में आमोदप्रमोद। यह ऋतु वसन्त होता है। इस समय जड़ जगत भी पुराना चोला उतार कर नए रूप में प्रकट होता है। रंग बिरंगे फूल नए कोपल पत्ते वृक्षों पर दिखाई देते हैं। इस वसन्त के आमोद प्रमोद में—मनुष्य भी एक रूप होने की कोशिश करते हैं। ऐसे समय पर मर्यादा तथा नियंत्रण की कितनी अवश्यकता है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है। विशेष तथा इन दिनों जब कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नींद

सन् १९२६ तक अधिकांश चिकित्सकों को इस बात का ज़रा भी ज्ञान न था कि नींद किस प्रकार क्रिया करती है..... डाक्टर ऐरिच गुटमन के सम्बन्ध में एक कथा है। वह पागलपन से उदास रहने वाले रोगियों के एक समूह का अध्ययन कर रहा था। उसने देखा कि वे नींद में निरन्तर पलटते और करवटें बदलते रहते हैं.....उसने मान लिया कि पुण्यात्मा और निर्दोष मन वाले मनुष्य लकड़ी के लट्ठे की भांति निश्चल रूप से सोते हैं—और यही विचार डाक्टरों का था। यह विश्वास कितना ग़लत था, यह बात नींद सम्बन्धी इन प्रयोगों से प्रकट हो जाती है जो अमेरिका की ओहियो स्टेट युनिवर्सिटी के डाक्टर हेरी एम० जानसन उन्हीं दिनों गद्दे बनाने वाले सिमन्स के लिए कर रहे थे।.....ठीक सोने वाला जैसा कि डा० जानसन का संदेह था कभी भी बहुत देर तक एक ही स्थिति में नहीं सोता था। आठ घण्टे की रात में सामान्य सोने वाला ३५ बार अपनी स्थिति बदलता है। वह एक दशा में क्वचित ही पांच दस मिनिट से अधिक रहता था। नींद में हिलने डुलने की लालसा का नाम जानसन ने 'गतिशीलता' रक्खा। उसने देखा कि यह सदा गहरी नींद में ही होती है। कारण यह है कि मनुष्य देह के पट्ठों का प्रबन्ध इतना जटिल है कि सोने वाला क्वचित् ही सब पट्ठों को एक दम विश्राम दे सकता है। जब एक स्थिति में पट्ठे थक जाते हैं तो सोने वाला हिलता है और इन पट्ठों को ढीले होकर विश्राम करने की बारी देता है। सब पट्ठे पूर्ण रूप से ढीले हों और साथ ही मूर्च्छा की अवस्था की भांति सारा शरीर लचलचा हो, यह बात इतनी कम होती है कि डा० जानसन को इसका एक भी उदाहरण नहीं मिला।

सब सोने वाले निर्दोष निद्रा की अवस्था में एक जितनी बार नहीं हिलते, कई तो रात में २० बार हिलते हैं और कई ६० बार भी। यदि सोने वाला रात में उसके लिए नियत बारियों की संख्या से अधिक बार हिले—पीड़ा से, उसकाहट से, भूख या अधिक खाने से, ज्वर या कब्ज़ से—तो उसे अपर्याप्त विश्राम मिलता है। परन्तु यदि वह बहुत कम बार हिले—थकावट या जड़ता से या बिछौना और रजाई आदि के ठीक न होने से—तो वह केवल आंशिक विश्राम पाता है। सवेरे उठने पर उसका शरीर अकड़ा हुआ और क्लेशदायक होता है। बच्चों की नींद प्रचण्ड और बहुधा क्षुब्ध होती है। बूढ़े बच्चों की अपेक्षा अधिक शान्ति से सोते हैं, यद्यपि उनकी नींद बीच में बार बार भंग होती रहती है। हाथ से मेहनत मज़दूरी करने वालों की नींद मस्तिष्क का काम करने वालों की अपेक्षा कम बार भंग होती है।...तंग खाटें सोनेवाले के हिलने डुलने में बाधा डालती हैं। जो लोग एक ही खाट पर इकट्ठे सोते हैं वे एक दूसरे के हिलने जुलने में रुकावट डालते हैं। अच्छी नींद के लिए बिछौना न तो बहुत नरम और न ही बहुत कड़ा होना चाहिए।

...बारह लड़के और बारह लड़कियां दो नर्सों की देख रेख में सुलाये जाते हैं। उन को १७०००० घंटे तक सोते देखने के बाद डा० गिडिंग्स इस परिणाम पर पहुंचे कि नींद पर विविध स्वभावों और दवाइयों के प्रभाव के सम्बन्ध में लोगों के अधिकांश मत बिलकुल मूढ़ विश्वास हैं।...ये चीज़ें रात को बच्चों को अधिक नींद लाती हैं—गरम मौसम, सोने से पहले भारी चीज़ों का खाना, खिलौने तथा उत्तेजक कहानियां शारीरिक पीड़ा। आगे लिखी बातों का नींद में हि बहुत थोड़ा असर होता है, बल्कि होता ही नहीं—क कड़ा व्यायाम गरम या ठण्डे जलसे स्नान, रात को यन, प्रायः सभी शीतल या ऊष्ण पेय। एक चीज़ जरूर करती और उनके विश्राम को बढ़ाती प्रतीत होती गरम दूध।.....ऐसी गहरी नींद सोने वाला कोई है जो एक करवट थक जाने पर दूसरी करवट न द इस के अतिरिक्त सोने वाला प्रत्येक बार हिलते समय का ध्यान रखता है कि वह कहीं खाट से नीचे न यदि उसे गरमी लगती है तो वह ऊपर की चादर फेंक देता है, यदि उसे ठण्ड लगती है तो वह लिहाफ लपेट लेता है, परन्तु सांस के आने जाने के लिए मुह और बिछौने के बीच थोड़ा सा मार्ग छोड़ने से नहीं अन्यथा उसका दम घुट जाय। ये सब सोने समझ के फिर यदि नींद में न शारीरिक चेष्टा बन्द होती है, न तो फिर निद्रा और जागरण में अन्तर कहां रहा? आप को नींद आ जाती है तो कुछ विशेष बातें होती अपेक्षाकृत अचेत अवस्था में चले जाते हैं। आप के के ढेले ऊपर और नीचे लुढ़कते हैं, पुतलियां जाती हैं। आपके Refex muscular re घट जाते हैं या बिलकुल बन्द हो जाते हैं। गले छाती में अधिक सांस लेते हैं, उदर द्वारा पेट में कम दबाव घट जाता है, हृदय अधिक धीरे से चलने लग शरीर के कुछ स्राव मूत्र और नाक की गिल्टियों से इकट्ठे जाते हैं। रक्त में क्षार गुण कम हो जाता है। ये हैं वे घटनाएं जो तन्तु की निर्माण क्रिया के साथ होती हैं एक प्रकार से मनुष्य देह रूपी तोप में बारूद भरना है वह दुबारा चल सके। कोई भी अन्वेषक निश्चित रूप नहीं बता सके कि कौन सी चीज़ नींद को लाती है १६ घण्टे लगातार जागने के बाद मनुष्य को सोने का होता है? थकान नींद लाती है, क्योंकि बहुत अधिक थ मनुष्य नींद में बहुत अधिक हिलता जुलता है।.....

.....मनुष्य का काम नींद के बिना नहीं चल स जागने का लम्बे से लम्बा प्रामाणिक समय, जो प्रयोग में रख कर मालूम किया गया है, २३१ घण्टे हैं। यह दिन भी नहीं।...यदि कुत्ते को न सोने दिया जाय ग्लानि से भर जाता है।...जौन वेज़ली, ऐडिसन और बो जैसे आश्चर्यजनक जागने वाले भी मौका पाकर दिन में ऊंघ लिया करते थे।...ऐसे लोग पशुओं की तरह हल सोते हैं। परन्तु उनकी ऊंघ का सारा जोड़ स्वाभावि घण्टे के विश्राम से केवल एक दो घण्टे ही कम रहता है नींद न आने के अनेक कारण हो सकते हैं, परन्तु य आप कोई रोग कदापि नहीं।.....देर तक जागते र जब तक यह जागरण इतना लम्बा न हो कि इसका प अपचय और मृत्यु हो जाय, शरीर पर स्थायी रूप हानि कारक प्रभाव नहीं होता।.....तीन-चार दिन तक न लेने के बाद भी एक रात की नींद आपको उतना ही त कर देगी जितना कि आप हो सकते हैं।.....आप की गहरी और सब से अधिक तरोताज़ा करने वाली नींद लेटने के बाद घण्टे दो घण्टे के भीतर आ जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदों में आयुर्वेद

[वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री लाहौर]

[लेखक उच्चकोटी के वैदिक विद्वान् हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन, लाहौर के अन्तर्गत निबन्ध परिषद् में यह निबन्ध सर्वोत्कृष्ट स्वीकार किया गया था और इस पर लेखक को स्वर्ण-पदक दिया गया था। —सं]

पूर्वपीठिका

स्वदेश तथा विदेश के सब विद्वानों का निश्चित मत है, कि वेद संसार के सब ग्रन्थों से प्राचीन हैं। ईश्वर, अग्नि, वायु, इन्द्र वरुणादि देवों के वर्णन के साथ २ वेद में अन्य भी अनेक विद्याओं का वर्णन मिलता है। उन सब विद्याओं का वर्णन करते हुए, इस लेख में केवल इस विषय पर प्रकाश डाला जाता है कि वेदों में आयुर्वेद वर्णन किस प्रकार से है।

वेद का आयुर्वेद से संबन्ध

चरक, सुश्रुत, काश्यप संहितादि प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि आयुर्वेद वेद का उपाङ्ग है। "चतुर्ऋक् साम यजुरथर्ववेदानामथर्ववेदे भक्तिरादेश्या" (चरक सू० अ० ३०), " इहखलवायुर्वेदमष्टाङ्गमुपाङ्गमथर्ववेदस्य " (सुश्रुत सू० अ० १) "कथं चोत्पन्न इति आह अथर्ववेदोपसु प्रागुत्पन्नः स्वयम्भूर्ब्रह्मा प्रजा सिसृक्षुः प्रजानां परिपालनायुर्वेदमेवाग्रेऽसृजत् सर्ववित्, ततो विश्वानि भूतानि" (काश्यप संहिता वि० स्था० पृ० ४२)।

इन उपर्युक्त प्रमाणों से सर्वथा सिद्ध है कि आयुर्वेद का स्रोत भी और विद्याओं की भान्ति वेद ही है। ऋक् यजु साम अथर्व इन चार संहिताओं के अध्ययन से हम इस निश्चय पर पहुंचे हैं, कि आयुर्वेद का विस्तृत वर्णन अथर्व वेद में है। उससे न्यून ऋग्वेद और उस से न्यून यजुर्वेद में है। सामवेद ७५ मन्त्रों को छोड़ कर शेष मंत्र ऋग्वेद के हैं अतः उन में वैद्यविषय का वर्णन स्वल्पतम है। चरण व्यूह में "ऋग्वेदस्यायुपवेदः" पाठ से आयुर्वेद को उपवेद माना है, पर आयुर्वेद का पारंगत प्राचीन सब ऋषियों का सर्वतंत्र सिद्धान्त यही है कि आयुर्वेद अथर्ववेद का ही उपांग है।

आयुर्वेदोपदेश का उद्देश

यजुर्वेद अ० ४० मं० ३ में लिखा है कि "कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" हे पुरुष ! इस संसार में शुभ कर्म्म करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा कर। पुरुष की स्वाभाविक इच्छा दीर्घायु की है। "पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्" यजुः ३६। २४ यह मंत्र पुरुष की इस के प्रति मानसिक वृत्ति को प्रकट करता है। मनुष्य हर समय ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि हे प्रभो ! सौ वर्ष देखूं, सौ वर्ष सुनूं, सौ वर्ष से भी अधिक होऊं। शतायु जीवन के साथ अदीन रहने की भी स्वाभाविक इच्छा है। अथर्व वेद के नीचे लिखे दो मंत्र सिद्ध करते हैं कि आयुष्य होने के साथ २ शरीर का बल और नीरोगता की इच्छा करता है "वाङ् म आसन्नसोः प्राणः चक्षुरक्ष्णोः कर्णयोः। अपलिता केशा अशोणादन्ताबहु बाहोर्बलम् ।१। ओजो जङ्घोरोजदः पादयोः प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मा-न्यङ्गः ॥२॥ (अथर्व कांड १९। सूक्त ६०)।

हे प्रभो ! मेरे मुख में वाक् शक्ति, नासिका में प्राण शक्ति, नेत्र में दर्शन शक्ति, कानों में श्रवण शक्ति, केश श्वेत न हों, दांत न टूटें और भुजाओं में बहुत बल हो ॥ १ ॥ उरुओं में ओज, जङ्घाओं में वेग पाओं में खड़े रहने की शक्ति हो मेरे सब अंग नीरोग हों और आत्मा सदा बलवान् हो। यजुर्वेद के 'अदीनाः' और अथर्व वेद के अरिष्टानि पदों से यहां सर्वथा स्पष्ट है कि दीर्घायु के साथ मनुष्य अङ्ग प्रत्यङ्गों की नीरोगता भी चाहता है। रोग दीर्घायु और स्वास्थ्य के बाधक हैं, उन रोगों का निवारण ही आयुर्वेद शास्त्र का ध्येय है। वेद में भी यही लिखा है कि भिषक् रोग निवारणार्थ भेषज (औषध) का प्रयोग करके रोगी को स्वास्थ्य प्रदान करे।

'अयं जीवतु मा मृतेयं समीरयामसि। कृणोम्यस्मै भेषजम्।' अथर्व० ८। २। ५। यह रोगी जीता रहे मरे नहीं मैं इसे भेषज द्वारा फिर से सचेष्ट करता हूँ।

भिषक् का वर्णन

चिकित्सा के चार अंग हैं। सब से प्रथम और प्रधानाङ्ग वैद्य है। इस चिकित्सा के आरम्भ में चिकित्सक का कर्त्तव्य जो वेद में लिखा है उसे बताना बहुत आवश्यक है। वेदों में वैद्य के स्थान पर केवल भिषक् पद का ही प्रयोग आता है। यजुर्वेद ३०। १० में "पवित्राय भिषक्" इस मंत्र से स्पष्ट है कि वैद्यक का कार्य अत्यन्त पवित्र और पूजार्ह है ! सब से बड़ा भिषक् तो आदि वैद्य प्रभु परमेश्वर ही है 'प्रथमो दैव्यो भिषक्' (यजु० १६। ५) "भिषक्तमं त्वाभिषजां शृणोमि" (ऋक् २। ३३। ४) हे सर्वान्तर्यामी वैद्यों में श्रेष्ठतम वैद्य तुझे ही सुनता हूं।

मानुष भिषक्—प्रभु के अनन्तर मानुष वैद्य का लक्ष्य वेद में यह आता है कि 'यथा नः सर्वमिदञ्जगदयक्ष्मं सुमना असत्' (यजुः १६। ४)

यह सब जगत् व्याधि रहित और प्रसन्न मन वाला हो। वैद्य के गुणों का वर्णन नीचे लिखे मन्त्रों से स्पष्ट है—

यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः।
स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद् भिषजा शुचिः॥
अथर्व २। ६। ५

जो करता रहता है वही रोगी की निष्कृति कल्याण कर सकता है। वही श्रेष्ठ वैद्य है। वही शुद्ध वैद्य तुझ रोगी के लिये (भिषजा भेषजानि कृणवत्) भिषक् से (सहयोग लेकर) औषध (चिकित्सा) करें। इस मंत्र में श्रेष्ठ वैद्य वही माना है जो नित्य चिकित्सा का अभ्यास करता रहता है। 'शुचिः' वैद्य विशेषण स्पष्ट करता है कि भिषक् को मन, व्यवहार, शरीर, स्थान, औषध वस्त्रादि में पवित्रता रखनी चाहिये।

यत्रौषधी समग्मत राजानः समितावि व।

'विप्रः स उच्यते भिषक् रक्षोहामीवचातनः। ऋ० १०।९७।६

'सविप्रः भिषक् उच्यते' वही भिषक् बुद्धिमान् है। निघण्टु ३। १५ (विप्रोमेधावी नामसु पठितम्) रक्षोहामीवचातनः।

राक्षसों का और रोग का नाशक है (यत्रौषधी समग्मत जिसके चारों ओर औषध इस प्रकार पड़े हैं जैसे (राजानः समितौ इव) राजा अपनी राज सभा में बैठते हैं।

रोग के हेतु

शरीर में जितने भी कष्ट होते हैं उन के लिये वेदों में रोग (अ० ९। ८) और 'यक्ष्मा' (ऋ० १०। १६३) पदों का प्रयोग किया गया है। वैदिक आचार्य सब रोगों का कारण शरीर में उत्पन्न होने वाले विष को मानते हैं जैसे—"यक्ष्माणां सर्वेषां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं हँसता हूँ

[श्री सत्यभूषण योगी]

अस्थिर सब कुछ अस्थिर प्रिय
क्षण भंगुर है मैंने माना
सोच इसे पर छोड़ समन क्या
देते हैं मधु मुसकाना

जीवन नैया चपल तरंगों पर
पर नचती बहती गाती
ऊपर चढ़ती नीचे गिरती
चट्टानों से टकराती

छिद्रित होती पानी भरता
लख नाविक घबराता है
इस घबराहट में भी योगी
वह नीरव मुसकाता है

तारों का हँसना जीवन है
हँसते ही रहते प्रतिपल
किन्तु हमें कल जाना है
यह ध्यान उन्हें करता बेकल

इसी लिए वे जाग रात भर
निज निज मूर्ति बना हँसती
फूल पत्तियों पर रख जाते
ये ही शबनम के मोती

निर्झर नीचे गिरता शैल
शिलाओं से टकराता है
धवल फेन मिस हँस पड़ता है
सारा शून्य गुँजाता है

तप्त ज्वाल से शशि का दिल हा
प्रतिपल जलता रहता है
फिर भी देखो वह विस्मृत-सा
सस्मित हँसता रहता है

दो पल का जीवन तितली का
बस केवल दो पल का है
पर देखो यह साज सुनहला
अलका की वह मलका है

हँसने वालो, और हँसो तुम
सब को सदा हँसाओ प्रिय,
दो दिन का जीवन है इसको
रोकर नहीं गँवाओ तुम

मुझको इस जग में रहना है
दुःखों को भी है रहना
सहना ही है जब उनको तो
रोते रोते क्या सहना

फिर भी विपदा के आने
रोना प्रिय आवश्यक
सम्पत्ति के आने पर
हँसना भी स्वाभाविक

हँसना प्रिय मेरी
हँसना ही मेरा
हँसना एक सखा
जिस पर हूँ मैं

पर इससे मत समझ कि मे
आँखें सूखी रहती
गरम गरम धाराएँ भी प्रि
इनसे नीरव बहती

तो भी प्रिय मैं हँस
हँसना ही बस
कटुतम रोदन में भी
हास छिपा मैं

सखे, भग्न हिय तंत्री से
तान सुरीली निकले
और चिता भी मेरी खिल खि
अट्टहास कर नाचे

अनन्त के सागर में

[श्रीजगदीश बी० ए०]

विजय की आंधी

भागो ! भागो !! आंधी ! आंधी !!
ओह ! कुछ सूझता नहीं
ज़मीन आसमां सब धूलि से एक होगए
दरख्त धमाके से गिर रहे थे
खेत बरबाद हो रहे थे
ऊंचे ऊंचे महल ढेर हो रहे थे।
उनमें रहने वाले प्राणी
मलबे में ही दम तोड़ रहे थे
पशु पक्षी सब आंधी के थपेड़ों से अंधे
हुए गिर गिर कर प्राण छोड़ रहे थे
किसी की जान भी
ख़तरे से बाहर न थी
एक प्रलय थी
चारों ओर चीत्कार ! यही सुन पड़ता
अशोक ! अशोक !!
विजयी अशोक की आंधी
भागो ! भागो !!
अशोक बढ़ रहा था
तेज़ी से बढ़ रहा था
उसने एक के बाद एक
सभी को उखड़ते देखा
उसके चारों ओर घायल कराह रहे थे
आज वे धूल में लोट रहे थे
यह सब देख
अशोक कुम्हला गया
उसके पाओं तले से मिट्टी निलकने लगी
लड़खड़ाने लगा
उसे ऐसा आभास होने लगा कि
विजय की आंधी उसे धकेल रही है
उसके पाँओं को भी उखेड़ रही है
जिस युद्ध के गर्हाव में
उसने संसार को फँसा दिया था
उसने देखा कि
वह स्वयं उसमें फँस गया है
भयभीत हुआ विजेता अशोक
संग्राम से भाग रहा था
सदा के लिये भाग रहा था
कह रहा था
"प्रभो ! इस भयावह आंधी से मेरी ही
आंखों में मट्टी झोंक रहे थे ?

× × ×

मेंहदी वाले पांव

मेघ वर्ण कपोतराज !
तू अपने पंखों से आकाश में विचरण
कर सकता है
अपनी लाल लाल नशीली आंखों में
घटा सी गम्भीरता रखते हुए भी
तू इतना भीरु है ?
ज़रा सा भय आने पर आंखें मूँद

"क्या करूं, पन्ना भी कैसे लूँ
मेरे पाँओं में मेंहदी लगी है"

× ×

अंधों की बस्ती

कुछ लोग जन्म से ही अंधे हैं
कुछ को बिजलियों की रोशनी
अंधा कर दिया है
"दुनिया अंधों की बस्ती है"

× ×

आंखों वाले अंधे

आंखों वालो !
क्यों भटकते हो ?
आंखें बंद करो
कि रास्ता नज़र आए

× ×

कयामत

धनियों ने धन निपीड़न किया
अनगिनत अनजानों का खून कि
उन्हें मुर्दा बना डाला
उनकी कब्रों पर
ऊंचे ऊंचे महल खिचवाए
दबे मुर्दों को कयामत खड़ा करे
कयामत ! क्रान्ति का दूसरा न
इनकिलाब हो रोज़े महशर है
उसी दिन महल ढेर हो जाएंगे
कब्रों के मुँह खुल जाएंगे।
और मुर्दे उठकर हिसाब मांगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

गुरुकुल समाचार

गुरुकुलोत्सव की तैयारियां—गुरुकुल विश्व विद्यालय ...ड़ी का ४१वां वार्षिकोत्सव आगामी ईस्टर की छुट्टियों में २३ अप्रैल से २६ अप्रैल तक बड़े धूमधाम से साथ मनाया ...गा। उत्सव में अब केवल एक मास शेष रह गया है अतः ...रियां जोर-शोर से हो रही हैं। तम्बुओं छोलदारियों और ...याने का प्रबन्ध किया जा रहा है। रस्सी तथा बल्लियां भी ...की जारही हैं। अन्य आवश्यक सामान मँगाने के लिए ...-पढ़ी की जा रही है। गुरुकुल-प्रेमी आर्य जनता से निवे... है कि वे इस शुभ अवसर पर उपस्थित होने के लिए अभी ...यारी शुरु करदें। गुरुकुल में अपना बालक प्रविष्ट करने ...च्छुक सज्जनों से भी प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही गुरुकुल-...लय में प्रवेश-फार्म मँगाकर, पूर्ति करके भेज दें।

श्रद्धा-सम्मेलन—इस वर्ष गुरुकुल के अधिकारियों ने ...लोत्सव के चार दिनों के प्रोग्राम के अनन्तर पांचवें दिन, ...ला की प्राचीन पुण्य-भूमि में 'श्रद्धा-सम्मेलन' करने का ...जन किया है। इस दिवस, समस्त कुलवासी तथा गुरु-...प्रेमी जनता गंगा पार की भूमि में एकत्र होगी। वहां ...गिक शक्ति-प्रदर्शन के साथ-साथ कविता, गल्प, संगीत ...विविध सम्मेलनों का आयोजन किया जायगा। मनोरंजन ...उपयोगिता प्रत्येक दृष्टि से सम्मेलन को सफल बनाने का ...किया जा रहा है। पुण्य कीर्ति श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ...ज सम्बन्धिनी रचनाओं को प्रश्रय दिया जायगा। उत्कृष्ट ...कारों को पुरस्कृत किया जायगा।

श्रद्धानन्द-मार्ग का सुधार—गुरुकुल के प्रमुख-मार्ग 'श्रद्धा-...मार्ग को परिष्कृत और पक्का करने का कार्य प्रारम्भ हो ...है और लगभग ३०० फीट लम्बी सड़क बन चुकी है। ...च्ची हुई सड़क पर भी कार्य तेज़ी से हो रहा है और रोड़ा ...तथा चूना डाला जा रहा है। सड़क को अधिक पुख्ता ...मजबूत बनाने के लिए कुटाई का कार्य धुरमुटों से लिया ...रहा है। आशा है दो-तीन सप्ताहों में श्रद्धानन्द-मार्ग ...रूप से बन कर तैयार हो जायगा।

वेद-मन्दिर का कार्य—वेद-मन्दिर का कार्य सुन्दरता ...ता तथा सफ़ाई के साथ हो रहा है। बाहरी प्लस्तर ...ार्य समाप्त हो चुका है और भवन के गुम्बद तथा कंगूरे ...अत्यन्त आकर्षक तथा भव्य रूप में प्रकट हुए हैं जिनसे ...मारत की शोभा द्विगुणित हो गई है। हाल के अन्दर का ...बनाया जा रहा है। तथा वेदी लगभग बनकर तैयार हो ...है। आशा है यह सब कार्य वार्षिकोत्सव के पूर्व समाप्त ...ायगा। वेद-मन्दिर के दोनों ओर पक्ष-भवन (wings) ...का निश्चय श्री बिरला जी का है। यह कार्य भी अब ...प्रारम्भ कर दिया जायगा।

वेद-महाविद्यालय के तीन ओर ४ फीट ऊँची दीवार ...विशाल हाता बन कर तैयार हो गया है जिसके बीच में ...ाभी लगाई जा रही है।

—गुरुकुल मटिण्डू का २९ वां वार्षिक महोत्सव १९, २०, ...र्च १९४३ ई० तदनुसार शुक्र, शनि, रविवार को कुल ...में बड़े समारोह के साथ मनाया जायगा। इसमें बड़े २ ...स्ती महात्माओं के उपदेश होंगे। गोरक्षा सम्मेलन भी

—महाविद्यालय गुरुकुलधाम जेहलम का वार्षिक महोत्सव ३० चैत्र, १ म, २य, वैशाख सम्वत २ हज़ार विक्रमी तदनुसार १२, १३, १४ एप्रिल सन् १९४३, सोम, मङ्गल, बुध को बड़े समारोह से मनाया जायगा। उत्सव में वीतराग संन्यासी, विद्वान् वक्ता तथा सरस गायक पधारेंगे। अब तक श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी महाराज, श्री कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, म० सेवाराम जी आदि की स्वीकृति मिल गई है। गुरुकुल में अपने बच्चों को प्रविष्ट कराने के इच्छुक १५ चैत्र से उत्सव तक ला सकते हैं। विशारद, शास्त्री, भूषण, प्रभाकर और केवल इंगलिश में मैट्रिक के लिए प्रवेशार्थी विद्यार्थी अपना प्रार्थना पत्र इन्हीं दिनों में गुरुकुल-कार्यालय में भेज दें।

—मुख्याधिष्ठाता!

आर्य समाज संसार

—आर्यसमाज खिज़राबाद। ४ मार्च रात्रि को ९ बजे खिज़राबाद में बोध उत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई। पहले श्री शान्ति प्रकाश व श्री मनोहर लाल ने भजन गाये। पश्चात श्री साधुराम, श्री दीननाथ, श्री रणजीत राय जी शातिर व डा० सदाराम जी ने ऋषि जीवन व वैदिक सभ्यता पर व्याख्यान दिये। श्री नौताराम जी आर्य वाल्मीकी ने दो सुन्दर भजन गाये। श्री रूपराम जी ने महात्मा गांधी के दीर्घायु के लिये ईश्वर से प्रार्थना की।

—आर्यसमाज मियाणी की साधारण सभा ने रविवार तिथि ७-३-४३ को निम्नलिखित चुनाव १९४३ के लिए किया है। श्री मास्टर भगतराम जी सभरवाल प्रधान तथा मैनेजर आर्य पुत्री पाठशाला, उपप्रधान श्री सोम कीर्ति जी विद्यालंकार। श्री मलिक नरेन्द्रनाथ जी उपप्रधान। श्री म० रामरलाया मल जी मन्त्री। श्री डाक्टर सिद्धदास जी—कोषाध्यक्ष। श्री म० हरवंश लाल जी छावड़ा पुस्तकाध्यक्ष। श्री डाक्टर रामलाल जी तथा श्री म० रामसरण जी प्रतिष्ठित सभासद्। उत्सव की तिथिएँ ७-८-९ मई १९४३ तदनुसार २५-२६-२७ वैशाख सम्वत् २००० निश्चित हुई है। —मन्त्री

—नवां शहर निवासी डाक्टर भक्तराम के सुपुत्र ठाकर प्रीतमनाथ, नई दिल्ली का शुभ विवाह वैदिक रीति से स्वर्गीय श्री नन्दलाल जी खोसला की सुपुत्री रक्षा देवी के साथ लुधियाना में हुआ। छायादान आदि अवैदिक प्रथाओं का पालन नहीं किया गया। वर पक्ष की ओर से निम्न लिखित दान दिया गया—५) आर्य समाज स्कूल। ५) नवां शहर। ५) पुत्रीपाठशाला दालमण्डी लुध्याना। १०) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ। ५) आर्य समाज, करौल बाग, देहली। ५) अनाथालय, पटौदी हाऊस, देहली। —मन्त्री आर्यसमाज, नवां शहर।

समाजों के नाम घोषणापत्र

दशांश का धन समाजों को भेजने के विषय में सभा का नियम सं० ११ निम्न प्रकार है:—

जो समाज अपने मासिक चन्दा के दशांश को प्राप्तव्य तिथि से ३ मास के भीतर न दे सके और अन्तरंग सभा से नोटिस पाने पर अपनी असमर्थता का सन्तोषजनक कारण न दिखला सके तो इसके पश्चात सभा में उस का प्रतिनिधि लेना बन्द हो जावेगा।

आप के आर्य समाज का १९९८ का दशांश आषाढ़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दशांश का धन भेजने के लिये ११-१०-९९ को नोटिस दिया गया परन्तु आप का दशांश अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। इस अन्तरंग सभा ने एक मास का अवसर और दिया है और निश्चय किया कि १९९८ का दशाँश २०-२-४३ ई० तक इस सभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जाना चाहिये। इसकी सूचना आप की सेवा में भ्रमणपत्रिका ता० ७-१०-९९ द्वारा दी गई। परन्तु इस अवधि के भीतर भी आपका दशाँश प्राप्त नहीं हुआ। सभा ने अब ३१-१२-९९ तक यह अवधि बढ़ादी है अतः पुनः निवेदन है कि दशांश का धन ३०-१२-९९ तदनुसार १५-४-४३ तक अवश्य ही इस कार्यालय में पहुँचा दीजिए। सं० १९९९ भी समाप्ति पर है। कृपया इस वर्ष का दशांश भी अवश्य भेजने का ध्यान रखियेगा। —भीमसेन, सभा मन्त्री।

आर्य समाज बच्छोवाली लाहौर के समाचार

(१) इस वर्ष आर्य समाज बच्छोवाली ने अपना कार्यक्रम साप्ताहिक सत्संग इस प्रकार से रखा है। प्रातःकाल यज्ञ के बाद ऋषि दयानन्द कृत वेद भाष्य का भावार्थ पारायण किया जाता है। वक्ता महोदय विषय क्रम से ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य के भावार्थ की व्याख्या करते हैं। इसके बाद एक व्याख्यान होता है।

(२) हर महीने के अन्तिम सप्ताह के सत्संग में आर्य सभासदों को विशेष रूप से परस्पर विचार विनिमय तथा आत्मोन्नति विषयक चर्चा करने का अवसर दिया जाता है।

(३) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की लोहारू समाज मंदिर बनाने की अपील पर आर्य समाज बच्छोवाली की अन्तरंग सभा ने १००) अपने शेष से देने का निश्चय किया है। इसके अतिरिक्त आर्य समाज के प्रधान पं० ठाकुरदत्त जी ने १००) और ला० रोशनलाल जी समाज उप प्रधान ने ५०)। अन्तरङ्ग सभा के शेष सदस्यों ने भी १०) से लेकर ५)-२) तक इस काम के लिये दिये हैं। विचार यह है कि १०००) तक आर्य समाज बच्छोवाली की ओर से देकर लोहारू आर्य समाज मन्दिर में आर्य समाज मन्दिर बच्छोवाली नाम से बनवाया जायगा।

विज्ञान परिषद् का नवीन आयोजन

प्रयाग की विज्ञान परिषद् एक सार्वजनिक संस्था है जिसकी स्थापना सन् १९१३ में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य है—हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक साहित्य का प्रचार तथा विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहन देना। नवीन योजना के अनुसार परिषद् ने वैज्ञानिक विश्वकोष निर्माण करना आरम्भ किया है। इसमें सरलतम विज्ञान का अत्यन्त विशद वर्णन होगा जिसे पाठशाला के विद्यार्थी भी समझ सकें और विज्ञान एकदम न जानने वाले भी; और जो बच्चों तथा बड़ों को समान रूप से रोचक लगे। अभी तो यही चेष्टा की जायगी कि लगभग बारह भागों में विज्ञान के सभी अंगों पर कुछ न कुछ प्रकाश पड़ जाय। प्रथम भाग में जंगली जंतुओं के अत्यन्त मनोरंजक जीवन वृत्तान्त रहेंगे। आगामी भागों में पेड़ पौदों की दुनियां, ताप, प्रकाश, ध्वनि, विद्युत, रेडियो आदि सम्बन्धी बातें; रसायन, गणित, ज्योतिष और यन्त्र शास्त्र; और फिर मनोरंजक तथा उपयोगी वस्तुओं को अपने हाथ से बनाने की रीतियों का सचित्र और व्योरेवार वर्णन भी रहेगा।

विज्ञान परिषद् वैज्ञानिक विषयों पर हर साल ८ योगी पुस्तकें प्रकाशित कर देती है। हिन्दी में इस साहित्य जितना इस संस्था ने पैदा किया है उतन नहीं किया। पाठकों को परिषद् को अपनाना च उसके मासिक पत्र 'विज्ञान के ग्राहक बन कर तथा सदस्य बन कर उसकी सहायता करनी चाहिए जि भाषा हिन्दी में विज्ञान का प्रचार हो। —रा

—आचार्य श्री रामदेव जी के सुपुत्र श्री सत्य का शुभ विवाह १२ मार्च को हाफ़ज़ाबाद में प्रमुख नेताओं की उपस्थिति में वैदिक रीत से हुआ है।

वर की आवश्यकता

हिन्दी रत्न उत्तीर्ण, सिलाई और घर के काम सत्रह साल की आर्य कन्या के लिए स्वस्थ व सुन्द दृढ़ आर्य समाजी, कर्मकाण्डी, स्वाध्याय शील चौबीस वर्ष के नवयुवक की आवश्यकता है, मासिक से कम ७५) हो। युवक गुरुकुल का स्नातक हो तो उ

—द्वारा सम्पादक

(पृष्ठ ५ का शेष)

का विष बाहर निकालता हूं। खान पान द्वारा शुद्ध रक्तादि बनने के अनन्तर शरीर में जो मलांश रह जा वात पित्त, कफ इन तीन दोषों और रस, रक्त, मांस मे मज्जा और शुक्र इन में विकृति उत्पन्न करके सब रो करता है।

त्रिदोष वर्णन

अथर्व वेद के ज्वराधिकार में "यो अभ्रजा वा शुष्मः" (१। १२। ३) जो कफ से उत्पन्न है वह वात से उत्पन्न होता है वह वातज और जो पित्त होता है वह शुष्म लिख कर स्पष्ट कर दिया है कि भिषक् इन दोषों के प्रकोप से रोगोत्पत्ति मानते थे।

नीचे कुछ और मंत्र प्रस्तुत किये जाते हैं जो इस की पुष्टि करते हैं—"बलासं सर्वं नाशयाङ्गेष्ठा यश्च (अ० ६। १४। १) सब बलास (कफ) को नष्ट कर और पर्वों में स्थित है। बलास से यहां कफ ग्राह्य सू अ० २० में श्लेष्मा के विकारों में तृप्ति, तंद्रा, आदियों में बलास को भी परिगणित किया गया १९। ८५ में "यकृत् क्लोमानं वरुणोमिषज्यन् मतस्ने मिनाति पित्तम्" वरुण चिकित्सा करता हुआ वा प्रधान द्रव्यों से यकृत, क्लोम, मतस्न और पित्त को ठी है। यहां वायु से वात ग्राह्य है और वात वर्धक शामक होने का निर्देश है। अथर्व ६। १०९। ३ में त्रि वर्णन है और उसे 'वाती कृतस्य भेषजी अथोक्षिप्तस्य वात रोगों और क्षिप्त रोग की औषध लिखा है। अथर्व में विषाणका (कर्कट शृंगी) को "वाती कृतस्य नाशनी से उत्पन्न रोगों की शामिका माना है। इस लेख में स से कुछ प्रमाणों से सिद्ध किया गया है कि त्रिदोष वैदिक आचार्यों को अभिप्रेत था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड १७ सोलाना ग्रेट लाई

...ादक —भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

...क आर्य को शारीरिक, ...सिक तथा आत्मिक ...ति के लिए इसका ...हक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक १८

वार्षिक मूल्य ४)

२८ मार्च १९४...

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००१ मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी (Saharnpur)

अध्यात्म सुधा

[१६]

'आत्मना विन्दते वीर्य्यम्' केनोपनिषद्

बिंद विच जिंद

[श्री धर्मदेव शास्त्री]

...जाबी भाषा की एक लोकोक्ति है 'बिंद विच जिंद'। ...शब्दार्थ है 'बिन्दु ही में जीवन है', 'बिन्दु ही जीवन ...धार है।' वस्तुतः वीर्य ही में जीवन शक्ति निहित है। ...ीपक चाहे स्वर्ण का ही क्यों न हो—परन्तु तेल के ...हीं जल सकता—इसी प्रकार शरीर में भी प्रकाश अथ-...न्न वीर्य रूप तेल पर ही निर्भर है।

...द्यपि ब्रह्मचर्य साधना का मुख्य उद्देश्य ब्रह्म-प्राप्ति अथ-...भाव प्राप्ति ही है—ब्रह्मचर्य शब्द से ही यह भाव व्यक्त ...—तथापि सांसारिक सुख और ऐश्वर्य आदि को ही ...ा देने वाले व्यक्तियों के लिये भी ब्रह्मचर्य अथवा वीर्य ...के बिना चारा नहीं।

...हुत भूख लगने पर और बहुत प्यास होने पर ही अन्न जल ...में आनन्द मिलता है, इसी प्रकार विषयानन्द भी उसे ...सकता है—जो आवश्यक संयम द्वारा उसकी प्यास ...करता है। गृहस्थ होते हुए भी ऋतुगामी पुरुष को ब्रह्म-...ह कर शास्त्र ने इसी सत्य की ओर संकेत किया है। ...ा गृहस्थाश्रम में विषय सुख का भोग करना चाहते हैं ...लिये आवश्यक संयम अनिवार्य है। जो लोग इसके ...विचार रखते हैं अथवा अनुभव करते हैं उनसे हमारा ...पूर्वक निवेदन है कि वे संयम करके विषय के आनन्द ...नुभव कर देखें। जब दीपक में तेल भरा हो, बत्ती बड़ी ...ीक हो तब दीपक का प्रकाश सम और चिरकालिक होता ...ा के कम होने पर तो थोड़ी थोड़ी देर में बत्ती को ठीक ...और दीपक को पीछे सहारा देकर रखने की आवश्यकता ...है। इतने पर भी वह विनाश की ओर ही होता है। शरीर ...यही दशा है। आख़िर भोग तो संचित का ही हो सक-...इसलिये भोग के लिये संचय आवश्यक है। मनुष्य की ...महत्वाकांक्षाएं हैं उनकी पूर्ति संयम के बिना असम्भव ...ी शक्ति ब्रह्मचारी नहीं अर्थात् संयमी नहीं वह लग कर

किसी कार्य को देर तक नहीं कर सकता, 'बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्' (गीता) का ... होती है। बुद्धि की स्थिरता, निरन्तर कार्य करते रहने की क्षमता, संयमी पुरुष में ही हो सकती है। असंयमी पुरुष तो आरम्भ शूर होते हैं।

इन पंक्तियों के लेखक का अनुभव है कि व्यवस्थित शारीरिक अथवा बौद्धिक महत्त्वपूर्ण कार्य उसी दिन किया जा सकता है जब मनुष्य के पास 'बिन्दु' समुदाय आवश्यक मात्रा में होता है। यदि यह ठीक है कि वैयक्तिक अथवा सामाजिक कोई भी कार्य मनुष्य तब कर सकता है जब कि वह निरन्तर नियमित रूप से उसे करे तो मैं कहूंगा कि सभी कार्य संयम से हो सकते हैं, क्योंकि संयम के बिना कोई भी मनुष्य नियमपूर्वक स्थिरता से कोई भी कार्य नहीं कर सकता।

एक महापुरुष से किसी जिज्ञासु ने पूछा कि मनुष्य को कितनी बार स्त्री-संग करना चाहिये? उत्तर मिला जीवन भर में एक बार। यदि इतने से संतोष न हो तो? वर्ष में एक बार। यदि इतने पर भी संतुष्टि न हो तो? महीने में एक बार। जिज्ञासु ने पूछा यदि तब भी मनुष्य का कुतूहल नष्ट न हो तो? तब फिर मृत्यु का संग करना चाहिये।

परमार्थ-दृष्टि को दूर रक्खा जावे तब भी सांसारिक सुख और ऐश्वर्य के लिये भी ब्रह्मचर्य की ज़रूरत है। पंजाबी भाषा की उक्त सूक्ति यथार्थ है। जिस प्रकार मनुष्य का जीवन ब्रह्मचर्य पर आश्रित है उसी प्रकार राष्ट्र का जीवन भी उसी पर आश्रित है। हमारे देश का ब्रह्मचर्य और संयम का स्टैन्डर्ड नीचा है। इसीलिये औसतन आयु कम है और मृत्यु संख्या अधिक।

लेखकों से

—गुरुकुलाङ्क के लिए लेख १८ एप्रिल तक आर्य कार्यालय में आ जाने चाहिए।

—आर्य में प्रकाशित किये जाने वाले सब समाचार, लेख आदि राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखे होने चाहिएं।

—लेखों का विस्तार आर्य के एक पृष्ठ से अधिक न हो।

—लेख सुपाठ्य अक्षरों में हाशिया छोड़ कर लिखने चाहिएं।

—सूचनाएं बहुत संक्षेप में लिखी जानी चाहिएं।

—अस्वीकृत रचनाएं डाक व्यय साथ आने पर ही लौटायी जा सकेंगी।

—मैनेजर आर्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

शिव संकल्प का विजय

(श्री हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार)

१. संकल्प का कोई महत्व है या नहीं ? यह प्रथम प्रश्न है। जिस पर कि हमने विचार करना है। यहां प्रसंगवश आप संस्कृत वाङ्मय साहित्य के सौन्दर्य को भी देखेंगे। संस्कृत साहित्य में प्रत्येक शब्द अपने अर्थ के गुणों का प्रकाशन करता है। उदाहरणार्थ जल-वाचक 'वारि' शब्द पानी के रोगनिवारक गुण का प्रतिपादन कर रहा है। स्वयं जल शब्द 'जल घातने' धातु से सिद्ध होकर पानी को रोग कृमिनाशक बतला रहा है। इसी प्रकार संकल्प के महत्व को देखने के लिए हमें बहुत दूर नहीं जाना, यह संकल्प शब्द ही हमारे प्रश्न का उत्तर दे रहा है। सम् उपसर्ग पूर्वक कॢपृ सामर्थ्ये धातु से इस की निष्पत्ति होती है। सम् का अर्थ है अच्छी प्रकार और कॢपृ का अर्थ है सामर्थ्य। संकल्प से अच्छा सामर्थ्य होता है यह भाव संकल्प पद की रचना से सूचित होरहा है। सो संकल्प का महत्व यही है कि वह मनुष्य को समर्थ बनाता है। हमारा दृढ़ संकल्प होगा तो यह हो नहीं सकता कि हम अपने कार्य में सिद्धि को प्राप्त न करें। एक रोगी अपने दृढ़ संकल्प द्वारा अपने रोग को दूर कर सकता है, एक निर्बल व्यक्ति अपने अन्दर बल को उत्पन्न कर सकता है, निर्धन धनी बन सकता है, शैतान से सताया जाने वाला मनुष्य, दृढ़ संकल्प के होने पर शैतान को पराजित कर सकता है, एक अबला एक बड़े बलवान् गुण्डे पर विजय प्राप्त कर सकती है। एक परानित जाति स्वातन्त्र्य प्राप्त कर सकती है, एक मुमुक्षु बद्धावस्था की जञ्जीरों को तोड़ कर मुक्ति लाभ प्राप्त कर सकता है। संक्षेपतः दृढ़ संकल्प रूपी तीक्ष्ण तीर से कोई अवेध लक्ष्य नहीं। लिङ्गार्चन तन्त्र के संकल्प विषयक निम्न शब्द वास्तव में सत्य हैं कि 'संकल्पं मानसं देवि चतुर्वर्ग प्रदायकम्।' इसमें कहा है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि संकल्प से होती है। 'संकल्प-मूलः कामो वै यज्ञाः संकल्प संभवाः। व्रतानि यम नियमाश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।' इस मनु के श्लोक में संकल्प को क्रमशः काम, यज्ञ संभव अर्थ तथा धर्म का उत्पादक बतलाया है।

इसके साथ यह भी देखना चाहिए कि संकल्प के बिना किया हुआ कर्म पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होता। वस्तुतः सिद्धि संकल्प की समानुपातिनी होती है जितना अधिक संकल्प होगा उतनी ही अधिक सिद्धि होगी। पद्म पुराण में कहा है कि 'संकल्पेन विना राजन् यत्कर्म कुरुते नरः। फलमल्पालपकं तस्य धर्मस्यार्धक्षयो भवेत' इसका भावार्थ यही है कि संकल्प के बिना फल थोड़ा होता है और धर्म का भी अर्ध नाश होता है।

एवं संकल्प से सामर्थ्य की वृद्धि होती है और परिणामतः कार्य सिद्ध अच्छी प्रकार होती है। संकल्प के न होने पर सामर्थ्य के न बढ़ने से कार्य सिद्धि आधी ही होती है। इसके आगे तृतीय स्थान विकल्प का है, उसके होने पर विद्यमान सामर्थ्य भी नष्ट हो जाता है और कार्य सिद्धि तो दूर रही उसका परिणाम भी नाश हो जाता है। विकल्प, संशय जिस के अन्दर बहुत उत्पन्न होते हैं वह 'संशयात्मा विनश्यति' इन शब्दों के अनुसार अवश्य नाश को प्राप्त होता है।

संकल्प विकल्प ये दोनों विरोधी शक्तियां हैं। संकल्प सामर्थ्य को केन्द्रित कर प्रभावोत्पादक बनाता है, इसके विपइन दोनों के न होने पर सामान्य प्रभाव उत्पन्न होसंकल्प की उपादेयता और विकल्प की हेयता स्है। संकल्प से सिद्धि विकल्प से विफलता, संविकल्प से बन्ध, संकल्प से सामर्थ्य विकल्प से उपजती है।

संकल्प और विकल्प ये दोनों धर्म मन के हैं विकल्पात्मकं मनः' इसमें ये दोनों ही मन के स्वरूगए हैं। उस बात के ध्यान होने पर 'मन एव कारणं बन्ध मोक्षयोः' इस वचन की सत्यता स्पहै। दैवी प्रवृत्ति संकल्प है और आसुरी प्रवृत्ति विमन रूपी क्षेत्र में उन दोनों का संग्राम जारी है। सुर संग्राम है। अंग्रेज़ी में इसे struggle betwee half and lower half यह नाम दिया जाता हहमारे इस धर्म क्षेत्र में चलने वाले युद्ध में देवों हुआ तो हमारी उत्तम गति होगी। विपरीत अवस्थभी विपरीत होगी।

मन (हृदय) क्षेत्र है, इसमें—

देव	तथा	असुर लड़ रहे हैं।
संकल्प	,,	विकल्प नीचे ऊपर हो
Better half	,,	lower half में युद्ध
राम	,,	रावण का संग्राम हो
युधिष्ठिर	,,	दुर्योधन बुरी तरह से
God	,,	satan कार्य की उ लगे हुए हैं।
बुद्ध	,,	मार एक दूसरे को लगे हैं।
प्रताप	,,	मानसिंह यत्न में हैं।
श्रद्धा	,,	कुतर्क
सत्य	,,	अनृत
अमरता	,,	मृत्यु ये सब एक मुकाबले में खड़े हैं।

देखें देवों का विजय होकर हमें अमरता प्राप्त होती असुरों के बोलबाले से मृत्यु का भागी होना पड़ता है।

२. संकल्प शक्ति का 'सामर्थ्य को केन्द्रित कर त्पादकता' का गुण हमने सामान्यतः देख लिया। इमाहात्म्य को, विषय का उपसंहार करते हुए हम पुनः यहां इसके व्यापक प्रभाव को देखने के लिये यह आकि हम अपने सब स्थूल शरीराबृत साधनों का विश्लेवे साधन क्रमशः बुद्धि, मन तथा इन्द्रियां हैं।

शरीर की दृष्टि से भेद करें तो तीन शरीर हैं—स्थू तथा कारण। कारणों की दृष्टि से भेद करें तो अन्तःबाह्य कारण। इन में भी अन्तःकरणान्तर्गत ५ उपविभाग मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार। इन सब पर मानसिक स प्रभाव होता है। संकल्प के द्वारा इन की उन्नति तथा अवनति साधी जा सकती है। ऊपर कह ही चुके हैं कि संकल्प विकल्पों द्वारा एक रोगी निरोगी तथा नीरोग सकता है। उससे संकल्प का स्थूल शरीर पर प्रभाव यहां एक दो उदाहरण इसी बात के स्पष्टी करण के भी देखेंगे।

(असमाप्त)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आर्य रविवार २८ मार्च १९४३

आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव

प्रधान तथा मंत्री महोदयों से आवश्यक निवेदन

मार्च-अप्रैल के महीनों में पंजाब के आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव विशेष रूप से मनाए जाते हैं। प्रति सप्ताह १०-११ उत्सवों पर उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को भेजा जाता है। वेद प्रचार का आर्थिक वर्ष भी अप्रैल में समाप्त होता है। इस समय तक समाजों से जितना धन प्राप्त होगा उतना ही आगामी वर्ष में प्रचार पर व्यय किया जायगा। इसलिये सभा के प्रतिनिधि उत्सवों के साथ साथ वेद प्रचार के लिये दान भी प्राप्त करते हैं।

सभा वर्तमान प्रचार प्रणाली में परिवर्तन करने का यत्न कर रही है। कई समाजों ने सभा की इच्छानुसार उत्सव न करके कथा द्वारा प्रचार कराया है। इससे खर्च कम होता है और जनता में धर्म प्रचार भी अच्छी तरह हो जाता है। जनता को उपदेशक महानुभाव से सप्ताहभर मिलने का अवसर मिलता है। इस प्रकार से आर्य सभासद् अपने धार्मिक स्वाध्याय में भी उनसे सहायता लेते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आर्य समाजें इन दिनों में भी इसी प्रकार सभा की कम खर्च और अधिक प्रचार की नीति को क्रियात्मिक रूप देने में सहयोग देंगी। इस अवसर पर मैं आर्य समाजों के प्रधान तथा मन्त्री महोदयों के सामने दो तीन आवश्यक निर्देश रखना चाहता हूँ। आशा करता हूँ कि आर्य समाजें उन पर ध्यान देंगी।

(१) वार्षिकोत्सवों का प्रोग्राम बनाते हुए इस बात का यत्न किया जाता है कि अधिक से अधिक व्याख्याता और भजनीक मंगाए जांय। कई स्थानों पर दोनों सभाओं से उपदेशक मंगाए जाते हैं और साथ ही स्वतन्त्र उपदेशकों का भी प्रबन्ध किया जाता है। इसी प्रकार से दोनों सभाओं से भजनीक मंगाए जाते हैं,, स्वतन्त्र भजनीक भी मंगाए जाते हैं। परिणाम यह होता है कि आर्य समाज के अधिकारी इस दुविधा में पड़ जाते हैं कि किस को व्याख्यान व भजन का समय दें और किस को बिना व्याख्यान कराए अलविदा कहें। कई समाजों के अधिकारी सब को थोड़ा-थोड़ा समय देकर सिनेमा शो की तरह जनता का दिल बहलाव करते हैं, किसी एक विषय पर जनता को शिक्षित होने का अवसर नहीं रहता। इस कुप्रबन्ध का यह भी परिणाम होता है कि सायंकाल की सन्ध्या हवन को भुला कर रात को १२ बजे अथवा १ बजे तक भजन कराये जाते हैं। सवेरे के कार्यक्रम में यथा समय भाग नहीं ले सकते। प्रातः काल के सन्ध्या हवन में ८-९ बजे तक बहुत कम लोग सम्मिलित होते हैं। आर्य समाज जैसी धार्मिक संस्था के वार्षिकोत्सव में सन्ध्या हवन की इतनी उपेक्षा क्षन्तव्य नहीं हो सकती। सायंकाल के अग्निहोत्र को भी सवेरे समाप्त किया जाता है। इसका प्रभाव जनता पर तथा आर्य समाजियों पर तथा उनकी सन्तानों पर अच्छा नहीं होगा। इसलिये हरेक आर्य समाज को चाहिये कि अपने उत्सव पर अधिक से अधिक व्याख्याता तथा दो भजनीक मंगाएं। प्रातःकाल ६ बजे सन्ध्या-हवन उत्सव के पंडाल में होना चाहिए। सन्ध्या हवन के साथ उपस्थित सज्जनों का सम्मिलित कीर्तन होना चाहिए। रात को १० बजे (पुराने समय के—नए के ११ बजे) के बाद कोई कार्यक्रम नहीं रखना चाहिए। उत्सव में सम्मिलित होने वाले उपदेशक तथा भजनीक महानुभावों को चाहिए कि स्थानीय आर्य समाज के अधिकारियों को इस दिशा में प्रेरणा करें।

(२) वेद प्रचार के धन के सम्बन्ध में भी आर्य समाजों को चाहिए कि वे इस समय अधिक से अधिक मात्रा में वेद प्रचार निधि में धन दें। इस समय उपदेशकों तथा भजनीकों को अधिक देने के लिये तकाज़ा करने का अवसर ही नहीं देना चाहिए। यह शोभा नहीं देता कि जिन्होंने अभी आपको उपदेश दिया हो, वे ही रुपये के लिये तकाज़ा करें। इसके साथ ही सभाके विविध निधियों का जो धन जमा हो वह भी दे देना चाहिए।

(३) उत्सव में आर्यदेवियों के लिये विशेष प्रोग्राम रखा जाता है। कई स्थानों पर सोमवार को देवियों में विशेष प्रचार किया जाता है। परन्तु आर्य समाज के अधिकारियों को चाहिए कि वे स्त्री स्वयंसेविकाओं के सहयोग से ऐसा यत्न किया करें कि व्याख्यान व भजनों के समय उनमें शोर व कोलाहल न हो। इस दिशा में स्त्रियों को भी चाहिए कि वे अपने में दो पढ़ी लिखी अनुभवी देवियोंकी सहायतासे व्याख्यान के समय शान्ति पूर्वक बैठने की आदत को पैदा करें। शोरगुल से आर्य देवियों की निन्दा होती है और यह समझा जाता है कि इनमें शिष्टाचार और नियंत्रण का अभाव है।

(४) आर्य कन्याओं की खेलें पारितोषकवितरण आदि कार्य:—कई आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवों में स्थानीय आर्य कन्या पाठशाला की कन्याओं के द्वारा ड्रामा तथा संगीतमय नृत्य भी कराया जाता है। यह प्रथा बन्द करनी चाहिए। यदि कन्या पाठशाला का प्रदर्शन करना ही हो तो उत्सव के इन अधिवेशनों में केवल देवियों को ही निमंत्रित करना चाहिए। पुरुष स्त्रियों की सम्मिलित बैठकों में कन्याओं के खेल नहीं कराने चाहिए।

आशा है आर्य भाई इन विचारों को अमली रूप देने का यत्न करेंगे। इन परिवर्तनों से आर्य समाजों के उत्सव धार्मिक भावनाओं को जगाने वाले बनेंगे अन्यथा यह एक सिनेमा मेला की भांति लोगों के मनोरञ्जक के साधन बन जायेंगे।—भीमसेन।

वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोष:—

अभी २२ मार्च को गवर्नमेंट कालेज के कन्वोकेशन (दीक्षान्त) के अवसर पर कालेज से विदा होने वाले ग्रेजुएटों को सम्बोधित करते हुए प्रिंसिपल सोंधी ने वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोष दिखाए। उनमें से निम्नलिखित दोष विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं। (१) वर्तमान शिक्षा पद्धति में विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा देना (२) वर्तमान शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों को भारतीयता से दूर रखती है। (३) वर्तमान शिक्षा पाने वाले विद्यार्थियों का जीवन का उद्देश्य 'आनन्द मौज उड़ाना है और वह सिनेमा आदि देखकर अपना मनोविनोद करते है' उनमें आदर्शवाद नहीं होता। गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल महोदय के ये शब्द महत्व के हैं। परन्तु हमारी सम्मति में इसमें विद्यार्थियों का दोष नहीं। कालेजों के उपाध्याय जैसा उदाहरण विद्यार्थियों के सामने रखते हैं विद्यार्थी वैसे ही बनेंगे। हम चाहते है कि सरकारी तथा अर्ध सरकारी कालेजों के उपाध्याय तथा प्रिंसिपल मि० सोंधी के विचारों पर विशेष रूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज की बलिदान से भी प्यारी वस्तु

[श्री विष्णुमित्र जी गुरुकुल कांगड़ी]

आर्य्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को कई बार विष दिया गया परन्तु उन्होंने अपराधी को सदा क्षमा ही किया। अन्तिम बार विष देने पर, जिससे उनका प्राणान्त भी हुआ, उन्हीं के लोभी रसोइये ने विश्वास घात किया। परन्तु उन्होंने उसे भी क्षमा कर दिया। केवल क्षमा ही नहीं प्रत्युत जिस धन के लोभ से अपराधी ने विष दिया था वह धन भी उन्होंने उसे देकर भाग जाने की सलाह दी। जिससे कि वह प्राण दण्ड से बच जाय। कितनी उत्कृष्ट उदारता है। कितना क्षमा है। कितनी सहन शीलता है। सज्जनो, यह पाठ ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन द्वारा आर्य्य समाज को पढ़ाया था। खुशी की बात है कि ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने वाले आर्य्य समाज ने इस पाठ को भुलाया नहीं। सच्चे सपूत का यही कर्तव्य है। ऋषिके बलिदान को अभी कुछ ही वर्ष गुज़रे थे कि दूसरा बलिदान इसी मास में पं० लेखराम जी का हुआ। मृत्युशय्या पर पड़े हुए इस वीर के अन्दर भी क्या बदला लेने का विचार पैदा नहीं हुआ। यदि कोई विचार पैदा हुआ तो यह कि आर्य्य समाज के अन्दर तहरीर (लेख) का काम बन्द न होने पावे। ऐसा क्यों कहा केवल इसलिये कि कहीं आर्य्य समाज इस घटना से डर कर अपने सिद्धान्तों का प्रचार करना बन्द न कर दे। आर्य्य समाज का इतिहास बलिदान का इतिहास है। शहीदों का बलिदान यों ही नहीं जाता वह अपना रंग दिखाता है। पण्डित जी के बलिदान में दोनों पार्टियों को जो मुद्दत से जुदा थीं मिला दिया। यह दूसरी बात है कि कुछ स्वार्थी आदमियों ने उस मेल को देर तक न रहने दिया।

अपने देश, अपनी संस्कृति, अपने धर्म की रक्षा के लिये किया गया बलिदान समाज और जनता में जागृति पैदा किये बिना नहीं रहता। ईसा के जन्म से ५०६ वर्ष पहिले टारक्विनिश सुपरबस राजा का रोम में राज्य था। यह राजा बड़ा क्रूर था। सारी प्रजा इससे तंग आई हुई थी। एक दिन राजा ने अपने समस्त कर्मचारियों को न्यौता देकर महल में बुलाया। सभा जमी हुई थी—मदिरा का प्याला चल रहा था। जब मदिरा का रंग जमा तब राजा ने अपनी रानियों के पातिव्रत की चर्चा छेड़ दी। सब ने अपनी अपनी स्त्रियों की प्रशंसा की। सभा में बैठे हुए कौलेशिया ने जो कि कुछ दूर के नाते राजा का सम्बन्धी था, कहा कि मेरी स्त्री तो एक देवी है और सतीत्व उसको प्राण से भी प्यारा है। किसी को तो कुछ ख़याल नहीं हुआ किन्तु बड़ा राज कुमार सभा से उठ घोड़े पर सवार हो सीधा कौलेशिया के घर पहुँचा। किवाड़ खुलवा कर घर में बैठी अकेली भाभी को अभिवादन कर उसके निकट बैठ गया। कुछ देर बाद कौलेशिया की पतिव्रता ल्यु क्रुशिया से अपनी दुष्ट वासना प्रकट कर उसे धन का लालच देना आरम्भ किया। ल्युक्रुशिया गर्दन झुका कर सन्न रह गई। कुमार ने मौन को अर्ध स्वीकार समझ कर हाथ बढ़ाया। पतिव्रता के अंग स्पर्श से अग्नि निकलने लगी तब दुष्ट कुमार ने चमकता हुआ छुरा सामने रख कर कहा कि यदि तू स्वीकार नहीं करेगी तो तेरी हत्या कर तेरे बग़ल में किसी गुलाम को सुलाकर उसकी हत्या करूँगा और [illegible] दोनों की दुष्टता को देख कर क्रोध में मैंने दोनों का वध किया है। यह कह कर दुष्ट राजकुमार ने उस पतिव्रता को पकड़ लिया क्रोध और भय से अबला मूर्च्छित हो गई। मूर्च्छितावस्था में उस दुष्ट ने उसका सतीत्व नष्ट किया। कुछ देर बाद जब होश में आई तब उसने अपने आपको अपने प्यारे पति की गोद में पाया और अन्य नातेदारों को ओषधी प्रयोग करते और पंखा झलते देख उसे रात की एक एक बातें स्मरण होने लगीं। दीर्घ निःश्वास लेकर उसने कहा—हाय क्या मैं पतिव्रत धर्म से गिर गई। क्या मेरे पति, पिता, भ्राता सभी मुझे होश में लाकर भर्त्सना करने के लिये इकट्ठे हुए हैं। दिल में ऐसा कह कर वह एकदम उठ खड़ी हुई उठते ही पति के नेत्रों में अश्रु देखकर वह चिल्ला उठी। पतिदेव! ल्युक्रुशिया दुश्चरित्रा नहीं मेरे साथ बल प्रयोग किया गया है। मुझे इस समय इतनी ग्लानि है कि मैं रोम वासियों को अपना अपमान सुनाकर प्राण त्याग दूंगी। हे रोमवासियो! मैं तुम्हारी बहु बेटियों की लाज के लिये मरूँगी। मेरे रुधिर के दागों को अन्यायी राजा और राज परिवार के रुधिर से धोकर मेरा तर्पण भी उसी से करना। मैं स्वर्ग से झांक कर देखूंगी कि तुमने अपने मान को धन से तो नहीं बदल दिया। इतना कह कर उसने कुछ भी पल की देर न कर खूंटी पर टंगे हुए चमकते खंजर को ऐसे झपाटे से उतारा कि किसी का कुछ बस नहीं चला। उसने खंजर हाथ में लेकर एक बार चारों ओर देखा—और ललकारा कर कहा रोमियो सावधान! मेरा अपमान तुम्हारा·····बात पूरी होने से पहिले ही चमचमाता खंजर वक्षस्थल में खुब से घोंप लिया। पतिव्रता की पवित्र धारा धरा को भिगोने लगी। वहां के दर्शकों का हृदय कांपने लगा। इस दृश्य का प्रभाव ब्रूटस पर इतना पड़ा कि उसने उस देवी के रुधिर का माथे पर तिलक लगा कर कहा-भाइयो, क्या यह अपमान चुपचाप सह लिया जायगा। उसका इतना कहना ही था कि उपस्थित जन-समूह ने उसी दम इन्द्रिय-लोलुप राजा के राज-भवन पर धावा बोल दिया। टारक्विनिश परिवार सहित प्राण लेकर भागा और रोम में प्रजा सत्तात्मक राज्य स्थापित हो गया। यह आर्य्य समाज के बलिदान से विलक्षण बलिदान का नमूना है। इसमें हत्या लेने का विचार है। आर्य्य समाज को कायम हुए अभी शताब्दी भी नहीं हुई परन्तु इस थोड़ी अवधि में ही कितने आदर्श की मर्यादा रखने के लिए कितनी ही आत्माएँ बलि पर चढ़ गईं। पर किसी के अन्दर बदला लेने की भावना नहीं हुई। आर्य्य समाज का बच्चा बच्चा धर्म का महत्व समझता है। उस महत्व की रक्षा के लिये सर्वथा तैयार रहता है। इसी त्याग और बलिदान ही नहीं, आर्य्य समाज के पास त्याग भी सुन्दर और बलिदान से भी प्रिय एक विभूति है और वह है क्षमा। उस क्षमा को वह मृत्यु से भी अधिक प्यार करता है इसलिये आर्य समाजी अपने बलिदान का बदला खून से नहीं लेते। यह तो उनकी मर्यादा को गिराने वाला चीज़ है। एक बलिदान के बदले में अपने सहस्रों बलिदान देकर सन्तोष पाते हैं। तीसरा बलिदान स्वामी श्रद्धानन्द जी का हुआ। बड़ा जोश फैला। अखिल हिन्दू जाति का हृदय ग्लानि से मसोस उठा। उस समय यदि आर्य जाति बलिदान का बदला हिंसा से लेने के लिये खड़ी हो जाती तो अन्धेर हो जाता। आर्य जाति कलङ्कित हो जाती। इस आर्य जाति के व्यवहार ने उसका मस्तक उज्वल और ऊंचा बना दिया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदों में आयुर्वेद

[वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री, लाहौर]

(गतांक से आगे)

रोगों के नाम

रोगों के नाम देकर भी रोगों को असंख्य ही

शतस्य यक्ष्माणाम्" (यजुः १२ । ९७) "अज्ञात ((अथर्व ३ । ११ । १) यह है भी ठीक रोगों की ना तो हो भी नहीं सकती ।

जिन २ रोगों का नाम वेद में आता है उनकी अका- से सूची दी जाती है ।

अङ्ग भेदः अथर्व वेद (५ । ३० । ९) । २. अङ्गाङ्गः ३॥७) । ३. अक्षितः अ० (७ ८०।४) । ४. अक्षि दाहः ४ २) । ५. अक्ष्णोरुपहत्या अ० (५ ४ १०) । ६. अति ज्वरेद (३०।२२) । ७. अति विद्धः अ० (६।१०९।१) । ता अ० (४।१७।६) । ९. अनिद्रता अ० (४ ५) ः अ० (९।८.४०) । ११. अप चित् अ० (७ ८०।१) । अ० (३।२।५) । १३. अभिशोचनः अ० (२।४।२) । १४. आ० (२।४।६) । १५. अर्शः य० (१२।९७) । १६. अलजी ८:२०) । १७. अलिशः अ० (८ ६।१) । १८. अवकेशः ७।२) । १९. अव कोकः य० (३०।१५) । २०. अशि पद ७॥५० ४) । २१. अशि मदः ऋ० (७।५०) । २२. अस्थि (२।३३।६) । २३. आदहिः अ० (९।४।८) । २४. आंत्र ८ (९।८।१७) । २५. आशरीकम् अ० (१९।३४।१०) । य प्रत्यावः अ० (९।८ ३) । २७. आस्रावः अ० (२।३।३) ाम् अ० (५ २२।११) । २९. उन्मादः अ० (६।११।१) । च्वत् य० (१२।९७) । ३१. उग्राहः अ० (११।९।१२) । ः अ० (६।१६।३) । ३३. कण्वः अ० (२ २५ १) । ३४. ावः अ० (९।८।३) । ३५. कर्ण शूलम् अ० ८।८ १) । ाकः अ० (३।९।१) । ३७. काणः अ० (१२।४।२३) । ३८. अ० (३।९।३) । ३९. काम रोगः अ० (६।९।१) । ४०. अ० (६।१०५।३) । ४१. काहा बाहम् अ० (९।८ ११) । ४२. : अ० (१।२३।१) । ४३. कीपमीलः अ० (१९।८ ४)ः ाद आचार्याः । "कीशमीलः" पाठः) । ४४. कुनखः अ० ३) । ४५. कुष्ठः य० (३० १०) । ४६. कृत्या दर्शनम् अ०) । ४७. कृत्रिमनादः अ०(१९।३४ ३)। ४८. क्षुधामरः ४।१७ ६ प्तः अ० (६।१०९।३) । ५०. क्षेत्रियः अ० (२ ८ २) । क्षतिः य० (३० २१) । ५२. गलुन्तः अ० (६।८३।३) । ५३. अ० (२।९ १) शतपथ ब्राह्मणे ग्राहः (३।५।२५) । ५४. य० (३०।१७) । ५५. गवीः अ० (६ ८३।३) । ५६. घोर ० (४ ९ ६) । ५७. जम्भः अ० (८।१।१६) । ५८. जायान्यः ९ ४४।२) । ५९. जिह्वा बर्हिः अ० (८।१।१६) । ६०. तक्मा ९।८) । ६१. तमः अ० (८।१ १६) । ६२. तन्वोरपः अ० ०) । ६३. तृष्णामारः अ० (४।१७।६) । ६४. तौबिलिका १६ ३) । ६५. त्वचस्यम् अ० (२ ३३।७) । ६६. दुर्णामा ।२५।२) । ६७. दुश्चर्म तैत्तिरीय संहिता (२।१।४।३) । ६८. अ० (४।९ ६) । ६९. दूषीका अ० (१६।६।८) । ७०. विषवर्णनम् अ० (६ ९०।२) । ७१. निराल: अ० (६ १६।३) कारूः य० (१२ ९७) । ७३ पामा अ० (५।२२।१२) । ७४. दाहः अ० (३।२४।२) । ७५. पृष्ठयामयः अ० (१९।३४।१० पद दाहः अ० (६।२४ २) । ७७. प्रमोतः अ० (९।८ ४) ।

७८. वण्डः अ० (७।९७।३) । ७९. वलासः अ० (१९।३४।१०) । ८०. मशकदंश वर्णनम् अ० (७ ५८।३) । ८१. मित्रियः अ० (२।२८।१) । ८२. मूकः य० (३०।१९) । ८३. मूत्ररोधः अ० (१।३।६) । ८४. मृतवत्सा अ० (८।६ ९) । ७५. बधिरः य० (३०।१०) । ८६. बाह्लीकः अ० (११ ९ १२) । ८७. राज यक्ष्मा अ० (३।११।१) । ८८. वरुणमन्युवर्णनम् अ० (१।१०) । ८९. वामनः य० (३० १०) । ९०. विक्लिन्दुः अ० (१२।४ ५) । ९१. विजर्जरा य० (३० १५) । ९२. विद्रधः अ० (९।१२७।१) । ९३. विलिष्टः पैप्पलादशाखा (२०।५।२) । ९४. विलोहितः अ० (९ ८।१) । ९५. विशरः अ० (२ ४।२) । ९६. विशरीकः अ० (१९।३४ १०) । ९७. विशर्फः अ० (३ ९।१) । ९८. विषूचिका य० (१९।१०) । ९९. विषूची अ० (७ ४३।१) । १००. विष्कन्धः अ० (१।१६।३) । १०१. विसल्पकः अ० (१९।४४ २) । १०२. विहुतः अ० (७।५८।२) १०३. वृक्क रोगवर्णनम् अ०(७ १०१।१) । १०४ वेहत अ० (३।२३।१ १०५. शिमिदा अ० (४।२५।४) । १०६. शार्पक्ति अ० (९।८।१) । १०७. श्यावदत् अ० (७।५८ ३) । १०८. सर्प विष वर्णनम् अ० (५।१३।१) । १०९. सिध्मलः य० (३० १७) । ११० सुक्षतः अ० (७।८०।४) । १११. सुरामः ऋ० (१०।१३१।५) । ११२. हरिमा अ० (१।२२ १) । ११३. हृदय विधुः अ० (९।८ ४२) । ११४. हृदयामयः अ० (५।३०।९) । ११५. हृद्योतः अ० (१।५०।११) ।

स्थानिक रोगों के नाम

ऊपर रोगों के नाम दिये गये हैं । अब जिन २ अंगों से रोग को बाहर निकालने का वर्णन है उन २ अङ्गों का नाम देकर उसके आगे रोग पद का प्रयोग किया गया है ।

अक्षि रोगः ऋ० (१।१६३।१) । अङ्ग रोगः ऋ० (१।१६३।५) अङ्गुलि रोग अ० (२।३३।६) । अनूक रोग ऋ० (१।१६३।२) । अष्ठी वद् रोग ऋ० (१।१६३।४) । अस्थि रोग अ० (२ ३३।६) । अँस रोग ऋ० (१।१६३।२) । आँत्र रोग ऋ० (१।१६३ ३) । उदर रोग । उरू रोग ऋ० (१।१६३।४) । उष्णिहा रोग ऋ० (१।१६३ २) । कपाल रोग अ० (९।८ २२) । कर्ण रोग ऋ० (१।१६३।१) । कंकूप रोग अ० (९।८।२) । कीकस रोग ऋ० (१ १६३ २) । क्लोम रोग अ० (२ ३३।३) । गुदा रोग ऋ० (१।१६३ ३) । ग्रीवा रोग ऋ० (१।१६३।२) । छुबुक रोग ऋ० (१।१६३ १) । जानु रोग अ० (१८।१।५२) । जिह्वा रोग ऋ० १।१६३।१) । त्वक् रोग अ० (२ ३३।७) । दोषण्य रोग ऋ० (१।१६३।२) । धमनी रोग अ० (२।३३।६) । नख रोग अ० (२।३३ ६) । नाभि रोग अ० (६।९।३) । नासिका रोग ऋ० (१।१६३ १) । पर्व रोग ऋ० (१।१६३ ६) । पाद तथा पाणि रोग अ० (२।३३ ६) । पार्श्व रोग अ० (२।३३।३) । पार्ष्णि रोग ऋ० (१।१६३ ३) । पृष्ठ रोगः । प्लाशि रोगः ऋ० (१।१६३ ४) । प्लीहा रोगः अ० (२।३३ ३) । प्रपद रोगः ऋ० (१।१६३।४) । बाहू रोगः ऋ० (१।१६३।२) । भासद रोगः ऋ० (१ १६३।४) । भंसः रोगः ऋ० (१ १६३।४) । मज्जा रोगः अ० (२ ३३ ६) । मतस्न रोगः ऋ० (१।१६३।३) । मस्तिष्क रोगः ऋ० (१।१६३।१) । मूर्धा रोगः अ० (१६।३ १) । मेहन रोगः ऋ० (१।१६३ ५) । यकन (यकृत् रोगः) ऋ० (१।१६३।३) । लोम रोगः ऋ० (१।१६३।५) । वक्षणा रोगः अ० (१४।२।१४) । वनिष्ठु रोगः ऋ० (१ १६३।३) । वनं करण रोगः ऋ० (१।१६।३५) । शीर्ष रोगः ऋ० (१।१६३।१) । श्रोणि रोगः ऋ० (१।१६३।४) । सीमा रोगः अ० (९।१३।१३) । स्नाव रोगः अ० (२ ३३।३) । हलीक्ष्ण रोगः अ० (२ ३३।३) । हस्त रोगः ऋ० (१।१६३।३) ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

गीत

[श्री ईश्वरदत्त शील]

रे बटोही ! जाग तेरे पंथ का यह अन्त आया

(१)

देख अम्बर भी क्षितिज से
यह तुझे सन्देश देता,
'औ' विहंस वातास भी तो
आज तुझ से फूल कहता,
युग-युगों की साधना का साध्य तू ने आज पाया
रे बटोही ! आज तेरे पंथ का यह अन्त आया

(२)

देख प्राची में उषा भी
आ रही अभिषेक देने,
औ' निशा भी थाल अपना
है लगी अब तो सजाने,
चीर कर इन घन तिमिर को आज तो आलोक पाया
रे बटोही ! आज तेरे पंथ का यह अन्त आया

(३)

आज वह पतझार के दिन-
भी गये हैं बीत साथी,
आ रहा अब तो विहँसता
देख तो मधुमास साथी,
उस विटप की डाल पर से हँस विहग ने गान गाया
रे बटोही ! आज तेरे पंथ का यह अन्त आया

(४)

अब न अन्धड़ उठ सकेगा
अब न झंझा कह सकेगी,
आज तो तेरे चरण पर
आ स्वयं विजया रहेगी,
क्योंकि तूने आज उसको है स्वयं साथी बनाया
रे बटोही ! आज तेरे पंथ का यह अन्त आया

(५)

राह की पीड़ा व्यथा का
भार जो तू ने उठाया,
मूल्य उसका बन पड़ा जो
है अरे तूने चुकाया,
पा लिया उससे अधिक पर, जो रहा तू ने गंवाया
रे बटोही ! आज तेरे पंथ का यह अन्त आया

(६)

आज तेरी साधना का
अन्त भी कैसा मनोहर,
जग गये जिससे तुम्हारे
आज कैसे भाग्य सुन्दर,
है स्वयं आराध्य चल कर आज तेरे द्वार आया
रे बटोही ! आज तेरे पथ का यह अन्त आया

नवजीवन की धारण

भगवत् कृपा का अनुभव

[श्री राय साहिब लालचन्द जी

परिपूर्ण मम हृदय में, भगवान
हैं साथ मेरे नित्य ही अन्तः करण में
जग गई मम आत्म शक्ति प्रभु ही
दोष मेरे क्षीण हैं, शुभ कार्य होवें जगत
दिनों दिन अधिक अधिक बलवान् मैं
मैं स्वस्थ हूं, मम चित्त स्थिर है, नित्य मंग
चैतन्यता उत्साह बल पराक्रम भरा मैं
प्रेम में, आनन्द में, नित सत्य में, सुख स
दिव्य गुण विकसित हुए, दृढ़ भावना
प्रेम मय भगवान् निज प्रेम से भर
नित्य नव जीवन दिया, शुभ प्रेरणा दी
"सत्कर्म में तू लग्न से हित साध सब का
"शुभ भावना, सद् भावनायुत प्रेम पूरण
"भरपूर संपद तुझे दी तू हो कुशल सब
"स्वीकार तुझ को कर लिया सर्वांग उन्नत
"तेरा निमंत्रण मैं सदा ही कर रहा हर क
निश्चिन्त अब मन हो गया, मुझ पर प्रभु
आनन्द मंगल बढ़ रहा, संपद सुयश नित
भगवान् में मैं हूं सदा भगवान् मुझ में
प्रसन्न मुख पर प्रभु हैं, हो सत्य निश्चित उन
प्रेम करते प्रेममय मुख से सदा होकर
प्रेम करता मैं सभी से नित यहां निस्स्व
सभी जन हैं प्रेम करते सभी हैं रस
भरपूर हैं सब प्रेम में परमार्थ में सुख पूर
द्वेष सब से दूर हैं, अवसाद अब हो
मत्सर नहीं गड़बड़ नहीं सुख काज सब का है
आत्मज्योति जग गई अन्तः करण जगमग
संतुष्टता पूरण मिली सब काज मेरा है सध
मंगलमयी शुभ भावना का वास हृदय
आनन्द पूरण मुदित मन, प्रभु संग मेरा नित
हूं भय रहित, संपद सहित संसार है सब
भगवान् आनन्दकंद में शुभ भाव मंगल कृत्य का

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद्देवेषु
अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । दे
रागमत् । ऋग्वेद प्रथम

[ब्रह्मचारी प्रताप एकादश, गुरुकुल कांगड़ी

हे ! अग्निदेव !! तेजोनिधान !!!
हिंसा व कुटिलता से विहीन
जो यज्ञ घिरा तुझ से नवीन
वह ही देवों को प्राप्त हुआ, है दिव्य गुणों की व
हे ! अग्निदेव !! तेजोनिधान !!!
दुःखहर्त्ता सुख देने वाला
ज्ञानी सुकर्म करने वाला
वह अद्भुत यशमय, सत्य, देव, है दिव्य फलों क
हे ! अग्निदेव !! तेजोनिधान !!!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

इवार २८ मार्च १९४३ आर्य ७

व्याकरण और प्रातिशाख्य

[श्री पण्डित जयदेव शर्मा विद्यालंकार]

वेद की संहिताओं की रचना को समझने के लिये यदि बहुत ही सूक्ष्म दर्शक शास्त्र हैं तो वे प्रातिशाख्य हैं। तक संस्कृत व वैदिक साहित्य में 'वेद का व्याकरण' में स्वतन्त्र कोई पुस्तक नहीं है। अनेक विद्वान् लोग यह झते हैं कि व्याकरणों की रचना अति अर्वाचीन है और ाल में व्याकरण का स्थान प्रातिशाख्यों को प्राप्त था। में उनके कथन का आधार केवल यही है कि कुछ सन्धि दि के नियमों की रचना पाणिनि आदि के सूत्रों से मिलती ती है। परन्तु इतने मात्र से प्रातिशाख्य व्याकरणों का न ले सकते हैं ऐसा मान लेना बहुत ही अल्पज्ञता है।

वस्तुतः व्याकरण और प्रातिशाख्य दोनों में परस्पर सामं- या अवश्य है अर्थात् उनकी परस्पर स्थान २ पर एक दूसरे सहकारिता अवश्य है परन्तु वे दोनों एक दूसरे का स्थान र्के यह कहना अति कठिन है। अनेक प्रकार से विचार ने पर भी प्रातिशाख्य व्याकरण का शतांश भी स्थान नहीं सकता और न व्याकरण ही प्रातिशाख्य का स्थान कता है।

केवल व्याकरण पढ़ लेने पर भी यदि प्रातिशाख्य का ास नहीं है तो अनेक संदिग्ध स्थलों में पद पाठ तक में लना रहेगा। उन सूक्ष्म २ भ्रमों की निवृत्ति प्रातिशाख्यों ोती है, जिसको व्याकरण कभी स्पर्श नहीं कर सकता।

प्रातिशाख्य का विषय है—वेद संहिता की रचना का ज्ञान ते हुए उसे भली प्रकार अध्ययन, पाठ और उसके पद-पद याथार्थ ज्ञान करना। इसी लक्ष्य से प्रातिशाख्यों में वर्ण , पद ज्ञान, पदों में परस्पर सन्धि और उनके सूक्ष्म अति म अपवाद, अपवादों में भी कारण विवेचन किया गया है। तिशाख्य का अध्ययन करने पर वेद की अति नियमित ना का साक्षात्कार होता है।

व्याकरण में सामान्य तो लौकिक और स्थान २ पर वैदिक सामान्य नियमों का प्रतिपादन करके फिर उनके अपवाद नियमों उल्लेख किया है। वह सामान्यतः छन्दो भाषा अर्थात् वेद भाषा और लौकिक भाषा के साधारण ज्ञान के लिये बहुत योगी है, परन्तु वह वेद संहिता की विस्तृत रचना की थियों को नहीं सुलझा सकता। उनको सुलझा देना प्राति- ख्य का कार्य है। व्याकरण के वैकल्पिक और बाहुलक मों का स्पष्टीकरण प्रातिशाख्यों से मिलता है। प्रातिशाख्य स्वतन्त्र रूप से अभ्यास करने वाला यदि व्याकरण से य है तो वह वेद के बहुत से स्थलों में अज्ञानी है। यदि ला व्याकरण जानता है, प्रातिशाख्य नहीं जानता तो वह क्य भले ही समझ ले परन्तु वेद के अनेक अपवाद स्थलों को ाकरण-सूत्रोक्त 'बहुलम्' कोटि में रखकर सदा के लिये उलझे लों को सदा उलझा हुआ ही पावेगा, वह उसकी दृष्टि से ी नहीं सुलझते। इसलिए प्रातिशाख्य के पूर्व व्याकरण का यास और व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करके भी प्रातिशाख्य ज्ञान करना आवश्यक है।

वेद की अनेक शाखाओं के अपने प्रातिशाख्य, और वेद के भी प्रातिशाख्य हैं। कोई एक प्रातिशाख्य समस्त वेदों नहीं है। भिन्न २ समयों में भिन्न २ विद्वानों ने प्राति- संकलित व संस्कृत किया है। देखने से स्पष्ट विदित होता है कि प्रातिशाख्यों का सूक्ष्म विवेचन भी उनके वैयक्तिक बुद्धि का विकास नहीं प्रत्युत पूर्वोपदिष्ट, गुरु परम्परागत ज्ञान का स्थिरीकरण है। जैसे—ऋग्वेद प्रातिशाख्य, जो वर्तमान में उपलब्ध हैं वह चाहे स्थान २ वह सूत्रमय है परन्तु सूत्रमय होकर अनेक छन्दों में इसकी रचना की गई है। इसमें १८ पटल हैं, १४ पटल शौनकोक्त और ४ पटल आश्वलायनोक्त हैं। शाकल- और वाष्कल, शैशिरी आदि शाखाओं के पृथक् प्रातिशाख्य प्राप्त हो जाय तो ऋग्वेद की बहुत सी सूक्ष्म २ बातों का भी पता चले और इस बात का भी ज्ञान होजावे कि क्योंकर प्रवचन भेद से वेद का शाखा भेद हुआ है।

प्राचीन प्रातिशाख्य तो लुप्त ही हो गये हैं बाद में शिष्यों की सुगमता के लिये प्रातिशाख्यों की रचना को संक्षिप्त और छन्दोबद्ध करने आदि का प्रयास भी किया गया प्रतीत होता है। तो भी उसमें अनेक ज्ञातव्य बातें हैं।

जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने व्याकरण पाणिनीय पर भाष्य बनाया है और उसको फिर सरल हिन्दी अनुवाद सहित लोकोपकार के लिये प्रस्तुत किया है उसी प्रकार प्रातिशाख्यों का विस्तृत ऐसा अनुवाद होना चाहिये जिसमें स्थान २ पर पाणिनि व्याकरणोक्त बातों से तुलना भी हो। प्रत्येक बात का उदाहरण सूत्र संहिता से होना चाहिये। जब तक ऐसा ग्रन्थ न बनेगा गुरुकुल आदि संस्थाएं भी वेद के चतुर पण्डित विद्वानों को उत्पन्न न कर सकेंगी।

यह ठीक है कि जहां इन ग्रन्थों के ज्ञाता विद्वानों की अति न्यूनता है वहां इन ग्रन्थों के प्रकाशक तो और भी कम हैं तो भी आर्य पुरुषों को इधर ध्यान देना चाहिये। मेरे विचार में तो पाणिनीय व्याकरण का भी एक ऐसा भाष्य प्रस्तुत होना उचित है जिसमें समस्त उदाहरण यदि वेदों से उद्धृत हों तो पाणिनीय व्याकरण का वेदाङ्ग अर्थात् प्रमुख वेदाङ्ग होना व्यक्त हो जाय। यह कार्य कठिन नहीं है, परन्तु धैर्य और लगन से करने का है।

प्रातिशाख्य का कथित विषय किस प्रकार व्याकरण से पूर्ण प्रतिपादित नहीं है इसको हम अगले लेख में स्पष्ट करेंगे। उससे प्रातिशाख्य का महत्व भी विदित होगा।

मि० चर्चिल की चतुर्वार्षिक योजना:—(पृष्ठ ३ का शेष)

मि० चर्चिल ने अभी एक घोषणा की है। इसमें वर्तमान युद्ध की समाप्ति पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा पोलीस स्थापित करने की आवश्यकता दिखाई गई है। इसके लिये युरोपियन राष्ट्रों तथा एशियाई राष्ट्रों की पृथक् २ कौंसलें बनाने का प्रस्ताव किया गया है। साथ ही इंगलैंड में बेकारी रोकने तथा बीमा कराने, स्वास्थ्य रक्षा तथा जन संख्या बढ़ाने की योजनाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता बताई गई है। इस घोषणा में भारतवर्ष का नाम निर्देश नहीं है। इसका अभिप्राय स्पष्ट है कि इंगलैंड के राजनीतिज्ञ अभी तक भारतवर्ष को स्वतन्त्र राष्ट्र स्वीकार करने को उद्यत नहीं हैं। हमारी सम्मति में जब तक ब्रिटिश जाति की यह मनोवृत्ति है तब तक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय और अन्तर्राष्ट्रीय पोलीस व एशियायी व युरोपियन कौन्सलें संसार में युद्धों को समाप्त नहीं कर सकते। (भारतवर्ष की पराधीनता केवल भारतीय प्रश्न नहीं है, यह अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का रूप धारण कर चुकी है। इसको हल किये बिना संसार में शान्ति स्थापित होना कठि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल कांगड़ी के संरक्षकों से अपील

पूज्य संरक्षक भाइयो !

आपको यह पढ़कर प्रसन्नता होगी कि आपके गुरुकुल का हरिद्वार का वार्षिकोत्सव २३ से २६ अप्रैल' ४३ को आरहा है आपके चि० ब्रह्मचारी उस दिन की बड़े प्रेम से एक साल से प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस लिए मेरा आप सब भाइयों को प्रेम पूर्वक निमंत्रण है कि आप अवश्य अपने सब कार्यों को छोड़कर भी सपरिवार उत्सव पर आवें और वहां होने वाली संरक्षक सभा के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होवें आपका कर्त्तव्य है कि आप अपने बच्चों के व शिक्षा के प्रबन्ध की त्रुटियों को दूर करने के लिए संरक्षक सभा का हाथ बटायें। आपको यह भी मालूम है कि इस साल युद्ध के कारण हर एक वस्तु बहुत मंहगी है और इसका असर आपके गुरुकुल पर भी बहुत पड़ा है इस लिए गुरुकुल इस साल घाटे पर आ रहा है। आप कृपा करके मेरी इस प्रार्थना पर इसके पढते ही गुरुकुल से पुरुषार्थ निधि की रसीद बुकें मंगा कर अधिक से अधिक धन इकट्ठा करके साथ लायें ताकि जहां हमने अपने दिलके टुकड़े ब्रह्मचारी गुरुकुल को दिये हुए हैं वहां उनके धन का भी खयाल रक्खें और इस ऋण को भी उतारें। आशा है आप मेरी इन प्रार्थनाओं को हृदय से स्वागत करेंगे और अपनी संरक्षक सभा की अधिक से अधिक प्रतिष्ठा बनायेंगे। मेरे योग्य सेवा से सूचित करें। आपका सेवक—

ब्रह्मदत्त मंत्री संरक्षक सभा गुरुकुल कांगड़ी
हाल जफरवाल, स्यालकोट।

—गुरुकुल मुलतान। आज ६-१२-६६, शुक्रवार को श्रीमान कर्नल चौधरी बोधराज जी रिटायर्ड मिलिटरी सिविल सर्जन मुलतान अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्यादेवी जी के साथ गुरुकुल भूमि में पधारे। लगभग २ घण्टे तक यहां रहकर आप ने गुरुकुल का भली प्रकार निरीक्षण किया। विद्यार्थियों के सरस श्लोक तथा संगीत को सुन कर चौधरानी जी बहुत प्रभावित हुईं। पूज्या चौधरानी जी एक प्रतिभासम्पन्न विदुषी महिला हैं। आपको चारों वेदों के मन्त्र कण्ठस्थ हैं। भारतीय प्राचीन सभ्यता से आपको अत्यन्त प्रेम है। आप ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को 'सादा जीवन और उच्चविचार' के आदर्श को अपने सम्मुख रखने का उपदेश किया और विदेशी सभ्यता के कुप्रभाव से बचने की शिक्षा दी। श्रीमान् कर्नल साहिब ने विद्यार्थियों की शारीरिक दशा का भी निरीक्षण किया और बहुत प्रसन्न हुए। अन्त में गुरुकुल के उत्तम प्रबन्ध से सन्तुष्ट हो कर आपने पचास रुपये दान दिये गुरुकुल के अधिकारी आप का हार्दिक धन्यवाद करते हैं। —मुख्याधिष्ठाता।

—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर २३ अप्रिल को 'आर्य' का गुरुकुलाङ्क निकलेगा। जो समाजें या आर्य महानुभाव इस विशेषाङ्क की अधिक प्रतियां लेना चाहें वे हमें पहले सूचना भेजदें जिससे उतनी प्रतियां अधिक छपवाई जांय।

आर्य समाज संसार

—ऋषिदयानन्द के परलोक गमन के पीछे से सनातन धर्म अवलम्बियों ने वैदिक धर्म तथा आर्य्य सम आक्षेप किये हैं उन के उत्तर लिखकर तथा सनातन धर्म भीतर इस समय जो परिवर्तन हुए हैं उनको पूरी छान कर जो सज्जन एक पुस्तक का मसवदा तयार करके भेजें उनका मसवदा स्वीकार होने की अवस्था में रुपये पुरस्कार दिया जावेगा। इसी प्रकार जो सज्जन पं० जी के बलिदान के बाद से लेकर अब तक इसलाम की वैदिक धर्म तथा आर्य्य समाज पर हुए आक्षेपों के इस्लाम के अपने भीतर इस समय में जो परिवर्त्तन हुए छान बीन लिखकर पुस्तक का मसवदा सभा को भेजेंगे, मसवदा स्वीकार हो जाने की अवस्था में उन्हें दो सौ रु स्कार दिया जावेगा। ये मसविदे १५-५-४३ तक सभा में अवश्य पहुंच जाने चाहिये। पुस्तकों की पृष्ठ संख्या २० १६ साईज की कम से कम २०० होनी चाहिये। —सभा

—आर्य समाज मिट्ठातिवाना। ऋषि बोध तथा वीर पर स्वामी दयानन्द जी तथा पं० लेखराम जी की जी प्रकाश डाला गया। लेखराम स्मारक निधि के लिये धन त्रित किया गया। १२ मार्च को दैनिक सत्संग में श्री जी के पिता की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किया गया

—विद्या सभा लरया ने २ मार्च १६४३ को अपनी स्व० ला० कर्मचन्द जी नदान मैनेजर आर्य्य कन्या पाठश मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट किया तथा उन के कार्य की की। इस अवसर पर विविध आर्य्य संस्थाओं को ५० दिया गया। —रामरत्न,

—श्री वेदप्रकाश वेदालंकार का शुभ विवाह जामपु नोतनदास जी की सुपुत्री कुमारी सरलादेवी के साथ १० सानन्द सम्पन्न हो गया।

—आर्य समाज दाल बाज़ार लुधियाने का वार्षिकोत्स मार्च १६४३ से १६-३-४३ तक बड़े समारोह से मनाया शिवरात्रि के दिन प्रातःकाल प्रभात फेरी की गई कि किया गया। प्रार्थना उपासना तथा भजनों के पश्चात वेद हुआ। मध्याह्नोत्तर ऋषि के जीवन पर हिन्दी में निब कविताएं पढ़ी गईं। फिर खेलें हुईं। रात्री को आचार्य जी के सभापतित्व में ऋषि के जीवन पर विद्वत्ता पूर्ण भा उत्तम निबन्ध पढ़ने वालों और खेलें करने वालों को सभापति पारितोषक दिये गये। एकादशाह भद्रेष्टि यज्ञ, उत्सव के उप ४ मार्च से आरम्भ होकर संपूर्ण यजुर्वेद से १४-३-४३ तक सत्यपाल जी वानप्रस्थी की अध्यक्षता में विद्वान् पंडितों द्व गया। ८ मार्च से रात्री को भजन तथा वेदों की कथा श्री शांति प्रकाश महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा १२-३- होती रही। १२-३-४३ को सायंकाल नगर कीर्तन बड़े स से हुआ। १३ व १४ मार्च को मनोहर भजन, उपदेश, जिला सम्मेलन, वादविवाद सम्मेलन, कल कारखाने तथा घरेलु विषय पर और सर्व धर्म सम्मेलन हुए। वाद विवाद सम्मे प्रधान श्री पंडित भक्तराम जी थे। दान १०००) से प्राप्त हुआ। १५-३-४३ को स्त्री समाज का उत्सव हुआ श्री भक्तराम जी शास्त्री का भाषण हुआ। —प्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा आर्य्य प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित हो
गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

कृण्वन्तो

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक १६
वार्षिक मूल्य ४)
४ अप्रैल १६४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

मुख्याधिष्ठाता जी
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)
२००१

अध्यात्म सुधा

[१६]

दयानन्दोपनिषद्

प्राचीनकाल के ऋषि मुनियों ने आत्म साक्षात्कार करने के बाद वेद मन्त्रों का अनुशीलन और मनन किया था। उसके द्वारा उन्हें वेद के भावार्थ मालूम हुए थे। उस समय की मनुष्य जाति की आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए उन्होंने अपने भावार्थों को लेख बद्ध किया था। ये भावार्थ केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद् आदि के नाम से हमारे सामने उपस्थित हैं। इन उपनिषदों में त्रिकाल सत्य रूप, तत्वों का मनुष्य के पारमार्थिक और व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन किया गया था। इन उपनिषदों ने मनुष्य जाति को स्वर्गीय शान्ति प्रदान की। श्री कृष्ण ने उपनिषदों का अध्ययन कर गीता ज्ञान का उपदेश दिया।

वर्तमान युग में ऋषि दयानन्द ने योग साधन द्वारा ज्ञान साधन द्वारा आत्मसाक्षात्कार किया। वेदों का अनुशीलन किया। यजुर्वेद ऋग्वेद के भाष्य तथा भावार्थ लिखे। इस वेद भाष्य के अर्थ अन्वय, वेद के पण्डितों के लिये विचार और अनुशीलन में सहायक हो सकते हैं। ऋषि दयानन्द वेद भाष्य को केवलमात्र पंडितों तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे। वह "यथे मां कल्याणीम्' में निर्दिष्ट सत्य के अनुसार वेद मन्त्रों की सचाई को साधारण से साधारण जनता तक पहुंचाना चाहते थे। इस प्रकार की साधारण जानता के लिये उन्होंने प्रत्येक मन्त्र के साथ भावार्थ भी लिखे हैं। इन भावार्थों में मनुष्य जाति की वर्तमान आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वेद मन्त्र की भावना के आधार पर सत्य तत्वों का विवेचन किया गया है। यह सत्य तत्व वर्तमान युग की मनुष्य जाति की पारमार्थिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं और समस्याओं को हल करते हैं। परोपकारिणी सभा के प्रमादवश ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य का अधिकांश भाग हमें उपलब्ध नहीं हो सका है। वह भाग अभी तक अप्रकाशित ही हैं, उपेक्षित पड़े रहे हैं। हमने इस कमी को पूरा करने के लिये निश्चय किया है कि इन भावार्थों को निम्न लिखित विषयों के क्रम से संकलित कर पृथक् ग्रन्थाकार में छपवाएं। विषय क्रम इस प्रकार निश्चित किया गया है।

(१) ईश्वर-स्वरूप निदर्शन। (२) आत्म-स्वरूप निदर्शन (३) प्रकृति स्वरूप निदर्शन (४) आश्रम धर्म स्वरूप निरूपण (५) वर्ण धर्म स्वरूप निरूपण (६) स्त्री जाति महिमा निरूपण। (७) सभाध्यक्ष, सभासद् धर्म कर्तव्य निरूपण। (८) विविध विद्या निरूपण। (९) ज्ञान निरूपण। (१०) कर्म निरूपण अथवा धर्मार्थ काम मोक्ष निरूपण। इस ग्रन्थमाला का नाम दयानन्दोपनिषद् रखा जाय और भावार्थ संस्कृत और आर्यभाषा में लिखे हुए दिये जांय। संस्कृत को आधार मानकर आर्यभाषा को सरल हिन्दी का रूप दिया जायगा। वर्तमान समय में समय २ पर आर्य पुरुष अपने परिवारों में गीता उपनिषद् रामायण आदि की कथा कराते हैं—उनमें कई स्थानों पर चिरकाल की पौराणिक वासनाओं के कारण पौराणिक भाव सम्मिलित हो जाते हैं। ऐसे अवसरों पर इस दयानन्दोपनिषद् की कथा आर्यजाति तथा आर्य समाज के लिये विशेष लाभदादायक सिद्ध होगी।

आर्य समाज के सत्संगों में भी इस दयानन्दोपनिषद् के पारायण से, उसके आधार पर की गई व्याख्या से विशेष लाभ होगा। इन दिनों आर्यसमाज बच्छोवाली के साप्ताहिक सत्संग में संध्या हवन कीर्तन के बाद इसी प्रकार से ऋषि दयानन्द कृत भावार्थ का पारायण किया जाता है। 'आर्य' के कुछ अङ्कों में हम इसी क्रम से भावार्थों को प्रकाशित करेंगे। समयान्तर में यह भावार्थ दयानन्दोपनिषद् के रूप में जनता के सामने छपवा देंगे। जो आर्य भाई व आर्य समाजें दयानन्दोपनिषद् के स्थिर ग्राहक बनना चाहें वह सम्पादक आर्य से पत्र व्यवहार करेंगे। अध्यात्म सुधा के इन स्तम्भों में हम इस दयानन्दोपनिषद् के कुछ नमूने पाठकों के सामने रखेंगे। आशा है आर्य भाई इस विषय में अपने विचार भेजने का कष्ट करेंगे। उनको दृष्टि में रखकर दयानन्दोपनिषद् के संकलन में आवश्यक परिवर्तन किये जायेंगे।

यथा किरणास्तथा प्रताप वन्तो मनुष्या राज्ञः समीपे सन्ति कुतस्तेषां पराजयः। अतः सभाध्यक्षादिभि रेतल्लक्षणाः पुरुषाः सुपरीक्ष्य सुशिक्ष्य सत्कृत्योत्साह्य रक्षणीयाः। नैवं विना कश्चिद् राज्यं कर्तुं शक्नुवन्ति।

"मनुष्यैर्विमानादि यानानि रचयित्वा तत्राग्नि वायु जल स्थानानि निर्माय, तत्र२ तानि स्थापयित्वा कलाभिः संचाल्य वाष्पादीनि संनिरुद्धय तानि उपरिनीत्वा पक्षिवत् मेघवच्चा काशमार्गेण यथेष्ट स्थानं सत्वागत्य व्यवहारेण युद्धेन विजयं राज्य धनं च प्राप्यैतैः परोपकारं कृत्वा निरभिमानिनो भूत्वा सर्वानन्दान् अनुभवेते सर्वेभ्यः प्रापयितव्याश्च।"

"सभापति सभाध्यक्ष को चाहिये कि सूर्य की किरणों के समान प्रतापी पुरुषों को अपने पास रखें। ऐसे मनुष्यों के पास रहने से सभापति की हार नहीं होती। सभाध्यक्ष को चाहिए कि उक्त गुण वाले पुरुषों को अच्छी शिक्षा सत्कार और उत्साह देकर अपने पास रखें। ऐसा किये बिना कोई राज्य नहीं कर सकता।"

"मनुष्यों को चाहिए कि विमान आदि रथ बना कर उनमें अग्नि वायु और जल को रखे। कलों से उनको चला कर उनकी भाप को रोक कर उनको ऊपर लेजाय। वहां पक्षियों और मेघों की भांति आकाशमें गमनागमन करके अभीष्ट स्थान को जाकर व्यवहार व व्यापारसे धन कमाएं और युद्धोंको जीत कर आएं। इस धन और राज्य से परोपकार करें निरभिमानी होकर, स्वयं सब प्रकार के आनन्द प्राप्त करें और मनुष्यमात्र को सब प्रकार के आनन्द प्राप्त करायें। ऋ. अ. १ अ. १४ सूक्त ८." —दयानन्द

सूर्य की किरणें अंधकार को नष्ट कर मनुष्यों को प्रकाश और गर्मी देती हैं। उसी प्रकार से सभापति को चाहिए कि दोषों को नष्ट करने वाले ज्ञान और सुख देने वाले मनुष्यों के सहयोग से राज्यशासन करें। इन लोगों की सहायता से विमानादि बनाए इनके द्वारा व्यापार और युद्ध करे और जो सम्पत्ति और विजय मिले उससे स्वयं भी सुखी हो और मनुष्यमात्र को निरभिमानी और परोपकारी होकर सुखी करे। वर्तमान समय के युरोपियन राष्ट्र अभिमानी और स्वार्थी बनकर विमानों से न स्वयं सुखी होरहे हैं न औरों को सुखी बना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

शिव संकल्प का विजय

(श्री हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार)

[२]

(गतांक से आगे)

स्थूल शरीर पर मानसिक संकल्प विकल्प का प्रभाव

(१) सबसे प्रसिद्ध उदाहरण बिचारे गर्दभ का है जो अपने चारों ओर हरियाबल के होने पर भी क्षुधा से पीड़ित हुआ २ दुर्बल हो जाता है, परन्तु ग्रीष्म में सब शस्यों के जीर्ण हो जाने पर हृष्ट पुष्ट शरीर वाला होजाया करता है। कारण यह है कि वह अपने चारों ओर खाली मैदान को देख कर सोचता है कि मैंने तो खाकर सारा मैदान ही खाली कर दिया। बस इस मानसिक संकल्प से ही उसका पेट भर जाता है और वह हृष्ट पुष्ट हो जाता है।

(२) द्वितीय उदाहरण भी प्रसिद्ध है, जिसमें विद्यार्थियों ने पढ़ाई से अवकाश लेने के लिए, अपने अध्यापक महोदय के मन में 'मास्टर जी आज तो आप कुछ अस्वस्थ हैं?' इस प्रकार बारम्बार कथन से (उसके मन में) विकल्प उत्पन्न करके उन्हें सचमुच अस्वस्थ बना दिया।

(३) काम क्रोधादि विकल्पों का प्रभाव झट चेहरे पर दिखाई पड़ता है। भय के विकल्प से चेहरा पीला पड़ जाता है, अङ्गों में कम्प हो उठता है। और अधिक भय के होने पर बीमार भी हो जाता है। भूत प्रेतों के आक्रमण से बीमार हो जाने का रहस्य विकल्प के शरीर पर अनिष्ट परिणाम उपजाने के सिद्धान्त में ही है। एक अवास्तविक वस्तु की भी जब आप मन में कल्पना कर लेंगे तो वह आप पर प्रभाव डाले बिना न रहेगी, यहां प्रभाव का कारण वह वस्तु नहीं अपितु उस वस्तु की कल्पना ही है। इसी प्रकार आपके मन में उत्पन्न हुआ२ क्रोध तथा आपके मन की प्रसन्नता भी आपके चेहरे से पढ़ी जा सकती है। वस्तुतः Face is the index of mind यह लोकोक्ति सत्य है और मन के शरीर पर प्रभाव को स्पष्ट बतला रही है।

(४) मानसिक चिकित्सा द्वारा रोगों की निवृत्ति

यह विषय को स्पष्ट करने के लिए सब से प्रबल प्रमाण है। 'मैं स्वस्थ हूं' इस संकल्प द्वारा ही रोगों को दूर भगाया जा सकता है। मानसिक चिकित्सक रोगी के दिल पर यही दृढ़ निश्चय उत्पन्न करने का प्रयत्न करता है कि मेरे छूते ही सारा रोग दूर भाग जायगा, 'अयं मे हस्तो भगवान् अयं मे भगवत्तरः अयं मे विश्वभेषजः अयं शिवाभिमर्षणः।' इन विश्वासात्मक शब्दों का उच्चारण करके वैदिक चिकित्सक रोगी का रोग हस्तस्पर्श द्वारा दूर करता है। इस चिकित्सा का रहस्य भी संकल्प के प्रभाव में में ही है।

यद्यपि अभी तक रोगी के दिल में संकल्प को [illegible] है। इसी दृष्टि से Indoor games की जाती हैं। कारण यह है कि यदि रोगी सोचता रहा कि 'मैं रोगी हूँ' तो रोग दूर कैसे होगा यह तो बढ़ ही जायगा।

निद्रा के अनन्तर रोग विश्रान्ति का अनुभव प्रायः सब को है यहां भी रहस्य निद्रा की अवस्था में 'मैं रोगी हूँ' इस प्रकार के विकल्प के न उत्पन्न होने में ही है।

(५) पांचवां उदाहरण फलित ज्योतिष सम्बन्धी है जिसमें कि ज्योतिषी महाराज की अपार दया से 'मैं १७ साल की अवस्था में मर जाऊँगा' इस निरन्तर के विकल्प से उस अभागे को मृत्यु का शिकार बनना ही पड़ता है।

(६) शाबाश देने से भी क्या होता है? खिलाड़ी के दिल में विश्वास तथा विजय का संकल्प उत्पन्न हो जाता है परिणामतः उसके शरीर में एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती है। घोड़े भी इस शाबाश से प्रोत्साहित होते हुए देखे जाते हैं।

(७) अकबर बीरबल नाम से भेड़ के एक रस रहने का उदाहरण भी भय रूप मानसिक विकल्प के शारीरिक प्रभाव को स्पष्ट कर रहा है।

(८) वैद्यों द्वारा बिना रुधिर बहाये मृत्यु वाला किया हुआ परीक्षण भी विकल्प के शरीर पर घातक परिणाम को बतलाता है।

(९) संकल्प विकल्प का शारीरिक प्रभाव इस से भी स्पष्ट है कि विद्यार्थियों का भार यात्रा के दिनों के आस पास बढ़ जाता है पर परीक्षा के दिनों के आस पास न्यून हो जाता है।

इन सब उदाहरणों से शरीर पर संकल्प विकल्प का प्रभाव स्पष्ट है।

सूक्ष्म शरीर पर मन का प्रभाव

(बुद्धि तथा चित्त पर)

शिव संकल्प के मन्त्रों में मन को 'यत्प्रज्ञानम्' ऐसा कहा है उसी के भाष्य में श्री स्वामी जी ने 'ऋतम्भरा प्रज्ञा साधनम्' इन शब्दों का उल्लेख किया है। 'प्रजानाति येन तत्प्रज्ञानम्' इस व्युत्पत्ति से मन ही पूर्ण ज्ञान का साधन है ऐसा स्पष्ट विदित होता है। वस्तुतः यदि मन का संयम करके उसे एक विशेष दिशा में प्रेरित करें तो उसके लिए मार्ग में किसी भी प्रकार की रुकावट नहीं हो सकती। 'अतीतानन्तवित्रकृत्' सब वस्तुओं का यह ग्रहण कर सकता है। योग विद्या का तत्व यही है उसमें योगी मन पर काबू पाकर परोक्ष वस्तुओं का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। उससे कोई बात छिपाई नहीं जा सकती। वेद मन्त्र भी 'येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्' इन शब्दों द्वारा उपरोक्त कथन को स्पष्ट कर रहा है।

यह बात हुई संकल्प की। इसके विपरीत यदि मनुष्य पति क्षण विकल्प ही, Imaginations ही में उड़ता रहे तो वह कुछ पागलपन की ओर झुक जाता है उसकी बुद्धि में विकार उत्पन्न हो जाता है। Great wits are sure to madness near allied [illegible] को पुष्ट कर रही है। वस्तुतः [illegible] विकार का कारण होजाती है।

इससे भी बढ़कर मन में [illegible] ल्पों के अधिक होने पर तो बुद्धि [illegible] हो जाता है। क्रोधाद् भवति [illegible] के वचन में मूढ़ता का मूल क्रोध [illegible] ही बतलाया है। क्रोध में ज्ञान [illegible] हो जाता है कि पिता अपने पुत्र [illegible] मकान से गिरा कर नष्ट कर [illegible] लिए वह सब कुछ सम्भव हो जाता [illegible] क्रूर अज्ञानी पशु के लिए सम्भव है।

अब हम मन का चित्त पर [illegible]

वेद मन्त्रों में 'यत्प्रज्ञानम्' के [illegible] इन शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। [illegible] चित्त का मूल बतला रहे हैं। 'चेतति' इस व्युत्पत्ति से उपरोक्त भाव स्पष्ट [illegible] व्याख्या 'यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्र[illegible] भाग कर रहा है।

प्रत्येक विद्यार्थी का अनुभव [illegible] सहयोग होने पर पाठ अच्छी तरह [illegible] तथा मन के अन्यत्र विचरते हुए [illegible] स्मरण किया हुआ भी भूल [illegible] सामान्य अनुभव से ही मानसिक [illegible] का स्मृति विस्मृति पर प्रभाव स्पष्ट [illegible]

अहंकार पर

मन ज्ञानोत्पत्ति द्वारा अहं[illegible] डालता है। मानसिक संकल्प के [illegible] के होने पर अहम्भाव का बिल्कुल [illegible] है। गीता के कर्म योग का आधार [illegible] मनुष्य मन के संयम द्वारा उत्तम ज्ञा[illegible] कर्तृत्व के अहंकार का नाश कर दे [illegible] कर्मों का लोप न होगा। 'यस्य ना[illegible] बुद्धिर्यस्य न लिप्यते। हत्वापि स [illegible] हन्ति न निबध्यते॥' १८।१७। इसके [illegible] किञ्चिज्ञोहं द्विप इव मदान्धः सम[illegible] सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः [illegible] अल्पज्ञान की सत्ता में अहंकार की [illegible] उस समय मनुष्य 'यक्ष्ये दास्यामि [illegible] मैं यज्ञ करूंगा, दान दूंगा, मुझे बड़ा आनन्द मिलेगा।" 'आढ्याभिजन [illegible] न्योस्ति सदृशो मम' और मैं धनी त[illegible] मेरे जैसा और है कौन? इस प्रकार [illegible] है इस घमण्ड के कारण उसमें कर्मों [illegible] है और वह बन्ध को प्राप्त होता है।

इस प्रकार मन ही अहंकार को [illegible] करके मोक्ष व बन्ध का कारण होता [illegible] 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध [illegible] कथन बिल्कुल सत्य है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार ४ अप्रैल १९४३

आर्य समाज का स्थापनादिवस

ऋषि तर्पण यज्ञ

-४-१९४३ को भारतवर्ष के आर्य समाजों में
समाज का स्थापना दिवस मनाया जायगा।
यानन्द को अपना आचार्य मानने वाले आर्य
के लिये यह अवसर 'ऋषितर्पण यज्ञ' के
निर्दिष्ट किया जा सकता है। आज हम
को ऋषि-ऋण से उऋण होने के संकल्प को
पवित्र भावनाओं से दृढ़ करने का अवसर
है। हरेक आर्य भाई को सार्वजनिक समा-
सम्मिलित होने से पहले, अपने २ घरों में
ऋषि दयानन्द के उपकारों का स्मरण करते
आर्य समाज के १० नियमों का विशेष रूप से
था अनुशीलन करना चाहिए। घर में बालक
ाओं तथा परिवार के सदस्यों को ये १०
कण्ठ कराकर उनकी संक्षिप्त मनोरंजक
या करनी चाहिए।

—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से
ाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार,
क्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त,
ाम, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर,
ापाक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय,
पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना
योग्य है।

—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद
ना पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्य्यों का
र्म है।

—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के
में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और
को विचार कर करने चाहियें।

—संसार का उपकार करना आर्यसमाज का
द्देश्य हैं, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और
निक उन्नति करना।

—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य
वाहिये।

—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि
वाहिये।

—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न
वाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी
समझनी चाहिए।

—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी
ालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक
ी नियम में स्वतन्त्र रहें।

१० नियम ऋषि दयानन्द की गम्भीर

हम मनुष्य मात्र को आर्य-श्रेष्ठ-पुरुषों का समाज बनाना चाहते हैं तो हमें इन नियमों को केवलमात्र आर्य समाजों—आर्य हिन्दु जाति—भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। हमें इनका प्रचार दसों दिशाओं में रहने वाले मनुष्य-समाज तक करना चाहिए। यदि हम इन दस नियमों का गम्भीर दृष्टि से चिन्तन करें तो हमें पता लगेगा कि इन नियमों की विशेषता यह है कि यह व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में समान रूप से चरितार्थ हो सकते हैं। संसार को आर्य बनाने का सरल स्पष्ट सीधा उपाय यह है कि हम आर्य समाज के आन्दोलन को इन दस नियमों पर विशेष रूप से केन्द्रित करें। सत्यार्थ प्रकाश के १० समुल्लासों को इन १० नियमों की व्याख्या समझकर उसका अध्ययन तथा अध्यापन करें। हमें दस उपनिषदों में इन १० नियमों की व्याख्या ढूंढनी चाहिए। ५ यम ५ नियमों में दस नियमों की छिपी हुई ध्वनि सुननी चाहिए। यदि हम इस प्रकार की लगन से आर्य समाज के नियमों का पालन करेंगे तभी हम आर्य समाज के उद्देश्य तथा आदर्श को भली भाँति समझ सकेंगे।

आज हमारे देश में पाकिस्तान, हिन्दुस्तान, खालसास्तान और जाटस्तान और अंगरेज़ स्थान कायम करने के आन्दोलन चल रहे हैं आर्य पुरुषों के सामने भी यह समस्या है कि वह क्या करें—। आर्य समाज के स्थापना दिवस पर हमें भी इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए। ऋषि दयानन्द की दिव्य दृष्टि ने इस आने वाली समस्या को समझकर इसका हल अपने ग्रन्थोंमें निर्दिष्ट करदिया था। ऋषि दयानन्द ने उसका हल यह बताया था कि जन्म के कारण माने जाने वाले भेदभावों को नष्ट करो। गुण कर्मानुसार धर्म देशजाति को स्वीकार करो। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने यह लिखा कि आर्यावर्त में आर्यस्थान में—भारतवर्षमें रहने वालों को—भारत को जन्मभूमि माननेवाले को राष्ट्रीय दृष्टि से आर्य मानो। इस दृष्टि से मुसलमान भी आर्य है, हिन्दु, पारसी, सिक्ख सब आर्य हैं। किसी का कोई मजहब—मत व धर्म क्यों न हो हरेक भारतवासी को एक दूसरे को स्वदेश भाई समझो। फिर पाकस्तान या खालसास्थान या अंगरेजस्तान बनने की गुंजायश ही न रहेगी। यदि हिन्दुओं ने—मुसलमानों को म्लेच्छ समझ कर उनसे घृणा न की होती—यदि अंगरेज़ों ने मुसलमान राजवंशों की भांति भारतवर्ष को अपनी मातृभूमि मान लिया होता; सिक्ख भाइयों ने १० गुरुओं को पंजाब तक सीमित न किया होता—भारतवासियों ने हाथ का काम करने वाली छोटी हैसियत की जातियों को अछूत न समझा होता तो आज भारतवर्ष में यह पाकस्तान, हिन्दूस्थान और खालसास्थान की आवाजें सुनाई न देतीं।

इन आवाज़ों को शान्त करने के लिये आर्य समाज को आगे कदम बढ़ाना चाहिए। भारतवर्ष में रहने वाली सब सोसायटियों में सामाजिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation and eGangotri

जन्ममूलक भेदभावों को छोड़कर, जातपाँत बन्धनों को छिन्न भिन्न कर विवाह सम्बन्ध कायम करने चाहिए। आर्य जाति को विविध श्रेणियों और जात पातों में बाटने वाले आन्दोलनों का विरोध करना चाहिए। आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मनुष्य समाज को आर्य जाति की दीक्षा में दीक्षित करना है। इसके लिये ऋषि ने मनुष्य जाति को वेद संहिताओं के अपनाने और ईश्वर पूजा का उपदेश दिया है। हरेक मनुष्य को वेद पढ़ने चाहिए और केवलमात्र ईश्वर की पूजा करनी चाहिए। किसी व्यक्तिविशेषकी पूजा न करनी चाहिए। कुछ समय पूर्व योरप के विद्वान् वेद संहिताओं को ग्रामगीत समझते थे परन्तु अब वे लोग भी वेद संहिताओं की उदारशिक्षा का सिक्का मानने लगे हैं। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब वेद संहिताओं से अपनी २ आत्मा अपने २ सम्प्रदायों को उन्नत बनानेके लिये शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इन में किसी जाति विशेष व देश विशेष के प्रति रागद्वेष की भावना नहीं है।

इनमें ईश्वर पूजा-सत्य पूजा और मनुष्य मात्र को भाई २ समझने का आदेश है। कुछ समय से आर्य समाज के आन्दोलन का ऐसा रूप हो गया है कि दूसरे धर्मों वाले आर्य समाज के समीप नहीं आते। हमें अपनी उदारता तथा मधुर स्वभाव से इस कमी को दूर करना चाहिए। इसके लिए हमें अपने घरों में—अपने परिवारों में वेद का अध्ययन और ईश्वर पूजा की व्यवस्था करनी चाहिए। आर्यजाति के अन्तर्गत हिन्दू जाति के जन्म मूलक जाति पांत के भेदों को समाप्त करना चाहिए। हरेक आर्य को भाई भाई समझ कर उसके साथ गुण कर्मानुसार विवाह सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए। जब तक हम परिवर्तन नहीं करेंगे तब तक हम आर्य समाज के उद्देश्य तथा आदर्श को पूर्ण नहीं कर सकेंगे।

—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में नये बालकों का निर्वाचन २३ से २६ अप्रैल, ४३ तक ईस्टर की छुट्टियों में गुरुकुल के अवसर पर होगा। जो सज्जन अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराने के इच्छुक हैं उन्हें शीघ्र ही प्रार्थनापत्र भेज कर स्वीकृति प्राप्त कर लेनी चाहिये। नियमावली तथा प्रवेशपत्र कार्यालय गुरुकुल काँगड़ी (सहारन पुर) से मंगाइये।

—मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी।

—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रारम्भ काल में ब्रह्मचारियों के अधिष्ठाता तथा अध्यापक वृद्ध मुंशी मोहनलाल जी का मार्च मास के अन्तिम सप्ताह में श्री हरगोविन्दपुर में देहान्त हो गया। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें। उनकी आयु लगभग ८० साल की थी।

—सर छोटूराम ने अखिल भारतवर्षीय जाट कान्फरेन्स में हिन्दू मुसलिम सिख सब जाटों को एक संगठन में संगठित करने की घोषणा की है। इसके लिये दो लाख रुपये की अपील की है।

स्वास्थ्य संरक्षा

पाचन-प्रक्रिया

[श्री प्रसाद]

आधुनिक विज्ञान के अस्तित्व का सबसे बड़ा उपयोग यही है कि वह स्वाभाविक स्वास्थ्य-शास्त्र की उस सहज बुद्धि का समर्थक है, जो प्राकृतिक जीवन और प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली की आधार-शिला है।

यदि विज्ञान कहीं इस सहज बुद्धि के प्रतिकूल जाता हुआ प्रतीत हो, तो वह विश्वास का पात्र नहीं है। हमको कई ऐसे उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें विज्ञान को अपनी स्थापनाओं का खंडन स्वयं करना पड़ता है और प्राकृतिक स्वास्थ्य-शास्त्र की सचाई को मानना पड़ता है। इस विषय में स्वाभाविक स्वास्थ्य-शास्त्र आत्मा की साक्षी के आधार-युक्त धर्म के ही समान है। विज्ञान की उपयोगिता तो कोरे बुद्धिवादियों को प्राकृतिक नियमों के औचित्य को समझाने के लिए ही है और कभी कभी वह स्वाभाविक स्वास्थ्य-शास्त्र की उग्र अनुयायियों की अतिशयोक्तियों को भी सुधार देता है। हमारे देह के पाचन संस्थान के विषय में यह बात पूरी जागू है। विज्ञान के द्वारा केवल उसके समझने में ही सहायता मिलती है। पाचन को ठीक ठीक संचालन का ज्ञान तो सहज बुद्धि गम्य ही है। पाचन की प्रक्रिया ठीक ठीक चलती रहने के लिए किसी वैज्ञानिक साक्षी की आवश्यकता नहीं है। प्रकृति के नियमों पर चलते हुए जन्तु का स्वास्थ्य प्राकृतिक अवस्था में स्वयमेव बना रहता है।

हमारे जीवन के लिए आवश्यक प्रक्रिया हमारे मस्तिष्क के उस विभाग के द्वारा होती है, जिसका कार्य नाड़ियों की स्वतन्त्र चेष्टा वा स्वैच्छिक गति से चलता रहता है। पाचन संस्थान का प्रधान अंग महास्रोतः प्रणाली वा अन्नमार्ग (Alimentary canal) कहलाता है। अन्य अंग उसके सहायक हैं। ये अंग हमारे जीवन-तत्व के परतन्त्र यन्त्र मात्र हैं। हमारे मस्तिष्क से चलकर इन अंगों की ओर आने वाली बहुसंख्यक नाड़ियां हैं जो हमारी मस्तिष्क की प्रेरणाओं वा आज्ञाओं को इन अंगों तक पहुंचाती हैं और अन्य ऐसी नाड़ियां भी हैं, जो इन अंगों की समवेदनाओं व अनुभूतियों को मस्तिष्क तक ले जाती हैं। यदि मस्तिष्क वा नाड़ियों का यह विभाग किसी कारणवश क्रियाशून्य हो जाय वा निर्बल पड़ जाय तो पाचन को अवश्य हानि पहुंचती है। इस विषय से संबद्ध अन्य सूक्ष्म तत्वों का सविस्तर निरूपण आगे होगा।

महास्रोतस् वा अन्न मार्ग एक लम्बा मार्ग है। उसका प्रारम्भ मुख से होकर अन्त गुदद्वार वा पायुद्वार पर होता है। वह अधिकांश नलिका के रूप में है। केवल आमाशय इसका अपवाद है। क्योंकि आमाशय का रूप थैले के समान है।

महास्रोतः वा अन्न मार्ग में निम्न लिखित, अंग हैं—(१) मुख, (२) अन्नन लका वा अन्नप्रणाली, (३) आमाशय, (४) क्षुद्रान्त्र, (५) बृहदन्त्र, (६) गुदनलिका तथा (७) पायु। इनके अतिरिक्त लालाग्रन्थियां, यकृत और अग्न्याशय भी पाचन में सहायक होते हैं। ये अंग पाचन संस्थान के बाहर हैं। इनसे पाचक रस निकलते हैं जो पाचन संस्थान में आकर पाचन में सहायता देते हैं।

मुख में दांत भोजन को चबाते हैं। लालाग्रन्थियों से निकलने वाला लालारस भोजन में मिलकर उसे चिकना बनाता है। जिह्वा भोजन को उलट पलट कर दांतों के बीच में ठीक से भेजती है। भोजन के साथ कुछ वायु भी पेट में चली जाती है। मुख में भोजन का पाचन नहीं होता। मुख में भोजन का पाचन मानने वाले लोग भूल करते हैं

सामान्य बुद्धि

श्री उदयवीर

ई मुझ से कोई पूछे कि मनुष्य के लिए सबसे
ारण क्या वस्तु है? तो तुम मुझसे किस
की आशा करते हो? धन? नहीं वह तो
के पास है और बहुत जगह तो वह बिल्कुल
है। तो फिर विद्या? पता नहीं कितने विद्वान्
ाय्याँ में भूखे मर गए, जीवन के क्षेत्र में नितांत
ा और लोगों की आंखों से दूर ही दूर गुज़र
विद्या का इतना भी फल नहीं कि वह कीर्ति
ा भोजन भी दे सके! वह किस काम की?
ुल से लोग शायद धन और विद्या से आगे
चीज़ को महत्व न देना चाहेंगे। शिक्षा और
ा के इतिहास में जिन चीज़ों का इतना प्रभाव
ा को आगे जाने की सामान्य प्रवृत्ति न होगी।
किसी चीज़ की असाधारणता का निर्णय
के लिए हमारी कसौटी क्या होनी चाहिए।
झता हूँ कि जिस वस्तु के कारण मनुष्य इस
में धन और अपने बाद के लिए कीर्ति
कर सके और मरते समय अनुभव कर सके
ने अपना जीवन व्यर्थ नहीं खोया है वही
नुष्य के लिए असाधारण है।
ःसंदेह विद्या और धन इस कसौटी पर
ीं उतरते।

ार आप सोचते होंगे कि मैं शायद विलक्षण
को यह उच्च स्थान देने जा रहा हूँ कि विद्या
ान जिसके नीचे हैं। प्रतिभा के महत्व और
असाधारणता से मैं इनकार नहीं करता
मैं जिस चीज़ की ओर संकेत करना चाहता
कि विद्या, धन और प्रतिभा से भी ऊपर है
"सामान्य बुद्धि'।

तिहास के पन्नों में से हम कुछ चमकते पात्रों
ा सकते हैं जिनके बारे में आज कल यह
न्य धारणा है कि वे महान् थे और सफल
इस विषय में स्वदेश तथा विदेश दोनों के पात्र
ा सकते हैं।

तिहासिक काल से पहले के व्यक्तियों के बारे
छ कहना कठिन है। ऐतिहासिक काल में
ही हमें अपने निर्णय की सचाई स्पष्ट हो जाती
भारत का किसी समय एक छत्र सम्राट्
गुप्त अपनी सामान्य बुद्धि के आधार पर ही
ऊँचा उठ सका। शायद कुछ लोग कहें कि
ुप्त के सम्राट् बनने में अवसर और प्रतिभा
ा थी। किन्तु अवसर को हर एक आदमी
ाकड़ सकता और उसे पकड़ने में सामान्य
की बड़ी आवश्यकता है। अवसर हज़ारों को
और उस समय भी कई राजा ऐसे थे जिन्हें
ुप्त की अपेक्षा भारत सम्राट् बनने का अधिक
ार था जैसे पर्णतेश्वर, मलयकेतु किन्तु
ा भी चाणक्य में चन्द्र गुप्त से कहीं अधिक थी
ु जो चीज़ बनाती है वह सामान्य बुद्धि चन्द्र-
में ही थी।

शिवा जी—जिसने मुगलों की शक्ति को तोड़
कर नष्ट कर दिया—के विषय में कहा जा
ा है न वे धनी ही थे और न विद्वान् ही।
उस महान् सेनापति को अन्तिम दम तक अपना राज्य न बसाने दिया और जिस सामान्य बुद्धि के अभाव के कारण महाराणा प्रताप के तथा उसके सब साथियों के बलिदान व्यर्थ होगए। उस सामान्य बुद्धि की शिवा जी में कमी न थी।

वीरता बड़ी चीज़ है। विक्रम, अशोक, प्रताप, सिकन्दर, सीज़र और नैपोलियन वीरता के कारण ही इतिहास के आकाश में जगमगा रहे हैं। किन्तु वीरता सामान्य बुद्धि के बिना मिट्टी जैसी अर्थहीन है। कर्ण संभवतः अर्जुन से अधिक वीर था। प्रताप के राजपूत सैनिक मुग़ल सिपाहियों से कहीं अधिक शूर एवं साहसी थे। पोरस सिकन्दर से शायद कई गुना वीर था। ड्यूक आफ़ वेलिंगटन की नैपोलियन के असीम साहस से क्या तुलना? पर खाली वीरता ही थी न? वे अवसर को न पकड़ सके जिसे कि सामान्य बुद्धि का मनुष्य कभी छोड़ नहीं सकता।

सामान्य बुद्धि के मनुष्य बड़े मज़े से धीमे धीमे उन्नति की ओर सरकते जाते हैं और जब वे बहुत उठ जाते हैं तो हमें आश्चर्य होने लगता है। हम समझते हैं शायद इनमें कोई अलौकिकता थी।

अब इसमें क्या अलौकिकता है कि सावरकर को मार्सेल्स के पास यह सूझ गया कि इस समय जहाज़ से कूद कर आत्मरक्षा की जा सकती है। एक अवसर था और कैदियों को भी था पर अवसर को पकड़ने के लिए 'सामान्य बुद्धि' ही चाहिए। 'सामान्य बुद्धि' और सचमुच 'सामान्य बुद्धि' ने ही गांधी को गांधी बना दिया। नहीं तो किसी अंग्रेज़ के अपमान करने पर अपमान अनुभव करना और उससे उत्तेजित होना कौनसी अलौकिक चीज़ है?

अवसर को पकड़ना और उसके अनुसार काम करना ही सामान्य बुद्धि है। और प्रतिभा इससे एक दम भिन्न चीज़ है।

असाधारण प्रतिभा शाली बंगाल का महाकवि मधुसूदन एक असफलता का अनुभव करता हुआ बंगाल के एक धर्मार्थ औषधालय में मर गया। उसपर कुछ हज़ार ऋण भी था यह जान कर 'धर्मार्थ' का महत्व और बढ़ जाता है।

प्रतिभा, वीरता की भांति बिल्कुल व्यर्थ है यदि साथ में 'सामान्य बुद्धि' न हो।

प्रसिद्ध है कि वे लोग जो कि विद्यार्थी जीवन में प्रथम रहा करते थे आगामी वास्तविक जीवन में प्रायः असफल रहे। कारण स्पष्ट है कि पोथियों के पन्ने रगड़ रगड़ कर उन्होंने सामान्य बुद्धि का विकास होने ही नहीं दिया। कुछ नाम गिनाता हूँ जिनसे स्पष्ट हो जायगा कि सफलता के लिए खाली विद्या की कोई आवश्यकता नहीं। प्रताप, शिवा जी, सिकन्दर नैपोलियन, हिटलर, नेल्सन, हंसराज वायरलैस, एडीसन, स्टिफिन्सन, शरच्चन्द्र, तुलसीदास, होमर, सूरदास,। इसमें से एक ने भी उच्च शिक्षा नहीं पाई थी। केवल उच्च शिक्षा ने किसी को सफल कर दिया ही मुझे ध्यान नहीं आता। हो सकता है कोई एक आध हो भी किन्तु उनकी संख्या

आर्यसमाज का स्थापना दिवस

५.४.४३ को मनाइये

कार्यक्रम

संकीर्तन—

प्रातःकाल नर-नारी अपने अपने ग्रामों व नगरों में संकीर्तन और उसके बाद सन्ध्या हवन करें।

सार्वजनिक सभा—

दोपहर या सायंकाल को (स्वसुविधानुसार) आर्य मन्दिरों इत्यादि में सार्वजनिक सभाएं की जाएं और सभा में आर्य पव पद्धति के अनुसार प्रथम सरस्वती (वेदवाणी) की महिमा के प्रदर्शक वेदमन्त्रों का पाठ, प्रवचन और व्याख्या हो। तत्पश्चात् आर्य समाज स्थापना दिवस की स्मृति में आर्य समाज की स्थापना के इतिहास, आर्य समाज की उपयोगिता और उसके भावी कार्यक्रय पर निबन्ध पाठ तथा भाषणादि किये जाएं।

वेद-प्रचार-निधि के लिये अपील—

इस दिन की सार्वजनिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद-प्रचार-फण्ड के लिये अधिक से अधिक धन संग्रह करके बलिदान-भवन देहली के पते पर उसे तुरन्त भेज दिया जाए जिससे सभा देशदेशान्तरों में वैदिक धर्म प्रचार कार्य का अधिक विस्तार कर सके। सब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की सहमति से सभा ने गत ३ वर्षों से यह निश्चय किया हुआ है कि आर्यसमाज स्थापना-दिवस के पवित्र उपलक्ष्य में प्रत्येक आर्यसमाज अपने सभासदों से उनके परिपार के प्रत्येक व्यक्ति पर कमसे कम ।) के हिसाब से और प्रत्येक आर्य से कम से कम ।) के हिसाब से एकत्र कर के सभा की वेद-प्रचार-निधि के लिये भेजे। यह कम से कम राशि धार्मिक-कर के रूप में है, वैसे तो जितनी भी अधिक राशि आर्य नर नारी दान-रूप में वेद-प्रचारार्थ देंगे वे उतने ही पुण्य के भागी होंगे। आशा है आप इस वर्ष पूरे उत्साह से दान की राशि एकत्र करके न्यून से न्यून ५०) भेजने की कृपा करेंगे कृपया इस आवश्यक कर्त्तव्य को न भूलिये ताकि पुनः इस दान को एकत्र करने में समय और शक्ति का व्यय न करना पड़े।

इन्द्र विद्यावाचस्पति,
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

विद्या, धन, प्रतिभा, वीरता से मनुष्यों की योग्यताएं हैं। इनमें बड़ी शक्ति है। किन्तु यदि ये चारों भी किसी एक में हों और वह अपने जीवन के अन्त में असफल रहे तो मुझे आश्चर्य न होगा। इनका स्वतः मूल्य न के बराबर है अगर इनके साथ 'सामान्य बुद्धि' न हो। सामान्य बुद्धि का पारस इन लोहे के टुकड़ों को मानव जीवन के लिए सोना बना देता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवृकामा और नियोग

[श्री सातवलेकर जी]

बहुत से आर्यसमाजी लेखक मानते, और लिखते हैं कि 'देवृकामा और 'नियोग' के विषयों का झगड़ा मैंने खड़ा किया है, पर यह सत्य नहीं है। इस विषय पर मेरे लेख गत चार वर्षों में ही प्रकाशित हुए हैं। इससे पूर्व मैं अजमेर वैदिक यंत्रालय मुद्रित पाठ को ही ठीक समझता था। जब स्वाध्याय मण्डल में ऋग्वेद का मुद्रण शुरू हुआ और लिखित, मुद्रित तथा मौखिक पाठों की पड़ताल करने का अवसर उपस्थित हुआ, तब मुझे पता लगा कि, ऋग्वेद में 'देवृकामा' पद नहीं है। उससे पूर्व इस बात का पता मुझे नहीं था, परन्तु यह बात इससे बहुत काल पूर्व बहुत से आर्य समाज के विद्वानों के मन में खटक रही थी।

इस विषय के प्रमाण देखिये—

विवाह विधि में नियोग की प्रतिज्ञा करने का निषेध।

अजमेर वैदिक यंत्रालय की संस्कार विधि में 'देवृकामा' पाठ विवाह विधि में लिखकर उसका अर्थ—'देवर की कामना करने वाली अर्थात् नियोग की भी इच्छा करने वाली' ऐसा छपा है। इसकी तुलना निम्न लिखित लेखों के साथ कीजिये—

(१) श्रीमती बंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा (बंबई) आर्यन रोड, आनन्द, की ओर से संस्कार विधि की पुस्तक गुजराती भाषा में सन् १९३५ में छपी है। यह चतुर्थ वार की छपी है। इससे पूर्व तीन बार यही पुस्तक छपी थी। इसके अनुवादकर्ता श्री पं० मया शंकर शर्मा, आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय आनन्द हैं। इस पुस्तक में (देखिये पृष्ठ २५३) 'देवृकामा' पद छपा है, पर इसका अर्थ (गुजराती में) देवरनी कामना कर नारी' इतना ही छपा है।

अजमेर वैदिक यंत्रालय में इसके आगे "अर्थात् नियोग की भी इच्छा करने हारी' इतना अधिक है, यह नियोग वाला वाक्य इस गुजराती अनुवादकर्ता ने छोड़ दिया है, और अपनी ओर से एक टिप्पणी गुजराती भाषा में छापी है, जिसका भाषानुवाद यह है—

[इस स्थान पर 'देवकामा' ऐसा पाठ कई पुस्तकों में मिलता है और वही वास्तविक सत्य दीखता है। ऐसा पाठ मानने पर इसका अर्थ यह होता है कि गृहस्थाश्रम में पञ्च यज्ञानुकूल अर्थात् उसमें सहायता करने हारी हो]—देखिये गुजराती संस्कार विधि पृ० २५३।

यह संस्कार विधि की पुस्तक और उस स्थान पर यह टिप्पणी श्रीमती बंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने छापी और आर्य समाज के चलाये गुरुकुल विद्यालय के मुख्य आचार्य जी ने ही यह टिप्पणी लिखी है।

इस पुस्तक का चतुर्थ वार का मुद्रण सन् १९३५ में अर्थात् आज से आठ वर्ष पूर्व हुआ था। उस समय इस बात का मुझे पता तक नहीं था। यह चतुर्थ वार की संस्कार विधि है। प्रथम [illegible] पूर्व २० वर्ष छपी थी। अर्थात् आज संस्कार विधि से नियोग का वाक्य उड़ा दिया था और 'देवृकामा' पाठ से 'देवकामा' पाठ शुद्ध है, ऐसा लिखा था। गुजरात प्रदेश के सब आर्य, और आर्योपदेशक इसी गुजराती अनुवाद से अपने संस्कार करते हैं और इनमें एक भी ऐसा नहीं है जो विवाह संस्कार में 'नियोग की प्रतिज्ञा' का उच्चारण करता हो।

(२) सन् १९०७ में बंबई में श्री शामराव कृष्ण जी ने संस्कारविधि में से 'विवाह संस्कार' मराठी भाषा में अनुवाद करके छापा था। तथा पं० लक्ष्मणराव जी ओगले, उपदेशक आर्य समाज बंबई ने सन् १९३३ में 'वैदिक विवाह पद्धति' नामक एक पुस्तक मराठी में छापी थी। ये दोनों पुस्तकें संस्कार विधि से ही मराठी भाषा में अनूदित की गई थीं और इन दोनों पुस्तकों के लेखक और प्रकाशक कट्टर आर्यसमाजी ही थे।

उक्त दोनों पुस्तकों में 'देवृकामा' पाठ माना है पर दोनों ने 'देवरों को सुख देने वाली, उनसे विरोध न करने वाली' ऐसा अर्थ किया है। यहां भी इन्होंने 'नियोग की भी इच्छा करने हारी' यह हिंदी संस्कार विधि का वाक्य नहीं लिया है। यह ३६ वर्षों के पूर्व का अनुवाद है।

(३) संवत् १९८२ सन् १९२६ में श्री पं० भीमसेन शर्मा जी, आगरा निवासी, मुख्याध्यापक महाविद्यालय ज्वालापुर तथा मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी; राजरत्न बड़ौदा, इन दो कट्टर आर्यसमाज के विद्वानों के द्वारा संपादित होकर मुद्रित हुई 'संस्कार चन्द्रिका' में विवाह संस्कार में (उत्तरार्ध पृ. ११ पर) इस मंत्र में 'देवृकामा' पाठ माना है, पर इसका अर्थ 'देवर की शुभ कामना करती हुई' ऐसा किया है।

यहां भी 'नियोग की इच्छा करने हारी' यह अर्थ लिखा नहीं हैं, इतना ही नहीं परंतु 'देवर की कामना करती हुई' के स्थान पर 'देवर की शुभ कामना करती हुई' ऐसा लिखा है अर्थात् देवर की सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली हो ऐसा नहीं कहा प्रत्युत 'देवर की जितनी शुभ कामनाएं होंगी उतनी ही शुभ कामनाएं करने वाली हो' ऐसा अर्थ इन दो विद्वान् महानुभावों ने लिखा है। यहां भी नियोग परक प्रतिज्ञा का निर्देश तक नहीं किया है।

पं० भीमसेन शर्मा जी और मास्टर आत्माराम जी के आर्य सिद्धान्तों के प्रेम के विषय में किसी को भी संदेह नहीं हो सकता। इन दोनों विद्वानों ने अपने ही विवाह विषयक ग्रन्थ में नियोग का निर्देश तक नहीं किया यह देखने योग्य है।

यह 'संस्कार चन्द्रिका' ग्रन्थ करीब ३० वर्षों के पूर्व प्रकाशित हुआ और यह सब आर्य समाजियों को प्रिय है। संवत् १९८२ में इसका चतुर्थ वार मुद्रण हुआ जिसमें से ऊपर के स्थान में उद्धृत पंक्ति है।

इससे पाठकों को पता लगेगा कि ऊपर लिखे कट्टर आर्यसमाजी विद्वानों ने भी विवाह संस्कार में नियोग की प्रतिज्ञा करने के विधान को स्वीकार नहीं किया और मूल संस्कारविधि (हिन्दी) के लिये परक वाक्य को अपने ग्रन्थों में स्थान तक दिया नहीं और यह सब ३० वर्ष पूर्व की

सत्यार्थ प्रकाश की सा[illegible]

'देवृकामा' वाला मन्त्र सत्यार्थ चतुर्थ समुल्लास में है और वहां इस 'देवर की कामना करने वाली' इत[illegible] है। यहां 'नियोग की भी इच्छा करने अर्थ नहीं है। जितने सत्यार्थ प्रका[illegible] मुद्रित हुए हैं उन सब में उतना ही 'नियोग की इच्छा' वाला वाक्य किसी प्रकाश में नहीं है।

उर्दू में सत्यार्थ प्रकाश का स्वर्ग[illegible] पति जी ने अनुवाद किया और प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सन् प्रकाशित किया। इसमें पं० चमूपति कामा' का अर्थ 'देवर से मोहब्बत [illegible] किया है। अर्थात् मूल सत्यार्थ प्रका[illegible] की कामना' का पं० चमूपति जी का [illegible] की मोहब्बत' है। हिंदी के वाक्य का था जो पं० चमूपति जी ने स्पष्ट कर दि[illegible] अर्थ मराठी सत्यार्थ प्रकाश में लिया आर्य प्र० सभा ने छापा है।

इस लेख में मैंने यह बताया कि वि[illegible] से नियोग की प्रतिज्ञा को उड़ा देने का [illegible] वर्षों के पूर्व ही उक्त आर्य पण्डितों ने मेरे लेख केवल गत चार वर्षों के [illegible] विवाह विधि से नियोग की प्रतिज्ञा को [illegible] हलचल ३५ वर्ष पूर्व से कट्टर आर्यसमा[illegible] की चलाई है।

पं० रामचन्द्र जी हैड मास्टर [illegible] अम्बाला वालों ने लिखा है कि ३५ व[illegible] विवाह विधि से नियोग की प्रतिज्ञा को प्रश्न आर्य पण्डितों में उपस्थित हुआ। स्वर्गीय लाला लाजपतराय, लाला हंस[illegible] जी तथा अन्यान्य विद्वानों ने इस नियो[illegible] वाक्य को हटाना ही उचित समझा था।

पं० रामकौशिक हृषीकेश से लिख[illegible] आर्य समाजी पण्डितों की विवाह विधि [illegible] पाटी ऐसी है कि कोई पण्डित कभी वधु [illegible] विवाह के समय इस नियोग की प्रतिज्ञा [illegible] रण तक नहीं कराता। चुपचाप मंत्र [illegible] आगे बढ़ाते हैं।

इन्होंने इस विषय में कई पण्डितों के [illegible] उनके करवाये विवाहों के स्थान भी दिये [illegible] विवाह हुए जहां नियोग की प्रतिज्ञा क[illegible] तक नहीं किया गया था, इसकी एक [illegible] इन्होंने दी है।

इन मौखिक बातों को छोड़ भी दिय[illegible] भी ऊपर लिखे ग्रन्थों के वचन के प्रमाण [illegible] महत्व के हैं।

विवाह विधि में नियोग की प्रतिज्ञा [illegible] आग्रह करने वाले इन ग्रंथों का विचार [illegible] सब आर्य समाजी स्त्री और पुरुष इस [illegible] पुनः पुनः विचार करें कि विवाह विधि [illegible] उक्त प्रकार नियोग की प्रतिज्ञा वधुवरों से [illegible] आवश्यक, योग्य और शुभ प्रसंगानुरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ाध्यायी की अन्वर्थक संज्ञाएं

[श्री धर्मराज वेदालङ्कार]

शास्त्र में संज्ञाएं दो प्रकार की होती हैं—कृत्रिम अन्वर्थक। कृत्रिम संज्ञाएं वे हैं जो किसी शास्त्र के ही प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए कम ा अक्षरों से बनी होती हैं, इन संज्ञाओं में प्रत्यय के आधार पर कोई अर्थ नहीं होता किसी विशेष उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर ख़ास अर्थ इन संज्ञाओं के साथ जोड़ दिया है। प्राचीन सूत्र ग्रन्थों में लाघव के हेतु से तरह की कृत्रिम और एक अक्षर से बनी एं अनेक उपलब्ध होती हैं। जिस प्रकार नीय अष्टाध्यायी में भिन्न-भिन्न अक्षर समु- की प्रत्याहार सूत्रों के द्वारा अण् झल् जश् आदि कृत्रिम संज्ञाएं इसलिये की गई हैं, ताकि बार उन सब अक्षरों को न दोहराना पड़े और संक्षिप्त शब्दों से ही काम बन जाए इसी र लघुता को ही लक्ष्य में रखकर शुक्ल यजुः शाख्य में भी विविध वर्ण समुदायों को सिम् सुत् धि आदि कृत्रिम संज्ञाएं दी गई हैं।

कृत्रिम संज्ञाओं का मुख्य प्रयोजन लाघव तथा है। 'अर्द्धमात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैया- ाः' इस उक्ति के अनुसार लाघव प्राप्त करने के वैयाकरण क्या क्या नहीं कर सकते! लेकिन घ भ ट टि आदि अपना अर्थ साक्षात् सूचित न वाली एकाक्षर संज्ञाओं के अतिरिक्त पाणि- अष्टाध्यायी में अब कितनी ही लम्बी लम्बी एं हैं, जिन का अर्थ आसानी से कुछ समझ में आता। महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलि का दृढ़ है कि जिन संज्ञाओं का प्रकृतिप्रत्यय के आधार कोई अर्थ नहीं निकलता अर्थात् जो रूढ़ संज्ञाएं भी अन्वर्थक नहीं हैं, उनका अक्षर-परिमाण म होना चाहिये, क्योंकि संज्ञाएं शास्त्र में ा लाने के लिये ही बनाई जाती हैं। अगर संज्ञा लघु न होकर महती है तो उसे अवश्य र्थ या यौगिक संज्ञा होना चाहिये। महाभा- ार ने निम्न वाक्यों को हूबहू इन्हीं शब्दोंमें यों बार दोहराया है—

"महतीयं संज्ञा क्रियते। संज्ञा च नाम यतो न याः। कुत एतत्? लघ्वर्थं हि संज्ञाकरणम्। महत्या संज्ञायाः करणं एतत् प्रयोजनम्—र्थिका संज्ञा यथा विज्ञायेत।"

अष्टाध्यायी में एक अक्षर से अधिक परिमाण ओं की संख्या ७५ के लगभग है। इनमें २५ तो ऐसी हैं जिनकी अन्वर्थकता प्रदीप श के समान स्पष्ट एवं प्रसिद्ध है। शेष ५० एं बड़ी हैं और नियमानुसार उनका कोई र्थ हो सकना चाहिये, लेकिन अष्टाध्यायी का ध्याय करने वालों के सामने वे प्रायः रूढ़ कृत्रिम संज्ञाओं के समान व्युत्पत्ति मूलक अर्थ स्पष्ट नहीं करतीं। वस्तुतः ध्यान से देखा जाए न में कोई न कोई यौगिक अर्थ निस्सन्देह उप- हो सकता है, लेकिन जैसा कि सर्वत्र संज्ञाओं वस्तुओं के नामों के विषय में होता है, वह कालक्रम से किन्हीं विशेष वाच्य पदार्थों के अन्वर्थकता इनके योगरूढ़ होने में है। अब हम क्रमशः एक एक संज्ञा को लेकर उसके अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं :—

१. षट्—यह संज्ञा जिन प्रातिपदिकों की होती है। उनकी संख्या ६ है:—षष् पञ्चन् सप्तन् अष्टन् नवन् दशन्। संज्ञी ६ होने से संज्ञा का नाम ही 'षट्' हो गया। लोक में इससे मिलता जुलता व्यवहार यह है कि ४ को 'अम्बुधि' ५ को 'भूत' ७ को अश्व ८ को 'वसु' ९ को 'ग्रह' और १२ को 'आदित्य' कहते हैं।

२. सार्वधातुकम्—'धातोः सर्वेषु लकारेषु उप- तिष्ठन्ते'। तिङ् और शित् प्रत्ययों की सार्वधातुक संज्ञा होती है। तिङ् प्रत्यय धातु से आगे प्रत्येक लकार में आते हैं, जबकि आर्धधातुक प्रत्यय लुट् लृट् लृङ् आदि किन्हीं खास लकारों में ही आते हैं।

३ आर्धधातुकम्—'धात्वोरर्धेषु केषुचिद् एव लकारेषु उत्पद्यन्ते'। यहां 'अर्ध' शब्द एकांशवाची है। आर्धधातुक प्रत्यय आधे अर्थात् कुछेक लकारों में ही आते हैं।

४ सर्वनाम—'सर्वेषां नाम'। सर्व विश्व उभय आदि सर्वनाम शब्द विशेषण के रूप में किसी भी 'नाम' (Noun) के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं।

५. सर्वनाम स्थानानि—'सर्वाणि नामानि प्राति- पदिनक भयदसंज्ञाकृत विकारेभ्यो रहितानि तिष्ठन्ति येषु सुप्सु तानि सर्वनामस्थानानि'। इस शब्द में 'करणाधिकरणयोश्च' इस सूत्र से अधिकरण अर्थ में ल्युट् समझना चाहिये। 'सुडनपुंस- कस्य' से सु औ जस् अम् औट् की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है, और इन ५ प्रत्ययों को छोड़ कर ही 'स्वादिष्वसर्व नाम स्थाने। तथा 'यचि भम्' पद- संज्ञा और भसंज्ञा करते हैं। इसलिये सर्व नाम स्थान प्रत्ययों के परे होने पर भ और पद संज्ञा से होने वाले विकार नहीं हो सकते।

६. गुणाः—'गुणीभूता अव्यपवर्गेण स्थिता वर्णा यत्र'। अ ए ओ की गुण संज्ञा होती है। जिस प्रकार गुण गुणी में मिले होते हैं और गुणों से पृथक् रूप में नहीं दिखाई देते इसी प्रकार जिन दो वर्णों को गुण एकादेश होता है वे वर्ण गुण अक्षर में अलग अलग उच्चारण किये जाते हुए प्रतीत नहीं होते। 'देव+ईश्वरः=देवेश्वरः' यहां अ और इ के स्थान में 'ए' हुआ है, इस गुण रूप 'ए' में अ और इ का समावेश अवश्य है लेकिन दोनों का पृथक्त्व या व्यपवर्ग नहीं है। 'ए' में दोनों हैं, इसका प्रमाण यह है कि अ इ कण्ठ्य और तालव्य हैं तो ए के कण्ठ और तालु दोनों ही उच्चारण स्थान हैं। गुण ए में अ इ की ध्वनि गुणी भूत या गौण हो जाती है। इसके विपरीत, वृद्धि अक्षरों में यह बात नहीं होती। ऐ और औ ऐसे सुनाई देते हैं जैसे ये 'अ इ' और 'अ उ' ही हों। यदि किसी को गुजराती अखबार देखने का सौभाग्य हुआ हो तो यह बात उसके लिये बहुत अच्छी तरह प्रमाणित हो सकती है। कई गुजराती 'वैधानिक' को 'वइधा- निक' और 'औषधालय' को 'ओषधालय' लिखते हैं।

७. निपाताः—'येऽकस्मादेव नितरां पतन्ति, नैव व्युत्पत्ति नहीं होती, ऐसा लगता है मानो अचानक कहीं से आकर गिर पड़े।

'निपातन' शब्द का अर्थ भी इसी से मिलता है जो कार्य वैधानिक प्रक्रिया से सिद्ध न होकर एक दम हो जाता है उसे निपातन कहते हैं, अर्थात् ऐसे कार्य जो यूं ही एक दम हो गये।

८. उपसर्गः—'उपेत्य धातुं विविधान् अर्थान् सृजति'। जो धातु के पास जाकर विभिन्न अर्थों की सृष्टि करे। प्रसिद्ध श्लोक है—

'उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्॥'

९. गतिः—'गमयति अर्थान्तरं पदानि गम्यते- ऽर्थान्तरं वानया'। गति संज्ञक शब्द पदों के अर्थों को बदल देते हैं अथवा इनसे उनका नया अर्थ प्रतीत होने लगता है। उपसर्ग भी गति संज्ञक होते हैं—वे किस प्रकार से अर्थ को बदल देते हैं, यह हम देख ही चुके हैं। 'ऊरीकृत्य' 'अन्तर्हृत्य' 'अलंकृत्य' साक्षात् कृत्य' आदि शब्दों में भी गतिसंज्ञक ऊरी अन्तर् अलम् और साक्षात् अपने साथ की धातु के अर्थ को नवीन रूप से प्रकाशित कर रहे हैं।

१०. सम्प्रसारणम्—'सम्प्रसारण का स्पष्ट अर्थ है 'फैलाना'। य् व् र् ल् को क्रमशः इ उ ऋ और ऌ करने को सम्प्रसारण कहते हैं य् व् र् ल् क्योंकि व्यञ्जन हैं, अतएव अर्धमात्रिक हैं, इ उ ऋ ऌ स्वर होने से मात्रिक हैं। यदि आधी मात्रा वाले के स्थान पर पूरी मात्रा वाला वर्ण आ जावे तो इस प्रकार पहले की अपेक्षा सम्प्रसारण या फैलाव हो जाता है।

११. अङ्गम्—प्रत्यय परे होने पर प्रकृति की अङ्ग संज्ञा होती है। प्रकृति और प्रत्यय में अङ्गाङ्गि भाव है, इन दोनों में प्रत्यय प्रधान है, इस अवस्था में अङ्गी प्रत्यय को ही माना जा सकता है, शेष प्रकृति को प्रत्यय रूपी अङ्गी का अङ्ग मानना पड़ेगा।

१२. कृत्—'करोतीति कृत्'। 'कृ' धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर यह शब्द बनता है। इसका अर्थ है 'कर्त्ता'। कृत् प्रत्यय 'कर्तरि कृत्' इस सूत्र के अनुसार 'कर्त्ता' अर्थ में किए जाते हैं। इस तरह कर्त्ता अर्थ में होने वाले प्रत्ययों का नाम ही 'कृत्' रख दिया गया।

१३. कृत्याः—क्रियत इति कृत्या, करणं वा कृत्यम्'। इस शब्द को 'विभाषा कृवृषोः, से भाव अथवा कर्म में क्यप् करके सिद्ध करते हैं। एक प्रकार से यह भाव और कर्म में आए हुए कृत्य- प्रत्ययान्त शब्दों का प्रतिनिधि है, इसलिये उपल- क्षित प्रत्ययों का नाम भी 'कृत्य' रख दिया गया।

१४. प्रातिपदिकम्—'पदे पदे भवं प्रतिपदम्' तदेव प्रातिपदिकम्, स्वार्थे तद्धितप्रत्ययः'। 'रामः' 'रामौ' 'रामाः' इत्यादि सब रूप सुबन्त होने से पद हैं, इन समस्त पदों में राम प्रातिपदिक समान रूप से विद्यमान हैं।

'प्रतिपदा चन्द्रतुल्यं शब्दरूपं प्रातिपदिकम्' यह भी अर्थ हो सकता है। प्रातिपदिक प्रतिपदा के चन्द्र के तुल्य है, जिस प्रकार प्रतिपदा का चन्द्रमा सूर्य की किरणों से वृद्धि को प्राप्त होता है, इसी प्रकार सुपों के आने से प्रातिपदिक के रूप भी बढ़ते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Digitized by eGangotri. S3 Foundation USA

आर्य समाज संसार

आर्य समाजों के लिए विशेष सूचना

ज्ञात हुआ है कि म० राजपाल जी तथा म० मदनलाल जी चिमटा भजन मंडली वाले आर्य समाजों में जाकर धन संग्रह करते हैं और आर्य समाजें उन्हें सभा की ओर से समझ कर धन देती हैं। अतः आर्य जनता तथा आर्य समाजों की सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि उनका इस सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह उन्हें धन न दें और न धन संग्रह करने में उनकी सहायता करें।

—मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर।

वीर पदक

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा श्री स्वामी वेदानन्द जी ने सभा के पास १७५) इसलिये जमा कराया था कि उसके सूद से ऐसे व्यक्ति को पदक दिया जावे जो किसी की जान बचाने का कार्य करे। गत वर्ष यह पदक म० झांवरीराम जी सीतापुर निवासी को दिया गया था। अब आर्य (हिन्दू) जनता की सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि जिस सज्जन ने किसी की जान बचाने का काम हाल ही में किया हो वह अपना प्रार्थना पत्र सभा को भेजदें। घटना का ब्यौरा तथा उसके ठीक होने का प्रमाण साथ होना चाहिये। प्रार्थना पत्रों पर विचार के पीछे सभा जिस सज्जन को पदक देने के योग्य समझेगी उसे पदक देगी। —मंत्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन लाहौर।

किशन पुरा (खिज़राबाद) दलितोद्धार सम्मेलन

श्री पं० रामस्वरूप जी पराशरी मंत्री दलितोद्धार सभा के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ समाप्त हुआ। सम्मेलन को सफल बनाने में आर्य्य समाज खिज़राबाद के आर्य्य सभासदों ने विशेष हाथ बटाया। प्रचार का असर देहाती हल्के पर बड़ा अच्छा रहा सम्मेलन में निम्न लिखित महानुभाव सम्मलित हुए—श्री पं० रामस्वरूप जी पराशरी मंत्री दलितोद्धार सभा, पं० रामदत्त जी गौत्तम उपदेशक सभा। पं० जयप्रकाश जी धनुर्धर, स्वामी वेधड़क जी, पं० सुखदेव जी भजनोपदेशक इत्यादि। सम्मेलन में ये प्रस्ताव पास हुए।

१—यह सम्मेलन हिन्दू जनता से अनुरोध करता है कि समय की स्थिति को देखते हुए हरिजनों को सामाजिक और धार्मिक समानाधिकार दे देवें। प्रस्तावक—लाला रूपलाल जी।

२—यह सम्मेलन हरिजनों से अनुरोध करता है कि आपस के भेद भाव को छोड़ कर एक दूसरे के साथ समानता का व्यवहार करें। प्रस्तावक—चौधरी शंकर लाल जी, सदस्य डिस्ट्रिक्ट बोड।

३—सम्मेलन हरिजनों से अनुरोध करता है कि अपनी सामाजिक और धार्मिक उन्नति को देखते हुए [illegible] शिक्षा दिलाने, कलाकौशल को सिखाने और अपने घर वस्त्रादि सफ़ाई रखने का पूरा प्रयत्न करें। प्रस्तावक—पं०रामदत्त जी गौत्तम

४—यह सम्मेलन हरिजन भाइयों को सलाह देता है कि वे मांस, शराब आदि का व्यवहार सर्वथा त्याग दें। —नन्दकिशोर प्रचारक आर्य ग्राम प्रचार समिति, अम्बाला छावनी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का नवीन निर्वाचन

ता० २७।३।४२ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की साधारण सभा की एक बठक श्री श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली में हुई। सन् १९४३, ४४ के लिये निम्न प्रकार से पदाधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुये :—

१. प्रधान, श्री प० गंगा प्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज। २. उपप्रधान, श्री राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री। श्री प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय। ४. उपप्रधान; श्री प० विनायक राव जी विद्यालंकार। ५. श्री प० बुद्ध देव जी विद्यालंकार। ६. मन्त्री, श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। ७. कोषाध्यक्ष, श्री ला० नारायण दत्त जी ठेकेदार। ८. पुस्तकाध्यक्ष, श्री ला० ज्ञान चन्द्र जी ठेकेदार। ९. अन्तरंग सदस्य, श्री कुंवर चांद करण जी शारदा, राजस्थान। १०. श्री प० वासुदेव जी बिहार। ११. अन्तरंग सदस्य, श्री पं० मिहिरचन्द्र जी धीमान् बंगाल। १२. श्री प्रो० तारा चन्द्र जी गाजरा सिन्ध। १३. श्री प० विजय शंकर जी, बम्बई। १४. श्री बा० श्री राम जी, प्रवासी प्रतिनिधि। १५. श्री बा० ज्योति स्वरूप जी, दानी प्रतिनिधि। १६. श्री महा० नारायण स्वामी जी महाराज, प्रतिष्ठित प्रतिनिधि। १७. श्री चौ० देशराज जी, समाजों के प्रतिनिधि। १८. श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री, संयुक्त प्रान्त। १९. श्री प० राम दत्त जी शुक्ल, संयुक्त प्रान्त। २०. श्री पं० ज्ञान चन्द्र जी, आर्य सेवक, पंजाब। २१. श्री नारायण दास कपूर, पंजाब प्रान्त।

ठाकुर शेरसिंह जी साहित्यरत्न का स्वर्गवास

श्री. ठाकुर शेरसिंह जी साहित्यरत्न संपादक आर्य सेवक का स्वर्गवास ता० १८-३-४३को होशंगाबाद में होगया। आप एक सप्ताह से रुग्ण थे तदनंतर निमोनिया का आक्रमण हुआ जो घातक सिद्ध हुआ। आपका अन्त्येष्टि संस्कार गुरुकुल होशंगाबाद के अधिकारियों व ब्रह्मचारियों तथा नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों की उपस्थित में पूर्णवैदिक रीति से समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रान्त व विदर्भ के मुखपत्र 'आर्य सेवक' के सम्पादक थे। आप स्थानीय आर्य समाज के उपप्रधान थे। विगत तीन वर्ष से आप आर्य सेवक का संपादन, मुद्रण, प्रकाशन स्वयं बिना किसी की सहायता के स्वयं करते रहे। पथपड़ी, सागर, कामठी, होशंगाबाद आदि प्रान्त के जिन जिन स्थानों पर आप रहे आर्य-समाज की सेवा करते रहे, व उसके अधिकारी रहे व लोकप्रिय बन गये। आप के स्वर्गवास से प्रान्त का एक समाज सेवक, ऋषि दयानन्द व वैदिक धर्म का अनन्यभक्त व साहित्यिक उठ गया है।—संवादाता।

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

—सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन का गुरुकुल-कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर २५.२६ अप्रैल को एक सार्वदेशिक आर्य का विराट आयोजन किया जा रहा है भारत के विविध प्रान्तों से आर्य नेता कर आर्य समाज की वर्तमान धार्मिक, तथा राष्ट्रीय परिस्थितियों पर सामाजिक से गम्भीर विचार करेंगे। सम्मेलन को से आकर्षक मनोरंजक तथा उपयोगी बना गुरुकुल के अधिकारी प्रयत्नशील हैं। इ आर्य नेताओं तथा आर्य जनता से हमारा निवेदन है कि वे इस सम्मेलन में सम्मि अपने कर्तव्य-पालन का परिचय दें तथा २ लाभ उठाएँ।

—श्री श्रद्धानन्द सेवाश्रम। गुरुकु श्रद्धानन्द-सेवाश्रम बड़ी तत्परता तथा ल ग्रमीण जनता के सेवकार्य में संलग्न है। वार को श्रद्धानन्द-सेवाश्रम के चिकित्सक के चारों ओर बसी हुई बस्तियों में जाक को देखते तथा उत्तम चिकित्सा करते दवाइयों के प्रभाव से सैंकड़ों रोगी स्वा कर चुके हैं। गुरुकुल के इस सेवाश्रम में इलाज बिलकुल मुफ़्त किया जाता है। तथा असमर्थ रोगियों को दवा के अतिरि वस्त्रादि भी मुफ़्त दिया जाता है। अस्पता शीघ्र ही एक्स-रे का भी प्रबन्ध किया जा आशा है एक्स-रेके आ जाने पर श्रद्धानन्द की उपयोगिता पहिले की अपेक्षा बहुत जायगी। श्री डा० अनन्तानन्द जी आयु हाऊस-सर्जन बनकर आगए हैं और उत्त कार्य कर रहे हैं।

—गुरुकुल में कृषि। गुरुकुल के सहा धिष्ठाता श्रीयुत देशबन्धु जी विद्यालंकार से इस वर्ष कृषि की अच्छी बहार रही। तीन ओर जहां २ अपनी ज़मीन थी गेहूँ, अन्न बहुतायत उपजाया गया। गुरुकुल की भूमि में भी गेहूँ की फसल बहुत इस प्रकार इस वर्ष परती परती पड़ी हुई भूमि का उपयोग लिया गया है। अन्न संकट-पूर्ण जमाने में यहां की खेतियों से की समस्या बहुत कुछ हल करने की जायगी। आशा है आगामी वर्ष इससे भूमि को आबाद कर लिया जायगा।

श्री केन्द्रीय गढ़वाल भ्रातृ मंडल

का वार्षिकोत्सव तथा चुनाव ४ अप्रै रविवार को श्री मान् पंडित बाणी विलास के सभा पतित्व में। समय १ बजे दिन सायं काल तक बड़े समारोह से मनाया सर्व गढ़देशी बन्धुओं से सविनय कि नियत समय पर पधार कर सभा बढ़ा कर अनुगृहित करें और यश के

—निवेद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

10 APR 43
SAHARANPUR

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक २०
वार्षिक मूल्य ४)
११ अप्रैल १९४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००२ पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)

अध्यात्म सुधा

[२०]

दयानन्दोपनिषद्

यच्च तथा सभाओं के कर्तव्य तथा उद्देश्य

ः सनातनाद्वेदविज्ञानात् शिक्षां प्राप्य
ाक्षो भूत्वा प्रजाः पालयेत् स मनुष्यो
ो वेद्यः ।"

मनुष्य सनातन वैदिक ज्ञान से शिक्षा प्राप्त
ा समितियों में अध्यक्ष हो कर प्रजा की
ं पालना करे, वह मनुष्य धार्मिक है । ऋ० म०
० ११ । सू० ६२ । म० १२ ॥

सभाद्यध्यक्षो मनुष्येभ्यो हिताय प्रतिदिनं
नवीनं धनमन्नं च प्रापयेत् । यथा प्राणो
सुखानि प्रापयति तथैव सर्वान् सुखयेत् ।
ऋ० भा० म० १३ ।

ापति आदि को चाहिए कि मनुष्यों के हित
ये प्रति दिन नवीन २ धन और अन्न को
करें । जैसे प्राण वायु से मनुष्यों को सुख
वैसे ही सभाध्यक्ष सब को सुखी करें । म० १२

सभाद्यध्यक्षेणैवं शीलं गुणान् कर्माणि च
र्याणि यतः सर्वे मनुष्यास्तदेतद्दृष्टा
भूत्वा निष्कण्टकं राज्यसुखं सर्वदा
न्नितिं । ऋ० म० १। अ०११। रि ६३। मंत्र २

भापति आदि को चाहिए कि इस प्रकार के
स्वभाव, गुणों और कर्मों को धारण तथा
करें जिस से सब मनुष्य उन को देख कर
ष्ट सदाचारी बन कर निष्कण्टक राज्य के
भोगें ।

हि सभा सभाद्यध्यक्षाभ्यां विना शत्रुपरा-
राज्यपालनं च यथावज्जायते तस्माच्छिष्ट
क्षाभ्या मेताभ्यामेते कार्ये सर्वैर्मनुष्यैः
तव्ये । ३ मन्त्र । सू ६३ ।

भा और सभापति के बिना शत्रुओं का पराजय
ज्य का पालन नहीं हो सकता । इस लिये श्रेष्ठ
गुणवालों की सभा और सभापति की सहायता से सब मनुष्यों को शत्रु का पराजय और राज्य का पालन कराना चाहिए ।"

मनुष्यै र्यथा सूर्यः स्वप्रकाशेन सर्वानानन्द्य मेघ मुत्पाद्यवर्षयति अंधकारं निवार्य प्रकाशते तथैव सभाद्यध्यक्षो विद्यादि शुभ गुणैः सर्वान् सुखयित्वा शरीरात्मबलमुत्पाद्य धर्मशिक्षाभयानि वर्षित्वाऽधर्मान्धकारशत्रून् निवार्य राज्ये प्रकाशेत
म० ८४ । सू० ६३ ।

मनुष्यों को चाहिए कि जैसे सूर्य अपने प्रकाश से सब को आनंदित कर तथा मेघ को उत्पन्न करके वर्षाता है और अंधकार को निवारण करके अपने प्रकाश को फैलाता है वैसे ही सभाद्यध्यक्ष विद्यादि उत्तम गुणों से सब को सुखी शरीर व आत्मा के बल को सिद्ध करे और धर्मशिक्षा और अभय आदि की वर्षा करके अधर्म रूपी अंधकार और शत्रुओं का निवारण करके राज्य में प्रकाशित और प्रतिष्ठित हो । म० ५ । सू० ६३ ।

सभाद्यध्यक्षाभ्यां राज्यसेनयोः प्रीतिमुत्पाद्य, शत्रुषु द्वेषश्चेति यथा सूर्यो मेघान् छिनत्ति तथैव दुष्टाः सदा छेत्तव्याः ।

सभा, सभापति को चाहिए कि राज्य तथा सेना में प्रीति उत्पन्न करें । और शत्रुओं में द्वेष करके सूर्य की भांति मेघों का नित्य छेदन करे और दुष्ट शत्रुओं का सदैव छेदन भेदन किया करें ।

"मनुष्यैः सर्वेषु धर्म कार्येषु कर्तव्येषु ईश्वरस्य सभाध्यक्षस्य च सहाय्यं नित्यं संगृह्य कार्य-सिद्धिः कर्तव्याः" म० ६ । सू० ६३ ।

मनुष्यों को चाहिए कि सब धर्म सम्बन्धी कामों में ईश्वर तथा सभापति की सहायता लेकर संपूर्ण कार्य को सफलता पूर्वक समाप्त करनी चाहिए ।

"मनुष्य जाति को सभा और सभापतियों द्वारा किस प्रकार लाभ उठाना चाहिए—इसका उत्तम निर्देश इन भावार्थों में किया गया है । प्राणिमात्र के लिये अन्न तथा जल का प्रबन्ध करना सभा तथा सभापति का काम है । इसी प्रकार से विद्याप्रचार, राज्य संचालन सम्पत्ति वृद्धि करना भी सभा तथा सभापतियों द्वारा करना चाहिए । —भोमसेन

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का ४१ वां वार्षिकोत्सव आगया

आर्य जनता को यह जान कर अपार हर्ष होगा कि गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का ४१ वां वार्षिकोत्सव २३ से २६ अप्रैल तक ईस्टर की छुट्टियों में समारोह के साथ गुरुकुल भूमि में मनाया जायगा । इस पुनीत अवसर पर पधारने के लिए आपको हमारा सप्रश्रय-साग्रह निमन्त्रण है । आइये, अपने पुत्र-कलत्र, बन्धु-बान्धव, इष्ट मित्रों समेत इस शान्तिधाम में पदार्पण कीजिए । प्रेम और भक्ति के साथ ज्ञान गङ्गा में गोता लगाइये । उपदेशामृत का पान करके सच्चे अमरत्व को प्राप्त कीजिए । वीतराग-महात्माओं के दिव्य-वचनों से अपने जीवन को सफल और प्रकाशमान बनाइये । पवित्र एवं हृदयहारी संगीत-सुधारस से अपनी अन्तरात्मा को उल्लसित कीजिए । इस दुर्लभ अवसर को न चूकिए और गुरुकुल चलने के लिए आज ही से तैयारी प्रारम्भ कर दीजिए ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का वार्षिकोत्सव न सिर्फ आर्य समाज का सबसे बड़ा मेला है अपितु इस अवसर पर देश की तात्कालिक राजनैतिक, धार्मिक सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर भी गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाता है । बड़े २ प्रतिष्ठित महात्माओं और नेताओं के सत्संग से जनता भरपूर लाभ उठाती है ।

प्राचीन ऋषियों की इस तपोभूमि में, गंगा के पवित्र तट पर हिमालय के आञ्चल में स्थित, गुरुकुल की इस पुण्य भूमि में पधारने पर आपके मानसिक कष्ट स्वयमेव दूर हो जायँगे और आपका अन्तरात्मा निस्सन्देह प्रफुल्लित हो उठेगा । यहां आकर आप अमर शहीद श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा लगाई हुई, और आचार्य रामदेव जी द्वारा परिपालित इस गुरुकुल-वाटिका को लहलहाता हुआ देखेंगे । यहां आकर जीवन का उद्देश्य सफल कीजिए ।

—मौलाना अब्दुल कलाम आजाद की धर्म पत्नी ज्यादः बीमार हैं । उनके संबन्धी बम्बई सरकार को प्रेरणा कर रहे हैं कि वह मौलाना आजाद को पैरोल पर रिहा करदें ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

शिव संकल्प का विजय

[श्री हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार]

(३)

(गतांक से आगे)

अब हमने मन का प्रभाव हृदय पर देखना है

मन जिस प्रकार बुद्धि के द्वारा अहंकार पर प्रभाव डालता है उसी प्रकार चित्त के द्वारा ये हृदय पर निरन्तर प्रभाव डालता रहता है। चित्त में मृत्यु की स्मृति बनी रहे वह मनुष्य के हृदय में अशुद्ध भावनाएं उत्पन्न नहीं होने पाती, इसके विपरीत परमेश्वर के उग्ररूप व यम (मृत्यु) की विस्मृति के होने पर हृदय कुभावनाओं (Vicious emotions) का घर बन जाता है। इसी लिए यह आवश्यक है कि मन के द्वारा चित्त में मृत्यु की स्मृति हम सदा जागृत रक्खें। इसी बात को ध्यान में रखते हुए ही कबीर महाराज प्रत्येक अर्थी के साथ श्मशान तक जाया करते थे।

एवं मन का प्रभाव अवशिष्ट सम्पूर्ण अन्तः करण पर हम देख चुके। इस सम्पूर्ण विषय को स्मरण के लिए निम्न पट्टिकों में रख सकते हैं:—

मन
|
बुद्धि————————चित्त
सं. उत्तम ज्ञान वि. मिथ्या ज्ञान संस्मृति विस्मृति
| |
अहंकार हृदय
अहम्भावाभाव कर्तृत्व का घमंड उत्तम भावनाएं कुभावनाएं

अब हम मन का प्रभाव बाह्य कारणों पर देखेंगे—

पहले की तरह हमें यह देखना है कि इस विषय में हमें श्रुति क्या ज्ञान देती है। शिव संकल्प के मन्त्रों में कहा है कि 'येन कर्माण्यपसो मनीषिणः यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः' अर्थात् मन के वश में करने वाले [अपः कर्म तद्वन्तो अपसः] कर्मकाण्डी तथा मन के वश में करने वाले [धिया रमन्ते] ज्ञानी, जिसके द्वारा कर्मयज्ञ तथा [विदथेषु] ज्ञान यज्ञों में कर्मों को करते हैं। अर्थात् यह मन ही कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का अधिष्ठाता है। यही (यक्ष्—ज—संगति करण) 'यक्ष' इन्द्रियों का पदार्थों के साथ मेल कराने वाला है। आंख का रूप के साथ, श्रवणों का शब्द के साथ, नासिका का गन्ध के साथ, मुखस्थ जिह्वा का रस के साथ इस प्रकार यह सप्त होता ज्ञानेन्द्रिय रूपों वाला यज्ञ इसी मन के द्वारा विस्तृत किया जा रहा है [कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्] उसके साथ ही साथ 'यस्यान्नकृते किञ्च न कर्म क्रियते' इन शब्दों के अनुसार कर्मेन्द्रिय रूप होताओं का यज्ञ भी इसी मन के द्वारा ही सिद्ध होता है।

अनुभव भी श्रुति की याथार्थ्यता को पुष्ट करता है। जैसे कि मुझे रणवीर बुलाए, मेरा ध्यान न हो, कुछ अस्पष्ट सी प्रतीती हो, तो मैं थोड़ी देर बाद कहता हूं 'अयि रणवीर किं त्वमाह, नाश्रौषम् अन्यत्र मनः अभूवम्' ऐसे भी शब्द हमने आपस में एक दूसरे को कहते हुए सुने सुनाए हैं। सो यहां स्पष्ट है कि मन ही इन्द्रियों का अर्थों के साथ संयोग कराने वाला है। यदि हम इन्द्रियों को विषयों में जाने से रोकना चाहें तो बस मन को काबू में कर लें तब 'यस्मिन् जिते जिते जितौवतौ भवतौ दशकौगणौ' इस वचन के अनुसार ये सब इन्द्रियाँ हमारे काबू में हो जायंगी। इसके विपरीत मन को काबू न करने पर मन हमें इधर उधर भगा कर विषय पङ्क में गिरा देगा। एवं इस दृष्टि से भी बन्ध और मोक्ष दोनों मन से ही होते हैं। साथ ही यहां 'मन का सूक्ष्म शरीर पर प्रभाव' इस विषय को भी समाप्त कर अब हम मन के कारण शरीर पर प्रभाव को देखेंगे।

जागृत तथा स्वप्नावस्था में जिस प्रकार आत्मा क्रमशः स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर में उपस्थित होता है ठीक उसी प्रकार सुषुप्तावस्थाओं में आत्मा की स्थिति कारण शरीर में होती है। यह कारण शरीर सारे प्राणी मात्र का एक है। इस अवस्था में व्यक्ति एकत्व के अन्दर बहुत्व के तथा बहुत्व के अन्दर एकत्व के उच्च ज्ञान को प्राप्त करके आनन्दित होता है। सुषुप्तास्थान एकीभूतः प्राणीमात्रेण प्रज्ञानघन एवानन्दमयोह्यानन्द भुक् चेतो मुखः प्राज्ञस्तृतीयः पादः' मा० ५। माण्डूक्य के इस मन्त्र में आए 'एकी भूतः प्राज्ञः आनन्द भुक्' इन शब्दों से उपरोक्त भाव स्पष्ट विदित है। इस समय वह प्राणी मात्र को 'मैं हूं' ऐसा ही अनुभव करता है जैसा कि जाग्रतावस्था में हम अपने को ही मैं अनुभव करते हैं क्योंकि उस समय हम स्थूल शरीर में होते हैं और स्थूल शरीर हमारा अंशों से पृथक होता है। परन्तु ठीक इसी प्रकार सुषुप्तावस्था में कारण शरीर काम करता है और क्योंकि कारण शरीर प्राणिमात्र का है इस लिए मैं 'प्राणिमात्र में मैं हूं' ऐसा ध्यान करता हूं। इस समय मैं 'एकोहमेको म आत्मा०' ऐसा न कह करके 'अयुतोऽहमयुतो य आत्मा अयुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो मे प्राणोऽयुता मेऽन्नानोऽयुतो मे व्यान्तेऽयुतोऽहं सर्वः' अर्थात् मैं अनन्त हूं अथवा मैं औरों से अपृथक हूं। अनन्तता के अनुभव में भी 'यो वै भूमा तत्सुखम्' इस उपनिषद् वाक्य के अनुसार आनन्द है। तथा अपार्थक्य व एकता के अनुभव में भी भय न होकर आनन्द ही है क्योंकि 'द्वितीयाद्वै भयं भवति' के अनुसार भय तो दूसरे से ही हो सकता है। जब दूसरा है ही नहीं तो भय कहां से।

एवं सुषुप्तावस्था में आनन्द का अनुभव सब प्राणि मात्र में समान कारण शरीर की सिद्धि करता है।

इस शरीर की सिद्धि में दूसरा प्रमाण स्वप्न विज्ञान से हमें मिलता है। ऐसा प्रायः हम सब का अनुभव है कि कभी २ हम स्वप्न में उन वस्तुओं को देखते हैं जिनको कि हमने कभी भी देखा नहीं, कदाचित् उन शब्दों को भी सुनते हैं, जिन से हमारा किसी प्रकार का संबन्ध नहीं होता। दृष्टञ्चादृष्टञ्च, श्रुतञ्चाश्रुतञ्च' इन शब्दों द्वारा छान्दोग्य में उपरोक्त वार्त्ता कही गई है। सो जब हम आश्चर्यित होकर अदृष्ट दर्शन के निमित्त की खोज करते हैं तभी हम कारण शरीर की सत्ता को जानकर अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर लेते हैं। इस बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए हमें निम्न चित्रपट तय्यार करना चाहिए

सुषुप्ति—कारण (प्राणि मात्र में
|
स्वप्न—सूक्ष्म
|
जागृत—स्थूल

जाग्रतावस्था में स्थूल शरीर का ठीक इसी प्रकार सूक्ष्म शरीर स्वप्नावस्था करता हुआ दीखता है। शरीर का कारण ही स्वप्नावस्था के भोग भी सू इतने सूक्ष्म कि दिन में वे भोग पदार्थ नहीं। साधारणतया जिन पदार्थों का निरन्तर ध्यान करते हैं रात में स्व हम उन्हीं को भोग कर आनन्दित होते रणार्थ एक रोगी सहभोज वाले बूंदी २ का ही ध्यान करते सो जाता वह रात में सूक्ष्म बूंदी को खाता है। जागृत होने पर कहता कि—

"यास्वप्नेऽन्नमश्नामि न प्रातरधि सर्वं तदस्तु मे शिवं न हि तद्दृश्यते

ऐसे स्वप्न हुआ भी करते हैं। प उन चीजों को स्वप्न में देख कर जिसक से किसी प्रकार का संपर्क नहीं, आश्च है। इस आश्चर्य की शान्ति के लि चित्रपट हमारी सहायता करता है। कि स्वप्नावस्था में साधारणतया सूक्ष्म काम करता है परन्तु सोते हुए भी मरे होने पर खुजाते हैं, मैं करवटें लेता हूं, सोते २ बोलते हुए भी देखे जाते हैं ऐसी बीमारी भी होती है जिस में कि दो-दो मील की सैर कर आते है। सो काम स्थूल शरीर का है। यह क्यों? कि शरीरों की शृङ्खला में सूक्ष्म शरीर कड़ी है, स्थूल शरीर रूप कड़ा का भा सम्बन्ध है, उसके हिलने पर यह भी हैं। ठीक इसी प्रकार कारण शरीर उससे सम्बन्धित है। उसके गति में ह भी गति उत्पन्न हो जाती है और शरीर प्राणिमात्र का एक है इस लिए में से किसी ने भी कोई चीज़ देखी हो भी मुझे स्वप्न हो जाता है।

यहां एक प्रश्न होता है कि यदि त तो वह एक ही व्यक्ति को स्वप्न में है? औरों को क्यों नहीं? यह प्रश्न ठी कर्म सिद्धान्त को मानने वालों के उत्तर देना कठिन नहीं। श्री हर्षनैष्क थमदृष्टवैभवात् कसेति सुसिर्जनदशना श्लोक भाग में धर्माधर्म को ही उपरो कारण ठहराते हैं।

एवं कारण शरीर की सत्ता इस सिद्ध है। यह कारण शरीर ether सर्वत्र व्यापक है। हो सकता है कि ethereal। मन व यन्त्र विशेष हैं इस Ethereal शरीर पर विशेष प्रका किये जाते हैं। ठीक Wireless के समान यहां सारा कार्य होता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार ११ अप्रैल १९४३

विक्रम सम्वत् २०००

सिंहावलोकन

इक्क वैशाख से विक्रम सम्वत् २००० वर्ष में प्रविष्ट ा है। भारतीय जनता के लिये यह सम्वत् महत्व रखता है। इस सम्वत् के प्रवर्तक विक्र- त्या ने भारतीय राष्ट्र की जो स्मरणीय सेवा की है, ी स्मृति में ही यह सम्वत् प्रचलित किया गया भारतवर्ष के विविध भागों में इस विक्रमाब्द के रिक्त ४६ सम्वत् प्रचलित हैं। उनमें से कुछेक के न्याह है:—युधिष्ठिर सम्वत्, कलि सम्वत् श्री निर्वाणाब्द, हर्षवर्धन, नन्दाब्द शककाल, गुप्ताब्द, पैन्नाब्द आर्य सम्वत्सर इत्यादि।

इन सम्वतों में से जो ख्याति विक्रमाब्द को प्राप्त है, वह और किसी सम्वत् को प्राप्त नहीं हुई। इस ा कारण हैं, प्रथम कारण तो यह है कि प्राचीन य से मालवा की राजधानी उज्जयिनी भारतीय तिथियों का मुख्य गणना केन्द्र स्थान रहा है। आज जिस प्रकार ग्रीनिच को आधार मान कर अक्षांश काल गणना की जाती है उसी प्रकार प्राचीन त में उज्जयिनी को मुख्य स्थान माना जाता था। सम्वत् का प्रारम्भ मालवा उज्जयिनी के राजा के से हुआ था। अतः ज्योतिषियों ने इसको विशेष से अपनाया। भारतवर्ष की देसी रियासतों में भी इसी सम्वत् का विशेष रूप से प्रयोग किया ा है।

दूसरा कारण:—विक्रमादित्य के व्यक्तित्व तथा के शासनकाल की विशेषताओं ने इस सम्वत् को त के राष्ट्रीय सम्वत् के रूप में भारत में प्रचलित ा। इस विक्रमादित्य के समय भारत पर विदेशी तिथों ने आक्रमण किया। इस विक्रमादित्य ने ने राजतेज से उनको इस देश से निकाल दिया, जो रह गये उन्हें आर्य धर्म में दीक्षित कर लिया। समय आर्यजाति राजवैभव तथा विद्या वैभव की म सीमा तक पहुंची हुई थी। इसी विक्रमादित्य के दरबार में रहने वाले नवरत्न कवि थे। इन कवियों से महाकवि कालिदास ने अपनी अमर कृतियों द्वारा र्य जाति के यश को, दिग्दिगन्त में उज्ज्वल किया। स राजा के यश को महाकवि कालिदास जैसे सर- ती के भक्त फैलाने वाले हों; उसका यश तथा नाम ों न चिरकाल तक स्थायी रहे! विक्रमादित्य तीय राजाओं के प्रतिनिधि थे। ऐश्वर्य और विजय प्त करके भी, उनमें निरभिमानता और परोपकार वना हर समय विद्यमान रहती थी। उनके सम्बन्ध में प्रचलित दन्त कथाओं से उनके इस स्वभाव की साक्षी मिलती है। कहा जाता है कि राजा होते हुए भी यह प्रतिदिन सिप्रा नदी से, अपने स्नान आदि के लिये स्वयं पानी लाया करते थे। राजा होते हुए भी वह ज़मीन पर सोया करते थे। साधारण जनता की असली अवस्था को जानने के लिये वेश बदल कर जनता में घूमते थे और उनके दुःखों को जान कर, उन को दूर करने का यत्न करते थे। कई बार रात को भी पहरेदारों तथा कर्मचारियों पर निरी- क्षण करने के लिये स्वयं अकेले निकल पड़ते थे। इस कर्तव्य पालन बुद्धि ने उनके कर्मचारियों को भी सतर्क और सावधान किया हुआ था। उनका व्यक्ति- गत जीवन तथा राजशासन सम्बन्धी व्यवस्था इतनी उत्तम थी कि उनके पीछे वाले अनेक राजाओं ने अपने २ राज्य में अपने यश को चिरस्थायी बनाने के लिये अपने नामों के साथ 'विक्रमादित्य' की उपाधि लगानी शुरू कर दी। और तो और मुगल बादशाहों ने विक्रमादित्य के अनुकरण में अपने यहां दरबार में नव- रत्न रखने की प्रथा जारी की। जिस समय विक्रमा- दित्य का जन्म तथा आविर्भाव हुआ था—उस समय यह देश मत मतान्तरों के झगड़ों से मुक्त था। विदेशी हूणों ने—भारतवर्ष पर हमला किया था—अन्तर कलह की आग अभी इतनी तीव्र न हुई थी। विक्रमादित्य ने अपने पराक्रम तथा प्रभाव से राष्ट्र की सब शक्तियों को केन्द्रित कर हूणों को भारत में, विदेशी राज्य स्थापित नहीं करने दिया। आज इस सम्वत् को प्रचलित हुए २००० वर्ष पूरे होते हैं।

इस अवसर पर हमें पिछले दो हज़ार सालों के उतार चढ़ाव उथल पुथल, तथा परिवर्तनों पर सिंहावलोकन की दृष्टि से विचार करना चाहिए। और भविष्य के लिये अपना राष्ट्रीय कार्य क्रम निश्चित करना चाहिए। इस काल का बड़ा भारी परिवर्तन युरोपियन जातियों का भारत- वर्ष पर आक्रमण कर उसे राजनैतिक दृष्टि से पराधीन करना है। युरोपियनों तथा अंग्रज़ों के शासनकाल से पहले—शासन करने वाले विविध राजवंशों में से अनेक राजा विदेशों से आए—कुछ वर्षों तक उनका भारतीय राजवंशों से संघर्ष होता रहा परन्तु अन्त में उन सब वंशों ने भारत को अपनी मातृभूमि मान लिया और वे यहीं के बन गये। उन्होंने अपनी राजशक्ति का प्रयोग भारतीय साहित्य, भारतीय कला तथा भारतीय राष्ट्र के ऐश्वर्य के बढ़ाने के लिये किया। उन्होंने अपने २ सम्वतों के साथ—विक्रम सम्वत् को अपनाया। भारतीय परम्परा के आधार पर—अपना राज्यशासन चलाया। राजा मुसलमान था तो मन्त्री हिन्दू—दोनों ने मिल कर एक दूसरे को भारतवासी समझकर जीवन निर्वाह किया। परन्तु यूरोपियन जातियों, विशेषतः अंग्रेज़ जाति ने भारत पर आक्रमण किया। इसे अपने आधीन किया—यहां के अन्न जल से स्वयं तृप्त हुए परन्तु इस देश को अपनी मातृभूमि नहीं माना। इस देश तथा इस राष्ट्र की सभ्यता को अप- नाने में संकोच ही नहीं किया—अपितु उसे मटियामेट करने में भी कोई कसर नहीं रखी। ईसाई पादरियों की सहायता से—ईसामसीह के ईस्वी सन् को अपनाया। विक्रमी सम्वत् तथा स्वदेशी संवत् का बहिष्कार किया। अमावस्या, अष्टमी, पौर्णमासी की छुट्टियों के स्थान पर रविवार की छुट्टियां चालू कर उन्हें स्वभावतः ईसाई धर्म की ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न किया। प्राचीन परम्पराओं को छिन्न भिन्न करने के लिये यहां की शिक्षा पद्धति को बदला जारहा है। भारत की सम्पत्ति को भारत से बाहर ले जाया जारहा है। इस समय भारत पर किसी राजवंश का राज्य नहीं, अंग्रेज़ जाति सामूहिक रूप से भारत पर राज्य कर रही है। आज तक भारतीय इतिहास में ऐसी समस्या तथा स्थिति पैदा नहीं हुई थी। आज हमें सोचना चाहिए कि भार- तीय राष्ट्र को अंग्रेज़ जाति तथा युरोपियन जातियों के चंगुल से कैसे स्वाधीन किया जाय। यह सभ्यताओं का सभ्यताओं से संघर्ष है। युरोपियन विचारधारा का भारतीय विचारधारा से संघर्ष है। विक्रमी सम्वत् का ईसाई सम्वत् से मुकाबला है। शेक्सपियर का कालिदास से मुकाबला है।

ऐसे भारतीय आज आपको दिखाई देंगे जिन्हें कालि दास का कुछ पता नहीं, परन्तु शेक्सपीयर की पंक्ति २ उन्हें कण्ठाग्र होगी। इस भारतीय परिवर्तन के कारण भारतीय राष्ट्र को जो नुकसान होरहा है—उसे दूर करने के लिये हमें ऐसे आन्दोलन चलाने चाहिए जिन से युरोपियन सभ्यता का जादू टूटे और भारतीयता का चमत्कार जनता के सामने प्रकट हो। सौभाग्य से पिछली शताब्दी में ऋषि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द स्वामी रामतीर्थ, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा श्रीस्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द, श्री अरविन्द घोष, श्रीयुत महात्मा गांधी, जैसी विभूतियां इस देश में प्रकट हो चुकी हैं जिन्होंने भारतीय जनता के, युरोपियन सभ्यता सागर की ओर बहते हुए रुख को, अपने व्यक्तित्व से रोका। केवल रोका ही नहीं—युरोपियनों को भारती- यता की ओर आकृष्ट किया। एन्ट्रोजैक्सन, मैडम ब्लैवस्की स्वामी दयानन्द के प्रभाव से आकृष्ट हुए—उनके दर्शनों के इच्छुक बने। अमरीकन महिला श्रीमती सिस्टर निवेदिता ने स्वामी विवेकानन्द से दीक्षा ली। अमरीका के अनेक भक्तों ने स्वामी रामतीर्थ को अपना गुरु माना। श्रीयुत रवीन्द्र नाथ की गीताञ्जलि ने युरोप अमरीका के कवियों को मंत्र मुग्ध किया। श्री अरविन्द ने फ्रांसीसी पाल रिचर्ड तथा आश्रम की 'माता' को भारतीयता की ओर आकृष्ट किया श्री स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वर्गीय एण्ड्रूज़ श्री मायरन फैन्स आदि अनेक युरोपियनों को आर्य सभ्यता आर्य धर्म का पुजारी बनाया। महात्मा गांधी ने अपने व्यक्तित्व से युरोपियनों को अनेक प्रकार से मंत्र मुग्ध किया—यह लिखने की नहीं, देखने की बात है।

यदि हम विक्रम के यश को उज्ज्वल रखना चाहते हैं तो हमें अंग्रेज़ जाति की सांस्कृतिक गुलामी से मुक्त होने के लिये विशेष यत्न करना चाहिये तभी हम सच्चे अर्थोंमें यह समारोह मना सकेंगे। हमें अपने मिलनसार स्वभाव से युरोपियनों को भारतीय बनाना चाहिए और स्वयं युरोपियनों का अनुकरण करना छोड़कर अपनी सभ्यता, साहित्य तथा वेश को अपनाना चाहिए

—भीमसेन।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कमालिया

[श्री टेकचन्द जी प्रभु आश्रित संरक्षक गु.कु. कमा०]

ओ३म् कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन्भूयऽ इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥
यजु० ३. ३४ ॥

कई वर्ष से कमालिया नगर में गुरुकुल खुला है और अच्छा चलता रहा। कुछ काल से उस में शिथिलता आने लगी। यह भय हो गया कि शायद गुरुकुल कमालिया, जो लायलपुर जैसे सारे जिला में एक ही गुरुकुल है बिलकुल बन्द न हो जाय। कुछ एक हितैषी भक्तों ने, जो तन मन से काम करने वाले थे, एक नई समिति बना दी। दो निष्काम सेवकों अर्थात् विरक्त त्यागी महानुभाव स्वामी कृष्णानन्द जी को मुख्याधिष्ठाता के रूप में और श्रीमान् सत्यभूषण जी वानप्रस्थी को आचार्य के रूप में गुरुकुल का कार्य सुपुर्द कर दिया गया है। समिति के प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि सभी सदस्य आचार्य जी को पूरा सहयोग देने लगे हैं।

मेरा पूर्ण विश्वास रहा है कि यज्ञ कार्य का सहायक तथा संचालक यज्ञपति भगवान् ही हैं। 'यज्ञो वै विष्णुः जब यज्ञ ही विष्णु है तो लक्ष्मी तो विष्णु के पीछे-पीछे फिरती है। गुरुकुल की पवित्र प्रणाली पुरातन ऋषि मुनियों की है। वे सब जंगलों में एक प्रभु के आश्रित रह ज्ञान-यज्ञ का विस्तार करते। वे अपना कार्य ज्ञान-यज्ञ का कर्त्तव्य समझ कर करते थे और यज्ञपति प्रभु अपनी सहायता का कार्य स्वयं करता था। उन गुरुकुलों की शिला ईश्वर-विश्वास था। मेरी यह धारणा है कि अब भी गुरुकुल को पुरातन शैली के अनुसार शिक्षा का दर्शन बनाया जा सकता है। आज कल अधिकारियों को धन संग्रह करने की चिन्ता लगी रहती है और स्थान-स्थान पर मांगना पड़ता है। कई निर्धन सफेद पोश सज्जन जो सन्तान को उत्तम विद्या देना चाहते हैं परन्तु उन के पास धन का अभाव है अतएव वे इस आदर्श प्रणाली से वञ्चित रह जाते हैं। जो संपन्न सज्जन अपनी सन्तानों को शुल्क देकर वेद विद्या पढ़ाते हैं उनके बच्चों में फिर धन संग्रह करने का भाव रहने से वे देश और जाति को बहुत कम समय दे सकते हैं। बहुत थोड़े भाग्यवान् विद्यार्थी अपनी विद्या को सफल कर पाते हैं। यदि देश के अन्न और धन से ब्रह्मचारी विद्या को प्राप्त करें तो उन में से बहुत से विद्यार्थी देश और जाति की रक्षा कर सकेंगे। अपने व्यवसाय में रहते हुए भी उन्हें जनता का ऋण चुकाने का भाव बना रहेगा। इस प्रकार से विद्या को प्राप्त करके पुरुष त्याग और प्रेम का अधिक विस्तार करके संसार को सुखी बना सकते हैं।

भविष्य का कार्यक्रम

(१) गुरुकुल कमालिया नए वर्ष से, जो वैशाख से प्रारम्भ होगा, यजुर्वेद के ब्रह्मपरायण यज्ञ से प्रारम्भ होगा। नए ब्रह्मचारियों का प्रवेश और वेदारम्भ संस्कार वेद के पवित्र ब्रह्म परायण यज्ञ से आरम्भ होगा।

(२) गुरुकुल निःशुल्क हो जाय जिस में धनिकों और निर्धनों (शुल्क दे सकने वालों व न दे सकने वालों) के बालक बिना किसी भेद भाव के प्रविष्ट किए जायेंगे।

(३) कोई माता पिता यदि कुछ देना चाहें तो वे अपने लड़के के लिए स्वात्मीयता का भाव रख कर न देवें अपितु पुण्य कार्य में दान समझ कर देवें।

(४ गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य वेदविद्या का अध्ययन था। उसी उद्देश्य के अनुसार इस गुरुकुल में विद्यार्थियों को यथा रुचि वा यथाबुद्धि वेद कण्ठस्थ कराएं जायें। एक पूर्ण वेद अवश्य कण्ठस्थ कराया जायगा। विना एक वेद कण्ठस्थ किए वह गुरुकुल की परीक्षा में उत्तीर्ण न समझा जायगा।

(५) प्रति वर्ष एक वेद का ब्रह्म पारायण महायज्ञ इन्हीं तिथियों पर हुआ करेगा जिस में गुरुकुल कमालिया के विद्यार्थी ही वेदपाठी हुआ करेंगे।

(६) प्रत्येक ब्रह्मचारी प्रतिदिन दोनों समय, केवल शाब्दिक रूप से नहीं अपितु क्रियात्मक रूप से आहुति देकर हवन किया करेगा। दो दो ब्रह्मचारियों के लिये एक-एक हवन कुण्ड बनवा दिया गया है और नित्य प्रति सब ब्रह्मचारी एक ही समय एक स्वर से अपने-अपने कुण्डों में पृथक् रूप से आहुति देते हैं ताकि गुरुकुल से उत्तीर्ण होने पर उनका यह अभ्यास उन्हें अवश्य यज्ञ-हवन कराने में सहायता देवे। बाहिर केवल शाब्दिक होता न बने रहें।

(७) किसी मृत संस्कार के उपलक्ष में दान स्वीकार न किया जायगा अथवा किसी रुग्ण व्यक्ति का दान, जो रोग के समय कल्याण-अर्थ दान किया जाता है, स्वीकार न किया जायगा। किसी मृत व्यक्ति की स्मृति में कमरा या कोई और चीज़ बनाने के लिए धन स्वीकार न किया जायगा। अपितु स्वस्थ मनुष्य अपनी पवित्र भावना से अपनी कमाई को सफल करने के भाव से जो दान समर्पित करेगा वह शुभाशीर्वाद से स्वीकार किया जायगा।

(८) प्राकृतिक विषयों के अतिरिक्त धर्म शिक्षा को साक्षात् करा कर विद्यार्थियों को सिखाने का प्रयत्न किया जायगा। जैसे भूगोल में पहाड़, झील आदि पढ़ाते समय अध्यापक पहाड़, झील आदि का नमूना बना कर दिखाते हैं इसी भान्ति आचार्य जी धर्म शिक्षा को हृदयंगम कराने का प्रयत्न करेंगे।

(९) नि-शुल्क गुरुकुल के लिए ऐसे त्यागी धर्म-निष्ठ अध्यापकों की सेवा की आवश्यकता है जो आते ही विद्यार्थियों को माता पिता के समान अपनी गोद में लेने वाले हों।

(१०) ज़िला लायलपुर पंजाब में एक प्रसिद्ध ज़िला है। और इसमें बड़ी-बड़ी प्रसिद्ध मण्डियां हैं और बड़ी-बड़ी आर्य समाजें हैं। इस में वेद प्रेमी और विद्याप्रेमी हैं। अतः यहां एक छोटा-सा गुरुकुल चलाने में और उसे आदर्श बनाने में कोई कठिनता न होगी। आर्य हिन्दू सज्जन दिल से यह समझ लेवें कि पुरानी संस्कृत और पुरानी सभ्यता की रक्षा करना और इसका पुनरुद्धार करना और इसे जीवित रखना हमारा धर्म है और हमें अपने पूर्वजों के आशीर्वाद को प्राप्त करना है। मैं इस गुरुकुल के लिए धन की अपील नहीं करता। अपितु मैं उस जनता से जो इस लेख को पढ़े अथवा सुने यही प्रार्थना करता हूँ कि वह ८. ४. ४३ से १४. ४. ४३ तक गुरुकुल कमालिया में यजुर्वेद के यज्ञ का दर्शन और श्रवण करने का पुण्य व सौभाग्य प्राप्त करने के लिए एक बार दर्शन देवें। ऐसे निःशुल्क पुण्य कार्य में तो वही सज्जन, माताएँ अपनी कमाई पवित्र बनाने के लिए उनके प्रेरणा करेंगे। आरम्भ में दिया गया वे बात की साक्षी देना है और परमात्मा प्रकट करता है कि (दाशुषे) उस विद्या के देने वाले को (जिस विद्या मुक्ति, जीव ज्ञान हो सके) प्रभु का शुभ मार्ग मिले, जाय और सन्मार्ग प्राप्त हो कर अपना हो सके, प्रभु शीघ्र से शीघ्र आप समीप, तर होकर (सश्चसि) कर्म फल पहुँचाते हैं इस जन्म में अपितु प्रभु की प्रतिज्ञा है कि पुनर्जन्म में भी (नु) निश्चय (पृच्यते) सम्बन्

(११) कोई संरक्षक अपने ब्रह्मचारी को ले जायगा। यदि अत्यन्त आवश्यकता जाना पड़े तो वह स्वयं ले जावेगा और पर पहुँचा जावेगा। परन्तु दो दिन बाद गुरुकुल में साथ रहना पड़ेगा। यदि कोई अवगुण आगया होगा तो उसे गुरुकु दे दिया जायेगा और पुनः प्रविष्ट न कि ताकि दूसरे ब्रह्मचारियों पर उसका प्रभा

प्रवेश के समय संरक्षकों को पुस्तकें होगी। और तीन जोड़ा वस्त्र; सर्दियों और लिये बिस्तरा आचार्य जी की आज्ञानुसार इसके अतिरिक्त पादुका (खड़ाऊं), पात्र पहिले दिन आवश्यक है उसके उत्तरदा स्वयं होंगे।

भगवन्

[श्री गंगाप्रसाद जायसवाल]

प्रभु सत्य हो शिव हो सुन्दर हो,
औ साधक साधन साध्य हो
अखिलेश्वर हो, आराधक औ,
आराधन औ आराध्य हो
बिनु-पैर चलं, बिनु-कान सुनें,
बिनु आनन सब रस भोगी हो
बिनु-हाथ हो कर्म अनेक करें,
रसना-बिनु वक्ता योगी हो
निराकार तूही निर्विकार तूही,
निर्लेप हो तुम निर्गुण हो
अति सुन्दर औ साकार हो तुम,
सर्वेश्वर सिद्ध सगुण हो
सुखकंद तुही औ सनातन हो
सुख-शान्ति सुधा के समुद्र हो
सर्वान्तर्यामि दयालु महा,
प्रभु ! ब्रह्मा विष्णु और रुद्र हो
निष्काम हो, पूरण काम तुही,
अविनाशी अगम अनादि हो
धन-गौरव-यश-सुख-पुञ्ज हो तुम,
प्रभु ? महादेव इत्यादि हो
सब-व्यापक न्यायाधीश हो तुम,
विख्यात महा हितकारी हो
जल थल नभ पावक पवन हो तुम,
बहु सौरभ युत फुलवारी हो
तुही मातु पिता गुरु स्वामि सखा,
शुभचिन्तक प्राणाधार हो
रखिये जगदीश शरण "गङ्गा"

CC-0. Gurukul Kangri Uniersity Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सच्चे सन्यासियों की आवश्यकता

[श्री पं० विष्णुमित्र जी गुरुकुल कांगड़ी]

तस्स समय समाज में वर्णाश्रम धर्म की था पूर्णतया प्रचलित थी तब प्रत्येक पुरुष अपने धर्मानुसार व्यवहार करता था, चतुर्थाश्रमी संन्यासी जनता को उनके धर्म में यथोचित निष्ठा रखने और ज्ञान वृद्धि में सर्व प्रकार से सहायता देते थे। इसके ही जनता की उपेक्षा बुद्धि और पथभ्रष्टता आंख भी दिखाने में संकोच न करते थे। नियन्त्रण से समाज में श्रद्धा और आतंक समान रूप से बने रहते थे। समाज को व्यस्थित रखने का उत्तरदायित्व इन्हीं चतुर्थाश्रमों पर हुआ करता था। ये संन्यासी सर्व-होते थे। राजा से लेकर रंक तक और ण से लेकर शूद्र तक इनका मान और आदर थे। इनके मुख से निकले शब्द प्रामाणिक जाते थे। इनका किया हुआ निर्णय अन्तिम य समझा जाता था। इनका त्याग, संयम; कार, सेवा और तप समाज के लिये र्श होता था। आप जानते हैं कि देश का , समाज का हित, स्वार्थ परायण महा-वों से होना सर्वथा असम्भव है। इसके सच्चे, निडर, निर्लोभी, आप्त संन्यासियों आवश्यकता है। यद्यपि आज वह प्राचीन र्श लुप्तप्राय हो गया है तो भी संसार से ी वस्तु का सर्वथा सर्वनाश नहीं होता। धिकता ज़रूर हो जाती है। वर्तमान समय मे देश और समाज के लिये सच्चे संन्यासी ते ही रहे हैं। इस समय भी यदि आर्य जा के उद्योग से इस चतुर्थाश्रम के पुनर्जीवित का प्रयत्न आरम्भ हो जाय तो यह मा फिर धीरे २ उसी अवस्था में आ सकता आर्य समाज ने जिस काम को प्रारम्भ किया ह कभी अधूरा नहीं रहा। बाढ़ के कारण पार की इमारतों के वह जाने पर और कुल के इधर आजाने पर पार की उस भूमि इस आश्रम के पुनर्जीवित करने के लिये य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सभा ांभा था। यदि उस समय श्री स्वामी जी के कमलों से इस आश्रम की बुनियाद रख दी होती तो आज समाज के लिये कितने सच्चे ासी मिल गये होते। इसमें कोई सन्देह नहीं जब तक आर्य समाज सच्चे संन्यासियों को नहीं करता तब तक इस समाज की उन्नति रहेगी। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि—

संन्यासाश्रम के बिना विद्या धर्म कभी नहीं सकता। दूसरे आश्रमों को विद्याग्रहण, गृह-, तपश्चर्या का सम्बन्ध होने से कम अवकाश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रमोंको दुष्कर है। संन्यासी सर्वतो मुक्त होकर जैसे जगत का उपकार कर सकता है अन्य आश्रमी नहीं कर सकता। इत्यादि।

जब तक संसार को सुख और शान्ति की आवश्यकता है। प्रेम और सेवा की ज़रूरत है। तब तक त्याग और बलिदान की भी आवश्यकता रहेगी और तभी तक वैदिक सभ्यता के परम-पुनीत इस चतुर्थाश्रम धर्म की भी आवश्यकता रहेगी। देश और जाति पर निछावर होने वाले निर्भीक, निर्लोभी, और सर्वहितकारी स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी सर्वदानन्द जैसे संन्यासियों की जरूरत भी बनी रहेगी।

समाज के पथ भ्रष्ट होने पर उसको ललकारने वाला निर्भय संन्यासी अवश्य होना चाहिए। संन्यासी जैसी निर्भीकता दूसरों के आश्रय पर पलने वाले अन्य आश्रमियों में आ ही नहीं सकती। सन् सम्वत् का मुझे स्मरण नहीं जब कि गुरुकुल के उत्सव पर स्वामी सर्वदानन्द जी ने उस पार सहस्रों की तादाद में बैठी हुई जनता के सामने उसके प्यारे गुरुकुल की समालोचना की थी कि गुरुकुल ऋषि दयानन्द के बतलाये हुए मार्ग से कुछ इधर उधर जा रहा है तब स्वामी जी के इतना कहने पर उन्हें मुंह फट संन्यासी की पदवी दी गई थी, पर वह निर्भीक संन्यासी इस अपमान की क्या परवाह करता है। क्योंकि उसके लिए तो शास्त्र ने बतलाया हुआ है कि—

"अमृतस्येव चाकांक्षेद्वमानस्य सर्वदा।

इसी बात को लक्ष्य करके ऋषि को सत्यार्थ-प्रकाश में लिखना पड़ा है कि—

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु—लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरण मस्तु युगान्तरे वान्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

इन दोनों महा पुरुषों ने कब कब अपमान सहा इसकी लम्बी कहानी है, कभी फिर अवकाश मिलने पर लिखूंगा।

साधु सेवा गृहस्थ का परम कर्तव्य है। अतिथि सत्कार पंच महा यज्ञों में एक अत्यावश्यक और अनिवार्य यज्ञ हैं। सच्चे साधुओं और संन्यासियों का यथोचित् सत्कार न करने पर समाज को कम हानि और क्षति नहीं उठानी पड़ी। सच्चे महात्मा किसी विशेष सत्कार और मान प्रतिष्ठा के भूखे नहीं होते परन्तु क्या हमें स्वयं अपनी ओर से उनके जीवन की साधारण आवश्यकताओं को भी पूर्ण नहीं करना चाहिए।

आर्य वीर दल को संगठित कीजिए

[समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों तथा सर्व-साधारण आर्य जनता से आवश्यक निवेदन]

आर्य वीर दल के संगठन के प्रसंग में एक प्रश्न कई स्थानों से पूछा गया है। प्रश्न आवश्यक है अतः उसका उत्तर इस वक्तव्य द्वारा दिया जा रहा है।

प्रश्न यह है कि जो आर्यपुरुष किसी अन्य स्वयंसेवक दल तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अथवा हिन्दुस्तानी सेवा दल में कार्य करते हों उनका आर्य वीर दल के प्रति क्या कर्तव्य है?

इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रुप से यह है कि जहां प्रत्येक आर्य पुरुष को राष्ट्रीय तथा सामाजिक कर्त्तव्यों के पालन में पूरी स्वाधीनता है वहां वह आर्यसमाज के प्रति अपने कर्त्तव्य के साथ धर्म के बन्धन में बंधा हुआ है। यदि उसके पास इतना समय और इतनी शक्ति हो कि वह एक से अधिक परस्पर अविरोधी स्वयंसेवक दलों में क्रियात्मक काम कर सके तो कोई आपत्ति नहीं परन्तु यदि ऐसा न हो सके और उसे एक ही चुनाव करना हो तो आर्य समाज का अंग होने के कारण उसका धर्म है कि वह आर्य वीर दल में काम करे। अन्य अनेक स्वयंसेवक दलों के होते हुए भी आर्यवीर दल के संगठन का निश्चय इस कारण किया गया है कि अनुभव ने उसकी आवश्यकता सिद्ध की है। आर्यसमाज जैसी क्रियात्मक क्षेत्र में अनथक काम करने वाली सार्वजनिक संस्था के पास कार्य करने का साधन होना ही चाहिए। आर्यवीर दल यही है। प्रत्येक आर्य नर नारी का कर्त्तव्य है कि वह अपना धर्म समझ कर आर्यवीर दल के संगठन में सहायता दे।

यह प्रश्न भी पूछा गया है कि आर्यसमाज मन्दिरों में अन्य स्वयंसेवक दलों को स्थान दिया जाय या नहीं। इस विषय में कोई भ्रांति नहीं रहनी चाहिए। किसी आर्य समाज मन्दिर में यदि स्वयंसेवकों का शिक्षण प्रबन्ध हो सकता हो तो वहां आर्यवीर दल की स्थापना और शिक्षा का प्रबन्ध होना ही चाहिए; क्योंकि अन्य संस्था आर्यवीरदल का स्थानापन्न नहीं हो सकती।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि सार्वदेशिक सभा किसी अन्य स्वयंसेवक दल का विरोध नहीं करती परन्तु आर्यसमाज और आर्य पुरुषों का कर्त्तव्य यह हैं कि शीघ्र आर्यवीर दल के देशव्यापी संगठन को पूरा किया जाय। कोई ग्राम और कोई नगर ऐसा न होना चाहिए जहां आर्य समाज न हो और कोई आर्यसमाज ऐसा न होना चाहिए जिसके साथ एक दृढ़ आर्यवीर दल न हो।

इन्द्र विद्यावाचस्पति

आधुनिक शिक्षा और गुरुकुल-प्रणाली

(स्वर्गीय श्री सत्यमूर्ति एम: एल. ए)

आधुनिक सरकारी विश्वविद्यालयों से प्रतिवर्ष पर्याप्त संख्या में ग्रेजुएट निकलते हैं; लेकिन इसके होते हुए भी इस शिक्षा-संस्थान से देश का कोई स्थायी व मौलिक हित सम्पन्न नही हुआ। यह हो भी नहीं सकता; क्योंकि हमारी तमाम आधुनिक शिक्षा का भवन लार्ड मैकाले के उस विख्यात खरीते की आधार-शिला पर खड़ा है, जिसके शब्द-शब्द से भारतीयता की अवहेलना और उपहास की बू आती है। कुछ मामूली परिवर्तनों के साथ आज भी वह आधार शिला कायम है।

हमें इसमें कोई आश्चर्य न होगा कि आधुनिक शिक्षा ने, राष्ट्रीय दृष्टिकोण से हमारे देश को कितना अधिक गिरा दिया है, इस शिक्षा ने क्लर्कों की एक ऐसी फौज तैयार कर दी है जो स्वतन्त्र विवेक, साहस व उत्साह से सर्वथा शून्य है; उच्च शिक्षा का एक भी तो उद्देश्य इससे पूरा नहीं हुआ।

बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि भारतवासियों में विशेष कर हिन्दुओं में, अपने को हीन व तुच्छ समझने की भावना घर करती जा रही है—निस्सन्देह यह बुरी शिक्षा का परिणाम है। अब हमें अपने समाज को इस हीन भावना से मुक्त करना है। कोई कारण नहीं कि हम अपने भूतकाल पर लज्जित हों और संसार के सामने सफाइयां देते फिरें। यहां तक कि हमें वर्तमान काल पर भी खामख्वाह लज्जित होने की कोई बात नहीं है। डेढ़ सदी तक हमारे देश को जिस कुप्रबन्ध और शोषण के मार्ग में से गुजरना पड़ा है यदि और किसी देश को इस अवस्था का सामना करना पड़ा होता तो उसकी हस्ती आज तक कभी की संसार के तख्ते से मिट चुकी होती। लेकिन ईश्वर का धन्यवाद है, हमारी वैदिक-संस्कृति और पुरातन आदर्शों का धन्यवाद है कि हम आज भी जीवित हैं। केवल-मात्र जीवित ही नहीं; सामने क्षितिज पर हमारे प्यारे भारतवर्ष देश की सुनहरी आशा किरण झलक रही है।

आर्य-संस्कृति के प्रेमियों को अब तैयार हो जाना चाहिए और अपनी सभ्यता तथा संस्कृति के उद्धार के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। यह गुरुतर बोझ हमें अपने कन्धों पर उठाना होगा। इस दोषमय प्रणाली को त्याग कर प्राचीन गुरुकुल-पद्धति को अपनाना होगा। अपने देशवासियों के हृदयों में, उनकी चेतनाशक्ति के अन्तर्तम में, एक बार फिर आत्मगौरव और आत्म सन्मान का भाव संचारित करना होगा और प्राणपन से उसकी रक्षा करनी होगी। इस महान् यज्ञ में आर्यसमाज ने सर्वप्रथम आहुति दी है जिसका सुन्दर परिणाम हमारे सामने वर्तमान गुरुकुल है।

गुरुकुल-प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता, जिसने मेरा ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया है, वह है ब्रह्मचर्य का आदर्श। हमारे देश में विद्यार्थी अवस्था के साथ ब्रह्मचर्य का जो पवित्र सम्बन्ध रखा गया है वह अति सुन्दर है; इसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है।

मैं कि एक स्वदेशाभिमानी शिक्षा संस्था में

अनन्त के सागर में

जगदीश बी० ए०

(१)

विजयी बच्चा

"नटखट बच्चे!
पतंग की लूट में
चलती गाड़ियों के पिछाड़ी बैठने में
तू जान गँवाने से भी नहीं झिझकता
मना करते करते
तू दौड़ती हुई मोटरों के आगे निकल भागता है।
शैतान! तू इतना ऊधम क्यों मचाता है?
क्या तुझे मौत का डर नहीं?"
"मौत को अभी अभी जीत कर तो जन्मा हूँ"

(२)

बलवान कौन?

बुढ़ापा जवानी को मार कर आता है
फिर भी लोग कहते हैं·····
"जवान बूढ़ों से बलवान हैं·····?"

(३)

सदा जवानी

जवानी बूढ़ी हुई
अब बुढ़ापा जवानी पर है

(४)

जीवन मरण

बचपन पैदा हुआ, मर गया
पर मैं जीता रहा,
जवानी पैदा हुई, मर गयी
पर मैं जीता रहा
बुढ़ापा पैदा हुआ, मर जायगा
पर मैं जीता रहूँगा
"शायद मैं पैदा ही नहीं हुआ!"

(५)

माया पाश

जीव तू जान बूझ कर माया के पाश में क्यों बंधा है?
"परम सुन्दर और पक्का है"

(६)

अनन्त के सागर में

अनन्त के सागर में समा सरिता उदासीन हो गई
आह! शरीरका सौन्दर्य माधुर्य सब जाता रहा
हा! सभी गुण खो गए
मैं खारी हुई
वह मेरे हरे भरे तट कहां?
फूलों फलों से लदे लता तरु
कोई भी तो दिखलाई नहीं देता
चित्र विचित्र पक्षियों का चहचहाना
और ये हँसती खेलती सूरतें
यहां कहां····· ?
दुखी हो सरिता ने आह भरी
दूर आकाश में जा पड़ी
वहां उसने देखा
उसके चिर परिचित साथी
लताएं···तरु···नर···नारी···
पशु पक्षी जो उसके साथ खेलते थे
उसका रोम रोम पुलकित हो उठा
उसके जल कण दौड़ दौड़ कर
स्त्रियों के मुखों से
नव विकसित पुष्प पल्लवों से
हरे हरे घास के एक एक तृण से
लिपटने लगे
अब सांप के मुख में गिर मोती
हर्षोत्फुल्ल कमल नयनों में आंसू
फूलों फलों में मधुर रस
किसान के खेतों में नीहार कण
"अहह! अनन्त में मिलकर नहीं
अनन्त से दूर जा कर
सरिता अनन्त रूप में खेलने लगी"

भाषा का माध्यम होना चाहिए गुरुकुलों में विद्यार्थियों की मातृभाषा हिन्दी ही प्रत्येक विषय की शिक्षा का माध्यम है। यह गुरुकुल की अपनी ही विशेषता है जिसे भारत की अन्य शिक्षा-संस्थाएँ भी शीघ्रता के साथ अपनाती जारही हैं।

भारत में प्रचलित गुरुकुलों का अनेक बार निरीक्षण करने के पश्चात् मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि गुरुकुल पद्धति के प्रसार से ही हमारे देश का सच्चा सुधार हो सकता है। भारतीयता की रक्षा करने का भी एक यही तरीका है कि ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहना दी जाय इस नए ज़माने में गुरुकुल प्रणाली का पुनरुज्जीवित करने वाले श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का हमें अत्यन्त कृतज्ञ होना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते।
य ओशिनः। यो देवान्यो अमीवह
ष्टिवर्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः
शंसो अररुषो धूर्त्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य।
ब्रह्मणस्पते। ऋ० मं० १ सूक्त १२

[ब्रह्मचारी प्रताप एकादश गु० कां

धन्य वह प्रभु ब्रह्मणस्पति!
जो कि कामयमान जन को सोमरस से यु
औ' उसे कर दे प्रकाशक कमर कस तैया
धन्य वह प्रभु ब्रह्मणस्पति।
जो कि है ऐश्वर्यशाली, आधिहारी, व्याधि
धनों का भंडार है जो पुष्टिवर्धक शीघ्रका
धन्य वह प्रभु ब्रह्मणस्पति।
ये कृपण जन जब कभी नुकसान करने प
मृत्यु औ' अपमान से तब आप ही हम
धन्य वह प्रभु ब्रह्मणस्पति।

स्नातक मंडल का वार्षिक अधि

सब स्नातक बन्धुओं को सूचना
कि स्नातक मण्डल का वार्षिक अधि
अप्रैल मध्याह्नोत्तर गुरुकुल भूमि में होग
वार्षिक रिपोर्ट, अधिकारियों का चुनाव
सभा के लिये स्नातकों के प्रतिनिधि नि
विषय पेश होंगे। अन्य वही विषय पेश
जिनकी सूचना मेरे पास लाहौर में. या
तक गुरुकुल भूमि में पहुँची होगी। वही
दे सकेंगे जिन का वार्षिक चन्दा प्राप्त हो
चन्दा ॥) मात्र है। यह चन्दा २५
२ बजे तक पं० मनोहर जी विद्यालंकार
के पास जमा कर देना चाहिए और
लेलेनी चाहिए। —देवराज विद्यालंकार

राम मैडीकल स्टोर निस्बत रो

अष्टाध्यायी की अन्वर्थक संज्ञाएं

[श्री धर्मराज जी]

(गतांक से आगे)

१.५. कर्मधारय :—'कर्म गुणं धारयतीति'। और क्रिया के द्वारा व्यक्ति की विशेषता का होता है। कर्म क्रियावान् का विशेषक होता विशेषकत्व सामान्य से कर्म क्रियावान् का षक होता है, विशेषकत्व सामान्य से कर्म और पर्यायवाची है। इसी लिए निरुक्त में गुण ों को 'कार्यनामिकानि' कहा गया है। 'नीलो-म्' कर्मधारय समास है, यह 'नील' इस गुण-ी शब्द की धारण करता है।

"पूर्वोत्तरपदे यस्मिन् समासे गुणपत् कर्म धार-: । ऐसा भी अर्थ किया जा सकता हैं। कर्म-य समास में विद्यमान विशेषण और विशेष्य ों का अन्वय कर्म या क्रिया के साथ इकट्ठा ा है।

१६ द्वन्द्वः—'द्वन्द्वं रहस्यमर्यादा वचनव्युत्क्रम-णात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु' इस सूत्र से निपातन करके शब्द सिद्ध होता है। यहां अनेक अर्थों में एक अभिव्यक्ति भी है। महाभाष्य में 'अत्यन्त चारितत्वेन लोकविज्ञानमभिव्यक्तिः' ऐसा भिव्यक्ति का अर्थ लिखा है। द्वन्द्व समास य पदार्थ प्रधान माना जाता है, इसमें पूर्वपदार्थ ा उत्तरपदार्थ दोनों की अभिव्यक्ति लोकविज्ञान प्रतीति अत्यन्त साथ साथ या युगपत् होती है, लिये इसे द्वन्द्व कहना ठीक है। जन्य समासों द्वान्द्व इस लिये नहीं कहा जा सकता क्योंकि में से किसी में पूर्व पदार्थ (अव्ययी भाव) किसी उत्तर पदार्थ (तत्पुरुष) और किसी में अन्य पदार्थ हुव्रीहि) प्रधान होता है इसलिये इकट्ठा अभि-क्ति नहीं हो सकता।

१७ तत्पुरुषः—इस पदके दो विग्रह किए जा ते हैं, १ तस्य पुरुषः २ स पुरुषः। इनमें पहले ग्रह के अनुसार यह समास साधारण तत्पुरुष और दूसरे विग्रह के अनुसार कर्मधारय तत्पुरुष। पुरुष के ये ही दो मुख्य प्रकार हैं, दोनों प्रतिनिधि 'तत्पुरुष' शब्द है अतएव उपलक्षित ास का नाम भी तत्पुरुष हुआ।

१८ बहुव्रीहिः—'बहवो व्रीहयो यस्यासौ बहु-व्रीहिः'। इस शब्द में ही अन्य पदार्थ प्रधान ास है, प्रतिनिधि शब्द होने से यही इस समास नाम है।

१९. अव्ययीभावः—'अनव्ययम् अव्ययं भवति। व्ययीभाव समास की अव्यय संज्ञा होती है। ष्णस्य समीपम् उपकृष्णम्। यहां कृष्ण जो ले अव्यय नहीं था समास में आकर अव्यय बन या है।

२० द्विगु- 'द्वाभ्यां गोभ्यां क्रीतम्, क्रीतार्थे ठको क्"। यहां तेन क्रीतम्' यह 'तद्धितार्थ' है और द शब्द 'संख्या पूर्व' भी है। तद्धितार्थोत्तरपद ाहारे च' 'संख्या पूर्वो द्विगु'। इन दो सूत्रों के धार पर तद्धितार्थ में होना तथा संख्या पूर्व ना द्विगु समास की विशेषताएं हैं, ये दोनों विशे-ताएं 'द्विगु' शब्द में भी हैं, इस लिए इस समास नाम यही उचित है।

२१ तद्धिताः—'तस्मै हितम्। इत्यादि अर्थों में जो प्रत्यय हों वे तद्धित कहलाते हैं। प्रसिद्ध अर्थ को लेकर सबका नाम पड़ गया है।

२२. प्रत्ययः—'प्रत्ययाय्यते प्रत्याययति वा प्रत्ययः। कर्म साधन और कर्तृ साधन दोनों प्रकार का इस शब्द को भाष्यकार ने माना है। 'अविकः' आदि में जहां प्रत्यय स्वार्थिक हैं वहां प्रत्यय का कर्म साधन अर्थ है, अन्यत्र प्रत्यय प्रकृति के अर्थ को बतलाता है, इस अवस्था में प्रत्यय शब्द कर्तृ-साधन है।

प्रति शाख्यों में 'प्रत्यय' शब्द का अर्थ 'पर' है, प्रत्यय भी प्रकृति से परे होता है, इस आधार पर भी प्रत्यय की अन्वर्थकता है।

२३, २४,२५ प्रथम मध्यम उत्तम—ये पुरुष हैं। यहां उत्तम का अर्थ श्रेष्ठ न होकर 'अन्तिम' है। ये शब्द व्यापकता के आधार पर हैं। प्रथम पुरुष से सूचित 'वे' हम और तुम से अपेक्षाकृत अधिक हैं। इसी तरह 'तुम' से सूचित व्यक्ति 'मैं' या 'हम' से अधिक है। जिनके विषय में 'मैं' 'हम दोनों' या 'हम' का प्रयोग हो सके वे प्रायः थोड़े ही होते हैं।

समस्त संसार के प्राणियों को लक्ष्य में रखकर भी 'हम' का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन यहां प्रयोग ही लक्ष्य किया गया है, और वैसे बचकर 'वे' में आने वाली वस्तुएं फिर भी अधिक होंगी।

२६. अभ्यस्तम्—'ददति' में 'ददा' की 'उभे अभ्यस्तम्' के अनुसार अभ्यस्त संज्ञा है। लोक में दोहरानेको अभ्यास कहते हैं, तो जो शब्द समुदाय दोहराने से उत्पन्न हुआ है, उसे अभ्यस्त कहेंगे।

२७. उपधा—'उपधीयते'। 'अलोन्त्यात् पूर्व उपधा। अन्तिमवर्ण से पहला वर्ण उपधासंज्ञक होता है, इसका कारण यह है कि वह 'उपधीयते'—अन्तिम वर्ण के पास रखा हुआ होता है।

२८. पदम—'पद्यते गम्यतेऽर्थोऽनेन'। सुबन्त होने पर ही शब्द अर्थ का बोध कराता है इसलिये 'सुप्तिङन्तं पदम्' ऐसा कहा गया है।

२९. कारकम्—'क्रियाया निर्वर्तकम्'। क्रिया को निष्पन्न करने में जो सहायक हो वह कारक होता है। कर्त्ता करण सम्प्रदान अधिकरण अपादान आदि सब क्रिया के होने में किसी न किसी प्रकार से सहायक हैं।

३०. कर्मप्रवचनीयाः—इस संज्ञा की अन्वर्थकता के विषय में बाल मनोरमा में ही लिख दिया है अतएव उसे ही उद्धृत करना उपयुक्त होगा।

"कर्म प्रवचनीया इति महासंज्ञा करण सामर्थ्यादन्वर्थत्वम्। कर्मेति क्रियोच्यते, तां प्रोक्तवन्तः कर्म प्रवचनीयाः, भूते कर्त्तरि बाहुलकादनी यर् प्रत्ययः। ततश्च क्रियानेव न द्योतयन्ति किन्तु क्रिया-निरूपित सम्बन्ध विशेषं द्योतयन्ति।

'पर्जन्यो जयम् अनु प्रावर्षत' यहां 'अनु' कर्म-प्रवचनीय वस्तुतः 'अनुनिशम्य' के अर्थ को बतला रहा है, एवं निशमन रूप कर्म या क्रिया का प्रवचन करने वाला होने से अनु 'कर्म प्रवचनीय' है, क्रियावाचक शब्द की अविद्यमानता में 'अनु' केवल क्रिया से निरूपित सम्बन्ध का द्योतन कराता है।

मुख्य मुख्य अन्वर्थक संज्ञाओं का निर्वचन प्रकार हमने ऊपर प्रदर्शित किया है। आश्चर्य यह है कि अष्टाध्यायी पर सैकड़ों ग्रन्थ हैं, परन्तु ५-१० संज्ञाओं के अतिरिक्त अन्य किन्हींकी भी व्युत्पत्ति प्रदर्शित करने का कष्ट उनमें नहीं किया गया है। यह विषय नवीन होने से गवेषणा की अपेक्षा रखता है, अतः आशा है विद्वान् समालोचक इधर दृष्टिपात कर इस विषय को उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न करेंगे।*

* इस लेख के लिखने में मुझे गुरुकुल कांगड़ी में व्याकरण के भूतपूर्व उपाध्याय श्री पं० ब्रह्मानन्द जी से पर्याप्त सहायता मिली है। लेखक

(पृष्ठ २ का शेष)

में यन्त्र विशेष से वायु मण्डल पर प्रहार किये जाते हैं लण्डन में ऐसा ही यन्त्र इन प्रहारों को ग्रहण करता है। वायु मण्डल में प्रहार तो सर्वत्र फैल जाते हैं यन्त्र भी लण्डन के सिवाय अन्यत्र कई स्थानों में विद्यमान हैं। प्रहार उन पर भी होते हैं परन्तु उनको ग्रहण लण्डन का यन्त्र ही करता है। अन्य यन्त्र नहीं। ठीक इसी प्रकार से एक मन पर किए हुए प्रहार सारे कारण शरीर में व्याप्त हो जाते हैं। मन भी बहुत हैं पर एक विशेष से किये हुए प्रहारों को एक विशेष मन ही ग्रहण करता है सब मन नहीं। जिन मनों में ग्रहण करने की योग्यता है वे ही एक दूसरे के किए हुए प्रहारों को समझते हैं। उदाहरणार्थ शान्ति पर्व में जहां युधिष्ठिर और व्यास बात चीत कर रहे हैं वहां एक दम जब कि शर-शय्यागत भीष्म मन द्वारा कारण शरीर पर प्रहार करते हैं तब व्यास उनको समझ कर युधिष्ठिर से कहते हैं "शरतल्पगतो भीष्म शाम्यन्निव हुताशनः। मां ध्यायति पुरुष व्याघ्र ततो मे तद् गतं मनः।"

प्रभाकर मन्त्र को जिस समय वैरागी मारता है उस समय वह भी मन द्वारा कारण शरीर पर प्रहार करता है उन प्रहारों को दूरस्थ माता लेती हैं और समझती हैं। इस प्रकार प्रायः माता पिता व अन्य प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु रात में स्वप्नावस्था में हम जान लेते हैं। कारण यही है कि उस समय मन अपेक्षया शान्त होवे प्रहारों के लेने के लिए तय्यार होता है।

मन का प्रभाव अत्यन्त व्यापक है। ऐसे प्रभाव और शक्ति शाली भृत्य को यदि हम अपने वश में रक्खेंगे तो जो हम चाहेंगे कर लेंगे। पर यदि इसके वश में हम हो गये तो हमारा कल्याण नहीं, यह हमारी चटनी बना देगा।

इस मन को हम वश में करके उन्नत हो सकते हैं परन्तु उन्नत उतने ही होंगे जितना कि हमारा संकल्प उच्च होगा। नदी अपने उद्गम स्थान से कभी ऊपर नहीं जा सकती ठीक इसी प्रकार हम अपने मानसिक भावों की अपेक्षा कभी अधिक ऊपर नहीं उठ सकते। इस लिए सब से प्रथम आवश्यक बात यह है कि हम 'दीनता हीनता' के भावों को परे फेंक कर "अहमिन्द्रो न पराजिग्ये इन उच्च भावों को मन में स्थान दें। आत्म सम्मान करना सीखें। optimism आशावाद को धारण करें। इस बात को भी भूल न जायं कि Like attracts like का सिद्धान्त यहां काम कर रहा है। जैसे हमारे भाव होंगे हम वैसे ही बन जाएंगे दीनता का भाव हमारी ओर दीनता को खेंचेगा और हमें दीनता का घर बना देगा। इसके विपरीत विजय का भाव विजय को आकर्षित कर हमें अवश्य विजयी बनाएगा। इस में सन्देह नहीं कि शिव संकल्प का विजय हो कर ही रहेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज संसार

सार्वदेशिक सभा दिल्ली की सूचनाएं तथा समाचार

आर्य जनता की सूचना के लिये उद्घोषित किया जाता है कि इस सभा की ओर से अलमोड़ा और नैनीताल के ज़िलों में प्रचार करने वाले उपदेशक पं० शान्ति स्वरूप जी शास्त्री को उनके आक्षेप योग्य व्यवहार के कारण सभा की सेवा से पृथक् कर दिया गया है अतः अब कोई आर्य भाई वा आर्य समाज उन्हें इस सभा का उपदेशक न समझें।

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन स्थगित

तारीख २७।३।४३ की अन्तरिक सभा का निश्चय

निश्चय हुआ कि क्योंकि आर्य सम्मेलन की वर्तमान तारीखें संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव के साथ संघर्ष के कारण अनुपयुक्त हैं, इस कारण इनमें सम्मेलन न किया जाय। इस वर्ष संयुक्त प्रान्त में किस नगर और किस समय सम्मेलन किया जाय इसका निश्चय आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त पर छोड़ा जाय। उक्त सभा का निश्चय आने पर यह विषय विचारार्थ अन्तरङ्ग सभा में उपस्थित हो।

सार्वदेशिक सभा का त्रैवार्षिक कार्यक्रम

सभा भावी तीन वर्षों के लिये आर्य समाजों का निम्नलिखित कार्यक्रम स्वीकार करती है। सभा का यत्न होगा कि इस कार्यक्रम के अनुसार कार्य हो।

१. स्वाध्याय और सत्संग द्वारा आर्य नर नारियों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को उच्च और दृढ़ बनाया जाय।

२. आर्य वीर दल का मज़बूत और व्यापी संगठन बनाया जाय। तीन वर्षों में आर्य वीरों की संख्या कम से कम ३ लाख हो जाय। आर्य वीर और आर्य वीरांगनाओं के संगठन पर समानरूप में बल दिखा जाय।

३. ग्रामों में वैदिक धर्म प्रचार पर अधिक बल दिया जाय। आर्य समाज की प्रान्तीय और स्थानीय सभायें निम्नलिखित तथा ऐसे ही ग्रन्थ उपायों ग्राम प्रचार के कार्य को आगे बढ़ायें।

(क) ग्राम प्रचार मंडलियों द्वारा।

(ख) औषध वितरण तथा अन्य सेवा कार्यों द्वारा।

(ग) ग्राम में प्रारम्भिक शिक्षणालय स्थापना द्वारा।

४. दलित और आदि वासी कहे जाने वाली जातियों में उच्च जीवन और समानता के वैदिक जीवन सिद्धान्तों का क्रियात्मक प्रचार करके उन्हें आर्य जाति का दृढ़ अंग बनाने का यत्न किया जाय। सब समाजिक संगठनों को विशेष यत्न करके आस पास के इलाकों में बसी हुई इन पिछड़ी हुई जातियों को आर्य समाज के दायरे में लाने का भरसक यत्न करना चाहिये।

५. ऐसे प्रान्तों में जहां आर्य प्रतिनिधि सभायें नहीं हैं, अथवा शिथिल अवस्था में है, प्रचारकार्य को बढ़ाया जाय और जिन भील, थिया आदि जातियों में आर्य धर्म का सुगमता से प्रचार किया जा सकता है, उनमें विशेष कार्य किया जाय।

६. आर्य समाज मन्दिरों के अग्रभाग का एक समान नकशा तैयार करके सब आर्य समाज मन्दिरों के स्थानीय समाजों द्वारा अग्रभाग को उसके अनुकूल बनाया जाय।

आगामी तीन वर्षों का यह स्थायी कार्यक्रम होगा। समय समय पर नई परस्थितियों के अनुसार जिन कार्यों की आवश्यकता होगी उनके सम्बन्ध में सभा उसी समय उचित आदेश देती रहेगी।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली।

देश विदेश के समाचार

—अमृतसर के इलाका नं० ७ में १ अप्रैल से राशन सिस्टम जारी कर दिया गया है। राशन प्रति सप्ताह परचियों द्वारा २७०० परिवार को बांटा जाता है।

—लाहौर के विशप ने कराची में आए हुए लगभग ३००० पोलिश निर्वासितों के लिए कपड़ों तथा जूतों की अपील निकाली है।

—डाक्टर गज्जर की रक्त परीक्षा से पता चलता है कि महात्मा गांधी का स्वास्थ्य साधारण हो गया है। उपवास से पहले की तरह वे नियमित भ्रमण और दिनचर्या पर चल रहे हैं।

—सर सिकन्दर के रिक्तस्थान के लिए तीन और नये उम्मीदवार खड़े हुए हैं—मियां मुमताज दौलताना, नवाब मुहम्मद असलम और मियां मुहम्मद बख्श।

—५ एप्रिल को ब्रिटिश विमानों ने ५० से अधिक जापानी बम वर्षकों और शिकारी विमानों को, जिन्होंने दक्षिण पूर्वी बंगाल पर हमला करने की चेष्टा की राह में ही घेर लिया। कुछ आक्रमणकारियों ने अपने बम मांगदा पर गिरा दिये जिस से साधारणहानि और कुछ हताहत हुए हैं। शत्रु के ११ विमानों को हानि पहुँची।

—डाक्टर श्याम प्रसाद मुकर्जी ने बताया है कि पंजाब हिन्दू सम्मेलन ३० एप्रिल, १—२ मई को होगा।

—छोटे सिक्के इकट्ठा करने वालों के सम्बन्ध में भारत रक्षा-विधान में कुछ संशोधन की घोषणा होने की सम्भावना है। १२ हज़ार के छोटे सिक्के जमा करने के अपराध में एक व्यापारी को ६ महीने की कड़ी कैद की सज़ा हुई है। एक रुपया का नोट न स्वीकार करने पर एक ग्वाले को १००) जुर्माना हुआ है।

—दुर्गा भजन मण्डली (गोजरा) के किन्हीं लाला टिकाराम ने सातला मन्दिर (लाहौर) में देवी के चरणों में अपनी जीभ काट कर भक्ति का प्रदर्शन किया। जीभ काटने के बाद आप अचेतन हो गए। परन्तु चेतना आने पर भी आपने डाक्टरी इलाज कराने से इन्कार किया।

—ट्यूनीशिया के पूर्व की तरफ बान आर्निय व मोंटगोमरी ने अपनी फौजों को पुनः संगठित कर लिया है। अंग्रेज़ तथा अमेरिकन फौजें भी आगे बढ़ रही हैं। अतः शीघ्र ही भयंकर मुठभेड़ की सम्भावना है।

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल-कांगड़ी के समाचार

—वार्षिकोत्सव की तैयारियां शुरू हो गुरुकुल-विश्वविद्यालय कांगड़ी के ४१ वें वार्षि की तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो गई उत्सव ईस्टर की छुट्टियों में ता० २३ अप्रै अप्रैल तक अपूर्व समारोह के साथ मनाया विविध सम्मेलनों के कारण इस वर्ष अन्य वर्षों की अपेक्षा विशेष महत्व पूर्ण हो

—उत्सव के लिए तम्बुओं, छोल रस्सियों और बल्लियों का प्रबन्ध किया है। जलसे के प्रोग्राम को विशेष आकर्षक, तथा उपयोगी बनाने के लिए देश के ग आर्यविद्वानों, सन्यासियों तथा नेताओं न्त्रित किया जा रहा है।

—श्रद्धा-सम्मेलन। २७ अप्रैल को गुरु प्राचीन पुण्य भूमि में श्रद्धा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें समस्त प्रेमी तथा आर्य जनता सम्मिलित होकर उठायेंगी।

—गुरुकुल य स्वास्थ्य अत्युत्तम है। चि लय में रोगियों की संख्या बहुत कम है विद्यालय के ब्रह्मचारियों की वार्षिक समाप्त हो चुकी हैं और वे इन दिनों गु खेतियों में गेहूँ की फसल काटने में सोत दे रहे हैं तथा अन्न उत्पादन विषयक लब्ध कर रहे हैं।

—प्रिंसटन युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर फेल्स हाल 'केरण्ट हिस्ट्री' में 'भारत में क लेख में लिखते हैं—यह सब मान कर भी थोड़ा है, स्थिति निराशा पूर्ण है, सिर्फ़ ही नहीं, प्रत्युत बेल्जियम, फ्रैंच, हालै नार्वेजियन, पोल, जैक, चानी, फिलिपन, रूमी, सर्बियावासी तथा अन्य कई देशों के का मामला ऐसा ही है जैसा कि भारत सब के नाम पर यह कहना अनुचित न वृटेन—(१) अपने वायसराय को वापिस (२) कांग्रेसदल के साथ पुनः समझौते चीत चलाये। (३) गारण्टी दे कि भार बाद स्वतन्त्र कर दिया जायगा। यह गारण्ट राष्ट्र की तरफ़ से हो सिर्फ ब्रिटेन की तरफ़ और भारत—(१) असहयोग आन्दोलन कर दे। (२) सब तरह के नागरिक व विभाग को सहयोग करे जिस से जापा वर्मा व च न से भगाया जा सके।

—मि० राज़े० कर्मिस ने न्यूज़ क्रानि रूस की अनन्त मानव शक्ति के बारे में शीर्षक से लिखा है—जब जर्मनी ने रूस प मण किया तो उसकी कुल आबादी १९ ल लाख के करीब थी। प्रायः ४५ सैंकड़ा आ आयु २० वर्ष से कम थी और ६३ सैकड़ा ३० साल से भी कम। जून १९४१ के बा फ़ौजें रूस का ६लाख वर्गमील प्रदेश पाद चुकी हैं। इस की आबादी ५ करोड़ की का अधिकांश भाग अब भी शत्रु के हाथ

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा आर्य प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक

अध्यात्म सुधा

[२०]

दयानन्दोपनिषद्

ा संगठन तथा सभाध्यक्ष के कर्त्तव्य तथा आदर्श

था सूर्यो जगद्धिताय मेघं छित्त्वा निपा-
तथैव सर्वाधीशः सभापतिः सर्वेभ्यः
यो हितं संपादयेत्। म० ७ ६२ सू०
सूर्य जगत् के कल्याण के लिये मेघ को
, उसी प्रकार सब का सभापति सब प्राणियों
करे।

थाऽन्नं बुभुक्षे यथा च जलं पिपासां
सर्वान् प्राणिनः सुखयतस्तथैव सभाध्य-
सर्वान् सुखयेत्। सू० ६३। म० ८।
"अन्न भोजन से भूख शान्त होती है, और
पिपासा शान्त होती है, वैसे ही सभापति भी
जा को अन्न और जल देने की व्यवस्था करके
जा को सुखी करे।

यथा विद्युत्सूर्यादि रूपेण सर्वं जगत्पोषति
सभाध्यक्षादयः प्रशस्तैर्धनादिभिर्युक्तां
कुर्युः। म० ६। सू० ६३।
बिजली सूर्य आदि रूप से सब जगत् को
ी वस्तुएं देकर पुष्ट करती है वैसे ही सभा-
ध्यक्ष आदि उत्तम और श्रेष्ठ गुणों से प्रजा को पुष्ट तथा
।

सेनाजनैः सकलविद्यं धार्मिकं पुरुषं
कृत्वा संरक्ष्य सर्वस्मै भयप्रदं दुष्टं
त्वा सुखानि प्राप्तव्यानि प्रापयित-
ऋ०मं० १। सू०११२।म०१४
और सेना के मनुष्यों को योग्य है कि
ों में निपुण धार्मिक पुरुष को सभापति
सब प्रकार रक्षा करके, सबको भयभीत
दुष्टों को मारकर स्वयं सुखी

यथा कश्चित् शौर्यादि गुणैः शुम्भमानो राजा रक्ष्यान् रक्षेत् घात्यान् हन्यादग्निर्वनमिव शत्रु सेना दहेत् शत्रूणां महान्ति धनानि प्रापय्यानन्दयेत्। तथैव सभासेनापतिभ्यामनुष्ठेयम्।

सभा और सेनापति को चाहिए कि गुणी राजा की भाँति रक्षणीय व्यक्तियों की रक्षा करे, मारने योग्य व्यक्तियों को मारे, अग्नि जैसे जंगल को जलाती है वैसे शत्रु सेना को नष्ट कर उनका ऐश्वर्य अपनी प्रजा को प्राप्त कराए और स्वयं सुखी हो और दूसरों को सुखी करें।

सभा सेनापतिभ्यां स्वविद्याधर्मस्य। श्रयेण प्रजासु विद्याविनयौ प्रचार्याविद्याऽऽधर्मनिवारणेन सर्वेभ्योऽभय दानं सततं कार्यम्।

ऋ० म० १॥ २।११२। म०८

सभापति और सेनापति को उचित है कि अपनी विद्या और धर्म के आश्रय से प्रजाओं में विद्या और विनय का प्रचार करके अविद्या और अधर्म के निवारण से सब प्राणियों को अभयदान निरन्तर किया करें।

हे सभा सेनेशादयो राजपुरुषा यूयं प्रजाया मन्यायेन वृक्यः स्वार्थसाधनाय सेपेषु यथा प्रवर्तन्ते तथा प्रवर्तमानान् स्वभृत्यान् सम्यक् दण्डयित्वाऽन्यैर्धार्मिकैः भृत्यैः प्रजासु सूर्यवद् रक्षणादिकं सततं प्रकाशयेत् यथा चक्षुष्मान् कूपादन्धं निवार्य सुखयति तथाऽऽन्यायकारिभ्यो भृत्येभ्यः पीडिताः प्रजाः पृथक् रक्षेत्।

ऋ०म०१। ११७ सू०।१७

हे सभा सेनापतियो! तुम लोग प्रजा जनों में अन्याय करने वाले भृत्यों को अच्छी तरह दण्ड देकर धर्मात्मा भृत्यों से प्रजा जनों में सूर्य के समान रक्षा आदि व्यवहारों को प्रकाशित करो। जैसे आँख वाला अन्धे को कूप से बचा कर सुख देता है वैसे अन्याय करने वाले भृत्यों से प्रजा को पृथक रख कर सुखित करे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

दुनियाँ के भविष्य पर—बड़ी भारी विपत्ति को निमन्त्रित कर रहे होंगे। यह नहीं कि अंग्रेज़ देवता हो गये हैं, या रूस ही कोई सच्चा मार्ग दिखाने वाला परन्तु चूँकि अपनी सब कमज़ोरियों और खराके होते हुए भी इस समय अंग्रेज़, रूस और का, चीन सहित उस आसुरी शक्ति का विरोध और उसे परास्त करने के लिए जो कि अपनी और असत्यमूलक नृशंस अवस्थाओं के संख्या गत पर कब्ज़ा करने को भयङ्कर चेष्टा निमित्त बने हुए हैं, (चाहे अनजान में पर दैव कार्य में निमित्त बने हुए हैं) इसलिए अपनी सर्व श. साथ इस पक्ष की विजय ाने के लिये प्रस्तुत हो जाना चाहिए।

हमें क्या करना चाहिए

तो कम से कम हमें

१. अपने मन से धुरिराष्ट्रों के साथ पक्षपात को, इनकी विजयाकांक्षा के छिपे हुए सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को भी बिल्कुल निकाल देना चाहिए। अंग्रेज़ों प्रति द्वेष भाव के कारण या केवल उथल-पुथल नई परिवर्तित अवस्था की इच्छा के कारण जो हुत से भारतवासियों के अन्दर धुरीराष्ट्रों की विजय खुशी होती है वह बहुत ही हानिकारक है, वह पान या जर्मनी को भारत पर आक्रमण करने के लिए ज़बर्दस्ती अपनी ओर खींचती है। हम जानते हैं कि हमारे देश में अंग्रेज़ों के प्रति कटुता इतनी गहरी है कि बड़े-बड़े सरकारी नौकर भी दिल में अंग्रेज़ों की हार चाहते हैं, पर यह अवस्था लित किए जा रहे हैं। जो महानुभाव ग्राहक बनना चाहें हमें सूचित करें। —भीमसेन।

देश विदेश के समाचार

—नागापाइय की अंजुमन अहबाबुल वतन (देशभक्त) की कार्यकारिणी ने एक प्रस्ताव में सरकार से अनुरोध किया है कि कांग्रेसी नेताओं को रिहा कर दिया जाय।

—जल सेना की एक विज्ञप्ति का कथग है कि हालैण्ड तट पर १२ और १३ अप्रैल की रात को वृटिश व जर्मन जङ्गीय जहाज़ों में घाटों पर ज़ोरदार लड़ाई हुई।

—आस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री मि० कार्टन ने कहा कि आस्ट्रेलिया तब तक अपने को सुरक्षित नहीं समझ सकता जब तक कि जापानमें आक्रमण करने का सामर्थ्य है।

—कलियावाद की आरे के १४ नवयुवक, जो ३ दलों में विभक्त थे। जलूस निकालने की चेष्टा करने और कांग्रेसी नारे लगाने के अभियोग में गिरफ्तार किये गये हैं।

—अवध के प्रतिष्ठित हिन्दुओं ने प्रान्तीय सावरकर सम्मान मण्डल बनाया है जिसकी ओर से वह सावरकर को २८ मई को उनके जन्म दिवस के अवसर पर ५०००) की थैली भेंट करेंगे।

—सोना ठिकुरी के पास १४ एप्रिल को डाक लूटे जाने का समाचार प्राप्त हुआ है। डाक के

आर्य समाज संसार

र्वदेशिक सभा दिल्ली की सूचनाएं तथा समाचार

आर्य जनता की सूचना के लिये उद्घोषित केया जाता है कि इस सभा की ओर से अल्मोड़ा और नैनीताल के ज़िलों में प्रचार करने वाले उप ाक पं० शान्ति स्वरूप जी शास्त्री को उन आक्षेप योग्य व्यवहार के कारण सभा की पृथक् कर दिया गया है अतः अब को २४ का भाई वा आर्य समाज उन्हें इस सभा का आज त समझें । ोड़ कर इस

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन स्थगित

तारीख २७ ३ ४३ की अन्तरिक सभा का निश्चय

निश्चय हुआ कि क्योंकि आर्य सम्मेलन की वर्तमान तारीखें संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव के साथ संघर्ष के कारण अनुपयुक्त हैं, इस कारण इनमें सम्मेलन न किया जाय । इस वर्ष संयुक्त प्रान्त में किस नगर और किस समय सम्मेलन किया जाय इसका निश्चय आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त पर छोड़ा जाय । उक्त सभा का निश्चय आने पर यह विषय विचारार्थ अन्तरङ्ग सभा में उपस्थित हो ।

सार्वदेशिक सभा का त्रैवार्षिक कार्यक्रम

सभा भावी तीन वर्षों के लिये आर्य समाजों का निम्नलिखित कार्यक्रम स्वीकार करती है । सभाओं का यत्न होगा कि इस कार्यक्रम के अनुसार कार्य हो ।

१. स्वाध्याय और सत्संग द्वारा आर्य नर नारियों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को उच्च और दृढ़ बनाया जाय ।

शक्ति से सारे ब्रह्माण्ड का कार्य चल रहा है ।

उपनिषदों ने इसके अतिरिक्त यह भी बतलाया कि कांन्करीट आत्म तत्व यदि कर्मफल की इच्छा से करेगा तो वह पितृयान से जाकर स्वर्ग सुख को प्राप्त करेगा और जो निष्काम कर्म करेगा वह देव यान से जाकर मुक्ति का सुख भोगेगा ।

आगे इस विचारात्मक आत्म तत्व का और भी विकास हुआ ।

वेदान्त व आत्म तत्व

यहां तक कि जब वेदान्त दर्शन बना तो उसमें यही प्रतिपादित किया गया कि वास्तवमें ही विचारात्मक आत्म तत्व है, और कुछ है ही नहीं । उन्होंने इस को सिद्ध करने का इस प्रकार प्रयत्न किया कि क्योंकि सत्ताएं इस प्रकार की होती हैं— प्रातिभासिक, व्यवहारिक, पारमार्थिक ।

प्रातिभासिक (स्वप्न) अवस्था में तो इस आत्म तत्व का कोई विचार ही नहीं और यही आत्म तत्व व्यवहारिक अवस्था में कौन्क्रीट आत्म तत्व का रूप धारण कर लेता है और इसलिए हम सब अपने आप को पृथक् २ समझते हैं । परन्तु वास्तव में पारमार्थिक (प्रलया) अवस्था में यह सब कौन्क्रीट आत्म तत्व समाप्त हो जाते हैं और वह एक ही विचारात्मक रह जाता है । परिणामतः उस के सिद्धांत में कौन्क्रीट आत्म तत्व कुछ भी नहीं है । केवल विचारात्मक आत्मतत्व ही है । हां अवस्था

वेदों में आयुर्वेद

[वैद्य श्री रामगोपाल जी शास्त्री, लाहौर]

(३)

शल्य प्रकरण

इस समय पाश्चात्य शल्य क्रिया (सर्जरी) के कौतुक देख कर हम आश्चर्यान्वित हो जाते हैं । शल्य में नये से नया प्रतिदिन का आविष्कार एक बार तो पाश्चात्य विद्वानों पर श्रद्धा उत्पन्न करा देता है ।

पर वैदिक काल की शल्य क्रिया का जब वर्णन हम पढ़ते हैं तो प्रतीत होता है कि वह क्रिया भी पराकाष्ठा तक पहुंच चुकी थी । वैदिक कालीन कुछ निदर्शन यहां उपस्थित किये जाते हैं—

(१) युद्ध में जङ्घा के टूट जाने पर तत्काल ही लोहे की जंघा लगाना "सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्त्तवे प्रत्यधत्तम्" ऋ० १ । ११६ । ५ अश्विनों द्वारा इस में विश्पला की जंघा टूटने पर लोह जंघा लगाने का वर्णन है इस में सद्यः पद पर विशेष ध्यान दें ।

(२) तीन भाग पृथक २ हुए शरीर वाले श्याव के तीनों भागों को अश्वियों ने जोड़ा और फिर उसे पुनरुज्जीवित किया—"त्रिधा ह श्यत्वमश्विना विकस्तमुज्जीवस ऐरयतं सुदानू" ऋ० १ । ११७ । २४

(३) अश्वियों का अन्धे ऋज्राश्व की नेत्र ज्योति ठीक करना—

"चक्षुदानमृज्राश्वम्" १ । ११६ । १६

(४) नार्षद का बाधिर्य्य दूर करना "यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम्" ऋ० १ । ११७ । ८

(५) श्रोण का पंगुपन हटा कर चलने में समर्थ बनाना "श्रोणं···पतवे कृथः" ऋ० १ । ११२ । ८

(६) जराजीर्ण वृद्ध च्यवन को फिर से युवा बनाना "युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः । ऋ० १ । ११७ । १३

(७) मूत्ररोध पर शल्य क्रिया से मूत्र का बाहिर निकालना । वृक्क, गवीनिका, बस्ति वा मेढ्र रोग से यदि मूत्र रुक जावे तो लोहशलाका (कैथीटर) द्वारा वा शस्त्र से छेदन भेदन करके मूत्र लाने का वर्णन है "यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम् । एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ॥६॥ प्र ते भिनद्मि मेहनं वर्त्रं वेशन्त्या इव ॥७॥ अथर्व कांड १ सूक्त ३ ।

सप्तम मंत्र में "भिनद्मि मेहनम्" मूत्रेन्द्रिय का खोलना है । लोह शलाका वा शस्त्र से भेदन करना जिस से निरुद्ध मूत्र बाहर निकले । अश्मरी के कारण यदि मूत्र निरुद्ध हो तो उसकी शल्य क्रिया भी इसी में निर्दिष्ट है ।

अथर्ववेदीय कौशिक सूत्रमें इस सूक्तके विनियोग में लिखा है कि "इषुं विसृजति, बस्तिं विध्यति, वर्त्तिं बिभेत्ति" इस ग्रन्थ के टिप्पणिकार आचार्य केशव ने इन उपर्युक्त मंत्रों के विनियोग सूत्रों पर टिप्पणि करते हुए लिखा है कि "लोहशलाकामभि मंत्र्य शिश्ने प्रवेशयति"

(८) अपचित (अपची) की शल्य द्वारा चिकित्सा का वर्णन । अथर्व वेद ६।८३ का समग्र) के वर्णन से भरा पड़ा

इस में एनी, श्येनी, कृष्णा तथा रोहिणी से चार प्रकार की गण्डमालायें बतायी हैं तिका रामायण्य पचित् प्रपतिष्यति । प्रपतिष्यति सगलुन्तो नशिष्यति ॥३॥ इस का, रामायणी, गलौ तथा गलुन्त चार प्र अपचियों की अवस्था बतलायी है ।

"या ग्रैव्या अपचितोथो या उपपक्ष्याः । बिजाम्नि या अपचितः स्वयंग्रसः ॥ऋ०

इस मन्त्र में ग्रीवा में होने से ग्रैव्य, (बगलों) में होने से उपपक्ष्य, विजाम अर्थ का जोड़, वंक्षण में होने वाली अपची को तीन स्थानों में वर्णन किया गया है । अथ १ । में ग्रीवा के साथ इनको मन्या में होने बताया है ।

संख्या भेद से किस २ शरीरावयव में गण्ड होते हैं उनका वर्णन—

"पञ्चा च या पञ्च शच्च संयन्ति मन्या इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचिताभि सप्त च या सप्ततिश्च संयन्ति ग्रैव्या अभि इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाव्या अपचिताभि नव च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्द्या अ इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचिताभि

अथर्व । ६

इस मंत्र से स्पष्ट कर दिया है कि पचपन ग्रीवा के सतत्तर और स्कन्ध के गण्ड होते हैं । इन सब गण्डों को बाहर निकालने का वर्णन आता है ।

"अपचितां लोहिनीनां कृष्णा भातेति शुभ्र मुनैर्देवस्यमू लेन सर्वा विध्यामि ता अह विध्याम्यासां प्रथमं विध्याम्युत मध्यम इदं जघन्यमासामाच्छिद्य स्तुका मिव

अथर्व० ७

इन दो मंत्रों में देवमुनि मूल से प्रकार के गण्डों का चीरना स्पष्ट भी देवमु प्रकार के रूप का शस्त्र था इस नहीं हो सका क्योंकि वैदिक परम्परा सहस्रों वर्ष हो चुके हैं । कौशिक "अपचिता मिति वैणवेन दात्रयूपेन काल बुन्दैस्तुकाग्रैरिति मंत्रोक्तम् उन्होंने वैणवपद देकर बांस से हो बनाकर गण्ड मालाओं को अभी तक हैं ऐसी प्रथा सुनी है । देवमुनि वृक्ष छि शस्त्र का मूल था अर्थात् पिछना भाग शस्त्र पकड़ा जाता है जिसे अंग्रेज़ी में फारसी में दस्ता कहते हैं इस से उस निर्देश किया है । बंगाल में बांस के ती नाम देव मुनि है यह भी श्रुत परम्परा में तो कोई विवाद नहीं कि गण्डों को द्वारा बाहर निकाला जाता था ।

शल्य चिकित्सक का

यदि कर्त्तोतित्वा संशश्रे यदि वा ऋभू रथस्येवाङ्गानि संदधत्

यदि (कर्त्त) काटने वाले के हाथ से गिर कर (संशश्रे) हिंसित अश्मापहृतः, यदि वा चलाये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य
रविवार ६ वैशाख
विक्रमी २०००

गुरुकुल को चलो

इस अङ्क के पाठकों के हाथों में पहुंचने पर ा कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के प्रारम्भ होने से प्ताह का समय शेष रहेगा। २३ अप्रैल से २६ तक गुरुकुल भूमि में गुरुकुल कांगड़ी विश्व- यालय का वार्षिकोत्सव समारोह के साथ मनाया ा। गुरुकुल के हरेक वार्षिकोत्सव की भांति यह भी अपनी विशेषताएं लिये हुए है। इस वर्ष भाषण कलकत्ता युनिवर्सिटी के भूत पूर्व वायस सलर श्री डा० श्यामसुकर्जी करेंगे। आप स्वर्गीय आशुतोष मुकुर्जी के सुपुत्र हैं। बंगाल के सर्व नेता और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के कर्त्ता प्रधान हैं। आप के व्यक्तित्व में राजनीति संस्कृति, कांग्रेस और हिन्दू महासभा के सुनहरी न्तों का सुनहरी सम्मिश्रण है। इस उत्सव क आर्य सम्मेलन भी रखा गया है, जिसमें समाज के आन्दोलनों के सम्बन्ध में विचार ॥ आर्य वीर दलों के प्रदर्शन भी होंगे। उत्तमो- व्याख्यान और सन्यासी महात्माओं के उपदेशों तिरिक्त कविता सम्मेलन और संगीत सम्मेलन भी । २७ अप्रैल को गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी में 'श्रद्धा-उत्सव' भी मनाया जायगा। उस गुरुकुल की सुनहरी स्मृति को हरा भरा करने त्यें, स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्या के पवित्र स्थान म्मिलित होकर निराशावाद को दूर करके, आशा- को संचारित किया जायगा। अपने दोषों को ान कर उन्हें भस्मसात् करने का यत्न किया गा औ रों के गुणों को देखकर उन्हें धारण का यत्न किया जायगा।

गुरुकुल आन्दोलन इस समय परीक्षण दशा को कर भारत के सार्वजनिक आन्दोलन का स्थिर बन चुका है। उसके कारण आर्य समाज तथा क धर्म का आन्दोलन जनता के दिमाग में स्थिर कार प्राप्त कर चुका है। गुरुकुल आर्य समाज आर्य जाति के पुनरुज्जीवन के लिये आवश्यक न्नों को जुटाने का अत्युत्तम साधन है। यहां से के विद्वान् पंडित, भारतीय स्वाधीनता के पुजारी क धर्मके उपदेष्टा दीक्षित होकर इस समय भारतके ध प्रान्तों में सत्य और न्याय के पक्ष को विजयी का यत्न कर रहे हैं। इस समय भारतवर्ष में ई संस्था नहीं, जहां प्रथम श्रेणी से लेकर ी तक हर एक विद्यार्थी के लिये वेद का यक हो। यहां जात पांत के भेद भाव के विद्यार्थी को वेद की शिक्षा दी जाती है। प्रचार के क्रियात्मिक कार्य को स्थिर और देने के लिये इस वर्ष गुरुकुल में प्रसिद्ध न जुगुलकिशोर जी की उदारता से एक बनाया गया है। यह भी दर्शनीय भवन में वैदिक साहित्य को पुनरु- के सब सु-साधन जुटाए जायेंगे। की पद्धति पर वेदों के शेष वेद भाष्य

वर्तमान युद्ध का आध्यात्मिक स्वरूप

श्री स्वामी अभयदेव जी

आज जो जगत्-व्यापी युद्ध चल रहा है उसे किन्हीं एक जातियों के विरुद्ध युद्ध समझना गलती होगी। जातियां और मनुष्य तो निमित्त-मात्र हैं। इनके पीछे जो शक्तियाँ काम कर रही हैं उन्हें देखना चाहिए। जर्मनी के वर्तमान नाज़ीवाद के पीछे एक ऐसी अन्धकारमयी और असत्य रूप आसुरी-शक्ति काम कर रही है जो कि जगत् भर पर अपना कब्ज़ा करने के लिए बड़े वेग से बढ़ी जा रही है इटली और जापान उसी से संचालित जर्मनी का साथ दे रहे हैं। यदि कहीं उनकी जीत हुई। तो दुनियाँ का बहुत काल के लिए दिव्य जीवन के लिए फिर उभर सकना असम्भवप्राय हो जायगा। हम भारतवासी अभी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि जर्मनी या जापान का राज्य हो जाने का कितना भयंकर अर्थ है। घोर आतङ्क और अत्याचार का राज्य हो जायगा; उन्नति के लिए सब स्वाधीनता, दिव्य प्रकाश तथा सत्य की साधना की सब आशा समाप्त हो जायगी, आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जायगा। इसलिए इस घड़ी आवश्यकता है कि हम दुनियाँ के शत्रु और दुनियाँ के मित्रों व बचाने वालों को साफ पहिचान जांय और अपनी सब सम्भवनीय शक्ति से जो दुनिया की रक्षा करने वाला पक्ष है उसकी मदद करें। यह ठीक है कि हम भारतवासी अंग्रेज़ों के सताये हुए हैं, इसलिए हमारे मनों में उनके प्रति विशेष नफ़रत होना स्वभाविक है पर इस समय उस नफ़रत को भुला देना चाहिये। मैं जानता हुँ कि यह कितना कठिन है, विशेषत: जब कि अंग्रेज़ी सरकार ने पूज्य गान्धी जी तथा देश के सर्व प्रिय नेताओं को जेल में डाल रखा है और घोर दमन कर रही है। तो भी मैं कहूँगा, और इसलिये कहने की और आवश्यकना है, कि इसके होते हुए भी हमें अपने असली शत्रु को, मानवता के शत्रु को भूल नहीं जाना चाहिये। उस शत्रु के मुकाबले में यह सब भी बहुत गौण वस्तु है। पर यदि हम उल्टा सोचेंगे, अँग्रेज़ों को ही कहीं इस समय अपना शत्रु समझेंगे तो हम भारत पर—अतएव समस्त दुनियाँ के भविष्य पर—बड़ी भारी विपत्ति को निमन्त्रित कर रहे होंगे। यह नहीं कि अंग्रेज़ देवता हो गये हैं, या रूस ही कोई सच्चा मार्ग दिखाने वाला है, परन्तु चूँकि अपनी सब कमज़ोरियों और खराबियों के होते हुए भी इस समय अंग्रेज़, रूस और अमेरिका, चीन सहित उस आसुरी शक्ति का विरोध करने और उसे परास्त करने के लिए जो कि अपनी अन्धकार और असत्यमूलक नृशंस अवस्थाओं के साथ सब जगत पर कब्ज़ा करने को भयङ्कर चेष्टा कर रही है निमित्त बने हुए हैं, (चाहे अनजान में ही, पर दैव कार्य में निमित्त बने हुए हैं) इसलिए हमें अपनी सर्व शक्ति के साथ इस पक्ष की विजय कराने के लिये प्रस्तुत हो जाना चाहिए।

हमें क्या करना चाहिए

तो कम से कम हमें

१. अपने मन से धुरिराष्ट्रों के साथ पक्षपात को, इनकी विजयाकांक्षा के छिपे हुए सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को भी बिल्कुल निकाल देना चाहिए। अंग्रेज़ों के प्रति द्वेष भाव के कारण या केवल उथल-पुथल व नई परिवर्तित अवस्था की इच्छा के कारण जो बहुत से भारतवासियों के अन्दर धुरीराष्ट्रों की विजय से खुशी होती है वह बहुत ही हानिकारक है, वह जापान या जर्मनी को भारत पर आक्रमण करने के लिए ज़बर्दस्ती अपनी ओर खींचती है। हम जानते हैं कि हमारे देश में अंग्रेज़ों के प्रति कटुता इतनी गहरी है कि बड़े-बड़े सरकारी नौकर भी दिल में अंग्रेज़ों की हार चाहते हैं, पर यह अवस्था इस समय जगत् कल्याण के लिए और अतएव भारत-कल्याण के लिए बहुत ही विपरीत जा रही है। इस लिए बड़ी भारी मदद यह है कि हम अपने मनों में से धुरीराष्ट्रों के प्रति सूक्ष्म-से-सूक्ष्म पक्षपात को भी बिल्कुल निकाल देवे, बल्कि—

२. सच्चे दिल से हिटलर की हार तथा मित्रपक्ष की विजय मनावें।

३. मित्रपक्ष को विजयी करने के लिये अन्य जो कुछ भौतिक सहायता पहुंचाना भी हमारे हाथ में हो वह सब भी करें।

पर यदि हम इतना भी नहीं करेंगे तो बड़ा डर है कि कहीं आसुरी पक्ष विजयी न हो जाय। यही समय है जबकि थोड़ा सा भी अपना बोझ ठीक तरहसे ठीक तरफ़ डाल देनेसे उठा जाना हुआ तराजू का पलड़ा फिर ठीक हो अकता है, उचित ओर बोझ पड़ जाने से युद्ध सन्तुलित हो ठीक प्रकार समाप्त होना शुरु हो सकता है। आशा है हम अपना सब बोझ दिव्य-पक्ष की ओर दे देंगे और इस प्रकार दवी विजय में साझीदार होने का गौरव प्राप्त कर सकेंगे। तब संसार पर छाया हुआ महासंकट टल जायगा; दुनिया विश्रान्ति, शान्ति और चैन का सांस ले सकेगी आज़ादी पावेगी। भारत आज़ाद होगा, दुनिया को सच्चे अर्थों में आज़ाद करता हुआ भारत आज़ाद होगा, आज़ादी के साथ अपनी दिव्यता, सत्यप्रका-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

को पूरा करने का संविधान किया जायगा।

इस अवसर पर हर एक आर्य सभ्यताभिमानी को गुरुकुल पधारने का यत्न करना चाहिए। यह उत्सव ईस्टर की छुट्टियों में होगा। हम पञ्जाब के आर्य भाइयों से विशेष अनुरोध के साथ प्रार्थना करेंगे कि वे इस उत्सव में अवश्य पधारें। अपनी सन्तानों को यहां भेजें। गुरुकुल की भिक्षा मंडलियां धन लाने के लिये पञ्जाब के मुख्य २ शहरों में भ्रमण कर रही हैं, उनको पूर्ण सहयोग दें। यदि किसी कारण से स्वयं न आ सकें तो इस पवित्र संस्था के लिये अपना दान भाग भिजवा दें।

हमें पूर्ण आशा है, कि आर्य भाई स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्य स्मृति के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।—भीमसेन सभामंत्री।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Digitized by eGangotri Foundation USA

श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ के चतुर्थ वर्ष (१९९९, १९४२) का परीक्षा परिणाम

श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ की परीक्षाएं कई वर्षों से चल रही हैं जिस में परीक्षार्थियों की संख्या प्रथमवर्ष से लगभग तिगुनी हो गयी है। आठ केन्द्रों में परीक्षायें होती हैं जिसमें पूरे प्रबन्ध से विश्वसनीय आर्य पुरुषों द्वारा व्यवस्था होती है। ऋषि प्रदर्शित आर्ष पाठविधि के अनुसार पठन-पाठन कराने वाले अनेक विद्यालय पीठ में सम्मिलित हैं। दो कन्याओं ने भी गत वर्ष परीक्षा दी थी। इस वर्ष आगामी परीक्षायें १० मई से प्रारम्भ होंगी। इनके प्रवेशपत्र १५ अप्रैल तक प्रधाध्यक्ष जी की आज्ञा से स्वीकृत होसकेंगे।

गतवर्ष की परीक्षाओं (पुनः परीक्षा सहित) का परिणाम कई कारणों से प्रकाशित नहीं हो सका सो अब प्रकाशित किया जाता है—

व्याकरण-उपाध्याय प्रथम खण्ड

परी. सं.	नाम	केन्द्र	विद्यालय	पूर्णांक अङ्कों का योग	श्रेणी	विवरण
१	जगन्नाथ	देवरिया	घनश्यामदास वै. वि,	१८१	प्रथम	
२	रामचन्द्र	,,	,, ,,	१२५	द्वितीय	
३	ओ३म् प्रकाश	,,	,, ,,	१४२	,,	
४	वीरेन्द्र	,,	,, ,,	९३	अनुत्तीर्ण	२ तथा ५ पत्र में अनु०
५	रणवीर	,,	,, ,,	,,	अनुपस्थित	
६	वेदवती	,,	स्वतन्त्र रामपुर अवस्थी	१३०	द्वितीय	
७	इन्द्रदेव	चित्तौड़	गुरुकुल चित्तौड़	अनुपस्थित		परीक्षा नहीं दी
८	ब्रह्मानन्द	,,	,, ,,	१९९	प्रथम	
९	राघवेन्द्र	,,	,, ,,	अनुपस्थित		परीक्षा नहीं दी
१०	जगदानन्द	गोरखपुर	गुरुकुल गोरखपुर	१७२	द्वितीय	
११	सुधीन्द्र	,,	,,	१२७	द्वितीय	
१२	देवानन्द	,,	,,	१४३	द्वितीय	
१३	नागेन्द्र	,,	,,	१४१	द्वितीय	पत्र में पुनः परीक्षा में उत्तीर्ण
१४	कपिल देव	गोरख पुर	गुरुकुल गोरखपुर	२०२	प्रथम	
१५	ज्ञानानन्द	,,	,, ,,	१०३	पुनः परीक्षा में द्वितीय	पत्र में उत्तीर्ण
१६	धर्म व्रत	,,	,, ,,	१७७	प्रथम	
१७	सत्यानन्द	,,	,, ,,	१२९	द्वितीय	
१८	सदानन्द	,,	,, ,,	१३४	,,	
१९	उपमन्यु	लाहौर	विरजानन्द मार्ग विद्यालय	२२६	प्रथम	
२०	शोभाराम	,,	,, ,,	२०१	,,	
२१	माधवन	,,	,, ,,	२२२	,,	
२२	अभय प्रकाश	,,	,, ,,	१९३	,,	
२३	कृष्णचन्द्र	अजमेर	विरजानन्द वै. वि.	१२८	द्वितीय	
२४	नित्य किशोर			१०१	पुनः परीक्षा में द्वितीय	पत्र में उत्तीर्ण
२५	देवेन्द्र			९३	प्रथम	पत्र में अनुत्तीर्ण
२६	सत्येन्द्र			१६१	द्वितीय	
२७	केसरीमल			अनुपस्थित		
२८	ब्रह्मदेव			१३७	द्वितीय	
२९	विद्यावती			१२९	द्वितीय	

व्याकरण-उपाध्याय द्वितीय खण्ड

३०	प्रभाकर	हापुड़	गुरुकुल हापुड़	१०३	(द्वितीय	परीक्षा में
३१	ओम् प्रकाश	,,	,, ,,	११६	तृतीय	
३२	योगेन्द्र	,,	,, ,,	१२३	,,	
३३	वेदप्रकाश नं० १	,,	,, ,,	१४०	द्वितीय	
३४	वेदप्रकाश नं० २	,,	,, ,,	१२३	पुनः परीक्षा	पत्र में उत्तीर्ण
३५	देवेन्द्रनाथ	सोगरा		९७	द्वितीय पत्र	

व्याकरण-उपाध्याय तृतीय खण्ड

३६	चन्द्रदेव	देवरिया	घनश्यामदास वै. वि.	१४४	द्वितीय	
३७	ईश्वरचन्द्र	,,	,, ,,	अनुपस्थित		रुग्ण परीक्ष
३८	रामविलास	,,	,, ,,	१७४	प्रथम	
३९	रघुनाथ	,,	,, ,,	१५१	द्वितीय	
४०	बुद्धदेव	,,	,, ,,	९२	द्वितीय तृती	अनुत्तीर्ण
४१	विप्रबन्धु	चित्तौड़	गुरुकुल चित्तौड़	१०९	द्वितीय तथा	में अनुत्तीर्ण

व्याकरणाचार्य प्रथम खण्ड

४२	मुनीश्वर	देवरिया	घनश्यामदास वै.वि.	१५६	द्वितीय	
४३	रामदेव	,,	,, ,,	१११	तृतीय	
४४	लक्ष्मण	,,	,, ,,	१३२	द्वितीय	
४५	धर्मव्रत	चित्तौड़	गुरुकुल चित्तौड़	४७	प्रथम तथ	
				१००	पत्र मात्र	श्रेणी में।
४६	रामदेव	हापुड़	गुरुकुल हापुड़	१२६	द्वितीय	
४७	वेदपाल	,,	,, ,,	१३२	,,	
४८	जगदीश	,,	,, ,,	१४२	,,	
४९	वाचस्पति	लाहौर	विरजानन्दसार्ङ्गवेद वि.	६८	प्रथम	केवल पत्र
				१००		

व्याकरणाचार्य द्वितीय खण्ड

५०	सत्यवीर	चित्तौड़	गुरुकुल चित्तौड़	११९	तृतीय	
५१	धर्मव्रत	,,	,, ,,	१४४	द्वितीय	
५२	अजयवीर	लाहौर	विरजानन्दसार्ङ्गवेद वि.	२०१	प्रथम	
५३	बनवारीलाल	,,	,, ,,	१३२	पुनः परी	पत्र में उत्तीर्ण
५४	वसुदेव	,,	,, ,,	१५४	द्वितीय	
५५	चन्द्रकान्त	,,	,, ,,	१८६	प्रथम	
५६	वाचस्पति	,,	,, ,,	१९०	प्रथम	

निरुक्ताचार्य

५७	वेदानन्द	सोंगरा	आर्ष विद्यालय नौवेट	१५५	चतुर्थ पत्र	त्तीर्ण
५८	भीमसेन	,,	,, ,,	१९१	प्रथम	
५९	सुरेश्वर	,,	,, ,,	१६३	द्वितीय	

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, परीक्षाध्यक्ष; दयानन्द वि
पो० शाहदरा मिलस (लाहौर),

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल मुलतान

[श्री रामेश बेदी]

गुरुकुल मुलतान गुरुकुल कांगड़ी की सर्व प्रथम ा है। इसकी स्थापना श्री स्वामी श्रद्धानन्द माहाराज ने अपने करकमलों से फरवरी सन् ०९ में की थी। इस कुल के प्रथम मुख्याधिष्ठाता ओ० बालकृष्ण जी पी. एच. डी. थे। उनके बाद पं० चमूपति जी, श्री मा० गोपाल जी, श्री पं० देव जी विद्यावाचस्पति, श्री पं० आत्मानंद जी ालङ्कार, श्री पं० आत्मदेव जी विद्यालङ्कार श्री पं० विष्णुमित्र जी आदि की सेवाएँ इसी कुल को ही मिलने का सौभाग्य प्राप्त है।

पिछले कुछ वर्षों से यहां की अवस्था खराब ी चली जा रही थी लेकिन सौभाग्य वश श्री पं० देव जी वेदालङ्कार और श्री लाला बिहारी लाला सिटायर्ड प्लेटफार्म इन्सपेक्टर की सेवाएँ इस कुल को मिल जाने से यह गुरुकुल एकबार पुनः ने उच्च पद पर आसीन हो चला है।

श्री पं० जयदेव जी अपने त्याग व तपस्या के रण आर्यजगत् में पर्याप्त ख्यातिप्राप्त स्नातक हैं। ला० बिहारी लाल जी भी अपने गुरुकुल प्रेम के प्रसिद्ध हैं। उन्हें सरकारी नौकरी करते प्रबन्ध का पर्याप्त अनुभव है। आपके सुपुत्र राज पुरुषोत्तमदेव आयुर्वेदालङ्कार गुरुकुल ाड़ी के प्रसिद्ध स्नातक हैं और मुलतान में क सेवा के कामों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं।

इस गुरुकुल में प्रथम आठ श्रेणियों की पढ़ाई प्रबन्ध है। इस समय गुरुकुल में ५० के लगभग चारी तथा ६ अध्यापक सुचारुरूप से पठन न का कार्य कर रहे हैं। श्री पं० ओम्प्रकाश जी लंकार मुख्याध्यापक तथा पं० सुरेन्द्र जी आयु-ल ङ्कार चिकित्सक पद पर नियुक्त हैं।

बार गुरुकुल का ३५ वां वार्षिकोत्सव जिस लाता के साथ मनाया गया है उसके लिए हम पण्डित जयदेव जी तथा लाला बिहारी लाल आदि महानुभावों को धन्यवाद दिये बिना रह सकते। उत्सव का समाचार इसी अंक में अन्यत्र दिया जा रहा है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

अ. भा. सा. स. हरिद्वार की स्वागत समिति दूसरी बैठक रायबहादुर श्री गंगाप्रसाद जी ए. चीफजज के सभापतित्व में श्रवणनाथ ज्ञान-द्वार में हुई। स्वागत समिति के स्वागताध्यक्ष महन्त शान्तानन्दनाथ जी का त्याग पत्र उप-त हुआ। समिति ने उनका त्यागपत्र प्रधान ी जी की सलाह से स्वीकृत किया और उनके न पर हिंदी की प्रसिद्ध गल्पलेखिका श्रीमती वती ऋषभसेन सम्पादिका 'दीदी' को स्वाग-यक्ष चुना।

गत समिति ने यह भी निश्चय किया कि सम्मे-के प्रबन्ध को सुगम बनाने के दृष्टिसे यह आव-क है कि सम्मेलन का अधिवेशन बिड़ला जी के ये हुये गुरुकुल कांगड़ी के नये वेद मन्दिर में हो।

वेद-गीत

[रायसाहिब श्री लालचन्द जी]

ओ३म् दृते दृंहमा ज्योक्ते संदृशिजीव्यासम्।
ज्योक्ते संदृशिजीव्यासम् ॥ यजु० ३६।

बलपते ! बल दो मुझे
देखूं तुझे हर स्थान में
निज हृदय में, सब जनों में
जगत में, हर काम में ॥ १ ॥

दो प्रभो ! विश्वास ऐसा
दृढ़ रहूँ, नित स्थिर रहूँ मैं
शक्ति संयुत नम्र हो
कर्तव्य नित करता रहूँ मैं ॥२॥

देखता तुझ को सभी में
सजग हो धरता रहूँ—
शुभ कामना नित सर्वहित के
कर्म ही करता रहूँ ॥ ३ ॥

प्रेम पूरण दृष्टि तेरी
नित्य ही मुझ पर रहे।
स्नेहयुत मंगल भरा
मुझ पर सदा तव कर रहे ॥४॥

पूर्ण आयु भर निरंतर
स्मरण तव करता रहूँ।
तुम देखते हो काम मेरे
भाव यह धरता रहूँ ॥ ५ ॥

मुदित मन सुन्दर सुमन
सब कर्म तव अर्पण करूँ
निश्चित हो निर्भ्रान्त हो
जीवन तेरे अर्पण करूँ ॥६॥

अन्तःकरण में ध्यान तेरा
धर जिउं बढ़ता रहूँ।
विकसित करूँ मैं दिव्यता
सब का भला करता रहूँ ॥७॥

अनन्त के सागर में

श्री जगदीश बी. ए.

यात्री

यात्री ने व्याख्यान में कहा
'संसार का भ्रमण कर रहा हूं
बर्फ ढँपे हुए पहाड़
जलते हुए रेगिस्तान और
गरजते अपार सागर
लहलहाते हुए मैदान देख देख कर फूला
नहीं समाता, चारों ओर सुख
कहीं दुख का निशान नहीं
आनन्द ! सृष्टी आनन्द से भरपूर है
एक कोने से आवाज़ आई संसार यात्री !
तू दुनिया के दुखों को क्या जाने ,
आज यहां तो कल वहां
यात्री ने मुस्करा कर कहा
'मैं भी तो यही कह रहा हूं कि
मैं यात्री हूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(पृष्ठ २ का शेष)

रथ के जोड़ों को जैसे शिल्पी जोड़ देता है उसी प्रकार (संदधत् पुरुषा परूः) (आथर्वण कर्म) शल्य क्रिया कुशल वैद्य जोड़ के साथ जोड़ को (संदधत) मिला दे।

यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तमस्ति पेष्ट्रं त आत्मनि।
धाता तद् भद्रया पुनः संदधत् पुरुषा परूः ॥२॥
अ० ४। १२। ४॥

(यत् ते रिष्टं) हे रोगिन् जो तेरा अङ्ग कट गया है (यत् ते द्युत्तं अस्ति) जो तेरा शरीरावयव जल गया है (पेष्ट्रं त आत्मनि) जो भीतर की ओर पिस गया है (धाता) शल्य योग्यता का धारक चिकित्सक (तद्) उसे (भद्रया) भद्रा नामक ओषधि से (पुरुषा परूः) जोड़ के साथ जोड़ (पुनः संदधत्) फिर से जोड़ देवे।

लोम लोम्ना संकल्पया त्वचा संकल्पया त्वचम्।
असृक् ते अस्थिरोहतु छिन्नं सं धेह्योषधे ॥५॥

लोम के साथ लोम मिलादे, त्वचा के साथ त्वचा मिलादे, (असृक् ते अस्थि रोहतु) तेरा रुधिर और हड्डी भर जावे (छिन्नं धेहि ओषधे) कटे हुए अंग को ओषधे जोड़ दे। इन मंत्रों में स्पष्ट है कि वैदिक भिषक् कटे, जले, पिसे, भीतर वा बाहर को चोट खाये, त्वचा, अस्थि के कटे और टूटे को ठीक करते थे। प्रत्येक पर्व के साथ पर्व जोड़ने का वर्णन सर्वथा ही स्फुट है।

अङ्ग प्रत्यङ्ग ठीक करने के पश्चात् रोगी को पूर्वावस्था में, पहुँचा देते थे ऐसा भाव एक मंत्र से प्रकट होता है—

"स उतिष्ठ प्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः प्रति तिष्ठोर्ध्वः अ० ४। १२। ६।

हे रोगिन् (स उत् तिष्ठ) वह तू खड़ा हो (प्रेहि) आगे चल (प्र द्रव) आगे दौड़ (रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः) जैसे सुन्दर पहियों वाला सुन्दर नाभि और सुन्दर धारा वाला रथ दौड़ाता है। (प्रति तिष्ठ ऊर्ध्वः) ऊपर सीधा खड़ा हो।

शरीर में धसे हुए शस्त्रास्त्रों को बाहर निकालने का वर्णन

'यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च।
इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि ॥
अथर्व ६। ९०। १॥

हे आहत पुरुष, रुद्र (भयंकर शत्रु) ने तेरे अंङ्गों वा हृदय के लिये जिस बाण (वा अन्य शस्त्रास्त्र) को छोड़ा था उस चुभने वाले को आज हम तुझ मे बाहर निकालते हैं।

आवश्यकता है—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के आयुर्वेदिक कौलेज के लिये एक ऐम. बी. बी. ऐस डाक्टर की, जो मैडीसिन, पैथौलौजी फिज़ियौलौजी तथा अन्य विषय हिन्दी में पढ़ सकें। आर्य सज्जनों को विशेषता दी जायगी आवेदन पत्र आचार्य के नाम आना चाहिए प्रार्थना पत्र में आयु अनुभव और कम से कम वेतन जो स्वीकार हो लिखें।

जिन आत्माओं ने इस दुनिया को
अपना''' अपना घर समझ रखा है
उनको सुख कहां
मैं यात्री हूं यात्री! यात्री !!'

गुरुकुल-परिचय

[हरिवंश वेदालंकार]

[समय—प्रातःकाल आठ बजे। स्थान—श्रद्धानन्द द्वार पर स्वागत कार्यालय का कमरा, बीच में मेज़ और इसके चारों ओर बेंचें और कुर्सियां लगी हैं। मध्य की कुर्सी पर स्वागताध्यक्ष-महाशय विराजमान हैं। एक तांगा आता है और उस पर से उतर कर दो सज्जन अन्दर प्रविष्ट होते हैं। स्वागताध्यक्ष उन्हें सन्मान पूर्वक बैठाते हैं]

"जी, आप महाराष्ट्र से आरहे मालूम देते है"।

"जी हां, आपने वेश भूषा से मुझे ठीक ही पहिचाना है।"

"और आप शायद बंगाल से ?"

"जी, मेरा घर मिदिनापुर ज़िले में कलकत्ते के निकट है। इन महाराष्ट्री सज्जन से मेरा परिचय थोड़ी देर पूर्व ही हुआ है। महाराज श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित इस पवित्र गुरुकुल आश्रम को देखने की लालसा हृदय में लेकर हम लोग यहां आए हैं। क्या आप थोड़ा कष्ट करके हमें इस पुनीत स्थली का दर्शन करा सकेंगे ?"

"क्यों नहीं ? आइए। आप ही सज्जनों की इन्तज़ार में हमारी आंखें देर से बिछी हुई थीं। अभ्यागतों की सुविधा के लिए ही यह सुव्यवस्थित स्वागत-बिभाग गुरुकुलाश्रम के प्रारम्भ में स्थापित किया गया है। गुरुकुल देखने के लिए आप बहुत दूर से पधारे और बहुत श्रम उठाया। लीजिए, आपके लिए यह दूध आ गया। हमारा आतिथ्य स्वीकार करते हुए आप लोग इसे ग्रहण कीजिए।"

(दूध पीते हुए) "अहा, यह दूध कितना मधुर है, मानो देवलोक से अमृतकी बूंदें इसमें आ टपकी हों। आपको ऐसा उत्तम दूध कहां से मिल जाता है ?"

"जी, यहां पर हमारी गुरुकुल की अपनी गोशाला है, वहीं का यह दूध है। लगभग ४ दर्जन उत्तम नस्ल की दुधारू गौएँ इस गोशाला में हैं जिनका सभी दूध प्रतिदिन प्रातः सायं ब्रह्मचारियों के भण्डारों में जाता है। वह देखिए, पीतल की टोकनियों में भण्डार के कर्मचारी दूध ढोते हुए लिए जा रहे हैं।"

"आपके यहां दूध की बहुतायत है ; "तभी तो यहां आते ही हमें पुष्कल मात्रा में दूध प्राप्त हुआ।"

"अभी तक हमारी आवश्यकता की पूर्ति के लिए यहां दूध पर्याप्त हो जाता है। आगे अपनी इस गोशाला में गौओं की संख्या दो-सौ तक बढ़ाने की हमारी योजना है। तब आप देखेंगे कि यहां दूध की धाराएँ बहेंगी। वह सामने ऊँचे द्वार वाली इमारत में जो स्थान खाली है वहां पर एक-सौ गौओं के रहने के लिए भवन बनेगा।"

"तो क्या आपकी गोशाला यहीं है ?"

"तब क्यों न हम सबसे पहिले इसे ही देखें ?"

"अवश्य, चलिए। सबसे पहिले इसे ही देखिए। आइए।"

(बाहर निकलकर) "अहा, क्या ही सुन्दर दृश्य है। तरुओं की पांतियों के बीच सुन्दर सड़क दूर तक चली गई है। उद्यानों के पीछे भव्य-भवनों के तोरण और कंगूरे क्या ही शानदार मालूम देते हैं। इस सारे दृश्य पर बाल-सूर्य की किरणें कितनी पवित्रता बखेर रही हैं। हवा में कैसी सात्विक मादकता है। वातावरण कितना स्निग्ध, शान्त और उल्लासमय है। हमें तो यहां सतयुग उतरा हुआ दीख रहा है। ऐसा अनुभव हो रहा है मानों प्राचीन समय के किसी तपोवन में आ पहुँचे हों।"

"आपने ठीक पहिचाना—पुण्य श्लोक श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का तपोवन यही है। इसे श्रद्धानन्द नगरी भी कहते हैं। वेदों, शास्त्रों, आरण्यकों, उपनिषदों और दर्शनों का स्वाध्याय यहीं होता है, ज्ञान-विज्ञान की चर्चा इसी भूमि में होती है ; अध्यात्म-विद्या का गम्भीर चिन्तन यहीं किया जाता है। संसार भर के विविध मत-मतान्तरों का विवेचनात्मक अध्यापन यहीं कराया जाता है। अपनी भारतीय संस्कृति की संरक्षा के लिये ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द ने जो प्रथम पग उठाया था उसका मूर्त-रूप गुरुकुल विश्व विद्यालय काँगड़ी यही है। अब से ७० वर्ष पूर्व कुम्भ के अवसर पर हरद्वार की इसी पवित्र भूमि में ऋषि ने अपना सर्वस्व होम कर विजय-पताका फहराई थी। उनकी तपस्या और त्याग का बीज ही शायद कालान्तर में इस गुरुकुल-वृक्ष रूप में प्रस्फुटित हुआ है। आइए मेरे साथ चलकर गुरुकुल के प्रत्येक विभाग का भली भांति निरीक्षण कीजिए। यह देखिए श्रद्धानन्द द्वार के दोनों ओर लगे शिरीष वृक्ष के सुकुमार पुष्पों की मृदु-गन्ध आपको आमन्त्रित कर रही है।

"हमारे अहो भाग्य कि इस पुण्य भूमि के दर्शन हुए।"

"यह देखिए—गुरुकुल की गोशाला, गौओं की हर प्रकार की सुख-सुविधा का इसमें पूरा २ ध्यान रखा गया है।"

"क्या खूब, सफाई की यहां कितनी उत्तम व्यवस्था है। गोशाला का नाम सुनकर जिस अव्यवस्था, गन्दगी आदि का ध्यान आता है उस का यहां कहीं नामो निशान नज़र नहीं आता। गौएँ उत्तम नस्ल की और कैसी हृष्ट-पुष्ट हैं।"

"और यह देखिए, विद्यालय आश्रम, विद्यालय भण्डार, स्नानगृह, यज्ञशाला, व्यायाम शाला, अस्पताल, दफ्तर, महाविद्यालय आश्रम, वेद महाविद्यालय, आयुर्वेद महाविद्यालय और फार्मेसी।

"हां, हमने प्रत्येक विभाग भली भांति प्रत्येक कमरे में घुम-घुम कर देखा। आर्यसमाज का यह महान् उद्योग है और आप लोग प्रशंसा के पात्र हैं। हमें तो मालूम नहीं था कि यह संस्था इतनी विशाल है। हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का अत्यन्त कृतज्ञ होना चाहिए। हां, यह नया लाल रंग का भव्य भवन क्या है ?"

"श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिरला द्वारा बनवाया जाने वाला, वेद-मन्दिर यही तो है जिसके विषय में आपने अखबारों में पढ़ा होगा।" "यह हाल तो बड़ा शानदार है, भारतीय भवन निर्माण कला का द्योतन इसकी ईंट २ से हो रहा है। पूरी तरह बन जाने पर तो यह इमारत भारत भर में एक दर्शनीय इमारत होगी"।

"निस्सन्देह यह बड़ी सुन्दर इमारत है आगे गुरुकुल में अभी शिल्प महाविद्यालय [illegible] रतें और बनेंगी।"

३ लाख रुपए की अपील शिल्प महा[illegible] खोलने के लिए अखबारों में प्रकाशित की [illegible] जब रुपया एकत्र हो जायगा तब कला सिखाने का भी उत्तम प्रबन्ध हो जायगा [illegible] धीरे गुरुकुल भी स्वावलम्बी होता जायगा [illegible] प्रकार गुरुकुल को हर एक क्षेत्र में आगे [illegible] लिये हमारी ओर से निरन्तर कोशिश [illegible] रही है।"

"आपके गुरुकुल को देखकर हमें [illegible] हुआ। अपनी स्थिति के अनुसार हम भी उन्नति में उचित सहयोग देना चाहते हैं [illegible] दोनों में से प्रत्येक व्यक्ति सौ-सौ रुपया दान

"बहुत अच्छा, धन्यवाद ! यह आश्रम ही है। इसकी सभी वाटिकाओं को भली सींचिए और बाद में मधुर फल खाइए।"

"अच्छा फिर भी अवश्य दर्शन दीजिए

'नमस्ते"।

"नमस्ते"।

—आर्य्य समाज मिण्टगुमरी। १३-४ समाज की ओर से १० लड़कों तथा ६ लड़[illegible] यज्ञोपवीत संस्कार हुए। १३ ४-४३ से यज्ञ मन्त्रों से यहां यज्ञ आरम्भ है। २०-४-४३ आहूति डाली जायेगी वार्षिक उत्सव ३० १-५-४३, २-५-४३ को हो रहा है। ३०-४ नगर कीर्तन है। २-५-४३ को जिला मिण्टगु आर्य्य समाजों का आर्य्य सम्मेलन होगा। स्वामी स्वरूपानन्द जी प्रचार कर रहे हैं प्रतिनिधि सभा ने लड़कों के लिए गतन स्कूल जारी किया था। इस साल दूसरी भी है नये बच्चों के दाखला के लिये प्रयत्न हो कई नये लड़के दाखिल हो चुके हैं। आर्य्य समिति की धर्म शिक्षा परीक्षा में आर्य्य पु शाला मिण्टगुमरी की एक लड़की पंजाब में रही है डी. ए. वी. हाई स्कूल का एक पञ्जाब में प्रथम रहा है। —

(पृष्ठ ३ का शेष)

और अध्यात्मिकता का संदेश सब कहीं फैल के लिये आज़ाद होगा। क्योंकि तब दिव्य फैलने को रोकने वाली बड़ी बड़ी रुका[illegible] बाधायें दुनिया पर से हट चुकी होंगी। इ[illegible] जितना ही भारी यह संकट है इसके टल[illegible] उतना ही भारी कल्याण भी होने वाला है समय आवश्यकता है प्रमाद-रहित होकर, [illegible] लगाकर इस संकट पर विजय पा लेने की। ज़रा से प्रमाद से, ज़रा सी गलती के कारण सकता है कि भारत की आदिकाल से चली [illegible] दिव्यता, सात्विकता तथा सब अध्यात्मि[illegible] मिट्टी में मिल जाने का अवसर आजाय। भारतीय भाइयों से (और भारत का भ[illegible] वालों से) मेरी यह पुकार है।

[श्री अरविन्द निकेतन की त्रैमासिक पत्रिका [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज संसार

आर्य समाजों के प्रतिनिधियों से

आवश्यक निवेदन

ार्य समाजों के प्रतिनिधियों का त्रिवार्षिक सम्वत् १९९८, १९९९, २०००, के लिये १९९८ से हो रहा है परन्तु अनेक आर्य ों ने अभी तक अपने प्रतिनिधि चुन कर नहीं ॥ उन्हें चाहिये कि अपने प्रतिनिधियों का करके प्रतिनिधि फार्म भर कर दशांश तथा चार निधि के धन सहित सभा कार्य्यालय में भेज दें। यह ध्यान रहे कि सभा का यह है कि जो प्रतिनिधि फार्म जनरल सभा की से १५ दिन पूर्व सभा कार्य्यालय में न पहुंच ज्जन पर साधारण सभा के पीछे विचार हो और उनके प्रतिनिधि इस साधारण सभा में न ले सकेंगे सभा ने इस अवधि में ३ दिन के और बढ़ा दिये हैं अतः यह गिन कर न्धि फार्म १२ मई १९४३ तक सभा कार्य्यालय चा जाने चाहियें क्योंकि साधारण सभा का वेशन २९-३० मई १९४३ को होगा।

—भीमसेन, सभा मन्त्री

—आर्य समाज लुहारू का वार्षिक चुनाव निम्न हुआ है— प्रधान—चौधरी निहालसिंह जी क्टर बिड़ला ग्राम्य पाठशालायें पिलानी। धान—श्रीमान् नत्थूराम जी। मन्त्री—श्री ी कर्मानन्द जी। उपमन्त्री—ठाकुर भगवन्त जी। कोषाध्यक्ष—लाला बुद्धूराम जी। पुस्त- याध्यक्ष—मास्टर दीपचन्द जी। —मन्त्री।

—आर्य समाज रिसालपुर छावनी का ९ वां त्सव २-३-४ अप्रैल को बड़े समारोह से । सभा की ओर से पं० तीर्थराम जी, प० गुरु- जी, प० हरीप्रसाद जी उपदेशक, तथा आत्मदेव जी, ठाकुर प्रतापसिंह जी हुए थे आर्यवीर दल नौशेरा तथा ना भी आया हुआ था। उत्सव बड़ा ाम से हुआ। मरदान वाले आर्य सज्जनों ने ी तन मन धन से बड़ी सहायता की है। ८०) को दिये गये। ५) नामकरण संस्कार पर भी को दिये गये। —मन्त्री।

—५-४-४३ को माटुंगा आर्य-समाज बम्बई में स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। में पूज्य श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी का अमृत- उपदेश हुआ।—मन्त्री।

आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली को देने विद्वान् और ग्राम प्रचार के अनुभवी त्यागी रक की आवश्यकता है जो ग्रामों में सेवा कार्य प्रचार कर सके। दक्षिणा योग्यतानुसार दी ी प्रार्थना। प्रर्थना पत्र योग्यता विषयक प्रमाण दि नीचे के पते पर भेजना चाहिये।—मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

—सार्वदेशिक दयानन्द भिक्षु मण्डल व वान- —आर्य दयानन्दपुर (हरिद्वार) का वार्षिकोत्सव स्वामी की अध्यक्षता में होगा और साथ ही वेद प्रचार सम्बन्धी बृहत् आर्य सम्मेलन होगा।

संन्यासी वानप्रस्थी तथा धर्म प्रेमियों की सेवा में निवेदन है कि इस धार्मिक सम्मेलन में सहयोग देकर कृतार्थ करें।

मण्डल की ओरसे इस समय प्रमाणित लगभग ३० संन्यासी व वानप्रस्थी भिन्न २ प्रान्तों में प्रचार कर रहे हैं। सभाने बाहर के उनविद्वान् सन्यासी व वानप्रस्थियों को आश्रम में रखने का निश्चय किया है जिन्हें वेद प्रचार में हार्दिक लगन हो। उनकी सब आवश्यकतायें मण्डलकी ओर से पूरी की जावेंगी।

कृपया वे मुझसे पत्र व्यवहार करें। मण्डल की ओर से यह भी आयोजना बनाई जा रही है कि श्री भाई रणबीर जी शस्त्राचार्य तथा श्री शिव स्वामी जी, जो इस विषय में ख्याति प्राप्त हैं, की अध्यक्षता में व्यायामशाला की स्थापना की जावे। इस सम्बन्ध में आर्यवीर दल वाले पत्र व्यवहार करें। —सुन्दरदास आर्य वानप्रस्थी, मन्त्री।

गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद

तारीख ४-४-४३ को जब मैं गुरुकुल कांगड़ी में था तो मुझे ब्रह्मचारियों को फसल काटते देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह दृश्य २० साल के बाद मुझे देखने का सौभाग्य हुआ जबकि मैंने पुराने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को हरिद्वार में पत्थरों का बन्द बनाते देखा था। वह दृश्य मेरे सामने आगया और अब मैं फूला न समाया।

ब्रह्मचारियों के ये भाव कि गुरुकुल हमारा अपना है। और हम गुरुकुल के हैं और इसके लिये प्रसन्नता से सब कुछ करने को तैयार हैं देखकर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ कि अब गुरुकुल का एक परिवार बन गया है और वह फूलेगा फलेगा। इस के लिए मैं वर्त्तमान आचार्य जी, मुख्याधिष्ठाता जी, सहायक मुख्याधिष्ठाता तथा आश्रमाध्यक्ष जी को बधाई देता हूँ कि इतने अरसे के बाद उन्होंने फिर वहांपर प्रेम की लहर चला दी। मुझे सहायक मुख्याधिष्ठाता जी से जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ब्रह्मचारियों ने गुरुकुल की सहायता के लिए जब कि इन दिनों में मज़दूर नहीं मिलते अपनी सेवाएं सड़क की कुटाई तथा दीगर कामों के लिएपेश कर दीं।

मेरा हार्दिक प्रेम परिपूर्ण आशीर्वाद इन ब्रह्मचारियों के लिए है।

—श्री राय अमृतराय जी, प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

शोक समाचार

१४-१२-९९ को आर्य्य समाज बनूड़ में म० बृजलाल जी भूतपूर्व मन्त्री आर्य्य समाज बनूड़ का अकाल मृत्यु पर शोक सभा हुई जिसमें म० जी के परिवार से सहानुभूति प्रगट की गई तथा परमात्मा से प्रार्थना की गई कि स्वर्गीय की आत्मा को शान्ति तथा उनके परिवार को धैर्य्य प्रदान करें।

म० राजकुमार जी सुपुत्र म० बृजलाल जी ने निम्न लिखित दान दिया—आर्य समाज बनूड़ २५), आर्य प्रतिनिधि सभा वेदप्रचार १०), गुरुकुलकांगड़ी

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल मुलतान का उत्सव

५५००) चन्दा व ३३ नए ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए

मुलतान ४ अप्रैल—गुरुकुल मुलतान का ३५ वां वार्षिकोत्सव ३, ४ अप्रैल को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सर्व श्री महात्मा नारायण स्वामी जी; श्री लाला खुशहालचन्द जी खुर्सन्द, श्रीयुत हरभजनलाल जी, श्री पं ज्ञानचन्द्र जी के उपदेश व व्याख्यान मालाओं से जनता ने लाभ उठाया। उपस्थिति आशातीत थी—श्रोताओं की सुविधा के लिए लाउड स्पीकरों का भी प्रबन्ध था।

श्री प्रो० देश बन्धु जी गायनाचार्य के मधुर संगीत अपनी ही विशेषता रखते थे।

३ अप्रैल को श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के सभापतित्व में 'आर्यप्रतिनिधि सम्मेलन हुआ इसमें इधर के इलाके में विशेष प्रचारार्थ एक उपसमिति बना दी गई।

श्री लाला खुशहालचन्द जी की अपील बड़ी मार्मिक थी उन्होंने कहा कि जिस स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना तन, मन, धन, आप लोगों के लिए न्योछावर कर दिया उसकी एक मात्र यादगार गुरुकुल को भी सफलता पूर्वक चलाना तथा दिल भर कर दान देना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है।

श्री पं० जयदेव वेदालंकार मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल मुलतान के कार्यों की भी आपने प्रशंसा की। अपील के बाद कविराज पुरुषोत्तम देव उत्सव मंत्री ने ५०००) के चन्दे एकत्रित होने की घोषणा की इसके बाद ५००) और उसी वक्त जमा हुआ। इस प्रकार कुल ५५००) चन्दा जमा हुआ और ३० नए ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए।

इस प्रकार यह उत्सव सभी दृष्टियों से अत्यन्त सफल रहा—इसका श्रेय यहां के प्रबन्धकर्ता श्री ला० निहारीलाल जी रिटायर्ड प्लेटफार्म इन्सपैक्टर को है जिन्होंने रात दिन एक करके उत्सव को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

—गुरुकुल कमालिया। श्री पूज्य महात्मा टेक चन्द जी की अध्यक्षता में ८ अप्रैल से १४ अप्रैल तक 'यजुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ' गुरुकुल कमालिया में हो रहा है। ११ अप्रैल को संरक्षक-सभा होगी। १२ अप्रैल को विद्वत्परिषत् होगी तथा इसी दिन रात्रि को ब्रह्मचारियों के खेल होंगे। १३ अप्रैल को एक दिलचस्प नाटक होगा। १४ अप्रैल को पूर्णाहुति होगी और ब्रह्मचारियों का प्रवेश होगा ९ म १० म श्रेणियां गुरुकुल की स्कीम के अनुसार खोली जावेंगी। यज्ञमें कमालिया निवासी बहुसंख्या में भाग ले रहे हैं। बड़े २ आर्य विद्वान् तथा आर्य-जनता यज्ञ में सम्मिलित हो रहे हैं।

—प्रधान, गुरुकुल कमेटी।

आवश्यकता है—एक ट्रेन्ड ग्रेजूएट जो नवीं और दसवीं श्रेणी को अंग्रेज़ी पढ़ा सके। प्रार्थी कट्टर आर्य समाजी हों। आवेदन पत्र आचार्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के नाम आवे। प्रार्थनापत्र में आयु अनुभव और वेतन आदि का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव का निमन्त्रण तथा कार्यक्रम

निमन्त्रण

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी का ४१वां वार्षिकोत्सव २३, २४, २५, २६ अप्रैल को बड़े समारोह के साथ गुरुकुल भूमि में मनाया जायगा। मैं बड़े प्रेम और आग्रह से आपको इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रित करता हूँ।

गुरुकुल भारत का सब से बड़ा राष्ट्रीय शिक्षणालय है। यहां वैदिक और संस्कृत-साहित्य के साथ साथ इतिहास, अर्थ शास्त्र, राजनीति दर्शन, रसायन आदि विविध विषयों की उच्चतम शिक्षा राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती है। गुरुकुल में उच्च मानसिक शिक्षा के अतिरिक्त ब्रह्मचर्य के नियमों और आश्रम प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों के चरित्र के लिये विशेष उद्योग किया जाता है। इस समय गुरुकुल कांगड़ी तथा उसकी शाखाओं में एक हजार से ऊपर विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर जितने भी विद्यार्थी अब तक स्नातक हुए हैं, उनका बड़ा भाग देश, जाति, धर्म और साहित्य की सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है।

इस अनुपम शिक्षणालय का वार्षिकोत्सव अपना एक विशेष स्थान रखता है। आर्य समाज का यह सबसे बड़ा वार्षिक मेला है। इसमें दूर दूर से हजारों नर-नारी सम्मिलित होते हैं। इस वर्ष गुरुकुल का उत्सव बहुत महत्वपूर्ण होगा। ईस्टर की छुट्टियों का सदुपयोग करते हुए आप गुरुकुल के इस उत्सव पर अवश्य आइये और अपनी आत्मा तथा मन को तृप्त कीजिये। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपने परिवार, बन्धु तथा इष्ट-मित्रों के साथ पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावेंगे।

उत्सव का कार्यक्रम

२३ अप्रैल १९४३ तदनुसार ११ वैशाख २०००

प्रातः

७ से ७-३० संकीर्तन श्री पं० बुद्धदेव जी आचार्य की अध्यक्षता में।
७-३० से ८ तक उपदेश श्री० स्वामी व्रतानन्द जी महाराज।
८ से ८-३० तक व्याख्यान श्री० स्वामी अभेदानन्द जी महाराज।
८-३० से १० तक वेद सम्मेलन।
सभापति श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी।
१० से ११ तक व्याख्यान श्री० पं० सूर्यदेव जी शर्म्मा शास्त्री साहित्यालंकार एम० ए० एल० एम० आर० ए० एस०।

मध्याह्न

१ से १-३० तक भजन।
१-३० से २-२० तक व्याख्यान कुं० चांदकरण जी शारदा।
२-३० से ३-२० तक व्याख्यान श्री० पं० लोकनाथ जी।
३-३० से ४-२० तक व्याख्यान श्री० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार।

रात्रि

७-१५ से ७-३० तक भजन।
७-३० से ८-२० तक व्याख्यान श्री० पं० ज्ञानचन्द्र जी आर्य सेवक।
८-२० से १०-२० तक व्यायाम सम्मेलन—इस सम्मेलन में ब्रह्मचारी अपने शारीरिक खेल दिखलावेंगे।

२४ अप्रैल १९४३

प्रातः

७ से ७-३० तक संकीर्तन।
७-३० से ९ तक सरस्वती सम्मेलन—(संस्कृत में)।
श्री० ० बुद्धदेव जी विद्यालंकार 'यज्ञेषु पशवालम्भः' इस विषय पर निबन्ध पढ़ेंगे।
९-१५ से ११-३० तक वाद विवाद सम्मेलन।
विषय—'एकतन्त्र व प्रजातन्त्र' सभापति श्री० सत्यदेव जी परिव्राजक।

मध्याह्न

१ से १-३० तक भजन।
१-३० से २-२० तक व्याख्यान श्री० पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति
२-३० से ३-२० तक व्याख्यान श्री० अयोध्या प्रसाद जी।
३-३० से ४-३० तक व्याख्यान श्री० पं० धर्मेन्द्रनाथ जी तर्क शिरोरात्रि

रात्रि

७-३० से ८-३० तक व्याख्यान श्री० पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार
८-३० से १०-३० तक व्यायाम सम्मेलन—इस सम्मेलन में ब्रह्मचारी अपने शारीरिक खेल दिखलावेंगे।

२५ अप्रैल १९४३

प्रातः

७ से ७-३० तक संकीर्तन
७-३० से ११ तक दीक्षान्त संस्कार।
श्री० डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी एम० ए० एल० बी, डी० लिट० भूतपूर्व वायस चान्सलर कलकत्ता विश्वविद्यालय का दीक्षान्त अभिभाषण होगा।
११ से ११-३० वेद मन्दिर का उद्घाटन डा० श्यामाप्रसाद जी द्वारा

मध्याह्न

१ से १-३० तक भजन।
१-३१ से २-३० तक व्याख्यान श्री० पं० यशपाल जी सिद्धान्तालंकार
२-३० से ३-३० तक व्याख्यान श्री० पं० रामचन्द्र जी देहलवी।
३-३० से ४ तक गुरुकुल प्रगति परिचय श्री० पं० बुद्धदेव जी आचार्य धन संग्रह।
५-३० से ६ तक दंगल (पहलवानों की कुश्तियां)।

रात्रि

७ से ७-१५ तक भजन।
७-१५ से ७-५० तक व्याख्यान श्री० डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत जी
७-५० से ८-३५ तक व्याख्यान श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति।
८-३५ से ९-२० तक व्याख्यान श्री० नारायण स्वामी जी महाराज।
९-२० से १०-२० तक व्यायाम सम्मेलन—इस सम्मेलन में ब्रह्मचारी अपने शारीरिक खेल दिखावेंगे।

२६ अप्रैल १९४३

प्रातः

७ से ७-३० तक संकीर्तन।
७-३० से १० तक वेदारम्भ संस्कार।

मध्याह्न

१ से ३ तक भजन।
३ से ४ तक व्याख्यान श्री० प्रो० सुखदेव जी दर्शनवाचस्पति
४-३० से ६-३० तक दंगल (पहलवानों की कुश्तियां)।

रात्रि

संगीत सम्मेलन।

श्रद्धा सम्मेलन २७ अप्रैल १९४३

गुरुकुल की पुरानी भूमि में, पुराने दृश्यों को याद करने के लिये सब लोग वहां इकट्ठे होंगे क्योंकि यह सम्मेलन श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद को ताजा करने वाला है इस लिए इसका नाम "श्रद्धा" सम्मेलन रखा गया है।

नोट—व्याख्यानों तथा सम्मेलनों के पश्चात समय समय पर भजन हुआ करेंगे।

आपके दर्शनाभिलाषी—

बुद्धदेव विद्यालंकार — इन्द्र विद्यावाचस्पति
आचार्य — (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) मुख्याधिष्ठाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक २३
वार्षिक मूल्य ४)
२०वैशाख, २०००विक्रमी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

गुरुकुल कांगड़ी (Saharanpur)

अध्यात्म सुधा

[२२]

ब्रह्मचर्य

(श्री स्वामी शिवानन्द जी)

ब्रह्मचर्य से अभिप्राय लैङ्गिक इच्छा या श-
ों को वश करने से है, उनके दबाने से नहीं।
मन को अत्युच्च आध्यात्मिक शक्ति से, ध्यान
स्तुति, स्वाध्याय, तथा इन्द्रियातीत आ-
विषयक जिज्ञासा से पूर्ण कर लिया जाय
मन के अन्तर्मुख होने के कारण लिंग
न्धी इच्छा के भोग अथवा बल को निर्बल
ा जा सकता है। ऐसी अवस्था में मन का
ार भी सीमित हो जाता है। यदि लिंग
न्धी इच्छा को दबा ही दिया जाय तो यह
ुई इच्छा उद्बुद्ध होकर बार बार प्रहार
ी है और स्वप्नदोष अथवा मन की अशा-
या चिड़चिड़ेपन के रूप में परिणत हो जाता
इसलिए स्वात्मनियन्त्रण के लिये सर्व
मन को ध्यान, जप, कीर्तन तथा स्तुति
पवित्र करके वश में करना चाहिए। तब
य निग्रह सरल हो जाएगा। यही कारण
शास्त्रों में शम को प्रथम स्थान और दम
द्वितीय स्थान दिया गया है। इन्द्रियां मन के
कार्य नहीं कर सकतीं। इसलिए ब्रह्मचर्य
अचूक औषधि यही है कि सर्व प्रथम मन
वश में किया जाय।

विषयों का अत्यन्त चिन्तन आध्यात्मिक
न्न का भोग की अपेक्षा भी ज्यादह नुकसान
ता है। यदि मन को साधना के द्वारा पवित्र
ना लिया जाय तो एक मात्र बाह्य इन्द्रियों
उत्पीडन ही इष्ट फल को कदापि पैदा नहीं
सकता। बाह्य इन्द्रियों के उत्पीडन से उनको
प्रेरककारण जो कि फिर भी शक्तिशाली ही
अत्यन्त क्षुब्ध होकर अपना बदला मन से
और उसकी अत्यधिक अशा[न्ति] तथा वि-

मन का वश करना धर्म में नए नए दीक्षितों के लिए एक कठिन विषय है। यदि इन्द्रियों को विषयों में स्वेच्छा से विचरण करने दिया जाय तो मन का वश में होना अत्यन्त दुरूह है। यही कारण है कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि—

तस्यात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहीनं ज्ञान विज्ञान नाशनम्॥
अ० ३ श्लोक ४१

हे भरतर्षभ! यदि इस ज्ञान-विज्ञान के विनाशक काम को दूर करना है तो सबसे पहले उन्हें इन्द्रियों को अपने वश में करना चाहिए।

इसलिए यद्यपि यह सिद्धान्त, सत्य है कि मन को सर्व प्रथम वश करना चाहिए तथापि यह सिद्धान्त सिर्फ प्रथम कोटि के जिज्ञासुओं के लिए ही समझना चाहिए साधारण कोटि के जिज्ञासुओं के लिए तो इन्द्रियों का भी सर्वप्रथम वश में होना आवश्यक है। क्योंकि इनकी इन्द्रिएं बहिर्मुखी ही प्रवृत्त रहती हैं और मन भी तद-नुसारी ही आचरण करता है। इसलिए एक के वश होने में दूसरे का बश होना भी अन्तर्निहित ही हो जाता है। मोटे शब्दों में यह कहा भी जा सकता है कि मन इन्द्रिय समुच्चय से अन्य कुछ भी नहीं।

जिस प्रकार किसी शत्रु पर विजय, उस पर दोनों पार्श्वों से धावा बोलने से सरल हो जाती है इसी प्रकार मन का विजय भी शम तथा दम द्वारा सरल हो जाता है।

शम से अभिप्राय कामनाओं की शान्ति तथा दम से इन्द्रियों के उच्छृंखल तौर पर विषयों में प्रवृत्त न होने देने से है। इस प्रकार शम और दम दो प्रकार से मन की बशवर्त्तिता को ही लक्षित करते हैं।

मन के वश में होने से इन्द्रिय-निग्रह सरल हो जाता है या इन्द्रिय-निग्रह होने पर मन का बश में होना सरल हो जाता है, इस दोनों में विशेष अन्तर नहीं। यह सिर्फ इसी प्रकार है जैसे कि कोई कहे कि बीज पहले होता है वृक्ष पीछे या कामनाओं के वश में होने पर ही आत्म साक्षात्कार होता है। क्योंकि वृक्ष पहिले होता है बीज पीछे या आत्मसाक्षात्कार होने पर ही कामनाएं वश में हो जाती है ऐसा भी तो कहा जा सकता है।

में पूर्वोक्त शाब्दिक उलझनों में उलझने की आवश्यकता नहीं। अभ्यास परमावश्यक है, वह अपनी मनोनुकूलता, शक्ति, रुचि तथा स्वभाव के अनुसार भिन्न भिन्न हो सकता है। हमें स्वयं निर्धारण कर लेना चाहिए कि हमारा अभ्यास केवल मन के या केवल इन्द्रियों के अथवा दोनों के साथ साथ वश में करने से प्रारम्भ होना चाहिए। फिर ज्यों ज्यों अभ्यास में तरक्की होती चली जायगी त्यों त्यों शनैः शनैः सारे संशय निवृत्त होते चले जायेंगे और अन्त में परमानन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी।

लिङ्ग सम्बन्धी भोग स्नायुओं को छिन्न-भिन्न कर देता है। इससे शान्ति का अत्यन्त क्षय होता है। स्वप्नदोष से सिर्फ अण्डीला का स्राव ही स्रवित हो, ऐसा भी हो सकता है। यदि वीर्य का भी क्षय हुआ तो वह भी कुछ ज़्यादा नहीं हो पाता। स्वप्नदोष से लिङ्ग सम्बन्धी इच्छा के उद्रेक की सम्भावना नहीं भी हो सकती। परन्तु जान बूझ कर सहवास करने से आध्या-त्मिक उन्नति की अत्यन्त हानि हो जाती है। इस सहवास से जो एक दृढ़ वासना उत्पन्न होगी, वह प्रसुप्त चेतना में विद्यमान अन्य अनेक वासनाओं को बलवती बना कर लिङ्ग सम्बन्धी इच्छा को प्रचण्ड कर देगी। यह इसी प्रकार से होगा जैसे कि बुझती हुई अग्नि में फिर फिर से आहुतिएं डाल कर उसे प्रज्ज्वलित करना। इसलिए सहवास का बिलकुल त्याग करना पड़ेगा। इस बीच मन आपको अनेक प्रलोभन देगा। परन्तु इस की परवाह न कर आप अपने आप जागृत रहिए और अपने अन्तःकरण अन्तरात्म

GC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

देव किसे प्यार करते हैं!

(श्री लालचन्द एम. ए. गुरुकुल कांगड़ी)

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम् न स्वप्नाय स्पृहयन्ति यन्ति प्रमादम् अतन्द्राः ।

देवता सोम रस निकालने वाले की इच्छा करते हैं, सपने लेते रहने वाले की नहीं, अपने आप पूर्ण रूप से जागते हुए वे प्रमादी का नियमन करते हैं।

देव किस से प्यार करते हैं ? देवताओं का प्यारा कैसे बना जाय ? सोमरस निकालो, पिओ और पिलाओ, छको और छकाओ।

यह सोम क्या है ? यह सोम वास्तव में आनन्द है, वह आनन्द जिससे जीवन मिलता है जिससे जीवन बत्ती बढ़ती है, न कि जिससे जीवन बत्ती का ह्रास होता है।

संसार में जितने सुन्दर काम करने वाले हैं वह सब साकी हैं, वे सब संसार को आनन्दित करते हैं। वे देवों को रिझाते हैं, देवों के प्यारे बनते हैं। फ़ारसी में एक प्रसिद्ध कहावत है—

किसने कमालकुन कि अज़ीज़े जहाँ शवी।

कोई कमाल का काम कर कि जहां का प्यारा हो जाये। हम में से हर एक किसी विशेष ओर अधिक उन्नति कर सकता है। किसी का स्वभाविक झुकाव किसी ओर है, किसी का किसी ओर। जिसका जिस ओर अधिक झुकाव है उसी ओर विशेष उन्नति करना और अपनी उन्नत शक्ति को देवों को समर्पित करना, उस से सुन्दर रचनाएं करना—यह है ढंग देवों को रिझाने का। किसी का झुकाव कारीगरी में है वह इस ओर अभ्यास करके खूब दक्ष हो जाता है और निहायत उपयोगी और सुन्दर दस्तकारी के काम करता है, वह देवों का प्यारा बनता है। किसी को चित्रकला का शौक है. वह इस ओर विशेष अभ्यास करके गज़ब के सुन्दर चित्र बनाता है, जैसे कन्नु देसाई या टैफ़्ट, वह देवों का प्यारा बनता है। किसी को मूर्ति निर्माण का शौक है वह इस ओर विशेष अभ्यास करके जीवित जागृत मूर्तियाँ बनाता है, वह भी साकी है, सौन्दर्य को पकड़ने वाला है और सौन्दर्य को व्यक्त करने वाला है। किसी को गाने का शौक है वह गाने में अपनी सब शक्ति को जुटा देता है और रात दिन एक करके निपुण रागी बन जाता है, वह भी दिव्य सौन्दर्य को प्रकट करता है। देवों का प्यारा बनने के लिये ज़रूरी है कि हम दिव्य सौन्दर्य को अनेक ढंगों में से किसी न किसी ढंग से प्रकट करें।

संसार की गहराई में जाओ सब सौन्दर्य ही सौन्दर्य है, सब माधुर्य ही माधुर्य है, जो अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अन्दर घुसता है और सरस होकर बाहर निकलता है और उस रस को देवों को पिलाता है, वह साकी है, वह देवों का प्यारा बनता है।

कवि कविता बनाता है और संसार को मुग्ध करता है जो वास्तव में कवि है उसके गद्य में भी रस है, छन्द है, कविता है, रवीन्द्रनाथ का गद्य ऐसा ही है। भाई! जो रस चख लेते हैं उनकी हर अदा से रस टपकता है। रोम्यां रोलां ने जब महात्मा गांधी जी के लेखों का स्वाध्याय किया, तो आनन्दित होकर पुकार उठा अरे कितना कमाल का वह बुजुर्ग होगा जिसके इतने सुन्दर लेख हैं और इतना सुन्दर जीवन है। यहां एक देव ने दूसरे देव की तारीफ़ की। महात्मा जी भी इस प्रशंसा से प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा—रोम्यांरोला नहीं जानता है कि यह सूक्ष्मता कितने पुरुषार्थ से और कितनी प्रार्थनाओं से प्राप्त हुई है।

चाहे हम शरीर को सुन्दर बनायें—साबुन, तेल, पौडर से नहीं पर ब्रह्मचर्य से, आसनों से मित आहार से; चाहे हम मन को सुन्दर बनायें—नीतियां चल कर नहीं पर सत्य से, ईमानदारी से; चाहे हम बुद्धि को सुन्दर बनायें—अश्लील नावल पढ़ कर नहीं पर सत्य शास्त्रों के गहरे स्वाध्याय से; चाहे हम अपने हृदय को सुंदर बनायें—इश्किया गानों से नहीं पर कला से, प्रेम से, उदारता से; सब में प्रयास और अभ्यास की ज़रूरत है।

ऐ मनुष्य! अपने शरीर, मन, बुद्धि, हृदय सब को सुन्दर बना, प्रभु से पाई हुई किसी विशेष शक्ति को पहिचान. उसे उन्नत कर, उसमें कमाल हासल कर, प्रभु सुन्दर रचयिता है तू भी सुन्दर-सुन्दर रचनायें कर जिससे लोगों का कल्याण हो और देव आनन्दित हों। आलसी ठोकरें खाते हैं। उठ, मंज़िल दूर है समय थोड़ा है और करना बहुत कुछ है। प्रमाद करेगा तो पछतायेगा, पुरुषार्थ करेगा तो तर जावेगा। उठ अब तो काफ़ी सो लिया, कोई ऐसा सोम निकाल कि जिससे सब निहाल हो जावें।

इस वेद मन्त्र के अन्दर 'सुन्वन्त' एक महत्वपूर्ण शब्द है। इस का असली अर्थ है निचोड़ने वाला (Brewer), निकालने वाला, छिलके को अलग करने वाला, रस को निकालने वाला, असलीयत को पकड़ने वाला, जिसे और नहीं देखते उसे देखने वाला, क्रान्तदर्शी, ऋषि, द्रष्टा, जिसके लिये रहस्य स्पष्ट हो गया, असीम सौन्दर्य के किसी अंश की झलक दिखाने वाला। ये काम झटपट नहीं होते। इनके लिये बड़े धैर्य की ज़रूरत है। कमाल हासल करना मखौल नहीं है। दीर्घ कालतक आदर पूर्वक निरन्तर अभ्यास करने से मनुष्य रहस्यों के पास पहुंचता है, रस को पीता है और पिलाता है।

ओ दुनिया के लोगो! अगर देवों का प्यारा बनना है तो दिनों परीश्रम और रातों जागना पड़ेगा, लोहे के चने चबाने पड़ेंगे, उस श्रेय मार्ग पर चलना तो बड़ा कठिन है पर जो निरन्तर दीर्घ काल के अभ्यास के बाद सरल और सरस हो जाता है और जब किसी काम में महारत हो जाती है तो कठिनाई दूर हो जाती है, फिर तो आनन्द ही आनन्द है, सच्चा आनन्द परिश्रम के बिना नहीं मिल सकता। एडिसन ने एक जगह कहा है—

प्रतिभा क्या है? एक प्रति शतक प्रभु की प्रेरणा और निनानवें प्रतिशतक परिश्रम।

मोह पाश

(श्री राय साहब लालचन्द जी)

मोह सखा हो, काम पड़ोसी,
फैलाएं निज
क्रोध के अंग बने ये दोनों,
इनमें दुख का
हृदय में बास जभी हो इनका
जीवन का हो
महा मलिन निपट मूढ़ का
करते सत्यान
इन के बश में सुख जो माने
वह है अति मति
निज जीवन की धरती पर भी
रहता सदा अ
मोह विवश मानुन को जग में
होता कष्ट
इक इक पग ठोकर वह खावे
हो जीवन निस्स

स्वाध्याय के लिए उपयुक्त

१. वैदिक विनय (२य और ३य भाग (१ भाग समाप्त) आचार्य अभय मू० १) प्रति भाग
२. सोम सरोवर—ले०श्री पं०चमूपति जी मू० सजिल्द १॥), अजिल्द सवा
३. वेद गीतांजलि—संग्रह कर्ता मुख्या गुरुकुल कांगड़ी। मू० २)
४. स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश (त संगृहीता ला० लब्भूराम जी नैयड़
५. बृहत्तर भारत—ले० श्रीयुत पं० चन्द्र वेदालङ्कार मू० ४॥)
६. आत्म मीमांसा—ले० श्री० प्रो० नन्दल खन्ना मू० २)
७. ब्रह्मचर्य सन्देश—ले० श्रीयुत प्रो० सत्य सिद्धान्तालङ्कार मू० २)
८ शिक्षा मनोविज्ञान—ले० श्रीमती जी लखनपाल एम. ए. बी. टी. मू०
९. स्त्रियों की स्थिति—लेखिका श्री० जी लखनपाल एम. ए. बी. टी, मू०
१०. सन्ध्या सुमन—ले० श्री पं० नित्य वेदालङ्कार मू० १)
११. जल चिकित्सा विज्ञान—ले० श्री देवराज जी विद्यावाचस्पति मू० १
१२. हिन्दी निरुक्त भाष्य—ले० पण्डित पं० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार। मू
१३. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या—लेखक प्रियरत्न 'आर्ष'। मूल्य १॥)
१४. त्रिफला—ले० रामेशवेदी आयुर्वे मूल्य १॥)

मिलने का पता:— पुस्तक भ
गुरुकुल कांगड़ा, जिला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य
रविवार २०वैशाख
विक्रमी २०००

एक लाख छह हजार

२३, २४, २५, २६ एप्रिल को गुरुकुल विश्व-
ालय कांगड़ी का वार्षिक उत्सव जिस सफ-
और समारोह के साथ सम्पन्न हुआ उसके
हम गुरुकुल के अधिकारियों को बधाई देते
यातायात की असुविधाएं बहुत अधिक होने
भी जिस भारी संख्या में गुरुकुल प्रेमी श्रद्धानन्द
ी में एकत्रित हुए थे उससे पता लगता था कि
रे में अभी कितना उत्साह, और आर्य संस्कृति
ुल शिक्षा प्रणाली के लिए श्रद्धा है।

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता अमर शहीद स्वामी
ानन्द के सुपुत्र श्री इन्द्र जी ने तथा आचार्य पं०
ेव जी ने उत्सव को सफल बनाने के लिए महान्
सा किया है। इस साल अतिशय मंहगाई के
ण हर एक चीज़ का मूल्य कई गुणा अधिक
ाने से इसका सीधा असर गुरुकुल की आर्थिक
स्था पर भी पड़ने से रह नहीं सकता था।
चारियों की शिक्षा और भरण पोषण में किसी
र कमी न हो इस बात को ध्यान में रखते हुए
र्य संस्कृति के प्रेमियों ने उदार हृदय से दान
ा है। अपील पर इस साल के उद्घोषित दान
राशि एक लाख छह हज़ार थी।

उत्सव पर पिचहत्तर नये ब्रह्मचारी प्रविष्ट हुए।
ास हज़ार की भारी संख्या में जन समुदाय एक
था। धन, जन आदि प्रत्येक दृष्टि से उत्सव
सफल रहा।

(पृष्ठ १ का शेष)

सदसद्विवेचनी बुद्धि की आवाज़ को सुनिए।
लिङ्ग सम्बन्धी इच्छा के दबाने से आपका
न चलेगा। वह जब भी उपयुक्त अवसर
गी दुगनी शक्ति से उठ खड़ी होगी। वह
ा प्रतीक्षा में रहेगी कि कब आप वैराग्य,
न्न, यौगिक साधना या शारीरिक बिमारी के
ण बलहीन हो गए हैं। इसलिए लिङ्ग स-
न्धी शक्ति को जप, प्रार्थना, ध्यान, स्वाध्याय
ायाम तथा आसन आदि के द्वारा आध्या-
क शक्ति या ओज शक्ति के रूप में परिणत
ना चाहिए। इसके सिवाय भक्ति, मुक्ति के लिए
ट इच्छा, तथा पवित्र, अमर, इन्द्रियातीत,
ाकार और वासना रहित आत्मा के निरन्तर
त्तन की भी आवश्यकता है। ऐसा होने पर ही
ङ्ग सम्बन्धी इच्छा उच्छिन्न हो सकेगी।

आत्मसाक्षात्कार ही लिङ्ग सम्बन्धी इच्छा
वासना को निर्मूल करने का क्षमता रखता
न्य और कोई साधन नहीं। योगाभ्यास ध्यान
द्ध तो लिङ्ग सम्बन्धी इच्छा को क्षीण मात्र ही
ते हैं। इसीलिए गीता में कहा है।

ण्या विनिवर्त्तन्ते निराहारस्यदेहिनः।
सवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते॥ अ२ श्लो.५९

अर्थात् जब तक पर अर्थात् आत्मा के दर्शन
हो जाते तब तक विषयों की इच्छा अपने
अन्त सूक्ष्म रूप में भी बनी रहती है। इसलिए
त्मदर्शन ही विषयविनिवृत्ति या ब्रह्मचर्य की

गुरुकुल-विश्वविद्यालय कांगड़ी के ४१वें वार्षिकोत्सव पर श्री डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी का दीक्षान्त अभिभाषण

गुरुकुल विश्वविद्यालय के सदस्य वृन्द तथा भद्रपुरुषो!

आपने दीक्षान्त अभिभाषण के लिये मुझे निमन्त्रित कर मेरी जो प्रतिष्ठा की है उसके लिए मैं हृदय से आपका आभार स्वीकार करता हूं इस महान् विद्यापीठ में जिसे हम अपनी राष्ट्रीय सम्पत्ति समझने में अभिमान अनुभव करते हैं, यह मेरा प्रथम आगमन है। मैं इस संस्था के संस्थापक स्वनामधन्य अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा उनके प्रसिद्ध उत्तराधिकारियों की स्मृति में श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं। उनमें शिक्षा के नूतन आदर्शों को प्रतिष्ठित करने की क्रान्तदृष्टि एवं उत्साह के साथ साथ अपने आदर्शों को ऐसी संस्थाओं के रूप में कार्यान्वित करने की योग्यता तथा दृढ़ निश्चय भी थे।

आज हम इतिहास के चतुष्पथ पर खड़े हैं। उच्चकोटि के प्राचीन दाय से सम्पन्न, "स्वर्गादपि गरीयसी" हमारी मातृभूमि अपने जन्मसिद्ध अधिकार स्वतन्त्रता पद की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रही है। भारतीय स्वतन्त्रता का अन्तिम युद्ध शिक्षा द्वारा ही जीता जायगा। सांस्कृतिक सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक पुनर्निर्माण का महान् कार्य शिक्षित एवं सुनियन्त्रित भारतीयों के सम्मिलित प्रयत्नों से ही हो सकता है। भारत के अतीत गौरव, महत्ता उसकी शक्ति एवं दुर्बलताओं से परिचित शिक्षित व्यक्ति ही देश के सामने कार्य का ऐसा पुरोगम रख सकते हैं, जो भारतीय सभ्यता की मौलिक परम्पराओं की रक्षा करता हुआ आधुनिक जगत् की परिवर्तमान परिस्थितियों के अनुसार ढाला जा सके।

कोई भी निष्पक्ष ऐतिहासिक ब्रिटिश भारत में भारतीय शिक्षा के इतिहास का सिंहावलोकन करते हुए उसे हमारे शासकों के लिये गौरव की वस्तु नहीं मान सकता। हम वस्तुतः क्षतिग्रस्त रहे, किन्तु क्षति का उत्तरदायित्व भारतीयों में शिक्षा के प्रति उत्साह का अभाव नहीं, किन्तु हमारे शासकों की वे भयंकर भूलें हैं जो उन्होंने आज से एक शताब्दी पूर्व भारत में अपनी शिक्षा-नीति को निधारण करते समय की थीं। बैंटङ्क तथा मेकाले के समय की वह नीति भारतीय जनता के कल्याण की दृष्टि से निर्धारित नहीं की गई थी। उसका उद्देश्य शासकों के स्वार्थों की रक्षा तथा वृद्धि करना था। किसी भी देश में शिक्षा का तब तक ठीक विकास नहीं होता जब तक वे अपने राष्ट्रीय जीवन के स्रोत से प्रेरणा प्राप्त नहीं करतो। जब शिक्षा को अपने मूल से विच्छिन्न कर उस पर विदेशी सत्ता के आदेशों को आरोपित कर दिया जाता है, तो वह शिक्षा अन्ततोगत्वा अवश्य असफल होती है। एक ऐसा पराधीन जाति जिसने अपनी ज्ञान-पिपासा तथा शिक्षा से कुछ पीढ़ियों तक कृत्रिम विकास प्राप्त कर सकती हैं, वह योग्य नकाल भी बन सकती है। किन्तु ऐसी शिक्षा जनता में नवजीवन का संचार नहीं कर सकतीं, उसे ऊँचा नहीं उठा सकती और उसके स्थायी कल्याण की भी वृद्धि नहीं कर सकती।

बेण्टङ्क ने एकमात्र अंग्रेज़ी शिक्षा को राजकीय सहायता देने का निश्चय करके भारतीय संस्कृति को भी पराजित करने का श्रीगणेश किया। मैकाले और उसके साथी सर्वसाधारण जनता में शिक्षा प्रसार के प्रतिकूल परिणामों से डरते थे, इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया था कि यह शिक्षा भारतीयों के एक विशिष्ट वर्ग को ही दी जाय। मेकौले के अपने शब्दों में इस शिक्षा का उद्देश्य आत्म-निर्भर देश-भक्त भारतीय बनाना नहीं था, अपितु एक ऐसा वर्ग देश में तय्यार करना था जो रंग में भारतीय होते हुए भी रुचि, विचारों, और नैतिक आदर्शों में अंग्रेज़ हो। उन दिनों के सामयिक उल्लेखों से विदित होता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में हमारे अंग्रेज़ शासकों का ज्ञान अत्यन्त शोचनीय था। वे पश्चिमीय शिक्षा के तथा कथित गुणों पर आवश्यकता से अधिक बल देते थे और प्रत्येक भारतीय वस्तु के प्रति खुले रूप से घृणा प्रकट करते थे। हमें इस बात का दुःख नहीं कि भारतीयों के लिये पश्चिमीय शिक्षा का द्वार खोल दिया गया, किन्तु दुःख है इस बात का कि हमें यह ज्ञान हमारे प्राचीन सांस्कृतिक दाय की बलि चढ़ा कर दिया गया है। आवश्यकता इस बात की थी कि दोनों पद्धतियों में उचित सामंजस्य स्थापित किया जाय और भारतीय आधार की उपेक्षा या नाश न हो। भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब अनेक योरोपीय देश अविद्या और जंगली जीवन के गहरे अन्धकार में पड़े हुए थे, उस समय हमारे देश के ऋषियों और विद्वानों ने राजकीय आश्रय उपलब्ध कर यह बौद्धिक उच्चता पाई थी जिसके लिए कोई भी उच्च सभ्यता से युक्त राष्ट्र ईर्ष्या कर सकता है। इस देश में ऐसा समाज विकसित हुआ जिसने दर्शन, धर्म और शास्त्रीय ज्ञान के साथ साथ कला, स्थापत्य, आयुर्वेद, विज्ञान, ज्योतिष और शिल्प शास्त्र को भी प्रोत्साहन दिया। किसी देश की शिक्षा उस देश की परम्पराओं के अनुकूल विचारों से सम्पुष्ट होनी चाहिने!

भारत में पश्चिमीय शिक्षा का आधार राजकीय नौकरी का प्रलोभन था। शिक्षा शिक्षा के लिए नहीं थी, अपितु नौकरशाही के शासन यन्त्र के सफलतापूर्वक चलाने के लिए आवश्यक कल पुर्ज़ों का प्रबन्ध करने के लिए थी। यह भारतीय शिक्षा-पद्धति के विकास के इतिहास को विस्तार पूर्वक बतलाना मेरा उद्देश्य नहीं है इस शिक्षा पद्धति को प्रचलित करने से उत्पन्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन गुरुकुल

(श्री लछमूराम जी नय्यड़)

—गतांक से आगे—

वसिष्ठ—प्यारे बच्चो ! अब अपना अपना नाम हमें बताओ।

(सब अपना अपना नाम लेते हैं)

वसिष्ठ—(हृदय स्पर्श करके) तुम्हारा हृदय मेरे हृदय के अनुकूल रहे। तुम्हारा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल रहे। मेरी वाणी को—उपदेश को ध्यान पूर्वक सुनना।

भरत—गुरूजी महाराज ! अब हमें आप अपने पास ही रखिए।

वसिष्ठ जी—रक्खूंगा, परन्तु तुम आजसे भूल जाओ कि—

हम हैं राजनन्दन पुत्र राजा क्षत्र धारी के।
गुज़र भिक्षा पै होगी अब तो बालक हो भिखारी के।
गए दिन आज से कुछ दिन को हाथी की सवारी के।
खड़ावें हैं ये लकड़ी की बाहन ब्रह्मचारी के।
कुटुम्बी, मित्र, भाई, बन्धु हैं शाला के सहपाठी।
सिपाही अर्दली के रह गई इक बांस की लाठी॥

राम—यह तो हमारे ही लाभ की बात है। यदि हम अभी से तप करना सीख जाएंगे तो हमें आगामी जीवन में कष्ट की अवस्था में भी कोई कष्ट न होगा।

लक्ष्मण—भ्राता जी ! क्या आगामी जीवन का ध्यान कर ही गुरुकुल में ऐसी बातों का अभ्यास कराया जाता है।

राम—सम्भवतः इन्हीं बातों से पुरुष को पुरुषोत्तम बनाया जाता है।

वसिष्ठ—देखो ये ब्रह्मचारी जो कि प्रजा के निर्धन बालक हैं, इनमें भी अपने भाईयों की तरह ही हिल-मिल जाओ।

भरत—
ज़माने भर की राहत है गुरु की मेहरबानी में।
भरी है शान्ति बच्चों के रंग ज़ाफ़रानी में।

लक्ष्मण—
न होगा भेद टोपी और ताज ख़सरवानी में।
अभी मिल जाएंगे हम सबसे जैसे दूध पानी में॥

राम—
सिखाता है गुरुकुल साथ रहना सबको मिल जुल के।
ये रेशम के बिछौने हैं कुशासन भी तो गुरुकुल के॥

वसिष्ठ—(अन्य ब्रह्मचारियों से) हे मेरे पुत्रो ! आश्रम वालो ! तुम इन नवागत भाईयों को अपने में मिला लो।

ब्रह्मचारी—गुरु जी ! हमें आज्ञा से कब इन्कारी है। आज से हमारी थाली में इनका भी हिस्सा हुआ।

लक्ष्मण—आज से आपकी आज्ञा पालना हमारा धर्म होगा और हमें पालना आपका कर्त्तव्य।

वसिष्ठ—बच्चो ! मैं तुम्हें क्या पाल सकता हूं। सब का पालने वाला तो वही विश्वम्भर परमात्मा है, और कहने के लिए तो विद्यार्थियों के पालने का भार इन गृहस्थियों के ऊपर ही है। यही करते रहे हैं आज तक पालन गुरुकुल का।

दशरथ—अब आचार्य जी की प्रदक्षिणा करो। बच्चो ! प्रदक्षिणा का गुप्त भाव यह है—

हैं गुरु ही केन्द्र जब तक है गुरुकुल का निवास।
मन और कर्म से रहना गुरु के आसपास॥

वसिष्ठ—ईश्वर तुम्हें इस गुरुकुल द्वारा सकल शास्त्र सम्पन्न करावें।

(गुरु जी तथा ब्रह्मचारी आमने सामने बैठते हैं। सबको अंगोछे देकर मेखला धारण करवाई जाती है। सब गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हैं ?

कौशल्या—यह मेखला धारण करवाने की वैदिक प्रथा स्त्री जाति के लिए अभिमान करने योग्य है।

मन्थरा—ऐसा क्यों ?

कौशल्या—जो मेखला आज इस संस्कार में बंधाई जा रही है, वह हम बच्चे के जन्म के दस दिन पश्चात ही सूत या रेशम डोरी से बाँध देते हैं।

वसिष्ठ—इस प्रथा का अर्थ यह है कि अन्तड़ियों के रोग हटे रहें। वास्तव में इस वैदिक प्रथा से कोई भी देश या जाति वञ्चित नहीं। यही मेखला की भावना कमरबन्द, पेटी, अन्टी, चड्डी, जांघिया; नाड़ा इत्यादि के रूप में सर्वत्र प्रकट हुई है। नाम चाहे कुछ ही क्यों न हो, हर जाति या देश मेखला को अवश्य बांधता है। मेखला को पेटी के रूप में बांध कर सिपाही चुस्ती से अपनी ड्यूटी पर खड़े रहते हैं और युद्धों में विजय प्राप्त करते हैं। मेखला द्वारा प्राण और अपान की गति ठीक होकर अनेक रोगों से बचते हैं।

वसिष्ठ—अच्छा बच्चो ! ये वीर्य रक्षा की सहायक कौपीन, अंगोछे, चादरें, धोतियाँ हैं। यह मार्ग का मित्र दण्ड शरीर रक्षा के काम आएगा और दुष्ट जीवों से बचाएगा। परन्तु सावधान, इसका प्रयोग निर्बल, अपराध रहित और शान्त प्राणियों पर कभी न करना।

दशरथ—इस उपदेश के महत्व में किसे विवाद है। दण्ड एक शक्ति है, इसका सदुपयोग ही वास्तव में यथार्थ है और दुरुपयोग तो महा अनर्थकारी है। ऐसा न हो कि—

जहां इसकी ज़रूरत हो वहां रूपोश हो जाए।
जब हो सकता हो वह रूपोश तो ख़ामोश होजाए॥
जहां मुतलिक ज़रूरत भी न हो हाथ उठने की।
वहां ऐसी जड़े जिसके लगे वह बेहोश हो जावे॥

वसिष्ठ—तात्पर्य यह कि शक्ति का उपयोग खूब सोच समझ कर करना चाहिए।

दशरथ—नवीन ब्रह्मचारियो ! इस श्रेष्ठ संस्कार के उत्तम अवसर पर मैं तुम्हें कुछ उपदेश करता हूं, उसे ध्यान पूर्वक सुनो।

राम—पिता जी, आपकी आज्ञा कैसी भी कठिन क्यों न हो, उसके आगे हम अवश्य सिर झुकाएंगे।

दशरथ—अच्छा, सुनो आज से तुम ब्रह्मचारी हो। दिन में कभी न सोना।

(चारों भाई सिर झुकाते हैं)

दशरथ—आचार्य की आज्ञा का सदैव पालन करना ; परन्तु अधर्म युक्त का नहीं।

(चारों भाई सिर झुकाते हैं)

वसिष्ठ—सत्य है। अच्छा बच्चो ! यदि गुरु चोरी से अन्न लाने के लिए कहे तो क्या

चारों भाई—हम कहेंगे कि ऐसा सकते।

वसिष्ठ—शाबास ! नहीं का समय करना बड़ी बहादुरी है। इसलिए याद जहां जो बात फबती हो वहीं कहना किसी के रोब में दबकर न कुछ का कुछ वहीं है जड़ गुनाहों की वहीं है बाज नहीं के वक्त आता ही नहीं जिसको नहीं

दशरथ—हमेशा जितेन्द्रिय रहना—व्यर्थ ही इन्द्रियों को भटकने न देना। ही संसार में बड़े २ काम कर सकता रेता ब्रह्मचारी के—

बदन में वीर्य का भण्डार गर भरपूर तो बुद्धि, तेज; दिल में जोश, मुंह पर नूर अगर वह चाहें तो पत्थर को भी तैराए शिला बुद्धि के बल से बनके तख़्ता आए

इसके सिवाय ग्राम से भिक्षा मांग अर्पण करना। (चारों भाई सिर झुका

वसिष्ठ—इस भिक्षा मांगने का फल कि—

किसी दिन लकब तुम्हारा जो भी हो इसी दिन की याद करके न तुम्हें ग़रूर कहीं झिड़कियाँ पड़ेंगी तो घमण्ड दू अनुभव भिखारियों का तुम्हें कुछ ज़रू कभी ब्रह्मचारियों की करोगे न सिखाएगी यह भिक्षा, रस्म मे

अच्छा, अब झोलियां संभालो भिक्षा मांगना आरम्भ करो।

(चारों भाई रानियों के सामने भव देहि, भवति भिक्षां देहि कहते हुए भिक्षा रानिएं भूषण और धन देती हैं)।

(जनता की ओर देख कर) अब याचना करो।

अगर एक एक दाना डाल दोगे सब कम तो भण्डार अभी भरपूर हो जावेगा एक न कोई मान है विद्यार्थी के मान से नहीं है दान कोई एक विद्यादान से

(चारों भाई गाते

जो है मन्जूर धन रक्षा तो धनवानी बन कुएं से जल न निकलेगा तो सड़ जाएगा स दिए जल हमको बादल ने तो बादल हो ग रहा नीचा ही सागर है अदाता को प कोई मरता है धन देकर कोई देता है धन ज़रा से फरक से बन जाते हैं ज्ञानी से

(वे

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक उन्नति

श्री पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य अमृतधा नवीन उर्दूपुस्तक अभी-अभी प्रकाशित जिस में हर प्रकार के व्यायाम तथा आस शरीर को बल बढ़ाने की विधि बड़ा उ से पेश की गई है। मूल्य ॥)।

श्री चमूपति साहित्य
गुरुदत्त भवन,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारे तीर्थ और उनका वास्तविक स्वरूप

श्री भारतेन्दु वेदालङ्कार

हमारे हिन्दू धर्म-शास्त्रों में तीर्थों का
ना महत्व-पूर्ण स्थान है। आज से करीब ३-४
रूप पूर्व जैसे कि अन्य वैदिक आचार विचार,
ाण्ड इत्यादि में परिवर्तन हो गया था—उन
रूप विकृत हो गया था—ठीक उसी प्रकार
ीर्थ' का स्वरूप भी बिगड़ गया। महाभारत
न्तरकारी युद्ध के पश्चात् जब से आर्य जाति
न्द्रिक संस्कृति और सभ्यता का पतन हुआ—
मत मतान्तरों का आविर्भाव हुआ तबसे असल
ा स्वरूप ही और होगया है। धर्म की
उपयोगिता और रहस्य को भूल गये, सर्वत्र
पाखण्ड तथा अनाचार का बोलबाला हो
आन्तरिक शुद्धि, त्याग, तपस्या का मूल्य
कर केवल बाह्य क्रियाकलाप ही शेष रह गया।
यांत्रिक ढांचे में चलने लगे। संध्या, होम,
प आदि धार्मिक अङ्ग जो कि आत्मा और
की पवित्रता के लिए किये जाने चाहिए वे
एक दिखावे और धर्म भीरुता के लिए ही
ाने लगे!

पर कहे गए हिन्दुओं के कृया कलापों में
का भी एक महत्व पूर्ण स्थान है। तीर्थ
या तीर्थ स्नान के द्वारा मनुष्य पापों से
रा पाकर मुक्ति (स्वर्ग) का अधिकारी हो
है!—यह श्रद्धालुओं की दृढ़ मान्यता है। यही
सिर्फ तीर्थ स्थल या तत्सम्बन्धी अन्य वस्तु
ारों कोस की दूरी से नाम लेने मात्र से
ापापी भी पाप से बरी हो जाता है। 'गङ्गा
यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि। मुच्यते
ष्पेभ्यो, विष्णुलोकं च गच्छति॥)। अहा!
का कैसा सीधा, सस्ता रास्ता है—केवल
लेना ही काफ़ी है। इसके होते हुए दूसरे
जप, होम आदि—लम्बे शुष्क मार्ग
ोई ज़रूरत ही नहीं दीखती! वैज्ञानिक
यह भी एक आश्चर्य है—बड़ी भारी खोज
स्तु।

हमें इस 'तीर्थ' का असली रूप देखना है।
ाब्द 'तृ प्लवन संतरणयोः' धातु से बना है—
ा शब्दार्थ है तैरना। जिसके द्वारा या जहां
ा जाय (नहाया जाय) वह तीर्थ है। अमर
में तीर्थ शब्द निम्न अर्थों में आया है—'नि-
मयोस्तीर्थ, मृषि स्नाते जले गुहौ' (पानी
ा स्थल (चौबच्चा या जलाशय आदि),
तथा ऋषियों द्वारा स्नात पानी एवं गुरु इन
में तीर्थ शब्द प्रयुक्त होता है।

न्दुओं का यह पवित्र 'तीर्थ' शब्द अधिक
तः 'ऋषि स्नात जल' अर्थ में प्रयुक्त हुआ
होता है, क्योंकि ये प्रसिद्ध-प्रसिद्ध (और
सभी) तीर्थ स्नान करने के लिये ही ज्ञात
ोग यहां पर नहा कर पाप मुक्त होने के लिए
हैं। दूसरे 'आगम' (शास्त्र) तथा 'गुरु' ये
भी इसी प्रयोजन को सिद्ध करने वाले हैं।
हमने उसका रहस्यार्थ न जाना, अतएव
'ऋषि स्नात जल' को ही, सारा महत्व दे
करते हैं—

(१) ऋषि स्नात जल—जैसा कि ऊपर कहा गया है 'तीर्थ' वह है जहां या जिसके द्वारा तैरा जाय। हमारे प्रसिद्ध तीर्थ—हरद्वार, काशी, प्रयाग, ऋषिकेश, पुरी (जगन्नाथ), गंगोत्री, बद्री-नाथ केदारनाथ आदि सभी गंगा जी के तट पर, हिमाचल के रमणीय वनों की गोद में बसे हुए हैं। हम जानते हैं कि हमारे प्राचीन ऋषि मुनि इन्हीं प्रदेशों में आश्रम और कुटिया बना कर अपनी ज्ञान पिपासा को दूर करते थे। अतः स्वाभाविक है वे उस पानी का व्यवहार करते थे। वे इसी में नहाते थे, इसी को पीते थे, एवं दूसरे कार्यों में इसी जल का प्रयोग करते थे। गंगा सब नदियों की रानी है—इस से अधिक स्वच्छ, शीतल और मधुर जल वाली शायद ही कोई सरिता इस भूमण्डल पर होगी। इतने ठंडे और स्वच्छ बहते हुए पानी में किसी प्रकार के रोग-कीटाणु ठहर नहीं सकते, जीना या पनपना कठिन है। यह वैद्यक सम्मत सत्य है अथर्ववेद में जहां पानी द्वारा रोगनाश का वर्णन आता है वहाँ पर 'बहते हुए जल' का स्थान है। इस प्रकार के बहते हुए जल में संघर्षण के कारण एक प्रकार की विद्युत-शक्ति पैदा होती है जो रोगों को नष्ट करती है और शरीर को निरोग एवं प्रफुल्लित बनाती है। बस इसी रोग नाशक गुण के कारण गङ्गा जल (या तीर्थ) की पवित्रता है। वेद में रोग और पाप दोनों पर्याय वाची हैं—एक ही अर्थ के बोधक हैं। अर्थात् पाप के कारण ही रोग होते हैं। इसको हम इस प्रकार समझ सकते हैं—एक व्यक्ति को ज्वर आता है। यह अधिकतर इस लिये होता है कि उसने भूख से अधिक या बिना भूख के अथवा अपनी प्रकृति के विरुद्ध आहार लिया हो। अर्थात् जिस अन्न पर उस का हक नहीं था—जो दूसरे का था (परन्तु स्वादवश अपना समझ लिया) उस पर अपना अधिकार कर लिया। यही दूसरे के अधिकार को वस्तु को हथियाना एक ज़बरदस्त सामाजिक पाप है। इस पाप के कारण वह रोगी होता है इस प्रकार गङ्गाजल (तीर्थ) रोग (पाप) नाशक होने से ही पवित्र है। परन्तु हमारे अबोध हिन्दू भाइयों ने इस रहस्य को न समझ कर झूठ, चोरी, ठगाई आदि जन्म भर किए गए पापों से छुटकारा पाने के लिए तीर्थ कीपवित्रता और पाप नाशता समझ ली। परिणामतः वे अधिकाधिक पापी दुराचारी और अकर्मण्य बनाते जाते हैं। पुण्य के बदले पाप को ही कमाते हैं। और दुःखों से (पाप या रोग से) तैरने के बदले उसी में डूबते हैं।

(२-३) शास्त्र और गुरु—वेद, उपनिषद् तथा दर्शन, स्मृति आदि धर्म शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन (श्रवण, मनन आदि) के द्वारा मनुष्य दुःखों से अवश्य छूट जाता है। दुःख सागर या भवसागर से तैराने वाले होने के कारण ये शास्त्र 'तीर्थ' हैं। ऋषियों ने स्थान स्थान पर कहा है—'ऋते ज्ञाना-न्न मुक्तिः', 'तमेव विदित्वा ऽति मृत्युमेति', 'प्रमाण दि। इस प्रकार शास्त्र, ज्ञान, ब्रह्म चाहे कोई भी शब्द से कहें—सब 'तीर्थ' हैं। इस ब्रह्म ज्ञान या शास्त्रों का अध्ययन करने के लिये उपयुक्त स्थान हैं—पर्वत, जंगल, और नदी सरोवरों के रमणीय प्रदेश। इस बात को ऋग्वेद ने मानव जाति के समक्ष सब से पहिले कहा था—'उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनां। धिया विप्रोऽजायत'॥ (पर्वतों के समीप नदियों के संगमस्थल पर ज्ञान की प्राप्ति होती है)। हमारे उपरोक्त हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी आदि उत्तरीय भारत के तीर्थलोक, माता पुण्यतोया भागीरथी एवं गिरिवर हिमाचल के ये पुण्य प्रदेश किस प्रकृति प्रेमी के मन को नहीं लुभाते—हरे २ सघन वृक्ष लताओं से सुशोभित, विस्तृत वन उपवन तथा उसी के साथ २ वे शीतल, निर्मल जल की कलकल कोलाहल वाली धाराएं उस अतीव ऋषि मुनियों के तपोवनों की—वैदिक संस्कृति और सभ्यता की याद दिलाती हैं। यहीं पर ब्रह्मज्ञान का उदय होता है, मोक्ष की प्राप्ति होती है दुःख, क्लेश और पापों से मनुष्य तर जाता है। इसी लिये ये 'तीर्थ' हैं, और इसी तरह उस ब्रह्मज्ञान युक्त—सब पाप ताप से रहित, अज्ञानी शिष्य को ज्ञान—द्वारा दुःख (पाप) से तैराने वाले होने के कारण गुरु या ऋषि मुनि भी 'तीर्थ' शब्द से कहे जाते हैं।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २॥) Immortal Sayings ofDayanand ।)
जीवन ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला ।)
स्वाध्याय संग्रह ॥।) वैदिक धर्म की जय ॥।)
वैदिक स्वर्ग ॥।) यास्क युग ॥।)
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास २)
देव यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand१।)
पीयूषबिन्दु ।=) त्रिदेव निर्णय ॥।)
निरुक्त का मूल वेद में ।=)

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने पर कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे दाम पर मिल सकेंगी।

Hindu America५) Light of Truth ३)

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य विभाग

गुरुदत्त भवन; लाहौर।

हर एक आर्य तथा पंजाब के

आर्य समाज को

आर्य का ग्राहक

बनना चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदों में आयुर्वेद

[वैद्य पं० रामगोपाल जी शास्त्री, लाहौर]

(४)

चिकित्सा प्रकरणम्

संक्षेप से वेदान्तर्गत शल्य क्रिया का वर्णन किया गया है। उस के अनन्तर चिकित्सा पर कुछ प्रकाश डाला जाता है। लेखारम्भ में रोग तथा स्थानिक रोग सूची दी गई है। वेद में इन सब रोगों पर नहीं लिखा गया। बहुत स्थानों पर तो केवल नामही दिया गया है। कई रोगोंका नाम ओषधियों के गुण वर्णन में आया है, "जंगिडो जभ्भाद् विश्-राद् विष्कन्धादभिशोचनात्' अ० २। ४। २। इस मंत्र में जैसे जंगिड ओषधि को जम्भः, विशरः, विष्कन्धः तथा अभिशोचनं नाशक लिखा है। इस मंत्र में आये इन रोगों का और कहीं वर्णन ही नहीं आता।

तक्मा, जायान्य, हरिमा, क्षेत्रिय, मूत्र कृच्छ्र, अपचित् आदि कई रोगों के लिये सूक्तों के सूक्त भरे पड़े हैं। इस लेख में यदि सब विस्तृत रोगों का वर्णन किया जावे तो वृहत् ग्रन्थ बन जावे। पर यहां पर दिग्दर्शन मात्र के लिये तक्मा, क्षेत्रिय और जायान्य रोगों का स्वरूप वर्णन करेंगे, जिस से पाठक अनुभव कर सकेंगे कि वेद में इन रोगों का वर्णन किस ढंग से किया गया है। इन पर लिखने से पूर्व एक बात पर अवश्य ध्यान रखना होगा, कि वेद एक ही स्थान पर उस २ रोग पर प्रकाश नहीं डालता, प्रत्युत पृथक् २ स्थानों पर वर्णन लिखा है। इस में क्या रहस्य है इसका अभी तक पता नहीं लग सका।

तक्मा वर्णन

वेद में तक्मा पद से ज्वर ग्राह्य है। "स नः विद्वान् परिवृङ्ग्धि तक्मन्' अ० १ २५। १। प्रथम हम तक्माके विशेषणों का वर्णन करते हैं और यही विशेषण पर्य्याय होने से तक्मा (ज्वर) के नाम भेदोंमें परिगणित किये जा सकते हैं। तक्मा निरुक्त ११। २५ में उष्ण नामों में पढ़ा गया है "तक्मा इति उष्ण नाम तकत इति सतः"। तक्मा से शरीर उष्ण (गर्म) हो जाता है।

पर्यायाः

तपुः अ० ६। २०। १ तपाने वाला। शुष्मी अ० ६।२०।१। शोषण करने वाला तथा तपाने वाला। ग्रभीता अ० १।१२।२ अङ्गों का पकड़ने वाला। शोचिः अ० १।१२।२ तापक। हूडुः अ० १।२५।२ जिस के आवेश में हूडुः शब्द मुख से निकलता है। शोकः अ० १।२५।३ तापक। अभिशोकः १।२५।३ संतापक। वरुणस्य पुत्रः अ० १।२५।३ वरुण (जल) का पुत्र अर्थात् जलीय स्थानों पर अधिक होने वाला। व्यालः अ० ५।२२।६ सर्प। विगदः अ० ५।२२।६ विशेष रोग। व्यङ्ग० ५।२२।६ विकृताङ्ग करने वाला सहस्राक्षः अ० ६।२०।३३ सहस्र नेत्र वाला (अर्थात् उपचार न करने पर अनेकों मार्ग में दृष्टि डालकर उपद्रव करने वाला)। अमर्त्यः अ०६।२०।३३ जो मरता नहीं अर्थात् एक बार दूर होने पर भी फिर शकृत् (गोबर) विभीर्त्ति उठाने वाला (मुष्टि हा) मुष्टि से मारने वाला अर्थात् मल मूत्र तथा अशुद्ध स्थानों में रहने वालों के लिये मारक। वशी अ० ५।२२।६ वश में रखने वाला। अभिशोचयिष्णु अ० ६।२०।३ सब ओर से तपाने वाला।

तक्मा (ज्वर) के इन उपर्युक्त नामों (पर्यायों) में अधिकतर वेद में तक्मापद का ही प्रयोग हुआ है। विशेषणों से पर्य्याय समझना उत्तर कालीन संहिताओं को भी अभिप्रेत है। चरक में भी ज्वर के लिये विकार, रोग, व्याधि, आतंक, क्षय, तमः पाप्मा, मृत्यु लिखा गया है। ज्वर पद वेद में नहीं एक स्थान में अङ्गज्वर पाठ आता है। वह एक ज्वर विशेष है ज्वर सामान्य नहीं। निरुक्त की निरुक्ति से यह तो सिद्ध ही है कि जिस से शरीर में उष्णता हो वह तक्मा है। यहां उष्णता से विशेष उष्णता अभिप्रेत है जो कि असाधारण रूप में शरीर में प्रकट होती है।

अग्नि महत्त्व

यद्यपि हमारा शरीर पाञ्चभौतिक है तथापि हमारा जीवन शरीरान्तर्गत अग्नि के ही आश्रित है। कोई दोष कुपित हो प्रथम वह अग्नि पर ही अपना प्रभाव डालते हैं। इसे जाठराग्नि के नाम से पुकारा जाता है। शतपथ ब्राह्मण १४।६।१।२५ में "पुरुषो वा अग्निः" पुरुष अग्नि है। "आयुर्वा अग्निः" श० ब्रा० ६।७ ३।७ आयु अग्नि है।

वेद आमाशयस्थोष्मा रसों में प्रविष्ट होकर सब शरीर को तपाती है ऐसा वेद मानता है यह भाव 'यदग्निरापो अदहत्प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्म धृतोनमांसि तत्र त आहुः परम जनित्रं स नः विद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् अ० १।२५।१ में सर्वथा स्पष्ट है। इस मंत्र में तक्मन् (ज्वर) को सम्बोधित करके कहा गया है कि (तत्र त परमं जनित्रम्) वहां तेरी उत्पत्ति है जहां (नमांसि अकृण्वन्) अन्नों (नम इति अन्ननामसु पठितं २।७ निघण्टु) को डालते हैं। यही आमशयाग्नि (आपः अविश्य अदहम्) जलरूप रस में प्रविष्ट होकर सब शरीर को जलाती है।

जाठराग्नि ही ताप का कारण है इसी भाव को सुश्रुत ३०।३६७ में "रुद्रकोपाग्निः सम्भूतः सर्वभूत प्रतापनः" ज्वर सब प्राणियों को तपाने वाला है और रुद्र की कोपाग्नि से उत्पन्न हुआ है। यह रुद्रअग्नि ही है देखो शतपथ ब्राह्मण ५।२।४।१३ 'यो वैरुद्रः सोऽग्निः' अर्थात् जो रुद्र है वह अग्नि ही। (तान्ये-तान्यष्टौ (रुद्रः सर्व-शर्वः पशुपतिः उग्रः अशनिः भवः महान्देवः ईशानः) अग्नि रूपाणि श० ब्रा० ६।१।३।१८ इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि महेश्वर कोप (जाठराग्नि कोप) ही ज्वर का कारण है।

तक्मा भेद

ज्वर के मुख्य दो भेद किये हैं एक वशी दूसरा अव्रतः। ये वैदिक नाम सामयिक सम और विषम के हैं। वशी नियम में रहने वाला सम ही होता है। अव्रत का अर्थ है जिस का व्रत (नियम) नहीं अर्थात् जिस का काल वा वेग नियत नहीं वह अव्रत ही विषम है। इन वशी और अव्रत के आगे जाकर कई भेद हो जाते हैं। अथर्व ५।३०।१६ में तक्मा के

तक्मा (ज्वर) के अनेक भेद वे इनका वर्णन यहां दिया जाता है।

ज्वर भेद

(क) १. अभ्रजा ज्वरः 'कफ ज्वर' २. वातजा ज्वरः वातिक ज्वर अ० शुष्मः ज्वरः शोषक पित, अ० १।१२।३

(ख) ४. पारुषेयः ज्वरः रुक्षता से ५।२२।३। परुषः जो कठोर है। (५) अङ्ग ६८५। जिस ज्वर में अङ्गमर्द होता है।

(ग) ६. शीतः ज्वरः जिस में शीत अ० ५।१२।१० ७. रूरः ज्वरः जिसके चढ़ उष्णता बहुत लगे अ० ५।१२।१०।

(घ) ८. तृतीयकः ज्वरः अ० ५ २२। यक ज्वर। ९. वितृतीयः ज्वरः अ० चातुर्थिक ज्वर। १०. सदन्दिः ज्वरः अ० सन्तत। (११) शारदः ज्वरः अ० ५।२२ ऋतु में होने वाला ज्वर। (१२) वार्षिकः ५ २२।१३ वर्षा ऋतु में होने वाला ज्वर ज्वरः अ० ५ १२।१२ ग्रीष्म ऋतु में होने व

(ङ) १४. विश्व शारदः ज्वरः विश्व व्यापी शारदज्वर (मलेरिया)।

(च) १५ अन्येद्युः ज्वरः अ० १।२ द्युष्क। १६. उभयद्युः अ० १।२५।४।

(छ) १७. अरुणः ज्वरः अ० ६।२५।३ (जिस के चढ़नेपर शरीर का वर्णरक्त मय १८. बभ्रुः ज्वरः अ० ६।२०।३ पीतज्वर। ज्वरः अ० ६।२०।३ वन में होने वाला ज्वर

(ज) २० क्यवनः ज्वरः अ० ७।११६ धृष्णुः ज्वरः अ० ७ ११६।१ जो धर्षण से चढ़ता है। २२. नोदनः ज्वरः अ० ७ ११६

(झ) २३. हायनः ज्वरः अ० १६ ३६ (धान) के पकावसर पर होने वाला, भर होने वाला अथवा वर्ष के अनन्तर वाला अथवा ऐकाहिक। २४ शीर्षलोकः १६।३६।१० जिस से ज्वरारम्भ में प्रथम जाता है। (असम

—रत्तरी अफ्रीका में मित्र सदर दफ्तर प्रकाशित की गई है कि प्रथम सेना मित्र सेनाओं का प्रगति ज़ारी रहा। मध्य क्षेत्र में सख्त लड़ाई हुई। दोनों पक्ष आ प्रत्याक्रमण करते रहे। पोंट डू फ़ास क्षेत्र तीन दिनों में १५ मील बढ़ गये हैं और सेना से मिल गये हैं। कल शत्रु के ठिकाने तथा गोदामों पर जबदस्त बमबारी रविवार को ट्यूनिश खाड़ी में दो धुरी पोत और विज़र्टा से भरे शत्रु का एक व्यापार डुबोया गया।

—अमरीकन विज्ञप्ति में बताया गया २६ अप्रैल को अमरीकन विमानों ने रेल रोड स्टेशन पर बम वर्षा की। गोदामों लग गई। शत्रु लड़ाकू हवाई जहाज़ों ने मध्य वर्मा में पाज़ो जंकशन पर बम बर हमारे आसाम के एक अड्डे से भी हवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by SSP Foundation USA

आर्य समाज संसार

सार्वदेशिक सभा की सूचनाएं

शहीदी प्लेट—हैदराबाद धर्मयुद्ध के हुता—शहीदों—की स्मृति में सभाओं और आर्य ओं में पीतल की पट्टिकायें रखे जाने का सभा भग २ वर्ष हुए आदेश प्रचारित किया था ल्लीगढ़ के एक कारीगर से २४ रु० प्रति प्लेट व निश्चित किया गया था। इस योजना के वरूप लगभग ६० पट्टिकायें बनवाई गई परन्तु ीतल का भाव बहुत बढ़ जाने के कारण प्लेट ४ रु० मूल्य स्थिर रखना असम्भव हो गया अब प्लेट ४० रु० में दी जा सकेगी। अतएव ज्ञप्ति के द्वारा आर्य जनता को इस परिवर्तन वित किया जाता है कि एक कलेंडर के रूप में ी प्लेट को छपवाने का विचार किया हा है परन्तु पर्याप्त मात्रा में आर्डर के होने पर ही छपाई का कार्य प्रारम्भ करने का किया गया है। जो समाजें इससे लाभ चाहें वे कलेंडरों की संख्या से पूर्व से ही को सूचित कर देवें जिससे कलेंडरों की छपाई ख्या का निर्णय किया जासके। कलेंडर का ६ आने प्रति होगा।

२. कई सज्जन अपनी डाक का पता बलिदान वा सार्वदेशिक सभा दे देते हैं और इसकी को सूचना नहीं देते हैं पूर्व स्वीकृति प्राप्त किये अथवा सूचना दिये बिना यदि कोई सज्जन ान भवन वा सार्वदेशिक सभा के पते पर डाक मंगवायेंगे तो अपनी डाक न मिलने के उत्तरदाता होंगे। किसी सज्जन का बिना सभा र्व स्वीकृति के अपने किसी मिलने वाले बा वत्त को बलिदान भवन या सार्वदेशिक सभा में का पता भी नहीं देना चाहिये। —धर्मदेव वाचस्पति, सं० मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य निधि सभा, देहली।

—आर्य पुत्री पाठशाला मुरीदके का दूसरा क उत्सव १०, १२ एप्रिल को हुआ जिस पूर्णचन्द्र जी का व्याख्यान और म० हरी जी के भजन हुए १४ की शाम को नगर कीर्तन गया जो सब बाज़ारों में होता हुआ आर्य ज मन्दिर में समाप्त हुआ। ला० रामरखा जी ने इनाम बांटे और वैद्य कुन्दनलाल जी ल आर्यसमाज मुरीदके ने रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। जी की अपील पर १००० रुपया पाठशाला आर्य समाज मन्दिर के लिये इकट्ठा हुआ। लिये मुरीदके की जनता का धन्यवाद किया है। —मन्त्री।

—आर्यसमाज बाज़ार श्रद्धानन्द अमृतसर का का निर्वाचन श्री पं० ज्ञानचन्द जी शर्मा एम० ध्यान आर्यसमाज के प्रधानत्व में निम्न प्रकार । प्रधान—श्री प ज्ञानचन्द जी शर्मा एम. ए. ीक्रेट। उपप्रधान—श्री डा. रामरखामल जी, रा० सा० गंगाराम जी। मन्त्री—जगन्नाथ , उपमन्त्री—श्री पं० द्वारकानाथ जी विद्या र, श्री सत्यपाल जी। कोषाध्यक्ष—श्री ला० पं० भूपालसिंह जी शास्त्री। अन्तरङ्ग सभासद्—श्री म. कर्मवीर जी, श्री पं० हंसराजजी पाठक, श्री ला० विश्वानाथ जी वकील, श्री पं० योगेन्द्रपाल जी, श्री मूलराज जी बी० ए० बी० टी०, श्री साहिब दयाल जी।

गुरुकुल समाचार

—गुरुकुलमहाविद्यालय वैद्यनाथधाम,१३-४-४३ को श्री आचार्य वीरेन्द्र जी विद्यावाचस्पति एम०ए० के सभापतित्व में रामनवमी तथा गुरुकुल स्थापना दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। अध्यापक गण एवं ब्रह्मचारियों के ओजस्वी भाषण हुए। गुरुकुल की उन्नति पर भी विचार विमर्श हुआ। श्री सभापति जी ने ब्रह्मचारियों का ध्यान गुरुकुल की उन्नति की ओर आकर्षित किया, और श्री रामचन्द्र जी के आदर्शों को अपनाने का आदेश दिया। इस शुभ अवसर पर गुरुकुल के नये मंत्रि मंडल का चुनाव हुआ, जिसमें प्रधान कुल मंत्री ब्र० प्रह्लाद तथा प्रधान क्रीड़ा मंत्री ब्र० रामेश्वर चुने गये।

—कुल मंत्री।

—गुरुकुल मुलतान में इस वर्ष वैशाखी का त्यौहार बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल की ओर से नगर में ढिंडोरा पिटवाया गया कि जो यात्री नहर पर स्नान के लिये जावें वे गुरुकुल में आकर विश्राम करें। मेले वाले दिन गुरुकुल में शामियाने आदि लगाये गये और पानी पिलाने का प्रबन्ध किया गया। चने बांटे गये। चनों का खर्च २६) ला० झांगीराम जी सरदाई ने दिया और सारे दिन अपने कर कमलों से चने बांटते रहे। सब ब्रह्मचारियों और अधिकारियों ने जनता की बहुत सेवा की। ला० चन्द्रभानु जी रिटायर्ड पोस्ट आफ़िस इन्स्पैक्टर भी अपने कर कमलों द्वारा सारा दिन पानी मिलाते रहे। सहस्रों नर नारियों ने इस मौके पर आराम पाया। इस अवसर पर पण्डित ओ३म् प्रकाश जी वेदालंकार ने कई नगर-वासी बालकों के उपनयन और चूड़ाकर्म संस्कार कराए। सब ब्रह्मचारी पूर्ण स्वस्थ हैं और अपने हाथ से फसल काट रहे हैं। —बिहारीलाल, प्रबन्धकर्त्ता।

—गुरुकुल कमालिया का वार्षिक चुनाव इस प्रकार हुआ—१. संचालक—श्री टेक चन्द जी टोबाटेकसिंह। २. आचार्य—श्री सत्यभूषण जी वानप्रस्थी। ३. मुख्याधिष्ठाता—श्री स्वामी कृष्णानन्द जी संन्यासी। ४. प्रधान कमेटी—श्री. डी. डी. चौधरी। ५. कोषाध्यक्ष—मास्टर रोशनलाल जी कमालिया। ६. ओडिटर :—महत्ता बहादुरचन्द्र जी कमालिया। ७. सभासद प्रबन्धक कमेटी :—सेठ मथुरादासजी आढ़ती टोबाटेकसिंह, सेठ चमन लाल जी सहगल झंग मघियाना, डा० ऋषिकेश जी टोबाटेकसिंह, महाशय दीवानचन्दजी लाहौर, लाला गोबिंद राम जी आढ़ती टोबाटेक सिंह।

—परमात्मा की अपार कृपा से श्री पूज्य टेकचन्द जी महाराज की अध्यक्षता में ८ अप्रैल से १४ अप्रैल तक गुरुकुल की पुण्यभूमि में यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ जिस में श्री आचार्य सत्यभूषण जी वानप्रस्थी यजमान जी तथा पं० पृथ्वीराज जी पुरोहित आर्यसम कमालिया वेदपाठी तथा ब्रतिरूप में प्रातः सायं नियमपूर्वक सम्मिलित होते रहे। १४ अप्रैल को ही २० नये ब्रह्मचारियों का प्रवेश संस्कार हुवा। कमालियावासी बड़ी संख्या में तथा बाहर से भी पर्याप्त संख्या में नरनारी उपस्थित थे। यज्ञ के इस शुभ अवसर पर २०००) नकद तथा बहुत से मासिक तथा वार्षिक वायदे प्राप्त हुए। एक गौ व बहुत सा अनाज तथा पर्याप्त घी प्राप्त हुवा।

—गुरुकुल कमालिया में पंजाब यूनीवर्सिटी के स्टेन्डर्ड के अनुसार नवम श्रेणी का प्रवेश अप्रैल के अन्त तक रहेगा। —आचार्य।

—गुरुकुल नारसेन का आठवां उत्सव बड़ी धूमधाम व सफलता के साथ मनाया गया। उत्सव पर हज़ारों की संख्या में जनता उपस्थित थी। गुरुकुल के लिये उत्सव पर ही ३०००) दान प्राप्त हुआ तथा इस वर्ष का कुल वार्षिक दान १००००) के लगभग हुआ है। पिछले सब उत्सवों से हर दृष्टि से यह उत्सव अधिक सफल रहा। नया आश्रम लगभग बन गया है। इस वर्ष गौ शाला, चर्खाशाला, श्रद्धानन्दद्वार, व्यायाम शाला इत्यादि के निर्माण के लिये उत्सव पर दान प्राप्त हुआ है। आशा है समय अनुकूल होने पर ये कार्य प्रारम्भ किये जा सकेंगे।

आवश्यकता

गुरुकुल नारसेन के आसपास के ग्रामों में गुरुकुल की बहुत सी शाखाएं खुल रही हैं। उनमें तीसरी श्रेणी तक हिन्दी, गणित व संस्कृत पढ़ाने वाले त्यागी नवयुवक की आवश्यकता है जो नौकरी के लिये नहीं किन्तु ग्रामोद्धार के उद्देश्य से सेवा करने को तय्यार हों। उनके मकान, भोजन तथा अन्य व्यय का प्रबन्ध गुरुकुल करेगा। उत्तर शीघ्र दें। यदि स्वयं मिल सकें तो अधिक अच्छा है।

स्नातक वासुदेव चैतन्य, आचार्य।

धीर पुरुष

सुख दुख में एक समान
सोई धीर पुरुष कहलावे।

जैसे मान वैसे अपमान,
निंदा स्तुति एक समान
राखे सभी का मान
सोई धीर पुरुष कहलावे।

कछुआ ज्यों अंग सकोड़े
त्यों विषयों से मुंह मोड़े
तब होवे प्रज्ञावान्,
सोई धीर पुरुष कहलावे।

सब बुरी वासना त्यागे,
तब मन विकार तम भागे
तजे मोह अभिमान
सोई धीर पुरुष कहलावे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(पृष्ठ ३ का शेष)

इन परिणामों से मेकौले की भविष्यद्वाणी आंशिक रूप में मिथ्या सिद्ध हो चुकी है । इस शिक्षा के स्वीकार करने से शिक्षित भारतीयों की राष्ट्रीय चेतना को नहीं दबाया जा सका । अंग्रेज़ी शासन के पृष्ठपोषक होने के बदले वे भारतीय क्रान्ति के अग्रदूत बने । साधारण जनताकी शिक्षाके सम्बन्ध में यहां जिस ढंग से उपेक्षा की गई वह किसी भी शासन के लिए लज्जास्पद है । यह शिक्षा पद्धति भारत की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल सिद्ध हुई और देश-भक्त भारतीयों को, इसके दोष स्पष्ट दीखने लगे । समय समय पर शिक्षा-पद्धति में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने तथा इसे जनता की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के अनुकूल बनाने के प्रयत्न किये गये हैं । यह छिपा नहीं कि उच्च शिक्षा तथा ज्ञान विज्ञान के अनुसन्धान के क्षेत्र में भारतीय विद्वानों की मौलिक विचार की शक्ति अभी तक सर्वथा नष्ट हुई है और वे किसी भी विदेशी विद्वान् के मुकाबले में ठहर सकते हैं । विचार के कुछ क्षेत्रों में आंशिक सफलता प्राप्त हुई है, किन्तु एक सामान्य असन्तोष सर्वत्र स्पष्ट दृष्टि गोचर हो रहा है और वह इस समूची शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवतन की आवश्यकता को प्रकट कर रहा है ।

स्वात्माभिमान सम्पन्न भारतीयों की दृष्टि में शिक्षा की यह समस्या तब तक हल नहीं होसकती जब तक कि उसे विदेशी प्रभाव से सर्वथा मुक्त एक राष्ट्रीय सरकार के हाथों में न सौंप दिया जाय । सच पूछो तो हम एक विचित्र गोरख-धन्धे में फँसे हुए हैं । उचित शिक्षा के बिना हम स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त कर सकते और स्वतन्त्रता के बिना हम अपनी शिक्षा पद्धति का पुनर्निर्माण देश की आवश्यकताओं के अनुसार नहीं कर सकते । वर्तमान स्थिति में हमें वर्तमान पद्धति का ही सर्वोत्तम उपयोग करना है तथा निरन्तर प्रयत्न एवं आंदोलन से, इस पद्धति का ही सर्वोत्तम उपयोग करना है तथा इस पद्धति में ऐसे परिवर्तन और सुधार करवाने हैं, जिससे हम अपने लक्ष्य की ओर यथा सम्भव अधिक से अधिक बढ़ सकें । हम तो अभी तक मातृभाषा की उच्च शिक्षा तथा परीक्षाओं का माध्यम भी नहीं बना सके जो कि शिक्षा का सर्व प्रथम आधार भूत सिद्धांत है । किंतु प्रसन्नता है कि गुरुकुल ने इस क्षेत्र में उचित मार्ग का अवलम्बन किया है । प्रत्येक प्रांत में उस प्रांत की अपना एक मुख्य भाषा है और शिक्षा में उस भाषा को माध्यम स्वीकार करना चाहिए ।

तो भी यदि वहां एक दूसरी भाषा को बोलने वाले पर्याप्त संख्या में हों तो उसे भी उपयुक्त शीलता के साथ उचित स्थान मिलना चाहिए । (यद्यपि एक प्रांतीय क्षेत्र में भाषाओं की अधिकता कुछ जटिल समस्यायें उत्पन्न कर सकता है) सुशिक्षित विद्वानों की देखरेख में तथा सरकार और विश्वविद्यालयों के साथ पूर्ण सहयोग से कार्य करनेवाले एक ऐसे विभाग की प्रत्येक प्रांत में स्थापना की जानी चाहिए जो प्रांत [illegible] पुस्तकें तैयार करवादे । हमारे सामान्य कार्यों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा के बादकी श्रेणियों में अंग्रेज़ी का काम चलाऊ ज्ञान करा देना पर्याप्त है । जो विद्यार्थी अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य का गहरा ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, उनके विषय में अपवाद किया जा सकता है । इसी प्रकार हिन्दी का भी काम चलाऊ ज्ञान इसलिए आवश्यक है कि भारत के विभिन्न प्रांतों की जनता के साथ सीधा सम्बन्ध रखा जा सके । विभिन्न विषयों के अध्ययन को हमारे देश की अवस्था के अनुकूल पुनः संघटित करने की आवश्यकता है । इतिहास, अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान जैसे विषयों का प्रतिपादन भारतीय परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए होना चाहिए । विज्ञान भौगोलिक सीमाओं से परे है अतः विज्ञान के क्षेत्र में हमें वही परिभाषायें रखनी चाहियें जो दूसरे देशों में प्रचलित हैं । इस प्रकार हम विश्व की प्रगति से सम्बद्ध रह सकेंगे तथा अपने सीमित क्षेत्र से बाहर के सहयोगी कार्यकर्ताओं से भी हमारा सम्बन्ध बना रहेगा ।

प्रत्येक राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति में उत्तम पुस्तकालयों, परीक्षणशालाओं और अद्भुतालयों को जितना भी महत्व दिया जाय, व व्यय किया जाय, वह कम है । किन्तु हमें भवनों और छात्रावासों के अनावश्यक व्यय को कम करना चाहिये । भारत जैसे दरिद्र देश में हमारा यह लक्ष्य होना चाहिये कि प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा व्यय को अधिक से अधिक कम कर सकें ताकि इस तरह बचे हुए धन का सदुपयोग शिक्षा के प्रसार में किया जा सके । हमारे विद्यार्थियों के रहन सहन और शिक्षा देने का ढंग ऐसा होना चाहिए कि अपनी शिक्षा की समाप्ति के बाद वे बिना किसी संकोच के, अपने को चारों ओर की उन परिस्थितियों के साथ एकाकार कर सकें जिनमें शिक्षा ग्रहण करने से पहले वे पले थे । हमारे देश की उन्नति के लिए इससे अधिक घातक कोई बात नहीं हो सकती कि हम तथाकथित शिक्षित भारतीयों का एक ऐसा पृथक् वर्ग तैयार करदें जो उन मन्दभाग्य लाखों भारतीयों के दृष्टिकोण तथा जीवन बिताने के ढंग से अपरिचित हों, जिनकी सेवा करना ही हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए ।

किसी भी शिक्षा पद्धति में जनता की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों की उपेक्षा नहीं की जा सकती । यद्यपि कोई भी शिक्षा संस्था अपने प्रत्येक विद्यार्थी की जीविका का प्रबन्ध करने का उत्तरदायित्व अपने पर नहीं ले सकती तथापि उसकी शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी को दी गई शिक्षा, जीवन संघर्ष में, उसकी सहायक हो, बाधक न हो । इस लिए शिक्षा बहुमुखी होनी चाहिए और देश का आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति के उपयुक्त अनेक व्यवसायों की शिक्षा देने वाली विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का अवश्य विकास होना चाहिए । राष्ट्रीय सरकार इस क्षेत्र में अपना यह परम कर्तव्य समझेगी कि वह शिक्षण संस्थाओं को व्यापार, व्यवसाय, कृषि और उद्योग धन्धों से सम्बद्ध कर सके । इनमें परस्पर कोई संघर्ष नहीं हो सकता यदि सब राष्ट्र सेवा को ही अपना अन्तिम उद्देश्य समझ लें ।

(शेष अगले अंक में)

'आर्य' परिवार से निवेदन

आर्य्य के निम्न ग्राहकों के चन्दा द्वितीय सप्ताह में समाप्त है । कृपया के लिये शीघ्र ४) वार्षिक चन्दा भेज करें । यदि किसी कारण से चन्दा भेज न हो तो कृपया एक कार्ड भेज देवें ता का मुफ्त में व्यय न किया जावे ।

२००७, २०१३, २०१६, २०२३, २०
२०३४, २०४०, २०४२, २०५३, २०
२०५६, २०६१, २०७०, २०७१, २०
२०८१, २०९१, २०९४, २०९७, २०९
२१०२, २१०७, २१०८, २१०९, २११
२१३३, २१३४, २१४४, २१४५, २१
२१५१, २१५३, २१५४, २१५५, २१६
२१६४, २१६५, २१६६, २१६८, २१७
२१७६, २१७७, २१७८, २१७९, २१८
२१९१, २१९२, २१९४, २१९८, २२००
२२०४, २२०२, २२०७, २२२१, २२२
२२३१, २२३८, २२३९, २२४१, २२४
२२४९, २२६१, २२६३, २२६५, २२६
२२६८, २२६९, २२७०, २२७४, २२७
२२८९, २३१५, २३१८, २३१९, २३३
२३४०, २३४८, २३७८, २४२१, २४२
२४४४, २४४५, २४४७, २४४८, २४५
२४५६, २४५७, २४५८, २४५९, २४६
२४६१, २४६२, २४६७, २४६८, २४६
२४७१, २४७५, २४७६, २४७७, २४७
२४८१, २४८२, २४८३, २४८४, २४८
२४८७, २४८९, २४९०, २४९१, २४९
२४९४, २४९७, २५००, २५०१, २५०
२५०८, २५०९, २५२६, २५२७, २५२
२५३, २५३४, २५३६, २५३७, २५४
२५६२, ५६३, २५६५, २५६६, २५७
२५७५, २५७७, २५८०, २५८१, २५८
२५९४, २६०१, २६४६, २६७०, २६७
२६७३, २६७५, २६८०, २६८२, २६८
२६८५, २६८६, २६८७, २६८९, २६९
२६९५, २६९६, २६९७, २६९८, २६९
२७०२, २७०३, २७०४, २७०५, २७०
२७२१, २७२२, २७२६, २७२७, २७३
२७३३, २७३५, २२३७, २७४०, २६४
२७४३, २७४४, २७४५, २७४७, २-४
२७५१, २७५३, २७५४, २७५५, २७५
२७६०, २७६१, २७६२, २७६३, २७६
२७७१, २७७४, २७७५, २७७६, २७७
२७८१, २७८२, २७८५, २७८६, २७८
२८०३, २८०५, २८०६, २८०८, २८१
२८१७, २८२२, २८२४, २८२६, २८२
२८३०, २८३०, २८३५, २८३६, २८३
२८४०, २८४२, २८४३, २८४४, २८४
२८५४, २८६६, २८६७, २८८०, २८८
२९०९, २९१०, २९२५, २९२९, २९३
२९६२, २९७२, २९९६, २९९७, ३००
३००३, ३००७, ३००८, ३००९, ३०१
३०१२, ३०१७, ३०१८ ३०१९, ३०२
६०२४, ३०२५, ३०२६, ३०२७, ३०३
३०३५, ३०४२, ३०५१, ३०५६, ३०६

—प्रबन्धक, आर्य,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक २४
वार्षिक मूल्य ४)
२७ वैशाख, २०००विक्रमी
९ मई १९४३ ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००१ अध्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी (Saharnpur)

कुल-विश्वविद्यालय कांगड़ी के ४१ वें वार्षिकोत्सव पर

श्री डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी का दीक्षान्त अभिभाषण

[गतांक से आगे]

क और शिष्य में पिता और पुत्र का सा
ध होना चाहिए। इसके द्वारा ही शिक्षा के
ड को ऊँचा रखते हुए उसके उद्देश्यों को
या जा सकता है। आज्ञापालन स्वाभा-
क्ति से उत्पन्न होता है और यह प्रेम चिर-
होता है। बलपूर्वक आरोपित नियन्त्रण
होता है और विद्यार्थियों के चरित्र को नहीं
कता। आपकी संस्था का मूलभूत विचार
त" अर्थात्—'गुरु का घर'—प्राचीन भारतीय
उच्चतम देन है, और वह विचार भारत के
न विभागों में, पश्चिमी नमूने की नकल पर
आवासयुक्त पाठशालाओं (Residential
ools) के कृत्रिम वातावरण में अभी तक
र्विष्ट हुआ। एक भारतीय शिक्षा शास्त्री,
को, विस्तृत अर्थ वाले भारतीय धर्म के स्रोत
क नहीं रख सकता। वह विरासत, जो एक
या युवक को मिली है, उसके मानसिक चक्षुओं
मने सदा स्पष्ट रूप से रहनी चाहिये। उसे
ऋषियों के उपदेश की सनातन महत्ता सम-
ज्ञाना चाहिए। इसका उद्देश्य उसकी दृष्टि
कुचित करना या जिज्ञासा की भावना को
न होकर यह होना चाहिए कि वह स्वयं उन
ों के यथार्थ मूल्यों का निर्णय कर सके।
समाज में सभ्यता का यह आशय रहा है कि
कुछ सूक्ष्म अनुभूतियों का विकास कर
र्जीवनों का क्रमशः समाजीकरण करें।
नुभूतियां हमें इस योग्य बनाती हैं कि
यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति,
षु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते'। ईशावास्यो-
द का यह आदर्श अपने जीवन में चरितार्थ
र्कें। यही कारण है कि हमारा सामाजिक
राजनैतिक चेतना की अपेक्षा नैतिक चेतना
धिक प्रभावित होता है। यदि आज हम मत-
से पीड़ित हैं तो इसके लिए दोषी वे व्याख्या-
हैं जो तात्कालिक परिस्थितियों के कारण बाह्य
रों तथा रूढ़ियों के साथ चिपटे रहे और
जिन्होंने हमारे प्राचीन ऋषियों के उपदेशों में स्पष्ट रूप से वर्णित सेवा और समानता की शिक्षा पर कुठाराघात किया। अपनी राष्ट्रीय विरासत के लिए ऐसा अभिमान जो कि जाति और मत के बन्धनों से भी परे है—युवकों के हृदयों में अवश्य उत्पन्न किया जाना चाहिये। इससे हम उस आत्म-हीनता की भावना तथा आत्मविश्वास के अभाव को दूर कर सकेंगे, जो इस समय हमारी प्रगति में बाधक है। हमारा यह दावा है कि पश्चिम की ओर बिना देखे भी, हम अपने समाज का पुनर्निर्माण भारतीय आदर्श पर कर सकते हैं। विविधमतों तथा धर्मों से परिपूर्ण इस देश में, हमें अपने आंदोलन ऐसे बनाने चाहियें कि उनमें प्रत्येक व्यक्ति को बौद्धिक व सांस्कृतिक विकास का पूरा अवसर मिल सके। प्रत्येक व्यक्ति अपने मत के प्रति सच्चा रहता हुआ, दूसरों का सहायक व विश्वासपात्र बने और अन्त में सब भारतीय एकता की अविनश्वर भावना के पुजारी हों।

आज विश्व में मानव सभ्यता के इतिहास में अभूतपूर्व संकट उपस्थित है। पाश्चात्य सभ्यता विश्व को शान्ति तथा स्वतन्त्रता नहीं प्रदान कर सकी। भौतिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक उन्नति के बावजूद योरोप के शासक सत्ता, रोब और अधिकार की लालसा के शिकार बने हुए हैं। विश्व का भावी सुख उन व्यक्तियों के दृष्टिकोण पर अवलम्बित होगा जिनके हाथों में बलवान् राष्ट्रों की बागडोर है। वे लोग समानता, प्रजातन्त्र और स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों के प्रति चाहे कितना मौखिक सहानुभूति दिखाएं, किन्तु यदि वे अपने कार्यों में दलित और हतभाग्य राष्ट्रों को दबाने और शोषण करने की भावनाओं से प्रभावित होते हैं तो उन्हें यह आशा नहीं रखनी चाहिये कि वे संसार में एक उत्कृष्टतर व्यवस्था को जन्म देने वाले हैं। विश्व का भविष्य इसी बात पर अवलम्बित है कि स्वतन्त्र राष्ट्रों का एक संघ बनने में प्रत्येक देश को अपने देश की सर्वोत्तम परम्पराओं तथा आदर्शों के अनुसार, अपने राष्ट्रीय जीवन के विकास का अवसर प्राप्त हो। यदि यह उद्देश्य सब को मान्य है तो दुनियां के सब भागों में शिक्षा-पद्धति इस ढंग की होनी चाहिये कि वह उचित अन्तर्राष्ट्रिय व्यवहार तथा समझ को प्रोत्साहित करने वाली हो। आधारभूत नैतिक गुणों में एक यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह अवसर मिलना चाहिये कि वह अपनी स्वाभाविक शक्तियों का पूरा उपयोग करते हुए अपने मन व शरीर का पूर्ण विकास करे। उसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना होनी चाहिये और सब लोगों की भलाई के सामने, अपने वैयक्तिक स्वार्थ या अपने वर्ग के स्वार्थ को तुच्छ समझने की दृढ़ इच्छा होनी चाहिये। वह स्वतन्त्र निर्णय शक्ति रखने वाला व्यक्ति होना चाहिये और उसे विवाद में, दूसरे व्यक्तियों की प्रतिष्ठा रखने वाला तथा दूसरों की सम्मतियों के प्रति सहिष्णु होना चाहिये। उसे यह समझना चाहिये कि उसका उत्तरदायित्व केवल अपने देश का नागरिक होने के नाते ही नहीं अपितु विश्व का नागरिक होने के नाते भी है। सब के लिये समान न्याय होना चाहिये। राजशक्ति का आधार पशुबल न होकर सामान्य सद्भावना और सहायता होना चाहिये।

हमारी आज की प्रधान समस्याओं में से एक यह है, कि राष्ट्रिय शिक्षा-पद्धति की पुनरायोजना हमारी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुकूल होनी चाहिये। हम नहीं जानते कि हमारी राजनैतिक परिस्थिति कब ऐसी होगी कि हम इस योजना को कार्यान्वित कर सकेंगे, किन्तु यह युद्धोत्तर पुनर्निर्माण का मुख्य भाग होना चाहिये। हमें अविलम्ब एक योग्य समिति का स्थापना करनी चाहिये जिसमें सब विचारों का प्रतिनिधित्व हो और जो यह विचार करे, कि हमारी भावी शिक्षा का पुरोगम किस तरह का होना चाहिये। यह कार्य सुगम नहीं होगा। भाषा, इतिहास, विभिन्न समुदायों की आवश्यकतायें और आजीविका सम्बन्धी समस्याओं की सूक्ष्म परीक्षा की आवश्यकता होगी। स्पष्ट और शुद्ध शब्दों में शिक्षा उद्देश्य की व्याख्या करनी होगी। संक्षेप में, हमारा उद्देश्य यह होना चाहिये कि प्रत्येक भारतीय बालक का यथासम्भव इतना विकास हो सके कि वह अपने को स्पष्ट रूप से अपने देश के साथ एक अनु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

कर। वह अपने देश के अतीत की परम्पराओं को समझे तथा उसके वर्तमान के जीवन और कार्यों में तथा भविष्य की आकांक्षाओं और उत्तरदायित्व में अपना अंश प्रदान करे। भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न प्रान्तों में अपनी अपनी समस्याएं होंगी। पर हमारा उद्देश्य यह होना चाहिये कि हम प्रत्येक भारतीय बालक के हृदय पट पर भारतीय एकता की भावना के प्रति गहरी भक्ति के भाव अमिट रूप में अंकित कर दें। उसके दैनिक जीवन को ऐसा नियन्त्रित करें कि उसको हमेशा यह ध्यान रहे कि वह जो कुछ कर रहा है, अपने राष्ट्र की उन्नति के लिये कर रहा है और अपने राष्ट्र द्वारा विश्व की उन्नति के लिये कर रहा है।

आपकी महान् संस्था भारत शिक्षा समस्या को हल करने में बहुत सहायक होगी। शिक्षा के क्षेत्र में संकुचित तथा कठोर व्यवस्थाओं और नियमों का अवलम्बन शिक्षा का नाश करने वाला होता है। यह उसके जीवन पर कुठाराघात करता है। आपके गुरुकुल ने परीक्षण द्वारा यह दिखा दिया है कि इस देश में शिक्षा भारतीय सभ्यता के मौलिक अंगों तथा वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं में उचित सामंजस्य स्थापित करके दी जा सकती है। आपने अनेक भयंकर बाधाओं के होते हुए उन उत्तम विचारों व प्रभावों को अपने हृदयों में निरन्तर पोषित किया है जो अभिमानी और स्वार्थी प्रकृतिवाद की विनाशक सेनाओं से मानव सभ्यता की रक्षा कर सकते हैं। भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के कार्य में आप अवश्यमेव एक बड़ा भाग लेंगे, और आपके अनुभव इस देश की भावी शिक्षा की नीति एवं प्रबन्ध पद्धति को बहुत प्रभावित करेंगे। भारतवर्ष में अनेक बाह्य विभिन्नताओं के बीच में विचार की एक विलक्षण समानता दृष्टिगोचर होती है। राजनैतिक पराधीनता के बावजूद भी हम अपना मस्तक ऊँचा कर सके हैं क्योंकि हमारे में आत्मसात् कर लेने की सहज शक्ति है। हमारी संस्कृति का उद्देश्य जीवन का पूर्ण विकास रहा है। जीवन के सम्पूर्ण ज्ञान का विषय प्रकृति, मनुष्य और परमात्मा है। परिश्रम और प्रेम मनुष्य को पूर्ण बनाने के उपादान हैं। भारतीय नवोत्थान का कार्य नितान्त न्यायानुमोदित है। इस दृढ़ विश्वास के साथ, आइए हम हिमालय के चरणों में तथा स्मरणातीत काल से भारत की दुर्धर्ष सभ्यता की साक्षिणी भगवती-भागीरथी के तट पर एकत्र होकर अपने उज्ज्वल अतीत से प्रेरणा प्राप्त करें। वर्तमान काल के कष्टों और यातनाओं का सामना करने की शक्ति और धैर्य संचित करें और भावी स्वतन्त्र तथा अखण्ड भारत के पुनर्निर्माण में निर्भयता पूर्वक अपना तुच्छ अंश प्रदान कर सकें। आइये हम भारत के लाखों त्रस्त प्राणियों की वाणियां अपने में केन्द्रित करें और कवीन्द्र रवीन्द्र के शब्दों में सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय उद्घोषित करें। मातृभूमि को मुक्ति के लिए बड़े से बड़ा त्याग और बड़ों से बड़ी तैय्यारी करने के लिए कटिबद्ध हों।

चित्त जेथा भय शून्य, उच्च जेथा शिर।
ज्ञान जेथा मुक्त, जेथा गृहेर प्राचीर॥
आपन प्राङ्गण तले, दिवश शर्व्वरी।
वसुधारे राखे नहि खण्ड क्षुद्र करि॥
जेथा वाक्य हृदयेर उत्स मुख हते।
उच्च वसिया ओठ जेथा निर्वारित स्रोते॥
देशे देशे दिशे दिशे कर्मधारा धाय।
अजस्र सहस्रविधा चरितार्थ ताय॥
जेथा तुच्छ आचारेर मरु बालुराशि।
विचारेर स्रोत पथ फेले नाइ ग्रासि॥
पौरू शेर करेनि शतधा; नित्य जेथा।
तुमि सर्व कर्म चिन्ता आनन्देर नेता।
निज हस्ते निर्दय आघात करि पिता।
भारतेर सेई स्वर्ग करो जागरित॥

"जहां चित्त भय शून्य है, जहां मस्तक उच्च रहता है जहां ज्ञान मुक्त है।

जहां जगत क्षुद्र घराऊ दीवारों से खण्ड खण्ड नहीं कर दिया गया है,

जहां शब्द सत्यता की गहराई से निकलते हैं,

जहां अनथक पुरुषार्थ अपनी भुजाओं को पूर्णता की ओर बढ़ाता है,

जहां विचार के स्रोत ने अपने मार्ग को तुच्छ आचार की भयानक मरु भूमि में लुप्त नहीं कर दिया है,

जहां के निवासियों का मन सदा विस्तृत होने वाले विचारों और कर्मों की ओर अग्रसर रहता है,

ऐ मेरे पिता! स्वतन्त्रता के ऐसे दिव्य लोक में मेरा देश जागृत हो। समाप्त।

निरुक्तकार और स्वामी जी

[श्री विद्यानन्द]

वेद के किसी मन्त्र को लीजिये—आप उसे साधारण हिन्दी पढ़े लिखे या बिना पढ़े आदमी को सुनाइये—वह एक आध शब्द अवश्य समझ जायेगा। अतः यह स्पष्ट है, कि हिन्दी के जानकार का दिमाग़ एक ऐसी शृंखला से जकड़ा है जो वैदिक मन्त्रों से सम्बन्धित है। यह प्रमाण है—कि हिन्दी-भाषी जनता वैदिक संस्कृति को अपना सकती है तथा गौरव भी अनुभव करती है। प्रत्येक प्रान्तीय भाषा के जानकार के प्रति भी यह बात सत्य है। चाहे वह हिन्दु हो, या मुसलमान।

निरुक्तकार शब्दों के प्रति मनुष्यों के भाव, उनका अर्थ किस प्रकार व्यक्त होता है—इसे तो नहीं बताते, किन्तु क्या २ अर्थ होते हैं इसे अवश्य बताते है। वे शब्द के सभी सम्भव अर्थों को बताना ही निरुक्ति समझते हैं। अतः व्याकरण की अपेक्षा निरुक्त वेद मंत्र व्याख्या में कई अंशों में अधिक उपयुक्त है। परन्तु तो भी अवैयाकरण निरूक्ति नहीं कर सकता। अतः स्वामी जी निरूक्त एवं व्याकरण को मन्त्रार्थ के लिये परमावश्यक बताते हैं।

परन्तु 'वेद' ज्ञान है; विज्ञान है। अनुभव की जांच में यह बात आती है कि, सत्य या ज्ञान को समझने वाला व्याकरण या निरूक्त से ही वेदों को समझे यह बात नहीं है। ज्ञान या सत्य का अनुभव अन्य सभी आवश्यक विषयों की मदद का फल है। उसमें दर्शन इतिहास, प्राणीशास्त्र एवं मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र आदि का ज्ञान भी बहुत सहायक होता है। परन्तु वर्तमान में बहुत कम पण्डित इन विषयों से जानकार होकर वेदार्थ करने में जुटे हैं। वास्तव में साधारण पण्डितों की, जिनमें दिमाग एवं काम करती है—अर्थ-शैली 'प्रत्य मात्र होती है। उसमें ऋषियों क्रान्तदर्शिता नहीं होती। हां! प्रतिभ अवश्य दृष्टिगोचर होता है। ऋषि अ शब्दों के व्याकरण, निरुक्त एवं अन्त शास्त्रानुकूल बनाने में प्रवीणता प्रा फ़र्क ही रहता है। इनमें एक के साथ उत्साह, तथा साहस से उत्साहित के द्वारा स्वीकृति प्रकट होती दूसरे के साथ नहीं। मैंने इस वि करण के लिये ऋग्वेद का प्रथम म आशा है, कि वह विद्वानों के द्वारा स किये जाने पर ऋषि की वास्तविक शैली में प्रकट कर वेद के प्रति लोग पैदा करेगा। ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र नि

"अग्निमीड़े पुरोहितं यज्ञस्य देवमृ
होतारं रत्नधातमम्॥

निरुक्त के अनुसार पदों का अन्व

"यज्ञस्य पुरोहितं, देवं, ऋत्विजं, ह धातमम्, अग्निम्, ईड़े॥"

यज्ञ में आगे रखे जाने वाली, प्रदी नुकूल शिल्पादि यज्ञों में काम आनेवा को लेकर पुनः लाभप्रद बनानेवाला, व्यक्त करके धारण करने वाली, आ करता हूँ।

स्वामी जी के अनुसार पदों का अ

"पुरोहितं, यज्ञस्य देवं, ऋत्विजं, ह धातमम्, अग्निम् ईडे।" सबके हि सबके पूज्यतम तथा सब यज्ञों नीयतम, सब ऋतुओं के निर्माता य सुखदाता, सबको योग क्षेम देनेवाले करने वाले अर्थात् उत्पत्ति, स्थिति कारण, सुवर्णादि रत्नों के धारक, स कारी प्रभु की स्तुति करता हूँ।

प्रायः निरुक्तकारों का झुकाव 'अ है। परन्तु निरुक्तकार "अग्न" का एक भी मानते हैं। अतः परमेश्वर, विद्व सेनापति, या अपनी किसी विशेषता से पता की ओर लोगों की झुकाकर ले ज इसमें शामिल हो सकते हैं। हमने दिये हैं—वे वर्णनात्मक है। इसे स्वयं समझा जा सकता है।

निरुक्तकार शाकपूणी 'अङ्ग' 'दह' क्रमशः 'अ' 'ग' तथा नी 'धातुओं से हैं। यह अर्थ आज के तीन कामों पदार्थ व्यञ्जक, एवं दाहक) को ख्याल माना जा सकता है। इस प्रकार शाक पूणी इस मंत्र को भौतिक आग विषय वाला मानते हैं। परन्तु यह कर्म प्रभु क कर अर्थ किया जा सकता है।

श्रयुत स्थौलाष्ठीवी निरुक्तकार ने 'कनूगी' से 'अग्नि' का अर्थ शुष्क बनाने के अभिप्राय से ठीक माना है। यह अर्थ लिये सार्थक करने में बहुत खींचा तानी अतः इनके मत के अनुसार भौतिक (विषय) वाला मन्त्र माना जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

आर्य रविवार २७ वैशाख
विक्रमी २०००

चार निधि में ३३६००) एकत्रित

त वर्ष वेद प्रचार निधि में ३३६००) एकत्रित
या सभा के इतिहास में इतना धन पहले कभी
त्र नहीं हुआ था। पिछले ४-५ वर्षों से प्रति
दा प्रचार के लिये कोई न कोई वसीयतदान में
ी रही है, परन्तु इस वर्ष वेद निधि में कोई
ता प्राप्त नहीं हुई। इसके अतिरिक्त आर्य्य
न दीवान हाल देहली ने गत वर्ष की तरह इस
द प्रचार निधि में अपने आर्य्य समाज को
से कोई सहायता न दी। गाड़ियों में बहुत
क भीड़ की वजह से धन संग्रह के लिये यात्रा
में पर्याप्त कठिनाई होता रही। धन संग्रह के
जितना यत्न करना चाहिये था वह सम्भव न
का। फिर भी वेद प्रचार निधि में ३३६००)
ता हो गया। इस के लिये मैं आर्य जनता का
क धन्यवाद करता हूं। मुझे प्रसन्नता है कि
ने प्रत्येक आर्य्य समाजों को जितने धन के
आज्ञा दी, आर्य्य समाजों ने सभा की आज्ञा
सज्जता पूर्वक स्वीकार किया। आर्य्य समाज
न्हाज देहली को छोड़कर पंजाब की शेष सब
समाजों ने सभा के साथ पूर्ण सहयोग किया
संगठन की रक्षा करना प्रत्येक आर्य तथा
समाज का कर्त्तव्य है। आर्य समाज का
था शक्ति संगठन में ही है। ऋषि दयानन्द ने
समाज के संगठन का आधार डेमोक्रेसी
द्धान्तों पर कायम किया। संगठन को निर्बल
ग्या तोड़ने वाला व्यक्ति सामाजिक पाप
का भागी होता है, समाज किसी भी व्यक्ति से
है, आर्य समाज का पुराना इतिहास इस
का साक्षी है कि आर्य समाज ने संगठन के
किसी व्यक्ति की परवाह नहीं की और यही
सामाज की सफलता का रहस्य है। आर्य
ों का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे संगठन
ा करें। संगठन के निर्बल होने पर आर्य
की सत्ता की रक्षा होना असम्भव है। मुझे
ा है कि पंजाब की आर्य समाज अपनी
र्णी सभा की आज्ञाओं का पालन करना
कर्त्तव्य समझती हैं। और हर प्रकार से
की आज्ञाओं का पालन करती हैं।

स वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण
ने निश्चय किया था कि वेद प्रचार प्रणाली में
न किया जावे। अर्थात् उत्सवों की वर्तमान
को बदल कर कथाओं द्वारा उत्सव कराये
न्था उत्सवों की संख्या को कम किया।
यह बात वास्तव में कठिन है, और इस
में आर्य समाजों की मनोवृत्ति को बदलना
है,, क्योंकि प्रायः सब आर्य समाजों के
हैं कि उत्सव बन्द करने से रुपया कम
। और इस प्रकार वेद प्रचार निधि को
तो इस में कोई सन्देह नहीं। उत्सवों
की वर्तमान प्रणाली दोष पूर्ण है। इस से लाभ कम होता है और व्यय अधिक होता है। प्रारम्भ से यत्न किया गया कि इस विषय में आर्य समाजों की मनोवृत्ति को बदला जावे। इस के अनुसार इस वर्ष ३५ आर्य समाजों ने अपने उत्सव कथा द्वारा किये हैं। और वेद प्रचार निधि में गत वर्ष से अधिक धन दिया है। पिछले साल २६३ उत्सव किये गये थे परन्तु इस वर्ष २५३ उत्सव किये गये हैं अर्थात् गत वर्ष से ४० उत्सव कम किये गये हैं। इस पर भी वेद प्रचार निधि में गत वर्ष से अधिक धन आया है।

मेरा अनुभव है कि यदि आर्य समाजें उत्सवों की वर्तमान प्रणाली में परिवर्तन करने का निश्चय कर लें तो उन्हें कोई हानि न होगी। उत्सवों को सफल बनाने में जिन महानुभावों ने अपना समय देकर सभा की सहायता की है मैं उनका धन्यवाद करता हूं। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है इस वर्ष जितने सन्यासी महानुभावों तथा अवैतनिक कार्य कर्ताओं ने सभा के साथ सहयोग किया है वह भी सभा के इतिहास में नई बात है। अन्त में मैं फिर इस सहायता और सहयोग के लिये आर्य समाजों का धन्यवाद करता हूँ।

—यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार
अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग।

सूचना

"गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ने यह निश्चय किया है कि बाहर के छात्रों के लिए इस वर्ष से छात्र परीक्षाएं प्रारम्भ की जाएं। इन परीक्षाओं का उद्देश्य है कि जो विद्यार्थी गुरुकुल कांगड़ी में रहकर अध्ययन नहीं कर सकते वे घर पर बैठे सुविधानुसार विविध परीक्षाओं की तैयारी करें तथा निश्चित केन्द्रों में परीक्षा देकर उपाधियां ग्रहण कर सकें। इन परीक्षाओं में धर्मशास्त्र, संस्कृत, हिन्दी, इतिहास और वेद के विषयों में प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा के तीन खण्ड होंगे। सम्पादन कला, गृहशास्त्र और संगीत के पाठ्य क्रम भी तैयार हो रहे हैं। प्रत्येक खण्ड में तीन पत्र होंगे और धर्मशिक्षा का एक पत्र आवश्यक होगा।

ये परीक्षाएं ११ अक्टूबर से प्रारम्भ होंगी। प्रार्थना पत्र छपे हुए फार्म पर जो कि छात्र-परीक्षा समिति के कार्यालय से मिल सकते हैं; लिख कर नियत शुल्क सहित १ जुलाई तक समिति के कार्यालय में अवश्य आजाने चाहिये।

जनता को इन परीक्षाओं का पूरा लाभ उठाना चाहिए। इनकी विस्तृत पाठविधि तथा नियमावली तीन आने के टिकट भेजने पर मिल सकती है। इस विषय में विशेष जानकारी के लिए पत्र व्यवहार 'अध्यक्ष, छात्र-परीक्षा विभाग, गुरुकुल कांगड़ी से करना चाहिए।

आर्य समाजों के प्रतिनिधि

आवश्यक सूचना

आर्य समाजों के प्रतिनिधियों का त्रय वार्षिक चुनाव सम्वत् १९९८ १९९९ २००० के लिए सम्वत् १९९८ से हो रहा है। परन्तु अनेक आर्य समाजों ने अभी तक अपने प्रतिनिधि चुन कर नहीं भेजे हैं। उन्हें चाहिए कि अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करके प्रतिनिधि फ़ार्म भर कर दशांश तथा वेद प्रचार धन सहित सभा कार्यालय में शीघ्र भेज दें। यह ध्यान रहे कि सभा का यह निश्चय है कि जो प्रतिनिधि फ़ार्म जनरल सभा की तिथि से १५ दिन पूर्व सभा कार्यालय में न पहुँच जावें उन पर साधारण सभा के पीछे विचार हो सकेगा। और उनके प्रतिनिधि इस साधारण सभा में भाग न ले सकेंगे उनसे प्रतिनिधि फ़ार्म सभा कार्यालय में १४ मई १९४३ तक आने चाहिये क्योंकि साधारण सभा का अधिवेशन २९-३० मई १९४३ को होगा।—भीमसेन मन्त्री आर्य प्र० स० लाहौर।

श्री० ला० लब्भूराम जी का दान

अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनन्य भक्त श्री० ला० लब्भूराम जी नैय्यड़ लुधियाना निवासी अपनी मित्र मण्डली से गुरुकुल को प्रतिवर्ष सहस्रों की राशि में धन दान दिया करते हैं। गत वर्ष वह राशि १ लाख ९४ हजार तक पहुँच गई थी। इस वर्ष भी लाला जी ने डेढ हज़ार रुपया गुरुकुल को दान दिया है। लाला जी की यह हार्दिक इच्छा है कि वे शीघ्र ही इस दान को दो लाख तक पूर्ण करदें। अभी इस में साढ़े चार हज़ार की कमी है। इस उम्र में लाला जी की गुरुकुल के प्रति यह लगन और यह प्रेम-भावना नव-युवकों के हृदयों में ईर्ष्या उत्पन्न करने वाली वस्तु है। आर्य जनता तथा समस्त गुरुकुल-प्रेमियों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे इस बची हुई छोटी सी राशि को एकत्र करके लाला जी की झोली में डाल दें ताकि उन्हें इस वृद्धावस्था में अधिक परेशानी न उठानी पड़े।

हर एक आर्य तथा पंजाब के
आर्य समाज को
आर्य का ग्राहक
बनना चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदों में आयुर्वेद

(वैद्य पं० रामगोपाल जी शास्त्री लाहौर ।)

(४)

(गतांक से आगे)

तक्मा के उपद्रव तथा लक्षण

तक्मा के उपद्रव ये लिखे हैं। किस २ तक्मा भेद में कौन २ सा लक्षण वा उपद्रव होता है ऐसा पृथक् वर्णन कहीं नहीं मिलता, परन्तु मंत्रों में लक्षणों और उपद्रवों का संग्रह है जो यहाँ दिया जाता है।

(१) सर्वाङ्गताप (२) सर्व पर्वों का पकड़ा जाना=अङ्गे अङ्गे शोचिषाशिश्रियाणाम्..... यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता अ० १।१२।२।

(३) शिरो वेदना। (४) कास=मुञ्च शीर्षक्त्या उत कास एनं अ० १।१२।३।

(५) त्वचा को हरित् वर्ण करता है=अयं यो विश्वान् हरितान् कृणोषि अ० ५।२२।२।

(६) वेपन (७) बलास (कफ) (८) उद्युग (हिचकी) (९) पामा=यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पुरुषम् अ० ९।८।६॥ तां तक्मन् वीऽवधूनुहि। अ० ५।२२।७॥ मा स्मैतान्त्सखीन् कुरूथा बलासं कासमुद्युगम्। अ० ५।२२।११॥ तक्मन् भ्रात्रा बलासेन स्वस्रा कासिकया सह पाम्ना भ्रातृव्येण सह गच्छामुमरणं जनम् अ० ५।२२।१२॥

(१०) दाह (११) रोष, (१२) उन्माद (१३) विलाप (१४) वध (मृत्यु)=अग्नेरिवास्य दहत एति शुष्मिण उतेव मत्तो विलपन्नगायति। अन्यमस्मदिच्छसुकञ्चिदव्रतस्तवुर्वधाय नमो अस्तु तक्मने अ० ६।२०।१॥

(१५) अङ्ग भेद (१६) हृदयामय (१७) जिह्वा बन्धन=अङ्ग भेदो अङ्ग ज्वरो यश्च ते हृदयामयः अ० ५।३०।९॥ इवमन्तवदति जिह्वा अ० ५।३०।१०॥

(१८) पीड़ा=अभिदुन्वन् अ० ५।२२।६॥

(१९) व्यङ्ग=तक्मन् व्याल निगद व्यङ्ग अ० ५।२२।६॥

तक्मा की औषध

ज्वर की वेद ने नीचे लिखी औषध बतायी हैं-

(१) जंगिडः='तक्मानं विश्वशारदमरसँ जङ्गिडस्करत्' अ० ९।३४।१०।

(२) कुष्ठः=यो गिरिष्वजायया वीरूधां बलवत्तमः। कुष्ठेहि तक्मनाशन तक्मनाशन तक्मानं नाशयन्नितः। अ० ५।४।१॥

(३) आञ्जनम्=त्रयोदासा आञ्जनस्य तक्मा बलास आदहिः अ० ४।९।८॥

(४) सोमलता (५) अग्निः=अग्निस्तक्मानं बाधतामितः सोमः अ० ५।२२।१॥

वैसे तो ज्वर सब देशो में होता है, पर जिस देश में ज्वराधिक्य है वहां के वासियों का वेद में विशेष उल्लेख किया है और इस ज्वर को उन में जाने का वर्णन किया है।

१. महावृष तथा २. मूजवन्त प्रदेश=महावृषान् मूजवतो बन्धवृद्धि परेत्य प्रेतानि तक्म क्षेत्राणि वाइ मा अ० ५।२२।८॥

३. वल्हिक=तक्मन् मूजवतो गच्छ वा परस्तरामू अ० ५।२२।७॥

४. गन्धारि ५. मगध ६. अङ्ग= मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्य अ० ५।२२

यहां उन देशों के रहने वालों से झने चाहिये।

जायान्य (राजयक्ष्मा) का

ज्वर के अनन्तर वेद में आये जाय स्वरूप उपस्थित किया जाता है।

वेद में जायान्य रोग वर्त्तमान यक्ष्मा समझना चाहिये। जायान्य का आया (अधिक मैथुन करने पर उत्पन्न हो। "यज्जायाभ्योऽविन्दत् तै तैत्तिरीय संहिता २।३।५।२ जो स्त्रियों वही (जायेन्य) जायान्य का जन्म है। में राज यक्ष्मा नाम भी आया है।

इसके अक्षत और सुक्षत दो भेद अक्षत प्रथमावस्था है सुक्षत उस अवस्था है जब फुफसों में क्षत हो जावें। "तदस्य मुभयोः सुक्षतस्य च" अ० ७।७६।४॥

जायान्य को वेद में पक्षी की उपमा से दूसरे में प्रवेश करने वाला बतलाया जायान्यः पतति स आविशति पुरुषम्" यह उपमा ठीक है। जैसे पक्षी के दो इसी प्रकार जायान्य के दो पक्ष दो जैसे पक्षी एक स्थान से उड़कर दूसरे पहुँचता है। इसी प्रकार जायान्य के श्वास, थूक, मूत्रद्वारा दूसरे पुरुष जाते हैं।

जायान्य रोग की कसों (पर्शा हिंसत करता है और तलोद्य (फुफुस) (मेरु दण्ड) में जाकर आश्रित है।

"यः कीकसाः प्रशृणाति तलीद्यमव निर्होस्तं सर्वं जायान्यं यः कश्च क

औषध

जायान्य की चिकित्सा दो प्रकार खाने को औषधरूप में आंजन का वि हरिमा जायन्यो अङ्ग भेदो विसल्पक यक्ष्मभङ्गेभ्यो बहिर्निर्हन्त्वाञ्जनम्॥ अ०

दूसरा अग्निहोत्र जिस में अनेक विष नाशक सुगन्धिमय ओषधियों का जावे "विद्म वै ते जायन्य जानं यत्ते जायसे। कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृ अ० ७।७६।३ "मुञ्चामि त्वा हविषा ज्ञातयक्ष्मादुत राज यक्ष्मात्" अ० मंत्रों से विशेष द्रव्यों के अग्नि क्षेप से नाश माना है।

क्षेत्रिय रोग वर्णनम्

जायान्य के अनन्तर क्षेत्रिय रो स्वरूप उपस्थित किया जाता है। अथर्ववेद के तीन सूक्तों २।८, २।१० आया है। इसका अर्थ है कुल पर पाणिनि मुनि ने एक सूत्र "क्षेत्रियच् पर

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ज्वरेषु मन्त्र प्रमाणानि

(क) मुञ्च शीर्षक्त्या उतकासएनं परुष्परुराविवेशा योअस्य। यो अभ्रजा वातजायश्च शुष्मो वनस्पतीन्सचतां पर्वतांश्च॥ अ० १।१०।३।

(ख) अङ्ग भेदं अङ्ग ज्वरं विश्वाङ्ग्यं विसल्पकं। सर्वं शीर्षण्यं रोगं बहिर्निमंत्रयामहे॥ अ० ९।८५॥

(ग) यत त्वं शातोथोरूरः सह कास वेपयः। भीमासोतक्मन् हेतयस्ताभिः स्मपरिवृङ्ग्धनः। अ० ५।२२।१०॥

(घ) तृतीयकं वितृतीयं सदंदिमुत शारदं। तक्मानं शीतंरूरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम्।

अ० ५।२२।१३।

(ङ) यस्यमीमः प्रतकाश उद्वेपयति पूरुषम्। तक्मानं विश्वशारदं बहिर्निमंत्रयामहे। अ० ९।८।६॥

(च) यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तुतक्मने॥ अ० १।२५।४॥

(छ) तस्मै तेऽरुणाय वभ्रवेनमः कृणोति वन्याय तक्मने॥ अ० ६।२०।३।

(ज) नमो रूराय श्यवनाय नोदनाय धृष्णवे। अ० ७।११६।१।

(झ) शीर्षलोकं तृतीयकं सदन्दिर्यश्चहायनः। तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं पराणुद।

अ० १९।३९।१०।

(ञ) यः परुषः परुषेयोऽवध्वंस इवारुणः। तक्मानं विश्वधावीर्यं...अ० ५।२२।३।

टिप्पणिः—मूजवान् हिमालयान्तर्गत पर्वत विशेष है। यह पर्वत भारत वर्ष से पश्चिमोत्तर की ओर है उस स्थान के निवासियों को मूजवन्त कहते हैं ऋग्वेद १०।३४।१॥ में सोम लता को "सोमस्येव मौजवतस्य भक्षः" मूजवान् पर्वत पर उत्पन्न होने वाली लिखा है। सोमज्वर की ओषधि है यह ऊपर लिखा गया है। जहां जो रोग अधिकता में फैलता है प्रकृति ने उसकी औषध भी साथ ही उत्पन्न कर दी है। "मूजवान् पर्वतो मुञ्जवान्" निरुक्त ९।८। मूजवान् का वर्णन तैत्तिरीय संहिता १।८।६।२, कारुक संहिता ९७। मैत्रायणी संहिता १४।१०।२०, शतपथ ब्राह्मण २६।२।१७ में भी आता है। महावृष वे लोग हैं जो महावृष जनपदमें रहते हैं। यह जनपद उत्तर भारत में था। छान्दोग्यपनिषद् ४।२।५ में रैक्वपर्ण देश का वर्णन आता है जो महवृषान्तर्गत था। जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण ३।४०।२ में हस्त्यश्व को महावृष का राजा लिखा है। महावृष का अर्थ है जिसमें वर्षायें अधिक हों।

गान्धारि—यह गान्धार प्रदेश, भारत के पश्चिमोत्तर मे हैं। वहां के निवासी गान्धारि कहाते हैं। सामयिक कन्धार ही प्राचीन गान्धार है यह जनपद सिन्धु नदी के पश्चिम और कुभा (काबुल) नदी के दक्षिण में विद्यमान् है।

वल्हिक—यह नाम वल्हीक देशवासियों के लिये आया है। आज कल इसका नाम 'बलख' है। (बलख और बुखारा प्रसिद्ध देश हैं।

अङ्ग—भारत के दक्षिण पूर्व प्रदेश के वासियों के लिये प्रयुक्त हुआ है अङ्ग देश का वर्णन गोपथ ब्राह्मण २९ में आता है। महाभाष्य में अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्गादि देशों का स्थान २ पर वर्णन आता है। आज कल के भागलपुर के पास की भूमि ही प्राचीन अङ्ग देश है।

मगध—मगध देश वासियों के लिये आया है। सामयिक दक्षिण बिहार का प्रदेश ही पूर्वकालीन मगध है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ी कृष्ण का तिरोहित रूप

[श्री धर्मदेव विद्यावाचस्पति]

कौन ऐसा हिन्दू परिवार होगा जो राम और के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने में अनुभव न करता हो। हिन्दू जाति का इतिहास र्यक्तियों की विभूतियों से उज्वल तथा उच्च ई देता है। हिंदू धर्म, सभ्यता व संस्कृति सभी कुछ राम और कृष्ण के जीवन के अंश अतएव यदि इन्हें हिन्दूधर्म, सभ्यता संस्कृति के पा अथवा अवतार कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं। जीवन का अनुरूप अनुकरण करना हिंदूधर्म त्त वा पवित्र धर्म का स्वतः पालन करना इन आदर्श जीवनों के प्रति मुग्ध हुई हिन्दू ने इन में अलौकिक शक्ति अनुभव करते हुए मानुष्योत्तर पदवी देने अथवा साक्षात् परम प्रभु त्मा का मूर्तरूप-अवतार-मानने में आत्म तृप्ति नव की। इनका जीवन जितनी गम्भीरता से ध्यन किया जावे, उतना ही आत्मा को उन्नत सात्विक बल देने वाला है। परन्तु दुःख की तो यह है कि भक्ति के आवेश में अभिभूत हुई जाति ने इन महापुरुषों को इतना ऊंचा उठा ा,, अपने से इतना दूर कर दिया कि उनके ष्ट एवं धुंधले प्रकाश की एक-आध किरण ही ताक पहुंच सकती है। उनका विराट् रूप सर्वथा ल होता जाता है। उनका नाम तो हमें स्मरण परन्तु एक मृत-आत्मा के समान काल प्रभाव से उनका रूप रंग आदि-वास्तविक स्वरूप- था भूल गए हैं। आंखें मूंद कर उनके नाम जाप करते २ हमारी जिह्वा नहीं थकती, कई व रात गुज़र जायं तो सुध नहीं पड़ती, परन्तु खोल कर विवेक दृष्टि से उन पर दृष्टपात ने का कभी मन में विचार ही उदित नहीं होता। कृष्ण. भगवान् की वेणु की मधुर तान ने ऐसी नी निद्रा सी उत्पन्न कर दी है कि उसकी ए ध्वनि हमारे कर्ण कुहरों में एक सुखद शान्त भूति बनाये रखती है, परन्तु निद्रावश हमारी उस वेणु के मधुर संगीत के अभिप्राय को नहीं झ पाती। रामलीला, गोपियों की रंगरेलियां कुत्सित शृंगार प्रधान खेल तमाशे कर के हम त्मतृप्ति कर लेते हैं। परन्तु उनके पवित्र उपदेश —गीता का—रसपान हमारे गले से नीचे उतरने कष्ट दायक होता है। नीम के रस के समान यन्त कटु एवं अनभीष्ट प्रतीत होता है।

रामायण तथा महाभारत भारतवर्ष के काव्य रामायण का घर २ में जितना प्रचार है उतना ाभारत का नहीं। महाभारत का स्थान मध्य- लीन कुछ वैष्णव भक्तों के ग्रन्थों तथा कविताओं प्राप्त कर लिया है उनके शृंगारमय साकार भक्ति- ने हमारी जाति में एक अनभिलषित, असुख- तथा प्रतिकूल असर पैदा किया है। श्रीकृष्ण वान् का पूर्ण सत्य चरित्र हमें महाभारत द्वारा बाल-गोपाल का चरित्र सर्वथा निराधार नहीं परंतु पुराणकारों के समय पार्थिव-साम्राज्य कोई महत्व की वस्तु नहीं था। वे श्रीकृष्ण का महत्व उनकी मानवेतर कृतियों के अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन में ही समझते थे। इसलिए अनिश्चित जनश्रुतियों द्वारा उन्हें जो श्रीकृष्ण महाराज का चरित्र ज्ञात हुआ उसे अपनी कल्पना के आलोक में उद्भासित करके जनता की मुग्ध श्रद्धा का पात्र बनाया। उनकी कविता या कल्पना में श्रीकृष्ण महाराज की बाल लीला ही एकमात्र विषय रहा है। एक प्रतिभा सम्पन्न कर्मपरायण महापुरुष के शैशव का चञ्चलतामय तथा आश्चर्योत्पादक, बुद्धिमत्तापूर्ण कृत्यों से सम्पन्न होना सर्वथा स्वाभाविक है। परन्तु उन के जीवन का प्रधान भाग वही है, काव्य का आदरणीय विषय वही है, जाति के उत्थान का प्रबल प्रेरक बीज वही है, ऐसा समझना ही मूर्खता है। महाकवि बाल्मीकि ने श्री रामचन्द्रजी के बाल्यकाल का अत्यन्त सुन्दर चित्र चित्रण किया है। परन्तु उन्होंने उसे ही अपने काव्य का एकमात्र प्रतिपाद्य विषय नहीं बनाया। रामायण में मुख्य विवेचन श्रीरामचन्द्र जी के प्रबुद्ध अवस्था यौवन काल के साहसपूर्ण धर्ममय सौजन्य युक्त नीति तथा बीरता का विवेचन है। उनका पिता की आज्ञा पालन करते हुए १४ वर्ष बनवास करना, राक्षस का बध, आर्यसाम्राज्य को बढ़ाना, भ्रातृभाव को दृढ़ तथा पवित्र रखना ही उनकी महत्ता के दिग्दर्शक हैं। इस के अतिरिक्त पुराणों में श्रीकृष्ण महाराज को मानवेतर व्यक्ति सिद्ध करने के लिए कोरी कल्पना पर आश्रित कुछ घटनाओं को विशाल रूप दिया गया है। रासलीला-गोपियों में रमण, अनेक पत्नी-विवाह आदि द्वारा उनके पवित्र जीवन को कलंकित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी गई। श्रीकृष्ण में सर्वव्यापक प्रभुत्व का आश्रय लेकर परस्त्रीगमन में भी कोई दोष नहीं देखा गया। इसप्रकार के चरित्र-चित्रण से हम ने अपने महापुरुष को उच्च सतह से नीचे धकेलने का कुत्सितरुचि पूर्ण कार्य किया है, इससे हमने आत्मविनाश की चिता का ही चयन किया है तथा संसार की दृष्टि में अपने पूज्य महापुरुष के चरित्र को कालिख से पोतने का अक्षय अपराध किया है। अपने पूर्वजों को, जिनके कारण हमारी सभ्यता, व संस्कृति संसार में एक महत्वपूर्ण गौरवमय स्थान रखती है इस प्रकार अपमानित करना हमारी अधोगति का प्रधान कारण है। मध्यकाल में यदि तुलसीदास जी की तरह श्रीकृष्ण के उपासक भी अपने उपास्यदेव के विमल उच्च गौरवमय जीवन का सच्चा चित्रण करते तो तो आज हिन्दू जाति इस दयनीय पराश्रित अवस्था में कष्ट न झेल रही होती।

तुलसीकृत रामायण का बिहार आदि प्रान्तों में जहां प्रचार हुआ है उसने वहां के निवासियों में धार्मिकता पूर्ण वीररस का संचार किया है। परंतु श्रीकृष्ण के उपासकों की व्रजभूमि आज भी शृंगार-

महाराज, जिन्होंने अपने कर्मशील जीवनमें पाण्डवों द्वारा भारत में संयुक्त-साम्राज्य स्थापित करने का एक महान् कार्य पूर्ण किया, जिनकी नीति कुशलता बुद्धिमत्ता तथा धर्मपरायणता के भीष्मपितामह तथा विदुर जैसे महापुरुष भी कायल थे, जिन्होंने संसार की विषम समस्याओं को अपने जीवन में बड़ी खूबी से सुलझा कर दिखाया, जिन्होंने राजनीति के उचित समन्वय द्वारा संसार में भारतीय सभ्यता का एक उज्वल नमूना उपस्थित किया है जिन्होंने पाप से जीर्ण शीर्ण विशृंखल भारतीय समाज में क्रान्ति पैदा कर के उसे फिर भारतीय सभ्यता के स्तम्भों पर विशाल सुन्दर महल के रूप में खड़ा किया है, उन्हें अपनी कुरुचियों का शिकार बनाना कृतघ्नता से किसी दर्जे में कम नहीं। उनकी गीता की उच्च फिलासफ़ी भारत के लिए इस पराधीनता के कृष्ण काल-रात्रि में भी अनुपम अक्षुण्ण ज्योति का स्थान रखती है। विषयों से विरक्त रहते हुए सांसारिक प्रभुत्व को प्राप्त करके उस का उपयोग करना उनके जीवन का सारांश है और इस विचित्र समन्वय का, भारतीय सभ्यता के मूल आधार का, विवेचन गीता द्वारा हमें प्राप्त होता है यही उनकी वीणा की मधुर तान है। नीरस ज्ञान मार्ग या शुष्क तपस्यामय एकान्तवास की तुलना में उनका मधुर संगीत है, जिसपर सम्पूर्ण दुनियां मुग्ध है। इसी से सुदर्शन चक्र तथा बीणा का सहवास अपने उज्वल रूप में दिखाई देता है। उनके जीवन का एक २ क्षण एक २ कार्य विभूतिपूर्ण है। सम्भवतः इसी हेतु हिन्दू धर्म में वह षोडश कला पूर्ण अवतार माने गए हैं; जब कि अन्य अवतारों में ४, ६, ८ आदि परिमित कलाओं का आविर्भाव ही स्वीकार किया गया है। परन्तु हमारी इसी मानवेतर अलौकिक लीलाओं पर मुग्ध श्रद्धा ने उन्हें निष्क्रिय पूजा का पात्र तो बना लिया है। परन्तु उनके जीवन का रस अपनी नसों में भरने के सर्वथा अयोग्य प्रमाणित किया है। इसी दृष्टि को बदलने की आवश्यकता है। महाभारत काल के समान इस समय हमें श्रीकृष्ण की अत्यधिक आवश्यकता है उनके जीवन के तथा विचारों के गम्भीर अध्ययन से हम अपना उद्धार कर सकते हैं और भारतीय सभ्यता के दृढ़ स्तम्भों की नींव पर अपने राष्ट्र को पुनः खड़ा कर सकते हैं।

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक उन्नति

श्री पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य अमृतधारा कृत नवीन उर्दूपुस्तक अभी-अभी प्रकाशित हुई है जिसमें हर प्रकार के व्यायाम तथा आसनों द्वारा शरीर को बल बढ़ाने की विधि बड़ी उत्तमरीति से पेश की गई है। मूल्य ॥)।

श्री चमूपति साहित्य विभाग

गुरुदत्त भवन, लाहौर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] कला का इतिहास

[ले० विश्वनाथ शास्त्री एम. ए. पुस्तकालयाध्यक्ष पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर]

पुस्तकों की संग्रह करने की प्रणाली अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है। जब से शिक्षा तथा सभ्यता का विकास हुआ है तब से ही लोग पुस्तकों का संग्रह करते चले आए हैं। लेख-बद्ध सामग्री का विकास शिला लेखों से होता है। चिरकाल तक भोज पत्र, ताड़पत्र, पाइप्रस (Pyprus) और चर्म का प्रयोग होता रहा। कागज का आविष्कार ईसा की द्वितीय शताब्दी में चीन देश में हुआ, और योरुप में तो कहीं ग्यारहवीं शताब्दी में जाकर कागज का प्रयोग होने लगा। पहले पुस्तकें हस्त लिखित ही होती थीं। मुद्रण कला का आविष्कार तो १४४० में हुआ। इस कला के आविष्कर्त्ता का निश्चित रूप से कुछ पता नहीं लग सका। परन्तु अधिकतर यही विश्वास किया जाता है कि जर्मन देश वासी गूटन वर्ग और शीफ़र नाम के दो व्यक्तियों ने इस कला का विस्तार किया। लिपियों के सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप में यही कहा जा सकता है कि मुख्य रूप से लिपियाँ तीन प्रकार की हैं। प्रथम तो वे हैं जो बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती है यथा देवनागरी, रोमन आदि। दूसरी लिपियाँ हैं जो दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती है यथा फारसी। तीसरी वे हैं जो ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाती हैं यथा चीनी, जापानी। भारत में प्रचीन समय में ब्राह्मी लिपि का ही अधिकतर प्रचार था। यह लिपि देवनागरी का प्रारम्भिक रूप है।

पश्चिम में तो रोम साम्राज्य के दिनों पुस्तकालय बड़े सुव्यवस्थित रूप से विद्यमान थे। परन्तु रोम राज्य के पतन के साथ पश्चिम में पुस्तकालय कला का भी ह्रास हो गया। इनके पश्चात् धार्मिक साधुओं के आश्रमों (Monastaries) में ही कहीं-कहीं थोड़े-थोड़े संग्रह रह गए। फिर कहीं १५वीं शताब्दी में जाकर पश्चिम में पुस्तकालय कला का विकास होता है।

इस में कोई संदेह नहीं कि भारत की संस्कृति प्राचीनतम है। वेद की ११२७ शाखाएँ इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि अत्यन्त प्राचीन काल से ही यहाँ वेदों की कितनी टीकाएँ और व्याख्यान उपस्थित थे। बौद्ध और जैन धर्म में तो धनिक लोगों के लिए विधान पाया जाता है कि वे धार्मिक ग्रन्थों की अधिक प्रतियाँ लिखवा कर वितरित करें। चीन के यात्री जब भारत में आए तो वे सैकड़ों पुस्तकें यहां से अपने देश में ले गए थे। उन दिनों भारत का तिब्बत से विशेष सम्बन्ध था। तिब्बत वालों ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और भारतीय पंडितों को अपने यहां निमन्त्रित करने लगे। कई संस्कृत के ग्रन्थ जिनका अब लोप हो चुका है उनके अनुवाद तिब्बती भाषा में मिलते हैं। भारत में नालन्दा, तक्षशिला, पाटलिपुत्र, बनारस, उदन्तपुर, विक्रमशिला और उदन्तपुर के विश्वविद्यालय बड़े प्रसिद्ध हो चुके हैं। इन विश्वविद्यालयों में पुस्तकों के बड़े भारी संग्रह थे। यह बात भली भांति इतिहास से भी सिद्ध हो चुकी है कि यवन आक्रमणकारियों ने यहाँ के बड़े-बड़े पुस्तकालयों को अग्निसात् कर दिया! इसमें सन्देह नहीं कि कुछ काल के अनन्तर जब मुसलमान राजाओं ने भारत का अधिक देश विजय कर लिया तो वे भी यहाँ पुस्तकों का संग्रह करने लगे। फ़िरोज़, तुगलक, हुमायूँ और अकबर विद्या के प्रेमी रहे हैं। बाहमनी वंश का अमात्य मुहम्मद गवन बड़ा विद्या व्यसनी हो चुका है। परन्तु तथ्य तो यह है कि आर्य साम्राज्य के ह्रास के साथ भारतीय संस्कृति और शिक्षा दीक्षा, का भी पतन हो गया था। गुप्त वंश के राज्य व हर्ष वर्धन के राज्य की समाप्ति के साथ भारत में क्या विद्या शूरवीरता और क्या कला कौशल सद् गुणों का ह्रास होता चला गया। नेपाल, काश्मीर, मैसूर, जयपुर, जोधपुर आदि स्थानों पर अबभी पुराने समय के संग्रह पड़े हैं जो उस समय की याद दिलाते हैं।

पुस्तकालय कला के संबन्ध में विचार करते हुए जब हम वर्त्तमान युग में आते हैं तो भारत वर्ष में केवल बड़ोदा राज्य ही केवल ऐसा दृष्टिगोचर होता है जहाँ यह कला पल्लवित हो रही है। १९१० में बड़ोदा के महाराज ने एक अमेरिका वासी विद्वान् श्री बोर्डन महोदय को अपने पुस्तकालय विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया। अब यहां ग्राम-ग्राम और नगर-नगरमें पुस्तकालय स्थापित हो चुके हैं। वहां का केन्द्रीय पुस्तकालय बड़ा विशाल है और भारत में इसका तृतीय स्थान है। इसमें स्त्रियों और बालकों के लिए पृथक्-पृथक् पुस्तकालय और वाचनालय भी हैं ग्रामीण लोगों के लिए चलते-फिरते पुस्तकालय (Travelling Libraries) हैं जो सन्दूकों में भरकर बाहर ग्रामों में भेजते हैं। ग्रामों के पुस्तकालय राज्य की सहायता से ५) अदा करके १००) की लागत की पुस्तकें मंगवा सकते हैं। ग्राम, कस्बा वा नगर के पुस्तकालय यदि १००) वा ३००) वा ७००) की राशि एकत्र कर लें तो इतनी ही राशि उनको राज्य की ओर से और इतनी ही राशि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ओर से मिल जाती है। पुस्तकालय भवन के लिए भी इसी भांति जनता को ⅓ भाग एकत्र करना पड़ता है। शेष राज्य और बोर्ड की ओर से मिल जाता है। राज्य की ओर से "पुस्तकालय" नामक गुजराती में एक पत्र प्रकाशित होता है। बड़ोदा में राज्य की ओर से सर्वत्र सार्वजनीन और निः शुल्क पुस्तकालय हैं। भारत भर में और कहीं भी इस प्रकार के पुस्तकालय नहीं हैं। भारत में अधिकतर विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयोंके साथ पुस्तकालय खुले हुए हैं। भारतमें सब से बड़ा पुस्तकालय भारतसरकार की ओर से कलकत्तामें इम्पीरीयल लाइब्रेरी नाम से प्रसिद्ध है। भारत में सब से बड़ा पुस्तकाध्यक्ष श्री युत रेंगानाथन हैं। वे मद्रास विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष हैं। उन्होंने कोलन नामक पुस्तक वर्गीकरण की प्रणाली का आविष्कार किया है। अखिल भारतीय पुस्तकालय मण्डल की स्थापना १९१९ में हुई थी। १९२९ के पश्चात् यह संस्था समाप्त हो गई। पुनः १९३३ में इस संस्था को कलकत्ता में पुनरुज्जीवित किया गया और अब तक यह सुचारु रूप से कार्य कर रही है। पंजाब में पंजाब विश्वविद्यालय में १९१५ में श्रीयुत डिकनसन नामके एक अमेरीकावासी विद्वान् को निमन्त्रित किया। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को संगठित किया और पुस्तकालय ट्रेनिंग का भी पुरुषार्थ किया जो अब तक जारी है। उन्होंने पंजाब पुस्तकालय सम्मेलन-सा होगया। पुनः १९२९में लाय[illegible] के नाम से यह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। पुस्तकालय मण्डल भली प्रकार से [illegible] और Moderm Librarin नाम की पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। इसी [illegible] मद्रास, यू. पी. आदि प्रान्तों में भी पुस्तक [illegible] स्थापित हैं।

संसारके अन्य सुसभ्य देशों ने पुस्त[illegible] में भरसक उन्नत की है। इस कला में [illegible] प्रथम स्थान है। वहां के एन्ड्रयू कारने[illegible] धनपति ने आन्दोलन के लिए क्रोड़ों रुपए [illegible] पुस्तकालय कला को शिखा पर पहुँचा दिया [illegible] तथा योरुप के समुन्नत देशों में सर्वत्र [illegible] निःशुल्क पुस्तकालय हैं। इन पुस्तकालयों [illegible] बनने के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं [illegible] और कहीं किसी प्रकार की अमानत रखने [illegible] कता नहीं होती है। स्थानिक म्यूनिसपल कमे[illegible] और प्रकाश के पबन्ध की भांति पुस्तकालय [illegible] लन भी करती हैं। उन देशों में दूसरी विशे[illegible] कि वहां पुस्तकालयों में पारस्परिक लेन[illegible] प्रणाली है। इस प्रणाली से देश के समस्त [illegible] एक-दूसरे से सम्बद्ध रहते हैं। उदाहरण के [illegible] लैंड को ९ प्रान्तों में विभक्त कर दिया गया [illegible] प्रान्त में एक प्रान्त-कार्यालय (Region[illegible] eau) होता है। इस कार्यालय में उस प्रान्त [illegible] पुस्तकालयों का उपन्यास-भिन्न पुस्तकों का [illegible] होता है। यदि किसी पाठक को कोई पुस्त[illegible] स्थानिक पुस्तकालय से प्राप्त न हो सके तो [illegible] कालय उसका प्रार्थनापत्र भेज देता है। और [illegible] पुस्तक कार्यालय की सूची में न मिले तो [illegible] कर्मचारी उस प्रार्थना पत्र को केन्द्रीय पुस्त[illegible] (National Central Library) में [illegible] है। केन्द्रीय पुस्तकालय अपने यहां से या किसी [illegible] प्रान्त-कार्यालय के द्वारा या विशेष अवस्था [illegible] विदेशों से भी पुस्तक मंगवा कर देने का प्रब[illegible] देता है।

युद्ध से पूर्व फ्रांस का राज्य पुस्तकालय ([illegible] onal Library) संसार में सब से बड़ा था [illegible] स्थान ब्रिटिश म्यूज़ीयम लायब्रेरी को प्राप्त [illegible] अमेरीका के पुस्तकालयों के भवन और उपकर[illegible] सुन्दर है। जर्मनी का केन्द्रीय पुस्तकालय बड़ा [illegible] वस्थित है। रूस के पुस्तकालय भी बड़े म[illegible] इसी प्रकार इटली, स्पेन, पुर्तगाल, हालैंड, डे[illegible] आदि देशों में भी पुस्तकालय प्रचुर संख्या में [illegible] हैं। इधर एशिया में भी चीन और जापान में-[illegible] से पुस्तकालय चले आ रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(पृष्ठ ४ का शेष)

'लिख कर क्षेत्रिय पद को निपातन द्वारा किया है। पर क्षेत्र से तात्पर्य्य पुत्र पौत्रादि है शरीर में जिस की चिकित्सा होती है वह रोग है।

उत्पत्तिः—अथर्व ३।७६ के 'यदासुतेः क्रिय याः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे" मंत्र पाठ स्पष्ट है कि "सुतिः" आसव, सुरा अथवा किसी प्रति विशेष के स्वरस निकालते समय इस रोग आक्रमण होता है। उस रस की गन्ध से वा औषधि पर आये क्रिमि विशेषों के दंश से इस उत्पत्ति प्रतीत है।

इसका प्रभाव—

इस रोग का प्रभाव सब अंगों पर होता है= ते सर्वं क्षेत्रियमङ्गेभ्यो नाशयामसि" अ० ३।७।३॥

इस रोग में सूची तोद लिखा है=न क्षेत्रियं णाया विसूचीनभनी नशत्" अ० ३७१॥

हृदय पर इसका विशेष प्रभाव होता है="गुष्पितं य क्षेत्रियं हृदि" अ० ३।७।२॥

शरीर के ऊर्ध्व और अधोभाग पर इस का कोप लिखा है=विक्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमंपा-तमाम्" अ० २।८।१॥

चिकित्सा

अथर्व वेद में क्षेत्रिय रोग की चिकित्सार्थ एक य नाशनी बीरुत् का निर्देश किया गया है क्षेत्रिय नाशन्यपक्षेत्रियमुच्छतु" अ० २।८।२ बीरुत क्या है इसका इस समय तक पता नहीं , बभ्रुः, अर्जुन काण्ड, यवतुष तिल पञ्जाको य नाशक लिखा है "बभ्रोरर्जुन काण्डस्य यव-ते पलाल्या तिलस्य तिल पिञ्ज्या॥ अ० ३ बभ्रुः सोमलता (सोमो वै बभ्रुः श. ब्रा. ४॥२६ अर्जुन वृक्ष का छिलका, यवतुष तथा पिञ्जी (वन्यतिल अथवा श्वेत तिलक वृक्षे) शृंग को भी क्षेत्रिय रोग की औषध लिखा हरिणस्य रघुष्यदोऽधिशीर्षणि भेषजम्। स यं विषाणया विसूचीनमनीशत्॥ अ० ३।७१॥ क सूत्र २७२९ में इस रोगी को शृंग पिलाना बांधना लिखा है।

आपामार्ग भी क्षेत्रिय नाशक है="अपामार्गेऽप र्दु क्षेत्रियम्" अ० ४।१८।७॥

जल चिकित्सा से भी क्षेत्रिय रोग नष्ट होता है। पो विश्वस्यभेषजीस्त्ता त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात्॥ ३।७५।

विचृति नामक दो तारों को क्षेत्रिय रोग नाशक है=उदगातां भगवती विचृतौनाम तारके। त्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम्॥ अ० २८२ इन मूला नक्षत्र (नामी) दो तारों से यह रोग नष्ट किया जाता था यह ज्योतिः शास्त्र विद् क जान सकेंगे। कौशिक आचार्य ने "उदगाता प्लावयति बहिः" मूला नक्षत्र के सम्मुख को स्नान कराना है= विचृतौ नक्षत्रम्" तैत्ति-संहिता ४।४।१०।२ से स्पष्ट है कि यह नक्षत्र तैत्तिरीयारण्यक २।६।१ में लिखा है "अमी ये दिवि विचृतौ नाम तारके। प्रेहामृतस्य यच्छतां चद्धकमोचकौ।

आर्य समाज संसार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन

आर्य प्रतीनिधी सभा पंजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन १७, १८ ज्येष्ठ २००० तद-नुसार २९, ३० मई १९४३ शनिवार तथा रविवार को गुरुदत्त भवन, लाहौर में होगा। कार्यवाही शनिवार प्रातःकाल १० बजे आरम्भ होगी। कृपया अधिवेशन में पधार कर कृतार्थ करें। २९ मई को प्रातः १० बजे तक लाहौर पहुँच जाना चाहिये। अधिवेशन में निम्न विषय उपस्थित होगे—

१—गत अधिवेशन की कार्यवाही सम्पुष्ट करना। २—प्रतिनिधी सभासदों के प्रश्न तथा उनके उत्तर। ३—सं० १९९९ की रिपोर्ट सुन कर स्वीकार करना। ४—वेद-प्रचार की उन्नति तथा आयसमाजों की अवस्था सुधारने के उपायों पर विचार करना। ५—सं० २००० के लिये अधि-कारियों और अन्तरङ्ग सभा तथा विद्या सभा के सभासदों का चुनाव करना। ६—वेद-प्रचार, उपदेशक विद्यालय, आर्य द्यिार्थी-आश्रम विद्यालय, लेखराम-स्मारक, कन्या-गुरुकुल और काङ्गड़ी गुरुकुलादि संस्थाओं के वजट पास करना। ७—गुरुकुलों में अधिकायु के बालकों के प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र। ८—प्रस्ताव। यह भी निवेदन है कि यदि आप कोई प्रश्न सभा के कार्य या प्रबन्ध के विषय में पूछना चाहें या तद्विषयक कोई प्रस्ताव सभा के सामने रखना चाहें तो १४ मई १९४३ तक सभा के कार्यलय में भेजदें, ताकि इनके उपस्थित करने की आज्ञा ले ली जावे। जिनकी आज्ञा होगी वही प्रश्न या प्रस्ताव उपस्थित हो सकेंगे।

—भीमसेन सभा-मन्त्री।

—आर्य्य पुत्री पाठशाला डेरागाजीखां १९०७ से स्थापित है। इस समय ४८० लड़कियां इस में विद्याध्यन कर रही है। मासिक व्यय ४२५) है। आर्य्य सज्जनों को इस संस्था की सहायता कर पुन्य प्राप्त करना चाहिये।

—आ० स० डेरागाजी खां

—आर्य्य समाज बटाला का चुनाव। प्रधान—म० अमीचन्द जी, उपप्रधान—डा० वजीरचन्द जी, ला० गोरामल, मन्त्री—म० सत्यपाल जी। —मंत्री

आर्य समाज गुरुग्राम छावनी के साधारण सभासद की बैठक में निम्नलिखत पदाधिकारी चुने गए। प्रधान—बा० रोशनलाल जी, उपप्रधान दिवान जगन्नाथ जी। मन्त्री बा० अमरनाथ जी। उपमन्त्री ला० रतीराम। कोषाध्यक्ष ला०मदनलाल जी। पुस्तकाध्यक्ष ला० मूलचन्द गोयल। निरीक्षक पं बभूतिप्रसाद जी। —मन्त्री अमरनाथ अग्रवाल।

—आर्य समाज, क्वेटा। २५।४।४३ की साधा-रण सभा में नया निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ है। प्रधान—श्री म० परमानन्द जी। उपप्रधान म० जमुनादास जी। उपप्रधान म० मंघाराम जी, म० डिंगामल जी। मु० मन्त्री म० मनोहरलाल जी। उपमन्त्री म० सोमप्रकाश जी, म० दीनानाथ जी, म० देवराज जी। कोषाध्यक्ष म० बोधराज जी। निरीक्षक म० जगदीशराम जी। पुस्तकाध्यक्ष म० मोहनलाल जी। भवन अध्यक्ष म० गुरुमुखदास जी इंजीनियर म० प्यारालाल जी। भंडारी म० केवल

—मन्त्री।

—आ० स० बन्नू का चुनाव। प्रधान—डा० लोकनाथ जी, उपप्रधान मु० उजागरमल जी, मन्त्री म० नैनसुख जी, कोषाध्यक्ष म० हरदयाल जी, पुस्तकाध्यक्ष म० जीतराम जी। —मन्त्री।

गुरुकुल समाचार

—गुरुकुल कमालिया। श्री महात्मा टेकचन्द जी की प्रेरणा से यह गुरुकुल १ वैशाख से निःशुल्क कर दिया गया है। इस वर्ष ३८ नये ब्रह्मचारी गुरु-कुल में प्रविष्ट किये गये हैं। नवम श्रेणी का प्रवेश अभी जारी है। ५) प्रवेश शुल्क तथा १२) मासिक लिया जाता है। पुस्तकें तथा कपड़े संरक्षक को देने होंगे। २ अप्रैल ४३ को श्री ला० शालिग्राम जी हैड मास्टर एम० बी० हाई स्कूल गोजरा, ला० साहिब दित्ता मल जी प्रधान आ० स० गोजरा तथा सेठ शान्तिलाल जी विज मालिक कारखाना गोजरा, ला० सोमनाथ जी गोजरा, ला० रामभेजा जी भी पधारे। गुरुकुल के प्रबन्ध तथा ब्रह्मचारियों को देख कर बहुत प्रसन्न हुए। —प्रबन्धक।

—आचार्य श्री सत्यभूषण बी० ए० वानप्रस्थी गुरुकुल कमालिया, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और कुरुक्षेत्र के कार्यक्रम और प्रबन्धादि देखने के लिये कमालिया से रवाना हो गये हैं। उपरोक्त गुरुकुलों के अधिकारी महोदयों से प्रार्थना है कि आचार्य जी को गुरुकुल सम्बन्धी सब प्रकार की सूचनायें देकर कृतार्थ करें।

—प्रधान।

—महा विद्यालय श्री गुरुकुल धाम जेहलम का १०वां वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ उत्सव में श्री हरिराम जी वानप्रस्थी, श्रीमान् ला० चिरञ्जीवलाल जी वानप्रस्थी, श्रीमान् कुँवर सुख लाल जी 'आर्य मुसाफिर' प्रोफेसर सेवाराम जी गाय-नाचार्य श्री स्वामी आनन्द मुनि जी तीर्थ, प० देशराज जी व प० आत्मदेव जी भजनोपदेशक सभा, म० चुनीलाल जी, म० हंसराज जी आदि पधारे। तथा अपने प्रभावशाली व्याख्यान भजनों से जनता को विशेष लाभान्वित किया। हाज़िरी प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में और वैशाखी के दिन बहुत बड़ी भीड़ थी ब्रह्मचारियों के शारीरिक व्यायाम अधिक आकर्षक और प्रशंसनीय थे। १३ नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश हुआ। ११हज़ार रुपया संग्रहीत हुआ।—मुख्याधिष्ठाता

—कविराज श्री कुन्दनलाल जी प्रधान आर्य्य मुरीदके को आयुर्वेद महामण्डल प्रदर्शनी विभाग की ओर से स्वर्ण पदक व प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी का सफल वार्षिकोत्सव

सम्मेलनों की धूम, अपार भीड़, रुपयों की वर्षा

उत्तम प्रबन्ध

गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी का ४१वां वार्षिकोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में २३ अप्रेल से २६ अप्रेल तक बड़े समारोह के साथ मनाया गया। सभी दृष्टियों से यह वार्षिक महोत्सव अत्यन्त सफल कहा जा सकता है। प्रबन्ध अत्युत्तम था। हरद्वार स्टेशन पर गुरुकुल स्वागत विभाग दल-बल सहित उपस्थित था और यात्रियों को गुरुकुल तक पहुँचाने के लिए तांगों और बैलगाड़ियों का प्रबन्ध किया गया था। गुरुकुल पहुँचने पर श्रद्धानन्द-द्वार पर अभ्यागतों के उतारे की अच्छी व्यवस्था की गई थी। ठहरने के लिए तम्बुओं, छोलदारियों तथा गुरुकुल के पक्के मकानों को उपयोग में लाया जाता था। श्रद्धानन्द-द्वार उपाध्याय-गृहों तक एक पक्की सड़क कुलवासियों ने अपने प्रगाढ़ परिश्रम से उत्सव से सिर्फ़ एक दिन पूर्व ही तैयार की थी जिसके कारण आवागमन में जनता को बड़ा आराम रहा। रात्रि के समय श्रद्धानन्द-द्वार से एक बड़े सर्च-लाइट का प्रकाश इस मार्ग पर प्रक्षिप्त किया जाता था जिसके कारण सड़क जगमगा उठती थी और दृश्य की सुन्दरता द्विगुणित हो उठती थी। बाज़ार में दुकानों को भली भाँति सजाया गया था और रोशनी का पर्याप्त प्रबन्ध था। पट-मण्डपों और तम्बुओं के पास एक बड़ा जल-भण्डार बनाया गया था जिसके जल का जनता ने यथेच्छ उपयोग किया। स्थान स्थान पर वालिंटियर, स्वयं सेवक आर्यवीर गण अपनी २ ड्यूटी पर मुस्तैद थे जो लोगों की हर तरह की हिफ़ाज़त कर रहे थे। पण्डाल सुविशाल और चित्ताकर्षक बनाया गया था। उसे मन्त्रों, सूक्तियों व महापुरुषों की वाणियों से अलंकृत किया गया था। वाणी प्रसार की सुविधा के लिए पण्डाल के चारों ओर ४ ध्वनि-विस्तारक-यन्त्र लगाए गए थे। स्नान के लिए स्नानागार में तथा गङ्गा के घाट पर प्रबन्ध किया गया था। बाज़ार साफ़-सुथरा था, आर्य-भोजन भण्डारों में भोजन की सुव्यवस्था थी। स्वास्थ्य-निरीक्षक गण घी की शुद्धता और खाद्य सामग्री की ताज़गी पर विशेष ध्यान रखते थे। प्रबन्ध की दृष्टि से इस बर्ष के उत्सव पर कोई शिकायत नहीं सुनी गई।

युद्ध की असाधारण परिस्थिति के कारण उत्सव-प्रबन्धकों को प्रारम्भ में यह भय था कि युद्ध की इस विषम स्थिति में शायद जनता कम आए। यात्रा से कष्ट और भोजन व अन्न की दुर्लभता इस भय को बढ़ाने वाली बातें थीं; किंतु सब लोग यह देख कर चकित हुए कि इस वर्ष उत्सव में उपस्थित अन्य वर्षों से कहीं अधिक रही। पहले दिन से अन्तिम दिन तक विशाल-पण्डाल उमड़ती हुई भीड़ से खचा-खच भरा रहा और कितने लोगों को पण्डाल से बाहर रह कर ही भजन और उपदेश सुनने पड़े। अनुमान है कि इस वर्ष समीपस्थ इलाकों और बाहर से आए हुए कम से कम दो लाख की जनता ने गुरुकुल के दर्शन किए और समस्त प्रोग्राम का भर पूरा लाभ उठाया। आर्य देवियों की संख्या बहुत अधिक थी। आर्य समाज के तो प्रायः सभी नेता, विद्वान् और सन्यासी गण उपस्थित थे।

चित्ताकर्षक-कार्यक्रम

कार्य-क्रम की दृष्टि से भी इस वर्ष का उत्सव अत्यन्त महत्व पूर्ण और दिलचस्प रहा। प्रतिदिन प्रातःकाल श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार द्वारा अन्तरात्मा को परितृप्त करने वाला प्रभु का संकीर्तन होता था जिसमें हज़ारों नर-नारी सम्मिलित कण्ठ से सर्वशक्तिमान् की महिमा का गुणगान साथ २ करते थे। सरस्वती-सम्मेलन, वेद-सम्मेलन, वाद-विवाद सम्मेलन, संगीत-सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन आदि से उत्सव की शोभा बहुत बढ़ गई। सरस्वती-सम्मेन में श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार ने 'यज्ञेषु पश्वलाम्भः, विषय पर सार-गर्भित निबन्ध पढ़ा। इस सम्मेलन के सभापति पद को हिन्दू विश्वविद्यालय काशी के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्रयुत चिन्न स्वामी जी ने अलंकृत किया था। अपने सभापति के भाषण में श्री स्वामी जी ने प्रसङ्गानुसार अन्य शिक्षा-पद्धतियों को निकृष्ट बताते हुए गुरुकुल-प्रणाली को सर्वोत्कृष्ट बताया। वाद-विवाद सम्मेलन के सभापति श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक बने और उन्होंने अपने प्राचीन भारतीय इतिहास में से प्रजातन्त्र की वास्तविक रूपरेखा को अंकित करके दिखलाया। संगीत सम्मेलन के सभापति सुप्रसिद्ध गायनाचार्य श्री पं० विनयचन्द जी हुए और उन्होंने अपनी मधुर स्वर-लहरी से जनता को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। उत्सव के प्रथम तीन दिन रात्रि के समय श्री रामनरायण जी बर्मानी के सभापतित्व में व्यायाम सम्मेलन होता रहा जिसमें छोटे ब्रह्मचारियों, इन्द्रप्रस्थ तथा महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने स्तूप-निर्माण, लाठी लेजम, छुरा आदि के आश्चर्य-जनक खेल प्रदर्शित किए साथ ही दाँतों से भरी बैलगाड़ी को खींचना लोहे की मोटी शलाका को मोड़ना, पैरललवार, रिंग आदि के भी अद्भुत खेल प्रदर्शित किए। जनता ने प्रसन्न होकर ब्रह्मचारियों को पदकों और पारितोषिकों से पुरस्कृत किया।

दीक्षान्त-भाषण

२५ अप्रैल को दीक्षान्त-संस्कार की विधि सम्पन्न की गई। डा० श्यामा प्रसाद बंगाल में गम्भीर राजनैतिक-परिस्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण स्वयं उपस्थित न हो सके और दीक्षान्त-भाषण उनके प्राइवेट-सेक्रेटरी श्री प्रो० हरिचरण घोष ने पढ़कर सुनाया। इस वर्ष नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारियों की संख्या ७५ थी।

एक लाख छः हजार का दान

श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार की अपील पर जनता ने दिल खोल कर धनराशि का दान किया। इस वर्ष का दान एक लाख ६ रहा। इसके अतिरिक्त ६० हजार रु वायदे हुए इतनी बड़ी राशिका दान में आर्य जनता के हृदय में गुरुकुल-प्रणा सच्चे और उदार प्रेमका ही परिचायक

विद्वानों का जमघट

इस उत्सव पर उपरिनिर्दिष्ट मह अतिरिक्त प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, पं देहलवी, स्वामी व्रतानन्द जी, पं० लो स्वामी अभेदानन्द जी, प्रो० सुखदेव जी चन्द जी, पं० प्रियव्रत जी, पं० यशः श्यामस्वरूप जी, सत्यव्रत, ला० लज नैयड़ प्रभृति प्रसिद्ध आर्यनेता उपस्थित हु आर्य समाज की वर्तमान विषम परिस्थि समय २ विचार प्रकट किए।

उत्सव की सफलता

इस वर्ष गुरुकुल का उत्सव सभी सफल और महत्वपूर्ण रहा। जनता नवीन भक्त भवनों, श्री विरला जी द्वा वेद-मन्दिर तथा गुरुकुल के विविध वि आर्य वातावरण को देखकर मुग्ध थी के उत्सव का विशेषण रूप से उत्साहमय पूर्ण था। उत्सव की सफलता के लि गुरुकुल के अधिकारियों को साधुवाद प वाद दे रही थी और अधिकारी इस स जनता की सदिच्छाओं का परिणाम बत यह दृश्य हृदय को पुलकित करने वाला नीय था।

श्रद्धा सम्मेलन

गंगा पर की प्राचीन गुरुकुल भूमि में रोह के साथ 'श्रद्धा सम्मेलन' मनाया गय धूर प्रचण्ड थी और मार्ग लम्बा, बालू, कण्टकों से परिपूर्ण था तथापि डेढ़ सहस्र नर-नारी इन सभी विघ्न बाधाओं का सा हुए पुण्य भूमि में जा पहुँचे। कुल पताक दन के पश्चात् सब को सम्मिलित हुआ। तदन्तर श्री ला० लब्भूराम जी सभापतित्व में पुस्तकालय भवन में एक गई जिसमें श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाच बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने पुण्य श्लोक श्रद्धानन्द जी महाराज के पौरुष निर्भीकत आदि गुणावलियों का घटनाओं के साथ किया जिसे श्रवण कर श्रोताओं की आंख छलक आए। वक्ताओं ने गुरुकुल की में किसी विषय के शीघ्र खोलने पर बल जनता का उचित आश्वासन प्राप्त किए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्र

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक २५
वार्षिक मूल्य ४)
३ ज्येष्ठ, २००० विक्रमी
१६ मई १९४३ ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Saharupur)

अध्यात्म सुधा

[२३]

ओ३म् जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो नि दहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नेव सिंधुं दुरितान्यग्निः । ऋ० अ० १ । १७ ॥

भावार्थ—यथा कर्णधाराः कठिनमहासमुद्रेषु नौकाभिर्मनुष्यान् सुखेन पारं नयन्ति तथैव स्तितो जगदीश्वरो दुःखरूपे महासमुद्रे स्थि-मनुष्यान् विज्ञानादिदानेनतारं नयति पर-रोपासक एव मनुष्यः शत्रुपराभवं कृत्वा पर-न्दं प्राप्तुं शक्नोति किं सामर्थ्यमन्यस्य ।

जिस प्रकार मल्लाह समुद्रों में नौकाओं द्वारा यों को पार उतारते हैं उसी प्रकार परमेश्वर की सना करने वाला मनुष्य विज्ञानादि साधनों से ओं का पराभव करके, परमानन्द को प्राप्त होता परमेश्वर की उपासना के बिना मनुष्य को और शान्ति नहीं मिलती ।

ऋग्वेद के प्रथम मंडल के ९९ सूक्त में यही एक है । संस्कार विधि में निर्दिष्ट संध्या पद्धति नासा परिक्रमा मन्त्र के पश्चात उपस्थान मन्त्र के इस मन्त्र का भी उल्लेख किया है । इस मन्त्र शब्दार्थ इस प्रकार है । हम लोग जातवेद से त्मा के लिये सुनवाम) नमस्कार करे । वह ग्निः) परमात्मा (सोममरातीयतो) ऐश्वर्य का ना देने वाले के (वेदः) धन को (निदहाति) नष्ट ता है । (सः) अग्नि परमात्मा दुर्गाणि दुर्गम नों तथा बाधाओं को (अति पर्षद्) नष्ट करता वह परमात्मा संसार समुद्र से, अपने ज्ञान ान दान से मनुष्यों को पार उतारता है ।

परमात्मा की उपासना के बिना मनुष्य, शत्रु जय और सुख प्राप्त नहीं कर सकता । जो य ऐश्वर्य प्राप्त करके उसका सत्कार्यों में प्रयोग दान नहीं करता वह ऐश्वर्य स्वयं नष्ट होजाता परमात्मा द्वारा दिए गये ज्ञान की सहायता ही हम दुःखों तथा बाधाओं को पार कर

साधारण मनुष्य ऐश्वर्य तथा शक्ति प्राप्त करके परमात्मा की उपासना करना छोड़ देते हैं, और समझते हैं कि अब उन्हें किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं । वह उसकी सहायता से ही अपने सारे काम कर लेगा । परन्तु वेद भगवान् मनुष्य मात्र को उपदेश देता है कि ऐश्वर्य और शक्ति प्राप्त करके विनम्र विनयशील बनो । परमात्मा की उपासना करो उसके दिये विज्ञान की सहायता से दुःखों को पार करो। परमात्मा के समीप होने का मुख्य उपाय यह है कि हम परमात्मा के दिये हुए ऐश्वर्य का सदुपयोग करें ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधियों से आवश्यक निवेदन

२९—३० मई को आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब का वार्षिक अधिवेशन होगा । इस में गत वर्ष की आय व्यय के साथ गत वर्ष के कार्य की रिपोर्ट उपस्थित की जायगी । वर्ष के लिये अधिकारियों का निर्वाचन तथा बजट स्वीकार किये जायेंगे । सभा के आधीन शिक्षणालयों तथा आन्दोलनों के कार्यों की रिपोर्ट पेश की जायेगी । प्रतिनिधियों के प्रस्ताव भी पेश होंगे । वर्तमान विषम परिस्थितियों में आर्यसमाज को आगे ले जाने के लिये आवश्यक है कि सब प्रतिनिधि इस अधिवेशन में उपस्थित होकर सहयोग दें और परस्पर विचार विनिमय और परामर्श से आर्यसमाज के आंदोलनों को व्यापक और संगठित बनाने का यत्न करें । साधारण अधिवेशन के साथ सभा के संगठन सम्बन्धी नियमों में परिवर्तन भी अपेक्षित है इसके लिये अधिक से अधिक संख्या में प्रतिनिधियों को उपस्थित होना चाहिए । मैं उम्मीद करता हूं कि प्रतिनिधि गण इसकी ओर विशेष ध्यान देंगे ।

आपका—
भीमसेन
सभा मन्त्री

स्मरणीय वचन

मेरा जहाज स्वयं चलने वाला है । मार्ग मेरे पास न होगा । हो क्यों ? वह भक्ति का विरोधी होगा । जो प्रभु का नचाया नाचता है, उसके लिए आरम्भ क्या ? जो वस्तु जिस समय आपड़े उसमें तन्मय हुआ जाय तो बहुत है ।

× × ×

सब की परीक्षा हो रही है । ईश्वर हमें पूर्णाहुति के योग्य समझें, यही हमारी कामना हो । जिसके हिस्से जो सेवा आवे, वह उसे कर गुज़रे, यही बल है ।

× × ×

सर्वथा और सर्वदा सत्य बोलने का व्रत लो । एक बार निश्चय कर लेने पर वह आसान हो जाता है । केवल सत्य सेवा से अन्य सभी धर्म स्वयं सिद्ध हो जाते हैं ।

—महात्मा गांधी

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

का ३१वां अधिवेशन १७से १९मई हरद्वार में होगा इसके सभापति श्री माखनलाल जी चतुर्वेदी होंगे । हिन्दी प्रेमियों को भारी संख्या में सम्मिलित होना चाहिए ।

—श्री बर्नार्डशा एक जगविख्यात विचारक और लेखक है, हाल ही में जब उन से गति अवरोध को दूर करने के विषय में प्रश्न किया गया तब उन्हों ने कहा कि—मैं अधिक तो कह नहीं सकता । मेरे विचार में गति अवरोध को दूर करने का उपाय यह है कि सम्राट् गांधी जी को रिहा देदें और गांधी जी को गिरफ्तार करके उनके मन्त्रिमण्डल ने जो मानसिक दोष दिखाया है उसके लिए उन से (म० गांधी जी से) क्षमा मांगें ।

आशा है कि बृटिश सरकार विश्व के महान् कलाकार व विचारक के स्पष्ट वचनों का आदर करती हुई बुद्धिमत्ता का परिचय देगी ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

नभोमण्डल का चितेरा

(१६)

धीरा त्वस्य महिना जनूंषि
वि यस्तस्तम्भ रोदसी चिदुर्वी ।
प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहन्नं
द्विता नक्षत्रं पप्रथच्च भूम ॥

७ । ८६ । १ ॥

अर्थ—(अस्य) इस वरुण भगवान् की (महिना) महिमा से (जनूंषि) उत्पन्न पदार्थ (धीरा) स्थिरता वाले बने हैं (यः) जो वरुण कि (उर्वी) विस्तृत (रोदसी) द्युलोक और पृथिवी लोक को (चित्) भी (तस्तम्भ) थामे हुए है (बृहन्नं) महान् और (ऋष्वं) दर्शनीय तथा गतिशील नाकं) सूर्य को (नुनुदे) चलाता है (च) और (भूम) भारी (नक्षत्रं) नक्षत्र मण्डल को (द्विता) [उत्तरीय और दक्षिणीय खगोलार्द्धों के भेद से] दो तरह (पप्रथत्) विस्तारित करता है ।

इस विश्व ब्रह्माण्ड के विभिन्न उत्पन्न होने वाले पदार्थों में जो धीरता, जो स्थिरता है, वह उन्हें वरुण भगवान् की महिमा से प्राप्त हुई है। विश्व के ये भाँति-भाँति के पदार्थ जो कुछ निश्चित समय के लिये काल के प्रभाव में नहीं आते, कुछ समय तक जीर्ण-शीर्ण न होकर अपने-अपने कार्यों को करने का जो इन्हें अवसर मिल जाता है, वह सब वरुण भगवान् की महिमा का ही फल है। अद्भुत रचनाकार भगवान् ने ही अपने कौशल से उनकी रचना इस प्रकार की है कि वे कुछ निश्चित समय तक सर्वसंहारी, सब के भक्षक, सब को जीर्ण और शीर्ण कर डालने वाले काल के वश में नहीं आते। काल का प्रभाव उन्हें जो झट से नष्ट करके अपने-अपने कार्य करने के अयोग्य नहीं बना पाता वह वरुण की—बचाने वाले भगवान् की महिमा से ही हो रहा है। जितने समय तक भगवान् किसी पदार्थ से उसका निर्धारित कार्य कराना चाहते हैं उतने समय तक उसकी धीरता को, उसकी स्थिरता को कोई नष्ट नहीं कर सकता। भगवान् ने काल को भी इस प्रकार बांध रखा है कि वह इन उत्पन्न पदार्थों पर अपना प्रभाव इतना शनैः शनैः डाल पाता है कि भगवान् से निर्धारित समय के अनन्तर ही कोई पदार्थ नष्ट हो पाता है।

संसार के छोटे-मोटे पदार्थों को ही भगवान् ने धीर बना रखा हो, स्थिर कर रखा हो, थाम रखा हो ऐसी बात नहीं है। द्युलोक और पृथिवी लोक के जितने भी पदार्थ हैं उन सबको भगवान् ने ही थाम रखा है। उनकी रचना और सत्ता भगवान् की महिमा पर ही निर्भर करती है। इस सूर्य को ही देखो। यह कितना महान् है। हमारी इस पृथिवी के परिधि और व्यास हज़ारों मील के बोझ हज़ारों शंख मन है। यह पृथिवी कितनी महान् है! यह सूर्य इस पृथिवी से भी बहुत महान् है। प्रत्येक बात में यह सूर्य पृथिवी से लाखों गुणा बड़ा है। इस विशाल सूर्य की रचना करके भगवान् ही उसे चला रहे हैं। मन्त्र में सूर्य का एक विशेषण ऋष्व' आया है। ऋष्व का अर्थ दर्शनीय है। सूर्य का तेज और प्रताप सचमुच दर्शनीय है। उसके तेज और प्रताप की कोई तुलना नहीं कर सकता। प्रातः काल उदय होते हुए उषःकालीन और अस्त होते हुए सन्ध्याकालीन सूर्य की छवि अद्भुत मनोमोहक होती है। समुद्र के किनारे और हिम मण्डित पर्वतमालाओं में इन दोनों कालों के सूर्य की जो छटा होती है उसको शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। अपने अन्य गुणों के कारण भी सूर्य दर्शनीय है। सूर्य के सहारे किस प्रकार नौ-दस ग्रहों और उनके अनेक उपग्रहों तथा उन में के प्राणियों और वनस्पतियों का जीवन चल रहा है, किस प्रकार सूर्य के अभाव में इन सबका संहार हो जाता, जब हम इस बात पर गम्भीर विचार करते हैं तो हमें सूर्य के गुणों की दर्शनीयता का अनुभव होता है। सचमुच सूर्य बड़ा दर्शनीय है, बड़ा सुन्दर है। सूर्य गतिशील भी बड़ा है। सूर्य अपनी धुरी पर कल्पनातीत वेग से चक्कर लगा रहा है। और इससे भी अधिक कल्पनातीत वेग से, अपने परिवार के ग्रह और उपग्रहों को अपने चारों ओर घुमाकर खींचता हुआ, यह सूर्य एक और विशाल सूर्य के चारों ओर दौड़ रहा है। सूर्य का यह महान् दर्शनीय रूप और यह महान् गति वरुण प्रभु ने ही दी है। वरुण भगवान् ही सूर्य को इस असीम वेग से दौड़ा रहे हैं। कोई अन्त है भगवान् वरुण की महिमा का!

और देखिये! विशाल नक्षत्र मण्डल पर ज़रा दृष्टि डालिये। कितना विशाल और मनोमोहक है यह नक्षत्र मण्डल। रात्रि के समय असीम विस्तीर्ण आकाश में फैले असंख्य नक्षत्रों की कोई गिनती नहीं कर सकता। और इस नक्षत्र मण्डल की छवि तो ऐसी निराली और आकर्षक होती है कि एकबार गगन मण्डल में फैली हुई दृष्टि वहां से लौटना नहीं चाहती। हमारी पृथिवी की स्थिति की दृष्टि से सम्पूर्ण आकाश मण्डल उत्तरीय और दक्षिणीय दो गोलार्द्धों में बंट जाता है। पृथिवी की विषुव रेखा से ज्यों ज्यों हम उसके उत्तरीय या दक्षिणीय ध्रुव की ओर बढ़ते जाते हैं त्यों त्यों हमें नभोमण्डल की नक्षत्रमाला के दो निराले दृश्य दृष्टि-गोचर होते हैं। और जब हम पृथिवी के ठीक उत्तरीय और दक्षिणीय ध्रुवों पर जा पहुँचते हैं तब हमें रात्रि के समय एक दूसरे से सर्वथा भिन्न दो नक्षत्र मण्डलों की प्रतीति होती है। नक्षत्र मण्डल को इन दो रूपों में बांट कर हमें कौन दिखाता है? वही वरुण प्रभु की अद्वितीय महिमा। इस अद्भुत देता है? इसे अपने रूप में कौन थामे हुए अद्वितीय महिमाशाली वरुण की महिमा

हे नभोमण्डल के अद्भुत चितेरे, हम तेरे के आगे नतमस्तक होते हैं।

—उत्तरीय आकाश की लड़ाई समाप्त है। ट्यूनिशिया पर मित्र राष्ट्रों का होगया है। आधी उत्तरीय अफ्रीका में का कमाण्डर इनचीफ जनरल वान आर्नि भारतीय डिवीज़न द्वारा बन्दी बना लिया इस विजय से मित्र राष्ट्रों में खुशियां मन हैं।

—चौ० सर छोटूराम ने चमार सभा, एक अधिवेशन में भाषण देते हुए कहा ने भारत का कोई भला नहीं किया। १५० वर्षों अपना स्वार्थ सिद्ध करने में यदि वे भारत के प्रति कुछ भी सद्भावना तो विदेशों में भारतीयों के साथ यह अप व बुरा व्यवहार न होता, जो कि होता होता है। भारत के स्वतन्त्र होने पर ही का कुछ भला हो सकता है।

—वेद प्रचारिणी सभा ज़िला डेरा का चुनाव—

प्रधान, मा. सुन्दरदास जी। उपप्र जेशानन्द जी। मन्त्री, म. गणेशदत्त जी कविराज गोविन्दलाल जी। निरीक्षक, राम जी। भवदीय—गणेशदत्त मन्

—आ. स. जोधपुर का चुनाव। प्रधा सोभराज जी। उपप्रधान, दीवान तुलसी भाई चोमूराम जी। मन्त्री—दिवान कप स. मन्त्री—ला० रामचन्द्र जी। उम हीरानन्द जी। कोषाध्यक्ष, सेठ परमा गणिक, म. रामचन्द जी। पुस्तका योधाराम जी।

आवश्यक सूचना

ग्राहक संख्या जरूर लिखें

सब ग्राहकों को सूचित किया जाता है कार्यालय से पत्र व्यवहार करते हुए अप नम्बर जरूर लिखें। आशा है कि कृपालु ग्र पर ध्यान देंगे। ग्राहक संख्या के ज्ञान से में प्रबन्धकों को कार्य करने में बहुत होती है।

भूल सुधार

'दुख हमने है आप बनाया' शीर्षक ८ वें पद की दूसरी पंक्ति में 'ऐले' के स्था तथा १७ वें पद की चौथी पंक्ति में 'मूल' के 'मूक' पढ़ें। २० वें पद की दूसरी पंक्ति में २५ वें पद की तीसरी पंक्ति में 'के' को २७ वें पद की प्रथम पंक्ति में 'झरते' पढ़ें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार ४ ज्येष्ठ
वि०सं० २०००

यह निराशा क्यों ?

आप किसी भी आर्यपत्र को उठा कर देखिए, आर्यसमाज की दुर्दशा पर दो आंसू बहाए गए होंगे तथा उसके लिए भावी कार्यक्रम बतलाया गया होगा। किसी व्याख्यान को सुनने चले जाइये, संगठन के अभाव पर दुःख प्रगट किया जा रहा होगा। राह चलते किसी से मिलिए, कहेगा 'आर्यसमाज में अब रह ही क्या गया है, गुटबन्दी का जोर है। आर्यसमाजी माता-पिताओं को अपनी सन्तानों के आर्यसमाजी न होने की शिकायत है। यह वातावरण देख कर हृदय में प्रश्न उठता है कि आखिर यह सब क्यों? प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द ने जिस पौधे को बोया व अपने खून से सींचा तथा उनके अनुयायियों ने अपने तनमन का खाद डाल कर पनपाया, आज उसके बारे में लोगों की ऐसी सम्मति क्यों? यह संभव है कि इस प्रकार की सम्मतियां सर्वांश में सत्य न हों, पर इनमें एक वेदना छिपी हुई है, इसे भी स्वीकार करना ही चाहिए। इन सम्मतियों का एक मात्र कारण है आर्य समाज में स्वाध्याय के वातावरण का नितान्त अभाव। मैं हिन्दी संस्कृत प्रचार के सम्बन्ध में जब पंजाब का दौरा कर रहा था, तब मुझे जो कुछ देखने को मिलता था, उससे एक आंख में खुशी और दूसरी आंख में आंसू भर आते थे। खुशी इस लिए कि कितने प्राण हैं महर्षि दयानन्द के वैदिक धर्म के अमृत में, प्राचीन वैदिक संस्कृति की सत्य शिव सुन्दर ज्ञानधारा में कि उसकी एक बूंद से नवयौवन का जोश सब तरफ दिखाई देता है। आंसू इसलिए कि समुद्र में से सिर्फ हम एक बूंद ही ले पाए हैं, मोतियों व रत्नों तक अभी हम नहीं पहुंचे हैं, गोता अभी लगाने नहीं लगाया है। महर्षि ने लिखा था—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, उसका पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' अपने दौरे में मुझे अनेक आर्यसमाजियों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कई जगह तो ऐसा वातावरण पाया कि निराशा हुई। आर्य भाईयों के दिल में इस विचार ने घर कर रखा था कि वेद पढ़ना हमारे बस की चीज़ ही नहीं किसी ने उनसे कहा कि यह तो सब आर्यों का परम धर्म है। यदि आपके बस की चीज़ न होती तो ऐसा नियम ही क्यों बनाया जाता। कई जगह मेरे विचार सुनकर लोगों में उत्साह पैदा हुआ पर उनके पास पढ़ने के साधन नहीं थे।

आर्यसमाजों में पण्डित या उपदेशक पहले वेद मंत्र पढ़ता है, फिर एक एक पद लेकर उसकी व्याख्या प्रारंभ करता है। कितना दयनीय होता है वह वातावरण! ९५ प्रतिशत को तो कुछ समझ ही नहीं आता। समझ आए भी कैसे! वैदिक भाषा का क ख तक तो उन्होंने पढ़ा ही नहीं घर जाकर भूल जाता है, क्योंकि उनका ज्ञान भी न के बराबर होता है।

आर्य समाज के प्रसार के लिए जरूरी है कि संस्कृत व वैदिक भाषा का अधिकाधिक प्रचार किया जाए। प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए संस्कृत का जानना अनिवार्य हो। प्रत्येक आर्य समाजी के लिए यह ज़रूरी हो कि आर्यसमाज का सदस्य बनने के बाद एक वर्ष के भीतर संस्कृत का प्रथम कोर्स समाप्त करले।

कुछ लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होता है कि संस्कृत बहुत सरल भाषा है। मेरा दावा है कि तीन चार महीने तक एक घण्टा नित्य संस्कृत पढ़ने से इतनी योग्यता तो निश्चित हो जाती है कि किसी के व्याख्या किए गए मंत्र व श्लोक को समझा जा सके। सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति और भाषा का ज्ञान दो पृथक् पृथक् बातें हैं। अंग्रेज़ी भाषा का ज्ञान किसी भाई को दो तीन साल में हो सकता है, पर अंग्रेज़ी में दर्शन, विज्ञान, साहित्य आदि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में विलम्ब होता है। इसी प्रकार संस्कृत व वैदिक भाषा का साधारण ज्ञान कुछ महीनों में हो जाता है, बाकी वैदिक ज्ञान स्वाध्याय पर निर्भर करता है। आर्य भाइयों को यह भ्रम अपने मन से एक दम निकाल देना चाहिए कि संस्कृत कोई कठिन भाषा है।

हालत तो यह है कि जवानी में आर्यसमाज के सदस्य बने हुए कई सज्जन बुढ़ापे में भी उर्दू में छपी संध्या व सत्यार्थप्रकाश पढ़ते हुए देह-त्याग करते हैं।

जो कोई भी अपनी संस्कृति व सभ्यता का कहीं प्रसार करना चाहता है, वह वहां अपनी भाषा को पहले फैलाता है। अंग्रेज़ भारत में आए। उन्होंने और कुछ नहीं किया। सिर्फ अपनी भाषा ही फैलाई। आज हज़ारों नौजवान अंगरेज़ियत में रंगे हुए हैं। अंग्रेज़ी भाषा बहुत मुश्किल है। महात्मा गांधी ने पिछले दिनों एक लेख लिखा था जिसका आशय यह था कि 'भारतीय नवयुवक की शक्तियां इस अत्यन्त कठिन अंग्रेज़ी भाषा के पढ़ने में बरबाद हो जाती हैं।' अंग्रेज़ी के मुकाबले में संस्कृत बहुत सरल भाषा है। पर इसे अपनाता कौन है, इसे सनातनियों ने भी उपेक्षा से एक तरफ फेंक रखा था, और आजवही व्यवहार हम भी करते नज़र आरहे हैं।

मैं आर्य भाइयों से प्रार्थना करूंगा कि परीक्षण के तौर पर ही सही, एक बार संस्कृत पढ़ना प्रारम्भ करके तो देखें। इसके लिए ज़रूरी है कि प्रत्येक आर्यसमाज में एक संस्कृत का अच्छा विद्वान् पुरोहित हो।

सिर्फ लेक्चरबाज़ी से काम नहीं चलेगा। आर्यसमाज का खेत तैयार होचुका है, अब इसमें बीज बोने का समय है—अब भी यदि हल चलाया जाएगा तो क्या फल मिलेगा?

गांव गांव में संस्कृत की पाठशालाएं खोली जानी चाहियें। सब तरफ संस्कृत का वातावरण फैला देना चाहिए। फिर देखिये कि विश्व को आर्य बनाने का उद्देश्य आर्यों में पैदा होता है कि नहीं। सिर्फ ऐसे आदमियों की संख्या बढ़ाने का कोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में गुण की पूजा होती है संख्या की नहीं। प्रत्येक आर्यसमाज के सदस्य को चाहिये कि जबतक वह संस्कृत पढ़ना शुरू न करदे, तब तक अपने को आर्यसमाजी न समझे। बाकायदा संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। और वह ज्ञान, यदि विधि पूर्वक प्राप्त किया जाए तो थोड़े समय में संभव है। इस विषय में यदि कोई भाई विचार विनिमय करना चाहे तो जवाबी लिफ़ाफा लिखने पर सहर्ष उत्तर देने का प्रयत्न किया जाएगा। लाहौर में रहने वाले सज्जन आकर आर्य कार्यालय गुरुदत्त भवन में खुशी से बात चीत कर सकते हैं।

अन्त में, आर्यसमाज के अन्य प्रचार के साथ यह ज़रूरी है कि इस समय संस्कृत का प्रचार बढ़ाया जाए तथा प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए संस्कृत का पढ़ना अनिवार्य कर दिया जाए।

—सत्यभूषण 'योगी' वेदालंकार

संस्कृत आत्मा की भाषा है

[डा० राधाकुमुद मुकर्जी का भाषण]

हरिद्वार में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् के अध्यक्षपद से डा० राधाकुमुद मुकर्जी ने कहा—राष्ट्रीय शिक्षा राष्ट्र की आचारिक और भौतिक दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली होनी चाहिए। उसमें भारतीय परम्परा और आदर्श का समावेश आवश्यक है।

आपने ज़ोर दिया कि संस्कृत को राष्ट्रीय शिक्षा का एक आवश्यक विषय बनाया जाना चाहिए। क्योंकि संस्कृत आत्मा की भाषा है, हमारी प्रार्थना की भाषा है। भले ही वह राजभाषा न हो परन्तु उसे उचित स्थान देने से ही हम अपना प्राचीन गौरव पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

साहसी कुमारी का स्वयंवर

पटना में हरप्यारी सक्सेना नामक कुमारी ने अपूर्व साहस का परिचय दिया। कहा जाता है कि हरप्यारी के पिता श्री सनेही लाल जी दहेज की कुप्रथा के कारण अपनी पुत्री का विवाह करने में असमर्थ थे। श्रीयुत लक्ष्मी नारायण नामक एक उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता ने सहानुभूति दर्शा आर्यसमाज मन्दिर में बिना दहेज विवाह इच्छुक नवयुवकों को एकत्र किया। हरप्यारी ने स्त्री सुलभ लज्जा के साथ एक नवयुवक नाथूलाल जी (जो डाकिए का काम करते हैं) के गले में माला डाल दी। बस विवाह वेदी रीति के अनुसार दहेज की कुरीति को ठुकरा कर बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ।

—बनारस के प्रसिद्ध सनातनी नेता पं० विश्वेश्वर शास्त्री द्राविड़ ने, जिन्हों ने शारदा बिल को अधर्म फैलाने वाला बता कर उस के विरोध में प्रमुख भाग लिया था, अभी हाल में विवाह किया है। विवाह के समय आपकी पत्नी की आयु १४ वर्ष से भी कम थी।

—अहमदाबाद में एक ठाकुर ने १८ अप्रैल को अम्बा जी के मन्दिर में एक ११ वर्ष की बालिका को हवन कुंड में जबर्दस्ती होम

अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य स्मृति में श्रद्धा के फूल

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

हे परमात्मन्! देवगण और पितर जिस बुद्धि की उपासना करते हैं उस बुद्धि के द्वारा मुझे मेधावी बनाओ!

बहुत दिनों की बात है, जब कि मेरी आयु लगभग ८, ९ वर्ष की थी, मेरे पूज्य पिता जी ने मेरा यज्ञोपवीत संस्कार लुधियाने से अपनी जन्म भूमि नूरमहल में जाकर करने का निश्चय किया! मैं उस समय की प्रसन्नता को अनुभव करके अब भी प्रफुल्लित होता हूँ जब कि अपने पिता के साथ नूरमहल के लिए लुधियाने से चल पड़ा। यज्ञोपवीत सस्कार के एक दिन पूर्व संस्कार की तैयारियां बहुत उत्साह से होरही थी तब मेरी बड़ी बहनने मुझे अलग ले जाकर कहा कि कल जब तेरे गलेमें यज्ञोपवीत पड़ेगा तब तू यह कहना कि मैं काशी जी पढ़ने जाऊंगा। तब मैं तुझे यह कहकर रोकूंगी कि नहीं भैया, तुम्हें यहीं पर पढ़ाएंगे। और ऐसा कहने पर तूने रुक जाना। मैंने बहिन के कहने को एक साधारण बात जानकर उत्तर दिया कि मैं अवश्य काशी जी जाऊंगा। मेरे इस उत्तर से घर भर में कुछ उदासीनता सी छागई। मुझे इस उदासीनता का उस समय पता लगा जब कि रात्रि को मेरी पूज्या माता ने मुझे अपनी गोद में बिठला कर प्यार से माथे पर हाथ फेरते हुए कहा कि "आज तूने बहिन से यह कहा था कि मैं काशी जाऊंगा?" ऐसा नहीं करना जब बहिन तुम्हें रोके तो रुक जाना। मैंने अपनी पूज्या माता की आज्ञा का कभी उल्लङ्घन नहीं किया था, स्वभावतः मैंने कहा कि अच्छा जी ऐसा ही करूंगा। उसके पश्चात् घर भर में खूब चहल पहल होने लगी। अगले ही दिन यज्ञोपवीत संस्कार था। प्रातः ही पुरोहित जी आगये और वेदी पर विधि पूर्वक संस्कार आरम्भ किया। संस्कार के अन्त में कौपीन बांधें बगल में मृग चर्म हाथ में दण्ड लिए मैं द्वार पर गया तो बहिन जी ने पूछा कहां जावोगे? मैंने उत्तर दिया कि मैं काशी जाऊंगा और विद्याध्ययन करूंगा। उस पर बहिन जी ने कहा नहीं, ऐसा मत करो हम तुम्हें यहीं पर पढ़ाएंगे। मैं पूजा माता की आज्ञा का पालन करते हुए बहिन के साथ लौट पड़ा। परन्तु मनमें कई प्रकार के विचार उठते रहे कि क्या कारण है कि यदि काशी जी जाना ही नहीं तो ऐसा करें क्यों? संस्कार कार्य समाप्त हुआ। ब्रह्मभोज की समाप्ति पर पुरोहित जी घर गये मैं भी धीरे धीरे उनके पीछे हो लिया! जब घर पहुँचे तो मुझे देख कर पुरोहित जी ने कहा आओ बेटा क्या बात है? मैंने बहुत संकोच करते हुए कहा कि मेरी समझ में नहीं आया कि मुझे काशी जी क्यों नहीं भेजा और बहिन जी ने क्यों रोका! पुरोहित जी ने मुस्कराकर कहा बेटा असल बात यह है कि प्राचीन समय में गुरुकुल

स्थान २ पर होते थे, सब विद्यार्थी वहीं जाकर विद्या-

काशी जी में कुछ विद्वान् हैं, जिनके पास कुछ विद्यार्थी जाकर पढ़ते हैं। प्राचीन गुरुकुलों का अभाव ही हो गया है। यही कारण है और कोई बात नहीं है। मैं चुप हो गया और घर वापिस आया। पिता जी द्वार पर खड़ेथे मुझे आते देखकर हंसकर बोले बेटा कहां गये थे, आओ भोजन करें। मुझे बगल में लेकर पिता जी घर में गए और अपने साथ बैठाकर भोजन कराया। उसके पश्चात् मेरे मनमें कभी कभी जब गुरुकुल सम्बन्धी विचार उत्पन्न होते तो उदासीनता छा जाती थी!

सौभाग्यसे वह दिन आया कि घनैया लाल अलख धारी की प्रेरणा से महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज लुधियाना पधारे और उन्होंने श्री लाला जटमल खजानची के विशाल भवन में उपदेश देने आरम्भ किए। मैं प्रायः उनके उपदेशों में रोज जाया करता था। एक दिन जब मैं वहीं खेल रहा था तब स्वामी जी उपदेश के लिए पधारे। मैंने तुरन्त ही लाला जटमल की बगीची में से कुछ फूल और पौदीने की पत्तियां लाकर महर्षि श्री दयानन्द जी महाराज के आगे रख दीं और सिर झुका कर प्रार्थना की कि मुझे भी आर्यकुमार बनाइये! उस समय मैं आर्यसमाजी और आर्य कुमार में कुछ भेद नहीं समझता था। और 'स्वयम्' इस शब्द का भी अर्थ नहीं समझता था। महर्षिने मुझे पीठपर थापी देते हुए कहा कि "तुम स्वयं आर्यकुमार हो"। मेरे मांगने पर एक पुस्तक भी उन्होंने दी। जिसको लेकर बाजार में खुशी खुशी छलांगे मारता हुआ कहने लगा कि मैं भी आर्यकुमार बन गया हूं। इसके पश्चात् सन् १८८८ ईसवी में मेरे छोटे भाई की अकस्मात् मृत्यु होने पर उदासीनता दूर करने के लिए आर्यसमाज लुधियाना में सत्संग प्राप्त करने के लिए जाने लगा। सन् १८९९ में एक जनवरी को श्री लाला रामजी दास (खजानची) ने मेरा नाम आर्य समाज के सभासदों की सूची में लिख लिया।

लाला मुन्शीराम जी के दर्शन

लुधियाना में ईसाइयों की ओर से बल पूर्वक मिशन स्कूल के विद्यार्थियों को ईसाई बनाने के उपाय किये जाते थे! लुधियाना के दो तीन लड़के ईसाइयों के फन्दे में फंस कर ईसाई होने के लिये तैयार हुए! जब उनके माता पिता को यह पता चला तो वे आर्य समाज की शरण में आए। समाज की ओर से लाला मुन्शीराम जी (वकील) को जालन्धर से लाने के लिए, मुझे उनकी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ! जब मैं उनके मकान पर पहुँचा तो आप कचेहरी में जाने के लिये तैयार थे। सब वृत्तान्त मुझसे सुनकर लुधियाना चलने के लिए तैयार होगए और लुधियाना पहुँच कर फट्टा नौरियां में ईसाई-मत-खण्डन पर धूआंधार तकरीरें की। तमाम शहर में कोलाहल मच रहा था। जो लड़के ईसाई होने वाले थे उनसे बातचीत करके उन को दृढ़ आर्यसमाजी बना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुख्याध्यापक जी. एल. आर्य गर्ल्स स्कूल इस समय तक जीवित हैं तथा आर्यसमाज यात्रा के सदस्य हैं।

इस समय के बाद जब भी मुझे मौका मैं पूज्य श्री लाला मुंशीराम जी की सेवा दिन के लिए अवश्य जालन्धर पहुँच जाता समय से ही लाला मुन्शीराम जी मुझे पुत्र करने लगे। ज्यों ज्यों समय व्यतीत हो त्यों त्यों उनका स्नेह मुझ पर बढ़ता ह उन्हें ने गुरुकुल खोलने का परिपक्व वि किया और प्यारे सद्धर्मप्रचारक में बल की चर्चा चलाई तो मेरे यज्ञोपवीत स समय की गुरुकुल सम्बन्धी विचार धारा हो उठा और इस शुभ घड़ी की प्रतीक्षा लगा कि कब गुरुकुल खुले। ईश्वर कृपा से मुन्शीराम जी की अनथक कोशिशों से कांगड़ी की स्थापना हुई। मुझे इस बात ही रहा कि प्लेग होने के कारण गुरुकुल दिवस पर मैं न पहुँच सका। परन्तु मन ह बैठा हुआ स्थापना दिवस पर मैं खुश हो रहा था।

कुछ दिनों के पश्चात् सद्धर्मप्रचारक प्रेस जा चुका था। मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक न कारण महात्मा मुन्शीराम जी ने थोड़े दि हरिद्वार आने के लिए आग्रह किया। जी की संगत से लाभ उठाने के लिये ह गया। उन दिनों वर्षा के कारण गुरुकु जाने के लिये गङ्गा में तमेड़ पड़ती थ केशवदेव जी शास्त्री कई बार मुझे गुरुकु भेजने के लिये मुझे कनखल तमेड़ पर ले चारों ओर पानी ही पानी देख कर मेरा स को न हुआ। आखिर एक दिन महात्मा जीस्वयं हरिद्वार पधारे और मुझे अपने साथ लेगए महात्मा जी की उपस्थिति में सब चुका था और खुशी खुशी गंगा की विशा लहरों का आनन्द लेता हुआ गुरुकुल पहुँच महात्मा जी की कृपा से गुरुकुल सेवा का जो ४१ वर्ष से इस समय तक निभा रहा इस बात का अभिमान है कि पूज्य अमर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के आ परिणाम है कि इस समय तक १७५५००) मित्र मण्डल से एकत्रित करके गुरुकु भिजवा चुका हूं। यदि मेरा स्वास्थ ठीक पूर्ण आशा है कि बाकी २४५००) एकत्र दो लाख रुपये कर दूंगा। अन्यथा मुझे है कि मेरा मित्र मण्डल अपनी उदारता दो लाख के व्रत को अवश्य पूरा कर देगा।

आज मेरा हृदय गद्गद व प्रसन्न श्रद्धानन्द नगरी में आप के साथ हूं

वैदिक धर्म्म का स्वरूप

ामी वेदानन्दतीर्थ, विरजानन्द-वैदिक संस्थान,लाहौर

(१)

इस समय संसार में अनेक मतमतान्तर प्रचलित किन्तु कोई समय ऐसा था कि केवल भारतवर्ष में नहीं वरन् समस्त भूमण्डल पर वैदिक धर्म्म का प्राचार था। वैदिक धर्म्म के प्रचारकों के आलस्य ाल्दादि के कारण जब इनकी राज्यशक्ति क्षीण होने ी,, तब उस के साथ ही वैदिक धर्म्म की ज्योति पर वरण आने लगा। जिस प्रकार सूर्य के अस्त होने रात्रि के समय दीपकों से कार्य्य लिया जाता है, ई विद्युत्प्रदीप जलाता है, कोई गैस का, कोई ट्टी के तेल का, कोई सरसों के तेल का दीपक ाता है, उनमें एक समान प्रकाश नहीं होता, ठीक प्रकार वैदिक धर्म्म के लुप्तप्राय होने पर नाना ान्तरों की सृष्टि हुई। पारसी, भागवत, मूसवी दि मत उस काल की सृष्टि हैं, इनमें किसी में य का अंश अधिक किसी में न्यून है। सर्वथा ये सत्य शून्य हों ऐसा कहना साहस मात्र है। जैसे े के समय जलाये गये दीपकों में प्रकाश सूर्य मिन ही का होता है और प्रकाशकी अल्पता-अधि- ा दीप की साधन सामग्री के कारण होती है, ऐसे सब मतों में सत्य का अंश वैदिक धर्म्म का है, र शेष सामग्री उनकी अपनी है।

संसार में इस समय जितने भी सम्प्रदाय हैं, उन में कुछ सर्व सम्मत सत्य सिद्धान्त भी हैं। में से कोई भी ऐसा सर्वतन्त्र सिद्धान्त नहीं है, वेद में या वेद मूलक ग्रन्थों में न हो। उदाहरण के ये मूसा के दशादेशों (Ten commandments) को लीजिये—मनु के प्रसिद्ध धृति, क्षमा, दम, अस्तेय ाये धन पर अनुचित अधिकार न करना] शौच, इयों को नियन्त्रणों में रखना, धी=बुद्धि विद्या=ज्ञान य और अक्रोध, धर्म्म के इन दश लक्षणों में से धी विद्या को छोड़ कर शेष आठ को दश बनाकर ार के सामने प्रस्तुत किया है। ईसाई इस बात का बहुत मान करते हैं कि उन्होंने संसार में परमेश्वर के पितृत्व की घोषणा और प्रचार किया है, उनका यह सिद्धान्त नया नहीं है। वेद में कहा है—

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ऋग्वेद

अर्थात् सब को बसाने वाले परमात्मन्! सच मुच तू हमारा पिता है और हे सृष्टिरचनादि अनेकविध कर्म्मों के कर्त्तः! तू हमारी माता है। हम तेरा शुभाशंसन चाहते हैं।

इस मन्त्र में ईसाईयों से अधिक महत्व की बात कही गई है। परमेश्वर को पिता के साथ माता भी कहा गया है। सभी मतवादी एवं ज्ञानी स्वीकार करते हैं कि माता का पद पिता की अपेक्षा अधिक गौरवमय है।

इसी प्रकार मुसलमान भाई कहते है कि ईश्वर के एकत्ववाद का प्रचार उन्हों ने ही किया है किन्तु यह भी ठीक नहीं, इस्लाम की उत्पत्ति से लगभग दो अरब वर्ष पूर्व वेद ने ईश्वर के एकत्ववाद का पोष किया था। वेद में ईश्वर के एकत्ववाद के द्योतक सैंकड़ों मन्त्र हैं।

हमारे इस कथन का अभिप्राय यह है कि सब मतों में पाई जानेवाली मूल सच्चाइयों का मूलस्रोत वेद है। वेद ही वैदिक धर्म्म का मूल आधार ग्रन्थ है। वैदिक धर्म का स्वरूप समझने के लिये वेद का स्वरूप समझना अत्यन्त आवश्यक है।

वेद परिचय

तनिक ध्यान देकर विचारें तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ज़ुबान=भाषा के साथ ज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिन प्राणियों में व्यक्त वाणी नहीं है, उन्होंने किसी प्रकार भी अपने रहन सहन आदि में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया। बैया करोड़ों वर्ष पूर्व जैसा घोंसला बनाता था, आज भी वैसा ही बनाता है, बिज्जू सुदीर्घ काल पहिले जैसी भट=मांद बनाता था, आज भी वैसा ही बनाता है। सारांश यह कि किसी भी पशु-पक्षी ने अपने रहन सहन आहार आदि में कोई परिवर्त्तन नहीं किया। इसका कारण यह है कि ज्ञान प्राप्त करने, ज्ञान का प्रसार करने का प्रधान साधन व्यक्त वाणी उनके पास नहीं है। इस के विपरीत मनुष्य ने प्रकृति में उत्थल पुथल कर डाला है। मनुष्यने अपने तथा अन्य प्राणियों सुविधाके लिए अपने ज्ञान बल से अनेक साधन प्रस्तुत कर दिये हैं।

हम कह चुके हैं ज्ञान का भाषा के साथ घनिष्ठ संबन्ध है। प्रश्न होता है मनुष्य को भाषा कहां से मिली। योरुप के पण्डित कहते हैं मनुष्य ने पशुओं की अव्यक्त ध्वनियों तथा वृक्षों में वायु के कारण उत्पन्न होने वाली निरर्थक ध्वनियों से व्यक्तवाणी सीखी। इन विज्ञानाभिमानियोंका यह मत विज्ञान से इतना विपरीत है जितना दिन से रात्रि। अनेक देशों में इस बात की जांच की गई कि मनुष्य की स्वाभाविक भाषा क्या है, तो पता चला कि मनुष्य की स्वाभाविक भाषा कोई नहीं है जिस परिस्थति या जिस समुदाय में वह रहता है, वहाँ की भाषा भी बोलने लग जाता है। एक सद्योजात भारतीयबालक को चीनों की संगत में रख दीजिये। वह भारतीय भाषा न बोल कर चीनी भाषा बोलने लग जायेगा। जहां इस समय सारे संसार में एक सी ही हंभार है। समस्त संसार के घोड़ों क हिनहिनाहट एक सी है। इस से भी सिद्ध होता है कि पशुओं की भाषा नैसर्गिक=स्वाभाविक है और मनुष्य की भाषा स्वाभाविक नहीं है। मनुष्य ने अवश्य यह भाषा किसी से सीखी। वैदिक विद्वान इसका समाधान यह देते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य ने यह भाषा भगवान् से सीखी। भाषा के साथ भगवान् ने मनुष्य को ज्ञान भी दिया, उस आदिम ज्ञान का नाम 'वेद' है।

पूर्व और पश्चिम के सभी विद्वान् मानते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति से पूर्व वनस्पति तथा पशुपक्षियों की सृष्टि हो चुकी थी। मनुष्य इस जगत् में सब से अन्त में आया। आरम्भ के मनुष्य में और आज के मनुष्य में शारीरिक भेद नहीं है। अमेरिकाके बोस्टन (Boston)नगरस्थ स्मिथसानियन संस्थान(Smithsonia Institute) के प्राणिविज्ञान शास्त्र के आचार्य्य डा० क्लार्क का कथन है कि Man appeared able to think, able to walk and able to defend himself अर्थात् सृष्टि में जब पहले पहल मनुष्य उत्पन्न हुआ तो वह विचार सकता था, चल सकता था, तथा अपनी रक्षा कर सकता था। विचारने चलने तथा आत्मरक्षा के लिए ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः यह मानना चाहिए कि मनुष्य ज्ञान के साथ उत्पन्न हुआ। ज्ञान का ज़बान के साथ अटूट सम्बन्ध है। अतः ज्ञान के साथ भगवान् ने मनुष्य को ज़बान भी दी।

यह प्रायः सर्वसम्मत है कि वेद संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ है। अतः वेद की भाषा भी प्राचीनतम है। वेदकी भाषासे पुरानी भाषाकी सत्ता भाषाशास्त्रियों की कल्पना के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं होती, अतः यह मानना चाहिये कि वेद भाषा मनुष्य की आदिम भाषा है। इसकी उपपत्ति हम किसी दूसरे लेख में करेंगे।

जब यह सिद्ध हो गया कि वेद संसार का आदिम ज्ञान ग्रन्थ है तब यह भी मानना पड़ेगा कि इसमें मनुष्य का उपयोगी सभी प्रकार का ज्ञान होना चाहिये। इसी कारण ऋषि मुनियों का सिद्धान्त है कि वेद में बीजरूप से सभी विद्यायें हैं। स्वयं वेद में भी यह बात कही गई है—

यस्मात्पक्वादमृतं संबभूव
यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव।
यस्मिन्निहिता वेदविश्वरूपास्
तेनौदनेनातितराणि मृत्युम्॥ (अथर्ववेद)

जिस ब्रह्मामृतरस रूप ओदन के परिपक्व होने पर मुक्ति होती है, जो गायत्री का शिरमौर है, जिसमें विश्वरूपाः=सब विद्याओं का निरूपण करने वाले वेद रहते अर्थात् सब विद्याओं के भण्डार वेदों का परम तात्पर्य है, उस ओदन के द्वारा मैं मृत्यु को तर जाऊं।

स्पष्ट ही यहां वेद को 'सब विद्याओं का निरूपण करने वाला' कहा गया है। अर्थात् अन्तरंग तथा बहिरङ्ग दोनों साक्ष्यों से वेद सब विद्याओं का पुस्तक सिद्ध होता है। (शेष पुनः)

र शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में च्चढ़ाने का अवसर दिया इसके लिये आप का मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं।

मुझे तो श्रद्धानन्दनगरी गुरुकुल कांगड़ी के क वृक्ष के पत्ते पत्ते पर पूज्य अमर शहीद का अंकित हुआ दिखलाई देता है। जिस लगन और य पालन के लिए गुरुकुल के अधिकारवर्ग ने नन्द नगरी में पूज्य अमर शहीद श्री स्वामी हाराज की याद ताज़ा करने का बीड़ा उठाया अत्यन्त ही सराहनीय है। मैं प्रत्येक गुरुकुल और स्नातक मण्डल से आशा रखता हू कि कर्तव्य से कुलपिता के नाम को उज्ज्वल । इसी तरह हम उनकी याद मना सकते हैं। में मैं उस परम प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि इस अन्तिम जीवन में भी गुरुकुल सेवा का क से अधिक बल प्रदान करे। *

ओं शम्

—लब्भूराम नय्यड़

* गुरुकुलकांगड़ी के उत्सव पर श्रद्धा सम्मेलन के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दुख हमने है आप बनाया

—सत्यभूषण 'योगी'

अर्ध निशा है, सां सां की
आवाज सुनाई पड़ती है
नर खग मृग सब सोए हैं
सोई पीड़ित धरती है

कौन अरे, देखो, वह सुन्दर
मोहन सात्विक भाल लिए है
दृढ़ निश्चय से गर्वित, मद से
माती बाकी चाल लिए है

चला जा रहा निर्जन पथ पर
मिटने का अरमान लिए है
श्वेत केशमय वृद्ध देह में
यौवन का तूफान लिए है

अनिश काम करता है फिर भी
कुछ भी नहीं थकान इसे है
यह धन्वन्तरि जान डाल दे
मुर्दों में वरदान इसे है

× + × ×

पड़ा हुआ वह पीड़ित रोता
ईश्वर को ही कोस रहा था
उस मायावी पर उतार वह
अपना सारा रोष रहा था

अरे कहां है दया, क्रूरता
से सारा संसार भरा है
क्रूर नियन्ता के इंगित से
जीते जी यह मरा पड़ा है

ईश्वर है, यह झूठ सरासर
है तो अत्याचार भरा भरा है
अंधा बहरा गूँगा लूला
लँगड़ा औ' अविचार भरा है

तुम कहते हो पिता, पिताओं
के पेले हैं कृत्य कहां रे
तड़पा तड़पा मारे हमको
बेदिल निष्ठुर नित्य अहा रे

उस पाषाण हृदय की सत्ता
से भी अब इनकार हमें है
यदि हो भी तो उसे भून देगें
न विवेक विचार हमें है

आए तो वह जरा सामने
हमें सदा तड़पाने वाला
भक्षक होकर झूठमूठ ही
रक्षक हाय, कहाने वाला

मैं नास्तिक हूं, भले मुझे जग
दे लानत औ करे बहिष्कृत
मैं नास्तिक हूं, मुझे न भय हैं
उसका जो है केवल कल्पित

अरे, यहां अंधेर मचा है
प्रेम कहां है, न्याय कहां है
इस अंधेर नगर से बचने
का कुछ हाय, उपाय कहां है

यह जड़ प्रकृति का चक्कर है
इसमें पिस पिस मरना होगा
आंखों में आंसू हों फिर भी
बेबस कृत्रिम हँसना होगा

नाना दुःख भीति चिंताओं
से पीड़ित है प्रतिपल मानव
घूम रहे हैं उसे हड़पने
निशि दिन भीषण निर्दय दानव

कसक वेदना की तड़पन की
यह जीवन है एक कहानी
कहीं न कोई रक्षक, चलती
है अंधे विधि की मनमानी

अरे, धांधली ही सारे इस
जग में मची हुई भयकारी
इसमें कुचली अनिश जारही
बेबस मानवता बेचारी

हम रोते हैं रो सकते हैं
क्रूर प्रकृति जड़ निष्ठुर बेदिल
हमको पीस रही हो प्रमुदित
मूक मौन सहते हम बेकल

अच्छा मूंद पड़ूं आंखें अब
जो सिर पर आता है आए
घूम रहे यमदूत हाथ में
लेकर डण्डे दाएं बाएं

हम लाचार हमें सहना है
जो करता है क्रूर नियन्ता
नहीं नियन्ता किंतु जगत का
पत्थर दिल वह निर्दय हन्ता

पड़ा हुआ वह पीड़ित रोता
यों ईश्वर को ही कोस रहा था
उस मायावी पर उतार वह
अपना सारा रोष रहा था

× × × ×

धीरे से उसके मस्तक पर
किसने मृदु कर अपना रक्खा
सब दुख द्वन्द्वों का निरा सकर
स्वर्ग शान्ति का सपना रक्खा

क्या कहता वह मधुमय स्वर से
ईश्वर को मत कोसो प्यारे
सुन्दर मनहर विश्व बनाया
उसने तो सुख हेतु हमारे

यह मानव अपने कर्मों से
अमृत को भी गरल बनाता
और असुन्दर सुन्दर को हा,
शार्दूल को मरुथल कर जाता

इस नृशंस मानव ने लड़ लड़
कितने देश उजाड़ दिए हैं
कितने सुन्दर रसमय मृदु वपु
जीते जी ही गाड़ दिए हैं

स्नेह मयी उस जगदम्बा ने
उसे सुखद जग यह दे डाला
अरे, असंयम करके मानव ने
नाना विध रोगों को पाला

उषा सुन्दरी आती है
दिशा दिशा हं
रंग बिरंगे फूले
विसुध धरा पुलकित

निर्झर झरत' चंचल सरिएं
जीवन के मधु गीत सुनाती
निशा सलोनी नर्तन करती
कितना ही अन्तर को भाती

सभी सत्य है, दि
सभी जगह है स्व
कण कण में दिव्य
स्वप्निल पावन मधु

इस दुनिया में सुख ही सुख है
दुख हमने है आप बनाया
हमने ही निज वर दानों को
जान बूझ अभिशाप बनाया

पीड़ित ने आंखें
नई दृष्टि से
सहसा उसके सूखे
खिची हास्य की

———

अपने बच्चों को याद कराइये—

बहादुर लड़के का गी

[लेखक—श्रीयुत सुदर्शन]

मुझे आप छोटा-सा लड़का न
मुझे कम-समझ सीधा-साधा न
मुझे खेलने का खिलौना न
मुझे आप ऐसा निकम्मा न
मैं छोटा नहीं, मुझको छोटा न

—२—

मैं छोटा नहीं, मुझ में हिम्मत
मेरे मन में धीरज की दौलत
मैं हूँ सूरमा, मुझ में ताकत
मेरे पास मां-बाप की पत
मैं छोटा नहीं, मुझ को छोटा न

—३—

न मैं लिखने पढ़ने में पीछे
न मैं खेलने में फिसड्डी
हर इक बात में मैं बहादुर
बहादुर हूँ, मैं आगे-आगे
मैं छोटा नहीं, मुझ को छोटा न

—४—

मैं माता-पिता का दुलारा
अड़ोसी पड़ोसी का प्यारा
मुहब्बत की आंखों का तारा
गरीबों के मन का सहारा
मैं छोटा नहीं, मुझको छोटा न

—५—

मैं दुख दर्द में मुस्कराता
मैं तकलीफ में गीत गाता
मैं संसार के चित्त को भाता
मैं हँसता रहूँगा, हँसाता
मैं छोटा नहीं, मुझको छोटा न

———

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज संसार

आर्य समाजें ध्यान दें

[...ल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

...र्य सभा ने निश्चय किया था कि वेद ...ाली में परिवर्तन किया जाय अर्थात् ...था को जारी किया जाय, उत्सवों की ...मा की जाय। कथाओं का प्रचार बढ़ाया ...हरों की अपेक्षा ग्राम प्रचार पर अधिक ...जाय। आर्य भाईयों के वैयक्तिक जीवन ...बनाने पर बल दिया जाय। आर्य पुरुषों ...भाषा का प्रचार किया जाय। सभा के ...चय को कार्य रूप में परिणत करने के ...डल सिस्टम जारी किया गया। और ...का ध्यान रखा गया कि उपदेशकों को ...ण्डल से यथा शक्ति बाहर कम भेजा ...पने मुख्य स्थान में रह कर पारिवारिक ...ी सुविधा दी जाय। इस दिशा में मत ...प्रयत्न किया गया उसे इस वर्ष अधिक ...नाने का विचार है। गत वर्ष यह परी- ...र पांच ज़िलों में सफल हुआ है। इस वर्ष ...र भी सफल बनाने का यत्न किया ...॥ प्रारम्भ से ही उपदेशक महानुभावों ...ने अपने ज़िलों में प्रचार करने की सुविधा ...जायगी और अपने जिले की प्रचार की ...ज़िम्मेदारी उन पर होगी। यथा शक्ति ...से बाहर उपदेशकों को कदापि नहीं भेजा ...।

...गत वर्ष उत्सवों की संख्या कम की गई ...उत्सव कम कर दिये गये। इस वर्ष ...की संख्या और भी कम करने का ...है। आर्य समाजों को इस दिशा में ...के साथ पूर्ण सहयोग करना चाहिए। ...त्सवों के स्थान पर कथा द्वारा ही प्रचार ...का यत्न करें। उत्सवों में समय तथा धन ...तना व्यय होता है। उसके मुकाबले में लाभ ...ता है। सभा का यह निश्चय है। इस वर्ष ...ज़िले में तीन से अधिक उत्सव स्वीकृत ...जाएं। इसका निश्चय सभा स्वयं करेगी ...न समाजों के उत्सव किये जाएं। जिन ...के गत वर्ष उत्सव हुए हैं। उनके इस ...त्सव स्वीकार न किये जायेंगे और वहां ...रूप में प्रचार कराया जायगा। ज़िले की ...समाजों के सम्बन्ध में इस नियम का अप- ...हो सकेगा। आर्य समाजों को स्वयं इस ...य में सोचना चाहिए कि आज कल गा- ...की भीड़ के कारण से उपदेशकों का एक ...से दूसरे स्थान पर जाना कितना कठिन ...है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि उपदेशक ...भावों को रात भर जाग कर खड़े खड़े ...की यात्रा करनी पड़ती है। जिससे उन्हें ...ता है। और आगे जाकर ठीक प्रकार से ...करने में असुविधा होती है। इस लिए स- ...आवश्यकता को अनुभव करते हुए भी ...समाजों को नवीन प्रचार प्रणाली को सफल बनाने के लिये सभा को सहयोग देना चाहिये।

(३) पंजाब में हजारों ग्राम हैं। जहां अबतक आर्यसमाज का सन्देश नहीं पहुंचा। सभा के पास इतने कार्यकर्ता नहीं हैं कि शहरों तथा ग्रामों की आवश्यकता को पूरा कर सकें। शहरों में पर्याप्त प्रचार हो चुका है। उन्हें कुछ काल के लिये यह निश्चय कर लेना चाहिये कि वे सभा के उपदेशकों का प्रचार अपने यहां कराने के लिये सभा को बाधित न करें। प्रत्युत उनके वहां लगने वाले दिन ग्राम प्रचार में लगाये जायें।

(४) अब समय आगया है कि जनता के सामने कोई नया कार्य्यक्रम रखा जाये, पुराने कार्य्यक्रम में जनता की रुची नहीं रही है। और जनता में इस बात का प्रबल आन्दोलन है कि कार्य्यक्रम में मौलिक परिवर्तन किया जाय। इस लिये सभा ने अपने वार्षिक अधिवेशन में जो प्राग्राम सर्व सम्मति से निश्चित किया था, उसे कार्यरूप में लाया जाय। यदि ऐसा न किया गया तो आर्य समाज में नवयुवकों के लिये कोई आकर्षण न रहेगा। वेदप्रचार प्रणालीके परिवर्तन के साथ साथ आर्य वीर दल के आन्दोलन को सर्व व्यापी बनाने का यत्न करना चाहिए। और पंजाब के सब नवयुवकों को इस आन्दोलन के साथ सम्बन्धित कर देना चाहिए ताकि नवयुवक आर्य-समाज के प्रति आकर्षित हों। इसके अतिरिक्त नवयुवकों को आर्य समाज में लाने का और कोई उपाय नहीं है।

——

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और आर्य वीर दल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने निम्न लिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है—

जब से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीर दल का व्यापी संगठन करने का निश्चय किया है तभी से उत्तर भारत में एक कठिनाई उपस्थित हो है जिसे दूर करने के लिये इस वक्तव्य के निकालने की आवश्यकता हुई है। कठिनाई यह है कि बहुत से स्थानों पर कई वर्षों से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कार्य कर रहा है। प्रायः सभी जगह स्थानीय आर्यसमाजी उसमें शामिल हो चुके है और अनेक स्थानों पर तो संघ के कार्यालय ही आर्य समाज मन्दिरों में बने हुए हैं। ऐसे स्थानों पर जब आर्य वीर दल की स्थापना का प्रयत्न आरम्भ होता है तब वे आर्य समाजी जो संघ में शामिल हो चुके हैं, दल की स्थापना का विरोध करते हैं। मेरठ, सहारनपुर और पंजाब के कुछ शहरों के दृष्टान्त इस प्रसंग में विशेषतः उल्लेख योग्य हैं।

इस प्रसंग में यह बता देना अत्यावश्यक है कि संघ के होते हुए भी आर्य वीर दल की स्थापना क्यों आवश्यक हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिस विशेष आदर्श और आर्य प्रणाली को सामने रख कर संगठित हुआ है उससे आर्य समाज का कोई झगड़ा नहीं। परन्तु दो बातें स्पष्ट हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्पष्ट नीति है कि वह किसी सार्वजनिक कार्य में भाग नहीं लेता और आर्यसमाज एक प्रगतिशील व्यावहारिक संस्था है। उसे रक्षा और सेवा के कार्य के लिये शिक्षित स्वयं सेवकों की आवश्यकता है। संघ से उसे क्रियात्मक सहायता नहीं मिल सकती। इस कारण उस के लिये आर्य वीर दल का संगठन अनिवार्य है। दूसरी बात यह है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मूल भूत आदर्शों और प्रतिदिन के कार्यक्रम में भी मूर्तिपूजा का विशेष स्थान है। संघ के संस्थापक डा० हैडोवार की "विचार धारा" में जनसाधारण को उस अव्यक्त स्वरूप का सम्यग् ज्ञान करादेने का मूर्तिपूजा ही एक मात्र सुलभ साधन है (परम पूज्य डा० हैडोवार विचार धारा पृ० ७५) इत्यादि शब्दों द्वारा मूर्तिपूजा की भावना को आवश्यक बतलाया गया है और संघ अपने व्यवहार में भी उस भावना से पूर्ण काम लेता है। आर्य समाजियों के लिये जहां राष्ट्रीय संघ की इस मूलभूत भावना को मानना असम्भव है वहाँ आर्य समाज मन्दिरों में उसे स्थान देना भी सम्भव नहीं। ऐसी दशा में सिद्धान्त रूप में आर्य समाजियों के लिये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के रीति रिवाजों में शामिल होना दुष्कर है। इन कारणों से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के रहते भी आर्य वीर दल की स्थापना आयश्यक हो गई है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ हिन्दू नवयुवकों को शारीरिक व्यायाम और संघ व्यायाम का शिक्षण देता है। यह उसकी उपयोगिता है। उसका विरोध करना न मेरा उद्देश्य है और न किसी दूसरे देशभक्त का होना चाहिये। परन्तु आर्य समाज अपने रक्षा और सेवा के प्रतिदिन के कार्यक्रम का भली प्रकार से चलाने के लिये आर्य वीर दल की स्थापना करे तो उससे भी किसी को न झगड़ना चाहिये। आर्य समाज के सदस्यों का तो कर्तव्य है और परम धर्म है कि वे आर्य वीरदल में सम्मिलित हों। यह भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि आर्य समाज मन्दिर में यदि किसी स्वयं सेवक दल को स्थान मिल सकता है तो वह आर्य वीर दल ही है। सार्वदेशिक सभा का यह निश्चय समस्त आर्य समाजों और आर्य समाजियों के लिये एक आदेश के समान है कि वह आर्य वीर दल के दृढ संगठन बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा दें। प्रान्तिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी इस विषय में सचेत होने की आवश्यकता है। यह ध्यान में रहे कि वर्ष के अन्त में सब प्रान्तिक सभाओं और स्थानीय आर्य समाजों में से इस दिशा में किये गये कार्य का लेखा मांगा जायेगा। उस समय ऐसा न हो कि उनके हिसाब में घाटा दिखाई दे।

आर्य युवक समाज कराची का वार्षिक चुनाव

प्रधान—लाला कृष्ण दयाल जी। उप प्रधान (१) धनीराम जी (२) राधाकृष्ण जी मंत्री म० चिरञ्जी लाल जी उपमंत्री— ब्र० जगदीश चन्द्र जी—आर्ययुवक व्यायामशाला के मंत्री —म० हरीवंश लाल जी। अन्तरंग सभा के सदस्य (१) भगवान दास जी (२) किशोरी लाल जी (३) अमर नाथ जी (४) द्वारका दास जी अन्तरंग सभा के प्रतिष्ठित सदस्य (१) मं० जेठा नन्द जी (२) मूलचन्द्र जी। यह चुनाव २ मई १९४३ को प्रातः ८॥ बजे हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

श्री प्रियव्रत विद्यालंकार

आज से लगभग ३१ वर्ष पूर्व सन् १९१२ में थानेसर के रईस दानवीर ला. ज्योतिप्रसाद जी के हृदय में यह भावना जागृत हुई थी कि कौरव पांडवों के युद्ध की रंगस्थली कुरुक्षेत्र भूमि में प्राचीन संस्कृति और ब्रह्मचर्य प्रथा के पुनरुद्धार के लिये गुरुकुल कांगड़ी के आधीन यहां भी एक गुरुकुल स्थापित किया जावे। इसी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर उक्त लाला जी ने अपनी १०४८ बीघा ज़मीन और १००००) का सात्विक दान देकर गुरुकुलों के आद्य प्रवर्तक अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के पवित्र कर कमलों से १म वैशाख सं० १९६९ के दिन इस पवित्र यज्ञ का आरम्भ किया था। आज इस कुल को सफलतापूर्वक चलते हुए ३१ वर्ष समाप्त होचुके हैं। अपनी आयु के इन ३१ वर्षों में गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने पर्याप्त उन्नति की है।

अब तक यह गुरुकुल ८म श्रेणी तक चल रहा था, अतः ८म श्रेणी तक के योग्य आवश्यकतानुसार प्रायः सभी विभागों के भवन बने हुए हैं। गत दो वर्षों से ९म तथा १०म श्रेणी भी इस गुरुकुल में खुल चुकी है और अब यह एक उच्च विभाग का विद्यालय तथा गुरुकुल कांगड़ी की सब से बड़ी शाखा हो चुकी है।

उच्च विभाग के खुलने पर कुल की कुछ आवश्यकताएं भी बढ़ गई हैं। व्यय भी कुछ बढ़ जाना आवश्यक था! वह भी बढ़ गया है।

गत वर्ष से इस गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद पर श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यालङ्कार कार्य कर रहे हैं। उनके साथ १२ वा १३ अध्यापक महोदय तथा अन्य विभागों के अध्यक्ष मिल कर कुल २० वा २२ महानुभाव बड़ी लगन, प्रेम और सहयोग से काम कर रहे हैं।

गुरुकुल की अपनी गौशाला और अपनी ही वाटिका है। आज कल के मँहगी के ज़माने में जबकि दूध और घी के दर्शन भी दुश्वार हो रहे हैं, ब्रह्मचारियों को अपनी गोशाला से आज भी शुद्ध दूध पीने को मिल रहा है।

सब्ज़ी आदि का प्रबन्ध अपनी ही वाटिका से किया जा रहा है। वर्ष भर प्रतिदिन ताज़ा और स्वच्छ शाक वाटिका से मिलता रहता है। सब्ज़ी के अतिरिक्त आम, सन्तरे, अमरूद, आड़ू, अंजीर आदि फल भी ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में समय समय पर मिलते रहते हैं।

गेहूँ, चना आदि अनाज बहुत कुछ अपनी भूमि से भी प्रतिवर्ष गुरुकुल को मिलता रहता है। गुरुकुल की अपनी २२०० बीघा भूमि है जिसमें पर्याप्त मात्रा में उपज हो सकती है और इस प्रकार गुरुकुल बहुत कुछ अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। पर ज़मीनों में कूएं न होने से पानी की कमी के कारण उचित मात्रा में उनसे लाभ नहीं उठाया जा सकता। यदि कुओं के लिये दान देने वाले सज्जन अपना हाथ लंबा करके कुल की यह सहायता करें तो गुरुकुल बहुत कुछ चिन्ताओं से मुक्त हो सकता है। हमें आशा है कि कुएं आदि बनवाने का पुण्य दान करने वाले दानी महानुभाव कुल की यह अमूल्य सहायता करके अवश्य पुण्य के भागी बनेंगे।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की विशेषताओं में सबसे बड़ी विशेषता उसकी जल वायु है। यहां का जलवायु बहुत उत्तम तथा स्वास्थ्यप्रद है। जलवायु की उत्तमता के कारण ही शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी को यह कुल बहुत प्रिय था। वह जब भी रोगी होते थे तब स्वास्थ्य लाभ के लिये इसी गुरुकुल में पधार कर विश्राम करते थे।

इस समय इस गुरुकुल में १३० ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य की दीक्षा पूर्वक शिक्षा ले रहे है। आश्रम खचाखच भर गया है। नये ब्रह्मचारियों के प्रवेश के लिए प्रार्थनापत्र आ रहे हैं। किन्तु स्थान की कमी विवश कर रही है। आश्रम के दो कमरे अभी बनने से बाकी पड़े हुए हैं। यदि कोई उदार दानी सज्जन यह कमरे बनवादें तो ब्रह्मचारियों को रहने की सुविधा हो जाय, इस वर्ष १६ ब्रह्मचारी तो उत्सव पर प्रविष्ट हो चुके हैं। जो उत्सव पर नहीं आ सके उनके प्रार्थना पत्र आ रहे हैं। जो सज्जन अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहते हों वह शीघ्रता करें, क्योंकि मई मास से नये वर्ष की पढ़ाई आरम्भ हो जावेगी।

गुरुकुल करुक्षेत्र के १६ ब्रह्मचारी इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी की अधिकारी परीक्षा में बैठे हैं अधिकारी परीक्षा पास करके दशम श्रेणी के ब्रह्मचारी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के महाविद्यालय में आगे अभ्यास करने चले जावेंगे। प्रथम से अष्टम श्रेणी तक के ब्रह्मचारियों की वार्षिक परीक्षाएं भी आरम्भ हो चुकी हैं। अप्रैल के अन्त तक परीक्षा परिणाम तैयार हो जावेगा।

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव बड़ी सफलता के साथ समाप्त हो चुका है।

ग्यारह हज़ार नकद दान के सिवाय ४०००) के वायदे भी हुए हैं।

इस समय मासिक शुल्क निम्न प्रकार है:—

१४) मासिक प्रथम से पंचम श्रेणी तक

१८) ,, षष्ट से अष्टम ,,

२०) ,, नवम तथा दशम ,,

प्रवेश के समय निम्न प्रकार ९९॥) रुपये संरक्षक महोदयों को देने होते हैं:—

४०) अमानत शुल्क

४५) वस्त्रादि के लिए

१४) एक मास का शुल्क

॥) मुण्डन संस्कार

गुरुकुल के स्टाफ़ में इस समय निम्नलिखित महानुभाव काम कर रहे हैं—

श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यालङ्कार (मुख्याधिष्ठाता)। श्री पं० ईश्वरदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार (सं० मुख्याध्यापक)। श्री पं० विक्रमादित्य जी सिद्धान्तालङ्कार (व्याकरणाध्यापक)। श्री स्वा० आनन्दघन जी एम. ए. एल. एल. बी. (आंगल भाषाध्यापक)। श्री पं० करुणादेव जी बी. ए. (आंगलभाषा तथा आर्यभाषाध्या... रघुबीर जी शास्त्री (संस्कृत सा... श्री पं० परम जी वेदालङ्कार (ह... गोलाध्यापक)। श्री पं० यज्ञदत्त ... (विज्ञान तथा गणिताध्यापक)। ... मादित्य जी व्यायाम बिशारद (व्य... संस्कृताध्यापक)। श्री पं० पूर्णचन्द्र ... (आलेख्याध्यापक)। श्री प० ... अधिकारी (स. गणिताध्यापक)। ... राम जी शास्त्री (साहित्य तथा ... श्री पं० ब्रह्मानन्द जी वेदालङ्कार (... ध्यापक)। श्री म. वेदरत्न जी ... (चिकित्सक)।

ऊपर के अन्य कामों के लिए ... राम जी तथा श्री डा० विश्वामित्र ... सेवा कर रहे हैं।

श्री डा० शिवराज जी जो गुरुकु... सेवक और भक्त हैं अपनी प्राईवेट ... हुए भी अपना आधा समय गुरुकु... लगाते रहते हैं।

श्री स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी हथक... लाहौर लाया गया

श्री स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी ... (गुरुदासपुर) में भारत रक्षाविधा... गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें ... कर लाहौर लाया गया।

श्री राजनारायण जी से

राजनारायण जी नमस्ते! तुम्ह... घण्टा वाद विवाद होकर निश्चय हु... तुम को घर आने के लिए न कहा ... जिस जगह तुम भोजन करते हो, ... दान के तौर पर दे दिए जावें (३) ... कुछ रोगी हो अतः दवाई के लिए ... जावे। यदि तुम्हारी सेहत तुम्हारा ... बिना संकोच घर वापिस चले ... अपना प्रोग्राम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ... को अपना पता देकर पूरा करो। यदि ... शर्तों के पूरा होने में कुछ शक हो ... पता गुप्त रखूंगा जब तक तुम्हा... न हो।

आपका विश्वासपात्र बूलचन्द स्टेशन ...

प्रधान आर्यसमाज ...

—पंजाब आज़ाद क्रिश्चियन बोर्ड ने ... देश भक्तों से अपील की है कि भारत ... संकट को दूर करने तथा राष्ट्रीय ... स्थापना के लिए राष्ट्रीय एकता के ... नेता महात्मा गांधी की रिहाई की ... जिस से भी इस मांग का समर्थन ... अपील की गई है।

—नारवे में २ लाख जर्मन है... गए हैं, क्योंकि जर्मनी को वहां नि... डर है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ओ३म् 15147 Regd. N. L. 5004

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य

आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ...क बनना चाहिए

संख्या २४, अंक २६
वार्षिक मूल्य ४)
१० ज्येष्ठ, २००० विक्रमी
२३ मई १९४३ ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अ...धा

सच्चा सभासद् कौन है

...या सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभा
अथर्व० १९।७।५५।६॥

...हिए कि अपनी सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था ... करे और सभाके योग्य बनें। संगठन किसी ...का हो, भले वह धार्मिक हो भले राजनैतिक, ...में ईमानदारी न बर्ती जाए तो वह नष्ट भ्रष्ट हो ...किसी भी सभा संगठन का उद्देश्य होता है ...मिलकर उन्नति के उपाय सोचें। जो कोई ...भा में जाकर सभ्य के नियमों का पालन नहीं ... बड़ा भारी पाप करता है। इस विषय में ...क स्मरणीय है—

...वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं नासमञ्जसम्।
...न् विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्बिषी॥

...तू या तो सभा में प्रवेष्ट ही न हो प्रविष्ट हो ...ीक सम्मति दे। चुप रहने वाला या गलत ...ला मनुष्य पाप का भागी होता है। किसी ...में प्रविष्ट होकर यदि कोई किसी कारण से ...ी सच्ची आवाज़ को दबाता है तो वह मनुष्य ...ा बड़ा भारी अपकार करता है और अन्त- ...सान्मुख अपराधी होता है। हमें चाहिए कि ...भासद् बनें। किसी भी समाज के सभासद के ...ये समाज का उत्तरदायित्व होता है। अतः ...विष्ट होकर अपने कर्तव्य को पालन न करने ...ये समाज के प्रति विश्वासघात करता है। हमें ...क इस विश्वासघात से बचें और अपने अन्तु- ...रा अन्तर्यामी के प्रति ईमानदार रहें तभी ...र्थों में हम किसी भी सभा के सदस्य बनने ...ामी होंगे। किसी पक्षपात या स्वार्थ के वश ...ी भी सभा का सभासद अपनी आत्मा के

मांगता है। सत्य सभी संगठनों का मूल है। जिस संगठन में सचाई न रहे वह ऐसे बिखर जाता है जैसे कि बिना धागे का फूलों का हार। परमात्मा करे कि हमारे हृदयों में सत्य का निवास हो और हमारा संगठन ऐसा हो कि सारी दुनिया उसे आदर्श बनाए।

आर्य प्रतिनिधि सभा के सब प्रतिनिधियों की सेवा में निवेदन है कि २९–३० मई को होने वाले अधिवेशन में अवश्य सम्मिलित हों तथा २८ मई को ही लाहौर पहुँच जाए, क्योंकि आज कल गाड़ियों के अक्सर लेट रहने के कारण २९ को पहुँचने वाले अधिवेशन के समय सम्भवतः न पहुँच सकें।

स्मरणीय वचन

रात्रि के समय आकाश मण्डल में असंख्य तारे चमकते हुए दिखाई देते हैं, किन्तु सूर्योदय होने पर एक भी तारा दिखाई नहीं देता, तो क्या यह कह सकते हैं कि दिन में तारे नहीं रहते? अतएव हे मनुष्यो! अज्ञानवश परमात्मा को न देख सकने के कारण उसके अस्तित्व में संदेह न करो।

× × ×

दूध में मक्खन रहता है, किन्तु अज्ञान बालकों को उसका ज्ञान नहीं रहता, तो क्या इसी लिए कह सकते हैं कि दूध में मक्खन नहीं होता।

× × ×

समुद्र में मोती अवश्य रहते हैं, किन्तु वे परिश्रम के बिना नहीं मिलते। इसी प्रकार संसार में ईश्वर विद्यमान रहने पर भी, बिना-प्रयास

बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला

—श्री करुण कुमार—

– १ –

बाहर जग का जीवन जलता,
भीतर है कवि का मन जलता,
जग-ज्वाला की लपटों से ही
पड़ता कवि के उर में छाला।
बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला!

– २ –

बाहर जग में दुख के बादल,
भीतर कवि के पीड़ा पागल,
जग का दुख ही तो भरता है
कवि के प्राणों में अँधियाला।
बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला।

– ४ –

बाहर जग में रोदन के स्वर,
भीतर कवि के आंसू निर्झर,
जग के आंसू कन लेकर ही
भरता कवि आंसू का प्याला।
बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला।

श्री अल्लाबख्श की हत्या

१४ मई को कुछ आक्रमणकारियों ने सिन्ध के भू० पू० प्रधान मंत्री श्री अल्लाबख्श की हत्या कर दी, अपराधी अभी तक फरार हैं। श्री अल्लाबख्श के शव का जलूस बड़ी शान से निकाला गया। हजारों हिन्दू मुसलमान आदि सब धर्मों के लोग शामिल थे।

श्री अल्लाबख्श हिन्दु मुस्लिम एकता के महान् समर्थक थे। इसी कारण उन्हें सिन्ध का प्रधान मंत्रित्व भी छोड़ना पड़ा था। परम पिता परमात्मा स्वर्गीय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

नाथ मैं तुझ में कब मिल जाऊंगा

श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति दयानन्द उपदेशक विद्यालय

(१७)

उत स्वयां तन्वा संवदे तत् कदा न्वन्तर्वरुणे भवानि ।
किं मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा मृडीकं सुमना अभिख्यम् ७।८६।२

अर्थ—(उत) क्या (स्वया) अपने (तन्वा) शरीर के साथ ही (संवदे) मैं मिल कर बोलता रहूंगा ? (तत्) तो, मैं (वरुणे) वरण करने योग्य प्रभु के (कदानु) कब (अन्तर्भुवानि) भीतर हो जाऊंगा ? (अहृणानः) मुझ से क्रुद्ध न होकर, वह प्रभु (मे) मेरी (हव्यं) पुकार को (किं) क्या (जुषेत) सुनेगा ? (सुमनाः) प्रसन्न मन वाला होकर मैं (मृडीक) आनन्ददाता वरुण और उस से मिलने वाले आनन्द को (कदा) कब (अभिख्यम्) देखूंगा ?

गत मन्त्र में वरणीय भगवान् को छोटे छोटे पदार्थों से लेकर सूर्य जैसे महापिण्डों तक के रचयिता और सत्ता-प्रदाता के रूप में उपस्थित किया गया था । इसके साथ ही उस मन्त्र में भगवान् को सन्ध्या और उषः कालीन सूर्य की सुषुमा तथा रात्रि के समय व्योममण्डल में छिटकने वाले नक्षत्रों की छटा के चित्रकार के रूप में उपस्थित करके उन्हें ललित कलाओं के महागुरु के रूप में भी दिखाया गया था । भगवान की इस ऊर्जस्वल और साथ ही सुकुमार महिमा के वर्णन की ध्वनि यह थी कि हमें उनके आगे नत मस्तक होकर उनके गौरव को अनुभव करना चाहिए । सूक्त के पाठक का भक्त हृदय उस मन्त्र में संकेतित की गई भगवान की महिमा पर बार बार विचार करता है । जब वह विचार अनुभूति की अवस्था तक पहुंच जाता है तो वह प्रेम और भक्ति से गद्गद होकर प्रभु के आगे सर्वतो भाव से झुक जाता है । भक्ति-परिपूरित प्रणाम की यह अवस्था भक्त और भगवान् में, हमारे आत्माओं पर प्रकृति का आवरण चढ़ा रहने से, जो अन्तर प्रतीत होता है, जो दूरी अनुभव होती है, उसे सहन नहीं बनाने देती, भक्त भगवान् से मिलने को तड़प उठता है । भक्त-हृदय की यही तड़प प्रस्तुत मन्त्र में दिखाई गई है ।

भगवान् से मिलने के लिए उतावला भक्त मन में कहता है कि क्या मैं इस अपने शरीर के साथ ही मिला रह कर बोलता रहूंगा ? क्या कभी मेरा इस शरीर से छुटकारा न होगा ? यहां बोलना शरीर के शेष सभी धर्मों का उपलक्षण है । देखना, सुनना, चखना, सूंघना, छूना, विषय करना आदि सभी शरीर के धर्मों की ओर निर्देश करने के लिये यहां 'बोलना' को उपलक्षण रूप में ले लिया गया है । साधकों का अनुभव है कि वाणी का संयम कर लेने पर शेष सभी इन्द्रियों का संयम सुगम हो जाता है । इन्द्रिय जय के मार्ग में एक प्रधान विजेतव्य होने से भी यहां वाणी की मुख्यता दिखाई गई हो सकती है । भक्त की उक्ति लक्षित सभी इन्द्रियों से प्राप्त होने वाले संसार के विषयों में ही सदा फंसा रहूंगा ? क्या इन इन्द्रियों द्वारा किये जाने वाले बन्धन के, दुःख के हेतु सांसारिक कर्मों को ही मैं सदा करता रहूंगा? क्या इस शरीर से—प्राकृतिक विषयों और तज्जन्य बन्धन से—मैं कभी मुक्त न हूंगा, यह अवस्था तो सन्तोष जनक नहीं है । इसका अन्त होना चाहिए ।

इस अवस्था का अन्त तो तभी होगा जब भक्त को वरणीय प्रभु का साक्षात्कार हो जायगा, उसके दर्शन हो जायेंगे । जब वह भगवान् के अन्दर हो जायेगा । उनसे मिल जायेगा, उनकी गोद में जा बैठेगा । भक्त भगवान् की इसी समीपता को प्राप्त करने के लिए तड़प रहा है । उस तड़प से व्याकुल होकर वह बोल उठता है—' मैं वरण करने योग्य प्रभु के भीतर कब हो जाऊँगा । कब वह समय आयेगा जब मैं भगवान को सीधा अपने सम्मुख देखूंगा, जब मैं अपने आप को उन के भीतर उन की गोद में—बैठा हुआ पाऊँगा ?

भगवान् को प्राप्त करने का एक ही उपाय है वह यह कि हम उनका आह्वान करते रहें । उनको पुकार लगाते रहें । उनके विभिन्न गुणों और इन गुणों के द्योतक उनके विभिन्न नामों का रट लगाते रहें । प्रभु का यह आह्वान, उनकी यह पुकार और रट, उनके गुणोंका यह चिन्तन, उनके नामों का यह स्मरण, इतनी गहरी भक्ति, इतने गहरे प्रेम के साथ होना चाहिए कि यह प्रेम और भक्ति हमें अपने अन्दर प्रभु के गुणों को धारण करने के लिये विवश कर डाले । जब हम प्रभु के गुणों और नामों के प्रेम-भरे स्मरण द्वारा प्रभु के गुणों को अपने भीतर धारण करके अपने आप को प्रभु की भाँति निर्मल, निष्पाप और पवित्र बना लेंगे तभी हमें प्रभु के साक्षात्कार होंगे । प्रभु के इस आह्वान द्वारा पवित्र बन गये आत्मा में ही भगवान् का साक्षात्कार, उनकी अनुभूति हो सकती है । इसी लिये इस और अन्य सूक्तों में वर्णित रीति से भक्त वरुण भगवान् के गुण गाता है, उन को 'हव्य'—पुकार—देता है । उनका आह्वान करता है, उनकी रट लगाता है । परन्तु मन्त्र का भक्त प्रभु दर्शन के लिए तड़प रहा है, उतावला हो रहा है । वह इस तड़प के परवश होकर अपने आप ही पूछ बैठता है—मुझ से क्रुद्ध न होकर वह प्रभु मेरी पुकार को क्या सुनेगा ?" मैं भगवान् के गुण-गान में तो लगा हुआ हूं । पर इसका फल भी मुझे मिलेगा ? कभी मुझे भगवान् के दर्शन भी हो जायंगे ? कहीं भगवान् मुझसे अप्रसन्न होकर किया जा रहा सन्देह-प्रदर्शन केवल भ वद्दर्शन के लिए अतिशयित तड़प का, द्योतक है । ऐसी गहरी तड़प से हृदय को भगवान् के दर्शन, जैसा अन्यत्र स्पष्ट वर्णन है, अवश्य होंगे ।

भक्त भगवद्दर्शन के लिए क्यों तड़प वह शरीर और शरीर से उपलक्षित को छोड़ कर, मुक्त होकर, क्यों प्रभु बैठना चाहता है ? इसका उत्तर भक्त के में दिया गया है—" प्रसन्न मन वाल आनन्द दाता वरुण और उस से मि आनन्द को कब देखूंगा ?" वह प्रभु इसलिये करना चाहता है कि उसे आन प्रकृति-प्रपञ्च से हमें, हम जैसा चाह आनन्द नहीं प्राप्त हो सकता । इस के हृदय की यह आन्तरिक इच्छा है कि आनन्द, ऐसा सुख, मिले जिसमें दुःख न हो । जो परिपूर्ण हो, स्वप्न में भी लेश की कल्पना न की जासके, ऐसा दु असंभिन्न, दुःख से सर्वथा रहित सुख करना चाहते हैं । प्रकृति प्रपञ्च हमें य सुख नहीं दे सकता । हम प्रकृति के क्षे ही अधिक उन्नति क्यों न प्राप्त क हमारी परिपूर्णरूपसे सुखी होने की इच्छा नहीं हो सकती । यह ठीक है कि प्रकृ उन्नति करने से भी हमारे अनेक प्रकार जाते हैं और अनेक प्रकार के सुख और इसी लिये हमें प्रकृति क्षेत्र में उन्नति से जो सुख प्राप्त किये जा सकें उन्हें भी का पूरा उद्योग करते रहना चाहिये । प्राय से वेद में प्रकृति-प्रपञ्च से सम्बन्ध विद्या-विज्ञानों का उपदेश और उनमें उ का आदेश किया गया है । किन्तु प्रा से हमारे हृदय की पूर्ण आनन्द करने कभी पूर्ण नहीं हो सकती । प्रकृति प्रपञ्च ही दुःखों और सुखों की मिश्रित अव एक प्रकार के दुःख यदि हम हटा लें प्रकार के दुःख उपस्थित हो जायेंगे । प्रपञ्च में रहते हुए कितने ही दुःख तो उन्हें कभी हटाया ही नहीं जा सकता ।

परिपूर्ण आनन्द प्राप्त करने की इ एक ही अवस्था में पूर्ण हो सकती है । कि हम भगवान् के साक्षात्कार कर वस्था में पहुँच जायें । भगवान् आनन्द त्रिकाल में उनके साथ दुःख का सम्पर्क वे दुःख से सर्वथा असंभिन्न हैं, रहित जहां दुःख का अभाव है वहां आनन्द है । इसीलिये वेद में भगवान् के विषय कि—" रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः " अर्थात्—'भगवान् रस से, आनन्द से, में कहीं से किसी प्रकार की आनन्द नहीं है ।"

जब हमें भगवान् का साक्षात्कार तो उन आनन्द स्वरूप भगवान् की स समीपता, से हमारे आत्मा में भी अस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection Digitized by eGangotri 63 Foundation USA

रविवार १० ज्येष्ठ
वि०सं० २०००

प्रतिनिधियों से निवेदन

...म्न विषयों पर विचार करके आएं

...र्य प्रतिनिधि सभा के आगामी अधिवेशन में ...ालों पर विचार किया जाना अन्तरंग सभा ...ार किया—(१) आचार्य रामदेव स्मारक वेद ...स्थिर कोष तथा कन्या गुरुकुल के लिए एक ...ख रु०की अपील की जावे और धनसंग्रह के ...एक डेपूटेशन बनाया जावे। (२) आर्य प्रति-...सभा पंजाब को ग्राम प्रचार की तरफ विशेष ...देना चाहिए तथा प्रत्येक ग्राम में आर्य ...न स्थापित करनी चाहिए। (३) श्री पं० ...न्न जी मन्त्री आ० प्र० सभा ने निम्न विषय ...र्थ रक्खें हैं—

...तिनिधियों से निवेदन है कि इन विषयों पर ...ी तरह विचार करके आएं।

(१) प्रचार मण्डली। वेद प्रचार प्रणाली में ...न्न प्रचार प्रणाली द्वारा परिवर्तन किया जा ...है उत्सवों की संख्या कम की जा रही है ...ख्यानों तथा मौखिक प्रचार के स्थान पर ...स्पर परिचय तथा सेवा द्वारा जनता में धर्म ...ार करने की कोशिश की जा रही है। जनता ...ा कार्य कर्ता उपदेशकों में स्वाध्याय करने की ...वृत्ति को बढ़ाने के लिये कथाओं द्वारा एक स्थान ...कम से कम ७ दिन रह कर प्रचार करने की ...जाना की जारही है। साथ ही पञ्जाब के हरेक ...लों में उपदेशक महानुभाव को स्थिर रूप से (कम ...कम जिले से बाहर भेजा जाता है) नियत किया ...रहा है। अवैतनिक कार्यकर्ताओं की संख्या ...ढ़ाकर उनके सहयोग से देहातों में विशेष रूप से ...ा कार्य द्वारा प्रचार कार्य किया जाय। (२) ...यानन्द सेवा सदन को पुनः जारी किया जाए ...भा में कम से कम १२ साल की सेवा करने वालों ...ी इस में दीक्षित किया जाय। सेवा सदन के पहले ...यमों आप यदि कोई नियम बदलना चाहें तो वह ...ी लिख भेजें। (३) अन्य उपदेशकों में ग्रेड द्वारा ...तन वृद्धि की प्रथायें। यदि कोई परिवर्तन आप को ...चित प्रतीत होता हो तो वह भी लिख भेजें। (४) ...यानन्द सेवा संघ द्वारा सभा के प्रचार कार्य ...ी संगठित किया जाय! उन्हें अन्तरीय प्रबन्ध में ...र्ण स्वतन्त्रता दी जाय! नान उपदेशकों तथा नान ...चारकों की ओर से कम से कम हस्ताक्षेप हो! ...र्ष भर का बजट नियत कर उन्हें व्यय के लिये ...दिया जाय। सभा के अधिकारी साधारण निरी-...क्षण का कार्य करें। उपदेशकों की वेतन वृद्धि आदि ...कार्य यह संघ स्वयं करें। सभा का प्रधान इस ...संघ का प्रधान हो। संघ का कार्य चलाने के लिये अध्यक्ष कम से कम ५ साल तक कार्य करें।

शिक्षा सम्बन्धी कार्य। (५) इस समय सभा के आधीन दो प्रकार के शिक्षणालय हैं! एक ऐसे शिक्षणालय हैं जो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पद्धति से शिक्षा देते हैं। इनका प्रबन्ध तथा संचालन विद्या सभा द्वारा होता है। यद्यपि विद्या सभा के संगठन में अन्य प्रकार के शिक्षणालयों को भी स्थान दिया गया है। परन्तु क्रियात्मक रूप में केवल गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनुसार चलने वाले शिक्षणालयों का ही इसमें सम्बन्ध है। सरकारी यूनिवर्सिटी की शिक्षा पद्धति से शिक्षणालय बिखरी हुई अवस्था में हैं। कुछेक का सीधा सम्बन्ध सभा से है। कुछेक का स्थानीय समाजों है। कुछेक का शिक्षा समिति से, कुछेक का स्वतन्त्र कमेटियों से। अप्रत्यक्ष रूप में इन सबका आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध है। इन सबको एक सूत्र में पिरोने की आवश्यकता है। परन्तु ऐसा न होने से इस शिक्षणालयों से हमें जितना संगठन बल प्राप्त होना चाहिये, वह प्राप्तनहीं होरहा है, कहीं उदासीनता कहीं पारस्परिक स्पर्धा इनको क्षीण कर रही है। सभा के अधिकारियों ने गुरुकुल को चलाना है और इन शिक्षाणालयों को भी। दोनों की चलाने की कोशिश की जाती है। परिणाम यह है कि कार्य विभाग न होने से दोनों का संचालन सफलता पूर्वक नहीं होता। कई प्रकार की अड़चनें आती है। इसमें भी सन्देह नहीं है कि सभा में दोनों मनोमनोवृत्तियों के व्यक्ति हैं। निर्वाचन के उतार चढ़ाव में एक प्रकार की मनोवृत्ति के दोनों प्रकार के शिक्षणालयों को चलाते हैं। अब ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि दोनों प्रकार की मनोवृत्तियों को अपने २ क्षेत्र में स्वतन्त्र रूप से कार्य करने का अवसर दिया जाय। सभा के अधिकारी निरीक्षण तो रखें, परन्तु नियन्त्रण कन्ट्रोल दोनों मनोवृत्तियों वालों कों अपने २ कार्य क्षेत्र में काम करने के लिये दिया। सरकारी शिक्षा पद्धति से शिक्षा देने वाले शिक्षणालयों के लिये शिक्षा समिति में उचित परिवर्तन करके उसे केन्द्रिय संस्था बनाया जाय। इससे दोनों मनोवृत्तियों वाले व्यक्ति सभा की तथा समाज की रचनात्मक सेवा कर सकेंगे। अन्यथा हानि और शिथिलता ही होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संगठन में परिवर्तन की आवश्यकता मेरी सम्मति में निम्नलिखित परिवर्तन होने चाहिये, (१) प्रतिनिधियों का निर्वाचन करने के लिये साधारण सभा द्वारा एक निर्वाचन समिति बनाई जाया करें जो यथा सम्भव सर्वसम्मति से बनाई जाय। इसके सदस्य अन्तरंग सभा तथा विद्या सभा के सदस्य नहीं बन सकते। अथवा निर्वाचन के नियम इतने स्पष्ट और विस्तार से बना दिये जावें कि किसी को ऐतराज करने की गुञ्जायश न रहे, केवल मात्र कार्यालय के लिये Routine की है वह असन्तोष जनक है,-जो भी पक्ष अल्पमत में होता है वह बहुपक्ष के प्रतिनिधियों को पक्षपात पूर्ण विधि से निर्वाचित हुआ समझता है। यदि निर्वाचन समिति स्वतन्त्र हो तो किसी भी पक्ष को ऐतराज़ करनेका मौका न मिलेगा और जनताको भी मिथ्या भ्रम में न डाला जा सकेगा (२) साधारण सभा के वार्षिक अधिवेशन में स्वीकृत कार्य-क्रम सभा का वार्षिक कार्य-क्रम माना जाय। अल्प पक्ष बहुपक्ष दोनों उसको पूरा करने में सहयोग दें। (३) सभा के प्रतिनिधि जिस, जिले गांव, कसबा, शहरके रहने वाले हों उसी जिले के किसी समाज की ओर से प्रतिनिधि हुआ करें। यह अवस्था नहीं कि पेशावर का रहने वाला हिसार की समाज का प्रतिनिधि हो। प्रतिनिधियों तथा समाजों में अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध पैदा करने की व्यवस्था की जाय, जिससे दोनों एक दूसरे से लाभ उठा सकें। (४) सभा के निर्वाचित अधिकारियों में कोई ऐसा व्यक्ति या अधिकारी न बनाया जाय जो सभा जैसे उद्देश्य रखने वाली संस्था या उसके आधीन संस्थाओं का अधिकारी हो। सभा के अधिकारियों का ध्यान सभा तथा सभा की संस्थाओं की ओर हो। (५) सभा की संस्थाओं तथा सभा के विविध विभागों में कार्य करने वाले वैतनिक या अवैतनिक कार्यकर्ता विद्या सभा तथा अन्तरंग सभा के सदस्य न बनें। यह व्यक्ति अपने पदाधिकार से इन सभाओं के सदस्य सभा अधिकारियों द्वारा नियत किये जायें, जिस प्रकार विद्यासभा में गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य सदस्य बनते हैं, उसी तरह से अंतरंग सभा में वेद प्रचार, उपदेशक विद्यालय तथा दयानन्द सेवा सदन के अध्यक्ष अपने पदाधिकार से सदस्य बनाये जा सकते हैं।

—आर्य्यसमाज मियांवाली का वार्षिक निर्वाचन। प्रधान, डा गुरुदयाल मल्ल जी। उप-प्रधान, म. जीवनदास जी। मन्त्री, म. विशन दास जी। उप-मन्त्री, म. भगवान दास जी। कोषाध्यक्ष, म.टेकचंद जी। पुस्तकाध्यक्ष, म. हीरालाल जी। प्रतिष्ठित सभासद, म. ईश्वरदास जी। म. सुन्दर लाल जी, म. धर्म यश जी। प्रतिनिधि सभा (१) म. जीवनदास जी। (२) म. भगवानदास मैनेजर पुत्री पाठशाला, म. जीवनदास जी।

—आर्य्यसमाज बादामी बाग़ लाहौर वार्षिक चुनाव ६ मई १९४३ को हुआ और लिखित महाशय आगामी वर्ष के लिये अ सभा के सभासद् सर्वसम्मति से चुने गए—

प्रधान, म. गौरी शंकर। उप प्रधा पिशौरी लाल कोहली। म. भोलानाथ। मं. विद्यासागर तकयार। उपमन्त्री, म. व्य कोहली। स्टोर कीपर, म. रामलाल जी कोषाध्यक्ष, म. जगजोध सिंह। सभास द्वारकादास टण्डन। म. चमनलाल। म. बु म. टेकचन्द।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

(ले० श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मंत्री सा० आ० प्र० सभा दिल्ली)

आर्यसमाज का अंतिम लक्ष्य निश्चित है। इसका अंतिम लक्ष्य मनुष्य मात्र को आर्य बनाना है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" यह प्रत्येक आर्य हृदय की भावना है।

आर्यसमाज का स्थायी कार्यक्रम भी निश्चित है। वह उसके नियमों और उपनियमों में स्पष्ट रूप से संनिहित है। प्रचार द्वारा वैदिक सिद्धांतों को फैलाना और मनुष्यों के जीवनों में ढालना आर्यसमाज का ध्येय है। उसकी प्राप्ति के लिये आर्यसमाज प्रचार के सब साधनों को कार्य में लाता है।

लक्ष्य और स्थायी कार्यक्रम के निश्चित होते हुए भी यह आवश्यक है कि समय २ पर प्रचलित कार्यक्रम के सम्बन्ध में पुनर्विचार होता रहे, क्योंकि प्रचलित कार्यक्रम का परिस्थितियों के साथ गहरा सम्बन्ध है और इसमें किसे संदेह हो सकता है कि परिस्थितियां समय के साथ बदलती रहती हैं। जैसे मनुष्य पर देश काल का असर होता है उसी प्रकार मनुष्य समाज पर भी। चारों ओर की दशाओं से प्रभावित होना प्रत्येक परिवर्तन शील वस्तु का गुण है। समाज भी उससे नहीं बच सकता। इस कारण यह आवश्यक है कि हम समय समय पर बदली हुई परिस्थितयों पर विचार कर के अपने कार्यक्रम को उनके अनुसार ही परिवर्तित करते रहें ऐसे परिवर्तन में कोई दोष नहीं है। कार्यक्रम साधन है, साध्य नहीं। साध्य तो हमारा लक्ष्य ही है।

इससे पूर्व भी आर्यसमाज समय २ पर कार्यक्रम में परिवर्तन करता रहा है। यह हो सकता है कि वह परिवर्तन सोच विचार के अनन्तर निश्चयपूर्वक न किया गया हो, प्रत्युत परिस्थितियों के अनुसार स्वयं ही हो गया हो। परन्तु परिवर्तन होता रहा इसमें सन्देह नहीं। एक समय था जब शास्त्रार्थ प्रचार के सर्वोत्कृष्ट साधन माने जाते थे।

आज आर्य समाज के कार्यक्रम में शास्त्रार्थ का बहुत ही गौण स्थान रह गया है। दूसरे युग में संस्थाओं का निर्माण और संवर्धन ही आर्यसमाज की सेवा का बड़ा उपाय समझा जाता था, लेकिन आज हमें यह मानना पड़ेगा कि नई २ संस्थायें खोलने का उत्साह मन्द पड़ चुका है और आर्य समाज की प्रवृत्ति संस्थाओं को छोड़कर फिर प्रचार की ओर जाने की हो रही है।

जब हम कार्यक्रम पर विवेचनात्मक दृष्टि डालते हैं तो सामने कुछ सत्य उपस्थित होते हैं। उनमें से सबसे अधिक स्पष्ट और महत्वपूर्ण सत्य यह है कि आर्यसमाज का जो स्थान सम्पूर्ण समाज में होना चाहिये था वह नहीं बन पाया। यह मानी हुई बात है कि आर्यसमाज का संगठन बहुत मज़बूत है। शायद उससे अधिक परिपूर्ण प्रजातन्त्र विधान भारतवर्ष में दूसरा नहीं है। आर्यसमाज के प्रचारकों ने गत शताब्दी में अपने धर्म के लिये जितने बलिदान दिये हैं उतने अन्य किसी सोसाइटी के प्रचारकों ने नहीं दिये। आर्य समाज के अधिकांश सदस्य मध्यम श्रेणी के हैं। बहुत २ बड़े धनी अथवा रईस आर्यसमाज में बहुत कम हैं। तो भी आर्यसमाज के कार्यों को कभी धन की कमी नहीं रहती। इसका यह कारण है कि आर्यसमाज में त्याग की भावना बहुत अधिक है। इन सब विशेषताओं का यह परिणाम होना चाहिये था कि आर्य जनता का कम से कम भारतवर्ष की सार्वजनिक संस्थाओं में सर्वोत्कृष्ट प्रभाव होता। परन्तु मानना पड़ेगा कि अपनी परिधि के बाहर आर्यसमाज का यथेष्ट प्रभाव नहीं है। जाति की समस्यायें हल करने के लिये जब देश के अगुआ इकट्ठे होते हैं तब वे आर्यसमाज को याद करना आवश्यक नहीं समझते। आर्यसमाज के असन्तोष से अभी लोगों ने डरना नहीं सीखा। विचार करना चाहिये कि इसका क्या कारण है।

शक्ति और मान का अटूट सम्बन्ध है। जिसके पास शक्ति है संसार में उसी का मान हैं वह मनुष्य हो या समाज। यदि वह चाहे कि उसकी बात का आदर हो और वह अपनी इच्छा पूर्ण कर सके तो उसे शक्ति पैदा करनी चाहिये। यदि आर्यसमाज के प्रबल संगठन और असाधारण त्याग के होते हुये भी उसकी आवाज़ में काफी प्रभाव नहीं तो यह स्वीकार करना चाहिये कि इसका कारण शक्ति की न्यूनता है।

प्रचार करने वाली संस्थाओं में शक्ति के दो आधार होते हैं। एक गहराई और दूसरा फैलाव। इसे हम नदी के दृष्टान्त से समझ सकते हैं। नदी के बढ़े हुये प्रवाह में कितनी शक्ति है इसका अनुमान उसकी गहराई और उसके फैलाव से ही लगाया जा सकता है। नदियों की तरह सोसाइटियों की शक्ति भी गहराई और फैलाव इन दो पर ही आश्रित रहती है।

समाज के कार्य की गहराई उसके संगठन की दृढ़ता पर आश्रित रहती है और संगठन की दृढ़ता समाज के सदस्यों की दृढ़ता और उनके परस्पर सम्बन्धों की दृढ़ता से मिल कर बनती है। किसी सोसाइटी के बाह्यरूप के पूरा हो जाने से ही उसका संगठन पूर्ण नहीं हो जाता। बाह्य रूप तो केवल शरीर का ढांचा है। ढांचे को खड़ा रखने के लिये और संसार चोटें सहने के योग्य बनाने के लिए आन्तरिक जीवन शक्ति की आवश्यकता होती है। दृष्टान्त के लिए किसी देश के राज्य संगठन को ले लीजिये। राजा वा राष्ट्रपति उसका मन्त्रिमण्डल और व्यवस्थापिका सभा ये सब राज्य के बाह्य अंग हैं। इन से ढांचा तैयार होता है। वह ढांचा संसार के आघात-प्रतिघातों को सहने और देर तक जीवित रहने के योग्य तभी होता है जब उसकी रक्षा के लिये, उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए और उसे समय के क्षयकार्य से बचाने के लिये कोष और सेना की शक्ति प्राप्त हो। इस शक्ति के बिना कोई राजा चिरकाल तक स्थिर नहीं रह सकता।

सार्वजनिक संस्थायें भी तभी कार्य करने में समर्थ हो सकती हैं और अवश्य भावी आघातों को सह सकती हैं, यदि उनके हाथ में इच्छाओं को पूर्ण करने की और चोटों का मुकाबला करने की आन्तरिक शक्ति है। वह शक्ति दो आधारों पर रह सकती है। प्रथम संगठन [illegible]

चाहे आप संसार की परिस्थिति डालिये और चाहे अपने देश की दशा पर कीजिये तो आपको मालूम होगा कि जीवन प्रतिदिन अधिकाधिक कठिन होता जाता। कारण यह भी आवश्यक है कि हम आर्यसमाज जीवन-शक्ति को अधिकाधिक मज़बूत करें। आर्यसमाज का निम्नलिखित कार्यक्रम विचार परम्परा को सामने रखकर बनाया है। २७ २८ मार्च को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का जो वार्षिक अधिवेशन हुआ था आर्य समाज के कार्यक्रम के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकार किया गया है वह निम्न प्रकार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक कार्यक्रम

सभा भावी तीन वर्षों के लिए आर्यसमाज के लिये निम्न लिखित कार्यक्रम स्वीकार करती है। सभा का यत्न होगा कि सम्पूर्ण आर्य संस्थायें इस कार्यक्रम के अनुसार कार्य करें।

१—स्वाध्याय और सत्संगों द्वारा आर्य नारियों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को उच्च और दृढ़ बनाया जाय।

२—आर्य वीर दल का मज़बूत और व्यापक संगठन बनाया जाय। तीन वर्षों में आर्य वीरों की संख्या कम से कम ३ लाख हो जाय। इन वीरांगनाओं के संगठन पर समान रूप से बल दिया जाय।

३—ग्रामों में वैदिक धर्म प्रचार पर अधिक बल दिया जाय। आर्यसमाज की प्रान्तीय तथा स्थानीय सभायें निम्न लिखित तथा ऐसे ही दूसरे उपायों से ग्राम प्रचार के कार्य को आगे बढ़ायें—

क) ग्राम प्रचार मंडलियों द्वारा।

(ख) औषध वितरण तथा अन्य सेवा कार्यों द्वारा।

(ग) ग्रामों में प्रारम्भिक शिक्षणालय स्थापित द्वारा।

४—दलित और आदिवासी कही जाने वाली जातियों में उच्च जीवन और समानता के वैदिक सिद्धान्तों का क्रियात्मक प्रचार करके उन्हें इस आर्य जाति का दृढ़ अंग बनाने का यत्न किया जाय। सब सामाजिक संगठनों को विशेष रूप करके आस पास के इलाकों में बसी हुई इन पिछड़ी हुई जातियों को आर्यसमाज के दायरे में लाने का भरसक यत्न करना चाहिये।

५—आर्यसमाज मन्दिरों के अग्रभाग का एक नकशा तैयार करके सब आर्यसमाज मन्दिरों की स्थानीय समाजों द्वारा अग्रभाग को उसके अनुकूल बनाया जाय।

६—ऐसे प्रान्तों में जहां आर्य प्रतिनिधि सभा नहीं हैं, प्रचार कार्य को बढ़ाया जाय और [illegible] भील, थिया आदि जातियों में आर्य धर्म का इस मता से प्रचार किया जा सकता है उनमें विशेष रूप से कार्य किया जाय।

आगामी तीन वर्षों का यह स्थायी कार्यक्रम होगा। समय २ पर नई परिस्थितियों के अनुसार जिन कार्यों की आवश्यकता होगी उनके सम्बन्ध में सभा उसी समय उचित आदेश देती रहेगी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

कोई तेरी इन्तज़ार कर रहा है

सत्यभूषण 'योगी' वेदालङ्कार

'बाबू लंगड़े लूले को एक पैसा बाबू.....'

'तेरे बच्चे जीते रहें, बाबू, अंधे मुहताज को एक पैसा.....'

आप किसी भी शहर में हों, आपको ऐसे अनेक दृश्य दृष्टिगोचर होंगे। घर घर में बीमारियां तरह तरह के मानसिक कष्ट! यह सब देखकर दिल में उठता है—कितनी भयङ्कर है यह दुनिया। किसी को शान्ति नहीं। सब तरफ दर्द भरी ठण्डी आहें! पीड़ा भरे चीत्कार !! एक दिन मैंने अपने एक मित्र से कहा—यह कर्मों का फल है। उसने उत्तर दिया कि यों ही है, कर्म वर्म क्या हैं! मैंने कहा कि यों ही कैसे हो सकता है—आखिर यह भेद कैसे है। प्रत्येक कार्य का कारण होता है। कोई जन्म से अंधा पैदा हुआ है और दूसरे की जन्म से बहुत सुन्दर आँखें हैं। ये दो विभिन्न दृश्य यों ही नहीं हैं। किसी खेल करने वाले ने खेल किया हो, ऐसी बात नहीं है। यदि उसने ऐसा निर्दय खेल किया होता तो दुनिया को इतना खूबसूरत क्यों बनाता। हँसते मुसकराते रंगबिरंगे फूल, प्यारी प्यारी तितलियां, नाचती हुई नदियां, झिलमिलाते तारे, मीठे मीठे फल, अरुणाभा से अलंकृत ऊषा व संध्या—सब कुछ सुन्दर है। जिसने यह दुनिया बनाई है, उसका उद्देश्य है कि सब हँसती हुई प्रकृति के समान हँसते रहें, मुसकराते रहें, खिलखिलाते रहें, नाचते रहें, मस्ती के गीत गाते रहें। मेरे मित्र ने कहा—फिर दुनिया में यह हाहाकार क्यों, बीमारियों का प्रकोप क्यों, कुत्सित दृश्यों की भरमार क्यों? "इसका उत्तर स्पष्ट है" मैंने कहा "मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। जगत् के बनाने वाले का जहां तक बस चलता है, वह सुन्दर ही बनाता है, यदि हमारे कर्म बीच में न आ अड़ें। वेद में एक मंत्र है 'इन्द्रश्च मृडयाति नो न नः' पश्चद् घ्नघं नशत। भद्रं भवाति नः पुरः। (वेद) अर्थात् इन्द्र (परमेश्वर) निश्चयसे हमें सुखही देते हैं। हमारे पीछे पाप न लगे तो हमारे सामने कल्याण ही होत रहे।

उदाहरण के तौर पर कल्पना कीजिए कि एक कुम्हार घड़ा बना रहा है—आप बीच में जाकर हाथ अड़ा दीजिए—घड़ा टेढ़ा हो जाएगा। अब टेढ़ा घड़ा बनने में क्या कुम्हार का दोष है। उमर खय्याम की सम्मति में कुम्हार का दोष है। वह कहता है कि 'टेढ़े मेढ़े पात्र का क्या दोष यदि कुम्हार कुम्हार का हाथ कांप गया।' पर तात्विक दृष्टि से देखा जाए तो पता चलेगा कि कुम्हार का हाथ नहीं कांपता—हमारे कर्म आकर अपना हाथ अड़ा देते हैं।

यह सारा ब्रह्माण्ड एक व्यवस्था में चल रहा है। सारी दुनिया एक नियम में बँधी है। सृष्टि का निर्माण, तारों की गतियां—फलों का पकना आदि सब काम नियम से ही होते हैं। तो क्या भगवान् की सर्वोत्तम कृति मनुष्य के सुख दुख बिना व्यवस्था व नियम के होंगे! कभी नहीं। मनुष्य के सुख दुख ऐसी कड़ी व्यवस्था से चलते हैं जैसे गणित के नियम।

तो क्या ईश्वर को हमें दुःख देने में मजा आता है? नहीं उसे दुख देने में मज़ा क्यों आने लगा। वह तो मनुष्य से प्यार करता है। वह तो स्नेह भरी मां है, जब बच्चे को गन्दगी से भरा देखती है तब साफ करने लग जाती है, और बच्चा समझता है—हाय, हाय, मुझ पर अत्याचार किया जा रहा है।

जिनको हम दुःख समझते हैं ये वस्तुतः दुःख नहीं होते। यह तो शुद्धि का काल होता है। जो इस तत्व को समझते हैं, समझदार होते हैं, वे हँसते रहते हैं। और वे कहते हैं 'नमोऽस्तुते निर्ऋते तिग्मतेजः।' (वेद) अर्थात् 'हे भारी विपद् मैं तुझे नमस्कार करता हूँ।' दुःख तो मैल साफ करने वाली जल की धारा है—इसमें तैरना सीखें तो हमारे दुख भी सुख बन जाएं। जगदम्बा का अपने पुत्रों से कितना स्नेह है—

इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे।
यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः॥ (वेद)

अर्थात् 'यह कल्याण स्वरूपिणी देवता कभी न जीर्ण होने वाली है। यह मरणशील मनुष्य के घर में (शरीर में) धारण कीगई है और न मरने वाली है। किंतु जिसके (जिस जीव के) लिए यह धारण कीगई है वह सोया पड़ा है और इसे जिसने (जिस शरीर ने) धारण किया है, वह भी जीर्ण होता जाता है।' पर मनुष्य अपनी मां को कब देखता है? हम कुत्सित कर्म करने से बाज़ भी तो नहीं आते। जिसे भगवान ने सुन्दर नेत्र दिए हैं—यदि वह उन्हें खराब कामों में उपयोग में लाता है तो निश्चित ही बिगड़ जाएंगे, फिर अंधा हो जाने पर भगवान को क्यों दोष? बलवान हाथ मिले थे, उनसे दुर्बलों को सताया—लूला हो जाने पर गिला क्यों? पैरों से सत्य को ठुकराया—पंगु हो जाने पर क्रोध क्यों? मुख से दिन रात अपने भाइयों को कटु वचन कहे फिर गूंगा होने पर अन्याय की चीख क्यों? तुम्हें अच्छी चीज़ दी गई तुमने उपयोग न जाना, छीन ली गई तो क्या बुरा किया गया? दुनिया में दुःख नाम की कोई चीज़ नहीं। प्रत्येक दुख सुख के महल पर चढ़ने की सीढ़ी का एक डण्डा है—महल से जो गिर गया है उसे काठ की कठोर सीढ़ी पर चढ़ने की थोड़ी सी तकलीफ उठाते हुए बुड़बुड़ क्यों करनी चाहिए। यह तो कायरता है। यदि तुमसे गलती हुई है तो उसका परिणाम हँसते हँसते सहो। गलती का फल तो तुम्हें मिलेगा ही। कुनैन मुंह में डाली है, कड़वी लगेगी ही—पर तुम्हें हँसने से किसने मना किया है?

गिरना कमजोरी है, पर चोट लग जाने पर ऊं ऊं करना शुरू कर देना कायरता है, मनुष्य की अमर आत्मा की शक्ति पर कलङ्क है। जीवन के पथपर अकड़ते हुए चलो।

हे मानव, संसार तुम्हारी क्रीड़ा स्थली है। तुम्हारे सर्वव्यापी मातापिता ने तुम्हारे लिए इसमें सब सुखके साधन उपस्थित किए हैं, इनका उपभोग करो। उपभोग ही करो, ऐसा न हो कि भोग तुम्हें ही भोगने लग जाएं, रोटी तुम्हें ही खाने लग जाए। स्नेहमयी विश्वमाता ने सम्पूर्ण विश्व में मधुर

खोल कर देख, अपने चारों तरफ और अपने अन्द बाहर हंसती हुई प्रकृति—अन्दर महान् सुख मुर कान व शान्ति। मन-अश्व की लगाम अपने में रख, फिर पथ यदि ऊंचा नीचा भी होगा भी कोई गिरने का डर नहीं। यदि लगाम ह से निकल जाएगी तो सीधे सरल पथ पर भी गि जाएगा। ढीले ढाले पैरों से न चल; ऐसे चले तो मिट्टी के ढेले से भी टकरा कर गिर जाएगा। पैरों में शक्ति भर कर जीवन पथ पर चल; पत्थ भी राह में आएगा तो एक तरफ हट कर अप किस्मत को कोसेगा। अपने पर विश्वास रख तेरे अन्दर बहुत शक्ति भरी है। तेरे जैसे इन्सानों ने समुन्दर को बांध लिया है, और आस मान को बांधने की तैयारी में हैं। तू अप किस्मत का बनाने वाला है। जैसा तू सोचेग वैसा ही बन जाएगा। हँसता हुआ, प्रकृति की गो में खेलता हुआ, अपने भाइयों की मदद करता हुआ पथ पर बढ़ता जा, मंज़िलेमकसूद पर बैठा हुआ कोई तेरी इन्तज़ार कर रहा है।

भारत में स्वतन्त्रता की प्रबल भावना है

अभी हाल ही में भारत का दौरा करने वा तुर्क पत्रकार मंडल के एक सदस्य श्री एम. नेक तीन सादक ने तुर्की के "आवशाम" नामक पत्र लिखते हुए बताया है कि "भारत में स्वतन्त्रता मात्रा देखकर हमें आश्चर्य हुआ। वहां के पत्रों यहां तक लिखने का साहस किया कि सरक द्वारा आयोजित यात्रा में भारत सरकार तुर्की प कारों को वास्तविक भारत नहीं दिखा सकती उन्हें तो गावों में जाकर गरीबी से मरती जनता और जेलों में बन्द राष्ट्रीय नेताओं से भ करनी चाहिए।"

आर्य समाज माडल टाऊन

सूचनार्थ निवेदन है कि पिछले रविवार ६.५. को आर्य समाज का वार्षिक चुनाव हुआ जिस निम्न पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—ला. किशनचन्द जी खोसला। उपप्रध पं. भगवद्दत्त जी, कविराज हरनामदास जी। मंत्री ला. चांदमल जी खन्ना। उपमंत्री—पं. तुलसीराम पं. व्रतपाल जी। कोषाध्यक्ष—ला. सलामतराय जी पुस्तकाध्यक्ष तथा वस्तुभंडारी—ला. दसौंधीराम, अधिष्ठाता पुत्री पाठशाला—प्रो. शिवदयालु जी आय व्यय निरीक्षक—ला. दरयाइमल जी।

५०० रु० के नोट आग में

आजमगढ़ से खबर आई है कि नमी गांव एक ब्राह्मण मार्कंडेय के मेले से ४०० रु० की बैल की जोड़ी खरीद कर लौट रहा था। रास्ते एक अन्य व्यक्ति ने वह जोड़ी उससे ५०० रु खरीद ली। ब्राह्मण को जब यह मालूम हुआ खरीदार कसाइयों का एजेन्ट था। उसको इ दुःख हुआ कि उसने ५०० रु. के नोट आग में दिए। इस पर भी उसकी जाति वालों ने उसेभी मांग कर प्रायश्चित्त करने के लिए बाध्य किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्शन

श्री प्रो० गुलाबराय

यद्यपि अध्यात्म विषय अमूर्त है तथापि भारतवर्ष में यह दर्शन यानी देखने का ही विषय माना गया है। 'आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः, श्रोतव्यो, मन्तव्यो, निदिध्यासितव्यः' 'तं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः' आदि वाक्यों में आत्मा के लिए दर्शन ही शब्द का प्रयोग किया गया है, क्योंकि ज्ञान के साधनों में दर्शन ही मुख्य है। दर्शन शब्द ही हमारे ज्ञान को केवल विवेचना का विषय न बना कर अनुभव का विषय बनाता है। यद्यपि दर्शन का विषय अध्यात्म माना गया है तथापि उसका विषय है तत्त्व-ज्ञान और चूंकि आत्मा तत्त्वतत्त्व है इसलिये उसको अध्यात्म में विशिष्ट कर दिया है। उसमें और तत्त्वों का निषेध नहीं है। 'सर्वे पदाः हस्ति पदे निमग्नाः' सारे ही विषय दर्शन के अन्तर्गत आ जाते हैं। सारे विज्ञानों के अन्तिम तत्त्व दर्शन के अन्तर्गत हो जाते हैं। उनसे ही सब ज्ञानों की पूर्ति होती है। इसीलिये कहा है—

प्रदीपः सर्व विद्यानां उपायः सर्व कर्मणाम्।
आश्रयः सर्व धर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता॥

विज्ञान द्वारा आप पदार्थों का विश्लेषन करते जाइए किन्तु कुछ अन्तिम तत्त्वों पर रुक जाना पड़ेगा। रसायन शास्त्र ने बानवे तत्त्व माने हैं। विद्युत् शक्ति के रूप में उनके एकीकरण का भी प्रयत्न किया गया है। फिर प्रश्न उठता है कि विद्युत केन्द्र क्या हैं? ये सादि हैं वा अनादि, उनकी सत्ता स्वतन्त्र है अथवा मन के सापेक्ष। इसी प्रकार प्राणि-शास्त्र में जीवित पदार्थ के विश्लेषण पर हम को ठहरना पड़ता है। जीवित पदार्थ का विश्लेषण करते ही वह जीवित नहीं रहता। जीवन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों को कल्पना की बड़ी-बड़ी ऊँची उड़ान लेनी पड़ी, कोई तो कहता है कि जीवन किसी नक्षत्र से आया और कोई कहता है कि स्वतः उत्पन्न हुआ। यह कहते ही अभाव से भाव की समस्या आ जाती है, फिर भी लौट फेर कर हम को दर्शन शास्त्र के आगे त्राहिमाम्! त्राहिमाम्! की पुकार करनी पड़ती है। यह तो रहा कल्पना और विचार का क्षेत्र, किन्तु व्यावहारिक क्षेत्र में भी चाहे वह कानून का हो चाहे राजनीति का, अन्त में 'बोहत के काग' की भाँति दर्शन शास्त्र का ही आश्रय लेना पड़ता है। गणित के अन्तिम तत्त्व जो देश काल, और संख्या से सम्बन्ध रखते हैं दर्शन के ही विषय हैं। अरूप, जड़, जंगम, चेतन, अचेतन, प्रकृति, जीव, ईश्वर आदि सभी के अन्तिम तत्त्वों का विवेचन दर्शन शास्त्र का विषय है। उसके लिए 'अणोरणीयान् महता महीयान्' एक सा महत्त्व रखते हैं। वह ब्रह्म जिसके लिए कहा गया है कि 'बुद्धि में है पर बुद्धि न जानत, चित्त में है पर चित्त न पावे। शब्द में है पर शब्द थक्यो कहि शब्दहु सुन्दर दूर बतावै' से लगा कर रसायन शास्त्र के विद्युत् अणु और प्राणि-शास्त्र के सूक्ष्मातिसूक्ष्म कीटाणु भी विचार और विवेचन का विषय बन जाते हैं। हमारे सारे जीवन का दृष्टिकोण भी दार्शनिक विचारों पर निर्भर रहता है। हमारा पुरुषार्थवादी होना या भाग्यवादी होना'। संकल्प को स्वतन्त्र मानना या परतन्त्र मानना, संसार को सत्य मानना वा मिथ्या मानना, आत्मा को अमर वा नश्वर मानना ये सब बातें हमारे चरित्र और क्रियाकलाप में अन्तर डालती हैं। इसलिए दर्शन और धर्म सांसारिक अभ्युदय और पारमार्थिक निःश्रेयस दोनों के साधन होते हैं।

यदाभ्युदयिकं चैव नैःश्रेयसिकमेव च,
सुखं साधयितुं मार्गं दर्शयेत् तद्धि दर्शनम्।

पूर्वी-पश्चिमी दृष्टिकोण

पूर्व और पश्चिम के दृष्टिकोण में पूर्व और पश्चिम के बराबर तो भेद नहीं है किन्तु उसमें भेद अवश्य है। अंगरेजी शब्द Philosophy का अर्थ है ज्ञान का प्रेम। उनके लिए जड़ और चेतन का सम्बन्ध अर्थात् प्रत्यक्ष की समस्या सब से महत्त्व की है। वे द्रष्टा और दृश्य, प्रमाता और प्रमेय के फेर में अधिक पड़े हैं। हमारे यहां के लोग दुःख की समस्या से अधिक प्रभावित हैं। हेय (दुख का स्वरूप), हेय हेतु (दुख के हेतु) हान (दुख के अभाव का स्वरूप यानी मोक्ष या निर्वाण), हानोपाय (दुःख-निवृत्ति के साधन) इन बातों का विवेचन ही सभी आस्तिक और नास्तिक भारतीय दर्शनों का मूल उद्देश्य है। भारतीय दर्शनों का उद्देश्य व्यावहारिक है, यूरोप के दर्शनों का उद्देश्य बौद्धिक। भारतीय दार्शनिक यूरोप की दार्शनिक समस्याओं पर दूसरे मार्ग पर पहुंचे हैं। भारतीय दार्शनिक दुःख का मूलकारण अविवेक मानते हैं। इस अविवेक को दूर करने के लिए वे आत्मा और अनात्मा के विवेक की बात चलाते हैं और इसी सम्बन्ध में यूरोप की सारी दार्शनिक समस्याएँ आ जाती हैं।

हमारा भविष्य

भारत का दार्शनिक अतीत स्वर्णमय है। उस का भविष्य भी ऐसा ही होगा।

दर्शनशास्त्र के सम्बन्ध में हमारे पास पैतृक सामग्री पर्याप्त मात्रा में है। यदि हम उसका सदुपयोग करें तो, फिर विचारों के साहूकार बन सकते हैं। परमेश्वर करे कि वह दिन आवे जबकि भारतवर्ष फिर जगद् गुरु के आसन पर प्रतिष्ठित हो।

'जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ'

——

हरिद्वार में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की दर्शन परिषद् के सभापति पद से दिए गए श्री प्रो० गुलाबराय के भाषण के कुछ अंश।

चर्चिल के जीवनकाल में ही ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त

लन्दन ४ मई न्यूयार्क 'डेली न्यूज़' ने एक अग्र लेख में लिखा है:—कितने ही साम्राज्य पैदा हुए पनपे और नष्ट हो गये। सम्भव है कि ब्रिटिश साम्राज्यभी अपने अन्तिम सांसें गिन रहा हो। यह भी सम्भव है कि मशीनों के चलाने के लिये जब से कोयले के स्थान पर तेल का उपयोग होने लगा तभी से ब्रिटिश साम्राज्य का पतन शुरू हो गया जब जहाज कोयले से चलते थे, तब ब्रिटेन ने दुनिया भर में कोयला भरने वाले गोदाम बना रखे थे और उन पर कब्जा रखने के लिये लड़ाकू जहाज बनाये थे। हम ब्रिटिश साम्राज्य की भलाई चाहते हैं इसमें तर्क की गुन्जाइश नहीं। हम यह भी ठीक समझते हैं कि सुदूरपूर्व में साम्राज्यों का अन्त शुरू हो चुका है। सम्भव है कि समय की गति श्री चर्चिल के प्रतिकूल प्रमाणित हो और उनके देखते-देखते ही ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त हो जाए, चाहे श्री चर्चिल उससे पहले ही इस्तीफा क्यों न देदें।

स्वाध्याय के लिए उपयुक्त ग्रंथ

१. वैदिक विनय (२य और ३य भाग)—ले० (१ भाग समाप्त) आचार्य अभय देव जी। मू० १) प्रति भाग
२. सोम सरोवर—ले०श्री पं०चमूपति जी एम.ए. मू० सजिल्द १॥), अजिल्द सवा रु०।
३. वेद गीतांजलि—संग्रह कर्ता मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी। मू० २)
४. स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश (तीन भाग) संगृहीता ला० लब्भूराम जी नैयड़ ३।) सैट।
५. वृहत्तर भारत—ले० श्रीयुत पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार मू० ४॥।)
६. आत्म मीमांसा—ले० श्री० प्रो० नन्दलाल जी खन्ना मू० २)
७. ब्रह्मचर्य सन्देश—ले० श्रीयुत प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार मू० २)
८ शिक्षा मनोविज्ञान—ले० श्रीमती चन्द्रावती जी लखनपाल एम. ए. बी. टी. मू० २)
९. स्त्रियों की स्थिति—लेखिका श्री० चन्द्रावती जी लखनपाल एम. ए. बी. टी, मू० १।)
१०. सन्ध्या सुमन—ले० श्री पं० नित्यानन्द जी वेदालङ्कार मू० १)
११. जल चिकित्सा विज्ञान—ले० श्रीयुत पं० देवराज जी विद्यावाचस्पति मू० १॥।)
१२. हिन्दी निरुक्त भाष्य—ले० पालिरत्न श्रीयुत पं० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार। मूल्य ७)
१३. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या—लेखक श्रीयुत पं० प्रियरत्न 'आर्ष'। मूल्य १॥)
१४. त्रिफला—ले० रामेशबदी आयुर्वेदालंकार। मूल्य १॥)

मिलने का पता:— पुस्तक भण्डार,
गुरुकुल कांगड़ी, ज़िला सहारनपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

पं० यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार वेद प्रचाराधिष्ठाता

१. सब आर्य समाजों को सूचित किया जाता कि म० मेलाराम जी भजनोपदेशक को नियम भंग करने के कारण से इस सभा से पृथक कर दिया गया है। भविष्य में कोई आर्य समाज इन्हें इस सभा के हिसाब में धन न दें।

२. आर्य समाज कामोकी ज़िला गुजरांवाला का उत्सव १४ से १६ मई को बड़ी धूमधाम से समाप्त हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ़ से इस उत्सव में श्री आचार्य बुद्धदेव जी, श्री पं० लोकनाथ जी, श्री पं० रामस्वरूप जी पाराशरी, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज, श्री प्रो० सुखदेव जी गुरुकुल कांगड़ी, श्री पं० हरीदेव जी, श्री पं० दुलीचन्द जी श्री पं० तीर्थराम जी, हंसराज जी, म० जहरचन्द जी, म० हजारीलाल जी म० गुलशनलाल जी सम्मिलित हुए। १६ मई को श्री आचार्य बुद्धदेव जी का स्टेशन पर शानदार स्वागत किया गया। और सारे शहर में उनका जलूस निकाला गया। श्री आचार्य बुद्धदेव जी के कामोकी पधारने से वहां की जनता में आर्य समाज के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव पैदा हुआ। रात को श्री आचार्य जी ने हजारों की उपस्थिति में व्याख्यान दिया और आर्य पुत्री पाठशाला के लिये अपील की। उनकी अपील पर १०००० एकत्रित हुआ। वहां के लोगों का यह कहना है कि इतना सफलता पूर्वक उत्सव कई वर्षों के पश्चात् हुआ है। आर्य समाज कामोकी ने २००) वेद प्रचार विभाग को सहायता दी।

३. आर्य समाज स्यालकोट शहर कथा द्वारा अपना उत्सव मना रहा है। श्री पं० गुरुदत्त जी स्नातक तथा म० मेहरचन्द जी वहां कथा कर रहे हैं। रविवार के दिन श्री आचार्य प्रियव्रत जी विशेष व्याख्यान के लिये पधार रहे हैं।

४. सब आर्य समाजों की सेवा में सूचित किया जाता है कि म० राजपाल जी चिमटा मंडली वाले दोनों सभाओं के साथ आर्योचित व्यवहार नहीं कर रहे। वे दोनों सभाओं के अधिकारियों से मिल कर इस बात का यत्न करते रहते हैं कि दोनों सभाएं उन्हें अपने यहां रखलें और फिर उन से नियुक्ति प्राप्त करके उसका दुरुपयोग करते हैं। आर्य जनता को इन से सावधान रहना चाहिये।

५. आजकल गरमियों के कारण उत्सव आदि कम है जो समाजें अपने यहां प्रचार कराना चाहें वे शीघ्र सभा में सूचित करें। ताकि प्रचार का प्रबन्ध किया जाय।

६. श्री पं० विश्वनाथ जी भूतपूर्व वेदोपाध्याय गुरुकुलकाङ्गड़ी स्थिररूप से लाहौर आगये है। आर्य समाजों को उनकी योग्यता तथा विद्वत्ता से लाभ उठाना चाहिये। वेद के सम्बन्ध में जिन महानुभावों को जो शंकायें हों वे उन का समाधान उनके द्वारा

गुरुकुल-कांगड़ी के समाचार

नवीन-सत्रारम्भ

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के समाप्त हो जाने के पश्चात् समस्त गुरुकुलवासी नये उत्साह के साथ कार्य में लग गए हैं। वातावरण में स्फूर्ति और ताज़गी नज़र आती है। विद्यालय तथा महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने नए वर्ष का पाठ्यक्रम लगन के साथ पढ़ना प्रारम्भ कर दिया है। ब्रह्मचारियों की सभाएँ, गोष्ठियाँ तथा व्यायामादि पूर्ववत् जारी हो गए। ग्रीष्म-ऋतु होने के कारण विद्यार्थी-गण तैरने में विशेष दिलचस्पी ले रहे हैं। इस ऋतु के अन्त में पंच-पुरी तैरी सान्मुख्य बड़ी तैयारी के साथ किया जायगा।

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

इन दिनों गुरुकुल में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अत्युत्तम है। ऋतु परिवर्तन के कारण थोड़े ब्रह्मचारी चिकित्सालय में नज़र आते हैं। गतवर्ष छात्रों के भार में सन्तोष-जनक वृद्धि हुई है। चिकित्सक-महोदय तत्परता के साथ स्वास्थ्य की देख रेख करते हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय

गुरुकुल का आयुर्वेद-महाविद्यालय बड़ी तत्परता के साथ कार्य कर रहा है। आस-पास के इलाकों से प्रतिदिन बड़ी संख्या में आकर रोगी गुरुकुल की धर्मार्थ चिकित्सा से लाभ उठा रहे हैं। आयुर्वेद महाविद्यालय में स्टाफ़ में वीरेन्द्र जी एम०बी०बी०एस० की नवीन नियुक्ति हुई है। आशा है इन से आयुर्वेद महाविद्यालय पर्याप्त लाभ उठावेगा।

---

१ मुफ्त व ६ आधी फीस पर दाखिल किए जाएंगे

इस वर्ष गुरुकुल भटिण्डा में एक हरिजन विद्यार्थी मुफ्त और पांच अन्य विद्यार्थी आधी फीस पर हिन्दी रत्न में लिये जावेंगे। प्रार्थनापत्र १५ जून तक मुख्याधिष्ठाता के नाम पहुंचने चाहिएँ।

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक उन्नति

श्री पं० ठाकुदत्त जी वैद्य अमृतधारा कृत नवीन उर्दूपुस्तक अभी-अभी प्रकाशित हुई है। जिसमें हर प्रकार के व्यायाम तथा आसनों द्वारा शरीर को बल बढ़ाने की विधि बड़ी उत्तमरीति से पेश की गई है। मूल्य ॥।)

श्री चमूपति साहित्य विभाग

गुरुदत्त भवन, लाहौर।

(पृष्ठ २ का शेष)

संक्रान्त हो जाता है। जैसे चुम्बक की समीपता से कच्चे लोहे का टुकड़ा भी चुम्बक गुणाविष्ट हो जाता है वैसे ही आनन्द के महान् चुम्बक प्रभु की समीपता से हमारा आत्मा रूप कच्चा लोहा भी आनन्द गुणाविष्ट हो जाता है। उस समय हमारे आत्मा में अद्भुत सन्तोष, तृप्ति, शान्ति और सुख की अवस्था होती है। इस रस में, इस आनन्द में दुःख का लेश भी नहीं होता। यह आनन्द परिपूर्ण होता है आनन्द को द्योतित करने के लिए मन्त्र में 'मृडीक' शब्द आया है। मृडाक का अर्थ आनन्द का देने वाला भी होता है। यदि हम 'मृडीक'—आनन्द—प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें 'मृडीक'के—आनन्द के दाता भगवान् के—दर्शन करनेहोंगे, उन्हें पहिचानना होगा, उनके भीतर रमना होगा, उनकी गोद में बैठना होगा। भगवान् के साक्षात्कार के विना, प्रकृति-प्रपञ्च को छोड़कर मोक्ष की अवस्था प्राप्त किये विना हमें पूर्ण सुख नहीं मिल सकता। पूर्ण सुख के अभिलाषी को भगवान् का वरण करना चाहिये, उनका हाथ पकड़ना चाहिये। पूर्ण सुख की प्राप्ति के लिये भक्तों द्वारा वरण करने योग्य होने से ही भगवान् को वरुण कहा जाता है।

पूर्ण सुख के अभिलाषी हे मेरे मन! अपने हृदय में भगवान् के लिये तड़प उत्पन्न कर।

नोट—पिछले अंक में प्रकाशित 'नभो मण्डल का चितेरा' शीर्षक लेख भी श्री पं० प्रियव्रत जी का ही लिखा हुआ है। भूल से नाम देना रह गया था।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २॥)	Immortal Sayings ofDayanand		।)
जीवन ज्योति १॥)	दयानन्द रत्न माला		।)
स्वाध्याय संग्रह ॥।)	वैदिक धर्म की जय		॥।)
वैदिक स्वर्ग ॥।)	यास्क युग		॥।)
स्वर्ग ।=)	सभा इतिहास		२)
देव यज्ञ	।)	GlimpsesofDayanand	१।)
पीयूषबिन्दु	।=)	त्रिदेव निर्णय	॥।)
		निरुक्त का मूल वेद में	।=)

आर्य्य समाजों को सारा सैट मंगवाने पर कमिशन भी दिया जावेगा। निम्न पुस्तकें पूरे दाम पर मिल सकेंगी।

Hindu America५) Light of Truth ३)

अध्यक्ष श्री चमूपति साहित्य विभाग

गुरुदत्त भवन, लाहौर।

भूल सुधार

गत अंकमें श्री लब्भूरामजी नैयड़ के लेखमें कुछ प्रूफ की गलतियां रहगई हैं। कृपया पाठक सुधारलें श्री लब्भूराम जी नैयड़ सन् १८८६ में आर्य समाज के सदस्य बनें। गुरुकुल के लिए अभी तक १६५५०० चन्दा कर चुके हैं। दो लाख पूरा करने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

—मन्चेस्टर गार्जियन का ख्याल है कि सर

अफ्रीका में सभ्यता फैलाने वाले आर्य लोग थे

[ले०—श्री जैमिनी मेहता]

प्राचीन समय में अफ्रीका और एशिया परस्पर मिले हुये थे, प्रोफेसर गरेगोरी अपनी पुस्तक हाइड्रोग्रैप्सी में लिखता है—

अत्यन्त प्राचीन काल में अफ्रीका और एशिया परस्पर मिले हुए थे। पूर्वी अफ्रीका का विशाल क्षेत्र भारत से मिला हुआ था, उत्तरी भारत सागर उस समय थल था, वहां जल न था। 'बिलफर्ड' महोदय लिखते हैं कि जहाँ इस समय मरुभूमि है वहाँ सागर था। इसलिए पूर्वी अफ्रीका पश्चिमी से अलग था, उत्तरी अफ्रीका यूरुप से मिला हुआ था, पूर्वी अफ्रीका का नाम कुश इरेप था क्यों कि राम के सुपुत्र कुश की सन्तान व प्रजा ने प्रस्थान करके उसे आबाद किया और अपने पूर्वज राजा के नाम पर उसका नाम रखा। पश्चिमी भाग का नाम श्यामद्वरेप था अन्त में वह लिखता है न केवल मिस्र तथा नील के तट के ही सब देश किन्तु सारे अफ्रीका का नाम प्राचीन समय में "आर्य देश" था क्यों कि सबसे पहले आर्य लोगों ने ही वहाँ जाकर अनेक उपनिवेश आबाद किये।'

महाशय ओझा ने पूर्वी अफ्रीका की तमाम बोलियों को संग्रह करके सिद्ध किया है कि यह सब बोलियां संस्कृत से निकली हैं।

अफ्रीका निवासियों के विषय में कई जातियाँ जैसे 'बन्तू' तथा 'मसाई' जातियों के लोग अपने संस्कार तथा रसूम हिन्दुओं के समान करते हैं। महोदय बरटन अपने 'अफ्रीका की कहानी' में लिखते हैं क मसाई जाति के लोग जाति कर्म तथा विवाह संस्कार अग्नि के सन्मुख करते हैं और जो कुछ वहाँ बोलते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि अथर्ववेद के मन्त्र उच्चारण कर रहे हैं। उनका अतिथि सत्कार तथा पूजा विधि सर्वथा हिंदुओं से मिलती जुलती है।

हावले महोदय अपनी पुस्तक 'बन्तू जाति के मन्तव्य तथा जादू" में लिखते हैं कि दक्षिणी अफ्रीका के बन्तू लोग जुवार बाजरा तथा दूध पर निर्वाह करते हैं, मांस नहीं खाते इसी प्रकार खोज करने पता चलता है कि अफ्रीका को भारत निवासियों ने ही जाकर आबाद किया और अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को फैलाया।

मारको पोल यात्री ने अफ्रीका की यात्रा की तो उस समय अबीसीनिया का नाम मध्यभारत था, कास्पियन सागर तथा सेहून नदी के मध्य का प्रान्त भारत और अथोपिया कहलाता था, अकाबिया का नाम श्वेत भारत तथा ईरान का नाम पीला भारत था, यह आइसोडोरस ऐतिहासिक का मत है।

अब भी अफ्रीका में चन्द्रस्थान (सामगिरि पहाड़) अमर अम्ब आदि स्थान विद्यमान हैं। वर्तमान समय के खोजों ने सिद्ध कर दिया है कि प्राचीन समय में अफ्रीका व्यापार का केन्द्र था, भारतीयोंने जाकर आबाद किया वहां पर अपना धर्म तथा सभ्यता फैलाई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

"मूर्खों के स्वर्ग में रहते हैं"

ब्रिटेन वासियों को भारत की बाबत पर्याप्त जानकारी नहीं

एक अंग्रेज पत्रकार के उद्गार

बम्बई २७ अप्रैल। "साम्राज्यवाद का पुराना खयाल मर चुका है और उसे इंग्लैण्ड में हमेशा के लिये दफना दिया गया है। अब यह बात विचार में भी नहीं आ सकती कि कोई दूसरा रुडयार्ड किपलिंग पैदा होगा।"

ये शब्द ब्रिटिश पत्रकार श्रीवीवरले निकोलस ने कल शाव यहां जर्नलिस्ट क्लब में भाषण करते हुए कहे।

प्रश्नों की एक बौछार का उत्तर देते हुए श्रीनिकोलस ने कहा—हाल में ब्रिटेनको आम जनता बहुत कुछ बदल गई है, लेकिन हमारी पार्लियामेन्ट आज भी पुराने जमाने की है और वह उन क्रान्तिकारी भावों को प्रगट नहीं करती जो ब्रिटिश स्त्री-पुरुषों के दिलों में मौजूद हैं हमारे देशने अर्थिक दिशा में काफी क्रान्ति की है। अब वहां एक व्यक्ति की साधारण आय में अधिक नहीं लेने दिया जाता। यह सम्भव है कि कुछ धनी लोग अपनी पूँजी के बल पर विलासी जीवन व्यतीत करते हों, लेकिन यह निश्चित है कि धनिकों का प्रभाव बिल्कुल खत्म हो गया है। इस समय आम प्रजाजने रूस में पर्याप्त दिलचस्पी रखते हैं।

इसके बद श्री निकोलस ने युद्ध में शान्तिवाद की निन्दा की और कहा—भारतीय समस्या के प्रति ब्रिटिश लोगों में अनुराग उत्पन्न हो रहा है और ब्रिटिश लोग अपने नेताओं की अपेक्षा अधिक प्रजातन्त्रवादी है। लेकिन मैं यह कहूंगा कि भारतीय ब्रिटिश लोगों पर विश्वास नहीं करते और मुझे बतलाया गया है कि ब्रिटिश लोग भी भारतीयों पर भरोसा नहीं करते। इस दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति का मुख्य कारण यह है कि ब्रिटिश जनता को भारतीय स्थिति के बारे में पर्याप्त रूप से अवगत नहीं किया जाता। मुझे पूर्ण विश्वय है कि ब्रिटेन में ५० के पीछे एक व्यक्ति को भी यह नहीं मालूम कि भारत की जेलें कितनी भरी हुई हैं। मेरा विश्वास है कि वे इसे अनुभव नहीं करते और यह एक बड़ी दुःख की बात है। ब्रिटेन के लोग मूर्खों के स्वर्ग में रह रहे हैं।

अमेरिका भारत के चैलेंज को पूरा क

अमेरिकन लेखिका द्वारा गांधी जी की प्रशं

प्रशान्त महासागर की अन्तर्देशीय महासभा सदस्य मिस कैटेएल मिशल लिखती हैं कि—'हिन्दुस्तान के चैलेंज को पूरा करने का उत्तरदायि अमेरिका पर है। युद्ध के दौरान में, भारतीयों प्रजातन्त्र दे दिया जाना चाहिए।

अंग्रेजों में एक कमी यह है कि वे अपने काम पूरा नहीं कर सके। उन्होंने भारत के पुराने आ संपन्न सिस्टम को तो मिटा दिया, पर उसकी ज नए सिस्टम का निर्माण नहीं किया। भारत की रा नीति में महात्मा गांधी अपना स्थान रखते हैं। उ करोड़ों भारतीयों ने आत्मविश्वास, आशा और सा हिक प्रयत्नों की उपयोगिता की शिक्षा ली है।

—प्रत्यक्षदर्शी का बयान है कि बर्मा में एक साबुन की टिक्की एक रुपये की, एक सुई दो रु की तथा एक दियासलाई साढ़े चार आने की मि रही है।

—संभव है कि शीघ्र ही साइबेरिया में किस जगह रूजवेल्ट, चर्चिल व स्टालिन का सम्मेलन हो।

—कैप्टन वायफर ने कहा कि हो सकता है, यदि लाभ नजर आया तो, हम रोम पर बम गिराएं।

—ख्याल किया जाता है कि सर स्टैफर्ड क्रिप्स भारत में फिर आने को तैयार हैं।

—चिल्ली सरकार ने विशी, रूमानिया, हंगरी और बलगारिया की सरकारों से अपने राजनैतिक संबन्ध तोड़ लिए हैं।

—मेरिथ की लड़ाई के बाद से अब तक ब्युनिशिया में हताहत धुरी सैनिकों की संख्या ३२४००० है। इनमें २६७००० कैदी बना लिए गए हैं।

—काण्डी की खबर है कि एक देवी ने, जिसके हाथ में एक धातु का डण्डा था, अद्भुत् वीरता से डाकुओं को भगा दिया। डाकुकोंमें से कुछ घायल हुए।

—हरिद्वार में होने वाले अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति श्री माखनलाल चतुर्वेदी को हज़ारों दर्शकों की उपस्थित में रुपयों से तोला गया। हरिद्वार में हिन्दी साहित्य सम्मेलन सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

—हाउस आफ कामन्स में श्री एमरी ने बताया कि १५ मार्च तक कांग्रेस अन्दोलन के संबन्ध में भारत में ३४८६५ व्यक्ति सजा पाकर जेल में हैं तथा इसके अतिरिक्त ११६२३ व्यक्ति नजरबन्द हैं।

—ग्रेट ब्रिटेन की कम्यूनिस्ट पार्टी ने भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी को एक संदेश में कहा है कि भारत के डैडलाक को दूर करने के लिए नये प्रयत्न किए जाने चाहिए तथा राजनैतिक कैदी छोड़ दिए जाने चाहिएं और राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के लिए बात चीत चलाई जानी चाहिए।

...ात बैंक लिमिटिड
११० अनारकली, लाहौर
...प्रभात बैंक लिमिटिड के
डाईरेक्टर्स सूचित करते हैं
कि श्री लाला रामलाल जी
... कृपाराम एण्ड ब्रदर्स
...एडी, पेशा-
...क के सेन्ट्रल
...ल होगए हैं।
...डाईरेक्टर इन्चार्ज
...रायणदास कपूर

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य

सब प्रकार के
बैंकिंग कार्यों
के लिये हमेशा
टेलीफोन नं०
३०९५
लाहौर
पर
सम्मति लें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

...या २४, १७ ज्येष्ठ, २००० विक्रमी—३० मई १९४३ [वार्षिक मूल्य ४

...ाता जी
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharnpur

अध्यात्म सुधा

[२५]

ऋग्वेदीय दयानन्दोपनिषद्

ईश्वर प्रकरण

हे जिज्ञासवो मनुष्या यूयं येनेश्वरेण ...र्वेभ्यो जीवेभ्यः सर्वाः सृष्टीर्निष्पाद्य प्रापिता ...न सृष्टिधारको वायुः सूर्यश्च निर्मितस्तं विहा-...ऽन्यस्य कदाचिदपीश्वरत्वेनोपासनं मा ...रुत ॥३॥

हे जिज्ञासु अर्थात् परमेश्वर का विज्ञान चाहने ...ले मनुष्यो तुम जिस ईश्वर ने सब जीवों के लिये ...सृष्टियों को उत्पन्न करके प्राप्त किये हैं वा जिसने ...ष्टि धारण करने हारा पवन और सूर्य रचा है उसको ...ड़ के अन्य किसी की कभी ईश्वरभाव से उपासना ...करो ॥३॥

अत्र वाचकलु०—नहि वायुनिमित्तेन विना ...स्यापि वाक् प्रवर्त्तितुं शक्नोति न च कस्यापि ...ष्टिर्भवितुं योग्यास्ति। नहीश्वरमन्तरेण जगत ...पत्तिरक्षणे भवत इति वेद्यम् ॥४॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—पवन के निमित्त के बिना ...सी की वाणी प्रवृत्त नहीं हो सकती न किसी की ...होने के योग्य और न ईश्वर के बिना इस जगत् ...उत्पत्ति और रक्षा की संभावना है ॥४॥

अत्र वाचकलु०—यथा धाप्यमानस्य बाल-...स्य पार्श्वे स्थिते द्वे स्त्रियौ दुग्धं पाययतस्तथै-...होरात्रौ सूर्यपृथिवी च वर्तेते यस्य नियमेनैवं ...ति स सर्वस्य जनकः कथं न स्यात् ॥५॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—जैसे दूध पिलाने हारे ...लक के समीप में स्थित दो स्त्रियां उस बालक को ...पिलाती हैं वैसे ही दिन और रात्रि तथा सूर्य और ...थिवी हैं जिसके नियम से ऐसा होता है वह सबका

जीवनमुक्ता विदेहमुक्ता वा विद्वांसो यथा-श्रित्यानन्दन्ति स एव सर्वैरुपासनीयः ॥६॥

जीवनमुक्त अर्थात् देहाभिमान आदि को छोड़े हुए वा शरीरत्यागी मुक्त विद्वान् जन जिसका आश्रय करके आनन्द को प्राप्त होते है वही ईश्वर सब के उपासना करने योग्य है ॥ ६ ॥

आर्य के ग्राहक बनिए

'आर्य' कई वर्षों से आपकी सेवा कर रहा है। महगाई के इस जमाने में भी उसने पीछे कदम नहीं हटाया है। दुःख की बात है कि कई आर्य समाजें अभी तक ग्राहक नहीं बनीं। इसमें प्रति सप्ताह स्वाध्याय की ठोस सामग्री रहती है। प्रतिष्ठित ख्यातनामा विद्वानों के लेख रहते हैं। आशा है कि जिन ग्राहकों ने अभी तक चन्दा नहीं भेजा वे भेज देंगे तथा प्रत्येक आर्य समाज इसका ग्राहक बनकर प्रचार में मदद देगी तथा अपने सदस्यों को मानसिक भोजन प्रदान करने में सहायता पहुँचाएगी।

सब ग्राहकों की सेवा में निवेदन है कि अपना चन्दा भेजना न भूलें। जिन सज्जनों के पास पत्र पहुँचे हैं, वे चन्दा जरूर भेज दें। जिनका चन्दा नहीं आएगा, उन्हें वी० पी० भेजी जाएगी। आशा है कि वे छुड़ा लेंगे।

सब आर्य समाजों की तथा आर्य सज्जनों की सेवा में पुनः प्रार्थना है कि आर्य के ग्राहक बनें।

भूतभविष्यद्वर्त्तमानानां त्रेयाणां कालाना-मीश्वराद्विना वेत्ता प्रभुः कार्यकारणयोः पाप-पुण्यात्मककर्मणां व्यवस्थापकोऽन्यः कश्चिदर्थो नास्तीति सदा सर्वैर्जनैर्मन्तव्यम् ॥७॥

भूत भविष्यत् और वर्त्तमान इन तीन कालों का ईश्वर से बिना जानने वाला प्रभु कार्य कारण वा पापी और पुण्यात्मा जनों के कामों की व्यवस्था करने वाला अन्य कोई पदार्थ नहीं है यह सब मनुष्यों को मानना चाहिये ॥ ७ ॥

हे मनुष्या यूयं येन परमगुरुणेश्वरेण वेद-द्वारा सर्वपदार्थविज्ञानं कार्य्यते तमाश्रित्य यथा-योग्यव्यवहाराननुष्ठाय धर्मार्थकाममोक्षसिद्धये चिरजीवित्वं संरक्षेत् ॥८॥

हे मनुष्यो तुम जिस परम गुरु परमेश्वर ने वेद के द्वारा सर्व पदार्थों का विशेष ज्ञान कराया है उसका आश्रय करके यथायोग्य व्यवहारों का अनुष्ठान कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये बहुत काल पर्यन्त जीवन की रक्षा करो। ८ ॥

हे मनुष्या यस्य विद्यया विना यथार्थं विज्ञानं न जायते येन भूमिमारभ्याकाशपर्यन्ता सृष्टिर्निर्मिता यं वयमुपास्महे तमेव यूयमुपासी-रन् ॥९॥

हे मनुष्यो जिसकी विद्या के बिना यथार्थ विज्ञा... नहीं होता वा जिसने भूमि से ले के आकाशपर्यन्... सृष्टि बनाई है और हम लोग जिसकी उपासना कर... हैं तुम लोग भी उसी की उपासना करो ॥ ९ ॥

इस सूक्त में अग्नि शब्द के गुणों के वर्णन से इ... के अर्थ की पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति है यह जान... चाहिये। यह छानवें का सूक्त और चौथा वर्ग पू... हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

नाथ ! मुझ से अप्रसन्न क्यों हो ?

श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, दयानन्द उपदेशक विद्यालय।

[१८]

पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षूपो एमि चिकितुषो वि पृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुरयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते ॥३॥

अथ—हे प्रभु (दिदृक्षु) मैं तुम्हें देखना चाहता हूं [पर देख नहीं पाता, तब] (चिकितुषः) ज्ञानी लोगों के (उप उ) समीप (विपृच्छम्) पूछने के लिये (प एमि) जाता हूं [कि मुझे मेरा प्रभु क्यों नहीं दीखता, तब] (कवयः) ज्ञानी लोग (मे) मुझे (समानं) एक बात (इत्) ही (आहुः) कहते हैं कि (अयं) यह (वरुणः) वरण करने योग्य भगवान् (तुभ्यं) तुझसे (हृणीते) अप्रसन्न है, (वरुण) हे वरणीय प्रभो (तत्) वह (एनः) पाप जिसके कारण तुम मुझे नहीं दीखते] (पृच्छे) तुमसे पूछता हूं [बताओ।]

पिछले मन्त्र में भगवान् से मिलने के लिये छट-पटा रहे भक्त-हृदय की तड़प का चित्र खींचा गया था। भक्त-हृदय की उस तड़प को प्रस्तुत मन्त्र में एक और प्रकारान्तर से चित्रित किया गया है। मन्त्र में भक्त को 'दिदृक्षु' कहा गया है। वह भगवान् को देखना चाहता है। उनका साक्षात्कार करके उनके सामीप्य को सीधा अनुभव करना चाहता है। भक्त वरणीय प्रभु की गोद में चला जाना चाहता है। परन्तु भक्त की यह 'दिदृक्षा,' प्रभु को देखने की यह इच्छा, अभी फलीभूत नहीं हुई है। अभी उसे भगवान् के दर्शन नहीं मिले हैं। वह सोचता है—"मुझे भगवान् के दर्शन क्यों नहीं होरहे? मेरा अब तक का जप-तप, मेरी अब तक की साधना, अब तक का मेरा प्रभु-कीर्तन, फल क्यों नहीं ला रहे? मुझे मेरा प्यारा क्यों नहीं मिल रहा?" इस प्रकार चिन्तातुर भक्त-हृदय प्रभु-दर्शन न होने का कारण खोजना चाहता है। वह इसके लिये ज्ञानी पुरुषों के पास जाता है। वह उनके पास जाकर कहता है—हे महात्माओ! मैं इतने काल से जप तप, संयम साधना, तथा हरि-भजन में लगा हुआ हूं, मुझ प्रभु-दर्शन की उत्कट लालसा है, पर फिर भी अभी तक मुझे मेरे भगवान् के दर्शन नहीं हो रहे हैं, इसका क्या कारण है? मुझे मेरा प्यारा क्यों नहीं मिलता? मेरी प्यास कब बुझेगी? ज्ञानी महात्मा इस प्रभु-दर्शन के प्यासे भक्त की बात शान्ति और प्रेम से सुनते हैं और सुनकर उसके प्रश्न का जो एक मात्र उत्तर हो सकता है वह दे देते हैं। वे कहते हैं—"हे प्यारे! तुझे जो अभी तक प्रभु का साक्षात्कार नहीं हुआ, अभी तक जो तू उन आनन्द के सागर में डुबकी नहीं लगा सका, उसका एक मात्र कारण यह है कि अभी तक तेरे भगवान् तुझसे अप्रसन्न हैं इसी लिये मुझे आप अपने दर्शन नहीं दे रहे हैं। जितना सामान आवश्यक है वह अभी पूरा नहीं हुआ है। या तो यह है कि यद्यपि तुम जप-तप, संयम-साधना, प्रभु-भजन में खूब लगे हुए हो तो भी प्रभु-कीर्तन द्वारा भगवान् के सत्य, न्याय, दया, ज्ञान, आदि पवित्र गुणों का तुम्हारे आत्मा में संक्रमण होकर तुम्हें जितना पवित्र और निर्मल हो जाना चाहिये था उतना पवित्र और निर्मल अभी तुम नहीं हुए हो। या यह है कि तुम्हारे इस जन्म अथवा पूर्व जन्म के कुछ अशुभ कर्मों का फल-भोग बचा हुआ है। अशुभ कर्मों का फल-भोग दुःख होता है। वह दुःख भोगना तुम्हारा अभी शेष है। उस दुःख भोग के पूरा हुए बिना भगवान् तुम्हें अपने रूप के दर्शन देकर आनन्द भोग का अधिकारी नहीं समझते। इन दोनों में से कोई एक कारण है—हो सकता है दोनों ही कारण उपस्थित हों—जिसके कारण भगवान् अभी तुम्हें दर्शन नहीं देना चाहते। वे मानों तुमसे अप्रसन्न हैं। तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। तुम अपनी साधना में लगे रहो। एक दिन अवश्य ऐसा आयेगा जब भगवान् की अप्रसन्नता के ये कारण नहीं रहेंगे। उस दिन भगवान् की प्रसन्नता तुम पर उमड़ पड़ेगी। भगवान् तुम्हें अपने दर्शन दे देंगे। तुम आनन्द की गङ्गा में तैरने लगोगे।" यह प्रभुदर्शन के लिये उतावला भक्त एक महात्मा के पास से दूसरे महात्मा के पास जाता है। और फिर दूसरे से तीसरे और तीसरे से चौथे, इस प्रकार अनेक महात्माओं के पास जाता है। सबसे वही प्रश्न करता है—मुझे भगवान् के दर्शन क्यों नहीं होरहे? सब महात्मा उसे एक ही उत्तर देते हैं कि भाई! तुझसे अभी भगवान् अप्रसन्न हैं।

महात्माओं के पास से आकर भक्त फिर अपने जप-तप, संयम-साधना और प्रभु-भजन में लग जाता है। पर उसे प्रभु के साक्षात्कार की बड़ी उत्कट लालसा है। वह उसके कारण बेचैन होरहा है। वह प्रभु को झट देख लेना चाहता है। पर उसे अभी भगवान् तो दिख नहीं रहे हैं। वह अधीर होकर भगवान् से ही बातें करने लगता है। वह उनसे कहने लगता है—'हे मेरे वरुण, हे मेरे वरणीय भगवान्! मैं आपके दर्शनों के लिये विह्वल हो रहा हूं। आप मुझे क्यों नहीं मिलते? मैंने आपके न मिलने का कारण ज्ञानी महात्माओं से पूछा है। वे सब कहते हैं कि—आप मुझसे अप्रसन्न हैं इसी लिये मुझे आप अपने दर्शन नहीं दे रहे हैं। मैं जानता हूं कि मैं पापी हूं, मुझसे पाप हुए हैं, जिसके कारण आपकी प्रसन्नता मुझ पर बरसने से रुक रही है। मुझे वह पाप बताइये। मैं उसे दूर कर डालूंगा।"

मन्त्र में भगवद्दर्शन का प्यासा भक्त भगवान् से उनकी अप्रसन्नता के कारण अपने पापों को पूछ रहा है। यह भक्त-हृदय की अधीरता को प्रकट करने का काव्यमय प्रकार है। सृष्टि के प्रारम्भ में भगवान् ने वेद का ज्ञान देकर कर्तव्याकर्तव्य का, पाप-पुण्य का, उपदेश कर दिया है। भगवान् की उपासना में हमें उनके गुणों पर भक्ति गद्गद हृदय से विचार करके उन्हें अपने भीतर धारण करना होता है। भगवान् के गुणों के विरोधी जो भी हमारे आचरण हैं वे सब पाप ही हैं। हम वेद के अध्ययन और प्रभु के गुणों के चिन्तन से अपने जीवन के पापों को सुगमता से जान सकते हैं। इस प्रकार एक दृष्टि से भगवान् ने हमारे पाप—जिनसे वे हमसे अप्रसन्न होजाया करते हैं—हमें पहले से बता रखे हैं। इसलिये प्रस्तुत मन्त्र में जो भगवान् से भक्त अपने पाप पूछ रहा है वह उसकी प्रभु-दर्शन की—उत्कट चाह को प्रदर्शित करने मात्र के लिये दिखाया गया है। या इस वर्णन की एक ध्वनि यह भी हो सकती है कि—प्रभुदर्शन के मार्ग में चलने वाले सच्चे साधक जब अधीर होकर भगवान् से अपने पापों, अपनी त्रुटियों, को पूछना चाहते हैं तो प्रभु उनके हृदयों में ऐसी प्रेरणा कर देते हैं जिससे उन्हें अपने पापों की विशेष प्रतीति हो जाती है।

मन्त्र में भक्त की प्रभु-दर्शन के लिये अधीरता का जो चित्र खींचा गया है उसका यह स्पष्ट ध्वनि है कि जो साधक भगवान् के प्रेम में मतवाला होकर उसकी भक्ति में लगता है उसी की भक्ति सफल होती है, उसी को भगवान् के दर्शन मिलते हैं। सकाम की दृष्टि से, अपने पाप क्षमा कराने के लिये भगवान् को उत्कोच, रिश्वत, देने की दृष्टि से की गई भक्ति कभी सफल नहीं होती। ऐसे उत्कोच-भक्त को भगवान् के दर्शन तो क्या होते हैं, उसकी तो साधारण प्रार्थनायें भी भगवान् पूरी नहीं करते।

मन्त्र में पाप को भगवान् की अप्रसन्नता का कारण बताया गया है। इसलिये उपासक को यह भी समझ लेना चाहिये कि—जब तक हम अपने आप को निष्पाप नहीं बना लेते हैं तब तक हमारी भक्ति सफल नहीं हो सकती। हमें प्रभु का साक्षात्कार नहीं हो सकता। निष्पाप और निर्मल आत्मा वाले की ही प्रभु-भक्ति सफल होती है। वस्तुतः प्रभु भक्ति अपने आत्मा को निष्पाप बनाने का एक मुख्य साधन है। भक्ति में प्रभु में तल्लीन होकर उसके गुणों पर विचार करके उन्हें अपने भीतर धारण करके अपने आपको प्रभु जैसा निष्पाप बनाना ही मुख्य प्रयोजन होता है। भक्ति द्वारा प्रभु के दर्शन, प्रभु प्राप्ति और हमारी अन्य प्रार्थनाओं की पूर्ति तो उसी का आनुषङ्गिक फल है।

भगवान् को देखना चाहने वाले हे मेरे आत्मन्! प्रभु- प्राप्ति के लिये अधीर होकर उनकी भक्ति में लगजा और अपने आपको सर्वथा निष्पाप बना। फिर भगमान् तुझसे प्रसन्न होकर तुझे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आर्य रविवार १७ ज्येष्ठ
वि०सं० २०००

आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

प्रतिनिधियों की सेवा में निवेदन

इस अङ्क के पहुँचने पर, आर्यप्रतिधि सभा पंजाब वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हो चुका होगा। प्रतियों के त्रैवार्षिक निर्वाचन में, यह तृतीय वर्ष है। गामी वर्ष पुनः आर्य समाजें तीन वर्षों के लिये निधि भेजेंगी। इस अवसर पर हमें सभा के कार्य सिंहावलोकन करना चाहिए और आगामी वर्ष के ये उत्साह के साथ भावी कार्यक्रम निश्चित करना हिए।

क—सभा गत वर्षों से स्वर्गीय मास्टर गुरुदित्ता म जी के मंत्रिकाल से आर्य समाज के छठे नियम र विशेष रूप से बल दे रही है। इस उद्देश्य की र्ति के लिये पं० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा द्वारा ारीरिक उन्नति' पुस्तक लिखाई गई है। सभा दो र्षों से शारीरिक उन्नति के लिये आर्य वीर दल बनाने के लिये अपने स्थिर कोष में से पर्याप्त राशि व्यय कर ही है। इस बात का सन्तोष है कि इस समय ंजाब में अनेक स्थानों पर आर्य वीरदल संगठित हो ये हैं। इस के द्वारा जहां संगठन शक्ति बढ़ती हैं, वहां आर्य युवकों में व्यायाम करने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। यह भी सन्तोष तथा आशा जनक बात है कि प्रार्य सार्व देशिक सभा ने भी आर्य वीर दल के कार्य को हाथ में लेकर इस दिशा में आर्य समाज में विशेष उत्साह पैदा करने में पथ प्रदर्शन किया है। इस विषय में अधिवेशन में सम्मिलित प्रतिनिधियों को चाहिए कि विशेष यत्न शील हों। अपने २ स्थानों पर आर्य वीर दलों को संगठित करें।

ख—इसी प्रकार से सभा कई वर्षों से प्रचार णाली में परिवर्तन करने की कोशिश कर रही है—इस वर्ष विशेष रूप से यत्न किया गया है कि आर्य समाजों में वार्षिकोत्सवों के स्थान पर कथाओं की था चलाई जाय। उनसे जनता में व्याख्यान सुनने की प्रवृत्ति के स्थान पर स्वयं स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति बढ़े। आर्य समाजों में दैनिक सत्संग करने की था जारी की जाय। मुझे यह कहते हुए सन्तोष होता है कि पंजाब की आर्य जनता इन में उत्साह तथा म के साथ सभा को सहयोग दे रही है। और आर्य रुषों में स्वाध्याय करने तथा वैयक्तिक जीवन उन्नत करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आर्य भाइयों के हृदयों में यह भाव गहराई से अङ्कित हो रहा है कि जब तक हम अपने जीवनों को उन्नत नहीं करते, स्वयं स्वाध्याय नहीं करते तब तक हम आर्य समाज की सेवा अधिक उद्दीप्त करना चाहिए। यदि हम स्वयं स्वाध्याय करने, समाजों में दैनिक सत्संग की कथाओं को जारी करेंगे तो आर्य समाज में धार्मिक उत्साह तथा धार्मिक चेतना के भाव दूसरों के लिये आकर्षक रूप में स्वयं प्रकट हो जायेंगे। स्वाध्याय की प्रवृत्ति को उत्तेजित करने के लिये सभा आर्यसमाजके प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा वेद तथा आर्य सिद्धान्तों पर ग्रन्थ लिखाने की योजना बना रही है। इस दृष्टि से बजट में भी विशेष राशि रखी गई है। सभा के चमूपति साहित्य विभाग तथा गुरुकुल के प्रकाशन विभाग के ग्रन्थों को आर्य पुरुषों को विशेष रूप से अपनाना चाहिए।

वेद प्रचार प्रणाली के परिवर्तन के साथ संभावना की जाती थी कि सभा को समाजों से धन कम मिलेगा। परन्तु वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता, पं० यशपाल जी तथा उपदेशक महानुभावों की प्रेरणा तथा जनता के उत्साह ने इस भ्रम को भी दूर कर दिया है। आर्य पुरुषों को चाहिए कि वह प्रचार प्रणाली में परिवर्तन के साथ २ वेद प्रचार निधि को बढ़ाने में भी विशेष रूप से दत्त चित्त हों।

सभा द्वारा संचालित अन्य आंदोलनों पर दृष्टि पात करने से पता चलता है कि आर्य जनता उन्हें भी अपना रही है। पंजाब में गुरुकुल मुलतान तथा गुरुकुल कमालिया कई वर्षों से शिथिल थे परन्तु इस वर्ष पं० जयदेव जी विद्यालंकार ने गुरुकुल मुलतान में नवजीवन का संचार कर दिया है विद्यार्थि-संख्या भी बढ़ रही है—जनता की सुप्त प्रवृत्ति को जगा दिया है—गुरुकुलों में प्रवृष्ट ब्रह्मचारियों की संख्या वृद्धि हो रही है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि जनता आगे बढ़ाना चाहती है, आर्य प्रतिनिधियों का नेतृत्व चाहती है—इस वार्षिक अधिवेशन में आप लोग पंजाब की आर्य जनता का नेतृत्व करें—अपने आत्मा की आवाज़ को सुनें दयानन्द के उदात्त उद्देश्य तथा आर्य समाज की प्रगति शीलता को सामने रखते हुए उन्नत पथ पर अग्रसर होते हुए—अपने कर्त्तव्य का पालन कीजिये—ऋषि दयानन्द के पद चिह्नों पर चलते हुए संघ के, आर्य समाज के संगठन के नियमों के सामने सिर झुकाइए—व्यक्तियां आती जाती हैं—संघोंकी आत्मा सतत प्रवाह से बहती है—आत्मा की ध्वनि सुनो और सुनाओ यही मेरा अधिवेशन में सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियोंसे निवेदन है। —भीमसेन विद्यालंकार

रूस में अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद की समाप्ति—

रूस के भाग्य विधाता श्री स्टैलिनने घोषणा की है इस युद्ध के कारण ऐसी अवस्थाएं पैदा होगई हैं जिनके कारण इस समय अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद को (थर्ड इन्टरनैशनल) के समाप्त किया जाता है। अब रूसी लोग रूस की रक्षा करने के लिये राष्ट्रीय साम्यवाद को मान कर कार्य करेंगे। विविध देशों के अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्थाओं का रूस के साथ जो सीधा सम्बन्ध था, वह अब शिथिल हो जायगा। विविध देशों के साम्यवादी अपने २ देश के युद्ध में इस घटना का परिणाम यह होगा कि रूस अमरीका और इंगलैण्ड एक दूसरे के अधिक समीप आ जाएंगे। इन राष्ट्रों की मनोवृत्ति में जो आदर्श वाद का अन्तर था वह मिट गया है। वर्तमान युद्ध की यह घटना अत्यन्त महत्व पूर्ण है। युद्ध समाप्ति पर इस घटना के क्रान्ति कारी परिणाम होंगे। इसका एक स्पष्ट परिणाम यह होगा कि युद्ध समाप्ति पर धुरीराष्ट्र पुनः नया युद्ध आसानी से जारी न कर सकेंगे और इसका एक यह भी परिणाम हो सकता है कि युद्ध समाप्ति पर पुनः विश्व शान्ति के लिए बल शाली राष्ट्र संघ बन सके।

सिंध में हिंदुओं के विरुद्ध षड़यंत्र

सिंध हिन्दू प्रतिनिधि मण्डल के नेता श्री जेठमल परसराम ने श्री जिन्ना के इस कथन को कि पाकिस्तान में अल्प संख्यकों के साथ वैसा ही व्यवहार नहीं होगा जैसा कि एक सभ्य सरकार में होता है बल्कि उससे भी अच्छा होगा चुनौती दी है। आपने कहा कि सिंध में जो कायदे कानून बन रहे हैं वे गरीबों की रक्षा के लिये नहीं बन रहे हैं बल्कि उसका लक्ष्य हिन्दुओं के व्यापार, उद्योग धन्धे और कृषिक नष्ट कर देना और कुछ हिन्दू एजेण्टों की मदद से सिंध में बधेरा तथा नवाबों की सामन्तशाही सत्ता स्थापित करनी है।

सिंधी भाषा की उत्पति संस्कृत से हुई है लेकिन केवल हिन्दुओं से बदला लेने के लिये उसको अरबी रूप में ढाला जा रहा है। अन्त में आपने कहा कि श्री जिन्ना और मुस्लिम लीग यह समझते हैं कि भारत में २५ सैकड़ा जन संख्यावादी उनकी अल्प संख्यक जाति के अधिकार खतरे में है और उन्होंने ऐसा विद्रोह खड़ा किया कि उन्हें भारत की स्वतंत्रत तथा उसकी एकता को नष्ट करने के बारे में भी कोई खयाल नहीं है। जब स्थिति यह है तो सिन्ध में २७ सैकड़ा हिन्दुओं से विद्रोह न करने की आशा कैसे की जा सकती है जब कि हम देखते हैं कि हमारे उचित अधिकारों पर कुठाराघात हो रहा है। पहिले सिंध में समझौता कर लेना चाहिये तब हम सिंध और भारत दोनों के बारे में मामले को तय कर लेंगे। या पाकिस्तान की समस्या हल न होगी

आर्य-जीवन

[श्री अरविन्द घोष]

आर्य शब्द से एक सामाजिक तथा नैति आदर्श का, एक मर्यादित जीवन का, उदारत नम्रता, सज्जनता, सरलता, साहस, सभ्यता, प त्रता, दया, निर्बलों की सहायता, जिज्ञासु, विद्व के प्रति आदर इत्यादि गुणों का बोध होता वस्तुतः मानवीय भाषा में अन्य कोई शब्द जिसका इससे अच्छा इतिहास हो अथवा जि इतने गुणों का समावेश होता हो। सच्चा आर्य है जो मानवीय उन्नति के बाधक कारणों के वि [वे आन्तरिक हों या बाह्य] युद्ध करता है औ पर विजय प्राप्त करता है, जो सदा सत्य, उ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'हम भूखे हैं !'
गरीब भारत प्रत्येक प्रश्न का यही उत्तर देता है

श्री लुई फिशर का भाषण

[भारतीय स्वतंत्रता की असली बाधा कहाँ है, भारत में कि इंग्लैंड में ? हिन्दू मुस्लिम झगड़े की वास्तविकता क्या है ? चेम्बरलेन और चर्चिल की असली इच्छा । महात्मा गाँधी के उपवास ने संसार को कैसे कँपा दिया ? आदि बातें लुई फिशर के निम्न भाषण में पढ़ें। नीचे लुई फिशर के भाषण का आशय दिया जाता है । लुई फिशर अमेरिका के प्रसिद्ध पत्रकार हैं । उनके विचारों की पक्षपात हीनता गहराई व विचार शीलता देखिए।

--सत्यभूषण योगी]

श्री लुई फिशर अमेरिका के प्रसिद्ध पत्रकार हैं। आपने सान फांसिस्को के टाउनहाल में गत २३ फर्वरी को श्री डा० अल्फ्रेड जी फिस्क के सभापतित्व में हुई मीटिंग में भाषण देते हुए कहा—'मैं इस ग्रीष्म काल में भारत में भारत गया वहां की परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए। क्योंकि मैं समझता हूं कि युद्ध की सम्पूर्ण नैतिकता तथा शान्ति स्थापना में भारत का मुख्य महत्व है। भारत की मुख्य समस्या के बारे में बहुत कम चर्चा होती है क्योंकि उस समस्या का समाधान तब तक संभव नहीं जब तक भारत स्वतन्त्र न हो जाए । भारत की मुख्य समस्या आर्थिक है। भारत की आबादी प्रति वर्ष ५० लाख के हिसाब से बढ़ रही है।

सरकारी ब्रिटिश गणना के अनुसार १९३१ में भारत की जन संख्या ३३ करोड़ ८० लाख थी और १९४१ में बढ़ कर यह ३८ करोड़ ८० लाख हो गई है । इसके मुकाबले में भारत में आर्थिक उन्नति न के बराबर हुई । इसका मतलब यह हुआ कि जिस खाने कपड़े से ३३ करोड़ ८० लाख का काम चलता था उसी से ३८ करोड़ ८० लाख का काम भी चल रहा है। जब मैं भारत से लौट कर आया तो श्रीमती पर्लबर्क से, जो कि चीन की एक मिशनरी हैं और मिशनरी की लड़की हैं और भारत के बारे में अच्छी तरह जानती हैं, मिला और उनसे भारत के बारे में चर्चा की तो उन्होंने कहा कि 'चीन का किसान भारतीय किसान से अनन्त गुना अच्छी तरह रहता है। इससे आप कल्पना कर लीजिए कि भारतीय किसान की कितनी दुरवस्था है । मैं भारत के गांवों में गया और किसानों से पूछा कि 'युद्ध के बारे में तुम्हारी क्या राय है' उन्होंने इस प्रश्न का उत्तर कभी नहीं दिया। उन्होंने कहा—'हम भूखे हैं।' मैंने उनसे पूछा कि ब्रिटिश निवासियों के बारे में तुम्हारी क्या सम्मति है। उन्होंने कभी इसका उत्तर नहीं दिया । उन्होंने कहा—'हम भूखे हैं?' भारत की राजनीति का आधार पेट है । यह मेरी ही सम्मति नहीं। जिसने भारत को देखा है उसकी यही राय बनाई । सोनवा तोमारा (Sonva Tomara) जो कि हेरल्ड ट्रिब्यून की भारत में बड़ी सम्वाददाता हैं उस पत्र में अपने हाल ही में भारत में रहना है उतना उसे मालूम होता है कि चारों तरफ के वायुमण्डल में असन्तोष और वेदना भरी हुई है।" ब्रिटिश वाइसराय लिनलिथगो ने मुझे कहा कि 'भारत कभी भी इतना ब्रिटिश विरोधी नहीं था जितना कि आज है।' हर एक मनुष्य व जाति के जीवन में एक समय आता है जब कि उसके हृदय में आज़ादी का जोश भड़क उठता है और वे कहते हैं कि हमें अब किसी के-पथ प्रदर्शन की ज़रूरत नहीं। सारे भारत निवासी, सभी जाति धर्म और सम्प्रदाय के भारतीय स्वतन्त्रता की पुकार कर रहे हैं। यहां तक कि ऊँचे सरकारी भारतीय अधिकारियों में भी मैंने आज़ादी की भावना पाई।

यदि हमने भारत आदि देशोंकी स्वतन्त्रता की भावना को दबाया तो ऐसा विद्रोह का विस्फोट होगा जो सँभाले न सँभलेगा और जिसके सन्मुख वर्तमान विश्वव्यापी महायुद्ध भी गौण पड़ जायगा। मि० विल्की भी, जो कि पूर्वीय देशों का दौरा करके लौटे हैं। इससे सहमत हैं। भारत की स्वतन्त्रता की सार्वजनिक भावना के प्रतीक हैं महात्मा गांधी। लिंकन और लेनिन के समान वे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं। उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य है भारत की स्वतंत्रता । भारत का शासक बनने का न उन का इरादा है, न कभी था। उन का कार्य, जब भारत को स्वाधीनता मिलेगी, समाप्त हो जायगा । महात्मा गांधी भारत की सार्वजनिक स्वतंत्रता की भावना को प्रतिध्वनित करते हैं । उनकी छोटी सी कुटिया में मैं उनके साथ एक सप्ताह रहा हूँ। वे बोलते थे तब मुझे लगता था कि मैं ४० करोड़ व्यक्तियों की ध्वनि को सुन रहा हूं।

गांधी जी का उपवास

गांधी जी ने उपवास क्यों किया। इस विषय में कई अमेरिकन भी कुछ नहीं जानते । कल्पना कीजिये कोई विदेशी अपनी सेना सहित आप (अमेरीका) पर आ चढ़े और हमारे राजनैतिक नेता जेल में बन्द कर दिये जाएं और वह विदेशी हम पर शासन करे । तो क्या हम उस विदेशी आक्रमणकारी के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाएँगे ? आजादी के लिए जान की बाजी नहीं लगा देंगे ? गांधी के पास कोई अन्य शस्त्र नहीं है। वह ईसा हैं। त्याग उनके जीवन का आदर्श है । महात्मा गांधी के उपवास ने संसार को कँपा दिया। आप को मालूम होगा कि भारत के विदेशी वायसराय की एक कार्यकारणी समिति है जिसके १४ सदस्य हैं इनमें १० भारतीय है। ये भारतीय ब्रिटिशों का सहयोग करने को तैयार हैं। इस का तात्पर्य यह है कि आजादी उनके लिए मुख्य चीज़ नहीं है। गांधी जी के उपवास पर इन १० में से ३ ने स्तीफा दे दिया। इन नाइट की उपाधि प्रदान की थी वे गांधी जी के (हिन्दू) भी नहीं हैं, वे पारसी हैं और व्यापारी हैं। सोचिए तो सही ब्रिटिशों के स जो तैयार थे, वे भी यदि गांधी जी के उ पर यह अनुभव करते हैं कि वे अब ब्रि का सहयोग नहीं कर सकते और परि स्तीफा दे सकते हैं तो अन्य करोड़ों व्यक्ति कि ब्रिटिशों के विरोधी है और ब्रिटिशों को करने से भी इनकार करते हैं। उनकी क्या होगी ! गांधी जी का उपवास के परिणाम भ हो यह सारे एशिया को कँपा देगा।

चर्चिल का उद्देश्य

भारत का यह वैधानिक संकट रुक जाता समझ से काम लिया जाता। मैं गांधी जी से तो वे समझौता करने की भावना में थे। उ अपनी मांगों को सार्वजनिक तौर पर सामने दिया था। उन्होंने कोई ऐसी चीज़ न मांगी ब्रिटेन दे नहीं सकता था। तब यह असहय आन्दोलन व उपवास आदि शुरु नहीं हुए गांधी जी ने ग्रीष्मकाल में दो बार समझौते लिए वायसराय से मिलना चाहा पर वायसर ने इनकार कर दिया। इस इनकारी का का स्पष्ट है। मि० चर्चिल जब ५५ वर्ष के थे तब उ ने कहा था (और तब से उनकी सम्मति बद नहीं) "जल्दी या देरी से गांधीवाद और उस उद्देश्यों को पूरी तरह से कुचलना होगा।" अब चर्चिल को अपनी हवस पूरा करने का पहला मौका मिला है। ब्रिटेशों ने निश्चित तौर भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को चैलेंज दिया है ब्रिटेशों ने पूरा निश्चय कर लिया है कि गांधी औ भारत के स्वतन्त्रता-आन्दोलन को नेस्तनाबूद क देना है। चांगकाई शेक ने चर्चिल और रूजवेल्ट चेतावनी दी है कि स्वतन्त्रता के लिए लड़े जा वाले इस महायुद्ध में स्वतन्त्रता के एक बड़े आन्दो लन को दबाने की कोशिश ठीक नहीं। ऐसी कोशिश से संभव है कि सारे एशिया पर जु राष्ट्र पूरी तरह से कब्जा करलें।

गांधी जी के साथ एक सप्ताह

इस ग्रीष्म में मैं गांधी जी के साथ एक सप्ता रहा। मैं सोचता था कि वे एक हास परिहास आमोद प्रमोद से दूर रहने वाले सन्त हैं। उनके पास रहने से अनुभव हुआ कि वे खु मिजाज और हंसी खेल को पसन्द करने वाले वे बच्चों के साथ खेलते हैं। वे निर्भीक तथा स्प वक्ता है और मन में जो आता है, कह देते और सब व्यक्ति, अपने मन की सब बातें कहते, बोलने से पहले अपने मन की बातों में कुछ काट लेते हैं पर गांधी जी के बारे में ऐसा नहीं है। उनकी बात का भले ही कुछ परिणाम पर कह जरूर देंगे। इसी से उनके बारे में कइयों को गलतफहमी हो जाती हैं। जैसे कि कइयों को गलतफहमी हुई कि गांधी जी जापान के पक्षपा हैं। पर चांगकाई शेक जो कि गांधी जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

'भारत छोड़ो'

भारतीयों के मन में विश्वास नहीं था कि इंगलैंड में भारत को रक्षित रखने का सामर्थ्य है। उनके सामने हांगकांग, मलाया, सिंगापुर और बर्मा के उदाहरण मौजूद थे। भारत में क्रिप्स गए, पर वे असफल रहे। गांधीजी ने कहा 'मैं इंग्लैंड से लंगा आगया हूं। ब्रिटिशों को भारत से अवश्य चले जाना चाहिए।' पर जब मित्रों ने गांधी जी से बात की तब गांधी जी ने कहा कि "मैंने वह गलत कहा था मुझे ऐसा कहने का कोई अधिकार न था। मैं ब्रिटिशों को युद्ध काल में भारत छोड़ने को नहीं कह सकता। ऐसा कहने का मतलब भारत को धुरीराष्ट्रों को सिपुर्द कर देना होगा।" गांधीजी महापुरुष हैं। अपनी गलती भी एक दम मान जाते हैं। न तो गांधीजी और न अन्य कोई भारतीयनेता युद्ध काल में पूर्ण स्वाधीनता की आशा करता है। इस समय चाहते हैं एक राष्ट्रीय सरकार और वे संयुक्त राष्ट्रों को विजय प्राप्ति में सहायता का वचन देने को भी तैयार है। हम जब अपने से पूछते हैं कि रूस और चीन जान की बाजी लगाकर क्यों लड़ रहे हैं तो उत्तर मिलता है उन्हें कुछ खो जाने का डर है, इसीलिए लड़ रहे हैं। हमें भी कुछ खोजाने का डर है और कुछ प्राप्ति की आशा। पर भारत किस लिए लड़े व युद्ध से किस लिए सहानुभूति रक्खे?

भारत और एटलाण्टिक चार्टर

कामन्स में चर्चिल से जब पूछा गया कि एटलाण्टिक चार्टर भारत पर लागू होता है कि नहीं? चर्चिल ने खड़े होकर कहा—'नहीं श्रीमानजी' और बैठ गया।

४ जून को वायसराय अपने बड़े महल से ब्रिटिश साम्राज्य से अमेरिका की स्वाधीनता-प्राप्ति का दिन मनाने के लिए (हँसी) एक पार्टी दी। मैं भी निमंत्रित था। उस पार्टी में ब्रिटिश साम्राज्य से भारत की स्वतंत्रता के विरुद्ध सब युक्तियां मैंने सुनीं। एक ब्रिटिश जनरल, जो बर्मा हो आया था, कहने लगा 'परन्तु क्या स्वतंत्र भारत युद्ध के बाद अपनी रक्षा कर सकेगा?, मैंने कहा—'क्या इंगलैण्ड अपनी रक्षा कर सकेगा?' बोला यह तो बताइए कि—कौनसा देश ऐसा है कि जो आजकल इकला अपनी रक्षा कर सके? न इंगलैण्ड, न फ्रांस, न इटली और संभवतः न ही अमेरिका और रूस अपनी रक्षा कर सकते हैं। यदि उन्हीं देशों को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है जो अपनी रक्षा कर सकते हैं तो बहुत कम स्वतन्त्र देश रह जाएंगे। लेडी लिनलिथगो ने मुझे कहा कि 'परन्तु क्या भारतनिवासी अपने आप पर शासन करने के योग्य हैं।' मैंने कहा—लेडी लिनलिथगो, ठीक यही सवाल १७७६ में ब्रिटिश सरकार १३ उपनिवेशों से पूछा करते थे। और जैसे कि आज के अखबार में छपे राष्ट्रपति रूजवेल्ट के भाषण में कहा है कि "कई अमेरिकन थे जो कि वाशिंगटन-दिवस पर संदेह करते थे और जिनका विश्वास था कि सामान्य मनुष्यों व स्त्रियों में स्वतन्त्रता व आत्म शासन की योग्यता नहीं

जातियों ने दुनिया में क्या बनाया है? और मेरा ख्याल है कि हमें तथाकथित असभ्य चीन व भारत आदि जातियों को निमन्त्रित करना चाहिए कि हमें दुनिया पर शासन करने में मदद दें। कुछ भी हो जब अमेरिका ब्रिटेन का गुलाम था, तब वाशिंगटन दिवस पर अमेरिकनों के बहुमत ने अनुभव किया कि स्वतन्त्रता व स्वराज्य हमारा अधिकार है। उसी प्रकार भारतीय और एशिया निवासी अनुभव करते हैं और स्वतन्त्रता चाहते हैं। और मुश्किल पैदा होजाएगी यदि हम इसमें बाधा डालने की कोशिश करेंगे। स्वतन्त्रता के उपयोग की योग्यता सीखी जाती है, कोई इसे जन्म के साथ लेकर नहीं आता। यह स्वतन्त्रता व स्वराज्य के अभ्यास से सीखी जाती है।

हिन्दू-मुस्लिम समस्या

उसी पार्टी में तथा अन्य स्थानों पर भी मैंने भारतीय स्वतन्त्रता के मार्ग में आने वाली एकमात्र बहुत बड़ी अलंघ्य बाधा के बारे में सुना—उस बाधा का नाम है 'हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न।' यहां इस केन्द्रीय तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है, सबको कहा जाता है कि हिन्दू मुसलमानों में गौओं व संगीत आदि के बारे में झगड़ा होता है। परन्तु सब अफसरों, सब मुसलमान नेताओं सब हिन्दू नेताओं व सबने सर्व सम्मति से मुझे कहा कि—'भारत के गावों में हिन्दू व मुसलमानों में। कोई झगड़ा व विवाद नहीं, और भारतवर्ष ९० फी सदी गांवों में बसा हुआ है। दूसरे शब्दों में हिन्दू मुस्लिम झगड़ा स्वाभाविक नहीं है—मनुष्यों द्वारा बनाया हुआ है और शहर का राजनैतिक मामला है।

सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स ने भारत में आकर भारतीय नेताओं से हिन्दू मुस्लिम समस्या के बारे में बात नहीं की। यह बात अजीब है। भारत में वे भारतीय समस्या को सुलझाने गए थे। यह माना हुआ है कि भारत में हिन्दू मुस्लिम समस्या रूप बड़ा भारी विघ्न है। पर उसने इस बारे में भारतीय नेताओं से बात नहीं की। क्यों? क्योंकि भारतीय समस्या का जब कोई क्रियात्मक समाधान नहीं है तो विभिन्न दल पागलपन की बातें करते हैं और चिल्लापों मचाते हैं—पर उनकी बातों में न तो कोई गहराई होती है न ही वास्तविकता। जैसे कि आजकल कुछ दल शोर शराबा कर रहे है। ये बिना ज़िम्मेवारी के बोलते हैं जैसे कि अन्यत्र कुछ राजनैतिक दल व नेता। परन्तु जब क्रिप्स भारत पहुँचा और एक क्षण के लिए उसने भारतीय समस्या का क्रियात्मक समाधान सामने रक्खा—सब दलों ने अपने भेद भावों को छोड़ दिया, तेज़ी गर्मी भी छोड़ दी और समझौते के बारे में चर्चा शुरू करदी अपने झगड़ों के बारे में नहीं। महात्मा गांधी कई बार कह चुके हैं कि (और यह छप भी चुका है) आप देखेंगे भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस जिसके कि वे नेता हैं और जिसमें कि ज्यादातर हिन्दू है, पर मुसलमान भी काफी हैं, मुसलमानों के साथ मिल कर एक राष्ट्रीय सरकार बनाएगी। मुस्लिम लीग के

बनाने को तैयार हैं। दूसरे शब्दों में हिन्दू मुसलमानों के साथ और मुसलमान हिन्दुओं के साथ एक राष्ट्रीय सरकार रहने को तैयार हैं। सब कुछ है, है नहीं तो केवल राष्ट्रीय सरकार। पक्षपात से हीन प्रत्येक व्यक्ति को यह सम्मति है कि यदि ब्रिटिश चाहें तो एक ही रात में भारत में राजनैतिक एकता हो सकती हैं।

'न्यूयार्क टाइम्स' का भारत स्थित विशेष संवाददाता हर्बट मैथ्यू लिखता है कि 'राजगोपालाचार्य जो कि भारत के एक बड़े हिन्दू लीडर हैं, उनका दृढ़ विचार है और मेरी (हर्बट मैथ्यू की) अपनी खोजों का भी यही परिणाम है कि भारत में हिन्दू मुसलमानों में कोई भी आधारभूत विरोध नहीं हैं।'

मैं भारत से निश्चित विचार लेकर आया हूं। यदि इष्ट हो तो भारत में एक रात में राजनैतिक एकता संभव है और यही एकता सामाजिक व आर्थिक एकता की तरफ पहला कदम होगी। मैं भारत से यह निश्चित धारणा लेकर लौटा हूँ कि भारतीय स्वतन्त्रता के मार्ग का रोड़ा (बाधा) भारत में न हो कर इंगलैंड में हैं। भारत एक बड़ी अच्छी चीज है। भारत के बल पर इंगलैंड की कई कम्पनियां और परिवार मालामाल हो गए हैं।

नेवाइल चेम्बर लैन शान्ति का उपासक था क्योंकि उसे डर था कि युद्ध में सम्मिलित होने से उसका इंगलैण्ड (अच्छी स्थिति के लोगों, अधिकार, ऐश्वर्य व एयाशीका इंगलैण्ड) मर जाएगा। चर्चिल कहता है कि—'नहीं', इंगलैण्ड लड़कर जीत सकता है और वही पुराना इंगलैण्ड रह सकता है। चर्चिल और चेम्बरलेन एक ही किस्म के इंगलैण्ड के पुजारी हैं—हां उसकी रक्षा के साधनों में भले ही भेद हो। और चर्चिल ने इंगलैण्ड में भारत भी शामिल है तथा उसमें बेनरिज का रिपोर्ट के अनुसार भारत को नपुंसक करना और आजादी की भावना को दबाना भी शामिल है।

इसलिए प्रश्न यह नहीं है कि भारत स्वतन्त्रता के लिए तैयार है कि नहीं। प्रश्न यह है कि हम भारत को स्वतन्त्र करने के लिए तैयार हैं कि नहीं। यदि इस युद्ध के परिणाम स्वरूप एक नया इंगलैंड बन जाए, यदि चेम्बरलेन और चर्चिल के पुराने इंगलैण्ड को गिराकर एक नये इंगलैण्ड का निर्माण तो वह भारत को अपना गुलाम नहीं रखना चाहेगा। यह है असली बात।

अंग्रेजी शासन पर स्व. कवीन्द्र टैगोर

"हमारे मित्र कहे जाने वाले अंग्रेज़ों का यह कथन सिर्फ निरर्थक आत्म-प्रशंसा है कि यदि वे हमें "शिक्षा न देते' तो हम अन्धकार के युग में ही पड़े रहते। अंगरेज़ों की सरकारी शिक्षा-प्रणाली ने हमारे बच्चों को न केवल अंगरेजी की सर्व श्रेष्ठ विचारधारा से अपरिचित रखा बल्कि उसके फलस्वरूप वे अपनी प्राचीन संस्कृति को भी भूल रहे हैं। यह मानने पर भी कि हमारी ज्ञान-प्राप्ति का एक ही साधन—अंगरेजी भाषा—सुलभ है, अब तक हमें जो कुछ मिल सका है, नगण्य है। १९३१ में दो शताब्दियों के अंगरेजी शासन के बाद भी, सिर्फ एक फी सैकड़ा भारतवासी अंगरेजी जानते थे। और सिर्फ १५ वर्ष के सोवियट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आधुनिक पुस्तकालय का स्वरूप

[लेखक विश्वनाथ शास्त्री एम. ए. पुस्तकालयाध्यक्ष, पञ्जाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन लाहौर]

पुस्तकालय क्या है ? इसका प्राचीन स्वरूप क्या था ? इसका वर्त्तमान स्वरूप क्या है ? इत्यादि प्रश्नों पर विचार करने की आवश्यकता है। पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संग्रह-मात्र का नाम नहीं है । न ही यह किसी ऐसे भवन का नाम है जहां पुस्तकों का संग्रह किया गया हो। पुस्तकालय उस क्रम से रखे हुए पुस्तक संग्रह का नाम है जिसका उपयोग जनता पुस्तकाध्यक्ष की सहायता से करें। पुस्तकों को क्रम से रखने के लिए वर्तमान युग में कई एक प्रणालियों का आविष्कार हुआ है। उनमें से सबसे अधिक प्रिय प्रणाली का नाम(Deweys Decimal Classification है। डयू महोदय ने संसार के समस्त ज्ञान को दश भागों में विभक्त कर दिया है और उन दश भागों की अंकों के द्वारा द्योतित किया है । यथा साधारण ज्ञान ०००, दर्शन शास्त्र १००, धर्म २००, समाज शास्त्र ३००, भाषा ४००, विज्ञान ५००, उपयोगी कला ६००, ललित कला ७००, साहित्य ८००, भूगोल, इतिहास ९००। फिर इन का विस्तार किया गया है और प्रत्येक भाग को दश उप विभागों में विभक्त कर दिया गया है। यथा ३०० को लें । समाज शास्त्र मिश्रित ३००, आंकड़े ३१०, राजनीति ३२०, अर्थशास्त्र ३३०, कानून ३४०, शासन ३५०, संस्थाएं ३६०, शिक्षा ३७०, व्यापार, यातायात ३८०, रीति रिवाज़, वस्त्राभूषा और ग्राम्यज्ञान ३९०। पुनः प्रत्येक उप विभाग को १० और छोटे छोटे भागों में विभक्त कर दिया गया है। यथा अर्थशास्त्र के उपविभाग ३३० को ३३०, ३३१, ३३२ आदि में। पुनः इन विभागों को दशम गुण से विभक्त किया गया है। यथा ३३०.१, ३३०.२, ३३०.३ आदि और यह विस्तार अभीष्ट स्थान तक चला जाता है। पुस्तकों को विषय क्रम से रखना वर्तमान प्रणाली का मूलाधार है । प्राचीन भारत में क्या कोई ऐसी प्रणाली थी जिससे पुस्तकों को रखा जाता था, इसका अभी तक कोई अन्वेषण नहीं हुआ। यह निश्चित बात है कि कोई भी पुस्तकालय बिना किसी प्रकार की प्रणाली के चल नहीं सकता। अतः यह अनुमान लगाया जाता है कि यदि प्राचीन भारत में पुस्तकालय थे तो उनकी व्यवस्था के लिये कोई न कोई वर्गीकरण की प्रणाली भी अवश्य थी।

पुस्तकालय का क्या प्रयोजन है ? संसार के प्राचीन पुस्तकालयों का सम्बन्ध अधिकतर धार्मिक क्षेत्र से था । परन्तु ग्रीक साम्राज्य के उत्कर्षकाल और भारत में बौद्ध काल के उदयकाल और गुप्त साम्राज्य के यौवन काल में पुस्तकालयों का सम्बन्ध अधिकतर शिक्षा से रहा है। पुस्तकालय चरित्र गठन तथा विनोद के लिए भी सामग्री उपस्थित करता है। पत्र पत्रिकाओं द्वारा राजनीतिक और सामाजिक जागृति उत्पन्न करना भी इसका कर्तव्य है।

पुस्तकालय का भवन कैसा होना चाहिए ? प्रत्येक बिल्डिंग में अपनी अपनी विशेषता होती है। उसी प्रकार पुस्तकालय के भवन में भी कई एक विशेषताएं होती हैं । किसी घर, दूकान या दफ्तर को पुस्तकालय का भवन नहीं बनाया जा सकता । सबसे पहले तो यह ध्यान रखना चाहिए कि पुस्तकालय का स्थान नगर से बहुत दूर नहीं होना चाहिए अपितु साथ ही बाजारों और कारखानों के शोर से बचा हुआ होना चाहिए। इसमें पर्याप्त प्रकाश होना चाहिये। यह भी देख लेना चाहिए कि क्या वर्तमान भवन को आवश्यकता पड़ने पर भविष्य में बढ़ाया जा सकता है । बढ़ाने के लिए दो उपाय होते हैं । एक तो यह कि यदि सम्भव हो तो पुस्तकालय भवन के साथ भूमि खाली छोड़ देनी चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर वहां और कमरे बनाए जा सकें। यदि भूमि रखना सम्भव न हो तो और मंज़िलें बढ़ाने की गुंजाइश रख लेनी चाहिए और भवन इस नमूने का बनाना चाहिए कि उस पर और मंज़िलें बनाई जा सकें। पुस्तकालय भवन में बाहर के नक्शे की अपेक्षा अन्दर के नक्शे की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। पुस्तकालय में या तो पुस्तकों का संग्रह किया जाता है या पाठक गण पढ़ने के लिए आते हैं। अतः पुस्तकों के रखने के लिए और पाठकों के लिए उत्तम प्रबन्ध होना चाहिए।

प्रायः भवनों में खिड़कियां रखने पर खूब जोर दिया जाता है और इसमें बड़ी हानि यह होती है कि पुस्तकों की अलमारियां रखने में बड़ी कठिनाई हो जाती है। एक अलमारी रखते हैं तो चट से बीच में खिड़की आजाती है। अतः उत्तम यह होता है कि संग्रहालय (Stook Room) में अलमारियों के लिए ७॥ फुट स्थान छोड़ कर ऊपर खिड़कियां रखी जायँ । हां वाचनालय (Reading Room) और स्वाध्याय सदन (Reference Room) में खूब नैसर्गिक प्रकाश और वायु का संचार होना चाहिए। यदि सम्भव हो तो सामने की ओर शीशे की ही दीवार बनवा लेनी चाहिए परन्तु यह स्मरण रहे कि सूर्य भगवान की प्रखर किरणों से पाठकों को कहीं कष्ट न हो । आवश्यकतानुसार कृत्रिम प्रकाश और वायु का भी प्रबन्ध करना चाहिए। फर्श सदा सीमेंट का होना चाहिए अथवा पिपीलिका आदि का भय लगा रहेगा, दीवारों पर प्लास्टर होना चाहिए और छत कौट की होनी चाहिए। यदि सम्भव हो तो अलमारियां काष्ठ के स्थान पर किसी धातु की बनी हुई होनी चाहिए । पुस्तकों नीम अथवा तम्बाकू के पत्ते रखने चाहिए नीम के पत्तों को पहले छाया में सुखा लेना चाहिए।

संसार के समुन्नत देशों के पुस्तकालयों कई एक विभाग होते हैं। इनमें से कुछेक का विवरण दिया जाता है।

१. स्वाध्यायसदन (Reference Department)यह वह विभाग होता है,जहां पुस्तकालय बैठकर पाठक जन पढ़ते हैं । इसमें वे निर्देश ग्रन्थ (ReferenceWorks)रखे जाते हैं जिनको आद्यान्त नहीं पढ़ा जाता अपितु यत्र तत्र आवश्यकतानुसार अवलोकन किया जाता है यथा कोष, विश्वकोश, वर्ष पुस्तकें (Yearbooks) डाइरेक्टरी, रेलवे टाइमटेबल, नक्शे, एटलस, पत्रिकाओं की सूची, राज्य के प्रकाशन पुस्तकों की वृहत सूचीपत्र (Biblioraphies) आदि इस भान्ति की पुस्तकों की रचना अभी हिन्दी में बहुत कम हुई है । हिन्दी विश्वकोष का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

२. प्रचार विभाग (Lending or circulating Department) इस विभाग में पुस्तकालय के सदस्य घर पर पढ़ने के लिए पुस्तकें ले जाते हैं।

३. वाचनालय (Reading Room) इसमें दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र आते हैं।

४. अन्वेषण विभाग (Research Department)इसमें अन्वेषण करने वाले छात्रों तथा विद्वानों के लिए विशेष प्रबन्ध होता है । इस सुविधा में बैठने तथा अवलोकनार्थ अधिक से अधिक पुस्तकें रखने की समुचित व्यवस्था होती है।

५. बाल पुस्तकालय (Children's Juvenile Department Library) बालकों के लिए अलग कमरा होता है। इसमें बालकों की अवस्थानुसार छोटे छोटे मेज़ और कुर्सियें होती हैं। और इसमें केवल बच्चों के लिए उपयोगी ग्रन्थों का ही संग्रह किया जाता है।

६. महिला पुस्तकालय (Women's Library) इसमें केवल स्त्रियों के बैठने तथा पढ़ने का प्रबन्ध होता है।

७. व्याख्यान भवन (Lecture Hall) इसमें व्याख्यानों का प्रबन्ध किया जाता है।

पुस्तकालय के सूचीपत्र के संबंध में भी एक दो शब्द लिखने उचित होंगे सूचीपत्र के तीन भेद होते हैं । १. मुद्रित पुस्तकाकार वह हर समय पुराना ही होता रहता है,मान लीजिये आज सूचीपत्र प्रकाशित हुआ और आज ही दस पुस्तकें नई आगईं जो उसमें दर्ज नहीं हो सकीं अतः यह पूर्ण नहीं कह सकता २. शीफ (sheaf) यह स्लिपों से तैयार किया जाता इसका कुछ विशेष प्रचार नहीं है। ३. कार्ड यह सबसे अधिक लोक प्रिय सूचीपत्र है। आधुनिक और वैज्ञानिक ढंग पर बनाया है । इसकी सबसे अधिक विशेषता यह है जब भी कोई नई पुस्तक आए वह अपने स्

CC-0. Gurukul Kangri University,Haridwar.Collection Digitized by eGangotri and S3 Foundation USA

दिल्ली के भिखारी

—श्री 'विराज'

दिल्ली में चांदनी चौक एक ऐसी जगह है जहाँ सब कुछ प्राप्त हो सकता है। मैं भी अपने में कुछ चीज़ों का ध्यान रखे हुए दूकानों पर री निगाह डालता चला जा रहा था। का मौसम, शाम का वक्त होने पर भी बार बार लग जाती थी। एक प्याऊ से पीकर हटा तो बरबस एक व्यक्ति से ना हो गया। भारत में त्याग और तपस्या चिरकाल से महिमा है यह जानते हुए यह क भारतीय ही लगा। मैली काली कुचैली फटी धोती का ही उसने परित्याग नहीं था। और दिन भर शहर की सड़कों पर में घूमने की तपस्या से शरीर काला पड़ दर्शनीय हो उठा था। मैं उसे ज़रा गौर से ने लगा। उसने समझा कि मैं उससे प्रभावित गया हूं। उसने ऊंचे स्वर से गुरुमन्त्र का ारण किया "तुलसी जग में आय के करिए ही काम, देने को भोजन भला लेने को हरि ।।" यह कविता मुझे सचमुच उड़ते पक्षी तरह सुन्दर लगी। जब एक पक्ष को भोजन देने विधान किया गया और लेने की बात चीत चलाई गई तब मुझे आशा थी कि लेने के नाम बेचारे देने वाले को कुछ तो प्राप्त हो जायगा इस लेन देन के परिणाम ने जब भोजन देने ले पक्ष को इस बुरी तरह ठगा दिया तो कविता एक सौन्दर्य आ गया। पर मैं ठहरा अर्थ स्त्र का विद्यार्थी, मैंने अपने आप को व्यापार से अलग रखना अच्छा समझा।

इस घाटे से बचकर चलने लगा तो कुछ आद- यों की मिली हुई लय बद्ध आवाज आई। ढोलक र झांझ बज रहे थे गीत चल रहा था 'एक पैसा क पैसा राम तो देंगे एक पैसा देंगे भगवान एक गा'। पहले तो मुझ पर बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ा। ल्ली में बीड़ी के विज्ञापन करने वाले कई फिरते ते हैं। गाते बजाते नाचते और भी बीसियों बेहूदा यां करते हुए पत्तों कागजों में लिपटा जहर लोगों बेचते फिरते हैं कि वे धुएँ के रूप में उसे पने फेफड़ों में भरकर सारे जीवन भर के लिये इस आदी होजायँ। अपने फेफड़ों को खराब करने के ये इन बीड़ी वालों की जेबों में पैसा भरते चलें। ने सोचा शायद यह आवाज भी उन्हीं लोगों की गी। पर थोड़ी ही देर में सब साफ हो या।

एक बिना पांव का आदमी ज़मीन पर हाथों बल आगे बढ़ रहा था। काला और बीमार रीर बिना ढका। एक हट्टा कट्टा मैला और भद्दा दमी ढोलक बजाता चल रहा था। एक छोटा ड़का झांझ बजा रहा था। एक कमजोर औरत के साथ चल रही थी और पैसे का राग बड़े धुर स्वरों में चल रहा था।

इसके कुछ दिन बाद की बात है कि मैं विचार गन चला जारहा था। अचानक ही चौंक उठा। अगर एक कदम भी आगे रख देता तो उस व्यक्ति पर पड़ जाता जो कि ऊपर की ओर मुँह किये ज़मीन पर लेटा हुआ था। पाँव उसके कटे हुए थे। जमीन पर लेटे लेटे वह जोरों से सिर हिला रहा था। यह सदा यहीं पड़ा रहता हो सो बात नहीं, एक दो दफा इसे और कहीं भी देख चुका हूं। भीख माँगने का तरीका है।

एक काला कलूटा लँगोटीधारी दो पत्थर हाथों में लिये उन्हें आपस में टकरा टकरा कर अपनी अन्धी आँख नीचे की ओर किए अविराम गति से 'राम राम' का पाठ किए चल रहा था। एक दूसरा मुस्टण्डा अचरज से उसे देखता रहता था। भीख दोनों को मिल जाती थी।

बहुत से भिखारी आदमी के दीखते ही आशीर्वाद दे देते हैं और बाद में चाहते हैं कि उन के आशीर्वाद का मूल्य पैसों में चुका दिया जाय।

पर एक भिखारी है, वह एक पुल पर बैठा रहता है। लोग आते हैं चलते चलते पूछते हैं क्या बजा है। वह बता देता है। कभी कभी लोग पैसे दे जाते हैं।

एक बार चांदनी चौक में देखा लोगों की भीड़ लगी हुई है और सब के चेहरों पर अचरज और दया का भाव झलक रहा हैं। मैंने कारण जानना चाहा। जैसे तैसे भीड़ में घुस कर देखा एक लड़का जिस की एक टांग कटी हुई है हाथ में एक चाकू लिये बैठा है, कमर पर धोती लिपटी थी बाकी शरीर नंगा था। उस के उस कमजोर शरीरपर कई घाव थे। कुछ पुराने थे जिन पर खून जमकर सूख गया था और कुछ अपेक्षाकृत नए थे जिन पर खून जमने की तैयारी में था और कुछ घाव बिलकुल ताजे थे जिनसे खून अभी भी बह रहा था। वह चाकू मार कर अपने शरीर से खून निकालता था ताकि लोग उसे दयार्द्र होकर पैसे दे दें। पैसे उसे मिलते होंगे नहीं तो वह पेशे को कभी का छोड़ चुका होता। लोग उसे डांटतेथे कि वह वैसा न करे इससे पता लगता था कि लोगों पर उसका असर तो होता ही था।

एकऔर भीख माँगनेका नया तरीका देखा। एक दूकान पर से प्रातराश करके उठ ही रहा था कि दो तीन घुड़सवार आए। ये घुड़सवार साधु सन्यासी थे। लम्बी लम्बी जटाएं थीं, गेरुए कपड़े थे। अच्छे शानदार घोड़ों पर सवार थे। दूकानदार से बोले—'एक एक गिलास लस्सी दे'। दूकानदार शायद पहले से जानता था बोला 'महाराज कोई और दूकान देखो'। मैं देखकर थोड़ा चकित हुआ। घुड़सवार शानदार ग्राहक हैं फिर दूकानदार लस्सी क्यों नहीं पिलाता। पर थोड़ी देर की बात-चीत से मालूम हो गया कि ये पैसे देकर पीने वाले नहीं थे। बोले—अच्छा तो नहीं पिलाओगे?

दूकानदार कुछ और काम करने लगा था। उसने जवाब नहीं दिया। फिर साधु लोग ही बोले—देख घमण्ड मत कर नहीं तो तेरा नाश हो जायगा। तेरी दूकान टूट जायगी इत्यादि—। किन्तु दुकानदार पर साधुओं के मिथ्या शापों का असर न हुआ। बड़ी देर तक वे धमका धमका कर लस्सी माँगते रहे। उस जगह लस्सी न मिली यह दूसरी बात है मगर तरीका एक यह भी है जो दिल्ली में बरता जाता है।

"बाप जी कोई चार खुस्सक रोटी, बाप जी कोई चार खुस्सक रोटी।" आप किसी भी दिन सुबह शाम पत्थरवाले के मोड़ पर सुन सकते हैं। यह एक अंधा है जो सफेद कुर्ता धोती पहने रहता है। और मैं दो हफ्ते तक लगातार देख चुका हूं कि रोटी उसे मिल जाती है, दोनों वक्त।

कुछ ही दिन की बात है मैं चला जा रहा था, बड़ी भूख लग रही थी, जो भी जगह पहले मिलेगी वहीं से कुछ खरीद लूंगा यही विचार था। सबसे पहले एक खोंचे वाला दिखाई दिया जो कि एक सड़क के किनारे बैठा था। मैंने उससे कुछ कचौरियां खरीद लीं और खड़े ही खड़े खाने लगा मैंने देखा कि खोंचे वाले की बिक्री कोई मुश्किल से दो ढाई रुपए रोज़ की होगी। मामूली आदमी था। मेरे खाते खाते उसने बात-चीत शुरू कर दी। सड़क के दूसरी ओर एक पेड़ की छाया में कोई तीस चालीस आदमी जमा थे। कुछ खड़े थे कुछ बैठे थे। देख कर ऐसा लगता था कि यात्री हैं। सामान की बहुत सी पोटलियां पास ही रखी हुई थीं। गंवार थे। दूकानदार ने उन्हीं को बात चीत का विषय बनाया। बोला बेचारे अकाल के मारे गांव छोड़ छोड़ कर आ रहे हैं। मैंने कहा शहर ही में क्या खाने को रखा है।

खोंचे वाला बोला अजी किसी न किसी तरह गुज़ारा कर ही लेंगे। एकाएक दयार्द्र सा होकर कहने लगा 'अजी, क्या कहूं, कुछ लोग तो भीख मांग मांग कर गुज़ारा कर रहे हैं। फिर वह एक आप बीती सुनाने लगा कि उसका एक छोटा सा तो घर है। उसी में बैठा एक दिन हुक्का पी रहा था। बाहर एक 'साहब' आए। कोट पैंट और हैट में थे। उन्होंने हाथ के इशारे से उसे बाहर बुलाया। बेचारा डरते डरते बाहर आया। साहब के साथ एक श्रमती और दो बच्चे थे। बोले—हम ज़रा इस चबूतरे पर बैठ रहे हैं। 'खोंचे वाले ने कहा—'अच्छा'। फिर साहब बोले—तुम भी ज़रा बैठ जाओ।' खोंचे वाला बैठ गया। एकाएक साहब बोले—'मेरी तलाशी लेलो'। और उसके बाद उन्होंने रोकर गिड़गिड़ा कर बताया कि वे और उनकी श्रीमती तीन दिन से भूखे हैं। बच्चों को मांग मांग कर दूध पिलाया गया है। खोंचे वाला प्रभावित हो चुका था। बोला बाबू साहब पैसा तो मेरे बस का नहीं हां रोटी चाहो तो एक नहीं दो दिन खालो।

इस प्रकार उन्हें पांच दिन तक परौंठे खिलाए गए और छठे दिन महल्ले से चन्दा करके ३) के टिकट उन्हें खरीद दिए गए। शायद लोग इन्हें भिखारी न कहें पर ऐसे लोग भी पेशेवर भिखारी हो सकते हैं। दिल्ली है।

एक आदमी की याद पड़ती है जिसके भीख मांगने के तरीके ने मुझे बहुत प्रभावित किया था जब मैं उसके पास से गुज़रा तो उसने बिन मेरी ओर देखे बिना मुझे लक्ष्य किए कहा 'अल्लाह दो एक पैसा भी क्या बड़ी दौलत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

न्याय

श्री पं० विष्णु मित्र जी गुरुकुल कांगड़ी

वर्तमान महाराजा पटियाला के दादा बड़े धर्मात्मा और आनन्दी जीव थे। उनके हर एक गांव में एक नम्बरदार होता था। जो मालगुजारी वसूल करके दर्बार में जमा करता था। और गांव की कैफियत की हजूर में इत्तिला देता था। लेकिन यह सब होते हुए भी महाराजा अकसर दौरे पर ही रहा करते थे। उनकी छोटी सी मोटर किसी गांव के पास जाकर रुक जाती। उनका सैक्रेटरी गोपालदास उस गांव के नम्बरदार को हाजिर करता। जब वह आकर सलाम करता तब महाराजा साहब बड़े गौर से उसकी तरफ देखते और कहते कि क्या तू इस गांव का नम्बरदार है। अच्छा जा मैंने तेरे ऊपर सौ रुपया जुर्माना किया। जब वह गरीब पूछता 'हजूर मैंने कौनसा कसूर किया है, तो वह कहते 'अगर सारी उमर तू कसूर न करे तो क्या तेरे ऊपर जुर्माना भी न हो!' तब वह बेचारा नम्बरदार गोपालदास जी से कहता।

गोपालदास बड़े दयालु और न्याय मूर्ति थे। वह महाराजा साहब से तो कुछ न कहते पर सौ रुपया उसे अपने पास से देते। घर आकर जब वह सारा किस्सा अपनी धर्मपत्नी सुशीला से कहते तो वह सुनकर बड़ी खुश होती। इस प्रकार गोपालदास का अपने अढ़ाई हज़ार वेतन में से पांच सात सौ खर्च हो जाता। इसी प्रकार वेतन का शेष बहुत सा भाग प्रतिमास अनाथालय वनिताविश्रामाश्रम तथा समाज की अन्य संस्थाओं को चला जाता। घर क्या था एक स्वर्ग का नमूना था। एक दिन सुशीला अपने अड़ोस पड़ोस की सहेलियों को लेकर मार्कंडे नदी पर स्नान करने गई। मार्कंडे के किनारे गरीबों की झौंपड़ियें थीं। सिपाहियों ने गांव के मुखिया से यह कहकर कि आज राजमन्त्री का परिवार स्नान के लिये आरहा है अतः बारह बजे तक सब झौंपड़ियों को खाली कर दिया जाय। दुःख के साथ उन बिचारों ने अपने २ बच्चों के साथ सब झौंपड़ियें खाली कर दीं। प्रातःकाल का समय और माघ का महीना। थोड़ी देर ही स्नान करने के बाद सब स्त्रियें सर्दी से कांप उठीं। सुशीला ने नौकरानी से कहा कि आग जलाओ। नासमझ नौकरानी ने किनारे की एक फूंस की झौंपड़ी को आग लगा दी। हवा अनुकूल थी थोड़ी देर में सब झौंपड़ियें जल कर राख का ढेर होगईं। सुशीला ने यह दृश्य देखा पर अब क्या कर सकती थी। जब वह घर पहुंची तो सैकड़ों की तादाद में गरीब लोग मन्त्री जी के मकान पर पहुँचे और कहने लगे कि महाराज हमारा न्याय हो। सारी घटना को सुनकर गोपालदास ने सुशीला को बुला कर कहा। सुशीले! तूने आज यह ठीक नहीं किया। देखो मैं इन झौंपड़ियों को बनवा सकता हूँ और इन ग़रीबों का हरजाना भी दे सकता हूं पर मेरे न्याय में इसका प्रायश्चित्त तुम्हें करना होगा। गरीबों की झौंपड़ियों को जला कर तुमने जो अप-अपराध किया है उसके प्रायश्चित्त में तुम्हें छः मास तक भिखारियों के वेष में दर दर भीख मांग कर उन झौंपड़ियों को बनवाना होगा। इस कठोर दण्ड को सुनकर उन गरीबों ने तथा रियासत के अन्य लोगों ने मन्त्री जी को बहुत ही समझाया पर वे टस से मस न हुए। सुशीला ने पति के चरणों पर नतमस्तक हो आज्ञा का शिरोधार्य्य कर लिया। देवी ने छः मास में इतना धन जमा कर लिया जिससे झौंपड़ियें भी बनकर तैयार होगईं और जो गरीबों का नुकसान हुआ था वह भी दे दिया गया। इस घटना के कुछ ही दिन बाद गोपालदास की पैंशन हो गई। पैंशन लेकर गरीबों की सहायता के लिये और उनकी वकालत करने के लिये उन्होंने एक साप्ताहिक 'सेवक' नाम का अखबार निकाला। जिस में सरकार की काफी समालोचना हुआ करती। पत्र में लेखों के लिखने का बहुत सा भार सुशीला पर था। एक दिन गोपालदास ने की पुकार शीर्षक एक लेख लिखकर सुशी पूछा—देखो इस लेख में कोई एतराज की नहीं। सुशीला ने पढ़कर कहा यह अन्तरात्म आवाज है। यह दबनी नहीं चाहिये। इस ले प्रकाशित हुए अभी एक सप्ताह भी न हुआ था कार ने इस लेख के आधार पर गोपालदास हज़ार की जमानत मांगी और साथ ही मु भी चलाया। ऐसी अवस्था में क्षमा याचन गोपालदास पर लोगों ने दबाव डाला और कि घर में छोटे २ बच्चे हैं। आपकी स्त्री कुछ बीमार रहती हैं। एक दिन अगर अ तबीयत खराब होजाय तो बच्चों का कोई सुनने वाला नहीं। कचहरी में जाते हुए स दक जी के सामने इन्हीं सब घटनाओं का खिंचा हुआ है। एक विचार आता है जाता है। दिल में सोचा कि लेख का स दोष उपसम्पादक भगतसिंह पर डाल कर मुक्त क्यों न हो जाऊँ। भगतसिंह इसके तैयार है। थोड़ी देर में कचहरी की सड़क मुड़ती हुई मोटर दिखाई दी। और बात की में अदालत के बरामदे के सामने जा खड़ी कमरे के बाहर भीतर निस्तब्धता छाई हुई गोपालदास के अन्दर पहुँचते ही मजिस्ट्रेट पूछा—वेल क्या तुमने यह लेख लिखा गोपाल दास—नहीं। गोपालदास के इ कहते ही दर्शकों में बैठी हुई सुशीला कहा—गलत है। गलत है। गोपालदास ने यह सुना तो लज्जा से उसका मस्तक गया और बोला—सरकार लेख के लिखने क जिम्मेवार हूं। मुझे इनकार करने का दुःख मनकी निर्बलता के कारण ऐसा कहा गया। म स्ट्रेट—अच्छा तुम पर पांच सौ रुपया जुर्मा जुर्माना न देने की हालत में छः महीने की बोलो क्या तुम जुर्माना दोगे? गोपालदास—न 'फिर कैद में जाओगे।' गोपालदास—हां। खड़े हुए पुलीस के सिपाही ने गोपालदास के में हथकड़ी डाल दी और उसे हवालात की ओ चला। उस समय सुशीला ने अपने हाथ के सूत का जो हार बना छोड़ा था पति के गले में कर प्रणाम किया। उस समय गोपालदास मुस्कराकर सुशीला से कहा! प्रिये? क्या तुमने अपना छः मास का बदला चुकाया सुशीला—नाथ? मैंने नहीं, न्याय ने।

जो दिया नहीं जाता।' यह वाक्य इतने स्वाभाविक ढंग से कहा गया था कि मेरी पसलियां तक कांपने सी लगीं। और मुझे लगा कि वस्तुतः दो एक पैसा कोई बड़ी दौलत नहीं है।

इन सब उदाहरणों को देखते हुए कहा जा सकता है कि प्रत्येक भिखारी किसी न किसी प्रकार से लोगों के दिल में अपने लिये दया उपजाने का प्रयत्न करता है और जो इसमें सबसे अधिक सफल हो जाता है उसी को सब से ज्यादा भीख मिलती है।

मैं यद्यपि अर्थ शास्त्र और मनोविज्ञान का नाम लेकर भिखारियों को पैसा देने से बचा करता हूं, पर एक बार मैं भी फँस गया था। इस की कहानी भी मनोरंजक है।

कुछ दिन हुए सड़कपर एक सज्जन मिले, मिल मजदूर के से कपड़े थे। अंगरेजी में बोले मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया। मैंने कहा 'बहुत बुरा किया।' कहने लगे मैं बी. ए. हूं। मैंने कहा 'बधाई हो।'

'मैं कुछ खाना चाहता हूं' मेरे पास कुछ जामुनें थीं मैंने थोड़ी सी उन्हें भी पेश कीं। कहने लगे कि बिना परिश्रम किये मैं कुछ नहीं खाऊंगा? कहना न होगा कि अन्त में बिना परिश्रम किये मेरी भावुकता का लाभ उठा कर वह ≈) ले

अब सोचता हूँ कि अगर उस ने दिन में मुझ जैसे ४,५ को पटा लिया हो तो फिर।

यह दिल्ली है। यहां क्या भिखारी, क्या दूकानदार सब की निगाह आपकी जेब पर है और जेब ढीली करने को नाना प्रकार के फंदे हैं। अगर न सँभले तो, खबरदार, दिल्ली में न रह पाओगे!

हर एक आर्य तथा
आर्य समाज को
आर्य का ग्राहक
बनना चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रभात बैंक लिमिटिड
११० अनारकली, लाहौर
प्रभात बैंक लिमिटिड के डाईरेक्टर्स सूचित करते हैं कि श्री लाला रामलाल जी मालिक कृपाराम एण्ड ब्रदर्स (लाहौर, रावलपिण्डी, पेशावर और मरी) बैंक के सेन्ट्रल बोर्ड में शामिल होगए हैं।
फोन नं० डाईरेक्टर इन्चार्ज
३०६५ नारायणदास कपूर

आर्य

सब प्रकार के
बैंकिंग कार्य
के लिये हमेश
टेलीफोन नं०
३०६५
लाहौर
पर
सम्मति लें

२००२ पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

संख्या २४, अंक २८] २४ ज्येष्ठ, २००० विक्रमी— ६ जून १९४३ [वार्षिक मूल्य ४

अध्यात्म सुधा

[२६]

ऋग्वेदीय दयानन्दोपनिषद्

कर्तव्याकर्तव्य प्रकरण

अत्र श्लेषालं—मनुष्यैर्विदुषां समीपं गत्वेश्वरस्य विद्युदादेश्चगुणान् पृष्ट्वोपकारं चाश्रित्य हिंसायां च न स्थातव्यम् ॥ २ ॥

इस मंत्र में श्लेषालं०—मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के समीप जाकर ईश्वर वा बिजुली आदि अग्नि के गुणों को पूछ कर ईश्वर की उपासना और अग्नि के गुणों से उपकारों का आश्रय करके हिंसा में न वर्तें ॥ २ ॥

मनुष्या ईश्वरस्य विदुषां च सकाशात्सत्यं शीलं धर्म्याणि धनानि धार्मिकान् मनुष्यान् सत्क्रियाः पदार्थविद्याश्च पुरुषार्थेन प्राप्य सर्वसुखाय प्रयतेरन् ॥ ३ ॥

ईश्वर और विद्वानों की उत्तेजना से सत्य शील धर्मयुक्त धन धार्मिक मनुष्य और क्रिया कौशलयुक्त पदार्थविद्याओं को पुरुषार्थ से पाकर समस्त सुख के लिये अच्छे प्रकार यत्न करें ॥ ३ ॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों से सम्बन्ध रखने वाले कर्म के वर्णन से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये ॥

अत्रोपमालं०—मनुष्यैर्यदि सवितृलोकप्राप्तविदुषश्च गुणान्तो दुर्विज्ञेयोस्ति तर्हि परमेश्वरस्य तु का कथा नहि खल्वेतयोराश्रयेण विना कस्यचित्पूर्णं रक्षणं संभवन्ति तस्मादेताभ्यां सह सदा मित्रता रक्ष्येति वेद्यम् ॥ २ ॥

इस मंत्र में श्लेष और उपमालं०—मनुष्यों को विद्वान् के गुण और स्वभावों का पार दुःख से जानने योग्य है तो परमेश्वर का तो क्या ही कहना है इन दोनों के आश्रय के विना किसी की पूर्ण रक्षा नहीं होती इससे इनके साथ सदा मित्रता रक्खें ॥ २ ॥

अत्रोपमालं०—यथा सूर्यस्य प्रकाशेन सर्वे मार्गा सुदृश्या गमनीया अदृश्यदस्युचोरकण्टका भवन्ति तथैव वेदद्वारा परमेश्वरस्य विदुषो वा मार्गाः सुप्रकाशिता भवन्ति न किल तेषु गमनेन विना कश्चिदपि मनुष्यः द्वेषादिदोषेभ्यः पृथग्भवितुं शक्नोति तस्मात्सर्वैरेतन्मार्गैर्नित्यं गन्तव्यम् ॥ ३ ॥

इस मंत्र में श्लेष और उपमालं०—जैसे सूर्य के योग्य वा डाकू चोर और काँटों से यथायोग्य अप्रतीत होते हैं वैसे ही वेद द्वारा परमेश्वर वा विद्वान् के मार्ग अच्छे प्रकाशित होते हैं निश्चय है कि उनमें चले बिना कोई मनुष्य वैर आदि दोषों से अलग नहीं हो सकता इससे सब को चाहिये कि इन मार्गों से नित्य चलें ॥३॥

हे मनुष्या यो यथावदुपकारी सर्वोत्कृष्टः परमेश्वरो वा सभाद्यध्यक्षो विद्वानस्ति तं नित्यं भजध्वम् ॥ ४ ॥

हे मनुष्यो जो यथावत् उपकार करने वाला सब से अति उत्तम परमेश्वर वा सभा आदि का अध्यक्ष विद्वान् है उसको नित्य सेवन करो ॥ ४ ॥

अत्र वाचकलु०—यथा सूर्यं प्राप्य समस्ताः पदार्था विभक्ताः प्रकाशिताः सन्त आनन्दकारका भवन्ति तथैव धार्मिकान् न्यायाधीशान् प्राप्य पुत्रपौत्रकलत्रभृत्यादिभिः सह वर्त्तमाना विद्याधर्मन्यायेषु प्रसिद्धाऽऽचरणा जनाभूत्वा कल्याणकारका भवन्ति यः सर्वदा क्रोधजित्सर्वथा नित्यं प्रसन्नताकारको भवति स एव सैन्यापत्याधिकारेऽभिषेक्तुं योग्यो भवति। यो भूतकालशेषज्ञो वर्त्तमानकाल विप्रकारी विचारशीलोऽस्ति स एव सर्वदा विजयी भवति नेतरः ॥६॥

इस मंत्र में वाचकलु०—जैसे सूर्य को प्राप्त होकर सब पदार्थ अलग अलग प्रकाशित हुए आनन्द के कर्ता वाले होते हैं वैसे ही धार्मिक न्यायाधीशों को प्राप्त होकर पुत्र पौत्र स्त्रीजन तथा सेवकों के साथ वर्त्तमान विद्या धर्म और न्याय में प्रसिद्ध आचरण वाले होकर मनुष्य अपने और दूसरों के कल्याण करने वाले होते हैं। जो सर्वदा कभी क्रोध को अपने वश में करने और सब प्रकार से नित्य प्रसन्नता आनन्द करने वाला होता है वही सेनाधीश होने में नियत करने योग्य होता है जो बीते हुए व्यवहार के बचे हुए को जानने चलते हु

आर्यपुरुषों तथा आर्य समाजों की सेवा में आवश्यक निवेदन

सेवा में निवेदन है कि लोहारू में आर्य्य समाज मंदिर के बिना प्रचार कार्य्य में बड़ी रुकावट पैदा हो रही है। आर्य्य समाज मंदिर अधूरा पड़ा है। दीवारें खड़ी हो गई हैं। परन्तु मंदिर को पूरा करने के लिये सभा के पास धन नहीं है। लोहारू में आर्य्यसमाज का प्रचार करने के लिये श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने जो कष्ट सहन किया है उसे दृष्टि में रखते हुए आपका यह प्रथम कर्त्तव्य है कि आप मंदिर निर्माण में सभा की पूरी २ सहायता करें। मंदिर का अधूरा रहना आर्य्य समाज के लिये गौरव की बात नहीं है। सामान दिनों दिन महँगा हो रहा है। इसलिये आपको सेवा में प्रार्थना है कि आप इस पत्र के मिलते ही इस कार्य्य के लिये सहायता भेज कर कृतार्थ करें।

यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार
प्रचाराधिष्ठाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, दयानन्द उपदेशक विद्यालय।

[१६]

हे मित्र ! मुझे क्यों मारना चाहते हो ?

किमाग आस वरुण ज्येष्ठं यत्स्तोतारं जिघांससि सखायम्।
प्र तन्मे वोचो दूडभ स्वधावोऽव त्वानेना नमसा तुर इयाम् ॥४॥

अर्थ—(वरुण) हे वरणीय भगवान् (किं) कौन सा (ज्येष्ठं) भारी (आगः) पाप (आस हो गया (यत्) जो (सखायं) अपने मित्र (स्तोतारं) मुझ भक्त को (जिघांससि) मारना चाहते हो (स्वधावः) हे शक्तिशाली (दूडभ) किसी से न दबने वाले भगवन् (मे) मुझे (तत्) वह पाप (प्रवोचः) बता दो, [जिस से उस से बच कर] (तुरः) शीघ्र ही (अनेन) इस निष्पाप (नमसा) नमस्कार द्वारा (त्वा) तुम्हें (अव इयाम्) प्राप्त कर लूं।

भगवान् को देखने के लिये तड़प रहे भक्त की अधीर मानसिक अवस्था का जो चित्र गत दो मन्त्रों में खेंचा गया था उसी को प्रकारान्तर से प्रस्तुत मन्त्र में पुनः दिखाया गया है। भक्त भगवान् से पूछ रहा है—"हे महाराज आप मुझे क्यों मारना चाहते हो ? मैंने कौनसा ऐसा भारी पाप किया है जिस से आप मुझे मारना चाहते हो। मैं आपका सखा हूं, मित्र हूं। मुझ मित्र को भी जो आप मारना चाहते हैं तो अवश्य ही मुझ से कोई भारी पाप हुआ होगा। फिर मित्र भी कैसा ? स्तोता—जो निरन्तर आप के गुणों की स्तुति, उनका कीर्तन, करता रहता है। अपने स्तोता मित्र को कोई विना किसी भारी पाप के नहीं मारना चाह सकता। महाराज मुझ से वह कौनसा भारी पाप हो गया है ?" इस प्रकरण में पाठक स्पष्ट देखेंगे कि भक्त को भगवान् के दर्शन न होना ही उसके लिये मरना है। पिछले मन्त्र में भक्त स्पष्ट हो अपने आप को 'विदक्षु'—प्रभु को देखने की इच्छा वाला कह रहा है। और प्रस्तुत मन्त्र के उत्तरार्द्ध में भी भक्त निष्पाप होकर प्रभु-प्राप्ति की इच्छा प्रकट कर रहा है। इस लिये यहां मरने का अभिप्राय भगवान् के दर्शन न होना ही है। साधक प्रभु-दर्शनों के लिये अधीर हो रहा है। पर अभी उसे वे दर्शन मिले नहीं हैं। जिस जीवन में उसे अपने प्यारे भगवान् के दर्शन न हों वह भक्त-हृदय को जीवन ही नहीं प्रतीत होता। वह उसके लिये मृत्यु है। जीते जी मृत्यु है। मन्त्र के भक्त की भगवान् से मिलने की लालसा कितनी उत्कट है ! भगवद्दर्शन से खाली उसे अपना जीवन असह्य मालूम होता है। वह विवश होकर भगवान् के सामने कह उठता है—'हे नाथ ! मुझे अपने दर्शन न देकर क्यों मारना चाहते हो ?"

भगवत्प्राप्ति के लिये ये अधीरता के भाव प्रकट करने के साथ ही वह प्रभु के दर्शन न होने के कारणों पर विचार करता है और देखता है कि अवश्य ही इसका कारण कोई न कोई पाप है। मैं स्तोता हूं—सदा ही भगवान् के गुणों का कीर्तन मैंने भगवान् के गुणों को अपने भीतर धारण करने का भी पर्याप्त प्रयत्न किया है। और इस प्रयत्न के फल में मैं समझता हूं मैं प्रभु का सखा—प्रभु का मित्र भी हो गया हूं। मित्र के वाचक 'सखा' शब्द का योगार्थ होता है—'समान ख्यान वाला।' जिनका 'ख्यान' अर्थात् ज्ञान और तज्जन्य आचरण समान हो वे सखा—मित्र—कहलायेंगे। वास्तविक मित्रता ऐसे समान ख्यान वाले पुरुषों में ही हो सकती है। भक्त कहता है कि मैं तो हरि के गुणों का गान और उनका अपने आत्मा में धारण करके उन हरि का सखा—समान ख्यान वाला मित्र—हो गया हूं। जैसा सत्य, न्याय, दया आदि गुणों का ज्ञान और तदनुसार आचरण भगवान् का है वैसा ही अपने सीमित क्षेत्र में मैंने भी कर रखा है। मैं भी भगवान् की भांति ही सत्य, न्याय, दया आदि के रूप को पहचान कर उनके अनुसार आचरण करता हूं। फिर भी मुझे प्रभु अपने दर्शन न देकर जो मारना चाह रहे हैं उसका कारण अवश्य ही कोई भारी पाप होगा। भले ही मुझे उस पाप का परिज्ञान न हो पर वह है अवश्य। नहीं तो मुझे भगवान् के दर्शन अवश्य मिल जाते।

इस प्रकार भगवान् के दर्शन न होने का कारण अपने किसी पाप को जान कर वह भगवत्प्राप्ति के लिये अधीरता की अवस्था में पहुंचा हुआ भक्त भगवान् से अपने उस पाप को पूछने लगता है। वह कहने लगता है—"हे मेरे प्यारे सखा प्रभो ! अभी तक भी जो पाप मुझे आपके दर्शन नहीं होने दे रहा मेरे उस पाप को आप ही मुझे बता दीजिये। हे प्रभो आप स्वधावान् हैं। आपके पास अपनी शक्ति है। आपको किसी और की शक्ति की आवश्यकता नहीं है। आप स्वयं सर्वशक्तिमान् हैं। और क्योंकि आप स्वधावान् हैं इसी लिये आप 'दूडभ' भी हैं। आपको कोई दबा नहीं सकता। कोई वस्तु आपकी शक्ति को दबा नहीं सकती, उसका पार नहीं पा सकती। कोई बात आपकी शक्ति और ज्ञान से छिपी नहीं रह सकती। इसलिये हे प्यारे प्रभु ! आप मुझे बड़ी आसानी से मेरा वह पाप बता सकते हो जो मुझे आपके दर्शन नहीं होने दे रहा। प्रभो ! मुझे मेरा वह पाप बताइये जिससे मैं उसका त्याग करके, निष्पाप होकर, आप को नमस्कार करता हुआ शीघ्र ही आपको प्राप्त कर लूं—शीघ्र ही आपके दर्शन पा लूं ! मुझ से आप का वियोग सहा नहीं जाता। मैं आपके दर्शनों के लिये मर रहा हूं।"

भगवान् से अपने पाप पूछने का भक्त का यह [illegible] में स्पष्ट किया जा चुका है। एक तो इस प्रश्न द्वारा और दूसरे यह सूचित किया गया है कि जब [illegible] सच्चे प्रभु भक्त प्रभु-प्राप्ति के लिये अधीर हो भगवान् से आपने पापों का रूप पूछना चाहते हैं भगवान् की कृपासे उनके हृदयों में ऐसी स्फुरणा जाती है जो उनको उन पापोंका स्वरूप बता जा

मन्त्र में भक्त के लिये जो 'स्तोता' और 'स शब्दों का प्रयोग हुआ है उसकी स्पष्ट ध्वनि है कि जो स्तोता, जो भक्त, प्रभु के गुणों की स्मृ उनके गुणों का कीर्तन, करते करते भगवान् सखा—समान ख्यान वाला मित्र—नहीं बन जा उसकी भक्ति सफल नहीं होगी। यदि हम चाहते कि हमारी भक्ति सफल हो तो हमें चाहिये कि भ में गाये गये प्रभु के गुणों को अपने आत्मा धारण करके हम प्रभु के सखा हो जायें। प्रभु भांति ही उनके सत्य, न्याय, दया आदि गुणों रूप को पहिचान कर तदनुसार आचरण करने जायें। जो भक्ति करने वाला प्रभु के गुणों धारण करके उनके अनुसार आचरण नहीं कर वह उनका मित्र नहीं हो सकता। जो प्रभु का मि नहीं उसे उनके दर्शन नहीं हो सकते। इसीलि उसकी भक्ति सफल नहीं हो सकती।

मन्त्र के उत्तरार्द्ध में भक्त भगवान् से कह रह है कि महाराज मुझे मेरे पाप बताओ जिससे निष्पाप होकर, नमस्कार करता हुआ, आप प्राप्त कर सकूं। इस कथन की भी एक ध्वनि वह भी समझ लेनी चाहिये। वह यह है कि ज तक भक्ति करने वाले के जीवन में से पाप नि निकल जाते तब तक उसके नमस्कार भी सफ नहीं होते। निष्पाप हृदय से किये हुए प्रभु प्रणाम ही सफल हो सकते हैं। पापी हृदय नमस्कार, उसके प्रणाम, उसकी वन्दना प्रभु कभी स्वीकार न होंगे।

जैसा कि गत मन्त्र की व्याख्या में कहा गय था, मन्त्र में दिखाई जा रही प्रभु-दर्शनों के लि भक्त-हृदय की अधीरता यह ध्वनित करती है प्रभु के प्रेम में तन्मय होकर, उनके दर्शनों की तड़ हृदय में लगाकर, जो साधक प्रभु-भक्ति के मार्ग चलता है उसकी भक्ति चरितार्थ होती है।

हे प्रभो मैं आप के दर्शनों के विना मरा जा रहा हूं। मुझे आपके दर्शनों से खाली अपना जीव जीवन नहीं लगता। वह तो एक प्रकार की जी जी मृत्यु है। प्रभो निष्पाप बनने में मेरी सहाय करो। जिससे मैं शीघ्र ही आपके दर्शन पा सकूं।

श्री लब्भूराम जी नैयड़ के पौत्र का शुभ विवा

आर्य-जगत् में प्रसिद्ध गुरुकुल के अनन्य भक्त श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य श्री लब्भूराम जी नैयड़ के सुपुत्र गौरीशंकर ज नैयड़ ओवरसियर के सुपुत्र श्री हरिशंकर ज नैयड़ का शुभ विवाह श्री ला० खुशहालचन्द ज सबहैड रेलवे आफिस दिल्ली की सुपुत्री कुमा सावित्री देवी के साथ श्री पं० गुजरमल जी त श्री पं० विष्णुमित्र जी सिद्धान्तालङ्कार ने पू वैदिक रीति से कराया। इस शुभ अवसर पर व पक्ष की तरफ से १०१ रु० दान किया गया, जिस से ६६ रु० गुरुकुल कांगड़ी और शेष रुपए प्रचार अनाथालय आदि फण्डों को दे दिए गए इस अवसर पर आर्य परिवार की तरफ से ह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार २४ ज्येष्ठ
वि०सं० २०००

आय प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन का वातावरण

२९, ३० मई को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वार्षिक अधिवेशन समाप्त हो गया। आगामी के लिये अधिकारी निर्वाचित हुए। सभा तथा की संस्थाओं के बजट स्वीकार किये गये। रंग सभा तथा विद्या सभा के सदस्यों तथा ा के अधिकारियों में भी परिवर्तन हुए हैं। जनता, पंजाब की आर्य समाजें—तथा उन प्रतिनिधि सभा की कार्य संचालन पद्धति में वर्तन चाहते हैं। उपरिलिखित परिवर्तन जनता इस इच्छा को प्रकट करते हैं।

एकत्रित प्रतिनिधियों की एक स्वर से यही वाज थी कि कार्य संचालन पद्धति में परिवर्तन ना चाहिए। परिवर्तन करने की सर्व साधारण-छा के होने पर भी, सभा के वार्षिक अधिवेशन वातावरण स्पर्धा और एक दूसरे को पराजित ने की भावना से संचारित था। अभाग्यवश ई वर्षों से इस समय सभा में दलबन्दी की भावना द्यमान है। एक दल दूसरे दल के व्यक्तियों के थ्य काम नहीं करना चाहता है। जो दल शक्ति ा करता है, वह मत भेद रखने वालों को, समीप ने के स्थान पर, उन्हें दूर रखना चाहता है। और ाने दल के आदमियों के सहयोग से ही आर्य माज की संस्थाओं तथा आन्दोलनों का संचा-ा करना चाहता है। दोनों दल शक्ति प्राप्त करने एक दूसरे को अपने साथ न होने के कारण—मत भेद होने के कारण, अपना विरोधी सम-ता है।

परिणामतः पंजाब का आर्य समाजिक वाता-रण इस पारस्परिक संघर्ष से क्षब्ध रहता है। ह दल बंदियां अधिकांशतः व्यक्तिगत-रुचि, तथा क्तिगत-अरुचि (Personal likes and Per-nal dislikes) पर आश्रित हैं। एक दल कुछेक क्तियों को आगे लाना चाहता है, और कुछेक क्तियों को दूर रखना चाहता है। दूसरा दल ते पक्षी दल के कुछेक व्यक्तियों को पसन्द नहीं ता और उन्हें कार्यक्षेत्र में आगे लाने से घबराता और अपनी रुचिके अनुकूल व्यक्तियों को ही आगे ना चाहता है। यदि किसी पृथक् २ कार्यक्रम दल बन्दियां बनी होतीं तो शायद उससे इतनी ान्ति और विक्षोभ पैदा न होता। आर्यसमाज कार्यक्रम तथा उद्देश्य इतने सर्व-सामान्य हैं कि र्य समाज की वर्तमान स्थिति में कार्यक्रम वन्धी मतभेद के कारण दलबंदियां संगठित नहीं क्रम के नाम पर दलबंदियां (Party) बनाई जाती हैं। परन्तु शीघ्र ही वह व्यक्तिगत दलबंदियों में परिवर्तित हो जाती हैं। और समाज का वातावरण व्यक्तिगत महत्वकांक्षाओं तथा चर्चाओं से विक्षुब्ध हो जाता है। और आए साज-प्रतिपक्षी दल दूसरे दल को पराजित करने के लिये कटिबद्ध हो जाता है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि इस स्थिति के सुधारने का क्या उपाय है? इस वार्षिक अधिवेशनमें २९ मई शनिवार को दुपहर आर्यसमाज तथा सभा की स्थिति को उन्नत करने के उपायों पर विचार करते हुए जो विचार विनिमय हुआ था उससे पता चलता है कि सभा में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं, जो इन दलबन्दियों से स्वतंत्र रहकर, हरेक दल के साथ काम करना चाहते हैं। हमारी सम्मति में ऐसे व्यक्तियों को स्वतंत्र दल के रूप में संगठित होना चाहिए। यह स्वतंत्र दल इस भावना का प्रचार करे कि मतभेद होने पर भी मतभेद रखने वाले के साथ मिल कर कार्य्य करो। मतभेद रखनेवालों को भी सहयोग के लिये निमंत्रित करो। सभा तथा समाज के कार्य में व्यक्तिगत रुचियों तथा अरुचियोंको मुख्यता प्राप्त मत करने दो। दोनों दलों में से जिसकी जो बात ठीक हो उसका समर्थन किया जाय, जिसकी जो बात ठीक न हो उसका विरोध किया जाय। स्वतंत्र रूप से अपनी सम्मति का प्रकाशन किया जाय। दलबन्दी की नियंत्रण सम्बन्धी आज्ञाओं के आधार पर अपनी सम्मति को दबाया न जाय।

इस वर्ष सभा के नए प्रतिनिधि निर्वाचित होंगे। ऐसे स्वतंत्र दल की भावना का समर्थन करने वाले आर्य भाइयों का कर्तव्य है कि वह अपनी विचार धारा का आर्य समाजों में अभी से प्रचार करें।

जहां तक सम्भव हो आर्य्य समाजों को चाहिए कि अपने सभासदों में से ही अपनी समाज के प्रतिनिधि निर्वाचित करके भेजें। स्थानान्तर में रहने वाले प्रतिनिधियों को अपना प्रतिनिधि बनाना प्रजा सभात्मक सिद्धान्तवाद के प्रतिकूल है। यदि कोई प्रतिनिधि लाहौर आने जाने का मार्ग व्यय न कर सके तो स्थानीय आर्य समाजों को चाहिए कि वह अपने कोष से उनको मार्ग व्यय दें। हमारी सम्मति में इससे आर्य समाज की दल बंदी के बंद होने में पर्याप्त सहायता मिल सकेगी।

स्वतंत्र दल की मनोवृत्ति वाले आर्य भाईयों को चाहिए कि वह अपने आपको संगठित कर दोनों दलों के पारस्परिक विरोध तथा संघर्ष को दूर करें। यदि वर्ष भर हमने इस दिशा में यत्न किया तो हमें आशा है कि सभा के आगामी वार्षिक अधिवेशन का वातावरण इतना विक्षुब्ध और अशान्त न होगा। और वहां पर एक दूसरे को पराजित करने के स्थान पर परस्पर मिलकर कार्य करने की भावना दिखाई देगी।—आशा है आर्य भाई-इस ओर ध्यान देंगे और सभा के साप्ताहिक पत्र द्वारा आर्य जनता को अपने विचारों से प्रभावित करेंगे। —भीमसेन

सभा का वार्षिक निर्वाचन

सभा का वार्षिक अधिवेशन २९, ३० मई को गुरुदत्त भवन में हुआ। सभा के अधिकारियों के निर्वाचन के अतिरिक्त सभा के भिन्न भिन्न विभागों के बजट स्वीकार हुए। आगामी वर्ष के लिए सभा ने दो महत्वपूर्ण निर्णय किये—(१) स्वर्गीय श्री आचार्य रामदेव जी के स्मारक के लिए दो लाख रुपए एकत्र करने का निश्चय किया गया। इसमें से एक लाख रुपया कन्या गुरुकुल के लिए तथा एक लाख रुपया वेद प्रचार निधि के लिए खर्च किया जाएगा। आर्य पुरुषों का यह कर्त्तव्य है कि वे शीघ्र से शीघ्र इस निधि को पूरा करके अपने कर्त्तव्य का पालन करें। (२) सभा ने निश्चय किया है कि इस वर्ष ग्राम प्रचार पर विशेष बल दिया जाए। पंजाब में हजारों ऐसे ग्राम हैं जहां कि अभी तक ऋषि दयानन्द का सन्देश नहीं पहुँच सका है। शहरों में प्रचार भी हो जाता है और उत्सव भी। परन्तु ग्रामों में प्रचार की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

संवत दो हजार के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गए—प्रधान श्री रा० ब० दीवान बद्रीदास जी उपप्रधान—श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी, श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, श्री म० चरणदास जी एडवोकेट। मंत्री—श्री पं०भीमसेन जी विद्यालङ्कार। कोषाध्यक्ष श्री म०नोतनदास जी। पुस्तकाध्यक्ष श्री पं० देवराज जी विद्यालङ्कार।

अन्तरंग सभा के लिए निम्न सभासद् निर्वाचित हुए—(१) श्री रा० ब० बद्रीदास जी (२) श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी (३) श्री प्रो० इन्द्र जी (४) श्री ला० चरणदास जी (५) श्री पं० भीमसेन जी (६) श्री नोतन दास जी (७) श्री पं० देवराज जी विद्यालङ्कार (८) श्री पं० रामेश्वर जी (९) श्री ला० रामदत्त जी (१०) श्री पं० रामकुमार जी (११) श्री पं० मेलाराम जी (१२) श्री म० चिरंजीलाल जी 'प्रेम' (१३) श्री अलखधारी जी (१४) श्री कृष्णचन्द्र जी विद्यालङ्कार (१५) श्री मोहनलाल शहीद (१६) श्री कृष्णचन्द्र जी (दीवानहाल देहली) (१७) श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा (१८) श्री म०कृष्ण जी (१९) श्री ला० नारायणदत्त जी (२०) श्री रा०सा०अमृतराय जी (२१) श्री राय साहब गंगाराम जी (२२) श्री ला० सन्तलाल जी (२३) श्री ला० अर्जुनदेव जी (२४) श्री लब्भूराम जी नैयड़ (२५) श्री पं० देवेन्द्रनाथ जी। शेष दो सदस्यों को अन्तरङ्ग सभा चुनेगी।

विद्यासभा के लिए निम्न सदस्य निर्वाचित हुए—(१) श्री रा० ब० दीवान बद्रीदास जी (२) श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी (३) श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति (४) श्री ला० चरणदास जी (५) श्री पं० भीमसेन जी विद्यालंकार (६) श्री

(शेष पृष्ठ ६ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपराधों की माफ़ी

[ले०—श्री पूज्य नारायण स्वामी जी]

"थियो सोफ़िकल पाथ" में, कुछ समय बीता जब एक विद्वान ने, जिनका नाम आर. मिचेल है, लिखा था कि अपराधों की माफ़ी के अर्थ ये हैं:—

(१) एक किये हुये कर्म को न किया हुआ कर दिया जावे।

(२) एक कहे शब्द को ऐसा कर दिया जावे मानो वह कहा ही नहीं गया था।

(३) एक कर्म की हस्ती मिटा दी जावे जिस से जो परिणाम उससे निकलते या निकल सकते थे, न निकलने पावें।

जब इन बातों पर, गंभीरता के साथ तू विचार किया जाता है तो स्पष्ट हो जाता है कि ये सब असंभव बातें हैं, क्योंकि एक कर्म की, चाहे उसके प्रभाव को अन्य कर्मों से न्यूनाधिक भी कर दिया जावे तब भी, हस्ती मिटाई नहीं जा सकती। अस्तु; ऐसा होने पर प्रश्न यह है कि संसार में यह माफ़ी का प्रश्न उत्पन्न क्यों हुआ? विचार करने से, मुख्यतया इसके दो हेतु प्रतीत होते हैं:— (१) मनुष्यों की कायरता कि कि वे अपराध करके उसके परिणाम को, वीरता के साथ सहन करने के लिये तय्यार नहीं। (२) मनुष्यों का ऐसा विश्वास कि जिस प्रकार मनुष्यों में, क्रोध करने बदला लेने, ईर्ष्या द्वेष करने अभिमान आदि करने की, निर्बलतायें होती हैं, ईश्वर में भी ये हैं या हो सकती हैं। ईश्वर भी चापलूसी और खुशामद से प्रभावित किया जा सकता है। उसे भी अपनी प्रशंसा सुनने की इच्छा होती हैं और वह चाहता है कि बहुत से लोग उसकी पूजा या इबादत करें इत्यादि। पहला हेतु तो स्पष्ट रीति से जगत में फैला दिखाई देता है। अपराध करके अपराधी उसकी माफ़ी की याचना बराबर करते ही रहते हैं। दूसरे हेतु पर आज संदेह किया जा सकता है परन्तु पुराने अहदनामे के पढ़ने से साफ जाहिर हो जाता है कि जुहोवा (यहूदियों में ईश्वर का नाम) में ये सारी की सारी बातें मौजूद थीं। उसने बनी इसराईल के प्रसन्न करने के लिये, उन के विरोधी मिश्र वालों में जाकर, समस्त मिश्र के प्रत्येक परिवार के ज्येष्ठ पुत्रों को मार डाला। कदाचित जुहोवा समझता होगा कि वह बनी इसराईल ही का खुदा है मिश्र वालों का नहीं। इसीलिये उसे मिश्र वालों पर अत्याचार करने में संकोच नहीं हुआ। आज जब मनुष्य ईश्वर के ईश्वरत्व को, वेदादि सद्ग्रंथों के प्रचार से, समझने लगे हैं और विश्वास रखने लगे हैं कि ईश्वर उपर्युक्त दोषों से मुक्त और स्वतन्त्र है, तब भी अपराधों के माफ़ी के विचार को, जगत से नष्ट न हुआ देख कर, आश्चर्यान्वित होना पड़ता है। अस्तु में यह माफ़ी का विश्वास, सदैव पाप वृद्धि का कारण हुआ

तो तुमने उस दिन पाप किया

(श्री बी० मुकर्जी 'गुञ्जन')

कर त्याग भावना का भावुक,
यदि अपनाया तुमने विचार
तो कवि, सच तेरे जीवन की
वह प्रथम किन्तु है बड़ी हार

श्रद्धा से तो, तुम दूर रहे
बस मति का केवल माप किया
तो तुमने उस दिन पाप किया!

यदि सूख रही हो गंगा की
यह पावन धारा आज इधर
और हिमालय ने थोड़ी-सी
पिघला न बर्फ दी किन्तु उधर

यह दृश्य देख निज आँखों से
यदि हिमगिरि ने न विलाप किया
तो उसने उस दिन पाप किया!

देख रहे हो इन शिशुओं को
बिना दूध के कब्र रचाते
देख रहे हो इन दीनों को
असमय अपनी चिता बनाते

फिर भी गीत लिखा नभ का यदि
तब तुमने व्यर्थ प्रलाप किया
कवि! तुमने उसदिन पाप किया

माता की आँखों में आँसू
हथकड़ियाँ हो साथी, घर में
पैरों में बेड़ी पड़ी हुई
हो लूट मची तेरे घर में

तब भी न सचेत हुए उल्टे
पाकिस्तानी आलाप किया
तो तुमने उसदिन पाप किया!

बन गए सही नेता पर हाँ,
कर्तव्य न अपना याद किया
कुछ चाँदी के इन टुकड़ों पर
सब भूल राष्ट्र बरबाद किया

इस पर भी ओ भूले साथी,
नेता बनने का पाप किया
तो तुमने उस दिन पाप किया!

नित नूतन रच-रच आडम्बर
पापी को धर्माधार किया
सच्चे पर साधू पर तुमने
नित जी भर अत्याचार किया

कलुष हृदय हो भीतर तुमने
बाहर से माला जाप किया
तो तुमने उस दिन पाप किया!

यह सचाई और खरी सचाई है कि जब तक मनुष्य अपराधों का प्रायश्चित्त नहीं करता और उनके परिणामों को भुगतने के लिये वीरता-पूर्ण साहस प्रदर्शित नहीं करता और माफी के विचार त्याग नहीं देता तब तक यह आशा नहीं की जा सकती कि पापों की संख्या दुनिया से कम हो जावेगी।

तुम पूछ रहे हो बड़ा पाप?
निर्धन होना है बड़ा पाप
पर इससे भी बढ़ कर साथी,
कायरता सब से बड़ा पाप

जीने का हक़ किन्तु
यदि जग में आ परिता
तो तुमने उसदिन पा

खिंच रहा चीर था कृष्णा का
थी भरी सभा, निकला न बोल
थे मूक सभी कायर बन कर
देखा सब ने दो नयन खोल

तब भी अर्जुन ने
लो उठा न साथी चा
तो उसने उस दिन पाप

['श्री गुञ्जन की 'तो तुमने उस दिन पाप इस शीर्षक वाली कविता का एक अंश।]

श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी की गिरफ्तारी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रस्ता

३० मई को आर्य प्रतिनिधि सभा के मा अधिवेशन में श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी गिरफ्तारी तथा उनके साथ अधिकारियों किए गए व्यवहार पर निम्न प्रस्ताव पास गया—

आर्य प्रतिनिधि सभा को, दयानंद एं विद्यालय लाहौर के भूतपूर्व आचार्य, आर्य ज अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं विद्वान् सन्यासी श्री स्वतंत्रानन्द जी की गिरफ्तारी का समाचार कर बड़ा दुःख हुआ। सम्पूर्ण सभा का दृढ़ वि एवं धारणा है कि स्वामी जी निर्दोष हैं। जीवन का सुदीर्घ कालीन अनुभव व ज्ञान प्रमाण हैं। इस लिए सभा का निश्चित म है कि श्री स्वामी की गिरफ्तारी या तो जि जान बूझ कर झूठी शिकायत करने के कार है या सरकार के अज्ञान के कारण। इस सभा आदर के साथ किन्तु बड़ी दृढ़ता से नि करती है कि सरकार उन्हें एक दम कारावा मुक्त कर दे। सभा को इस समाचार को सु बड़ा खेद हुआ कि पूज्य स्वामी जी को हथक पहना कर लाहौर लाया गया। इससे स्वा के अनुयायी व प्रशंसक सहस्रों आर्यसमाजि अन्य सज्जनों की भावनाओं को बड़ा ध पहुंचा है। यह सभा पूरी शान्ति से सरकार ध्यान इस दुःखद घटना की तरफ खींचना च है और निवेदन करती है कि ऐसे सन्यासी के दुर्व्यवहार जो कि सब से प्रेम करता है और कि के भी प्रति दुर्भावना नहीं रखता, किसी भी सरकार की शान में बट्टा लगाने वाला है। की आशा है कि जब तक श्री स्वामी जी पु की हिरासत में हैं, तब तक उनसे, आर्य सम जो उनका ऊंचा स्थान व मान है, उसके अनु व्यवहार किया जाएगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

मित्र गोष्ठी

एक कल्पित वक्तव्य

[लेखक—श्री पं० विष्णुमित्र जी गुरुकुल काँगड़ी]

मुलतान के नव युवक समाज के उत्सव में स्वामी मुनीश्वरानन्द जी ने अपने भाषण में कहा कि—

प्यारे नवयुवको, इस अवस्था में जैसा तुम्हारा स्वास्थ्य होना चाहिये वैसा नहीं है। और तुम्हारे चेहरों पर जैसा सौंदर्य होना चाहिये वैसा सौंदर्य भी नहीं है। तुम जानते हो कि ईश्वर सुन्दर है उसका सत् चित् आनन्द स्वरूप अत्यन्त सुन्दर है। यह सुन्दरता की विलास भूमि है और स्वयं सुन्दरता को चाहता है। उसकी सृष्टि सुन्दर है। और उस सुन्दर सृष्टि की सुन्दर-तम रचना तुम मनुष्य हो। बच्चो! सुन्दरता तुम्हारे वस्त्रों में नहीं। न ही वह सुन्दरता तेल में है और न ही कंघी किये हुए इन बालों में है। क्या तुम जानते हो कि मनुष्य की सुन्दरता क्या है? क्या तुम उस सुन्दरता को, रूप रंग में, शक्ल सूरत में, अनमनी आंखों में, आंखों की मतवाली सीली चितवनों में, पतले पतले लाल ओठों में, छलकती हुई मधुर मुस्कान में, समझते हो? प्यारे नवयुवको! यह सुन्दरता तो है पर यह सुन्दरता तुम्हारी नादानी और असावधानी से जल्द अदृश्य हो जाने वाली है चिरस्थायिनी नहीं। मनुष्य में तो ऐसी सुन्दरता होनी चाहिए जो तेल में बसे हुए फूलों की सुगन्ध की तरह सदा रहने वाली हो। अंग अंग में झलकती हो। यदि तुम ऐसी सुन्दरता चाहते हो तो ब्रह्मचर्य का पालन करो। व्यायाम करो। सदा पौष्टिक भोजन करो। सदा भोजन ठीक ठीक पच कर तुम्हारे अन्दर सुन्दरता पैदा करे उसके लिए प्रति दिन भोजन के पश्चात् कुछ समय के लिए प्रहास्य किया करो। इस हास्य के बहुत लाभ हैं। श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक अपने अमेरिका के भ्रमण वृत्तान्त में लिखते हैं कि अमेरिका के विद्यार्थी हंसी दिल्लगी को बहुत पसन्द करते हैं। वहां नव-युवक विद्यार्थियों में जो हँसोड़ होता है उसकी दो पांचों उँगलियां घी मे रहती हैं। यदि वह कुछ लिखने में भी होशियार हुआ तो कहना ही क्या है। वह विद्यार्थी लड़के लड़कियों का प्यारा, सभा समाजों का दुलारा और विश्व-विद्यालय का सितारा ही होता है। मेरी सम्मति है इसके लिए तुम्हें एक सभा बना लेनी चाहिए। इस सभा के प्रत्येक सभासद का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपनी बारी पर कोई न कोई चुटकला या विनोद करने वाली कहानी सुनावे। स्वामी जी के इस प्रस्ताव पर एक सभा बना दी गई। जिसका नाम मित्र गोष्ठी रखा गया। और यह भी निश्चय हुआ कि इस सभा की कार्यवाही की रिपोर्ट प्रति सप्ताह आर्य पत्र में प्रकाशित करने के लिये भेजी जाया करे ताकि उससे दूसरे नव-

इस सप्ताह गोष्ठी सभा का विषय था—कंजूसों की दुनियां। सभा द्वारा भेजी हुई जो रिपोर्ट मिली हैं वह आर्य में प्रकाशित की जाती है। आगे से इस सभा के समाचार इस बाल संसार स्तम्भ में समय समय पर प्रकाशित होते रहेंगे। आज की सभा में विद्यार्थी सोग कीर्ति ने सुनाया कि—कञ्जूसों के इतिहास में वेन्डील का नाम अमर है। यह फ्रांस के रहने वाले थे और बोलोन के चीफ़ मजिस्ट्रेट थे। अपनी ७८ वर्ष की आयु में इन्होंने लगभग डेढ़ करोड़ रुपया की माया संचय कर ली थी। इनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि इन्होंने अपनी सम्पूर्ण चीज़ों को बेच कर नकद रुपया बना लिया था। वह केवल दूध और रोटी खाकर अपना जीवन निर्वाह करते थे। दूध के लिए भी उन्हें नकद पैसा नहीं देना पड़ता था। वह अपनी मैजिस्ट्रेटी की हैसियत से दूध वालों को पकड़ कर दूध का नमूना ले लिया करते थे। इस तरह इतना दूध एकत्र हो जाता कि उन्हें खरीदने की नौबत ही नहीं आती थी। इन्होंने मजिस्ट्रेटी से एक अधिक ऊँचे पद को इसलिये ठुकरा दिया था कि वहां पर दूध पाने की कोई सुविधा न थी। और सुनिये एक बार वह बीमार पड़े। उन्होंने अपनी नस खुलवा कर खराब खून निकलवाने के लिये एक जर्राह बुलवाया। जर्राह ने पहले अपनी फीस माँगी इन्हें फीस की रकम अधिक जँची, उन्होंने होशियार जर्राह को वापिस कर दिया और उसकी जगह एक अनभिज्ञ जर्राह को बुला लिया। इससे भी प्रत्येक नस को खोलने की फीस पांच पैसे नियत किये साथ ही यह भी शर्त लगाई गई कि यदि कुछ खराब खून भीतर रह गया तो उसी के अनुसार फीस भी कम हो जायगी। इसी शर्त पर इलाज प्रारम्भ हुआ और इसी इलाज के साथ इन्हें इस दुनियां से कूच करना पड़ा।

इसके बाद दूसरे विद्यार्थी यशपाल ने एक और मज़ेदार बात लार्ड ब्रेको की सुनाई। ब्रेको स्काटलैंड के बहुत बड़े जमींदार थे। लेकिन एक एक पैसा उनके लिये प्राणों से बढ़कर था। एक बार उन्होंने सड़क पर पड़ा पैसा देखा। उसी समय संयोग से एक भिखारी की भी नजर उस पर पड़ी। भिखारी पैसे को उठाने के लिये आगे बढ़ा। लेकिन लार्ड महोदय ने उसे पहिले ही उठा लिया। भिखारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा सरकार, इतने बड़े आदमी होकर इस पैसे का क्या करेंगे। इन्होंने झट उत्तर दिया—'हट जाओ यहां से। पैसे लायक तुम्हारी सूरत नहीं है।' एक बार की बात है आप अपने एक आसामी से झगड़ रहे थे आपके हिसाब में एक शिलिंग और निकलता था और किसान के हिसाब से कुछ भी बाकी नहीं था।

आधुनिक पुस्तकालय का स्वरूप

[श्री विश्वनाथ एम. ए. गुरुदत्त भवन लाहौर]

(गतांक से आगे)

पुनः सूची पत्र मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है। १. लेखक सूची (Author Catalogue)—यह लेखकों की दृष्टि से अकारादि क्रम से सूची बनाई जाती है। यदि संक्षिप्त सूची बनानी हो तो यह उत्तम है। २. विषय सूची (Classified Catalogue) पुस्तकों की किसी प्रचलित श्रेणी विभाग प्रणाली (Classification) को समक्ष रख कर विषय क्रम से सूची बनाना। विद्वानों और अन्वेषण कर्त्ताओं के लिए यह सूची बड़ी उपयोगी है। ३ लेखक, पुस्तक का नाम और विषय तीनों प्रकार के कार्ड बनाकर और उनको एक ही स्थान पर मिलाकर अकारादि क्रम से सूची (Dictionary Catlogue) बनाना। यह सूची संसार में सर्व प्रिय है। जनता के लिए यह सूची सब से अधिक उपयोगी है।

पुस्तकालय के नाप का क्या अनुपात होना चाहिए यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। आदर्श रूप से यह माना जाता है कि कुल बजट का एक तिहाई भाग पुस्तकों, समाचार पत्रों और जिल्द बंदी पर व्यय होना चाहिए। प्रायः विद्वानों का यह विचार है कि कुल बजट का २५% पुस्तकों, समाचार पत्रों और जिल्द बंदी पर ५०% कर्मचारियों के वेतन पर और २५% किराया, प्रकाश, मुरम्मत तथा अन्य मिश्रित बातों पर व्यय किया जाय।

पुस्तकाध्यक्ष का मुख्य कार्य पुस्तक विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के सूचीपत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तकों की समालोचनाओं के आधार पर निर्वाचन करके उन को खरीदने की व्यवस्था करना पुस्तकें प्राप्त होने पर उनको रजिस्टर (Accession Register) में दर्ज करना उनका वर्गीकरण (Classify) करना और उनकी सूची (Cataloging) तय्यार करना है। किसी भी पुस्तकालय की उत्तमता का नाप उसके वर्गीकरण और सूची पर आश्रित है, यह दोनों काम यथा संभव पुस्तकाध्यक्ष को स्वयं ही करने चाहिए और सहायकों पर नहीं छोड़ने चाहिए।

दिखादें तो मैं एक शिलिंग देनेको तैयार हूँ। इन्होंने तुरन्त प्रस्ताव स्वीकार कर अपना सारा खजाना दिखा दिया। देखने के बाद किसान ने कहा सरकार अब मैं भी तुम जैसा अमीर हो गया। लार्ड साहब ने पूछा—यह कैसे? किसान ने हँसकर कहा—आपकी सारी दौलत देखली और आप भी तो देखकर ही दौलत मन्द बने हुए हैं। क्रमशः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

एक महान यज्ञ

[ले०—श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट]

स्वामी दयानन्द ने आर्य्य समाज की स्थापना करके एक महान यज्ञ की रचना की आयोजना की। यदि आर्यसमाज यज्ञ है तो प्रत्येक आर्य-समाजी का कर्त्तव्य है कि उस यज्ञ को सफल बनाने के लिये सदैव प्रयत्न करता रहे। यदि हम आर्य्य समाज के इस परिश्रम व उसके सम्बन्ध पर एक दृष्टि डालें तो उसका लक्ष्य हमारी समझ में आ सकता है। यज्ञ शब्द का अर्थ देव, पूजा, संगति करण दान, है। मनुष्य समाज में सामाजिक जन्तु या (Social animal) है। वह अकेले नहीं रह सकता अकेले रह कर अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकता, अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। इस लिये उसका समाज में रहना या दूसरों से मिल कर रहना अनिवार्य्य है। परन्तु जब एक से अधिक व्यक्ति एक समाज में मिलते हैं तो उनमें आपस में सहायता भी मिलती है, परन्तु समय समय पर संघर्ष भी होता रहता है। यदि एक व्यक्ति का स्वार्थ दूसरे व्यक्ति से टक्कर खाता है तो मतभेद, झगड़ा, लड़ाई होने लगता है। उसके लिये सब समाज के व्यक्ति मिल कर कार्य करें और संगठित हों, प्रेम हो, संघर्ष न हो इसके लिये नियमों की आवश्यकता है। संगति करण के दो आधार हैं। एक देव पूजा, दूसरा यज्ञ। इस लिये यज्ञ का एक अङ्ग देव पूजा है। संगति करण के लिये आवश्यकता है Sanction और Stan dard की अर्थात् आदेश और व्यवस्था की। व्यवस्था करके, बल विधान करने, ज्ञान करने, अपने ज्ञान द्वारा सचेत करने के लिये एक महान बलशाली शक्ति की आवश्यकता है। दण्ड विधान करने वाले की जहां आवश्यकता है Fear या भय उत्पन्न करने के लिये वहां आदर्श की आवश्यकता है। प्रेम (Love) विश्वास (Faith) उत्पन्न करने के लिये देव पूजा अर्थात् ईश्वर की उपासना व प्रार्थना से ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव पर दृष्टि रखने से यज्ञ का एक अंग पूरा होता है। यदि देव पूजा के आधार पर संगति करण होगा तो विश्व व्यापी होगा। उसमें Race color sex cast creed का भेद नहीं होगा अर्थात् रंग लिंग उंच जाति और सम्प्रदाय के भेद नहीं होंगे। यदि भेद रहेंगे भी तो उससे विचारों, आचारों और व्यवहार में भेद भाव उत्पन्न नहीं होगा। इस संसार को universe कहते हैं यह universe जब ही हो सकता है जब इसका संचालक व पति एक है। जब कोई महान शक्ति सब बिखरे पदार्थों को एकत्र करके एक कर देती है तो universe या विश्व होता है। कोश में universe शब्द के अर्थ देखने से यह बात ज्ञान में आ सकती है। जिस संगठन होगा, विश्व व्यापी होगा परन्तु अभी यज्ञ के तीसरे अंग पर विचार करना है। वह है दान। यदि हम सब अपने को ईश्वर रूपी राजा की प्रजा मान लें तो संगति करण विश्व व्यापी तो होगा परन्तु स्वार्थों के कारण संघर्ष उत्पन्न होने की संभावना सदैव रहेगी। उसके लिये दान की आवश्यकता है। यदि भेद के रहते हुए भेदभाव उत्पन्न न हो तो सफलता हो सकती है। इसके लिये आवश्यक है कि समाज के नियम दान की मर्यादा को लक्ष्य में रख कर हों। अर्थात् जब समाज के हित का प्रश्न हो तो समाज में रहने वाले व्यक्ति अपने स्वार्थ का त्याग करने के लिये तत्पर रहें। संसार का उपकार करना उनका लक्ष्य हो। अपना स्वार्थ सिद्ध करना ही न हो देव पूजा संगति करण और दान तीनों प्रकार के भावों से युक्त होने से यज्ञ पूर्ण होता है। इस लिये पहले चार वेद और ईश्वर विश्व की भी उपमा यज्ञ से दी गई है। यह जीवन भी यज्ञ है। आर्य्यसमाज में दस नियम हैं। पहले चार वेद और ईश्वर से संबन्धित हैं। वेद और ईश्वर अर्थात् ईश्वर और उसका दिया हुआ ज्ञान सारे विश्व की एक माला बनाने के लिये एक डोरा है। उस विश्व रूपी लिंग के यह आधार या Back ground है। उनका सम्बन्ध देव पूजा से है। ५ से ६ तक संगति करण के लिये है, विश्व व्यापी संगठन के लिये है। परोपकार की भावना उत्पन्न करने के लिये है, सबकी एक साथ उन्नति के लिये है। इन नियमों का जहां सम्बन्ध संगति करण से है वहां इन से दान या स्वार्थ त्याग की भावना भी उत्पन्न होती है। दसवां नियम विशेष रूप से दान के अङ्ग की पूर्ति के लिये है। उसमें यह दर्शाया गया है कि जब सभा या समुदाय की भलाई का प्रश्न हो तो हर एक को अपने स्वार्थ को त्याग देना चाहिये। परन्तु वह भी ऐसे नहीं कि घर घुस तमाशा देखे। समाज के नियम ऐसे न हों कि व्यक्ति की सत्ता मिट जाये। उनको व्यक्ति उन्नति का का अवसर ही न मिले और न व्यक्तियों को उनकी स्वतन्त्रता होनी चाहिये कि वह अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये समाज संगठन को बिलमिला कर दें। आर्य समाज के उन नियमों से विश्व व्यापी महान यज्ञ की भावना प्रकट होता है। स्वामी दयानन्द सारे संसार को एक यज्ञ का रूप देना चाहते हैं। उसके लिये उन्होंने आर्य्यसमाज की स्थापना ऐसे ही विश्व व्यापी नियमों के आधार पर की है यज्ञ की रचना हुए अब बहुत समय हो गया है उसको सफल बनाना अधिक विस्तार देना हम सब का कर्तव्य है। आर्यसमाज के नियमों में बड़ा सुन्दर समन्वय है, जिसके कई रूप हैं। आज यज्ञ रूप पर विचार विचार किया है शेष फिर कभी।

क्या आप जानते हैं ?

२५० फीट ऊँची सुराही—

लङ्का शायर के बिजली घर के लिये संस में सबसे बड़ी पानी ठंडा करने वाली सुराही गई है। यह कॉंक्रीट की बनी है और ऊँ २५० फीट और घेरे में १७५ फीट है। इस घण्टा ३० लाख गैलन पानी ठंडा होता है सुराही का वजन ५००० टन है और इस आदमियों ने १० मास में बना कर किया था।

संसार भर के वृक्षों में सबसे ऊँचा!

संसार भर के वृक्षों में सबसे ऊँचा वृक्ष वुड, वाशिंगटन, में है। इस का नाम है फर और इस की ऊंचाई है ३२५ फ़ीट।

सात वर्ष का वृद्ध बालक!

चार्ल्स चार्ल्सवर्थ का जन्म मार्च १४, १६ को हुआ था। चार वर्ष का होने पर ही हो गया और उसके दाढ़ी और मूँछें निक और जब वह सात वर्ष का हुआ तो प सहसा अचेत हो गया और उस की गई।

क्या सागर सूख जायँगे ?

एक अमरीकन वैज्ञानिक का कथनं है कि की सतह प्रति वर्ष १० इञ्च कम होती है। यदि ऐसा ही होता रहा तो १२००० समुद्र सूख जायँगे।

एक आस्ट्रेलियन वैज्ञानिक के नुसार गत १० ००० वर्षों में लेश मात्र भी हानि नहीं हुई है। अतएव सागर के सूख समस्या ही उपस्थित नहीं होती।

(पृष्ठ ३ का शेष)

नोतन दास जी (७) श्री पं० देवराज जी विद्या (८) श्री मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी आचार्यजी गुरुकुल कांगड़ी (१०) श्री मुख्याधि जी कन्या गुरुकुल (११) श्री आचार्या विद्याव कन्या गुरुकुल (१२) श्री ब्रह्मदत्त जी जक्षा (१३) श्री मनोहर जी विद्यालङ्कार (१४) श्री देव जी विद्यालङ्कार (१५) श्रीमती ब्रह्मवर्च विद्यालङ्कता (१६) श्री प्रो० वागीश्वर जी विद्या (१७) श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति (१८ पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार (१६) श्री रा० अमृतरायजी (२०) श्री प्रो० विश्वनाथजी विद्या (२१) श्री पं० चन्द्रगुप्त जी विद्यालङ्कार (२२ पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा (२३) श्री स्वामी अभ जी (२४) श्री म० रामकुमार जी (२५) श्री केदारनाथ जी देहली (२६) श्री पं० यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार (२७) श्री डा० रामरक्खा मह

हर एक आर्य तथा
आर्य समाज को
आर्य का ग्राहक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योरप के पत्र

निवेदक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय
प्रधान सभा]

रे आत्मीय श्री पं० विद्याभूषण जी ने
के नाम की एक पुस्तक दी, दस मिनिट में
आद्योपान्त उसकी सैर कर गया। परन्तु
ोचक प्रतीत हुई कि समय होने पर मैंने
भली भांति पढ़ने का निश्चय कर लिया
पढ़ डाला। पुस्तक के लेखक हैं श्री डाक्टर
द वर्मा जी, हिन्दी प्रोफेसर प्रयाग विश्व-
ालय। यह मेरे एक पुराने मित्र के पुत्र हैं
मैं इनको विद्यार्थी काल से जानता हूं।
पिता श्री खानचन्द जी आर्यसमाज चौक
के मन्त्री थे—जब मैं १९१८ ई० में यहां
था तब धीरेन्द्र जी एम० ए० में पढ़ते
र उनके आर्य पिता ने वैदिक प्रेम से
होकर उनको 'वेद' लेने के लिए बाध्य
था। शायद वह उनको उपदेशक बनाना
हों।

ी वर्मा जी आर्यसमाज से सदा सम्बन्धित रहे
और आजकल नया कटरा प्रयाग के सदस्य
परन्तु मैंने उनको कभी उनके पिता के समान
ा सदस्य नहीं पाया। मेरी उन की
की बैठक भी नहीं है। सम्पर्क दूर का
॥

परन्तु आज पुस्तक पढ़ने के पश्चात् मेरे
ए और ही हो गये। 'योरप के पत्र' वह
र्णिक पत्र हैं जो उन्होंने १९३४ ई० में वि-
ता जाकर अपने पिता जी को लिखे थे। उन
में मैं उनकी मनोवृत्ति की झलक देख सका।
उस मनोवृत्ति पर आर्यसमाज और स्वामी
ानन्द की इतनी छाप दिखाई पड़ी जिस को
ु वह स्वयं भी नहीं जानते।

लोग नित्य विलायत जाते रहते हैं, और मेरी
बात चीत होती रहती है। डाक्टर वर्मा
री बातचीत नहीं हुई। परन्तु जब मैं किसी
तीय युवकको विलायत से लौटता देखता हूं तो
भाव उत्पन्न होता है। वह यह कि भारतीय
कच्चे जाते हैं और विलायत के वातावरण
वे पकते हैं। अतः उनके विचारों में पाल
के आमों की भांति आस्वाभाविकता ही
है। यहीं के एक प्रोफेसर जो विलायत
ौटे तो मुझसे कहने लगे, इंगलैंड इतना
पूर्ण देश है कि यदि इंगलैंड वाले यहां
र अधिक वेतन मांगते हैं तो कुछ आश्चय
इंगलैंड से भारतवर्ष में आने में बड़ा त्याग
पड़ता है। यह बात उन्होंने मुझे हरि-
के स्टेशन पर कही थी जब मैं इंटर के कमरे
ठने जा रहा था और वह सैकण्ड के।
इतना न था कि मैं इसका उत्तर देता।
ेत्त ही में सोचा कि यदि इंगलैंड जाकर
भारतवर्ष से घृणा करना ही सीख आते
वहां जाने से क्या लाभ। दक्षिण में
द्रासी युरक बहुत शिकायत किया करते
किया था। उनको शिकायत यह थी कि भारत-वर्ष कितना कृतघ्न है कि उनको कोई अच्छी नौकरी नहीं देता। मैं उनसे कहा करता था कि तुम १७ हज़ार भारतवर्ष में किसी दुकान को देते तो भारतवर्ष उनका ब्याज देता। तुम रुपयों को टैक्स में दे आये और उनका बदला भारत-वर्ष से मांगते हो। मैं और वे कई महीने साथ रहे। वे नित्य योरप के ही गीत गाया करते थे। और अपने को सर्वभक्षी (Omnivorous) कहा करते थे। प्रयाग के एक और सज्जन ने विलायत से लौट कर अपनी लड़कियों के बाल कटवा दिये थे।

डाक्टर वर्मा ऐसे नहीं हैं। उन्होंने योरप का जो चित्र खींचा है उससे उनका भारत प्रेम और अपनी संस्कृति का प्रेम भली भांति विदित होता है। वह योरप के जिस नगर और जिस दृश्य को देखते हैं उसी के तुल्य भारतीय नगर या दृश्य की उनको याद आ जाती है और उनकी तुलना सीधी सच्ची और वास्तविक जान पड़ती है। उनकी निरीक्षण शक्ति भी अच्छी है और वर्णन की शैली भी मनोरंजक है। आप योरप की यात्राओं के जितने वर्णन पढ़ेंगे उनसे यह वर्णन सर्वथा विचित्र पायेंगे। एक पंजाबी महाशय कहा करते थे कि जब मैं विलायत से लौटकर भारत में आता हूं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अनाथालय में आ गया। परन्तु डा० धीरेन्द्र जो ऐसा नहीं समझते। उन्होंने भारतवर्ष के समान योरप के नगरों में भी विशाल भवन, गंदी झोपड़ियां, शिक्षित धनी पुरुष और मूर्ख दरिद्र लोग भी पाये। उन्होंने योरप की संस्कृत और भारतीय संस्कृति की तुलना करके भार-तीय संस्कृति को बुरा नहीं पाया। वे समस्त यारप में शाकाहारी रह सके। कुछ उद्धरण देता हूं।

"तो भी हम लोगों की संस्कृति की परा-काष्ठा को इटैलियन नहीं पहुँच सकते। हम लोगों का झंडा भी बहुत बड़ा थी फिर खुरचन भी बहुत होनी चाहिए।"

'वेनिस में हम लोगों को बड़ी निराशा हुई। वेनिस के जो किस्से सुन रखे थे उनके हिसाब से हम लोग समझते थे कि शानदार नहरों के किनारे आलीशान महल खड़े होंगे ... छोटी या मझोली ईंट के खपरैले, पुराने मकान जिनके प्लास्टर उतर गये हैं। और जो खुद झुक गये हैं, लखनऊ के नवाबी ज़माने के मकानों की याद दिला देते हैं।'

पतली गलियां ·····गली में तरबूज़ वालों की दुकानें जिन पर खड़े खड़े लोग तरबूज़ की फांकें लेकर खाते हैं, मच्छड़, मक्खी मतलब यह कि किसी बात की कमी नहीं।"

'फ्लोरेंस आर्नो नदी के किनारे बसा है यह पीलीभीत के निकट की दिउहा नदी के बराबर होगी और उसी की तरह आज कल सूखी पड़ी है।"

अपने चाचाजी श्री डा० कन्हैया लाल जी के पत्र के उत्तर में वह लिखते हैं—

कता तो है किन्तु अभी किसी तरह भी गुंजायश मुझे नहीं दिखाई पड़ती।"

'हमारे आदर्श केवल भौतिक दृष्टि से नैतिक नहीं हैं बल्कि उनकी आत्मा और अन्त में उस सर्व व्यापक परम संज्ञा की एकता पर निर्धारित है। इन ऊँचे सिद्धान्तों को समझ सकना अभी यहां के लोगों के बूते की बात नहीं है।'

वैदिक धर्म से तात्पर्य केवल संध्या, हवन, संस्कार आदि कर्मकाण्ड से लिया जावे तब तो मेरी समझ में इनके फलाने की न विशेष आव-श्यकता ही है और न गुंजायश ही है। यहां भी कर्मकाण्ड की कमी नहीं है। हाँ यदि वैदिक धर्म से तात्पर्य आर्य जीवन के आदर्शों से है जैसे प्राकृ-तिक जीवन वर्णव्यवस्था, पंचयज्ञ, आदि तब वास्तव में इनसे उत्तम अनुकरणीय आदर्श मुझे दूसरे दिखाई नहीं पड़ते। सच तो यह है कि यहां की परिस्थिति देख कर मेरा अपना आर्य आदर्शों के प्रति प्रेम और आदर और भी बढ़ गया है।"

लेकिन आदर्श मौखिक प्रचार से नहीं फैलाए जा सकते उनके फैलाने का एक मात्र उपाय उन्हें जीवन में घटित करके दिखलाना है। इस बात में हम लोग स्वयं कितने पिछड़े हैं यह हम आप से छिपा नहीं है। अतः मेरी समझ में जब तक हम आप में से बड़ी संख्या में लोगों के नित्य प्रति के जीवन आर्य आदर्शों पर नहीं ढलेंगे, तब तक उसके सम्बन्ध में दूसरों के सामने कहना अदूर दर्शिता होगी।'

डा० धीरेन्द्र जी के शब्द मृदु हैं परन्तु सत्यता से पूर्ण हैं। एक अमेरिका के सज्जन एक बार मेरे पास ठहरे थे। उन्हों ने मुझे अपने शेखीखोर आर्य प्रचारकों के विषय में जो कुछ बताया वह इनके कथन की पुष्टि करता है। जैसे कि अमेरिका के ईसाई पादरी अमेरिका जाकर प्रोपेगेण्डा किया करते हैं इसी प्रकार यह लोग भी"।

पुस्तक छोटी है परन्तु है बड़ी सुन्दर चित्र सुहावने हैं। छपाई आदि पर बहुत रुपया व्यय किया गया है।

——

—ट्रान्सवाल भारतीय कांग्रेसकी वर्किंग कमेटी ने एक प्रस्ताव में भारत सरकार से प्रार्थना की है कि वह यूनियन सरकार के साथ अपना राजनैतिक सम्बन्ध विच्छेद कर ले। वहां जो भारतीय विरोधी बिल पास किया गया है, इस तरह उसका प्रति-वाद करे।

—नागपुर १४ मई गत १६ मई को डा० खरे अपने नवीन सेवा कार्य का चार्ज लेने के लिए दिल्ली रवाना हुए। आप बिलकुल विदेशी लिबास में थे। आपके मित्रों और परिचितों को यह देख कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

यह स्मरण रहे कि डा० खरे ने खादी के पतलून कमीज़ और कोट को अपनी राष्ट्रीय लिबास बनाया था। प्रधान मन्त्रित्व काल में और केन्द्रीय असे-म्बली में आप यही पोशाक पहनते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। अपनी नवीन गोशाला का ताज़ा व शुद्ध दूध प्रतिदिन विद्यार्थियों को उचित मात्रा में दिया जा रहा है जिसका सुप्रभाव उसकी सेहत पर स्पष्टतया नज़र आता है। ब्रह्मचारी नियमित रूप से व्यायामादि का अभ्यास कर रहे हैं। ग्रीष्म ऋतु होने के कारण तैरने में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। गुरुकुल में होने वाला तैरी सान्मुख्य सम्भवतः जून के द्वितीय सप्ताह में होगा जिसमें गुरुकुल तथा पंचपुरी के प्रसिद्ध प्रसिद्ध तैराक भाग लेंगे। विजेताओंको पारितोषिक भी दिया जायेंगे।

गत ३० मई को अच्छी वर्षा हो जाने के कारण मौसम ठण्डा हो गया है।

अध्ययन-सत्र

नवीन-सत्र की पढ़ाइयां प्रारम्भ हो चुकी हैं। विद्यालय तथा महाविद्यालय के ब्रह्मचारी पूर्ण मनोयोग के साथ अध्ययन में लग गए हैं। गुरुकुल का वातावरण सर्वथा शान्तिमय और उत्साह युक्त प्रतीत होता है। विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक वा आत्मिक उन्नति के लिये अधिकारी गण प्रोत्साहन दे रहे हैं। वेद आयुर्वेद तथा साधारण महाविद्यालय तीनों अपनी दिशा में सन्तोषजनक उन्नति कर रहे हैं।

श्रद्धानन्द सेवाश्रम

गुरुकुल आयुर्वेद-महाविद्यालय से सम्बद्ध श्री श्रद्धानन्द सेवाश्रम रोगियों की स्तुत्य सेवा कर रहा है। इस सेवाश्रम में गुरुकुल के आस-पास तथा सुदूर इलाकों से भी प्रतिदिन बड़ी संख्या में रोगी आते हैं और उत्तम औषधियों से स्वास्थ्य लाभ करते हैं। बीमारों से दवा दारू आदि का किसी प्रकार का खर्च नहीं लिया जाता, बल्कि गरीब रोगियों के लिये भोजन, वस्त्र, बिस्तर आदि की व्यवस्था भी गुरुकुल की ओर से की जाती है। युद्ध के इन विषम दिनों में जबकि दवाएं, पट्टियां तथा उपकरण दुर्लभ हो रहे हैं—गुरुकुल के अधिकारी इस सेवाश्रम को एक ऊँचे अस्पताल के रूप में देखने का स्वप्न मन में लिए बैठे हैं। उदार धनी मानी सज्जनों से हमारा साग्रह निवेदन है कि वे इस निष्काम सेवा के पवित्र कार्य में हाथ बटा कर पुण्य के भागी बनें।

स्वास्थ्य समाचार

ब्र० नरेन्द्र १५ श्रेणी (हर्निया)

ब्र० रमेश (ज्वर)

गत सप्ताह उपरोक्त ब्रह्मचारी रुग्ण हुए थे अब वे स्वस्थ हैं।

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

व्यक्ति हो या राष्ट्र, कमज़ोरी से जिसकी वाचा लड़खड़ायें, उसका जीवन लड़खड़ाने लगता है। अतः हमारी भाषा में लड़खड़ाहट न हो। उसमें संयुक्त भारत के महान निर्माण का परम बल हो।

राष्ट्र-भाषा सबकी बोली है, मानता हूँ, किंतु इस बानी में नहीं कि 'जो सबकी है, वह किसी की नहीं है।' वह तो अपने में तुतलाने से जीवन आरंभ करने वालों की, फिर सीखने वालों की, फिर समझने वालों की और सबसे परे वह राष्ट्र और शासन की भाषा है। शासन की भाषा उस समय, जब शासन हमारा हो। चिन्तन, चर्चा, चरित्र और चौराहों पर यदि हम उसे देख सकें, तो फिर राष्ट्र-भर में हम उसे देख सकेंगे।

"समस्त नदियां किसके अभिषेक को चली जा रही हैं? समस्त हरियालापन किसके संकेत पर भूमि से विद्रोह किए ऊपर को उठ रहा है? भारतीय मानव रीझने और खीझने वालों में बंटकर किस वाणी के आस पास चक्कर काट रहा है? उस के सिर पर श्वेत वस्त्र बंधा है; उस के बदन में लंगोटी लगी है। मुट्ठी भर हड्डियां हैं और प्राणों को इतना तपा रहा है, मानो उसे झोनी चादर बनाकर अपने अभिमत को उसमें से झांक लेना चाहता है।

धारणशील राष्ट्र-वाणी की रक्षा उसमें देख रहे हैं। तरुणाई अपने इरादों के अनुवाद में इतनी बेचैन है कि उस युगवाणी को पीछे छोड़कर मानों नागाधिराज पर चढ़ जायगी। उसकी विजय इतिहास है। और अपनी से उसकी पराजय युग का महान पुरुषार्थ होगी।

उस युग पुरुष के हाथों राष्ट्र-वाणी है; चाहे वह सेवा-ग्राम में रहे, कारागार में रहे या किसी और लोक में रहे।

उसके वंदन, और नयी पीढ़ी के निर्माण की प्रतिज्ञा के साथ हिन्दी भाषी गायक आओ, 'अक्षर' की आराधना करें; शब्द को सार्थ करें; स्वर का गुञ्जन करें, भारता के चरणों में व्यंजन चढ़ावें, टूटते देश और टूटती भाषा में सन्धि साधन करें; पदों को सम्भालकर जमावें; अङ्गों को बलवान बनावें; और राष्ट्र भारती को मस्तक उठाकर, मस्तक झुकाकर, और आवश्यकता होने पर हथेली पर मस्तक उतार कर वहां ले चलें जहां से वह विश्व की स्वतन्त्र भाषाओं से बराबरी के बोल बोल सके। इसके लिए जितना सङ्कठिन प्राण, जितना बलिदान, जितना गौरवगान और जितने स्वप्नों का जागरण आवश्यक हो, हमारी पीढ़ी दे सके; तभी हरिद्वार की तीर्थ यात्रा सफल होगी; और तभी नागाधिराज के द्वार पर बहती भागीरथी की समुद्रपुत्री धारा का अर्थ हम समझ सकेंगे।"

(हरिद्वार के अ० भा० हि० सा० सम्मेलन में दिए गए भाषण का कुछ अंश)

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

फूलों से तुम हँसना सीखो,
भँवरों से तुम गाना
सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना
धूएं से तुम सारे सीखो,
ऊंची मंजिल जाना
वायु के झोंकों से सीखो,
हरकत में ले आना
वृक्षों की डाली से सीखो,
फल पाकर झुक जाना
महँदी के पत्तों से सीखो,
पिस पिस रंग चढ़ाना
पत्ते झड़ पेड़ों से सीखो,
दुःख में धीर बंधाना
धागे और सुई से सीखो,
बिछड़े गले लगाना
मुर्गों की बोली से सीखो,
प्रातः प्रभु गुण गाना
पानी की मछली से सीखो,
धर्म के हित मर जाना

—चुंगकिंग के मोर्चे पर २६ मई से पू[र्व] आगे बढ़ते हुए चीनियों ने कल चांगयांग [के] चिहकांग पर कब्जा कर लिया और यांग्[त्से] दक्षिणीय तट की ओर बढ गई।

× × ×

—मई मास में ब्रिटिश बम बाजों ने जर्म[नी] लगभग १२,५०० टन के बम गिराए।

× × ×

हत्या की धमकी

सिन्ध प्रान्तीय हिन्दू सभा के सभा[पति] वीरूमल बेगराज को एक गुमनाम पत्र मि[ला] जिसमें उन्हें कत्ल की धमकी दी गई है। [पत्र] सहारन पुर के डाकखाने की मुहर है। पत्र [पर] कार्यवाही के लिए सक्खर के जिला मैजिस्[ट्रेट] दे दिया गया है।

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक उन्नति

श्री पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य अमृतधा[री] नवीन उर्दूपुस्तक अभी-अभी प्रकाशित [हुई] जिसमें हर प्रकार के व्यायाम तथा आसन [द्वारा] शरीर को बल बढ़ाने की विधि बड़ा उत्[तम] से पेश की गई है। मूल्य ॥।)

श्री चमूपति साहित्य [रत्न]

गुरुदत्त भवन, ल[ाहौर]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. [illegible]

GURUKUL KANGRI

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd. N. L. 5004

INDIA POSTAGE

HARANPUR

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के
ाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

ामृत २॥) Immortal Sayings ofDayanand ।)
वन्न ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला ।)
ाध्याय संग्रह ॥) वैदिक धर्म की जय ॥)
दिक स्वर्ग ॥) यास्क युग ॥)
र्गी ।=) सभा इतिहास २)
व न्यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand१।)
यूषबिन्दु ।—) त्रिदेव निर्णय ॥)
निरुक्त का मूल वेद में ।—)
Hindu America५) Light of Truth ३)

आर्य

आवश्यक

अगले सप्ताह वार्षि
उपलक्ष्य में आर्य प्रका
पाठक नोट कर लें।

२००२ पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharupu

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

रुमा २४, अंक ३०] ६ आषाढ़, २००० विक्रमी— १३ जून १९४३ [वार्षिक मूल्य ४)

अध्यात्म सुधा

[२८]

ऋग्वेदीय दयानन्दोपनिषद्

विद्याविद्याप्रकरण

मनुष्यैर्यो नित्यं विद्याप्रदाताऽस्ति तमृजुभावेन सेवित्वा विद्याः प्राप्य मित्राच्छ्रेष्ठादाकाान्नदीभ्यो भूमेर्दिवश्चोपकारं गृहीत्वा सर्वेषु नुष्येषु सत्कारेण भवितव्यम्। नैव कदाचिद्या गोपनीया किन्तु सर्वैरियं प्रसिद्धी ार्य्येति ॥१६॥

मनुष्यों को उचित है कि जो नित्य विद्या का ने वाला है उसकी सीधेपन से सेवा करके विद्याओं को पाकर मित्र श्रेष्ठ आकाश नदियों भूमि और र्य्य आदि लोकों से उपकारों को ग्रहण करके सब नुष्यों में सत्कार के साथ होना चाहिये कभी द्या छिपानी नहीं चाहिये किन्तु सबको यह प्रगट रनी चाहिये ॥ १६ ॥

मनुष्यैर्यस्माद्विद्या ग्राह्या स मनोवचः कर्मनैः सदा सत्कर्त्तव्यः। येऽध्याप्यास्ते प्रयत्नेन ुशिक्ष्य विद्वांसः संपादनीयाः सर्वदा श्रेष्ठैर्मैत्रीं ाभाव्य सत्कर्मनिष्ठा रक्षणीया ॥ १ ॥

का सत्कार मन वचन कर्म और धन से सदा करें और पढ़ाने वालों को चाहिये कि जो पढ़ाने योग्य हों उन्हें अच्छे यत्न के साथ उत्तम उत्तम शिक्षा देकर विद्वान् करें और सब दिन श्रेष्ठों के साथ मित्रभाव रख उत्तम उत्तम काममें चित्तवृत्ति की स्थिरता रक्खें ॥ १ ॥

मनुष्यैर्यः प्रदीप्तेन क्रोधेन दुष्टान् हत्वा विद्योन्नतये ब्रह्मचर्यादिव्रतानि प्रचार्याविद्याकुशिक्षा निषिध्य सर्वेषां सुखाय सततं प्रयतते स एव सुहृन्मन्तव्यः ॥ २ ॥

मनुष्यों को चाहिये कि जो चमकते हुए क्रोध से दुष्टों को मारकर विद्या की उन्नति के लिये ब्रह्मचर्यादि नियमों को प्रचरित और मूर्खपन और खोटी लिखावटों को रोक के सब के सुख के लिये निरन्तर अच्छा यत्न करे वही मित्र मानने योग्य है ॥ २ ॥

कर्तव्याकर्तव्यनिरूपण प्रकरण

यैर्मनुष्यैः प्राणायामैः प्राणान् सत्कारेण श्रेष्ठान् तिरस्कारेण दुष्टान् विजित्य सकला विद्या विस्तार्य्य परमेश्वरमध्यापकं वाभ्यर्च्योपकारेण सर्वे प्राणिनः सत्क्रियन्ते ते सुखिनो भवन्ति ॥ ७ ॥

जिन मनुष्यों से प्राणायामों से प्राणों सत्कार समस्त विद्याओं को फैलाकर परमेश्वर वा अध्यापक का अच्छे प्रकार मान सत्कार करके उपकार के साथ सब प्राणी सत्कार युक्त किये जाते हैं वे सुखी होते हैं ॥ ७ ॥

मनुष्यैर्यो विद्वान् सर्वत्रानन्दयिता विद्याप्रदाता सत्यगुणकर्मस्वभावोऽस्ति तत्सङ्गेन संततं सर्वा विद्याः सुशिक्षाश्च प्राप्य सर्वदानन्दितव्यम् ॥ ८ ॥

मनुष्यों को चाहिये कि जो विद्वान् सर्वत्र आनन्दित कराने और विद्या का देने हारा सत्यगुण कर्म और स्वभाव युक्त है उसके संग से निरन्तर समस्त विद्या और उत्तम शिक्षा को पाकर सर्वदा आनन्दित होवें ॥ ८ ॥

नहि विदुषां संगेन विना कश्चित् खलु विद्यैश्वर्य्यमानन्दं च प्राप्तुं शक्नोति तस्मात्सर्वे मनुष्या विदुषः सदा सत्कृत्यैतेभ्यो विद्यासुशिक्षाः प्राप्य सर्वथा सत्कृता भवन्तु ॥ ९ ॥

विद्वानों के संग के बिना निश्चय है कि कोई विद्या ऐश्वर्य और आनन्द को नहीं पा सकता इससे सब मनुष्य विद्वानों का सदा सत्कार कर इन से विद्या और अच्छी अच्छी शिक्षाओं को प्राप्त होकर सब प्रकार से सत्कार युक्त होवें ॥ ९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

व्यक्ति हो या राष्ट्र

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेश

वैदिक स्वाध्याय—

पाप के छः कारण

श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, दयानन्द उपदेशक विद्यालय।

[२१]

न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः।
अस्ति ज्यायान् कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता ॥६॥

अर्थ—(वरुण) हे वरुण भगवान् [मुझ में तो] (स्वः) अपना (सः) वह (दक्षः) बल (न) है नहीं, (ध्रुतिः) बुरे कामों में स्थिर रखने वाली आदतें (सा) वह (सुरा) शराब (मन्युः) क्रोध (विभीदकः) जूआ (अचित्तिः) नासमझी, और (अनृतस्य) असत्य व्यवहार में (प्रयोता) डालने वाली (स्वप्नश्चन-इत्) प्रमादरूप निद्रा भी, ये सब (ज्यायान्) शक्तिशाली बन कर (कनीयसः) मुझ अल्प शक्तिवाले के (उपारे) समीप (अस्ति) विद्यमान रहते हैं। [इसलिये प्रभो ! इनसे बचने के लिये अपना बल मुझे प्रदान करो।]

गत मन्त्र में हम से जो पाप कर्म होते रहते हैं उनके कारण की कुछ मीमांसा की गई थी। वह मीमांसा बहुत संक्षिप्त और सूक्ष्म थी। प्रस्तुत मन्त्र से उसे कुछ अधिक विस्तृत और स्थूल रूप में उपस्थित किया गया है जिससे सर्वसाधारण भक्त जनों को पाप का कारण जानकर उससे बचने में अधिक सहायता मिल सके।

पाठक देखते आरहे हैं कि सूक्त में प्रभुदर्शन के लिये तड़प रहे भक्तहृदय का चित्र खेंचा गया है। प्रभु दर्शनों का प्यासा भक्त अनन्य भाव से प्रभु के गुणों का चिन्तन करता है। उन गुणों को वह अपने में धारण करके अपने आपको पवित्र बनाता है। फिर भी उसे अभी तक प्रभु के दर्शन नहीं हो पाते। वह इसके कारणों पर विचार करता है और महात्माओं से भी इसका कारण पूछता है। उसे मालूम होता है कि अभी भी कोई पाप बचा है जिस के कारण उसे प्यारे प्रभु के दर्शन नहीं हो रहे हैं। वह और अधिक तन्मयता से प्रभु-भक्ति में लग जाता है और प्रभु के पवित्र गुणों को अपने में और अधिक गहराई से धारण करने लगजाता है। वह अपनी समझ में अपने आपको वसिष्ठ बना लेता है—पूर्णरूप से प्रभु के गुणों को अपने भीतर धारण करने वाला बना लेता है। अपनी समझ में वह समझने लगता है कि अब तो मुझमें कोई भी पाप पूर्ण पवित्र, बन गया अब तो मुझे अपने दर्शन दो, अब तो मुझे अपने आनन्द का अमृतपान कराओ। पर अब भी उसे प्रभु प्यारे के दर्शन नहीं हो रहे हैं। वह देखता है कि प्रभु के दर्शन न होने का एकमात्र कारण तो मेरा कोई न कोई पाप ही हो सकता है। इसलिये मैं अपने आपको कितना ही वसिष्ठ, कितना ही प्रभु गुणाविष्ट पवित्र हृदय वाला समझता रहूं, पर क्योंकि मुझे भगवान् के दर्शन नहीं हो रहे इसलिये अवश्य ही मुझ में कहीं न कहीं कोई पाप है। जब तक मैं सर्वथा पाप से दूर नहीं हो जाता तब तक प्रभु नहीं मिलेंगे। पर मैं पाप से सर्वथा मुक्त कैसे होऊं? मैं तो अपने सारे प्रयत्न कर चुका। प्रेम से गद्गद होकर भगवान् की भक्ति करता हूं। उनके गुणों का गहरा चिन्तन और मनन करके मैंने उन्हें अपने आत्मा में धारण कर लिया है। मैं अपनी समझ में प्रभु के गुणों को पूर्णरीति से अपने में बसाने वाला वसिष्ठ हो गया हूं। फिर भी न जाने कहां से मेरे जीवन में पाप आ धंसता है, मेरे किये तो यह पाप मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा। मैं अकेली अपनी शक्ति से तो पूर्ण निष्पाप नहीं बन सकूंगा। मेरा अकेला बल पापपुंज का संहार करने में समर्थ न हो सकेगा। ऐसा विचार करके भक्त फिर भगवान् की ओर आंख लगाता है। फिर उन से विनति करता है। उन से कहता है—"हे महाराज! मुझ में तो अपना वह बल है नहीं जो पाप-शत्रु को पूरी तरह मार सके। मैं तो अपना सारा बल लगा चुका हूं। पर उससे तो पूरी सफलता नहीं मिली है। इसलिये हे प्रभो आप ही अपना बल मुझे दीजिये। आपके बल से ही मेरा पाप-शत्रु मारा जा सकेगा। आप ही मेरी सहायता कीजिये। आपकी सहायता से ही मैं पाप का पूर्ण विजय कर सकूंगा। प्रभो अपनी कृपा करो और पाप को मुझ से दूर भगाओ। मैं निष्पाप होकर आपके दर्शन पाने के लिये तड़प रहा हूं।"

मन्त्र में भक्त से केवल यह कहलाया गया है कि "हे वरुण भगवान् मुझ में तो अपना वह बल "इसलिये प्रभो ! इन पापों से बचने के लि बल मुझे प्रदान करो।" परन्तु प्रसंग को दे पहले वाक्य के पश्चात् दूसरा वाक्य अवश्य कहा जाना चाहिये। मन्त्र का पू प्राय तभी व्यक्त होता है। इसलिये हमने अर्थ करते हुए इस दूसरे वाक्य का अध्याह उसे इन [] कोष्ठकों में रख दिया है। सभ कार प्रसंगानुसार अध्याहार का आश्र करते हैं। जो बात किसी सन्दर्भ के वा विना कहे हुए निकल रही होती है उसी क में स्पष्ट कर देने का नाम अध्याहार है। भगवान् मुझ में तो अपना वह बल है नहीं का यह वाक्य स्वयं ही "इसलिये प्रभो बल प्रदान करो" इन शब्दों को सुझा देता

भगवान् से पाप-विजय में सफलता लिये भक्त जो बल की याचना करता प्रसंग में ही मन्त्र में पाप के कारणों की विस्तृत विवेचना हो जाती है। भक्त भगव रहा है—"हे प्रभो ! मैं तो अल्प शक्ति और यह पाप मुझे आ दबोचती है वह बड़ी शक्ति वाला है। तभी तो मेरा उससे छुटकारा नहीं हो पाता। देखो कितने आकर यह पाप मुझे अपने वश में करने मेरे पास आ खड़ा होता है। आप अ मुझे दीजिये।" इसी प्रसंग में भक्त के मु के कई कारणों की ओर निर्देश करा दि है। प्रस्तुत मन्त्र में ध्रुति, सुरा, मन्यु, अचित्ति, और स्वप्न ये छः कारण हमारे जीवन के बताये गये हैं। इन में से सुरा औ दक ये दो हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्मों का उपलक्षण हैं जो सम्पन्न हो जा से पाप करा देते हैं। और शेष चार पाप मानसिक कारणों की ओर निर्देश करते हैं हम पाप के इन मानसिक कारणों के स्व में कुछ शब्द कहते हैं।

"ध्रुतिः" शब्द यहां आदत या अभ्य लिये प्रयुक्त हुआ है। ध्रुति शब्द स्थि वाली "ध्रु" धातु से बनता है। इसका अ स्थिरता की अवस्था। एक काम को देर त करते हमारे मन में उसकी स्थिरता, दृढ़ता हो जाती है। फिर वह हमें आसानी से छ सकता। विशेष प्रयत्न और ध्यान न हो हम से वह कार्य होने लग जाता है। कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 391

आर्य
रविवार ६ आषाढ़
वि०सं० २०००

ाब के आर्य सभासदों का कर्तव्य

प्रतिधि सभा के आगामी निर्वाचन के ए किनको प्रतिनिधि भेजना चाहिए।

[भीमसेन सभा मन्त्री]

इस समय आर्यसमाज तथा आर्यप्रतिनिधि के हितैषी इस बात पर बल दे रहे हैं कि र्यसमाज से दलबन्दी की भावना को दूर किया ए। एक दो आर्य भाइयों ने इसके लिये दल-दयों में विभक्त व्यक्ति विशेषों की कान्फ्रैन्स बुलाने ी प्रस्ताव किया है। प्रजा सत्तात्मक संग-में बहु पक्ष तथा अल्प पक्ष का होना स्वाभा- है। परन्तु जिस संगठन में यह बहु पक्ष अल्प पक्ष विचारणीय विषयों की भिन्नता के रण बदलते रहे हैं—उस संगठन की उन्नति ती है। जहाँ व्यक्तियों के प्रति भक्ति या अरुचि को ष्टि में रखकर पक्ष विपक्ष बनते हैं वहां उन्नति नहीं ती। इस समय अभाग्य वश समाजों तथा भा में व्यक्तिगत रुचि अरुचि के आधार पर बहु ा और अल्प पक्ष बन रहे हैं। इसी लिये पार-रिक वैमनस्य तथा ईर्ष्या पैदा होती है। इसको से दूर करें और कौन दूर करें—इस पर विचार रने की आवश्यकता है। एक सीधा उपाय यह कि वह व्यक्तियां जिनके कारण पार्टियां बनती हैं गठन से पृथक् हो जायँ। और शेष सभासद् वायती ढंग से काम करें। परन्तु यह नहीं हो कता—और न होना चाहिए। इससे संगठन को नि पहुँचती है।

मेरी सम्मति में इस बुराई को दूर करने का क मात्र उपाय यह है कि आर्यसमाजों के आर्य भासद् और आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि दस्य हरेक प्रश्न पर निर्व्यक्तिक दृष्टि (Impersonal point of view) से विचार करने का ल्प करें। अपनी सम्मति किसी व्यक्ति व मुदाय को अलग न दें, दें भी तो किसी विषय ी उपयोगिता तथा अनुपयोगिता को दृष्टि में रख र। पेश करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व की ार्ह न करें। कोई प्रसन्न होता हो या जीवनशक्ति इसी में निहित है, कि वह किसी व्यक्ति को एकाधिकारी (dictator) न बना दे। व्यक्तियां तो अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा अहंभाव को पूर्ण करने के लिये संगठन तथा संगठन के अंग आर्य सभासदों को अपना अन्ध अनुयायी बनाने की कोशिश करेंगी। इसके लिये वह आर्य सभासदों की मार्मिक भावनाओं हार्दिक तरंगों को तरंगित तथा प्रभावित करनेका यत्न भी करेंगी। कभी 'सभा संगठन खतरे में हैं।' का नारा लगेगा। कभी ऋषि दयानन्द के नाम पर, सिद्धान्त के नाम पर पुकार की जायगी। ऐसे अवसरों पर आर्य सभासदों को चाहिए कि वह समालोचना, तर्क तथा युक्तिवाद की कैंची चला कर इन वैयक्तिक अहंभाव वालों को रोकें, उन्हें अनुभव करायें कि आर्यसमाज, पंचायती, भाईचारे की जमात है—यहां वैयक्तिक महत्वाकांक्षी, डिक्टेटर स्वेच्छाचारी एकाधिकारी मनोवृत्ति वालों के लिये स्थान नहीं। आचार्य दयानन्द ने अपने व्यक्तित्व को आर्यसमाज से पृथक् रखा। किसी व्यक्ति के प्रभाव को बहुत बढ़ने देने का स्पष्ट अभिप्राय यह होता है कि हम आर्य समाज में गुरुडम को लाना चाहते हैं। व्यक्तियों की प्रशंसा के स्थान पर उनके कार्य की प्रशंसा होनी चाहिए। परन्तु समाज तथा सभा में इस समय कार्यों के स्थान पर व्यक्तियों की प्रशंसा या निन्दा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आर्य सभासदों तथा प्रतिनिधियों को इस प्रवृत्ति को रोकना चाहिए। यह अवस्था केवल आर्य समाज की नहीं अन्य संस्थाओं में भी जो झगड़े दिखाई देते हैं उन का भी मूल कारण यह है कि मि. जिन्हा और मास्टर तारासिंह जी और गोस्वामी गणेशदत्त की भांति व्यक्तियां संगठनों को अपने व्यक्तित्व का दास बनाना चाहती हैं। इसीलिये उनमें भी वैयक्तिक दलबंदियां बन रही हैं। कांग्रेस में महात्मा गांधी का व्यक्तित्व भारी प्रभाव रखता है परन्तु वहां यह व्यक्तित्व—व्यक्तित्व का प्रतिनिधि नहीं, अपितु कार्य क्रम विशेष का प्रतिनिधि है। इसी लिये देखते हैं कि कार्यक्रम के बदलते ही महात्मा गांधी पृथक् होजाते हैं। कार्यक्रम के अनुकूल होते ही पुनः कार्य क्षेत्र में आजाते हैं। इस कार्यक्रम तथा रीति नीति की भिन्नता के कारण श्री गोपालाचार्य तथा श्री सुभाष जैसे व्यक्तित्व की भी परवाह नहीं की जाती।

इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के नए प्रतिचाहिए कि वह इस भावना से ही अपने आर्य समाजों के प्रतिनिधि चुनें। कोशिश यह होनी चाहिए कि वह जहां संभव हो अपने आर्य समाज के सभासदों में से ही सभा में प्रतिनिधि भेजें। जिन व्यक्तियों के रूप रंग विचारों को वह नहीं जानते—उन्हें किसी पार्टी के हित की प्रेरणा से प्रतिनिधि बना कर न भेजें। जिन व्यक्तियों को हम जानते हैं उनके गुण दोष को भी जानते हैं उनके व्यक्तित्व के हम अंध भक्त नहीं हो सकते। हमें व्यक्तियों को जान बूझ कर उनके गुण दोष को सामने रखकर स्वतंत्र मत देने का अधिकार सुरक्षित कर—ही प्रतिनिधि बनना या बनाना चाहिए। इस कार्य को पूरा करने के लिये—आर्यसमाज के आर्य सभासदों में इन विचारों को फैलाने के लिये सभा में एक स्वतन्त्र दल की आवश्यकता है। जो भाई इस दल में शामिल होना चाहें वह अपने नाम लिख भेजें। इस स्वतन्त्र दल की यह विशेषता होगी कि यह सभा में किसी पद के लिये अपने में से किसी को उम्मीदवार के तौर पर पेश नहीं करेगा—प्रस्तावित व्यक्तियों के विचारों तथा सभा के लिये उनकी उपयोगिता को दृष्टि में रखकर उनका समर्थन या विरोध करेंगे। आशा है आर्य सभासद्—मेरे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

जात पात तोड़क मण्डल
कुछ प्रश्नों के समाधान की प्रार्थना

क्या जात पात तोड़क मण्डल के प्रधान जी निम्न लिखित बातों को स्पष्ट करेंगे कि क्या यह बातें भी मण्डल के उद्देश्य में सम्मिलित हैं।

(१) पाकिस्तान के हक में प्रचार करना।

(२) अछूत जातियों में यह प्रचार करना कि वे अपने आपको हिन्दुओं से पृथक् करले और उन्हें यह भी जताना कि उनकी दशा पाकिस्तान अच्छी रहेगी।

(३) महात्मा गांधी तथा दूसरे कांग्रेसियों विरुद्ध जो कि इस समय जेल में हैं प्रचार करना

यदि ये बातें मण्डल के नियमों तथा उद्देश्यों सम्मिलित नहीं है तो 'क्रांति' में, जो कि मंडल एक मासिक पत्र है, इन बातों का प्रचार क्यों हो है?

—एक हा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेश

पशु पक्षियों की बोली जानने का एक सहज उपाय

(लेखक—श्री पं० विष्णुमित्र जी, गुरुकुल कांगड़ी)

[श्री पूज्य पण्डित जी सुयोग्य तथा अध्ययन शील विचार है। लेख मनोरंजन है। इस लेख में वर्णित विद्वान् कहां तक ठीक हैं, यह अभी विचारणीय है। आवश्यक नहीं कि सम्पादक इन सब विचारों से सहमत हो। इस विषय में हम अपने अन्य पाठकों के विचारों का भी स्वागत करेंगे—सम्पादक]

प्राचीन सभी सभ्य देशों में इस विद्या का उल्लेख पाया जाता है। इतिहास से मालूम होता है कि भारतवासियों ने इस विद्या में अच्छी उन्नति की हुई थी। पर इस समय भारतीय मस्तिष्क की यह विशेषता है कि वह, जब तक कोई विदेशी किसी विषय पर अपनी राय नहीं दे देता, तब तक उस विषय पर ध्यान नहीं देता। पर जब कोई विदेशी किसी बात का अन्वेषण करता है तब झट कह उठता है—'यह तो भारतीय पहिले ही जानते थे। अरे यह बात तो हमारे अमुक शास्त्र में लिखी हुई है।' पर वह स्वयं अन्वेषण नहीं करता।

(पशु पक्षियों की बोली समझना)

पशु पक्षियों की बोली समझना और उनकी चेष्टाओं से शुभाशुभ घटनायें मालूम करना, पृथ्वी के भीतर की वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करना। पृथ्वी से जल निकालने की विद्या का जानना इत्यादि सभी विद्याओं को हम भुला चुके हैं। अब यह विद्यायें या तो अपढ़ कहे जाने वाले किसानों के पास रह गई हैं या फिर नानी की कहानियों में।

मैं आज एक ऐसी ही कहानी बतलाऊंगा जिस का जिक्र कुछ देर हुई सुधा पत्रिका में रघुनाथ गुप्त विशारद ने किया था। यह घटना सच्ची है कल्पित नहीं। एक गांव में एक मनुष्य रहता था। उसने अपनी लड़की को सब विद्याओं के साथ साथ पशु पक्षियों की बोली पहचानने की विद्या भी पढ़ाई। उस मनुष्य ने उसकी शादी एक पास ही के गांव में कर दी। लड़की ससुराल गई। रात में जब वह सो रही थी तब वह एकाएक किसी जानवर की बोली सुनकर उठी और चल पड़ी। उसका पति यह देखकर उसके पीछे हो लिया। लड़की नदी पर पहुँची। वहां पानी से एक लाश खींच कर लाई और उसका पेट अपने दांतों से चीर उसमें से कुछ बांध लिया। फिर वह घर लौट आई।

प्रातः काल उसके पति ने अपने पिता से कहा—'पिताजी, आप इसे इसके पिता के घर छोड़ आइये; मैं इसे अब एक मिनट भी नहीं रख सकता। पिता के पूछने पर लड़के ने कहा—'यह डाइन है मुर्दों को खाती है' पिता ने तुरन्त गाड़ी मंगवाई, और अपनी पुत्र-वधू को साथ ले रवाना हुआ। मार्ग में एक वट का वृक्ष मिला। वह उसके नीचे थोड़ी देर विश्राम करने के लिये ठहर गया। उस पेड़ पर एक पक्षी की आवाज सुनकर लड़की उसकी ओर दृष्टि कर रोने लगी। उसे रोते देख उसके ससुर ने कहा—'बेटी क्यों रोती है।' लड़की ने कहा—'पिता जी, मैं अपनी तकदीर को रो रही हूं और अपने पिताजी को कोस रही हूं, जिन्होंने मुझे ऐसी विद्या पढ़ाई। जिसके कारण मुझे डायन बनना पड़ा।' ससुर ने उत्सुकता पूर्वक पूछा क्यों क्या बात है बेटी? लड़की ने कहा—"कल रात को एक जानवर बोल रहा था कि 'यदि कोई सुनने वाला हो तो इस नदी में एक मुर्दा बहा जा रहा है, उसके पेट में चार रत्न हैं।' मैं एक दम उठी और नदी पर पहुंची। मुर्दे को निकाला। वहां मेरे पास कोई ऐसा शस्त्र न था जिससे मैं उसका पेट चीर कर रत्न निकाल लेती। अतः मैंने दांतों से ही पेट चीर कर रत्नों को निकाल लिया।" ऐसा कह कर लड़की ने चारों रत्न साड़ी के कोने से निकाल कर उन्हें दे दिये। और वह कहने लगी 'इस पेड़ पर कौआ कह रहा है कि इस वृक्ष की जड़ में चार बर्तन धन के भरे हुए हैं।' ससुर लड़की को वापिस ले आया। और उस जमीन को खरीद वहां गड़ा हुआ सब धन निकाल लिया। आगे चल कर रघुनाथ गुप्त जी लिखते हैं कि 'दूसरी घटना मेरे साथ हुई, जो—अभी हाल ही की बात है। मैं पास ही अपने मामा के गांव गया हुआ था। एक दिन दोपहर से ही मैं, मेरे मामा और गोपी लाल खेत की तरफ चले गये। जब शाम होने लगी तब वापिस आये। हम लौट ही रहे थे कि बाईं ओर एक खेत में तीतर बोला। वह जल्दी जल्दी बोल रहा था। उसे बोलते देख मेरे मामा ने मुझे बताया कि 'यह तीतर अशुभ बोल रहा है। और घर पर ज़रूर कोई न कोई बात हुई होगी।' गोपीलाल को पुकार कर कहा—वह हमसे ज़रा आगे था—'क्यों गोपीलाल यह तीतर क्या कह रहा है?' गोपी लाल ने कहा 'यह तो बुरा बोल रहा है। कह रहा है घर जाओ जल्दी जाओ।' मैंने पूछा 'आपने यह कैसे जाना कि यह अशुभ बोल रहा है?' उसने

बांयें तीतर बायें मोर,
बांयें खरहा करे किलोल।
बायाँ मृग दाहिना जावे,
निश्चय राज्य विभीषण पावे

यह शकुन सुबह का है। अब शाम हो अतः इसका उलटा परिणाम निकलेगा। दू तीतर जैसे बोल रहा है जल्दी जाओ जल्दी अतः इसका फल अनिष्ट है।'

मैं इस विषय की और भी बातें पूछने था कि एक आदमी ने कहा 'गोपीलाल घ चल रहे हो, जाओ तुम्हारी मां मर गई है।' मै हो गया, और गोपीलाल यह कहता हुआ बढ़ा कि 'तीतर यही कह रहा था।' अस्तु प्रसंग में रामायण का यह किस्सा भी मुझे अनुचित न होगा कि रावण सीता को लिये आ रहा है और सीता की खोज में राम चले जा रहे हैं तब मार्ग में पड़े हुए जटायु राम को बतलाया था कि रावण आकाश सीता को लंका ले जा रहा है। इसी प्रक देशों के इतिहास में भी इस प्रकार की क महमूद ग़ज़नवी के सम्बन्ध में एक कहानी बार शिकार करते करते थक कर वह एक नीचे ठहरा। उस वृक्ष पर एक उलूक और उलूकिनी बैठी थी। उलूकिनी ने उलूक से लड़के का विवाह उसकी लड़की से करने को उलूक ने जवाब दिया कि 'अगर तुम मेरे एक उजाड़ गांव दो तो मैं विवाह कर दूं।' उलूकिनी ने कहा 'यदि बादशाह महमूद सलामत रहा तो एक गांव क्या दस उजाड़ दूंगी।' यह बातचीत बादशाह सुन रहा था पर उसे बड़ी लज्जा आई। उस दिन से वह राज्य का अच्छा प्रबंध करने लगा। यह इस बात को पुष्ट करती है कि पशु पक्षियों की समझने की विद्या महमूद ग़ज़नवी के समय प्रचलित थी।

पशु पक्षियों की बोली और चेष्टाओं से शुभाशुभ घटनायें मालूम करना

पूर्वोक्त विद्या से मिलती हुई वह विद्या थी के प्रभाव से आगामी शुभाशुभ घटनाओं का ही से ज्ञान हो जाता था। प्राचीन मिस्र, असी बैबीलोन, रोम, विशेषकर भारतवर्ष में जो प्राचीन विद्याओं और कलाओं का भण्डार पक्षियों की बोलियों और उनकी चेष्टाओं से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

क कुछ कुछ चिह्न अब भी बाकी हैं। गांवों में
ऐसे आदमी मिलते हैं जो किसी पक्षी की
सुनकर बता सकते हैं कि वर्षा होने वाली है
हीं। अथवा फ़सल अच्छी होगी या बुरी।
देशों में मल्लाह भी समुद्री पक्षियों से शकुन
। क्या आप कौए या गुलसर पक्षी की विशेष
की बोली को सुनकर यह नहीं समझ जाते
इसी विपत्ति को ध्यान में रखकर इस समय
ला रहे हैं। उसी समय आप देखते हैं कि सैंकड़ों
दाद में कौए और गुलसर वहीं पहुंच जाते हैं।

के भीतर की वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करना

ाचीन समय में पृथ्वी के भीतर की वस्तुओं
ना लेने की विद्या भी प्रचलित थी। पृथ्वी में
ए अमूल्य और दुष्प्राप्य पदार्थों का पता इसी
से लगाया जाता था। युधिष्ठिर के राजसूय
जो अनमोल सुवर्ण मण्डप का निर्माण
था उसका सुवर्ण और रत्न आदि सब सामान
के भीतर से ही निकाल कर लाया गया था।
पता इसी विद्या से लगा था। अब भी गाँवों
ा खोदने वाले बिना खोदे सिर्फ जमीन के
के भाग को देखकर बतलाने वाले दिखाई
जो यह बतला देते हैं कि इस जगह कूआ
से जल खारी निकलेगा और इस जगह
से मीठा। पाश्चात्य देशों में पत्थर का
ता और मट्टी का तेल इसी विद्या द्वारा बिना
ल गाये जानने वाले लोग अब भी पाये जाते

पृथ्वी से जल निकालने की विद्या

ूर्वोक्त विद्या से ही मिली हुई एक और विद्या
स के द्वारा यह बताया जा सकता है कि किस
पर कूंआ खोदने से पानी निकलेगा। इसका
ज्ञान रखने वाले अब भी पाये जाते हैं।
इञ्जीनियर लोग उनकी कब मानने चले।
स्थान पर एक कूआ खोदा जा रहा था। बहुत
जाने पर भी उसमें जल न निकला तब गांव
ने वाले एक झीवर ने इञ्जिनीयर साहब के
जाकर पानी निकाल देने का वादा किया।
व को पहिले तो यकीन न आया परन्तु आज-
ा के तौर पर उन्होंने उसे एक मौका दे दिया।
आदमी ने पहिले ही कह दिया था कि जिस
में कुएं से निकालने को कहूँ उसी समय मुझे
लिया जाय। वह नीचे उतरा और कान के

लगा। थोड़ी देर बाद उसने ऊपर खींचने की आवाज़ दी। ऊपर खींचे जाने के वक्त उसने अपने निश्चित स्थान पर कुदाल की एक ऐसी चोट मारी कि पानी उससे बड़े वेग से फूट कर कुएँ में आने लगा और उस आदमी के ऊपर पहुंचते पहुंचते कोई आधा कूआ पानी से भर गया। तब इञ्जिनीयर साहब ने उसकी प्रशंसा की। उस आदमी ने बतलाया कि मनुष्य के शरीर के समान पृथ्वी में भी रगें होती हैं। इन रगों को जानने वाला जल शीघ्र निकाल सकता है। बहुतों को याद होगा कि जिस में आजकल गुरुकुल बना हुआ है इस वर्तमान भूमि के मिलने से पूर्व गुरुकुल के लिये एक और भूमि ज्वालापुर से परे पहाड़ी के नीचे गुरुकुल बनाने के लिये पट्टे पर ले ली गई थी। और उसमें कूआ खोदा जाने लगा। बहुत गहरा खोदा जाने पर भी जब पानी न निकला तब उस भूमि को छोड़ देना पड़ा। यदि किसी ऐसे जानकार को वह भूमि पहिले ही दिखा दी जाती तो हज़ारों रुपया गुरुकुल का इस परीक्षण में बर्बाद न जाता। अस्तु—

योगशास्त्र में पशु पक्षियों की बोली जानने का उपाय

अब आप योग शास्त्र के अनुसार सब प्रकार के पशु पक्षियों की बोली जानने का जो उपाय है उसे जरा ध्यान से समझें।

शब्दार्थ प्रत्ययानाभितरेतराध्यासात्संकरः। तत्प्रविभाग संयमात्सर्वभूतरुतज्ञानम्। योगदर्शन

योग के इस सूत्र का आशय यह है कि शब्द, अर्थ, ज्ञान के परस्पर आरोप (अन्य में अन्य बुद्धि) से मेल प्रसिद्ध है। उसके विभाग में संयम करने से सब प्राणियों के शब्द का ज्ञान होता है।

भावार्थ यह है कि शब्द, अर्थ, ज्ञान तीनों भिन्न हैं। पर हमें इन तीनों का अभेदाध्यवसाय करना पड़ता है। अर्थात् मेल करना पड़ता है। यदि ऐसा न किया जाय तो एकाकार ज्ञान न हो सकेगा।

तथापि शब्द में वाचकत्व रूप, अर्थ में वाच्यत्व रूप, ज्ञान में शब्दार्थ प्रकाशत्व रूप विभाग है। इस विभेद को करके इसमें जो योगी संयम करता है उसको सब प्राणियों के शब्द का ज्ञान हो जाता है। अर्थात् इस अभिप्राय से उस प्राणी ने यह शब्द उच्चारण किया है।

यदि आप इस [illegible] अवलम्बन न कर सकें तब आपको पशु पक्षियों की

सन्तान को सब पशु पक्षियों की बोली जानने वाला बना सकेंगे। यदि उत्सुकता हो कर देखें।

सुगम उपाय

वर्ष भर के लिये जंगल में एक पत्थर का हौज़ बनवायें, उसमें प्रतिदिन पानी डाला जाय। उसका सम्बन्ध न टूटना चाहिये। यानी ऐसा न हो कि किसी दिन उसमें बिलकुल पानी न रहे। उसमें रोज़ाना थोड़ा बहुत पानी डालते रहना चाहिये। इस तरह कई जानवर रात दिन वहां का पानी पीयेंगे। जब पूरे बारह महीने हो जायं तब एक दिन जो पानी शेष रहे उसे एक बोतल में रख लिया जाय। जब किसी के बच्चा पैदा हो, तब उस पानी का गुरला दिया जाय। बच्चा पैदा होने के बाद स्त्री को जो पहले पहल पानी पिलाते हैं उसे गुरला कहते हैं। इस क्रिया से ही उस स्त्री का बालक बड़ा होने पर सब पशु पक्षियों की बोली समझने लग जायगा यह एक अनुभूत प्रयोग है।

गुरुकुल बेट सोहनी के समाचार तथा नवीन बालकों का प्रवेश

आर्य संस्कृति के हितचिन्तक महानुभावो! गुरुकुल बेट सोहनी वैदिक सभ्यता की उच्च शिक्षा प्रणाली का पोषक रहा है। श्री पं० गंगाराम जी के पवित्र कर-कमलों से स्थापित होकर यह गुरुकुल प्रारम्भ से ही देश के बालकों को विशेषतया अनाथ-निर्धन बालकों को आर्यसंकृति के दृढ़स्तम्भ बनाने के लिये क्रियात्मक कार्य करता रहा है। अछूत बालकों को आर्य सभ्यता में दीक्षित करने श्रेय भी इस गुरुकुल को प्राप्त है।

यद्यपि पिछले कुछ दिनों में कई कारणों से इस गुरुकुल के प्रबन्ध में शिथिलता आ गई थी—परन्तु स्वा० रुद्रानन्द जी पूर्व-आचार्य को विदा कर देने के पश्चात् आर्यप्रतिनिधिसभा ने गुरुकुल का नई प्रणाली के अनुसार का उत्तम प्रबन्ध कर दिया है। इस समय चन्दूलाल स्टेट के प्रबन्ध के लिये सभा ने प्रबन्धकर्त्ता जी के अतिरिक्त एक महानुभाव ला० गेलाराम जी रिटायर्ड कानूनगो को, और गुरुकुल शिक्षा प्राप्त, सुयोग्य शास्त्री पं० विद्याव्रत जी की सेवायें प्राप्त करके उनको स्थिररूप से नियुक्त कर दिया है। ये अपना कार्य बड़ी उत्तमता से चला रहे हैं। शिक्षा कार्य गुरुकुल काङ्गड़ी की पाठ-विधि के अनुसार चालू है। इसलिये जो सज्जन अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहें वे शीघ्र ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

व्यक्ति हो या राष्ट्र कार्यों के [illegible]

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेश[illegible]

(शेष पृष्ठ २ का)

के प्रति मन की इस अवस्था को प्रचलित भाषा में आदत या अभ्यास कहते हैं। यदि हमें किसी बुरे काम का अभ्यास पड जाये तो हम अनेक वार न चाहते हुए भी केवल अभ्यास वश बुरा काम कर बैठते हैं। एक व्यक्ति को गाली देने का अभ्यास रहा है। उसने अब गाली न देने का निश्चय कर लिया है। पर पुराने अभ्यास के कारण वह अवसर आने पर न चाहते हुए भी गाली दे बैठता है। इस लिये जो पाप से बचना चाहता है उसे आत्म-निरीक्षण करके देखना चाहिये कि उसमें किस-किस पाप कर्म की ध्रुति, आदत, पड़ गई है। उसे प्रयत्न पूर्वक उन पापों की ध्रुति या अभ्यास को तोड़ना चाहिये। जब तक उनका अभ्यास नहीं टूट जाता है तब तक कई वार न चाहते हुए भी वह अभ्यास हमसे उन पापों को करा देगा।

"अचित्ति" अज्ञान को, नासमझी को, कहते हैं। हमारे पापों का मूल कारण हमारा अज्ञान ही होता है। हम वस्तुस्थिति को पूरी तरह से न समझने के कारण ही पाप कर बैठते हैं। यदि हमें अपना, अपनी परिस्थिति का, अपने कार्यों का और उनके परिणामों का पूरा ज्ञान हो तो हमसे कभी भी कोई पाप कर्म न हो। अज्ञान या अधूरा ज्ञान ही हमसे पाप कराता है। जितना जितना हमारा ज्ञान पूर्णता की ओर जाता जायेगा उतना-उतना हमारे पाप-कर्म घटते जायेंगे। जो पाप से बचना चाहता है उसे अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिये—अपनी अचित्ति दूर करनी चाहिये।

"स्वप्न" का अर्थ निद्रा होता है। इस प्रकरण के स्थूल निद्रा अर्थ संगत नहीं हो सकता। यहां प्रमादरूप निद्रा से अभिप्राय है। जब हमारे मन में प्रमाद की अवस्था आजाती है तब हमारा संचित ज्ञान भी लुप्त हो जाता है। जैसे हमें नींद में कुछ होश नहीं रहता वैसे ही प्रमाद नामक मन की अवस्था में भी हमें ज्ञान नहीं रहता। प्रमाद से हमारे मन में एक प्रकार की बे-होशी सी छा जाती है। मन की सतर्कता, निपुणता, जागृति जाती रहती है। और इस प्रमाद की अवस्था में हम कई पाप कर बैठते है। जिन्हें यदि हमारा मन सतर्क, चुस्त, रहता तो हम कभी न करते। अचित्ति की अवस्था में तो हमें ज्ञान ही नहीं होता, स्वप्न या प्रमाद की अवस्था में हम संचित ज्ञान को अपने मन की मन्थरता के कारण भूल सा जाते हैं। जो पाप से बचना चाहता है उसे मन में मन्थरता और प्रमाद कभी नहीं आने देने चाहियें।

"मन्यु" क्रोध को कहते हैं। जब क्रोध का आवेश हमें हो जाता है तो भी हमारे मन की विचार-शक्ति दब जाती है। क्रोध का विकार हमारे मन को अन्धा कर देता है। क्रोध मन को दबा कर सोचने विचारने के अयोग्य कर देता है। और इस क्रोध जन्य अविवेक की अवस्था में भी हम अनेक पाप कर बैठते हैं। जो पाप से बचना चाहता है उसे क्रोध नहीं आने देना चाहिये। यहां क्रोध मनके काम, लोभ, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या आदि सभी विकारों का उपलक्षण है। ये सभी विकार जब मन में आते हैं तो उसे विचार शून्य करके अन्धा कर देते हैं। क्योंकि वेद में अन्यत्र इन सभी विकारों के जीतने का वर्णन है इसलिये यहां क्रोध सभी का उपलक्षण हो जाता है। जो पाप से बचना चाहता है उसे अपने मन को ऐसा बनाना चाहिये जिसमें काम, क्रोध आदि विकार न उठ सकें।

अब "सुरा" और "बिभीदक" को लीजिये। "सुरा" शराब को कहते हैं। हमारा आत्मा मन या मस्तिष्क की सहायता से अपनी विचार आदि की शक्तियों को प्रकट करता है। शराब पीने से शराब का सेवन हमारी बुद्धि को ठिकाने न देता। और उस बुद्धि की अपटुता की अव हमसे कितने ही पापके कार्य हो जाते हैं। से बचना चाहता है उसे बुद्धि नाशक सुरा पृथक् रहना चाहिये। यहां सुरा को बुद्धि म्पक अफीम, तमाखू, भंग, गांजा आदि मादक द्रव्यों का उपलक्षण समझना चाहि पाप से दूर रहना चाहता है उसे मादक सेवन से दूर रहना चाहिये।

"बिभीदक" जूए के पासों को कहते पाप से बचना चाहता है उसे जूआ नहीं चाहिये। जूए में हम बिना प्रयत्न के दू प्रयत्न द्वारा कमाई हुई सम्पत्ति को अपनी चाहते हैं। जूआ हमें आलसी और क बनाता है। जूआ हमारे अन्दर दूसरों की पूर्वक उपार्जित सम्पत्ति को, हमारा उस अधिकार न होते हुए भी, हड़प करने उत्पन्न करता है। जूए के द्वारा हम दूसरे अधिकार पूर्वक प्राप्त, सम्पत्ति को छीन और उसके आश्रितों को दुःख में निमग्न आलसी और अपरिश्रमी होना, दूसरे के को हड़प जाने की प्रवृत्ति होना, हमें पापी जो पाप से पृथक् रहना चाहता है उसे जूए रहना चाहिये। यहां "बिभीदक" अर्थात् चोरी आदि सभी बुरे कर्मों का उपलक्षण हम, अपना उस पर कोई अधिकार न दूसरे की अधिकार प्राप्त सम्पत्ति को चाहते हैं। जो पाप से बचना चाहता है खेल अथवा चोरी आदि करके किसी के को नहीं हड़पना चाहिये।

मन्त्र में पापों से बचने के लिये भगव मांगा गया है। उसकी सहायता और प्रार्थना की गई। तो क्या भगवान् हमा सुनकर हमारे पापों को काट देते हैं? ह काट देते हैं। जो साधक प्रभु के प्रेम जाता है और उस प्रेम में भर कर गद् प्रभु की भक्ति करता है—प्रभु के गुणो करता है—और इस प्रेम से गद्गद भक्ति णाम स्वरूप प्रभु के गुणों को अपने कर वसिष्ठ बनने में लग जाता है उस पाप परमात्मा काट देते हैं। साधक शक्ति है उसे जब वह सच्चे हृदय से

आजकल के इस भयानक गिरानी के काल में भी साधारण स्थिति के ब्रह्मचारियों से भोजन के लिये केवल आधा शुल्क लिया जाता है जिसकी मात्रा ६) रु० रखी गई है। अनाथ बालकों की सहायतार्थ कुछ छात्रवृत्तियों का भी प्रबन्ध किया जा रहा है।

अतः जहां सर्व साधारण से निवेदन है कि वे अपने बालकों शीघ्र भेजें ताकि वे समय पर पढ़ाई आरम्भ करके समाप्त कर सकें—वहां दानवीर हितैषी सज्जनों से अपील है कि वे धर्म व सभ्यता की रक्षा के लिए दान भेज कर अपने देशीय बालकों की उत्तम शिक्षा में सहायक बनें तथा पुण्यमय यश के भागी बनें।

पंजाब की आर्य समाजों से निवेदन है कि वे भी अपनी ओर से छात्रवृत्ति देकर निर्धन बालकों को गुरुकुल में भेजने की अनुकम्पा करें।

नोट—गुरुकुल में गौशाला का भी प्रबन्ध हो रहा है तदर्थ जो सज्जन चाहें वे हृष्ट पुष्ट गौवें भेज कर कृतार्थ करें।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KAN

Regd L. N. 381

है तो भगवान् उसे बल देते हैं। भगवान् वह शक्ति भर देते हैं जिससे वह पाप को करने में समर्थ हो जाता है। इस प्रकार सच्चे भक्त के आत्मा को पापों का विरोध में शक्तिशाली बना कर भगवान् उसके पाप डालते हैं। इस भाँति अपने आपको पवित्र में लगा हुआ सच्चा प्रभु-भक्त जब भगवान् से करता है तो वे उसकी प्रार्थना को सुनते हैं उसे और अधिक पवित्र बनने में सहायता देते परन्तु यहां पाप काटने और पाप के फल में भेद समझ लेना चाहिये। भगवान् सच्चे के पाप तो काट देते हैं, उसे पवित्र बनने में बता देकर भविष्य में तो पाप से बचने के योग्य देते हैं। यह भक्त भविष्य में पाप नहीं करेगा नये इसके पाप तो कट गये। पर पाप के फल को नहीं काटते हैं। भक्त पहले जो पाप कर है उसका फल तो उसे भोगना ही पड़ेगा। का फल दुःख होता है। पूर्व किये हुए पापों फल रूप दुःख तो भक्त को भी किसी न किसी में भोगना ही पड़ेगा। भले ही वह दुःख भक्त ताप के दुःख के रूप में ही भोग ले। भक्तों को किये पापों पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ करता है। हृदय इन पापों के कारण स्वयं ही पछतावे ख से जला करता है। हो सकता है कि प्रभु के किसी पाप के फल रूप में उसके इस पश्चा-दुःख को ही पर्याप्त समझ लें। एक शब्द में, पश्चात्ताप-दुःख के रूप में हो और चाहे किसी तरह से प्राप्त दुःख के रूप में हो, भक्त को भी पूर्वोपार्जित पापों का फल दुःख तो भोगना ड़ेगा। प्रभु-प्रार्थना भविष्य पाप को तो काट है पर पूर्वोपार्जित पापके फल को नहीं काटती।

न्त्र में भगवान् से पाप काटने के लिये बल र्थना की गई है। भगवान् को यहां वरुण नाम ा गया है। यहां वरुण का अर्थ वरण करने न करके बचाने वाला करना चाहिये। इसके ों ही अर्थ होते हैं। पर पाप से बचने की ा में यहां वरुण का 'बचाने वाला' यह अर्थ धिक स्वारस्य रखता है।

ख के अभिलाषी हे मेरे मन! अपने आपको बनाने के मार्ग में चल। इसके लिये प्रभु की रके अपने को वसिष्ठ बनाले और उनसे बल र्थना कर। वे 'बचाने वाले' वरुण प्रभु तुझे पाप

वैदिक विवाह

श्री पं० हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार

गतांक से आगे

स्वर्ग और नरक

कालिदास रघुवंश के राजाओं का वर्णन करते हुए "प्रजायै गृहमेधिनाम्" इन शब्दों में वर्णन करते हैं कि वे राजा बाल्यकाल में वेदाध्ययन करके प्रजा की उत्पत्ति की दृष्टि से गृहस्थ में प्रवेश करते थे। वस्तुतः यही वैदिक आदर्श है।

एक गृहस्थ २५ वर्ष के इस गृहस्थाश्रम के समय में अधिक से अधिक १० सन्तान उत्पन्न करे। "दशास्यां पुत्रानाधेह" ऋ० १०.८५.४५)। इससे अधिक सन्तान उत्पन्न करने का अधिकार उसे नहीं। 'बहुप्रजाः निर्ऋतिमाविवेश" इन ऋग्वेद के शब्दों के अनुसार अधिक सन्तानों के होने पर मनुष्य कष्ट को प्राप्त होता है। सन्तान निर्बल व कम बुद्धि वाली होती हैं तथा आर्थिक दृष्टिकोण से भी अधिक सन्तानों का होना वाञ्छनीय नहीं। ऐसा होने पर गृहस्थ वस्तुतः स्वर्ग न हो नरक हो जाता है। काम की भावना का वास्तविक उद्देश्य भूल जाने पर यह काम दिव्यगुण न रह कर "कामः क्रोधश्च लोभश्च" इन गीता में वर्णित तीन नरक के द्वारों में परिगणित होता है। यह मनुष्य का शत्रु हो जाता है।

कहीं गृहस्थ में प्रवेश करने वाले वर वधू इस काम-भावना के पवित्र उद्देश्य को भूल न जायं, इसी से विवाह के मन्त्रों में बारम्बार "प्रजावति" (अथर्व १४. १. ५२) "प्रजया परिधत्ताम्" (अथर्व १४.१.५३) "प्रजया वर्धयन्तु" (अथर्व १४.१.५४.) "पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह" (ऋ० १०.८५.३८) इत्यादि शब्दों में स्मरण कराया गया है कि गृहस्थाश्रम में प्रवेश 'प्रजा की उत्पत्ति के लिये ही' है।

विवाह के योग्य कौन ?

ऊपर सामान्यतः यह हम देख चुके हैं कि विवाह के योग्य पुरुष कौन है? परन्तु गिंगलाचार्य ने अपने गिंगलशास्त्र में छन्दों के विषय को स्पष्ट करते हुए प्रसंगवश इस विषय का बड़े सुन्दर प्रकार से संकेत किया है। उनका सूत्र "धी श्री स्त्री म्" यद्यपि किसी अन्य उद्देश्य से लिखा गया है परन्तु यह भी इससे उपदेश मिल रहा है कि जो शोभा=कान्ति=चमक=तेजस्विता" वाला बना है वही "स्त्री" को पाने का अधिकारी है। जिसने ज्ञान को प्राप्त नहीं किया तथा जो क्षीणशक्ति पुरुष है वह इस दुर्बल इन्द्रियों से धारण न किये जा सकने वाले गृहस्थ में प्रवेश के योग्य नहीं।

धन

यहां "श्रीः" शब्द का अर्थ धन भी किया जा सकता है। जिसने ज्ञानोपार्जन करके धनार्जन की योग्यता भी पाई हैं वही गृहस्थ में जाय। धन के अभाव में जीवन की आवश्यकताओं के भी पूर्ण न हो सकने से गृहस्थ सुख के स्थान में दुःख का कारण हो जाता है। पाणि-ग्रहण के मन्त्रों में वर वधू से कहता है कि "भगस्ते हस्तमग्रभीत्" ऐश्वर्य वाले पुरुष ने ही तेरे हाथ का ग्रहण किया है। अथर्व १४.१.४८ में "मया सह प्रजया च धनेन च" इन शब्दों में वह कहता है कि "मेरे साथ प्रजा व धन के साथ तू सुख से निवास कर"। अथर्व १४.२.१६ "निर्ऋते प्रपत मेहरंस्था" में गृहस्थ दरिद्रता से कहता है कि तू हम से दूर भाग जा। अर्थात् गृहस्थ पुरुषार्थ से धनोपार्जन कर दरिद्रता को दूर करे। "रायस्पोषाय त्रिपदी भव" धन की वृद्धि के लिये तृतीय चरण को रख—इन शब्दों में धनार्जन के लिये प्रयत्न का विधान स्पष्ट है। (क्रमशः)

अध्यापिका की आवश्यकता है

आर्य कन्या पाठशाला गुरुकुल कांगड़ी में पाँचवीं श्रेणी तक की कन्याओं को पढ़ाने के लिए आर्य विचारों की अध्यापिका की आवश्यकता है। वही प्रार्थना पत्र भेजें जो २५ जून तक उपस्थित हो सकें।

मन्त्री आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी ज़ि० सहारनपुर

आर्य के भू० पू० सम्पादक का शुभ विवाह

आर्य के भूतपूर्व सम्पादक व गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक श्री हरिवंश जी वेदालङ्कार का शुभ विवाह १८ जून को गांधी आश्रम (गुरुकुल कांगड़ी के समीप) में कुमारी सुनीति देवी से हो रहा है। यह विवाह जात पात दहेज आदि के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

व्यक्ति हो या राष्ट्र कमजोरी के [illegible]

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक

देश विदेश के समाचार

—कराची की सूचना है कि मैट्रिक की परीक्षा में जिन लड़कों ने अपने परचों पर कांग्रेस के कुछ आपत्ति जनक नारे लिखे वे फेल किए जाएंगे।

—भारत के भू० पू० वायसराय लार्ड हैली फैक्स के पुत्र की दोनों टांगें काट दी गईं। वे अबीसीनिया की लड़ाई में सख्त घायल हुए थे।

—चीनी सेनाएं किन्हवा में दाखिल हो गई हैं।

—सिसली पर भीषण बमबारी हुई। लिनोसा टापू में इटालियनों ने हथियार डाल दिए।

—जैनधर्म पर आक्षेप करने वाली एक पुस्तक जैन दण्डनम् को जब्त घोषित किया गया है। इसके लेखक पं० भगवताचार्य शास्त्री हैं।

—हिंदुस्तान के प्रसिद्ध और उद्योगी सेठ रामकृष्ण डालमियां दिल्ली से हिन्दी उर्दू और अंग्रेजी में एक और वन नाम के तीन दैनिक पत्र निकाल रहे हैं। इन पत्रों की नीति होगी दुनिया को एक इकाई बनाना। एक सरकार हो, एक झण्डा हो और एक ही करेन्सी हो।

—अमेरिका के युद्ध विभाग ने एक ऐसी मोटर-लारी बनाई है जो जल और स्थल में चल सकती है। इसमें ३५ सवारियां बैठ सकेंगी। यह माल ढोने के काम भी आएगी।

—नैनीताल केन्द्रीय जेल से श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित बिना शर्त रिहा कर दी गई हैं।

—आर्यसमाज बारह मूला ने अखिल भारतीय रेडियो की हिन्दी भाषा विरोधिनी नीति का विरोध करते हुए मांग की है कि अधिकतर कार्य क्रम हिन्दी भाषा में ब्राडकास्ट किया जाये क्योंकि इसे जनता भली प्रकार समझ सकती है।

—नेटाल इण्डियन कांग्रेस के प्रतिनिधि स्वामी भवानीदयाल और मि० मोहम्मद अहमद ने एक संयुक्त वक्तव्य में लिखा है—जब से भारतीयों के विरुद्ध काला कानून पास हुआ है, दक्षिणी अफ्रीका की गवर्नमैंट भारतीयों के हित के लिए बड़ी-बड़ी स्कीमें बना रही है। गवर्नमैंट ने कहा है कि डर्बन में नदी के किनारे ज़मीन के ६०० टुकड़े बेचे जा रहे हैं, खरीदने के लिए भारतीयों पर कोई पाबन्दी नहीं। पर यह बिलकुल झूठ है। क्योंकि यह ज़मीन पिछले साठ और सत्तर सालों से भारतीयों के पास रही है। उनको उन्हीं की ज़मीन से वंचित किया जा रहा है। 'स्लम एक्ट' के अधीन अब यह भूमि योरपियन को दे दी जाएगी।

नींव का पत्थर

[श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी']

- १ -

शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद।
नींव में गड़, हो चुका हूँ दृष्टि से ओझल ;
वक्ष पर मेरे रखा है यह महल बोझल ;
किन्तु, आती राजरानी को न मेरी याद।
शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद॥

- २ -

गूंज होते हैं महल में बज रहे पायल
पद कमल मेरे हृदय को कर रहे घायल ;
हो उठा है भूमि के भीतर विकल अवसाद।
शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद॥

- ३ -

देख दीवारें महल की भव्यता विस्मित,
पूछती, किसने कराया है इसे निर्मित ;
कौन मुझ को पूछता जो हो गया बर्बाद।
शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद॥

- ४ -

उस शिखर पर है चमकता वह कलश स्वर्णिम,
ज्योति की वर्षा वहाँ पर हो रही रिमझिम ,
पर गहनतम को किया मैंने यहाँ आबाद।
शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद॥

- ५ -

शेष जिस के शीश पर है जग अखिल अवसित,
हैं न श्रीपति भार से उसके हुए परिचित
स्वर्ग में रहता निरंतर है मुखर आह्लाद।
शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद॥

- ६ -

एक करवट भी अगर लूँ तो मचे हलचल
गिरि गिरें, प्रासाद टूटें हो विकल जल-थल
जाग जाए जो कभी विद्रोह का उन्माद।
शीश पर कब से रखे हूँ विश्व का प्रासाद॥

वीर पदक

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा वेदानन्द जी ने सभा के पास १७५) इस कराया था कि उसके सूद से ऐसे व्यक्ति दिया जावे जो किसी की जान बचाने करे। गत वर्ष यह पदक म० झांवरीराम पुर निवासी को दिया गया था। अब क जनता की सूचनार्थ प्रकाशित किया जा जिस सज्जन ने किसी की जान बचाने हाल ही में किया हो वह अपना प्रार्थना को भेजदें। घटना का ब्यौरा तथा उसके का प्रमाण साथ होना चाहिये। प्रार्थ विचार के पीछे सभा जिस सज्जन को प योग्य समझेगी उसे पदक देगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन

अखिल भारत वर्षीय हिन्दी पत्रकार

तीसरे अधिवेशन की तिथि परि

अखिल भारतवर्षीय हिन्दी पत्रकार कलकत्ता अधिवेशन के मनोनीत सभ इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुरोध-अनुस पत्रकार संघ के अधिवेशन की नियत जुलाई के स्थान पर १०-११ जुलाई की प्रधान-संयुक्त मंत्री—जगदीशचन्द्र 'हि कृष्णचन्द्र

आर्य समाज भारत नगर सुदर्शन नग

का चुनाव

प्रधान—म० गिरधारी लाल जी, उ म० जयरामदास जी, म० दीनानाथ उ म० प्रकाशचन्द जी, उपमन्त्री—म० जी, प्रचार मन्त्री—म० जितेन्द्रनाथ कोषाध्यक्ष—म० दौलतराम जी।

आवश्यकता

श्री दीवानचन्द स्मारक पुत्री पाठ पुर जिला झेलम, के लिये एक आद वाली योग्य अध्यापिका की आवश्य प्रार्थना पत्र निम्न पता पर आने चाहि

मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक [illegible]

(Saharanpur)

मूल्य ।।।)

श्री चमूपति साहित्य विभाग

गुरुदत्त भवन, लाहौर ।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के

प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये ।

वेदामृत २।।) Immortal Sayings ofDayanand ।)
जीवन ज्योति १।।) दयानन्द रत्न माला ।)
स्वाध्याय संग्रह ।।।) वैदिक धर्म की जय ।।।)
वैदिक स्वर्ग ।।।) यास्क युग ।।।)
स्वर्ग ।–) सभा इतिहास २)
देव यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand१।)
पीयूषबिन्दु ।–) त्रिदेव निर्णय ।।।)
निरुक्त का मूल वेद में ।–)
Hindu America५) Light of Truth ३)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

संख्या २४, अंक ३०] २० आषाढ़, २००० विक्रमी—४ जुलाई १९४३ [वार्षिक मूल्य ४)

अध्यात्म सुधा

[२९]

ऋग्वेदीय दयानन्दोपनिषद्

ऋग्वेदः मं० १ । अ० १५ । सू० १०२ ॥

सभा सेना संगठन प्रकरण

यदा शूरवीरैर्भृत्यैः सेनाधिपतिना च सङ्ग्रामंकर्तुं गम्यते तदाऽन्योऽन्यमनुमोद्य संरक्ष्य शत्रुभिः संयोध्य तेषां पराजयं कृत्वा स्वकीयान् हर्षयित्वा शत्रूनपि संतोष्य सदा वर्तितव्यम् ॥३॥

जब शूरवीर सेवकों के साथ सेनापति का संग्राम करने को जाना होता है तब परस्पर अर्थात् एक दूसरे का उत्साह बढ़ा के अच्छे प्रकार रक्षा शत्रुओं के साथ अच्छा युद्ध उनकी हार और अपने जनों को आनन्द देकर शत्रुओं को भी किसी प्रकार सन्तोष कर सदा अपना वर्त्ताव रखना चाहिये ॥३॥

राजपुरुषा यदा यदा युद्धाऽनुष्ठानाय प्रवर्तेरन् तदा तदा धनशस्त्रकोशयानसेनासामग्रीः पूर्णाः कृत्वा प्रशस्तेन सेनापतिना रक्षिता भूत्वा प्रशस्तविचारेण युक्त्या च शत्रुभिः

राजपुरुष जब जब युद्ध करने को प्रवृत्त होवें, तब तब धन, शस्त्र, यान, कोष, सेना आदि सामग्री को पूरी कर और प्रशंसित सेना के अधीश से रक्षा को प्राप्त होकर प्रशंसित विचार और युक्ति से शत्रुओं के साथ युद्ध कर उनकी सेनाओं को सदा जीतें ऐसे पुरुषार्थ के विना किये किसी की जीत होने योग्य नहीं इससे इस वर्त्ताव को सदा वर्त्तें ॥४॥

यदा मनुष्या युद्धादिव्यवहारे प्रवर्तेरंस्तदा विरोधेर्ष्याभयालस्यं विहाय परस्पररक्षायां तत्परा भूत्वा शत्रून् विजित्य विजितधनानां विभागान् कृत्वा सेनापत्यादयो यथायोग्यं योद्धृभ्यः सत्कारायैतानि दद्युर्यतोऽग्रेऽप्युत्साहो वर्धेत । सर्वथाऽऽदानमप्रियकरं दानञ्च प्रियकारकमिति बुद्ध्वैतत्सदाऽनुतिष्ठेयुः ॥५॥

जब मनुष्य युद्ध आदि व्यवहारों में प्रवृत्त होवें तब विरोध, ईर्षा, डर और आलस्य को छोड़ एक दूसरे की रक्षा में तत्पर हो शत्रुओं को जीत और जीते हुए धनों को बांट कर सेनापति आदि लड़ने वालों की योग्यता के अनुकूल उनके सत्कार के लिये देवें कि जिससे लड़ने का उत्साह आगे को बढ़े । सब प्रकार से ले लेना प्रीति करने वाला नहीं और देना प्रसन्नता करने वाला होता है यह विचार कर सदा उक्त व्यवहार को वर्त्तें ॥५॥

विजयादीनि कार्य्याणि साधनीयानि ॥६॥

मनुष्यों को चाहिये कि जो सर्वथा समर्थ, प्रत्येक काम के करने को जानता और औरों से न जीतने योग्य, आप सब को जीतने वाला, सबके चाहने योग्य और अनुपम मनुष्य हो उसको सेनाधिपति करके विजय आदि कामों को साधें ॥६॥

अत्र वाचकलु०—मनुष्यैर्यथा सूर्योऽन्धकारमेघादिकं हत्वाऽपरिमितं स्वकीयं तेजः प्रकाश्य सर्वेषु तेजस्विष्वधिको वर्त्तते तथाभूतं विद्वांसं सभापतिं मत्वा शत्रवः पराजेयाः ॥७॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—मनुष्यों को चाहिये कि जैसे सूर्य्य अन्धकार और मेघ आदि का हनन करके अपरिमित अर्थात् जिस का परिमाण न हो सके उस अपने तेज को प्रकाशित कर सब तेज वाले पदार्थों में बढ़ के वर्त्तमान है वैसे विद्वान् को सभा का अधीश मान के शत्रुओं को जीतें ॥ ७ ॥

अत्र वाचकलु०—मनुष्यैर्येनाप्रतिमेश्वरेण कारणात्सर्वं कार्यं जगन्निर्माय संरक्ष्य संहियते स एवेष्टो माननीयस्तथा योऽतुलसामर्थ्यः सभाधिपतिः प्रसिद्धैर्न्यायादिगुणैः सर्वं राज्यं संतोषयति स च सदा सत्कर्तव्यः ॥ ८ ॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—मनुष्यों को चाहिये जिस की उपमा नहीं है उस ईश्वर ने कारण से कार्य्यरूप जगत् को रच और उसकी रक्षा कर उस संहार किया है वही इष्टदेव मानने योग्य है तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

मैं दास वह स्वामी

[श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, दयानन्द उपदेशक विद्यालय]

[२२]

अरं दासो न मीळहुषे कराण्यहं देवाय भूर्णये अनागाः ।
अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति ॥ ७ ॥

अर्थ—(मीळहुषे) सुखों की वर्षा करने वाले (भूर्णये) सब का भरण-पोषण करने वाले (देवाय) देव की (अनागाः) निष्पाप होकर (दासः) सेवक की (न) तरह (अरं) खूब (कराणि) भक्ति करूं (अर्यः) सबके स्वामी (देवः) देवने (अचितः) हम अज्ञानियों को (अचेतयत) ज्ञान दे दिया है (कवितरः) सब की अपेक्षा अधिक ज्ञानी वह देव (गृत्सं) मुझ भक्त को (राये) प्रभु-प्राप्ति रूप ऐश्वर्य के लिये (जुनाति) प्रेरित करता रहे।

गत मन्त्र में भक्त ने भगवान् से कहा था कि—हे प्रभो पाप बलवान् हैं और मैं निर्बल हूं, मुझ में तो इनसे बचने के लिये अपना बल है नहीं, आप ही कृपा करके अपना बल मुझे दीजिये जिससे मैं इन पापों से बचकर निष्पाप हो सकूं। भक्त के हृदय की सच्ची तड़प और लगन देखकर प्रभु उसकी प्रार्थना को पूरा कर देते हैं। वे पाप को जीतने में उसकी सहायता करते हैं। उसके हृदय में पाप को जीतने योग्य शक्ति भर देते हैं। भक्त पाप को जीत लेता है और इस जीत में प्रभु की सहायता को स्पष्ट अनुभव करता है। भक्त-हृदय की इसी अवस्था का चित्र प्रस्तुत मन्त्र में खेंचा गया है।

भक्त कहता है—"प्रभु ने अपना बल देकर मुझे पाप को जीतने में समर्थ बना दिया है। मैं अज्ञानी था। मुझे ज्ञान देकर प्रभु ने ज्ञानी बना दिया है—अचेतयत् अचितः। मेरे सारे पापों का मूल मेरा अज्ञान ही तो था। मुझे किसी क्षण की वस्तुस्थिति का पूरा ज्ञान न होने के कारण ही तो मैं उस अवसर पर पाप कर बैठता था। प्रभु की मुझ पर कृपा हो गई है। उन्होंने मेरे अन्दर कुछ ऐसी शक्ति भर दी है कि अब मेरे मन और बुद्धि कभी धोखा नहीं खाते। मेरा आत्मा सदा पूर्ण जागृत और सतर्क रहता है। मैं अब मेरे सम्मुख आने वाली प्रत्येक वस्तु स्थिति की वास्तविकता को भली भांति समझ लेता हूं और उसे देखते हुए मुझे जो सही आचरण करना चाहिये वही करता हूं। मुझ से अब पाप नहीं बन पाता। मैं प्रभु की कृपा से निष्पाप हो गया हूं।" वह प्रभु की इस कृपा को अनुभव करता

[illegible] पुनः कहता है—"क्योंकि भगवान् ने कृपा
[illegible] मेरे चक्षु खोल दिये हैं जिससे [illegible]
पाप को जीतने में समर्थ हो गया हूं—निष्पाप हो गया हूं—इसलिये मैं अपने मंगल कर्ता प्रभु की और भी अधिक भक्ति करूंगा। पहले भी मैं प्रभु की प्रचुर भक्ति करता रहा हूं। पर अब तो मैं उस भक्ति को "अरं" कर दूंगा—अब तो मैं उसे इतना अधिक करूंगा कि सीमा तक पहुंचा दूंगा। उस से अधिक और भक्ति हो नहीं सकेगी। सेवक जैसे अपने स्वामी की भक्ति करता है मैं भी उसी तरह अपने प्रभु की भक्ति करूंगा। प्रभु मेरे स्वामी हैं मैं उनका दास हूं—सेवक हूं। मैं दास अपने स्वामी की खूब भक्ति करूंगा।"

इसी प्रसंग में भगवान् के दो-एक गुणों की ओर भी भक्त के मुंह से निर्देश करा दिया गया है। कहा गया है कि भगवान् "मीळहान्" हैं—सारे संसार पर सुख-मंगल की वर्षा करने वाले हैं। संसार के प्राणियों को जो सुख-मंगल मिल रहे हैं वे सब प्रभु की कृपा का ही फल हैं। जिस क्षण हममें से किसी पर उनकी कृपा नहीं रहेगी उस क्षण से आगे हम कोई सुख-मंगल प्राप्त नहीं कर सकते। कहा है भगवान् "भूर्णि" हैं—सबका भरण-पोषण करने वाले हैं। हम सब का जो भरण-पोषण हो रहा है वह प्रभु की कृपा से ही तो हो रहा है। हमारे भरण-पोषण के लिये आवश्यक सब सामग्री जो धरती पर हमें मिल रही है वह प्रभु ने ही तो हमारे लिये बनाई है। वही तो हमें पाल और पोस रहे हैं। फिर कहा है वे "देव" हैं—जितने भी दिव्य गुण हैं वे सब उनमें पूर्ण मात्रा में हैं। कोई उनके गुणों की तुलना नहीं कर सकता। वे अपने दिव्य गुणों के कारण सबको भांति-भांति के दान दे रहे हैं, स्वयं प्रकाशित हो रहे हैं और विश्व को प्रकाशित कर रहे हैं। प्रभु से बड़ा और कौन देव होगा।

अन्त में भक्त फिर कहता है कि—"वह मेरा स्वामी देव मुझे भविष्य में भी ऐश्वर्य के लिये वैसे ही प्रेरित करता रहे जैसे उसने अब प्रेरित किया है। भगवान् ने मुझे अपनी प्रेरणा द्वारा पाप से बचा कर पुण्य का ऐश्वर्य प्रदान किया है। इस पुण्य के ऐश्वर्य का फल स्वरूप मुझे प्रभु के दर्शन होने लग पड़े हैं। मैं सब सुखों के वर्षक, सब के भरण-पोषण कर्ता, प्रभु देव को अनुभव करने लग [illegible]

रहता है। यह प्रभु के आनन्द-रस का उपभोग ऐश्वर्य प्रभु की कृपा से ही मिल सका है। भ में भी प्रभु मुझे अपनी प्रेरणा द्वारा पवित्र र यह ऐश्वर्य प्रदान करते रहें।"

इसी प्रसंग में प्रभु के दो-एक गुण और दिये हैं। कहा है, प्रभु अर्य हैं—सबके स्वामी हैं प्रभु सचमुच ही सब के स्वामी हैं। यह सारा ब्रह्माण्ड अपने सब जड़चेतन और चराचर प के साथ उन भगवान् के ही तो वश में है। इ एक-एक अणु उसके शासन में चल रहा है। हमारा स्वामी है, हम उसके 'स्व'—उसके 'क हैं। कौन उसके नियमों के शासन से बाहर सकता है? कहा है, वह "कवितर" है। कवि प्र वस्तु का गहरा, तलस्पर्शी, ज्ञान रखने वा कहते हैं। भगवान् न केवल कवि हैं प्रत्युत क हैं। सब की अपेक्षा अधिक गहरा और तल ज्ञान प्रत्येक वस्तु का रखते हैं। कोई उनके का पार नहीं पा सकता। ऐसा ज्ञानी स्वामी हमें पाप से बचा सकता है।

मन्त्र में भक्त ने अपने को अज्ञानी कहने के लि "अचितः" शब्द का प्रयोग किया है। यह बहुवचनान्त हैं। इस बहुवचनान्त शब्द के की दो ध्वनियां हैं। एक तो यह कि भक्त को को ही भक्त बनाकर सन्तुष्ट नहीं रहना चा प्रत्युत उसे अपने आस पास के अन्य लोगों को प्रभु-भक्ति में दीक्षित करने का प्रयत्न करते चाहिये। जिससे वह भगवान् से प्रार्थना करते "मैं भक्त" की जगह "हम भक्त" ऐसा कह और दूसरे यह कि भक्त को अनेक वार मंडल बैठ कर भी प्रभु का कीर्तन करना चाहि अनेकों के साथ मिलकर गाया हुआ प्रभु- हमारे भीतर भावनाओं को अधिक गहरा है। जैसे समुदाय हंसी आदि को उत्तेजित कर है वैसे ही समुदाय भक्ति की भावना को भी उ कर देता है। हमारी कोई भी भावना उस भा वाले व्यक्तियों की मण्डली में बैठने से प्रबु जाती है।

मंगल के अभिलाषी हे मेरे मन! प्रभु की भक्ति से उनको अपने ऊपर कृपालु बना ले। कृपा तुझे पवित्र बना देगी और निष्पाप हो प्रभु के आनन्द-रस का अधिकारी हो जायेगा।

—इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के वाईस चां श्री पं० अमरनाथ जी झा ने गुरुकुल विश्वविद्या कांगड़ी हरिद्वार के आगामी वार्षिकोत्सव, ई ईस्टर की छुट्टियों में मनाया जायगा, पर कर दीक्षान्त भाषण देना स्वीकार कर लिया। इस वाईस चांसलर गुरुकुल विश्वविद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by 93 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 561

आर्य रविवार २० आषाढ़
वि० सं० २०००

प्रतिहिंसा और प्रतिफल

प्रतिहिंसा और प्रतिफल देने का भाव इतना ाविक हो गया है, कि साधारणतया यह ा जाता है कि साधारण मनुष्य इन दोनों ाओं को नहीं छोड़ सकता। एक व्यक्ति मेरे बुरा व्यवहार करता है, मुझे अपशब्द कहता ी निन्दा करता है। उसके संदेशहर के द्वारा ें यह बातें सुनता हूं तो मेरा मन भी उस के विषय में प्रत्युत्तर रूप में इसी प्रकार की कहने को ललचा उठता है—और अनेक बार ाने मुख से इस प्रकार की बातें निकल पड़ती केवल इतना ही नहीं एकान्तवास, संध्या, काल के भ्रमण, ब्राह्ममुहूर्त के जाप में, रात के ें में भी यह प्रतिहिंसावृत्ति मन को प्रभावित ी है। कई बार इस प्रतिहिंसा भाव के पैदा पन्न मनुष्य यह भी सोचता है कि देखो मैंने ा यह उपकार--किया—उसने मेरे साथ यह ार किया—वह मनुष्य समाज के सौहार्द सो निराश होकर—मनुष्य समाज से—सामा- आन्दोलनों से पृथक् हो जाने की सोचता है। ार्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के इस वार्षिक वान के बाद मेरे मन में भी इसी प्रकार के तामस भाव पैदा हुए—उन्हें शान्त करने ड़ी कोशिश की—परन्तु पूर्ण रूप से सफलता मिली—इसलिये यह सोचा कि आर्य जनता पक्ष अपने दोष को—अपनी निर्बलता को स्वी- करूं।

स्के साथ साथ यह भी प्रश्न उठा कि हमारे— न ऋषि मुनियों ने मनुष्य समाज में इस प्रकार ासिक संघर्षों से पैदा होने वाली अशान्ति को रने के लिये हमारे सामने क्या उपाय निर्दिष्ट हैं। साधारण जनता में श्री कृष्ण की गीता धार पर, 'कर्तव्य बुद्धि से कार्य करने की ा को जगाना ही' इस मानसिक अवस्था को ा का उपाय समझा जाता है। परन्तु यह कर्तव्य- ा काम करने की भावना कैसे पैदा हो, इसके ह में योगदर्शन के निम्नलिखित सूत्र का विशेष अनुशीलन करना चाहिए।

ुख दुःख पुण्यापुण्य विषयेषु मैत्रीकरुणामुदितो- ां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।

ुखी व्यक्ति को देख कर, ईर्ष्या के स्थान पर या भाव स्नेह का प्रकट करना चाहिए। दुःखी ा करुणा और सहानुभूति का भाव प्रकट करना चाहिए। पुण्यात्मा को देखकर मुदिता- आनन्द की भावना पैदा होनी चाहिए। अपुण्यात्मा- पापी को देखकर उसके प्रति उपेक्षा–(Indifference) का भाव पैदा होना चाहिए। साधारणतया मनुष्य के हृदय में प्रतिपक्षी या प्रतिद्वन्द्वी को सुखी देखकर ईर्ष्या का भाव पैदा होता है। पापी को देखकर उससे घृणा व नफरत का भाव पैदा होता है। ऋषि दयानन्द जैसे महात्मा तो पापी को देखकर करुणार्द्र होते हैं—उन्हें उस आत्मा पर दया आती है, परन्तु साधारण आदमी उससे घृणा करता है। इस घृणा करने की भावना की तह में, घृणा करने वाले के हृदय में अपने आपको निष्पाप—या सिद्धान्तवादी—या धर्मात्मा समझने का अहं भाव काम करता है। यह अहं भाव कई तरह की द्वेष विद्वेष की भावनाओं को पैदा करता है। जनता की विजय को, सचाई की विजय को, अहं भाव के कारण वह अपनी विजय, तथा प्रतिपक्षी तथा प्रति- द्वन्द्वी की पराजय समझता है। पराजित प्रतिद्वन्दी– जीतने वाले को अपना विरोधी समझ कर उसकी बदनामी करने लगता है–अथवा वह यह भूल जाता है कि यह उस व्यक्ति की विजय नहीं—यह विचार की विजय है।

यथार्थ में यदि हम इन राजस तामस भाव- नाओं से ऊपर उठना चाहते हैं—तो हमें यही सम- झना चाहिए कि सचाई में स्वयं इतना बल होता है कि वह जनता के सामने विजयी होकर आए बिना नहीं रहती; पाप में—अथवा अन्याय- पूर्ण व्यवहार में स्वयं अन्तर्गत पतन-शीलता इतनी होती है कि कोई उसके अधःपाती वेग को रोक नहीं सकता। यदि मनुष्य यह समझ कर समाज के सभा संगठन सम्बन्धी सामाजिक जीवन में प्रवेश करेगा—तो उसे निराशा न होगी। उसके हृदय में व्यक्तिगत द्वेष पैदा न होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के इस वार्षिक निर्वाचन के बाद, पक्ष प्रतिपक्षों में इस प्रकार की राजस तामस भावनाओं का प्राबल्य हो रहा है। इस वर्ष के निर्वाचन में जनता की यह आवाज थी कि सबको—सब पक्ष के लोगों को मतभेद होते हुए भी, मिलकर काम करना चाहिए। किसी पक्ष प्रतिपक्ष की विजय पराजय नहीं हुई। इस विचार की विजय हुई और इस सचाई की प्रबलता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है कि कई वर्षों से एक दूसरे से दूर हुए भाई आपस में मिल रहे हैं—यदि हम इस भावना को स्थिर बनाना चाहते हैं तो हमें अब शेष वर्ष की अवधि में व्यक्ति- गत–गुण दोष छान बीन में समय न बिताना चाहिए। यदि किसी पर कोई पतराज़ होभी तो, उसे बाजार में, चलते फिरते आदमियों की चर्चा बनाने के स्थान पर, लिखित रूप में—सभा कार्यालय में भेज देना चाहिए। सभा को उस पर विचार करने में कोई संकोच नहीं होगा। सामाजिक तथा सार्व- जनिक जीवन की पवित्रता के लिए, इस प्रकार की छान बीन बुरी नहीं अपितु सार्वजनिक जीवन को पवित्र बनाती है। इस मनोवृत्ति के पैदा होने पर हमारे मनों में से स्वयं ही प्रतिहिंसा- और प्रतिफल की आशा करने के स्थान पर, कर्त्तव्य बुद्धि से काम करने की भावना पैदा होगी। इस कर्तव्यबुद्धि की भावना के पैदा होने पर—समाज तथा सभा के वातावरण में शान्ति तथा सन्तोष पैदा होगा। तब बिना शान्तिसम्मेलनों के स्वयं ही पर- स्पर अच्छे सम्बन्ध पैदा होंगे।—भीमसेन सभामंत्री

आर्य समाजों से आवश्यक निवेदनः—

इन दिनों राष्ट्र में, आम जनता अन्न वस्त्र की तंगी से पीड़ित हो रही है। इस विषय में आर्य समाज को विशेष रूप से सेवा तथा सहायता का कार्य करना चाहिए। आर्य समाज अम्बाला, आर्य समाज लायलपुर ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य शुरू किया है। स्थानीय वस्तु भंडार (Depot) खोले गये हैं। धनी दानी पुरुषों से धन संग्रह कर आम जनता को सस्ता माल पहुंचाने की व्यवस्था की जा रही है। मैं आर्य समाजों के अधिकारियों से बल पूर्वक निवेदन करना चाहता हूं—कि वह अपने अपने प्रभावक्षेत्रों में इस प्रकारके वस्तु भंडार खोलकर—यदि आवश्यकता हो तो अन्य सोसाय- टियों के साथ मिलकर आम जनता को सस्ता और अच्छा अन्न पहुंचाने की कोशिश करें। इस विषय में जो भी कार्य करें उसकी सूचना सभा कार्यालय में दें।

भारत के नए वायसरायः—

ब्रिटिश सरकार ने भारत के नए वायसराय के नाम की घोषणा कर दी है। वर्तमान वायस- राय लार्ड लिनलिथगो के स्थान पर, भारत के महा- सेनापति श्री वावेल भारत के वायसराय नियत किये गये हैं।

इनकी नियुक्ति के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की सम्मतियां प्रकट की जा रही हैं। श्री वावेल ने स्वयं भी भारतीयों की हित कामना प्रकट की है।

इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यदि ब्रिटिश सरकार वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध में उलझी न होती—जापान और जर्मनी को पराजित करना उसका मुख्य प्रोग्राम न होता तो वह भूतपूर्व महा- सेनापति को वायसराय के पद पर नियुक्त न करती। एशिया तथा यूरोप के वर्तमान सामरिक वाता- वरण को दृष्टि में रखते हुए यह नियुक्ति आवश्यक ही नहीं, अपितु स्वाभाविक ही है। भारतीय स्व- तंत्रता के प्रश्न के विषय में—इस नियुक्ति का कोई विशेष असर नहीं दीखता। यदि श्री वावेल ने इस विषय में विशेष साहस किया तो उनक

(पृष्ठ ८ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक

आर्य वीर दलों के लिये बौद्धिक शिक्षण

आर्य वीर दल का प्रधान लक्ष्य

(ले०—श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मंत्री अखिल भारतीय आर्य वीर दल समिति तथा सार्वदेशिक आ० प्र० सभा देहली)

[पाठ १]

आर्य वीर दल का प्रधान और अन्तिम लक्ष्य आर्य धर्म के प्रभुत्व को स्थापित करना है। "आर्य धर्म के प्रभुत्व" का अर्थ यह नहीं समझना चाहिये कि हम संसार में किसी मत या सम्प्रदाय का प्रभुत्व चाहते हैं। धर्म शब्द बहुत ऊंचा और व्यापी है। आर्य धर्म और आर्यत्व का एक ही अभिप्राय है।

आर्यत्व में हम निम्नलिखित वस्तुओं को सम्मिलित समझते हैं—

१. आर्यसंस्कृति—जिस संस्कृति का मूलाधार वेदों में है और जिसका पूर्ण विकाश आर्यावर्त में हुआ।

२. आर्य जाति—जिस जाति ने आर्यसंस्कृति को अपनाया, और फैलाया और अब तक भी जो उसी संस्कृति को अपना मूलाधार मानती है।

३. आर्यदेश या आर्यावर्त—भारतवर्ष जो आर्य संस्कृति के उद्भव और विकास की भूमि है और जिसमें अब तक भी आर्य धर्म अपने मौलिक रूप में; यद्यपि विकृत अवस्था में, विद्यमान है।

इन तीनों वस्तुओं के समुच्चय को हम आर्य धर्म या आर्यत्व के नाम से पुकारते हैं। यह समझ लेना चाहिये कि आर्यत्व केवल भारत वर्ष की सीमाओं में ही सीमित रहे यह आवश्यक नहीं। जहां कहीं भी आर्य संस्कृति और आर्य धर्म का फैलाव होगा वहां आर्यत्व की सीमा समझी जायेगी। आर्यत्व जहां हो उसके गौरव और प्रभुत्व की स्थापना आर्य दल का लक्ष्य होगा।

आर्य समाज का लक्ष्य वैदिक धर्म, जिसका दूसरा नाम आर्यधर्म है, को संसार भर में फैलाना है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' यह आर्य समाज का प्रेरक मन्त्र है।

आर्य समाज एक प्रचारक संस्था है जो वाणी और लेख द्वारा आर्य धर्म को संसार भर में फैलाना चाहती है।

यह संसार का अटल नियम है कि प्रत्येक मूल्यवान् पदार्थ की रक्षा शक्ति से ही की जा रखने के लिये क्षात्र बल की आवश्यकता है। जिस कार्य को आर्य समाज प्रचार द्वारा कर रहा है आर्य वीर दल शक्ति द्वारा उसकी रक्षा करेगा। आर्य वीर दल आर्य जाति के क्षात्र धर्म का प्रतिनिधि होगा।

यह विचार भ्रममूलक है कि सत्य अपनी रक्षा स्वयं कर सकता है। सत्य संसार में से नष्ट नहीं होगा, यह तो ठीक है परन्तु विशेष समय और विशेष स्थान पर रक्षकों की निर्बलता से श्रेष्ठ और प्यारी से प्यारी सत्य वस्तु नष्ट हो सकती है। इस कारण यह अटल ईश्वरीय नियम है कि जो वस्तु उत्तम और उपादेय होने से हमें प्यारी है उसकी रक्षा के योग्य शक्ति हमें अवश्य पैदा करनी चाहिये अन्यथा इस संघर्षमय संसार में, जहां अत्याचार और विनाश के दूत प्रत्येक उत्तम पदार्थ पर झपटने को तैयार बैठे हैं, अपनी प्रिय वस्तु की रक्षा करना असम्भव है। "जीवो जीवस्य भोजनम्" कमजोर प्राणी बलवान् प्राणी का भोजन बन जाता है, इस कारण जो जाति दूसरे का भोजन न बनना चाहे, उसे शक्ति सम्पन्न बनना ही पड़ेगा।

आर्य वीर दल आर्य जाति की शक्ति का प्रतिनिधि होगा। उसका कार्य होगा कि वह अपनी शक्ति से आर्यत्व के प्रचारकों की ढाल बने, जहां आर्य धर्म खतरे में हो वहां अपनी जान की बाजी लगावे और आर्यत्व के आगे बढ़ते हुये झण्डे को मज़बूत हाथों से थामने के लिये तैयार रहे।

आर्य वीर दल की लक्ष्य प्राप्ति का साधन क्षात्र शक्ति का सामूहिक प्रादुर्भाव

[पाठ २]

मनुष्य जाति का रथ दो पहियों के बल बूते पर आगे बढ़ता है। वह दो पहिये हैं, बुद्धि और शक्ति। इन्हीं दोनों को ब्रह्मबल और क्षात्रबल के नाम से पुकारा जाता है। इनमें से कोई अकेला पहिया जातियों के रथ को आगे नहीं ले जा सकता। दोनों इकट्ठे चलते हैं तभी जाति की गाड़ी संसार की तूफानी दौड़ में पिछड़ने या कुचल जाने से बच

जिस जाति ने इन दोनों बलों में से किसी को भी खो दिया, वह या तो सर्वथा नष्ट अथवा अन्य जातियों के चरणों से दलित प्राचीन काल में आर्य जाति की अनेक शाखा अपने बुद्धि और क्षात्रबल से पृथ्वी पर विजय की थी, और मध्यकाल में मध्य एशिया से हुई नई जातियों ने अपने बढ़े हुए क्षात्रबल की शक्ति को कई स्थानों पर छिन्न भिन्न कर दिया। उस समय भी आर्य जाति में बुद्धि विद्यमान था, परन्तु प्रमाद के कारण शिथिल पड़ गया था, जिसका फल यह हुआ उनको पराजय पर पराजय हुई, यहां तक कि उठाने की शक्ति भी न रही।

इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट प्रतीत होता बुद्धि बल से नियंत्रित क्षात्रबल के बिना कोई जीवित नहीं रह सकती, उसे "जीवो जीवस्य भोजनम्" के नियम के अनुसार सब जातियां दलित कर देती हैं। यदि कोई पद दलित फिर से सिर उठा कर पृथ्वी की अन्य जातियों बराबरी में खड़ी होना चाहती है तो उसे बुद्धि के साथ साथ क्षात्रबल को भी सिद्ध करना

क्षात्रबल व्यक्तिगत और सामूहिक

क्षात्रबल की इकाई जाति की व्यक्ति शारीरिक शक्ति है। जाति का बल उसी अधिक या कम होगा जिस मात्रा में उसके व्यक्तियों का व्यक्तिगत शारीरिक और बल औसत से अधिक या कम होगा। जिस के अधिक सदस्य निर्भय और बलवान् होंगे जाति स्वभाव से अधिक शक्तिशाली और लिये अपनी रक्षा में अधिक समर्थ होगी। जाति के सदस्य निर्बल होंगे वह जाति भी होगी। क्षात्रबल का पहला प्रधान अंग व्यक्ति का आत्मिक और शारीरिक बल है।

परन्तु इतना ही काफी नहीं। जाति को रूप से भी संघटित होना चाहिये। बहुत समयों में जब मनुष्यों का दृष्टि क्षेत्र अत्यन्त मित हो, आस पास की दुनिया से सम्बन्ध कठिन हो और मुख्यतः व्यक्तिगत स्वार्थों के युद्ध होते हों तब शायद केवल व्यक्ति के या व्यक्ति के बलाबल पर जीत हार का निश्चय हो जाता परन्तु प्रायः अनेक जातियों से भरी हुई इस भूमि में विजयी होने के लिये शारीरिक साथ संघटन बल की भी अनिवार्य रूप से श्यकता होती है।

सेना के सिपाहियों का शारीरिक बल, निर्भय भाव और देश प्रेम जितने आवश्यक उनका उत्तम शिक्षण और उत्तम शस्त्रास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 501

क्या हम श्रेय मार्ग को ग्रहण न करेंगे ?

...क—स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, संगृहीता—श्री लब्भूराम जी नैय्यड़, आनन्दाश्रम, लुधियाना)

...सार रूपी विशाल जँगल में दो मार्ग देखने ...ा हैं। एक तो दृष्टि गोचर बड़ा ही प्रिय ...है, जो एक ही दृष्टि में मन को मोह लेता ...ों ज्यों मनुष्य उसमें प्रवृत्त होता है क्लेशों ...खों का सागर दीखता है। परन्तु अचम्भा ... कि दुःख और क्लेश सहते हुए भी इस ...का यात्री इससे लौटने का साहस नहीं ...॥ इस प्रेय मार्ग में सांसारिक विषयों में ...सी आकर्षण शक्ति है कि इसके प्रभाव से ... निकलना किसी विरले ही बहादुर मनुष्य ...ाम है।

...सरा मार्ग देखने में बड़ा कठिन और शुष्क ...होता है। अनुभव शून्य के लिये प्रायः यह ...बड़ा ही भयंकर दिखाई देता है परन्तु जो ...री इस मार्ग में एक बार पग उठाते हैं उन ...द्वा दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है, जिसके ...द को वही पुरुष अनुभव कर सकता है, ...इस आनन्दमय मार्ग पर चलना आरम्भ ...दिया है। क्या हम श्रेय मार्ग को ग्रहण न ...।

...शरीर की दासता बड़ी भयानक है।

...ीवात्मा ही शरीररूपी नगर का राजा है यह ...ार आत्मा का है कि इन्द्रियों, मन और ...को अपने कार्य में लगावे परन्तु जब आत्मा ... के वश में हो जावे और उसकी चञ्चलता ...ा डांवाडोल फिरने लगे तब प्रबन्ध कहां ...रह सकता है। हमारी दशा शोचनीय है। ... हमें इधर उधर लिये फिरती हैं। मन वश ...॥ यही कारण है कि नाममात्र के राजा ...ः भी हम दास बन रहे हैं। शरीर की दासता बड़ी भयानक है। इस दासता के ही कारण संसार में अशान्ति फैल रही है। विचारणीय बात यह है कि यदि मेरा आत्मा, मन और इन्द्रियों का दास बन जावे तो कैसा भयंकर दृश्य है। इन्द्रियों की दासता से स्वतन्त्र होने का उपाय जब तक न करेंगे तब तक सच्ची उन्नति का द्वार हमारे लिये बन्द ही रहेगा।

वह अधिष्ठाता क्या प्रबन्ध कर सकता है जो अपने प्रबन्ध की पड़ताल नियत समय पर नहीं करता। उस प्रबन्ध में उन्नति कहां हो सकती है जहां अधिष्ठाता अपने प्रबन्ध में सच्ची नुकताचीनी सुनने की भी शक्ति नहीं रखता। इसलिये सज्जन पाठकगण! प्रतिदिन अपने राज्य के प्रबन्ध की पड़ताल करो अर्थात् दिन भर के किये कामों पर विचार करो। और यदि तुम्हारा विवेक तुम्हारे कार्यों पर यथार्थ नुकताचीनी करे तो उससे मत घबराओ बल्कि उसे मुबारिक समझो; क्योंकि विवेक की आवाज़ पर ध्यान देना आत्मिक जीवन का चिन्ह है।

...ी जान हैं। नियन्त्रण और संगठन सामूहिक ...प्रधान अंग हैं।

...दर्श क्षत्रिय वह है (१) जिस का शरीर ... हो। (२) जो अपने देश, धर्म पर बलि ...को तैयार हो। (३) जो निर्भय हो। (४) जो ...ों का अच्छा प्रयोग जानता हो। (५) सामू...प से कार्य करने की शिक्षा में दीक्षित हो। ...र यदि स्वयं ही प्रधान सेनापति न हो तो ...सेनापतियों के नियंत्रण में पूरी तरह रह ...ये आदर्श क्षत्रिय के लक्षण हैं। आर्य जाति ...आदर्श क्षत्रियों को तैयार करके आर्य जाति ...र्य ... के गौरव को संसार में फिर से

रावलपिंडी में वेद कथा

श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज १६ जून रात्रि को रावलपिंडी में पधारे तथा २२ जून तक सप्ताह भर अपने प्रातःकाल वेद कथा और रात को वैदिक धर्म के महत्व पर १३ व्याख्यान दिये। वेदों के महत्व पर दिए गये क्रमशः ६ व्याख्यान इस कदर योग्यता, स्वाध्याय तथा अनुसंधान का भंडार हैं कि श्रोतागण इनकी योग्यता, विद्वत्ता तथा स्मरणशक्ति को देखकर चकित रह जाते थे। ७६ वर्ष की आयु में जब कि इनकी शारीरिक इन्द्रियां शिथिल हो गई है इनकी ज्ञानेन्द्रियां इस कदर प्रबल हैं कि जनता हैरान होरही है। प्रातःकाल की कथा में आपने वेद अर्थ शैली और वेद के मन्त्रों के अर्थों पर उत्तमता से व्याख्या की। इनके प्रवचन को सुनकर कौन ऐसा मनुष्य है जिस पर वेदों की महत्ता का प्रभाव न पड़ा हो लोगों की उत्कट इच्छा है कि आप एक मास रावलपिंडी समाज में कथा करें परन्तु आपका उत्तर यह था कि "पानी चलता भला साधु रमता भला"। अब आप लाल कुरती समाज में कथा करने गए हैं तत्पश्चात एबटाबाद से होते हुए आप कश्मीर जावेंगे। आपने शिक्षित जनता पर वैदिक धर्म की महत्ता का असाधारण प्रभाव डाला है।

पालनेशिया में हिन्दू सभ्यता

(श्री पू० स्वामी ज्ञानानन्द जी परिव्राजक)

पालनेशिया (Polnesia) में आस्ट्रेलिया (Australia) न्यूज़ीलैंड (Neuze land) टापू फिज़ी (Fiji islands) टापू न्यूगिनी (New gini) तथा निकट के टापू सम्मिलित हैं। महोदय क्रेग हिल (Craig hill) ने अपनी पुस्तक भारत के आदमी (Men of India) में इस प्रकार लिखा है "यदि पालनेशिया के खोजक इतिहासक ने यह पता लगाना हो कि भारत की सभ्यता का पश्चिमी टापुओं में उन्नति करने का क्या प्रमाण है तो यह ज्ञात होगा कि बौद्ध धर्म सातवीं शताब्दि में इन्डो चाईना (Indo China) में फैल रहा था मगर भारत के बुद्धमत के प्रचार के प्रत्यक्ष प्रमाण यहां नहीं मिलते जैसा कि वैदिक धर्म के मिलते हैं। न्यूज़ीलैंड की मोरवी (Morvi) जाति के लोग अपने धर्म ग्रन्थों को को तीन टोकरियों के नाम से सम्बोधित करते हैं और कहते हैं कि परमात्मा ने मोरवी जाति के दूतको दी हैं। यह विचार बुद्ध धर्म की त्रिपिटक से मिलता है परन्तु ब्राह्मख धर्म तथा वैदिक धर्म के चिह्न तो इण्डोचीन में बुद्धमत के फैलने से पूर्व के मिलते हैं इण्डोचीन और इनसोलेंडिया (Insolandia) में ब्राह्मणधर्म का मूल सिद्धान्त शिव पूजा था। पालनेशिया की प्राचीन काल की पूजा विधिमें इस प्रकार की पूजा के प्रमाण मिलते हैं और सब रिवाज शिवमत से मिलते हैं। ब्राह्मणकथाओं और गाथाओं के अतिरिक्त और किसी प्रकार के चिन्ह नहीं मिलते अस्तु जिस सभ्यता का इण्डोनेशिया पर प्रभाव पड़ाऔर शनै२ पालनेशिया तक फैल गई इसने माक्रोनेशिया और मेलोनेशिया (Micronesia & Melonesia) जो पालनेशिया और इण्डोचीन के मध्य भाग के नाम हैं वहां भी अपना प्रभाव डाला। अस्तु पालनेशिया की सभ्यता का इतिहास भारत की सभ्यता के इतिहास का परिशिष्ट है। पालनेशिया के पृथक् इतने दूर टापुओं में जो कि विशाल भारत के एक प्रकार से अंग हैं पुराने भारत की सभ्यता, संस्कृति ज्ञान तथा रहन सहन अब तक चालू हैं जो कि उपनिवेशों में लोप हो गए हैं। इसी प्रकार पादरी बरटन साहब (Rev. Burton) अपनी पुस्तक "वर्तमान समय का फिज़ी (Fiji of today) में लिखते हैं कि "फिज़ी की भाषा के सम्बन्ध में ऐसे चिन्ह मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक

वैदिक विवाह

श्री पंडित हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार

[गतांक से आगे]

उत्तम मार्ग से धन कमाना

गृहस्थ के लिये धन की आवश्यकता विवाद का विषय नहीं है। गृहस्थ ने अपने गृह का संचालन ही नहीं करना, अपितु अन्य तीन आश्रम वालों का भी पालन उसी ने करना है। मनु लिखते हैं "यस्मात् त्रयोप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम् । गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही" (मनु ७८) अर्थात् तीनों अन्य आश्रम वालों को प्रतिदिन दान व अन्न से गृहस्थ ही धारण करता है, इससे गृहस्थाश्रम ही सबसे ज्येष्ठ आश्रम है।

इतना ही नहीं; मनु तो लिखते हैं कि चक्की चलाने में, तथा चूल्हा जलाने आदि में जो गृहस्थ से प्रतिदिन हिंसा हो रही है उसके प्रतीकार के लिए उसे प्रतिदिन ५ महायज्ञ करने चाहियें। इन यज्ञों के करने के लिए भी धन की आवश्यकता स्पष्ट ही है। परन्तु भय यह है कि कहीं धन के कमाने मे लोभ के वश हो वह असत्य से धन के परिग्रह में न लग जाय। धन के कमाने में असत्य का प्रयोग व्यापक रूप धारण किये हुए है और इसी कारण उसका सद्व्यय भी नहीं हो रहा। इसीलिए अथर्व १४.१.३१ में पति-पत्नी को उपदेश है कि "युवं भगं संभरतं समृद्धम्"–तुम प्रचुर ऐश्वर्य को प्राप्त करो, परन्तु "ऋतं वदन्तौ ऋतोद्येषु" सत्य व्यवहारों में सत्य को बोलते हुए ही। वेद ने "अग्ने नय सुपथा राये" इन शब्दों में कहा है कि हे परमेश, आप हमें उत्तम मार्ग से ऐश्वर्य को प्राप्त कराइए।

कल्पना तो करिये कि यदि सभी वेद के इस उपदेश को मान्य करते हुए आचरण करने लगें तो सचमुच ही लोक कैसा धन्य हो जाय! कैसा स्वर्गधाम बन जाय!

कन्या भी ब्रह्मचारिणी हो

ऊपर पुरुष के ब्रह्मचर्य का पर्याप्त संकेत हो चुका है। पुरुष की तरह कन्या ने भी ब्रह्मचर्य का पालन कर गृहस्थ में प्रवेश की योग्यता प्राप्त करनी है। "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विदन्ते पतिम्" ब्रह्मचर्य का पालन करके ही कन्या युवा पति को प्राप्त करती है। "इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्" आदि ऋषियों के वाक्यों से यह स्पष्ट है कि कन्या ने भी वेदों का अध्ययन करना है।

वेदाध्ययन के साथ उसने अपने शरीर को भी सबल बनाना है। वेद में पुष्पवत् सुकुमारता कन्या का आदर्श नहीं अपितु शिलावत् कठोरता ही उसके भी शरीर का अलङ्कार है। विवाह-संस्कार में कन्या का भाई बहिन के चरण को शिला पर रखता हुआ इसी बात का संकेत कर रहा है। बीज की उत्तमता के साथ भूमि की उत्तमता भी फल की श्रेष्ठता के लिए आवश्यक है। सबल शरीर वाली माता ही उत्तम सबल सन्तान को उत्पन्न कर सकेगी। ऐसा होने पर ही उसे भी प्रसवपीड़ा व प्रसवोत्तर कष्टों से रक्षा मिल सकेगी। ...यह प्रत्यक्ष दीखता है कि चक्की आदि चलाने के कामों के कारण सबल स्वस्थ शरीर वाली स्त्रियां नाममात्र पीड़ा से सन्तान पैदा करती हैं और उन्हें सभ्यंमन्य आधुनिक स्त्रियों की तरह बहुत आराम नहीं करना पड़ता।

स्त्री-शिक्षा में विशेष ध्येय बातें

संसार में पुरुष और स्त्री का कार्य स्वभावतः भिन्न भिन्न है। पुरुष ने गृह से बाहर दूर दूर जाकर धनार्जन करना है तो स्त्री ने घर में रहते हुए उस धन को गृह की आवश्यक सामग्री लेने के लिए व्यय करना है, घर की सारी सामग्री की रक्षा करनी है। इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि वह भोजन बनाने आदि गृहकार्यों में भी निपुण हो। जिस घर में यह कार्य नौकरों के सुपुर्द होता है वहां भोजन में जहां मातृस्नेह का अंश बच्चों को उपलब्ध नहीं होता वहां अधिक व्यय होकर चीज़ निकम्मी मिलती है, घर की चीज़ें अस्तव्यस्त पड़ी रहती हैं। एक आने के स्थान में दो आने व्यय होते होते हैं और इस प्रकार घर का नुकसान होता है। मनु ने पत्नी के कर्तव्यों में लिखा है कि "सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया। सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया" (५-१५०) वह सदैव प्रसन्न रहने के स्वभाव वाली हो, गृह कार्यों में निपुण हो। सब सामान सुसंस्कृत=शुद्ध=साफ रखे तथा फ़जूलखर्ची न होने दे।

(क्रमशः)

चकित करने वाली बात यह है कि ऐसे शब्दों की विस्तृत सूची तैयार की जा सकती है जो केवल व्याकरणों के सिद्धान्तों के परिवर्तन से संस्कृत भाषा से निकले प्रतीत होते हैं। शिवलिंग की पूजा, सूर्य पूजा तथा सूर्य की ओर मुख करके पूजा करना "मैक्सिको" (पाताल देश) और दक्षिण अमरीका की भांति यहां भी अब तक चालू हैं जब ब्राह्मणों ने समुद्र पार यात्रा अधर्म बना लिया और आना जाना बंद हो गया तो यह जातियें होगईं। पुराने खंडहरों से अब भी भारत की महत्ता के चिह्न इस कदर दूर स्थानों में पाए जाते हैं फिज़ी में जो गुरुकुल वहां की आर्य प्रतिनिधि सभा ने बनाया है और गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक प० अमींचंद वहां मुख्याधिष्ठाता का काम करते हैं फिजी के लोग वहां अपने लड़के पढ़ने के लिए भेज रहे हैं और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'विश्वबन्धु' का अनुचित आक्र

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के सं में चलने वाले दैनिक विश्वबन्धु ने पं प्रतिष्ठित हिन्दी कवियों पर तारीख ३ व १ जुलाई के पत्र में जो अनुचित आ किया है वह अनुत्तरदायित्व पूर्ण कार्य इस प्रकार के आक्रमणों से हिन्दी के से में पारस्परिक वैमनस्य बढ़ता है। वास्त बात यह है कि रेडियो विभाग से विश्व के सम्पादक श्री माधव व नलिन जी व्यक्तिगत कारणों से कुछ समय से क्ष हैं और अपने साथी बन्धुओं पर, जो इशारों पर नाचने को तैयार नहीं, अपना उतार रहे हैं। हिन्दी के क्षेत्र में पञ्जाब शिथिलता इन दिनों दिखाई दे रही है उ बहुत कुछ श्रेय हम माधव जी जैसे महानु को दे सकते हैं जो हिन्दी के ठेकेदार चाहते हैं। हम इस विषय पर अगले अं सविस्तार प्रकाश डालेंगे। विश्वबन्धु संरक्षक श्री त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश जी से प्रार्थना है कि वे उन शब्दों को पढ़ें विश्वबन्धु के सम्पादकों ने लिखे हैं और पूछें कि एक सार्वजनिक पत्र का व्यक्ति दृष्टि से उपयोग करने का क्या अधिकार

—संवाददा

प्रवेश (गुरुकुल भटिण्डा)

गत तीन वर्ष से इस कुल में पञ्जाब हिन्दी रत्न, भूषण तथा प्रभाकर की परीक्षा का प्रबन्ध है। परिणाम शत प्रति शत रहता चतुर निर्धन छात्रों की धन से भी सहायता जाती है। हरिजन छात्र निःशुल्क लिये जाते प्रवेश खुला है। प्रवेश की स्वीकृति प्रार्थना द्वारा प्राप्त करनी आपश्यक है।

निवेदक—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल भटि राज्य पटियाला।

आवश्यकता

आर्य समाज माडल टाऊन लाहौर के लि एक सुयोग्य, विद्वान, शास्त्रवेत्ता, वक्ता, क काण्डी. आर्य समाज से अगाध प्रेम रखने पुरोहित की आवश्यकता है। वेतन योग्यत सार ३०) तक हो जायगी। प्रार्थना पत्र मंत्री के नाम आनी चाहिए।

भवदीय—चांदमल खन्ना मन्त्री आर्य स माडल टाउन लाहौर।

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 30

ालय को कैसे अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है

ः श्री विश्वनाथ शास्त्री, एम. ए. पुस्तकाध्यक्ष, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर]

ः भारत में तो अभी पुस्तकालयों की
बड़ी न्यून है और जो पुस्तकालय है वे
-छोटे हैं। प्रायः पुस्तकालयों में पाँच
हज़ार ही पुस्तकें हैं। देश-भर में पांच
पुस्तकालय होंगे जिन में पुस्तकों की
क लक्ष के लगभग पहुँचती है। परन्तु
अन्य देशों पुस्तकालय उन्नति के शिखर
विशेष रूप से अमरीका के पुस्तकालय तो
नत्त हो चुके हैं। वे ही पुस्तकालयों की
ों को सुलझाने में अधिक क्रियाशील

कालय की आत्मा पुस्तकाध्यक्ष है।
य की बहुत कुछ उपयोगिता पुस्तकाध्यक्ष
ं है। यदि पुस्तकाध्यक्ष यही समझ ले
ने नियमानुसार छः वा सात घंटे काम
और किसी बात के लिए वह बाधित
ी वह जनता के लिए कुछ अधिक उप-
यां न कर सकेगा। पुस्तकाध्यक्ष यदि
अपने जीवन का उद्देश्य बना ले तो वह
कार्य कर सकता है। पुस्तकाध्यक्ष जहां
और बहुश्रुत होना चाहिए वहां उसको
ी भी होना चाहिए। उसको प्रसन्न वदन
नाता से व्यवहार करना चाहिए। उसको
कि जिज्ञासु पाठकों के आशय को प्रथम
से समझने का प्रयत्न करे और फिर वह
ार की सहायता कर सकता है, करे। मान
एक पाठक किसी विषय पर जानकारी
रना चाहता है तो पुस्तकाध्यक्ष को चाहिए
सको उस विषय पर पुस्तकें वा निर्देश-
पत्रिकाएँ वा विश्वकोष वा वर्ष पुस्तक वा
री अथवा जो कुछ भी उस विषय पर पुस्त-
ों उपस्थित है अच्छी प्रकार से बतावे यदि
ध्यक्ष अपने संग्रह को जनता के हाथों में न
जनता स्वयं उससे इतना लाभ नहीं उठा
कर्कश स्वभाव का पुस्तकाध्यक्ष सफल
सकता। अन्य देशों में पुस्तकालयों में महि-
पर्याप्त संख्या में काम करती हैं। और
लोग कह देते हैं कि यह काम तो स्त्रियों
इसका कारण यह है कि इस कार्य में
की अधिक आवश्यकता है। महिलाओं में
स्वभावतः होता है। कई महिलाओं ने तो

श्रीमती मज (Mudge) ने निर्देश-ग्रन्थों पर बड़ी उत्तम पुस्तक लिखी है। इसी भान्ति श्रीमती हिचलर(Hitchler) ने पुस्तकों के सूचीकरण (Cataloguing) पर बड़ी उत्तम पुस्तक लिखी है। अस्तु।

एक उत्साही पुस्तकाध्यक्ष भिन्न-भिन्न उपायों से अपने पुस्तकालय को अधिक से अधिक उपयोगी बना सकता है। पुस्तकालय को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए पुस्तकों का प्रदर्शन भी एक आवश्यक साधन है। एक तो साधारण नियम होना चाहिए कि पुस्तकालय में जो नई नई पुस्तकें आएँ उनको किसी उचित स्थान पर कुछ समय के लिए रखना चाहिए। कई पुस्तकालय महीना-भर नई पुस्तकों का प्रदर्शन करते हैं। अथवा पुस्तकों के चढ़े कागज के आवरणों (Dust Jackets) का प्रदर्शन किया जा सकता है। इन पर पुस्तक के विषय में २०-२५ शब्दों में विवरण दे देना भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। समय-समय पर सामयिक विषयों पर उपयोगी ग्रन्थों का प्रदर्शन भी करना चाहिए। विजया दशमी के अवसर पर रामायण के उत्तमोत्तम संस्करणों और भगवान राम के जीवन पर लिखी पुस्तकों का प्रदर्शन किया जा सकता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर भगवान् कृष्ण के जीवन पर लिखी पुस्तकों तथा गीता के विविध भाष्यों का प्रदर्शन किया जा सकता है। स्वतन्त्रता दिवस पर पुस्तकालय भारत की स्वाधीनता के संबन्ध में लिखी गई पुस्तकों का प्रदर्शन कर सकते हैं। पिछले दिनों जब महात्मा गांधी जी ने व्रत रखा था तब पुस्तकालय महात्मा जी की लिखी हुई और उनके संबंध में लिखी गई पुस्तकों का प्रदर्शन कर सकते थे। अमरीका और जापान के युद्ध प्रारम्भ होने पर वे रूज़वेल्ट तथा तोजो और अमरीका तथा जापान की रीति नीति के संबंध में लिखी गई पुस्तकों का प्रदर्शन कर कर सकते थे। पिछले दिनों जब अबेसीनिया और इटली का युद्ध प्रारम्भ हुआ था तो अमरीका के पुस्तकालयों ने मुसोलिनी की व्यंग्य मूर्तियां बना कर रखी थीं। अस्तु प्रदर्शन दो प्रकार से होसकता है। एक तो उस विषय की पुस्तकों को किसी अलमारी में किसी आकर्षक स्थान पर रखा जासकता है। अथवा उस विषय की पुस्तकों की एक सूची पुस्तक के साथ २०-२५ शब्दों में उस पुस्तक का विवरण देना आवश्यक है।

अमरीका के पुस्तकालय अपनी संस्थाओं को प्रौढ़ शिक्षा (Adult education) का साधन बनाते हैं। विद्यार्थी स्कूलों और कालेजों में तो निर्धारित पुस्तकों को ही पढ़ते हैं। परन्तु क्रियाशील पुस्तकाध्यक्ष उनको पुस्तकालय में इस प्रकार से दीक्षित करता है कि उनकी बुद्धि तथा रुचि के अनुकूल पढ़ने के लिए उन्हें पुस्तकें देता है और उनकी वास्तविक शिक्षा में उन्हें सहायता देता है।

अमरीका तथा योरप में पुस्तकालयों की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए केन्द्रीय पुस्तकालयों के साथ एक व्याख्यान भवन (Lecture Hall) होता है। इसमें समय-समय पर व्याख्यानों का प्रबन्ध किया जाता है। जिस विषय पर व्याख्यान होना होता है उस विषय पर पुस्तकालय में उपस्थित पुस्तकों की सूची बाहर लगा दी जाती है ताकि जनता में पुस्तकें पढ़ने की अधिक रुचि हो।

पुस्तकालय का शरीर पुस्तकें हैं। यदि किसी पुस्तकालय में पुरानी गंदी, कीड़ों की खाई हुई पुस्तकें हैं तो वह जनता के लिए कभी आकर्षक नहीं बन सकता। आदर्श पुस्तकालय में पुस्तकों के नवीन संस्करण होने चाहिए। १९४३ में किसी पुस्तकालय में १९३३ की डायरैक्टरी पड़ी हो तो वह शोभा के स्थान पर अपयश का कारण होगी। पुस्तकों पर सुन्दर जिल्दें होनी चाहिए। पुस्तक इस रूप में पाठकों के सामने उपस्थित करनी चाहिए कि पाठकों को पढ़ने की स्वयमेव रुचि उत्पन्न हो। इस सम्बन्ध में एक और बात ध्यान देने योग्य है कि पुस्तकाध्यक्ष को पुस्तकों का दान बड़े ध्यान से स्वीकार करना चाहिए। उसको पहले यह देख लेना चाहिए कि यह पुस्तकें कुछ उपयोगी भी हैं वा रद्दी का ढेर ही हैं और पुस्तकालय का स्थान ही रोकने के लिए हैं। यदि अच्छी भी हैं तो क्या पुस्तकालय की नीति के विरुद्ध तो नहीं जातीं यथा एक सार्वजनिक पुस्तकालय में सब प्रकार के उपन्यास शोभा का कारण हैं परन्तु एक ऐसा पुस्तकालय जिसका उद्देश्य लोगों को सदाचार की ओर ले जाना है और वह अपना धन व्यय करके कोई गन्दा उपन्यास नहीं खरीदना चाहता तो उसकी ऐसी गन्दी पुस्तकें दान में भी स्वीकार नहीं करनी चाहिए। पुस्तकाध्यक्ष को दानी महोदयों की कोई शर्त तो यथा संभव कदापि स्वीकार नहीं करनी चाहिए। कई बार दानी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक

(पृष्ठ ३ का शेष)

नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। अभी देखने और प्रतीक्षा करने का ही समय है। —भीमसेन

गुरुकुल कांगड़ी के नवीन आचार्य—

आर्य सज्जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति गुरुकुल कांगड़ी के नवीन आचार्य नियुक्त हुए हैं। पूज्य पण्डित जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् तथा आर्य समाज के सुप्रसिद्ध मिशनरी हैं। आर्य जगत् आपकी योग्यता से परिचित है। आप उच्च नैतिकता और दृढ़ चरित्र के महानुभाव हैं। अभी तक आप दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य थे। आपकी एक बड़ी विशेषता यह है कि आर्य समाज के सभी दलों के लोग आपसे प्रेम करते हैं तथा निष्काम सेवा आपके जीवन का ध्येय है। आप एक अगस्त से गुरुकुल का कार्यभार संभाल रहे हैं। आपकी लाहौर से विदाई के उपलक्ष में लाहौर की विभिन्न संस्थाएं तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति पार्टियां दे रहे है। यद्यपि आपके लाहौर से जाने से लाहौर निवासी तथा पंजाब भर के आर्य सज्जन बड़ा अभाव अनुभव करेंगे, फिर भी आप एक बड़ा उत्तरदायित्व सँभाल रहे हैं, इससे दिल को सन्तोष मिलता है। इस अवसर पर आर्य परिवार की तरफ से हम श्री पू० पण्डित जी को बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि वे गुरुकुल की सेवा के साथ साथ पंजाब के निवासियों का भी ध्यान रखेंगे और कभी कभी अपना अमूल्य समय निकाल कर अमृतवर्षा से पिपासुओं को शान्त करते रहेंगे। हमें विश्वास है कि आपके संरक्षण में गुरुकुल दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करेगा।

—सत्यभूषण 'योगी'

शोक समाचार

—कसौली के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री पं० गोविन्दराम जी का देहावसान हो गया है। आप आर्य समाज के उद्यमी कार्यकर्ता थे और गुरुकुल कांगड़ी के प्रारम्भिक दिनों में वहां काम करते थे। आपने अपनी वसीयत में १५ हजार रु० गुरुकुल को दान दिया है परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति दे।

रखा जाय इत्यादि।

पुस्तकों का अधिक लाभ तब उठाया जासकता है यदि पाठकों को पुस्तकों तक पहुँचने और उन को बिना रोक टोक के अवलोकन की आज्ञा दे दी जाय। इस प्रकार का open access system अमरीका में पर्याप्त प्रचलित है। इससे पुस्तकों के चुराए जाने का काफी भय होता है और पुस्तकों की रक्षा के लिए काफी प्रबन्ध करना पड़ता है तथापि सभ्य संसार ने इस प्रणाली को ही सर्वोत्तम माना है।

पुस्तकालय को उपयोगी बनाने के लिए यह परमावश्यक है कि नवीन से नवीन पुस्तकें पर्याप्त संख्या में प्रति वर्ष आती रहें अथवा पुस्तकालय कभी लोक-प्रिय न हो सकेगा।

पशु पक्षियों की बोली

ले०—श्री विश्वनाथ जी आर्योपदेशक जड़ां वाला

६ आषाढ़ के आर्यपत्र में श्री पं० विष्णुमित्र जी का लेख मुद्रित हुआ है, सारे लेख को पढ़कर मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि पूज्य पं० जी ने योरुप से अज्ञात विद्या के प्रकाश की धुन में श्रुत कहानियों के विवेचन में अपनी बुद्धि पर तनिक भी भी बल नहीं दिया। प्रत्युत इसी धुन में बहम को आप ने विद्या का स्थान देने का यत्न किया है जो आर्य समाज के उद्देश्य से सर्वथा विपरीत है। हम यह नहीं कहते कि योरुप ने सब विद्याओं को जान लिया है परन्तु आज कल प्रत्येक विद्या का यथार्थ विवेचन वहीं पर हो रहा है इस से इनकार नहीं हो सकता। पशुपक्षियों के सम्बन्ध में अनेक अनुभव किये गये हैं। लेखक महोदय की कहानियों में यदि कुछ भी सार होता तो योरुप में भी इसके सम्बन्ध में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते परन्तु यह कहानियां तो कोरा बहम है न कि कोई ज्ञान।

स्मरण रहे कि वाणी दो प्रकार की होती है स्वाभाविक और कृत्रिम सांकेतिक। काम क्रोध शोकभयादि के प्रकाश में स्वाभाविक वाणी का प्रयोग मनुष्य पशु पक्षी आदि सब जन्तुओं में होता है परन्तु सांकेतिक वाणी केवल मनुष्य ही में पाई जाती है तोता आदि पक्षी सीखने पर यद्यपि मनुष्य की वाणी बोलते हैं परन्तु यह केवल ध्वनि की नकल होती है। शब्दार्थ का उन्हें ज्ञान नहीं होता इस अवस्था में पशु पक्षियों की बोली में किसी मानव घटना का अन्वेषण करना एक बहम ही है।

(१) पहली कहानी पर निम्न लिखित प्रश्न हो सकते हैं। (क) मुरदे के पेट में रत्नों को बताने वाला पक्षी क्या इस घटना को देखता रहा था और हर समय पर मुरदे के साथ रहा था। प्रायः यह देखा गया है कि पशु पक्षी मानव घटनाओं की ओर सिवाय अपने विशेष सम्बन्ध के ध्यान ही नहीं देते। (ख) "यदि कोई सुनने वाला हो तो इस नदी में एक मुर्दा बहा जा रहा है उसके पेट में ४ रत्न हैं" क्या इस सांकेतिक भाषा को जन्तुओं की स्वाभाविक भाषा में वर्णन किया जा सकता? (ग) जब लड़की ने यह भाषा समझ ली तो मुरदा चीरने की छुरी घर से क्यों न लेली (घ) क्या मनुष्य अपने दांतों से मुरदा चीर सकता है और इस अवस्था में मुरदे की दुर्गन्ध को सहन कर सकता है (ङ) बुद्धिमत्ता तो यह थी कि अपने पति को साथ ले जाती। वास्तव में यह एक मनोरंजक कृत्रिम कहानी है जिस को पं० जी ने सच्ची घटना समझ लिया।

(२) दूसरी कहानी भी ऐसी है। भला सोचो

स्त्री का कैसे पता लग गया। और य लिया कि यह इस मनुष्य की माता है बात यह है कि बहमी बातों के मानने भी विशेष घटना का सम्बन्ध किस बहम के साथ जोड दिया करते। बादें मोर ऐसे दोहे फलित ज्योतिषियों और बहमी बातों के मानने वालों ने जिसको पं० जी वेद प्रमाण समझ रहे

(३) आर्य विद्वान् जटायु हनु मनुष्य सिद्ध कर रहे हैं परन्तु पं० जी में वह पक्षी ही था। शोक!

(४) वाह! पं० जी! उल्लू आदि कन्याओं के विवाह और दहेज़ की करते हैं क्या बच्चों वाली बात है। क कल्पना को सच्ची घटना मान रहे हैं।

(५) इसके पश्चात् पं० जी स्पष्ट ही से लिये जाने वाले शकुन को स्वीकार क एक विद्या का नाम दिया है परन्तु शकु है विद्या नहीं है और फलित ज्योतिष है। महर्षि दयानन्द और आर्य विद्वानों बल पूर्वक खंडन किया है।

(६) योग शास्त्र से प्रमाणित "ज्ञानम्" का अर्थ प्राणियों का स्वाभाविक उनके हृदगत शोकादि भावों का ज्ञान वाल्मीकि जी को क्रौञ्च पक्षी के करुणा नकि इसका अर्थ मनुष्यों जैसी सांकेतिक ज्ञान है।

(६) अन्त में पं० जी ने पशु भाषा के एक सुगम उपाय बतलाया है कि पहि मास के जूठे पानी से यदि किसी बालक को गुरला दिया जावे तो वह की बोली को समझने लग जायेगा। पं० जी से निवेदन करूंगा कि यह कठिन नहीं इसे स्वयमेव कर देख मेरे यदि आप यह थोड़ा परिश्रम कर दि १०–१५ वर्ष में ऐसे दो चार बच्चे संसार ले आवे तो लाखों रुपये की आय हो नोबल प्राइज़ भी मिल सकता है। यह जाने पर स्यात् यह भी सिद्ध होजावे कि के एक वर्ष के जूठे पानी से इंगलश भाष हो जाता है। ऐसे ही संस्कृतादि भाषा ऐसा ही अनुभव होने से किसी पाठशाला पना की आवश्कता न रहेगी केवल बालक को गुरला देने ही से वह विद्वान् करेगा और संसार पं० जी का अतिकृ धन्य है यह एक नया अन्वेषण!

पृथिवी के भीतर की वस्तुओं का जो लिखा गया है उसका इस विषय न होने से कुछ नहीं लिखा गया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 30

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N

श्री चमूपति साहित्य विभाग के
प्रकाशन
किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के
याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।
ता २॥) Immortal Sayings ofDayanand ।)
ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला ।)
याय संग्रह ॥) वैदिक धर्म की जय ॥)
स्वर्ग ॥) यास्क युग ॥)
।=) सभा इतिहास २)
यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand१।)
यबिन्दु ।–) त्रिदेव निर्णय ॥)
निरुक्त का मूल वेद में ।–)
ndu America५) Light of Truth ३)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक
शारीरिक उन्नति
श्री पं० ठाकुरदत्त ज... धारा कृत
नवीन उर्दू पुस्तक अभी... त हुई है।
जिसमें हर प्रक... या आसनों
द्वारा शरीर को... बड़ी उत्तम
रीत से पेश क...
श्री ... विभाग
...वन, लाहौर।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

वर्ष २४, अंक ३२] ३ श्रावण २००० विक्रमी—१८ जुलाई १९४३ [वार्षिक मूल्य ४)

अध्यात्म सुधा

[३१]

ऋग्वेदीय दयानन्दोपनिषद्

ऋग्वेदः मण्डल १ सू० १ ॥

कर्तव्याकर्तव्यनिरूपण

...द्यदध्यापको राजा च भ्रुकुटीं कृत्वा विद्या-
...ऽमात्यप्रजाजनाँश्च प्रेरयेत्तर्हि ते सुसभ्या
...सो धार्मिकाश्च जायन्ते। ये मरणधर्म्येष्वम-
...र्माणं स्वप्रकाशरूपं परमात्मानमुपास्य
...न् मनुष्यान् प्राज्ञान् विदुषो जनयन्ति त
...सर्वदा सत्कर्त्तव्याः सुखिनश्च भवन्ति ॥१॥

जो अध्यापक और राजा भौंहें टेढ़ी कर के
...र्ती मन्त्री और प्रजाजनों को प्रेरणा करे तो उत्तम
...विद्वान् और धार्मिक होते हैं। जो मरणधर्मवालों
...णधर्मरहित अपने प्रकाशस्वरूप परमात्मा की
...ना कर के सब मनुष्यों को बुद्धिमान् विद्वान
...हैं वे ही सब काल में सत्कार करने योग्य और
होते हैं ॥ १ ॥

...अध्यापक राजन् वा त्वं श्रेष्ठाञ्छ्रोत्रियान-
...न् वा सुमत्या सत्याचरणेन संयोज्य
...तानि कर्माणि जोषय सूर्य्यवद्विद्यान्याय-
...ं ... ॥ २ ॥

हे अध्यापक वा राजन्! आप श्रेष्ठ श्रोतृजन वा मन्त्रियों को उत्तम मति और सत्य आचरण से संयुक्त करके संगत कर्मों का सेवन कराओ और सूर्य्य के सदृश विद्या न्याय का प्रकाश निरन्तर करो ॥ २ ॥

हे मनुष्या यूयं, सर्वैः सह सखायो भूत्वाश्वा रथमिव सखीन्त्सत्कर्मसु सद्यः प्रवर्त्तयत। श्रेष्ठमार्गं इवाऽस्मान्त्सरले व्यवहारे गमय। येऽत्र जगति सूर्य्यवच्छुभगुणान्विताः सर्वात्मनः प्रकाश्य सुखं जनयेयुस्तेऽस्माभिः सत्कर्तव्याः स्युः ॥ ३ ॥

हे मनुष्यो आप लोग सब लोगों के साथ मित्र होकर जैसे घोड़े रथ को ले चलते हैं वैसे मित्रों को उत्तम कर्म्मों में प्रवृत्त करो। और श्रेष्ठमार्ग के सदृश हम लोगों को सरल मर्य्यादा में पहुंचाइये। जो लोग इस संसार में सूर्य्य के सदृश उत्तम गुणों से युक्त हुए सब के आत्माओं को प्रकाशित कर के सुख को उत्पन्न करें वे हम लोगों से सत्कार करने योग्य होवें ॥३॥

त एव विद्वांसः सन्ति ये श्रेष्ठस्य विदुषोऽनादरं न कुर्वन्ति त एवाध्यापकोपदेशकाः श्रेयांसो येऽस्माकं दोषान् दूरीकृत्य पवित्रयन्ति त एवाऽस्माभिः सत्कर्त्तव्यास्सन्ति ॥ ४ ॥

वे ही विद्वान् जन हैं कि जो श्रेष्ठ विद्वान् पुरुष का अनादर नहीं करते हैं और वे ही अध्यापक और उपदेशक कल्याणकारी होते हैं जो हम लोगों के दोषों को दूर कर के पवित्र करते हैं वे ही हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं ॥ ४ ॥

स एवाऽध्यापको राजा वा श्रेष्ठोऽस्ति यः सुशिक्षयाऽस्मानुषा इव रचेद्दुष्टाचारात् पृथक्कृत्य श्रेष्ठाचारं कारयेत् ॥ ५ ॥

वह ही अध्यापक वा राजा श्रेष्ठ है कि जो उत्तम शिक्षा से हम लोगों को प्रातःकाल के सदृश रक्षा करे दुष्ट आचरण से अलग करके श्रेष्ठ आचरण करावे ॥ ५ ॥

स एवोत्तमे कुले जायते यस्योत्तमानि कर्माणि स्युः। यथा विद्युदाद्यग्निर्निस्सीमेऽन्तरिक्षे विराजते तथैव योऽनन्तं जगदीश्वरमन्तर्ध्यात्वा सर्वज्ञानवाञ्छुद्धियुक्तो भूत्वा सर्वाण्युत्तमानि प्रशंस्यानि कर्माणि कर्तुं प्रभवति ॥७॥

वही ऊत्तम कुल में उत्पन्न होता है कि जिस के उत्तम कर्म हों और जैसे बिजुली आदि अग्नि सीमारहित अन्तरिक्ष में शोभित होता है वैसे ही जो अनन्तजगदीश्वर का ध्यान कर के सब ज्ञान वाला शुद्धियुक्त होकर सम्पूर्ण उत्तमप्रशंसा करने योग्य कर्मों के करने को समर्थ होता है ॥ ७ ॥

—भीमसेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

वैदिक स्वाध्याय—

मैं मट्टी के घर में न रहूं

[श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, दयानन्द उपदेशक विद्यालय]

[२२]

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम् ।

मृडा सुक्षत्र मृडय ७।८९।१

अर्थ—हे (राजन्) हमारे राजा (वरुण) हमें दुर्गति से बचाने वाले और वरण करने योग्य परमात्मन् (अहं) मैं (मृन्मयं) मट्टी से बने हुए (गृहं) घर में (मा-उ) न (सु गमम्) जाऊँ (मृड) सुखी कीजिये (सुक्षत्र) हे उत्तम रीति से विपत्ति से बचाने वाले शक्तिशाली भगवन् (मृडय) मुझे सुखी कीजिये ।

गत सूक्त के अन्तिम मन्त्र में भक्त ने भगवान् से प्रार्थना की थी कि हे प्रभो मुझे सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त कीजिये और भांति-भांति के कल्याणों द्वारा मेरी रक्षा कीजिये । प्रस्तुत सूक्त में इसी भाव को प्रकारान्तर से और अधिक विस्तृत रूप में प्रकट किया गया है और प्रसङ्ग से आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी कई नई बातों का उपदेश कर दिया गया है । ऊपर के सूक्तों में साधक प्रभु की महिमा का अनुभव कर चुका है और उनके विराट् रूप की झांकी ले चुका है । वह देख चुका है कि प्रभु का पल्ला पकड़ने से मनुष्य का आत्मा कितना ऊँचा उठ सकता है और कैसी आनन्द और मङ्गलमय अवस्था में पहुंच जाता है । इस लिये वह प्रस्तुत सूक्त के मन्त्रों में बार-बार "मुझे सुखी कीजिये, मुझे सुखी कीजिए" की रट लगा कर भगवान् से उसी परमानन्दमयी अवस्था में रखने की प्रार्थना करता है ।

भगवान का साक्षात्कार कर लेने पर जो आनन्द अनुभव होता है उसकी तुलना में प्रकृति के बने इस संसार से प्राप्त होने वाले सब सुख मिट्टी के सुख हैं । इसीलिए इस प्रथम मन्त्र में भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि हे प्रभो ! मैं मिट्टी के घर में न रहूँ । इस प्राकृतिक जगत् को ही मिट्टी का घर मन्त्र में कहा गया है । यह जगत् और इस के विषय मट्टी के—जड़ प्रकृति के—बने हुए हैं । जब यह जगत ही मट्टी का बना हुआ है तो इससे मिलने वाले सुख भी तो मट्टी के ही होंगे—निकृष्ट श्रेणी के ही होंगे । जगत् से मिलने वाले सुख मट्टी के सुख—निकृष्ट श्रेणी के सुख-इसलिये हैं कि वे परिणाम दुःखदायी होता होगा । उनसे सच्चा संतोष, सच्ची तृप्ति, सच्ची शान्ति और सच्चा आनन्द, जो सदा स्थिर रहें, नहीं प्राप्त होते । हमें सच्चा सन्तोष, सच्ची तृप्ति, सच्ची शान्ति और अच्चा आनन्द भगवान् के साक्षात्कार से ही प्राप्त होते हैं । भगवान के साक्षात्कार से हमें जो आनन्द प्राप्त होता है वह चिरस्थायी होता है और उसका परिणाम दुःखदायी नहीं होता । इसलिये वह आनन्द संसार के मट्टी के सुखों की तुलना में मानों सुवर्ण का सुख है । भक्त अपने प्रभु से इसी सुनहरे, इसी चिरस्थायी और परम पवित्र ब्रह्मानन्द सुखकी प्राथना कर रहा है । वह कह रहा है हे महाराज ! मुझे (संसाररूप) मट्टी के घर में न जाने दीजिये, मुझे अपने साक्षात्कार रूप सुवर्ण के घर का स्वामी बनाइये ।

मन्त्र के "मैं मट्टी के घरमें न जाऊँ" इस वाक्य से संसारको त्यागने की जो भावना सूचित होती है उस से यह परिणाम नहीं निकालना चाहिये कि हमें इस संसार की सर्वथा ही उपेक्षा कर देनी चाहिये और इससे सम्बन्ध रखने वाले विद्या विज्ञानों में कोई उन्नति नहीं करनी चाहिये । वेद के इस और ऐसे अन्य उपदेशों का यह अभिप्राय बिल्कुल नहीं हैं । यदि हम संसार की सर्वथा उपेक्षा कर बैठेंगे तो हमारा जीवन भी नहीं रह सकेगा । हमारी भूख की निवृत्ति नहीं हो सकेगी । सरदी, गर्मी और वर्षा से हमारी रक्षा नहीं हो सकेगी । भांति भांति के रोग हमें दबोच लेंगे । हम राज्य स्थापित न कर सकेंगे । स्थापित राज्यों की रक्षा न कर सकेंगे और इसलिए शत्र लोग हमें सदा कष्ट देते रहेंगे । और ऐसी अवस्था में अध्यात्म शास्त्र का अध्ययन भी हमारे लिए असंभव हो जायगा । यदि हम संसार की सर्वथा उपेक्षा कर दें तो हमें ब्रह्मज्ञान भी प्राप्त नहीं हो सकता । जब हम भांति भांति की प्राकृतिक विद्याओं का अध्ययन करते हैं और इनके द्वारा प्रकृति के अद्भुत पदार्थों की सूक्ष्म और बुद्धिमत्ता पूर्ण रचना पर दृष्टिपात करते हैं तभी हमें उनके रचयिता, रक्षक लिए वेद में जहां अध्यात्म शास्त्र का उपदे गया है वहां राजनीति शास्त्र, कृषि शास्त्र, शास्त्र, पदार्थ विज्ञान आदि अनेक प्राकृति सामाजिक विषयों का व्यवहारोपयोगी ज्ञान रूप में उपदिष्ट कर दिया गया है । अतः हमें की सर्वथा उपेक्षा न करके इसके विभिन्न सम्बन्ध रखने वाले विद्या विज्ञानों में भी उन्नति करनी चाहिये और उनसे जो सुख किया जा सके उसे प्राप्त कर लेना चाहि केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिये संसार के विषयों में लिप्त हो कर उन में जायें ।

हमें सदा यह स्मरण रखना चाहिये कि जीवन का लक्ष्य ब्रह्म का साक्षात्कार क संसार के विषय हमारा लक्ष्य नहीं हैं । ये स साध्य नहीं हैं । साध्य तो ब्रह्म साक्षात्कार है हम यह स्मरण रखते हुए सांसारिक विषय सेवन करेंगे तो हम इनमें लिप्त होकर फसेंगे इनसे केवल आवश्यक उपयोग और सहाय लेंगे । तब ये हमारा अनिष्ट न करके हमें श वाले बन जायेंगे । यदि एक मक्खी शहद कटोरे के किनारे पर बैठ कर शहद में चोंच कर भूख मिटाने और शरीर को पुष्ट करने जितना आवश्यक है उतना शहद पेट भर के तो यह विषय-सेवन मक्खी का कोई अनि करता प्रत्युत उसे लाभ पहुंचाता है, जीवन परन्तु यदि वह मक्खी लालच और लोभ में शहद में ही डूबी रहना चाहे और इसलिए पर न बैठ कर शहद में ही कूद पड़े तो वह होकर, लिप्त होकर, शहद में ही फंस जायगी से निकल न सकेगी और मर जायेगी । इ विषय सेवन मक्खी का इष्ट भी कर सकता है अनिष्ट भी । यदि वह तटस्थ वृत्ति से उसका करेगी तो लाभ उठाएगी और यदि उसी में हो जाने की वृत्ति से सेवन करेगी तो उसी कर मर जायेगी । इसी प्रकार यदि हम संस विभिन्न विषयों को केवल साधन समझ कर वृत्ति से उनका सेवन करेंगे तो वे हमारा करेंगे । और यदि हम उन्हीं में तन्मय हो भावना से, उन्हीं को जीवन का लक्ष्य सम उनका सेवन करेंगे तो हम उनमें फंस जायेंगे कष्ट भोगेंगे । संसार अपने आप में न अच्छा बुरा । हम जिस दृष्टि से उसका सेवन करते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 3[illegible]

वैदिक विवाह

श्री पंडित हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार

[गतांक से आगे]

संस्कार

इस सामान्य विचार के अनन्तर यह आवश्यक संस्कार के विभिन्न अंशों को कुछ स्पष्ट कर जाय। वस्तुत: वैदिक सभ्यता में गृहस्थ धर्म वैयक्तिक वस्तु नहीं है। उसका राष्ट्र के हिता-के साथ सीधा सम्बन्ध है। प्रत्येक उत्तम ान राष्ट्र के मन्दिर की एक एक उत्तम ईंट के ान है। इसी से यह कितना आवश्यक हो जाता क राष्ट्र के हित के लिये जहां संक्रामक रोगों से ान्त व्यक्तियों को विवाहित ही न होने दिया जाय ु० ३. २८। वहां स्वस्थ व्यक्ति भी उत्तम सन्तान ज्जन्म देने के पवित्र उद्देश्य से ही इस आश्रम में ा करें। वस्तुत: संस्कार का अभिप्राय यही के वर वधू अन्य लोगों के तथा बन्धु बान्धवों समक्ष इस उद्देश्य की पूर्ति की प्रतिज्ञा लेते हैं, कि उससे विचलित होने में लोक-भय भी एक ी प्रतिबन्धक बना रहे।

दूर-दूर वासियों में विवाह

उत्तम सन्तानोत्पत्ति के दृष्टिकोण से ही यह भी वश्यक है कि विवाह निकटवासियों में तथा अपने व भाई बहिनोंमें न होकर दूर-वासियोंमें तथा दूसरे रे कुलों में हो। जब तक एक दूसरे दूरस्थ कुल के थ सम्बन्ध नहीं होता तब तक शरीरादि की पुष्टि पूर्ण नहीं होती। एक वृक्ष पर उसी वृक्ष की लम लगाने से उत्कृष्ट गुण वाले फल का उत्पादन भी नहीं होता। साथ ही समीप विवाह में गौण प से यह दोष भी है कि बाल्यावस्था के गुण दोषों ा ज्ञान होने से पारस्परिक प्रीति की वृद्धि इष्ट प में नहीं हो सकती और पारस्परिक प्रीति के भाव में उत्तम सन्तान होनी सम्भव कहां ?

चुनाव

वर वधू का चुनाव भी इस दृष्टिकोण से अत्यन्त आवश्यक है कि उनमें परस्पर प्रीति की वृद्धि संभव हो ताकि उत्तम सन्तति उत्पन्न हो सके। इसके लिए समानशीलता तथा विचारों की समता का ध्यान अत्यन्त आवश्यक है। जिन आचार्यों के समीप उन्होंने प्रारम्भिक जीवन में विद्याध्ययन करते हुए निवास किया है, वे इस विषय में माता-पिता के लिये बड़े सहायक हो सकते हैं। अन्य भी उपाय की समस्या ही उपस्थित न हो।

वर का सत्कार

विवाह के दिन संस्कार के समय जब वर वधू-गृह में उपस्थित होता है, वधू सबसे पूर्व "मैं आप का सत्कार करूँगी" ऐसा कह कर बैठने के लिये आसन देती है, पांव धोने के लिये जल देती है, मुख धोने के लिये जल देने के बाद आचमन के लिये पानी देती है और तदनन्तर खाने के लिये मधुपर्क उपस्थित करती है।

यही वस्तुत: प्रतिदिन भावी जीवन में दिन भर के कार्योंसे थक कर आये हुए पति की सेवा का सामान्य प्रकार है। पति की ही नहीं, घर में और कोई अतिथि व मान्य व्यक्ति उपस्थित हों तो उनकी शुश्रूषा भी पत्नी ने इसी प्रकार करनी है। एवं संस्कार का यह प्रारंभिक अंश पत्नी के लिये सेवा का एक क्रियात्मक पाठ हो जाता है।

सांकेतिक उपदेश

वर महोदय आसन पर बैठते हुए जो मन्त्र बोलते हैं उसमें आसन पर बैठने की क्रिया में एक बड़ा सुन्दर उपदेश मिलता है। "इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिधासति" इन शब्दों में वर कहता है कि मैं इस आसन को जैसे पांवों के नीचे डाल रहा हूं उसी प्रकार मैं अपने जीवन में इन शत्रुओं को भी पादाक्रान्त करूंगा जोकि मुझे अपने वश में करने का प्रयत्न करेंगे। यहां आन्तर व बाह्य दोनों शत्रुओं को कुचल देने को संकल्प एक मामूली प्रक्रिया को करता हुआ भी वर अपने अन्दर धारणा करता है। वस्तुत: वैदिक जीवन में प्रत्येक क्रिया धर्म से ओत-प्रोत मिलती है।

शक्ति की रक्षा

मुख धोते हुए वर बिखरते हुए पानी को जब नीचे और नीचे बह जाते हुए देखता है और उसके निम्न प्रवाह के गुण का स्मरण करता है तो उस समय कहता है कि ए जलो, मैं तुम्हें तुम्हारे अन्तिम आश्रय—निम्नतम स्थान समुद्र में पहुंचाता हूं। पर तुम्हारा ही वह रूप जो मेरे अन्दर शक्ति रूप से विद्यमान है ("आप: रेतो भूत्वा" जल ही वीर्य रूप से शरीर में है) वह मुझसे दूर न हो। मैं अपनी शक्ति की रक्षा में सदा सावधान रहूंगा।

तीन आचमन

इसी समय आचमनीय जल से तीन आचमन

(पृष्ठ २ का शेष)

से अच्छा या बुरा—सुवर्ण का या मट्टी का बना ती है। हममें से प्रत्येक के जीवन का अन्तिम क्ष्य तो ब्रह्म का साक्षात्कार है, ब्रह्म साक्षात्कार क मार्ग में चलते हुए संसार के विषयों का सेवन ो केवल साधन के रूप में ही करना है, यदि इस ष्टि से संसार को देखा जाय तो वह अच्छा हो ाता है—सुवर्ण का हो जाता है। और यदि संसार के विषयों का रस पान ही हमारे जीवन का अन्तिम क्ष्य है इस दृष्टि से संसार को देखा जाय तो वह कष्ट देने वाला बन जाता है, बुरा हो जाता है—मट्टी का हो जाता है। मन्त्र में मट्टी के संसार को त्यागने का उपदेश है, सुवर्ण के संसार को ब्रह्म साक्षात्कार के मार्ग में साधन बन रहे संसार को त्यागने का उपदेश नहीं है। ठीक दृष्टि से भोगा हुआ संसार तो बन्धन का कारण न होकर मोक्ष का कारण होता है।

हुए भी अमृतत्व को प्राप्त करता है। "प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम" इन वेद के शब्दों में यह भावना व्यक्त हुई है।

"श्री" का अभिप्राय शारीरिक कान्ति से है। वीर्य का व्यय केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए हुआ तो मनुष्य की यह कान्ति बनी रहेगी—उसका शरीर अहिंसित रहेगा। वस्तुत: इसीलिये मुख धोते हुए उसने निश्चय किया था कि "मा परासेचि मत्पय:" शक्ति मेरी व्यर्थ व्यय न होने पायेगी। शक्ति रक्षा से ही "यश सत्य श्री" की प्राप्ति होगी।

क्रमश:

आर्य समाज कमालिया

११ जुलाई को अपने साप्ताहिक सत्सङ्ग में निम्न-लिखित प्रस्ताव स्वीकार किया।

यह समाज श्रीयुत स्वर्गीय मास्टर लक्ष्मणदास जी की धर्मपत्नी श्रीमती सदा बाई की (४ जुलाई को लाहौर में हुई असामयिक मृत्यु) असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। इस दु:ख में उनके सुपुत्र श्री हरिशरण जी हरिप्रकाश जी, हरिमोहन जी तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती हैं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और परिवार के सदस्यों को धैर्य प्रदान करें। श्रीमती सदाबाई जो आदर्श देवी थी की मृत्यु से आर्य देवियों में भारी क्षति हुई है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

वैदिक स्वाध्याय—

मैं मट्टी के ६

[श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्प

[२२

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राज

मृडा सु

अर्थ—हे (राजन्) हमारे राजा (वरुण) हमें दुर्गति से बचाने वाले और वरण करने योग्य परमात्मन् (अहं) मैं (मृन्मयं) मट्टी से बने हुए (गृहं) घर में (मा-उ) न (सु गमम्) जाऊँ (मृड) सुखी कीजिये (सुक्षत्र) हे उत्तम रीति से विपत्ति से बचाने वाले शक्तिशाली भगवन् (मृडय) मुझे सुखी कीजिये।

गत सूक्त के अन्तिम मन्त्र में भक्त ने भगवान् से प्रार्थना की थी कि हे प्रभो मुझे सब प्रकार के

आवश्यक निर्देश

समस्त आर्यसमाजें पंचमहायज्ञ विधि अनुसार ही सन्ध्या किया करें (सन्ध्याविधि अनुसार नहीं) अर्थात् सब से पूर्व गायत्री मन्त्र द्वारा शिखा बन्धन पुनः आचमन मन्त्र द्वारा आचमन, अंग स्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण मन्त्र के पश्चात् पुनः आचमन तथा गायत्री मन्त्र के अर्थ मनसाविचारयेत् मनसा परिक्रमा, उपस्थान के पश्चात् गायत्री के मन्त्र (एक बार) समर्पण।

हे ईश्वर दयानिधे भवत् कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणाँ सद्यःसिद्धि भवेत् नमस्कार मन्त्र।

उस्मानिया यूनिवर्सिटी का परीक्षा फल उर्दू अनिवार्य होने के कारण संतोषजनक नहीं रहा

हैदराबाद उस्मानिया यूनिवर्सिटी की इंटरमिडियेट की कक्षाओं का परीक्षा फल १६ प्रतिशत रहा बी० ए० २३ प्रतिशत और बी० एस० सी० २० प्रतिशत। इसका कारण यह बताया जा रहा है कि अधिकांश विद्यार्थी अखलाकियत विषय में अनुत्तीर्ण हुए हैं। वहां की सरकार ने केवल सुन्नी मुसलमानों के लिये तो धर्मशास्त्र अनिवार्य विषय रखा है और शेष विद्यार्थियों को अखलाकियत विषय उर्दू में लेना पड़ता है। इस तरह उर्दू ही एक अनिवार्य विषय बन जाता है। शिया मुसलमानों और हिन्दुओं द्वारा बार-बार मांग करने पर भी उनके लिये धार्मिक

विद्यार्थियों को उर्दू अच्छी तरह नहीं आती वे ही अधिक संख्या में इस कुपरिणाम के शिकार हुए हैं।

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

दो बौद्ध अतिथि

गत २ जुलाई को गुरुकुल विश्वविद्यालय में, भारत में बौद्ध धर्म को पुनरुज्जीवित करने वाले श्री त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन भदन्त आनन्द कौशल्यायन के साथ पधारे। दोनों महानुभावों ने गुरुकुल को बड़ी दिलचस्पी के साथ देखा। गुरुकुल वासियों के विशेष आग्रह पर दोनों महानुभाव ४ दिन तक गुरुकुल भूमि में ठहरे तथा अपने विश्व पर्यटन के अनुभवों और भारतीय सभ्यता और संस्कृति के सम्बन्ध में भाषण देते रहे। तिब्बत, चीन, रूस, जापान, आदि देशों की सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों पर दोनों विद्वानों ने बड़ी उत्तम रीति से प्रकाश डाला।

स्वास्थ्य समाचार

इन दिनों गुरुकुल में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अत्युत्तम है। चिकित्सालय रोगियों से खाली हैं। एक-दो बार अच्छी वर्षा हो जाने के कारण मौसम ठण्डा हो गया है। दिन भर आकाश में मेघ छाए रहते हैं। ब्रह्मचारियों को अपनी गौशाला का दूध तथा वाटिकाओं के फल पर्याप्त मात्रा में दिये जा रहे हैं।

कार्यालय छात्र परीक्षा विभाग

गुरुकुल कांगड़ी की छात्र परीक्षा आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि इस वर्ष १ अगस्त कर दी गई है।

जिन परीक्षार्थियों ने किसी विषय में योग्यता सूचक कोई अन्य उपाधि प्राप्त कर रखी हो वे उस के प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि भेज कर छात्र परीक्षाध्यक्ष से सीधा मध्यमा या उत्तमा में बैठने की भी अनुमति प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष परीक्षाएं ११ अक्तूबर से प्रारम्भ होंगी।

वेद धर्मशास्त्र, संस्कृत, हिन्दी, इतिहास, आयुर्वेद, सम्पादन कला, गृहशास्त्र की पाठविधि तैयार हो चुकी है।

आर्य समाज वच्छोवाली के समाचार

आर्य समाज वच्छोवाली की अन्तरङ्ग सभा ने जनता की अन्न तथा खाद्य पदार्थों की तंगी को

के पास जाकर उनकी हालत मालूम कर पहुंचाएगी। इस कार्य के लिये श्री म० ने ५०) तथा श्री बाबू रोशनलाल जी प्रधान समाज ने ५०) दान दिया है। इनके मलिक इन्द्रभान जी ने ५) तथा अन्य स फुटकर दान दिया है।

(२) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पदेशक म० देशराज जी वच्छोवाली आर्यस कीर्तन भजन मण्डली बनाने से तथा नगर लिये नियत किये गये हैं। इससे लाहौर जि वैदिक धर्म प्रचार का कार्य विशेष रूप से जायगा।

आर्य समाज भलवाल का चुनाव

प्रधान— म० बरकतराम जी

उप धान—मास्टर धर्मराज जी

,, बा० बिहारी लाल जी

मन्त्री—म० तिलकराज जी

कोषाध्यक्ष—म० शिवचन्द लाल जी

पुस्तकाध्यक्ष—म० मुलखराज जी

चुनाव आर्य पुत्री पाठशाला

प्रधान—सेठ मङ्गल सैन जी

प्रबन्धक—डाक्टर रामस्वरूप जी

कोषाध्यक्ष—म० पृथ्वीराज जी

लण्डन तार

—डेली एक्सप्रेस का सैनिक सम्वा लिखता है कि यूरोप पर आक्रमण होने की घड़ी जाने के साथ रूसी अपने पश्चिमी मित्रों की का जो अनुमान लगा रहे हैं उसके आंकड़े सो वार न्यूज़ म प्रकाशित हुए हैं। इन्हें संक्षेप दिया जाता है—

सेना—बृटिश साम्राज्य, २५,००,००० ३०,००,००० सैनिक तक जो यूरोपीय क्षेत्र मिल सकेंगे, अमेरिका १५,००,००० से २०,०० तक, फ्रांस; ५,००, ००।

टैंक—ब्रिटेन २,००० प्रति मास, कनाडा अमेरिका ३,००० जर्मनी और उसके साथि ३,०००।

तोपें—बृटेन ३,००० प्रति मास, कनाडा अमेरिका ६,००० शत्रु ४,०००।

वायुयान - बृटेन, कनाडा और अमेरिका क उत्पादन १०,००० से ११,०-० प्रति मास। श ४,०००।

जहाज़ निर्माण—बृटेन और कनाडा मि ३०,००,००० से ३५,००,००० टन प्रति वर्ष, अ ८०,००,००० टन गत वर्ष में और इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 301

आर्य रविवार ३ श्रावण वि०सं० २०००

आर्य परिवारों की दिक्कतें

हम चाहते हैं कि आर्य सभासदों के परिवार आर्य । इसके लिये लेख व व्याख्यानों द्वारा अनेक प्रकार प्रेरणा की जाती है। परन्तु उनका असर बहुत म होता है। संस्कारों तथा वैदिक विवाह पद्धति द्वारा वाहों की योजना भी की जाती है परन्तु उसका भीष्ट परिणाम नहीं होता। इसके अनेक कारणों में एक मुख्य कारण यह है कि आर्य पुरुषों को अपनी न्तानों के लिये योग्य वर तथा कन्याएं नहीं मिलतीं। न दिनों अनेक आर्य भाई मिलते हैं और अपनी स दिक्कत को उपस्थित करते हैं। आर्य समाज में, सा कोई प्रबन्ध नहीं, जिसके द्वारा आर्य कन्याओं विवाह आर्य युवकों के साथ होने की अधिक भावना हो। इस स्थिति का एक मुख्य कारण यह है कि आर्य भाई जन्म मूलक जाति पांति के न्धनों में इतने उलझे हुए हैं कि वह पहले अपनी रादरी में रिश्ता देखते हैं—वहां न मिलने पर लाचारी लत में जात-पांत से बाहर जाते हैं। चाहिए यह पहले जन्म मूलक जात पांत से बाहर, आर्य रिवारों में सन्तानों के सम्बन्ध करने कोशिश की य। लाचारी हालत में जात पात में रिश्ता करना पड़े, वहां करें। कई बार आर्य बिरादरी बनाने का स्ताव आर्य समाजों के सामने रखा गया—उत्साह क काम आरम्भ किया गया—परन्तु जन्म मूलक त-पांत के बन्धनों की गुलामी के कारण इसमें फलता न हुई।

आर्य पुरुष—माता-पिता बड़ी मेहनत से अपनी न्याओं को आर्य धर्म की शिक्षा देते हैं परन्तु विवाह का ऐसी जगह होता है—जहां आर्य-धर्म की हंसी ती हो—परिणाम दुःखदायक होता है।

कई स्थानों तथा परिवारों में माता-पिता कट्टर द्धालु आर्य समाजी हैं परन्तु पुत्रों की शिक्षा की पेक्षा होने से वह आर्य संस्कारों से वंचित रहते हैं। नका हल जब तक नहीं होता तब तक आर्य परिवारों —आर्य गृहस्थों की मुश्किलों का हल नहीं होसकता।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से 'आर्य-त्र में आर्य परिवारों की इस दिक्कत को हल करने के युवकों के विवाह के सम्बन्ध में विज्ञापन देने शुरू किये हैं। सभा कार्यालय में इसके लिये अलग प्रबन्ध भी किया जा रहा है। सभा के पत्र द्वारा उन आर्य सज्जनों के लिये योग्य वर तथा योग्य कन्या ढूंढ़ने में सहायता दी जायगी जो जन्म मूलक जात-पात के बन्धन को छोड़कर गुण कर्मानुसार आर्य परिवारों में सम्बन्ध करना चाहेंगे। इस समय तक हमारे पास ४ आर्य-कन्याओं के लिये योग्य वर ढूढ़ने के लिये पत्र आए हैं। कन्याएं शिक्षित हैं, आर्य सस्कारों में पली हुइ है। आयु १६-२० साल तक की हैं। जो आर्य भाइ जन्म-मूलक जात-पात को तोड़कर गुण कर्मानुसार आर्य-परिवारों में ही सम्बन्ध करना चाहें—वह इस विषय म सम्पादक-आर्य के साथ पत्र व्यवहार करें। मेरी सम्मति में इस व्यवस्था से आर्य परिवारों में आर्य संस्कृति का वातावरण पैदा हो सकेगा। आशा है आर्य भाई इधर विशेष ध्यान देंगे।

आर्य मैरिज एक्ट—

भारतवर्ष की सैण्ट्रल एसम्बली में आर्य मैरिज एक्ट स्वीकार हो चुका है। इस एक्ट के अनुसार जो व्यक्ति अपने आपको आर्य कहेगा—वह आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुसार गुणकर्मानुसार विवाह करा सकता है। जन्म मूलक जात-पाति के भिन्न होने के कारण उसको या उसकी सन्तानों को जायदाद से वंचित नहीं किया जा सकेगा। यही नहीं, कलकत्ता के हाई कोर्ट ने इस आर्य मैरिज एक्ट की व्याख्या करते हुए यह भी व्यवस्था दी है कि आर्य के लिये (Monogamy) एक पत्नीव्रत वाला होना आवश्यक है।

आर्य पुरुषों को चाहिए कि सुधारवादी हिन्दू—जो १६ आने आर्य समाजी नहीं हैं उन्हें Civil marrige Act के अनुसार विवाह करने की अपेक्षा आर्य मैरिज एक्ट के अनुसार विवाह करने की प्रेरणा करें। आर्य मैरिज एक्ट में विवाह की धार्मिकता और आर्य सस्कृति की भावना भी कायम रहती है। सिविल मैरिज एक्ट के अनुसार जन्म मूलक जाति बन्धन तो टूटते हैं, परन्तु साथ ही कई ऐसी बातें भी करनी पड़ती हैं जिनसे साधारण आर्य हिन्दू को ग्लानि तथा घृणा होती है। सुधारवादी हिन्दुओं को आर्य समाज के समीप लाने के लिये इसका सदुपयोग किया जा सकता है। आर्य समाजों को चाहिए कि अपने शहर में जो विवाह हों—उन पर आर्य मैरिज एक्ट की विशेष रूप से महिमा दिखाने का प्रबन्ध किया जाय। जो लोग जन्म मूलक जाति तोड़ कर गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था कायम करना चाहते हैं—उन्हें भी इस

(पृष्ठ २ का शेष)

से अच्छा या बुरा—सुवर्ण का या मट्टी का बना ती है। हममें से प्रत्येक के जीवन का अन्तिम क्ष्य तो ब्रह्म का साक्षात्कार है, ब्रह्म साक्षात्कार क मार्ग में चलते हुए संसार के विषयों का सेवन ो केवल साधन के रूप में ही करना है, यदि इस ष्टि से संसार को देखा जाय तो वह अच्छा हो ाता है—सुवर्ण का हो जाता है। और यदि संसार क विषयों का रस पान ही हमारे जीवन का अन्तिम क्ष्य है इस दृष्टि से संसार को देखा जाय तो वह कष्ट देने वाला बन जाता है, बुरा हो जाता है—मट्टी का हो जाता है। मन्त्र में मट्टी के संसार को त्यागने का उपदेश है, सुवर्ण के संसार को ब्रह्म साक्षात्कार के मार्ग में साधन बन रहे संसार को त्यागने का उपदेश नहीं है। ठीक दृष्टि से भोगा हुआ संसार तो बन्धन का कारण न होकर मोक्ष का कारण होता है।

हमारा संसार हमारे लिये मट्टी का न होकर सुवर्ण का हो जाय इसके लिये हम और किससे प्रार्थना कर सकते हैं ? वरणीय प्रभु ही हमें अपने जगत् को सुवर्ण का बनाने में हमारी सहायता कर सकते हैं। इसीलिये मन्त्र में प्रार्थना है कि "हे वरुण प्रभो ! मुझे मट्टी के घर से बचाइये और इस प्रकार हे स्वामिन् ! मुझे सुखी कीजिये, आदर्श रूप में सुखी कीजिये।"

भगवान् "सुत्रत्र" हैं। 'त्र' का अर्थ घाव से, विपत्ति से, रक्षा करने वाला भी होता है और शक्ति तथा बल भी होता है। भगवान् क्योंकि सब प्रकार के घावों से, सब प्रकार की विपत्तियों से हमारी बहुत अच्छी तरह रक्षा करते हैं। इसलिये वे 'सुत्रत्र' हैं। और क्योंकि उनमें बहुत उत्तम शक्ति है, वे बड़े बलशाली है इसलिए भी वे 'सुत्रत्र' हैं। 'सुत्रत्र' भगवान् से ही—विपत्तियों से त्राता और शक्ति के पुंज भगवान् से ही—तो हम मट्टी के संसार से बचाने और पूर्ण सुख प्रदान करने की प्रार्थना कर सकते हैं।

हे मेरे आत्मा ! तू भी इस सुत्रत्र प्रभु की शरण में जा और उससे शक्ति पाकर अपने आप को मट्टी के घर से बाहर निकलने योग्य बना।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक

वैदिक स्वाध्याय—

मैं मट्टी के

[श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवा

[

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं
मृडा

अर्थ—हे (राजन्) हमारे राजा (वरुण हमें दुर्गति से बचाने वाले और वरण करने योग परमात्मन् (अहं) मैं (मृन्मयं) मट्टी से बने हु (गृहं) घर में (मा-उ) न (सु गमम्) जाउ (मृड) सुखी कीजिये (सुक्षत्र) हे उत्तम रीति विपत्ति से बचाने वाले शक्तिशाली भगवन् (मृडय मुझे सुखी कीजिये।

गत सूक्त के अन्तिम मन्त्र में भक्त ने भगवा से प्रार्थना की थी कि हे प्रभो मुझे सब प्रकार

आवश्यक निर्देश

समस्त आर्यसमाजें पंचमहायज्ञ विधि अनुसार ही सन्ध्या किया करें (सन्ध्याविधि अनुसार नहीं) अर्थात् सब से पूर्व गायत्री मन्त्र द्वारा शिखा बन्धन पुनः आचमन मन्त्र द्वारा आचमन, अंग स्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण मन्त्र के पश्चात् पुनः आचमन तथा गायत्री मन्त्र के अर्थ मनसाविचारयेत् मनसा परिक्रमा, उपस्थान के पश्चात् गायत्री के मन्त्र (एक बार) समर्पण।

हे ईश्वर दयानिधे भवत् कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणाँ सद्यःसिद्धि भवेत् नमस्कार मन्त्र।

उस्मानिया यूनिवर्सिटी का परीक्षा फल उर्दू अनिवार्य होने के कारण संतोषजनक नहीं रहा

हैदराबाद उस्मानिया यूनिवर्सिटी की इंटरमिडियेट की कक्षाओं का परीक्षा फल १६ प्रतिशत रहा बी० ए० २३ प्रतिशत और बी० एस० सी० २० प्रतिशत। इसका कारण यह बताया जा रहा है कि अधिकांश विद्यार्थी अखलाकियत विषय में अनुत्तीर्ण हुए हैं। वहां की सरकार ने केवल सुन्नी मुसलमानों के लिये तो धर्मशास्त्र अनिवार्य विषय रखा है और शेष विद्यार्थियों को अखलाकियत विषय उर्दू में लिखना पड़ता है। इस तरह उर्दू ही एक अनिवार्य विषय बन जाता है। शिया मुसलमानों और हिन्दुओं द्वारा बार-बार मांग करने पर भी उनके लिये धार्मिक शिक्षण का प्रबन्ध नहीं किया है। इस प्रकार जिन

वर्गीकरण ७. डियूई वर्गीकरण। इस समय संसार में सबसे अधिक सर्व प्रिय डियूई का वर्गीकरण है।

किसी भी प्रकार के वर्गीकरण में निम्नलिखित पांच प्रकार के गुण होने चाहिए। १. उसमें एक साधारण वर्ग (Generalia class) होना चाहिए २. उसमें गद्य, पद्य, नाटक आदि काव्य के बाह्य रूपों की दृष्टि से एक वर्ग (Form class) होना चाहिए। ३. उस के वर्गों के सदृश उपविभाग (Common Subdivisions) होने चाहिए ४. वर्गों को द्योतित करने के लिए अक्षरों यथा क. ख. आदि वा अंकों १, २, आदि के चिह्न (Notation) होने चाहिए। ५. अनुक्रमणी (Index) होनी चाहिए।

हम ऊपर बता चुके हैं कि इस समय संसार में सबसे अधिक प्रचलित डियूई का दशम वर्गीकरण (Dewey's Decimal Classification) है।

आर्य संसार को शुभ समाचार

आपको यह जान कर हर्ष होगा कि यू०पी० गवर्नमेण्ट ने गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज बनारस की शास्त्री तथा आचार्य परीक्षाओं में प्राचीन व्याकरण हटा देने का प्रस्ताव रद्द कर दिया जो काशी तथा बाहिर के पौराणिकों ने बड़े भारी आन्दोलन द्वारा किया था और जिसे संस्कृत शिक्षा बोर्ड ने स्वीकार भी कर लिया था। आर्य समाज की ओर से आन्दोलन सफल हुआ। आपने इस कार्य में जो कष्ट उठाया उसके लिए अति धन्यवाद है। ब्रह्मदत्त 'जिज्ञासु'

ड्यूई महोदय ने संसार के ज्ञान को ९ विभागों में विभक्त किया है और उन ९ वर्गों को १—९ अंकों द्वारा द्योतित किया है। परन्तु साधारण विषयों यथा समाचार पत्र, कोष, विश्वकोष आदि के लिए एक साधारण वर्ग रखा है जिसको शून्य से द्योतित किया है। अतः कुल १० वर्ग निम्न प्रकार से कहे जा सकते हैं।

००० साधारण	५०० विज्ञान
१०० दर्शन	६०० उपयोगी कलाएँ
२०० धर्म	७०० ललित कलाएँ
३०० सामाजिक विद्याएँ	८०० काव्य
४०० भाषा	९०० इतिहास, भूगोल, विवरण

पुनः प्रत्येक वर्ग को १० विभागों में विभक्त किया

५४०, ५५०, ५६०, ५७०, ५८०, ५९० पुनः इन को १० उपभागों में विभक्त किया गया है ५१०—५१९। पुनः इन उपविभागों को दशम लगाकर विभक्त किया गया है। दशम के यथेच्छ स्थान तक इनका विस्तार किया गया है

अब पुस्तकालय के सूचीकरण Catalogo के विषय में दो शब्द लिखे जाते हैं। पुस्तक रखी पुस्तकों को बतलाने के लिए किसी सू आवश्यकता है। सूची के दो रूप (Forms सकते हैं ? एक तो मुद्रित रूप में पुस्तकों को तय्यार की जा सकती है। परन्तु इसमें सबसे दोष यह है कि इस को एक तो बार-बार छप इस पर बहुत व्यय हो जाता है दूसरे यह पुरानी होती है। आज सूची छप कर तय्यार हुई आज ही १० नई पुस्तकें मंगवाई गई तो वह दर्ज नहीं हो सकतीं। २. सूची का दूसरा रूप सूची हो सकता है। यही सूची आजकल सं सबसे अधिक प्रचलित है। पुनः यह सूची प्रकार से तय्यार की जा सकती है। यदि बहुत काम ही बनाना हो तो लेखक-सूची (Au Catalogue) ठीक रहेगी। एक ५"×३" पर एक पुस्तक दर्ज करनी चाहिए। सबसे लेखक का नाम, फिर पुस्तक का नाम, प्रकाशन प्रकाशक का नाम, प्रकाशन का सन वा संवत, के पृष्ठ वा भाग, यदि सचित्र हो तो सचित्र और फिर पुस्तक का साइज़। दूसरी प्रकार की कोष सूची (Dictionary Catalogue) लाती है। इसमें एक पुस्तक के लिए एक लेख कार्ड बनता है, एक पुस्तक के नाम का, एक के विषय का तथा अन्य कार्ड भी आवश्यकत बनाए जाते हैं। ऐसी सूची का आजकल प्रचार है। कई अन्य प्रकार से भी सूचियाँ की जा सकती हैं। इन कार्डों को ड्राज़ों Draw में एक साथ रख दिया जाता है। कार्डों के सूराख होता है और इन सूराखों में से एक लोह गुज़रती है जो इनको इकट्ठा बांधे रखता है। द्राज़ एक कैबीनैट (Cabinet) में रखे जा किसी अच्छे पुस्तकालय में जाने से यह प्रणाली प्रकार से समझ में आ सकती है।

—आर्य समाज जालंधर का वार्षिक उ १० जून को सायंकाल समाज मन्दिर में हुआ रामलाल जी लुधियाना, श्री देवराज जी भी उ थे। ला० चमनलाल जी प्रधान निर्वाचित हु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 38

सार्वदेशिक आं० प्र० सभा के वक्तव्य तथा सूचनाएं

माननीय श्री घनश्यामसिंह गुप्त जी के विषय में वक्तव्य

आर्य जनता को समाचार पत्रों द्वारा ज्ञात हुआ कि माननीय श्री घनश्यामसिंह गुप्त पर जो देश की लेजिस्लेटिव असेम्बली के प्रधान और समाज के मान्य नेता हैं, और सार्वदेशिक प्रातिनिधि सभा के कई वर्ष तक प्रधान रहे, ा एक्ट के अनुसार उनकी पुत्री के विवाह के न्ध में अभियोग चलाया गया था जिसमें ट्रेट की अदालत से उन पर १०-४-४३ को) जुर्माना हुआ था, परन्तु अपील में सेशन की अदालत से ३१।५।४३ को ये निर्दोष ठहराये श्री गुप्त जी ने जब उन पर अभियोग चल रहा सार्वदेशिक सभा को उसकी सूचना दी थी और ना वक्तव्य भेजा था। अब एक और वक्तव्य उन प्राप्त हुआ है आर्य जनता इस मामले का वृत्तांत ने को उत्सुक होगी इसलिए वह संक्षेप से नीचे ज्जाता है।

शारदा एक्ट के अनुसार १४ वर्ष से कम आयु कन्या और १८ वर्ष से कम आयु के वर का विवाह त है। श्री गुप्त जी की कन्या की आयु १४ वर्ष म नहीं थी, १६ वर्ष थी, परन्तु वर की आयु र्ष से कम थी, इसी अपराध में शारदा एक्ट ारा ५ के अनुसार उन पर मजिस्ट्रेट की अदालत ००) जुर्माना किया गया था।

यह सम्बन्ध श्री गुप्त जी के घर वालों ने उस ा ठहराया था जब वे सिविल नाफरमानी Civil obedience के कारण नागपुर जेल में थे। ा कहना है कि वे वर के परिवार को जानते थे, ने वर को नहीं देखा था और इस बात का र भी उनके मन में नहीं आया कि वर की आयु होगी क्योंकि उनके घर के लोग और सम्बन्धी दृढ़ और निश्चित धार्मिक व सामाजिक विचारों अच्छी तरह जानते थे। १७-११-४१ को उनके द्ध अभियोग अदालत में पेश हुआ, उसकी सूचना ो पहिली बार २०-११-४१ के सायकाल अदा- के नोटिस द्वारा हुई उससे पहिले उनको इस में सन्देह करने का कोई कारण नहीं हुआ था कि की आयु १८ वर्ष से कम होगी।

विवाह संस्कार २१-११-४१ के प्रातःकाल होने ा। उससे पूर्व बारात आ चुकी थी और विवाह न्धी कई कार्य हो चुके थे। उस समय श्री गुप्त

सम्भव नहीं समझा, उनके बयान में कहा गया है कि ऐसा करने से कन्या का जीवन नष्ट होने की संभावना थी जैसा कि दूसरे पक्ष के गवाहों ने भी स्वीकार किया। अदालत में श्री गुप्त जी ने केवल अपना लिखित वक्तव्य दाखिल किया और कोई सफाई नहीं पेश की।

अदालत अपील ने शारदा एक्ट की धारा ५ का अपराध इसलिये नहीं माना कि वह धारा विवाह कराने वाले पुरोहित पर लागू है। वर और कन्या के माता पिता व संरक्षक को धारा ६ के अनुसार दण्ड दिया जा सकता है। धारा ६ का अपराध इसलिये नहीं माना गया कि श्री गुप्त जी को कन्या की आयु एक्ट में वर्णित १४ वर्ष से कम नहीं थी, वर की आयु १८ वर्ष से कम थी परन्तु श्री गुप्त जी उसके संरक्षक नहीं थे और कानून के अनुसार वर के संरक्षक का ही उत्तरदायित्व था। इसलिए जज ने श्री गुप्त जी को निर्दोष ठहरा कर बरी किया।

श्री गुप्त जी ने अपने बयान में जो अदालत में दाखिल किया गया अपने को अपराधी न मानते हुए इस बात पर अत्यन्त शोक प्रकट किया है कि उनका सम्बन्ध इस प्रकार के मामले से रहा कि जो उनके जीवन के आदर्श और व्यवहार से सर्वथा प्रतिकूल था।

श्री घनश्यामसिंह गुप्त जी दीर्घ काल से धर्म परायण आर्य रहे हैं। (उन्होंने अपना विवाह प्रचलित जाति बन्धन तोड़ कर बिरादरी के विरोध की बिल्कुल परवाह न करके किया था) और उनके आचार व व्यवहार सदा दृढ़ आर्यों के से रहे हैं, यह खेद की बात है कि इस मामले में यदि उनकी कुछ भूल भी मानी जाये तो उनको उसके लिये इतनी परेशानी सहनी पड़ी।

उन पर जो अभियोग चलाया गया वह केवल वैयक्तिक द्वेष के कारण, उनका मान घटाने के अभिप्राय से चलाया जाना प्रतीत होता है जैसा कि उन्होंने अदालत में बयान किया। उसमें उनके साथ उनकी धर्मपत्नी भी मुद्दाले बनाई गई थी परन्तु मजिस्ट्रेट ने आरम्भ ही में उनको तलब नहीं किया। हम लोगों की दृष्टि में श्री घनश्यामसिंह गुप्त उसी आदर और सम्मान के पात्र हैं जैसा कि पूर्व थे। उनकी धर्म परायणता, योग्यता और उनकी सेवाएं आर्य जनता से छिपी नहीं हैं।

रामगढ़ गङ्गाप्रसाद

(पृष्ठ २ का शेष)

उसे अच्छा या बुरा—सुवर्ण का या मट्टी का बना देती है। हममें से प्रत्येक के जीवन का अन्तिम लक्ष्य तो ब्रह्म का साक्षात्कार है, ब्रह्म साक्षात्कार के मार्ग में चलते हुए संसार के विषयों का सेवन तो केवल साधन के रूप में ही करना है, यदि इस दृष्टि से संसार को देखा जाय तो वह अच्छा हो जाता है—सुवर्ण का हो जाता है। और यदि संसार के विषयों का रस पान ही हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य है इस दृष्टि से संसार को देखा जाय तो वह कष्ट देने वाला बन जाता है, बुरा हो जाता है—मट्टी का हो जाता है। मन्त्र में मट्टी के संसार को त्यागने का उपदेश है, सुवर्ण के संसार को ब्रह्म साक्षात्कार के मार्ग में साधन बन रहे संसार को त्यागने का उपदेश नहीं है। ठीक दृष्टि से भोगा हुआ संसार तो बन्धन का कारण न होकर मोक्ष का कारण होता है।

हमारा संसार हमारे लिये मट्टी का न होकर सुवर्ण का हो जाय इसके लिये हम और किससे प्रार्थना कर सकते हैं ? वरणीय प्रभु ही हमें अपने जगत् को सुवर्ण का बनाने में हमारी सहायता कर सकते हैं। इसीलिये मन्त्र में प्रार्थना है कि "हे वरुण प्रभो ! मुझे मट्टी के घर से बचाइये और इस प्रकार हे स्वामिन ! मुझे सुखी कीजिये, आदर्श रूप में सुखी कीजिये।"

भगवान् "सुत्रत्र" हैं। 'त्रत्र' का अर्थ घाव से, विपत्ति से, रक्षा करने वाला भी होता है और शक्ति तथा बल भी होता है। भगवान् क्योंकि सब प्रकार के घावों से, सब प्रकार की विपत्तियों से हमारी बहुत अच्छी तरह रक्षा करते हैं। इसलिये वे 'सुत्रत्र' हैं। और क्योंकि उनमें बहुत उत्तम शक्ति है, वे बड़े बलशाली है इसलिए भी वे 'सुत्रत्र' हैं। 'सुत्रत्र' भगवान् से ही—विपत्तियों से त्राता और शक्ति के पुंज भगवान् से ही—तो हम मट्टी के संसार से बचाने और पूर्ण सुख प्रदान करने की प्रार्थना कर सकते हैं।

हे मेरे आत्मा ! तू भी इस सुत्रत्र प्रभु की शरण में जा और उससे शक्ति पाकर अपने आप को मट्टी के घर से बाहर निकलने योग्य बना।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

गुरुकुल प्रेमियों से अपील

[ले०—देवेन्द्रकुमार वेदालंकार]

कुछ समय से गुरुकुल के संचालकों का ध्यान गुरुकुल में एक शिल्पमहाविद्यालय खोलने की ओर लगा हुआ था। समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ है कि उसका श्रीगणेश किया जा चुका है। इससे पूर्व गुरुकुल वि० वि० में चार महाविद्यालय थे। वेद महाविद्यालय, साधारण महाविद्यालय, आयुर्वेद महाविद्यालय तथा कन्या महाविद्यालय। इनमें से आयुर्वेद-महाविद्यालय तथा प्रस्तावित शिल्प महाविद्यालय के उद्देश्य बहुत कुछ एक सदृश हैं। व्यावहारिक दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि इस समय गुरुकुली आ० म० में मैट्रिक पास विद्यार्थियों के प्रवेश की सुविधा होने पर भी कुल लगभग ५० विद्यार्थी हैं। ये ५० विद्यार्थी ५ श्रेणियों में बंटे हुए हैं। इस प्रकार एक श्रेणी में लगभग १० विद्यार्थी औसतन हुए। यदि शिल्प महाविद्यालय में कुछ विद्यार्थी प्रविष्ट होंगे तो स्वभावतः आयुर्वेद महाविद्यालय में विद्यार्थी कम होजावेंगे। उस अवस्था में जो खर्च उपर्युक्त विद्यार्थियों पर होता है उसको बढ़ाने के अलावा शिल्प महाविद्यालय के वृहत् खर्च को शुरु करना अत्यन्त व्यर्थ है क्योंकि उस खर्च के करने पर खर्चके अनुकूल लाभ नहीं बैठता।

इस समय भी और इससे पूर्व भी आयुर्वेद-महाविद्यालय की योग्यता को अधिक ऊंचा और आदर्श बनाने का प्रयत्न किया जाता रहा है। इसी प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप कुछ वर्ष पूर्व आयुर्वेद महाविद्यालय का कोर्स ४ के स्थान में ५ वर्षों में बढ़ाया गया था। किन्तु अभी भी हम विद्यार्थियों की ज्ञान पिपासा तृप्ति नहीं कर सके। निरन्तर विद्यार्थी तथा उपाध्याय यह आग्रह करते रहे हैं कि उनकी योग्यता को और भी अधिक ऊंचा करने के लिए प्रयत्न किये जांय। अनेक बार इस प्रयत्न में आर्थिक बाधा खड़ी हुई है—इसी कारण कुछ वर्ष पूर्व आ० म० के विद्यार्थियों पर ५) मासिक अतिरिक्त व्यय लगाना पड़ा था।

यदि हमारे लिए यह सम्भव है कि हम शिल्प के लिए धन इकट्ठा कर सकें तो क्यों यह सम्भव नहीं कि हम आयुर्वेद महा विद्यालय के लिए भी धन ला सकें। अपनी शक्तियों को विविध रूप से विकेन्द्रित करने के बजाय one thig at a time and that done well का कहना अधिक उन्नतिकर है। विद्यार्थियों को नयी प्यास लगाने से पहले यह अधिक उपयुक्त है कि उनकी लगी हुई प्यास को तृप्त करने के साधन मुहय्या किये जांय।

मैं प्रतिनिधि सभा तथा विद्या सभा के मान्य सदस्यों का ध्यान बल पूर्वक इस ओर खींचना चाहता हूं। इसका इस समय एक और भी कारण है। वह यह कि वर्त्तमान समय में Specialieation की मांग है, अनेक विषयों को जानने की नहीं।

यदि हम समय से पूर्व ही अपने विद्यार्थियों की योग्यता का आदर्श बहुत ऊँचा न रखकर अनेक विषयों में उनके मन को लगा देंगे तो भविष्य यह होगा कि न तो हमारा आयुर्वेद महाविद्यालय पूर्णतया सफल होगा और न कोई नयी योजना ही।

आशा है सब वि. स. के सदस्य महानुभाव इस समस्या पर विचार करेंगे।

प्रतिवाद सभा

आर्य समाज करौल बाग की यह साधारण सभा अपनी बैठक तिथि ४-७-४३ में आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को दीना नगर में नज़र बन्दी के विरुद्ध साधारणतया और उन पर अपमान-जनक प्रतिबन्ध लगाए जाने के विरुद्ध विशेषतया घोर प्रतिवाद करती है। पञ्जाब सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इसे शीघ्र ही वापिस ले ले।

वेद प्रचार सभा लायलपुर

वेद प्रचार सभा लायलपुर ने तिथि ६-३-२००० को निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस समय वेदों के हिन्दी भाष्य उपलब्ध हैं। यह सभा आर्य तथा सनातन धर्मी संस्थाओं से प्रार्थना करती है कि आगामी वेद सप्ताह के उपलक्ष में अपने अपने पुस्तकालयों को हिन्दी वेद भाष्य द्वारा सुशोभित करने की कृपा करें तथा जनता वेद भाष्य खरीद कर स्वाध्याय से लाभ उठावें।

सिन्ध सरकार का विवेकपूर्ण निश्चय

सार्वदेशिक सभा का वक्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। कि सिन्ध सरकार ने एक विज्ञप्ति द्वारा सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध कोई कार्यवाही न करने का निश्चय किया है। सभा की ओर से सिन्ध के प्रधान मन्त्री महोदय को इस विवेकपूर्ण निश्चय के लिये धन्यवाद सूचक तार भेजा गया है। सिन्ध सरकार की २३ जून की इस विज्ञप्ति ने कि वह सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध प्राप्त आवेदन पत्रों पर सम्यक् विचार

संघर्ष

[श्रीनिवास शर्मा श्रीपति 'साहित्यरत्न']

मैं आशा का कितना
सुन्दर संसार बनाता
पर स्वर्ण स्वप्न वह मेरा
कितना धूमिल हो जाता ॥ १

कल्पना पंख पर उड़ उड़
भावों के नीड़ बसाता
पर दो ही पलों निखर कर
कितना दुखमय हो जाता ॥ २

मैं जीवन सरिता के संग
कल कल ध्वनि भी कर उठता
पर कल कल में भी उसके
सुन्दरतम तान न पाता ॥ ३

मानस सागर में बह कर
भावी का रूप बनाता
पर बीते हुये क्षणों को
फिर भी न भुला मैं पाता ॥ ४

बन बन कर मिट मिट जाना
क्या जीवन यही कहाता
मानव के सपनों में क्या
संघर्ष यही बन आता ॥ ५

कर रही है सारे आर्य जगत् में जिसमें न केवल समाज के सदस्य और सहायक बल्कि अन्य लाखों विचारशील हिन्दू सम्मिलित हैं जो असंतोष की ज्वाला उत्पन्न कर दी थी उसका मान सार्वदेशिक सभा कार्यालय में प्राप्त तारों और पत्रों से जिनमें देश के कोने २ में इस में की गई सार्वजनिक सभाओं के प्रस्तावों की थी लगाया जा सकता है। ये प्रस्ताव सिन्ध को भी भेजे गये थे जिनमें आर्यों ने सत्यार्थ जैसे पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षार्थ सब प्रकार के दान के लिये अपने को तैयार बताया था। इस बात का हर्ष है कि सिन्ध सरकार ने पूर्ण निर्णय करके अपने को एक भीषण संकट से लिया है।

सभा प्रत्येक आर्य नर नारी को आदेश कि वह सत्यार्थप्रकाश का प्रतिदिन पाठ करके को उन्नत बनाये और इसके प्रचार में हर सहायता दे सभा अन्य मतावलम्बियों से भी करती है कि वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका और भूमिकाओं में स्पष्टतया वर्णित पवित्र और भावना के साथ इस अमूल्य ग्रन्थ रत्न का स्व करके लाभ उठायें। धर्मदेव विद्यावाचस्पति स

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

Regd L N. 5004

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ३३
वार्षिक मूल्य ४
१० श्रावण, २००० विक्र
२५ जौलाई १९४३

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Saharupur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

सुख कहां है

...ई तहज़ीब का पुतला, कमीज़ और कॉलर का ...अभ्यासी) अचानक ऐसी जगह जा पहुँचता है ...कि न धोबी है न बजाज़ न नाई और न दर्ज़ी ...व्व कमीज़ पुराने और कालर फटे जाते हैं बड़ा ...अनुभव करता है और घबराया हुआ सभ्य देश में ...आता है। आते ही नई कमीज़ और नया ...खरीद कर पहनता है। इस समय इस ...मैन (Gental Man) को कैसा हर्ष होता ...वह बेअख्त्यार पुकार उठता है कि कमीज़ ...कालर में ही सुख था, परन्तु यह उसकी भूल ...मारे भोले भाई! तुमने ग़लत परिणाम निकाला ...या सचमुच कमीज़ और कालर ही आनन्द का ...थे? अगर यह यथार्थ है तो दूसरे ही दिन फिर ...और कालर खरीदो। क्या तुम्हें फिर वैसा ही ...द होता है? कदाचित नहीं। यह क्यों? इस ...कि आनन्द कमीज़ और कालर में न था। ...आवश्यकता के पूरा होने में आनन्द था। ...क कि कमीज़ और कालर की इच्छा तुम्हारे ...उपस्थित थी उस समय तक तुम्हें क्लेश था। ...तुम्हारी इन्द्रियों ने तुम्हारे मन को वश में किया ...या और मन के साथ खिंचा हुआ जीवात्मा भी ...की वस्तुओं में लिप्त हो गया था परन्तु ज्यों ही ...पूरी हुई इन्द्रियों ने मन को छोड़ दिया और ...जीवात्मा को छोड़ दिया। जीवात्मा ने अन्दर ...परमात्मा की ज्योति के दर्शन किये जोकि ...उपस्थित है। बस आनन्द धाम के संसर्ग से ...हुआ नकि कमीज़ और कालर की प्राप्ति से।

...लिये आर्य भाइयो! यदि आप चाहते हैं, कि ...क्लेशों से दूर रहें तो अपनी इच्छाओं को न्यून से न्यून करो क्योंकि सुख इच्छाओं के भीतर नहीं है बल्कि इच्छाओं के दूर होने से ही सुख मिलता है जोकि तुम्हारे अन्दर ही उपस्थित है।

अध्यात्म सुधा

[३२]

[मूल लेखक—श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, संगृहीता—श्रीलब्भूराम जी नय्यड़ आनन्द आश्रम लुधियाना]

गीति

[सुश्री शकुन्तला कुमारी 'रेणु']

ओ मेरे जीवन की जड़ता!
सहचरि कलुषित वाञ्छाओं की
जननी कुत्सित दुर्भावों की
हट! मेरे मन से दूर सरक
उकसा न अरी! हिंसक पशुता!

ओ मेरे अन्तर की शुचिता!
कर निर्मल निर्मलतर तन मन
कल्याण-कामनामय जीवन
भर अमल भावनाएँ भीतर
जन मंगलकारी पावनता!

ओ मेरी पावन मानवता!
तू बांध अरी! जग का कण-कण
दृढ़ स्नेह-सूत्र में प्रति जीवन
लहरें जिससे विकसित होकर
उर उर की करुणा-कोमलता!

अभिमान सबका नाश ...ता है

अभिमान चंगे भले मनुष्य को भी निकम्मा कर देता है। अभिमानी पुरुष थोड़ी सी प्रशंसा से कुप्पे की तरह फूल जाते हैं। जैसे जो मान उसको मिला है। वह उसके सम्भाल रखने के अयोग्य है। यही कारण है कि यदि ऐसे मनुष्यों को कोई सांसारिक पदवी मिल जावे या कोई सामाजिक अधिकार प्राप्त हो तो बजाय इसके कि वह अपने कर्मचारियों और अपने भाइयों के साथ कोई नेक बर्ताव करें उल्टा अनेक कष्ट का कारण बन जाते हैं। उनकी गर्दन ऐसी अकड़ जाती है कि नीचे की ओर देख ही नहीं सकते। वह अपने आप को ऊंची से ऊंची चोटी पर अनुभव करते हैं और इसलिए ही उनकी दृष्टि में वह मनुष्य नहीं आते जो कि उनसे नीचे होते हैं और दीखते भी हैं तो चींटी से बढ़ कर नहीं। जैसे ततैये का विष गर्मी से बढ़ जाता है ठीक वैसी ही अवस्था ऐसे अभिमानी पुरुषों की है।

अभिमानी पुरुष कान रखते हुए भी बहरे और आंखें रखते हुए भी अन्धे होते हैं। उनके कानों में न पीड़ितों की आहों की पुकार और न ही अपने नीचे के कर्मचारियों की आवाज़ जा सकती है। अभिमान के नशे में उनकी दृष्टि घट जाती है। और वह मोटे से मोटे दृश्य भी नहीं देख सकता। अपनी स्मरण शक्ति को वह स्वयं जवाब दे बैठते हैं। उन को अपनी पहली अवस्था का ज्ञान भी नहीं रहता क्योंकि उनको प्रायः मनुष्यों से घृ... आने लगती है। और उनकी वाणी ऐसी कड़वी होती है कि वह बोलने में आगा पीछा नहीं देखते।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

संविभाग पूर्वक (बांट कर) खाना

आचमन के बाद मधुपर्क का आस्वादन करने के लिये उद्यत वर उस मधुपर्क में से कुछ अंश को भिन्न भिन्न सभी दिशाओं में फेंकता है और उसके बाद अवशिष्ट मधुपर्क का भक्षण करता है।

यह प्रथा गृहस्थ को "संविभाग पूर्वक खाने के कर्तव्य" की स्मृति दिलाती है। उसने त्याग पूर्वक खाना है। "तेन त्यक्तेन भुंजीथाः" "त्याग पूर्वक भोग करो" इस यजुर्वाक्य को अपने जीवन में घटाना है। "यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः" गीता के इन शब्दों के अनुसार अन्य प्राणियों के उपकाररूप यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाकर उसने पापों से दूर रहना है। गीता में कहा है कि जो केवल अपने लिये ही पकाता है वह वस्तुतः पाप का ही उपभोग करता है (अघं स केवलं भुंक्ते यः पचत्यात्मकारणात्)। ऋग्वेद के "केवलाघो भवति केवलादी" ये शब्द अकेले खाने वाले को "शुद्ध पाप का खाने वाला" कह रहे हैं। कोश में "अपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः" यज्ञ न कर स्वयं सब कुछ खाजाने वाले को "चोर" कहा है। वस्तुतः मनुष्य को कोई भी उपभोग उसके अकेले प्रयत्न से कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता। सो परिणामतः अन्यों की सहायता से प्राप्त होने वाले उपभोगों को संविभाग पूर्वक ही भोगना उसका कर्तव्य हो जाता है। मधुपर्क को खाते हुए "भूतेभ्यस्त्वा परिगृह्णामि" इन शब्दों में वह कहता है कि सब प्राणियों के —नकि केवल अपने हित के लिये, मैं तेरा स्वीकार करता हूं। इसी प्रकार यजुर्वेद में लिखा है "भूताय त्वा नारातये" मैं किसी भी पदार्थ का सभी के हित के लिये आदान करता हूँ, न देने के लिये नहीं।

यह दान की प्रथा वस्तुतः वैदिक धर्म की केन्द्रभूत शिक्षा है। इसका वहां इतना अधिक महत्व है कि वैदिक सभ्यता ही त्याग की सभ्यता मानी जाती है। न दान देने वाले को जला दिया जाय "प्रत्युष्टा अरातयः" ऐसा यजुर्वेद में लिखा है। इसी संविभाग व दान का उपदेश मधुपर्क के अंश को विभिन्न दिशाओं में फेंकने से दिया जारहा है।

अलंकृत कन्या

इसके बाद गोदान की विधि होती है, जो कि गोरक्षा का एक मात्र पूर्ण सफल होने वाला उपाय है। गोदान की विधि के अनन्तर कन्या का पिता वर से कहता है—"इस अमुक गोत्र में उत्पन्न हुई अमुक नाम वाली अलंकार धारण की हुई कन्या को आप

वैदिक विवाह

श्री पंडित हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार

[गतांक से आगे]

यहां पिता कन्या को जो अलंकार देता है, वह "स्त्रीधन" ही माना जाता है। संसार-यात्रा में अकल्पित संकट के उपस्थित होने के समय यह धन उसका सहायक हो सकता है। दूसरे, इस रूप में पिता अपनी सम्पत्ति का कुछ अंश अपनी पुत्री को भी दे देता है—जो कि अन्य रूप में उसे नहीं मिलना है।

इस प्रथा का एक आनुषङ्गिक लाभ यह भी है कि इन आभरणों के रूप में देश का सोना व चांदी एक बड़ी मात्रा में देश में बना रहता है और उसका विदेशों के प्रति प्रवाह रुक जाता है।

बाह्य आभूषणों की हानियां भी हैं, पर वे सब अप्रतीकार्य नहीं हैं। उनका कुछ न कुछ उपाय किया सकता है। इसलिये यह प्रथा लाभों के दृष्टिकोण से उपादेय ही है।

शुद्ध खादी का धारण

कन्या-प्रहण के अनन्तर वर वधू को घर में ही कते-बुने व किनारी लगाये गये वस्त्र धारण करने के लिये देता है और स्वयं भी अधोवस्त्र व दुपट्टा धारण करता है।

इस प्रथा में सब से अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि ये वस्त्र महात्मा गान्धी के मन्तव्य के अनुसार शुद्ध खादी के हैं। अब यह प्रमाणित करने की अपेक्षा नहीं रही कि ये वस्त्र यन्त्रनिर्मित वस्त्रों से किसी भी दृष्टिकोण से अवर नहीं है। इनका सबसे बड़ा सौन्दर्य तो यह है कि ये वस्त्र मातृ स्नेह से ओतप्रोत होते हैं—जिस स्नेह की जड़ यन्त्र-निर्मित वस्त्र में गन्ध भी नहीं है।

वस्त्र यद्यपि मुख्यतया शीतोष्ण निवारण के लिये ही धारणीय हैं तथा इनके धारण के समय बोला गया "दीर्घायुत्वाय" शब्द शारीरिक स्वास्थ्य को भी इन का प्रयोजन बतला रहा है। उसके लिये आवश्यक है कि वे मलिन न हों तथा मनु के उपदेश के अनुसार दिन और रात के भिन्न-भिन्न हों। जो कपड़े रात्रि को धारण करके सोया जाय, वे दिन में न पहने जायें।

इन दो प्रयोजनों के अतिरिक्त "शोभा" भी एक प्रयोजन है। वस्त्र धारण के समय बोले गये "यशो भगश्च मा विन्दत्" ये शब्द शोभा रूप प्रयोजन का

श्री (भग) प्राप्त हो; सभा में मैं हास्य होऊं। इसके लिये आवश्यक है कि वस्त्र फटे हों तथा ठीक माप के बने हों। "God made and apparel shapes" यह लोकोक्ति सच कि परमेश्वर मनुष्य को बनाता है तथा वस्त्र शोभान्वित करते हैं। परन्तु यहां पर ध्यान चाहिये कि यह गौण प्रयोजन है। मुख्य प्रयोजन शीतोष्ण-निवारण तथा स्वास्थ्य-वृद्धि ही है। के युग में तो यह गौण प्रयोजन कुछ मुख्य सा गया है परन्तु वैदिक सभ्यता का इसमें ह्रास है

अग्निहोत्र

शुद्ध वस्त्र धारण कर वर वधू अग्निहोत्र करते हैं। उस समय वर पक्ष का एक पुरुष जल कलश ले वेदि पर उत्तराभिमुख हो बैठता है इसी प्रकार एक दूसरा पुरुष दण्ड लेकर यज्ञ समाप्ति पर्यन्त वहां उपस्थित रहता है।

वधू पक्ष का कोई भाई शमी पत्र युक्त धाणा ४ अंजलि शुद्ध सूप में रख के पूर्वाभिमुख बैठता उसी समय वह एक शिला भी वहां रख लेता है।

वेदि पर रखे कुशासनों पर आकर जिस समय यज्ञ कुण्ड की प्रदक्षिणापूर्वक वर वधू बैठते हैं समय वे दोनों ऐसी धारणा करते हैं कि "सब हमारे हृदयों को एक करें" एवं "वधू का मन सिवाय किसी और पुरुष के लिये न हो।" (मन्मनसां करोतु)

पत्नी के दो प्रधान कर्तव्य

कुशासन पर बैठते हुए वर ऋग्वेद १०.८५.४५ शब्दों में कहता है कि "वीरसूर्देवृकामा स्योना भव" अर्थात् तू वीर सन्तानों को जन्म देने वाली तथा मेरे छोटे भाइयों के साथ भी प्रेम से रहने हो। तेरे इस घर में प्रवेश का परिणाम यह न हो हम सब भाई जो अभी तक परस्पर प्रेम से रह उनमें किसी प्रकार का फटाव व मनोमालिन्य पैदा जाय। प्रसिद्ध है कि स्त्रियां "दाराः" हैं; वे भाई को परस्पर लड़ा देने का कारण होती हैं—(दारयन्ति) परन्तु मैं चाहता हूँ कि तू इस घर में प्रवेश किसी घर के व्यक्ति को क्रूर दृष्टि से देखने वाली हो (अघोरचक्षुः)। और इस प्रकार कहीं आप लड़ाकर पति को मारने वाली न बनना। चूंकि वे "मिथो विघ्नाना उपयन्तु मृत्युम्" आपस में हुए भाई तो मृत्यु को ही प्राप्त करते हैं। तो तू छोटे भाइयों पर स्नेह-दृष्टि रखती हुई (अपति पति को न मारने वाली बन।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 30

ार्य रविवार १०श्रावण
वि०सं० २०००

सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती

समाज जामपुर का प्रस्ताव है कि सार्वदेशिक निधि सभा की ओर से भाद्रपद मास में माजों को सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती मनाने का देया जाय। सिन्ध सरकार की विज्ञप्ति द्वारा काश की संभावित ज़ब्ती का खण्डन कर ।। परन्तु समाचार पत्रों में यह समाचार निकल कि कई एक संस्थाएं तथा व्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास को सत्यार्थ प्रकाश में से पृथक् आन्दोलन कर रहे हैं। आर्य पुरुष चाहते हैं प्रकार के आन्दोलनों का विरोध करने के लिये ख्याल किया जाय।

ारी सम्मति में इस प्रकार के आन्दोलनों का ा करने का अचूक उपाय यह है कि देश में प्रकाश जयन्ती मनाई जाय और स्थान २ पर प्रकाश की परीक्षाएं जारी की जांय।

स प्रकार गीता ने भारतवर्ष में निष्काम कर्म- प्रचार किया, उसी प्रकार वर्तमान युग में र्ष में एकेश्वरवाद, एक भाषा वाद और एक का प्रचार करने वाला सत्यार्थ प्रकाश है। र्क सत्य और श्रद्धा का स्वर्णीय मेल है। पुरानी तथा रूढ़िवादी पंडितों के दिमागों को प्रगति ाने का श्रेय सत्यार्थ प्रकाश को है। सत्यार्थ- की खरी समालोचना ने मत मतान्तरों के ीयिक पंडितों को अपने २ धर्म ग्रन्थों की व्या- दलने पर बाधित किया है। ऋषि दयानन्द से मत मतान्तरों के धर्म ग्रन्थों की व्याख्याओं में, षि के बाद की व्याख्याओं में जमीन आसमान तर है। अब वह लोग तर्क युक्ति द्वारा अपने सत्य सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हैं।

मान युग में भारतवर्ष में सत्यार्थ प्रकाश ने गति और चेतनता भारतवर्ष में पैदा की और किसी ग्रन्थ ने नहीं।

ों ज्यों समय बीतता जायगा लोग सत्यार्थप्रकाश हिमा को अधिकाधिक समझेंगे। इस समय माज में जो शिथिलता दिखाई देती है उसको ने के लिये भी आर्य पुरुषों को सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करना चाहिए। यह प्रसन्नता की बात सत्यार्थ प्रकाश की कथा शुरू कर दी है। आर्य समाज के दानियों को चाहिए कि वह इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार के लिये विशेष दान दें। आर्य समाज के विद्वान्-उपदेशकों को चाहिए इन दिनों अपने व्याख्यानों में उपदेशों में, सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित विषयों की ही विशेष रूप से चर्चा किया करें। सार्वदेशिक सभा को भी चाहिए कि वह शीघ्र ही आर्य समाजों की इस मांग को पूरा करने के लिये राष्ट्र के सामने सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती मनाने का कार्यक्रम रखे। इस कार्य क्रम को इस ढंग से बनाया जाय कि इसमें आर्य संस्कृति अभिमानी अधिक से अधिक संख्या में भाग ले सकें। आम तौर से यह कहा जाता है कि सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि ने सम्प्रदायों की बड़ी आलोचना की है। इसका उत्तर देने के लिये ऐसा ग्रन्थ प्रकाशित कराना चाहिए जिसमें विविध धर्म ग्रन्थोंमें विविध आचार्यों द्वारा एक दूसरे पर किये गये कटाक्षों तथा समालोचनाओं का तुलनात्मक संग्रह उन्हीं के अपने शब्दों में प्रकाशित किया जाय। इस प्रकार के ग्रन्थ प्रकाशन से जनता को यह पता लगेगा कि ऋषि दयानन्द अन्य धर्माचार्यों के मुकाबले में कितने उदार और संयत वाक् थे।

इसके इलावा भारत वर्ष के बड़े २ शहरों में सत्यार्थ प्रकाश व्याख्यान मालाएं जारी करानी चाहिए। प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा इन व्याख्यान मालाओं में व्याख्यान कराने चाहिए।

भीमसेन

पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पतिः—

पं० प्रियव्रत जी विद्यावाचस्पति आचार्य दयानन्दोपदेशक विद्यालय, १ अगस्त से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आचार्य नियत होकर लाहौर से विदा हो रहे हैं। पंजाब की आर्य सामाजिक जनता उनके विद्वत्तापूर्ण प्रभावशाली वेद प्रवचनों से सुपरिचित है। दयानन्दोपदेशक विद्यालय के आचार्य पद पर कार्य करते हुए उन्होंने विद्यालय के शिक्षा सम्बन्धी वातावरण को उन्नत करने का प्रशंसनीय यत्न किया है। विपरीत परिस्थितियों में भी विद्यालय की आर्थिक स्थिति को उन्नत करने के लिये भरसक यत्न करते रहे हैं। सभा की आज्ञानुसार अब वह कर्त्तव्य बुद्धि से गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के आचार्य पद को स्वीकार कर रहे हैं। पंडित प्रियव्रत जी के लाहौर से हरद्वार चले जाने से पंजाब की आर्य जनता को उनके प्रभावशाली व्याख्यान सुनने का पहले की अपेक्षा कम अवसर मिलेगा—परन्तु आर्य समाज के प्रेमियों को यह सन्तोष होना चाहिए कि उनकी प्रिय हैं, जिसने अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म का प्रचार करना बनाया हुआ है। इसी भाव से उन्होंने अपना जीवन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित किया हुआ है। उनके लिये सभा तथा उसकी संस्थाएं ही एक मात्र 'लक्ष्य तथा ध्येय है।

हम आशा करते हैं कि पं० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति अपने व्यक्तित्व तथा स्वाध्यायशील स्वभाव से गुरुकुल को, आर्य समाज तथा आर्य जाति के लिये अधिक से अधिक उपयोगी बनाएंगे।

इस अवसर पर उन्हें आशीर्वाद तथा उत्साह देने के लिये लाहौर में उनका अभिनन्दन किया जा रहा है। पं० कृष्ण जी ने इस विदाई के उपलक्ष में उन्हें जलपान दिया। श्री देवराज जी प्रधान स्नातक मंडल ने भी उन्हें निमंत्रित किया। अब २४, २५ जुलाई को आर्य समाज बच्छोवाली तथा लाहौर की आर्य समाजों की ओर से उन्हें विदाई दी जा रही है। हमें विश्वास है कि जनता की यह शुभ कामनाएं तथा वृद्ध आर्य पुरुषों के आशीर्वाद उन्हें इस नए कार्य क्षेत्र से कामयाब बनाएंगें। हम पंजाब की आर्य जनता की ओर से इस अवसर पर मैं पं० प्रियव्रत जी का इस नए कार्य क्षेत्र में शुभाभिलाषा के साथ स्वागत और अभिनन्दन करता हूँ।

—भीमसेन

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २।) Immortal Sayings ofDayanand ।)
जीवन ज्योति १।) दयानन्द रत्न माला ।)
स्वाध्याय संग्रह ।।।) वैदिक धर्म की जय ।।।)
वैदिक स्वर्ग ।।।) यास्क युग ।।।)
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास २)
देव यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand१।)
पीयूषबिन्दु ।–) त्रिदेव निर्णय ।।।)
निरुक्त का मूल वेद में ।–)
Hindu America५) Light of Truth ३)

शरीर विज्ञान पर नवीन पुस्तक

शारीरिक उन्नति

श्री पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य अमृतधारा कृत नवीन उर्दू पुस्तक अभी-अभी प्रकाशित हुई है। जिसमें हर प्रकार के व्यायाम तथा आसनों द्वारा शरीर को बल बढ़ाने की विधि बड़ी उत्तम रीत से पेश की गई है। मूल्य ।।।)

श्री चमूपति साहित्य विभाग
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

भारत में ईसाई

श्रीयुत महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फ़ाज़िल

अनेक लेखकों का मत है कि भारत में ईसाई-धर्म का बीजवपन प्रभु ईसा मसीह के एक ऐसे शिष्य ने किया था जो उनके बारह विशेष शिष्यों में से एक था, अर्थात् उन्नीस सौ वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हुआ जब ईसाई-धर्म का प्रचार भारत में किया गया था। परन्तु चिरकाल तक उसकी दशा बहुत अच्छी नहीं रही और यहां उसका प्रसार नहीं हो सका। सन् १४९८ ई० में जब सुप्रसिद्ध पुर्चगीज़ वास्को डी गामा भारत में आया और उसके पश्चात् पुर्चगीज़ों तथा कुछ अन्य योरपीय जातियों की शक्ति भारत में प्रबल हुई तब ईसाई-धर्म का ज़ोर बढ़ा और अब बीसवीं सदी में तो आश्चर्यजनक गति से उसका प्रसार बढ़ रहा है।

ब्रिटिश भारत, देशी राज्य, ब्रिटिश बलोचिस्तान अण्डमन व निकोबार (ब्रह्मा व सीलोन को छोड़कर) में सन् १९०१ ई० की जन-गणना की रिपोर्ट के अनुसार ईसाइयों की संख्या २७, ८९, ६२२ थी। सन् १९३१ ई० की जनगणना में यह संख्या ५९, ६५, ६५७ और सन् १९४१ ई० की जनगणना में ६३ लाख हो गई। समस्त भारत में जितने ईसाई हैं उसके आधे से कुछ अधिक ही दक्षिण-भारत में हैं। मद्रास-प्रान्त में प्रत्येक एक हज़ार में ईसाइयों की संख्या ४० ठहरती है। ट्रावन्कोर व कोचीन राज्य, आसाम, बिहार, बङ्गाल और पञ्जाब में भी उनकी संख्या में बहुत वृद्धि हुई है।

सन् १९४१ ई० की जनगणना की विस्तृत रिपोर्ट अभी प्रकाशित नहीं हुई है। अतः हम प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर यह दिखलाते हैं कि भारत के कुछ प्रान्तों में सन् १९०१ ई० की अपेक्षा सन् १९३१ में उनकी संख्या कहाँ तक बढ़ी है—

प्रान्त या राज्य	सन् १९०१ ई०	सन् १९३१ ई०
आसाम	३५,९६९	२,४९ २४६
संयुक्त प्रान्त	१,०२,४६९	२,०७,८९६
पंजाब	६५,८११	४,१९,३५३
मैसूर	५,०५९	८७,५३८
हैदराबाद	२२,९९६	१,५१,३८२
ट्रावंकोर	६,९७,३८७	१६,०४ ४७५
कोचीन	१,९८,२३९	३,३४,८७०

एक ईसाई लेखक का मत है कि जितने ईसाई शहरों में हैं, उसके चार गुने देहातों में हैं।

भारत के जो स्थान पुर्चगोज़ व फ्रांसीसियों के अधिकार में हैं, यदि वहां के ईसाइयों की भी संख्या जोड़ ली जाय तो ईसाइयों की संख्या और अधिक

२,८६,४१० जनता में से कुल ईसाई २४,९२८ थे, और पुर्चगीज़ भारत में कुल ईसाई २,८९,२०३ थे, अर्थात् पुर्चगीज़ भारत की सारी जनता ५,७९,९७० का आधा भाग ईसाई है।

सन् १९३९-४० ई० में ईसाई-धर्म-प्रचारकों आदि में विदेशी ईसाई स्त्री-पुरुषों की संख्या ४,९३५ थी। कई प्रदेशों में इन विदेशी कार्यकर्ताओं की सख्या इस प्रकार रही है—

प्रान्त	संख्या	प्रान्त	संख्या
आसाम	१४९	संयुक्त प्रान्त	७००
बङ्गाल	४८४	पंजाब	३९०
बिहार	३३०	मध्यप्रदेश व बरार	४००
बम्बई	६४३	मदरास	९१०

विदेशी ईसाई अनेक देशों के हैं। इनमें से युद्ध के कारण जर्मनी व इटली के सभी अथवा अधिकांश भारत-सरकार के आदेशानुसार नज़रबन्द हैं, अतएव उनकी संख्या यहां नहीं दी गई।

हम में से बहुतेरे लोग ईसाइयों की संख्या का अन्दाज़ा केवल जनगणना की रिपोर्टों से लगाते हैं, जो प्रति दस वर्ष पर सरकार द्वारा प्रकाशित हुआ करती हैं। निस्सन्देह ये रिपोर्टें बड़े काम की होती हैं, परन्तु जो रिपोर्टें स्वयं ईसाइयों के द्वारा समय-समय पर प्रकाशित हुआ करती हैं, वास्तव में वे बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं; क्योंकि ऐसी रिपोर्टों से ईसाइयों की बढ़ती हुई संख्या का ही पता नहीं लगता, बल्कि उन मूल-कारणों का भी पता लगता है जिनसे उनकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है।

प्रोटेस्टएट ईसाई

सन् १९४० ई० में नागपुर की नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल के द्वारा "डायरेक्टरी आफ़ क्रिश्चियन मिशन एण्ड चर्चेज़ १९४०-१९४१" के नाम से एक उपयोगी पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें सन् १९४० ई० से पहले की कुछ बातें हैं। इससे प्रोटेस्टएट ईसाइयों की बाबत कम से कम बातें मालूम होती हैं—

(१) भारत में ईसाइयों की संख्या।

(२) ईसाई धर्म-प्रचार के लिए देशी व विदेशी काम करने वाली संस्थाओं की संख्या।

(३) ईसाइयों के उद्योग-धन्धे आदि।

उक्त डायरेक्टरी से प्रकट होता है कि भारत में संस्थायें काम कर रही हैं उनमें १४७ का प्रधान लय बाहर के जिन देशों में रहा अथवा है उसका इस प्रकार है—

देश	संख्या	देश
१—इँग्लैण्ड	४३	७—संयुक्तराज्य(अमरीका)
२—स्काटलैण्ड	७	८ - कनाडा
३—आयर्लैण्ड	५	९—आस्ट्रेलिया
४—स्वीडन	६	१०—डेनमार्क
५—नारवे	२	११—फि लैण्ड
६—जर्मनी	२	१२—न्यूज़ीलैण्ड
		१३ - स्वीटज़र्लैण्ड

परन्तु उपर्युक्त १४७ के सिवा ८ ऐसी संस्थ जिन में से प्रत्येक के दो मन्त्री हैं और वे दो भिन्न देशों में रहते हैं। इस प्रकार कुल १५ प्रधान कार्यालय विदेशों में ठहरता है। किन्तु अतिरिक्त ४१ संस्थायें और हैं, जिनका प्रधान लय भारत के ही किसी न किसी प्रदेश में है।

पत्र-पत्रिकायें और छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रचार-कार्य के निमित्त कुछ कम उपयोगी चीज़ हैं। इस विषय में भी प्रोटेस्टएट ईसाइयों की ओ बहुत कुछ हो रहा है। इनके प्रेसों की संख्या ४३ अब ज़रा यह जान लेना चाहिए कि कुछ प्रेस स्थापित होने की नौबत कब आई थी—

प्रेस का नाम व स्थान	स्थापना
१—लीपज़िग इवंजिलिकल, ट्रावन्कोर	१७१२
२—बैपटिस्ट मिशन, कलकत्ता	१८१८
३—उड़ीसा मिशन, कटक	१८३८
४—वेसलियन मिशन, बङ्गलोर	१८४०
५—मोराविअन मिशन, लद्द ख़	१८८३
६—मेथाडिस्ट मिशन, मदरास	१८८५

पत्र-पत्रिकायें दो सौ से कुछ कम (और १७ अधिक) देशके भिन्न२ भागोंसे भिन्न२ भाषाओं में नि लती हैं। लिखित प्रचार के निमित्त १४ से कम सो यटियाँ नहीं हैं। इनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषाओंमें ब बड़ी पुस्तकों व ट्रैक्टों आदि का प्रचार हुआ है। बिल (जो ईसाइयों का मूल-ग्रन्थ है) का अनुवाद भाषाओं में हो चुका है। परन्तु बाइबिल के किस किसी खण्ड का अनुवाद ४३ भारतीय भाषाओ अलग हो चुका है। इलाहाबाद की नार्थ इण्डि क्रिश्चियन ट्रैक्ट एण्ड बुक सोसायटी (स्थापित १८४८ ई०) की रिपोर्ट (१-७-४० से ३०-६-४१ से पता चलता है कि उक्त वर्ष इस संस्था की ओ प्रकाशनार्थ पांच हज़ार चार सौ अरसठ रुपया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 30

होता है कि इस मद में काफ़ी अधिक धन व्यय जाता है।

रोमन कैथोलिक

नका कार्य प्रोटेस्टण्ट ईसाइयों से बिल्कुल पृथक् । भारत मे प्रोटेस्टण्ट ईसाइयों की ओर से ७०६ ई० में कार्य आरम्भ हुआ था। रोमन कों की ओर से इससे बहुत पहले ही सन् ई० या इसके बाद ही कार्य आरम्भ हुआ था। संख्या की दृष्टि से भारत में रोमन कैथोलिक ण्ट ईसाइयों से बहुत ज़्यादा नहीं बढ़े हैं, तथापि समझना चाहिए कि ये लोग कुछ कम बढ़ रहे ई प्रदेशों में इनकी संख्या जितनी बढ़ी है उसका इस प्रकार है—

ान्त या राज्य	सन् १६०१	सन् १६३१
ज्जाब	७१०१	५८,२०६
ोचीन	७६,२२१	१,६५०३
ैसूर	३७,६१६	५२,४३७
ावन्कोर	१,३२,५८८	३,६०,२१७
ैदराबाद	११,६४६	२१२५६
ड़ौदा	४०४	२,०८७
ाश्मीर	३३	१२४

सोसायटी आफ़ ज़ीसस' के नाम से सेण्ट टायस लोओला ने पेरिस में एक सङ्घ सन् १५३४ स्थापित किया था। इस सङ्घ के अनुयायी । कहे जाते हैं। उसी अन्य सङ्घ या विचार क कारण अनेक रोमन कैथोलिक—कैपूचिस, ल, अगस्टीनियंस, फ्रांसिसकन्स आदि भी कहे , किन्तु ऐसे लोग चाहे जिस देश में हों, रोम ी) के पोप को ही अपना सब से बड़ा प्रधान हैं।

ारत में इटली, फ्रांस, जर्मनी, पुर्तगाल आदि देशों के रोमन कैथोलिक कार्य कर रहे हैं। से सब लोग एक ही सङ्घ या विचार-धारा के । सम्भवत: जेसुइत ईसाइयों के द्वारा भारत में कार्य हुआ है। सम्राट् अकबर के दरबार में ही आये थे। स्पेन-निवासी सुप्रसिद्ध मिशनरी फ्रांसिस ज़ेवियर जेसुइत था। यह ६ मई सन् ई० को भारत में पहुँचा था। इसका शव चाँदी सुन्दर सन्दूक में अब भी गोआ में सुरक्षित है। ज़ारों ईसाई उसके दर्शन के निमित्त जाया करते यदि सब नहीं तो अनेक उसके पैरों को चूमते के द्वारा उसने धर्म के हेतु बहुत बड़ी यात्रा की सन् १५४० ई० में उसने रोम (इटली) से भारत बात को चार सौ वर्ष व्यतीत हुए। इस अवसर प उस धर्म-प्रेमी की स्मृति में 'इन ज़ेवियर्स फुटस्टेप्स' नाम का एक अति सुन्दर ग्रन्थ कैथोलिक मिशन प्रेस आनन्द (बम्बई प्रान्त) से सन् १६४० ई० में प्रकाशित हुआ है। इससे ईसाई-धर्म-प्रचार-सम्बन्धी अनेक बातों का पता चलता है।

रोमन कैथोलिक ईसाइयों का कार्य उत्तरी भारत के कुछ स्थानों—छोटा नागपुर (राँची) व पंजाब में कुछ कम ज़ोरों के साथ नहीं हो रहा है, किन्तु इनका विशेष ज़ोर दक्षिण-भारत में है।

आरमेनियन स्ट्रीट मद्रास के गुड पास्टर प्रेस से कैथोलिक डायरेक्टरी नाम की पुस्तक प्रकाशित हुआ करती है। इसका जो संस्करण सन् १६४१ ई० का है उससे रोमन कैथोलिकों की संस्थाओं व उनके कार्यकर्ताओं आदि का बहुत-सा परिचय मिल जाता है। इस डायरेक्टरी व पूर्वलिखित प्रोटेस्टण्ट ईसाइयों की डायरेक्टरी के अनुसार ईसाई संस्थाओं की संख्या इस प्रकार है—

विषय	प्रोटेस्टण्ट	कैथोलिक
१—कृषि-विषयक	७५	१
२—कोआपरेटिव सोसायटीज़	४६	२
३—कला-कौशल	१६५	१३५
४—औषधालय	३४६	२७६
५—अस्पताल	२८६	६०
६—कोढ़ीखाने	६७	६
७—क्षय-रोगी-अस्पताल	११	...
८—गूँगे व बहरे आदि	१५	...
६—अनाथालय	१५३	२१५
१०—अन्य	१७७	...

कला-कौशल-विषयक संस्थाओं के अतिरिक्त यदि कालेजों व छोटे-बड़े स्कूलों की संख्या भी सम्मिलित की जाय तो संस्थाओं की संख्या बहुत अधिक ठहरती है। सन् १६३४ ई० या इस सन के आस-पास में ईसाइयों के अनेक स्कूल टूटे। इससे अनेक लोगों ने समझा कि ईसाइयों के कार्य में शिथिलता आ गई है। किन्तु वास्तविक बात यह है कि अक्षर-बोध कराने वाले स्कूलों व विद्यालयों के बदले शिल्प-कला के स्कूलों व अस्पतालों को अपने उद्देश्य के निमित्त अधिक उपयोगी समझा गया, इस कारण अधिक शक्ति व सामग्री उक्त दोनों बातों के निमित्त लगा दी गई है।

दक्षिण-भारत के कहनाडी (मलबार) नामी स्थान में चिकित्सा-विषयक एक संस्था है। सन् का) इस प्रकार रहा है:—

१८६ कोढ़ियों की चिकित्सा कुष्ठाश्रम में हुई।

३५३८ ऐसे स्त्री-पुरुषों की चिकित्सा हुई जो वहां के अस्पताल में रहे।

३५६६० बाहरी रोगियों की संख्या रही।

३८७५ पत्र ऐसे थे, जिनके द्वारा केवल रोगों की दवा बताई गई।

१५६०८ पैकिट तथा पार्सल औषधियों के भेजे गये।

प्रोटेस्टण्ट और रोमन कैथोलिक के सिवाय कुछ अन्य प्रकार के भी ईसाई हैं। परन्तु भारत में उक्त दोनों का ही ज़ोर बहुत हो रहा है। इस कारण केवल उक्त दोनों के विषय मे ही कुछ बतलाना आवश्यक था। हाँ, अब अन्त में लेख को समाप्त कर देने से पहले ही यह कहना चाहता हूँ कि बड़ा भारी ख्याल यह है कि ईसाई-धर्म-प्रचार के निमित्त जो कुछ हो रहा है वह सर्वथा विदेशी द्रव्य व विदेशी व्यक्तियों के बूते पर है। परन्तु इस बात को सोलहों आना ठीक न मानना चाहिए, क्योंकि सन् १६०५ ई० से भारतीय ईसाइयों की एक संस्था नेशनल मिशनरी सोसाइटी के नाम से स्थापित है। इसके काम-काज और आय-व्यय की सारी ज़िम्मेदारी भारतीय ईसाइयों पर है। इसका प्रधान कार्यालय आजकल मद्रास में है। वहां से संस्था की जो रिपोर्ट सन् १६४१ ई० की प्रकाशित हुई है उससे प्रकट है कि वार्षिक व्यय लगभग ५६, १३३ रुपया हुआ और कुल आय लगभग ५५ ६७६ रुपया रही। इसकी ओर से भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के दस स्थानों में कार्य हो रहा है, और यही वह बात है जो विशेष महत्त्व की है।

आर्य समाज जेहलम का निर्वाचन

आर्य समाज गुरुकुल विभाग, मशीन मुहल्ला नं० २ का वार्षिक निर्वाचन ४ जुलाई को निम्न लिखित हुआ।

प्रधान—श्री भाई शिव नारायण जी वकील। उप-प्रधान—(१) सेठ जय कृष्ण जी, (२) म० मुनीलाल जी। मन्त्री—राजा राजसिंह। सयुक्त मन्त्री—पं० कृष्णचन्द जी। उपमन्त्री—ला० मदनलाल जी। पुस्तकाध्यक्ष—ला० मदनलाल जी चडढा। निरीक्षक—ला० विश्वम्भरदास जी। कोषाध्यक्ष—डा० रामचन्द्र जी भण्डारी, ला० सीताराम जी। प्रतिष्ठित सभासद—(१) आचार्य रामदेव जी, (२) ला० हरकृष्ण लाल जी। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग बड़ी सफलता से हो रहे हैं। उपस्थिति बहुत होती है आचार्य रामदेव जी और पं० शिवकुमार जी शास्त्री मनोहर उपदेश करते हैं। स्त्री समाज के सत्संग भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

दक्षिण का कुरुक्षेत्र

[श्री क्षितीशकुमार जी वेदालंकार]

हमारी सभा के ओजस्वी व्याख्याता श्री पं० क्षितीशकुमार जी निज़ाम प्रतिनिधि सभा की ओर से आमन्त्रित होकर हैदराबाद गये थे। रियासत में डेढ़ मास तक प्रचार करके हाल ही में आप वहां से लौटे हैं। हमारे विशेष आग्रह पर आपने अपनी प्रचार-यात्रा के संस्मरण लिखना स्वीकार कर लिया है। उस सिलसिले में यह प्रथम लेख पाठकों की भेंट है।

—संपादक

कुरुक्षेत्र ने न जाने कितनी बार भारत के भाग्य का निर्णय किया है। यह चालीस-एक मील की पट्टी का मैदान कितनी बार रक्त से आप्लावित हुआ है! पाण्डवों के उस अति प्राचीन काल से लेकर मराठों के साम्राज्य के पतन तक—जो इतिहास की दृष्टि से अभी कल की-सी घटना प्रतीत होती है—कभी कुरुक्षेत्र के रूप में, कभी तरावड़ी के रूप में, कभी पानीपत के रूप में, विजयगर्वोन्मत्त रणलोलुप अश्वारोहियों के कोलाहल से मुखरित इस मैदान की धूलि ने लोहे के टुकड़ों से खून के फ़व्वारे निकलते देखे हैं और देखा है अपनी ही आँखों से भारत के भाग्य का सूर्य अस्त होते हुए।

यह उत्तर भारत का कुरुक्षेत्र है। ठीक इसी प्रकार दक्षिण भारत का भी एक कुरुक्षेत्र है जो इसी कुरुक्षेत्र की तरह दक्षिण भारत के भाग्य का कई बार निर्णय कर चुका है। जिस प्रकार उत्तर पश्चिम से आक्रमण करने वाली खूंख़ार विजयवाहिनियों के लिए कुरुक्षेत्र का मैदान अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण एक अनिवार्य युद्धस्थली रहा, बिना इसको पार किये भारत के समग्र उत्तर-पूर्व को आच्छादित करके एक साम्राज्य के स्वप्न लेना असम्भव था, ठीक इसी प्रकार दक्षिण में भी कृष्णा और तुङ्गभद्रा की धाराओं से सिंचित भूभाग अपनी असामान्य भौगोलिक परिस्थितियों के कारण समग्र दक्षिण में एकच्छत्र आधिपत्य स्थापित करने के स्वप्न लेने वालों के लिये अनिवार्य युद्धस्थली रहा है। जिस प्रकार इस कुरुक्षेत्र की सारी उत्तरीय रेखा हिमालय की अलंघ्य हिमाच्छादित चोटियों से पटी पड़ी है, और दक्षिण-पश्चिम में भयंकर रेगिस्तान है, इसलिये उत्तर-पश्चिम से आक्रमण करने वाली जातियों को पूर्व की तरफ़ बढ़ने के लिये इस अँधरे मैदान से ही गुज़रना पड़ता और भारतीय शासकों के लिये भी उन आक्रान्ताओं को इस द्वार पर ही रोकना सबसे अधिक आसान और श्रेयस्कर जँचता था। ठीक इसी प्रकार कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच का यह दोआबा—जो सतलुज और व्यास के दोआबे की ही तरह अत्यन्त उपजाऊ है—पूर्व में पूर्वीघाट और पश्चिम में पश्चिमी घाट की पहाड़ियों से शृंखलित है, उत्तर में कृष्णा और दक्षिण में तुंगभद्रा—इन दोनों की धाराओं ने उसे क़िले की खाइयों की तरह सुरक्षित किया हुआ है। इसी दोआबे में तालीकोट नामक स्थान की रक्तरंजित भूमि में विजयनगर के हिन्दू राजाओं और गोलकुण्डा के बहमनी राजाओं की अन्तिम लड़ाई हुई थी, और इसी भूमि ने दक्षिण

इसीलिए ऐतिहासिकों ने इस भूभाग को दक्षिण का कुरुक्षेत्र कहा है।

× × ×

इस दुआबे का सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र और

अश्रुमय हैं आज लोचन

श्रीमती सत्यवती शर्मा

थरथराया गात मेरा, मौन-सी है आज वाणी।
अधर कम्पित मूक स्वर, पर हृदय में उमड़ी कहानी।
शिथिल पग ले चल पड़ी मैं, खोजता कुछ प्राणमें मन।
अश्रुमय हैं आज लोचन।
शान्त नौका वह रही थी, हहरकर तूफ़ान आया।
मिट चला आलोक रवि का, दिवस में है तिमिर छाया।
भ्रान्त तरणी के पथिक सब, हो गया अज्ञात जीवन।
अश्रुमय हैं आज लोचन।
उग्र हैं जल की तरंगें, तीर के तरु-पात डोले।
सिमिट पंखों में छिपे सब नीड़े के शिशुवृन्द भोले।
विजन के उस पार पंछी, खोजता आधार के कण।
अश्रुमय हैं आज लोचन।
कौन जाने कब मिटेगा विश्व का तूफ़ान भीषण।
कौन जाने कब बुझेंगे पवन से ये अग्नि के कण।
विषम यह कैसी समस्या, सोचती मैं आज उन्मन।
अश्रुमय हैं आज लोचन।

विख्यात शहर है रायचूर। इस प्रदेश में कन्नड़ भाषा बोली जाती है, इसी से यह स्पष्ट है कि वास्तव में यह कर्नाटक का हिस्सा है। मुझे अपने हैदराबाद के डेढ़ मास के प्रवास-काल में सबसे पहले इस रायचूर आर्य समाज के ही वार्षिकोत्सव पर जाने का अवसर मिला। इस सारे ज़िले में निज़ाम स्टेट की प्रतिनिधि सभा की ओर से एक उपदेशक नियत है, नाम है उनका नरसिंहराय। मुझे बड़ी हैरानी हुई कि इतने स्वल्प वेतन पर यह नवयुवक कितनी लगन से काम करता है। और यह गुण तो स्टेट के सभी उपदेशकों में

मन्त्री महोदय? इसी कांग्रेस-आन्दोलन के सिले में जब बना किसी बात के उन्हें जेल के सी में बन्द कर दिया, तो उन्होंने भूख हड़ताल कर कि जब तक हवन करने का सामान नहीं मिलेगा तक रोटी नहीं खायेंगे। दृढ़-व्रती के सामने भला दु की ताक़तें कब और कहां टिकी हैं? आख़िर अधिकारियों को झख मारकर उनकी मांग स्वी करनी पड़ी। नित्य प्रति सन्ध्या-हवन, नित्य व्याय प्राणायाम, शुद्ध-सात्त्विक जीवन, सद्व्यवहार उनकी नियमपरायणता के लिये जेल के अधि भी कितने क़ायल हो गये थे, यह स्वय मैंने अ आँखों से देखा है—अब जब कि जेल से छूटने बाद कभी जेल के सामने से गुज़रते हुए वे कि श्रद्धाभाव से झुक कर उनको सादर नमस्ते कि करते थे।

इन्होंने एक कन्या पाठशाला खोली हुई है, जि वे स्वयं सारा समय देकर कन्याओं को धर्म शि हिन्दी, तथा अन्य शिक्षा सम्बन्धी विषयों के स लाठी चलाना भी सिखाते हैं। इतने सुदूर दक्षिण कन्नड़ भाषा भाषी प्रदेश में आकर भी जब बालिकाओं को शुद्ध हिन्दी में बातचीत करते दे तभी सहसा यह ज्ञान हुआ कि आर्यसमाज ने कि प्रकार इस इतने लम्बे चौड़े देश को एक बना प्रत्येक भारतीय के अन्दर एकात्मीयता की भावना सृष्टि कर दी है, और तभी इसके संस्थापक के प्र श्रद्धा से मस्तक झुक गया और यह विश्वास हृदय बद्धमूल हो गया कि जितना अधिक उसके मिशन प्रचार होगा उतनी ही अधिक देश के अन्दर राष्ट्री की लहर एवं स्वतन्त्रता के प्रति तड़प जन्म लेगी।

और नहीं भुलाया जा सकता उस परम प्र डाक्टर को भी, जिसको नृशंस पुलिस के कर्म सड़क के ऊपर मारते-पीटते ले गये और जेल में जाकर बन्द कर दिया—केवल इसलिये कि वह जुलूस के दर्शनार्थियों में से एक था, और पुलिस हटाने पर भी नहीं हटा था। कितना आत्म सम भर दिया है आर्यसमाज ने उनके अन्दर, कि सहनशीलता!

× × ×

और समाज का वार्षिकोत्सव? वह तो श्रोत की अत्यधिक उपस्थिति में खूब शान से निर्विघ्न निर्विघ्न—क्योंकि किसी प्रकार का विघ्न न होना, से कम स्टेट के अन्दर, एक बहुत बड़ी बात समाप्त हो ही गया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 501

(पृष्ठ २ का शेष)

...ां "वीरसूः" शब्द सर्वप्रथम कर्तव्य का संकेत ...है—गृहस्थाश्रम में प्रवेश का उद्देश्य ही वही ...को निर्बल सन्तानों की आवश्यकता नहीं। ...साहित्य में तो पुत्र का 'वीर' पर्याय ही कहा ...(यजमानस्य वीरो जायताम्)। पुत्र-पति ...ी को अवीरा=वीर रहित कहते हैं। जिस ...पति पत्नी अपने इस कर्तव्य को न भूलेंगे वह ...ा क्षीण व पराधीन हो सकेगा? उस राष्ट्र के ...य के सूर्य की चमक कभी भी मन्द न हो ...॥

...त्र के दूसरे शब्द "देवृकामा" का यदि पत्नी ...मरण न कर दिया तो वह घर सदैव प्रफुल्लित व ...होता हुआ पार्थिव स्वर्ग बना रहेगा। यहां ...मा' शब्द का दूसरा कोई अर्थ करना अभिप्रेत ...नहीं है। चूंकि एक क्षण पूर्व ही वर वधू से कह ...है—वह तू "मन्मनसा" मेरे से भिन्न अन्य ...को हृदय में स्थान देने वाली न हो।

राष्ट्रभृत् जयाहोम अभ्यातान

परार्थ व स्वार्थ

...ग्निहोत्र की सामान्य आहुतियों को देने के बाद ...न्त्रों से राष्ट्रभृत् आज्याहुतियां दी जाती हैं और ...म्म की १३ आहुतियां देकर अभ्यातान होम ...: आहुतियां देनी होती हैं।

...राष्ट्रभृत्" शब्द का अर्थ राष्ट्र का पोषण करने ...तथा "अभ्यातान" शब्द का अर्थ "वैयक्तिक ...ण विकास करने वाली" है। इन दोनों के बीच ...य निहित है। राष्ट्रभृत् मन्त्रों में "स नः इदं ब्रह्म ...तु" इन शब्दों में नः=हम सब के—न कि ...मेरे—ब्रह्म व क्षत्र की रक्षा के लिये प्रार्थना है। ...अभ्यातान मन्त्रों में "स मा अवतु अस्मिन् ...अस्मिन् क्षत्रे" 'वह मा=मुझे इस ब्रह्म व क्षत्र ...ास में सुरक्षित करने वाला हो' इस प्रकार से ...की गई है।

...हले सामूहिक प्रार्थना है, अन्त में वैयक्तिक ...है। राष्ट्र व व्यक्ति दोनों के ही ब्रह्म व क्षत्र ...ा के लिये प्रार्थना की गई है। परन्तु क्रम से ...ष्ट है कि व्यक्ति की बजाय राष्ट्र का महत्व ...है। जहां यह राष्ट्र-हित प्रथम स्थान पाता है ...थान पर वस्तुतः "राष्ट्र भावना" की जागृति ...-वहीं राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का अंकुर उत्पन्न होता ...क्ति की भावना को प्राधान्य मिल जाने पर ...स्वतन्त्रता का अपहरण हो जाता है—जय के ...प्राप्त करता है और

पराजित राष्ट्र के व्यक्ति भी आक्रान्ताओं के पांवों तले रोंदे जाते हैं। अतः व्यक्ति का कल्याण अन्ततो गत्वा राष्ट्र के स्वातन्त्र्य में ही निहित है।

यहां प्रत्येक पति पत्नी को संसार में प्रवेश करते समय—राष्ट्र का Active अंग बनते समय—किस सुन्दरता से यह उपदेश दे दिया गया है कि वह राष्ट्र-हित को वैयक्तिक हित से अधिक महत्व दे। वस्तुतः इस प्रकार परार्थ से वह स्वार्थ को ही सिद्ध कर रहा होता है। यही गीता की "परस्परं भावयन्तः" परस्पर आदर करने की भावना है। यही यज्ञ है। यह उत्कृष्ट कल्याण पाने का मार्ग है। राष्ट्र के लिये अपनी बलि देकर वह व्यक्ति अपनी ही आगे आने वाली पीढ़ी का कल्याण कर रहा होता है।

जिस राष्ट्र के व्यक्तियों में यह भावना भरी हुई होती है उसी राष्ट्र को "पृतनाः जयेषु" (जयाहोम के मन्त्रों में) विजयशील सेनायें प्रजापति परमेश्वर की ओर से प्राप्त होती हैं। (क्रमशः)

पंजाब वैदिक पुस्तकालय

[श्री विश्वनाथ जी शास्त्री एम०ए० पुस्तकाध्यक्ष, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर]

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के ५ उद्देश्य हैं। उनमें से दूसरा उद्देश्य यह है कि सर्वसाधारण के लाभार्थ धार्मिक तथा विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों का एक पुस्तकालय स्थापित करना। इस द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति के लिये सभा ने सन् १८९५ में पंजाब वैदिक पुस्तकालय की स्थापना की। पुस्तकालय में सन् १९०० में ४७७९ पुस्तकें थीं। सन् १९०१ में पुस्तकों की तीन सूचियाँ प्रकाशित हुईं। १. संस्कृत, हिन्दी पुस्तकें। २. उर्दू, फारसी तथा अरबी पुस्तकें। ३. अंग्रेजी पुस्तकें। १९०१ में प्रकाशित सूची के प्रारम्भ में यह वर्णन आता है कि उस समय इस पुस्तकालय में ४ उपपुस्तकालय भी सम्मिलित थे। १. पं० लेखराम उपपुस्तकालय—११०० पुस्तकें। २. लाहौर आर्य समाज उपपुस्तकालय—३८० पुस्तकें ३. ला० जीवनदास उपपुस्तकालय—७६० पुस्तकें ४. पं० दीवानचन्द उपपुस्तकालय—२०० पुस्तकें उपर्युक्त सूची में यह भी वर्णन है कि पुस्तकालय में ६०० हस्तलिखित पुस्तकें थीं जिन में अधिकतर बौद्ध, जैन और पौराणिक धर्म की पुस्तकें हैं। उस समय पुस्तकालय के साथ वाचनालय भी जारी हो चुका था। हिन्दी पुस्तकों के दो क्रोड़ पत्र भी पश्चात् प्रकाशित हुए। उर्दू पुस्तकों का एक करोड़ पत्र प्रकाशित हुआ। अंग्रेज़ी पुस्तकों की संशोधित सूची १९१३ में प्रकाशित हुई। इस सूची से पता चलता है कि उस समय अंग्रेज़ी की पुस्तकों का वर्गीकरण किया गया था। पहिले पहल पुस्तकालय में श्री कर्मचन्द जी, श्री खज़ानचन्द जी, श्री गोवर्धन लाल जी और श्री सुखलाल जी पुस्तकालयाध्यक्ष का काम करते रहे। १९१६ में महाशय मदनलाल जी, १९२१ में महाशय दिग्पाल जी और १९२२ में म० मणिराम जी पुस्तकालयाध्यक्ष होकर आए। १९२४ में म० मदनलाल जी पुनः पुस्तकालय कला की ट्रेनिंग लेकर यहां आए और उन्हों ने डियूई के दशम वर्गीकरण के अनुसार पुस्तकों का वर्गीकरण किया। पहले पुस्तकों का सूचीपत्र मुद्रित होता था। उन्होंने कार्ड सूची तैयार की। उन्होंने तीन प्रकार के कार्ड तय्यार किए। १. शैल्फ़ लिस्ट, २. लेखक. ३. पुस्तक नाम। १८ वर्ष सेवा करने के पश्चात् म० मदनलाल जी फरवरी १९४२ में सभा की सेवा से रिटायर हुए। सभा की १९९७ की रिपोर्ट के अनुसार पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या १६५२० थी।

पंजाब वैदिक पुस्तकालय मुख्य रूप से एक धार्मिक पुस्तकालय है। इसमें वैदिक पुस्तकों के साथ अन्य धर्मों तथा सम्प्रदायों की पुस्तकों का भी सग्रह किया गया है। साधारणतया पुस्तकों में २ प्रतिशत धर्म सम्बन्धी पुस्तकें होती हैं परन्तु इस पुस्तकालय में लगभग ३१ प्रतिशत धर्म सम्बन्धी पुस्तकें हैं। दूसरी विशेषता दार्शनिक पुस्तकों की है। साधारणतया दर्शन संबन्धी पुस्तकें पुस्तकालयों में १ प्रतिशत होती है। परन्तु इस पुस्तकालय में ११ प्रतिशत हैं। भाषा की दृष्टि से इस पुस्तकालय में ४७ प्रतिशत अंग्रेज़ी, ३३ प्रतिशत हिन्दी और २० प्रतिशत उर्दू की पुस्तकें हैं।

पुस्तकालय का प्रति वर्ष नई पुस्तकें खरीदने के लिए २४०), पत्र पत्रिकाओं के लिए १५०) तथा जिल्द बन्दी के लिए ५०) का बजट स्वीकार होता है। कई पुस्तकें तथा कई एक समाचार पत्र बिना मूल्य भी प्राप्त होते हैं।

यह पुस्तकालय आर्य सज्जनों तथा आर्यसमाजों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। स्वाध्याय करने के लिए तथा शास्त्रार्थों के लिये हर तरह की पुस्तकें यहां से उपलब्ध हो सकती हैं। पुस्तकालय का सदस्य बनने के लिए नाम-मात्र शुल्क है। एक नियम तो यह है कि २०) देकर आजीवन सदस्य बन सकते हैं अथवा दूसरा नियम यह है कि १॥) वार्षिक चन्दा तथा १०) अमानत देकर सदस्य बन सकते हैं। एक समय ५ पुस्तकें मिल सकती हैं और सदस्य महीना भर उनसे लाभ उठा सकता है। पुस्तकालय की सफलता इसी में है कि जनता इससे अधिक से अधिक लाभ उठाए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

आर्य भाइयों से !

भगवान् का बनाया हुआ यह सत्य, शिव और सुन्दर संसार अशान्ति और क्लेश की जिस ज्वाला से झुलस रहा है उसकी उष्णता प्रत्येक प्राणी अनुभव करता है, इसका केवल मात्र कारण वह साम्प्रदायिक विभाजन हैं जो रंग तथा नसलों के आधार पर किया जा रहा है और इसका इलाज एक सार्वजनिक धर्म के प्रचार से ही हो सकता है। दूसरे शब्दों में आर्य समाज ही वैदिक धर्म प्रचार द्वारा ससार के इस कोलाहल को दूर कर सकता है। परन्तु शोक कि आर्य समाज के मान्य और उत्तरदायी व्यक्ति, परस्पर की फूट के शिकार होकर, इस महान् क्रमो को भूले बैठे हैं।

वह आर्य समाज जो हिन्दु जाति का "Spear head" माना जाता था इस समय इतना पछड़ा कि इसके अस्तित्व को ही अनावश्यक समझा जाने लगा है। यदि हमारे नेता धार्मिक सिद्धान्तों के लिये लड़ते तो हमें दुःख न होता परन्तु जब यह क्षुद्र सी बातों और निजी झगड़ों के आश्रय पर दल बान्धते हैं तो हमारे दुःख की सीमा नहीं रहती।

हम अपने नेताओं का मान करते और उन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं. परन्तु,धर्म के प्रति उन लोगों की उपेक्षा हमारे लिए असह्य है। संसार जिस भयंकर अवस्था से गुज़र रहा है वह आपस के झगड़ों की आज्ञा नहीं देते। अब तो मिल बैठने और संसार कल्याण के साधन सोचने का समय है।

मैं अपने आर्य भाइयों से यह प्रार्थना करूंगा कि वह एक ऐसे धार्मिक सम्मेलन की आयोजना करें जिसमें हमारे सब मान्य व्यक्ति सम्मिलित होकर परस्पर की शत्रुता और वैमनस्य का त्याग करके धर्म प्रचार में जुट जाने का व्रत लें।

भलवाल आर्यसमाज उस सम्मेलन के लिए अपनी सेवायें उपस्थित करती है और हर प्रकार के व्यय का भार अपने सिर पर लेती है। यह काम जनता का रह जाता है कि मान्य व्यक्तियों को यहां पधारने का अनुरोध करे या उनके नेताओं का काम है जनता की इच्छा का मान करते हुए स्वयं पधारें।

आशा है कि जनता भी और नेता गण भी इस ओर विशेष ध्यान देंगे।

भवदीय-तिलकराम आर्य
मन्त्री—आर्यसमाज भलवाल

आर्य समाज संसार

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की नज़रबन्दी के विषय में

श्री स्वामी जी के विषय में विशेष रूप से कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उनसे आर्यसमाज का बच्चा २ परिचित है। आर्य समाज के उच्च सन्यासियों में स्वामी जी की गणना है। वे आजकल दीनानगर में नज़रबन्द हैं। उनकी नज़रबन्दी का समाचार सारे आर्य संसार में फैल चुका है। हमारे पास देश की बहुत सी समाजों ने उनके विषय में यह प्रस्ताव पास करके भेजा है कि स्वामी जी महाराज पर से नज़रबन्दी का प्रतिबन्ध बिना शर्त शीघ्र ही उठा लिया जाय। वस्तुतः उक्त प्रस्ताव से सारा आर्य जगत् सहमत है परन्तु विशेष रूप से इस सप्ताह निम्न समाजों ने हमारे पास एतद्विषयक प्रस्ताव भेजे हैं और उनकी प्रतिलिपियां पंजाब सरकार के उच्चाधिकारियों को भेजी गई हैं।

(१) आर्यसमाज जण्डियाला गुरू, ज़िला अमृतसर। (२) आर्यसमाज मान, ज़िला गुजरांवाला। (३) आर्यसमाज चक गेजरां, ज़िला होशियारपुर। (४) आर्यसमाज मिण्टगुमरी। (५) आर्यसमाज पिण्डी भट्टियां। (६) आर्यसमाज किला शोभासिंह। (७) आर्यसमाज अबोहर, ज़िला फिरोज़पुर। (८)आर्यसमाज मोगा, ज़िला फिरोज़पुर। (९) आर्यसमाज नगीना (मेवात) ज़िला गुड़गांवाँ। (१०) आर्यसमाज मीरपुर। (११) आर्यसमाज कोट अद्दू। (१२) आर्यसमाज देहली शहादरा। (१३) आर्यसमाज सदर बाज़ार रावलपिण्डी। (१४) आर्यसमाज क्वेटा। (१५) आर्यसमाज जालन्धर शहर। (१६) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)।

आर्य्य समाज बादामीबाग़

बदामीबाग़ लाहौर से गुजरांवाला लाइन पर पहला स्टेशन है। स्टेशन के दोनों तरफ़ आबादी दिनोदिन बढ़ रही है यहां कई वर्ष से आर्य्य समाज का प्रचार हो रहा है। परन्तु स्थान के अभाव से यहां नियम पूर्वक आर्य्य समाज की स्थापना नहीं हो सकी। गत वर्ष यहां के कई उत्साही आर्य्य पुरुषों के प्रयत्न से आर्य्य समाज मंदिर के लिये भूमि प्राप्त हो गई है। और बड़ी धूम धाम से इसका प्रथम वार्षिकोत्सव भी मनाया गया। इस समाज का सम्बन्ध आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से नियम पूर्वक हो है और भूमि की रजिस्टरी भी इस सभा के हो गई है। परन्तु मन्दिर के अभाव से प्रचार में कठिनाई हो रही है। मैं पंजाब के आर्य्य तथा आर्य्य समाजों से सानुरोध आग्रह करता हूं मंदिर निर्माण के लिये अधिक से अधिक सहा सभा को भेजने की कृपा करें। ताकि शीघ्र ही मंदिर निर्माण कराया जा सके।

यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रच
गुरुदत्त भवन ला

गुरुकुल-कांगड़ी
स्वास्थ्य समाचार

श्रेणी	नाम ब्र०	नाम रोग
१३	ओम्प्रकाश	ज्वर
५	रामचन्द्र	,,
५	धर्मदत्त	,,
४	ब्रजलाल	,,
४	सत्यप्रकाश	,,
४	चन्द्रकान्त	,,
४	महेन्द्र (बड़ा)	,,
३	जगदीश	,,
३	देवेन्द्र	,,
३	कृष्णचन्द्र	,,
३	रामनाथ	नेत्ररोग
२	जितेन्द्र	ज्वर
२	धर्मदेव	नेत्ररोग
२	बलवीर	व्रण
२	बलराम	ज्वर
१	भगवान	नेत्ररोग

गत सप्ताह उपरोक्त ब्रह्मचारी रोगी हुए थे। सब स्वस्थ्य हैं।

कविराज पुरुषोत्तम देव का सन्मान

मुलतान २४ जून—मुलतान के प्रसिद्ध वैद्य गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी स्नातक कविराज पुरुषो देव आयुर्वेदालंकार अध्यक्ष आयुर्वेद औषधालय तान छावनी को ३१वें अखिल भारतीय वैद्य सम्मे लाहौर ने एक स्वर्णपदक एवं प्रथम श्रेणी का प्र पत्र देकर सम्मानित किया है।

———

(पृष्ठ १ का शेष)

वह उन कोमलताओं से वंचित रहते हैं जो छोटों में होती हैं। उनक हृदय धैर्य, दया, भाव से शून्य हो जाता है नीति वालों ने क्या अच्छा कहा है कि जैसे बुढ़ापा को, आशा धैर्य को मृत्यु प्राणों को पुष्टता क्रोध लक्ष्मी को, दुष्ट सेवा शील को, काम को नाश कर देता है ऐसे ही अभिमान सबको कर देता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकाशक तथा प्रतिनिधि द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. [illegible]

आलय

कांगड़ी सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L [illegible]

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक [illegible]

वार्षिक मूल्य [illegible]

१७ श्रावण, २००० [illegible]

१ अगस्त १९४३ [illegible]

२००२ पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Saharupur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

धन को धर्म से संचित करो

मानु महाराज का कथन है कि गृहस्थ के लिये श्यक है कि धर्म से धन एकत्र करे। वेद विरुद्ध र्युक्त कार्यों से यदि बहुत सा धन भी आता उसे अंगीकार न करे। गृहस्थों के लिये यह श्यक क्यों है? इस लिये कि चारों आश्रमों में क बड़ा आश्रम माना गया है। क्या संन्यास ? निःसन्देह? क्योंकि यदि यह आश्रम न ी दूसरे आश्रम (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और स) अपना कर्तव्य पालन कैसे कर सकेंगे, जब अपनी आजीविका की ही चिन्ता बनी रहेगी तो आदि सत्य शास्त्रों को निश्चिन्त होकर कैसे सकेंगे। और योगाभ्यास आदि साधनों से दृढ़ अपना पूरा समय धर्म के प्रचार में भी कैसे सकेंगे। गृहस्थ आश्रम बाकी तीन आश्रमों न्नदाता होने के कारण इन सब में श्रेष्ठ है जिस प्रकार इसे उच्च माना गया है उसी धर्म के बन्धन उसके लिये अधिक दृढ़ हैं। के तीनों आश्रय गृहस्थ पर निर्भर हैं इसलिए ी का कर्तव्य है कि धर्म से धन संचित करे क उसके विरुद्ध अमल करेगा तो ब्रह्मचारी स्थ और संन्यासियों को भी अपने साथ ले ।

यारे गृहस्थी भाइयो! अधर्म की कमाई से पने लिये नहीं डरते तो इस लिये अवश्य करो कि कहीं तुम्हारा अकेले का कुकर्म आदि आश्रमों को दूषित न करे। भारत- गिरावट का कारण भी गृहस्थ का बिगड़ना

अध्यात्म सुधा

[३३]

स्व० श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज

संग्रहीता श्री ला० लब्भूराम जी नैयर

है। इस लिये गृहस्थ आश्रम का सुधार करते हुए अधर्म की कमाई से परहेज़ करो।

देवता तुम्हारे अन्दर निवास करते हैं

भोला मन अपने बाहर देवताओं की खोज में मारा २ फिरता है। कभी काशी और कभी प्रयाग, कभी वृन्दावन और कभी जगन्नाथ आदि दूर २ की खाक छानता है परन्तु देवता के दर्शन कहां से हों। पत्थरों और धातुओं में यदि दिव्य गुण हों तो वह रोशनी देवें जब उनमें स्वयं दिव्य गुण नहीं तो वह दूसरों को रोशनी कैसे दे सकते हैं। सूर्य इसलिये देवता है कि सारे संसार को रोशनी दे रहा है। परन्तु तुम्हें रोशनी कौन देता है? ..... तुम रूप को जो कि अग्नि का गुण है इस तरह देखते हो? क्या आंख तुम्हारे रूप देखने का कारण नहीं? इस प्रकार रस, गन्ध, स्पर्श, और शब्द के दिखलाने वाली भी तुम्हारी इन्द्रियां ही हैं। इस लिये देवता तुम्हारे अन्दर निवास करते हैं। उठो! अदेवताओं को देव मत समझो।

इस ज्वाला को कैसे शान्त करोगे?

हमारी इन्द्रियां अग्नि रूप हैं जो कुछ इनके अन्दर पड़ता है भस्म होता चला जाता है। इसके अन्दर से चिन्गारियां उठ रहीं हैं जो हमारे तमाम कर्मों को भक्षण करने के लिये तैयार हैं। इन्द्रियों की जलाई हुई धूनी [illegible] भला यह अग्नि शान्त हो तो जीवात्मा अपने उद्देश्य पर विचार करे। मनुष्य हैरान, परेशान इस अग्नि को शान्त करना चाहता है। चक्षु इन्द्रिय की तृप्ति के लिये रूप पैदा करता है इसी प्रकार हर एक इन्द्रिय का विषय उसके सामने करके इस पांच शोलों वाली अग्नि की तृप्ति करना चाहता है। परन्तु ज्यों ज्यों वह इन्द्रियों के लिये विषयों का अधिक सामान इकट्ठा करता है त्यों त्यों अग्नि में शोले तेज़ होते जाते हैं। और हों क्यों न? भला कभी घी की आहुतियों से अग्नि शान्त हुई! अग्नि के शान्त करने के लिये उस पर शीतल जल छिड़कना चाहिये परन्तु विषय घी के समान है ज्यों ज्यों इन्द्रियों के भोग अधिक बढ़ते जावें वैसे ही उनकी तृप्ति कठिन होती जाती है इन्द्रियां भोग से वश में नहीं आतीं बल्कि वैराग्य से। इसलिये पूर्ण वैरागी होकर परमात्मा में योग करना चाहिये ताकि रास्ता सुगम हो जावे।

धर्म के गुप्त शस्त्रों से धर्म की रक्षा करो।

उन पुरुषों से बढ़ कर दम्भी और आत्मघाती कौन हो सकता है जिनका वास्तव में तो धर्म पर विश्वास नहीं और धर्म से कोसों दूर हैं परन्तु अपने मनोरथ की सिद्धि के लिये सब से बढ़ कर धर्म को पुकार सकते हैं। ऐसे नीच पुरुषों ने धर्म के पवित्र नाम को कलंकित कर रक्खा है। परन्तु धर्म से सर्वथा विरुद्ध है मगर उनका कर्तव्य धर्म के सि मढ़ा जाता है। धार्मिक पुरुषों का मुख्य कर्तव्य कि वह इस प्रकार के मनुष्यों से धर्म की रक्षा कर रहें कि जिन्होंने धर्म को अपनी स्वार्थ सिद्धि के लि [illegible] प्रकार की आड़ बना रक्खा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(अग्ने) हे जीवन-याग की आग ! (त्वं तु) (देवेभिः) देवताओं ने (मानुषे जने) मानव जन के भीतर (विश्वेषां) सब (यज्ञानां) यज्ञों का (होता) आह्वान देने के लिये (हितः) आहित-स्थापित किया है।

सम्पूर्ण मानव-शरीर में यज्ञ की आग जल रही है। जो क्रिया विस्तृत रूप में हो रही है, उसी का संक्षेप इस छोटे से पिण्ड में भी निरन्तर हो रहा है। मानव शरीर का अंग-अंग यज्ञ रूप है। आँखें देखती हैं, चित्त प्रसन्न होता है, पाँव चल देते हैं कि इधर स्वर्ग है। कान किसी मधुर आवाज़ की प्रतीक्षा करने लगते हैं। नासिका ने सुगन्धि का अनुभव किया। रसना ने भाँप लिया—कोई स्वादु पदार्थ है। आमाशय में भूख का अनुभव होने लगा। हाथों ने उस हस्तगत किया। उस पदार्थ को बनाया गया, पकाया गया। शरीर में पहुँचाया गया। किसी अंग ने खाया, किसी ने पचाया। किसी ने उसे रुधिर का रूप दिया। इस रुधिर को किसी ने छाना, किसी ने उबाला, किसी ने फूँक फूँक कर साफ़ किया। अन्न बल बन गया। हड्डी का अंश हड्डी को मिल रहा है, त्वचा का त्वचा को, मज्जा का मज्जा को। शरीर के सभी अवयव अपना-अपना भाग दे भी रहे हैं और ले भी। देवता लेता है देने ही के लिये। उसका लेना-देना पर्याय हैं। संभवतः इसी आशय से इन्द्रियों को देव कहा गया है। ये अपना भाग लेती हैं देने ही के लिये। इनका सभी उपभोग शरीर की जीवन-यात्रा चलाने ही के लिये है।

मानव शरीर के अंग-अंग में यज्ञ हो रहा है। आँखें यज्ञ कर रही हैं। कान यज्ञ कर रहे हैं। प्राण यज्ञ कर रहे हैं, श्वास-प्रश्वास में यज्ञ है। और यज्ञ का होता—आह्वान-दाता अग्नि-देव है। शरीर के होने का जीवित लक्षण अग्नि ही है। शरीर ठंडा पड़ा नहीं और इसमें से जान निकली नहीं। इस अग्नि का आधान मेरी इन्द्रपुरी के देव स्वयं कर रहे हैं। इन्द्रियों की नित्य-प्रति की क्रिया से ही शरीर में गरमी है। और इस गरमी के रहने से ही इन्द्रियों का सम्पूर्ण क्रिया-कलाप चलता है। जाठर अग्नि के चमक उठने से ही भूख लगती है। यह भूख सम्पूर्ण इन्द्रियों को जीवन-यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति देने का आह्वान-सा होता है। सच तो यह है कि शरीर की सब प्रकार की भूख—खान की, पान की, सुगन्ध की, सुरस की, सुशब्द की, सुरूप की भूख—जीवन-अग्नि ही के चमकते रहने का परिणाम है। मेरी इन्द्रपुरी के देवताओं ने सम्पूर्ण यज्ञ-याग का होता बनाया

मानव-जन में

त्वमग्ने यज्ञानाꣳ होता विश्वेषाꣳ हितः।
देवेभिर्मानुषे जने

है। होता इन्द्रियों को यज्ञ के लिये पुकारता भी है, और उनके लिये यज्ञ-याग का संपादन भी स्वयं करता है। अग्नि-द्वारा पुकारे गये देव यजमान बनकर अपनी-अपनी आहुति यज्ञाग्नि में छोड़ रहे हैं। अग्नि-देव उस आहुति को लेता है, उसका उपभोग करता है। अग्नि का उपभोग स्वयं हव्य-दान है। अग्नि-देव हव्य को खाता क्या है, उसे यज्ञ का अंग बना देता है। यज्ञ

गीत

श्री पं० सूर्य कुमार जी विद्यालंकार

बल दो प्रियतम प्रभु हे ! बल दो।
जीवन पथ पर चलते जायें,
दूर हटा कर सब बाधायें,
एक लक्ष्य तेरी वाणी ही,
साँसों की वीणा पर गायें।
भूमे जग वह स्वर मंजुल दो।
गहन निशा के अंधकार में,
जीवन के शत शत प्रहार में,
दुख दावा से भीति ग्रस्त हो,
थक कर पथ पर बैठ न जायें।
मंगलमय आशा संबल दो।
पूरब, पश्चिम, दायें, बायें,
अभय दान दें सभी दिशायें,
मित्र अमित्र एक हों मेरे
माँ तेरा हम आश्रय पायें
वत्सल स्नेह सुधा अंचल हो।
बल दो प्रियतम प्रभु हे ! बल दो ॥

की आहुति परिष्कृत रूप में फिर यजमानों को मिल रही है। यज्ञ का अंग बनकर वह देवताओं का आहार बन रही है। यजमान अन्न का उपभोग तो सीधा भी कर सकते थे। यज्ञ का अंग बना कर उन्होंने इसे हव्य का रूप दे दिया है और स्वयं हव्याद् बन गये हैं। हव्याद् देव को कहते हैं। यजमानों ने यज्ञ क्या किया है, अपने आपको देव बना लिया है। अन्न बल बन गया है, यजमान देव हो गये हैं।

देवताओं का बल ज्ञान है। इन्द्रियाँ जितनी बलवती होंगी, उनकी ज्ञानोपार्जन की शक्ति उतनी ही प्रबल होती जायगी। अन्न ज्ञान बन जायगा। इससे ज्ञानाग्नि प्रदीप्त होगी। भौतिक याग आध्यात्मिक याग में परिवर्तित हो जायगा।

ज्ञान भी एक यज्ञ है—मन का, बुद्धि का, का, अहंकार का यज्ञ। इन सबसे ऊपर आत्म यज्ञ है। वह है विशुद्ध आनन्द-मय यज्ञ।

आत्मा ज्ञान प्राप्त कर उसे प्रकाशित कर ज्ञानाग्नि चमके बिना रह ही नहीं सकती। इस का प्रकाश कला के, कौशल के, कृषि के, मानव के निर्माण के, चिकित्सा के, पर-पीड़ा-हरण के, स्वत्व-रक्षण के रूप में होता है। याग की पू यहीं आकर होती है।

इस याग को संपादक जीवन-अग्नि है, ज्ञ है, परोपकार-अग्नि है—एक शब्द में यज्ञाग्नि है। देवताओं की देवता मेरे शरीर में, मेरे मन में आत्मा में विद्यमान हैं। इसका आधान स्वयं देवत द्वारा हुआ है। देव यजमान बने हैं और इसे बना गये हैं। अब इस होता की पुकार मेरे अं में है। इसका यज्ञ मेरी पोर-पोर में हो रहा है। आधान निरन्तर हो रहा है। इस का आह्वान क्षण सुना जा रहा है। मेरी देह के देवताओ! आह्वान को सुनो, इस पर कान दो, इस अ आधान में हाथ बटाते जाओ, बटाते जाओ। सम्पूर्ण बल की आहुति इस आग की वेदी पर जाओ, डालते जाओ। यही तुम्हारा खाना हो यही तुम्हारा खिलाना। तुम्हारा लेना-देना पर्याय तुमने मानव जन में—अर्थात् अपने आप ही में का आधान किया है।

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

श्री डा० पन्नालाल का आगमन

गत सप्ताह यू० पी० गवर्नर के सलाहकार श्री डा० पन्नालाल जी गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी पधारे। मान्य अतिथि ने गुरुकुल के सब विभाग गोशाला, रसायन शाला, फार्मेसी, आयुर्वेद महाविद्यालय, वेद महाविद्यालय, वेद मन्दिर, व्यायामशाला आदि बड़ी दिलचस्पी के साथ देखें। समस्त गुरुकुल वासियों की एक विराट् सभा में अभ्यागत महोदय का सुन्दर भाषण हुआ जिसमें उन्होंने गुरुकुल-पद्धति की प्रशंसा करते हुए गत वर्षों में हुई गुरुकुल की उन्नति पर सन्तोष प्रकट किया और भविष्य में संस्था की दिनों दिन उन्नति के लिए शुभ कामना की। गुरुकुल को हर प्रकार से यथाशक्ति सहयोग देने का वचन देकर वे विदा हुए।

ऋतु-समाचार

आजकल गुरुकुल की ऋतु परम सुहावनी है। आकाश मेघ-मण्डल से घिरा रहता है। चारों ओर हरियाली दृष्टिगोचर होती है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। षाण्मासिक परीक्षा की तैयारी में विद्यार्थी व्यस्त होकर लगे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 561

आर्य रविवार १७श्रावण वि०सं० २०००

शिवदयाल जी, एम.ए. का स्वर्गवास

२५ जुलाई रात को ८ बजे प्रो० शिवदयाल जी ०० ए० का माडल टाऊन लाहौर में अपने निवास-ान पर देहान्त हो गया। आर्यसमाज माडल टाउन ार्षिकोत्सव की समाप्ति के दिन प्रो० शिवदयाल ीमार हुए। उसके बाद वह फिर स्वस्थ न होसके। भग ३ मास की बीमारी के बाद उनका शरीरान्त आ। एक वर्ष हुआ उनकी धर्मपत्नी का देहान्त हो ा था। मृत्यु के कुछ दिन पूर्व उन्होंने अपनी धर्म-ी की स्मृति में बरसी मनाई थी।

प्रो० शिवदयाल जी की मृत्यु के कारण आर्य-माज का एक अनथक कार्यकर्त्ता विद्वान् उठ गया है। ०० शिवदयाल जी अपने जीवन भर आर्यसमाज ी अनेक रूपों में सेवा करते रहे। आर्यसमाज के ारम्भ के दिनों में आप पं० गंगादत्त जी के साथ द्दास में आर्य समाज की ओर से धर्म प्रचार का र्य्य करने गये थे। लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में फैसर रहते हुए भी आप अपने अध्यापनकाल से ष बचे समय में आर्यसमाज की सेवा करते थे। ार्नमेण्ट कालेज में सेवाकाल समाप्त करने के बाद ाप दयानन्द मथुरादास कालेज मोगा के ंसिपल बने। वहां प्रारम्भ का कार्य करके, कालेज शिक्षा दीक्षा रीति को जारी करके आप वहां से निवृत हुए।

आप युनिवर्सिटी ढंग की शिक्षा पद्धति द्वारा शिक्षा क्षा देते रहे हैं। आपका पंजाब युनिवर्सिटी के ंचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं पर काफ़ी प्रभाव था। स प्रभाव द्वारा आप समय समय पर आर्यसमाज के चार कार्य तथा आर्यसमाज की विचारधारा को धिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाने का यत्न करते ते थे। युनिवर्सिटी ढंग की शिक्षा पद्धति के साथ २ आपको गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से भी अगाध प्रेम था। ाप गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्षों तक लगातार ीक्षक रहे। जिस समय गुरुकुल से कभी किसी कार की मांग आती थी—आप यथाशक्ति उस मांग पूरा करते थे और समय २ पर अपने शिक्षा-म्बन्धी अनुभव से गुरुकुल कांगड़ी के संचालकों को य परामर्श देते रहते थे। दोनों शिक्षा पद्धतियों से म्बन्ध होने के कारण आपके जीवन का मुख्य विषय शिक्षा होगया था। आपके जीवन का अधिकांश समय स्वाध्याय तथा विविध प्रकार की ज्ञान चर्चाओं वाले अनुशीलन में लगता था।

शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में इतनी रुचि रखने के बावजूद आपको आर्यसमाज के प्रचार कार्य में अत्यन्त रुचि तथा उत्साह था। मोगा कालेज में प्रिंसिपल रहते हुए आपने वहां अपने व्यक्तित्व से आर्यसमाज के काम को फैलाने में तथा स्थिर पाये पर खड़ा करने में सराहनीय प्रयत्न किया।

प्रिंसिपल पद छोड़ देने के बाद भी आप मृत्यु समय तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर स दयानन्द मथुरादास कालेज के अधिष्ठाता थे। आपके निरीक्षण तथा परामर्श से उस कालेज का कार्य चलता था। श्री० रा० ब० डाक्टर मथुरादास जी ने धन देकर कालिज की स्थापना की—वहां प्रोफेसर शिवदयाल जी ने वृद्धावस्था में भी उस कालेज की शिक्षा तथा स्थिति को उन्नत करने में जो भाग लिया है उसको दृष्टि में रखकर यह कहा जा सकता है कि दयानन्द मथुरादास कालेज को वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में प्रो० शिवदयाल जी का महत्वपूर्ण भाग है।

लाहौर में रहते हुए आपने आर्यसमाज वच्छोवाली के प्रधान होकर सालों इस समाज के कार्य को उन्नत किया। आर्यसमाज वच्छोवाली आर्य कन्यापाठशाला तथा लाहौर के शिक्षित व्यक्तियों में आर्य समाज का संदेश पहुँचाने—उन्हें आर्य समाज की ओर आकृष्ट करने में आपके व्यक्तित्व से आर्यसमाज को बहुत लाभ पहुँचा। दुःख के साथ अनुभव किया जा रहा है कि अब आपके पीछे कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई नहीं देता जो इस कमी को पूरा कर सके। पिछले कुछ वर्षों से आप लाहौर शहर से माडल टाउन चले गये थे। वहां जाकर आपने आर्यसमाज माडल टाउन की जो सेवा की है, दिन रात वृद्धावस्था की निर्बलता के बावजूद भी आपने उसके विशाल भवन निर्माण में जो सराहनीय यत्न किया है—उसे कोई नहीं भूल सकता। वृद्धावस्था में भी आप इस समाज की प्रभातफेरियों में सम्मिलित होकर प्रचार का कार्य करते रहे।

आपकी आर्यसमाज के लिये लगन तथा प्रेम का पता इस बात से भी लगता है कि हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन के प्रारम्भ होते ही आपने हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन के संचालकों के पास अपना नाम सेवा के लिये भेज दिया। ७० साल की आयु में, शोलापुर की प्रतिकूल परिस्थितियों, में अस्वस्थ तथा निर्बल होते हुए आपने सत्याग्रह समिति में जिस उत्साह तथा लगन से कार्य किया—वह हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन के इतिहास की स्मरणीय तथा अनुकरणीय घटना है। दिन रात आने जाने वाले सत्याग्रही वीरों के भोजन आराम तथा उनको अन्य प्रकार की सुविधाएं पहुँचाने में आपने कोई बात उठा नहीं रखी।

आप पंजाब की आर्यसमाजों की प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रबन्ध कमेटी के वर्षों त सभासद् रहे। सभा के उपप्रधान पद पर भी आप कार्य किया। इन सार्वजनिक सेवाओं के कार आपका नाम आर्यसमाज के इतिहास में स्मरणीय होगया है। हमें यह देख कर और अनुभव करके दुःख हो रहा है कि आपकी मृत्यु से आर्यसमाज के सार्व जनिक जीवन में जो स्थान रिक्त हुआ है उसको पू करने वाला कोई दृष्टि गोचर नहीं होता।

आपका सार्वजनिक जीवन जहाँ इतना प्रभावशाल था—वहाँ आपके व्यक्तिगत जीवन पर जब हम दृष्टि पात करते हैं—तो वहाँ हमें स्नेह प्रेम और कर्त्तव्य क सुगन्ध दिखाई देती है। कोई व्यक्ति आपके पा किसी प्रकार की सहायता के लिये आए तो आप उ ना नहीं कर सकते थे। आपका घर अतिथियज्ञ व सुगन्धि से सुगन्धित रहता था। आपके घर में नित हवन सत्संग और स्वाध्याय की ध्वनि सुनाई दे थी। व्यक्तिगत और सार्वजनिक दृष्टि से आप आर्य समाज के सिद्धान्तों पर अमल करने का यत्न कर थे। आप स्वभाव के मिलनसार थे। परमात्मा आपक दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और आप सम्बन्धियों को धैर्य दान दें और उनमें आप जैस धर्मभक्ति तथा लगन पैदा करें। आपने अपनी वसीय में १५०००)आर्य प्रतिनिधिसभा द्वारा समाज के काय के लिये दान दिया है। —भीमसे

मसोलिनी का पतन—

अचानक २७ जुलाई के समाचार पत्रों में य समाचार प्रकाशित हुआ कि इटली के राजा इ न्युल ने सिग्नर मसोलिनी का त्यागपत्र स्वीकार स्वयं राष्ट्र का शासन सूत्र तथा युद्ध संचालन कार्य अपने हाथ में लिया है। मसोलिनी के स्थ पर मार्शल बोडगिल्यो को प्रधान मन्त्री बनाया इस परिवर्तन का वर्तमान युद्ध पर क्या प्रभाव हो इस विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा सकता। परन्तु इतना निश्चित है कि फैसिस्ट का इटली की जनता पर प्रभाव क्षीण हो गया। लियन जनता मसोलिनी तथा उसकी फैसिस्ट की रीति नीति को पसन्द नहीं करती। मसोलिन घोषणा तो यह की थी कि वह फिर से रोमन स ज्य की पुरानी महिमा कायम करना चाहता परन्तु पिछले दिनों जो घटनाएं हुई हैं उनसे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यास जी ने अपनी लेखनी को ज़रा विश्राम कर नज़र ऊपर उठाई और पास में खड़े एक शिष्य को, जो गुरु जी के गीले कपड़ों को, सुखाने के लिये रस्सी पर डाल रहा था, कहा—'बेटा ! यशकीर्ति, ज़रा वैशम्पायन को तो बुला लाओ ।' 'जो आज्ञा गुरु जी' कह कर शिष्य वैशम्पायन को बुलाने चला गया । गुरु जी अपनी लेखनी को सम्भाल कर पुनः काव्य रचना में लग गए । लगभग १० मिनट बाद उन्हों ने नज़र ऊपर उठाई तो देखा, तो उनका प्रिय शिष्य वैशम्पायन सामने हाथ जोड़े खड़ा है । व्यास जी ने वैशम्पायन को बैठने का आदेश दिया और बोले, देखो वत्स ! आज हमने यह लिखा है, ज़रा ध्यान देकर सुनो, और इसके सम्बन्ध में अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट करो ।' व्यास जी अपनी रचना सुना रहे थे और उनका प्रिय शिष्य तन्मय होकर सुन रहा था । सारी रचना सुना चुकने के बाद व्यास जी बोले 'कहो कैसी रही' वैशम्पायन बोले—'गुरु जी आपके विचार बहुत उत्तम हैं, मैं तुच्छ बुद्धि भला इनकी आलोचना कैसे कर सकता हूं । परन्तु आप का एक श्लोक कुछ समझ में नहीं आया । व्यास जी ने पूछा 'वत्स ! वह कौन सा श्लोक है जो तुम्हें रुचिकर प्रतीत नहीं हुआ । वैशम्पायन बोले 'आपने जो यह लिखा है—

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रियग्रामो, विद्वांसमपि कर्षति ॥

अर्थात् किसी पुरुष को अपनी मां बहिन और पुत्री के साथ भी एकान्त में न बैठना चाहिये, क्योंकि न जाने कब उसका मन विचलित हो जाय, यह ठीक नहीं है । मैं मानता हूं कि—

'घृत कुम्भ समानारी तप्ताङ्गार सम पुमान्,
तस्मात् घृतं च अग्निं च नैकत्र स्थापयेद्बुधा ।'

स्त्री घी के समान है, पुरुष जलते अंगारे के समान इन दोनों को कभी इकट्ठा न रखना चाहिए, पर संसार में कौन पतित से पतित भी पुरुष ऐसा होगा जो अपनी मां, बहिन, पुत्री के प्रति भी बुरे विचार मन में ला सके ।' ऐसा कह कर वैशम्पायन चुप हो गये ।

व्यास जी के कुछ शिष्यों में वैशम्पायन सब से चतुर और बुद्धिमान थे । वे जब कोई काव्य रचना करते, वैशम्पायन को अवश्य सुनाया करते थे और उसकी सहमति प्राप्त कर लिया करते थे । आज वैशम्पायन को इस रचना का विरोध करते देख वह बोले—'अच्छा वैशम्पायन यदि तुम्हें यह श्लोक पसन्द नहीं आया तो तुम इस पर हरताल फेर दो' वैशम्पायन ने तुरन्त गुरुजी की हस्तलिखित पुस्तक अपने हाथों में लेकर इस श्लोक को काट दिया ।

मीठी हार

[भाई सोमदत्त जी विद्यालंकार]

सायंकाल का समय था, भगवान् सूर्यदेव अभी अपनी किरणों को पूरी तरह समेट भी न पाये थे कि घने काले बादलों ने आकाश मण्डल को ढक लिया । और कुछ ही समय बाद मूसलाधार वर्षा पड़ने लगी । वैशम्पायन अपने सिर से काष्ठभार को नीचे उतार कर एक वृक्ष के नीचे वर्षा के कुछ थम जाने की प्रतीक्षा में खड़े थे । वे वहां लगभग एक घन्टा खड़े रहे, पर वर्षा के थमने के अभी कोई आसार प्रतीत नहीं होते थे । निशा सुन्दरी भी अपनी काली साड़ी पहने भूमण्डल पर उतर कर अपना राजकार्य देखने लगी ।

वैशम्पायन ने देखा सामने से एक सुन्दरी, अपने वस्त्रों को मज़बूती से पकड़े हुए भागती हुई आकर उसी वृक्ष के नीचे खड़ी हो गई । आंधी से उस का शिरोवस्त्र खिसक कर कन्धे पर आ गिरा था—वर्षा से सब वस्त्र गीले हो गये थे और शरीर के साथ चिपक गये थे इससे उसके गौर-वर्ण शरीर की यत्न से छिपा कर रखी हुई शोभा फूट फूट कर बाहर हो रही थी । अपने सामने एक नवयुवक को देख कर वह सहसा चौंकी और अगले ही क्षण वहां से चलने के लिए तय्यार हो गई ।

वैशम्पायन उस देवी को इस अवस्था में देख कर आश्वासन देते हुए बोला—"बहिन तुम इस समय इस निर्जन बन में कैसे घूम रही हो, ज़रा ठहर कर यहीं विश्राम करो, देखो दूर तक और कोई भी आश्रयस्थल दिखाई नहीं देता, इस बन में यही वृक्ष ऐसा है जो तुम्हारी रक्षा कर सकता है' ।

देवी ने कहा " भाई ! देव दर्शन के लिए अपनी सहेलियों के साथ, पर्वत की उपत्यका में स्थित उस देव मन्दिर में गई थी, अकस्मात् आंधी और वर्षा के कारण वे मेरी सब सहेलियां भाग कर समीपवर्ती ग्राम में चली गईं, मैं कांटे लग जाने तथा झाड़ियों में उलझ जाने के कारण पीछे रह गई और रास्ता भटक कर यहां आ गई हूं ।' यह कह कर देवी चलने के लिए उद्यत हो गई, आंधी और वर्षा उसी प्रकार वेग से चल रहे थे ।

वैशम्पायन ने कहा 'बहिन ! तुम्हारा इस समय नगर में जाना कठिन ही नहीं असम्भव है । नगर इस स्थान से ५ मील दूर है, हिंसक जन्तुओं से संकुल इस बन में तुम रात्रि के समय अकेली इसी पास के मेरे आश्रम में आज रात विश्राम करो । तुम्हें विश्राम के लिए एक पृथक् झोंपड़ी दे दी जायगी, तुम अन्दर से दरवाजे को बन्द रखना, देखना चाहे कोई भी खोलने के लिए कहे खोलना मत ।' देवी ने उस नवयुवक मुनि की इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और एक एकान्त झोंपड़ी में जाकर अन्दर से सांकल लगा कर विश्राम करने लगी ।

वैशम्पायन अपने आश्रम में एकान्त शय्या पर पड़े-पड़े सायंकाल की घटना पर विचार कर रहे थे । उन्होंने करवटें बदल कर नींद लाने के अनेक प्रयत्न किए पर सब व्यर्थ हुए । बलात् उसका ध्यान उस रूपवती रमणी की सुन्दर आकृति की ओर चला जाता था । आधी रात का समय हो रहा होगा, वे अपनी शय्या पर से उठे, उनकी टांगें बलात् उस झोंपड़ी की तरफ़ ले गईं, जिसमें वह देवी विश्राम कर रही थी । वैशम्पायन ने उस झोंपड़ी के दरवाजे के पास जाकर सांकल को खटखटाया । अन्दर से आवाज़ आई 'कौन है ।' वैशम्पायन बोले—ज़रा दरवाज़ा खोलो' । 'मैं दरवाज़ा न खोलूंगी' देवी ने ज़रा कड़कती हुई आवाज़ में कहा । मैं वैशम्पायन हूं, मैंने ही तुम्हारी रक्षा की और तुम्हें इस आश्रम में निवास के लिए स्थान दिया था ।' 'पर आपने तो स्वयं कहा था कि कोई भी दरवाज़ा खोलने के लिए कहे पर खोलना मत । 'तुम्हारा कहना ठीक है पर मैं ही तो अब खोलने के लिए कह रहा हूं, दरवाज़ा खोलो' । देवी ने सुना उस की आवाज़ कुछ कांप रही थी उसने कड़क कर कहा—दरवाजा नहीं खुल सकता । वैशम्पायन मुनि जिनका मन काम के वेग का बुरी तरह शिकार हो चुका था, अब अधिक प्रतीक्षा न कर सके, उन्होंने दरवाजे को लात मार कर तोड़ने की कोशिश की, पर दरवाज़ा न टूटा । अब वे झोंपड़ी की छत पर चढ़ ऊपर के फूस को सरकाकर कूद कर अन्दर पहुंच गये ।

पर यह क्या ? उन्होंने देखा, अन्दर वह देवी न थी, अब उसके स्थान पर श्री वेदव्यास जी पद्मासन लगाये बैठे थे । उनके चेहरे से तेज निकल रहा था । उन्हें देख कर वैशम्पायन चरणों में गिर गये । व्यास जी मुस्कराते हुए बोले—क्यों वत्स ! वह श्लोक ठीक है या ग़लत' । वैशम्पायन ने अपना सर चरणों से उठाया और हाथ में लेखनी लेकर श्लोक फिर इस प्रकार लिख दिया । वह मन ही मन इस मीठी हार से लज्जित था ।

—"विशेषत: भोपाल तथा अन्य स्थानों के बाकसारों ने मि० जिन्ना से प्रार्थना की है कि देश की अवस्था को सुधारने के लिये महात्मा जी से मिलें ।" प्रार्थना ऐसी ही है कि कुतुब मीनार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 501

वैदिक विवाह

श्री पंडित हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार

[गतांक से आगे]

वैदिक विवाह पद्धति जितनी आडम्बर रहित है उतनी ही सारगर्भित। सारी विधि ऐसी है कि यदि संस्कार करवाने वाला पुरोहित विधि की व्याख्या करता जाये तो गृहस्थी के विषय में वर वधू को सारा उपदेश मिल जायेगा। "आर्य" के कालमों मे "वैदिक विवाह" को प्रकाशित करने का यही भाव है कि आर्य भाई इसकी महत्ता को जानें।

—सपादक

...-मृत्यु के विलाप का अभाव

...ाद ८ आज्याहुतियां और दी जाती हैं, ...य बोले जाने वाले मन्त्रों की मुख्य भावना ... वह पत्नी उत्तम पुत्रों वाली हो। "अशू- ... इसकी गोद पुत्रों से कभी रहित न हो। ... ही "प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः" इसकी ...र्घ आयुष्य को प्राप्त करे ताकि "पौत्रमघ न ...स स्त्री को पुत्र मृत्यु रूप कष्ट से विलाप ...ड़े।

...के लिये उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की ... जब पति-पत्नी गृहस्थ कार्य में संलग्न होंगे ...खित स्थिति सम्भव है वैयक्तिक सुख की ... प्रबल हो जाने पर तो पति पत्नी की प्रवृत्ति ...व हो जाती है और उस समय सबल स्वस्थ ...ा भोगने वाली सन्तानों का सम्भव नहीं ...वस्तुतः वे सन्तानें सकल्प से भी पैदा नहीं ...ीं—वे तो हो ही जाती हैं। और संसार में ...गई सन्तान की कद्र हो ही कैसे सकती है! ...शिष्ट संकल्प से सन्तान की उत्पत्ति का महत्व ...॥ संकल्पपूर्वक पैदा की गई तो घास को भी ...ही नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर सकता; व्यक्ति की तो ...य्या है?

पति के कर्तव्य

...सके पाद पाणिग्रहण के मन्त्र आते हैं। उन मंत्रों ...कुण्ड की प्रदक्षिणा पूर्वक अग्नि को साक्षी ...हुआ, वर प्रतिज्ञा करता है कि "मह्यं त्वादुर्गा- ...य देवाः" (ऋ० १०. ८५. ३६) मैं गार्हपत्य ...ी ही सन्तानोत्पत्ति रूप गृहस्थ के प्रधान कर्तव्य ...न के लिये तुझे स्वीकार करता हूं। मैं अपने ...लास का साधन तुझे कभी भी न समझूंगा। तू ... त्वमसि धर्मणा" (अथर्व १४. १. ५१) ...ोत्पत्तिरूप धर्म की दृष्टि से ही तू मेरी पत्नी है; ...सना की तृप्ति के लिये नहीं।

...) मैं अपने इस कर्तव्य को भी कभी न भूलूंगा ...यपूर्वक धनार्जन करते हुए मैंने तेरा व बाल बच्चों ...षण करना है "ममेयमस्तु पोष्या" (अथर्व० ... ५२)। मैं प्रयत्न करूंगा कि मेरे साथ उत्तम ... वाली होकर तू पूर्ण आयुष्य को प्राप्त करने ...हो। "मया पत्या प्रजावति शं जीव शरदः ...।

...जन की सामग्री के साथ आच्छादन की सुखद ...मग्री को प्राप्त कराना भी मेरा कर्तव्य होगा ...ो व्यदधात् शुभे कम्")।

...) मैं यह भी प्रण करता हूं कि किन्हीं भी सकटकालों के उपस्थित होने पर "न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये" मैं चोरी चोरी अकेला कभी न खाऊंगा। अपने मन के अन्दर इस भावना को कभी न आने दूंगा।

(४) यहीं वर एक अन्य मन्त्र से यह भी प्रतिज्ञा लेता है कि 'द्यौरहं" मैं द्युलोकके समान बनूंगा। द्युलोकस्थ सूर्य जिस प्रकार अन्धकार को नष्ट करता है उसी प्रकार मैं गृह के अन्दर अविद्यान्धकार को नष्ट करने का प्रयत्न करूँगा। सब सन्तानों को उत्तम शिक्षा की व्यवस्था को अपना कर्तव्य समझूँगा। उस समय तूने भी "पृथिवी त्वम्" पृथिवी की तरह उत्तम भोज्य पदार्थों के द्वारा उनके पोषण का ध्यान रखना।

जल-कलश व दण्ड

जब पाणिग्रहण के मन्त्रों को बोलकर पति पत्नी यज्ञकुण्ड की प्रदक्षिणा करते हैं उस समय जलकलश लेकर बैठा पुरुष भी उनके पीछे पीछे प्रदक्षिणा करता है। सप्तपदी की विधि के बाद यह उनके मस्तकों पर जलकणों को छिड़केगा भी।

इसका अभिप्राय वस्तुतः यह है कि वह उनसे कहता है कि यदि कभी किसी आकस्मिक कारण से तुम्हारे में कलहाग्नि प्रज्वलित हो उठेगी तो हम सब घर के आदमी इस शीतल जल की तरह ठण्डे दिमाग से काम लेते हुए सान्त्व वाक्यों से उस कलहाग्नि को बुझाने का प्रयत्न करेंगे। हम उसे तमाशबीनों की तरह देखने में आनन्द लेते हुए छद्मवाक्यों से भड़कायेंगे नहीं। वस्तुतः गृह के अन्दर शान्ति-स्थापना करना घर के प्रत्येक सभ्य का कर्तव्य है।

इसके साथ दण्डहस्त पुरुष मौन बैठे इस बात का संकेत कर रहा है कि यदि कभी किसी मनचले पुरुष ने कोई भी अनुचित चेष्टा कर इस वधू के साथ छेड़खानी की तो उसका स्वागत किन्हीं शब्दों से न होकर इस दण्ड से होगा। ऐ वधू पक्ष के लोगो तुम अपनी कन्या को किसी ऐसे स्थान पर नहीं भेज रहे हो जहां कि उसकी इज्ज़त खतरे में हो—जहां कि उस की रक्षा करने वाले पुरुष न हों।

इसी समय कन्या का भाई भी बहिन के पांव को शिला पर रखता हुआ कहता है कि तूने पाषाण के समान दृढ़ होना। अपने पर आक्रमण करने वाले का तूने दृढ़तापूर्वक मुकाबला करना। अपनी इज्ज़त की रक्षा करने में स्वयं भी समर्थ बनना। "कठोरता न कि कोमलता" तेरा आदर्श हो; तू अपने शरीर को वज्र तुल्य मज़बूत बनाना। विलास को दूर रखते हुए शरीर की सुरक्षा का पूर्ण ध्यान करना।

लाजा होम

इसके बाद वधू का भाई खीलों को, बहिन की वर के हाथ पर स्थित अजलि में डालता है और वह "प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः" इत्यादि मन्त्र बोलती हुई उन्हें अग्निकुण्ड में डालती है। यहां खीलों को एक विशेष उद्देश्य से ही लिया गया है। धान की पौद जिस प्रकार पहले एक स्थान पर लगा कर वहां से उखाड़ दूसरे स्थान में बोई जाती है, उसी प्रकार कन्या पितृगृह में बढ़कर वहाँ से उखाड़ी जाकर अब पतिकुल में स्थिर की जा रही है। इस समय पत्नी मन्त्र के शब्दों में यह कहती है कि मैं यहां से छूट रही हूँ परन्तु पतिकुल से मैं कदापि पृथक न होऊं। इन शब्दों में तलाक प्रथा की अवैदिकता भी स्पष्ट हो रही है।

एवं तीन बार आहुतियां देकर और तीन बार प्रदक्षिणा करके वर वधू आगे यज्ञ को प्रारम्भ करते हैं।

अग्नि-प्रदक्षिणा

वर वधू अपनी सब प्रतिज्ञायें अग्निसाक्षिक करते हैं। अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए वे अग्नि का आदर करते हैं।

यहां लाजाहोम के समय तीन प्रदक्षिणा करते हुए निम्न व्रत पति पत्नी से लिये जा रहे हैं—

पत्नीव्रत	पतिव्रत
१—मैं पतिकुल में स्थिर रहूँगी 'प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः"	१—मैं स्त्रियों के उत्कर्ष को न भूलूंगा—"स्त्रीणा मुत्तमं यशः"
२—मैं पति व बान्धवों की वृद्धि का कारण बनूंगी। "आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम"	२—उत्तम सन्तति के लिये ही गृहस्थ बनूंगा अग्ने प्रजया सह

क्रमशः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विद्या और अविद्या

[श्री पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज]

—❀—

विद्वान् संपादक की प्रेरणा से, विद्या और अविद्या के सम्बन्ध में, ये पंक्तियां लिखी जाती हैं। इस विषय पर सबसे अधिक प्रकाश डालने वाले यजुर्वेद के ये तीन मंत्र हैं:—

अन्धंतमः प्रविशन्ति ये ऽविद्यामुपासते।
ततोभूय इवं ते तमो य उ विद्यायाꣳ रताः॥
अन्य देवाहु र्विद्याया अन्यदाहुरविद्यायाः।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्वि च चक्षिरेः॥
विद्यां चा विद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

यजु० ४०।१२।१४

किसी भी टीकाकार का आश्रय न लेकर, नीचे इन मन्त्रों के वे अर्थ दिये जाते हैं जो मंत्र के शब्दों से निकलते है :—

"पहला मंत्र"

"जो (अविद्याम्) कर्म का (ज्ञान की उपेक्षा करके) सेवन करते हैं (वे) गहरे अन्धकार में प्रवेश करते हैं। और जो (कर्म की उपेक्षा करके) (विद्याम्) ज्ञान में रमते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकार को प्राप्त होते हैं।

"दूसरा मंत्र"

ज्ञान का और ही फल कहते हैं और कर्म का और ही फल कहते हैं। ऐसा हम धीर पुरुषों के वचन सुनते हैं जो हमारे लिये उन (वचनों) का उपदेश करते हैं।

"तीसरा मंत्र"

जो ज्ञान और कर्म, इन दोनों को, साथ साथ (बिना एक दूसरे की उपेक्षा किये हुये) जानता (प्रयोग में लाता) है वह "अविद्या"=कर्म से मृत्यु को तैर कर, ज्ञान से अमरता को प्राप्त होता है।

विद्या और अविद्या पर विचार

विद्या ज्ञान को कहते हैं। अविद्या के दो अर्थ हैं, एक अर्थ पारिभाषिक मिथ्या ज्ञान है। दर्शनों में प्रायः यही पारिभाषिक अर्थ काम में लाया गया है। इसको पारिभाषिक अर्थ इसलिये कहते हैं कि यह अर्थ इस शब्द अविद्या से नहीं निकलता है। दूसरे अर्थ इस शब्द के वह हैं जो इस शब्द से निकलते हैं। अविद्या दो शब्दों का संघात है। "अ+विद्या" इनमें से "अ" लिये अविद्या शब्द के अर्थ हैं (न विद्या=अविद्या) जो ज्ञान नहीं अर्थात विद्येतर=ज्ञानेतर ज्ञान से भिन्न दूसरी चीज़ है क्या, इसका उत्तर इन मंत्रों के देवता से मिलता है। इस समस्त अध्याय का देवता आत्मा है। आत्मा के स्वाभाविक गुण ज्ञान और प्रयत्न हैं। न्याय दर्शन में जो इच्छा द्वेषादि का विवरण दिया गया है वे आत्मा के गुण नहीं अपितु आत्मा के होने के लिंग=चिह्न हैं। मनुष्य शरीर की बनावट भी आत्मा के इन्हीं दो गुणों के होने की साक्षी है। शरीर में ज्ञानेन्द्रिय आत्मा के ज्ञान गुण और कर्मेन्द्रिय कर्म गुण को सार्थक करने के लिये हैं।

अस्तु; इन मंत्रों में आये हुये विद्या और अविद्या शब्द आत्मा से सम्बन्धित हैं। विद्या ज्ञान को कहते हैं इसलिये अविद्या=विद्येतर कर्म ही हुआ। इसीलिये अविद्या शब्द कर्म के अर्थ में प्रयुक्त हुआ करता है। अविद्या का पारिभाषिक अर्थ यहां नहीं लिया जा सकता यदि लें तो मानना पड़ेगा कि "अविद्ययामृत्युं-तीर्त्वा" वाक्य में कहा गया है कि मिथ्याज्ञान से मनुष्य मृत्यु के पार हुआ करता है। यह बात सर्वथा अनर्गल होगी। अविद्या का अर्थ, "अविद्या" का दार्शनिक ज्ञान करना खींच तान के सिवा और कुछ न होगा।

(२) ऋषि दयानन्द ने अपने यजुर्वेद भाष्य में तीसरे मंत्र में आये "अविद्यया" मृत्यं तीर्त्वा का अर्थ "शरीरादि जड़ पदार्थ समूह से किये पुरुषार्थ से मरण दुःख के भय को उल्लंघन कर" किया है। स्पष्ट है कि उन्होंने यहां अविद्या का अर्थ पुरुषार्थ ही किया है। फिर इसी मंत्र के भावार्थ में लिखा है कि "न केवल कर्म से तथा न केवल ज्ञान" से कोई धर्मादि पदार्थों की सिद्धि करने में समर्थ होता है। इन दोनों उदाहरणों में ऋषि दयानन्द ने एक जगह अविद्या का अर्थ पुरुषार्थ और दूसरी जगह कर्म लिया है। इससे विद्या और अविद्या का भाव स्पष्ट हो जाता है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

लियन जाति पराजित होकर स्थान स्थान पर अपमानित हो रही है। एबिसीनिया में उन्हें वह प्रदेश छोड़ना पड़ा। इस प्रकार से अफ्रीका में उनकी शक्ति का नाम मिट गया। अब सिसली भी खिसक रहा है। मित्र दल ने आधे से अधिक भाग पर अधिकार कर लिया है। हिटलर भी अपनी महत्वाकांक्षा तथा आत्म रक्षा के लिये इटालियन सेनाओं को अपना फूल बनाने की सोचता है। ऐसा मालूम होता है कि मसोलिनी हिटलर के साथ ऐसी शर्तें स्वीकार कर आया था जिसे इटली के राजा और रोम के पोप और इटली के राजा इमैन्युल इस पक्ष में है कि मसोलिनी के कारण जो नुकसान हुआ है उसे पूरा किया जाय।

मसोलिनी के इस पतन से, जर्मनी तथा प्रभाव को भी भारी धक्का पहुंचेगा। हिटलर द्वारा पादाक्रान्त राष्ट्रों में इस घ देख कर देश भक्तों के हृदय में स्वतन्त्र इच्छा प्रबल होगी और वह यथा शक्ति धुरी राष्ट्र के प्रतिनिधियों को अपने देश लने का यत्न करेंगे। मसोलिनी का पतन के पतत की पूर्व भूमिका है।

मित्र दलों के राष्ट्रों को इस घटना से उत्साह मिलेगा। विश्व व्यापी समर की शीघ्र समाप्ति के लिये मसोलिनी का पतन आतंक कारक होगा। अतः हम मसोलिनी पतन का स्वागत करते हैं।

भारत की राजनीति—

इस समय तक भारत की राजनीतिक परि में कोई आशाजनक परिवर्तन नहीं हुआ? स आदि कई प्रकार के यत्न कर रहे हैं। अब को डिपटी वायसराय बनाने का भी प्रस्ताव है। भारतीयों को ऐसे पद देकर जन स्वराज्य प्राप्ति की अभिलाषा को पूर्ण करने किया जा रहा है। मि० जिन्ना और मि० सावर मुलाकात कराने की कोशिश की जा रही है। की जा रही है कि यह दोनों साम्प्रदायिक परस्पर समझौता कर भारत में राष्ट्रीय बनाने में कामयाब हो सकेंगे। भारत के नए राय लार्ड वावेल से भी आशा की जा रही है भारतीय राजनैतिक परिस्थितियों में परिवर्तन सैन्ट्रल असेम्बली में सरदार सन्तसिंह आदि कारी मेम्बरों के साथ जो प्रश्नोत्तर हुए हैं पता लगता है कि सरकार अभी तक भा राजनैतिक परिस्थिति में परिवर्तन करने के विशेष उत्सुक नहीं है। कई भारतीय भी स्वरा को फिर से सङ्गठित कर अथवा आल इंडिया कमेटी के जेलों से बाहर के सदस्यों की मीटि कर राजनैतिक परिस्थिति में परिवर्तन करना हैं। हमारी सम्मति में यह सब यत्न अधूरे निर्जीव हैं। जब तक सरकार महात्मा गांधी मि० जिन्ना को परस्पर पत्र व्यवहार करने धारण सी बात की स्वीकृति नहीं देती त राजनैतिक स्थिति को क्रियाशील बनाने के स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 561

"आर्य्य" आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का
इस में साप्ताहिक सत्संगों में सुनाने के लिये
तथा विद्वानों के लेख होने के अतिरिक्त
था गुरुकुल के समाचार प्रकाशित होते हैं।
आर्य्य समाज तथा संरक्षक को इसका ग्राहक
ाहिये। इसका वार्षिक चन्दा केवल ४) है।
र्य्य समाजें तथा संरक्षक इसके ग्राहक नहीं हैं
म ही ४) भेजकर इसके ग्राहक बनना चाहिये।

श्री हरगोविन्द जी मंत्री आर्य्य समाज मुज़फ्फर-
म० मनोहरलाल जी अलीपुर के प्रयत्नों तथा
ज़फ्फरगढ़ के आर्य्य सज्जनों की सहायता से
अगस्त को मुज़फ्फरगढ़ में राजगुरु धुरेन्द्र
ओ के सभापतित्व में ज़िला आर्य्य वीर दल
होगा, मुज़फ्फरगढ़, मुलतान, बहावलपुर
गुमरी के आर्य्य सज्जनों को इस सम्मेलन में
ल्त होना चाहिये।

(क) ज़िला मुज़फ्फरगढ़ में पं० हरिदेव जी
भूषण तथा म० गुलशन लाल जो भजनीक
कर रहे हैं। बड़े २ शहरों को छोड़कर इन्होंने
कार्य्य क्षेत्र केवल ग्रामों को बनाया है। आशा
र्ष ज़िला मुज़फ्फरगढ़ में ऐसा कोई ग्राम न
हां कि आर्य्य समाज का सन्देश न पहुंचे।

) ज़िला डेरा गाज़ी खां में पं० तीर्थराम जी
० बालकृष्ण जी दौरा कर रहे हैं। इनका मुख्य
ों में ही है। ये महानुभाव अब तक निम्न स्थानों
र कर चुके हैं। दाजल, लुण्डी सदां, हडन्द,
ण्डा, जामपुर, रुक्खान, रुक्खान शर्की, मोरांपुर,
ट, कोट मिठ्ठन, राजनपुर, शिकारपुर, फाज़िलपुर।

) ज़िला फ़ारोज़पुर में पं० हरदयालु जी तथा
शानन्द जी प्रचार का कार्य्य कर रहे हैं। इन
ार कार्य्य भी बड़ा सफल हो रहा है।

) रियासत पटियाला में पं० मुनीश्वर देव जी
० भद्रपाल जी प्रचार का कार्य्य कर रहे हैं।
है कि दो महीनों में महानुभाव अपना दौरा
यासत में समाप्त कर लेंगे।

) पं० रामचन्द जी तथा म० बलदेव जी भज-
हौर तथा अमृतसर के ग्रामों में सफलता पूर्वक
का कार्य्य कर रहे हैं। इस मण्डली ने इस वर्ष
ऐसे ग्रामों में प्रचार किया है जहां अब तक
समाज का सन्देश नहीं पहुंचा था।

) ज़िला करनाल में श्री स्वामी योगानन्द जी
तथा श्री स्वामी निर्भयानन्द जी (बेधड़क)
र्य्य कर रहे हैं। इन दोनों महानुभावों का

वेद प्रचार विभाग

[श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालङ्कार वेद प्रचार अधिष्ठाता]

प्रचार बहुत उपयोगी तथा प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है।

४. ज़िला प्रचार समिति मुलतान की ओर से श्री म० आत्मदेव जी भजनोपदेशक सभा मुलतान ज़िले के ग्रामों में प्रचार कार्य्य कर रहे हैं।

५. शिमला पहाड़ की आर्य्य समाजों में श्री पं० हरपाल जी आजकल कथा कर रहे हैं। शिमले पहाड़ के आर्य्य समाजों के उत्सव सितम्बर मास में नियत हुए हैं।

६. श्री पं० दलपति जी शास्त्री अम्बाला मण्डल में नियत थे। स्वास्थ्य के ठीक न होने के कारण वे सभा से त्याग-पत्र दे गये हैं। उनके स्थान पर अम्बाला मण्डल में पं० रामस्वरूप जी शान्त तथा म० बसन्तलाल जी त्यागी नियत किये गये है। उन्होंने अपने मण्डल का दौरा प्रारम्भ कर दिया है।

७. आर्य्य समाज वच्छोवाली का वार्षिक उत्सव नवम्बर में होता है। आर्य समाज के मंत्री पं० भीमसेन जी के प्रयत्नों से वच्छोवाली आर्य्य समाज में नवीन स्फूर्त्ति तथा उत्साह पैदा हो रहा है। उत्सव के सम्बन्ध में अभी से नगर प्रचार का कार्य्य प्रारम्भ हो गया है। म० देशराज जी भजनोपदेशक-सभा नगर प्रचार का कार्य्य बड़ी योग्यता से कर रहे हैं।

८. आर्य्य समाज बादामी बाग में सभा की ओर से श्री पं० पूर्णचन्द जी, म० भक्तराम जो तथा म० जयप्रकाश जो प्रचार का कार्य्य कर रहे हैं। इस प्रचार से सैंकड़ों नर नारी लाभ उठा रहे हैं।

९. आर्य्य समाज कमालिया का उत्सव १६ से २० जुलाई तक बडी धूम धाम से हुआ। सभा की तरफ से श्री पं० पूर्णचन्द जी वा शान्तिप्रकाश जी, श्री पं० सदाशिव जी, म० चिरंजीलाल जी प्रेम, श्री म० शमशेरसिंह जो, श्री म० बसन्तलाल जी, श्री म० सेवाराम जी सम्मिलित हुए। वेद प्रचार के लिये १५०) देने का निश्चय किया है जिनमें से ८५) भेज दिये गये हैं।

१०. श्री पं० शान्ति प्रकाश जी ने मियां चन्नू, पाकपटन, तांदलयांवाला, पीरमहल में प्रचार किया। इनकी कथायें प्रत्येक स्थान पर अत्यन्त सफल रही हैं।

११. श्री पं० क्षितीश कुमार जी सभा के अत्यन्त योग्य तथा प्रभावशाली उपदेशकों में से हैं। वे १ अगस्त से आर्य्य समाज कटा में कथा के लिये पधारेंगे।

१२. हरयाना मण्डल के सब उपदेशक तथा भजनीक महानुभाव गर्मियों के कारण आज कल अवकाश पर हैं। इस मण्डल में पं० समरसिंह जी वेदालंकार की अध्यक्षता में आर्य्य समाजों में प्रचार का बड़ा शानदार काम हुआ है।

१३. श्रीमती पंडिता द्रौपदी देवी जी के लिये आर्य्य समाजों से बड़े पत्र आ रहे हैं। आर्य्य समाजों की सेवा में सूचित करना आवश्यक है पंडिता जी बीमार हैं और वे प्रचारार्थ अभी कहीं नहीं पधार सकतीं।

स्वाध्याय के लिए उपयुक्त ग्रंथ

१. वैदिक विनय (२य और ३य भाग)—ले० (१ भाग समाप्त) आचार्य अभय देव जी। मू० १) प्रति भाग।

२. सोम सरोवर—ले० श्री पं० चमूपति जी एम. ए. मू० सजिल्द १॥, अजिल्द सवा रु०।

३. वेद गीतांजलि—संग्रहकर्ता मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी। मू० २)

४. स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश (तीन भाग) संगृहीता ला० लब्भूराम जी नैयड़ ३।) सैट।

५. बृहत्तर भारत—ले० श्रीयुत प० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार मू० ४॥)

६. आत्म मीमांसा—ले० श्री० प्रो० नन्दलाल जी खन्ना मू० २)

७. ब्रह्मचर्य सन्देश—ले० श्रीयुत प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार मू० २)

८. शिक्षा मनोविज्ञान—ले० श्रीमती चन्द्रावती जी लखनपाल एम. ए. बी. टी, मू० १।)

९. सन्ध्या सुमन—ले० श्री० पं० नित्यानन्द जी वेदालङ्कार मू० १)

१०. जल चिकित्सा विज्ञान—ले० श्रीयुत पं० देवराज जी विद्यावाचस्पति मू० १॥)

११. हिन्दी निरुक्त भाष्य—ले० पालिरत्न श्रीयुत पं० चन्द्रमणि जी विद्यालङ्कार। मू० ७)

१२. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या—लेखक श्रीयुत पं० प्रियरत्न 'आर्ष'। मूल्य १॥)

१३. त्रिफला—ले० रामेशबेदी आयुर्वेदालंकार। मू० १॥)

मिलने का पता—

पुस्तक भण्डार

गुरुकुल कांगड़ी, जिला सहारनपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

आर्य जगत्

प्रो. शिवदयाल जी एम. ए. के दुःखद निधन पर

कन्या गुरुकुल देहरादून २६ जुलाई, १९४३ को प्रो० शिवदयाल जी के निधन पर शोक करने के लिए बन्द रहा और सभा में निम्न प्रस्ताव पास किया गया। "कन्या गुरुकुल देहरादून के समस्त कर्मचारी वर्ग और ब्रह्मचारिणियों की यह शोक सभा आर्य समाज के अनन्य भक्त, आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मानित कार्यकर्त्ता प्रो० शिवदयाल जी एम. ए., के देहावसान पर शोक प्रगट करती हुई, उनके पारिवारिक जनों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रदर्शित करती है, और उस दिवंगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिए भगवान् से प्रार्थना करती है।

शुभ विवाह

श्री नन्दकिशोर जी गोविल विद्यालंकार की ज्येष्ठ कन्या चि० इन्दरा बी० ए० का पाणिग्रहण संस्कार गत रविवार ता० ११ जुलाई को उनके निवास स्थान पर बड़ी धूमधाम व सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। वर महोदय श्रीयुत कृष्णदेव जी एम० ए० भारतीय सरकार के पुरातत्व विभाग शिमला में विद्वान् हैं।

संस्कार तीन प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा सम्पन्न हुआ अर्थात् राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री० पं० अयोध्या प्रसाद जी बी० ए० वैदिक रिसर्च स्कालर और श्री० डाक्टर मङ्गलदेव जी शास्त्री, एम० ए० डी० फ़िल

रायबहादुर ब्रजनन्दन सिंह, बाबू गुरुप्रसाद सिंह जी, रायबहादुर सूर्यभूषणलाल, रायबहादुर बेचूनारायण रायबहादुर पन्नालाल गुप्ता, रायसाहिब मथुराप्रसाद, श्रीयुत नन्दलाल जी पुरी, प्रोफेसर गोविन्दराम सेठ देहली आदि प्रसिद्ध व्यक्ति सम्मिलित थे।

श्री स्वामी भवानीदयाल जी संन्यासी, व श्री वर चांदकरण जी शारदा, बम्बई से मिस्टर ए० सी० लैडहिल, श्रीयुत अमृतलाल जी ओझा, श्री नारायण स्वामी जी आदि के सन्देश प्राप्त हुए।

श्रीयुत् प्रो० शिवदयाल जी—

यह समाचार अत्यन्त दुःख के साथ सुना जायगा कि आर्य संसार के प्रसिद्ध विद्वान तथा अनथक सेवक श्रीयुत प्रो० शिवदयालु ज़ी का अपने निवास स्थान माडल टाऊन लाहौर में २६ तारीख को स्वर्गवास हो गया। उन की मृत्यु से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति की सम्भावना कठिन है।

मुसोलिनी का त्यागपत्र—

रोम का समाचार है कि इटली के प्रधान मन्त्री सीन्योर मुसोलिनी ने त्यागपत्र बादशाह विक्टर को पेशकिया और उन्होंने स्वीकार कर लिया। बोडोगिलयो नये प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए हैं। त्यागपत्र स्वीकार करने के बाद मुसोलिनी को उसके कर्मचारियों सहित नज़र बन्द कर दिया गया। कुछ लोगों का कहना है कि मुसोलिनी कुछ अर्से से बीमार था—इस लिए वह कार्यभार सम्भालने में अशक्त हो गया था। यह भी समाचार है पिछली मुसोलिनी—हिटलर भेंट में मुसोलिनी ने हिटलर से इटली की आन्तरिक दशा सुधारने में सहायता मांगी थी पर उसने सहायता देने से साफ इन्कार कर दिया था। जो भी धारणा हो, मुसोलिनी का पतन फासिज्म का पतन है। नये प्रधान मन्त्री के आने के बाद फासिष्ट राष्ट्रीय गीत भी बन्द हो गया। इटली में मार्शल-ला घोषित कर दिया गया है।

—बम्बई—मि० जिन्ना पर २६ जुलाई को एक खाकसार ने आक्रमण किया। आक्रमणकारी घटनास्थल पर ही पकड़ा लिया गया। जिन्ना बाल २ बचे।

—हरिपुर जेल में सीमान्त गान्धी खान अब्दुल गफ्फार खां का स्वास्थ्य बहुत खराब है।

—मुसोलिनी की गिरफ्तारी के विषय में स्काटहोम का समाचार है कि जब वह जर्मनी भागने की कोशिश में था तो गिरफ्तार कर लिया गया।

आवश्यकता

गुरुकुल के एक सुयोग्य स्नातक के लिए जो कि नैनीताल में मैडिकल प्रैक्टिशनर हैं—एक सुन्दर, स्वस्थ, सुशील शिक्षिता एवं राष्ट्रीय तथा धार्मिक विचारों वाली कन्या की आवश्यकता है। साहित्य और कला से प्रेम रखने वाली गुरुकुल की स्नातिका को विशेषता दी जाएगी। विवाह में दहेज़ व जातपात का ख्याल न रक्खा जाएगा। वर महाशय पंजाबी हैं अतः पंजाब में ही विवाह करना पसन्द करेंगे। ग़रीब एवं असहाय घर की लड़की का विशेष रूपेण ख्याल रक्खा जाएगा।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—

डा० कृष्णमोहन

तल्लीताल, नैनीताल।

देश विदेश के समाच

कलकत्ता में भीषण अकाल—

कलकत्ता २७ जुलाई—अकाल ने इतना धारण कर लिया है कि गरीब लोग कूड़े से निकाल २ कर खा रहे हैं शहर की आबादी क रही है। इसका कारण यह है कि ग्रामीण भोजन वस्त्र न मिलने के कारण शहर आरही है। होटल भी दिनों दिन बढ़ रहे हैं। पर रहने वाले दुःखी वहीं गन्दा फैलाते और शहरमें किसी महामारीके फैलनेकी शीघ्र सम्भ

—ब्रिटेन की ओर से इटली के लिये रेडि सन्धि की शर्तें पेश की गई हैं।

इटली और चर्चिल—

आज संसार की नज़रें इटली की ओर हैं यह युद्ध क्षेत्र बना हुआ है। मुसोलिनी के त्य की खबर के बाद चर्चिल ने इटली के विषय बातें कहीं हैं—वे कहते हैं—मुसोलिनी के फासिज्म समाप्त हो जायगा। इटली में शीघ्र ही परिवर्तन की सम्भावना है। परन्तु यह कहना है कि उसका रूप क्या होगा। मुसोलिनी ने में फ्रांस को धोखा दिया और भूमध्य सागर नीयत से कब्ज़ा किया कि बर्तानिया नष्ट हो जा परन्तु बर्तानिया भूमध्य सागर को विजय करके के द्वार पर खड़ा है—मुसोलिनी की ग़लती इ को मंहगी पड़ेगी। अब उन्हें कोई नया मार्ग अ करना होगा। इटली के लोग नाज़ी धुरे से मु चाहते हैं।"

—रोम को खुलाशहर घोषित किये ज सम्भावना है।

स्वास्थ्य समाचार गुरुकुल कांग

श्रेणी	नाम	रोग	श्रेणी	नाम
१५	दयानन्द	Analmea	११	यशःपाल
५	सोमदत्त	ज्वर	५	रामेश्वर
५	ईश्वरचन्द्र	निर्बलता	५	सत्यप्रिय
३	जगदीश	ज्वर	३	नरेन्द्र
३	श्यामसुन्दर	,,	३	विश्वप्रकाश
२	रामपाल (मु.)	,,	२	सत्यकेतु
२	श्री प्रकाश	नेत्ररोग	१	रामेश्वर
१	मदन	ज्वर	१	गोपाल
१	प्रागाजीवग	निर्बलता।		

गत सप्ताह उपरोक्त ब्रह्मचारी रोगी हुए थे सब स्वस्थ हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation and eGA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 301

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 301

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४

वार्षिक

२४ श्रावण

८ अगस्त

२००२ पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

बुद्धिमान् कौन ?

मा कस्य यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्य
मिन्नतो मापेः । मा भ्रातुरग्ने अनृजोर्ऋणं
ां सख्युर्दक्षं रिषोरुजेम ॥

ऋ० सं० ४ । अ० १ । सू० ४ ॥

पदार्थ—हे (अग्ने) अग्नि के सदृश प्रकाश-
आप (अनृजो) कुटिल (कस्य) किसी
मिंनतः) अत्यन्त हिंसा करने वाले (वेशस्य)
ा के (हुरः) कुटिल कार्य सम्बन्धी (सदम्)
को (मा) मत (गाः) प्राप्त होओ और
क्ष (भ्रातुः) बन्धु के प्राप्त होने योग्य वस्तु
(मा) मत प्राप्त होओ कुटिल (सख्युः) मित्र
न्दक्षम्) बल को (मा) मत (वैः) प्राप्त होओ
क्ष (रिपोः) शत्रु के (ऋणम्) ऋण को (मा)
प्राप्त होओ जिससे हम लोग सुख का (इत्) ही
क्षेम्) व्यवहार करें ॥१३॥

इस मन्त्र का भावार्थ यह है कि जो अन्याय से
ी दूसरे की वस्तु को ग्रहण नहीं करते, हिंसा
ने वाले का साथ नहीं देते, न्याय से प्राप्त हुए
को व्यर्थ खर्च नहीं करते, बन्धु यदि दुष्ट है तो
का संग छोड़ देते हैं और जो शत्रु का कभी
वास नहीं करते वही लोग बुद्धिमान् कहला
ते हैं अथवा वेद के शब्दों में वही बुद्धिमान् हैं।
कहता है कि यदि तुम बुद्धिमान् बन कर आनन्द
उपभोग करना चाहते हो तो इन पांच बातों पर
वरण करो।

प्रथम—अन्याय से किसी की वस्तु का ग्रहण न
ना—मागृधकस्यस्विद्धनम्—किसी के धन की
ो। वस्तुतः इसी वेद वाक्यांश की व्या-

अध्यात्म सुधा

[३४]

ख्या उक्त के थोड़े से मन्त्रभाग में की गई प्रतीत होती है। आज इस धन, माया की छाया के फेर में पड़ कर कितने जुल्मो-सितम किये जाते हैं यदि अन्याय से धन ग्रहण करने की प्रवृत्ति पर लगाम लगाई जाय तो संसार के बहुत से झगड़े दूर हो जाएं धन

वेदप्रचार सप्ताह

श्रावणी समीप आ रही है जिसका कि आर्यसंसार में प्रमुख स्थान है। सब आर्य-समाजों को सूचित किया जाता है कि वेद-प्रचार सप्ताह १६ अगस्त से २३ अगस्त तक मनावें और इस सप्ताह में सत्यार्थप्रकाश की कथा सब आर्यसमाजों में की जाये। वेद-प्रचार निधि के लिये एक रुपया प्रति व्यक्ति एकत्रित करके सभा कार्यालय में भेज दें। इस कार्य में प्रायः आर्यसमाजोंमें शिथिलता प्रकट की जाती है, जिसका अवश्यम्भावी परिणाम प्रान्त के वेदप्रचार में निर्बलता आती है। इस वर्ष सब आर्यसमाजों का ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकर्षित किया जाता है है कि अपने प्यारे वेदप्रचार का पूरा पूरा ध्यान रखें।

यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग

सचमुच संसार को अन्धा बना देता है। इस मन्त्र में धन कमाना मना नहीं है परन्तु अन्याय से कमाना मना है।

दूसरी बात—हिंसा का अभाव। हिंसा को पशुता का चिन्ह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। हिंसा कई कारणों और प्रकारों से होती है। इस मन्त्र में तो हिंसा करने वाले का साथ छोड़ देने के लिए आदेश दिया है। हिंसक के साथ रहकर हिंसक प्रवृत्ति अवश्य जागृत होगी।

तृतीय—न्याय से प्राप्त धन को न उड़ाना—वस्तुतः जो अन्याय से धन न प्राप्त करेगा वह अपने गाढ़े पसीने की कमाई को व्यर्थ में उड़ा देने को कहां तैयार होगा? यदि वह व्यर्थ खर्च कर डालता है तो उस जैसा मूर्ख कौन होगा।

चौथी बात—यह बताई है कि दुष्ट बन्धु का संग त्याग—बन्धु यदि दुष्ट है तो बुद्धिमान् के लिए उस का साथ छोड़ देना ही अच्छा है। उससे कई हानियां होने की सम्भावना रहती है। नित्य प्रति मूर्ख कहलाने में अच्छा है कि दुष्ट बन्धु को अथवा मित्रको एक दम छोड़ दिया जाय।

पांचवीं बात यह कही है कि शत्रु का विश्वास न करो—नीति का यह साधारण सा नियम कितना उपयोगी है। परन्तु भारतीयों ने तो शायद इसे कुछ जाना ही नहीं। इसी लिये आर्यों का शक्तिशाली साम्राज्य धूल में मिल गया। एक नहीं अनेकों उदाहरण इतिहास के पन्नों में छिपे पड़े हैं।

प्रभु कहते हैं कि अग्नि के समान प्रकाशम लोगो यदि तुम अपने जीवन का आनन्द उठाना चाहते हो, इस संसार में स्थित स्वर्ग सुख का भोग करना चाहते हो तो ऊपर कही गई पांच बातों प चलो। जो इन पांच बातों पर आचरण करता है वह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चलता-फिरता अपाहज

तं गूर्द्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं
दधन्विरे । देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ साम०

हे मेरे मन ! तू (तम्) उस (स्वर्णरम्) स्वर्ग के नेता की (गूर्द्धय) स्तुति कर जिसे (देवासः) देवताओं ने (अरतिं देवम्) निष्काम देवाधिदेव (दधन्विरे) स्वीकार किया । उसकी स्तुति यह है—देवाधिदेव ! तुम (हव्यम्) हवि को (देवत्रा) देवताओं में (ऊहिषे) पहुँचाते हो।

मेरे मन ! तू चाहता है कि स्वर्ग में पहुँचे ? तो वह स्वर्ग तेरे पास ही है । तेरा अपना "स्व" स्वः है—स्वर्ग है । तू अपने-आपको पहिचानता ही नहीं । वह सुख कौन-सा है जो तेरे अधीन नहीं ? अन्य इन्द्रियों को तो अपने विषयों तक पहुँचने में कुछ कठिनाई भी है । उनके विषय उनसे दूर हैं । वे इस दूरी को पाटें तब कहीं अपनी वाञ्छित वस्तु का उपभोग करें । तू जिस वस्तु को चाहे झट पास बुला ले । विषयों का तेरा चुनाव अशुद्ध रहता है । इसी से तुझे दुःख की प्राप्ति होती है । अपनी स्थिति को स्वयं स्वर्ग अथवा नरक बना लेना तेरे अपने अधीन है । स्वर्ग का राजा है—इन्द्र । आत्मा ही स्थायी सुखों का नेता है—स्वामी है । वही नर है । नर अथवा नारी एक ही चीज है । तू उस आत्मा का ध्यान कर । उसी को अपनी स्तुति का पात्र बना । उसके गुणों का ध्यान कर, कीर्त्तन कर । तू अपने आनन्द की खोज उसी वस्तु में कर जिससे आत्मा को तृप्ति हो ।

एक छोटा देवलोक तो यही शरीर ही है । इसमें काम कर रही सभी इन्द्रियाँ देव हैं । इन देवों का देवाधिदेव आत्मा है । इनकी संपूर्ण शक्ति आत्मा के कारण है । आत्मा सुखी है तो ये भी सुखी हैं । आत्मा को क्लेश हो तो किसी इन्द्रिय को भी चैन से रहने का अवसर नहीं मिल सकता । जहाँ इन्द्रियों का सुख आत्मा के सुख से विपरीत हो, वह सुखाभास हो तो हो, वास्तविक सुख नहीं । उस सुख का अन्त दुःख ही है । आध्यात्मिक शान्ति ही वास्तविक शान्ति है । उस शान्ति के रहते ही भौतिक जीवन में शान्ति की प्राप्ति हो सकती है ।

बड़े पैमाने पर संपूर्ण ब्रह्माण्ड देव-लोक है । इसमें स्थल-स्थल पर देवताओं की क्रीड़ा हो रही है । प्रत्येक देवता आनन्द में मग्न है । इन देवताओं का देवाधिदेव परमात्मा है । वास्तविक देव शक्ति-शाली हैं । उसी के आनन्द से सब आनन्दित हैं ।

मेरे मन ! तुझे आनन्द की तलाश है तो उस आनन्दस्वरूप के संयोग ही से आनन्दित हो । स्तुति का पात्र वही है आत्मा "उप-स्तुत" है । परमात्मा की स्तुति में उप-स्तुति—गौण स्तोत्र—आत्मा का भी हो जाता है ।

देवताओं को हवि चाहिए । बिना अग्नि के हवन नहीं होता । देवताओं का हव्यवाट् अग्नि है । शरीर की अग्नि आत्मा है, विश्व की परमात्मा । जहाँ आत्मा ने शरीर को छोड़ा, इन्द्रियों के रहते भी उसमें उपभोग की शक्ति नहीं रहती । बिना आत्मा के न शरीर का विकास ही होना संभव है, न किसी निर्जीव अंग द्वारा सुख-दुःख की अनुभूति ही हो सकती है ।

शरीर की सब चेष्टाएँ आत्मा की विद्यमानता का ही फल हैं । ऐसे ब्रह्माण्ड में परमात्मा की स्थिति से ही व्यवस्था है, नियन्त्रण है, नियमित गति है ।

शक्ति प्रभु से आती है । और तो और, हमारा अपना शरीर ही कई अंशों में हमसे स्वतन्त्र है । यह हमारे अधीन किया गया है । आखिर इसके परमाणु हैं तो इसी ब्रह्माण्ड ही का एक भाग, जिसकी सत्ता हमसे सर्वथा स्वतन्त्र है । फिर भी यह हमारा उपकरण बन रहा है । किसी महान् व्यवस्थापक की व्यवस्था से ही हमारा इसका सम्बन्ध हुआ है । फिर और वस्तुओं का तो कहना ही क्या है ? ब्रह्माण्ड का एक बहुत बड़ा काम हमारे वशीभूत हो रहा है । यह उसी देवाधिदेव प्रभु की कृपा है ।

मेरे मन ! तू उसी की शरण जा । उसके गुण-गान से कृतज्ञता की भावना होगी । विनय का अभ्यास होगा । "हव्य-वाहन" की ओर रुचि होगी । जीवन नाम ही "हव्य-वाहन" का है । किसी के काम आना, किसी की आवश्यकता पूरी कर देना, भूखे को भोजन, नंगे को वस्त्र, लूले को गति, गूँगे को वाणी देना "हव्य-वाहन" है ।

मेरे मन ! क्या तू स्वयं भूखा नहीं, प्यासा नहीं, लूला नहीं, लँगड़ा नहीं ? तू अपाहज न भी हो, सभी चेष्टाएँ तेरी अपनी हों भी, पर यदि संसार में और कोई वस्तु न हो, वस्तु हो और तेरा उससे कोई सम्बन्ध न हो, तेरी पहुँच से ही संसार बाहर हो तो तू चलता-फिरता भी क्या अपाहज न हो जाए ! कोई तेरा "हव्यवाट्" हुआ है, तू दूसरों का "हव्यवाट्" बन । "हव्यवाट्" की वास्तविक स्तुति यही है ।

ध्वजा-गीत

जागा देश हमारा ।
ओं नाम की पुण्य पताका
विजय-चिन्ह भारत वसुधा का
धर्म जाति का अनुपम गौरव
अग्रदूत शुभ स्वतन्त्रता का
फहराना प्राची के नभ में
ज्ञान भानु उजियारा
ब्रह्मपुत्र, यमुना, सुरसरिता,
पंचनदी ले सिन्धु-उमड़ता,
लंका, बर्मा, वृद्ध हिमालय,
सीमाप्रान्त एक हो बढ़ता,
सागर की लहरों का गर्जन,
जीते हृदय दुलारा ।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
आर्य जाति के ही अनुयायी,
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रसब
आज मिले हैं भाई भाई।
माँ बहनें मस्तक पर करतीं,
विजय-तिलक है प्यारा ।
कर में ले यह विजय निशानी,
दयानन्द आगे सेनानी,
युवक सैनिकोंकी जय-ध्वनि है,
वाणी वेदों को कल्याणी,
पिता, ज्ञान गुरु के चरणों पर,
विश्व झुकेगा सारा ।
जागा देश हमारा । --श्री सूर्यकु

शं नो मित्रः

मंगलमय प्रभु ! मंगलमय हों ।
मित्र रूप हों मित्र हमारे,
साथी परम पवित्र हमारे,
वरुण नियन्ता देव अर्यमा
कर दें चारु चरित्र हमारे ।
शान्ति सौख्य अक्षय
इन्द्र सकल ऐश्वर्य निकेतन,
ऋद्धि सिद्धि श्रीसम्पत्ति गोधन
देव बृहस्पति विद्यापति की,
वेद ज्ञान शुभ सत्य सनातन ।
जीवन-ज्योति उदय
विष्णु उरुक्रम पिता हमारे,
शुद्ध बुद्ध उर करुणा धारे,
निर्विकार, निर्लेप, निरंजन,
नित्य सत्य शिव सुन्दर प्यारे।
तेरे पुत्र अभय
मंगलमय प्रभु मंगलम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 301

आर्य रविवार २४ श्रावण वि०सं० २०००

उत्तिष्ठत जाग्रत !

पिछले दिनों मुझे आर्यसमाज के एक मान्य ता । उन्होंने अपने समय में काफी कार्य ज का किया—कर अब भी रहे हैं पर जब ाम मिले तो कहने लगे—मैं तो अब सभा ख्यों से तंग आगया हू, आर्य समाज से होती जाती है'—यहां तक कि—अब वेद में स्थल ऐसे नज़र आते हैं जो हमारे साहित्य से गन्दा भाग हैं' । मुझे सचमुच बड़ी हैरानी व्यक्ति की इस बात को सुन कर । जैसी ी बात महत्वपूर्ण है पर वह मेरे लिए साधा- क्योंकि मैं समझता हूँ कि वह वेद का विद्वान् दि एक मनुष्य किसी वस्तु के उचित प्रयोग चल नहीं, यदि उस वस्तु से उसे हानि हो में वस्तु का कुछ दोष नहीं—उसके अज्ञान का मेरे लिये पहली बातें अत्यन्त विचारणीय :: प्रत्येक आर्य भाई का कर्तव्य है कि वह ौर करे कि वह कौन से कारण हैं जिनसे पने ही आर्य भाइयों के हृदय में अश्रद्धा वा ता के बादल यदा कदा उमड़ आते हैं ।

से पहला कारण जो मुझे मिला वह यही है में अपने धर्म ग्रन्थों के प्रति स्वाध्याय की ीं । कितने आर्य अपने हृदय पर हाथ रख सकते हैं कि क्या वह आर्य हैं ? यदि हां तो होंने अपने धर्म ग्रन्थों का पाठ किया है । यह य है कि बहुत से समाजों, सभाओं के प्रधान, न आदि महानुभावों को संध्या (अर्थसहित) द नहीं । उनके घर में कभी विवाह, मुण्डन, ण आदि मौकों पर हवन होता हो तो हो, कभी उन्होंने नाम तक नहीं लिया । वस्तुतः स्वाध्यायशील सज्जनों को सच्चे अर्थों में नहीं कि आर्य समाज है क्या । वे लोग आर्य में आकर अपनी स्वाध्याय हीनता के कारण माज के वातावरण में रहते हुए भी उपराम हैं । मैं तो स्वाध्याय को अपना नित्य प्रति प्रदर्शक मानता हूँ । स्वाध्यायशील जन शय को प्राप्त नहीं होता । जो कुछ लोग य करते भी हैं वह उतने दृढ़ विश्वासी नहीं श्रद्धा और भक्ति से अपने धर्म ग्रन्थों का पाठ करना चाहिए । अब वेद प्रचार सप्ताह आ रहा है । प्रत्येक आर्य भाई प्रण ले कि कम से कम वह इस सप्ताह में सत्यार्थ प्रकाश का तो पूरा पाठ कर लेगा । सत्यार्थ प्रकाश उनकी बहुत सी शंकाओं को नष्ट कर देगा ।

हमारे आपस के लड़ाई झगड़े पार्टी बाजियाँ भी बहुत से लोगों को आर्य समाज से विमुख कर रही हैं । यह कहावत है कि बर्तन आपस में टक्कर खाते हैं । परन्तु हमें सचमुच बर्तन—बेपैन्दी के लोटे ही नहीं बन जाना चाहिए, जहां कहीं भी हम टकराते फिरें । सब सभाओं में लड़ाइयां हैं, दलबन्दियां हैं, घृणित पक्षपात हैं, हमें यही बातें कह कर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए । परन्तु हमने तो सारे संसार को भातृ भाव का सन्देश देना है । महर्षि दयानन्द हमें विरासत में वह चीज़ दे गये हैं जो किसी के पास नहीं—हमें वह मार्ग दिखला गये हैं जो सदियों से भुला दिया गया था—क्या हमें उस राजमार्ग पर चलकर भी सुख शान्ति प्राप्त न होगी । आज का संसार—आज से दस साल, पांच साल, अढ़ाई साल और सवा साल पहले का संसार नहीं है और इसमें नित नये परिवर्तन होते रहते हैं—लोग कहते हैं—ताने मारते हैं कि आर्य समाज में अकर्मण्यता आती जा रही है—मैं समझता कि अकर्मण्यता का सबसे बड़ा कारण यही है । क्या हमें लड़ने झगड़ने की लालसा इस तरह शान्त करनी होगी ? लड़ने को रूस और जर्मनी, जापान और अमेरिका, इंग्लैण्ड और यूरोप और थोड़े हैं । हमने तो उनको ओम् के झण्डे के नीचे लाकर खड़ा करना था--परन्तु हम जो दो चार संयुक्त थे वे भी खिसकते जा रहे हैं । क्या यह बना बनाया आर्य समाज का विशाल भवन इसी प्रकार एक एक छोटे २ टुकड़े के अलग होते रहने से एक दिन खण्डहर के रूप में परिणत न हो जायगा ? हम निराशावादी नहीं, हमारा कहना है कि अब भी कुछ बिगड़ा नहीं । यदि आर्य भाई तुच्छ बातों का विचार छोड़कर काम करें तो फिर संगठन मज़बूत हो सकता है । संसार को सुधारने से पहले अपने घर को सुधार लेना अत्यावश्यक है—मैं इसे स्वार्थ नहीं समझूंगा, परन्तु संसार के सुधार की पहली सीढ़ी ही अपने घर का सुधार है ।

आर्य भाइयो ! उठो, आज संसार तुम्हारे कन्धे पकड़ कर हिला रहा है—उठो आर्य वीर ! यदि इसी तरह सोये रहोगे तो संसार तुम्हारी परवाह न कर, किस चीज की कमी है ? वेद रूपी ज्ञान का भण्डार संसार के अटूट और अखूट खज़ानों से भी महान भण्डार है । ऐसी निधि को पाकर भी तू भूखा है, कंगाल है । कुछ व्यक्ति इस दिशा में प्रयत्नशील हैं और हमारी आवाज़ भी बहरे कानों पर न पड़ कुछ हल चल अवश्य पैदा करेगी । भले ही कोई कहे यह बातें पुरानी हैं--पर यों तो बहुत सी बातें पुरानी हैं परन्तु पुरातन में नूतनता उत्पन्न करनी चाहिये ।

—विश्वमित्र

लार्ड लिनलिथगो—

लार्ड लिनलिथगो भारत से विदा हो रहे हैं । हमें बड़ा दुःख है कि कृषि प्रधान भारत के लिए सबसे उपयोगी वस्तु—गाय, साण्ड के प्रेमी वायसराय आज हमसे विदा हो रहे हैं ! उन्होंने भारत की अभागिनी ! भूमि पर पदार्पण करते ही बड़ी २ आशाएं दिलाई थीं और कुछ दिन बाद साण्डों की नसलें सुधार करने के लिए उन्होंने जो दौड़ धूप की वह वस्तुतः सराहनीय है । कई बार कई ग्रामों के दौरे इसीलिए किये कि अच्छी नसल के पशुओं के लिए जनता में प्रोत्साहन उत्पन्न किया जाय । इसी सुधार के दौरान में उन्होंने स्कूलों में बच्चों को दूध पिलाने की प्रथा भी प्रचलित की । अब जब कि वे जा रहे हैं तो भारत के कृषिधन का क्या हाल है ? जब से युद्ध आरम्भ हुआ है तब से निरन्तर असंख्य पशुओं का बध हो चुका है—इस विकराल युद्ध के सैनिकों की उदरपूर्ति के लिए । वायसराय महोदय इस दिशा में बिल्कुल चुप रहे । जिस प्रकार आरम्भ में इस दिशा में उन्होंने सरगर्मि दिखाई थीं उसी प्रकार लगे रहते—और यदि भा के लिए कुछ और कार्य न कर सकते, केवल गोवध ही बन्द करवा जाते तो भारत सदा के लिए उन का ऋणी रहता । सचमुच वायसराय महोदय इस दिशा में बिल्कुल असफल रहे ।

युद्ध के कारण कुछ तो देश की हालत यूँही बिगड़ रही है तिस पर कुछ ऐसे कारण हैं, जो जनता को भूखों मार रहे हैं । यातायात के साधनों का अभाव, और इसी कारण चीज़ों का मंहगा हो जाना—परन्तु भारतीय हैं कि इसी में प्रसन्न हैं ! अमेरिका जैसे सम्पन्न देश में अभी रुपये के पीछे दो आना कीमतें बढ़ी हैं तो वहां के लोगों ने होहल्ला करना आरम्भ कर दिया—इसका असर यह हुआ कि वहां की राष्ट्रीय सरकार इस ओर ध्यान दे रही है । भारत का हाल किसी से छिपा नहीं—यहाँ और तो और खाने पीने की आवश्यक वस्तुओं के दाम चार से छः गुना, सा गुना तक बढ़ गये हैं परन्तु वायसराय महोदय अप असमर्थता प्रकट करने के अतिरिक्त कुछ न कर सके पर अब उन्हें कहने से कुछ न बनेगा—अब तो न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

३-मैं अग्निहोत्रपूर्वक संविभाग करके खाऊँगी (लाजा नव पाम्यग्नौ--मम तुभ्य च संवनम्

३-शत्रुओं पर विजय पाऊँगा (अतिगाहे-महि द्विषः)

वस्तुतः व्रत पालन करने वालों का अग्नि अग्रगो =प्रमुख श्रेष्ठ है। वह अपने व्रत के पालन में कभी भी प्रमाद नहीं करता। सो प्रत्येक व्रत का पालन करने वाला अग्नि से ही व्रत-पालन की दीक्षा लेता है। अग्नि से व्रत पालन की दीक्षा ले वह अग्नि को अपना गुरु बनाता है। गुरु रूप में ही उसके आदर के लिये प्रदक्षिणा होती है।

केश मोचन

इसी समय पति एकान्त में जाकर पत्नी के केशों के मोचन की विधि करता है। उस समय "प्रेतो मुंचामि नामुतः" इस मन्त्र को बोलते हुए यही कहता है कि मैं तुझे बेशक पितृकुल से छुडवा रहा हूँ परन्तु मैं कभी कोई ऐसा कारण उपस्थित न होने दूँगा जिस से कि तुझे पतिकुल छोड़ने का विचार पैदा हो जाय। "सुबद्धाममुतस्करम्" मैं प्रयत्न करूंगा कि तू पतिकुल में स्नेह-रज्जु से अच्छी प्रकार बंधी रह सके।

सप्तपदी

इसके बाद सप्तपदी की विधि का प्रारम्भ होता इसी समय वर के उपवस्त्र के साथ वधू के उत्तरीय की गांठ बांध दी जाती है। इससे यह स्पष्ट किया जाता है कि अकेले के लिये इन सात कदमों को पूरा रख सकना सम्भव नहीं। दोनों एक दूसरे के सहायक होते हैं और तभी वे इस गृहस्थ व संसार की भीषण नदी में स्थिरतापूर्वक कदमों को रख पाते हैं।

इन सात कदमों में उन सात बातों का संकेत है जिन्हें न भूलकर क्रियान्वित करने से ही कोई गृहस्थ सफल हो सकता है। साथ ही उन कदमों को रखते हुए वर वधू को यह भी स्मरण कराता है कि "मा सव्येन दक्षिणमतिक्राम" उलटे से सीधे का उल्लङ्घन न कर। अर्थात् गृहस्थ व्यापारों को करते हुए कभी ऐसा न हो कि सरलता का स्थान कुटिलता ले ले, सत्य असत्य से दब जाय। सीधे के बजाय कुटिल मार्ग का स्वीकार न हो। सदैव अमृत पर ऋत को महत्व दिया जाय। अस्तु, इन शब्दों के साथ वर कहता है—

(१) "इषे" सबसे पूर्व तो अन्न प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना है। अन्न-प्राप्ति के अभाव में अन्य धर्म-कार्य सम्भव नहीं हो पाते। 'बुभुक्षित मनुष्य की पाप की ओर प्रवृत्ति होती है।' दरिद्रता पाप की जननी है। अतः अन्न प्राप्ति नितान्त आवश्यक है और सामान्यतः सारा संसार इसी के लिए तो कार्य में लगा है।

(२) "ऊर्जे" परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि वह खाद्य सामग्री बल तथा प्राणशक्ति देने वाली हो।

वैदिक विवाह

श्री पंडित हरिशरण जी सिद्धान्तालङ्कार

[गतांक से आगे]

सन्तति की उत्पत्ति के लिए पौष्टिक भोजन ही पथ्य है।

(३) "रायस्पोषाय" गृह के अन्य कार्यों के सम्यक् संपादन के लिए धन की भी आवश्यकता है। धन के बिना किन्हीं भी यज्ञों का कर सकना सम्भव नहीं। सो सत्य व्यवहारपूर्वक धन की वृद्धि के लिए भी प्रयत्न करना।

(४)"मायोभव्याय" परन्तु धनोपार्जनमें तन्मय हो शारीरिक स्वास्थ्य की इतिश्री नहीं करनी। शारीरिक स्वास्थ्य के expense पर ऐश्वर्य की प्राप्ति आवाञ्छनीय है।

(५) "प्रजाभ्यः" हम यह भूल न जायें कि हमारा मुख्य उद्देश्य उत्तम सन्तान उत्पन्न करना है। धन के पीछे पड़कर शरीर का स्वास्थ्य विगड़ा तो उत्तम सन्तान कहां हो पायगी।

(६) "ऋतुभ्यः" सो स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आवश्यक है कि हम सब कार्य ऋतु=समय पर करें। हमारी प्रत्येक क्रिया युक्त हो=ठीक स्थान पर ठीक समय में हो, ताकि हम स्वस्थ बने रहें।

(७) "सखा" और स्वस्थ शरीर होकर एक दूसरे के सहायक=सखा बनकर सात कदम रखने वाले हों।

इस सातवें कदम में जिन सात कदमों का संकेत है वे सात कदम "भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्" इस प्राणायाम-मन्त्र में संकेतिक हुए हैं। उन में गृहस्थ ५वां कदम है—जिसका उद्देश्य "जनः" = उत्तम सन्तान पैदा करना है। कहीं व्यक्ति इसी में फंस यहीं समाप्त न हो जाय इसी से पति पत्नी स्मरण कर लेते हैं कि "हमने सात कदम रखने हैं। हम कहीं इस ५वें कदम में ही समाप्त न हो जावें"।

सूर्यावलोकन

इसी समय श्रान्त पति पत्नी पर जलकलश लिए हुए व्यक्ति कुछ जलकण फेंक कर उन्हें शान्ति पहुँचाता है और वधू उठकर सूर्यावलोकन करती है। वह सूर्यावलोकन करती हुई मानो अश्रान्तगति से आगे और आगे जाते हुए सूर्य के समान स्वयं भी अगले कदमों को रखने का दृढ़ संकल्प करती है। "अदीनः स्याम शरदः शतम्" 'मैं पूर्ण आयुष्य तक अदीन= अक्षीण इन्द्रिय शक्तियों वाली बनकर अपनी अग्रगति को स्थिर रखती हुई सूर्य के समान ही शोभान्वित हूँगी' ऐसा संकल्प लेती है।

पूर्व विधि की समाप्ति

सूर्यावलोकन के बाद वर वधू एक दूसरे के हृदय

दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु" इन शब्द पारस्परिक हृदय की एकता व अनुकूलता के प्रार्थना करते हैं, ताकि आपस में ऐकमत्य से वे अपनी जीवन-यात्रा में सफल हो सकें।

अब वर वधू के मस्तक पर हाथ रखकर सम्मिलित महानुभावों से सौभाग्य का आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करता है। उस पर "सौभाग्य शुभं भवतु" इन शब्दों में सब आशीर्वाद देते हैं स्विष्टकृदादि मन्त्रों की आहुति के साथ पूर्व समाप्त होती है।

उत्तरविधि का प्रारम्भ

अब कुछ विश्राम के बाद सूर्यास्त के पीछे नक्ष दय होने पर उत्तरविधि का प्रारम्भ होता है। अ होत्र पूर्वक उत्तरविधि के प्रधान होम की आहु दी जाती हैं।

इन छः आहुतियों के द्वारा अंग-प्रत्यंग में जो व्याधि के कृमि हैं या अशुभ लक्षण हैं उनके करने का विधान है। "पूर्णाहुतिभिराज्यस्य सर्व तान्यशीशमम्।" घृत की पूरी भरी कड़छियों आहुति देकर मैं तेरे सब घोर व्याधिजनक कीटाणु को समाप्त करता हूं, और अशुभ लक्षणों को दू करता हूँ।

अग्निहोत्र से रोग-विनाश

यह अग्निहोत्र से रोगविनाश की कल्पना अ के १४-२-१० में बहुत स्पष्ट है। मन्त्र इस प्रक "ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनां अनु। पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु गत आगताः॥

अर्थात् जो यक्ष्म रोग मनुष्यों के साथ-साथ च हैं, वे वधू के तेजस्वी रथ के साथ साथ आ गए हों उन यक्ष्म रोगों को यज्ञ के देव दूर ले जावें अर्थात् या वर के साथ न आने दें।

यहां यज्ञ से यक्ष्म नाश का उपदेश है। "मुं त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मात् उत राजयक्ष्म आदि मन्त्रों में स्पष्ट कहा है कि मैं हवि के किन्हीं भी अज्ञात रोगों को तथा राज रोग को तु पृथक् करता हूं।

एवं प्रत्येक गृहस्थ को अग्निहोत्र रोगकृमि विध्वंस के लिए प्रतिदिन अवश्य ही करना चा उससे घर का वायु उत्तप्त हो व छिन्न-भिन्न हो निकल जाता है और उसके स्थान में शुद्ध नवीन का प्रवेश होता है। आचार्य ने तो यहां तक लि कि मनुष्य खाने की बजाय अग्निहोत्र में अधि का प्रयोग करे। वस्तुतः वह घृत बहुत सूक्ष्म क विभक्त हो वायु में व्याप्त हो जाता है, और श्वास के साथ शरीर में प्रवेश कर शरीर की पुष्टि का बनता है तथा कृमियों का संहार करता है। इसी हेतु से "यद्वाहिष्ठं तदग्नये" जो चीज उत्तम है वह अग्निहोत्र में अग्नि के लिए अर्पित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5[illegible]

क्या श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी थे ?

[श्रीमिहिरचन्द्र धीमान 'कुसुमाकर' सम्पादक जागृति]

धाधुन्ध किसी वस्तु के विषय में जैसा पढ़ा सुना वैसा मान लेना विवेकी पुरुष का काम भारतवर्ष को शत्रुओं ने काबू में नहीं किया इसको भारतवासियों की अन्ध भक्ति ने विदेशी के हाथ में सौंपा है। अब तक बड़े बड़े समझदार व्यक्ति अन्ध भक्ति में पड़े हुए ईंट पत्थरों और पेड़ों से औलादें मांगने में लगे रहते हैं, मढ़ी श्मशानों स्थानों में भटकते रहते हैं। कोई समय था जब लोग समझते थे कि भारत में पहले ३३ कोटि देवता निवास करते थे, देवता आकाश में उड़ा करते थे, बड़े बड़े पेड़ों पर चढ़ा करते थे। शिवजी भगवान बैल की सवारी किया करते थे, उनका बैल आकाश में विचरता था। विष्णु भगवान गरुड़ जानवर की सवारी किया करते थे। सरस्वती देवी हंस की सवारी करती थीं, गणेश भगवान चूहे पर बैठ कर विश्व चक्कर लगाया करते थे। अब भी बहुत लोग ऐसा समझते हैं, लेकिन आधुनिक युग ने लोगों की आंखें खोल दी हैं। जो लोग देवताओं के जादू या कोई ईश्वरीय शक्ति पर बहुत लट्टू थे, बीसवीं सदी के युद्ध ने उनकी काफी आंखें खोल दी हैं। हवाई जहाजों के द्वारा सेनाओं का उतरना पता देता है हमारे प्राचीन काल के देवता आकाश में विचरण करते थे। हवाई जहाजों को देख कर उड़नखटोलों का जादू समझ में आ गया है। हवाई जहाजों पर उठ कर आकाश में युद्ध करना, रामायण काल में लक्ष्मण और लक्ष्मण के आकाश में लड़ने की बातें हमारे सामने पेश कर देता है। यह जो बातें कि बैल आकाश में उड़ा करते थे, शिवजी उस पर चढ़ कर आकाश की सैर किया करते थे; इन सब ग्रन्थियों का, सब्ज हैरानियों का समाधान हो गया है।

भौतिक युग के विकास ने इस जादू की असलियत हमारे सामने भली भांति रख दी है। भगवान विष्णु गरुड़ पक्षी पर चढ़ कर आकाश में घूमा करते थे। गरुड़ जैसी शक्ल वाले हवाई जहाज में घूमा करते थे ? इस हैरानी का भी हल हो चुका है। जो लोग अब भी ऐसा ही समझ रहे हैं कि वे लोग असली बैल पर ही और असली गरुड़ पक्षी पर ही सवार करते थे, इन्हीं के द्वारा आकाश में उड़ा करते थे, ऐसे जादू देखने के अभिलाषियों के लिये मेरे पास कोई इलाज नहीं। ऐसे अन्ध-विश्वासियों को भगवान समझायें। ऐसे लोग जादू देखने वाले हैं। भौतिक युग की असलियत से इनका क्या वास्ता। जब मैं आठवीं क्लास में पञ्जाब में पढ़ा करता था, उर्दू की किताब (प्रथम पुस्तक) में एक लतीफा पढ़ा था जो अब तक मुझे याद है। कुछ लड़के इकट्ठे होकर बहस करते हैं:—एक कहता है—यदि समुद्र में आग लग जाय तो मछलियां किधर जायेंगी ? दूसरे ने कहा दिया, कि दरख्तों (वृक्षों) पर चढ़ जायेंगी। चढ़ जायेंगी ? अर्थात् गाय, भैंस दरख्तों पर चढ़ सकती हैं मछलियां नहीं। ठीक ऐसी ही हालत हमारे उन लोगों की है जो अब भी शिवजी अथवा विष्णु को बैल और गरुड़ पर चढ़ने वाला समझते हैं। हिन्दुओं को इस प्रकार के अन्ध विश्वास में रहते और ऐसी खुदाई देखते काफी समय हो गया है। अब इन्हें असलीपन का पुजारी बनना चाहिये आकाश में कुसुम होते हैं ऐसी कल्पना में नहीं फँसना चाहिये। आज जो विषय पाठकों के समक्ष रख रहा हूं उस पर भी गम्भीरता से विचार करने की बात है। यह बात मेरी समझ में नहीं आई की भगवान कृष्ण अर्जुन का रथ हांकते थे ? गीता में (१ अध्याय में) लिखा है—हृषीकेशं तदावाक्यमिदमाह महीपते। सेनयोरुभयोर्मध्ये रथस्थापयमेऽच्युत ॥ २१ ॥ अर्थात् अर्जुन ने भगवान कृष्ण से कहा हे अच्युत ! मेरे रथ को दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कीजिये। वह रथ कैसा है गीता में ही लिखा है कि वह सफेद घोड़ों से युत है। भगवान कृष्ण की चतुरंगिणी सेना तो दुर्योधन को मिली और भगवान भक्त अर्जुन को मिले ! ऐसा तो सभी लोग जानते ही हैं लेकिन प्रश्न होता है कि क्या भगवान कृष्ण वास्तव में अर्जुन का रथ हांकते थे कि नहीं ? क्या इसी काम के लिये भगवान को अर्जुन ने लिया था ? मैं यह भी जानता हूँ कि बहुत से हिन्दू लोग भगवान कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते हैं। वह भी सोलहकला सम्पूर्ण। सोलह-कला सम्पूर्ण होने का यह अभिप्राय नहीं कि वे अनहोनी करते थे, जो क्रम परमात्मा ने इस सृष्टि का बना रखा है उसी के अनुसार चलते हुए अपनी अतुल शक्ति का परिचय देते थे, कोचवानी या ड्राइवरी एक खास काम है। कोचवानी में भी एक नियम है। वही नियम पहले था वही आज भी है। वही भविष्य में भी रहेगा। कोचवान का एक काम है, जिधर मालिक कहे उधर गाड़ी अथवा रथ को ले जाना। पृथ्वी के मार्ग पर सम्भल कर चलाना ही उसका एकमात्र कार्य्य है। कोचवान रथ भी चलाये और युद्ध की नीति बताये यह दो काम नहीं हो सकते। कोचवान को बता दिया जाता है कि फलां जगह मुझे ले चलो ! वह अच्छे मार्ग से मालिक को ले जाता है। निश्चित स्थान पर पहुँचा देता है। घोड़ों को काबू में भी रखे, मार्ग पर रथ को देखकर चलाता भी जाये और फिर शत्रुओं के नाश करने के ढङ्ग भी बताता जाये। क्या इतने काम एक आदमी कर सकता है ? भगवान कृष्ण कर को भङ्ग करना है। इस समय आपके सामने सैकड़ों मोटरकारें चलती दिखाई देती हैं। इक्के, टांगे, घोड़ा सब प्रत्येक दिन चलते दिखाई देते हैं। लेकिन कहीं ऐसा नियम नहीं दिखाई देता कि ड्राइवर आगे मार्ग भी देखता जाय, दांये बायें अपने दुश्मनों को भी भी देखता जाये। आकाश में होनेवाले हवाई हमलों को भी देखता जाये और फिर शत्रुओं का नाश करने में युद्ध नीति भी बतलाता जाये, यह सम्भव नहीं। आधुनिक युद्ध में मोटर गाड़ी चलाने वाले ड्राइवर और हैं। निशाना देखने वाले आफीसर और हैं। रोशनी डाल कर रात्रि में दुश्मन का पता लगाने वाले और हैं, उन पर मशीनगनें चलानेवाले और हैं। यह सब अलहदा-अलहदा हैं पर इनका काम एक दूसरे से पूरा बंधा हुआ है।

भगवान कृष्ण के विषय में जो कल्पित चित्र बने हुए हैं, उनमें दिखाया गया है कि भगवान आगे बैठे हुए अर्जुन के रथ को चला रहे हैं, अर्जुन रथ में बैठा हुआ भगवान का आदेश सुन रहा है। लोगों का कहना है कि भगवान कृष्ण ने काम ही रथ हांकने का लिया था। मेरा विचार है कि ऐसा विचार ठीक प्रतीत नहीं होता। भला अर्जुन को और कोचवान नहीं मिलता था ? भगवान कृष्ण से यह काम लेने की क्या आवश्यकता थी ? गीता का उपदेश देनेवाला, युद्धनीति विशारद, योगिराज भगवान कृष्ण को अर्जुन की ड्राइवरी करने की क्या आवश्यकता थी ! ड्राइवरी करने को मैं बुरा नहीं कहता। बहुत से अमीर लोग अब भी अपनी गाड़ियां आप चलाते हैं। मेरा तो यह कहना है कि युद्ध में यह दो काम नहीं हो सकते। कुरुक्षेत्र के युद्ध में भगवान रथ हांकते रहे और युद्ध की नीति भी बतलाते गये। जयद्रथ को बध करने का ढंग भी बताते गये, योगमाया द्वारा आकाशस्थ प्रकाशित सूर्य को अस्त भी करते गये, अथच भानु को प्रकाशित भी करते गये और साथ ही साथ अर्जुन के रथ को भी हांकते गये। हां एक बात मानी जा सकती है, हो सकता है कि युद्ध होने से पहले भगवान कृष्ण अपने रथ में अर्जुन को कुरुक्षेत्र में ले आये हों, वहां अर्जुन को गाण्डीव धनुष फेंकने पर गीता का उपदेश देने लगे हों, लेकिन यह कहना कि भगवान कृष्ण अर्जुन का रथ हांकते थे; इससे तो सरासर हमारी भूल ही प्रतीत होती है। मैं तो यह समझता हूँ कि वे रथ चलाते थे ! वे अर्जुन के मस्तिष्क रूपी रथ को चलाते थे, जिस प्रकार आज कल युद्ध में युद्ध के सचिव (War minister) होते हैं उसी प्रकार कुरुक्षेत्र में भगवान कृष्ण अर्जुन के मस्तिष्करूपी रथ को चलाते थे। दुश्मनों को कैसे मारना, युद्ध की सारी नीति बताते थे। साथ ही साथ हां युद्ध में अड़चन पड़े दुश्मनों पर काबू पाना अर्जुन के लिये मुश्किल पड़ने पर अपनी योगमाया का करिश्मा भी दिख

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

भगवान कृष्ण पाण्डवों की सेना को मन्त्रणा देने वाले जरनैल थे। उनके संकेत पर सेना की गतिविधि निर्भर थी। भारत में एक ऐसा ही उदाहरण आपके सामने है, पहले वीर जवाहर का मस्तिष्क रूपी रथ किसी दूसरे मार्ग पर चलता था, महात्मा गान्धी ने उसके हाथ में अहिंसारूपी अस्त्र पकड़ा दिया। सारे मोह-पाश को नाश कर उन्हें देश का अर्जुन जैसा सच्चा रथी बना दिया। भगवानकृष्ण ने भी अर्जुन के मस्तिष्क पर ऐसी ही लगाम लगा रखी थी। इसी से यह बहुश्रुति चली आ रही है कि भगवान कृष्ण अर्जुन का रथ चलाया करते थे।

इस समय भगवान कृष्ण केवल संकेत का काम करते थे। जैसे महात्मा जी संकेत का काम करते रहे हैं। अहिंसा अस्त्र के प्रयोग करने का ढंग बताते रहते हैं। युद्ध नीति का पूरा ढंग बताते रहे हैं, इसी को देश का रथ सञ्चालन करना कहा जा सकता है। देश की ड्राइवरी करना कहा जा सकता है। इसको देश की नौका का सञ्चालन कहा जा सकता है, यह तो एक भाषा के मुहावरे हैं जैसे—'वह तो आज कल ऊंची हवा में उड़ रहे हैं, भाई उसका क्या कहना' इसका यह अभिप्राय नहीं कि वह हवाई जहाज में बैठा है और आकाश में उड़ रहा है। यह तो भाषा का मुहावरा है जो किसी के बड़ा अभिमानी होने की सूचना दे रहा है। उसके सिर पर भूत सवार है, इसका यह कभी अभिप्राय नहीं कि वास्तव में सिर पर भूत आ बैठा है, ऐसे हजारों उदाहरण दिये जा सकते हैं। हमें इन बातों की असलियत की ओर ध्यान देना चाहिये। लकीर का फकीर नहीं बनना चाहिये। ऐसे ही मैं यह समझता हूं कि हमें भगवान कृष्ण के अर्जुन के रथ के चलाने की असलियत को भी समझना चाहिये। वे महाभारत में कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन के मस्तिष्करूपी रथ को चलाते थे अथवा वे श्वेत घोड़ों से युक्त लकड़ी के बने हुए रथ को चलाते थे ? असलीयत की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। हो सकता कोई इनको बेवकूफी से पूर्ण समझे, या इनकी हंसी उड़ाये। कुछ भी हो पर मैंने अपने हृदय की आवाज को पाठकों के सामने रख दिया है। मैं यह अवश्य जानता हूं कि भारतवासियों ने वस्तु की असलियत न जानने के कारण भारत को पराये हाथों बिक्री कर रखा है। हमारी गुलामी का कारण ही हमारा अन्धविश्वास है; हमने पत्थर को पकड़ा, उसे ईश्वर समझ लिया, हमने सांप देखा उसे शेषनाग समझ लिया, हमने लक्ष्मी को उल्लू की सवारी करने वाली एवं गणेश को भी तो चूहे पर चढ़ने वाला समझ लिया गया और अद्यावधि यही माना भी जा रहा है। इसी प्रकार मगरमच्छ को भी अवतार समझ लिया। किसी ने सांपों को दूध पिलाना पुण्य बतायां हमने सांपों को दूध पिलाना धर्म समझ लिया, सांपों

आर्य जगत्

आर्य समाज शिमला

आर्यसमाज (लोयर बाज़ार) शिमला का वार्षिकोत्सव १०—११—१२ सितम्बर १९४३ को बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। इस शुभावसर पर बड़े-बड़े विद्वान् और भजनोपदेशक पधारेंगे। शिमला की निकट की समाजोंसे प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर से लाभ उठावें।

आर्य समाज देहली

आर्य समाज दीवान हाल देहली की साधारण सभा अपनी बैठक में आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की दीनानगर में नज़रबन्दी के विरुद्ध साधारणतया और उन पर अपमानजनक प्रतिबन्ध लगाये जाने के विरुद्ध विशेषतया घोर प्रतिवाद करती है। पंजाब सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इसे शीघ्र ही वापिस ले ले।

—आर्य समाज भेरा की जनरल सभा, आर्य समाज मन्दिर में आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी महाराज की दीनानगर में नज़रबन्दी के विरुद्ध साधारणतया और उन पर अपमानजनक प्रतिबन्ध लगाए जाने के विरुद्ध विशेषतया घोर प्रतिवाद करती है। पंजाब सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इसे शीघ्र ही वापिस ले ले।

स्तीन में पालने के आदी बन गये ! किसी ने वैतरणी नदी पार करने के लिये हमारे हाथ में गौ की पूंछ पकड़ा दी। हमने भवसागर पार करने के लिये इसे ही एकमात्र साधन मान लिया। हमें किसी ने बता दिया कि मुक्ति काशी के घाट पर होती है। हमने आखिरी आयु तक वहां ही डेरा डाल दिया। हमको किसी ने बता दिया कि कुम्भ के मेले पर नहाने से सब पाप धुल जाते हैं और मनुष्य सीधा स्वर्ग में जाता है। हमने सुनते ही कुम्भ मेले के टिकट कटवाने आरम्भ कर दिये और लाखों की तादाद में वहां पहुंच गये।

भोले भारतीयों को वास्तविकता का ज्ञान होता तो वे स्वदेश को विदेशियों के हाथ में देकर स्वर्ग प्राप्ति की दौड़-धूप में न पड़ते। हमारी आज की गिरावट का बहुत कुछ कारण अन्धविश्वास ही है, वर्तमान युग को हम सभ्यता का युग मानते हैं परन्तु हमारे अन्दर इतने अन्ध विश्वास हैं कि जिन्हें छोड़ने को उद्यत नहीं होते।

आर्य समाज रावलपिण्डी

—आर्य समाज गुरुकुल विभाग रावलपिण्डी शहर की साधारण सभा अपनी बैठक में आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की दीनानगर में नज़रबन्दी के विरुद्ध साधारणतया और उन पर अपमानजनक प्रतिबन्ध लगाए जाने के विरुद्ध विशेषतया घोर प्रतिवाद करती हैं। पंजाब सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इसे शीघ्र ही वापिस लेले।

आर्य समाज रामा मण्डी

—आर्य समाज रामा मण्डी की सभा अपनी बैठक नि० ४—७—४३ में आर्य समाज के संन्यासी श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की दीनानगर में नज़रबन्दी के विरुद्ध साधारणतया और उन पर अपमानजनक प्रतिबन्ध लगाए जाने के विरुद्ध विशेषतया घोर प्रतिवाद करती है और पंजाब सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इसे शीघ्र ही इसे वापिस ले ले।

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री सावरकर का त्यागपत्र—

वीर सावरकर ने जितने दिन हिन्दू महा सभा का कार्य किया बड़ा शानदार था। उन्होंने देश के लि जो जो कष्ट उठाए वह भी स्मरणीय रहेंगे परन्तु इ कुछ दिनों से वे जो नीति ग्रहण करते जा रहे थे राजनीतिज्ञों की नज़रों में हिन्दुओं के लिए घा नीति थी। वे अस्थायी तौर पर पाकिस्तान के समर्थ में होते जा रहे थे क्योंकि पाकिस्तान के हिमा लीगी भाइयों के साथ मिलकर मन्त्री मण्डल बन के हक में थे और जिसका परिणाम सीमाप्रान्त मन्त्री मण्डल है। सरदार अजीतसिंह ने हिन्दुओं सिखों के विरोधमें होते हुए भी श्री सावरकरके वक्त से बड़ा लाभ उठाया और वहां हिन्दू और सिख वैमनस्य भी उत्पन्न हो गया। इधर कुछ लोग उ जिन्ना से मुलाकात के प्रबन्ध भी करवा रहे थे भी हो इस समय तो यह हिन्दुओं के हक की बात हो गई। उन्होंने अपनी अस्वस्थता का क बताते हुए त्यागपत्र दिया है—परन्तु हमारे से अधिकार जमाने की मनोवृत्ति का विनाश चाहिये। सभाएं सबके लिए सेवा का अवसर रहें तो अच्छा हो और कार्यकर्ता को अपने आ सेवक समझना चाहिये।

--विश्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKUL KANGRI

Regd L. N. 381

वेद प्रचार विभाग

यशःपाल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

स वर्ष सभा ने अपने काम को बढ़ाने का न्या है । इसके लिये योग्य उपदेशकों की ता है । आर्य समाजें अपने उत्सवों पर ावन्ध करती हैं । और इसके लिए पंजाब से उपदेशक बुलाये जाते हैं । इसका परि- होता है कि सैंकड़ों रुपया रेल के किराया हो जाता है । कई बार ऐसा भी देखा गया है कि दो व्याख्यानों के लिये सौ) रुपया खर्च हो जाता है। इस कमी को ने के लिये यह आवश्यक है कि सभा योग्य ों को नियुक्त करे । वेद प्रचार को वर्तमान योग्य नवयुवकों को आकर्षित नहीं करती। शों में धर्म प्रचार के कार्यों में योग्य परिवारों य नवयुवक बड़ी प्रसन्नता से हिस्सा लेते र अपने जीवन को एक ही स्थान पर धर्म में कार्य पर लगा देते हैं । सभा इस प्रणाली तांत करने का यत्न कर रही है । मैं आर्य ों से सानुरोध प्रार्थना करूंगा कि प्रत्येक परिवार कम से कम एक बालक को धर्म के कार्य में लगाए । इसके लिये आवश्यक है के लिये ५ लाख का स्थिर कोष किया जाय पादेशक महानुभाव एक ही स्थान पर बैठ पने परिवार के साथ रह कर एक केन्द्र बना र्य करें। और किसी उपदेशक महानुभाव के ०० से ज्यादा समाजें न हों।

जो सज्जन गृहस्थ के कार्यों से निश्चिन्त हो उन्हें चाहिये कि वे एक स्थान पर बैठ और अपना स्वाध्याय करें उस स्थान के और लड़कियों को पढ़ाएं । दैनिक सत्संग और स्वयं वानप्रस्थी का जीवन व्यतीत करें। प्रचार की भारी समस्या दूर हो सकती है।

पं० तीर्थ राम जी तथा म० बालकृष्ण जी डेरा गाजीखां में प्रचार कार्य कर रहे हैं। प्रकार बड़ा सफल रहा है।

पं० पूर्णचन्द जी तथा म० भक्तराम जी ने ला गुजरांवाला में एक सप्ताह कथा की है। वहां बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है।

इन दिनों सभा ग्राम प्रचार पर विशेष बल है जिन स्थानों पर देर से प्रचार नहीं हुआ ार कराया जा रहा है।

एक सुन्दर दृश्य

श्री आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल विश्व-विद्यालय के आचार्य नियत होकर गुरुकुल चले गये हैं।

लाहौर की आर्य जनता ने इस अवसर पर उन का हार्दिक स्वागत किया। उनके सम्मान में कई सह-भोज किये गये। आर्य समाज बच्छोवाली में लाहौर की सब आर्यसमाजों ने उनका स्वागत किया। उप-देशक विद्यालय के विद्यार्थियों ने सभा के अधिका-रियों की उपस्थिति में उन्हें अभिनन्दन पत्र दिया तथा उनके सन्मान में कई विद्यार्थियों ने वक्तृतायें दीं। ३० अगस्त को विद्यालय के सब विद्यार्थियों ने लाहौर स्टेशन पर उन्हें विदाई दी। इस सब दृश्य को मैंने अपनी आंखों से देखा और यह अनुभव किया कि उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियों का अपने आचार्य के प्रति कितनी श्रद्धा तथा मान है। श्री पं० प्रियव्रत जी की विदाई को विद्यालय के छात्रों ने बहुत अनुभव किया। उपदेशक विद्यालय के श्रद्धाभाजन आचार्य आर्य समाज के सब से बड़े तथा प्रिय विश्वविद्यालय के भी सफल आचार्य हों ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

यशःपाल सिद्धान्तालंकार

आवश्यकता

गुरुकुल के एक सुयोग्य स्नातक के लिए जो कि नैनीताल में मैडिकल प्रैक्टिशनर हैं—एक सुन्दर, स्वस्थ, सुशील शिक्षिता एवं राष्ट्रीय तथा धार्मिक विचारों वाली कन्या की आवश्यकता है। साहित्य और कला से प्रेम रखने वाली गुरुकुल की स्नातिका को विशेषता दी जाएगी। विवाह में दहेज व जातपात का ख्याल न रक्खा जाएगा। वर महाशय पंजाबी हैं अतः पंजाब में ही विवाह करना पसन्द करेंगे। ग़रीब एवं असहाय घर की लड़की का विशेष रूपेण ख्याल रक्खा जाएगा।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—

डा० कृष्णमोहन
तल्लीताल, नैनीताल।

—आर्य समाज जालन्धर का वार्षिक चुनाव १० जुलाई १९४३ को समाज मन्दिर में हुआ निर्वा-चित व्यक्तियों के नाम प्रकाशित किये जा चुके हैं।

(पृष्ठ ४ का शेष)

चाहिए। वह नष्ट नहीं हो जाती अपितु सूक्ष्म कणों में विभक्त हो वायु को पौष्टिक बनाती है। इसी प्रकार राजयक्ष्मा के कृमियों का संहार भी अग्निहोत्र द्वारा होता है। शहरों के तंग मकानों में रहने वालों के लिए तो यह और भी अधिक आवश्यक है। रोगों से बचा कर औषध-व्यय से बचाने के द्वारा यह आर्थिक दृष्टि से भी उपादेय ही है। आर्थिक दृष्टि से महंगा होने पर भी इसे स्वास्थ्यजनक होने से करना ही चाहिए।

ध्रुव दर्शन

इस अग्निहोत्र के करने के बाद ध्रुवदर्शन की प्रक्रिया आती है। वर वधू को सभामण्डप से बाहर ले जाकर ध्रुवदर्शन कराता है। उस समय पत्नी पति से कहती है कि "ध्रुवमसि" तू ध्रुव है। ध्रुव तारे के समान तू अपने धर्म पर स्थिर है। तू ने जो प्रतिज्ञायें की हैं उनका स्थिरता से पालन करने के कारण तू ध्रुव नाम वाला है। मैं भी "ध्रुवाहं पतिकुले भूयासम" तुझ पति के इस कुल में ध्रुव होकर रहूँ। हम दोनों ध्रुव की तरह परस्पर प्रियाचरण में ध्रुव बनें।

अरुन्धती-दर्शन

ध्रुवदर्शन के बाद अरुन्धती नक्षत्र का दर्शन कराया जाता है। यह अरुन्धती नक्षत्र आकाशमण्डल में वशिष्ठ नक्षत्र के वाम पार्श्व में थोड़ा सा पीछे हट कर है, मानों उसका आदर रखने के लिए उसके आगे न होकर पीछे स्थित हो। ठीक इसी प्रकार इस अरुन्धती दर्शन से पत्नी ने भी पति के आदर करने का पाठ सीखना है। उसने भी अपनी मर्यादा में रुद्ध रहने की शिक्षा ग्रहण करनी है।

ओदनभक्षण तथा प्रतिप्रस्थान

इसके बाद यज्ञ में आहुति देकर ओदन का भक्षण पति-पत्नी करते हैं और उसके बाद वर वधू को अप घर ले जाता है। घर पहुंचने पर सभी उसका स्वाग करते हैं—आशीर्वाद देते हैं। वहां वर पुनः एक बार गार्हपत्य कर्तव्यों का स्मरण करा देता है।

पतिगृह प्रवेश

पतिगृह में प्रविष्ट होने पर वहां पुनः यज्ञ का आरम्भ करते हैं। पत्नी को घर की साम्राज्ञी की पदवी दी जाती है। यज्ञ समाप्ति पर दोनों उपस्थित वृद्धों का अभिवादन करते हैं और वे सब "स्वस्ति" इन शब्दों से आशीर्वाद देते हैं।

इस प्रकार इनके गृहस्थ का अब प्रारम्भ होता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

उनके भाष्य और अनुवाद

(श्री विश्वनाथ जी शास्त्री, एम. ए., पुस्तकालयाध्यक्ष, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर)

आर्य समाज के संस्थापक होने की दृष्टि से ऋषि दयानन्द कृत पुस्तकों का आर्य जगत् में विशेष महत्व है। मैंने ऋषि के ग्रन्थों, उनके भाष्यों तथा अनुवादों की सूची बनाने का प्रयत्न किया है। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं इस कार्य में कितना सफल हुआ हूँ। अस्तु !

ऋषि दयानन्द की मुख्य कृति वेदभाष्य हैं उन्होंने सम्पूर्ण यजुर्वेद का संस्कृत में भाष्य किया। इस का हिन्दी में भी अनुवाद हो गया। इस के अतिरिक्त उन्होंने ऋग्वेद का ७.६१.२ तक संस्कृत में अनुवाद किया। इसका हिन्दी अनुवाद भी हो गया।

स्वामी जी ने संस्कृत व्याकरण पर भी पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने अष्टाध्यायी का भी भाष्य किया है। इस के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं। पहले भाग में अष्टाध्यायी के प्रथम दो अध्यायों का भाष्य समाप्त हुआ है। दूसरे भाग में तीसरे अध्याय का भाष्य हुआ है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अष्टाध्यायी का सरल हिन्दी में वेदाङ्ग प्रकाश के १४ भागों में भी व्याख्यान किया है। इन भागों के इस प्रकार नाम हैं।

१. वर्णोच्चारण शिक्षा। २. सन्धिविषय। ३. नामिक। ४. कारकीय। ५. सामासिक ! ६. स्त्रैण-ताद्धित। ७. अव्ययार्थ। ८. आख्यातिक। ९. सौवर। १०. पारिभाषिक। ११. धातुपाठ। १२. गण पाठ। १३. उणादिकोष। १४. निघण्टु (यास्क कृत)

वेद भाष्य तथा वेदांग प्रकाश के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द ने कई एक पुस्तकें लिखीं जो 'दयानन्द ग्रन्थ-माला नामक पुस्तक में दो भागों में वैदिक यन्त्रालय अजमेर से प्रकाशित हुई हैं। उनकी सूची उनके भाष्यों और अनुवादों सहित नीचे दी जाती है।

१. अथ सत्यार्थ प्रकाश—

भाष्य:—(क) गोविन्दराम हासानन्द (प्रकाशक) समाधान सहित सत्यार्थ प्रकाश। (ख) वाचस्पति, सत्यर्थ प्रकाश भाष्य (प्रथम तथा द्वितीय समुल्लास मात्र)। (ग) विश्वनाथ, हाल सत्यार्थ प्रकाश। (घ) तुलसीराम स्वामी १. भास्कर प्रकाश, २. दिवाकर प्रकाश।

अनुवाद:—(क) आत्माराम, पंजाबी अनुवाद। (ख) गदाधर वैद्य, सत्य-सागर, सत्यार्थ प्रकाश का पद्यानुवाद। (ग) तामिल अनुवाद। (घ) दिलसिंग खाई, नेपाली भाष्य (११ समुल्लास मात्र)। (ङ) शंकरदेव पाठक, संस्कृत अनुवाद। (च) बंगाली अनुवाद। (छ) चिरंजीव भारद्वाज Light of truth अंग्रेजी अनुवाद। (ज) दुर्गाप्रसाद Satyarth Prakash अंग्रेजी अनुवाद। (झ) दौलतराम Licht der Wahrheit जर्मन अनुवाद। (ञ) जीवनदास, उर्दू अनुवाद (११ समुल्लास मात्र)। (ट) चमूपति उर्दू अनुवाद। (ठ) आत्माराम, रैमल, निहालसिंह, चमूपति, उर्दू अनुवाद। (ड) मैहता राधाकृष्ण, उर्दू अनुवाद।

२. संस्कार विधि—

भाष्य:—(क) आत्माराम अमृतसरी, संस्कार चन्द्रिका। (ख) भीमसेन, षोडश संस्कार विधि। (ग) रामगोपाल १. संस्कार प्रकाश अर्थात् संस्कार विधि भाषा टीका सहित, २. संस्कार विधि मण्डन। (घ) स्वतन्त्रानन्द स्वामी, संस्कार विधि, विधि भाग। (ङ) नारायणदास, विवाह पद्धति। (च) तुलसीराम स्वामी, विवाह के मन्त्र भावार्थ सहित अनुवाद। (छ) देवीदास उसकवी उर्दू तरजमा मुस्तनद ग्रन्थ संस्कार विधि मुहनफ़ा महर्षि दयानन्द उर्दू अनुवाद।

३. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका—

अनुवाद (क) घासीराम, Introduction to the commentary of the vedas by Swami Dayánand Saraswati अंग्रेज़ी अनुवाद।

४. पंच महायज्ञ विधि—

(क) आत्माराम, ब्रह्मयज्ञ। (ख) चिरंजीवलाल वानप्रस्थी, गायत्री महत्व। (ग) नारायण स्वामी, वैदिक सन्ध्यारहस्य। (घ)नत्थनलाल, १. सन्ध्या प्रदीपिका २. हवन यज्ञ प्रदीपिका। (ङ) नित्यानन्द वेदालंकार, सन्ध्या सुमन। बुद्धदेव विद्यालंकार, १. देवयज्ञ २. पंचमहा यज्ञ प्रकाश ३. ब्रह्मयज्ञ। (छ) मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), विस्तार पूर्वक सन्ध्या विधि। (ज) राजाराम, आर्य पंच महायज्ञ पद्धति। (झ) वाचस्पति, देवयज्ञ प्रकाश। (ञ) विश्वनाथ प्रोफैसर सन्ध्या रहस्य। (ट) सत्यानन्द स्वामी, सन्ध्या योग। (ठ) हरिशरण श्रीवास्तव मराल, बलिवैश्वदेव यज्ञ। (ड) प्रेम नारायण (अनुवादक) आत्माराम कृत ब्रह्मयज्ञ का उर्दू अनुवाद (उर्दू)। (ढ) ज्वाला सहाय, विस्तार पूर्वक, सन्ध्या विधि (उर्दू)। (ण) जीवनदास नित्कर्म गुटका उर्दू। (त) दुर्गाप्रसाद हकीम उर्दू। (थ) सत्यभूषण, सन्ध्या प्रभाकर दुर्गाप्रसाद Five great duties Aryans अंग्रेज़ी। (ध) हीरालाल सूद Fi path to salvation अंग्रेज़ी। (न) Agnihotra, or an ancient proc fumigation अंग्रेज़ी।

अनुवाद:—(क) जीवनदास, पंचमहायज्ञ उर्दू। (ख) अर्जुनसिंह Pancha maha vidhi अंग्रेज़ी।

५. आर्याभिविनय—

भाष्य:—(१)अच्युतानन्द, स्वामी श्री स्तो
(६) संस्कृत वाक्य प्रबोध।
(७) वेद विरुद्ध मत खण्डन।
(८) स्वामी नारायण मत खण्डन।
(९) भ्रान्ति निवारण।
(१०) वेदादिध्यान निवारण।
(११) आर्यो देश्य रत्नमाला।
(१२) गोकरुणानिधि।
(१३) करहार भानु।
(१४) शास्त्रार्थ फ़ीरोजपुर।
(१५) सत्य धर्म विचार मेला वारापुर।
(१६) शास्त्रार्थ काशी।
(१७) भ्रमोच्छेदन।
(१८) समन्तव्यामन्तव्य प्रकाश।
(१९) स्वीकार पत्र।
(२०) दयानन्द सरस्वती स्वरचित, लिखि कथित जीवन चरित्र।

आर्य समाज मुरीदके

१. सत्यार्थ प्रकाश का यहां विशेष प्रचार जा रहा है लोगों में सस्ती से सस्ती कीमत में व रहे हैं और इस विषय में शंका समाधान कि रहा है।

२. आर्य पुत्री पाठशाला की अध्यापिका दुर्गा देवी स्त्रियों में आर्य समाज का प्रचार क हैं स्त्री समाज नियम पूर्वक लगता है और शा स्त्रियों में सम्मिलित संध्या होती है।

३. डिस्ट्रिक्ट वेद प्रचार मंडल बन चुका

४. आर्य समाज मंदिर का विशाल भव रहा है। जिसमें सभी सज्जन उत्साह से रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

N. 5004

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ३५

वार्षिक मूल्य ४)

३१ श्रावण

१५ अग

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharu r)

"अभयंमित्रात्"

क्या आप ने कभी विचारा कि वेद मित्र से अभय लिए क्यों कहता है। विचारणीय बात है कि जो है, जिसे हम अपना शत्रु नहीं वरन् मित्र कहते क्या समझते हैं उससे अभय दान की याचना अर्थात् ना क्यों ? ज़रा सोच विचार कर देखिए, इस वेद के टुकड़े में कितना रहस्य छिपा पड़ा है। वस्तुतः त्र की अपेक्षा मित्र से अभय प्राप्त करना अधिक श्यक है। अमित्र के पास हम जाते हैं तो सतर्क रहते हैं कि वह कहीं हमारा अनिष्ट न कर उससे हमें कोई हानि न पहुँच जाय। परन्तु जब मित्र के पास जाते हैं तो हमें उससे भय प्रतीत होता और हम निधड़क उसके पास जाते हैं क्यों हमें उस पर विश्वास है।

मित्र भी कई प्रकार के होते हैं, बहुत से धन के में मित्रता गांठते हैं—जो ऐसे मित्र होंगे वह य ही मनुष्य को पतन की ओर ले जायेंगे और ा भाव सिद्ध हो जाने पर अथवा धन समाप्त हो पर नौ, दो ग्यारह हो जायेंगे। क्या अभयंमित्रात् ादेश नहीं देता कि हम किसी के धोखे में न धोखे में आना भी तो पाप है। जो धोखे का फैलाता है वह तो पापी है ही परन्तु जो उस में फंस जाता है क्या वह पापी नहीं ?

बहुत से मनुष्य "मुंह में राम बगल में छुरी" न्त वाले हैं—ऐसे मित्र समय पाकर वह मार हैं कि मनुष्य पछताता रह जाता है—अतः वेद उनको सचेत करता है कि हे मनुष्यो ! जो ऐसे

अध्यात्म सुधा

[३५]

लोग भी कभी स्वयं धोखा खा बैठते हैं अतः इसका यह भी भाव निकल सकता है कि हम अपने मित्र से कभी ऐसा कार्य करने का मन में भाव भी न लाएं कि जिससे उसके भावों को भी ठेस पहुंचे अथवा उसे हम से भय मालूम हो। जहां हम धर्म से धन का संचय करते हैं, जहां हम पुरुषार्थ करते हैं, विश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की प्रार्थना करते हैं वहाँ क्या हमें अपने और पराये के साथ मित्र भाव नहीं रखना चाहिये।

जब सब में यह भावना विद्यमान होगी कि हमारा मित्र हमें कोई हानि नहीं पहुंचायेगा, उससे हमें किसी प्रकार का भय नहीं हो सकता जैसा कि हमारे मित्र प्रभु, सदा स्वयं हमसे अर्थात् मनुष्यों से अभय हैं, उन को हमसे कोई भय नहीं—वैसे ही हमें भी उनसे भय नहीं। यदि यह उच्च भावना हम में आ जाय तो क्या संसार स्वर्ग न बन जाय ?

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी Fairflies नामक सुन्दर पुस्तिका में लिखा है कि—God seeks comerade अर्थात् प्रभु साथी चाहता है, प्रभु अपने साथी ढूंढता है। क्या प्रभु अकेला है ? सारा संसार, यह अद्भुत और महान् संसार जिसने बनाया वह अकेला है ? नहीं—वह अकेला नहीं—परन्तु क्या वह यह नहीं चाहता कि जिस वस्तु की मैं रचना करूं वह

अपने मित्र के साथ, अपने आस पास के वायुमण्डल तक से प्रभावित होने वालों के साथ सुललित व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं। अरे भाई, साथी तभी मिलेंगे जब हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे—वैसा व्यवहार, जैसा कि हम चाहते हैं कि हमसे किया जाय। प्रभु ने वस्तुतः संसार को ऐसा ही बनाया है—हमें नदियों—उनके कलकल निनाद को सुनकर ? होता है। उच्च पर्वत शृङ्गों को देख कर हमारा हृदय मयूर नाच उठता है, प्रभु के प्यारे पक्षियों, पतंगों, तितलियों को देखकर किसका मन मोहित नहीं हो जाता ? हरे घास के मैदानों को, हरे मखमली गलीचों को देखकर कौन मन आँख से उन्हें पी नहीं जाना चाहता ? वृक्षों की झूमती हुई डालियों को देखकर क्या कभी आप को गुस्सा आया ? उछलते, भागते कूदते हुए मृगों को देख उनकी तरह कौन एक दो छलांगें भरने को न चाहेगा ? ओह, बालक—प्रभु का अपना रूप-सुन्दर हसता हुआ छोटा सा टुकड़ा किसको नहीं भाता ? क्या आपने कभी सोचा कि इन प्रभु की सुन्दर रचना को देखकर हम कुढ़ते जलते क्यों नहीं—यही कारण है कि वे वस्तुएं हमारे प्रति मित्र भाव रखती हैं—प्रभु की प्यारी पाठशाला मित्र भाव का पाठ पढ़कर आई हैं, उन में हमारे लि ज़रा भी अमित्र भाव नहीं अर्थात् प्रभु हमारे सा अमित्र भाव नहीं रखते। तो क्यों हम प्रभु की अनुप कृति मनुष्य से घबराते हैं—उससे मिल कर—उस दर्शन करके हमें प्रफुल्लता क्यों प्राप्त नहीं होती ? य कारण है कि हम में मित्र भावना का लोप हो गया प्रभु स्वयं इस मित्र भावना का आदर करते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

क्रिमि नष्टव्य हैं

[महात्मा श्री नारायण स्वामी जी महाराज]

आजकल, वर्षा ऋतु के कारण कीड़े मकौड़ों का बहुत क्लेश रहता है, मक्खी मच्छर डांस आदि कई प्रकार की हानियां पहुँचाते हैं। इस ऋतु का मेवा मलेरिया ज्वर विशेष प्रकार के कीटाणुओं की ही बदौलत है—इतना होने पर भी बहुत से भाई उनको नष्ट करना नहीं चाहते। श्री स्वामी जी महाराज ने इस पर अच्छा प्रकाश डाला है और सम्भवतः इस विषय को और भी अधिक स्पष्ट करें।

—सम्पादक।

अथर्व वेद के दूसरे काण्ड का ३१ वां सूक्त क्रिमियों के संबंध में है। इस सूक्त में ५ मंत्र हैं और पांचों में क्रिमियों ही का उल्लेख है। पहले हम मंत्रों को अर्थ के साथ देते हैं:—

इन्द्रस्य या मही दृषन्क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी।
तया पिनष्मि सं क्रिमीन्दृषदा खल्वाँ इव ॥१॥

दृष्टमदृष्टमनृहमथो कुरू रूमनृहम्।
अल्गण्डून्त्सर्वाञ्छलुनानिक्रमीन्वचसा जम्भयामसि ॥२॥

अलाण्डून्हन्मि महतावधेन दना अदूना अरसा अभूवन्। शिष्टानशिष्टान्नि तिरामि वाचो यथा क्रिमीणां न किरूच्छिषानै ॥३॥

अन्वान्त्र्यं शीर्षण्यमथो पार्ष्टेय क्रिमीन।
अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन्वचसा त्रम्भयामसि ॥४॥

ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः। ये अस्माकं तन्वमा विविशुः सर्वं तद्धन्मि जनिम कृमीणाम् ॥५॥

अर्थ—(इन्द्रस्य, या, मही, दृषत्) इन्द्र की जो बड़ी शिला (विश्वस्य, क्रिमेः, तर्हणी) विश्व के क्रिमियों का नाश करने वाली है, (तया, क्रिमीन) उस से क्रिमियों को दृषदा, खल्वान्, इव) शिला से चने की तरह, (सं पिनष्मि) पीस डालूं ॥१॥

(दृष्टम्, अदृष्टम्, अनृतम्) दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले (क्रिमियों) का मैं नाश करता हूं (अथः, करूरू, अनृ म्) और रेंगने वाले का भी मैं नाश करता हूं। (सर्वान्, अल्गण्डून्) सब उपधानों=तकियों में (रहने वाली) (बालूनान) वेग से चलने वाली (क्रिमीन्) क्रिमियों को (पचसा, जम्भयामसि) वचा (औषधि) से नष्ट करें ॥२॥

(अल्गण्डून्, महता, वधेन, हन्मि) तकियों में (भरे हुये जन्तुओं को) बड़े आघात से मैं मारता हूं, (दूनाः, अदूनाः, अरसाः, अभूणन्) चलने वाले और न चलने वाले (सब कीट) रस हीन हो गये, (शिष्टान्, अशिष्टान्, वाचा, नितिरामि) बचे हुये दुष्टों (जन्तुओं) को औषधि से मैं मारता हू (यथा, क्रिमीणां, नकिः, उच्छिषातै) जिससे क्रिमियों में से कोई न बचे ॥ ३ ॥

(अन्वान्त्र्यं) आंतों में, (शीर्षण्यं) शिर में (अथः, पार्ष्टेयं, क्रिमीन्) और पसलियों में होने वाले क्रिमियों को (अवस्कवं) रेंगने वाले और (व्यध्वरं) पीड़ा देने वालों को (वचसा, त्रम्भयामसि) [illegible]

और जल के भीतर होते हैं और जो हमारे शरीर में प्रविष्ट हुए हैं (तत, क्रिमीणां, सर्वं जनिम, हन्मि) उन क्रिमियों के समस्त जन्म को मैं नाश करता हूं ॥५॥

वेद के इस सूक्त में क्रिमियों के प्रकार, उनके उत्पत्ति स्थान, वे किस प्रकार मनुष्यों के शरीर, उनके विस्तर आदि में घुस कर उन्हें पीड़ा दिया करते हैं, बतलाते हुए असंदिग्ध शब्दों में उनके मारने की शिक्षा दी गई है। कई भाई खटमल, मच्छर, पिस्सू और डांस आदि के संबंध में पूछा करते हैं कि क्या इन के मारने में हिंसा का पाप तो नहीं लगता। उन्हें इन मंत्रों से अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि संसार के प्राणियों को कष्ट देने वाले जन्तुओं को यदि कोई मार देता है तो अपकार तो नाम मात्र का होता है कि एक दुष्ट प्राणी की हिंसा की गई परन्तु उपकार बहु मात्रा में हुआ जिनके प्राणियों को वह दुष्ट जन्तु कष्ट देता वे सब इस क्लेश से बच गये। कदाचित् कुछेक जैन भाई, जिनकी संख्या बहुत थोड़ी होगी, ऐसे होंगे जिन्हें इन जन्तुओं के मारने की बात पसंद न आयेगी। इस अवसर पर एक घटना का उल्लेख कर देना कदाचित् अनुचित न होगा।

(२) एक बार जब मैं बम्बई था तो एक भाई ने वहां की एक बात सुनाई। एक दौलतमंद जो इसी प्रकार के थे उनके यहां चारपाइयों में खटमल हो गये। जब इन दुष्ट क्रिमियों ने उन्हें तथा घरवालों को बहुत तकलीफ़ दी तो उन्होंने भूमि पर सोना शुरू किया परंतु ऐसा करने से उन्हें एक चिंता हुई कि कहीं ऐसा न हो कि खटमल भूखे मर जायें। उन्होंने इस चिंता की निवृत्ति करने के लिये आदमी किराये करके उन चारपाइयों पर सुलाना शुरू किया जिससे खटमलों [illegible]

व्यक्ति को, जिसे सैकड़ों खटमल काट कर और खून पीकर तकलीफ़ देंगे, इसका विचार नहीं [illegible] बम्बई में एक और ऐसे ही परोपकारी पुरुष ने, [illegible] रुपए लगाकर, एक कबूतरघर जंगली कबूतरों [illegible] आराम देने और रहने के लिये बनवाया है। प्रतिदिन मनों अन्न उन कबूतरों के लिये डाला [illegible] है अस्तु; वेद इस प्रकार के परोपकार और [illegible] की शिक्षा नहीं देते। इस प्रकार की अहिंसा के [illegible] दम्भ ने देश को जितनी हानि पहुंचाई और पहुंचा [illegible] है वह वर्णनातीत है। हिंदुओं के ह्रास के कारण से, इस कारण का कम स्थान नहीं है।

(३) वेद के इस ३१ वें सूक्त के सिवा [illegible] सूक्त भी इसी विषय से संबंधित है। उसमें क्रि[illegible] के आकार-प्रकार तथा किस प्रकार उन्हें नष्ट [illegible] चाहिये, इन सब बातों का उल्लेख है।

गुरुकुल मुलतान

निर्धन विद्यार्थियों के लिए अपील, ५०० का सात्विक दान

मुलतान में प्रतिदिन कितने संरक्षकों के ऐसे [illegible] आ रहे हैं कि वे आजकल की मंहगाई के [illegible] आर्थिक अवस्था अच्छी न होने से अपने बच्चों [illegible] गुरुकुल में शिक्षा नहीं दे सकते। ऐसे निर्धन वि[illegible] र्थियों के लिए गुरुकुल के आचार्य पं० जयदेव [illegible] ५००) रु० की अपील की है। इसी सिलसिले [illegible] शीघ्र ही गुरुकुल के प्रबन्धकर्ता श्री ला० विहारी[illegible] जीके साथ लाहौर, अमृतसर, फिरोज़पुर, दिल्ली [illegible] स्थानों का दौरा भी करेंगे।

क्वेटा समाज के प्रधान श्री ला० परमानन्द [illegible] ठेकेदार ने १००) दान भेजा है एवं मुलतान के [illegible] भम्बाराम गिरधारीलाल ने ४००) के लगभग [illegible] तथा कूप निर्माणार्थ दान दिया है।

परिक्षाओं की लोक प्रियता

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की ओर से [illegible] वाली सिद्धान्त शास्त्री धार्मिक परीक्षायें पर्याप्त लो[illegible] प्रिय हो रही हैं। इन परीक्षाओं की आर्य जगत [illegible] सभी प्रतिष्ठित आर्य विद्वानों ने भूरि २ प्रशंसा की [illegible] और जगत से उन्होंने इन परिक्षाओं में सम्मि[illegible] होने की प्रेरणा की है जिन में से कुछेक के नाम [illegible] प्रकार हैं—श्री महात्मा नरायण स्वामी जी, श्री कु[illegible] चान्द करण जी शारदा, श्री बा० पूर्णचन्द जी एड[illegible] केट, श्री धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री महेन्द्र प्रताप [illegible] शास्त्री, प्रो० इन्द्र जी, श्री डाक्टर परमात्मा शरण [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 301

आर्य
रविवार ३१ श्रावण
वि०सं० २०००

या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल की आवश्यकताएं

इस वर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव रे के दिनों में मनाया जाना निश्चित हुआ है। कोत्सव में इस समय दो मास का समय शेष रह है। गत वर्ष कन्या गुरुकुल का उत्सव दिसम्बर ड़े दिनों की छुट्टियों में मनाया गया था। कई से इन्हीं तिथियों में मनाया जाता था। परन्तु नों सर्दी अधिक होने से, तथा वार्षिकोत्सव के अन्य आवश्यक सुविधाएं न होने से अब निश्चय गया है कि कन्या गुरुकुल का वार्षिक उत्सव निश्चित से प्रतिवर्ष दसहरे पर ही मनाया जायगा। इस आर्य जनता को कन्या गुरुकुल के वार्षिकोत्सव को बनाने के लिये विशेष ध्यान देना चाहिए।

कन्या गुरुकुल के अध्यक्ष श्री अमृतराय जी ने स्य की निर्बलता के कारण अध्यक्ष पद तथा धिष्ठाता पद के कार्य करने में असमर्थता प्रकट । आचार्य रामदेव जी के देहावसान के बाद मृतराय जी ने जिस लगन तथा निष्काम भाव स्वस्थ होने पर भी कन्या गुरुकुल के लिये तथा धन संग्रह के लिये अनथक उत्साह से किया है, इसे कोई नहीं भूल सकता। अब भी समय पर पत्र तथा परामर्श द्वारा सभा के कारियों को इस ओर उत्साह तथा लगन से कार्य की प्रेरणा करते रहते हैं और लिखा है कि यदि स्वास्थ्य ठीक होता तो मैं भी अपना समय इस के लिये देता।

अगस्त को गुरुकुल में विद्या सभा का अधिवेशन उसमें सारी स्थिति पर विचार करने के बाद निश्चय गया कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता पं० र जी वेदालंकार कन्या गुरुकुल के उत्सव प्रबन्ध धनसंग्रह कार्य के लिये नियत किये जांय। श्री राय जी भूतपूर्व अध्यक्ष तथा मुख्याधिष्ठाता का ग तो उन्हें प्राप्त होगा ही, ला० नारायणदत्त जी) ने भी पूर्ण सहायता देने का वचन दिया है। शीघ्र ही कन्या गुरुकुल की आचार्या श्रीमती ती जी के साथ परामर्श कर तद्विषयक प्रोग्राम कारियों तथा आर्य जनता को चाहिए कि वह उन्हें पूर्ण सहयोग दें।

इस प्रसंग में मैं आर्य जनता का कन्या गुरुकुल की तात्कालिक आवश्यकताओं की ओर विशेष रूप से ध्यान खींचना चाहता हूं।

(१) कन्या गुरुकुल आश्रम में स्थान की कमी महसूस की जा रही है। वर्तमान आश्रम में २३०) कन्याओं के लिये स्थान है। परन्तु वर्तमान में २५० कन्याएं रहती हैं। आए दिन कन्या गुरुकुल में प्रविष्ट होने के लिये ब्रह्मचारिणियों के प्रार्थनापत्र आ रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि इस कमी को पूरा करने के लिये आश्रम में ५० कन्याओं के लिये निवास स्थान बनाया जाय। वर्तमान मंहगी के दिनों में इस पर लगभग ३०००) के व्यय होगा। स्थान की कमी के कारण कन्याओं को बरामदे में रहना पड़ता है। आने वाली सर्दियों में—तथा इन दिनों वर्षा में कन्याओं को अत्यन्त कष्ट होगा। यदि कोई आर्य भाई या आर्य दानी इसके लिये यकमुश्त रकम दान दे सकें तो यह काम आसानी से पूरा हो जायगा। आशा है आर्य भाई तथा आर्य दानी इस ओर विशेष ध्यान देने का कष्ट करेंगे।

(२) कन्या गुरुकुल में ब्रह्मचारिणियों के लिये भोजनशाला और स्नानागार की भी अत्यन्त आवश्यकता है। कोई दानी इनमें से एक २ भवन बनवा सकते हैं।

(६) चीज़ें मंहगी होने से महानिधि में घाटा बढ़ रहा है, उसे भी पूरा करना चाहिए। आशा है आर्य जनता तथा समाजें अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे।

भीमसेन

वेद जयन्ती सप्ताह

ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के दश नियमों का निर्माण करते हुए वेद का पढ़ना पढ़ाना तथा सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म बतलाया है। गुरुकुल से विदा होते हुए आचार्य अपने शिष्य को अन्य उपदेशों के साथ "स्वाध्यायान्माप्रमदः" स्वाध्याय करने में कभी उपेक्षा या आलस्य न करना चाहिये का उपदेश देता है। वेद तथा आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय पर अनादि काल से बल दिया जाता रहा है। स्वाध्याय वैदिक धर्म में मानव-जीवन के विकास के लिये मुख्य साधन माना गया है। विद्वानों के लिये ग्रन्थों के स्वाध्याय से मनुष्य संसारके सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों के संसर्ग पैदा करता है। स्वाध्यायशील मनुष्य इस संसार में संकट के समयों में अपने लिये मार्ग ढूंढ निकालने में समर्थ होता है और महापुरुषों के वाक्य संसार के प्रलोभनों और आपत्तियों से बचाने में उसके लिये दिग्दर्शन का कार्य करते हैं। स्वाध्याय शील मनुष्य यहां अपने जीवन को उन्नत बनाता है और अपने साथ संसर्ग में आने वाले मनुष्योंके लिये भी मार्गदर्शन का कार्य करता है। ऋषियों ने जहां दैनिक स्वाध्याय पर विशेष बल दिया है वहां वर्षमें एक बार कुछ समय के लिये संसार के कार्यों से हटकर केवल मात्र स्वाध्याय करने पर ही विशेष बल दिया है। क्षत्रियों के लिये वर्षाकाल में विजय यात्रा तथा वैश्यों के लिये धनार्जन करने के लिये देश देशान्तर का भ्रमण परिवर्जित किया है। अर्थात् मनुष्य के हृदयपटल पर इस बात को अङ्कित करने का यत्न किया गया है कि सांसारिक कार्यों के अतिरिक्त मनुष्य को आध्यात्मिक चर्चा में भी अपना कुछ समय लगाना चाहिये आज इस बीसवीं सदी में सारा दिन तथा सारी र मनुष्य सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति तथा धनलिप्सा में व्यतीत करदेता है फिर भी उसकी इच्छायें पूर्ण नहीं होती हैं। प्राचीन काल में इस देश में यह रीति चली आई है कि श्रावणी के दिन से लेकर वेद पाठ का कार्य लगातार चार मास तक नियम पूर्वक विशेष रूप से चला करता था और पौष मास में उसकी समाप्ति होती थी। आजकल इतने लम्बे २ यज्ञ तथा इतने काल की कथायें सम्भव प्रतीत नहीं होती इसलिये प्राचीन मर्यादा को अक्षुण्ण रखने के लिये सभा प्रति वर्ष श्रावणी से लेकर जन्माष्टमी तक वेद जयन्ती सप्ताह मनाया करती है। प्रत्येक आर्यसमाज में यह सप्ताह प्रति वर्ष मनाया जाता है और इसमें वेद तथा वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय किया जाता है। इस वर्ष सभा ने यह निश्चय किया है कि १५ अगस्त से २३ अगस्त तक प्रत्येक आर्य सदस्य सत्यार्थ प्रकाश का पारायण करे। सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज का धर्म ग्रन्थ है। जो दर्जा कुरान, बाइबल, जिन्दावस्था, ग्रन्थसाहिब इत्यादि का है वही दर्जा आर्यों की दृष्टि में सत्यार्थ प्रकाश का है। सत्यार्थ प्रकाश के गौरव को कायम रखने के लिये प्रत्येक आर्य भाई का यह कर्त्तव्य है कि वह इस वर्ष इस सप्ताह में एक बार सारे सत्यार्थ प्रकाश को आद्योपान्त पढ़ जावे। इस अवसर पर आर्य जनता का यह भी कर्त्तव्य है कि वह वेद के संदेश को पंजाब प्रान्त के कोने २ में पहुंचाने वाली एक मात्र संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

श्रावणी उपाकर्म

(श्री धर्मराज जी वेदालङ्कार)

श्रावणी उपाकर्म के मूल इतिहास में जाना अत्यन्त मनोरञ्जक होने के साथ साथ उपदेशप्रद भी है। मोनियर विलियम्स ने संस्कृत के अपने प्रसिद्ध कोश में उपाकर्म का अर्थ इस प्रकार दिया है–'Commencement or preparation of reading The Veda' अर्थात् वेद के स्वाध्याय का आरम्भ या उसके लिये तैयारी। 'श्रावणी' उस पूर्णिमा को कहते हैं जिसमें चन्द्र श्रवण नक्षत्र में विद्यमान हो। उपाकर्म का यह पर्व क्योंकि श्रावणी पूर्णिमा के दिन होता है, अत एव इसे 'श्रावणी उपाकर्म' कहते हैं। सूत्र साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि असली नाम 'छन्दसाम् उपाकर्म' है, श्रावणी शब्द आनुषङ्गिक रूप से इसके साथ जुड़ गया है। श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन पहले नागपूजा का त्यौहार होता था, यह धीमे धीमे लुप्त हो गया और कालक्रम से पीछे हटते हटते उपाकर्म भी श्रावण में होने लगा, इस अवस्था में उपाकर्म को ही लोग 'श्रावणी' कहने लगे। ज्योतिष शास्त्र का यह नियम है कि ऋतुएं काल की गति से अपने महीने बदलती रहती हैं। पहले वर्ष का सम्बन्ध आषाढ़ से था, बाद में श्रावण से होगया। प्राचीन ग्रन्थों में आषाढ़ में भी 'उपाकर्म' करने का उल्लेख उपलब्ध होता है। उपाकर्म हमेशा वर्षा ऋतु के आरम्भ में होता है, वर्षा ऋतु के प्रारम्भ के साथ इसका अन्तरङ्ग सम्बन्ध है। कई प्रान्तों में भाद्रपद में उपाकर्म होने का ी कारण है कि वहां वर्षा देर से शुरू होती है।

भारतीय इतिहास के प्राचीनमत काल में पढ़ाई ई व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं था। आजकल कोर्स हुए हैं, अध्यापक नियत हैं तथा विद्यार्थी भी ीवन का एक महत्त्वपूर्ण भाग अध्ययन में इस प्रकार बिताते हैं, जैसे यह उनका पेशा हो। इसकी वजह यह है कि अब पढ़ाई अधिकतर कृत्रिम है, दो तिहाई परिश्रम भाषाओं के सीखने में तथा आजतकके इतिवृत्त तथा विचारों से परिचय प्राप्त करने में व्यय होता है। जब ये सब झगड़े नहीं थे तब वैदिक काल में अध्ययन बहुत ही सरल था, वेद के विद्यार्थियों को व्याकरण में समय नहीं बिताना पड़ता था। जिस भाषा में वेद थे, उसी भाषा को वे बोलते थे, जिस इतिहास का अ ययन म करते रहे हैं उसका तो वे निर्माण कर रहे थे। स समय के विद्यार्थी अपने बाप दादाओं के साथ पने घर के कार्यों को करते हुए देश देशान्तर की र किया करते थे। भ्रमण के द्वारा लोक-जीवन का रिचय उन्हें प्राप्त होता था। बरसात ऐसी मौसस है समें इधर उधर फिरा नहीं जा सकता, इसमें कहीं ठ कर ही कार्य हो सकता है। सुत्तनिपात आदि बौद्ध न्थों के पढ़ने से विदित होता है बुद्ध महाराज सैकड़ों ातुओं के साथ विहार करते हुए वर्षा ऋतु आने पर ा के बाहर ठहर कर एक ही स्थान में चातु-

ही हैं। इसी तरह वैदिक ऋषि भी बरसात के ४ महीनों में जिज्ञासु शिष्यों को वेद का उपदेश किया करते थे। वर्षा ऋतु के अवकाश के समय का यह कितना अच्छा सदुपयोग था। एवं नियमित अध्ययन की अवधि उस समय ४ महीने थी। इस अध्ययन को आरम्भ करने से पूर्व पूर्णिमा के दिन एक बृहद् यज्ञ किया जाता था। इस यज्ञ की प्रक्रिया ही उपाकर्म है।

आजकल श्रावणी को समाज के सभी वर्ग मनाते हैं, लेकिन देखा जाय तो इसका सम्बन्ध मूलतः गुरु शिष्य के साथ है। आश्वलायन और बौधायन गृह्य सूत्रों से यही बात ज्ञात होती है। बौधायन ३. १. ३ में कहा है–**'समारब्धेष्वन्तेवासिषु उपाकर्म कुर्वीत।'** अर्थात् शिष्यों के जमा हो जाने पर उपाकर्म यज्ञ करे। पारस्कर गृह्य सूत्र २. १० में कहा है—**'स यावन्तं गणमिच्छेत् तावन्तस्तिलान् आकर्षफलेन जुहुयात्।'** अभिप्राय यह है कि आचार्य जितने शिष्यगण की इच्छा रखता हो उतने ही तिलों की उपाकर्म यज्ञ में आहुति दे। वाराहगृह्य सूत्र में उपाकर्म अवसर पर शिष्यों के इच्छुक आचार्य के लिये एक खास मन्त्र बतलाया गया है। जैमिनीय गृह्य सूत्र के—**'सब्रह्मचारिणश्च उपसमेतान् भोजयेद् आचार्यः'** इस वाक्य का अर्थ यह है कि उपाकर्म के मौके पर उपस्थित विद्यार्थिवृन्द को उपाध्याय अपनी ओर से सहभोज दे। ये सब प्रमाण यह सिद्ध करने में पर्याप्त हैं कि उपाकर्म किसी वक्त गुरु शिष्य से सम्बन्ध रखने वाला पर्व था।

अब यह विचारणीय है कि उपाकर्म बाद में जन साधारण का त्यौहार कैसे बन गया। पारस्कर गृह्य सूत्र के भाष्यकार हरिहर के तो शब्द हैं—"अतोऽध्यापयतोपि निरग्नेः साग्नेरप्यनध्यापयतो नाधिकारः। यत्तुलोके ब्रह्मचारिणं पुरस्कृत्य उपाकर्म प्रवर्तते लौकिकाग्नौ तस्याचारं विहाय मूलं न दृश्यते।" इनसे मालूम होता है कि उपाकर्म यज्ञ करने का अधिकार एकमात्र अध्यापक को ही है। प्राचीन काल में उद्दालक का पुत्र श्वेतकेतु एक बड़ा भारी सुधारक हुआ है। उसने जहां और अनेक सुधार किये वहां यह भी प्रस्ताव किया कि प्रत्येक स्नातक को विवाहित होने के पश्चात् भी वर्ष में दो तीन मास गुरु की सन्निधि में बिताने चाहियें। ऐसा करने से परिश्रम पूर्वक पढ़ा हुआ विषय फिर से ताजा होकर और अधिक उज्ज्वल हो जायगा। बरसात का काल ऐसा होता है जब बीज अंकुरित होने लगते

स्वाध्याय में दत्तचित्त हो सकता है। आरम्भ में केतु की सम्मति का विरोध किया गया। आप धर्मसूत्र १. १. २. १२ में कहा है—निविशे वृ **द्वौ मासौ समाहित आचार्यकुले वसेद् श्रुतामिच्छन्नि तिश्वेतकेतुः। तच्छास्त्रैर्विप्रतिषि** यहां श्वेतकेतु की बात को शास्त्र विरुद्ध ठहराया है। किन्तु जब वेद के अङ्गों और उपाङ्गों का भाव होने लगा और विद्यार्थिकाल में ही समस्त ग्रहण करना दुःसाध्य होगया तब यह अनिवार्य कि विवाहित होकर भी किसी प्रकार मनुष्य को स्वाध्याय स्थिर रखना चाहिये। स्नातक को दीक्ष संस्कार में आचार्य उपदेश देता है—**"स्वाध्याप्रमदः" 'स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्य**

इस सब का कारण यही है कि स्वाध्याय से पिछला पाठ फिरसे ताजा हो जाता है, वहां नई विद्याओं का भी आगम होता है। लेकिन विवा लोगों में भी अधिकांश घर छोड़कर गुरु के पास के लिये जाने को उद्यत न होंगे, गृहस्थ के जंजाल से इतनी आसानी से नहीं निकला जा सकता। अत घर पर रह कर ही वर्षाकाल स्वाध्याय में व्यतीत क का आदेश शास्त्र में किया गया। स्वाध्याय की अवधि में गृहस्थों को भी ब्रह्मचारियों जैसे ही क नियम निभाने होने थे। जो जैमिनीय गृह्यसूत्र उपाकर्म प्रकरण में कहा है—**"न मांसमश्नीया श्राद्धम्, न लोमानि संहारयेत्, न स्त्रियमुपे ऋतौ जायामुपेयात्।"**

उपाकर्म क्योंकि स्वाध्याय से खास सम्ब रखता है अतः इसकी विधि में स्वाध्याय या ज्ञान अधिष्ठातृदेव ऋषि प्रज्ञा धारणा आदि से आशी की याचना का समावेश होना स्वाभाविक है। पारस्क के अनुसार उपाकर्म के आरम्भ में सावित्री, ब्रह्मा, श्र प्रज्ञा, धारणा, सदसस्पति, अनुमति, छन्द और ऋ इन दस को आहुति दी जाती है। इसी प्रसङ्ग में कृ द्वैपायन, वैशम्पायन, तित्तिरि, आत्रेय, कौण्डि आपस्तम्ब, सत्याषाढ, हिरण्यकेशी, वाजसनेय, या वल्क्य, भारद्वाज, अग्निवेश्य इत्यादि सब ऋषि और विद्वान् महापुरुषों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की ज है। विद्यार्थियों में विद्याप्राप्ति के लिये उत्साह बढ़ाने के लिये इससे अच्छा और क्या उपाय सकता है कि वे उन दिव्य पुरुषों का सत्कार जिनके ऋषि ऋण के भार से वे लदे हुए हैं। इस अतिरिक्त उनमें भी अपने पूर्वजों का अनुसरण क की महत्त्वकाङ्क्षा इस विधि से उत्पन्न हो सकती

उपाकर्म स्वाध्याय के आरम्भ में होता स्वाध्याय की अवधि बीतने पर 'उत्सर्जन' यज्ञ कि जाना चाहिये। विद्यार्थी अपने घरों को विदा होने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 501

वान् की इच्छा है कि मनुष्य के कर्म से भग-
यज्ञ महान् हो, क्योंकि मनुष्य अमृत पुत्र है।
त्मा स्वयं उस कर्म से प्रसन्न होते हैं जो
ोर उत्साह पूर्वक किया जाता है। जो मनुष्य
प्रेम रत हो निरंतर लगे रहते हैं उनका कर्म
लिये परम कल्याण का द्वार खोल देता है।
ं केवल वह कर्म करूंगा कि जो मैं परम पिता
ी में अपना मुख उज्ज्वल रख के कर सकता
सी धारणा मनुष्य को अपवित्रता से हटा कर
की ओर, असत्य से हटा कर सत्य की ओर
यु से हटा कर अमृत की ओर ले जाती है।
प्रत्येक कार्य्य ऐसी दृढ़ता और निश्चय से
कि मानो उस एक कार्य्य के सिवा और मुझे

ी अपनी श्रद्धामयी आहुति समर्पित करते हैं।
नके हृदयों में कृतज्ञता का भाव दृढ़ होता है।
व वेद का पठन पाठन शिथिल होगया तब उपा-
ी सिर्फ़ एक रस्म के तौर पर ही किया जाने
स्वाध्याय का आरम्भ ही नहीं करना तो उत्सर्जन
ी समाप्ति कैसी ? इस लिये अर्वाचीन ग्रन्थों
र्म के दिन ही उत्सर्जन करने का भी विधान
सिन्धु में लिखा है—

त्सर्जन कालस्तु नेह प्रपच्च्यते, सर्वशिष्टा-
क्षानीम् उपाकर्मदिन एवोत्सर्जनकर्मानुष्ठा-
ण तन्निर्णयस्यानुयोगात् ।'

प्रकार धर्म सिन्धु के समय का शिष्टाचार यही
उपाकर्म और उत्सर्जन उसी दिन कर दिया
सूत्र और स्मृति के समय में, भी उसीदिन
के वैकल्पिक विधान से प्रतीत होता है कि
स्वाध्याय छूट चुका था। खादिर गृह्य सूत्र
है—

त्सर्जनंकुर्याद् उपाकर्मदिनेथवा।

प्रकार स्मृतिसमुच्चय में—

र्जनं पौषमासे उपाकर्मदिनेथवा ।'

आकल श्रावणी के यज्ञ में कई जगह प्रत्येक
छले तथा अन्तिम मन्त्र को बोलकर आहुति
है। यह क्रिया भी स्वाध्याय की शिथिलता
ा करती है। अगर हम किन्हीं कारणों से वेद
यन का आरम्भ नहीं कर सकते तो रामायण
ा गीता उपनिषद् आदि किसी और सद्ग्रन्थ
द्वारा समय का सदुपयोग करना हमारे लिये
है। इसके अतिरिक्त वर्षा ऋतु जहां अन्य
यों से मनोहर होती है वहां दूसरी ऋतुओं
ा दुर्भावनाओं और कामजन्य वासनाओं का
ी आदमी इसी ऋतु में होता है। इस बात
ाता रखते हुए भी इस ऋतु में परायण

कर्मयोग

[रायसाहब श्री ला० लाल चन्द जी]

सचमुच भगवान् का आदेश है "कुर्वन्नेवेह-कर्माणि जिजीविषेत्।" अर्थात् हे मनुष्य तू कर्मों को करता हुआ ही जीने की इच्छा कर। वस्तुतः जो प्रभु के इस आदेश को मानता है—उस पर चलता है, निरन्तर फलकी इच्छा न करता हुआ कर्म करता है—उसके कर्मयोगी होने में क्या सन्देह ? परन्तु यह तभी हो सकेगा जब प्रभु में आस्था होगी—उसमें प्रेम होगा। इस प्रकार प्रेमी और कर्मयोगी वस्तुतः समान हैं। रायसाहब ने बड़ी भावुकता से इस विषय को उपस्थित किया है। —सम्पादक

कुछ करने को ही नहीं है, मैं इस कार्य्य को यथाशक्ति अधिकतम सुन्दर और ठीक करूंगा"। ऐसे शुभ विचार जब प्रतिदिन कार्य में परिणत होते हैं तो मनुष्य के कल्याण में परम सहायक होते हैं। प्रत्येक कर्म को प्रेम से करने से नित नवीन उत्साह और चिरस्थायी बल प्राप्त होता है। चंचलता, उद्वेग, निर्बलता, और आतुरता के स्थान में योग्यता, सामर्थ्य, और निश्चय आदिअनुभव होते हैं। प्रेमी ही उस आनंद के भागी होते हैं जो कर्तव्य के पश्चात् चित्त को अमृतमय रस से पूर्ण कर देता है।

"चाहे कुछ हो मैं निश्चय करता हूं कि मैं कर्म योग द्वारा पवित्रता प्राप्त करूंगा"। ऐसा पावन विचार करने वाला सदैव परमात्मा की रक्षा में सुरक्षित रहता है। वह अपने प्रेमास्पद के दर्शन नित्य प्रत्येक स्थान में करता है।

प्रेमी प्रेम में उन्नत हुआ हुआ अपने प्रेमास्पद से कुछ छिपाव नहीं रखता। उसके आनंदकंद हृदय विहारी हैं, सदैव हृदय में निवास करते हैं, जब उस की इच्छा हुई हृदय उघाड़ा और अपने प्रेमास्पद के स्पष्ट दर्शन कर लिये।

भगवान् हमारा ज्ञान नहीं चाहते, मान नहीं चाहते, धन धान्य नहीं चाहते, केवल प्रेम चाहते हैं। और हमें अपने कर्तव्य में रत देखना चाहते हैं।

भक्त की प्रार्थना यह होती है कि "हे मेरे भगवान्! मेरे साथ वैसा व्यवहार करो जैसा कि मैंने तेरी प्रजा के साथ किया है" यह शब्द वही उच्चारण कर सकता है, जिसके व्यवहार में कपट, ईर्षा, द्वेष और मोह को स्थान नहीं; जिसके मन में सरलता का निवास है। विश्व प्रेम वही कर सकता है कि जो अपने बंधुओं से प्रेम करना जानता हो और बंधुओं से प्रेम वही करेगा कि जिसे अपने हृदय का पता है। में ममत्व का टेढ़ापन नहीं ऐसा साधु ही प्रेमी हो सकता है, अन्य सब मोह को प्रेम कहते हैं।

हित करने से प्रेम की ज्योति का विकास होता है। नित्य धारणा करो कि "आज मैं अवश्य किसी का हित साधन करूंगा, यदि अन्य का हित करने का अवकाश न मिला तो मैं अवश्य अपना ही हित करूंगा, मैं अपना अथवा किसी और का अहित कदापि नहीं करूंगा"। यदि विचार किया जाय तो जितना यह सुगम दिखाई देता है उतना ही यदि हम जीवन पथ से च्युत हो गए हों तो हित साधन एक अत्यन्त कठिन समस्या हो जाती है और मोह वश चाहे हम प्रिय कार्य कर सकें किंतु हित चिंतन और हितकार्य में समर्थ नहीं होते। यह भी प्रेम की कमी है। प्रेमी का विवेक सदैव उज्ज्वल और स्पष्ट मार्ग पर प्रेमी को उत्साह सहित ले जाता है।

भगवान के प्रेम राज्य में हम फल के समान सुगंधियुक्त, अग्नि के समान तापयुक्त और सूर्य के समान ज्योतिर्मय बनें, जिससे कि जो कोई हमारे सहवास में आए उसे हमसे और हमें उससे अवश्य आनंद मिले।

लाभ के लिये सभी लोग कार्य्य करते हैं केवल प्रेमी ही आनंद के लिये कार्य्य करता है।

प्रेमी होना और कर्मयोगी होना एक ही है। कर्मयोगी वही हो सकता है जो सहृदय हो और प्रेमी हो, और कर्मयोग बिना, प्रेमी का जीवन ही प्रेममय नहीं हो सकता।

प्रेम जीवन है, प्रेम अमृत है, प्रेम आनंद है, और क्या प्रेम सर्वस्व है क्योंकि भगवान स्वयं प्रेममय हैं।

प्रेम और सौन्दर्य की जब मनुष्य को सच्ची परख हो जाती है तो फिर उसे मोह नहीं होता।

प्रेममय भगवान से ही प्रेम धारा का विकास है, वह तो अमृतमयी पावन और जगतारिणी है। वह सुन्दरध्वनि करती हुई प्रेमियों को छूती हुई निरंतर बहती ही रहती है, उसका अंत नहीं।

प्रेम नदी के तीर पर सुन्दर नीर और समीर का आनन्द है, अन्दर बैठने पर मलों से निवृत्ति है। जलपान करने पर निरन्तर स्वस्थता और तृप्ति है। प्रेम नदी के जल से जो उपवन सींचा जाता है उसमें उद्यान भी अनेकों अलौकिक सौन्दर्य दर्शाते हैं—नयनों को तृप्त करने वाले वहाँ के सुगन्धित फूल और सुन्दर कमल एक विलक्षण आकर्षण रखते हैं। ऐसे उपवन में ध्यानावस्थित होकर जब सुन्दर बूंद आँखों से छिपती है तो सब मोह पाप सन्ताप को हर लेती है और साधक को दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है फिर भग-

CC-0 Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

राष्ट्रोन्नति में महर्षि का स्थान

(श्रीनिवास श्रीपति 'साहित्यरत्न')

निस्सन्देह स्वामी दयानन्द जी का राष्ट्र के उत्थान में ऊँचा स्थान है। कहना तो यह चाहिये कि उन्होंने भारतीय दासता की बेड़ी को तोड़ने का प्रथम प्रयास किया और वह भी उस समय जब कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद की धाक देश पर गहरे आतंक के साथ जम गई थी, इधर भारतीय अपनी आर्य-संस्कृति के गौरव को भुला कर विदेशीय आचरण का अनुकरण करने लगे थे। आर्यों की सन्तान दूसरों के चंगुल में फंस कर अपनी स्वतन्त्र सत्ता खोने लगी थी और ईसाई पादरी अपने प्रभु ईसा का संदेश सुना क्रीश्चियन बन जाने का पाठ सिखलाने लगे थे और साथ ही जैन धर्म, बौद्ध धर्म, नानक पन्थ, वैष्णव सम्प्रदाय, उदासी सम्प्रदाय और शैव आदि अनेक सम्प्रदायों की खिचड़ी पक रही थी जिसके झगड़ों में पड़कर आर्यों ने मुल्ला, नागा, बाबा, महन्त और वैरागी आदि की नामधारी विशेषताओं को अपनाकर वैदिक धर्म की वास्तविकता को भूलने लगे थे, फलस्वरूप धार्मिक मतभेदों के साथ राष्ट्र की एकता छिन्नभिन्न हो गई थी। हिन्दू मुसलमान या ईसाई बन कर अपने ही भाई और बहन को खोने लगे थे और अहिंसा को छोड़ कर हिंसा की बाज़ कसने लगे थे। ऐसी नाजुक परिस्थिति में स्वामी जी का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने फिर से आर्य धर्म की जीवित प्रतिमा उपस्थित की। आर्य सत्ता को जगाने के लिये उन्होंने देश में दौरा किया और वैदिक धर्म की वास्तविकता का ध्यान दिलाकर एकेश्वरावाद का वही जादू पुनः बिखेरा जिसे श्री शंकराचार्य जी ने कभी प्रयोग किया था। उन्होंने सभी धर्मों में जो असत्य था उसे स्पष्ट खोल कर रख दिया। अवतार, मूर्त्तिपूजा, बहुदेवोपासना, बहुविवाह, बालविवाह आदि का खण्डन कर समाज में स्तुति, प्रार्थना और उपासना का महत्व सिद्धलाया तथा आचरण की पवित्रता पर ज़ोर दिया। जाति भेद, वर्ग भेद, सम्प्रदाय भेद और कर्म्म भेद को दूर कर भारतीय समाज में आर्य धर्म के झण्डे के नीचे एकता और अमरता का सन्देश दिया जिससे सदियों से गुलामी की जंजीर में पड़ी हुई आर्य सन्तान ने आनन्द की सांस ली और उनकी पारस्परिक फूटमें की खाइयां बहुत कुछ पट गई और हिन्दू अपने प्राचीन

प्रभु विनय

(रा. सा. श्री० ला० लालचन्द जी)

ओ३म् दृते दृꣳ हमा। ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् ॥

यजु० ३६—१६

हे सकल दोष निवारक परमेश्वर! मुझे दृढ़ बना, तुम्हारे सम्यक् दर्शन में चिरकाल तक जीऊं, तुम्हारे दिये ज्ञान प्रकाश में चिरकाल तक जीऊं॥

बलपते बल दो मुझे,
देखूं तुझे हर स्थान में।
निज हृदय में, सब जनों में,
जगत में हर काम में॥

दो प्रभो विश्वास ऐसा,
दृढ़ रहूं, नित स्थिर रहूं मैं।
शक्ति संयुत नम्र हो,
कर्तव्य नित करता रहूं मैं॥

देखता तुझ को सभी में,
सजग हो धरता रहूं—
शुभ कामना, नित सर्व हित के,
कर्म ही करता रहूं॥

प्रेम पूरण दृष्टि तेरी,
नित्य ही मुझ पर रहे।
स्नेहयुत मंगल भरा,
मुझ पर सदा तव कर रहे॥

पूर्ण आयु भर निरंतर,
स्मरण तव करता रहूं।
तुम देखते हो काम मेरे,
भाव यह धरता रहूं॥

मुदित मन सुन्दर सुमन,
सब कर्म तव अर्पण करूं।
निश्चिंत हो निर्भ्रान्त हो,
जीवन तेरे अर्पण करूं॥

अन्तः करण में ध्यान तेरा,
धर जीऊं बढ़ता रहूं।
विकसित करूं मैं दिव्यता,
सबका भला करता रहूं॥

निराकार ब्रह्म की उपासना में तल्लीन हो गये। जी ने हिन्दू और मुसलमानों की एकता का बड़ा जो मार्ग दिखाया था वह यही था कि आर्य संस्कृति की छाप डाल दी जाय और आर्य बन जाएं। उनका कहना था कि आर्यावर्त्त आ है, उसके ऊपर वही शासन कर सकते हैं। स्व शासन का जन्मसिद्ध अधिकार पहले पहल उन हमें बताया और इस तरह उन्होंने न केवल आ का ही प्रचार किया बल्कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता क निश्चित और ठोस मार्ग बतलाया।

गुजराती होते हुए भी उन्होंने हिन्दी का आ लेकर अपना धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखा। को राष्ट्रभाषा मान कर साहित्य का एकीकरण समीकरण करना भी उन्होंने ही हिन्दी भाषि बताया। भाषा की एकता राष्ट्रीय एकता में महत्व स्थान रखती है और यह जान कर कि हिन्दी ही देश की मातृभाषा है उन्होंने इसका आश्रय लि अपने साथ ही उन्होंने हिन्दी के अनेक लेखकों पैदा किया। स्वामी जी की हिन्दी सेवायें हिन्दी क कभी भी नहीं भुला सकता।

यद्यपि स्वामी जी के सुधार मार्ग में अनेक आईं और उन्हें शारीरिक यातनायें भी दी गईं भी एक अविचलित योगी की भांति उन्होंने उन का सामना किया, परन्तु मातृभूमि की सच्ची से मुँह नहीं मोड़ा। आज आर्यों की अवशिष्ट स की ही सेवा का फल है।

आवश्यकता

गुरुकुल के एक सुयोग्य स्नातक के लिए कि नैनीताल में मैडिकल प्रैक्टिशनर हैं— सुन्दर, स्वस्थ, सुशील शिक्षिता एवं राष्ट्रीय धार्मिक विचारों वाली कन्या की आवश्यकता साहित्य और कला से प्रेम रखने वाली गुरु की स्नातिका को विशेषता दी जाएगी। वि में दहेज व जातपात का ख्याल न र जाएगा। वर महाशय पंजाबी हैं अतः पंजा ही विवाह करना पसन्द करेंगे। ग़रीब असहाय घर की लड़की का विशेष रूपेण ख रक्खा जाएगा।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें—

डा० कृष्णमो
तल्लीताल, नैनीत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

GURUKULA KANGRI

Regd L. N. 391

सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दोलन जारी — आर्यों का कर्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वक्तव्य

त ८ जुलाई को जब सिन्ध सरकार ने एक
न द्वारा यह घोषणा की थी कि वह सत्यार्थ-
के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने का विचार नहीं
तो सभा ने आशा की थी कि इस विषयक
और कुत्सित प्रचार अब शान्त हो जायेगा
सभा को यह जान कर दुःख हुआ है कि सिन्ध
कुछ कट्टर मौलवी, मौलाना खान ख्वाजा
मगनी आदि कुछ मुस्लिम लीगी तथा
अकाली इस सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दो-
जारी रख कर साम्प्रदायिक वातावरण को
करने के निन्दनीय प्रयत्न में दिन रात तत्पर हैं।
के एक मौलवी ने मुसलमानों से अपील की है
मुहम्मदी झंडा बनाया जाये और मुहम्मद के
ुओं के नाम से स्वयं सेवक भरती किये जायें।
र्थप्रकाश की जब्ती के लिये सारे भारत में एक
मनाया जाय और सिन्ध सरकार से कहा जाये
दि उसने सत्यार्थ प्रकाश को जब्त न किया तो
तान भर के मुसलमान सत्याग्रह करने पर विवश
येंगे।

शाहबाज" नामक मुस्लिम लीगी अखबार प्रान्तीय
ों से पूछता है कि क्या वे उस समय जागेंगी
नी सिर से गुजर जायेगा और आर्य समाजी
मनी शरारतों से देश भर में अशान्ति की
भड़का देंगे।

न समाचारों को अखबारों में निकले कई दिन
हैं किन्तु सभा ने इन सब शरारत पूर्ण भावणों
ब्दों की उपेक्षा करके सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय
र आचरण और उसके सिन्ध आदि प्रान्तों में
से अधिक प्रचार को ही आर्यों की ओर से
क्रियात्मक उत्तर मानकर वैसा ही आदेश दिया
यह शरारत बढ़ती और फैलती हुई प्रतीत होती
लिये इस सम्बन्ध में कुछ वक्तव्य निकालने की
कता हुई है। अभी आज ४।८।४३ के
र पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि मौलवी खान-
अब्दुलगनी ने मुस्लिम लीग कौन्सिल के शीघ्र
ली में होने वाले अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव
ने की सूचना दी है।

मुस्लिम लीग की यह सभा भारत सरकार से
ध करती है कि स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित
प्रकाश पुस्तक के उन अध्यायों को तुरन्त जब्त
जिन में पैगम्बर मोहम्मद आदि धर्म प्रवर्तकों

यदि यह प्रस्ताव मुस्लिम लीग कौन्सिल में सर्व-सम्मति से भारत सरकार को भेजा गया और उसने आर्यों के इस प्राणों से बढ़ कर प्रिय पवित्र धर्म ग्रन्थ के अंग भंग वा कांट छांट का निश्चय किया (जिसकी हमें जरा भी आशा नहीं) तो भी आर्यों को भयभीत वा चिन्तत होने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि आर्य तन मन धन समर्पण करके भी अपने इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा करेंगे तथा उसमें वे सफल होंगे उसमें सभा को तिलमात्र भी सन्देह नहीं। ऋषि दयानन्द ने मतमतान्तरों की समालोचना किसी के दिल को दुखाने के लिये नहीं किन्तु सत्य को प्रकाशित करने के लिये की थी। इस को उन्हों ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका और अनुभूमिकाओं में बार २ स्पष्ट किया है तथापि जो उनके पवित्र और उदार भाव को न समझ कर ऋषि की इस अमर कृति के समालोचनात्मक भागों को सरकार की सहायता से जब्त कराना चाहते हैं वे बड़ी सख्त गलती पर हैं और अपने इस प्रयत्न में कभी सफल नहीं हो सकते इसका हमें पूर्ण निश्चय है। ऋषि दयानन्द ही क्या जरदुस्त, ईसा मसीह, मुहम्मद साहेब, गुरु नानक भक्त कबीर तथा अन्य सभी सुधारकों ने अपने समय में प्रचलित अन्ध विश्वासों और रूढ़ियों की कठोर शब्दों में आलोचना की इसके उदाहरण जिन्द अवस्ता, बाइबिल, कुरान, ग्रन्थ साहब आदि में से सैकड़ों दिये जा सकते हैं। मास्टर तारासिंह तथा उनके अनुयायियों का यह कहना नितान्त असत्य है कि सत्यार्थप्रकाश के लेख आलोचना की सीमा से आगे निकल गये हैं और यदि उन्हें दिल साड़ू गालियां कहा जाये तो मिथ्या न होगा। सत्यार्थ प्रकाश ने किस २ की दाढ़ी और पगड़ी पर हाथ नहीं डाले इत्यादि। निस्सन्देह ऋषि दयानन्द ने केवल लोकहित कामना और सत्य प्रचार के भाव से प्रेरित हो कर मत मतान्तरों की बुराइयों की निर्भयतापूर्वक समालोचना की पर ऐसा करते हुये उन्होंने मर्यादा का कहीं उल्लंघन नहीं किया।

आर्यों का कर्तव्य यही है कि अपने इस पवित्र धर्म ग्रन्थ का प्रतिदिन वे नियम पूर्वक स्वाध्याय करके लाभ उठायें, इसके अनुसार आचरण करके अपने को उन्नत करें और इसके अधिक से अधिक प्रचार में का यत्न करें (जिसकी हमें कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती) तो तन मन धन से इसकी रक्षा में कोई कसर न उठा रखें।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली।

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ऋतु-समाचार

इस सप्ताह गुरुकुल में तीन दिनों से विशेष रूप से वर्षा हो रही है। कुल भूमि में चारों ओर हरियाली नज़र आती है। मौसम ठण्डा है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है।

गुरुकुल के नवीन आचार्य

गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक, आर्य समाज जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, प्रतिभा-सम्पन्न व्याख्याता तथा श्री दयानन्द-उपदेशक विद्यालय लाहौर के भू० पू० आचार्य श्री पं० प्रियव्रत जी वेद-वाचस्पति गुरुकुल के आचार्य बन कर ३१ जुलाई को पधारे। कुल-वासियों ने आप का हार्दिक स्वागत किया। पहली अगस्त से पण्डित जी ने आचार्य का सारा कार्यभार संभाल लिया है। तीनों महाविद्यालयों के ब्रह्मचारियों तथा उपाध्यायों की एक सभा में आपने एक सुन्दर प्रवचन किया जिसमें आचार्य की जिम्मेवारी और गुरुकुलोन्नति की दिशा को आपने सुस्पष्ट किया। पण्डित जी से गुरुकुल को बड़ी २ आशाएँ हैं।

षाण्मासिक परीक्षाएँ तथा दीर्घावकाश

गुरुकुल विश्वविद्यालय में वेद, साहित्य तथा आयुर्वेद महाविद्यालयों की षाण्मासिक-परीक्षाएँ ६ अगस्त से प्रारम्भ हो चुकी हैं। दीर्घावकाश १५ अगस्त से प्रारम्भ होगा। सरस्वती यात्राओं में महाविद्यालयों के ब्रह्मचारी भारत के विविध स्थानों पर ज्ञानोपार्जन के लिए जावेंगे। प्रथम से पंचम श्रेणी तक (विद्यालय विभाग) के ब्रह्मचारियों की षाण्मासिक परीक्षाएँ २६ अगस्त से प्रारम्भ होंगी और दीर्घावकाश १ सितम्बर से प्रारम्भ होगा। छुट्टियों के दिनों में विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही निवास करते हुए निकटस्थ स्थानों पर भ्रमणार्थ जाया करेंगे। रेलों तथा खाद्य-सामग्री की दिक्कतों के कारण गुरुकुल के अधिकारियों ने ऐसा ही विचार किया है। दीर्घावकाश के दिनों में विद्यालय-विभाग के ब्रह्मचारियों को घर जाने की छुट्टी न मिल सकेगी अतः संरक्षक महानुभाव अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र न भेजें।

गुरुकुल में शोक-सभा

गत २७ जुलाई को श्री प्रो० शिवदयालु जी के आकस्मिक निधन का समाचार तार द्वारा गुरुकुल पहुंचा। संध्या-हवन के पश्चात् शोक-सभा की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

अगस्त मास के उत्सवों का प्रबन्ध

(१) आर्यसमाज कोहमरी २० से २२ अगस्त।

१६ अगस्त से पं० रामदत्त जी की कथा होगी तत्पश्चात् उत्सव पर श्री पं० पूर्णचन्द जी सिद्धान्त-भूषण, श्री पं० सदाशिव जी, म० शमशेरसिंह जी, म० जय प्रकाश जी, म० प्रतापसिंह जी तथा म० बालकृष्ण जी पधारेंगे।

आर्य समाज हजूरीबाग श्रीनगर—

२१ से २६ अगस्त। २१ अगस्त से श्री पं० रामदत्त जी गौतम कथा करेंगे। उत्सव में निम्न-लिखित सज्जन सम्मिलित होंगे। श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी, श्री पं० सदाशिव जी, श्री पं० पूर्णचन्द जी, म० जयप्रकाश जी धनुर्धर तथा ठाकुर प्रतापसिंह जी, भजनोपदेशक।

आर्यसमाज केटा २ से २६ अगस्त।

१ अगस्त से श्री पं० क्षितीशकुमार जी वेदालङ्कार तथा म० भक्तराम जी भजनीक कथा कर रहे हैं। श्री म० कृष्ण जी, श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालङ्कार, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्री म०हरिश्चन्द जी।

आर्य समाजों की सेवा में आवश्यक निवेदन

(२) "आर्य" आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का एक मात्र पत्र है। जिसमें धार्मिक, सामाजिक तथा सिद्धान्त सम्बन्धी गम्भीर तथा शिक्षाप्रद लेख होते हैं। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक सत्संगों में पढ़े जाने के लिये सुन्दर लेख तथा वेद मन्त्रों की सरल तथा रोचक व्याख्या होती है। सभा का निजू पत्र होने के कारण इसमें सभा सम्बन्धी सूचनायें तथा आज्ञायें प्रकाशित होती हैं। आर्य समाज में होने वाले अन्दोलनों का इस पत्र में उल्लेख होता है। आर्य नेताओं के सन्देश भी इसमें प्रकाशित होते रहते हैं। प्रत्येक आर्य तथा आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि वह ४) भेज कर इस पत्र के ग्राहक बनें। आशा है कि आप शीघ्र ही ४) भेज कर अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे तथा प्रसिद्ध विद्वानों के लेख पढ़ कर अपनी आध्यात्मिक पिपासा को शान्त करेंगे।

(३) प्रायः ऐसा देखा गया है कि कुछ धनी आर्यसमाजें पर्याप्त धन खर्च करके यू. पी. से भजनीकों का प्रबन्ध करती हैं। उन को देख कर उस जिले की दूसरी छोटी समाजों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वे भी सभा के संगठन की अवहेलना करके प्राईवेट [illegible] करने की कोशिशें करती हैं। इससे जहाँ सभा

वेद प्रचार विभाग

[श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

का संगठन टूटता है, आर्य समाजों पर आर्थिक बोझ पड़ता है, वेद प्रचार तथा सभा की दूसरी निधियों पर असर पड़ता है वहां सभा के योग्य भजनोपदेशकों के मन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। और वे भी सभा की सेवा छोड़ कर इस प्रकार की फीस खोरी करने की इच्छा करने लग जाते हैं। प्राईवेट प्रबन्ध करने का अधिक रिवाज़ मुज़फ्फरगढ़ तथा डेरागाज़ी खां की आर्य समाजों में है। संगठन ही आर्य समाज की शक्ति का रहस्य है। इसी संगठन के नाम पर मैं आर्य-समाजों से अपील करता हूँ कि वे अपने उत्सवों का सभा के द्वारा ही प्रबन्ध करें और कम से कम उन प्रचारकों को अपने उत्सवों पर न बुलायें जो कि फ़ीस नियत करके आते हैं।

(४) ज़िला लाहौर तथा अमृतसर में पं० रामचन्द जी तथा म० बलदेव जी ग्रामों में प्रचार का काम कर रहे हैं। वैशाख, ज्येष्ठ तथा अषाढ़ मास में इन्होंने निम्न स्थानों में प्रचार किया।

नुशहरा ढाला, काहना, खुड्डियां, कच्चा पक्का, रामगढ़, मथरेवाल, खलचियाँ, बुताला, सठियाला, कोट मताब और बडाला, अटारी शामसिंह।

यह मण्डली प्रचार के साथ गरीबों को दवाइयां भी मुफ्त बांटती है।

(५) श्री स्वामी योगानन्द जी महाराज तथा म० हज़ारी लाल जी ज़िला गुरदासपुर के ग्रामों में निम्न-स्थानों पर प्रचार कार्य करेंगे।

जस्सड़, कंजरूर, मल्लाह, दूगोचक, नूरकोट, शकर, गढ़ खानेवाल, नैनाकोट, धर्मकोट रन्धावा।

स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज बड़ी कृपा पूर्वक सभा के साथ सहयोग कर रहे हैं। अगस्त मास में सभा की प्रार्थना पर वे निम्न स्थानों पर प्रचार करेंगे।

फीरोजपुर छावनी, फाज़िलका, मैकलोड गंज, बहावलनगर, चिशतियां, टामेवाली, समासट्टा, क्वेटा।

(७) श्री पं० मुनीश्वरदेव जी तथा म० भद्रपाल जी इस मास पटियाला रियासत के निम्न स्थानों में प्रचार करेंगे।

नाभा, चौन्दा, अमलोह, धुरी, बरनाला,

(८) कोट खाई ज़िला शिमला में कई वर्षों नहीं हुआ था। वहां की हिन्दू जनता की धार्मिक दृष्टि से बड़ी शिथिल है। श्री पं० हरि उपदेशक को वहां १०—१२ दिन के लिये भेजा

(९) श्री पं० हरिदेव जी तथा श्री म० लाल जी ज़िला मुज़फ्फरगढ़ के ग्रामों में रहे हैं। जुलाई मास में उन्होंने निम्न स्थ प्रचार किया। बसीरा, भूटापुर, खानपुर, अलीपुर, लंगर सराय, कींझड, खानगढ़, वाली, मोची वाली, परिवाला, खैरपुर, सो

(१०) आज कल पं० तीर्थराम जी, पं० देव जी, पं० सदाशिव जी, श्रीमती द्रौपदी पं० समरसिंह जी, म० मेहरचन्द जी, म० जी, म० आशानन्द जी, म० तेजभान जी, म नाथ जी अवकाश पर हैं।

समालोचना

"साप्ताहिक प्रकाश"। हमें यह जान कर हुई है कि श्री पं० लालचन्द जी हितैषी पुरी ने भारतवर्ष की राजधानी देहली से प्रका का उर्दू का साप्ताहिक पत्र निकालना प्रारम्भ है। हमें आशा करनी चाहिए कि यह पत्र नि कर आर्य समाज की सेवा करेगा।

यशःपाल सिद्धान्

[पृष्ठ ३ का शेष]

वर्ष सभा ने आचार्य रामदेव स्मारक वेद प्रच के लिये १ लाख रुपया एकत्रित करने क अपनी साधारण सभा में किया है। आर्य यह कर्त्तव्य है कि इस निधि के लिये अधिक धन देकर अपने कर्त्तव्य का पालन करे समाज के लिये अपने जीवन तथा सर्वस्व क करने वाले अपने स्वर्गीय नेता के प्रति अपन को प्रकट करते हुये उनके नाम पर स्थापित लिये १ लाख रुपया एकत्रित करके अपन का परिचय दे। यदि आर्य पुरुषों ने इस अपने कर्त्तव्य के पालन करने में उत्साह दि मुझे निश्चय है कि वेद प्रचार निधि में १ ल एकत्रित होना कठिन न होगा।

यशःपाल सिद्धान्

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 30(

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L.

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २

वार्षिक

६ भाद्रपद,

२२ अगस्त

२००२ पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Saharanpur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

यद्यदध्यापको राजा च भ्रुकुटीं कृत्वा विद्यार्थिनोऽमात्यप्रजाजनांश्च प्रेरयेत्तर्हि ते सुमन्त्र्या विद्वांसो धार्मिकाश्च जायन्ते। ये मरणधर्म्येष्वमरणधर्माणं स्वप्रकाशरूपं परमात्मानमुपास्य सर्वान् मनुष्यान् प्राज्ञान् विदुषो जनयन्ति त एव सर्वदा सत्कर्त्तव्याः सुखिनश्च भवन्ति ॥ १ ॥

जो अध्यापक और राजा भौंहें टेढ़ी करके विद्यार्थी मन्त्री और प्रजाजनों की प्रेरणा करे तो उत्तम श्रेष्ठ विद्वान् और धार्मिक होते हैं। जो मरणधर्मवालों में मरणधर्मरहित अपने प्रकाशस्वरूप परमात्मा की उपासना करके सब मनुष्यों को बुद्धिमान् विद्वान् करते हैं वही सब काल में सत्कार करने योग्य और सुखी होते हैं ॥ १ ॥

हे अध्यापक राजन् वा त्वं श्रेष्ठाञ्छ्रोत्रियानमात्यान् वा सुमत्या सत्याचरणेन संयोज्य शुभ्रतानि कर्माणि जोषय सूर्य्यवद्विद्यान्यायप्रकाशं च सततं कुरु ॥ २ ॥

हे अध्यापक वा राजन् आप श्रेष्ठ श्रोतृजन मन्त्रियों को उत्तम मति और सत्य आचरण से युक्त करके संगत कर्मों का सेवन कराओ और सूर्य्य सदृश विद्या न्याय का प्रकाश निरन्तर करो ॥२॥

हे मनुष्या यूयं सर्वैः सह सखायो भूत्वाश्वारथमिव सखीन्त्सत्कर्मसु सद्यः प्रवर्त्तयत। श्रेष्ठमार्ग इवाऽस्मान्त्सरले व्यवहारे नयत। येऽत्र जगति सूर्य्यवच्छुभगुणान्विताः स्वात्मनः प्रकाश्य सुखं जनयेयुस्तेऽस्माभिः सत्कर्त्तव्याः सन्ति ॥ ३ ॥

अध्यात्म सुधा

[३६]

दयानन्दोपनिषद

ऋग्वेदः मं० ४। अ० १। सू० २॥

कर्तव्याकर्तव्य निरूपण प्रकरणम्

सब लोगों के साथ मित्र होकर जैसे घोड़े रथ को ले चलते हैं वैसे मित्रों को उत्तम कर्म्मों में प्रवृत्त करो। और श्रेष्ठमार्ग के सदृश हम लोगों को सरल मर्य्यादा में पहुंचाइये। जो लोग इस संसार में सूर्य्य के सदृश उत्तम गुणों से युक्त हुए सब के आत्माओं को प्रकाशित करके सुख को उत्पन्न करें वे हम लोगों से सत्कार करने योग्य होवें ॥ ३ ॥

त एव विद्वांसः सन्ति ये श्रेष्ठस्य विदुषोऽनादरं न कुर्वन्ति त एवाध्यापकोपदेशकाः श्रेयांसो येऽस्माकं दोषान् दूरीकृत्य पवित्रयन्ति त एवाऽस्माभिः सत्कर्त्तव्यास्सन्ति ॥ ४ ॥

वे ही विद्वान् जन हैं कि जो श्रेष्ठ विद्वान् पुरुष का अनादर नहीं करते हैं और वे ही अध्यापक और उपदेशक कल्याणकारी होते हैं जो हम लोगों के दोषों को दूर करके पवित्र करते हैं। वे ही हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं ॥ ४ ॥

स एवाऽध्यापको राजा वा श्रेष्ठोऽस्ति यः सुशिक्षयाऽस्मानुषा इव रात्रेर्दुष्टाचारात् पृथक् कृत्य श्रेष्ठाचारं कारयेत् ॥ ५ ॥

वह ही अध्यापक वा राजा श्रेष्ठ है कि जो उत्तम शिक्षा से हम लोगों को [illegible]

अत्र वाचकलु०—स एवोत्तमे कुले जायते यस्योत्तमानि कर्माणि युः। यथा विद्युदाद्यग्निरन्तरिक्षे विराजते तथैव योऽनन्तं जगदीश्वरमन्तर्ध्यात्वा सर्वज्ञानवाञ्छुद्धियुक्तो भूत्वा सर्वाण्युत्तमानि प्रशंस्यानि कर्माणि कर्तुं प्रभवति ॥ ७ ॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—वही उत्तम कुल में उत्पन्न होता है कि जिस के उत्तम कर्म हों और जैसे बिजुली आदि अग्नि सीमारहित अन्तरिक्ष में शोभित होता है वैसे ही जो अनन्त जगदीश्वर का ध्यान करके सब ज्ञान वाला शुद्धियुक्त होकर सम्पूर्ण उत्तम प्रशंसा करने योग्य कर्मों के करने को समर्थ होता है ॥ ७

हे राजादयो मनुष्या यथा सर्वस्य जगत पिता जनः परमात्मा दयया सर्वेषां जीवानां सुखाय विविधान् पदार्थान् रचयित्वा दत्वाऽभिमानं न करोति तथैव यूयं भवत। ईश्वरस्य सद्गुणकर्म्मस्वभावैस्तुल्यान्त्स्वगुणकर्मस्वभावान्कृत्वा राज्यादिकं पालयित्वाऽन्ते मोक्षमाप्नुत ॥ १० ॥

हे राजा आदि मनुष्यो जैसे सब जगत् का पालन और उत्पन्न करने वाला परमात्मा दया से सब जीवों के सुख के लिये अनेक प्रकार के पदार्थ को रच और दे के अभिमान नहीं करता है वैसे ही आप लोग होइये। और ईश्वर के उत्तम गुण कर्म और स्वभावों के तुल्य अपने गुण कर्म्म और स्वभाव को करके राज्य आदि का पालन करके अन्त में मो[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

हे बालक ! (इदम्) यह दृश्यमान (ते) तेरी (एकम्) एक [ज्योति] है ! (ऊ) और (परः) इससे परे, परोक्ष (ते) तेरी (एकम्) एक और [आध्यात्मिक] ज्योति है। यह दोनों ज्योतियां तेरी अपनी हैं। तू (तृतीयेन) तीसरी (ज्योति) ज्योति में (सं विशस्व) समाविष्ट हो। (परमे) उत्तम (जनित्रे) योनि में (देवानाम्) देवताओं का (प्रियः) प्यारा तथा (तन्वे) अपने लिए (चारुः) कल्याण-कारक होकर (सवेशनः) समावेश-धर्म का पालन कर्ता (एधि) हो।

बालक ज्योति का पुतला है। उसका जन्म एक ज्योतिर्लोक में हुआ है। प्रथम तो यह संसार ही भौतिक ज्योतियों का आगार है। सूर्य, ग्रह, उपग्रह—सार यह कि सम्पूर्ण सौर-संस्थान ज्योतियों ही की क्रीड़ास्थली-सी है। फिर पानी में, हवा में, आग में, विद्युत के प्रत्येक रूप में प्रकाश-ही-प्रकाश है।

किस अमित ज्योति के अमित खण्ड
बन गए ग्रहोपग्रह प्रचण्ड ?
धर फुल-झड़ियों में तुला-दण्ड
दिग्बालाएँ करतीं विहार।

सब ओर से जगमगा रहे इस ज्योतिर्लोक की सम्पूर्ण दीप्तियां जीवात्मा के अर्पण हैं। प्रभु ने इनकी रचना ही इसी लिए की है कि इनके द्वारा आत्मा की जीवन-यात्रा सुगम हो। उसके अन्तरात्मा में इन चमचमा रहे लोक-लोकान्तरों का आलोक हो।

इस प्रत्यक्ष ज्योति से उत्कृष्ट एक और परोक्ष ज्योति है जो इन्द्रियों की पहुंच से बाहर है परन्तु सपूर्ण इन्द्रियों में उसी का प्रकाश है। वह आध्यात्मिक ज्योति है—चेतना की ज्योति। बाहर की सभी ज्योतियों का ज्ञान हमें इस अकेली आन्तरिक ज्योति के द्वारा ही होता है। दृष्टि न हो तो संसार में लाख रूपों की सृष्टि हुआ करे। श्रवण की शक्ति न हो तो ब्रह्माण्ड में लाख सुरीले संगीत हुआ करें। सूंघने का सामर्थ्य न हो तो विश्व-वाटिका में लाख सुरभित सुगंधियां हुआ करें। त्वचा तथा रसना के अभाव में स्पर्श और स्वाद वस्तु ही क्या हैं ? एक ओर ज्ञेय ज्योति है, दूसरी ओर ज्ञान की साधक इन्द्रियों तथा अन्तःकरण की चेतना। एक ज्योति का दूसरी ज्योति से बड़ा सुन्दर मेल हो रहा है। आंख देखती है, सूर्य देखा भी जा रहा है और देखने का साधन भी बन रहा है। ज्योतियों का यह परस्पर समावेश एक अद्-भुत चमत्कार है।

चिति की किरणों के झूले में,
करती झिलमिल तन की धूल।

तीसरी ज्योति

इदं त एकं पर ऊ त एकं
तृतीयेन ज्योतिषा संविशस्व।
संवेशनस्तन्वे चारुरेधि प्रियो
देवानां परमे जनित्रे ॥ साम०

आन्तरिक ज्योति एक विचित्र ज्योति है। मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार आत्मा के आन्तरिक करण हैं। इनके द्वारा संकल्प-विकल्प, निश्चय, उपलब्ध अनुभूतियों का संचय तथा अहं-ज्ञान अपने-आप प्राप्त हो रहे हैं। अन्तःकरण की इन वृत्तियों का व्यापार अत्यन्त आश्चर्य-जनक है। एक जादू मनुष्य के अन्दर हो रहा है, एक बाहर; ये दोनों ज्योतियां मनुष्य के अपने अधिकार में हैं। वह जैसा चाहे इनका उपभोग करे। सूर्य, चांद, तारे, बिजली, आग, हवा—ये सभी इसके दास-दासियां हैं। फिर अन्दर का वृत्ति-व्यापार तो इसका अपना आन्तरिक परिवार ही है।

इन ज्योतियों से ऊपर क्या कोई और तीसरी ज्योति भी है ? ऋषियों का कहना है कि हां ! मानव-योनि उत्तम योनि है। भौतिक तथा मानसिक ज्योति से तो पशु-पक्षी भी लाभ उठा रहे हैं। किसी मानव-माता की कोख से जन्म लेने का लक्ष्य तो इन दो ज्योतियों से उत्कृष्ट, परमात्म-ज्योति का दर्शन करना है। ज्ञेय और ज्ञाता का सम्बन्ध कराने वाली वह ज्ञापक ज्योति है। प्रत्येक आत्मा की अपनी पृथक् सत्ता है। इसका कारण क्या कि जो मुझे नारंगी प्रतीत होती है, मेरे भाई को भी। हमारी सम्मतियां, अनुभूतियां, भावनाएं सब अलग-अलग रहा करें। परन्तु सत्य-ज्ञान का हमारा सब का लक्ष्य एक ही है। ज्ञान के एक आदर्श की ओर सभी जिज्ञासु धीरे-धीरे प्रगति कर रहे हैं। क्या यह आदर्श हमारी आशाओं का ही विषय रहता है या कोई ज्ञान-सपन्न ऐसी आत्मा भी है जिसे सब ज्ञेय ज्ञात हैं। संसार में रोग भी हैं, उनकी ओषधियां भी। विज्ञान-प्रिय वैद्य नित नई का पता लगा रहे हैं। उन्हें ज्ञात होने से पूर्व इन रोगों और ओषधियों के संबंध का किसे है ? या रोगों की सत्ता भी आकस्मिक है, की भी। आकस्मिक संयोगों को न मानने वा रक रोग और ओषधि को पूर्व से ही संबन्ध उनकी सम्मति में दोष मानव-ज्ञाताओं के ज्ञा सत्ता दोनों की थी और इस सत्ता का आध रचयिता का ज्ञान था। ज्ञान-ज्योति चमक उसकी एक झांकी विज्ञान-प्रिय वैद्य ने ले ली एक विशेष प्रकार के योगियों का हमेशा कल्याण हो गया।

ओषधि जिस विश्वाग्नि की ज्वाला है, आहुति रोग को होना है। परमात्मा एक ओर पाणि है, दूसरी ओर पीयूष-पाणि। मनुष्य का इसी में है कि उस कल्याण-स्वरूप का पड़ अपना तथा समूची जीव-जाति का मंगल कर ज्योति में अपनी दोनों ज्योतियों को समाविष्ट उसके साथ एकीभूत हो जाय। उसकी जिज्ञा तृप्ति इसी से होगी कि वह सर्वज्ञ के ज्ञान का प्राप्त करे। धूलि का जो अणु सूर्य की किरण विष्ट हो गया, वह चमचमा उठा। फिर म अपने दोनों हाथों में दीपक लिए खड़ा है। भौतिक ज्योति है, दूसरी ओर मानसिक। ज्योतियों की सफलता इसी में है कि दोनों हा कर समित्पाणि हो परमात्म-ज्योति के अर्पण हो

परमात्म-ज्योति ही सब ज्योतियों की एक है। शेष सब ज्योतियां उस ज्योति की छाया-म छाया चमकेगी तभी, जब वह प्रकाश में समा जायगी—स्वयं उसका अंग बन जायगी।

ग्रह-उपग्रह देव हैं, सूर्य देव है, बिजली इन्द्रियां देव हैं, अन्तःकरण देवों का घर है। इन देवों का देव है। जब यह देवाधिदेव परमात्मा के साथ एकीभूत हो जाता है, तब स इसे विशेष प्रीति दिखाने लगते हैं। यह यात्री नहीं, मालिक, घर वाला बन जाता है। सभी देव इस पर वारे-न्यारे जाने लगते हैं। पुत्र प्रभु की सृष्टि का उपभोग करता है, किस कार से, किस सर्व प्रियता से, किस लाड़-च सृष्टि समूची इसकी ओर उमड़ रही है, उमड़ संसार-भर की ज्योतियों में होड़ लगी है—मैं मैं पहिले। विश्व की विभूतियां विश्वात्मा के रही हैं। जिसने इस समावेश-धर्म का पालन जो विश्वाग्नि में समाविष्ट हो स्वयं विश्व में हो गया, वह आत्मा विश्वात्मा है। वह परमा वारे-न्यारे, परमात्मा की सृष्टि उस पर वारे-न्या

प्रार्थना

श्रीयुत सूर्यकुमार

तुम ही मुझे बनाओ।
जिधर चलाया उधर चल पड़ा,
उसी तरह बन गया तुम्हीं ने जैसा मुझे बनाया,
इंगित के अनुकूल तुम्हारे मुझको चलना भाया,
कोई सीधी राह दिखा दो, बहुत न अब भरमाओ।
बिना तुम्हारे भटका फिरता, पथ पर मारा-मारा,
कोई देख मुझे कह देते, भाग्य हीन बेचारा,
अरे ! तुम्हारा हूँ—अपने को नीचा नहीं गिराओ।
आत्म-समर्पण तेरे प्रति हो मेरे उर का साधन,
मेरी कमज़ोरी पूरी कर दे तेरा आराधन,
जो जी चाहे तुम हो मैं हूँ, तुम ही मुझे बनाओ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKUL KANGRI

Regd L. N. 301

प्रार्य
रविवार ६ भाद्रपद
वि०सं० २०००

र में अमावस्या और पूर्णमासी के स्नान और आर्य समाज का कर्तव्य

अगस्त को गुरुकुल कांगड़ी में विद्यासभा का शन था। इस प्रसंग में मुझे हरद्वार जाना पड़ा। में अत्यन्त भीड़ थी। लोग रेलगाड़ियों के साथ हुए जारहे थे। डब्बों में अन्दर बैठे गर्मी तथा के कारण परेशान थे। पूछने पर मालूम हुआ कि कांश यात्री १ अगस्त को अमावस्या के गंगास्नान ण्य कमाने जा रहे हैं। सप्ताह बाद लौट कर ना हुआ कि हरद्वार में लाखों आदमी इस अवसर ाये। कालरे का प्रकोप प्रबल हो गया। कई एं भी हो गईं। फिर भी यात्री लोग देहरादून से लौटते हुए 'गंगामाई की जय' के नारे लगाते थे। १५ अगस्त को पूर्णमासी का स्नान फिर आया लगने की बात भी फैल गई। फिर यात्रियों का बंध गया। इस मेले की भीड़भाड़ के कारण मौतें हुईं। अनेक यात्रियों को अनेक प्रकार के सहने पड़े फिर भी आज २०वीं सदी में लाखों यात्री ाा' और पूर्णमासी के स्नानको पुण्य का स्नान मान उधर दौड़े जा रहे हैं—इस अज्ञान और मूढ़ता कने वाला कोई नहीं।

आर्य समाज ने प्रारम्भ काल में तीर्थ स्नान और जा खण्डन के लिये जो भयंकर चौमुखा आन्दो- किया था आज उसका असर मिटा हुआ सा ा होता है।

आज आर्य समाज तथा आर्य समाज के प्रचारकों स ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमें इस में यत्न करते हुए यह समझ लेना चाहिए कि ान समय में यदि हम किसी बुराई को रोकना हैं तो हमें उस बुराई के फैलाने वाले साधनों विशेष ध्यान देते हुए ही रोकने वाले उपायों की ना करनी चाहिए।

वर्तमान समय में, रेलगाड़ी आदि यानों द्वारा सुविधाओं के कारण तीर्थ यात्रा आदि की बुरा- को विशेष प्रोत्साहन मिला है। इस समय हमें यह देखना चाहिए कि किन २ शहरों तथा तों के व्यक्ति इन तीर्थों पर विशेष रूप से स्नान देव दर्शन के लिये आते हैं। उनके शहरों तथा भेजकर उनमें इन तीर्थों तथा देव दर्शन के काल्पनिक पुण्य लाभ से बचने की प्रेरणा करनी चाहिए। उस ग्रहण में ट्रैक्ट, पोस्टर तथा व्याख्यानमालाओं द्वारा तीर्थ स्नान की निःसारता प्रकट करनी चाहिए। हमने जहांतक इस विषय पर विचार किया है सिंध, मुलतान तथा अमृतसर से यात्रियों की भारी संख्या हरद्वार जाती है। भारत के दूसरे प्रान्तों से बंगाल के लोग ज्यादातर हरद्वार ऋषिकेश आते हैं।

हम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से कहना चाहते हैं कि उसे चाहिए कि वह प्रान्तीय सभाओं को आदेश दे कि वह अपने२ प्रान्तों में इस बात का पता करें कि किन२ शहरों तथा देहातों से किन२ दिनों तथा महीनों में लोग तीर्थस्नान आदि के लिये जाते हैं। उन दिनों उपरोक्त शहरों तथा देहातों में तीर्थ स्नान मूर्तिपूजा और देवदर्शनादि के विरुद्ध लेख तथा मौखिक प्रचार कराया जाय। इस प्रकार इस दिशा में प्रचारकार्य प्रारम्भ करने पर धीरे २ हमारे सामने और उपाय सूझते जायेंगे। यदि कोई महानुभाव इस विषय में कोई निर्देश तथा लेख भेजना चाहें तो वह भी भेज सकते हैं। विशेषतया यदि कोई भाई पंजाब के विविध तीर्थों के विषय में इस प्रकार की जानकारी भेजेंगे तो सभा का प्रचार विभाग इस दिशा में विशेष यत्न करेगा और अपने उपदेशकों तथा प्रचारकों द्वारा इस अज्ञान पूर्ण बुराई को दूर करने में पूर्ण यत्नशील होगा।

—भीमसेन

श्रीयुत सावरकर ग़लत रास्ते पर—

नागपुर में समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करते हुए श्री सावरकर ने कहा है कि हिन्दु और मुसलमान दो जातियां हैं। भारत को एक राष्ट्र बनाना चाहिए। एक राष्ट्र में कई जातियां रह सकती हैं। उदाहरण के लिये आयर्लैण्ड जर्मनी तथा इंगलैण्ड के दृष्टान्त दिये हैं। हमारी सम्मति में श्री सावरकर की यह स्थापना अशुद्ध है। हिन्दू, मुसलमान दो जातियां नहीं हैं, दो मजहब हैं। यूरोप के किसी भी राष्ट्र में धर्म या मजहब के आधार पर राजनैतिक अधिकार किसी समुदाय को नहीं दिये जाते। श्री सावरकर की तर्कना के अनुसार मुसलमानों को मुसलमान होने के कारण पृथक् राजनैतिक अधिकार मिलने चाहिएं?

यदि मुसलमान पृथक् धर्म तथा पृथक् सभ्यता होने से पृथक् जाति माने जा सकते हैं, तो भारतवर्ष के ईसाई भी पृथक् जाति क्यों नहीं हैं। मुसलमान भारतवर्ष के अल्प पक्ष हैं, पृथक् जाति नहीं। यदि तोप न्याय से उत्तर देने के लिये यह स्थापना कर रहे हैं, तो भी उनका यह कार्य अदूरदर्शिता पूर्ण है। इससे मुस्लिम लीगी नेताओं तथा अनुदार ब्रिटिश राजनैतिक नेताओं को अनुचित लाभ उठाकर भारत को राष्ट्रीय स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित करने का अवसर मिलेगा। हिन्दू महासभा को श्री सावरकर की इस स्थापना का प्रस्ताव द्वारा खंडन तथा प्रतिवाद करना चाहिए।

गोरक्षक और गोपूजक—

इन दिनों समाचार पत्रों में श्री मास्टर तारासिंह जी ने 'गौ और सिक्खों' के सम्बन्ध में, समाचार पत्रों में चल रही चर्चा के सिलसिले में, वक्तव्य प्रकाशित किया है कि सिक्ख गो रक्षक तो हैं, परन्तु गो पूजक नहीं।

हमारी सम्मति में श्री मास्टर तारासिंह जी की यह स्थापना हिन्दुओं और सिक्खों के कृत्रिम भेदभाव को प्रकट करती है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार किया जाय तो गो रक्षक और गो पूजक में कोई भेद नहीं है। जो व्यक्ति गौ की रक्षा करता है, उसको उत्तम खाद्य पदार्थ देता है, उसे अच्छी शुद्ध जगह रखता है वह गौ की पूजा ही करता है। एक व्यक्ति कहने को गौ की पूजा करता है—गोपाष्टमी के दिन गउओं के सींगों में मालाएं डालता है। परन्तु उसे खाने तथा उसके निवास के लिये उचित प्रबन्ध नहीं करता वह गो पूजक नहीं है। हम चाहते हैं कि सिक्ख भाई इस शाब्दिक वाद विवाद में न पड़ें, और स्पष्ट रूप से गुरुओं की भांति गो रक्षक और गो पूजक बनें।

यज्ञोपवीत और आर्य समाज—

श्री० नाथूराम जी आर्य, प्रधान आर्य समाज (जालंधर) ने हमारे पास एक पत्र भेजा है। इस आर्य समाजों का जनेऊ की ओर विशेष रूप से ध्यान खींचने की प्रेरणा की है और यह निर्देश किया है कि बाजार में बिकने वाले जनेऊओं के स्थान पर हाथ के सूत्र के बने हुए यज्ञोपवीत तैय्यार करने की योजना करनी चाहिए। इसके लिये प्रस्ताव किया है कि आर्य संस्थाओं—गुरुकुल आदि में यज्ञोपवीत तैय्यार कराए जांय और जनता को इन शुद्ध सूत के बने हुए यज्ञोपवीतों को लेने की प्रेरणा करनी चाहिए।

श्रीयुत नाथूराम जी के प्रस्ताव से हम सहमत हैं। प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग यज्ञोपवीत बनाया करते थे। वर्तमान समय में मैशीनरी तथा विदेशी व्यापारियों की व्यापार बुद्धि ने यज्ञोपवीत को भी एक व्यवसाय की वस्तु बना दिया है। जिस प्रकार महात्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

धन

[रायसाहब श्रीयुत लाल चन्द जी]

साधारण लोग रुपये-पैसे को धन कहते हैं। कुछ लोग गाय, भैंस आदि पशुओं को धन कहते हैं। गोधन भारत में सभी कहते हैं। पृथिवी भी धन है। प्राय: सभी सम्पत्ति धन कही जाती है। वस्तुत: जिस वस्तु के बदले में अन्य वस्तु प्राप्त हो, जिसकी मनुष्य इच्छा करता हो, वे सब धन कहाती हैं। परन्तु ये सब पदार्थ धन होते हुए भी अपना मूल्य परिमित ही रखते हैं।

असली धन विकास की शक्ति का नाम है; जिससे एक से अनेक और थोड़े से बहुत हो जाता है। वास्तव में यह विकास शक्ति ही धन है, ऐसा माना जा सकता है; पर विकास शक्ति तेज शक्ति और ओज शक्ति पर निर्भर है और ये दोनों शक्तियाँ वीर्य पर अवलम्बित हैं। इसलिये शुद्ध वीर्य ही परम धन है। जहाँ वीर्य है वहीं सच्चा पराक्रम है, वहीं यश है, समृद्धि है और ऐश्वर्य है। शुद्ध वीर्य और सात्त्विक जीवन का परस्पर सम्बन्ध है इसलिये सात्त्विक जीवन भी धन है और सात्त्विक जीवन बिना सत्सङ्ग के नहीं हो सकता इसलिये सत्सङ्ग ही परम धन है। जिन्हें सत्सङ्ग प्राप्त

वे परमैश्वर्यवान् भगवान् के पूर्ण धन के धनपति होते

भगवान् अपनी पूर्ण शक्तियों के साथ सत्सङ्ग में भक्तों के हृदय में परिपूर्ण होते हैं, तब भक्त लोग परम समृद्धि रूप नाम धन के धनी होकर पूर्ण धनवान् होते हैं।

भगवान् प्रेमनिधि हैं। जहाँ प्रेम है, एकता है, सहृदयता है, वहीं धन है, ऐश्वर्य है, बल है, शक्ति है और आनन्द है। मनुष्य का ध्येय आनन्द है, पर वह मोह के कारण सुख को आनन्द समझ कर भटका करता है। भगवान् के सहवास में अपरिमित आनन्द है, अनन्त मंगल है। भगवान् परमैश्वर्यवान् हैं, उनका सखा पूर्ण धनी होता है। उसके अंदर कमी नहीं होती। सर्व शक्तिमान् भगवान् उसको निमित्त बनाकर उसका योग और क्षेम स्वयं वहन करते हैं। जो भगवान् का प्यारा है, वही धनी है-अन्य सब निर्धन हैं।

भगवान् 'सत्यं, शिवं सुन्दरम्' हैं। भगवान का प्यारा भक्त अपने प्रियतम के निकटतम होने से उनके गुण अपने में धारण करता है। भगवान् में किसी प्रकार की कमी नहीं, भगवान् पूर्ण हैं। भगवान् का भक्त भी पूर्णता की ओर गति करता है और भगवान् के प्रेम से पूर्ण होकर परम आनन्द प्राप्त करता है।

इसलिये सारांश यह हुआ, कि प्रजापति भगवान् का उपासक जब भगवान् को प्रजा के अन्दर रमा पाकर जब शक्ति युक्त होकर कर्तव्य साधन में तत्पर होता है तो विजयी होता हुआ वह सत्य, यश और श्री को प्राप्त होता है। भगवान् के भक्त ही सच्चे धनी होते हैं, वे वासना रहित और सदैव प्रेम और आनन्द भावना में मग्न रहते हुए प्रसन्न रहते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त होती है वह शीघ्र ही एकाग्रता को प्राप्त होता है, और संयम तथा एकाग्रता के सहारे सब कार्यों में सफलता प्राप्त करता हुआ सदा रहने वाली लक्ष्मी को प्राप्त होता है। उसके कुल में दरिद्रता, हीनता और कमी नहीं आती। भगवान् पूर्ण धन हैं, इसलिये वे परमेश्वर और परम सामर्थ्यवान् कहे जाते हैं। भगवान् अच्युत हैं, अपने नियमों पर दृढ़ हैं, इसलिये शाश्वत हैं, सनातन हैं, पुराण हैं। और पुराण पुरुष होते हुए भी वे नित्य नवीन हैं। भगवान् परमगति, परम सम्पद् और परम बल है। भगवान् भक्त के सर्वस्व हैं। भगवान् ही भक्त के पूर्ण धन हैं।

एक महात्मा वीर्य और वाणी को धन कहा करते थे। विचार किया जाय तो यह भी ठीक ही है। वीर्य मणि कहा जाता है; और सत्य तो यह है कि जिसमें शुद्ध वीर्य है वह परम धनी है। वीर्य के दूषित अथवा ह्रास होने में जो मनुष्य की दुर्गति और धन की हानि होती है यह विश्वज्ञात है। वीर्यवान्, वर्चस्वी, तेजस्वी, ओजस्वी मनुष्यों को क्या कभी धन, यश और बल की कमी हुई है? सच्चा वीर्य, स्थायी बल और चिरस्थायी लक्ष्मी केवल भगवदर्पण जीवन से ही प्राप्त होती है। अर्पण बुद्धिवाला वीर्यवान् पुरुष विजयी होता है, भगवान् की शरणागति से ही अमोघ शक्ति प्राप्त होती है। धन, बल, बुद्धि, ज्ञान भगवद्-शरणागति में ही सफल होते हैं।

वाणी धन है। वाणी का सद्व्यय यश और बल बढ़ाता है और वाणी का अपव्यय घोर क्लेश उत्पन्न करके धन, यश, बल सबका ह्रास करता है। इसका सदुपयोग करना ही श्रेयस्कर है। वाणी का संयम आचार का एक अङ्ग है। जिस का वाणी पर अधिकार नहीं, वह सदाचारी नहीं हो सकता और बिना सदाचारी हुए, बिना ब्रह्मचारी हुए, बिना भगवान् की ओर गति किये, कभी सन्तोष और शान्ति रूपी परम धन लाभ नहीं होता। प्राय: सभी कलह मलिन हृदय वाले लोगों की वाणी के दुरुपयोग मान, मर्यादा के नाश के कारण बनते हैं। सदाचार हर प्रकार के धन का आधार है। आचार और विचार दृढ़ और स्थिर होंगे और श्री निवास करेंगे।

भगवान् विष्णु लक्ष्मीपति हैं। भगवान् रूप में सर्व व्यापक हैं, यज्ञदेव हैं। जहाँ व्यापक से कार्य होते हैं, जहाँ के लोग संकुचित और भाव से कार्य नहीं करते, जहाँ स्वार्थ की मात्रा ही कम है वहाँ उतनी ही श्री, लक्ष्मी, विभूति विजय दिखाई देती है।

लक्ष्मी का हमारे यहाँ वास हो, ऐसी अवस्था तभी हो सकती है जब हम विष्णु को आदर्श जानकर, व्यापक और सर्व हितकारी करने में अपना तन मन लगाकर पुरुषार्थ करें। मय जीवन में ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है स्वार्थी है, वह पापी तो केवल पाप खाता है और पापमय जीवन व्यतीत करके पुन: मनुष्य-शरीर प्राप्त करता।

मानव-शरीर पाकर हम बहुत उन्नति कर सक यदि हम अपना ध्येय यज्ञ समझें और गति परम को मानें, हमें अपनी गति सरल, सीधी और करनी होगी, तभी भगवान् प्रसन्न होकर हमें हर से भरपूर करेंगे। भगवान् के 'ऋत' और 'स नियम जो सकल सृष्टि को चला रहे हैं, और जीवन दे रहे हैं, क्या मनुष्य के सहायक न हों 'ऋत' और सत्य के अवलम्बन बिना हम सदा और हीनावस्था में रहते हुए, यश, श्री और ब वञ्चित रहेंगे। सच्चा धन केवल भगवान् के भरोसे शाश्वत, शुद्ध वैदिक धर्म के अवलम्बन द्वारा मिल सकता है। 'ऋत' और 'सत्य' आदि अनादि काल से धर्म के रक्षक और पोषक स्तम्भ ऋत और सत्य के अवलम्बन में धन, धान्य, सम ऐश्वर्य और बल सब कुछ निहित है। भगवान् को से सत्य नियमों में रुचि बढ़ाकर मनुष्य कृतार्थ है और आत्मतृप्त होता है।

—सीमान्त असेम्बली का अधिवेशन आरम्भ गया—कांग्रेसी बैंचें खाली थीं। मि० सरदार बहा खान (मुस्लिम लीग) को स्पीकर चुना गया। कर ने धन्यवाद दिया और शोक प्रकट किया। कांग्रेस पार्टी और स्वतन्त्र दल के सदस्य अ स्थित हैं।

—लाहौर में खाद्य समस्या को हल करने के और राशन पत्र तैयार करवाने के लिए भोजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 581

के प्रसिद्ध साहित्यसेवी और देशभक्त बाबू साद जी गुप्त के विशाल पुस्तकालय में कुछ व्यतीत करने का अवसर मिला । नीचे लिखे सी अवसर के हैं, जिन्हें लेख का रूप दिया । मुझे विश्वास है कि पाठकों को ये निस- विकर होंगे, विशेषकर उन्हें जिनको इस देश की आर्थिक दशा जानने की उत्सुकता है ।

कृषि-सम्बन्धी नोट

ारतवर्ष का क्षेत्रफल १ करोड़ ८० लाख वर्ग- है । इसमें से १ करोड़ १० लाख वर्गमील ी राज्य में है और अंगरेज़ी राज्य में ४ लाख र २४० वर्गमील पर अर्थात् २ अरब ६१ ६० लाख एकड़ पर खेती होती है, यानी ा के ३७·५ प्रतिशत पर ।

हिन्दुस्तान के ७३ फी सदी आदमी कृषि से पेट पालते हैं । भारत इसी लिए कृषि-प्रधान कहा गया है । जो देश एकमात्र कृषि पर ही म्बित होने के कारण कृषि-प्रधान है वह आज- की राजनैतिक शब्दावली में मूर्खता-प्रधान भी जाता है, क्योंकि अर्वाचीन युग में जितने शील, सम्पन्न और सभ्य राष्ट्र हैं उन सब का पेशा व्यापार और व्यवसाय है । जापान की ५०·३ कामकाजी जनता कृषि पर निर्भर है । की ३०·५ प्रतिशत, फ्रांस की ३८·३ प्रति- कनाडा की ३१·२ प्रतिशत, अमरीका की २२ ता, इङ्गलैण्ड और वेल्स की ७·१ प्रतिशत, जैसा पूर्व कहा गया है, ७३ प्रतिशत भारतीय म निर्भर हैं ।

वशेष नोट करने की बात तो यह है कि भारत यह ग्रामीणता उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है । के संसर्ग में आकर भारत ने अंगरेज़ियत की बातें सीखीं, लेकिन अंगरेज़ियत का प्रधान ापार और व्यवसाय इस देश ने नहीं सीखा। ८९१ में ५९·८ भारतीय कृषि पर निर्भर थे, में ७१·३ प्रतिशत हो गये, और आज ७३ भारतीय खेती ही करके अपनी आजीविका कर रहे हैं ।

सानी में हम इतने चतुर हैं कि और देश क एकड़ में अगर १० मन अन्न पैदा करते म एक एकड़ में केवल एक मन ही पैदा कर । इटली एक एकड़ भूमि में औसतन ५७ न पैदा कर लेता है, जापान ३४ मन, मिस्र , अमरीका २८ मन । हमारे यहां एक एकड़ न से अधिक नहीं होता । इटली में एक एकड़ गेहूँ पैदा हो जाता है. जापान में १९ मन, २० मन, इंगलैण्ड में २३ मन, जर्मनी में , लेकिन भारतवर्ष में गेहूं की औसत पैदा- एकड़ केवल ८ मन है ।

देश की दशा

श्रीयुत शीतलासहाय

जर्मनी का प्रत्येक किसान (आश्रित जनों को छोड़कर) अपने खेत से ६८०) प्रतिवर्ष पैदा करता है, जापान का ३५२), अमरीका का १९३१), कनाडा का २०५५) और इंगलैंड का २२०१) । लेकिन भारत- वर्ष का किसान प्रतिवर्ष १९६ ही पैदा कर पाता है ।

कृषि-प्रधान होते हुए भी भारतवर्ष इतना अन्न पैदा नहीं कर सकता कि देशवासियों के भोजन के लिए काफी हो । अपने खर्च के लिये हमें प्रतिवर्ष ८॥ से ९ करोड़ टन अन्न की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन साधारण वर्ष में २० करोड़ एकड़ भूमि पर अन्न बोते हुए भी हम ६ करोड़ या ७ करोड़ टन से अधिक अन्न पैदा नहीं कर पाते ।

पंजाब और सीमा-प्रान्त में तो खेत की औसत प्रति किसान १०॥ एकड़ है, लेकिन अन्य प्रान्तों में यह औसत २॥ और ३ एकड़ के दरमियान आती है । बंगाल में प्रति किसान २॥ एकड़ की औसत पड़ती है और अन्य प्रान्तों में ३ की । गवर्नमैंट की १९३१ की 'इंडिया' नामक रिपोर्ट में लिखा है कि 'भारत के दक्षिण और पूर्व में औसत खेत पांच एकड़ का होता है, लेकिन अन्य स्थानों में आधे से अधिक खेत इतने बड़े भी नहीं होते । लाखों किसान ऐसे हैं जिनके खेत एक एकड़ भी नहीं और ये छोटे छोटे खेत भी इतने बँट गये हैं और इतने दूर दूर हैं कि इनकी खेती बिना पड़ोसी के खेत में घुसे हुए की ही नहीं जा सकती !" (पृष्ठ १५८) इंगलैंड में खेतों का औसत क्षेत्रफल प्रति किसान २९ एकड़ है, अमरीका में ८७, कनाडा में १४०, जर्मनी में १२, फ्रांस में १३, जापान में ४·२ और हिन्दुस्तान ३·३ है । खेतों का औसत क्षेत्रफल जर्मनी में २१ एकड़ है, कनाडा में १९८ एकड़ है, इंगलैंड में ५५ एकड़ है, अमरीका में १५७ एकड़ है, लेकिन भारत में केवल ५ एकड़ है ।

अर्थ-शास्त्रज्ञों के मतानुसार योरप ऐसे वैज्ञा- निक देश में एक वर्गमील भूमि पर ज्यादा से ज्यादा २५० आदमी कृषि कर के रह सकते हैं । हिन्दुस्तान में अनेक स्थान ऐसे हैं जहाँ प्रतिवर्ग पर ६०० से अधिक मनुष्य किसानी करके जीविका निर्वाह करते हैं ।

किसान अशिक्षित हैं । अर्वाचीन ढंग से खेती कर सकने का न तो उनमें उत्साह है और न सामर्थ्य पैसे की कमी के कारण ये लोग अपने अपने खेतों में उचित मात्रा में खाद भी नहीं दे पाते और सिंचाई भी नहीं कर सकते । हमारे किसान उन बीजों को काम में नहीं ला सकते जो बढ़िया और अधिक उपजाऊ हैं । वैज्ञानिक पांस का प्रयोग इन्हें नहीं मालूम । इनकी फसल को कीड़े-मकौड़े नष्ट कर देते हैं, लेकिन इनके पास कोई साधन नहीं जिससे ये अपनी फ़सल बचा सकें । गहरे जोतने वाले हलों का इस्तेमाल या मशीन का उपयोग तो इनके लिए असम्भव है ही । पशु इनके दुर्बल और अस्वस्थ रहते हैं । चरी-चारे की बड़ी कठिनाई है । युक्तप्रान्त में विशेष कर अवध में तो चरागाहों का अभाव-सा होता जाता है । चप्पा चप्पा भूमि जोती जा रही है । मनुष्य और पशु में इस सम्बन्ध में लाग-डांट हो चुकी है । जो भूमि पहले पशुओं के लिए पड़ी रहती थी उससे अब मनुष्य अपने लिये भोजन पैदा करता है और पशु को निराश्रित छोड़ दिया है । किसानों के पास पूंजी का अभाव है । यदि गांवों में फल-फूलों की खेती की जाय तो उनके लिये मण्डी नहीं मिलती, अर्थात् बिक्री की सुविधा नहीं ।

एकमात्र कृषि का उद्यम होने की वजह से किसान लोग साल में करीब ५ महीने बेकार रहते हैं । अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों ने हिसाब लगा कर निश्चित किया है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष के किसानों पर कम से कम ८ अरब रुपया का कर्ज़ है । कुछ लोग इस कर्ज़ का परिमाण १२ अरब रुपया बताते हैं । प्रत्येक किसान इस हिसाब से ५०) का ऋणी हुआ ।

भारतवर्ष ३१ करोड़ किसानों से २० अरब ६३ करोड़ रुपये पैदा करता है ।

इंगलैंड ८० लाख किसानों से ३ अरब १२करोड़ रुपये पैदा करता है ।

अमरीका ५ करोड़ किसानों से २६ अरब ९३ करोड़ रुपये पैदा करता है ।

कनाडा ४८ लाख किसानों से ३ अरब १९ करोड़ रुपये पैदा करता है ।

जापान २॥ करोड़ किसानों से ३ अरब ४ करोड़ रुपये पैदा करता है ।

व्यवसाय की दशा

आज-कल का ज़माना व्यवसाय का है । जिस देश में व्यवसाय की उन्नति नहीं वह यही नहीं कि नितान्त दरिद्र रहेगा बल्कि सभ्यता के क्षेत्र में भी पतित हो जायगा । कहने की आवश्यकता नहीं कि व्यावसायिक क्रान्ति के पहले भारतवर्ष बड़ा भारी व्यावसायिक (कृषक नहीं) देश था । यह देश कपड़े के, लोहे के, धातु के, नमक के और गुड़ के व्या- पार में इतना उन्नत था कि अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद विदेशों को अपने यहां का माल भेजता था । अब दशा यह है कि ये सब व्यव- साय जिनमें भारत सर्वश्रेष्ठ था, नष्टप्राय हो गये हैं भारतीयों के पास खेती के अलावा कोई उद्य नहीं और उनका देश विलायती चीजों की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

सत्यार्थप्रकाश-जयन्ती

तिथि १६ से २५ भाद्रपदः ४ से १० सितम्बर तक मनाइये

सिन्ध प्रान्त में पिछले दिनों सत्यार्थ प्रकाश को जब्त करने की जो सम्भावना उत्पन्न हो गई थी उससे जनता का ध्यान सत्यार्थ प्रकाश की ओर पुनः विशेष रूप से आकर्षित हुआ है। सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द जी की अमर कृति है जिसे १६वीं शताब्दी का सब से महान ग्रन्थ कहने में जरा भी अत्युक्ति नहीं। इस अमर ग्रन्थ रत्न में वेदों और शास्त्रों का निचोड़ अत्युत्तम रूप में दे दिया गया है। तथा मतमतान्तरों का भी परिचय कराया गया है। सार्वदेशिक सभा ने इस ग्रन्थ रत्न के स्वाध्याय और प्रचार की ओर आर्य जनता का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करने के लिये यह निश्चय किया है कि प्रति वर्ष भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में (जब कि महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश का निर्माण प्रारम्भ किया था) कम से कम १ सप्ताह तक सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती प्रत्येक नगर और ग्राम में समारोह के साथ मनाई जाये, जिसमें सत्यार्थ प्रकाश की कथा योग्य विद्वानों द्वारा कराई जाये,

---

बन गया है। वे अपनी प्रारम्भिक आवश्यकताओं लिये परदेशों पर निर्भर हैं।

भारतवर्ष में सन् १६३० में कुल ६,४२२ व्यावसायिक कारखाने थे, जिसमें ८६४८ अंगरेज़ों के थे। इन कारखानों में करीब ७ अरब की पूंजी लगी थी, जिसमें ३ अरब हिन्दुस्तानियों की होगी। इंगलैंड में जिसकी जन-संख्या भारत की अपेक्षा १३ प्रतिशत है सन् १६२८ में १,७५,००० व्यावसायिक कारखाने थे, जिनकी पूंजी ७० अरब रुपये थी। अर्थात् भारतवर्ष की पूंजी से ३५ गुना अधिक। अमरीका की आबादी भारतवर्ष की आबादी की अपेक्षा ३५ प्रतिशत है, लेकिन वहां १६२६ में ६,७४,१३६ व्यावसायिक कारखाने थे और उनमें २३० अरब रुपया लगा था। अर्थात् भारतवर्ष की अपेक्षा ७५ गुना ज्यादा। १६२६ में यहां २४,०२० कारखाने थे, जिनकी पूंजी १४ अरब ४५ करोड़ रुपये थी, अर्थात् भारत से पाँचगुनी। जापान की आबादी भारत के मुकाबिले में १६ फ़ी सदी है। इस देश में १३,७०० कारखाने हैं, जिनमें १० अरब रुपया लगा है, अर्थात् भारतवर्ष से तिगुना।

इंगलैंड की परिश्रमी जनता का ४७ प्रतिशत व्यवसाय से रुपया कमाती है, अमरीका की ३२ प्रतिशत, कनाडा की २५, जर्मनी की ४१, फ्रांस की ३३ और जापान की २०, किन्तु भारतवष की केवल १० प्रतिशत ही व्यवसाय से

स्तुति गान

रायसाहब श्रीयुत लालचन्द जी

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मामेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥

साम० २. १. १६

हे बल के स्वामिन, तेरी मित्रता में बल वा ज्ञान से युक्त हुए हम भयभीत न हों, तुम सदा जीतने वाले कभी पराजित न होने वाले हो हम बार-बार स्तुति गान करते हैं।

तव मित्रता में हे प्रभो
हम भय रहित हों सर्वदा,
हे बलपते पा शक्ति तेरी,
कर्तव्य रत हों हम सदा।
हे शक्तिमन, तव शक्ति से
पाप परःनित विजय हो,
दृढ़ता बढ़े, स्थिरता बढ़े,
श्रद्धा सहित हम अजय हों।

न किसी से दबने वाले
अजेय सर्वाधार हो,
जीतने वाले सदा से
विजय के आधार हो।
बलपते, शक्तिमते,
तुम प्रेम के आगार हो,
प्रेम ही है अस्त्र तेरा,
दया के भण्डार हो।

ज्ञान दो ऐसा कि जानें
सभी मानव भाव को,
ध्यान दो ऐसा कि
पहचानें सभी के चाव को।
निष्कपट हो भाव सब में
सफल हों कर्तव्य में,
सब कर्म तव अर्पित करें,
निश्चय बढ़ें भवतव्य में।

स्तवन तव करते रहें
हों प्रेम पूरण मन सुमन,
अर्पित करें श्रद्धांजलि,
जग में रहें प्रसन्न मन।

—जापानियों के हाथ में १००००० ब्रिटिश कैदी हैं, और ७५००० भारतीय, २५००० आस्ट्रेलियन, ३५००० अमेरिकन १००,००० डच और १००० कनेडियन। इनमें केवल ६५ प्रतिशत कैदियों के नाम प्रकाशित किये गये हैं—परन्तु भारतीयों की किस्मत

सत्यार्थ प्रकाश के महत्त्व पर भिन्न भिन्न उत्तम व्याख्यान कराये जायँ और सब आर्य सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय और रक्षा के अतिरिक्त इसके सिन्ध तथा अन्य प्रान्तों में से अधिक प्रचार और तदर्थ सहायता का दृढ़ करें। इस वर्ष इसको १६ भाद्रपद (भाद्रपद ऋषि पंचमी) से २५ भाद्रपद तदनुसार ४ सितम्बर तक सर्वत्र उत्साह के साथ उपर्युक्त सार मनाने का सभा आदेश देती है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

गांधी ने मिल मैशीन से तैयार विदेशी कपड़ों के पर चर्खा-सूत द्वारा तैयार वस्त्रों का प्रचार कि उसी प्रकार से आर्यसभ्यताभिमानी संस्थाओं चाहिए कि वह यज्ञोपवीतों को संस्थाओं तथा तैयार करने की व्यवस्था करें।

विशेषतया चर्खे का प्रचार शिक्षालयों में, शिक्षालयों में बिना किसी रोक टोक के हो है। यदि धार्मिक शिक्षणालयों के संचालक ध्यान दें तो यह कमी पूरी हो सकती है। इस में मैं पंजाब की आर्य कन्या पाठशालाओं के सं का विशेष ध्यान खींचना चाहता हूं। यदि पाठशालाएं अपने यहां चर्खे के साथ २ यज्ञ तैयार करने लगें तो इससे भी पर्याप्त सहायत सकती है। जो आर्य कन्यापाठशालाएं और शिक्षणालय इस दिशा में रचनात्मक कार्य शु सभा तथा सभा का साप्ताहिक पत्र उनकी पूर्ण स करेगा—आशा है आर्य सभ्यताभिमानी आ इधर ध्यान देने का कष्ट करेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू संस्करण—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने स्वर्गीय पं० द्वारा सत्यार्थप्रकाश का उर्दू संस्करण तैयार करा उसका प्रथम संस्करण समाप्त हो चुका है। सभ संस्करण छपवा रही है। कागज़ नहीं मिल मिलता भी है, अत्यन्त महंगा। उर्दू सत्यार्थ की मांग इन दिनों विशेष रूप से बढ़ रही है के आर्यसमाजों को चाहिए कि अपने शहरों सत्यार्थप्रकाश को अधिक से अधिक मात्रा में सस्ते दामों में बेचने के लिये धन संग्रह करें। इसी अङ्क में सभा की ओर से इस आशय का भी छपी है। आशा है आर्यसमाजें इधर ध्य अपने कर्तव्य का पालन करेंगी। भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 301

वेद प्रचार विभाग

पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता
वेद प्रचार विभाग]

...मन्त्री आर्य समाज खिज़रावाद शर्की तहसील ...री जिला अम्बाला सूचना देते हैं कि आर्य-...धि सभा की कृपा से खिज़रावाद शर्की के ... इलाका में आर्य समाज का तिथि २६ ...ई से बहुत अच्छा प्रभावशाली प्रचार हो रहा ...और दलितोद्धार का भी बहुत अच्छा कार्य ...रहा है । देहात में दो समाजें भी स्थापित ...दी गई हैं, और प्रचार का जनता पर बहुत ...ा प्रभाव पड़ रहा है । जनता के विचार ...समाज की ओर तवदील हो रहे हैं । पं० ...देव जी, पं० नन्दकिशोर जी खूब मेहनत से ...इलाका में प्रचार कर रहे हैं । हमें आशा है ...सभा इसी प्रकार इस समाज में प्रचारक ...ने की कृपा रहेगी ताकि इस इलाका में ...र का काम अधिक उन्नति पर हो।

२१. मुजफ्फरगढ़ जिला आर्यवीर दल सम्मेलन ...पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री के सभापतित्व में बड़ी ...धाम से ६—७—८ अगस्त को मनाया गया। ...में सभा की ओर से पं० गुरुदत्त जी स्नातक वा ...पं० शान्ति प्रकाश जी सम्मिलित हुए। सभा के ...दृश्यों तथा भजनीकों का विशेष प्रभाव रहा। ...पं० गुरुदत्त जी का पाकिस्तान सम्बन्धी व्याख्यान ...पसन्द किया गया।

२३. १५ अगस्त को लायलपुर में नगर की ...आर्य समाजों की ओर से हैदराबाद दिवस ...हरा ग्राउन्ड में मनाया गया। इसमें लाहौर से ...ला० खुशहाल चन्द जी, श्री सत्यार्थी जी, श्री पं० ...पाल जी तथा श्री पं० रामस्वरूप जी पाराशरी ...। दयानन्द दलितोद्धार सभा सम्मिलित हुए। ...अवसर पर हज़ारों मनुष्य उपस्थित थे। राज-...क जलसों पर इतनी उपस्थिति प्रायः देखी जाती ...है। धार्मिक उत्सवों में इतनी उपस्थिति का होना ...व में आश्चर्य और प्रसन्नता की बात थी। ...ता के हृदयों में आर्य समाज के लिये प्रेम और ...नज़र आती थी । कवियों की कविताओं ने ...य प्रभाव पैदा किया । पं० रामस्वरूप जी का ...ख्यान विशेष तौर से पसन्द किया गया । इस ...लन की सफलता का श्रेय मास्टर भीमसैन जी, ...दीनानाथ जी पुरोहित आर्य समाज लायलपुर ...पं० लक्ष्मन जी उपदेशक विद्यालय लाहौर को है। लायलपुर के सार्वजनिक जीवन में विशेष उत्साह दृष्टिगोचर होता है। पंजाब की अन्य आर्य समाजों को लायलपुर से शिक्षा लेनी चाहिये।

४. श्री स्वामी निर्भयानन्द जी (बेधड़क) बड़ी तत्परता से जिला करनाल से कार्य कर रहे हैं। उनके प्रयत्न से प्रान्त में आर्य समाज का पुनः जन्म हुआ और आर्य समाज का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ। प्रधान चौधरी नेतराम जी, मन्त्री ला० राम-स्वरूप जी, कोषाध्यक्ष चौधरी रामस्वरूप जी ज़ैलदार।

५. श्री पं० हरदयालु जी ने म० आशानन्द जी सहित आरम्भ साल में ज़िला फिरोजपुर के निम्न स्थानों में प्रचार किया है। फिरोजपुर छावनी बस्ती टैंकावाली, फ़रीदकोट, कोटकपूरा, कैनाल कालोनी, गिदड़वाहा, भटिण्डा । वेद प्रचार के लिये इन स्थानों से लगभग १००) प्राप्त हुआ है।

सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा करो

आर्य्यों की परीक्षा

इस समय कुछ मुस्लिम लीगी अपने पास कोई कार्य न पाकर आर्य्य समाज से झगड़ा मोल लेना चाहते हैं। उन्होंने इसका आसान ढंग सत्यार्थ-प्रकाश के विरुद्ध आन्दोलन को समझा है। जनता से यह बात छिपी हुई नहीं है कि सत्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए। सभा ने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद कई बार प्रकाशित किया और १९३७ में श्री पं० चमूपति जी एम० ए० से नये सिरे से विशुद्ध उर्दू सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित करवाया गया जो शीघ्र ही समाप्त हो गया था। अब सभा ने उसको दूसरी बार प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया है। लिखाई का कार्य समाप्त हो चुका है। किताब शीघ्र ही प्रैस में दे दी जावेगी। सभा चाहती है कि सत्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार हो। आर्य्य सभ्यता तथा संस्कृति के प्रेमियों को इस काम में हाथ बटाना चाहिये। समाजों और दानी पुरुषों को अपनी २ शक्ति के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश निधि में अधिक से अधिक दान देना चाहिये और भारी संख्या में आर्डर भेजने चाहियें। प्रत्येक समाज यह सोचे कि इस पुस्तक को उर्दू भाषी जनता तक पहुंचाना है। ताकि कोई घर इस पुस्तक से खाली न रहे। इस स्वर्ण अवसर से आर्य्यों तथा आर्य्य समा-जों ने लाभ न उठाया तो आर्य्य समाज के लिये बड़ा दुर्भाग्य होगा। आर्य्य समाज के लिये यह परीक्षा का समय है आशा है आर्य्य जनता ऋषि भक्ति तथा धर्म प्रेम का पूरा पूरा सबूत देगी। सारा धन आर्य्य प्रति-निधि सभा गुरुदत्त भवन लाहौर के नाम आना चाहिये।

मंत्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा,
गुरुदत्त भवन लाहौर।

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

गुरुकुल में श्रावणी पर्व

गत १५ अगस्त को गुरुकुल कांगड़ी में श्रावणी पर्व सोत्साह मनाया गया। प्रातःकाल बड़ी यज्ञशाला में विद्यालय, महाविद्यालय के समस्त ब्रह्मचारियों, उपा-ध्यायों, अधिकारियों तथा समस्त कुल वासियों ने मिल कर बृहद्यज्ञ किया। तत्पश्चात् आचार्य श्री पं० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति ने रोचक रूप में श्रावणी-उपाकर्म के महत्व को समझाया।

गुरुकुल-सम्मेलन का महत्वपूर्ण अधिवेशन

गत १४ अगस्त को गुरुकुल-विश्व विद्यालय-कांगड़ी में गुरुकुल-शाखा-सम्मेलन का महत्वपूर्ण अधिवेशन सकुशल समाप्त हो गया। इस समय गुरुकुल-विश्व विद्यालय के अन्तर्गत लगभग एक दर्जन गुरुकुल भारत के भिन्न २ प्रान्तों में खुले हुए हैं जो कि गुरुकुल-कांगड़ी की पाठ-विधि के अनुसार अपने यहां विद्या-र्थियों को शिक्षित करते हैं। गुरुकुल-सम्मेलन बुलाने का उद्देश्य, भारत के सब गुरुकुलों का एक सूत्र में लाना, शिक्षा और सदाचार को उन्नत करना, आर्थिक दशा को दृढ़ करना, तथा संस्थाओं को अधिकाधिक लोकोपकारी बनाना था। साथ ही सब गुरुकुलों की पंचम तथा अष्टम श्रेणी की वार्षिक-परीक्षाओं के सूत्र-संचालन की व्यवस्था गुरुकुल विश्व विद्यालय से हो इस विषय पर उचित रीति से विचार हुआ। ब्रह्मचारियों को एक शाखा से दूसरी शाखा में भेजने विषयक सुविधाओं और व्यवस्थाओं की भी रूप रेखा तैयार की गई। इसके अतिरिक्त सम्मेलन ने यह भी विचार किया कि आर्थिक समस्याओं और दूरी आ... कारणों से असमर्थ संरक्षकों के विद्यार्थियों को अप... प्रान्तों के गुरुकुलों में अध्ययन करने में उचित सुवि... दी जाय। इस प्रकार अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विविध गुरुकुलों से आए हुए प्रतिनिधियों ने उत्साह-पूर्ण तथा आशामय वातावरण में विचार किया।

महाविद्यालय-स्नानागार

कुछ महीनों से महाविद्यालय आश्रम के निकट एक उत्तम स्नानागार की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। इस अभाव को दूर करने के लिए एक सुन्दर स्नान-गृह महाविद्यालय-कूप के चारों ओर बनाया जा रहा है। इसके बन जाने पर स्नान की अच्छी सुविधा हो जायगी।

आवश्यकता

आर्यप्रतिनिधि सभा को योग्य, विद्वान, सदा-चारी पुरोहितों, उपदेशकों तथा भजनीकों की आव-श्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा । पत्र व्यवहार निम्न पते से करें। यशःपाल सिद्धान्तालंका... अधिष्ठाता वेदप्रचारविभाग आर्यप्रतिनिधि सभा, ला...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

— देश विदेश के समाचार ❀ आर्य सामाजिक जगत् —

—गोहाटी में १२ व्यक्ति कांग्रेसी नारे लगाते और पर्चे बांटते हुए गिरफ्तार किये गये।

—बर्दवान में ११ व्यक्ति गिरफ्तार हुए जो ९ अगस्त को हड़ताल की घोषणा कर रहे थे।

—भारत रक्षा विधान के अनुसार हावड़ा स्टेशन पर १० आदमी पकड़े गये।

—सीतामढ़ी में ज़मीन के नीचे गुफा के अन्दर से एक साइक्लोस्टाइल मशीन और कुछ पर्चे पकड़े गये हैं। पुलिस ने छापा मारा।

—सिसली, बाद का समाचार है कि अमरीकन सेना ने मेसीना पर अधिकार कर लिया। उनका कहना है कि सिसली का युद्ध समाप्त हो गया है। मेसीना सिसली का दूसरा शहर है। इसकी आबादी दो लाख है। शहर बंदरगाह और पहाड़ी के दरम्यान बसा है। यहां दवाइयां, सिल्क और मलमल बनता है। यदि इस शहर के ७३२ ईस्वी के इतिहास पर नज़र डाली जाय तो यह शहर भूचाल से पूरी तरह ध्वस्त हो गया था—समूचा शहर दुबारा बसा है।

—बम्बई में एक मकान से १०० बम प्राप्त हुए हैं। पुलिस ने शशीकान्त नाम के एक २५ वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। ऐसा बयान किया जाता है कि एक मकान पर पुलिस को सन्देह था और उस पर पहरा था। शशीकान्त नामक युवक शाम के समय उस मकान में आया। सिपाही ने ताला लगा दिया। जब मकान की तलाशी ली गई तो साथ के मकान को जाने वाले कमरे में से १०० बम प्राप्त हुए।

—क्यूबिक में श्री चर्चिल, राष्ट्रपति रूज़वेल्ट और नेडा के प्रधान अफसरों की मीटिङ्ग हुई। अभी इस विषय में कोई वक्तव्य प्रकाशित नहीं हुआ परन्तु विचार यही है कि एक और दूसरा मोर्चा तैयार होगा और मित्रराष्ट्र कोई बड़ा भारी हमला करेंगे—परन्तु इस मीटिङ्ग में श्री स्टैलिन हाज़िर नहीं थे। मास्को के संवाददाता का कहना है कि हमें कोई निमन्त्रण प्राप्त नहीं हुआ। युद्ध को तेज करने और हिटलर के विरुद्ध कोई विशेष पग उठाने की योजना तैयार जी जा रही है—ऐसा सबका अनुमान है।

—पेशावर, डा० खान साहिब ने सीमा प्रान्त के गवर्नर से दो घण्टे मुलाकात जारी रखी। मुलाकात का मुख्य ध्येय यही था कि सीमान्त असैम्बली की कांग्रेस पार्टी के १० गिरफ्तार शुदा मैम्बरों को रिहा किया जाय। परन्तु गवर्नर ने उन्हें रिहा करना स्वी-

स्वतन्त्र दल के सदस्यों ने निश्चय किया है वे अधिवेशन में सम्मिलित न होंगे। डिप्टी स्पीकर अल्लाहनवाज़ ने त्याग पत्र दे दिया है। डा० खान साहिब ने अपने बयान में बताया "कि जनता में यह ग़लत धारणा फैल गई है कि सीमान्त असैम्बली में हमारी शक्ति कमजोर पड़ गई है परन्तु ऐसा नहीं, क्योंकि ४९ सदस्यों में से २६ हमारे साथी हैं शेष में से तीन भी मेरा साथ देने वाले है।"

—छपरा, एसोशियेटिड प्रैस का समाचार है कि टैलीफोन के खम्भों से काटी हुई तांबे की बहुत सी तारें डिघवारा नामक ग्राम के पास से पायी गई हैं। एक गिरफ्तारी भी हुई है।

—अमृतसर, गत सप्ताह यहां के बाज़ार में कपड़े की कीमतों में बढ़ती हुई।

—अमृतसर के सन्तोकसर में एक स्त्री का शव तैरता पाया गया।

—"न्यूयार्क टाइम्स" महात्मा गान्धी और पं० नेहरू की गिरफ्तारी की वर्ष गांठ पर लिखता है कि 'भारत वहीं पर खड़ा है जहां पर उनकी गिरफ्तारी के समय पर था परन्तु तब के और अबके युद्ध कार्यों में भारत ने बड़ा हिस्सा लिया है।

—नागपुर, एक प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री सावरकर ने बताया कि पिछले तीस सालों से भारत की भौगोलिक परिस्थिति और कांग्रेस के कारण भारत एकता के सूत्र में था परन्तु अचानक मुसलमानों ने अपने पृथक अस्तित्व के लिए मांग की। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह तो ठीक है कि हिन्दू और मुसलमान दो भिन्न जातियां हैं। परन्तु यह बात जातीय एकता के लिए रुकावट नहीं। जिस तरह इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड, वेल्स जो कि भिन्न होने पर भी अब बर्तानिया के नाम से पुकारे जाते हैं। इसी तरह भारत में भी दो जातियां रह सकती हैं और भारत एक रह सकता है उसमें टुकड़ों की आवश्यकता नहीं।

—अल्जीरिया के रेडियो की खबर है कि मित्र सेनाओं ने मिलज्जो पर अधिकार कर लिया।

—सिसली का समाचार है कि आठवीं सेना इटालियों के हैडक्वारटर मेसिना से १५ मील दूर रह गई। मित्र सेनाओं ने मेसिना पर गोलियां बरसाईं।

—इटली और स्विटज़रलैण्ड के मध्य के टेलीग्राफ सम्बन्ध को तोड़ दिया गया है।

—फ्रांस में जर्मनों के हवाई अड्डे पर अमरीकन और ब्रिटिश फौजों ने हमला किया। तीन बम वर्षक

—आर्य्य समाज गुरुकुल विभाग, साप्ताहिक सत्संग बड़ी सफलता से मना हैं—उपस्थिति बहुत अच्छी होती है—गु जेहलम के मुख्याधिष्ठाता शास्त्री शिव कु आचार्य रामदेव जी व म० चूनीलाल मनोहर व्याख्यानों द्वारा जनताको बहुत अ रहते हैं। पं०रामदत्त जी उपदेशक दयानन्द सभा लाहौर ने चार पांच दिन चित्रों द्वारा शाली प्रचार किया—जनता से कूप फंड के की गई थी—जिस पर ५०।४।—दान मि समाज के कोश में से १०) और दिये गये— सभा को ६०।४।—दिये गये—दानी सज्जनों वाद है—समाज का वार्षिक उत्सव १५,१६, बर १९४३ को बड़ी धूम धाम से मनाया जा

—दीवानचन्द आर्य टूर्नामेन्ट जो प्रति र्गीय ला० दीवानचन्द जी की स्मृति में किया इस वर्ष १ सितम्बर, १९४३ से आरम्भ हो वर्ष इस टूर्नामेन्ट में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, इन्द्रप्रस्थ, वैश्य व्यायाम मण्डली रोहतक इ टीमों ने भाग लिया था।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी, वालीबा बाल, क्रिकेट, हाकी, कबड्डी, रस्सा कशी, स्पर्धा होगी। सब सान्मुख्य श्रद्धानन्द पार्क हाल के सामने होंगे। समस्त हिन्दू टीमें औ इस टूर्नामेन्ट में भाग ले सकती हैं। नियम अ दीवानचन्द आर्य टूर्नामेन्ट, दीवानहाल, देहल कीजिये!

—पं० विश्वमित्र जी संयुक्त सम्पादक " नवजात सुपुत्री का नामकरण संस्कार रक्षा अवसर पर गुरुकुल रायकोट में बड़ी धू किया गया। नाम कुमारी सरोजिनी रखा ग हित पं० परमानन्द जी शास्त्री थे।

—गुरुकुल रायकोट में श्रावणी का पवि उत्साह से मनाया गया। उसी दिन बलिद के होने से श्री आचार्य जी के सभापतित्व गयी जिसमें कई सारगर्भित भाषण हुए। मौसम अच्छा है। १५ अगस्त से ग्रीष्मावक हो गया है। श्री आचार्य जी और पं० अ वैद्य की देख रेख में गुरुकुल का औषधालय बड़ी सेवा कर रहा है।

—लायलपुर के तीन कांग्रेस कार्य तिरङ्गे झण्डे के साथ सड़कों पर परेड की लगाये। उसी प्रकार सिटी मैजिस्ट्रेट के स स्थित हो गये। पुलिस द्वारा पकड़े जाने औ में पेश किये जाने पर ९-९ मास की सज़ा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक-भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सम्पादक-भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ३
वार्षिक मूल्य ४)
१३ भाद्रपद, २००० वि
२९ अगस्त १९४३ ई

२००२ पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Saharupur)

SAHARANPUR 28 AUG 43 9.30 A.M.

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

म्मनुष्या यथा प्राणान्तःकरणानि कार्य्य-
कानि प्रियाणि भवन्ति तथैव पुरुषार्थेन
र्यकारणे विदित्वा परमेश्वरं विज्ञाय प्रथमे
से शरीरात्मबलं प्राप्य सुखानि जनयत
॥

हे मनुष्यो जैसे प्राण और अन्तःकरण कार्य के
और प्रिय होते हैं वैसे ही पुरुषार्थ से कार्य्य
कारण जानकर और परमेश्वर का ज्ञान कर के
अवस्था में शरीर और आत्मा के बल को प्राप्त
सुखों को उत्पन्न करो ॥१२॥

मनुष्या ये युष्माकं पालका ब्रह्मचारिणो
सूर्यकिरणा मेघान् वर्षयन्ति तथैव कृता-
ाः सन्तः सत्य विज्ञापयन्ति तेषां यः
ारं करोति स भाग्यशाली भवति ॥१३॥

हे मनुष्यो जो लोग आपलोगों के पालन करने
ब्रह्मचर्य को धारण कर के जैसे सूर्य की किरणें
को वर्षाती हैं वैसे ही बुलाए हुए सत्य का प्रकाश
हैं उनका जो सत्कार करता है वह भाग्यशाली
है ॥१३॥

अत्रवाचकलु० हे मनुष्या ये वेदोपवेदाङ्ग-
ाङ्गपारगाश्शिल्पविद्याविदो विद्वांसः कृप-
सर्वान्सुशिक्षामुपदिश्य विदुषः संपादयेयुस्ते
सत्कर्त्तव्याः स्युः ॥१४॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—हे मनुष्यो जो वेद उप-
अंग और उपांगों के पार जाने और शिल्पविद्या के
वाले विद्वान् लोग कृपा से सब को उत्तम प्रकार
का उपदेश करके विद्यायुक्त करें वे सब लोगों
त्कार करने योग्य होवें ॥१४॥

अध्यात्म सुधा

[३७]

दयानन्दोपनिषद

ऋग्वेदः मं० ४ । अ० १ । सू० १,२ ॥

कर्तव्याकर्तव्य निरूपण प्रकरणम्

धूमेन शोधितमन्तरिक्षं पूर्णविद्य आप्तोपदेष्टा सूर्यश्च सुखदा भवन्ति तथैव यूयं सर्वेभ्यः सुखप्रदा भवतेति ॥२०॥

अत्र विद्वद्वेद्याऽग्निवाणीसूर्य्यविद्युदादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या ॥

इस मन्त्र में वाचकलु०—हे मनुष्यो जैसे यज्ञ के सुगन्धित धूम से शुद्ध हुआ अन्तरिक्ष पूर्णविद्यायुक्त, यथार्थवक्ता उपदेश देने वाला पुरुष और सूर्य्य सुख देने वाले होते हैं वैसे ही आप लोग सबों के लिये सुख देने वाले हूजिये ॥२०॥

इस सूक्त में विद्वानों से जानने योग्य अग्नि वाणी सूर्य्य बिजली आदिकों के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्वसूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये ॥

हे विद्वन् भवानग्निजलादिपदार्थान् यथावद्विदित्वा कार्येषु सम्प्रयुज्य प्रत्यक्षीकृत्याऽन्यानुपदिश । येन सर्वे धनधान्य सुखयुक्ताः स्युः ॥४॥

हे विद्वन् आप अग्नि और जलादि पदार्थों को उत्तम प्रकार जान के और कार्य्यों में संयुक्त कर प्रत्यक्ष करके अन्यजनों के लिये उपदेश दीजिये । जिससे कि सब लोग धन धान्य और सुखों से युक्त होवैं ॥४॥

हे मनुष्या ये युष्माकं प्रतापं शरीराणि राज्यं रक्षित्वा दुष्टान् सर्वतो घ्नन्ति तान् सततं रक्षत ॥६॥

हे मनुष्यो जो लोग आप लोगों के प्रताप शरीर और राज्य की रक्षा करके दुष्टों का सब प्रकार नाश करते हैं उन की निरन्तर रक्षा करो ॥६॥

ये मनुष्या येषां यादृशमुपकारं कुर्य्युस्तैस्तेषां तादृश उपकारः कर्त्तव्यः ॥७॥

जो मनुष्य जिन मनुष्यों का जैसा उपकार करें उन मनुष्यों को चाहिये कि उनका वैसा उपकार करें ॥७॥

अत्रोपमालं०—हे मनुष्या येऽहर्निशं युष्मांस्तूत्साहयेयुस्तान् यूयं घासादिनाऽश्वानिवाऽनन्दयत ॥८॥

इस मन्त्र में उपमालं०—हे मनुष्यो जो लोग दि और रात्रि आप का उत्साह बढ़ावें उनको आप लोग घास आदि से घोड़ों को जैसे वैसे आनन्द देओ ॥८॥

हे मनुष्या युष्मासु ये यथा प्रीतिं कुर्वन्ति तथैव तेषु भवन्तः स्नेहं कुर्वन्तु ॥९॥

हे मनुष्यो आप लोगों में जैसे जो लोग प्री करते हैं वैसे ही उनमें आप लोग स्नेह करें ॥९॥

यो यस्य सुखं साध्नुयात्तेनापि स सुखेनाऽलङ्कर्त्तव्यः ॥१०॥

जो जिस के सुख को साधे उस पुरुष को चा कि उस उपकार करने वाले पुरुष को भी देवे ॥१०॥

भीम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

महतो महीयान्

प्र केतुना बृहता यात्यग्निग
रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवश्चिदन्तादुपमामुदान-
डपामुपस्थे महिषो वर्वध ॥६॥

(अग्निः) अग्नि-देव (बृहता) बड़ी (केतुना) ध्वजा के साथ (प्र-याति) आगे आगे जा रहा है। (वृषभः) वर्षणशील प्रभु (रोदसी-आ) पुकार रही पृथिवी तथा द्युलोक के चारों ओर से (रोरवीति) अपने दिव्य नादों द्वारा आप्लावित कर रहा है। (चित्) जब (दिवः) द्युलोक के (अन्तात्) परले छोर से [वह देवाधिदेव] (उपमाम्) हमारे निकट (उत्-आनट्) आ गया तो (अपाम्) हमारी तरंगों की (उपस्थे) गोदी में पड़कर (महिषः) उस महतो महीयान् की (ववर्द्ध) वृद्धि ही हुई।

अग्नि-देव आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है। विश्व-याग की आग प्रति-क्षण भड़कती चली जाती है। मानव-जाति की प्रत्येक पीढ़ी इस आग में अपनी आहुति दिए जाती है। उस आहुति से इस आग को और अधिक भड़का जाती है। प्रत्येक आने वाली पीढ़ी अपनी पूर्ववर्ता पीढ़ियों के परिश्रम से, त्याग से, अनुसन्धान से लाभ उठाती है। आध्यात्मिक अनुभवों की हमारी यह बपौती प्रति दिन बढ़ रही है। कोई जाति उन्नत होती है तो, और अवनत होती है तो संसार के रंगमञ्च पर यह अपने पदचिह्न छोड़ ही जाती है। मानव-इतिहास के पन्नों में हमेशा वृद्धि-ही-वृद्धि हो रही है।

विश्व का इतिहास आखिर क्या है? अग्नि-देव की लीला का इतिवृत्त। व्यक्ति व्यक्तियों के साथ, जातियां जातियों के साथ मिल कर मानव आचार तथा विचार की प्रगति ही का बीड़ा उठाती रही हैं। विश्व की जातियों का सहयोग कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसके सिद्धान्त का ही ज्ञान आज हुआ हो। सनातन काल से संस्कृतियों का विकास जातियों के पारस्परिक मेल-जोल भिन्न-भिन्न देशों में आने-जाने से, आचार तथा विचार के पारस्परिक विनिमय से ही होता रहा है। भिन्न-भिन्न देशों के बीच में न कभी पहाड़ ही कोई स्थिर दीवार बन सके हैं और न ही समुद्र कभी ऐसी खाड़ी का रूप धारण कर सके हैं जिसे मानव उत्साह तथा उद्योग पाट न सके। ज्ञानाग्नि की लाटें समुद्रों को तर गई हैं, पहाड़ों पर से गुजर गई हैं। यह विजयी देव अपनी ज्वालाओं के झंडे लेकर सम्पूर्ण संसार पर छा गया है। स्वार्थियों ने इस आग पर पानी फैंकने का यत्न किया है, परन्तु पानी के छींटों से इसकी लपटें और तेज हो गई हैं। राक्षसों की प्रत्येक पराजय ने देवताओं के मानव इतिहास देवताओं की विजय की ही एक लम्बी कहानी है।

ज़मीन-आसमान इस निरन्तर चल रहे सुरा-सुर संग्राम का विशाल क्षेत्र हैं। परमाणुओं में संघर्ष है, किरणों में, लहरों में, हवा के झोंकों में संघर्ष है। इस संघर्ष का स्वाभाविक परिणाम है शोर। कलह बिना कोलाहल के कैसे हो सकता है? विश्व अशान्ति का घर है। राक्षसों को और कुछ आए या न आए, वे रोना खूब जानते हैं। कोई और ज्यादती करेगा तो भी रोयेंगे और यदि ये स्वयं किसी से ज्यादती कर लेंगे तो भी रोयेंगे। अत्याचारी सताता है पर रोने नहीं देता।

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश की दस हजार प्रतियां बांटने के लिये प्राप्त दान

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के लिये आर्य जनता ने उत्साह दिखलाना आरम्भ कर दिया है। इस में प्रथम आहुति जालंधर के आर्य पुरुषों ने डाली है। दानी महानुभावों का धन्यवाद है।

सेठ हुकमचन्द राजकुमार	१००)	प्राप्त
म० दौलतराम जी	५०)	वायदा
ला० वृन्दावन जी सोन्धी	२००)	,,
ला० जगन्नाथ जी मित्तल	१००)	,,
ला० अमरनाथ जी	१००)	,,
ला० ऋषिदेव जी	५०)	,,
ला० ईश्वरदास जी	५)	,,
श्रीमती प्रभा देवी जी	२५)	,,
श्रीमती लाल देवी जी	५)	,,
ला० गुरुचरणदास जी	५)	,,
	६४०)	

आशा है कि अन्य आर्य भाई तथा समाजें भी अपनी अपनी आहुति इस यज्ञ में शीघ्र भेजने का अनुग्रह करेंगे।

स्वा० वेदानन्द अधिष्ठाता चमूपति साहित्य विभाग गुरुदत्त भवन लाहौर।

देवों और दानवों के इस व्यापक युद्ध में अग्नि-देव का शङ्ख बज रहा है। कृष्ण के पांचजन्य शङ्ख की आवाज़ कुरुक्षेत्र के कोण-कोण में पहुंच रही है, उस शङ्ख की शक्ति पांचजन्य होने ही में है। वह केवल चार वर्णों ही का नहीं, अवर्णियों—अतिशूद्रों का भी है। उसकी ध्वनि विश्व-हित की ध्वनि है। वह संसार की सम्पूर्ण जातियों को यज्ञ का आवाहन है। कृष्ण युद्ध-मात्र के विरुद्ध लड़ रहे हैं। वे विश्व-प्रेम का साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। अग्नि-देव है। वह ज़मीन पर छा रहा है, आसमान रहा है। सच तो यह है ज़मीन-आसमान अपना राग है। आग का राग, याग का रा

संसार में संग्राम का नहीं, सहयोग का जाए—यह अवस्था हम पार्थिव प्राणियों दुःसाध्य प्रतीत होती है। हम इसे एक कह कर टाल देते हैं। हम लोगों का कह जब ज़मीन पर मनुष्यों के स्थान में देव वास होगा, तभी इस पृथिवी के प्राणियों में व्यवहार चलेगा। द्युलोक के भी किसी पर विशुद्ध सहयोग का आधिपत्य हो तो दिखाई दे रहे द्युलोक में तो वैसी ही है जैसी पृथिवी के तल पर। यज्ञ-ही-यज्ञ रहने वाले विशुद्ध हव्यभोजी देवताओं कहाँ है?

अग्नि-देव की कृपा से आध्यात्मिक हमारी इस पृथिवी के तल पर ही विद्य माता की गोद में बच्चा खेल रहा है। पत्नी में पति के अंग-अंग का प्रतिबिम्ब है। भ थाती सदा भाई के अर्पण है। पृथिवी के त तीनों स्थल यज्ञ के हैं। इनमें दिव्य भावन ही निवास है। यहाँ विशुद्ध निष्कामता का है। स्वार्थ ने इन थातियों को छुआ तक नहीं दूसरे का हित आलस्य का दूसरा नाम नहीं इन गोदियों में पर-हित और परिश्रम गले हैं। यही यज्ञ का सार है!

प्रेमिक प्रियतम, प्रियतम प्रेमिक?
यह उल्टा व्यवहार!
एक व्यथा की दो लहरें उठ,
गले मिलीं बन प्यार।
रति का पारावार
इत उत रस रति-सार,
दोनों ओर मची यह रार
प्रियतम! करो न हम से प्यार।

अग्नि-देव देवों का देव है। उसकी क्या कहने? वह "महतो-महीयान्"—ब बड़ा है। उसमें महत्ता की पराकाष्ठा हो गई का यज्ञ महान् है। जो शक्ति सारे विश्व की उसका सञ्चालन कर रही है, उसमें वृद्धि की ही कहां है? है, गुंजाइश है जैसे आग की, समुद्र में वीचि-माला की। बिना ज्वा आग क्या? बिना वीचि-मालाओं के समु हमारे यज्ञ विश्व-याग की ज्वालाएं हैं, संस की हिलोरें हैं—गागरें हैं। वह विभु अपने अपने अन्दर बढ़ रहा है। आग प्रदीप्त हो पृथिवी द्युलोक का अंग तोहै ही। आज उ दिव्य छटा छा रही। सूर्य की पुत्री माता की छाती पर लटकने लगी है। सूर्य बढ़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 581

आर्य
रविवार १३ भाद्रपद
वि०सं० २०००

बङ्गाल की पीड़ित जनता

आर्य समाजों का कर्तव्य

११ अगस्त तक कलकत्ता से जो समाचार आए नसे पता लगता है कि अन्न की कमी तथा भूख कारण बेहोश हुए ६०० व्यक्ति हस्पताल में भेजे चुके हैं। इस समय तक भूख के कारण १२० क मर चुके हैं।

बङ्गाल की शस्य श्यामला भूमि आज भूख से ड़ता कराहते हुए व्यक्तियों की आहों से आग बरसा ही है। सरकारी तथा गैर सरकारी सोसायटियां नन्न भंडार तथा सस्ते अन्न भंडार खोल कर उनकी यता कर रहे हैं।

भारतीय सरकार और बंगाल सरकार भी यथा सम्भव यत्नों से बंगाल में अन्न को पर्याप्त मात्रा में पहुंचाने कोशिश कर रही हैं। श्री डा० श्यामप्रसाद जी मुकर्जी र्यकर्ता प्रधान हिन्दु महासभा के नेतृत्व में जनता यथासम्भव अधिक से अधिक शान्ति पहुंचाने का किया जा रहा है। पंजाब में भी इस दिशा में विध सोसायटियों ने कार्य शुरू किया है। पंजाब आर्य भाइयों तथा आर्यसमाजों को इस समय ोष रूप से बङ्गाली भाइयों की सहायता के लिये करना चाहिए। आर्य सार्वदेशिक सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने बङ्गाली पीड़ित ता की सहायता के लिये विशेष योजना तैयार की जो कि शीघ्र ही आर्यसमाजों के पास भेजी जा है। आर्य समाजों को चाहिए कि वह अपने यहां अधिक से अधिक मात्रा में धन संग्रह तथा अन्न ह करने का यत्न करें। यह भी लिखें कि वह ाल की पीड़ित जनता के कितने असहाय व्यक्तियों अपने यहां आश्रय दे सकते हैं। इस सेवा कार्य सहायता कार्य को करते हुए इस बात का ध्यान ना चाहिए कि जिससे कम से कम धन तथा अन्न अधिक से अधिक व्यक्तियों को सहायता पहुंच क। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की इस सम्बन्ध योजना इसी अङ्क में (इसी पृष्ठ पर) प्रकाशित की है। पंजाब की आर्यसमाजों को चाहिए कि उसके नुसार कार्य करें और इस विषयक धन तथा अन्न के विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को का उचित प्रबन्ध कर देगी।

ऋषि दयानन्द की सूक्ष्म दृष्टि और वैदिक सिद्धान्त का समर्थन

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म की व्याख्या के अनुसार यह मानता है कि इस ब्रह्माण्ड में इस संसार की भांति अनेक सूर्यमंडल हैं। परन्तु वर्तमान युग में वैज्ञानिक अपने प्रत्यक्ष प्रधान विज्ञान द्वारा इस सचाई को स्वीकार नहीं करते थे। अब मि० एच० के० सेन विक्टोरिया मैमोरियल डिपार्टमैण्ट इलाहाबाद युनिवर्सिटी ने इस विषय में निम्न लिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है—

Mr. H. K. Sen, Empress Victoria Reader, Mathematics Department, Allahabad University, writes :—

It is most fortunate that we are no longer to remain in the dark on the question whether our solor system is the only one of its kind in this vast universe. The question, we know, is vexed one, on which observation had so far been silent, and theory fared no better. Fortunately for us, news comes from America of the discovery of two planetary systems quite close to our solar system. Dr. K. A. Strand has quite recently (February 1943) discovered a planetary body about sixteen times as heavy as Jupiter, revolving round a star in the constellation of Cygnus. The astronomical name for the star is 61 Cygni. Almost simultaneously (January 1943), Drs Reuyl and Holmberg have discovered another planetary companion of even smaller mass to the star 70 Ophiuchi.

It is significant that both these planetary systems are quite closs to our solar system. From this it is but natural to surmise that there should be numerous planetary systems in this universe. This conclusion which has been confirmed so recently by observation was voiced earlier by Prof. A. C. Banerji in a paper of June 1942 in which he gave a new tem. Astronomers have given the name of Cepheids to stars whose light varies regularly in the period of a week. Prof. Banerji supposed that a star of equal mass passing by a Cephide raised tides in it and thereby disrupted it. He has shown how it is possible for the planetary system to be formed out of the cataclysm. On Prof. Banerji's theory the visiting star need pass only at a moderate distance from the Cepheid, and there is a fair chance for the formation of the planets. There is scope for number ous planetary systems in the universe.

Profs. Jeans and Jeffreys have on the other hand, supposed that the planets have been formed out of grazing encounter between two stars. This can be shown to be such a race event in our galactic system as to make the birth of planetary system almost unique.

इसका संक्षिप्त भाव यह है कि हमारा सौर सिद्धा इस संसार में अद्वितीय है। अमेरिका से जो नय खोज के समाचार आये हैं वह बिलकुल हमारे सौर सिद्धान्त के अनुसार हैं। डा० के. ए. स्ट्रैण्ड ने फर्वरी १९४३ में एक और नक्षत्र मण्डल का पता लगाया है जो जूपिटर से १६ गुना बड़ा है। ऐसे ही एक सौर का पता उन्होंने लगाया है। इससे पता लगता है कि इस ब्रह्माण्ड में असंख्य नक्षत्र मण्डल हैं। इसी सिद्धान्त को पुष्टि जून १९४२ में प्रो० ए. सी. बैनर्जी ने एक पत्र में की थी। —भीमसेन

बंगाल के अकाल पीड़ितों की सहायता करो

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अपील

बंगाल से अकाल के जो भयानक समाचार आ रहे हैं उनसे हर एक का दिल पसीज उठता है नित्य-प्रति मृत्यु के समाचार भी मिल रहे हैं। इस अवस्था में पंजाब की आर्य्य जनता तथा दानियों को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। सभा ने पीड़ितों की सहायता का काम जारी कर दिया है। शीघ्र ही रिलीफ कार्य पर सभा का मिशन बंगाल जा रहा है।

सब आर्य्य समाजों से निवेदन है कि वह जनता से धन एकत्र करने का काम जारी कर दें और अपने कोष से भी सहायता भेज दें। दानी महानुभाव अपना दान शीघ्र सभा के कार्यालय में भेज दें नकद तथा अनाज की अवस्था में हर प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar, Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यज्जाग्रतो दूर मुदेति दैवम्, यजुः—भद्रंमनः कृणु— ऋग्. इत्यादि अनेक मन्त्रों में मन की शक्ति को और शिव संकल्प बनाने का विधान पाया जाता । यह इसलिये कि मन का शरीर पर और शरीर मन पर प्रभाव पड़ता है। शरीर में ज्वर वा अन्य सी विकार के होने पर मन खिन्न वा उदासीन हो ता है। ऐसे ही जब मनमें कोई चिन्ता या उदा- ीनता होती है तब हमारा शरीर दुःखी तथा रोग- स्त हो जाता है। शरीर की अपेक्षा मन का शरीर र अधिक प्रभाव होता है। इसके दो एक उदाहरण देना पर्य्याप्त होगा। रियासत जयपुर का एक र्दार पानी में पड़े एक काले धागे को पानी के साथ ी गया। पीने पर उसे यह वहम हो गया कि ाला सांप था जो मेरे पेट में चला गया है। ौरन वह डाक्टर के पास पहुंचा। डाक्टर ने उसे मन हो जाने की दवाई दी। पर कुछ न निकला। सके बाद डाक्टर ने और कई दवाइयां दीं पर सर्दार की चिन्ता दूर न हुई। अधिक देर हो जाने पर वह डर से मरणासन्न होगया। डाक्टर समझदार था उसने समझा कि इसे वहम है। अगर सांप होता तो अबतक यह मर गया होता। तब उसने एक ऐसी दवा दी जिससे उसे काले रंग के दस्त होने लगे। तब डाक्टर ने कहा कि देखो वह सांप कट २ कर निकल रहा है। तब उस सर्दार की तसल्ली हुई और वह जल्द नीरोग होगया। एक दूसरी घटना—मुलतान के डा० त्रिलोकचन्द्र रात को अपनी स्त्री के साथ बायस्कोप में गये। १५ वा २० मिनट के बाद ही उनकी धर्मपत्नी ने कहा कि मेरी तबीयत गिरती जाती है, मुझे चक्कर से आते हैं जल्दी घर चलें। डाक्टर उस फिल्म को बिना देखे जाना न चाहते थे तब उन्हें एक युक्ति सूझी। उन्होंने झट अपनी जेब से एक गोली निकाल कर स्त्री के मुख में डाल दी और कहा कि देखो इसे चबाना नहीं केवल रस चूसती जाओ। साथ २ थोड़ी देर के बाद उससे पूछते जाते थे कि अब तो तुम्हें आराम हो गया होगा। कुछ देर के बाद स्त्री की तबीयत ठीक होगई, तब उन्होंने कहा कि देखो गोली ने कितनी जल्द फायदा किया। वास्तव में वह कोई गोली न थी प्रत्युत उनके कोट का टूटा हुआ एक बटन था। मन के विचारों का शरीर पर बहुत जल्द प्रभाव होता है। इस मन की बड़ी शक्ति है। हज़ारों घोड़ों की शक्ति वाली रेल का इंजन वा हवाई जहाज़ भी इतनी तेज़ी से नहीं दौड़ सकता जितनी तेज़ी से यह मन दौड़ता है। ी लिये मनको वेद में "दूरंगम" और "यविष्ठम्" है। हमारे पूर्वजों ने मनकी शक्ति का अनुभव किया था। उन्होंने उससे काम लेने का ाय भी निकाल लिया था।

मन की शक्ति और उसके चमत्कार

(श्रीयुत विष्णुमित्र जी)

इस सूत्र का भाव ही यही है कि चित्त की वृत्तियों को अपने वश में करना। इन्हीं चित्त वृत्तियों के निरोध से योगी क्या नहीं कर लेता। एक ओर तो वह ब्रह्म में लीन होकर अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करता है—दूसरी ओर यदि वह चाहे थोड़ा सा सिद्धियों का चमत्कार दिखा कर संसार को चकित कर सकता है। पर योगी के लिये ऐसा करना निषिद्ध है। योग में कहा है कि—ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः। अर्थात् सिद्धियें योग में बाधक हैं। यहीं तक नहीं प्रत्युत यहां तक कहा है कि—संगम कृत्वास्मयमपि न न कुर्य्यात् एवमहं देवानामपि प्रार्थनीयः। अर्थात् विषयों से अलग रह कर वह दिल में अभिमान भी न करे कि देखो बड़े २ आदमी मेरी तारीफ करते हैं। यदि वह सिद्धियों को दिखा कर स्तुति की लालसा करने लगेगा तब वह योग भ्रष्ट हो जायगा। योग में बड़ी शक्ति है। योगबल के द्वारा योगी दूसरे मनुष्यों पर अपना प्रभाव डाल सकता है। साथ ही उनकी निर्बल मानसिक शक्तियों को वह अपने अधीन भी कर सकता है। मेस्मेरेज़िम आदि मनःशक्ति के ही क्षुद्र खेल हैं। योग के अभ्यास से जब कुछ शक्ति प्राप्त हो जाती है तब कई लोग उसके चमत्कार दिखाने में लग जाते हैं। इससे उनकी यह शक्ति नष्ट होजाती है। सिद्धियों के चमत्कारों के विषय में २०-२५ वर्ष हुए एक मासिक पत्रिका में म० सन्तराम गोहल ने एक लेख लिखा था। योरूप के एक सज्जन चमत्कारों की सत्यता पर विश्वास न रखते थे। वे केवल इन्हें हाथ की सफाई समझते थे। एक रोज़ इन्होंने जो कुछ देखा उसका वर्णन ये इस प्रकार करते हैं। ऐन्द्रजालिक एक हिन्दू था, उसकी आकृति बड़ी प्रभावशालिनी थी। उसने एक डिब्बे में से कई एक सांप निकाले सांपों को सबके सामने रखकर वह कहने लगा। आप इन्हें अच्छी तरह देखकर अपनी तसल्ली कर लें। दर्शकों में प्राणीशास्त्र जानने वाला एक अंगरेज मौजूद था, उसने जांच करके कहा सचमुच यह विषधर साँप हैं। तब ऐन्द्रजालिक ने म. म. म. का मक्खियों के भिनभिनाने के समान शब्द किया। तब वह सांप पूँछ के बल खड़े हो गये। और धीरे २ बढ़ने लगे यहां तक कि वह भयानक अजगर हो गये। जब सभी दर्शक भयभीत हुए तब उसने यहां तक छोटे कर दिये कि वह देखते २ अदृश्य हो गये।

एक और भी आश्चर्यजनक खेल उसने खेला। सिरे पर एक गांठ दे दी और गांठ वाले सिरे आकाश में उछाल दिया। वह आकाश की ओ जाने लगा। उसका सिरा वायु में इस तरह लटक हुआ दिखाई देने लगा मानों गांठ को किसी ने सौ गज़ ऊँचे आकाश में बांध दिया हो। इतने उसका एक साथी नीचे लटकते हुऐ उस रस्से के छो को पकड़ कर ऊपर आकाश में चढ़ने लगा देखते वह आकाश में अन्तर्धान हो गया। इस खेल साथ उसने कर्तव्य दिखाना बन्द कर दिया। उ समय एक अंगरेज़ कैमरा हाथ में लिये वहाँ खड़ा था जब आदमी रस्से पर चढ़ने लगा तब उसने उस फोटो ले लिया। पर जब निगेटिव प्लेट को उस धोया तब न उस आदमी की, न उस दृश्य की, न उ रस्से की किसी की भी तसवीर उसपर नजर न आई केवल ऐन्द्रजालिक की तसवीर शीशे पर उतरी दिखा दी। बात यह थी कि वास्तव में यह सब खेल कि ही न गये थे। वे सारे खेल केवल दृष्टि भ्रम के कार दर्शकों को दिखाई दिये थे। चिरकाल के अभ्यास से ऐन्द्रजालिक को दूसरे का मन अपने वश में करने की शक्ति प्राप्त थी। इसी शक्ति के द्वारा उसने दर्शकों प अपना प्रभाव डाल दिया था।

एक और लेखक का बयान सुनिये। वह अं रिका के एक समाचार पत्र का सम्वाददाता था उसके कथन का सारांश उसी के शब्दों में हम नी देते हैं।

भारतवर्ष की एक बड़ी भारी नदी में मैं जह द्वारा यात्रा कर रहा था। जहाज़ जब बन्दर पर पहुं तब एक हिन्दुस्तानी केवल एक लंगोटी लगाये फुर्ती से जहाज़ पर चढ़ आया। वह एक मा साधु सा मालूम होता था। पर शीघ्र ही उसने अ गुणों का परिचय देना आरम्भ किया। एक नारियल लिये एक मल्लाह जहाज़ पर खड़ा साधु ने उससे नारियल ले लिया और खड़े ह उसका पानी एक डोल में गिराने लगा। एक भर गया। तब नारियल के नीचे एक दूसरा रखा गया। वह भी शीघ्र ही भर गया। इसी प्र उस नारियल के पानी से कोई बारह डोल भर ग

यह खेल साधु की मानसिक कल्पना का था। उसने उसका चित्र लोगों के मन पर अंकि दिया था।

ऊपर के सब खेल मानसिक प्रभाव के ह हैं। जो लोग मानसिक प्रगाव का विरोध और उसे अपने ऊपर नहीं पड़ने देते उन्हें इस के दृश्य बहुधा नहीं देख पड़ते।

इस तरह के और भी खेल किये जा स अभी कुछ दिनों पहिले सुना था कि मदरास साधु आया है वह रुपयों की वर्षा करता है। मानसिक भ्रम का ही फल है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक–भीमसेन विद्यालंकार

GURUKUL KANGRI

Regd L. N. 581

जी का जन्म जिस समय हुआ, भारत
क्षेत्र थी। राजनीतिक दृष्टि से भारतवर्ष
ार हो रहा था। भाई भाई के रक्त का
केन्द्र शक्ति शिथिल हो चुकी थी। केन्द्र-
के कारण अधीनस्थ गण और राज्य भी
बट रहे थे। स्वयं कृष्ण जी का जन्म
हुआ। देश की दशा इतनी खराब थी कि
ाों के आसन भी हिल गये। नारद और
शान्त, निर्द्वन्द्व महामुनियों को राजनीति में
से भाग लेना पड़ा। कृष्ण जी ने अपना
ल्दशा-निरीक्षण और अध्ययन में बिताया।
तथा आत्मसंयम के अभ्यास से उन्होंने
को इतना वश कर लिया था कि वे लोगों
चन्नाते रहे किन्तु स्वयं कभी राजा बनने की
न्न की। कृष्ण जी के समय देश की धार्मिक
विचित्र थी। वैदिक कर्म्मयोग का स्थान
यता ने ले लिया था, और इस अकर्मण्यता
था संन्यास। श्रीकृष्ण जी इस अकर्मण्यता
विरोधी थे। आश्रम व्यवस्था को वह मानते
ान्नते होते तो स्वयं वानप्रस्थ क्यों होते?
से पूर्व संजय दुर्योधन का सन्देश लेकर
गार में पाण्डवों के पास गया है। उसने अर्जुन
—'अर्जुन! युद्ध में क्या पड़ा है? क्या निश्चय,
की विजय हो? फिर राज्य तो बन्धु बांधवों
होता है। युद्ध से तो बन्धुबांधवों की हत्या
ादा भीष्म को जिसकी गोदी में खेलते रहो,
या तुम्हारा हृदय तुम्हें फटकारेगा नहीं?
तुम वीर हो, सोचो, युद्ध में वीरों की हत्या
श निर्वीर हो जायेगा। अनाथ और विध-
ी संख्या बढ़ेगी। इससे अनाचार फैलेगा, वर्ण-
गा। क्या तुम्हें यह सब पसन्द है? ऐसे राज्य
ीख मांग कर निर्वाह करना कहीं अच्छा है।'
।
ुन भावुक था, उस पर संजय की धूर्तताभरी
र कर गई। द्रौपदी के खुले केश और माता
ओजस्वी सन्देश उसके मन से कुछ देर के
हो गये। युद्ध के आरंभ में जब दोनों सेनायें
आकर खड़ी हुईं, तब अर्जुन विपक्ष में दादा,
ुरु आदि पूज्यजनों को देख कर घबरा गया
ोफ़ोन के रीकार्ड की भांति लगा संजय की
दोहराने। उस समय कृष्ण जी की नीति-
आड़े आई। उन्होंने अर्जुन को वह उपदेश
अन्त में अर्जुन को कहना पड़ा—

ो मोहः स्मृतिर्लब्धा, करिष्ये वचनं तव
ण जी! मोह नष्ट हुआ। मुझे होश आ गई है,

श्रीकृष्ण और आर्य्य जाति

[श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, अध्यक्ष, विरजानन्द-वैदिक-संस्थान, लाहौर]

वस्तुतः यह लेख कृष्णजन्माष्टमी के अवसर पर प्राप्त हुआ था परन्तु देर से आने के कारण प्रकाशित न हो सका था—अतः इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। महामना श्रीकृष्ण के विषय में एक लेख पहले अंकों में भी प्रकाशित हो चुका है, कृष्णजन्माष्टमी से विशेष सम्बन्ध होने पर भी योगीराज का आर्य जाति से गूढ़ सम्बन्ध है अतः उसमें सदैव नवीनता है। —सम्पादक

कृष्ण जी ने बिखरे हुए सारे भारत को एक सूत्र में पिरो दिया। जब युद्ध के बाद युधिष्ठिर जी राजसिंहासन पर बैठे, तो उन्होंने श्रीकृष्ण के प्रति धन्यवाद देते हुए कहा—कृष्ण जी! आप के पुरुषार्थ से सारा भारतवर्ष एक होकर मेरे छत्र के नीचे है।

इससे प्रतीत होता है कि कृष्ण जी को देश की एकता अत्यन्त अभीष्ट थी।

जिस प्रकार कृष्ण जी ने युद्ध के आरंभ में अर्जुन का मोह दूर किया था ऐसे अनेक अवसर युद्ध में आये थे, किन्तु एक का उल्लेख किये बिना हम इस लेख को समाप्त नहीं कर सकते। युद्ध में एक ऐसा अवसर आया जब कर्ण और अर्जुन दोनों एक दूसरे के सामने आ गये। घमसान का युद्ध हुआ। दोनों एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी योद्धा थे। दोनों ने वीरता के जौहर दिखलाये। लड़ते लड़ते कर्ण के रथ का पहिया कीचड़ में धंस गया। उस समय के युद्धों का नियम था कि रथी से रथी, घुड़सवार से घुड़सवार और पैदल से पैदल लड़े। कर्ण रथ से उतर कर अपने रथ का पहिया निकालने लगा और अर्जुन से कहा—"अर्जुन! तुम धर्मात्मा हो। युद्धनियमों को जानते हो। तनिक ठहर जाओ, मैं पहिया निकाल लूं" अर्जुन ठहरने लगा ही था कि कृष्ण जी ने कर्ण से कहा—'कर्ण! उस समय धर्म्म कहां था, जब तुमने भीम को विष देकर गंगा में फेंक दिया था, धर्म्म तब कहां गया था, जब तुमने लाक्षागृह में आग लगवाकर माता समेत पांचों भाइयों को जलाने की युक्ति की थी? धर्म्म तब कहां था, जब तुम ने कूट द्यूत से युधिष्ठिर को हराया था धर्म्म तब कहां था जब तुम्हारी मन्त्रणा से असहाय अबला द्रौपदी को दुःशासन ने नंगा करने का दुःसाहस किया था? उस समय युद्ध धर्म्म कहां विलीन हो गया था, जब अकेले अभिमन्यु पर तुम सात महारथियों ने एक साथ आक्रमण किया था? सौ चूहे खाके बिल्ली यात्रा को चली! तुम्हारे ऐसे अधार्मिक धर्म्म का उपदेश दे, आश्चर्य है।' इत्यादि कर्ण की सारी काली करतूतें एक एक गिनकर उसे सुनाईं। और उधर अर्जुन से कहा—"अर्जुन! युद्ध का एक ही धर्म्म है, वह है विजय! विजयी को लोग धर्म्मात्मा कहते हैं, पराजित को पापी। इस समय यह फंसा है। अतः इस पर अस्त्र चला, और इसे मिटा।

अर्जुन ने कर्ण पर अस्त्र चलाया। कर्ण समाप्त हो गया। वास्तव में कर्ण के साथ युद्ध भी समाप्त हो गया।

पाण्डवों की जीत का श्रेय कृष्ण जी की नीति को है। कृष्ण जी धर्म्म के मर्म को जानते थे। वे भावों के प्रवाह में नहीं बहते थे। वरन् उत्तेजित न होकर सब कार्य्य योजनानुसार करते थे। यही उनका सारथिपन था।

कृष्ण ऐसे धर्म्मात्मा की आज नितान्त आवश्यकता है। यदि आर्य जाति कृष्ण की इस दूर-दर्शिता को समझ रखे, तो उसके कल्याण में तनिक भी विलम्ब न हो।

(पृष्ठ ४ का शेष)

एक सज्जन ने ऐसी क्रियायें देखकर परीक्षा करने का निश्चय किया। ऐन्द्रजालिक के चारों ओर बड़ी भीड़ थी। वह कहते हैं कि तब मैं दर्शकों से अलग हो कर एक दूसरे स्थान से देखने लगा तब मुझे ऐन्द्रजालिक के सिवाय और कोई उसका किया करतब न दीख पड़ा। इससे सिद्ध हुआ कि ऐन्द्रजालिक का प्रभाव एक विशेष सीमा तक ही था।

दूसरों पर इन मानसिक कल्पनाओं का चित्र अंकित करने के लिये प्रायः नीचे लिखी हुई विधि का अवलम्बन किया जाता है।

ऐन्द्रजालिक युवावस्था से अपने मनमें मानसिक चित्र बनाने का अभ्यास करता है। कल्पना कीजिये कि पहले पहल उसने किसी सुपरिचित वस्तु जैसे गुलाब के फूल का स्पष्ट चित्र अपने मन पर खींचना चाहा। यह चित्र खींचने के लिये अपनी इच्छा शक्ति से काम लिया। ऐन्द्रजालिक इतना अभ्यास कर लेता है कि उसके मानसिक नेत्रों के सामने कल्पित वस्तु ठीक वैसी ही दीखने लगती है। जैसे किसी व्यक्ति का मुख मण्डल देखने पर किसी चित्रकार के मन में उसका चित्र ज्यों का त्यों उतर आता है। और फिर वह बिना देखे ही उसे अंकित कर लेता है। इसके बाद वह ऐन्द्रजालिक बड़ी २ वस्तुओं का वस्तुओं के समूह का और बढ़ते बढ़ते अद्भुत दृश्यों का चित्र अपने मन पर अंकित करता है। कितने ही दिनों के अभ्यास के बाद सौ में दो ही एक ऐसे निकलते हैं जो अपने मन में वस्तुओं का स्पष्ट चित्र खींचकर उसके खेल दिखा सकें। जब इतनी शक्ति प्राप्त होजाती है तब वह ऐन्द्रजालिक अपनी अत्यन्त विकसित इच्छा शक्ति के द्वारा अपने आसपास के लोगों के मन में पूर्वोक्त प्रकार के मानसिक भ्रम पैदा कर देता है। इस शक्ति की प्राप्ति में बहुत समय लगता है। दो चार वर्षों में यह नहीं प्राप्त होसकती।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

हम इसके पहिले दिखा चुके हैं कि कृषि से प्रति भारतीय को क्या आमदनी है और अन्य देश-वासियों को क्या आमदनी है । व्यवसाय से भारतीय तो बहुत कम कमा पाता है । अमरीका में व्यवसाय से प्रत्येक मनुष्य की आमदनी ७२१) है, कनाडा में ४७०) इंग्लैंड में ४१२), स्वीडन में ३८४) जापान में १५८) और भारतवर्ष की व्यावसायिक आमदनी प्रतिमनुष्य केवल १२) है ।

ग्रामीण-उद्योग धंधे

भारतवर्ष के व्यवसाय का आधार ग्रामीण-उद्योग धंधे थे और ये आज नष्टप्राय: हो चुके हैं । जिस दिन भारत के ग्रामीण उद्योग-धंधे नष्ट हुए उस दिन भारत की व्यावसायिक मृत्यु हो गई । महात्मा गांधी इन मृत्युप्राय धंधों को पुनर्जीवित करने का बहुत दिनों से प्रयत्न कर रहे हैं । खादी का आन्दोलन जो उन्होंने १९२० से ही उठाया है, इसी बात का प्रयत्न है और १९३५ में जो अखिल भारतीय ग्रामीण उद्योग-धंधा-संघ निर्मित हुआ वह भी इसी लिये हुआ है ।

खेती करते हुए किसान लोग अपनी छुट्टी के समय में अनेक उद्योग-धंधे करके अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं । पहले ये लोग यह करते भी थे । हिन्दू समाज की उपजातियां वास्तव में उनके उद्योग-धंधे का द्योतक थीं । चमार, लोहार, तेली इत्यादि उपजातियां वास्तव में एक एक उद्योग की सभायें थीं, जैसे आजकल ट्रेड्स यूनियन होती हैं । लेकिन समय के परिवर्तन से हिन्दुस्तानी समाज का प्राचीन आर्थिक संगठन टूट गया । नवीन युग में केवल एक जाती को छोड़ कर बाकी समस्त उपजातियों की जीविका पर प्रबल आक्रमण करके उनका तहस-नहस कर दिया । अगर भारतवर्ष में ग्रामीण उद्योग-धंधों को उत्साहित करने की भावना पैदा हो जाय तो आज भी गांवों की दशा कुछ सुधर सकती है । किन्तु इस समय तो दशा यह है कि कोरी और जुलाहे तथा उनके साथ सूत कातने वाली स्त्रियां बेरोज़गार हैं । लोहारों की लोहारी जाती रही है । गड़रिया लोगों का कमरी का व्यापार ठण्डा हो गया है । ठठेरों का व्यवसाय जाता रहा है । गाँव के चमार को कोई नहीं पूछता । मनिहार भी बेकार हो गये हैं । खिलौना बनाने वाले कुम्हारों के खिलौनों को जापानी और विलायती खिलौनों के सामने कोई धेले को भी मोल नहीं लेता ।

अध्ययन करने की बात है कि अर्वाचीन युग में हमारे ग्रामीण उद्योग-धंधे किस प्रकार नष्ट हुए और किस प्रकार गाँवों की सम्पूर्ण जातियां अपनी रोटी से एक दम वञ्चित हो गईं । तथापि निम्नलिखित

देश की दशा

श्रीयुत शीतलासहाय

[गतांक से आगे]

(३) गाय-बैलों को दृष्टि ले गोपालन, (४) बकरी और भेड़ों की पालना, (५) अमरूद, बेर, आम, नींबू, पपीता इत्यादि फलों का बोना, (६) कछियाना अर्थात् हलदी, मिरचा, आलू आदि सब्ज़ियों की खेती, (७) गुड़ और शक्कर का काम, ८ मछुआगिरी, (९) बढ़ई का काम, (१०) खद्दर का काम, (११) भट्टे का काम, खपरा, नरिया, ईंट इत्यादि, (१२) ठठेरों का काम, (१३) चमड़े का काम, (१४) बाध बनाना, (१५) बांस से पंखा, बक्स इत्यादि बनाना, (१६) काढ़ने का (सुई का) काम, (१७) चूड़ी का काम, (१८) हलवाई का काम, (१९) मिट्टी का काम, बर्तन तथा खिलौना, (२०) बीड़ी व सिगरेट का काम, (२१) साबुन बनाना ।

लोग कह सकते हैं कि ग्रामीण उद्योगों की उन्नति का ज़माना नहीं रहा । अर्वाचीन युग में मशीनों के सामने ग्रामीण उद्योग-धंधे भारत में नहीं उठ सकते । जैसे संसार के अन्य भागों में मशीन के सामने ये नष्ट हो गये हैं और मशीन-युग आरम्भ हो गया है, उसी प्रकार भारत में भी होगा । यह आक्षेप अनेक बार हो चुका है और अनेक बार इसका जवाब भी दिया जा चुका है । यह स्थान इस उत्तर को दोहराने का नहीं । मैं केवल यहां इतना नोट करूँगा कि अगर हम ऊपर का आक्षेप मान भी लें तो भी बहुत बड़े दुःख की बात तो यह है कि हमारे देश के ग्रामीण व्यवसाय तो नष्ट हो गये, लेकिन उनके स्थान में न तो मध्य वर्ग के व्यवसाय कायम हुए और न उच्च वर्ग के ।

अर्थात् हमारे ग्रामीण उद्योग-धंधे तो नष्ट हो गये, लेकिन उनके स्थान पर मशीन-युग के बड़े या छोटे व्यवसाय कायम नहीं हुए । धोबी के कुत्ते के समान हम न घर के रहे, न घाट के ।

व्यापार की दशा

व्यापार की दशा लज्जाजनक है । जितना माल हम अपना बीसों वर्ष से विदेशों में बेचते चले आये हैं, उतना ही माल हम अभी तक बेच रहे हैं । कोई वृद्धि नहीं हुई । विदेशी माल निस्सन्देह हम पहले से ज़्यादा खरीदने लगे हैं । तीस वर्ष पहले भारतवर्ष का व्यापार कनाडा के व्यापार से दुगुना था और जापान के व्यापार से तिगुने से भी ज्यादा । लेकिन आज हमारा व्यापार इन दोनों देशों के व्यापार से कम हो गया है । कनाडा जिसकी जन संख्या भारत की अपेक्षा केवल तीन प्रतिशत है, सन् १९०९ ६३ प्रतिशत अधिक रहा करता था । युद्ध [कनाडा का व्यापार प्रति मनुष्य ४४) हुआ था, आज १०५) है । युद्ध के पहले अमरीका व्यापार १३२) प्रति मनुष्य था, आज २५ युद्ध के पहले भारत का व्यापार १८) प्रति था, आज १८) ही है ।

निम्नलिखित आँकड़े देखिए—

व्यापार प्रति मनुष्य

	१९२९	१९३५-३६
	रुपये	रुपये
इंग्लैंड	५९७	३२४
अमरीका	२१४	८४
कनाडा	९२०	३४
जर्मनी	२९६	१०५
फ्रांस	२८४	१२७
जापान	९०	४७
भारत	१७	७·६

इंग्लैंड का व्यापार भारत की अपेक्षा ४ ज्यादा है, कनाडा का ३८ गुना और जाप ९ गुना ।

ऊपर लिखे आँकड़ों की सहायता से पाठक देशों के साथ भारत की तुलना कर सकते हैं ।

स्वदेशी राज्य-काल में भारत से कपड़ा और शक्कर का बहुत बड़ा व्यापार होता था । भारत संसार को फ़ौलाद और लोहा भी करता था । १८९४ में इस देश से ९० ला की रुई का सामान विदेशों में भेजा गया था भी इस विदेश में ९० लाख रुपये की रुई बेच रहे हैं । १८१४ में इस देश में ५० हज़ा का विदेशी कपड़ा आया था । लेकिन ६६ करोड़ रुपया का विदेशी कपड़ा खरीद १८९० में हमने १ करोड़ ३ लाख रुपये परदेशों में बेची थी, १९१० में केवल ४ ला की । १८९० में इस देश में केवल २३ लाख विलायती शक्कर आई थी, किन्तु १९१० सोलह करोड़ रुपये की विलायती शक्कर इस बिकी थी ।

एक बात और विचारणीय है । हम सन्तानोत्पत्ति में बहुत तेज़ है, पिछले पचास भारतवर्ष की जन-संख्या १० करोड़ अ गई है, अर्थात् ३९% प्रतिशत बढ़ गई है । की आबादी पर हमारे देश की सन्तानोत्प संख्या ३२·९ है । संसार का कोई देश इस में हमारा मुका बला नहीं कर पाता । इं पैदाइश १९·३ प्रति हज़ार है, जर्मनी में १७ में १७·५ और जापान में ३२.३५ है । किन्त देश में मृत्यु भी जितनी होती है, अन्य देश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. [illegible]

वार १३ भाद्रपद २०००

आर्य

हरिजन-उद्योगशाला, दिल्ली

विद्यार्थियों के दाखिले के नियम

जो आर्य समाजें हरिजन विद्यार्थियों को शिक्षा दिलाना चाहें वे उक्त शाला में विद्यार्थियों को भेज सकती हैं। —सम्पादक

१. हरिजन-उद्योगशाला का नया वर्ष १ अक्तूबर से शुरू होता है। २. जिन विद्यार्थियों को दाखिले की स्वीकृति मिल जाये, उन्हें २० अक्तूबर तक अवश्य आ जाना चाहिए। २० अक्तूबर के बाद जो प्रवेशार्थी आयेंगे, उनका दाखिल नहीं किये जायेंगे। आवेदन-पत्र अधिक-से-अधिक १५ अगस्त तक अवश्य आ जाने चाहिएँ। उद्योगशाला से दाखिले की मंजूरी का पत्र पाकर ही प्रवेशार्थियों को उद्योगशाला में आना चाहिए; बिना मंजूरी पाये जो आयेंगे उन्हें वापस कर दिया जायेगा।

३. उद्योगशाला में नीचे लिखे उद्योगों की तालीम दी जाती है:—

१—बढ़ईगिरी का उद्योग (तीन साल का कोर्स) बेंत के काम के साथ ४ साल।
२—सिलाई का उद्योग (३ साल का कोर्स)
३—चमड़े का उद्योग (३ साल का कोर्स)
४—हाथ कागज बनाना (१ साल का कोर्स)
५—जिल्दसाजी (१ साल का कोर्स)
६—बुनाई का उद्योग (३ साल का कोर्स)
७—लोहारगिरी (३ साल का कोर्स)

४. उद्योग के साथ-साथ पंजाब-विश्व-विद्यालय 'रत्न' तथा 'भूषण', एवं हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन 'विशारद' परीक्षाओं का पाठ्यक्रम भी पढ़ाया जाता है। जिनकी योग्यता इन परीक्षाओं के योग्य नहीं होती, उन्हें उद्योगशाला की 'प्रारंभिका' तथा 'बोधिनी' के पाठ्यक्रम का शिक्षण दिया जाता है।

५. कताई सब के लिए लाज़िमी है।

ललितकला तथा संगीत ये दो ऐच्छिक विषय हैं।

६. हर छह महीने बाद विद्यार्थियों की परीक्षा ली जाती है। ७. विद्यार्थी की उम्र १३ साल से नीचे और १५ साल से ऊपर नहीं होनी चाहिए। पर बढ़ई-विभाग में १४ से कम के लड़के नहीं लिये जायेंगे।

नोट—जिनकी उम्र ग़लत साबित होगी, उन्हें मजबूरन वापस घर भेज दिया जायेगा।

८. कम-से-कम दर्जा ४ तक की तालीमी योग्यता होनी चाहिए। हिन्दी मिडिल या अंग्रेजी मिडिल पास विद्यार्थी को तरजीह दी जाती है। पहले जो विद्यार्थी किसी औद्योगिक शिक्षण प्राप्त कर चुका होगा, उसे भी आवेदन-पत्र के साथ, (जो हरिजन उद्योगशाला किंगस्वे दिल्ली से मंगाया जाय) अपने स्कूल का असल सार्टीफिकेट भेजना आवश्यक है।

९. खादी पहनना अनिवार्य (लाजिमी) है, इसलिए घर से प्रवेशार्थियों को खादी के ही कपड़े पहन कर आना चाहिए।

१०. स्थानीय हरिजन-सेवक-संघ के दो सेवकों की सिफ़ारिश के साथ आवेदन-पत्र भेजना चाहिए। उनके अभाव में चर्खा-संघ, गांधी-सेवा-संघ, जिला-कांग्रेस-कमिटी या किसी भी सार्वजनिक संस्था के दो प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ताओं की सिफारिश होनी चाहिए।

११. विद्यार्थी को अपने साथ नीचे लिखी ज़रूरी चीज़ें लानी होंगी:—एक लोटा, और खादी के पहनने के कपड़े।

१२. शारीरिक परिश्रम के लिए, जैसे झाड़ू लगाना, सफाई करना, कपड़े धोना, रसोई में मदद देना, अनाज पीसना वग़ैरह जो-जो उद्योगशाला के अनुशासन के अनुसार काम होंगे, उन सब के लिए तैयार रहना पड़ेगा।

१३. शिक्षा और भोजन वग़ैरह हरिजन विद्यार्थियों को निःशुल्क दिया जाता है। सिर्फ़ दाखिले के ५) लिये जाते हैं।

१४. १५ फीसदी दूसरी हिन्दू जातियों के विद्यार्थी भी उद्योगशाला में लिये जाते हैं। उन्हें हरिजन विद्यार्थियों में अपने को बिलकुल घुला-मिला देने के लिए तैयार होना चाहिए। ऐसे विद्यार्थियों से सिर्फ ७॥) रुपया मासिक भोजन खर्च लिया जायेगा।

१५. १५ फीसदी वनवासी जातियों (भील, गोंड़, कोल, संताल उरांव, मुंडा आदि) के विद्यार्थी भी उद्योगशाला में भर्ती किये जायेंगे। शिक्षा और भोजन आदि उन्हें भी शाला की तरफ़ से दिया जायेगा। सिर्फ दाखिले के ५) लिये जायेंगे। —वियोगी हरि

व्यवस्थापक ह० उ० शाला, किंगस्वे, दिल्ली

(६ पृष्ठ का शेष)

अमरीका में ११·३, कनाडा में १०·७, जर्मनी में ११·१, फ्रांस में १७·३ और जापान में १८.१७। हिन्दुस्तान में २४·५ मृत्यु प्रति हज़ार है। भारतीयों की जीवन-अवधि भी बहुत कम है। अंगरेज़ लोग औसतन ५८ वर्ष की आयु पाते हैं, अमरीकन ५७ वर्ष की, जर्मनी वाले ५० वर्ष तक जीते हैं। फ्रांस वालों की भी आयु इसी के लगभग है। जापानी ४५ वर्ष तक [illegible] हैं, लेकिन हम लोगों की आयु २६ वर्ष से अधिक नहीं होती। ईश्वर हमारा भला

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल कांगड़ी में शाखा सम्मेलन

महत्वपूर्ण अधिवेशन

गत १५ अगस्त शनिवार को गुरुकुल कांगड़ी में शाखा सम्मेलन का महत्वपूर्ण अधिवेशन सफलतापूर्वक समाप्त हो गया। गुरुकुल कांगड़ी की देख-रेख में इस समय भारत के विभिन्न प्रान्तों में लगभग एक दर्जन गुरुकुल चल रहे हैं जिनमें गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठविधि के अनुसार विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है। प्रायः सभी शाखा गुरुकुलों के प्रतिनिधि तथा शिक्षा-शास्त्र-विशारद निमन्त्रित होकर इस शाखा सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। सम्मेलन का वातावरण शान्त अनुकूल, स्फूर्तिमय तथा आशाजनक था। सब सदस्यों ने मिलकर शाखा गुरुकुलों की शिक्षा, व्यवस्था, आचार तथा आर्थिक दशा को उन्नत करने के लिए बड़ी गम्भीरता से विचार किया। समस्त गुरुकुलों में एक पाठविधि प्रचलित करने पर बल दिया गया। शाखा-गुरुकुलों के संचालकों से अनुरोध किया गया कि वे विद्यालय विभाग की शिक्षा प्राप्त कराने के बाद अपने ब्रह्मचारियों को अधिक से अधिक संख्या में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वेद-साहित्य तथा आयुर्वेद महाविद्यालयों में से किसी एक महाविद्यालय में भेजने का पूरा पूरा प्रयत्न करें। सब शाखा गुरुकुलों की पंचम तथा अष्टम श्रेणियों की वार्षिक परीक्षाएं केन्द्रीय गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा ली जाने के सम्बन्ध में विचार हुआ। शाखा सम्मेलन के प्रधान श्री पं० प्रियव्रत जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी तथा मन्त्री श्री पं० सुर[illegible] देव जी विद्यावाचस्पति नियत किये गये।

—'सार्वदेशिक' का अगला अंक सत्यार्थप्र[illegible] शांक के रूप में निकाला जा रहा है, जिसमें सत्यार्थ प्रकाश के महत्व, सत्यार्थप्रकाश की मतमतान्तर समीक्षा, सत्यार्थप्रकाश का जगत् पर प्रभाव, सत्यार्थ-प्रकाश विरोधी आन्दोलन आदि पर सुयोग्य विद्वानों के लेख और उत्तम कवियों की कवितायें प्रकाशित होंगी। यह अंक सितम्बर मास के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होगा।

—रूसी मोर्चे के समाचार बड़े अच्छे हैं। अभी नया और बड़ा महत्वपूर्ण समाचार है कि खारकोव पर रूसियों ने पुनः अधिकार कर लिया। और रूसी सेनाएं वोरोशिलोव ग्राड में घुस रही हैं। वे तीन दिन की लड़ाई में २३ मील आगे बढ़ीं। जर्मन समाचार एजैन्सी ने कहा है कि जर्मन सेना ने अपनी योजना के अनुसार रविवार की रात को जर्मनों ने खारकोव खाली दिया। जो भी हो, उन्होंने अपने आप खाली किया हो अथवा लाल सेना ने खाली करवाया हो यह निश्चय ही बड़ा महत्व का स्थान है, क्योंकि यह स्थान

गुरुकुल कांगड़ी के समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

राष्ट्र भाषा

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

भजन

(महाशय देशराज जी भजनोपदेशक)

संसार-चक्र

(श्रीयुत विश्वमित्र)

प्रशान्त की हलचल—

२३ अगस्त का समाचार है कि प्रशान्त के किस्का टापू में मित्र सेनाएं उतर पड़ीं। जापान की संवाद समिति ने स्वीकार किया है कि न्यूजार्जिया के उत्तर पश्चिम में स्थित द्वीपसमूह पर अमेरिकन बम वाज़ों ने हमले किये।

उक्त समाचारों से विदित होता है कि प्रशान्त सागर में मित्रों की हलचल बढ़ रही है। क्यूकिब कान्फ्रैन्स में भी इस विषय में नया प्रोग्राम बनाया गया है। चीनी विदेश मन्त्री डा० सूंग को आश्वासन दिया गया है। कि जिस प्रकार जर्मनी के विरुद्ध कठोर पग उठाया गया है उसी तरह जापान के विरुद्ध भी कठोरता से व्यवहार किया जायगा। प्रधान रूज़वेल्ट ने उनके साथ लम्बी बातचीत में बताया है कि दक्षिणी चीन में पर्याप्त वायुसेना मौजूद है जो जापान के औद्योगिक क्षेत्रों पर बम बरसाएगी। बर्मा की विजय से पहले जापान के औद्योगिक क्षेत्र नष्ट कर दिये जावेंगे। क्यूबिक कान्फ्रैन्स के बाद यह निश्चित है कि प्रशान्त में हलचल बढ़ जायगी।

क्या क्रिप्स पुनः भारत आयेंगे ?

न्यूज़ क्रानिकल में श्री राजगोपालाचार्य का वक्तव्य प्रकाशित हुआ है जिसमें उन्होंने यह परामर्श दिया है कि गतवर्ष जहां नेताओं और क्रिप्स के मध्य बातचीत टूटी थी वहीं से फिर विचार परामर्श आरम्भ हो। लण्डन के राजनीतिक क्षेत्रों में यह अनुभव किया जा रहा है कि श्री वावेल के आने से पूर्व भारतीय डैडलाक को दूर करने के लिए श्री क्रिप्स को फिर भारत भेजा जाय और जब ब्रिटिश पार्लामैण्ट का अधिवेशन आरम्भ होगा तो मि० चर्चिल पर ज़ोर डाला जायगा कि क्रिप्स को इस कार्य के लिए भारत भेजा जाय क्योंकि वे आवश्यक समझते हैं कि जापान के साथ पूरी तरह टक्कर लेने के लिए भारत को मुख्यस्थल बनाया जाय और इसमें सफलता तभी होगी जब भारतीय स्थिति सम हो जाय। भारत की आधुनिक भूख के कारण बिगड़ती हुई दशा को सामने रखते हुए कैसे कहा जा सकता है कि भारतीय किसी भी कार्य में पूरा सहयोग दे सकेंगे। भूखे भजन न होई गोपाला।

—अमरीका की दसवीं सेना ब्रह्मा पर निरन्तर हमले कर रही है। रुगांइग रेलवे स्टेशन पर बम [illegible]। कई मकान और स्टेशन का कुछ

देश विदेश के समाचार

बर्लिन पर बमबारी—

२४ अगस्त की मध्य रात को मित्र राष्ट्रों द्वारा बर्लिन पर भयंकर बम वर्षा का समाचार आया है। बर्लिन के वायु सेना के क्षेत्र पर और अधिकृत प्रदेश पर बम बरसाये गये। यह बम वर्षा अब तक की लड़ाई में बड़ी भीषण बताई जाती है और फैंके गये बम वज़न में भी बहुत भारी थे। ऐसी सम्भावना की जाती है कि गवर्नमैण्ट के हैडकार्टर बदले जा रहे हैं क्योंकि दो हफ्ते से बर्लिन पर कठोर बम वर्षा हो रही है। हम्बर्ग शहर के विषय में रूटर सम्वाददाता कहता है कि उसके बहुत से भाग तो ढेर हो गये हैं। ज्यूरिच का समाचार है कि जर्मन सरकार ने आदेश निकाला है कि भयग्रस्त क्षेत्रों के स्कूल खाली कर दिये जावें और माताएं अपने बच्चों को लेकर सुरक्षित स्थानों में चली जावें।

बंगाल की दशा—

बंगाल की पीड़ित जनता के नित नये समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। २४ अगस्त का समाचार है कि ७० व्यक्तिगलियों में मूर्च्छितावस्था में पाये गये। गत पांच दिनों में १२० व्यक्ति मृत्यु के घाट उतरे। ७० में से १२ हस्पताल में मर गये। ६५७००० रुपया बंगाल रिलीफ कमेटी को प्राप्त हो गया है। सर बद्रीदास गोयनका की प्रधानता में हुई सभा में डा. बी. सी. राय ने बताया कि यह रुपया बहुत थोड़ा है। उन्होंने प्रार्थना की है कि दानी धर्मार्थ भोजनालय चालू करें। डा. बी. सी. राय का वक्तव्य बहुत आर्द्र है—और यह धन बंगाल के लिए कुछ भी नहीं—इस से कौन इन्कार करेगा। भारतीय जनता बहुत अनुभव कर रही है कि उनके भाई भूखों मर रहे हैं—पर क्या किया जा सकता है जब तक सरकार पूरी तरह सहयोग न दे। जब तक बंगाल में अन्न ही न पहुँचेगा तो रुपयों का क्या होगा।

कलकत्ता के मेयर श्री सैयद बदरुद्दौजा ने श्री चर्चिल और राष्ट्रपति रूज़वेल्ट कोतार भी दिया कि बंगाल अन्न की कमी के कारण तबाही की हालत में है। मानवता के नाम पर आस्ट्रेलिया, अमेरिका से अनाज के जहाज भेजे जायें।

यह बात आवश्यक और ध्यान देने योग्य है कि जो रक्षा समितियां बनें वे कलकत्ता शहर का ही ध्यान न रखें बल्कि देहातों का भी ध्यान रखें क्योंकि देहाती जनता ही शहरों में आ रही है। भूख अपना

आर्य सामाजिक जगत

लायलपुर में हैदराबाद बलिदान दि

लायलपुर में चारों आर्य समाजों की ओर से संगठन सभा की देख रेख में १५ अगस्त रविवा को ६ बजे से १ बजे तक दशहरा ग्राउण्ड में श्री चन्द्रभान जी वकील की अध्यक्षता में "हैद बलिदान-दिवस" बड़ी धूमधाम के साथ मनाया

हमारे विशेष निमंत्रण पर लाहौर से म खुशहाल चन्द्र जी 'आनन्द' श्री पं० सत्यार्थ बी. ए. श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार, रामस्वरूप जी 'पराशर" पधारे थे। स्टेशन प महानुभावों का शानदार स्वागत किया गया। लगभग १५ हज़ार से अधिक की उपस्थिति नेताओं के जोशीले और प्रभावशाली व्य हुए। व्याख्यानों के साथ २ लायलपुर की प्रेम वाड़ी की ओर से बड़ा भारी कवि दरबार भी जिसमें आर्यवीरों के बलिदान सम्बन्धी ही क बोली गई।

रक्षाबन्धन १५ ता० रविवार से लायलपु चारों समाजों में वेद सप्ताह का कार्यक्रम प्रा बजे से १० बजे तक बृहद्यज्ञ और वेद कथा प्रतिदिन हो रहा है।

राष्ट्रीय आर्य पाठशाला बगहा

चम्पारण में एक राष्ट्रीय पाठशाला महा रामनरेश प्रसाद जी "धर्म" प्रधान शिक्षक संचालित की गई है। अतएव प्रत्येक आर्य भाई से निवेदन है कि, अपने बच्चों को योग्य के लिये उक्त पाठशाला में भेज, देश, समाज की उन्नति में हाथ बटावे। शिक्षा हिन्दी, की है जो अपर तक की होगी। विशेष अध्यक्ष से मिलने पर हो सकती है।

आर्य के लेखकों की सेवा में

आर्य में प्रकाशनार्थ लेख, कविताएं, सूचनाएं और समाचार "सम्पादक आर्य लाल रोड लाहौर" के पते से आनी चाहिये।

—

सारे देश में इसका आतंक छा रहा प्रतीत काशी में भी भूख से कुछ मौतें हुई बताई सरकार से प्रार्थना है कि वह इस डायन शान्त करने का प्रयत्न करे। दानियों को भी कि वे दिल खोल कर दान दें। हमें पता है देने को तैयार हैं परन्तु यातायात के साधनों

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 381

GURUKULA KANGRI (SAHARANPUR)
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक २

वार्षिक मूल्य ४)

२० भाद्रपद, २००० वि

५ सितम्बर १९४३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००१ मुखबिधाबाग की गुरुकुल कांगड़ी (Saharanpur)

अध्यात्म सुधा

[३८]

दयानन्दोपनिषद

ऋग्वेदः मं० ४ । अ० १ । सू० २ ॥

कर्तव्याकर्तव्य निरूपण प्रकरणम्

विजली आदि की विद्या को बढ़ाते हुए चक्रवर्त्ती राज्य करके आनन्द का निरन्तर भोग करें ।

हे विद्वांसो यदि राजा श्रेष्ठस्य, विदुषां वा निन्दां कुर्य्यात्तदैव भवद्भिर्निरोद्धव्यः सर्वेषां राजकर्म्मणां सिद्धये समयव्यवस्था कार्य्या यदा-यदा यत् यत्कर्म कर्त्तव्यं भवेत्तदा तदा तत्तत्कर्म्म कर्त्तव्यमिति राजोपदेष्टव्यो यदा मित्रद्रोहमाचरेत्तदैव शिक्षणीय एवंकृते राजप्रजयोः सततमुन्नतिर्भवेत् ॥१५॥

हे विद्वानो जो राजा श्रेष्ठ वा विद्वानों की निन्दा करे वह आप लोगों से रोकने योग्य है और सब राजकर्मों की सिद्धि के लिये समयव्यवस्था करनी चाहिये और जब २ जो जो कर्म करना हो तब तब वह वह कर्म करना चाहिये। इस प्रकार राजा को उपदेश करना चाहिये जब मित्रद्रोह का आचरण करे तभी उसको शिक्षा देनी चाहिये ऐसा करने पर राजा और प्रजा दोनों की निरन्तर उन्नति होवे ॥ १५ ॥

हे मनुष्या यथा पृथिव्या अर्द्धे भागे विद्युत् सूर्य्यरूपेण विराजतेऽपरे भागे रात्रावप्यन्तर्हिता चरति तथैव शयनजागरणे नियमेन विधाय पुरुषार्थं कृत्वा वीर्य्यं वर्धयित्वा शतायुषस्सन्तः

हे मनुष्यो ! जैसे पृथिवी के जली सूर्य्यरूप से शोभित होती है और रात्रि के समय छिपी हुई चलती है वैसे ही शयन और जागरण नियम से कर और पुरुषार्थ कर के वीर्य बढ़ा के सौ वर्ष की अवस्थायुक्त हुए सब को आनन्द दीजिये ॥१६॥

हे मनुष्या यथा शुद्धा आपः सुखकारिण्योऽशुद्धा दुःखप्रदा भवन्ति तथैव शुभगुणसङ्गआनन्दप्रदो दोषसङ्गो दुःखप्रदश्च भवति। यथैश्वर्य्यवान् धार्मिको जनः कृपया बुभुक्षितादीन् पालयति तथैव सज्जनाः सर्वान् रक्षन्ति ।१७

हे मनुष्यो जैसे शुद्ध जल सुखकारी और अशुद्ध दुःख देने वाले होते हैं वैसे ही उत्तम गुणों का संग आनन्ददायक और दोषों का संग दुःख देने वाला होता है। और जैसे ऐश्वर्य्ययुक्त धार्मिकजन कृपा से बुभुक्षित आदि का पालन करता है वैसे ही सज्जन लोग सब की रक्षा करते हैं ॥१७॥

ते एव धीमन्तो विज्ञेया येऽन्यायेन कस्यचिद्वस्तु दुष्टवेशं हिंसकसङ्गं न्यायेन प्राप्तस्य धनस्याऽन्यथा व्ययं दुष्टबन्धोः सङ्गं शत्रुविश्वासमकृत्वाऽऽनन्दं भुञ्जीरन् ॥१८॥

उन्हीं लोगोंको बुद्धिमान् समझना चाहिये कि जो अन्याय से किसी का वस्तु दुष्टवेश हिंसा करने वाले का संग न्याय से प्राप्त हुए धन का व्यर्थ खर्च दुष्ट बन्धु का संग और शत्रु का विश्वास नहीं करके आनन्द का भोग करें ॥१८॥

वही लोग बुद्धिमान् कहला सकते हैं जो सबकी भलाई का सदा ध्यान रखते हैं, दूसरों के दुःख में सहायक होते हैं—जो विद्वानों का सदा सत्कार करते हैं, जो कभी आलस्य नहीं करते, प्रत्येक मनुष्य उक्त कर्त्तव्य कर्म पर पूरी तरह ध्यान दे और उन पर

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

...ादयः पृष्ठैर्भारं वहन्ति तथैव बलिष्ठा ...व्यवहारभारं वहन्ति व्यवहारे यस्य ...स्य मण्डनं कर्त्तव्यं स्यात्तत्तस्य तथैव ॥११॥

...टा आदि पीठों से भार को ले चलते हैं ...तिमान् पुरुष सब व्यवहार के भार को ...हैं। और व्यवहार में जिसका खण्डन ...मण्डन करने योग्य होवे वह उसका ...ना चाहिये ॥११॥

...येऽध्यापकोपदेशका बुद्धिमतोऽध्या...शन्ति तान्तमदेव सत्कुरु यतो मनुष्या ...कर्मस्वभावाः स्युः ॥१२॥

...ष्यो जो अध्यापक और उपदेशक लोग ...रुषों को पढ़ाते और उपदेश देते हैं उनका ...कार करो जिससे कि मनुष्य लोग आश्चर्य...र्म और स्वभाव वाले होवें ॥१२॥

...आलस्यं विहाय शरीरादिभिः पुरुषार्थ ...राय प्रजाराज्ययोर्धर्म्येण नियमः ...न सर्वे आढ्याः स्युः ॥१३॥

...को चाहिये कि आलस्य त्याग के शरीरा...पार्थ को सदा ही करके प्रजा और राज्य ...नियम करें जिससे सब लोग धनयुक्त

...र्य्यैर्धर्म्याणि कर्माणि कृत्वा 'विद्यायां ...रुचिं जनयित्वा पवित्रतां कामयमाना ...ा वर्धमाना, विद्युदादिविद्य मुन्नय...कृत्वानन्दः सततं भोक्तव्यः ॥१४॥

...र्यों को चाहिए कि धर्मयुक्त कर्मों को ...और सभा में प्रीति उत्पन्न करके पवित्रता

हमें उस (गातुवित्तमः) उत्तम पथ-प्रदर्शक के (अदर्शि) दर्शन हुए (यस्मिन्) जिसके सम्मुख (व्रतानि) [व्रतीजन] व्रत (आदधुः) धारण करते रहे हैं। (नः) हमारे (गिरः) उद्गार (सु-जातम्) भली प्रकार प्रकट हो चुके, (आर्यस्य वर्धनम्) आर्य जन को बढ़ानेवाले (अग्निम्) अग्नि-देव को (उप उ) पास जाकर निश्चय से (नक्षन्तु) प्राप्त कर लें।

आर्यो! बधाई हो। तुम्हारी कल्पना पूरी हुई। तुम्हारी साधना आज सफल है। हमें आज अग्नि-देव के दर्शन हो रहे हैं। संसार की सम्पूर्ण गति का कारण अग्नि-देव है। भौतिक तथा आध्यात्मिक—जो भी क्रिया संसार में हो रही है, उसमें अग्नि-देव व्याप रहा है। प्रत्येक क्रिया यज्ञ है और यज्ञ का अधिष्ठाता अग्नि देव है। कहीं भौतिक अग्नि है, कहीं मानसिक। अन्न बल बन रहा है, बल ज्ञान। एक अग्नि दूसरी अग्नि की सहायक है। संसार का क्रिया-कलाप निरर्थक नहीं है। भिन्न-भिन्न शक्तियाँ अपने-अपने संग से काम कर रही हैं। परन्तु हैं सभी एक सूत्र में बँधी हुई। संघर्ष प्रच्छन्न सहयोग है। शक्तियां लड़ती हैं परन्तु इस लड़ने का परिणाम संयुक्त क्रिया ही हो जाती है। इसका कारण यज्ञ है। शक्तियों के युद्ध यज्ञ-रूप हैं। इनके पीछे इनकी प्रत्येक गति को जानने वाला कोई 'गातुवित्तम' देव है जो इन्हें हाथ पकड़-पकड़कर आगे ले जारहा है। वह पूर्ण पथ-प्रदर्शक देव अग्नि है—यज्ञ का अधिष्ठाता। हमें आज उसके दर्शन हो गए हैं। हम समझ गये हैं कि ब्रह्माण्ड की सत्ता का सूत्र यज्ञ है। हमने आज यज्ञाग्नि का पल्ला पकड़ा है। उसे अपना गुरु—मार्ग-दर्शक बना लिया है।

सभी शुभ-सङ्कल्प, सभी व्रत, सभी प्रतिज्ञाएँ अग्नि के सम्मुख की जाती हैं। यज्ञ की वेदी पर किया गया व्रत पवित्र होता है। अग्नि-देव को व्रतपति-व्रतों का रक्षक—कहा जाता है। हमारे छोटे से यज्ञ की आग विश्व-याग की व्यापक आग का उपकरण-मात्र है। ब्रह्माण्ड यज्ञ-स्थली है। उसमें सब ओर व्रत-ही-व्रत किए जा रहे हैं। सूर्य ने व्रत ले रखा है। चन्द्र का व्रत है। हवा व्रत से चल रही है। सब अपनी-अपनी मर्यादा में स्थिर हैं। ये सब व्रत अग्निदेव के समक्ष किए गए हैं। सूर्य का व्रत अग्नि की कृपा से पालित हो रहा है। यदि अग्नि एक क्षण के लिए विश्वयाग को स्थागित करदे तो चाँद का व्रत धरा का धरा रह जाए। हवा भी दम खैंचे रह जाए। पानी चलने से रुक जाए। व्रतों की रक्षक अग्नि ही है। किसी भी व्रत की सफलता का निश्चय उसी समय हो सकता है यदि उसे यज्ञरूप दे दिया जाए। व्यक्तियों के व्रत समष्टि के व्रत का अङ्ग हों। विश्व के ये व्रती अपने व्रतों का आधान यज्ञाग्नि में कर चुके। आओ आर्यो! हम भी अपने व्रतों का आधान यज्ञाग्नि में करें। हम अहिंसा की, सत्य की, शौच की, सन्तोष की, अस्तेय की, ब्रह्मचर्य की, अपरिग्रह की, तप की स्वाध्याय की, ईश्वर-प्रणिधान की प्रतिज्ञा करें और [illegible] व्रतों को अग्नि में आहुत कर दें।—इदमग्नये

इदन्न मम

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः॥
साम० ३। ४७॥

विकारों पर विजय

श्रीयुत् लालचन्द जी

विकारों के चिन्तन से, विकारी मन होता है।
होती जय विकारों की, चिंतित मन होता है॥ १॥
चाहे हो इच्छा कि विजयी, बनूं विकारों पर।
विकार ही प्रबल होते, दुर्बल मन होता है॥ २॥
कैसे फिर विकारों पर, विजय की आशा हो।
विफल जब निश्चय हो, दबा मन होता है॥ ३॥
चिन्तन से विकारों के विकारी ही रहेंगे हम।
विकारों से अलग हो, अविकारी मन होता है॥ ४॥
स्थिति को बदले बिना, त्राण नहीं मानुज का।
संग के दोष से, दुर्बल हुआ रोता है॥ ५॥
जिस किसी कारण से, विवश हो अपने में।
मनुज नित अपनी ही, आन सदा खोता है—॥ ६॥
ऐसी अवस्था से, दूर हुए बिना कभी।
आत्म सम्मान का अंकुर, नहीं होता है॥ ७॥
जिन के नित संग से, दोष को उत्साह मिले।
उन के ही संग में, क्यों आन गंवा रोता है॥ ८॥
सच्ची कल्याण मयी भावना, जगे उर में।
उसके विकास हेतु, यत्न जभी होता है—॥ ९॥
स्थिति पर विजय तभी होती है मानुज की।
ज्ञानमयी बुद्धि में, सत्य स्थिर होता है॥१०॥
व्यापक एक प्रीतम की, भावना बनी रहे।
अन्धकार मानस का, दूर तभी होता है॥११॥
जितने हैं विकार सभी, अन्धेरे में होते हैं।
प्रभु के प्रेम का, प्रकाश जभी होता है॥१२॥
राग, अनुराग, ममता, सभी दूर भगें।
आसक्ति के पाश का, विनाश तभी होता है॥१३॥
पुरुषार्थी मानुज में, लगन हो श्रेय की।
ऋत और सत्य का, ज्ञान तभी होता है॥१४॥
विकारों की सैन्य का, पराजय भी तभी ही।
सचेत शुद्ध बुद्धि में, दृढ़ता से होता है॥१५॥
स्थिरता को पाय सदा, विवेक में प्रवीण हो।
नित्य सत्कर्म में, आनन्द मग्न होता है॥१६॥
हृदय विहारी फिर नित्य, हो प्रकट उसके।
मानस में, उज्ज्वल, प्रकाश नित होता है॥१७॥
विकारों की ओर कभी, जाती नहीं मनोवृत्ति।
प्रभु के आगे जो, प्रेम बीज बोता है॥१८॥
राग से अलग, द्वेष, के निकट नहीं।
सीधे सरल जीवन में, नेम सदा होता है॥१९॥

इदन्नमम। हमारे कर्म का फल स्वयं फल-दाता को मिले। हम फल की आकांक्षा छोड़ दें।

हमारे व। हमारे जीवन के उद्गार हैं [illegible]

ही स्वयं वाणी-द्वारा प्रकट हो जाता है। हमारी प्रत्येक क्रिया की हो। हमें अनाय[illegible] का अभ्यास हो। अग्नि-देव के अर्पण [illegible] अनायास ही पूरे होने लगते हैं। मनुष्य की कामना छोड़ दी, तो वह भिखारी नहीं [illegible] गया। वह सत्कर्म करता है, केवल इस[illegible] उसका कर्त्तव्य है। सत्कर्म न करे तो वह [illegible] से ही च्युत हो जाए। जैसे श्वास-प्रश्वा[illegible] उन्मेष अपने आप हो रहे हैं, कोई इन[illegible] लेना, इसी प्रकार उद्गार रूप में किए गए [illegible] कर्त्ता की दृष्टि में, कोई मूल्य नहीं होता वह सत्कार्य ही है, परन्तु उसमें उसकी बुद्धि की ही होती है। यह अवस्था होते ही कर्म लिप्यते नरे' इस वेद-वाक्य को स[illegible] में चरितार्थ कर लेता है।

वास्तव में आर्य ऐसे ही मनुष्य को आर्य वह है जो आर्य का हो—स्वामी का। का हो गया—जिसने अपना सर्वस्व स्वामी [illegible]र्पण कर दिया,—भक्ति-भाव के उस पुतले [illegible] तो है ही उद्गार। उसकी प्रत्येक क्रिया साईं [illegible] है, प्रभु उसको बढ़ाता है, और वह प्रभु को।

उसे सचमुच अग्नि-देव के दर्शन हो ग[illegible] भली प्रकार प्रकट। उसे झाँकी नहीं, पूरा दर्श[illegible] है। उसे प्रतिक्षण सत्कर्म के लिए प्रोत्साह[illegible] रही है। बढ़ावा मिल रहा है। इस बढ़ावे में उसे देव की अनुभूति होती है। बढ़ावा स्वाभाविक [illegible] उसे कर्त्तव्य-पथ पर प्रतिक्षण आगे-ही-आगे रहा है। उसका समस्त जीवन इस बढ़ावे क[illegible] है। उद्गार अग्नि को व्याप रहा है। अग्नि उद्[illegible] स्तोता और स्वामी एक दूसरे के अत्यन्त नि[illegible] गए हैं। क्रियात्मक स्तुति ने भक्त को भग[illegible] मिला दिया है। इस मधुर-मिलन में सन्देह [illegible] सन्त का उद्गार अग्निमय है।

आओ आर्य जनो! हम अपने जीवन को [illegible] उद्गार बनाएँ। अग्नि-देव के दर्शन तो हमें भी [illegible] चुके हैं। 'गातुवित्' की अनुभूति हमें अपनी ग[illegible] में हो रही है। हमारे जीवन की कितनी चेष्टा[illegible] हैं जिनका हमें ज्ञान भी नहीं, परन्तु इनका प[illegible] शुभ है, मंगल है उन चेष्टाओं का सूत्रधार वही देव है। वह दीख रहा है, स्पष्ट दीख रहा है। औ[illegible] गुप्त रहे तो रहे, आग की ज्वालाएँ कैसे छि[illegible] सकती हैं? अब यदि कसर है तो यह कि जीवन उद्गार नहीं हुआ। हमने उसे अग्निदेव के नही किया। हम सच्चे "आर्य" नहीं बने। आ[illegible] है जो आर्य का—अग्नि-देव का—हो। आओ जीवनों को अग्नि के उद्गार बना दें। जाज्व[illegible] ज्वालाएँ बना दें। ज्वालाएँ अग्नि को व्याप [illegible] लें, उसी की अंगमय बन जाएँ। यज्ञ हमारा [illegible] यज्ञ के।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार २०भाद्रपद
वि०सं० २०००

र्य समाज में प्रवेश-संस्कार

समय आर्य समाज का सभासद् बनने से शन-पत्र पुर कराने की प्रथा समाजों में प्रच- । उस प्रवेश-पत्र पर प्रवेशार्थी के हस्ताक्षर । उसका व्यवसाय तथा धंधा लिखा होता है। माज के किसी पुराने सभासद् से प्रवेश-पत्र किया जाता है। ११ मास बीतने पर उस समाज का सभासद् अङ्कित किया जाता प्रतिवर्ष वार्षिक चन्दा देने पर रोटीन के घोषणापत्र भरने पर, या कई स्थानों में इसके वह व्यक्ति समाज का सभासद् बनकर कार्य । यदि कोई सभासद् कई कारणों से कई वर्षों ी आर्य समाज का सभासद् नहीं बनता— र अचानक आर्य समाज का सभासद् बनना ई तो उसे प्रवेश-फार्म भरने की आवश्यकता ी वह केवल मात्र वार्षिक चन्दा देकर आर्य का सभासद् बन जाता है।

मान्य युग में सामाजिक वा राजनैतिक क्लबों र क्या सभासद् इसी ढंग से बना जाता है। इस आर्य समाज को एक सामाजिक संस्था all Club) का रूप दे दिया है। इस में भाग सद सातवें दिन या उत्सव विशेषों में मिलते रहते हैं। इस से अधिक परस्पर परि- उन्हें अवसर नहीं मिलता। इन अवसरोंमें भी ई कार्य क्रम नहीं रखा जाता जिससे सब जन्म मूलक ऊंच नीच तथा सांसारिक दृष्टि मान्य भेद भावों को छोड़ कर समान भ्रातृभाव सकें, परमात्मा के सामने, संघ की उपस्थिति एक दूसरे को धर्म भाई या एक बिरादरी का सक सकें। इस कमी को अनेक आर्य भाई करते हैं। इसको दूर करने के लिये आर्य बनाना तथा जन्ममूलक जातिपांति को न आदि अनेक उपाय किये जाते हैं परन्तु इसमें नहीं होती। जिन छोटी जाति तथा अस्पृश्यों न्तर से आने वालों का समाज को सभासद् बनाया जाता है, वही समयान्तर में नव आर्य य' आर्य संघ के रूप में पृथक् श्रेणी में हो जाते हैं, क्योंकि इन लोगों को आर्य के सभासदों के साथ समान रूप से भ्रातृभाव करने बैठने का अवसर सिवाय साप्ताहिक या वार्षिकोत्सवों को नहीं मिलता। कई बार या अन्तर्जातीय सहभोजों द्वारा परस्पर व बढ़ाने का यत्न किया जाता है परन्तु यह नु भी कोई स्थायी प्रभाव पैदा नहीं करते। सम्मति में यह सब प्रयत्न वृक्ष के मूल को सींचने के स्थान पर उनकी शाखाओं और पत्तों को पानी से सींचने के बराबर है।

हमारी सम्मति में आर्य समाज में प्रविष्ट होते समय केवल मात्र प्रवेश-फार्म पुर कराकर ही बस नहीं करना चाहिए। हरेक प्रवेशार्थी को संस्कार विशेष में से दीक्षित करके सभासद् बनना चाहिए। उस संस्कार में संस्कृत व्यक्ति किसी जाति का हो—समाजमें आर्य गिना जायगा। उसे सब अधिकार समान रूप से दिये जायेंगे। यह संस्कार क्या होना चाहिए। इसका स्वरूप क्या होना चाहिए। इस पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

हम आर्य जनता के विचारार्थ इस प्रवेश संस्कार के लिये निम्नलिखित विधान प्रकाशित करते हैं और आशा करते हैं कि आर्य भाई इस विषय में अपने विचार प्रकट करेंगे।

(१) प्रत्येक प्रवेशार्थी को—या इस समय आर्य समाज में अंकित आर्य सभासद् को आर्य समाज के स्थापना दिवस पर आर्य समाज के १० नियमों तथा गायत्री मंत्रों का जप करना चाहिए और प्रत्येक प्रवेशार्थी को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। तथा कथित—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा किसी भी पढ़े लिखे व्यक्ति को ऋषि दयानन्द ने यज्ञोपवीत तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिया है। इस पर क्रियात्मिक रूप से अमल होना चाहिए। तथोक्त चमार, जाट, क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्य शूद्र सब को अक्षर ज्ञान तथा गायत्री मंत्र स्मरण कर लेने पर यज्ञोपवीत देने की प्रथा चलानी चाहिए। यह मिथ्या प्रचार किया जा रहा है कि शूद्रों को यज्ञोपवीत नहीं देना चाहिए। यज्ञोपवीत को आर्य जाति की विविध श्रेणियों में भेद सूचक चिह्न न बनाकर शिखा या चोटी की भांति आर्य जाति तथा आर्य संस्कृति अभिमानी व्यक्तियों का साधर्म्य सूचक चिह्न बनाना चाहिए।

यह बात केवल पुरुषों तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। देवियों को भी यज्ञोपवीत धारण कराकर विद्या तथा गायत्री मंत्र में दीक्षित करना चाहिए। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र जिन तीन ऋणों—पितृ ऋण ऋषि ऋण और देव ऋण का संकेत करते हैं वह मनुष्य मात्र के साथ सम्बन्ध रखते हैं। इन तीनों ऋणों से उऋण होने का यत्न हरेक को करना चाहिए—इसलिये इस ऋणों के संकेत चिह्न को मनुष्य-मात्र के शिक्षित तथा गायत्री मंत्र से दीक्षित होने का चिह्न मानना चाहिए। इस समय आर्य समाज में जो बहुत ज्यादा अंग्रेजी पढ़ गये हैं—वह जनेऊ को फैशन की दृष्टि से अनावश्यक समझते हैं। जो अशिक्षित हैं—उन्हें कई आर्य समाजी शूद्र-अछूत समझ कर यज्ञोपवीत से वंचित करते हैं। यह दोनों प्रवृत्तियां दोष पूर्ण हैं। आर्य समाज में प्रविष्ट होने वाले हरेक आर्य स्त्री पुरुष को गायत्री मंत्र तथा आर्य समाज के १० नियमों का स्मरण करते हुए यज्ञोपवीत पहनना चाहिए। इस प्रवेश संस्कार में आर्य समाज की स्पिरिट तथा आत्मा-प्रवेशार्थी के हृदय पर विशेष रूप से अङ्कित करनी चाहिए। इस समानता के स्थापित होने पर आर्य समाज Social Club न रहेगा—वह धुन के धनियों का आर्य सभ्यता के पुजारियों का प्रचारक संघ बन जायगा।

क्रमशः

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती दिवस

आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने देश की समस्त आर्य समाजों को आदेश दिया है कि वह अपने २ स्थानों में ५ सितम्बर को सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाएं। इस दिन ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिखना प्रारम्भ किया था। आज वह सत्यार्थ प्रकाश अपनी सचाई के कारण देश के संकीर्ण सम्प्रदायों की आंखों में खटक रहा है। इन सम्प्रदायों के अदूरदर्शी नेता—इस ग्रन्थ की सचाई को स्वीकार करने के स्थान पर क्रोध वश इस ग्रन्थ की रचना को मिटाने के मनसूबे बांध रहे हैं। युक्ति और तर्क में हारे हुए व्यक्ति की भांति वह सांसारिक शक्ति के द्वारा इसको कुचलना चाहते हैं। इन विरोधियों को हम यह बताना चाहते हैं कि संसार का अनुभव यह बताता है कि सचाई को जितना दबाने का यत्न किया जायगा वह उससे दुगने वेग से जनता के सामने आती है। जितना उसको बंधनों में जकड़ने का यत्न किया जायगा वह उतनी ही प्रबलता से बाहर निकलना चाहेगी। अंग्रेजी, फ्रैंच, जर्मन भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद हो चुका है। भारतवर्ष की मुख्य २ प्रान्तीय भाषाओं में इसके अनुवाद छप चुके हैं। ब्रिटिश सरकार तथा पटियाला रियासत के अधिकारी इस पुस्तक को राजद्रोही प्रमाणित कर जब्त करनेके यत्नमें विफल हो चुके हैं। इसलिये आर्य समाजों को सत्यार्थ प्रकाश जब्ती की संभावना पर तो चिन्तित नहीं होना चाहिए। हां, वर्तमान सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दोलन से यथाशक्ति अधिक से अधिक लाभ उठाने का यत्न करना चाहिए। O God give us worthy enemy. के अनुसार हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमें अपने कर्त्तव्य पालन की ओर ध्यान देने का उत्तम स्वर्णीय अवसर दिया है।

सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती के दिन आर्य पुरुषों को चाहिए कि इसके वार्षिक पारायण का संकल्प करें। अपने २ समाजों में इस दिन सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में व्याख्यान कराएं। सम्भव हो तो सत्यार्थ प्रकाश की कथाएं कराएं। सत्यार्थ प्रकाश का मुफ्त प्रचार कराने, सत्यार्थ प्रकाश का सस्ता संस्करण निकालने के लिये धन संग्रह करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पं० चमूपति जी द्वारा अनुवादित सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू संस्करण ५००० की संख्या में छपवा रही है। उसके लिये कागज़ तथा छपाई के लिये धन संग्रह करें।

आशा है आर्य भाई सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती मनाकर विरोधियों के सत्यार्थ प्रकाश विरोधी आन्दोलन का यथोचित उत्तर देंगे।

—भीमसेन

शेष ६ पृष्ठ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अग्नि में तेज है, प्रकाश है, संशोधन शक्ति है, जीवन है, प्राण है, प्रगति है। वायु में जीवन है, बल है, प्राण है। सूर्य में प्राण है, प्रकाश है, तेज है, पवित्रता है; किन्तु यह सौभाग्य चंद्र को ही प्राप्त है कि वह आनन्दमय है। परमात्मा के सब नामों में आनंद का द्योतक नाम चंद्र ही है।

प्राकृतिक तौर पर चंद्र सबको नैसर्गिक आनन्द देता है। बालक चन्द्र से प्रसन्न हैं देवियां चन्द्र के गीत गाती हैं।

अंधेरी निशा में चन्द्र की प्रभा ही शीतलमंद सुगन्ध पवन के झोंकों के साथ जीवन रस का संचार करती है। पर्वतों पर छिटकी हुई चांदनी एक विचित्र छटा दिखाती है। नदी के प्रवाह में नौका में भ्रमण करते हुए चांद की चांदनी में जो चित्त प्रसन्न होता है, वह सुख नहीं कहा जा सकता वह अलौकिक आनन्द है। जंगल में खुले मैदान में अथवा घर की छत पर ही खिली हुई चांदनी में जिस किसी ने कभी आनन्द के कारण का चिंतन किया हो, तो चित्त विवश होकर आनन्द के स्रोत में डुबकी मारता प्रतीत होता है, चित्त की चंचलता शांत होकर मन में गंभीरता, हृदय में प्रेम और नेत्रों के सामने असीम आकाश जगत कर्ता के असीम कौशल को दर्शाता है।

ऐसे भाव जो मन को एकाग्र, चित्त तथा मस्तिष्क को स्वस्थ, मस्तिष्क को शांत, हृदय को विशाल और वदन को प्रफुल्लित करते हैं आनन्द कहलाते हैं।

परमात्मा सत् चित् आनन्द है। जीव सत् और चित है। प्रकृति सत् है। आनन्द पूर्णता का द्योतक है। जब मनुष्य का हृदय गद्गद् प्रसन्न होता है, जब हृदय कमल खिलता है, भय और त्रास दूर होते हैं और चित्त स्थिर होता है तो वह दशा आनन्द की सूचक है।

आनन्द आत्मा से संबंध रखता है, सुख इन्द्रियों तक रह जाता है किन्तु यह भेद बहुत सूक्ष्म है। प्रायः लोग इन्द्रिय जन्य सुख को ही आनन्द मानते हैं।

जिसे प्रायः लोग आनन्द कहते हैं वह क्षणिक सुख है, वह नश्वर है। आनन्द स्थायी है। प्रेमी हो आनन्द अनुभव कर सकता है। आनन्द का रसास्वादन शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार मन की पवित्रता का कोई आकार नहीं। किन्तु अनुभव होता है उसी प्रकार आनन्द का आकार नहीं पर अनुभव होता है। आनन्द-स्वरूप परमात्मा का नाम है। परमात्मा एक रस, अद्भुत, शुद्ध शिव और सुन्दर है, किन्तु यह सब बात एक शब्द में आ जाती हैं, यदि हम यह कहें कि परमात्मा प्रेममय हैं। प्रेम में अद्भुतता सौन्दर्य, पवित्रता, सरसता, और सरलता, सभी गुण हैं। प्रेम से पवित्रता हटालें तो वह मोह रह जाता है। इसी प्रकार आनन्द में जो नैसर्गिक अमृत है वही उसे पार्थिव पदार्थों के द्वारा

आनन्द

(श्रीयुत् रा.सा. लालचन्द जी)

होने के कारण उनके द्वारा होने वाले सुख और दुःख भी स्थायी नहीं हैं। किन्तु आनन्द के स्रोत से प्रेम धारा जब बहने लगती है तो ज्यूँ ज्यूँ स्थल को छूकर चलती है साथ ही प्रलोभन रूपी मल को बहा ले जाती है। आनन्द स्रोत से प्रेम की अजस्र धारा इस वेग से बहती है कि सब मनो विकार और चित्त के रोग दूर हो जाते हैं। फिर मनुष्य के शुद्ध अन्तःकरण में आत्मा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है। मनुष्य का अन्तःकरण मैले दर्पण की भांति मोह, द्वेष, आदि के कारण उतना साफ़ नहीं रहता जो उसमें आनन्द का अनुभव ठीक २ हो सके। यही कारण है कि प्रायः मनुष्य आनन्द के अस्तित्व तक को भूल जाते हैं और सदैव निराशा सूचक शब्द उच्चारण करते हैं, और वैसा ही व्यवहार करते हुए दिखाई देते हैं।

आशावाद और आनन्द का घनिष्ट सम्बन्ध है—उत्साही, संयमी और यत्नशील ही जीवन संग्राम में विजयी होकर आनन्द प्राप्त करते हैं। जो लोग सदा भयभीत रहते हैं, जिन्हें पग पग पर त्रास दिखाई देते हैं वे न तो जीवन में सफलता लाभ करते हैं और न जीवन के रहस्य को समझ सकते हैं।

जीवन भी एक पहेली है। एक बड़ी विकट समस्या है। ऐसा अनुभव में आया है। जिसे प्रायः जीवन समझा जाता है वह वास्तव में विषयपरायणता होती है और उस का परिणाम दुःख हुआ करता है। आनंदमय प्रेममय परमात्मा की सृष्टि कदापि दुःख का कारण नहीं हो सकती। कर्तव्य में अपने इष्ट देव की आज्ञा की पूर्ति देखता है और सदैव प्रत्येक पूर्ण श्रद्धा और प्रेम के साथ करता है।

कर्म पथ के यात्री के लिए श्रद्धा और प्रे अधिक साथी और कोई नहीं हो सकते। सीध सदैव सुगम होता है। जिन गृहस्थों का जीवन मि मित है उन्हें जीवन आनन्दमय ही दिखाई दे उस में कभी संकीर्णता और तुच्छता के लिये ही नहीं और ना ही कर्त्तव्य-परायण को इन कुल्ल में पड़ने का समय ही है।

यदि हम उन्नत समाज चाहते हैं तो हमें उन्नति में कटिबद्ध होना चाहिये। यदि ह चाहते हैं कि संसार में बली निर्बलों पर अत्याच करें तो पहिले हमें अपने अन्दर संशोधन चाहिये।

परमात्मा की सुंदर सृष्टि में उनके अनुपम का अनुभव करना आनंद का मूल मंत्र है।

आनंद परमात्मा की देन है। आत्म अर्पण से परमात्मा की प्रसन्नता लाभ होती है।

जो मन परमात्मा के अर्पण हो चुका है निश्चित आनंद के स्रोत से आनंद लाभ करत उस मन में समुद्र की गंभीरता, वायु का वेग की ज्योति और सूर्य के प्रकाश की झलक दिखाई है और चन्द्र की प्रभा की आभा झलकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

बंगाल रिलीफ

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने बंगाल रिलीफ के लिये आर्य समाजों से अपील की थी। इसके जवाब में आर्य्यसमाजों से चिट्ठियां प्राप्त हो रही हैं कि उन्होंने बंगाल रिलीफ के लिये काम करने का निश्चय कर लिया है। फलतः आर्य्यसमाज लुधियाना (दाल बाज़ार), ने एक सौ, आर्य्यसमाज कपूरथला ने एक काफी तादाद के लिये आर्य्य समाज रावलपिण्डी ने ५० आर्य्यसमाज पठानकोट ने २५ आदमियों के लिये पालन पोषण करने का प्रबन्ध कर लिया है इस तरह पंजाब केन्द्रिय अनाथालय रावी रोड लाहौर ने ५० लड़के और ५० लड़कियों के ठहराने का इन्तज़ाम कर लिया है। इस तरह मैसर्ज़ हुकमचन्द राजकुमार जालन्धर निवासी ने ५० आदमियोंको अपने अपाहज आश्रम में ठहराने का प्रबन्ध कर लिया है।

मन्त्री

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर।

—गढ़ मुक्तेश्वर कन्या गुरुकुल में श्रावणी पवित्र पर्व पर कन्याओं का प्रवेश तथा पवीत व वेदारम्भ संस्कार गुरुकुल की अ श्रीमती सरलादेवी जी सरस्वती की अध्यक्ष हुआ। संस्कार के अन्त में देवी जी ने क को उपदेश देते हुए कहा कि कन्याएं मा की सच्ची सेवा करें। इसके पश्चात् गु के अधिष्ठाता श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी विद्यावा ने दानी महानुभावों से अपील की कि इस हमारे सामने मकान सम्बन्धी कठिनाइयां हैं है कि देश के धनी मानी सज्जन इस ओर देंगे।

—श्री घनश्यामदास आर्य–वैदिक विद्यालय रिया गोरखपुर में इस वर्ष १० नवीन छात्र तथा ५ निःशुल्क छात्र लिये जावेंगे। छात्र की ८ से १२ वर्ष—योग्यता कम से कम दर्जा ती होनी चाहिये। विद्यालय में ऋषि दयानन्द प्र आर्य पाठ विधि के अनुसार पढ़ाई होती है। प्रविष्ट होने वाले छात्रों का चार मास का (प्र काल का) सब व्यय १०) मासिक के हिस संरक्षक को देना होगा।

प्रार्थना पत्र भाद्र पद मास के अन्त में तदनुस सितम्बर १९४३ तक आचार्य के पते से चाहिएं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लियस का पिता बहुत गरीब था। उसने मरने
ाय इलियस के लिये कुछ भी नहीं छोड़ा था।
इलियस ने अपने परिश्रम के बल सात घोड़े
यां और बीस भेड़ें पैदा कर लीं। दिन-पर-दिन
नवरों की संख्या बढ़ती ही जाती थी। इलियस
ी भी कम परिश्रम शीला नहीं थी। दोनों
से शाम तक लगातार परिश्रम करते, देर से
और सवेरे उठते थे। इस प्रकार दिन-पर-दिन
धन बढ़ने लगा।

छ ही वर्षों के बाद इलियस के पास दो सौ
डेढ़ सौ गाय-बैल और बारह सौ भेड़ें हो गयीं
ी रक्षा और सेवा के लिये उसने बहुत से नौकर
ये। इलियस की धन-वृद्धि देखकर पड़ोसी
डाह किया करते और कहते थे कि, इलियस
वान् है, उसे सब कुछ है, इत्यादि।

इलियस के बहुत से मित्र भी थे। उसके यहाँ
र अतिथियों का ताँता बंधा रहता था, जिनका
थोचित रीति से आदर-सत्कार किया करता था।
दिन इसी प्रकार बीतते जाते थे।

कुछ दिनों के बाद प्लेग से बहुत से भेड़ें मर गयीं।
साल गरमी से घास भी झुलस गयी। घास की
से भी उसके बहुत से जानवर मर गये। कुछ
के बाद उसके बहुत से अच्छे-अच्छे घोड़े चोरी
ये।

इस प्रकार इलियस दिन-पर-दिन गरीब होने
। अब उससे अधिक परिश्रम भी नहीं होता था।
वर्ष की उम्र में उसने अपना घर-द्वार तक बेच
और बुढ़ापे में दूसरों की सेवा द्वारा पेट पालने
ाध्य हुआ; परन्तु उसे कोई पूछने वाला भी तो
था। कई दिनों तक स्त्री-सहित भूखों रहने के
उसके पड़ोसी मुहम्मद शाह को उसपर दया आ
। उन्होंने बुलाकर कहा—"तुम लोग आकर
ी घर क्यों नहीं रहते? गरमी में फुलवारी का
करना और जाड़े में मवेशियों को खिलाना-
लाना। मैं तुम्हें खाने-पहनने को दूंगा तथा अन्य
श्यकताओं को भी यथासाध्य पूर्ण कर दिया
गा।"

इलियस ने अपने पड़ोसी को धन्यवाद दिया
अपनी स्त्री के साथ उन्हीं के घर पर रहने लगा।
ो उसे कुछ बुरा मालूम हुआ; परन्तु कुछ ही
में अभ्यस्त हो गया। वे दोनों यथासाध्य
मन्दशाह का काम करते और उनसे खाना कपड़ा
रहते थे। इसी प्रकार उनकी जिन्दगी के दिन
ने लगे।

एक दिन मुहम्मद शाह की आज्ञा से उन अति-
ों के लिये इलियस ने एक भेड़ मार कर मांस
या मुहम्मद शाह अपने मेहमानों के साथ बैठे हुए
ल्लड़ा रहे थे। तब तक किसी कार्यवश इलियस
के कमरे के सामने से निकल गया। उसे देख
मुहम्मद शाह ने अपने अतिथियों में से एक से

सुख की खोज

[पाण्डेय जगन्नाथप्रसाद सिंह]

कहा—"क्या आपने उस बूढ़े को देखा है, जो अभी इधर से गुज़रा है? वह एक समय यहाँ सबसे धनी मनुष्य कहा जाता था। शायद आप उसे जानते भी होंगे। उसका नाम इलियस है।"

"अवश्य! अवश्य!! मैंने उसे कभी देखा नहीं परन्तु उसका नाम तो बहुत दूर तक विख्यात है।"

"परन्तु अब वह बहुत गरीब हो गया है। अपनी स्त्री के साथ हमारा काम किया करता है।"

अतिथि को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा—"धन उस चलती चक्की के समान है, जो एक मनुष्य को बहुत ऊंचा उठा देती है और दूसर को बहुत नीचे गिरा देती है। क्या इलियस को इसके लिये अफसोस नहीं है?"

"यह तो मैं नहीं कह सकता। हाँ, मैं इतना जानता हूँ कि, वह शान्त स्वभाव का आदमी है; और, काम भी ईमानदारी के साथ करता है।"

क्या आप मुझे उससे उसके जीवन के बारे में बात-चीत करने की इजाज़त दे सकते हैं?"

"हाँ, हाँ, आप उससे शौक से बातें कर सकते हैं। चलिये, भीतर चलें। वहीं कुछ चाय-पानी भी हो; और, आप इलियस से बातें भी करें।"

मुहम्मदशाह और उनके अतिथि भीतर गये। इलियस उन्हें प्रणाम कर दरवाजे पर बैठ गया। उसकी स्त्री पर्दे के भीतर जाकर अपनी मालकिन के पास बैठ गयी। इलियस को भी एक प्याला चाय दी गयी। उसने उन लोगों को धन्यवाद देकर चाय का प्याला ले लिया। कुछ देर के बाद अतिथि ने इलियस से पूछा—"भाई! जब तुम हम लोगों की तरफ देखते होगे, तब तुम्हें अपने पुराने दिन याद आ जाते होगे; और, तुम उन दिनों को अपने आजकल के बुरे दिनों से मिला कर बहुत दुःखी होते होगे?"

इलियस ने हँसकर उत्तर दिया—

"यदि मैं यह बतलाऊँ कि, मैं सुख और दुःख को क्या समझता हूँ, तो शायद आप विश्वास न करें। इसलिये आप मेरी स्त्री से पूछ लें। वह स्त्री है; जो उसके पेट में है, वही मुँह पर भी। वह आपको सच्ची बातें बतला देगी।"

अतिथि ने परदे के बाहर से ही पुकार कर कहा—"बहन! अपनी वर्तमान स्थिति और पूर्व स्थिति के बारे में जो तुम्हारे विचार हों, उन्हें कृपा कर मुझे बता दो।"

"पचास वर्षों तक मैं और मेरे पति सुख की खोज करते रहे; हमें वह सुख प्राप्त न हुआ परन्तु आज जब हमारे पास कुछ भी नहीं है और दूसरे का काम करके अपना पेट पालते हैं, तब हम अत्यन्त सुखी हैं।"

"तुम्हारे सुख की परिभाषा क्या है? वह किस प्रकार प्राप्त हो सकता है?"

"जब हमारे पास धन था, तब हमारे पास एक मिनट का भी समय न था; हम बराबर काम में लगे रहते थे। एक काम करते थे, तो दूसरे काम की चिन्ता सताया करती थी। हमारी चिन्ताओं का अन्त नहीं था, यहाँ तक कि, हम दोनों को न तो बातें करने की फुरसत थी और न उस परमात्मा की स्तुति करने की, जिसने हमें इतना धन दिया था। हमें अपने अतिथियों का ध्यान रखना पड़ता था और उनके खिलाने-पिलाने का प्रबन्ध करना पड़ता था। कभी तो हमें भेड़ियों का डर लगा रहता था और कभी चोरों का। रात में हम नींद भर सो भी नहीं सकते थे। कई बार उठकर और इधर-उधर घूम कर देख लिया करते थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि, किसी किसी बात में मुझ से अपने पति से अनबन भी हो जाया करती थी। हम सुख के लिये चेष्टा करते थे; परन्तु उलटे हमें दुःख मिलता था। अब हम दोनों में लड़ाई होने का कोई कारण ही नहीं रहा। अब केवल यही चिन्ता रहती है कि, अपने मालिकको किस प्रकार प्रसन्न रखें। हम लोग ऐसा काम करते हैं, जिससे हमारे मालिक का कोई नुकसान न हो। अब तो काम और भोजन भर करना है। न किसी बात की चिन्ता है, न किसी बात का डर। आनन्द से जिन्दगी कटती है।"

आर्य समाजिक जगत्

—सब गुरुकुल प्रेमी तथा सब आर्य सभाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि आज कल कई सज्जन गुरुकुल मुलतान के नाम से चन्दा वसूल कर रहे हैं। आप सब को ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिये। जब तक किसी व्यक्ति को गुरुकुल-मुलतान के मुख्याधिष्ठाता का प्रमाण पत्र प्राप्त न हो, उसे गुरुकुल मुलतान के नाम पर चन्दा नहीं देना चाहिये।

आज कल श्री ला० बिहारीलाल जो रिटायर्ड प्लेट फ़ार्म इन्सपैक्टर तथा मैं स्वयं गुरुकुल मुलतान के डैपुटेशन पर धनसंग्रह-चन्दा करने के लिये पञ्जाब का दौरा कर रहे हैं। गुरुकुल-मुलतान गुरुकुल कांगड़ी की शाखा है। सब भाइयों से प्रार्थना है कि वे गुरुकुल की दिल खोल कर सहायता करें। श्री ला० बिहारीलाल जी ने अब तक ५००) रु० के करीब चन्दा इकट्ठा कर लिया है। गुरुकुल-मुलतान के गरीब विद्यार्थियों के लिये, वास्तव में ५०००) रु० की अपील की गई है 'आर्य' के गत अङ्क में भूल से ५००) रु० छप गया है।

जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें वे शीघ्र ही उन्हें गुरुकुल मुलतान भेज दें या हमारे साथ कर दें। मुख्याधिष्ठाता

—सब आर्य वीरों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अखिल भारतीय आर्य वीर दल समिति के सुयोग्य मन्त्री श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने आर्य वीर दलों के लिये बौद्धिक शिक्षण सम्बन्धी पाठ "सार्वदेशिक" पत्र (बलिदान भवन, नया बाजार, देहली जिसका वार्षिक मूल्य ३ रु० है) में क्रम से देने शुरू कर दिये हैं। जून और अगस्त के अंकों में ३ पाठ निकल चुके हैं जो आर्य वीर दलों के लिये अति आवश्यक हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ुरुकुल कांगड़ी के समाचार

गुरुकुल में दीर्घावकाश

गुरुकुल विश्वविद्यालय के वेद साहित्य तथा आयु-, तीनों महाविद्यालयों में १५ अगस्त से दीर्घावकाश रम्भ हो चुका है। इस समय महाविद्यालय आश्रम ३० ब्रह्मचारी अवशिष्ट रह गए हैं जो व्यायामादि रा अपने स्वास्थ्य को अत्युत्तम बना रहे हैं। शेष ह्मचारी विविध ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने २ न्तों व गृहों को चले गए हैं। आयुर्वेद महाविद्या-य के कुछ विद्यार्थी गुरुकुल के बाह्य चिकित्सालय श्री श्रद्धानन्द-सेवाश्रम) तथा हरिद्वार के सरकारी तपाल में विशेष २ रोगियों की चिकित्सा का भ्यास सफलता-पूर्वक कर रहे हैं।

विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों का दीर्घावकाश १ तम्बर से प्रारम्भ हो चुका है। ब्रह्मचारियों का गस्थ्य पिछले मास की अपेक्षा अधिक उत्तम है। एमासिक परीक्षा का परिणाम सन्तोष-जनक रहा। ट्टियों के दिनों में प्रथम पाँच श्रेणियों के विद्यार्थियों ो गुरुकुल भूमि में ही रखने का निश्चय हुआ है। हाँ रहते हुए ब्रह्मचारी ऋषिकेश आदि निकटवर्ती थानों पर भ्रमणार्थ जा सकें—ऐसी व्यवस्था की जा ही है। अनेक संरक्षकों के पत्र ब्रह्मचारियों को छुट्टी दिनों में घर ले जाने के विषय में आ रहे हैं। ारा उनसे निनेदन है कि वे इस प्रकार के प्रार्थना-त्र कार्यालय में न भेजें, क्योंकि बिना किसी विशेष ारण तथा विशेष परिस्थिति के ब्रह्मचारियों को छुट्टी हीं दी जाती। अतः संरक्षक महानुभाव व्यर्थ ही ट न उठावें।

इस समय गुरुकुल में वर्षा ऋतु पूर्ण यौवन पर । वर्षा की अधिकता के कारण गंगा में बाढ़ आ ी है।

गुरुकुल में वेद-सप्ताह

। १५ अगस्त श्रावणी से २३ अगस्त कृष्णा-तक आर्य-समाज गुरुकुल कांगड़ी में बड़े समा-ह पूर्वक वेद सप्ताह मनाया गया जिसमें प्रतिदिन द्वानों के विद्वत्ता-पूर्ण भाषण होते रहे। व्याख्यान-ाताओं में स्वामी आनन्द प्रकाश, पं० छेदी प्रसाद, ० भगवद्दत्त वेदालंकार रिसर्च-स्कालर, पं० सोमदत्त द्यालंकार, स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक, पं० यव्रत जी वेद-वाचस्पति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी ; नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्वास्थ्य समाचार

णी	नाम	नाम रोग
१	जयदेव	ज्वर श्वास
१४	वृजनन्दन	अतिसार
४	सच्चिदानन्द	ज्वर
४	योगेन्द्र	,, CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA
४	रविप्रकाश	,,
३	भूदेव	ज्वर
३	जगदीश	,,
२	जितेन्द्र	,,
२	निर्मल	,,
२	जयपाल	,,
२	बलवीर	व्रण
३	महेन्द्र	चोट
१	अविनाश	ज्वर
१	भूपेन्द्र	व्रण
१	हरिकृष्ण	नेत्राभिष्यन्द
१	भूपेन्द्र	,,

गत सप्ताह उपरोक्त ब्रह्मचारी रोगी हुए थे। अब सब स्वस्थ हैं।

मेरा स्थान !

[श्रीयुत रामचरित उपाध्याय]

(१)

मिला दम्भ से ज्ञान होगा जहाँ पर,
वहाँ पर रहेगा नहीं नाम मेरा।
जहाँ छद्म का सद्म ऊँचा बना हो,
वहाँ झाँकने का नहीं काम मेरा॥

(२)

जहाँ साम्य है मूर्ति मेरी वहाँ है,
जहां एकता है वहां गेह मेरा।
जहाँ धैर्य्य है पूर्ति मेरी वहाँ है,
जहां शिष्टता है वहां स्नेह मेरा॥

(३)

जहां सत्य-गंगा निरन्तर बहेगी,
वहीं पर मेरी न्याय नैय चलेगी।
जहां प्रेम-सद्भाव का बोलबाला,
वहीं पर बना गेह मेरा निराला॥

(४)

जहां प्रेम का भाव होगा परस्पर,
वहां तान मेरी अनूठी छिड़ेगी।
जहां ध्यान स्वाधीनता का रहेगा,
वहां शक्ति मेरी समूची भिड़ेगी॥

(५)

जहां प्राण से भी बड़ा प्यार प्रण का,
सु-दर्शन लिये मैं वहीं घूमता हूँ।
जिसे लालसा मृत्यु को भेंटने की,
उसी के पगों को सदा चूमता हूँ॥

(६)

जहां दुन्दुभी वीरता की बजेगी,
वहीं व्यक्त हो जायगी भक्ति मेरी।
जहां त्यक्त होवें बुरी वासनायें,
वहां ही रहे क्यों न अनुरक्ति मेरी ?

—लण्डन, वेल्स की कोयले की खानों कई हज़ार मजदूर काम छोड़ बैठे हैं। पता लगा है कि उन्हें कुछ साधारण शिकायतें हैं।

(पृष्ठ ३ का शेष)

कन्या गुरुकुल देहरादून के लिये धन संग्रह:—

श्री० पं० धर्मवीर जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ने कन्या गुरुकुल देहरादून के लिये धनसंग्रह का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। रेलगाड़ियों की यात्रा विषयक असुविधा तथा समय की तंगी के कारण पं० धर्मवीर जी तथा कन्या गुरुकुल के अधिकारी सब स्थानों पर नहीं पहुंच सकते। पं० धर्मवीर जी ने दिल्ली में धन संग्रह का काम शुरू कर दिया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य समाजों से नाम कन्या गुरुकुल के लिये वार्षिक राशि नियत की हुई है। आर्य समाजों को चाहिए कि वह कन्या गुरुकुल को यह धन राशि शीघ्र से शीघ्र भेजने का प्रबन्ध करें।

कन्या गुरुकुल देहरादून भारतवर्ष में कन्याओं की शिक्षा के लिये अद्वितीय संस्था है। यहां कन्याओं को आर्य संस्कृति के वातावरण में दीक्षित किया जाता है। आर्य सभ्यताभिमानी व्यक्तियों को इसके अपनाने में विशेष उत्साह दिखाना चाहिए। —भीमसेन

—सब गुरुकुल प्रेमी तथा सब आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आज कल कई सज्जन गुरुकुल मुलतान के नाम से चन्दा वसूल कर रहे हैं। आप सब को ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिये। जब तक किसी व्यक्ति को गुरुकुल मुलतान के मुख्याधिष्ठाता का प्रमाण पत्र प्राप्त न हो—उसे गुरुकुल मुलतान के नाम पर चन्दा नहीं देना चाहिये।

आज कल श्री ला० बिहारीलाल जी रिटायर्ड लेटफर्म इन्सपैक्टर तथा मैं स्वयं गुरुकुल मुलतान के डैपुटैशन पर धन संग्रह—चन्दा करने के लिये पञ्जाब का दौरा कर रहे हैं। गुरुकुल-मुलतान गुरुकुल कांगड़ी की शाखा है। सब भाइयों से प्रार्थना है कि वे गुरुकुल की दिल खोल कर सहायता करें। श्री ला० बिहारीलाल जी ने अब तक ५००) रु० के करीब चन्दा इकट्ठा कर लिया है। गुरुकुल मुलतान के गरीब विद्यार्थियों के लिये वास्तव में ५०००) रु० की अपील की गई है, आर्य के गत अङ्क में भूल से ५०० रु० छप गया है।

—सब आर्य वीरों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि अखिल भारतीय आर्य वीर दल समिति के सुयोग्य मन्त्री श्री० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने आर्य वीर दलों के लिये बौद्धिक शिक्षण सम्बन्धी पाठ सार्वदेशिक पत्र (बलिदान भवन, नया बाज़ार देहली जिसका वार्षिक मूल्य ३ रु० है) में क्रम से देने शुरू कर दिये हैं। जून और अगस्त के अंकों में ३ पाठ निकल चुके हैं जो आर्य वीर दलों के लिये अति आवश्यक हैं। अगले पाठ सार्वदेशिक में क्रम से नियम पूर्वक प्रतिमास निकलते रहेंगे सब आर्य वीर दल शाखाओं के लिये ये पाठ अनिवार्य है अतः उन्हें इनसे अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

आर्य समाज का हिन्दी साहित्य

१ (अ—ज)

(श्री विश्वनाथ जी शास्त्री, एम० ए०, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर)

—विद्वान् लेखक ने काफी खोज से काम लिया है और आर्य साहित्य के प्रेमी पाठकों के लिए यह बड़े काम की चीज़ है पर इससे यह नहीं जानना चाहिए कि प्रकाशित वर्णों के नाम वाले लेखकों के अतिरिक्त कोई लेखक नहीं। सम्भवतः उनके नाम और प्रकाशित ग्रन्थ आगामी अंक में दिये जावेंगे। —सम्पादक

ऋषि दयानन्द ने १८७५ में बम्बई में आर्यसमाज स्थापना की थी। गत ६८ वर्षों में आर्य समाज के ध्य में जो साहित्य प्रकाशित हुआ है उसके संबंध में ने विचार करना है। यह एक बड़ा कठिन प्रयत्न इस कार्य को पूर्ण रूप से करना तो अत्यन्त दुष्कर परन्तु फिर भी अपनी स्वल्प बुद्धि और शक्ति के सार जो कुछ कर सका हूं वह पाठकों की सेवा में करता हूं। मैंने लेखकों की दृष्टि से आर्य सामा- क पुस्तकों की सूची तयार की है।

अखिलानन्द—

(क) दयानन्द दिग्विजय (संस्कृत) (ख) श्री दया- लहरी (संस्कृत)।

अच्युतानन्द—

(क) ऋग्वेद शतक (ख) यजुर्वेद शतक (ग) वेद शतक (घ) अथर्ववेद शतक ङ) एकेश्वरवाद वैदिकेश्वर स्तोत्रम् अर्थात् आर्याभिविनय का य भाग (छ) व्याख्यानमाला।

अनुभवानन्द—

(क) भूमिका तथा आर्य पथिक का जीवन (ख) धर्मवीर पं० लेखराम (ग) भक्त की ना।

आत्माराम—

(क) पं० गुरुदत्त कृत ईशोपनिषद् अंग्रेजी भाष्य हिन्दी में अनुवाद (ख) पं० गुरुदत्त कृत माण्डू- पनिषद् अंग्रेजी भाष्य का हिन्दी में अनुवाद (ग) पूजा की वैदिक विधि (घ) ब्रह्मयज्ञ (ङ) श्रीमान् गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन पर एक दृष्टि (च) र: चन्द्रिका (छ) सत्यार्थ प्रकाश का पंजाबी वाद (ज) सृष्टि विज्ञान।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

(क) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सचित्र इति- ।

आर्य मुनि—

(क) आर्य मन्तव्य प्रकाश (ख) उपनिषदार्य भाष्य ऋग्वेद भाष्य (अंश मात्र) (घ) गीतायोग प्रदी- भाष्य (ङ) न्यायार्य भाष्य (च) मीमांसार्य भाष्य र्ण) (छ) योगार्य भाष्य (ज) वाल्मीकि रामायण वेदमर्यादा (ञ) वेदान्तार्य भाष्य ब्रह्मसूत्र शारी- ा व्याख्यान (ट) वैशेषिकार्य भाष्य (ठ) षड्दर्श- ि (ड) महाभारत आर्य भाष्य (विराट् पर्व तक) ाग।

इन्द्र—(क) आर्य समाज का इतिहास (ख) उप- ं की भूमिका।

ओंकारानन्द—(क) सरल योगाभ्यास। कन्हैया- अलखधारी—(क) नीति प्रकाश।

कालूराम शर्मा—(स्वामी दर्शनानन्द जी)

(क) सांख्य दर्शन की भाषा टीका (ख) वेदों का (ग) दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह (घ) न्याय दर्शन भाष्य (ङ) वैशेषिक दर्शन भाषा भाष्य (च) दर्शन भाषा भाष्य (छ) दान शिक्षा (ज) उप-

कृष्ण—(स्वामी धीरानन्द जी)

(क) कर्म मीमांसा (ख) गृहस्थ सुधार (ग) महान् आत्माओं के प्रसंग दो भाग (घ) विधवा विवाह पद्धति (ङ) श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र कविता में) (च) स्वामी धर्मानन्द जी का जीवन चरित्र।

कृष्णचन्द्र विरमानी—

(क) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (ख) वैदिक दान।

क्षेमकरण दास त्रिवेदी—

(क) अथर्व वेद भाष्य ६ भाग (संस्कृत तथा हिन्दी) (ख) गोपथ ब्राह्मण भाष्य (ग) रुद्राध्याय हिंदी तथा अंग्रेजी अनुवाद (घ) हवन मन्त्र अर्थ सहित।

खुशहालचन्द—

(क) प्रभु भक्ति (ख) प्यारा ऋषि।

गंगाप्रसाद रिटायर्ड चीफ़ जज टिहरी—

(क) ईशोपनिषद् भाषा टीका (ख) धर्म का आदि स्रोत (ग) पञ्च कोश और सूक्ष्म जगत्।

गंगाप्रसाद उपाध्याय—

(क) आर्यसमाज (ख) मैं और मेरा भगवान् (ग) मनुस्मृति (घ) अद्वैतवाद (ङ) आस्तिकवाद (च) जीवात्मा।

गणेशप्रसाद—(क) श्रीयुत स्वामी दयानन्द सर- स्वती जी महाराज की कुछ दिनचर्या।

गुरुकुल कांगड़ी—(क) वेद गीताञ्जलि।

गोविन्दराम हासानन्द—(प्रकाशक)

(क) शंका समाधान सहित सत्यार्थ प्रकाश (ख) आर्य चित्रावलि।

घासीराम—

(क) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय कृत महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित का भाषानुवाद (ख) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित बंगला विरजानन्द चरित का भाषानुवाद (ग) वेद सुधा।

चन्द्रमणि—

(क) आर्य मनुस्मृति (ख) निरुक्त भाष्य (ग) महर्षि पातञ्जलि और तत्कालीन भारत (घ) वेदार्थ करने की विधि (ङ) सुबोध सन्ध्या (च) स्वामी

चमूपति—

(क) अमीरस सार (ख) ऋषि दर्शन (ग) जीवन- ज्योति (घ) यम यमी सूक्त (ङ) यास्क युग की वेदार्थ शैलियां (च) योगेश्वर कृष्ण (छ) वृत्तों का आत्मा (ज) वेदार्ष कोष तीन भाग (झ) वैदिक दर्शन (ञ) सोम सरोवर (ट) हमारे स्वामी (ठ) सन्ध्या रहस्य (ड) ऋषि का चमत्कार।

चांदकरण शारदा—(क) शुद्धि (ख) शुद्धि चन्द्रोदय।

चिदानन्द संन्यासी—

(क) शुद्धि व्यवस्था (ख) शुद्धि संस्कार पद्धति।

चिरंजीवलाल वानप्रस्थी—(क) गायत्री महत्व (ख) मनुष्य के कर्त्तव्य (ग) वैदिक लोरियाँ।

जगदम्बाप्रसाद—

(क) श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती दण्डी का जीवन चरित्र।

जयदेव शर्मा—

(क) ऋग्वेद भाषा भाष्य (ख) यजुर्वेद भाषा भाष्य (ग) सामवेद भाषा भाष्य (घ) अथर्व वेद भाषा भाष्य (ङ) यम यमी सूक्त।

जैमिनी महता—

(क) अफ्रीका की यात्रा तथा वैदिक धर्म प्रचार (ख) दक्षिण अफ्रीका की यात्रा तथा वैदिक धर्म प्रचार (ग) विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार का प्रभाव (घ) स्याम देश यात्रा।

ज्ञानचन्द आर्य—

(क) आर्य समाज की स्थिति (ख) सत्य निर्णय।

टेकचन्द, प्रभु आश्रित—(क) पथ प्रदर्शक सन्देश

ठाकुरदत्त धवन—

(क) वैदिक धर्म प्रचार।

तुलसीराम, स्वामी—

(क) सामवेद भाष्य दो भाग (ख) मनुस्मृति भा (ग) सांख्य दर्शन भाष्य (घ) न्याय दर्शन भाष्य (ङ) योग दर्शन भाष्य (च) वेदान्त दर्शन भाष्य (छ) वैशे- षिक दर्शन भाष्य (ज) गीता भाष्य (झ) दिवाकर प्रकाश (ञ) भास्कर प्रकाश (ट) विदुर नीति भाषा टीका (ठ) श्वेताश्वेतरोपनिषद् संस्कृत व हिन्दी भाष्य (ड) पंच कन्या चरित्र।

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश के लिये दान—

आर्य्य जनता को यह जान कर बड़ा हर्ष होगा कि दानी महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश के उर्दू संस्करण के लिये दान भेजना शुरू कर दिया है। जालंधर के आर्य्य दानियों की सूचना। आप पढ़ चुके हैं। इसी विषय में लुधियाना से सूचना आई है कि श्री ला० लछमूराम जी नैयड ने अपने आर्य्य मित्र मण्डल से २००) एकत्र करके भेज दिया है अन्य स्थानों से भी दान आना आरम्भ हो गया है। आशा है आर्य्य जनता दस हज़ार रुपया एक दो सप्ताह में पूरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

[श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

सितम्बर मास में समाजों के उत्सवों का प्रबन्ध

सोलन, ३ से ५ सितम्बर—श्री पं० हरपाल जी, श्री म० चिरंजीवलाल जी प्रेम, श्री पं० रामस्वरूप जी, श्री म० भद्रपाल जी, श्री म० शमशेरसिंह जी।

महाराजगंज श्रीनगर ३ से ५—श्री पं० पूर्णचन्द जी, श्री पं० रामदत्त जी, श्री पं० सदाशिव जी, श्री पं० बालकृष्ण जी, श्री म० देवकीनन्दन जी।

खानपुर (बहावलपुर) ७ से १४ यज्ञ—श्री पं० ज्ञतीशकुमार जी, श्री पं० हरिदेव जी, श्री म० भक्तराम जी, श्री म० गुलशनलाल जी।

शिमला १२ से १४—श्री पं० प्रियव्रत जी, श्री पं० यशपाल जी, श्री म० चिरंजीवलाल जी प्रेम, श्री म० हरिश्चन्द जी, श्री म० भद्रपाल जी, श्री म० जयप्रकाश जी, श्री म० शमशेरसिंह जी।

डल्हौजी ११ से १४—श्री पं० मुनीश्वरदेव जी, श्री पं० रामस्वरूप जी पाराशरी, श्रीमती द्रौपदीदेवी जी, श्री म० देशराज जी, श्री म० मेहरचन्द जी।

किश्तवाड़ १० से १८—श्री पं० पूर्णचन्द जी, श्री म० देवकीनन्दन जी। भद्रवाह १६ से २७—श्री पं० पूर्णचन्द जी, श्री म० देवकीनन्दन जी।

पाटू १३ से १७ | श्री पं० हरपाल जी
पौली १७ से १६ | श्री पं० रामस्वरूप जी
मपुर २१ से २३ | श्री पं० चिरंजीवलाल जी प्रेम
श्री म० हरिश्चन्द जी
श्री म० जयप्रकाश जी

इसके अतिरिक्त निम्न उपदेशक सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह के उपलक्ष्य में ४ से १० सितम्बर पर निम्न स्थानों में कथा करेंगे।

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज पेशावर छावनी से १०। श्री स्वामी योगानन्द जी आ० स० बटाला ४ से १०। श्री पं० हरदयाल जी आ० स० साबुन बाजार लुध्याना ४ से १०। श्री पं० रामस्वरूप जी शान्त आ० स० ढोल ४ से १०।

आर्य समाजों के उत्सव सितम्बर के अंतिम सप्ताह में आरम्भ हो जायेंगे। बड़ी २ समाजें जो अपने उत्सव किया करती हैं उन की सेवा में निवेदन है कि अभी से अपने उत्सव की तिथियां नियत करके सभा को सूचित कर दें।

उपदेशकों की सेवा में

सभा का एक ही साप्ताहिक पत्र है जिस में सभा की सूचनाएं उपदेशकों के प्रोग्राम तथा समाजों के उत्सवों के समाचार छपते हैं। आप कृपया जहां २ पधारें प्रत्येक समाज से ४) जरूर प्राप्त करें ताकि प्रत्येक समाज में सभा के समाचार पहुंचते रहें। सभा ने बंगाल पीड़ित भाइयों को सहायतार्थ तथा सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशनार्थ अपील प्रकाशित की है। आप दानी महानुभावों से मिल कर इस सम्बंध में उचित कार्य्यवाही करें और इस सम्बंध में किये गये रिपोर्ट साथ २ भेजते रहें।

देश भर में सत्यार्थप्रकाश दिवस मनाया जाये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने जो २२।८।४३ को बलिदान भवन देहली में श्रीयुत पं० गंगा प्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जस्टिस प्रधान सभा के प्रधानत्व में मुख्यतया सत्यार्थ प्रकाश विरोधी आन्दोलन के विषय के विचार करने के लिये हुई, सर्व सम्मति से निम्न प्रस्ताव पास किया है।

सत्यार्थप्रकाश के कुछ अंश की जब्ती के सम्बन्ध में जो आन्दोलन हो रहा है इस सम्बन्ध में यह सभा यह घोषणा कर देना आवश्यक समझती है कि:—

(क) जैसे अन्य धर्मावलम्बियों के लिये उनकी धार्मिक पुस्तकें श्रद्धा, प्रेम और रक्षा का विषय हैं उसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश आर्य समाजियों की धर्मपुस्तक है और उनके लिये श्रद्धा, प्रेम और रक्षा का विषय है। सभा यह भी घोषणा करती है कि सत्यार्थप्रकाश का कोई भाग उचित आलोचना की सीमा के बाहर नहीं जाता। यह सभा सब लोगों को यह सूचना देती है कि प्रत्येक आर्य समाजी पूरे सत्यार्थप्रकाश की रक्षा करना अपना धर्म समझता है और इस कार्य में बड़े से बड़े त्याग और बलिदान के लिये तैयार है। सभा की धारणा है कि प्रान्तीय अथवा भारत सरकार इस बात को दृष्टि में रखते हुए कि सत्यार्थप्रकाश आर्य समाज का एक धार्मिक ग्रन्थ है इसकी जब्ती के सम्बन्ध में कोई कार्यवाही न करेगी।

(ख) यह सभा सब समाजों और सब आर्यों को आदेश देती है कि वे इस संभावित परीक्षा के लिये अपने आपको तैयार रखें।

(ग) यह सभा सब समाजों को आदेश देती है कि ता० ५।९।१९४३ को एक सार्वजनिक सभा करके इस निश्चय के (क) भाग की प्रस्ताव रूप में अधिक से अधिक संख्या में स्वीकार करें और प्रस्तावों की प्रतिलिपि (१) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली (२) प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं (३) भारत सरकार (४) प्रान्तीय सरकारों तथा समाचार पत्रों में भेजें।

समस्त प्रान्तीय सभाओं और आर्य समाजों से निवेदन किया जाता है कि वे ५।९।४३ को सत्यार्थप्रकाश दिवस मनाकर उपर्युक्त प्रस्ताव के (क) भाग को पास करके निर्दिष्ट स्थानों पर भेजें। आर्य समाजों को यह भी आदेश दिया गया है कि वे इस दिवस को पूरे समारोह, संयम और शान्ति के साथ मनायें।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

स० मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

—गत सप्ताह की बर्लिन की बमबारी में मित्रों के २८ बम वर्षक जहाज लापता हो गये।

स्वाध्याय मण्डल की स्थापना

ता० २५-६-४३ की अन्तरङ्ग के निश्चयानुसार सभा ने स्वाध्याय मण्डल की आयोजना की है जो ता० १०-९-४३ से ता० १०-१०-४३ तक खोला जायगा।

उद्देश्य:—सभा के उपदेशकों, आर्य सभासद व आर्य कुमारों को बौद्धिक, शारीरिक, नागरिक व सैद्धान्तिक शिक्षण दिया जाय।

१—उपर्युक्त उद्देश की पूर्ति के लिए सभा ने स्वाध्याय मण्डल की व्यवस्था कर व्याख्यानमाला की आयोजना की है। जिसके अनुसार प्रसिद्ध विद्वानों से भाषण कराए जाएंगे।

२—इस मण्डल में उपदेशकों का सम्मिलित होना अनिवार्य है।

३—आर्य समाज के अधिकारी, सभासद, सम्मिलित हो सकते हैं। परन्तु उन्हें अपने सभासद होने का प्रमाण पत्र उस समाज के मन्त्री या प्रधान के हस्ताक्षर से देना होगा।

४—आर्य कुमार सभा के अधिकारी और सभासद भी सम्मिलित हो सकेंगे। उन्हें भी नियम संख्या तीन के अनुसार अपना प्रमाणपत्र देना होगा।

५—भोजन और रहने आदि के प्रबन्ध के लिए उपदेशकों को १०) रुपए तथा अन्य आर्य सज्जनों को १५) शुल्क अगाऊ देना होगा।

६—आवेदन पत्र ता० २५ अगस्त ४३ ई० तक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में आ जाना चाहिए।

७—१८ वर्ष से न्यून आयु वाले सज्जन इस मण्डल में सम्मिलित न हो सकेंगे।

यह प्रथम ही अवसर है कि सभा ने सिद्धान्त आदि के ज्ञान को इस प्रकार सरल बनाया है। आर्य जनता अवश्य ही इससे लाभ उठाएं।

कार्यक्रम निम्न प्रकार से अवलोकनार्थ दिया जाता है

१—प्रातः ५ बजे जागरण, शौच, दन्तधावन तथा कैम्प की सफाई।

२—दो घण्टे संध्या, हवन, व्यायाम, वन्देमातरम् गान व ध्वजारोहण व कलेवा।

एक घंटा किसी विद्वान् का व्याख्यान, एक घंटा स्वाध्याय, एक घंटा अध्ययन, एक घंटा देसी खेल पश्चात् दो घंटे भोजन व विश्राम, चर्खा कातना।

व्याख्यानों के विषय मोटे तौर पर निम्नांकित हैं

१—भारत की वर्तमान, सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक अवस्था। २ भारतीय प्राचीन इतिहास ३ भारत की राष्ट्र भाषा। ४ सैद्धान्तिक विविध विषय

सूचना:—आने वाले सज्जन अपने साथ बिछौना वा लोटा लाना न भूलें।

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Regd L. N. 5004

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २५, अंक ३८

वार्षिक मूल्य ४)

२७ भाद्रपद, २००० विक्रमी

१२ सितम्बर १९४३ ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

भगवान मनु जहां सत्य बोलने पर बड़ा बल देते साथ ही आज्ञा देते हैं कि प्यारा सत्य बोलो। क्या हम सब मनु जी की इस आज्ञा पर करते हैं? आजकल के वितण्डावादी युवक के लिये अपने बजुर्गों और अपनी अपेक्षा धर्म के लिये अधिकतर कठिनाइयां बरदाश्त वालों को भी मक्कार और पतित कह देना बात हो नहीं। जहां आर्य समाज के पुरुष गम्भीरता के साथ हरएक मतवादी से बहस छेड़ते हैं वहाँ मतवादियों की तरफ से आर्य समाज और उन के हमख्यालों खुन्त हमलों की ओट में ही आश्रय लिया है। विरोधियों की इस सख्ती पर सामाज के नवयुवक और पुरजोश मैंबर भी भड़क उठते हैं परन्तु उनको ख्याल रखना कि मुसलमानों, पौराणिकों और यहां तक कि का दम भरने वाले ईसाई तक इस उच्च से अनभिज्ञ हैं जो कि आर्य पुरुषों ने ग्रहण है। और इस लिये हमारे विचार में उनका देना और इस प्रकार मनु की राय के अमल करना वैदिक धर्म को हानि ता है। हम बलपूर्वक कहते हैं कि झूठ मत सादी वाले "द्रोग मसलत आमेज़" से भी करो। परन्तु परमेश्वर के लिये! अपनी आत्मा तिर! कड़वा सत्य न बोलो। प्यार भी धर्म का । इसे कदाचित मत छोड़ो।

सच्ची सेवा

क बार बैक्फील्ड के पादरी ने अपने परिवार आगे कैदियों को सुधारने का प्रस्ताव तो सब ने जेलखाने में प्रचार को त समझा। और अपनी रुष्टता प्रकट की उस समय के पादरी साहिब के कहे हुए वचन ध्यान से पढ़ने के योग्य हैं—"यह लोग चाहे

अध्यात्म सुधा

प्रिय सत्य बोलो

(लेखक—श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज)

संगृहीता—श्री लब्भूराम जी नैय्यड़ आनन्द आश्रम लुधियाना

कितने ही गिर गये हैं तो भी मनुष्य तो हैं। यदि यह मनुष्य दुर्भाग्यसे राजपुत्र होते तो हज़ारों पुरुष मंत्रीपद के लिये अपनी सेवा अर्पण करते। परन्तु मेरी समझ

सत्यार्थ प्रकाश के लिए दस हज़ार की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन लाहौर ने श्री पं० चमूपति जी एम. ए. द्वारा अनुवादित उर्दू सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशित करने के लिए, जो कि समाप्त हो चुका है और अब दुबारा तैयार हो रहा है, सब समाजों और आर्य भाइयों से प्रार्थना की थी कि उसके प्रकाशन के लिए दस हज़ार रुपये की शीघ्र आवश्यकता है। कई आर्यसमाजों और आर्य भाइयों ने अपना भाग इस यज्ञ के लिए भेज दिया है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन शीघ्र ही होना आवश्यक है अतः पन्द्रह दिन के अन्दर दस हज़ार रुपया पूरा हो जाना चाहिए। जिन समाजों ने अपना भाग नहीं भेजा उन्हें शीघ्रही रुपया इकट्ठा करके निम्न पतेसे भेज देना चाहिये

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन लाहौर

में वह दिल वैसा ही अनमोल है जैसा कि वह दिल जो सिंहासन पर बैठा हुआ है।"

वह महात्मा पुरुष इस पवित्र बात की सत्यता का पूरा अन्दाज़ा लगा सकते हैं जिन्हों ने सेवा के जीवन के असली अभिप्राय को समझा है। परन्तु ऐसे मनुष्य हर जगह बहुत पाये जाते हैं जो कि अपने जैसे और विशेष मनुष्यों की दिखावे की शान व शौकत और आडम्बर देख कर उनके पांव चूमने और खुशामद करने पर ही अपनी सेवा का अन्त कर देते हैं। परन्तु क्या इस प्रकार की स्वार्थपरता (जिस से मतलब निकलता देखा उसके आगे सिर झुका दिया और जिससे कुछ मिलने की आशा न हुई उसे धता बता दी) लेकिन क्या इस प्रकार की स्वार्थपरता मनुष्य की दयालुता का पात्र बन सकती है? कदापि नहीं! सच्चा सेवक वही है जो कि प्रेम पूर्वक बिना लिहाज़ धन दौलत सेवा करने के लिये हर समय तत्पर रहें।

बहुपक्ष

प्रायः देखने में आता है कि विभिन्न स सोसाइटियों में जो कार्य निश्चित होते हैं वह स बहुपक्ष के आधार पर ही होते हैं। यह नियम सर्वोत्तम है परन्तु इसमें एक त्रुटि है। यदि इसको दूर कर दिया जावे तो यह तरीका अति सफल सिद्ध हो सकता है। वरन् इस त्रुटि के कारण जो किसी श्रेष्ठ सभा को हानि पहुंच जाती है वह किसी समय एक भयानक रूप धारण करके मुख्य कर्तव्य से बहुत दूर ले जाती है।

यह अंधेर की बात नहीं कि जो सम्मान एक उच्च शिक्षक अनुभवी व्यक्ति की सम्मति को दिया जावे वही एक नातजुरबेकार, अशिक्षक की सम्मति को दिया जावे। इस प्रकार तो हाथ उठाने का मुकाबला ही रह जाता है न कि उनकी योग्यता और विद्वता का।

इस अवस्था में प्रायः देखने में आता है कि अयोग्य सदस्य की अपनी कोई सम्मति ही नहीं होती। वह सम्मति देते समय यह भी नहीं जा सकता कि कौनसा विषय विचारणीय है। जहां किस योग्य व्यक्ति ने अपना हाथ उठाया वह उसके पी हाथ उठाना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। स विसर्जन होने के पश्चात् दूसरों से पूछते हैं कि क

शेष पृष्ठ ८ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वदीय वस्तु गोविन्द !

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभागस्य ।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥
साम० ६॥६०

(अयम्) यही (अग्निः) अग्नि-देव (सुवीर्यस्य) उत्तम वीर्य का—(सौभगस्य) मंगलमय ऐश्वर्य का (ईशे हि) निश्चित राजा है। (रायः) रमणीय धन का (स्वपत्यस्य) पुत्र-रत्न का (गोमतः) वेद-वाणी के धनी के (वृत्रहथानाम्) पापविनाश के प्रयत्नों का (ईशे) वर-दाता यही है।

मेरी जान ! तुझे वीर्य चाहिए—सात्विक वीर्य, शुभ शंकर शक्ति ? तो इसका एक ही उपाय है—अग्नि-देव की उपासना अर्थात् यज्ञ। अग्नि-देव तेरे शरीर में जीवनाग्नि के रूप में विद्यमान है। उसे सात्विक, पौष्टिक भोजन से, नियम-पूर्वक व्यायाम से, आत्म-संयम से, सात्विक स्वास्थ्यप्रद चिन्तन से, प्राणायाम से प्रदीप्त कर। इन प्रयत्नों के अवलम्बन से शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का वीर्य उत्पन्न होगा।

मेरी जान ! तुझे सौभाग्य चाहिए—उत्तम ऐश्वर्य ? म्पत्ति हो, विपत्ति हो, तेरा सौभाग्य बना रहे ? तेरे थे पर तेवर न चढ़ें ? तुझे मंगल-ही-मंगल की अनुभूति हो ? तो यज्ञ कर। अग्नि-देव की उपासना में लगा रहे। यज्ञ की वृत्ति असफलता को भी सफलता का रूप दे देती है। यज्ञार्थ कर्म फल की कामना से रहित होते हैं। इनकी सफलता इनके अनुष्ठान की सुन्दरता में है। यदि इन कार्यों के करते अधर्म का अवलम्बन नहीं हुआ तो सांसारिक दृष्टि से असफल रहते हुए भी ये सब कार्य सफल हैं। यजमान का सौभाग्य इसी में है कि उसने यज्ञ किया है। इस सौभाग्य को संसार की कोई विपत्ति उससे नहीं छीन सकती। उसका सुकृत अपना फल है।

रमणीय—यज्ञमय क्रीड़ा के काम आने वाला—धन भी यज्ञ ही के द्वारा प्राप्त होता है। अग्नि लीला-प्रिय देवता है। यह सब प्रकार की सम्पत्तियों से फाग खेलता है। ऐसे ही यजमान। शतहस्तः समाहर सहस्रहस्तः संकिर—सैकड़ों हाथों से कमाता है और हजारों हाथों से बिखेरता है, लुटाता है। यज्ञ के द्वारा कमाया गया धन ही यज्ञ की आहुति बन सकता है। यदि कमाते समय निर्ममता की वृत्ति बनी रहे तो व्यय करते हुए भी मोह तथा ममता की वृत्ति जागृत नहीं होगी। धन चीज़ ही यज्ञ की है। अग्निदेव ही उसका देने वाला है और अग्नि-देव ही उसका लेने वाला। हम तो इन दो क्रियाओं के बीच ही के समय के उसके अमानतदार हैं।

यही अवस्था सन्तान की है। गर्भाधान एक संस्कार है—वेदोक्त यज्ञ है। उसमें वीर्य की शोणित में आहुति दी जाती है। उसका निमित्त है सन्तानोत्पत्ति। वास्तव में सन्तान नाम ही कुल के शुभ संकल्पों की सन्तति का है। विकासवादियों का कहना है कि जो जीवन-रक्षक गुण एक पीढ़ी में पैदा हो जाएँ वे आनेवाली पीढ़ियों में संक्रान्त होते रहते हैं। गार्हपत्य अग्नि कुल-क्रम से आ रहे व्रतों ही का उपलक्षण है। इस अग्नि को प्रदीप्त रखने के उद्देश्य ही से विवाह किया जाता है। गर्भाधान इसी आग में एक आहुति देना है। सन्तान को अपत्य अथवा नपात इसीलिए कहा गया है कि वह वंश की अवचनीय विमलता को गिरने नहीं देता, बनाए रखता है, नहीं ! उसे और भी विकसित करता है। उत्तम सन्तान भोग-विलास का नहीं, यज्ञ ही का परिणाम हो सकती है, ऐसी सन्तान फिर भेंट भी यज्ञ ही की होगी। गुरु गोविन्दसिंह का यह दोहा अपने पुत्रों में बलि-भावना का अमर दृष्टान्त है—

धर्म-काज के कारणे, वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या हुआ, जीते चार हज़ार ॥

धन की तरह सन्तान का लेने-देने वाला भी वही सकल यज्ञों का अग्रणी अग्नि-देव प्रभु ही है।

कोई शुभ काम करने लगो, उसमें विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो ही जाती हैं। यज्ञ का रास्ता हमेशा राक्षसों ने रोके रखा है। इन्द्र और वृत्र की लड़ाई सनातन है। संसार में सुरासुर संग्राम चलता ही रहता है। तुम लाख अपने "सुवीर्य का", सौभाग्य का, धन-धान्य का, पुत्र-रत्नों का मालिक अग्नि-देव को बनाए रखो, आत्मोत्सर्ग का, बलिदान का अवसर उपस्थित होने पर कोई हिचकिचाहट, कोई संकोच, कोई बाह्य अथवा आन्तरिक विघ्न-बाधा आ उपस्थित होगी। वृत्र कभी स्वार्थ का रूप धारण कर यजमान के अन्तःकरण को आवृत कर लेता है, कभी भौतिक विपत्तियों का बाना पहन बाहर का कण्टक बन जाता है। ऐसे समय वेद-रूपी कामधेनु का दूध पिया काम आता है। वेद-पाठी, विपत्ति के आगे घबराता नहीं। एक साथ अपने आन्तरिक शत्रुओं से भी लड़ता है, बाहर के वैरियों से भी। इस दोतर्फ़ी आग से उसकी रक्षा यज्ञाग्नि ही कर सकती है। अपनी यज्ञ की भावना को वह और तीव्र कर लेता है। वह घृत तथा शाकल्य की—आन्तरिक स्नेह तथा बाह्य संपत्ति की—एक साथ आहुति देता है। प्रत्येक आहुति पर "स्वाहा" शब्द का उच्चारण कर कहता है—इदमग्ने इदन्न मम, यह आहुति अग्नि ही के अर्पण है, मुझ यजमान का इस पर कोई स्वत्व नहीं है। आहुति अग्नि ही की देन थी और अग्नि ही की भेंट कर दी। इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है। सफलता की कसौटी है सच्चा व्यवहार सो यजमान को प्राप्त है ? यज्ञ वह स्वयंसिद्ध सफलता है जिसे और फल की अपेक्षा ही नहीं है। बे-फल की सफलता क्या सुन्दर सफलता है !

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये।

अग्नि-देव ! फल भी तुम्हारा, यज्ञ भी तुम्हारा। मैं कौन हूँ जो इन्हें एक दूसरे से पृथक् करूँ? तुम मेरे इस बे-फल के यज्ञ को उसकी निष्फलता में ही सफल कर दो। अग्नि-देव ! मेरा फल तुम हो। सुन्दरफल,सुहावना फल, उज्ज्वल निर्मल फल, जाज्वल्यमान फल।

अग्ने नय सुपथा !

अग्ने नयसुपथा राये अस्मान्,
देव वयुनानि विद्वान । युयोध्यस्मज्जु
भूयिष्ठान्ते नमउक्तिं विधेम ॥ यजु० ४

हे सबको आगे ले जाने वाले सर्व प्रक
हमें ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए सुमार्ग से चला
अन्तर्यामिन, ईश्वर, हमारे सब विचारों, क
आप जानते हैं। हम से कुटिल दोष को
तुम्हें हम भक्ति भाव से नम्रतापूर्ण हृदय के
अर्पण करें।

सर्वज्ञ हे प्रभु भगवान !
शरण अपनी दीजिये
प्रकाशमय हे दिव्य ज्योति,
सुपथगामी कीजिये
दीजिये निज प्रेरणा,
नित प्रेममय कल्याणमय
हे अग्रणी आगे मुझे नित,
सुपथ में कर दीजिये
जिस मार्ग में आचरण सबका,
श्रीपति सब को करे
सन्मार्ग ऐसा सामने,
ऐश्वर्य-युत कर दीजिये ॥
चर अचर सब जगत को,
धारणा तुम्हीं हो कर रहे
हे नियन्ता सर्व प्रेरक,
शरण अपनी दीजिये ॥
सब के हृदय में वास तेरा,
जगत में व्यापक तुम्हीं
जानते सब भावनाएं,
संकल्प शुभ करदीजिये ॥
कुटिलता, छल कपट से रख-,
कर हमें नित ही अलग
ऐश्वर्ययुत सब को बनाकर,
शरण में ले लीजिये
दीजिये नित शरण अपनी,
कीजिये रक्षा सदा
पाप हमको छू न पाए,
नियम ऐसा कीजिये
पाप से हो अलग हम,
नित प्रेम में तेरे रमें
आनन्द पूरण मुदितमन,
सुन्दर सुमन कर दीजिये
आनन्दमय ! आनन्द में,
फूले फलें हम नित्य ही
नम्रता से युक्त शक्ति-
दे कृतार्थ कीजिये
शरण में तेरी रहें,
और समर्पण कर सकें-

शेष पृष्ठ ७ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार २७भाद्रपद
वि०सं० २०००

सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञानुसार ५ सितम्बर को देश भर के आर्य समाजों ने सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती दिवस मनाया है। सत्यार्थ प्रकाश किनकी आंखों में खटकता है? क्या ग्रन्थ लिखने वाले का अभिप्राय किसी के दिल को दुःखाना था—क्या वह इस ग्रन्थ द्वारा किसी नए सम्प्रदाय की स्थापना करना चाहते थे?

यदि इस दृष्टि से सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका का अध्ययन करें तो वहां लेखक का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने यह ग्रन्थ सचाई के प्रचार के लिये, सत्य असत्य का निर्णय करने के लिये ही लिखा है। वह संसार को मत मतान्तरों के संकीर्ण विचारों से स्वतंत्र करना चाहते थे। तर्क और स्वतंत्र विचार को मुख्यता देकर वह जनता में सत्य का प्रचार करना चाहते थे। देश में प्रचलित सम्प्रदाय अपने२ आचार्यों को निर्भ्रान्त मानकर उनकी पूजा कर रहे थे। ऋषि दयानन्द ने उनको परमात्मा के अन्य पुत्रों के समान मानकर उनके विचारों की समालोचना की। केवल उनके विचारों की समालोचना ही नहीं की अपितु दूसरों को तथा अपने भक्तों को, अपने मन्तव्यामन्तव्यों की समालोचना करने का खुला निमंत्रण दिया। इसके विपरीत विविध सम्प्रदायों के आचार्य गुरुपूजा के नाम पर, भक्तों को समालोचना तथा तर्क करने से रोकते हैं। इसलिये जब कोई व्यक्ति उनके विचारों की, उनके गुरुओं के विचारों की समालोचना करता है तब उन्हें बुरा लगता है। सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती मनाते हुए हमें ऋषि दयानन्द तथा सत्यार्थ प्रकाश की इस विशेषता पर ध्यान देना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश में अङ्कित बातों को तर्क प्रति-तर्क द्वारा परखने की प्रवृत्ति अपने अन्दर तथा आर्य समाजों में पैदा करनी चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा करने का सर्वोत्तम साधन यही है कि हम सत्यार्थ प्रकाश के समालोचकों को सत्यार्थ प्रकाश की समालोचना के लिये खुला निमंत्रण दें। आर्य समाजों को चाहिए कि कम से कम इस वर्ष वह अपने वार्षिकोत्सवों में, सत्यार्थ प्रकाश शङ्का समाधान के लिये विशेष समय नियत करें। अपने शहर के विविध सम्प्रदायों के विद्वान् समालोचकों को उत्सव में सत्यार्थ प्रकाश पर समालोचना करने का खुला अवसर दें। परन्तु यह योजना तभी करनी चाहिए जब कि स्थानीय आर्य समाज के सभासद् स्वयं सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय कर चुके हों—या कम से कम अपने समाज में वर्ष में एक बार सत्यार्थ प्रकाश की कथा करा चुके हों।

[illegible] आर्य समाज इस ध्यान देकर सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती द्वारा सत्य का निर्णय तथा प्रचार करने में अपने आचार्य की भांति कटिबद्ध होंगे—

विवाह संस्कार में नियोग की प्रतिज्ञा

श्री. पं० श्री दामोदर सातवलेकर जी ने हमारे पास उक्त नाम का ट्रैक्ट समालोचनार्थ भेजा है। कीमत चार आने है। हमने इस ट्रैक्ट को ध्यानपूर्वक पढ़ा है। "देवृकामा और देवकामा" पद पाठ के विषय में सार्वदेशिक सभा का प्रस्ताव भी पढ़ा है। उक्त सभा ने अपनी धर्म सभा के निर्णय को अन्तिम निर्णय स्वीकार न कर ऋग्वेद के संस्करणों की खोज की गुजाइश रखी है। इसी ट्रैक्ट में श्री पं० राम कौशिक ऋषिकेश का भी लेख अङ्कित है। सम्पादकीय नोट भी लिखा गया है। हमारी सम्मति में पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी तथा श्री पं० प्रियरत्न जी आर्ष के विचारों को आर्य समाज जगत के विचार मानकर आर्य समाज जगत के विद्वानों के विषय में "ऐसा कहते तो सब पंडित हैं परन्तु आजीविका के भय से लिख देने के लिये कोई तैयार नहीं है।' [ट्रैक्टपृष्ठ सं० २४] लिखना श्री पंडित सातव लेकर जी जैसे निष्पक्षपातामिमानी तथा अपने आपको स्वतंत्र सत्य विचारक कहने वाले को शोभा नहीं देता। दूसरों पर इस प्रकार के आक्षेप करना कमीनापन है।

हमारी सम्मति में देवृकामा शब्द और देवकामा शब्द में ट्वीडलडम और ट्वीडलडी जैसा भेद है।] उपलब्ध मान प्रमाणों से 'देवकामा' पाठ ही शुद्ध प्रतीत होता है। अजमेर यंत्रालय के कार्य कर्ताओं तथा परोपकारिणी सभा के अधिकारियों ने इस विषय में—तथा ऋषिदयानन्द के अन्य ग्रन्थों के सम्पादन-संशोधन तथा प्रकाशन के सम्बन्ध में जो उदासीनता दिखाई है, उसके होते हुए इस प्रकार की त्रुटियों का होना स्वाभाविक है।

ऋषि दयानन्द नियोग को आपद्धर्म मानते थे। विवाह प्रकरण में उसका निर्देश करना अप्रासंगिक है। प्रियरत्न जी आर्ष ने इस विषय में जो युक्ति क्रम प्रकट किया है वह एकपक्षीय है—उसमें व्यर्थ में ही 'नादान दोस्त' अथवा 'नादान भक्त' की भांति अपने निर्बल तर्क से ऋषि दयानन्द के विचारों के विषय में मिथ्या स्थापना की गई है।

हमारी सम्मति में वैदिक शब्दों को यौगिक मानने वालों को देवृ और देव शब्द के भेद पर इतना अधिक बल नहीं देना चाहिए। हमारी सम्मति में सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा तथा धर्मार्य सभा को इस विषय में—कोई निर्णय नहीं देना चाहिए। वैदिक-अनुसंधान करने वाले विद्वानों को स्वयं युक्ति प्रति-युक्ति द्वारा जनता के समक्ष पक्ष प्रतिपक्ष रखने का अवसर देना चाहिए। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय जैसी वैदिक शिक्षा प्रचारिणी संस्थाओं तथा वैदिक अनुसंधान करने वाली संस्थाओं को स्वतंत्र विचार करने का अवसर मिलना चाहिए। देवृकामा देवकामा में से किसी शब्द भेद को स्वीकार कर ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित किसी भी सिद्धान्त की हानि नहीं होती। ऋषि दयानन्द वि को आपद्धर्म मानते थे—सामान्य धर्म नहीं।

स्वतंत्र राष्ट्रों का मातृ भाषाअभिमान

जर्मनी ने डैन्मार्क पर अपना फौलादी पंजा प करने के लिये वहां फौजी कार्य जारी कर दिया और उन्हें कई एक ऐसी आज्ञाएं मानने के बाधित किया है जिन्हें कोई आत्माभिमानी स्वी नहीं कर सकता। डैन्मार्क के राजा क्रिश्चियन इस सम्बन्ध में जर्मनी को स्पष्ट कह दिया है कि अपमानजनक शर्तें स्वीकार नहीं कर सकते और घो की है कि मैं डैन्मार्क निवासियों को बधाई दे कि अभी तक डैन्मार्क के स्कूलों में डेनिश भाष सिवाय और किसी भाषा में शिक्षा नहीं दी जा जर्मन शासक जर्मन भाषा का प्रचार करना चाहते परन्तु डैन्मार्क की जनता ने इसको स्वीकार किया। हम भारत निवासियों को डैन्मार्क के के आत्माभिमान सूचक चट्टान को अपने हृदय धारण करना चाहिए और अपने शिक्षणालयों में तीय भाषाओं द्वारा ही विद्यार्थियों को शिक्षा चाहिए।

विश्व युद्ध का रंग ढंग

मसोलिनी के पतन के बाद मि० चर्चि मि० रूजवेल्ट ने क्युबेक में विशेष कान्फ्रैन्स जर्मनी तथा जापान की शक्ति का मूलोच्छेदन के लिये विशेष योजनाएं तैयार की हैं। रूस का पति मि० स्टैलिन इस कान्फ्रैन्स में सम्मिलित हो सका। जापान और रूस में परस्पर न लड़ समझौता हो चुका है। अमरीका तथा इंग चाहते हैं कि रूस जापान पर हमला करे परन्तु जर्मनी को हटाए बिना किसी नई उलझन में पड़ना चाहता है। वह चाहता है कि मित्र राष्ट्र जर्मनी पर हमला करके जर्मनी की शक्ति को क करें। मित्र राष्ट्रों का विचार यह है कि यदि की गति को अब न रोका गया तो जापान स्वाधीनता को नष्ट करने के साथ २, आस्ट्रेलि अमरीका की प्रशान्त महासागर की शक्ति क अधिक कमजोर कर देगा। इधर युरोप में स्वाधीनता भी अनेक राजनीतिज्ञों के लिये प रही है। हिटलर अभी तक युरोप में दनदना र डैन्मार्क के विद्रोहियों को कठोर दण्ड दिया है तक युरोप का कोई पादाक्रान्त राष्ट्र पूर्वक हिटलर का विरोध नहीं कर सकता। पहेलियों तथा उलझनों को सामने रखते हुए कान्फ्रैन्स में सब युद्ध क्षेत्रों में एक साथ ल योजना की गई है। सिसली को आधीन करने युरोप में जिबराल्टेर को केन्द्र बनाकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संकल्प

(श्रीयुत् रा० सा० ला० लालचन्द जी)

संकल्प की आवश्यकता और उपयोगिता को लोग भूलते जा रहे हैं। बिना संकल्प किये केवल स्फूर्ति या विचार आते ही कार्य आरंभ कर देते हैं। देखा गया है कि जिस उत्सुकता से कार्य आरंभ होते हैं उस दृढ़ता से संपादित नहीं किये जाते, और अंत तक स्थिरता तो दिखाई ही नहीं पड़ती।

रघुवंशियों के बारे में कवि कालिदास ने अपने काव्य रघुवंश में एक स्थान पर लिखा है कि उनके कार्य जिस रुचि से आरंभ होते थे वैसी ही दृढ़ता और स्थिरता से अंत तक चलाये जाते थे।

जो कार्य बिना संकल्प के आरंभ होते हैं, उन में निश्चयात्मक बुद्धि कार्य नहीं करती और अनिश्चित आरंभ कभी सफल नहीं होते। सद्भावना की कार्य के सफल होने में बहुत आवश्यकता है, असत् अर्थात बदलने वाले भाव (चंचल वृत्ति) कभी किसी उपादेय परिणाम पर नहीं पहुंचाते। अस्थिर विचारों से भला स्थिर कार्य कैसे सध सकते हैं ?

विचार कैसे स्थिर हों ? यह एक बहुत उपयोगी प्रश्न है। सत्य और ऋत ये दोनों जब साथ मिलें तभी मनुष्य का ज्ञानमय तप होना संभव है तभी संयम हो सकता है, और संयम बिना भावों की स्थिरता असं- है।

भगवान ने ऋत और सत्य प्रकट किये, फिर ज्ञान- मय तप, तत्पश्चात संकल्प; इसी प्रकार उसके जगत का निर्माण आरंभ हुआ है। हम निर्माण कला खो चुके हैं, केवल नक़ल कर लेना पर्याप्त समझते हैं। यदि संयम द्वारा हमारा नाभि से सम्बन्ध रखने वाला केन्द्र शुद्ध और बलवान हो जाय तो हम में भी निर्माण शक्ति का उदय हो सकता है और हम अपूर्व प्रतिभाशाली और कोई निर्माण करने में समर्थ हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में हम दृढ़ होंगे, हम स्थिर होंगे और हम बिना संकल्प किये कार्य्य आरंभ ही न करेंगे।

भगवान के मन भावन, पावन जगत में जब तक हम संकल्प करके शरीर त्याग से पहिले अपने कार्य क्षेत्र को भरसक यत्न करके रहने और बढ़ने योग्य नहीं बनाते तब तक हम कृतकार्य नहीं कहे जा सकेंगे। प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि वह अपने कुल, परिवार नगर, प्रांत, देश आदि को अपने यत्न से अधिक से अधिक देर तक रहने और बढ़ने के योग्य बनावे, और इस महान यज्ञ में अवश्य भाग ले; अन्य- था स्वार्थ और संकोच की कीचड़ में पड़े रहने से कभी वह कीचड़ नहीं सूखेगी, और जनार्दन पूजा, जो जन- समाज की सेवा है, कभी न हो सकेगी।

प्रत्येक गृहस्थ का यह कर्तव्य होना चाहिये कि वह संकल्प करे कि अपनी गृहस्थी को पुण्यधाम ऐसी उन्नत अवस्था बनाने में तत्पर रहेगा कि कुल की उत्तरोत्तर वृद्धि हो और कुल की आयु का औसत बढ़ सके। अधिक वही जी सकता है जिसे अपनी गृहस्थी में शान्ति मिले, जिसकी गृहस्थी का वायु मंडल उन्नति में सहायक हो। जहां शान्ति है वहां अवश्य आप परस्पर सहानुभूति और प्रेम पाएंगे और उसका परि- णाम केवल आनंद होगा।

मनुष्य का जीवन बिना संकल्प के एक दयनीय जीवन हो रहा है, मनुष्य केवल जीता है, मनुष्यता में बढ़ नहीं रहा; और इसी कारण से आयु अल्प हो रही है। जब मनुष्य का अपनी पशुता पर ऋत, सत्य और ज्ञानमय तप द्वारा प्रभुत्व हो जाता है तो दिनों दिन पशुबल का ह्रास होता है, और मानवता का साज सजता है। मानवता में अल्प आयु नहीं रहेगी। प्रत्येक मनुष्य स्थिर और सच्चे भाव रखता हुआ, दृढ़ संकल्प द्वारा जगत को सुखमय और पावन बनाता हुआ दीर्घायु होगा क्योंकि वह जीने का इच्छुक होगा।

ऋत और सत्य जब जीवन के अंग हो जायंगे तब आडम्बर नहीं होगा। सच्चा सौन्दर्य होगा, आंख धोखा नहीं देगी। सच्ची सौन्दर्य भावना जाग्रत होगी और मनुष्य स्थिरता पूर्वक पूर्णता की ओर अग्रसर होगा।

मनुष्य के अन्दर मनुष्यता का विकास होने से मन की दंभ वृत्ति मन्द होती जायेगी और मनुष्य वास्तविकता को समझ सकेगा। जैसा शुद्ध मनुष्य था वैसा ही होगा, और देवत्व को प्राप्त कर भगवान का सामीप्य तथा सायुज्य तक प्राप्त कर सकेगा।

मनुष्य में अनंत शक्ति है और वह केवल शुद्ध संकल्प में निहित है। संकल्प के सिद्ध होते ही अलौ- किक आनंद मनुष्य को प्राप्त होता है। भगवान भी तो अपने संकल्प में अपनी पवित्र और पूर्ण सृष्टि सृजन कर आनंदकंद हैं।

यही ब्राह्मी स्थिति कहलाती है, जब मनुष्य संकल्प में भगवत् प्रेरणा अनुभव करता है। यह अवस्था गायत्री मंत्र द्वारा संभव है और यही अभीष्ट है। मनुष्य उन्नत हो, मनुष्य के अन्दर सदा ऋत और सत्य के मङ्गलमय भाव जाग्रत हों, यही सारे शास्त्रों की शिक्षा का निचोड़ है।

शेष पृष्ठ ३ का

डिगाल पार्टी के साथ मिलकर जर्मनी पर हमला करने की तैयारियां हो गई हैं। एशिया में भारतवर्ष को केन्द्र बना कर समुद्र, तथा आकाश से जापान के अधिकृत राष्ट्रों पर हमला करने के लिये मि० लूइस को संयुक्त सेनापति नियत किया गया है। इस समय धुरी राष्ट्रों को जीतने के लिये सब रणक्षेत्रों में एक साथ लड़ाई करना ही, मित्र दलों के लिये विजय प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है। क्युबेक कान्फ्रैन्स ने इसी उपाय को अमली शकल दी है। और इस उपाय को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये स्टैलिन से भी सलाह

आर्य सामाजिक जग

सत्यार्थ प्रकाश दिवस की गूं

देश भर में ५ सितम्बर को सत्यार्थ प्रक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सार्वदेशिक ऐसा ही ऐलान था। और इसी दिन श्री महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश को लिखना आर था। इस दिन विशेष रूप से और कई स सप्ताह के लिए अथवा इससे भी अधिक सत्यार्थ प्रकाश की कथा होती रही। बहुत सत्यार्थ प्रकाश के संस्करण निकाल रही हैं चन्दा भी एकत्र किया गया। आर्य प्रतिनि उर्दू में सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन करने उसके लिए कई स्थानों से चन्दा एकत्र हुआ तक हमारे पास बहुत स्थानों से समाचार आ उन स्थानों पर सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाया

आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर—

स्वामी वेदानन्द जी के सभापतित्व मनाया गया। प्रस्ताव पास किये गये और बड़े अच्छे ढग से बताया कि सत्यार्थ प्रक भाइयों के लिए वैसा ही माननीय ग्रन्थ है जै मानों, ईसाइयों के लिए कुरान और बाइबि जिस प्रकार उक्त धर्मों वाले अपने धर्म ग्रन्थों आक्षेप सहन नहीं कर सकते उसी तरह आ ऐसा आक्षेप सहन न करेंगे।

आ. स. अनारकली—

आर्य समाज अनारकली में भी बड़े स दिवस मनाया गया। श्री ला० खुशहाल च भाषण हुआ और उन्होंने बताया कि स्वा किसी भी मनुष्य का दिल दुखाने के लि प्रकाश की रचना नहीं की जैसा कि उन्हों भूमिका में भी लिखा है। प्रस्ताव भी पास रुपया भी एकत्र हुआ।

आ. स. रामगली—

श्री पं० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री का भाषण हुआ। उन्होंने कहा कि यह आर्य परीक्षा का समय है कि वे अपने धर्म से कि करते हैं। सर्व सम्मति से प्रस्ताव भी पास

आ. स. सिंहपुरा लाहौर—

आर्य भाइयों ने हमारे पास निम्न प्र करके भेजा है—जिस तरह दूसरे धर्मावलम्ब धर्म पुस्तकों का मान करते हैं उसी तरह भी सत्यार्थ प्रकाश को इज्जत की दृष्टि से दे वे इसका अपमान अथवा इसके किसी भाग सहन नहीं कर सकते।

आ. स. राहों (जि० जालन्धर)—

प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। विशेष बात यह है कि सत्यार्थ प्रकाश के विरोधी आन्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

अमर जीवन

(श्री पूर्णचन्द एडवोकेट आगरा)

सब वेद व शास्त्र अमर जीवन प्राप्ति की शिक्षा होते हैं—संसार में कोई प्राणी ऐसा नहीं जो मृत्यु से डरता हो। जो अमरपद प्राप्त करना न चाहता हो ऐसा भी कोई नहीं जो मृत्यु से बच सके। ऋषि, मुनि राजा, प्रजा, पुरुष व पशु सब ही मरते हैं और सब ही मरेंगे। प्रश्न यह है कि मानसिक जगत व वास्तविक जगात में यह विषमता कैसी? कभी इन में समन्वय हो सकता है या नहीं? यदि कोई कहे कि मोक्ष प्राप्ति के पश्चात् मृत्यु के प्रश्न का समाधान होगा तो यह भी ठीक नहीं—मोक्ष भी एक अवधि के लिये है, सीमित कर्मों का फल असीमित नहीं हो सकता उसकी समाप्ति पर फिर जन्म, फिर मृत्यु का सामना है। एक तरफ और—मृत्यु से डरते सब हैं और है भी डराने वाली परन्तु विचार की दृष्टि से जीवन में आनन्द मृत्यु के भय से ही है यदि यह विश्वास हो जावे कि मृत्यु कभी नहीं आवेगी—तो जीवन में अर्थात् जीवित रहने के विचार में कोई आनन्द नहीं रहेगा—एक उर्दू के कवि ने ठीक कहा है कि—

"न हो मरता तो जीने का मजा क्या।"

न केवल मृत्यु के भय से मृत्यु की अपेक्षा से जीवन में आनन्द प्रतीत होता है यह विषमता या भिन्नता भी आनन्द का कारण है—धन का आनन्द निर्धनों की उपस्थिति में है, जीवन का आनन्द वृद्धावस्था को नजर में रखकर। एक पश्चिमी जगत के ज्ञानी ने कहा है कि Beauty is Contrast विषमता में सुन्दरता है। अब तीन वास्तविक बातें हमारे सामने हैं (१) हम अमर पद प्राप्त करना भी चाहते हैं (२) मृत्यु न केवल हमारे लिये परन्तु प्राणी मात्र के लिये आनी अनिवार्य है। (३ मृत्यु का आना या संसार में अन्य प्रकार की विषमता Inequality न केवल वास्तविक है परन्तु संसार की सुन्दर व्यवस्था के लिये उनका होना अनिवार्य। प्रश्न २ व ३ को लक्ष्य में रखकर अब विचार यह करना है कि कभी नं० (१) की पूर्ती हो सकती है या नहीं। अमर पद प्राप्ति का विचार मनोविज्ञान से सम्बन्धित है—अमर पद प्राप्ति की अभिलाषा मनुष्य के अन्दर उत्पन्न होती है। किसी एक मनुष्य को अपनी या किसी दूसरे की अवस्था पर विचार करना चाहिये—देह धारी या जीव के सम्मुख तीन प्रकार के क्षेत्र होते हैं (१) एक वह (२) उसका शरीर इन्द्रिय व मन वा बुद्धि सहित (३) उसका ज्ञान वा कर्म का क्षेत्र अर्थात् वह वस्तु जिस को वह अपना कहता है या अपना बनाना चाहता है। जिसके साथ वह my (अपना) शब्द जोड़ना चाहता है—जन्म से मृत्यु तक तीनों क्षेत्र उसके साथ रहते हैं—उसके सामने है जीव का देह और देह इस का अन्त मृत्यु है—यदि 'जीव' अपने को नम्बर ३ व २ अर्थात् संसार के पदार्थ व अपने शरीर से जुड़ा हुआ देखना तो उसको सदैव क्लेश रहेगा—सच रहेगा। लोभ व मोह सताते रहेंगे वह निर्बल रहेगा, यदि वह केवल नम्बर २ अर्थात् अपने देह के साथ अपने को जुड़ा हुआ देखेगा तो उसको क्लेश तो रहेगा, भय तो रहेगा परन्तु उतना नहीं जितना कि नम्बर (२) या (३) दोनों से जुड़ा हुआ होने की दशा में। उसमें निर्बलता होगी परन्तु कम। यदि जीव अपने केवल स्वरूप को लक्ष्य में रखले और अपने देह और संसार के पदार्थ को केवल साधन मात्र अपने से पृथक मानले तो उसमें महान बल होगा। आत्मा को अपने निजी स्वरूप को ज्ञान प्राप्त होना ही आत्मिक बल प्राप्त करना है। आत्मिक बल की चरम सीमा या दूसरे शब्दों में सब से उच्च ज्ञान आत्मा को अपने स्वरूप का ज्ञान होना है यह ही अमरपद की प्राप्ति है मनोविज्ञान की दृष्टि से प्राप्ति शब्द ठीक नहीं है यह पद तो सदैव ही प्राप्त है—जीव अनादि वा अमर है जीव भ्रम में पड़जाता है। परिमित ज्ञान व कर्मों के कारण उसके अन्दर अपने स्वरूप को भूल जाने का भाव उत्पन्न हो जाता है—उसको आवर्तन कर लेना ही अमरपद है—योगिराज श्री कृष्ण ने यह ही उपदेश अर्जुन को दिया था—यह ऐसा विचार है जिसका सम्बन्ध तत्वज्ञान-मनोविज्ञान व सदाचार सम्बन्धी शास्त्र तीनों में है। जीव अपने को जान लेने के पश्चात ईश्वर को भी जान सकता है। प्रकृति का भी ठीक ज्ञान उसके सन्मुख रहता है—वह पुरुष ज्ञानी होता है—उसके कर्म भी ज्ञान के अनुकूल रहते हैं—

ईश्वर से प्रार्थना है कि हम सब को अमर पद प्राप्त हो—हमारा जीवन अमर हो।

आ. स. मिण्टगुमरी—

पांच सितम्बर की रात को बड़ी भारी सभा हुई। और निम्न प्रस्ताव पास हुआ।

"सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाजियों की धार्मिक पुस्तक है। जिस प्रकार अन्य धर्म अपने धर्म ग्रन्थों से प्यार करते हैं उसी तरह आर्य्य भाई भी। यह सभा निवेदन करना चाहती है कि यदि सत्यार्थ प्रकाश के किसी भी भाग पर जब्ती की आज्ञा लगाई गई तो प्रत्येक आर्य भाई हर तरह की कुर्बानी करने के लिए तैयार रहेगा। सरकार को कोई भी पग इसके विरुद्ध नहीं उठाना चाहिये।"

उक्त समाज ने इस प्रस्ताव की पांच प्रतियां भिन्न स्थानों को भेजीं जिनमें चीफ सैक्रेटरी गवर्नमैण्ट आफ इण्डिया, चीफ सैक्रेटरी गवर्नमैण्ट आप पंजाब भी हैं।

आर्य समाज मुलतान—

सार्वदेशिक सभा की आज्ञानुसार मुलतान की आठों समाजों के सम्मिलित प्रबन्ध में आर्यसमाज बोहड़ दरवाज़ा में विशाल सभा के रूप में 'सत्यार्थ प्रकाश दिवस' बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

आर्य सामाजिक जगत्

आ. स. डलहौज़ी—

आर्य समाज सदर व वैलून बाज़ार डलहौज़ी के सम्मिमित अधिवेशन में शिरोमणि सभा की आज्ञानुसार श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के सभापतित्व में सत्यार्थप्रकाश दिवस अति समारोह से मनाया गया, जिसमें श्री पं० मुनीश्वर देव जी सिद्धान्त शिरोमणि, पण्डिता द्रौपदी देवी जी उपदेशिका, म० देशराज जी भजनोपदेशक, म० कन्हैयालाल जी उपप्रधान, म० देवराज जी मंत्री, म० लालचन्द जी मंत्री वैलून समाज, मा० अनन्तराम जी हैडमास्टर डी. ए. वी. स्कूल अमृतसर, मा. विश्वम्भर दत्त जी हैडमास्टर वैलून स्कूल आदि में भाग लिया। श्री पं० मुनीश्वर देव जी की अपील पर एक सज्जन में २५ सत्यार्थप्रकाशों का मूल्य देने का ऐलान किया। अनेक प्रस्ताव भी पास किए गए।

१—डलहौज़ी के आर्य समाजों का यह सम्मिलित अधिवेशन बलपूर्वक निवेदन करता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, प्रवर्त्तक आर्यसमाज का लिखित सत्यार्थ प्रकाश हमारी दृष्टि में बहुत ऊंचा स्थान रखता है। और विश्वास करता है कि इसी के द्वारा हमें वैदिक सिद्धान्तों व अन्य मतमतान्तरों के सिद्धान्तों का भली प्रकार बोध होता है। अत यह हमारा पवित्र धर्म पुस्तक है।

२—हम इस धर्म पुस्तक की अखण्डता की रक्षा अपने सर्वस्व को स्वाहा करने का निश्चय रखते हैं और किसी भाग पर लगे प्रतिबन्ध को स नहीं कर सकते।

—५ सितम्बर १९४३ को आर्य्य समाज म झंग मध्याणा में आर्य्य सार्वदेशिक सभा का सत्य प्रकाश सम्बन्धी प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार किया

आर्य समाज पानीपत का वार्षिकोत्सव

इस वर्ष २४–२५–२६ सितम्बर को होगा औ नगर कीर्तन २४ सितम्बर को होगा जिसमें महान त्या विद्वान उपदेशक और भजनीक पधार कर अमृत प करावेंगे। प्रार्थना है कि सब महानुभाव पधार कर ल उठावें।

—ट्रेडर्ज़ बैंक लाहौर के मैनेजिङ्ग डायरैक ला० शिव राज ने बैंक की दसवीं वर्ष गांठ पर घोषणा की है कि बैंक सम्बन्धी लेखों पर क्रम ४०००, और १००० रुपया इनाम मिलेगा—ले भेजने की तिथि १५ फर्वरी १९४४ तक है।

—लण्डन, वायु मन्त्री मण्डल की विज्ञप्ति अनुसार मित्र बम वर्षकों ने उत्तरीय फ्रांस राइन लैण्ड के चक्कर काटे। इसमें २८ मित्र बम व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्यसमाज का हिन्दी साहित्य

२ (द—भ)

(गताङ्क से आगे)

[विश्वनाथ जी शास्त्री, एम. ए. पुस्तकालयाध्यक्ष, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर]

दयानन्द सरस्वती—(क) यजुर्वेद भाष्य संस्कृत (तथा हिन्दी)। (ख) ऋग्वेद भाष्य संस्कृत (तथा हिन्दी) ७. ६१. २ तक। (ग) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संस्कृत (तथा हिन्दी)। (घ) वेदाङ्ग प्रकाश। (ङ) अष्टाध्यायी भाष्य (अभी केवल दो भाग प्रकाशित हुए हैं)। (च) सत्यार्थ प्रकाश। (छ) संस्कार विधि। (ज) पंच महायज्ञ विधि। (झ) आर्याभिविनय। (ञ) संस्कृत वाक्य प्रबोध (ट) वेद विरुद्धमत खण्डन। (ठ) स्वामि नारायण मत खण्डन। (ड) भ्रान्ति निवारण। (ढ) वेदान्त ध्वान्त निवारण। (ण) आर्योद्देश्य रत्न माला। (त) गोकरुणा निधि(थ) व्यवहारभानु। (द) शास्त्रार्थ फीरोजाबाद।(ध) सत्यधर्म विचार मेला चांदपुर। (न) शास्त्रार्थ काशी। (प) भ्रमोच्छेदन। (फ) स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश। (ब) स्वीकार पत्र (भ) दयानन्द सरस्वती स्वरचित, लिखित व कथित जीवन चरित्र।

दर्शनानन्द—(देखो कृपाराम शर्मा)

देवराज—(कन्या महाविद्यालय) स्त्री शिक्षा पर प्रश्नोत्तर

दीवानचन्द—(प्रिन्सिपल) (क) जीवन ज्योति।

देवशर्मा अभय—(क) ब्राह्मण की गौ। (ख) वैदिक उपदेशमाला। (ग) वैदिक विनय।

देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय—(क) आदर्श सुधारक दयानन्द (बंगला से हिन्दी में स्वामी अनुभवानन्द द्वारा अनूदित)। (ख) दयानन्द चरित्र (बंगला)। (ग) दयानन्द चरित्र बंगला से हिन्दी में पं० घासीराम द्वारा अनूदित। (घ) महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र २ भाग बंगला से हिन्दी में पं० घासी राम द्वारा अनूदित। (ङ) विरजानन्द चरित बंगला से हिन्दी में प० घासीराम द्वारा अनूदित।

धर्मदेव सिद्धान्तालंकार—(क) ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार। (ख) त्याग की भावना। (ग) भक्ति कुसुमाञ्जलि। (घ) वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नावलि।

धर्मेन्द्रनाथ तर्कशिरोमणि—(क) दिव्य दर्शन। (ख) वैदिक वर्णव्यवस्था। (ग) सदाचार सन्ध्या।

नन्दलाल खन्ना—(क) आत्म मीमांसा।

नरदेव शास्त्री—(क) आर्यसमाज का इतिहास। (ख) ऋग्वेदालोचन। (ग) पत्र पुष्प। (घ) यज्ञे पशुवधो वेद विरुद्धः। (ङ) सचित्र शुद्ध बोध

नारायण स्वामी—(क) आत्मदर्शन। (ख) आर्य सिद्धान्त विमर्श। (ग) उपनिषद् रहस्य। (घ) कर्तव्य दर्पण। (ङ) गृहस्थ जीवन रहस्य। (च) प्राणायाम विधि। (छ) मृत्यु और परलोक। (ज) योग रहस्य। (झ) विद्यार्थी जीवन रहस्य। (ञ) वैदिक सन्ध्या रहस्य। (ट) वैदिक सिद्धान्त अर्थात् वैदिक सिद्धांत निषद् भाष्य (ड आर्यसमाज क्या है ?

परमानन्द भाई—(क) आर्यसमाज और कांग्रेस।

प्रियरत्न आर्ष—(क) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र। ख) क्रियात्मक मनोविज्ञान। (ग) माण्डूक्योपनिषद् का स्वरूप। (घ) मानवीय शक्तियों का परिचय और उनका प्रकाश। (ङ) मित्र वरुण की शिक्षा। (च) यमपितृ परिचय। (छ) योग मार्ग। (ज) वेद का यम यमी संवाद। (झ) वेद में असित शब्द। (ञ) वेद में इतिहास नहीं। (ट) वैदिक मनो विज्ञान। (ठ) वैदिक सूर्य विज्ञान। (ड) सोम सरोवर का स्थान। (ढ) विज्ञान शास्त्र—भारद्वाज कृत मन्त्र सर्वस्व का भाषा भाष्य। (ण) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां।

बुद्धदेव विद्यालंकार—(क) उसकी राह पर। (ख) कायाकल्प। (ग) देवयज्ञ। (घ) पंच यज्ञ प्रकाश। (ङ) पाणिनीय प्रवेशिका। (च) बिखरे हुए फूल। (छ) ब्रह्म यज्ञ। (ज) भक्ति प्रकाश दर्पण। (झ) मरुत्सूक्त। (ञ) शतपथ में एक पथ (ट) सोम (ठ) सत्यानन्दी पाखण्ड खण्डन। (ड) स्वर्ग।

बुद्धदेव, मीरपुरी—(क) अवतारवाद मीमांसा, षड्दर्शन समन्वय, मूर्ति पूजा मीमांसा।

भक्तराम उपदेशक—(क) आर्ष पितृ यज्ञ (ख) कूर्म पुराण की आलोचना। (ग) वेद प्रतिपादित नियोग विधि।

भगवद्दत्त रीसर्च स्कालर—(क) अथर्ववेदीय पंचपटलिका। (ख) अथर्ववेदीय माण्डूकी शिक्षा। (ग) ऋग्मन्त्र व्याख्या। (घ) ऋग्वेद पर व्याख्यान। (ङ) ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन २ भाग। (च) ऋषि दयानन्द स्वरचित, लिखित व कथित जीवन चरित्र (सम्पादक) (छ) बार्हस्पत्य सूत्रम् (नागरी लिपि उलथा मात्र किया)। (ज) भारतवर्ष का इतिहास। (झ) वैदिक वाङ्मय का इतिहास।

भगवद्दत्त वेदालंकार—(क) ऋभु देवता।

भवानी प्रसाद—(क) आर्य पर्व पद्धति। (ख) चारुचरितावलि (संस्कृत)। (ग) बिजनौर मंडल आर्यसमाज का इतिहास।

भीमसेन विद्यालंकार—(क) लिंग पुराण की आलोचना।

भीमसेन शर्मा—(क) अनुध्वमोच्छेदन। (ख) अष्टादश स्मृति भाषानुवाद। (ग) आर्य सूक्ति सुधा। (घ) ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय उपनिषद् भाषाटीका। (ङ) ऐतरेय उपनिषद् भाषा टीका। (च) काव्य लतिका। (छ) गण रत्न महोदधि। (ज) गीता संग्रह भाषार्थ सहित। (झ) जीव सान्त विवेक। (ञ) जैन नास्तिकत्व विचार। (ट) तलवकारोपनिषद् भाष्य। (ठ) धर्म लक्षण (ड) धातु पाठ। (ढ) पतिव्रता माहात्म्य। (ण) पाणिनीयाष्टकम् सभाष्य भाग १। (त) पुनर्जन्म

बंगाल के पीड़ितों की सहायत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कलकत्ता आर्य समाज के प्रधान से पोद्दार और मन्त्री श्री रघुनन्दन जी के निम्न तार सभा कार्यालय में प्राप्त हुआ है

Arya Samaj Relief S Kitchen destitute house Broadcast appeal for funds.

अर्थात् आर्य समाज रिलीफ सो निवारण समिति, धर्मार्थ भोजनालय शरण गृहों का प्रबन्ध कर लिया गया है। सहायता के लिये सर्वत्र अपील करें।

अन्नसंकट के कारण बंगाल के पीड़ि कितनी दयनीय और शोचनीय है इस को चार पत्रों द्वारा जानते हैं अतः उसका चित्र खैंचने की कोई आवश्यकता नहीं। सहानुभूति पूर्ण हृदय वाले व्यक्ति से कि वह बंगाल के पीड़ितों के कष्ट को लिये अधिक से अधिक उदार सहायता तुरन्त भेज दें जिसे आर्य समाज रि कलकत्ता के पास भिजवा दिया जायेगा विलम्ब हानिकारक होगा। सभा आर्य प्रधान सेनापति श्री ओंप्रकाश जी को कु और धन के साथ कलकत्ता भेज रही है

धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

—आर्य समाज दीवान हाल देहली पर्व पर यजुर्वेदीय ब्रह्म पारायण यज्ञ होता रहा। यज्ञ की एक बहुत बड़ी वेदी गई थी। वेद मन्त्रों को लिखकर सजा कृत विधान के अनुसार पात्र रखे गये। वेद पाठी पंडितों के आसन लगे हुए थे। दम्पत्तियों ने यजमान का आसन ग्रहण ष्टमी के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति हुई पश्चात् कृष्णजन्मोत्सव पर उत्तम २ भा त्मा नारायण स्वामी जी के सभापतित्व सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मना

—श्री डा० ज्ञानचन्द जी उपमन्त्री दीवानहाल के वयोवृद्ध पिता दृढ़ आर्य ठाकुरदास जी का २५ अगस्त को ८७ अपने गृह अमृतसर में यज्ञ करते हुए गया। आप अपने पीछे एक बहुत बड़ गये हैं, उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक को अमृतसर में किया गया।

द्वीता भाष्य। (न) मांस भोजन प्रचार मानव गृह्यसूत्र भाषा भाष्य। (फ) संस्कृत तथा हिन्दी में भाष्य। (ब) आर्य भाषा व्याख्या सहित। (भ) वृत्ति, भाषा। (म) विदुर नीति विवाह व्यवस्था। (र) श्वेताश्वतरोप (ल) षोडश संस्कार विधि। (व)

CC-0. Kurukshetra University, Haridwar. Collection Digitized by eGangotri Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

श्री पं० यशपाल सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

१. आर्यसमाज केटा का उत्सव २८ से ३० स्त को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस व में श्री महात्मा नारायण स्वामी जी, श्री राज-सुरेन्द्र जी शास्त्री, पं० यशपालजी सिद्धान्तालङ्कार, स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्री पंडित क्षितीशकुमार दालङ्कार, श्री म० भक्तराम जी, श्री म० चक्र- जी सम्मिलित हुए। रात के व्याख्यानों में जनता से खचाखच भरा होता था। इस पर १२७००) एकत्रित हुआ। श्री पं० क्षितीश जी उत्सव से १ मास पूर्व कथा करते रहे। कथा तथा उनके व्याख्यानों की विशेष धूम आर्यसमाज केटा पंजाब की आर्यसमाजों विशेष स्थान रखता है। यह समाज सभा की य भक्त है और सभा के साथ हर बात में विशेष योग करती है। आर्य समाज केटा से विशेष सम्बन्ध रहा है। अपने जीवन के ६ वर्ष मैंने इस समाज की सेवा में खर्च किये हैं आर्य पुरुषों के साथ मेरा विशेष प्रेम है जा के प्रधान मलिक परमानन्द जी उत्साही तथा ष्ठ व्यक्ति हैं। अगस्त मास में केटा से ३० हजार भिन्न २ निधियों के लिये दान रूप में एकत्रित का है। मेरा विचार उत्सव पर आचार्य रामदेव के लिये १००००) एकत्रित करने का था। पुरुषों की सम्मति हुई कि इस समय यह धन त होना सम्भव न होगा। इसलिये नवम्बर में संग्रह का यत्न किया जाये। इसलिये इस निधि धन संग्रहार्थ नवम्बर मास में मैं फिर केटा जा ।। मुझे लगभग ६ वर्ष के पश्चात् केटा जाने का रा प्राप्त हुआ। केटा में भारी परिवर्तन देख कर हृदय को भारी आघात पहुँचा बहुत से पुराने पुरुषों तथा देवियों को न देखकर मुझे बहुत हुआ।

२. सभा ने स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी स्मारक ये २ लाख रुपया एकत्रित करने का निश्चय है। इसके लिये सब आर्य समाजों तथा दानी ों की सेवा में अपील भेजी गई है। आर्य ों तथा दानी सज्जनों का यह कर्त्तव्य है कि वे निधि में अधिक से अधिक धन भेज कर अपने व्य का पालन करें।

३. बंगाल में अकाल पीड़ित भाइयों तथा बहिनों सहायता के लिये सभा ने बंगाल अकाल पीड़ित स्थापित की है। प्रत्येक आर्य भाई तथा आर्य ों का कर्त्तव्य है कि इस निधि के लिये अधिक से सहायता सभा को भेजें ताकि सभा उसे प्रकार से व्यय कर सके।

४ सभा ने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश को छपवाने के लिये १० हज़ार रुपये की अपील की है। प्रत्येक आर्य सज्जन तथा आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि इस निधि के लिये अधिक से अधिक धन सभा के कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

५. आर्यसमाज कोइमरी, हजूरी बाग, श्री नगर तथा महाराजगज के उत्सव बड़ी धूमधाम से हुए।

६. पत्तरुर ज़िला स्यालकोट में दयानन्द दलितोद्धार सभा के प्रबन्ध से बटवाल जाति की बहुत बड़ी कान्फ्रेंस हुई जिस में १००० के लगभग बटवाल भाई सम्मिलित हुए और जाति की उन्नति के सम्बन्ध में विचार हुआ।

७. सभा की आज्ञानुसार ५ सितम्बर को पंजाब की बहुत सी आर्यसमाजों में सत्यार्थप्रकाश दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकार किये गये। बहुत सी आर्य समाजों में सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह भी मनाया जा रहा है।

८. आर्यसमाज नारायणगढ़ ज़िला अम्बाला का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ है वहां के आर्य भाइयों के प्रयत्न से समाज मंदिर के लिये भूमि ले ली गई है परन्तु धनाभाव से मन्दिर अब तक नहीं बन सका। मैं पंजाब की आर्य समाजों और विशेष कर ज़िला अम्बाला की आर्य समाजों से प्रार्थना करता हूं कि मन्दिर निर्माण के लिये सभा को प्रभूत मात्रा में धन भेजें। नारायण गढ़ पौराणिकों तथा मुसलमानों का गढ़ है। वहां मन्दिर की बहुत जरूरत है। मन्दिर होने की अवस्था में स्थायी तौर पर प्रचार हो सकेगा। आशा है सब समाजें अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगी।

आर्य समाजों के उत्सव तथा प्रबन्ध

पानीपत २४ से २६ सितम्बर। पं० हरिशरण जी गु० कु० इन्द्रप्रस्थ। पं० ज्ञानसिंह जी, पं० हरदयालु जी, पं० मुनीश्वर देव जी, म० भद्रपाल जी तथा हरयाना प्रान्त की भजन मंडली।

कोट छुट्टा २० से २६। पं० शान्ति प्रकाश जी, पं० तीर्थराम जी, पं० शिवदत्त जी, म० बलराज जी, म० आशानन्द जी, स्वामी स्वरूपानन्द जी श्री पं० लोकनाथ जी से भी प्रार्थना की गई है।

झंग शहर २४ से २६। पं० यशपाल जी, पं० भीमसैन जी, पं० सदाशिव जी, श्रीमती प्रेमदेवी जी, म० हंसराज जी, म० देशराज जी।

कैम्बलपुर २४ से २६। श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज, श्री पं० सत्यदेव जी, श्री पं० ज्ञानचन्द जी, म० मेहरचन्द जी, म० बसन्तलाल जी।

कालका २४ से २६। पं० रामस्वरूप जी, म० चिरंजीव लाल जी प्रेम, पं० हरदयालु जी, प्रो० सुखदेव जी, म० हरिश्चन्द्र जी, म० शमशेरसिंह जी, म० जयप्रकाश जी।

चिन्योट २८ से ३०। झंगवाली पार्टी।

बिजवाड़ा ३० सितम्बर से ६ अक्तूबर तक। श्री पं० पूर्णानन्द जी, श्री पं० सदाशिव जी, श्रीमती द्रौपदी देवी जी, म० शमशेरसिंह जी, म० हरिश्चन्द्र जी, म० भद्रपाल जी।

—भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से होने वाली सिद्धान्त शास्त्री आदि धार्मिक परीक्षाएं आगामी जनवरी सन् १९४४ में होंगी। परीक्षाओं के केन्द्र बन रहे हैं और परीक्षार्थी आवेदन पत्र भर रहे हैं। अभी तक प्राप्त सूचनाओं के आधार पर आशा है कि इस वर्ष पूर्व की अपेक्षा बहुत अधिक नगरों में केन्द्र बनेंगे जिनमें काफ़ी संख्या में परीक्षार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित होंगे।

---

२ पृष्ठ का शेष

निज की सभी ही भावनाएं,
लगन ऐसी दीजिये॥
अन्तःकरण में प्रेम तेरा,
नित्य ही बहता रहे।
वासना को वह बहा ले,
जाय ऐसा कीजिये॥
सामने तेरे झुकें
पावें तुझे अपना सुहृद।
प्राप्त हो सामीप्य तेरा,
कृपा ऐसी कीजिये॥
भक्ति भरे सुन्दर वचन,
आराधना से हम कहें।
जीवन हमारे वचन सम हों,
यही वर प्रभु दीजिये॥
तुझ को भजें हम सदा ही,
तुझ में हमारा रमण हो।
तुझ से मिलें सद्भाव में,
ऐसा हमें कर दीजिये॥
अर्पण सहित नित भक्ति पूरण,
यह मिलन हो सर्वदा।
पृथकता का भास भी,
मन में न आने दीजिये॥
हों मिले तुझ से सदा,
जैसे कि सागर बून्द का—
होता मिलन जग में,
निरंतर योग ऐसा कीजिये॥
योग्य हों तब योग में,
सायुज्य हम को प्राप्त हो।
तू मैं बने, मैं तू बनूं,
दृढ़ प्रेम ऐसा दीजिये॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इटली की मित्रों से सुलह

१० सितम्बर का समाचार है कि इटली की सेनाएं हथियार डालकर लड़ाई बन्द कर बैठी हैं। इटली ने बिना शर्त हथियार डाल दिये। यह घोषणा मित्रों के हैडकार्टर उत्तरी अफ्रीका से हुई है। कमाण्डर इन चीफ ईसन होवर ने कहा है कि फौजी सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर हो गये हैं—जो सन्धिपत्र तैयार किया है वह संयुक्त राष्ट्रों की स्वीकृति से तैयार किया गया है। ईसन होवर और मार्शल बोडोगिल्यो के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर उस सन्धि-पत्र पर हो गये हैं। घोषणा में आगे कहा गया है कि जो इटालियन जर्मनों को इटली की भूमि से निकालने का प्रयत्न करेंगे—मित्र सेनाएं उनकी सहायता करेंगी सन्धि की शर्तें प्रकाशित न की जायेंगी। धुरी राष्ट्रों के लिए इटली का पतन निश्चय दुःखकर विषय है।

रूप की प्रगति—

रूसी भी दिनों दिन आगे बढ़ते जा रहे हैं। आज का समाचार है कि उन्होंने स्टालिनों पर अधिकार कर लिया है। जर्मनों ने भी इसकी तसदीक कर दी है कि उन्होंने स्टालिनों खाली कर दिया। जर्मन सेनाएं अपना सामान निकाल रही हैं और साथ ही कारखानों और ग्रामों को जला रही हैं परन्तु उनका मुकाबिला भयंकर सोवियत तोपें अग्नि वर्षा करके कर रही हैं।

बंगाल की हालत—

बंगाल के नये गवर्नर को डा० श्यामप्रसाद मुकर्जी एक खुली चिट्ठी में लिखा है कि सरकार को पूरी जिम्मेवारी लेनी चाहिये ताकि खाद्य पदार्थ भले प्रकार बंगाल में पहुँच सकें और क्या कारण है कि अभी तक भारत से अनाज बाहर न भेजने की मांग पर ध्यान क्यों नहीं दिया गया जब कि बंगाल, बिहार उड़ीसा भूखों मर रहे हैं। अभी तक भूख से मौतें होने बन्द नहीं हुईं। बंगाल के देहाती इलाके में १३ अन्न क्षेत्र और खोल दिये गये हैं। पंजाब से प्रतिदिन २२ सौ टन गेहूँ बंगाल जायगा, ऐसा समझौता पंजाब और बंगाल सरकार के रेलवे अधिकारियों की कान्फ्रैंस में हुआ।

—खाद्य मन्त्री श्री वास्तव लाहौर में आये और अपने बयान में जो उन्होंने एक प्रैस कान्फ्रैंस में दिया कहा कि मैं बंगाल के नाम पर प्रान्तों से भीख मांगने आया हूँ—पंजाबियों को बंगाल की दशा का ध्यान रखते हुए एक समय भोजन करना चाहिये। बंगाल के भोजन मन्त्री श्री सुहरावर्दी भी लाहौर आए—उन्होंने कहा है कि बंगाल की हालत सुधारने के लिए हमारी सहायता कीजिए।

—चटागांव में भूख, हैज़ा और भोजन की अव्यवस्था के कारण मृत्युएं हो रही हैं।

—वाशिंगटन, नौ सेना बिभाग ने बताया है कि मई, जून और जुलाई में ६० पनडुब्बियां नष्ट की गईं।

देश विदेश के समाचार

—अजमेर मेरवाड़ा की बाढ़ में पचास हज़ार आदमी और एक लाख पशु तबाह हो गये। मारवाड़ी रिलीफ़ सोसाइटी ने वहाँ एक सहायक केन्द्र खोला है।

—बहावलपुर राज्य के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री के पोते को तथा वहीं के करनल के पुत्र और एक हैड पोस्टमैन को चार २ वर्ष कड़ी कैद और १५००) के जुर्माने किये गये हैं। पता लगा था कि हैड पोस्टमैन उक्त आदमियों की सलाह से जाली मनिआर्डर बनाता था और उन्हें थैलों में बन्द कर देता था और वे दोनों भिन्न २ नामों से भिन्न स्थानों पर मनिआर्डर छुड़वा लेते थे। उन्होंने इसी ढंग से बहुत सा सरकारी रुपया वसूल किया।

—अमरीका के प्रधान सेनापति ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की है—उसमें विशेष बातें यह हैं—

(क) अभी तक स्पष्ट रूप से युद्ध का अन्त दिखाई नहीं देता।

(ख) अमरीकन सेना में ५०००००० की वृद्धि दो साल में हुई। (ग) रूस ने ⅘ जर्मन पैदल सेना और ⅓ हवाई सेना को उलझा रखा है। (घ) पर्ल की घटना के उपरान्त एक मास में अतलान्तिक महासागर में ७००००० टन के जहाज़ डुबो दिये गये।

—भारत के भावी वायसराय लार्ड वावेल ने लण्डन में भाषण देते हुए कहा कि मैं निजी रूप में जानता हूँ कि भारत ने युद्ध कार्य में कितनी सहायता पहुँचाई है। मैं इन भावों के प्रकाश में भारत जा रहा हूँ कि मेरे कार्य कठिन हैं परन्तु मेरे दिल में भारत के लिए बड़ा प्रेम है। भारतीय जनता और उनकी आकांक्षाओं से मुझे सहानुभूति है।

—आर्यसमाज सिरसा ज़िला हिसार के मन्त्री सूचित करते हैं कि सिरसा में भी सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाया गया और प्रस्ताव भी पास किये गये।

(१) ५ सितम्बर को आर्य समाज भलवाल ने बड़े समारोह के साथ सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती मनाई। "सत्यार्थ प्रकाश के कुछ अंशों की ज़ब्ती के लिये जो आन्दोलन हो रहा है इस के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास हुआ।

२ "सत्यार्थ प्रकाश जयन्ती" में कई महानुभावों ने बड़े बड़े भाषण दिये। और जिसमें उन्होंने बतलाया कि जब तक हमारे शरीर में रक्त है हम सत्यार्थ प्रकाश का एक वाक्य भी ज़ब्त नहीं होने देंगे। उसके पश्चात श्री डा० रामस्वरूप ने ५ सत्यार्थ प्रकाश सेठ मङ्गलसेन जी ने ५ और ज्वाला सहाय जी ५ महाशय रामप्यारा जी ने अपने पास से मंगवा कर बांटने के लिये दान दिये। निम्न प्रस्ताव पास हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश के कुछ अंशों की ज़ब्ती के सम्बन्ध में जो इस समय आन्दोलन हो रहा है उसको घृणा से देखती है और घोषित करती है कि जैसे अन्य धर्माव-

पृष्ठ १ का शेष

निश्चय हुआ? इस लिये सभा सोसाइटी में वह चुनाव में आने चाहियें जो विद्वान योग्य तजुर्बे सभा के शुभ चिन्तक हों। जिस की सोसाइटी इस उच्च नियम पर सदस्यों का चुनाव नहीं निश्चय जानो कि वह अपने मुख्य कर्तव्य से रहती है। जो सम्मति अपने अनुभव से एक विद्या देता है उसके मुकाबले में एक विद्यार्थी की कोई मूल्य नहीं रखती। इसी प्रकार एक अनुभवी अफसर की सम्मति जो मूल्य है वह एक साधारण सिपाही को कदाचित आवश्यक विषयों पर जो सम्मान एक अनुभवी सम्मति का होता है वह न अयोग्य की का नहीं। ऐसी ही त्रुटियों के कारण प्रायः सोसाइटियों में आये दिन झगड़े बढ़ते हैं। ने का कर्तव्य है कि इस ओर ध्यान देकर इस बुराई दूर करने का उपाय सोचें ताकि सभा का कल्याणकारी हो।

———

भूल संशोधन

आर्य के गत अङ्क में यह सूचना प्रकाशित हु कि श्री ला० लभ्भूराम जी नैयड़ लुधियाना नि ने आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन को सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के लिए स्वयं और मित्रों द्वारा संग्रह करके भेजा था—परन्तु यह सम गलत है—वह रुपया साबुन बाजार लुधिया अपने कोष में से भेजा है। पाठक नोट करलें।

—आर्य समाज सन्तनगर लाहौर का चुनाव ५ सितम्बर को हुआ जिस में निम्न अधि चुने गये।

प्रधान—पं० रामावतार जी। उप प्र ला० मुकुन्दलाल जी। मंत्री—पं० मुन्शीराम उप मंत्री—पं० दौलतराम जी। —ला० रामलाल कोषाध्यक्ष—ला० बसन्तलाल जी। पुस्तकाध्य ला० गोवर्धनदास जी।

वार्षिकोत्सव के सम्बन्ध में १० से १६ सि तक श्री पं० गुरुदत्त जी स्नातक तथा प्रो० बाल जी संगीताचार्य द्वारा रामायण की कथा होगी।

लम्बियों के लिए उनकी धार्मिक पुस्तकें श्रद्धा प्रे रक्षा का विषय हैं उसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश भी समाजियों की धार्मिक पुस्तक है और उनके लिए प्रेम और रक्षा का विषय है। प्रत्येक आर्य पूरे सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा करना अपना धर्म झता है।

आर्य्य समाज, गुरुकुल विभाग, जेहल

५ सितम्बर १९४३ को सार्वदेशिक सभा की अनुसार आर्य्य समाज मन्दिर में सत्यार्थ प्रकाश बड़ी धूम धाम से मनाया गया। आचार्य रामदे गुरुकुल धाम जेहलम ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...लिशर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रैस लिमिटेड, ८७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ४

वार्षिक मूल्य ४

३ आश्विन, २००

१६ सितम्बर १

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

GURUKULA KANGRI 18 SEP 1 50 P.M. SHARANPUR HP

Registered with Shahanpur (Saharanpur) Postal Authorities

मेरे पांव में खुजलाहट हुई, परन्तु मैंने अनुभव भी किया कि कब हाथ ने वहाँ पहुँच कर उसे शाँत किया—परन्तु यदि हाथ यह सोचता कि खुजलाहट दूसरा में हो रही है मैं क्यों वहाँ जाऊँ तब क्या होता—अर्थात् मेरे आत्मा को कष्ट होता। कल मुझे लगी—अनायास ही विचार आया कि क्यों न पानियां सेंक लूँ—बस हाथों ने आटा गूंधा, जलायी और रोटियां पक गई—मुँह ने चबाया मेरी क्षुधा शान्त हो गई। हाँ, रोटियां बनाते मेरा हाथ जल गया था—अधिक जलन तब ल्दी जब रोटियां खा चुका—परन्तु यदि हाथ समय यह सोचता कि इस पेट की बदौलत ा—पीड़ा उठानी पड़ी, मुझे उसका बदला पेट ा चाहिए—यदि हाथ डण्डा लेकर पेट को त करता तो बेचारे पेट का क्या हाल होता—नहीं उसने पेट को दोष नहीं दिया—रोटियां उसका कर्तव्य था—उसने उसे समझा—तभी ने उसकी पीड़ा को अनुभव किया। इन्द्रियों त्मा के लिए अथवा मेरे लिए त्याग किया। उसे समझा तभी तो बिना आज्ञा अथवा कानी के पांव की खुजलाहट को दूर करने के ट: वहां पहुँच गई—इसी प्रकार यदि मैं सारे को अपना समझूँ—"आत्मवत् सर्व भूतेषु—नने सामने रखूं और उसकी पीड़ा में पीड़ा अनु-हूँ—उसके दुःख को अपना दुःख समझूँ तो ागरण है कि मुझे पीड़ा होने पर—मुझे आवश्य-ने पर, पाँव की खुजलाहट मिटाने के लिए स तरह पहुँचे थे—वैसे ही सारा संसार—आसपास का वायुमण्डल न दौड़ पड़ेगा? तरह से मेरी कमी को पूरा करने की कोशिश इस प्रकार मुझे किसी प्रकार का कष्ट अनु-ही नहीं सकेगा। यही निस्वार्थ आत्म त्याग के लिए अपना ज्ञान—आत्मा का ज्ञान होना याक है। अपने आपको योग्य बनाने की

अध्यात्म सुधा

निस्वार्थ आत्म त्याग

[श्री विश्वमित्र]

अत्यावश्यक है। एक सुयोग्य पत्थर कभी सड़क पर पड़ा नहीं मिलेगा—यदि उसमें इमारत में लगने की योग्यता है तो मेमार उसे कहीं न कहीं लगा ही देगा। परन्तु उसे लगाने से पहले मेमार के हाथ उसे परखते हैं—उछालते हैं—उस परख में पूरा उतरने पर मेमार को भी प्रसन्नता होती है और वह भी कृत्यकृत्य हो जाता है। संसार तुमको परखता है—अथवा स्वयं परख के मौके आते रहते हैं। अतः किसी भी चीज़ के साथ "मैं" न लगाओ। वस्तुतः मेरा कुछ नहीं जब तुम इस "मैं" को खो न दोगे—तब तुम्हें किसी चीज़ का अभाव प्रतीत नहीं होगा।

तालाब ने पानी किसी को नहीं दिया—और नदी बहती रही—हंसती खेलती उछलती कूदती बहती रही और अपना आप समुद्र पर निछावर करती रही—तो उस बेचारे तालाब का क्या बना—जानते हो—वह कुछ दिन बाद वहीं पर सूख गया, उस में कीचड़ ही कीचड़ नज़र आने लगी और उसमें सड़ांद उत्पन्न हो गई—और वह प्रफुल्लवदना—सब कुछ दूसरों को सौंप देने वाली नदी बहती रही—निरन्तर कलकल करती रही—सूर्य की किरणों ने उसके पानी को समुद्र से चुराया—वह उस चोरी को छिपाये न रख सका वह चीज़ बादल को सौंपनी पड़ी पर बेचारा बादल उस चोरी को कब तक छिपाता, आखिर बेचारे ने उसे वहीं ला पटका जहाँ से बेचारी नदी चली थी, नदी फिर भरपूर होगई—बल्कि उसका आकार पहले से भी बढ़ गया। अरे भोले भाई! तेरा-मेरा कुछ भी नहीं—यह सब कुछ उसी का—भगवान का दिया हुआ है। अतः यह सब उसी को दे डालो, इससे तुम्हें घाटा नहीं—परन्तु और भी अधिक मिलेगा। त्यागी कभी कमी अनुभव नहीं करता। वेद जहां त्याग का उपदेश देता है वहां आलस्य का भाव नहीं है, उसका भाव तो है शतहस्त समाहर सहस्रहस्तसंकिर जहां तू सौ हाथों से कमाता—धनार्जन करता है वहाँ उसे सहस्र—हज़ार हाथों से बिखेर, दे डाल, यह शरीर भी तो तुम्हारा नहीं है—जब तक इसकी ममता तुम्हें घेरे रहेगी—तुम कुछ न कर सकोगे—इसको, अपने अहंभाव को, मेरे-तेरे को बलिदान की सूली पर चढ़ा दो—तुम्हें सब कुछ मिलेगा—जो छोटा सा उदाहरण एक रात को जब को चांद खिला हुआ था—एक मूर्ख मनुष्य नीचे को मुंह किये और चांद की ओर पीठ किये भागा जा रहा था—परेशान देखकर किसी बूढ़े ने उससे पूछा-भाई! तुम्हारी विकलता का क्या कारण-है? उसने बताया—महाराज क्या बताऊँ—यह देखो नादान मेरी परछाईं मेरे हाथ में नहीं आती, मैं इसे पकड़ना चाहता हूँ'। वृद्ध मुस्कराया उसने कहा तुम चांद की ओर मुख करके भागो—तो यह तुम्हारे पीछे चली आयगी—तुम अपना पीछा छुड़ाना चाहोगे तो भी नहीं छोड़ेगी। उसने ऐसा ही किया—वह हैरान था—वह उसके पीछे बेतहाशा भागी चली आरही थी। इसी प्रकार जब तक आप में स्वार्थ भावना है—तब तक कुछ नहीं हाथ आयेगा—जब इच्छाओं-स्वार्थ भावनाओं को छोड़ दोगे तो सब कामनाएँ आपसे आप तुम्हारे दरवाजे पर हाथ बांधे खड़ी होंगी।

———

—डोडेकनीज़ द्वीपों पर जर्मनों ने भयंकर बम वर्षा की जिससे विवश हो कर वहां के गवर्नर और इटालियन सेनापति को आत्मसमर्पण कर देना पड़ा। डोडेकनीज़ द्वीप पुंज एजियन सागर में टर्की के निकट और क्रीट के मत्थे पर है। सैनिक दृष्टि से इनका बड़ा महत्व है।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यजमान की सन्तति

इडामग्ने पुरुदꣳससꣳ सनिं गोः ।
शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने,
सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥४॥

(अग्ने) हे अग्नि-देव ! (हवमानाय) मुझ यजमान के लिए (शश्वत्तमम्) निरन्तर (गोः सनिम्) दूध देने वाली (पुरुदंससम्) अधिक से अधिक यज्ञ संपादित कराने वाली (इडाम्) विद्या-धेनु रूपी (साध) सिद्धि प्रदान कीजिए । (नः) हमारी (सूनुः) सन्तान (तनयः) यज्ञ का विस्तार कर (विजावा) सफल हो । (अग्ने) हे अग्नि-देव ! (ते) तुम्हारी (सा) यह (सुमतिः) कृपा (अस्मे) हम (भूतु) बनी रहे ।

अग्नि-देव ! मैं तो तुम्हारा ही उपासक हूँ । मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन यज्ञ ही अर्पण होकर सफल हो सकता है । चाहने को तो मुझे अन्न भी चाहिए, राज्य भी चाहिए, विद्या भी चाहिए । ये सब इडाएँ हैं—अघ्न्याएँ हैं । परन्तु इन इडाओं को लेकर मैं क्या करूँ यदि ये गाएँ दूध ही न दें । ये गाएँ दूध तभी देती हैं जब ये तुम्हारे अर्पण हों ।

अन्न से भूख मिट जाए पर संतुष्टि नहीं होती । मैं कितना भी मिताहारी होऊँ, भोजन-छादन को नियमित कर अपने स्वास्थ्य में त्रुटि न भी आने दूं, पर आखिर जीवन का लक्ष्य केवल खाना-पीना ही तो नहीं है न । खा-पी तो पशु भी लेता है । उसके यहाँ अन्न के भाण्डार नहीं हैं । वह अधिक खाने से अजीर्ण का भी शिकार नहीं होता । उसके लिए तो न अभाव ही है और न अतिशय, और न ही अतिशय से पैदा होने वाला दुरुपयोग । मनुष्य का जीवन भी यदि इसी प्रकार संयत हो जाए तो उसका शरीर भी सुखी हो सकता है । उसे अन्न-रूपी इडा मिल गई, उसका भोजन प्रशस्त हो गया । परन्तु मानव-हृदय केवल शरीर के स्वास्थ्य से भी प्रसन्न नहीं होगा । किसी को पेट भर खाना तो मिल जाए पर स्थिति दासों की-सी रहे—इस जीवन में गौरव कहाँ है ? मनुष्य को गौरव चाहिए । अन्न का दूध यही है-स्वतन्त्रता, स्वाधीनता ।

चलो राज्य भी अपना हो । हमारे देश पर हमारा ही अक्षुण्ण अधिकार हो । न किसी अन्य जाति का हम पर अंकुश हो और न ही हम में से ही कोई दल-विशेष राज्य-अधिकार से हमारा बहिष्कार कर दे । राष्ट्र के शासन में हम केवल वोट देने वाले ही नहीं, किन्तु राज-काज के कर्णधार ही हमीं हों । संभव है, इससे हमारी महत्वाकांक्षा को एक छोटा-सा ग्रास मिल जाए परन्तु वह इन ग्रासों की लालसा में पड़ कर सन्तुष्ट थोड़ी होती है । इस आग में जितनी घी डालोगे [illegible] भड़केगी । अन्त तो राज-नैतिक नेतृत्व का भी निराशा ही है ।

संसार में राज्य की बाग-डोर ऐसे लोगों के हाथ में भी रही है जो जड़-मूढ़ थे । इस समय ऐसा होना शायद सम्भव न हो । विद्वान् का राष्ट्र उसकी विद्या है वाणी-विलास है । साहित्य के क्षेत्र में उसका मन नित नई सृष्टि करता रहता है । कुछ समय के लिए वह क्रीड़ा-प्रिय बालक-सा इस क्रीड़ा से सन्तुष्ट भी प्रतीत होता है । परन्तु स्थिर खुशी साहित्यिक को भी प्राप्त नहीं । अधिक पढ़ने से भी जी ऊब ही जाता है ।

अन्न इडा है, पृथिवी इडा है, वाणी इडा है । ये सब कामधेनुएँ ही तो हैं । परन्तु दूध दें, तब । मनुष्य की वास्तविक सन्तुष्टि यज्ञ करने ही से होती है । यज्ञ मन के विस्तार का दूसरा नाम है । जब मनुष्य अपनी सत्ता इस छः फीट के शरीर से बाहर भी समझता है, तो उसकी प्रवृत्ति यज्ञ-मार्ग की ओर होने लगती है । जब पिता-माता भाई-बहिन, लड़का-लड़की उसकी आत्मा के अंग बन जाते हैं, तो समझना चाहिए कि वह यजमान हो चला है । परिवार की इस परिधि से निकल कर वह अड़ोस-पड़ोस से, अपने जन्म के ग्राम से, देश से, और इससे भी आगे बढ़ कर सम्पूर्ण विश्व से प्यार करने की सोचता है तो सचमुच वह यज्ञाग्नि का उपासक हो जाता है ।

यह अग्नि आलस्य की दुश्मन है । स्वार्थ परिश्रम का प्रेरक अवश्य है । स्वार्थ की भावना हट जाए तो सम्भावना यही होती है कि मनुष्य कार्य करना ही छोड़ दे । कोई रुपए के, कोई मान के, कोई यश के, कोई प्रतिष्ठा के लोभ से काम करता जा रहा है । स्वार्थ ही के ये सब विभिन्न रूप हैं । स्वार्थ-वश मनुष्य काम खूब करता है, परन्तु इस काम में आनन्द नहीं मिलता । आनन्द तभी मिलता है जब स्वार्थ का स्थान यज्ञ ले ले । यजमान निरन्तर काम करता जाता है और उससे ऊबता नहीं । उसकी सन्तुष्टि इसी से होती है कि उसने अपना कर्त्तव्य पालन किया । स्वार्थ के त्याग से वह भिखारी न रह कर राजा हो जाता है । यही, 'इडा' के दूध की "शाश्वत" धारा है । "पुरुदंस" धारा कर्म की अनवरत धारा है ।

यजमान के लिए जहां देश-विदेश की दीवारें नहीं रहीं, वहां काल का भेद भी मिट गया है । वह अकाल काल का वासी हो गया है । जिस विश्व-व्यापक अग्नि को उसने अपनी यज्ञ की भावना द्वारा प्रज्वलित किया है, उसे वह अनन्त काल तक प्रज्वलित रखना चाहता है । सन्तानोत्पत्ति का उसका यही लक्ष्य है । उसकी दृष्टि केवल वर्तमान पीढ़ी तक परिमित नहीं है । उसने मानव-जाति के भूत, वर्तमान तथा भविष्य को एक ही सतत समय के सूत्र में पिरो लिया है । वह अपने पूर्वजों का ऋणी है—ऋषियों का, देवों का, पितरों का ऋणी । वह आपने-आप इन ऋणों को चुका रहा है और आगे के लिए यज्ञ की भावना को स्थिर कर अपने द्वारा जलाई गई विश्व-याग की आग को हमेशा के लिए जलती रखने का सामान कर रहा है जीवन की सिद्धि इसी सतत अमरता में है ।

अग्नि-देव ! हमारे यज्ञ-याग तो तुम्हीं हमारे उपास्य । अमर इडा के-शाश्वत संस्कृति तुम्हीं हो । हमें अपनी यह सतत संस्कृति-रूप प्रदान करो । यही हमारी जननी हो यही सन्तति । प्रभो ! हमें "हवमान" बना दो—के यजमान । हमारा जीवन तुम्हारी अमर आहुति हो जाए । इसी में हमारा सन्तोष है हमारी स्थिर सफलता है । जीवन-धेनु का दूध तो है । मानव-जाति की अमर सन्तति यह और क्या है ?

—वाशिंगटन, जानकर क्षेत्रों का कहना कुछ सप्ताहों में ५० डिवीजन से भी अधिक इटली में लड़ेगी । जर्मनों का कहना कि चप्पा चप्पा भूमि को रणस्थल बना देंगे ।

हे रक्षक !

ओं पूषन तव व्रते वयं न रिष्येम कदा
स्तोस्तारस्त इहस्मसि ॥ यजु० ३४.

हे पुष्टि करने वाले भगवन् ! तेरे परोपकार व्रत में हमें कभी भी दुःख न हो । हम तुझे जानकर आचरण करें ।

पूषन ! रक्षक पालक देव
तुम हो दिव्य शक्ति के दाता,
अटल नियम अपने में स्थिर हो
सब के त्राता पिता विधाता ॥

यज्ञदेव इस विश्वयज्ञ
तुम हो सब के हितकारी
पूर्ण व्रती हो व्रत में अ
सदा तुम्हीं मंगलकारी
तेरे व्रत में व्रती सभी हम
तुझ सम नियम निभाते हो,
सब के हित में अपने हित को
अर्पित करते जाते हो ॥

तेरे व्रत में सुख ही सुख
दुख न लेश भी
जो हो व्रती व्रतों में
शक्ति है तुझ से पाता
जग में तुम आदर्श रूप हो
सकल दिव्य गुण धाम ।
अनुगत तेरे हो हम सब ही
करें स्तवन गुणगान ॥

हों प्रसन्न तव महिमा
जगत बने सुख—धाम
ध्यान धरें तेरा हृदय
तुम हो प्राणाराम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आर्य रविवार ३ आश्विन वि०सं० २०००

आर्यसमाज की दृष्टि में

मनुष्य मात्र समान हैं—

के २० भाद्रपद के अङ्क में "आर्य समाज संस्कार" शीर्षक लेख में मैंने इस बात पर ला था कि इस समय आर्य समाज में इस आवश्यकता है कि उस के सभासदों में 'भ्रातृ- ा समानता की भावनाएं पैदा करने के लिये कार में सबके लिये समान रूप से विधि होना चाहिए। छूत अछूत हिन्दू मुसलमान ना सबको आर्य समाज में प्रविष्ट करते समय रूप से प्रविष्ट करना चाहिए। किसी मुसलमान र्य समाज में प्रविष्ट करते समय उसका मुंडन और हिन्दू या सनातनियों का प्रवेश समय संस्कार न करना आर्य समाज की स्पिरिट के है। इस विषम व्यवहार के कारण भी मुसल- आर्यसमाज के नज़दीक नहीं आते। बाह्य चिह्नों भांति मन्तव्य और विचारों की दृष्टि से भी आर्य ज में प्रविष्ट होने वाले सब व्यक्तियों के साथ न व्यवहार होना चाहिए। जो व्यक्ति आर्यसमाज देश्यों को मानता है—वह किसी जाति-विशेष व विशेष का क्यों न हो उसे आर्यसमाज में समान से प्रविष्ट करना चाहिए। आर्य समाज का मूल सचाई की खोज करना और सचाई को प्रकट ा है। सत्यार्थ प्रकाश का शब्दार्थ भी यही है। ा दयानन्द ने इस ग्रन्थ में इसीलिये भारतवर्षीय भारत से बाहर के अन्य देशों में प्रचलित मत- न्तरों की समान रूप से भी समालोचना की है। मत मतान्तरों को देश के भेद भावों को छोड़कर ानवधर्म" में संगठित होने की प्रेरणा की है, व निवासी, इंगलैण्ड निवासी वा युरोप निवासियां लिये आर्य समाज में प्रविष्ट होने पर नाम बदलना वश्यक नहीं होना चाहिए। नामकरण संस्कार का भिप्राय इतना है कि नाम सार्थक होना चाहिए। ससे सम्बद्ध व्यक्ति के हृदय में ऊंची भावना पैदा सके। हां; यह हो सकता है कि देश विशेष के ने वाले जिस देश को अपनी मातृभूमि मान लें, देश की प्रचलित भाषा में उसका नाम रखा जाय। न्तु इस समय तक आर्य समाज में यह प्रथा प्रच- त नहीं हुई। जिस तरह मुसलमान एक व्यक्ति को सलमान बनाने के साथ उसका नाम बदलते हैं उसी कार से आर्य समाज में भी यह प्रथा चली हुई है र नाम परिवर्तन अवश्य किया जाता है। यह प्रवृ- यां उक्त सत्य सिद्धान्तों को साम्प्रदायिकता में परि- वर्तित कर देती हैं। इसी प्रकार से एक सनातनी हिन्दू आर्य समाजी बनने के बाद भी हिन्दू सनातनियों के पारिवारिक रीति रिवाजों में सम्बद्ध रहता है। उस पर कोई आपत्ति नहीं की जाती। परन्तु यदि कोई मुसल- मान आर्य बनने के बाद भी अपने पारिवारिक बिरा- दरियों के रीति रिवाजों को अपनाएगा तो सम्भवत: उस पर आपत्ति की जाय। इस विषय में भी अब आर्य भाइयों को विचार करना चाहिए। यदि इस विषय में हम किसी एक निश्चित नीति को स्वीकार नहीं करेंगे तो आर्य समाज को विचारों के फैलाने में भारी रुकावट होगी। हमारे सामने दो रास्ते खुले हैं या तो हम आर्य समाज की दृष्टि से पारिवारिक जीवन सम्बन्धी नए रीति रिवाजों का निर्माण करें—उनका पालन सब समान रूप से करें। और प्रत्येक आर्य समाजी को उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने पर बाधित करें—जो उनका पालन न करें उन्हें आर्यसमाज में प्रविष्ट न करें। इस समय आर्य समाज हिन्दुओं की जन्म की जात पात पर आश्रित बिरादरियों के रीति रिवाजों के अनुसार जीवन व्यतीत करने वालों को आर्य समाज में ऊंचे से ऊंचा स्थान देने में संकोच नहीं करते परन्तु यदि कोई मुसलमान अपनी जन्म की जात पात को कायम रखता हुआ अपने आपको शेख़ सैयद कहता हुआ आर्य समाज में आना चाहेगा तो हमें संकोच होगा।

आजकल कई ऐसे आर्य समाजी हैं जिनकी धर्म- पत्नी सनातनी है—पौराणिक रीति रिवाजों को मानती है परन्तु वह स्वयं विचारों और मन्तव्यों को दृष्टि से आर्यसमाजी हैं। क्या इसी प्रकार से किसी मुसल- मान या ईसाई कहलाने वाले को हम आर्य समाज में प्रविष्ट कर सकते हैं? ऋषि दयानन्द ने अपने पत्र- व्यवहार में एक स्थान पर एक प्रश्न का उत्तर देते हुए लिखा है कि वर्तमान समय के आर्य, मुसलमानों के साथ विवाह-आदि सामाजिक सम्बन्ध नहीं कर सकेंगे—इसलिये यदि कोई मुसलमान मन्तव्यों की दृष्टि से आर्य समाजी बनना चाहें तो उसे आर्यसमाजी बनाने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

हम आर्य समाज को विश्व व्यापी धर्म बनाना चाहते हैं ऋषि दयानन्द ने इसी उद्देश्य से 'मानव धर्म' के प्रचार के लिये आर्य समाज की स्थापना की थी। हरेक व्यक्ति को मनुष्य और मानव होने के कारण आर्य समाज में समान रूप से प्रविष्ट करना चाहिए। जन्म मूलक भेद भावों के कारण आर्य समाज के प्रविष्ट व्यक्तियों को "विषमता" का अनुभव न होने देना चाहिए। तभी हम वैदिक धर्म का मनुष्य मात्र में प्रचार कर सकेंगे।

इटली का आत्मसमर्पण!

मुसोलिनी के पतन के बाद इटली के राजा और सेनापति को बोडोगलियो ने इटली की स्वतंत्र सभा को कायम रखने के लिये कोशिश की और अमरीका की सहायता से संधि करनी चाही! परन्तु इसमें उसे सफलता न हुई। लाचार हो उसे आत्म समर्पण करना पड़ा। इटली का जहाज़ी बेड़ा मित्रराष्ट्रों के अधीन कर दिया गया। इटली के उत्तर भाग में जर्मन सेनाओं ने अपना अधिकार जमाने की कोशिश शुरू की है। इधर दक्षिण इटली में अमरीकन और अंग्रेज़ी सेनाएं आगे बढ़ रही हैं। इटली के राजा और बोडोग लियो इटली छोड़कर स्विटजर्लैंड चले गये हैं। मुसो- लिनी के विषय में अफवाह है कि वह गिरफ्तार कर लिया गया है। यह भी समाचार प्रकाशित हुआ है कि मुसोलिनी के अनुयायी 'आज़ाद इटली' की नाम की गवर्मेण्ट स्थापित कर जर्मनी और मित्रराष्ट्रों से स्वतंत्र अपनी सरकार बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इटली के इस आत्म समर्पण ने मित्र राष्ट्रों के प्रभाव को दुगना कर दिया है। असम्भव नहीं कि युरोप के अन्य पादाक्रान्त राष्ट्र भी इस मौके पर जर्मनी के फौलादी शिकञ्जे से मुक्ति पाने का यत्न करें। अब इगलैण्ड अमरीका और जर्मनी का सीधा युद्ध होगा। इस युद्ध में जर्मनी के पराजित होने पर जापान स्वयं लाचारी में हथियार डाल देगा। घटनाचक्र की गति से मालूम होता है कि अब युद्ध शीघ्र समाप्त होगा। देर तक जर्मन जाति बाकी न रहेगी। जर्मनी के लिये रूस, अमरीका और इंगलैण्ड का मुकाबला करना अत्यन्त कठिन है।

बंगाल आर्य समाज रिलीफ सोसायटी

कलकत्ता की आर्य समाज के नेतृत्व में बंगाल के आर्यों ने बंगाल में जनता के अन्न कष्ट को दूर करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। कलकत्ता आर्य समाज के प्रधान श्री. सेठ दीपचन्द जी पोद्दार ने इस काम को अपने हाथ में लिया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने इनके द्वारा बंगाल की पीड़ित जनता की सहायता करने का आदेश दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब इसी योजना के अनुसार कार्य कर रही है। पंजाब के आर्य समाजों को चाहिए कि बंगाल की आर्य समाज रिलीफ सोसायटी के लि सभा के पास अन्न और रुपये की सहायता भेजें—

—भीमसेन

—आर्य कन्या पाठशाला नई देहली के भ निर्माण का कार्य आर्य समाज ने अपने हाथ ले लिया है। भवन निर्माण पर अनुमानिक व्यय भग २ लाख रुपये होगा। दानी महानुभाव इस कार्य में सहायता देकर पुण्य और यश के भागी

—बिहाड़ी(मुलतान) के चुनाव निम्न प्रकार हुए— ला० रामचन्द्र जी एम. ए., उप प्रधान ला० दास जी तथा ला० गुरुमुखदास जी आढ़ती म० आसानन्द जी, उप मन्त्री—म० गणेश आढ़ती, कोषाध्यक्ष—मा० ज्ञानचन्द जी पुस्तकाध्यक्ष—सेठ भद्रसेन जी, अन्तरंग सभासद्—म० देवदत्त जी—म० जसव बा० रामरत्न जी, चौ० धनपतराय जी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज कल प्रत्येक नरनारी क्या समस्त संसार 'त्राहि मां त्राहि मां' पुकार रहा है, परन्तु छुटकारा दृष्टि नहीं पड़ता। क्या संसार विज्ञान से हीन हो गया है ? क्या सूर्य चंद्र नक्षत्रादि एवं वायु जलादि दैवी शक्तियों ने अपने अपने नियत कर्मों को छोड़ दिया है ? क्या गङ्गा यमुना नील मिसीसिपी आदि जलधाराओं के बहाव में अंतर पड़ गया है ? क्या हिमालय, ऐल्प्स आदि पर्वत अपने स्थानों से हट कर पृथिवी की प्राकृतिक अवस्था को विकृत करने का कारण बन गये हैं ?

लिखने की आवश्यकता नहीं, उपर्युक्त दैवी विधान में कोई अन्तर नहीं पड़ा है। किन्तु ज्ञान विज्ञान में तो संसार कहीं अधिक बढ़ गया है। जो प्रभुत्व और अधिपतित्व उस के द्वारा उस ने आकाश और पाताल दोनों पर प्राप्त कर लिया है वह संसार के प्रख्यात सात आश्चर्यों में एक और आठवां आश्चर्य्य विदित हो रहा है।

पुनः वर्तमान आपाधापी, अशांति और चारों ओर विप्लवमय घटनाओं का क्या कारण है ?

'कारणाभावात् कार्य्याभावः'

'कारणाभावात् कार्य्याभावः'—वैशेषिक शा०

'कारण (गुण) पूर्वकः कार्य्यगुणोदृष्टः'

अर्थात् कारण के होने से कार्य्य की उत्पति और उसके न होने से कार्य्य की अनुत्पत्ति तथा कारण के गुणानुरूप ही कार्य में गुण होते हैं। अतः उसके कारण तथा उसके उपचार को जानना चाहिये।

अथर्ववेद के मंत्र में इसका हृदयंगम विवरण मिलता है।

यां रक्षन्ति अस्वप्नाः विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीं अप्रमादम्। सानो मधुप्रियं दुह्याद् अथो उक्षतु वर्चसा। अ० का-१२ सू० १ मं० ७

जिस सर्व रत्नखानि और सर्वफल प्रदायिनी पृथिवी की देवजन बिना सोये प्रमाद रहित होकर रक्षा करते हैं वही पृथिवी गाय के दुग्धदोहन के सदृश हम मनुष्यों को मधुवत् आनन्द को प्राप्त कराती है तथा वास्तविक ज्ञान विज्ञान से भरपूर करती है।

इस मन्त्र में आदेश है कि सच्चो सुख शांति और समृद्धि की प्राप्ति तथा दुःख अशांति और आपाधापी से निवृत्ति के लिये देव लोग सदा जाग्रत और प्रमादरहित होकर पृथिवी की रक्षा करें। ऐसा करने से ही सब काम्य वस्तुओं के भण्डार इस पृथिवी पर रहते हुए मनुष्य-समुदाय धर्म, अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थों की उपलब्धि कर सकता है और सुख शांति की नींद सो सकता है। तब यही पृथिवी जिसको मनुष्य नरकधाम मान रहे हैं सच्चे ज्ञान विज्ञान और यथार्थ आनन्द के देने वाली हो जायगी।

सब जानते हैं कि 'विद्वाँसो हि देवाः' शतपथ ब्राह्मण के वचनानुसार विद्वानों की भी देव संज्ञा है। ब्राह्मण में एक और स्थल पर दो प्रकार के देव बताये हैं—

त्राण तो इसी में है !

[श्री० बा० श्यामसुन्दरलाल एडवोकेट बी० ए० एल० एल० बी० मैनपुरी]

'द्वया वै देवाः। अहैव देवा अथये ब्राह्मणाः शुश्रवाँसोऽनूचानास्ते मनुष्यदेवना, तेषां द्वेधा विभक्ता एव, यज्ञ आहुतयः एव देवानां, दक्षिणा मनुष्य-देवानां, ब्राह्मणानाँ शुश्रुवुषाम नूचानानाम्, आहुतिभिरेव देवान् प्रीणाति, दक्षिणाभिर्मनुष्यदेवान् ब्राह्मणाञ्छुश्रुवुषोनूऽचानांस्तऽएनमुभये देवाः प्रीता सुधायां दधति।'

—शतपथ ब्राह्मण का० २-२-२-६

अर्थात् देव दो प्रकार के हैं। एक तो यही देव तथा दूसरे वह ब्राह्मण जो बहुश्रुत और त्यागी और अनहंकारी हों वह मनुष्य देव हैं। उनको दो ही प्रकार की यज्ञबलि भी हैं, आहुतियां ही देवों का भाग हैं और दक्षिणा मनुष्य देवों अर्थात् बहुश्रुत त्यागी और अनहंकारी ब्राह्मणों का भाग हैं, मनुष्य आहुतियों से ही देवों को प्रसन्न करता है और दक्षिणाओं से मनुष्य देवों अर्थात् बहुश्रुत त्यागी और अनहंकारी ब्राह्मणों को प्रसन्न करता है। ये दोनों प्रकार के देव प्रसन्न होकर इस मनुष्य की सच्चे आनन्द से तृप्ति करते हैं।

परन्तु जहां तक वेदों और वैदिक साहित्य का सम्बन्ध है 'देव' शब्द का अर्थ विद्वान् कर देने से पूर्ण नहीं हो जाता। 'विद्वान्' शब्द उस समय 'देव' शब्द का पूर्ण वाचक हो सकता है जब यह बात मान लें कि वह विद्वान् परा और अपरा दोनों विद्याओं में निपुण हैं। विदित हो कि वेद दो प्रकार की विद्याओं को साथ-साथ जानने का आदेश करते हैं, और सत्तामात्र को 'आत्मा' और 'अनात्मा' दो भागों में विभाजित करते हैं। पहले भाग की विद्या का नाम आत्मज्ञान, केवल परा विद्या, और दूसरे प्रकार की विद्या का नाम आत्म विद्या, अपरा विद्या अथवा विज्ञान रखता है। वेद ने स्पष्ट शब्दों में निरूपण किया है कि—

विद्याञ्च अविद्याञ्च यस्तेद्वेदोभयँ सह
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया मृतमश्नुते।'

(यजु० ४०-१४)

अर्थात् विद्या और अविद्या दोनों को साथ साथ जान कर ही मनुष्य अविद्या-विज्ञान से मृत्यु से पार हो कर, विद्या आत्मज्ञान के अमृतत्व को प्राप्त करत है। वेदों में अन्यत्र भी कहा है—'देवा मृत्युं अपाघ्नत'—अर्थात् देव उक्त प्रकार मृत्यु का उल्लङ्घन कर देता है। इन्हीं दोनों विद्याओं का द्योतन मुण्डकोपनिषद् में भी आया है। यथाः—

.....कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति। ३—द्वे विद्ये वेदितव्ये...पराचैवापराच ॥४॥ तथा अपरा ऋग्वेदो...ज्योतिषमिति... ...परायया ...तदक्षरमधिगम्यते।'

(मु० १ ख १ श्लो

तथा द्वे अक्षर ब्रह्मपरे त्वनन्ते,
विद्याविद्ये निहिते यत्र गूढ़े
क्षरं त्वविद्या ह्यमृतं तु विद्या
विद्याविद्ये ईशते यस्तु अन्यः

श्वे

अर्थात् उस अक्षर ब्रह्म में विद्या औ दोनों ही गूढ़ रूप में विद्यमान रहती हैं। अ सम्बन्ध विनाशवान् जगत् के साथ होने से और विद्या का सम्बन्ध आत्मा सत्ता के अमृतरूप है और इन दोनों सत्ताओं का अर्थात् उन दोनों पर आधिपत्य करने से ब्रह्म है वह पृथक विद्यमान है।

अतः फलतः देव' संज्ञावाची वह विद्व पदार्थ विद्या और आत्म विद्या दोनों में पग और जो पदार्थ विद्या की 'इति' को आत्मज्ञानी होकर स्वयं जीवन मुक्त हो सं उद्धार के मार्ग पर चलाने के योग्य हो उद्धृत मंत्र में एक देव का आदेश नहीं है देवाः' बहुवचनांत पड़ा है और मंत्र का निर्देश ऐसे जब बहुत देव हों तो अर्थात् देवगण हों समय ही मंत्रार्थ सिद्ध हो सकता है।

यहां केवल शास्त्रों के ज्ञाता अथवा पद पत्तात्रों तथा आत्मज्ञानियों से तात्पर्य नहीं है उन विज्ञों से है जो आचरण युक्त हैं। यही कि मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक १ में जहां निदर्शन किया गया है वहां विद्वानों के सा विशेषण लगाए गये हैं। यथा—

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यम द्वेषरागिभि
हृदयेनाऽभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तंनिबोधत ॥

अर्थात् मनुष्यो ! मैं उस धर्म का आदेश हूं जिसको सच्चे विद्वज्जन सदा रागद्वेष से रह कर अपने आचरण का अङ्ग बनाते हैं औ को मनुष्य का हृदय सरल स्वभाव से अ कर लेता है। तुम उन के सेवन किये धर्म को और मानो और उसी पर आचरण करो देवगणों के लिए उक्त विशेषणों से युक्त शर्त न होती तो आजकल तो सहस्रों और ल वा अधूरे शास्त्र के विद्वानों से यह संसार भरा फिर संसार में शांति क्यों नहीं ?

पुनः वेद मन्त्र ऊपर लिखे विशेषण युक्त का होना ही पर्याप्त नहीं समझा जाता चाहता है कि वह विद्वान् रागद्वेष से विमुक्त सदा अपने कर्तव्य में संसार का रक्षण जाग्रत रहें। अपने कर्तव्य पालन रूप आलस्य अथवा प्रमाद से असावधान न और न सो जावें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसजीव भूत जगत् में ८४ लक्ष योनियों की णना है। जिस गणना की यथार्थता की ओर ाजकल की उन्नत पदार्थ विद्या बहुत कुछ परीक्षण रा पहुँच रही है। उनमें मनुष्य योनि अपनी मुख्य शेषता उस विद्या और बुद्धि द्वारा रखती है जो सको परमात्मा ने प्रदान की है। इसी मनुष्य योनि वह देवगण भी सम्मिलित हैं जिन के सचेत और प्रमाद रहने की मन्त्र में आवश्यकता बताई है। यह ीव भूत प्रकृति दो भागों में विभक्त है अर्थात् भोग ोनि और कर्म योनि। भोग योनि में एक कम ८४ क्ष हैं जिन में विद्या वृद्धि का विकाश न होने और न सकने से उन योनियों के जीव केवल (Instinct) ाभाविक ज्ञान के वशीभूत अपना-अपना जीवन र्वाह करते रहते हैं। परन्तु वह एक योनि है जिस विद्या और बुद्धि का विशेष साधन उपलब्ध होने से ष्य को उत्तरदायित्व और पाप पुण्य के बन्धन में भावत: पड़ना पड़ता है। परमात्मप्रदत्त बुद्धि की ष्टि से यह पाप पुण्य व धर्म अधर्म का बन्धन स्तव में बन्धन नहीं है किंतु अनन्त सुख की प्राप्ति र दुःख से निवृत्ति के लिये यह एक अद्वितीय धन है इसी हेतु से इस विधान में देवगणों की स्थिति अत्यन्त आवश्यक है जिसके बिना मनुष्य दाय उस मार्ग पर आरूढ़ नहीं हो सका है जो तता सुख की ओर ले जाने वाला है किंतु सुख की म्मात्रा से भी वञ्चित हो जाता है जो पशु पक्षी को ाभाविक पाशविक जीवन में प्राप्त रहता है।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो,
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य, पत्न्युरं,
लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

अर्थात् (बृहत् सत्यं) सार्वभौमिक सच्चाई, (उग्रं ऋढ़ अटल यथा समय सत्यकी व्यवस्था-न्याय, को अपने आचरण द्वारा दूसरे के जीवन का बना देना दीक्षा, ब्रह्म चर्य द्वारा मानवीय जीवन वाली कठिनाईयों को दृढ़ता पूर्वक सहर्ष सह के लिए शरीर के अङ्गों प्रत्यङ्गों को यथोचित में ढालना तप; इसी प्रकार (ब्रह्म) अर्थात् ज्ञान विज्ञान और (यज्ञ) अर्थात् परोपकारी कामों में ममता के साथ अपने उपार्जित पदार्थों का व्यय, को धारण किये हुए हैं। अर्थात् जब हम कि अमुक विशेषणों से विभूषित देवगण की निरंतर रक्षा करते हैं तो उसका तात्पर्य कि देवगण अमुक २ वस्तुओं द्वारा पृथिवी का करते हैं। दूसरे शब्दों में पृथिवी की रक्षा इन्हीं करने वाली वस्तुओं के धारण करने वालों से। इन्हीं वस्तुओं की रक्षा करने से पृथिवी फलती और पालक बनती है और मनुष्य को उज्ज्वल भविष्य के दर्शन कराती है।

कर्म करने के केवल तीन कारण अथवा यन्त्र हैं अर्थात् मन, वाणी तथा कर्मेन्द्रिय, जिनके पारस्परिक सम्बन्ध निम्न प्रकार व्यक्त किये गये हैं:—

यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति यद्वाचा वदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणा करोति तदभि संपद्यते।

मनुष्य जिस बात का मन से ध्यान करता है उस को वाणी से कहता है और जो वाणी से कहता है उसको कर्म से करता है उसके फल को प्राप्त करता है। परन्तु यह कर्म की स्थूल परिभाषा है। अन्यथा मन का व्यापार स्वयं पन का कर्म है जिसका साक्षात् ज्ञान मनन-कर्त्ता से भिन्न दूसरे व्यक्ति को नहीं होता और जो कुछ वाणी से कहा जाता है वह भी कर्म जिह्वा का है जो कर्मेन्द्रिय है, परन्तु उसका भी स्थूल कर्म नहीं गिना जाता, हालांकि वाणी के प्रभाव से सुविख्यात भारतीय महाभारत युद्ध आज तक लोगों के कंठाग्र चला आता है। परन्तु स्थूल भांति में कर्म का यंत्र हाथ पैर को समझा जाता है। क्योंकि उसके द्वारा किये हुए काम को प्रत्येक व्यक्ति देख भाल सकता है और हमारे संपूर्ण कार्य्य होते भी उसी से हैं। अर्थात् पदार्थों को पकड़ कर उठाना, धरना, खाद्य पेय को मुख तक ले जाना और मुख के सुपुर्द करना तथा अन्य संपूर्ण शरीर रक्षा संबंधी अथवा अन्य चेष्टाओं—यहां तक कि रेल तार समस्त प्रकार के कलाघर, जलयान, वायुयानों आदि का एक मात्र प्रधान स्थूल कारण हाथ ही है तथा आने जाने के साधन पैर। परंतु इन तीनों प्रकार के मानवीय कामों के क्षेत्र, प्रभाव और विस्तार की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि हम समझ लें कि उपर्युक्त मन्त्रस्थ छः पदार्थों अर्थात् सत्य, न्याय, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ के मनुष्य समाज में कौन प्रतिनिधि हो सकते हैं। और इसके सम्यक् समझने के लिये जो ऊपर लिखा गया है उस पर विचार करने से शायद ही संशय रह सकता है कि वह प्रतिनिधि वही 'देवगण' हो सकते हैं जिनके विशेषण अच्छे प्रकार ऊपर दर्शाये गये हैं। यह अपवाद रहित बात है कि 'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेद् द्विजः' अर्थात् प्रत्येक मनुष्य जन्म से शूद्र अर्थात् ज्ञान विद्या और बुद्धि पराक्रम में यहां तक अलग और शून्य होता है कि यदि जन्मकाल से उसके माता पितादि उसका संरक्षण न करें तो सभ्य बनने के मार्ग की ओर जा सकना तो पृथक् रहा उसका जीवित रह सकना ही असम्भव है। आजकल गृह पालन पोषण और शिक्षा दीक्षा (Training) के ठीक न होने से जो दुष्परिणाम हो रहे हैं वह स्वयं ही प्रत्येक विज्ञ को विदित हैं। पुनः बालकों और कन्याओं को ब्रह्म चर्य आश्रम में रख कर विद्या [illegible] पूर्वक शिक्षित और दीक्षित (Trained) करना और उस समय आचार्य होता है अन्य किसी के लि सम्भव है? जो सरलता समानता और सद्ग्राहक का भाव आजकल की पठन पाठन से सर्वथा लुप्त गया है, उसका पुनरागमन बिना इन देवगणों असम्भव है? अन्यथा क्या आवश्यकता थी। उपनिषद् साहित्य तैत्तरीयकार अपने ग्रन्थ में इ वाक्य को स्थान देते कि—

"अथ अधिविद्यम् आचार्यः पूर्वरूपम्,
अन्तेवासी उत्तररूपम् विद्या सन्धिः
प्रवचन ँ सन्धानम्।"

अथवा छुआछूत, स्पृश्य अस्पृश्य, सकरी निख आदि मूर्खता और अवैज्ञानिकता की बातों को समा में प्रविष्ट कर तथा भक्ष्याभक्ष्य, शुद्धाशुद्ध आ वैज्ञानिक वैदिक आदर्श युक्त बातों को तिला अलि दे और एक नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव सर्व व्यापक सर्व नियन्ता उपास्यदेव के स्थान में विविध दृश्य जड़ पदार्थों की पूजा के लिये मठ और मन्दिरों की स्थापना करा और दीर्घ काल से जात पांत की कुव्यवस्था [Caste system] को प्रचलित कर पारस्परिक मेल जोल रीति व्यवहार के आधारभूत खान पान आदि को रोक कर जो इस देश और इस देश के आदि निवासी आर्यों को क्षीण, हीन और दीन कर दिया है और दासता की शृंखला में बांध दिया है। उस सबके दूर करने और सुधारने के लिये आदर्श देवगणों की आवश्यकता है। केवल प्लेटफार्मों के हिलाने वाले और स्वयं आचरण भीरु वाग्मियों की नहीं।

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने बंगाल पीड़ितों की सहायतार्थ जो अपील आर्य नर नारियों से की है उसके उत्तर में आज आर्य समाज छावनी महू 'मध्य भारत' से ८४८ का चैक् सभा सभा कार्यालय से प्राप्त हुआ है। जिन सज्जनों ने इस राशि में यहां दान दिया उनके नाम—

श्री राय साहेब रामचन्द्र एण्ड सन्ज २५०)
श्री दीना भाई आर पटेल ५००)
श्री शालिग्राम एण्ड सन्ज ५०)

तथा सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री पं० गंगा प्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज ने १००) उनके भाई श्री प्यारे लाल जी रिटायर्ड जज ने १००) उनकी बहिन श्री मती राम प्यारी जी ने ५०) और उनकी भांजी श्रीमती रामप्यारी जी ने २०) इस पुण्य कार्यमें प्रदान किया है जिसके लिए ये सब धन्यवाद के पात्र हैं।

सभा की ओर से इन सब सज्जनों को हम हार्दिक धन्यवाद देते हुये आशा करते कि अन्य आर्य नर नारियां भी इस दरिद्र नारायण सेवा यज्ञार्थ उदार सहायता देकर पुण्य के भागी बनेंगे।

—आर्य समाज मिंटगुमरी में वेद साप्ताह मनाय गया पं० गुरुदत्त जी तथा म० तेजभान जी के उपदेश सायं प्रातः होते रहे। ८ दिन यजुर्वेद के ४०वें अध्याय हवन भी होता रहा। एक सप्ताह तक स्वामी सच्चि दानन्द जी ने वेदोपदेश किया। [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

मनसाराम—(क) भविष्य पुराण की आलोचना।) शिवपुराण की आलोचना।

मुनीश्वरदेव—(क) वैदिक धर्म की जय।

मुंशीराम जिज्ञासु—(क) आर्य पथिक लेखराम। ा) आर्यों के नित्य कर्म। (ग) ईसाई पक्षपात और ार्य समाज। (घ) ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार। ङ) गुरुमत दिवाकर। (च) मातृभाषा का उद्धार। ज) मानव धर्म शास्त्र तथा शासन पद्धति। (ज) प्रस्तार पूर्वक सन्ध्याविधि। (झ) वेदानुकूल संक्षिप्त नुस्मृति। (ञ) संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व। ट) त्य धर्म प्रचारक पर पहला मानहानि का अभि- योग। (ठ) छात्रों के लिए उपदेश (ड) उत्तरखण्ड की महिमा।

यशःपाल—(क) वैदिक सिद्धान्त दर्पण। (ख) शक्ति रहस्य।

यशवन्तसिंह—(क) आर्य भजन सागर।

योगेन्द्रपाल—(क) ऋषि जीवन के जगमगाते हीरे।

रघुनन्दन शर्मा—(क) अक्षर विज्ञान। (ख) वैदिक सम्पत्ति।

रघुनाथ प्रसाद पाठक—(क) आर्य जीवन अर्थात् गृहस्थ धर्म।

राजाराम—(अ) अथर्ववेद संहिता भाषा भाष्य २ भाग। (आ) आर्य जीवन। (इ) आर्य दर्शन। (ई) आर्य पंच महायज्ञ पद्धति। (उ) उपदेश कुसुमाञ्जलि ३ भाग। (ऊ) उपदेश सप्तक। (ऋ) उपनिषदों की भूमिका। (ॠ) उपनिषदों की शिक्षा। (ऌ) एतरेयोपनिषद् भाषाटीका। (ॡ) ओंकार की उपासना। (ए) औशनस धनुर्वेद संकलनम्। (ऐ) कठोपनिषद् भाष्य। (ओ) क्षत्रिय इतिहास। (औ) कौत्सभमुनि प्रणीत अथर्ववेदीय निघण्टु (सम्पादक) (क) क्षुद्र सूत्रम्। (ख) गीता हमें क्या सिखलाती है। (ग) छान्दोग्योपनिषद् भाषा टीका। (घ) तैत्तिरीय उपनिषद् भाषा टीका। (ङ) दिव्य जीवन। (च) द्रौपदी का पति केवल अर्जुन था। (छ) नव दर्शन संग्रह भाषा टीका। (ज) निरुक्त भाषा भाष्य। (झ) न्याय प्रवेशिका। (ञ) पंजाबी संस्कृत शब्द शास्त्र (ट) पारस्कर गृह्य सूत्र हिन्दी भाष्य। (ठ) प्रश्नोप- निषद् भाषा टीका। (ड) प्रार्थना पुस्तक। (ढ) बृहदारण्यकोपनिषद् भाषा टीका। (ण) भगवद्गीता का हिन्दी भाष्य। (त) मनुस्मृति सरल भाषा टीका। (थ) मुण्डक और माण्डूक उपनिषद् भाषा टीका। (द) योग दर्शन का हिन्दी भाष्य। (ध) वाजसनेय संहितोपनिषद्। (न) वात्स्यायन प्रणीत न्याय भाष्य भाषा टीका समेत। (प) वेद प्रकाश। (फ) वेद भाष्य भूमिका। (ब) वेद शिक्षक। (भ) वेदान्त [illegible] (म) वेदोपदेश २ भाग। (य) वैदिक

आर्य पुस्तकालय लेखमाला

लेख संख्या ३

आर्यसमाज का हिन्दी-साहित्य

३. (म—व)

(ले० विश्वनाथ शास्त्री, एम. ए. पुस्तकालयाध्यक्ष, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर)

शुद्धि शास्त्र। (घ) श्वेताश्वेतरोपनिषद् भाषा टीका। (स) संस्कृत भाषा का बाल व्याकरण। (ह) संक्षिप्त महाभारत भाषा टीका २ भाग। (क्ष) सफल जीवन। (त्र) सांख्य शास्त्र के तीन प्राचीन ग्रन्थ भाषा टीका। (ज्ञ) स्वाध्याय यज्ञ। (ज्ञ १) स्वामी शंकराचार्य और उनकी शिक्षा।

रामगोपाल शास्त्री—(क) अथर्ववेदीय दन्त्योष्ठ विधि (ख) अथर्व वेदीय बृहत्सर्वानुक्रमणिका। (ग) संस्कार प्रकाश। (घ) संस्कार विधि मण्डन।

रामगोपाल विद्यालंकार—(क) आचार्य रामदेव जी।

रामदेव, आचार्य—पुराणमत पर्यालोचन। (ख) भारतवर्ष का इतिहास।

रामविलास शारदा—(क) आर्य धर्मेन्द्र जीवन।

रामस्वरूप विद्या भूषण—(क) श्री स्वामी दया- नन्द सरस्वती।

रामहर्षसिंह—(क) आर्यसमाज गौरवादर्श।

रुलियाराम—(क) वैदिक प्रमाणों से वेद का अर्थ।

रैमल—(क) दयानन्द लेखावली भाग १ स्वामी दयानन्द के संस्कृत पत्र भाषानुवाद सहित।

लक्ष्मण—(क) ऋषि जीवन कथा। (ख) दया- नन्द और शङ्कर मत। (ग) दाई इस्लाम या तबाही इस्लाम। (घ) नियोग प्रमाण। (ङ) मकर तोड़ अर्थात् धर्मपाल का कच्चा चिट्ठा। (च) मुक्ति। (छ) राधास्वामी मत और वैदिक धर्म। (ज) राधास्वामी हवाई महल। (झ) वैदिक धर्म और दीन इस्लाम। (ञ) सार्वजनिक धर्म या वेद महिमा। (ट) सार्व- भौम आर्य डायरैक्टरी।

लछमूराम नग्यड़—(क) स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के उपदेश २ भाग।

(क) महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती। (ख) श्रीकृष्ण चरित।

लेखराम आर्यपथिक—(क) ऐतिहासिक निरीक्षण २ भाग। (ख) जहाद। (ग) देवी भागवत् परीक्षा। (घ) स्त्री शिक्षा के उपाय। (ङ) ग्रन्थावलि २ खण्ड सुखदेवलाल द्वारा अनूदित।

वाचस्पति—देवयज्ञ प्रकाश। (ख) सत्यार्थ प्रकाश भाष्य दो समुल्लास मात्र।

विद्यानन्द—(क) दयानन्द चरितामृत।

विद्याभूषण—(क) विरजानन्द विजय। विश्वनाथ

वैदिक जीवन। (ग) वीर माता का उपदेश वैदिक पशु यज्ञ मीमांसा। (ङ) सन्ध्या रह

विश्वनाथ शास्त्री—(क) दयानन्द रत्नमाला

विश्वबन्धु—(क) अथर्व प्रातिशाख्य। वैदिक पदानुक्रम कोष।

विश्वेश्वरानन्द—(क) पुरुषार्थ प्रकाश।

विश्वेश्वरानन्द व नित्यानन्द—(क) वेद प अकारादि वर्ण क्रमानुक्रमणिका।

वेदमित्र—(क) भक्ति रहस्य।

वेदानन्द तीर्थ—(क) अध्यात्म प्रसाद। ईशोपनिषद् भाषानुवाद सहित। (ग) कलौ सत्ता प्रकाशः (संस्कृत)। (घ) ब्रह्मोद्योपनिष प्रश्नोत्तरोपनिषद्। (ङ) यजुर्वेदीया योगोपनि (च) यजुर्वेदीया योगोपनिषत् प्रकाश व्याख्या स (छ) वेद प्रवेश भाग १। (ज) वेदोपदेश। वैदिक धर्म। (ञ) स्वाध्याय संग्रह। (ट) स्वा सुमन। (ठ) वेदामृत।

विष्णुमित्र—(क) वैदिक धर्म प्रवेशिका।

सामयिक साहित्य सदन

समस्त हिंदी भाषा-भाषियों और साहित्य-सा विशेषतः पंजाब के हिंदी-हितैषियों को यह ज प्रसन्नता होगी कि पर्याप्त पूंजी के साथ लाहौ सामयिक साहित्य-सदन (रजिस्टर्ड) नाम की बड़ी प्रकाशन-संस्था स्थापित की गई है। इसके सामयिक-साहित्य—जैसे नाटक, उपन्यास, आलोचना, जीवन-निर्माण तथा ज्ञान-विज्ञ अतिरिक्त बालक-बालिकाओं के अनुकूल तथा साहित्य-प्रकाशित और प्रचारित किया मौलिक साहित्य देना इस संस्था का मुख्य फिर भी महत्वपूर्ण विदेशी साहित्य को हिन्दी का प्रयत्न भी किया जायगा। 'शिक्षा-सदन' की बालोपयोगी मासिक पत्रिका "शिक्षा" को अपने स्वामित्व में ले लिया है।

सदन का उद्देश्य केवल व्यापार करना बल्कि युग की उस मांग की पूर्ति करना भी की ओर अभी तक उचित ध्यान नहीं दि है। हिंदी भाषा के श्रेष्ठ साहित्यकारों ने कार्य में हर प्रकार का सहयोग देने का है। शीघ्र ही सदन की ओर से 'शिक्षा' प अनेक समयोपयोगी उत्तम पुस्तकें ठाट-बा धज के साथ निकलेंगी।

आर्य परिवारक सहायता नि

लायलपुर की चारों आर्य्य समाजों आर्य समाज डिगलस पुरा में सस्ती गं आटे का ६ मास से डिपो खुला हुआ है के हिन्दु परिवारों (सहायता योग्य) ७) मन गंदम से हो रही है।

न कमाने योग्य व्यक्तियों को मु जा रहा है इस समय तक ६०००) ख

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश भर में सत्यार्थ प्रकाश दिवस की गूंज

पांच सितम्बर १९४३ को सारे देश के आर्य भाइयों ने मिल कर अपने २ समाज मन्दिरों में बड़ी धूम से सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाया और इस बात का परिचय दिया कि आर्यसमाज एक जीती-जागती संस्था है—उसमें नवजीवन है और उसमें एकता संगठनता और आत्माभिमान का भाव बड़े प्रबल रूप में विद्यमान जागृत है। आर्य के गत अंक में सत्यार्थ प्रकाश दिवस सम्बन्धी समाचार और प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। हमें इस बार भी बहुत सी समाजों के समाचार और उनके प्रस्ताव प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं। सब समाजों की ओर से आये हुए प्रस्ताव प्राप्त किये जावें तो 'आर्य' का कलेवर इसी के अर्पित हो जायगा और शायद इस से भी बढ़ जाय। अतः प्रस्ताव एक जैसा ही होने के कारण—उन की एक प्रति देकर शेष समाजों के नाम दे दिये गये हैं कि जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाया और प्रस्ताव की नकल हमारे पास भेजी है।

प्रस्ताव इस प्रकार है—

—"..... विशेष सभा घोषणा करती है कि जिस प्रकार अन्य धर्मावलम्बियों को उनके धार्मिक ग्रन्थ प्रिय हैं, श्रद्धा प्रेम और रक्षा के विषय हैं उसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश आर्य भाइयों का मान्य धर्म ग्रन्थ है और उनके लिए श्रद्धा प्रेम और रक्षा का विषय है। सत्यार्थ प्रकाश का कोई भी भाग उचित समालोचना की सीमा से बाहर नहीं जाता। सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती के विषय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आन्दोलन चल रहा है। इसका प्रत्येक आर्य भाई विरोध करता है और वह सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए वह हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार है—अतः प्रान्तीय वा भारत सरकार अन्य धर्मों की तरह सत्यार्थ प्रकाश को आर्य भाइयों का धर्म ग्रन्थ मान कर उसके सम्बन्ध में कोई भी कार्यवाही न करेगी।"

अंग्रेज़ी का प्रस्ताव—

"The Satyartha Prakash is a religious book of the 'Arya Samajists' and is an object of reverence, love and protection for them as the religious books of the followers of thers religions are for them. This Arya Samaj declares that no portion of the Satyarthaprakash transgresses the proper limits of criticism. This Sabha notifies to all people that every Arya Samajist looks upon the protection of the whole Satyarthprakash as his duty and is prepared for the greatest sacrifice for this purpose. The Sabha trusts that keeping this in view, the Provincial Government or Government of India will take no steps against the book."

उक्त प्रस्ताव की नकलें सार्वदेशिक सभा दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन को प्राप्त हुई हैं और बहुत सी समाजों ने भारत अरकार वा प्रान्तीय सरकारों के उच्च अधिकारियों को भी भेजी हैं।

निम्न समाजों के समाचार हमें मिले—

१. सत्यार्थ प्रकाश रक्षासमिति सुशीला भवन कराची—उक्त प्रस्ताव प्रि० रामसहाय जी की प्रधानता में पास हुआ और कई दिन तक श्री पं० शिवचन्द जी के सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में बड़े मार्मिक व्याख्यान होते रहे जिन्हें जनता ने बहुत पसन्द किया।

२. आर्य समाज दीवान हाल देहली—विशेष अधिवेशन में उक्त प्रस्ताव पास हुआ।

३. आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली।

४. आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर—पांच सितम्बर को दिवस मनाया गया और सेठ राधाकृष्ण जी, ला० रामगोपाल जी, म० हरिवंश सिंह जी तथा पं० योगेन्द्र पाल जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए और उक्त प्रस्ताव उपस्थित आर्य भाइयों ने खड़े होकर बड़ी श्रद्धा से पास किया। साथ ही एक और प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया गया जिसमें यह सार्वदेशिक सभा से यह अनुरोध करने को कहा गया कि वह अन्य धर्म ग्रंथ में लिखे दूसरे धर्मों के विरुद्ध लेखों को जब्त करने की मांग सरकार से करे।

५. आर्यसमाज कटड़ा सफेद अमृतसर।

६. आर्यसमाज किला सोभासिंह

७. आर्यसमाज रोपड़

८. आर्यसमाज पेशावर छावनी

९. आर्यसमाज आरिफ वाला, जिला मिंटगुमरी

१०. आर्यसमाज खानगढ़ जिला मुजफ्फरगढ़

११. आर्यसमाज गुजरात (पंजाब)

१२. आर्यसमाज मुलतान शहर

१३. ,, मिट्ठा टिवाना,

१४. ,, करनाल

१५. दहरादीन जिला मुजफ्फरगढ़

१६. आर्यसमाज नारायणगढ़ जिला अम्बाला

१७. ,, खानेवाल मुलतान)

१८. ,, वानभुच्चरां (मीयांवाली)

१९. ,, मुरीदके (शेखूपुरा)

२०. ,, बटाला

२१. ,, मोरिण्डा (ज़िला अम्बाला)

२२. ,, ननकाना साहिब

२३. ,, ठोल (ज़िला) करनाल

२४. ,, बगहावनकटना (चम्पारण)

२५. ,, दातागंज (बदायूं)

२६. ,, पानीपत

२७. ,, मिण्ट गुमरी

२८. ,, डिगलसपुरा लायलपुर

२९. ,, कोट अद्दू

३०. ,, देहली शाहदरा

श्री पं० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा ने भी अपने विचार प्रकट किये हैं—उनका कहना है कि "जब गवर्नमेंट की ओर से कोई भी अथवा किसी प्रकार की चेतावनी नहीं दी गई तो क्यों इस प्रकार के विचार प्रकट किये जारहे हैं। हमें गवर्नमेंट से यह कहना चाहिए कि जो लोग ८० वर्ष से प्रचलित पुस्तक के विरुद्ध लिखते अथवा एक महापुरुष के विरुद्ध कुछ कह कर अपमान करते हैं उनपर साम्प्रदायिकता फैलाने का दोषारोपण करके कार्रवाई होनी चाहिए।

गुरुकुल में सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के आदेशानुसार गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी में बड़ी धूमधाम के साथ 'सत्यार्थ-प्रकाश-सप्ताह' मनाया गया। स्थानीय आर्यसमाज में गुरुकुल के उपाध्यायों तथा आर्य-विद्वानों के विभिन्न तिथियों में गवेषणा-पूर्ण व्याख्यान हुए। पं० शंकरदेव जी विद्यालंकार, पं० छेदीप्रसाद जी, पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, पं० हरिदत्त जी वेदालंकार के व्याख्यान विशेष महत्वपूर्ण हुए। सभी व्याख्याताओं ने सिन्ध प्रदेश में मुसलमानों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध उठाई गई आवाज़ को दुराग्रह पूर्ण अनुचित, निन्दनीय तथा अदूर-दर्शिता पूर्ण बताया सत्यार्थ प्रकाश द्वारा आर्य-संस्कृति की रक्षा का प्रतिपादन ज़ोरदार शब्दों में किया।

पं० शंकरदेव जी का आगमन

गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक, हिन्दी के प्रख्यात लेखक तथा प्रतिभा-सम्पन्न समालोचक श्री पं० शंकरदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल विद्यामन्दिर सूपा से परिवर्तित हो कर गुरुकुल कांगड़ी में आगए हैं। आप महाविद्यालय आश्रम का आश्रमाध्यक्ष पद अलंकृत किया है और बड़ी तत्परता से कार्य कर रहे हैं। ब्रह्मचारियों को आपसे पर्याप्त लाभ पहुंचने की आशा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

श्री पं० यशपाल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

अक्तूबर मास में निम्न उत्सव नियत हो चुके हैं, जो समाजें अपने यहां कथा या उत्सव नियत करना चाहती हैं उन्हें शीघ्र निश्चय करके सूचना दे देनी चाहिये ताकि प्रबन्ध में कठिनाई न हो कई समाजें प्राईवेट उपदेशकों भजनीकों से उत्सव की तिथियां ले कर अपने उत्सव नियत कर देती हैं। और सभा को बाधित कर देते हैं कि सभा उनकी नियत तिथियों पर जरूर प्रबन्ध करे। सभा के लिये ऐसी समाजों का प्रबन्ध करना कठिन है।

१. बजवाड़ा (होश्यारपुर)	३० सितम्बर से ६ अक्तूबर
२. फगवाड़ा	१ से ३ अक्तूबर
३. बहावलपुर	१ से ३ ,,
४. सरगोधा	१ से ३ ,,
५. राजनपुर	१ से ३ ,,
६. थानेसर	१ से ३ ,,
७. बस्ती टैंकावाली	१ से ३ ,,
८. नाभा	४ से ७ ,,
९. झावरियां	८ से १० ,,
१०. सामाना	८ से १७ ,,
११. खुशाब	९ से ११ ,,
१२. मिट्ठा टिवाना	१२ से १६ ,,
१३. फतहगढ़ चूड़ियां	१५ से १७ ,,
१४. करतार पुर	१५ से १७ ,,
१५. बूड़ेवाला	१५ से १७ ,,
१६. ननकाना साहिब	१५ से १७ ,,
१७. मुलतान छावनी	१५ से १७ ,,
१८. फैसल	१५ से १७ ,,
१९. दुराला	१५ से ११ ,,
२०. भलवाल	१७ से १९ ,,
२१. फीरोज़पुर छावनी	१२ से १४ ,,
२२. दौलतनगर	२२ से २४ ,,
२३. हरीपुर हजारा	२१ से २४ ,,
२४. अलीपुर	२२ से २४ ,,
२५. मियानी	२२ से २४ ,,
सन्त नगर लाहौर	२२ से २४ ,,

आर्य्य समाज बहावलपुर में वार्षिकोत्सव हो रहा है वहां २४ सितम्बर से श्री पं० शितीशकुमार जी प० धर्मपाल जी स्नातक तथा सन्तराम जो भजनीक पधारेंगे। श्री पं० यशपाल जी अधिष्ठाता वेद प्रचार श्रीमती द्रोपदी देवी जी श्री प० लोकनाथ जी तथा पं० आत्मदेव जी आदि उपदेशक भी पधार रहे हैं। और भी प्रबन्ध किया जा रहा है। परन्तु वहां के उत्साही कार्य कर्त्ताओं ने इस अवसर पर रियासत के आर्य्य भाइयों का सम्मेलन ३० सितम्बर को करना नियत किया है। इस सम्मेलन में बहावलपुर रियासत में वैदिक धर्म प्रचार को विस्तृत करने के साधनों पर विचार होगा अतः रियासत बहालपुर की सब सभाओं से प्रार्थना है कि वे अपनी २ समाज के प्रतिनिधि ३० सितम्बर को वहां जरूर भेजें जिस से इस विषय पर भली प्रकार विचार हो सके।

स्वर्गीय पं० विक्रमादित्य जी सिद्धान्तालंकार

गुरुकुल झज्झर में सर्पदंश से अवसान

शोक का विषय है कि गु० कु० विश्वविद्यालय कांगड़ी के सुयोग्य और साधुचेता स्नातक और गु० कु० कुरुक्षेत्र के विद्वान अध्यापक का अभी हाल में ही सर्पदंश से अवसान हो गया है। यह समाचार जानते ही समस्त कुल भूमि में शोक छा गया। १२ सितम्बर को समस्त कुलवासियों की एक सभा उनकी स्मृति में निष्पन्न हुई थी सभा में उपाचार्य श्री लालचन्द जो, श्रीयुत पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार तथा स्नातक शंकरदेव जो आदि ने स्वर्गवासी पंडित जी की साधुता, सरलता, त्याग, तपस्या और पढ़ाई की निपुणता आदि पर प्रकाश डाला और बताया कि उनकी मृत्युसे गुरुकुल का एक संत स्नातक उठ गया है। वे सारी जिंदगी भर ब्रह्मचारी तपस्वी रहकर अध्यापक का काम करते रहे। कुलवासियों ने मिलकर यह शोक प्रस्ताव पास किया है।

शोक प्रस्ताव

"गुरुकुल वासियों की यह सम्मिलित सभा कुल-माता के सुयोग्य और साधुचेता और गु० कु० कुरुक्षेत्र के विद्वान् अध्यापक श्री पं० विक्रमादित्य सिद्धान्तालंकार के सर्पदंश के कारण निष्पन्न अकाल अवसान पर हार्दिक खेद प्रकट करती है। उनकी त्याग व तपस्या पूर्ण सेवाओं और साधुपुरुषोपित जीवनचर्याओं के प्रति अपनी श्रद्धा प्रसूनांजलि अर्पण करती हुई परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति और चिरशांति प्रदान करें। और आत्मीय जनों के अधीर मनों को धैर्य प्रदान करे।"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दो आर्य जत्थे कलकत्ता को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बंगाल के अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सेवा कार्य शुरू से करवाया जा रहा है। इस सेवा कार्य में विशेष रूप से सहायता देने और इसे अधिक संगठित करने के लिये अखिल भारतीय आर्य वीरदल के स० प्रधान सेनापति श्री ओंप्रकाश जी की अध्यक्षता में जो गत वर्ष भी मेदिनी पुर के पीड़ितों की सहायता करके बंगाल में विशेष ख्याति पा चुके हैं आर्य कार्यकर्ताओं का एक दल सार्वदेशिक सभा की ओर से ७ सितम्बर को कलकत्ता के लिये भेजा गया था। कार्यकर्ताओं का दूसरा दल जिसे लुधियाना आर्य समाज ने सभा के पास था श्री बाबूराम जी उप प्रधान आर्य समाज लु के नेतृत्व में सेवा कार्यार्थ देहली से र रवाना होगया है। सार्वदेशिक सभा की ओर अपील धन के लिये की गई थी उसमें आर्य नर को उदार सहायता देनी चाहिये जिसका आ पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति व्यपस्थापक वीर कथा मन्त्री सार्वदेशिक सभा की धर्मपत्नी चन्द्रावती ने १०१ रु० तथा वीर अर्जुन कार्य १०१ रु० तत्काल देकर जनता के सामने जिसके लिये सभा उन्हें धन्यवाद देती है। इस यक सहायता सार्वदेशिक सभा कार्यालय भवन, नया बाजार, देहली में तुरन्त पहुंचनी च ताकि उसे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के पास जा सके।

गुरुकुल स्वास्थ्य समाचार

श्रेणी	नाम ब्रह्मचारी	नाम रोग
५	सत्यप्रिय	ज्वर
५	वेदप्रकाश	,,
४	महेन्द्र (कनखल)	,,
४	राजेन्द्र (चरथावल)	,,
४	जगदीश	,,
४	भुपनमोहन	व्रण
३	विज्ञानधर	ज्वर
३	अशोक	,,
३	सुखदेव	,,
३	रामप्रताप	,,
३	नारायण	,,
३	कृष्णदत्त	,,
३	राजेन्द्र	,,
३	राघवेन्द्र	,,
३	सत्यपाल	,,
३	जगदीश	अतिसार
२	रमेश	चोट
३	हरिदत्त	,,
२	घनश्याम	नेत्राभिष्य
२	रमेश	व्रण
२	जयवीर	,,
२	अनन्तकुमार	,,
२	सुखदेव	ज्वर
२	सत्यकेतु	,,
१	मदन	,,
१	ओमप्रकाश	नेत्राभिमन्थ

—जर्मन सेनाओं ने स्विटजर्लैण्ड को घेर क्या उनका मुख्य उद्देश्य भूत इटालियन पकड़ना तो नहीं?

—भारत के भावी वायसराय लार्ड वा लन्दन में भाषण देते हुए कहा कि मैं भारत के एक दिमागी थैला ला रहा हूँ—जिसमें सबसे चीज प्रेम है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Re... 004

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Reg I ... 50

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २

वार्षिक

१७ आश्विन, २

३ अक्तूबर

२४८६ श्री भूदेव क्षर्या कुलपति
M. V. A.
Gurukul Ras
(H. S.)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

...ाधारणतया यह समझा जाता है कि सत्यार्थ ...खण्डन मंडन प्रधान सिद्धान्त परक ग्रन्थ है। ...मतमतान्तरों के खण्डन मण्डन के आध्यात्मिक ...ओं का नाम मात्र उल्लेख है। इस विषय में ...इस सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन आध्यात्मिक ...के लिये करें तो हमें अनेक स्थानों पर आध्या-...आत्मिक प्रसाद के उत्कृष्ट भाव दिखाई देते हैं। ...नों सत्यार्थ प्रकाश की विशेष चर्चा है। आर्य ...को सत्यार्थ प्रकाश का पारायण करने के लिये ...रेणा की जारही है। इस पुण्य में हम आर्य ...ध्यात्म सुधा के स्तम्भों में सत्यार्थ प्रकाश के ...क ज्योति कों प्रदर्शित करने वाले संदर्भों का ...यक व्याख्या के साथ उल्लेख करेंगे:—

...ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में ...ते हैं:—

...रा इस ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) के बनाने का ...प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना ...र्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो ...ा है मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का ...समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के ...में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का ...किया जाय किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको ...ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है। ...ये विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि ...वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्या ...का स्वरूप समर्पित करदें, पश्चात् वे स्वयं अपना ...त समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ ...त्याग करके सदा आनन्द में रहें।

...का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है ...थापि अपने प्रयोजनों की सिद्धि हट दुराग्राही

अध्यात्म सुधा

सत्यार्थप्रकाश की अध्यात्मिक झांकियां

और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि पर तात्पर्य है।

सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्यजाति की उन्नति का कारण नहीं है।

सत्यमेव जयते नानृतम्
सत्येन पन्था विततो देवयानः

अर्थात सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है, इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्तलोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हठते। बहुत से हठी दुराग्राही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं। विशेष कर मत वाले लोग क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंस के नष्ट हो जाती है इसलिये जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ बायबल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उन में से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिये प्रयत्न करता हूँ वैसा सब को करना योग्य है। इन मतों के थोड़े २ ही दोष प्रकाशित किये हैं जिनको देख कर मनुष्य लोग सत्यासत्य मत का निर्णय कर सकें और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग करने कराने में समर्थ होवें।

"बहका कर विरुद्ध बुद्धि कराके एक दूसरे को शत्रु बना लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बाहिर है।"

पक्षपात न करके सत्यार्थ प्रकाश करना मुझ वा सब महाशयों का मुख्य कर्त्तव्य काम है। सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करें।

सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। सत्य की खोज में लगा हुआ आत्मा ही सांसारिक तथा वाह्य दृश्य मान बंधनों को छोड़कर विस्तृत खुले मार्गमें प्रवेश करता है। ऐसे व्यक्ति ज्ञानशक्ति को अनन्त-मानते हैं और हर समय ज्ञान को बढ़ाने में दृश्यमान तथा अदृश्य वस्तुओं के जानने में लगे रहते हैं। ज्यों ज्यों उनका ज्ञान बढ़ता है उन्हें सत्य के दर्शन होते हैं और वह अनन्त ज्ञान का सहारा लिये हुए अनन्त सत्य को हर समय अपनाने को उद्यत रहते हैं इस सत्य के अपनाने में, इस का प्रकाश करने में यदि उनके सामने आपत्तियां भी आए तो वह उनकी परवाह नहीं करते आगे बढ़ते जाते हैं—जनता स्वयं उनकी सत्य ज्योति से उनकी ओर आकृष्ट होती है। जिस समय आत्मा इस सत्य की खोज के मार्ग से दूर हो जाता है—उस समय वह जड़ और कीलित हो जाता है और मन मतान्तरों के चक्कर में पड़ जाता है। इसलिये अध्यात्म उन्नति का आत्मा की शक्ति को पहचानने का प्रथम साधन यह है कि हम सत्य की खोज के लये ज्ञान को अनन्त समझ कर हर समय नए २ ज्ञानों के संचय में लगे रहे हैं और इस ज्ञान का अधिक से अधिक मात्रा में मनुष्य जाति में प्रचार करे तभी हम अपनी तथा संसार की मनुष्य जाति की आत्मा को जगा सकें—अध्यात्म प्रसाद से—अशान्त आत्माओं को शान्ति प्राप्त करा सकेंगे।

—भीमसेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

किया है। इस सम्मेलन में बहावलपुर रियासत में जिसे लुधियाना आर्य समाज ने सभा के पास

राजा का नमो नैवेद्य

इन्धे राजा समर्यो नमो-
भिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो ह्व्येभिरीडते सबाध,
अग्निरग्रमुषसामशोचि ॥८॥७१॥

वह (अर्यः) सम्पत्ति-शाली (राजा) राजा (नमोभिः) नमो-नैवेद्य द्वारा (सम्-इन्धे) यज्ञाग्नि को प्रदीप्त कर रहा है, (यस्य) जिसकी, (घृतेन) घृत के रूप में प्रतीकम्) उपलक्षण-मात्र (आहुतम) आहुति दी जाती है। (सबाधः) विघ्न-बाधाओं के उपस्थित होने पर तो (नरः) नर नारी (हव्येभिः) हवियों द्वारा (ईडते) इनकी स्तुति करते ही हैं। पर,(अग्निः) अग्नि-देव (उषसाम्) उषाओं से (अग्रम्) पूर्व (अशोचि) प्रदीप्त किया गया है।

यज्ञ करने का अधिकार राजाओं का है। जिनकी संपत्ति अपनी हो, जो अपने धन-वैभव पर अधिकार रखते हों, वही इस आग को प्रदीप्त कर सकते हैं जो धन के दास हों, यज्ञ का रास्ता उनके लिए निषिद्ध है। यज्ञ तो है ही—घर फूँक तमाशा देख। अपने फुँकते घर का तमाशा देख सकने के लिए दिल चाहिए। दिल यजमान की संपत्ति है। धन चाहे थोड़ा और चाहे बहुत, दिल दरिया चाहिए। सच्चे हृदय से दी हुई कौड़ी का यहां वही मूल्य है जो कुबेर के अनगिनत खज़ानों का। इस मार्ग में तो भावना ही की बाज़ी है।

यज्ञ ऐंठ से नहीं किया जा सकता। धन दे और समझे कि मैंने लिया है। लेने वाले का अनुगृहीत हो। पाहुना तेरे घर भोजन करने आया है—यह उसकी कृपा है। भोजन तो उसके भाग्य में बदा ही था। अन्न-राजा ने उस अन्न पर उसी का नाम अङ्कित कर रखा था। तुझे मुफ्त का श्रेय देने के लिए उसने अपने भाग्य का अन्न तेरे चौके में ग्रहण किया। तू इस कृपा के लिए उसका आभारी हो। देता जा और झुकता जा। लज्जित हो कि पूरा नहीं दे रहा। कवि के शब्दों में—

जान दी ही हुई उसी की थी।
सच तो यह है कि हक़ अदा न हुआ।

रहिमन की उक्ति है—

देने वाला और है, जो देता दिन रैन।
लोग मुझे दानी कहें, इस विध नीचे नैन॥

हाथ उठा हुआ और आंखें झुकी हुई—यज्ञ की मुद्रा यही है। अन्न-दान, वस्त्र दान, विनय दाने—यह तीन प्रकार का नमो-नैवेद्य यज्ञाग्नि की भेंट है। यजमान राजा होकर झुकता है या झुक-झुक ही कर राजा बनता है। यजमान का राज्य इसी नमो-नैवेद्य में है। यही उसकी बड़ी संपत्ति है। इसी के वह [illegible] है—धनी संपत्ति-शाली राजा।

मनुष्य पर जब भी भीड़ पड़ती है, वह अग्नि-देव को पुकारता है। आपत्ति के समय कौन अपना धन-धान्य न्यौछावर करने को तैयार नहीं होजाता? वह तो वास्तव में आपत्ति-देवता की पूजा है। आई बला टालने के लिए जप-जाप, यज्ञ याग सभी करा लेते हैं। और यदि बिना धन के काम चल सकता हो, वहां धन को काहे को हवा लगानी? पर खैर! कुछ खर्च आजाए तो वह भी इच्छा से अनिच्छा से कर लिया जाता है। संकट के समय कृपण भी अतिव्ययी हो जाते हैं। पर अतिव्ययिता यज्ञ नहीं। यजमान थोड़ा दे अधिक दे, वह अतिव्ययिता नहीं करता। उसे इसकी अनुभूति ही नहीं होती।

यज्ञ तो उपलक्षण है। अग्नि-देव का प्यारा आहार घृत है। यज्ञ-याग में इसी की अधिक आहुति चलती है। परन्तु यह एक प्रतीक है—बाहर का चिह्न है। वास्तविक घृत तो हृदय का स्नेह है। यज्ञ श्रद्धा से किया जाए, प्रेम से, प्यार से। घृत की सच्ची आहुति वही है। डर के मारे कुछ दे भी दिया और फिर रोते रहे—यह यज्ञ नहीं। चोर बनिए से लाख रुपया रखवा ले—इसे दान कौन कहेगा? आपत्ति के समय के यज्ञ-याग डाकू के सम्मुख नमो नैवेद्य-रूपी धन की भेंट ही तो है।

वास्तविक यज्ञ तो दिन होने से पूर्व हो लेता है। उषा अग्नि-देव की पुत्री है। अग्नि प्रज्वलित होती है। हमारी यज्ञ-भावना का सूर्य हृदय के क्षितिज से ऊपर उठ गया। हमारे अध्यात्म के उदयाचल में अरुणाई-ही-अरुणाई छा गई। तब कहीं यह भौतिक उषा आध्यात्मिक उषा का स्वागत करने के लिए पूर्व दिशा में प्रकट हुई। संसार के व्यवहार में सफलता हो या असफलता। हमारे भाग्यों में भौतिक व्यवहार की भाषा में लक्ष्मी के दर्शन हों या अलक्ष्मी के। हमारी यज्ञ-श्रीः दिन के उदय होने से पूर्व की ही हमारे भाग्यों में भौतिक व्यवहार की भाषा में लक्ष्मी के दर्शन हों या अलक्ष्मी के। हमारी यज्ञ-श्रीः दिन के उदय होने से पूर्व की ही हमारे मस्तक पर आध्यात्मिक राज्य का मोरछल झुला रही। हम आर्य हैं। पुरानी "अर्य"। हमारे रास्ते में जो विघ्न-बाधा आती है। वह हमारे पावों के आगे सिर झुकाने के लिए, हमारी प्रगति का क़दम और तेज़ करने के लिए ही आती है। हमारे पैर ऊँचे-ही-ऊँचे उठते हैं और सिर नीचे ही नीचे होता चला जाता है। प्रत्येक सफलता अग्नि-देव को देन है—यह सोच कर हम जहां आगे बढ़ते हैं, रुकावटों से घबराते नहीं, वहां साथ-साथ विनम्र भी होते जाते हैं। सच तो यह है कि हमारा आर्यत्व ही अग्नि-देव की उपासना का फल है। देवता की देन है—यह सोच कर हम जहां आगे बढ़ते हैं, रुकावटों से घबराते नहीं, वहां साथ-साथ विनम्र भी होते जाते हैं। सच तो यह है कि हमारा आर्यत्व ही अग्नि-देव की उपासना का फल है। देवता की देन देवता के अर्पण कर देने में श्रेय की बात ही क्या है?

जीवात्मा के गुण

श्रीपूज्य पाद नारायण स्वामी जी महाराज उत्तर दें

[श्री विश्वनाथ जी जड़ाँवाल]

१७ आश्विन के आर्य पत्र में उक्त महात्मा जी विद्या और अविद्या के विषय पर प्रकाश डालते लिखा है "आत्मा के स्वाभाविक गुण ज्ञान और हैं। न्याय दर्शन में जो इच्छा द्वेषादि विशेषण दि वह आत्मा के गुण नहीं अपितु आत्मा के के लिंग=चिन्ह हैं। मनुष्य शरीर को बनाव आत्मा के इन्हीं दो गुणों के होने को साक्षा शरीर में ज्ञानेन्द्रिय आत्मा के ज्ञान गुण और कर्मे कर्म गुण को सार्थक करने के लिये है।

मैं श्री महात्मा जी को उपर्युक्त लेख के विष निम्न लिखित शङ्का और प्रश्न उपस्थित करत और श्री स्वामी जी से और समुचित उत्तर कृतार्थ करने का निवेदन करता हूं।

(१) न्याय दर्शन का सूत्र यह है—

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिंगमिति। न्याय० १।१० शब्दार्थ—इच्छा द्वेष सुख दुःख ज्ञान आत्मा का चिन्ह हैं।

इस सूत्र में इच्छादि के साथ ज्ञान और भी आत्मा का लिंग-चिन्ह ही वर्णित हुआ तो महात्मा जी ने इच्छादि से अलग करके ज्ञान और प्रयत्न को आत्मा के स्वाभाविक गुण कह दिया।

(२) वैशेषिक दर्शन १-१-६ में गुणों की में बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न यह जीवात्म छः चिन्ह भी आये हैं तो यदि न्याय सूत्र के अ आप ज्ञान और प्रयत्न को आत्मा के स्वभाविक मानते हैं तो इच्छादि भी आत्मा के स्वाभाविक क्यों नहीं?

(३) यदि इच्छादि आत्मा के गुण नहीं तो किस द्रव्य के गुण हैं? क्योंकि वैशेषिक १- से "द्रव्याश्रयी" गुण को किसी द्रव्य के होना आवश्यक है। और इच्छादि चारों प्राकृति के हैं न ईश्वर के, वैशेषिक ने भी प्रश्नों में आत्मा के साथ ही इन को संयुक्त इस अवस्था में इच्छादि आत्मा के गुण मा नकार कैसे?

(४) महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रकाश समुल्लास २ में उपर्युक्त न्याय सूत्र यही किया है कि जिस में इच्छा द्वेष प्रयत्न सु

(शेष पृष्ठ ८ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

र्य रविवार १७ अश्विन
वि० सं० २०००

जय दशमी का संदेश

र को विजयदशमी का त्यौहार आरहा
के अनेक स्थानों पर इस त्यौहार को
यारियां की जा रही हैं। आर्य जाति के
सुनहले इतिहास में विजय दशमी का
ाने वाली आर्य जाति तथा अन्यान्य
नुष्य जाति के लिये प्रकाश स्तम्भ है।
च्चीन इतिहास में पाण्डवों ने भी कुरुक्षेत्र के
कृष्ण के नेतृत्व में विजय प्राप्त की थी।
भयंकर संग्राम में ५ पाण्डवों ने १००
हरा कर यमलोक का भागी बनाया था।
जैसा योगी उनका नेता था। परन्तु क्या
कि भारतवर्ष में आज कहीं पाण्डव विजय
नहीं मनाया जाता। कुरुक्षेत्र के मैदान में
डहर पड़े हैं, भीष्म पितामह तथा द्रोणाचार्य
कई स्थान भी निर्दिष्ट किये जाते हैं—दिल्ली
ण्डवों का किला भी दिखाया जाता है—
र्य जाति इस विजय को उत्साह पूर्वक नहीं
दूसरी ओर रामचन्द्र की विजय—रावण का
वर्ष आबाल वृद्ध उत्साह उमंग के साथ
इस भेद का क्या कारण है। हमें इन दोनों
भेद पर विचार करना चाहिये।
संसार में सभ्य राष्ट्र विजयी होने की
र रहे हैं विजय चिह्न सूचक V के द्वारा
जनता को विजय प्राप्ति के लिये उत्साहित
हा है। परन्तु क्या हमने कभी यह सोचा
ाण्डव विजय की प्राप्ति के लिये यत्न कर
रामचन्द्र द्वारा प्राप्त विजय जैसी विजय

लिये हमें पांडव विजय और राम विजय के
के स्वाभाव तथा उद्देश्य पर विचार करना
स विचार से हमें दोनों विजयों के उत्पादक
झांकी दिख सकेगी।
विजय के विजेता ५ पांडव थे—उन्होंने यह
हुए राज्य की प्राप्ति के लिये किया था।
भरत द्वारा भेंट किये गये राज्य को
जंगल में रहते हुए यह युद्ध दक्षिण की
अत्याचारों से पीड़ित करने वाले लङ्का
निवासी रावण का दमन करने के लिये! राम ने युद्ध में विजय प्राप्त की। विजित प्रदेश—रावण के भाई विभीषण को दे दिया, स्वयं अपने देश को वापिस आगया। पांडवों ने विजित राज्य को अपनी माता कुन्ती को भेंट करना चाहा, उसने राज्य न लेकर जंगल की राह ली। कौरवों के प्रति पक्षी का कोई अंश शेष न था इन कौरवों की माता गांधारी ने इस विजयोत्सव में अपनी ईर्ष्या की आग से भीम को भस्मसात् करने की कोशिश की। पांडवों की विजय ने गांधारी जैसी देवी के हृदय में ईर्ष्या की आग और अपनी माता के हृदय मे शमशान की सी उदासीनता को जन्म दिया। दूसरी तरफ राम की विजय ने विभीषण को रावण के भाई को—लंकानिवासियों के प्रतिनिधि को लंका का राज्य सौंप कर उनके हृदय में ईर्ष्या और क्रोध का भाव पैदा नहीं होने दिया। स्वदेश लौटने पर प्रतिपक्षी भरत को तथा उसकी माता कैकयी को अपने उदार स्वभाव द्वारा—ऐसा मंत्र मुग्ध किया कि दोनों राम का स्वागत करने में अहोभाग्य तथा अन्य दोष स्वीकार करने के लिये उत्कंठित थे।

पांडवों की विजय मैं की विजय थी राम की विजय सिद्धान्त की विजय थी। मनुष्यमात्र को—शत्रु को अपनाने पाली विजय थी।

आज युरोप में—एशिया में, राष्ट्रों तथा जातियों में जो संघर्ष हो रहा है हरेक राष्ट्र स्वयं विजयी होने के लिये यत्न कर रहा है। ऐसे समय में विजयदशमी का सदेश इन राष्ट्रों के लिये स्पष्ट है। जो राष्ट्र अपनी विजय को अमर बनाना चाहते हैं—उन्हें महाराजा रामचन्द्र की भांति अपने व्यवहार से विरोधी राष्ट्रों की प्रजाओं को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए, राज्य लिप्सा तथा ऐश्वर्य बनाने के उद्देश्य को छोड़ कर आत्म निर्णय और स्वाधीनता के सिद्धान्तों के लिये लड़ना चाहिए। प्रै० रूज़वेल्ट तथा चर्चिल इस प्रकार की घोषणाएं कर रहे हैं, एटलांटिकचार्टर और मि० रूज़वेल्ट की चार प्रकार की स्वाधीनताएं—इसी दिशा की ओर संकेत कर रही हैं, भारतवर्ष की वर्तमान भारतीय सरकार—भारत सचिव मि० एमरी और भारत के वायसराय लार्ड लिनलिथगो को मि० रूज़वेल्ट की घोषणाओं के अनुसार भारतवर्ष में भी ऐसा वातावरण पैदा करना चाहिए जिससे यहां जनता मित्र-दल की विजय को राम विजय—दसहरा के विजयोत्सव की भांति अपनी स्मरणीय विजय रूप हो। विजयदशमी का सदेश केवल राष्ट्रों के लिये नहीं, अपितु हरेक मनुष्य के लिये है। विशेषतया भारत निवासियों को इस विजयदशमी का संदेश सुन कर राम और भरत की भांति, भरत-मिलाप द्वारा पारस्परिक ईर्ष्या अविश्वास को पैदा होने का अवसर नहीं देना चाहिए। इस समय देश के विविध समुदाय साँप्रदायिक मनोवृत्तियों से प्रेरित होकर पाण्डव विजय की भांति स्वदेश का दूसरे भाइयों की शक्ति को क्षीण कर विजयी होने का यत्न कर रहे हैं, यह मनोवृत्ति राष्ट्र के लिये घातक है इससे हमारा राष्ट्र दिन प्रति-दिन अन्तः कलह की आग में झुलसता जायगा। दसहरे के इस शुभ अवसर पा हमें राम के त्याग और आदर्श का अनुकरण करना चाहिए। भारतीय घरों में भी आज ईर्ष्या द्वेष की भट्टी सुलग रही है, वहां भी भाई भाई पर विजय पाने की कोशिश कर रहा है, उन्हें भी राम भरत के भ्रातृ प्रेम का अनुकरण करना चाहिए तभी हम यथार्थ में विजयदशमी का त्यौहार मना सकेंगे।

श्री प्रियरत्न जी आर्ष का प्रतिवाद—

इसी अङ्क में हम श्री प्रियरत्न जी आर्ष का देवृकामा और देवकामा के विषय में आर्य में प्रकाशित समालोचना के विषय में प्रतिवाद पत्र छाप रहे हैं। श्री प्रियरत्न जी आर्ष हमारी समालोचना को अपने लिये अपमानजनक समझते हैं। हमारा इस समालोचना को करते हुए उनका अपमान करने का लेशमात्र भी विचार नहीं था। हम यह समझते हैं कि श्री प्रियरत्न जी ने नियोग को ऋषि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित ढंग से आपद्धर्म न समझ कर सामान्य धर्म मान कर विवाह प्रसंग में उसके निर्देश करने का मंडन किया है। ऋषि दयानन्द धर्मपत्नी के मरने पर या निःसन्तान होने पर प्रथम आदेश यह देते हैं कि ब्रह्मचारी कहो—या दत्तक ले लो यदि यह न हो सके तो नियोग करो। श्री प्रियरत्न जी ने ऋषि के आशय को ठीक न समझ कर देवृकामा को ठीक सिद्ध करने का यत्न किया था—इसी लिये हमने उनके यत्न को अति भक्ति का नाम दिया था।

आर्यसमाज और हिन्दी—

सरगोधा से श्री. रामसरन जी हमारे पास निम्नलिखित प्रश्न भेजते हैं। "जब कि आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का प्रचार है ऐसी अवस्था में आर्य समाज के सब अधिवेशनों पर उर्दू भाषा में विज्ञापन रिपोर्ट आदि क्यों छपवाई जाती है? जैसा कि स्थानीय आर्य समाज ब्लाक नं. २ के वार्षिकोत्सव पर हुआ"।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

किया है। इस सम्मेलन में बहावलपुर रियासत में जिसे लुधियाना आर्य समाज ने सभा के प्र

स्थानीय आर्य समाज सरगोधा छावनी नं. २ के अधिकारियों की गल्ती है कि वह समाज के उत्सव पर उर्दू में ही रिपोर्ट विज्ञापन आदि छपवाते हैं। आर्य समाज आर्य संस्कृति का प्रचारक है? पंजाब में आर्य भाषा आर्य संस्कृति के प्रचार का मुख्य साधन है। विज्ञापन में हिन्दी का होना आवश्यक है रिपोर्ट भी हिन्दी में ही छपनी चाहिए। प्रचार की दृष्टि से यदि विज्ञापनों में हिन्दी के साथ उर्दू में भी छापें तो कोई विशेष आपत्ति नहीं। परन्तु केवल उर्दू में प्रकाशन तथा लेखन कार्य करना, पंजाब के आर्य समाजों के लिये आत्म-हत्या के समान है? आशा है आर्य समाज सरगोधा के अधिकारी तथा अन्तरंग सभा-इस विषय में भविष्य में उचित संशोधन तथा सुधार करेंगे।

विधवाओं की बढ़ती हुई संख्या—

विधवा पुनर्विवाह समिति लखनऊ ने प्रस्ताव स्वीकार किया है कि भारतीय सरकार को नियम न बनाना चाहिए जिसके अनुसार ३० साल से ऊपर के विधुर को कुमारी कन्या से विवाह करना मना हो। ऐसे विधुरों को विधवाओं से ही विवाह करना चाहिए। भारतवर्ष में बाल विवाह के कारण पहिले ही विधवाओं की बड़ी तादाद है अब युद्ध के कारण इनकी संख्या और भी बढ़ जायगी। सामाजिक सुधार करने वाली संस्थाओं को इस आने वाली आपत्ति का मुकाबला करने के लिये विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर के नए आचार्य—

२८ सितम्बर सायंकाल संध्या हवन के समय यज्ञशाला में श्री स्वामी वेदानन्द जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम अधिकारियों की प्रार्थना पर उपदेशक विद्यालय का आचार्य बनना स्वीकार कर लिया है। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर श्री स्वामी जी का स्वागत किया और उनकी सेवा में अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। दयानन्द उपदेशक विद्यालय के अधिष्ठाता म० कृष्ण जी तथा सभा मंत्री भीमसेन जी ने सभा के अधिकारियों की ओर से आचार्यपद का कार्य भार स्वीकार करने पर श्री स्वामी जी का धन्यवाद किया और विद्यार्थियों को श्री स्वामी जी की ऋषि भक्ति, आर्य समाज की लगन तथा स्वाध्यायशीलता का अनुकरण करने की प्रेरणा की। सभा उपप्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी भी इस समय उपस्थित थे। विद्यालय का अध्यापक वर्ग भी उपस्थित था। हमारी हार्दिक इच्छा है कि विद्यालय श्री स्वामी जी के आचार्य काल में उत्तरोत्तर उन्नति कर आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के प्रचारक पैदा करने में सफल हो।

अन्न कष्ट के कारण बरातों पर पाबन्दियां—

इन दिनों खांड, घी, दूध तथा अन्य अन्न सामग्री की तंगी के कारण विवाह के अवसरों पर वर वधू के माता पिताओं को बहुत कष्ट होता है। सामाजिक लोकमत के कारण उन्हें पहले की भांति बरात के भारी संख्या में मेहमानों को निमंत्रण देना पड़ता है। इससे कन्यापक्ष और वरपक्ष दोनों को कष्ट होता है। जनता के कुछेक प्रतिनिधियों ने सरकार से निवेदन किया है कि वह कानून द्वारा युद्ध काल तक विवाहों की बरातों के बरातियों की संख्या नियत कर दें। २० से ज्यादा बराती न बुलाए जायें। धार्मिक सामाजिक कार्यों में सरकारी कानून की दखल नहीं होनी चाहिए परन्तु विवाहों के सम्बन्ध में यदि जनता स्वयं अपने पर पाबन्दी नहीं लगा सकती तो सरकार की ओर से वर्तमान समय में इस प्रकार के कानून के बनाने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। सरकारी कानून के साथ २ यदि पंचायती बिरादरियां अपने २ सम्मेलनों में इस प्रकार के नुकसान स्वीकार करें तो भी यह काम हो सकता है और जनता की मुसीबतें कम हो सकती हैं। —भीमसेन

शरणगृहों द्वारा अकाल पीड़ितों की सहायता बड़ी तत्परता से कर रही है पर उस के कार्य विस्तार के लिये आर्थिक सहायता भिजवाने की तुरन्त आवश्यकता है। सब सहायता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा बलिदान भवन देहली के पते पर आनी चाहिये। सभा जो अपील पर इन दिनों जो दान आया है उसमें से निम्न राशियां विशेष उल्लेखनीय हैं।

१०० रु० श्री पं० गंगा प्रसाद जी एम० ए० प्रधान सार्वदेशिक सभा। १०० रु० श्री प्यारे लाल जी रिटायर्ड जज। ७० रु० श्रीमती राम प्यारी देवी जी तथा उनकी पुत्री। १०१ रु० आर्य युवक सभा कराची। २०० रु० ट्रस्ट सेवकजमुना दास द्वारा श्री राम कुमार आर्य धामपुर। ५५ रु० आर्य समाज हनुमान रोड, नई देहली। ५१ रु० आर्य समाज नरेला ग्राम ५०० रु० आर्य समाज साबुन बाजार, लुधयाना।

अन्य आर्य समाजों और आर्य नर नारियों को भी सहायता सभा कार्यालय में तुरन्त भिजवा कर पुण्य का भागी बनना चाहिये।

—

बंगाल के अकाल पीड़ितों का नग्न चित्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित बंगाल रिलीफ फंड में अपनी सहायता का धन तुरन्त भिजवाइए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की ओर से श्री ओमप्रकाश जी त्यागी स० प्रधान सेना अखिल भारतीय आर्यवीर दल के नेतृत्व में कार्यकर्ता अकाल पीड़ितों की सेवा और सहा कार्य संगठनार्थ बंगाल भेजे गये थे वे वहां तत्परता से कार्य कर रहे हैं। श्री ओमप्रकाश ने बंगाल के अकाल पीड़ित नर नारियों का जो हृदयद्रावक चित्र अपने पत्र में खेंचा है उसमें से लिखित कुछ वाक्य यहां जनता को सूचनार्थ किये जाते हैं:—

कलकत्ते पर जो अजीब दृश्य दिखाई दि दोनों ओर पटड़ियां लगातार भूख से पीड़ित लोगों से भरी थी। ये लोग बाहर देहात से आ गये हैं। इनके पास ओढ़ने बिछाने तक को नहीं। दुर्भाग्य से वर्षा हो रही थी। सब के बेचारे भीगते हुये अपनी २ जगहों पर सिकु थे। उनको देखकर हमारी आंखों से आंसू नि पड़े।

कल जब हम अपने पूर्व परिचित मेदनीपु देहातों में पहुंचे तो वह मनुष्य जो पहले हमारे कार्य करते थे भूख के कारण इतने दुर्बल हो थे कि पहचाने भी न गये। वे हम को देखते पड़े और बाप २ कह कर पैरों से लिप और रोते २ कह रहे थे। उन से जब की दशा पूछी गई तो ज्ञात हुआ कि रोज मनुष्य यहां मर रहे हैं। स्त्रियां बाहरी विधि साथ रोटी के लिये नित्य भाग रही हैं। मुसलमान इससे अधिक लाभ उठा रहे हैं। ज अनाथालय के लिये बच्चों की अपील की दृश्य दयनीय था जबकि स्त्रियां और पुरुष बच्चों को ले २ कर हमारे दर्वाजे पर चि थे कि बाबू हमारे बच्चे को भी अपने यहां रा

श्री ओमप्रकाश जी ने इस पत्र में यह भ है कि कम से कम पचास हज़ार रुपया तुरन्त चि सभा से सम्बद्ध बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभ समाज रिलीफ सोसाइटी की स्थापना मुफ्त भोजनालय, अनाथालय और सं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...र्युक्त शीर्षक युक्त ता० ६ सित० ४३ पृष्ठ ४ में ...ख में दिखलाया जा चुका है कि मनुष्य जाति ...यक कल्याण उस समय तक नहीं हो सकता ...क कि उसमें ब्राह्मशक्ति का पूरा प्रतिनिधित्व ...ाले जीवनमुक्त आदर्श देवगण प्रचुर संख्या में ...त नहीं होते, किन्तु यह बात स्वयं सिद्ध सच्चाई ...ान स्पष्ट है कि जब उक्त प्रकार के देवगणों का ...में सर्वथा लोप हो जाता है तो पितर गण ...क्षात्र शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले क्षात्रवर्ग ...स्म, और शनैः २ वास्तविक अभाव स्वयमेव हो ...है। कारण यह कि जब पथ प्रदर्शिकता ठीक २ ...हती तो रक्षात्मिका शक्ति का ह्रास और नाश ...स्वयं सिद्ध बात हो जाती है। मनुष्य जाति के ...कल्याण के लिये उक्त दोनों शक्तियों का पूर्ण साम- ...और सहयोग वेदादि सच्छात्रों में वर्णन किया है।

...यथा देखो यजु० ३२-१४, किस प्रकार इस विषय ...स्पष्टी-करण कर रहा है—

यां मेधां देव गणाः पितरश्चोपासते
तया मा मद्य मेधया मेधाविनं कुरु

अर्थात्

हे ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञानमय हमारे अग्रगन्ता अग्नि ...धारी परमात्मन् जिस पावन और पवित्र मेधा ...की देवगण और पितर छात्रशक्ति के प्रतिनिधित्व ...वाले अर्थात् राष्ट्रवर्ग सदैव आपसे याचना ...रहते हैं उसी बुद्धि की प्राप्ति मुझे अर्थात् हम ...को कराइये ताकि हम सब एक दूसरे के अनुकूल ...और रह कर वैयक्तिक और सामुहिक दोनों प्रकार ...भ्युदय के भागी बनें।

...यादि विचार से देखा जायेगा तो भारतीय इतिहास ...पश्चिमी यूरोपीय इतिहास दोनों इस तथ्य को ...ी दे रहे हैं।

...माहामना मैक्समूलर महोदय अपने ग्रन्थ ...ndia, what can it teach us?") ...वर्ष और वह हमको क्या शिक्षा देता है?

..."Philosophy in India" says max ...llr is what it onght to be, not the ...al, but the fulfilment of Religion"

अर्थात्—

...ह कहते हैं कि भारतवर्ष का दर्शन शास्त्र, वही ...सा कि उसको होना चाहिये अर्थात् धर्म (मज़हब) ...रोधी नहीं किन्तु उसका पूरक है" पुनः आगे ...ते हैं:—

To the present day, India

त्राण तो इसी में है!

[भाग २]

[श्री श्यामसुन्दर लाल बी. ए. ऐम. सी-ऐल. ऐल. बी. ऐडवोकेट, मैनपुरी]

acknowledges no higher authority in matters of religion, cermoinals, customs and law than the Veda, and so long India is India nothing can extingwish the ancert spurt of Vedantism which is breathed by way Hindu from his earliest youth and pervades in various forms, the prayars even of the idolator, the speculations of the philosopher, and proverbs of the beggar".

अर्थात् "भारतवासी अब तक धार्मिक बातों में वेदों के ऊपर किसी अन्य को किसी बात में प्रमाण नहीं मानते, चाहे वह बात धर्म की हो, अथवा रीति रिवाज की अथवा कानून (धर्म शास्त्र) की और जब तक इन्डिया (भारत वर्ष) है कोई कुछ भी उनकी वेदान्त की धारणा को नष्ट नहीं कर सकता। वह स्प्रिट प्रत्येक हिन्दू अपने स्वास के साथ किशोरावस्था से पान करता है और विविध रूपों में वह विद्यमान है, यहां तक कि मूर्त्तिपूजक की प्रार्थना है और दर्शन शास्त्र के तत्वदर्शी विचार और भिक्षुओं की चेतनाएँ सब में वही वेदान्त की लहर ओत प्रोत हो रही है।"

परन्तु इस सम्बन्ध में पश्चिमी या यूरोपीय इतिहास हमारे सम्मुख किस युग को प्रस्तुत कर चुका है? वहां देवगणों का भारतवर्ष के भीतर अविद्या के अन्धकार का प्राबल्य होने पर जो कुछ दशा हुई वह वहाँ के मध्यकालीन इतिहास से जो वहां लगभग ८०० वर्ष तक साम्राज्य करता रहा भली भांति प्रत्यक्ष है। यहां तक कि अन्त में यहां तक स्वर्ग में जाने के लिये सर्व साधारण को हुंडिया 'पोपनामी महोदय बे रोक टोक उसी प्रकार बांटने लगे थे जैसे कि यहां के पण्डित लोग वेदों के नाम पर अनेक ढकोसलों को रच चुके थे। यहां तक कि महर्षि दयानन्द को अपने सुप्रख्यात ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में इन पण्डितों (पुरोहितों और पाधाओं का नाम) 'पोपजी' रखना पड़ा और गत पिछली दो तीन शताब्दियों में तो यूरोप में "साइन्स अर्थात् 'विद्या बनाम धर्म' का ऐसा कोलाहल मचा रहा कि उसके पढ़ने से धर्ममात्र से विज्ञों की दृष्टि से घृणा उत्पन्न होती है यूरोप के बहुधा पुरुष महर्षि दयानन्द को यूरोप का "लूथर" बतलाने लगते हैं परन्तु वह उनकी भूल है क्योंकि महर्षि का व्यक्तित्व कहीं महान् था, केवल छोटी सी सीमा तक उनकी आदर की भावना स्वीकार करने योग्य है। यहां तो वेदों और प्राचीन ऋषियों और मुनियों का प्रताप यहां तक साधारण जनता के हृदयों में घर कर गया है कि महामना मैक्समूलर के उपर्युक्त उद्धृत शब्दों में वेदों के आशय को भिक्षुओं तक की चेतावनियों में कूट २ कर भर दिया गया है।

यदि किसी को उक्त वेद मन्त्र में देव और पितर शब्दों के अर्थों में सन्देह उत्पन्न हो तो वह कृपया यजु० ३२-१६ तथा अथर्व वेद का मन्त्र ६-१०८-४ को क्रमशः देख कर अपने सन्देह की निवृत्ति करलें जो निम्न हैं—

"इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रिय मश्नुताम।
मयि देवा दधतु श्रियमु उत्तमा तस्यै ते स्वाहा" ॥
"याम ऋषयो भूत मेधां मेधाविनो विदुः।
तया मा मद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कृणु ॥

जहां पर उक्त विवेचन स्पष्टतया किया गया है और पिछले अथर्ववेद के मन्त्र में भूत कृतः शब्द के प्रयोग से समस्त परा विद्या के साथ अपरा विद्या का ज्ञान होना भी स्पष्ट कर दिया है।

जो हो फलतः जब संसार मात्र में देवगण और पितृगण दोनों की अपेक्षित कोटिऐं (Standards) लुप्त हो गये हैं तो अब हम सब को क्या करना चाहिये? यह प्रश्न है जिसके विषय में आगामी भाग में लिखने का साहस करूँगा— —अपूर्ण

—बंगाल से अभी तक भूख से मृत्यु के समाचार आ रहे हैं। प्रो० बैनर्जी ने वक्तव्य में कहा है कि पूर्वी बंगाल में तो भूख से बहुत ज्यादा मौतें हो रही हैं। उनमें मनुष्य ज्यादा हैं बच्चे और स्त्रियाँ पीले नज़र आते हैं। चावल नहीं मिलता, इसका कारण कण्ट्रोल ही है। ढाका और विक्रमपुर में चावल ६४ रुपये मन भी नहीं मिलते। सरदियाँ आ रही हैं—इससे मौतें और बढ़ जायेंगी—परन्तु इस दिशा में गवर्नमेंट का धन्यवाद है कि उसने स्टैण्डर्डक्लाथ का प्रबन्ध किया है।"

—महाराजाधिराज गायकवाड़ बड़ौदा ने बंगाल रिलीफ के लिए पच्चीस हज़ार रुपया दान दिया है।

—बाँकुरा के इलाके में हैज़ा आदि महामारियों हुई मौतों की संख्या बढ़ रही है—बहुत सी ल... नदी मैतरती दिखाई पड़ीं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

किया है। इस सम्मेलन में बहावलपुर रियासत में जिसे लुधियाना आर्य समाज ने सभा के पास

"भूमण्डल के समस्त आर्य समाज से १११ प्रश्न"
वाला के जैनी भाइयों का भेजा हुआ आया।
बतलाने की आवश्यकता नहीं कि आर्य समाज
ने आरम्भ काल से ही सत्यासत्यविवेक के लिये
स्त्रार्थ अथवा प्रश्नोत्तर के लिये सन्नद्ध रहा है और
। हम लेखक महोदय से यह आग्रह अवश्य करेंगे
लेख लिखते समय सभ्यता को हाथ से न जाने
। चाहिये। दूसरा निवेदन यह है कि जिस समाज
व्यक्तियों से शास्त्रार्थ अथवा प्रश्नोत्तर किये जावें,
के सामने प्रमाण के रूप में उसके प्रमाण रूप से
न्य ग्रन्थ ही उपस्थित करने चाहियें। इन प्रश्नों के
र कर्ता ने इन प्रश्नों में ऐसे बहुत से प्रमाण उद्धृत
दिये हैं जिन्हें आर्य समाज नहीं मानता, अतः
विष्य में इस बात का ध्यान रखना चाहिये अन्यथा
तर देना अनावश्यक समझा जावेगा। तीसरी बात
है कि इन उत्तरों के साथ २ हमने जो जैन धर्म पर
। किये हैं पहिले उनका सप्रमाण यथावत् उत्तर
कर फिर और प्रश्न करने चाहियें अन्यथा हम भी
र देने के लिये बाध्य न होंगे। हमने इन सब प्रश्नों
उत्तर सप्रमाण दिये हैं। साम्प्रदायिक भावना को
कर सब सज्जन इनके यथावत् मनन की चेष्टा
गे यह हमें पूर्ण आशा है।

१. प्रश्न—महाप्रलय के पश्चात् और सृष्टि होने के पूर्व व्योमा) ऋ० मं० १० सू० १२६। आकाश नहीं । इस प्रकार श्रुति आकाश का निषेध करती है र जब कि श्रुति आकाश का निषेध करती है तब पके माने हुये अनादि तीन पदार्थ अर्थात् ब्रह्म, जीव र प्रकृति कहां रहे? लिखिये तीनों की सिद्धि में ा प्रमाण है?

उत्तर—क) आकाश तो प्रलयकाल में था परन्तु वहार न होने के कारण नहीं के बराबर था। व्यव- र के न होने में कारण हैं व्यवहार करने वालों का भाव। अतः प्रलयकाल में आकाश था और जीवन ा प्रकृति उसी में विद्यमान् थे। ब्रह्म तो सर्वत्र व्या- ; परिपूर्ण सदा विद्यमान् है ही।

(ख) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं षस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्यो भिचाकशीति। ऋ. मं. १ सू. १६४ मं. २०

भावार्थ—एक पालक और एक पालित दो एक पालन के साधन से सम्बद्ध हैं। उनमें से एक कर्म- ल को भोगता है और दूसरा न भोगता हुआ उस ल को प्रकाश में लाता है। इस प्रकार इस प्रमाण जीव प्रकृति और ईश्वर इन तीनों की सिद्धि होती है।

२. प्रश्न—आकाश तो था परन्तु उस समय उसका

आर्य समाज से १११ प्रश्न

श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

[जैनियों की ओर से एक पुस्तक छपी है, भूमण्डल के समस्त आर्य समाज से १११ प्रश्न उन्हीं का उत्तर श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज जो पहिले पं० मुक्तिराम जी उपाध्याय थे, ने बड़ी विदत्ता पूर्वक दिया है] —सम्पादक

नहीं क्योंकि जब कि आप अनादि नित्य तीन पदार्थ मानते हैं तब व्यवहार का होना क्यों नहीं और किस प्रकार निषेध कर सकते हैं? यदि कर सकते हैं तो इसमें प्रमाण क्या?

उत्तर—अनादि नित्य तीन पदार्थों का होना मात्र ही व्यवहार में साधन नहीं है। जो जीव शरीरधारी व्यवहार करने वाले हैं उनका होना भी तो आवश्यक है और वे उस समय थे नहीं तो फिर बतलाइये व्यवहार कौन करता।

३. प्रश्न—अनादि नित्य तीन पदार्थों को मानते हुये भी आकाश के व्यवहार का निषेध करना इस बात को सिद्ध करता है कि आप अनादि नित्य पदार्थों को नहीं मानते। यदि मानते हैं तो इसमें प्रमाण क्या?

उत्तर—अनादि नित्य तीन पदार्थों की सत्ता में आकाश के व्यवहार का न होना बाधक क्यों है?। इसमें न तो कोई प्रमाण आपने दिया है और न दिया जा सकता है।

अब इस आकाश के सम्बन्ध में ही हम भी आप से कुछ पूछ लें। आप दो आकाश मानते हैं एक लोकाकाश और दूसरा अलोकाकाश। लोकाकाश में बद्ध जीव रहते हैं और अलोकाकाश में मुक्त जीव। यों तो आकाश एक ही है परन्तु उसका कुछ भाग लोकों के मध्य में है और कुछ बाहर अतः आप इसे दो भागों में बांट देते हैं। अलोकाकाश को आप मुक्तात्माओं के रहने योग्य समझते हैं और लोकाकाश को नहीं, क्यों?। यदि आप कहें कि इस आकाश में वासनातरङ्गों का सञ्चय है और उसमें नहीं तो यह बात असम्भव है। भारत से उठी हुई शब्द की एक तरङ्ग पृथिवी के दूसरी ओर अमेरिका में तत्काल ही पहुंच जाती है। और इसी प्रगति से जहां तक भी आकाश की सत्ता है वहां तक उसका पहुंच जाना वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध है और जब कि शब्द धाराएं सम्पूर्ण आकाश में फैली हुई हैं तो वासना तरङ्गें तो उनसे भी सूक्ष्म हैं और उनका भी अलोकाकाश में भी फैले रहना स्पष्ट सिद्ध है। अब कृपया बतलाइये कि

दूसरी बात यह है कि आप लोकाकाश और अलोकाकाश के मध्य में एक सिद्ध शिला मानते हैं। कृपया बतलाइये कि यह मैजिनट लाइन किस लिये प्रस्तुत की गई है। क्या इसलिये कि अलोकाकाश के मुक्त जीव लोकाकाश में न आ सकें। यदि यह बात है तो श्रीमान जी फिर तो बड़ा अनर्थ होगा। आपके नित्य सिद्ध अर्हन मुनि भी, आपकी पूजा स्वीकार करने के लिये, आपको स्तुति सुनने के लिये और आपकी सहायता करने के लिये लोकाकाश में न आ सकेंगे। और यदि वे आ सकेंगे तो और मुक्तों के आने में क्या प्रतिबन्ध है। कृपया यह भी बतलाइये कि यह सिद्ध शिला जीव की अपेक्षा स्थूल तत्व से निर्माण की गई है या सूक्ष्मतत्व से। यदि स्थूल से तो सूक्ष्म का स्थूल में से पार हो जाना कोई कठिन नहीं। और यदि सूक्ष्म तत्व से तो स्थूल की गति में सूक्ष्म प्रतिबन्धक होता ही नहीं। और यदि इसका प्रयोजन मुक्त जीवों को लोकाकाश में आने से रोकना नहीं है तो कृपया बतलाइये इसका क्या प्रयोजन है!

४. प्रश्न—ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पृष्ठ ११७ में सृष्टि विषय में लिखा है (नो सदासीत्तदानीं०) उस काल में (सत्) अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण मिला के जो प्रधान कहाता है वह भी नहीं था (नासीद्रजो०) उस समय परमाणु भी नहीं थे। और सत्यार्थ प्रकाश मन्तव्य ६ में प्रकृति को अनादि नित्य लिखा है। अब बतलाइये कि इन दोनों में कौन सी बात सत्य और कौन सी असत्य है?

उत्तर—सत्यार्थ प्रकाश के मन्तव्य ६ में प्रकृति को अनादि लिखा है। और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के सृष्टि प्रकरण में भी प्रकृति को अनादि ही माना है। देखिये 'किन्तु परब्रह्मणः सामर्थ्यरूपमनादि सूक्ष्मं सर्वस्यास्य परम कारणसंज्ञकं मेवतदानीं समवर्तत (ऋ. भा. भू. पृ. ११६) इस सारे जगत् का अत्यन्त सूक्ष्म कारण जो कि परब्रह्म की शक्ति कहा जाता है वह उस समय था। जिस प्रकृति में सत्व गुण, रजोगुण और तमोगुण का विकास हो चुका है यद्यपि वह अव्यक्त है=स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं है तथापि मूल कारण की अपेक्षा स्थूल है इसी प्रधान के लिये भूमिका में "नासीत्" लिखा है। मूल कारण वह है जिसमें तीनों गुण सम अवस्था में होने के कारण पृथक् नहीं भासते वह एक रूप सूक्ष्म कारण रूप ही उस समय है। उसी को उपनिषदों में माया अविद्या और ब्रह्म की शक्ति नाम से कहा है और उसी को भूमिका में ईश्वर की सामर्थ्य कहा है। वह नित्य है। इसलिये सत्यार्थ प्रकाश और भूमिका में यहां कोई विरोध नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्वर्णजयन्ती

...प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्वर्णजयन्ती ...२९-३०-३१ अक्तूबर १९४३ तदानुसार ...१३-१४-१५ कार्तिक २००० को होने जा

इस सम्बन्ध में १५ अक्तूबर, २९ असूज ...संसार के कल्याण के लिये एक बृहद् यज्ञ ...चीन काल के ऋषि यज्ञों की स्मृति को आंखों ...ले आने वाली यज्ञवेदी बनेगी, आर्य पण्डित ...करेंगे और विधिपूर्वक हवन यज्ञ करायेंगे, ...लिये शुद्ध घी की बड़ी आवश्यकता है—आप ...है कि शुद्ध घी भिजवाने का कष्ट करें। यज्ञ ...कथा तथा प्रभु कीर्तन भी होगा, पूर्णाहूति ...तूबर, १३ कार्तिक की प्रातः को डाली जायगी।

...) कितने ही सम्मेलन २७ से ३१ अक्तूबर तक ...वर्णजयन्ती आर्य सम्मेलन का प्रधान पद ग्रहण ...लिये एक आर्य महाराजाधिराज को निमंत्रित ...या है और इनका उत्तर आ गया है कि यदि ...अच्छा हुआ तो अवश्य पधारेंगे।

...) सत्यार्थ प्रकाश रक्षा सम्मेलन में सम्मिलित ...लिये सारे भारत के प्रान्तों की आर्य प्रति-...भाओं तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ...परोपकारिणी सभा अजमेर और भारत के ...यों हिन्दू नेताओं को निमन्त्रण भेजे गये हैं।

...) वेद सम्मेलन में वेद का महत्व प्रगट होगा, ...सम्बन्धी उन शंकाओं का विद्वान महानुभाव ...जो शंकायें आर्य प्रादेशिक सभा के कार्या-...अक्तूबर के पहले सप्ताह तक पहुंच जायेंगी।

...भक्ति सम्मेलन इस लिये किया जा रहा है ...सारे शुष्क तथा नीरस जीवन में कुछ रस ...उल्लास पैदा हो, और हमारी रुचि वास्तविक ...की ओर बढ़े।

...इस अवसर पर गो रक्षा सम्मेलन एक और ...आवश्यक सम्मेलन है जिसमें ऐसी क्रियात्मक ...तैयार की जायगी जिससे एक बार फिर भारत ...की नदियां बहने लगें।

...आर्य वीर सम्मेलन भारत के युवकों को ...र्म के सच्चे सैनिक बनाने के लिये होगा।

...शिक्षा सम्मेलन इस उद्देश्य से किया जा रहा ...आर्य समाज शिक्षा सम्बन्धी कोई एक नीति ...और शिक्षा क्षेत्र को अधिक लाभदायक ...जाये।

...आर्य जाति प्रसार सम्मेलन "कृण्वन्तो विश्व-मार्यम" की आज्ञा को क्रियात्मक रूप देने के लिये किया जा रहा है।

(१०) कवि सम्मेलन में भारत के विख्यात आर्य कवि भाग लेंगे और सोयी हुई आत्माओं को जागृत करेंगे।

(११) आर्य स्त्री सम्मेलन देवियों के लिये विशेष रूप से विचार करेगा कि इनके द्वारा वेद प्रचार का कार्य कैसे बढ़ाया जा सकता है।

(१२) हिन्दी सम्मेलन भी एक आवश्यक सम्मेलन होगा।

(१३) प्रदर्शनी—एक प्रदर्शनी करने का भी निश्चय किया गया है, जिसमें वेद भगवान की हस्तलिखित पुस्तकें तथा महर्षि स्वामी दयानन्द जी के हस्तलिखित पुस्तक और पत्र आप देख सकेंगे, प्रदर्शनी में यह भी दिखलाया जायगा कि आर्य समाज ने गत वर्षों में कितनी उन्नति की है।

(१४) महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, श्री स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी ज्ञानानन्द जी, स्वामी विवेकानन्द जी, तथा अन्य आर्य संन्यासी महानुभाव इस अवसर पर पधारेंगे, और जनता को अपने उपदेश अमृत से कृतार्थ करेंगे।

(१५) बङ्गाल, बम्बई, बिहार, संयुक्त प्रान्त तथा पंजाब के आर्य विद्वानों के व्याख्यान होंगे, श्री ला० दीवानचन्द जी एम० ए० प्रधान दयानन्द कालेज कमेटी लाहौर, श्री ला० साईंदास जी एम० ए०, श्री महता रामचन्द्र जी शास्त्री, राजगुरु पं० धुरेन्द्र शास्त्री जी, श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री पं० भगवद्दत्त जी बी० ए० श्री पं० बुद्धदेव जी, श्री ला० देवीचन्द जी एम० ए०, श्री प्रो० ज्ञानचन्द जी एम० ए०, श्री प्रो० रलियाराम जी, एम० ए०, कुंवर सुखलाल जी, पं० प्रकाशचन्द्र जी, पं० जयचन्द्र जी, महाशय सन्तराम जी, भक्त मंगतराम जी, पं० सिद्धगोपाल जी, तथा अन्य महानुभाव व्याख्यानों तथा भजनों से आप को आनन्दित करेंगे।

(१६) मालाबार, बङ्गाल, आसाम, उड़ीसा, भीलवाड़ा, गढ़वाल, सीमाप्रांत और अन्य प्रांतों के प्रतिनिधि आयेंगे, जहां इस सभा ने कार्य किया है, भीलों को आप उनके असली रूप में भी देखेंगे।

(१७) आप को सुन कर प्रसन्नता होगी कि स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में जो ग्रन्थ लिखवाये जा रहे थे वह प्रायः सब लिखे गये हैं और अब प्रेसों में छप रहे हैं।

(क) स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने 'स्वाध्याय साधना' के नाम से ३७० मंत्रों की व्याख्या की है।

(ख) संस्कार विधि व्याख्या पं० बुद्धदेव जी ने लिखी है।

(ग) "प्रमाण सागर" ठाकुर अमरसिंह जी तथा पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री ने तैयार किया है।

(घ) "वैदिक भक्ति स्तोत्र" यह १०८ पुष्पों की एक सुन्दर पुष्प माला है, जिसका संग्रह पं० बुद्धदेव जी ने किया है और भावानुवाद सुन्दर मधुर भाषा श्री रणवीर जी ने लिखी है।

(१८) महात्मा हंसराज जी का जीवन चरित्र मैं लिख रहा था, यह पूर्ण हो जाता परन्तु बङ्गाल उड़ीसा के अकाल पीड़ितों की चीत्कार ने मुझे अपनी ओर खींच लिया, अब भी यत्न हो रहा है कि यह पुस्तक जयन्ती पर पूर्ण हो जाये।

(१९) यह सब पुस्तकें हिन्दी में हैं उर्दू की भी कुछ पुस्तकें तैयार हो रही हैं।

(२०) आप को यह ज्ञात ही है कि आर्य प्रादेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में दो लाख से अधिक धन महात्मा हंसराज वेद प्रचार निधि के लिये एकत्रित हो चुका है, परन्तु स्वर्ण जयन्ती के व्यय के लिये अभी और धन की आवश्यकता है, आशा है आप सभा की इस मांग को भी पूरा करने की कृपा करेंगे।

(२१) अब मैं आप से यह निवेदन करता हूं कि आप और आप के नगर ग्राम के आर्य भाई बहन स्वर्ण जयन्ती के महोत्सव पर पधारने का कष्ट करें। निस्सन्देह आज कल यात्रा कठिन हो गई है, फिर भी यह अवसर तो पचास वर्ष के पश्चात आया है, और ऐसा स्वर्ण अवसर फिर पचास वर्षों के पश्चा ही मिल सकेगा अतएव इस से अवश्य लाभ उठाना चाहिये। आप लिखिये कि आप के नगर अथवा ग्राम से कितने सज्जन पधारेंगे ताकि उनके निवास तथा भोजन का अच्छा प्रबन्ध हो सके, हर वस्तु के इस कण्ट्रोल के काल में पूर्व ही पता मिल जाना चाहिये ताकि सारा प्रबन्ध सुभीते से हो सके, अन्त में प्रार्थना है कि इस धार्मिक कुम्भ पर आयें, नर नारियां आयें, छोटे बड़े सब आयें और आर्य समाज तथा आर्य जाति के संगठन का परिचय दें।

निवेदक—

खुशहाल चन्द

प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, लाहौर

विजय दशमी की छुट्टी

आगामी सप्ताह आर्य विजय दशमी के उपलक्ष्य में अवकाश करेगा! इसलिये १०-१०-४३ का अङ्क प्रकाशित न होगा। पाठक महानुभाव अङ्कित कर लें।

भीमसेन

सम्पादक आर्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

किया है। इस सम्मेलन में बहावलपुर रियासत में जिसे लुधियाना आर्य समाज ने सभा के पास

चिट्ठी-पत्री

श्रीयुत मान्यवर मन्त्री जी!

नमस्ते।

आपकी सेवा में मैं "आर्य" के सम्पादक महोदय की शिकायत पेश कर रहा हूं वह यह कि १२ सितम्बर के 'आर्य' में पृष्ठ ३ पर "विवाह संस्कार में नियोग की प्रतिज्ञा" शीर्षक से श्री पं० सातवलेकर जी के पत्र में 'दत्रकामा' शब्द पर श्री सम्पादक जी ने अपने विचार देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रति और मेरे प्रति अपमान जनक शब्दों का प्रयोग किया है जैसे "हमारी सम्मति में सार्वदेशिक सभा को अन्तरङ्ग सभा तथा तथा धर्मार्यसभा को इस विषय में कोई निर्णय नहीं देना चाहिये" ये शब्द तो सम्पादक जी के सर्वदेशिक सभा के प्रति अपमान-जनक हुए अस्तु इस से तो मेरा कोई सम्बन्ध या प्रयोजन नहीं यह तो आपकी सभा और सार्वदेशिक सभा ही सङ्गठन की दृष्टि से सोचे कि 'आर्य' के सम्पादक का इस प्रकार सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध लिखना कहां तक ठीक है जबकि श्री पं० धर्मदेव जी वाचस्पति आदि इस के निर्णायक हैं। आश्चर्य की बात है सम्पादक जी ऐसे सार्वदेशिक सभा को तो निर्णय देने के अधिकार का निषेध करते हैं किन्तु अपने आप स्वयं भद्दे ढंग से निर्णय दे देते हैं इस विषय में सम्पादक महोदय ने अपना अधिकार समझा है वे लिखते हैं—"प्रिय रत्न जी आर्ष ने इस विषय में जो युक्तिक्रम प्रकट किया है वह एक पक्षीय उस में व्यर्थ में ही नादान दोस्त अथवा नदान भक्त की भांति अपने निर्बल तर्क से ऋषि दयानन्द के विचारों के विषय में मिथ्या स्थापना की गई है" सम्पादक जी के लिखे इन शब्दों में "व्यर्थ में ही, नादान दोस्त नादान भक्त की भांति, निर्बल तर्क, मिथ्या स्थापना" ये शब्द उल्लेखनीय हैं। आपकी सभा या किसी भी सभा से मुझे कुछ सहायता नहीं मिलती। मैं स्वयं जैसे तैसे निःस्वार्थभाव से वेद की सेवा करता हूं। यदि मेरा आप से कोई स्वागत नहीं बन पड़ता तो आपकी आर्य प्रतिनिधि सभा जैसी जिम्मेदार सभा के जिम्मेदार "आर्य" पत्र में मेरे प्रति नादान दोस्त नादान भक्त शब्दों को लिए मेरा अपमान किया जावे यह सर्वथा अनुचित और असह्य है।

मैं आप से नम्र प्रार्थना करता हूं आप "आर्य" के सम्पादक महोदय को मेरे प्रति अपमान जनक शब्दों के लिखने के प्रतिकार में 'आर्य के आगामी अङ्क में क्षमा मांगने का आदेश दें और ऐसा करने पर बाधित करें। मैं आशा करता हूं आप इस प्रकार प्रतिकार कराकर मेरा मान रखेंगे। रहा सम्पादक महोदय ने जो मेरे पत्र को 'व्यर्थ, निर्बल तर्क और मिथ्या स्थापना' लिखा है यह उनका साहसमात्र है ऐसा लिखना भी उनके अधिकार से बाहर है यदि वे व्यक्तिगत ऐसा साहस करते हैं तो उन्हें केवल इतने लिख देने मात्र से काम न चलेगा उनको सिद्ध करना चाहिए कि प्रियरत्न का पत्र व्यर्थ निर्बल तर्क, और मिथ्या है। मैं उनका स्वागत करता हूं। मेरे ट्रक्ट में दिये हुए किसी भी हेतु को काट कर बतलावें; पं० सातवलेकर जी भी न काट सके। सम्पादक जी लिखते तो हैं यह कार्य गुरुकुल कांगड़ी जैसी शिक्षण संस्था और अनुसन्धान करने वाले विद्वानों को स्वयं युक्ति प्रतियुक्ति द्वारा जनता के समक्ष पक्षप्रतिपक्ष रखने का अवसर देना चाहिए, परन्तु स्वयं निर्णय देते हैं। सम्पादक जी को स्मरण रहे गुरुकुल कांगड़ी में प्रायः समस्त विद्वान् मेरे पक्ष के हैं जब गुरुकुल कांगड़ी से 'आर्य' निकलता था तब उस में तथा 'प्रकाश' में श्री पं० धर्मराज जी वेदालङ्कार के कई लेख 'दत्रकामा' के समर्थन अर्थात् मेरे पक्ष में निकले थे। और फिर गुरुकुल कांगड़ी में मैं भी तो रहता हूं चाहे वेतन गुरुकुल से नहीं मिलता करता तो हूं वेदानुसन्धान कार्य।

अस्तु, मैं फिर अन्त में दोहरा देता हूं कि 'आर्य' के श्री सम्पादक जी के शब्दों में 'आर्य' के अगले अङ्क में क्षमा याचना करावेंगे, यदि आप ऐसा करने में असमर्थ हों तो मेरा यह प्रार्थनापत्र ज्यों का त्यों 'आर्य' में आर्य जनता के समक्ष अपील के रूप में प्रकाशित करा दें। इति॥ —प्रिय रत्न आर्ष

२ पृष्ठ का शेष

और ज्ञान यह गुण हों वह जीवात्मा है। इसी प्रकार वैशेषिक "प्राणा पान ३-२-४ के अर्थ में लिखते हैं यह सब आत्मा के चिन्ह अर्थात् कर्म और गुण हैं। इसी प्रकार समुल्लास ७ में इन दोनों सूत्रों के अर्थ में यह सब जीवात्मा के गुण माने हैं। तो आप का यह कथन महर्षि दयानन्द के प्रति कूत्र क्यों नहीं?

(५) शरीर में ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय के अतिरिक्त अन्तःकरण का आधार मस्तिष्क भी है जो आत्मा के इच्छादि सब गुणों का प्रकट करने वाला है अतएव शरीर की बनावट तो इच्छादि आत्मा के छः गुणों ही को प्रकट करती है। आप ने जो यह लिखा है कि कर्मेन्द्रिय कर्म गुण को सार्थक करने के लिए हैं। इस में आप ने प्रयत्न और कर्म के भेद पर ध्यान नहीं दिया। प्रयत्न तो एक गुण है परन्तु कर्म गुण से भिन्न पदार्थ है।

सिन्ध प्रान्त के हिन्दू मन्त्री राय साहिब गोकुल दास जी द्वारा श्री गजदर का खंडन सिन्ध प्रान्त में सत्यार्थ-प्रकाश की धूम

श्रीयुत शिव चन्द्र जी का सफल दौरा—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भारत में उत्साही प्रचारक श्रीयुत शिव चन्द्र सत्यार्थप्रकाश के विशेष मिशन पर सिन्ध प्रान्त करने के लिए गये हुए थे अपना दौरा समाप्त देहली वापस आ गये हैं।

आप ने सिन्ध प्रान्त के मुख्य २ स्थानों का करांची, हैदराबाद, सक्खर, लारकाना, मोरपुर दादू, डोकरी आदि का दौरा किया। जहां पर बड़ी पब्लिक मीटिंगों में सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षा विषय पर बहुत से व्याख्यान दिये। सत्य प्रकाश के विषय में आपके कई प्रेस इन्टर अंग्रेजी तथा सिन्धी पत्रों में प्रकाशित हुये।

आपने करांची के प्रतिष्ठित महानुभावों सर्व श्री जमशेद महता, साधु टी० एल० वास्त राय बहादुर सेठ शिवरत्न जी मेहता, सिन्ध प्रान्त मिनिस्टर श्री राय साहिब गोकुल दास जी से की। श्री रायसाहिब गोकुल दास जी ने आ बतलाया कि सत्यार्थप्रकाश के विषय पर सि सिन्ध मन्त्री मंडल ने कभी विचार नहीं किया हिन्दू मन्त्रियों ने सत्यार्थप्रकाश के विषय को सरकार के पास भेजने की कभी सम्मति नहीं

श्री शिवचन्द्र जी का कहना है कि सत्यार्थ के इस आन्दोलन ने जनता में इस अमूल्य ग्रन्थ ग्रन्थ को बढ़ने के लिए बड़ी लालसा उत्पन्न दी है। और सिन्ध की समस्त हिन्दू जनता सत्य प्रकाश की मान रक्षा के लिए आर्य समाज साथ है। श्री मन्त्री

—आर्य मित्र में समय समय पर आप के की महत्वपूर्ण बातों को सक्षेप से देना चाहते है, से यू० पी० की आर्य जनता को आप के का प्रोत्साहन मिलता रहे, कार्यालय तथा महत्वपूर्ण सूचना हमें भेज दिया करें।

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, यू०

—ला० मेहरचन्द महाजन, लाहौर के एडवोकेट ने २७ सितम्बर को अपनी ज सम्भाली। उनके सिर पर वही सफेद पगड़ी वह आम तौर पर पहना करते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिंटर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए एका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ४२
वार्षिक मूल्य ४)
१ कार्तिक २००० विक्रमी
१७ अक्तूबर १९४३ ई०

आर्य प्रातनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००२ पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Saharupur)

अध्यात्म सुधा

ऋषि दयानन्द का आत्मा और शरीर

ऋषि दयानन्द का नाम—आर्य समाजियों—तथा ...र्य सभ्यताभिमानियों के लिये चमत्कारी मंत्र है। ... नाम संसार में सुनाई दिये जाने वाले अन्य नामों ...भांति आत्मा—और शरीर को निर्दिष्ट करता है। ...यानन्द की जय का नारा लगाते समय—हम उनके ...त्मा और शरीर के गुणों की जय बुलाते हैं। ऋषि ...यानन्द द्वारा प्रतिपादित सत्य सिद्धान्त—उनकी ...त्मा हैं—उन द्वारा स्थापित संस्थाएं तथा संगठन ...नके शरीर हैं। सचाई—तथा न्याय के लिये हृदय ...तड़प होना—आत्मा की अनुभूति का प्रमाण है। ...र्य समाज के सदस्यों की संख्या का बढ़ाना—...र्य समाज तथा दयानन्द के नाम पर शिक्षणालयों ...खोलना उनके लिये धन संग्रह करना—ऋषि दया-...न्द के शरीर की विशालता को प्रकट करते हैं।

हमें सोचना चाहिए कि हम ऋषि दयानन्द की ...त्मा को प्रसन्न करने के लिये—उ के द्वारा प्रतिपादित ...द्धान्तों के प्रचारक बनने के लिये क्या कर रहे ...—हमें सोचना चाहिए कि ऋषि दयानन्द के ...रीर—संस्थाओं तथा संगठनों का संचालन करने ...लिये कहीं आत्मा का खून तो नहीं हो रहा। ...त्मा की आवाज़ को दबा कर, शरीर को मोटा ...ने के लिये अन्यायी—अत्याचारी व्यक्तियों की ...शामद तो नहीं की जा रही। ऋषि दयानन्द ने ...त्याचारी तथा अन्यायी का विरोध करना—मनुष्य ... परम धर्म माना है। आर्य कन्या पाठशालाओं के ...ये ग्रण्ट और दान लेने के लिये—सत्य का अपलाप ...र पापियों की खुशामद कर जनता में उनका मान ...ा कर पाप का प्रचार तो नहीं हो रहा!

ऋषि दयानन्द की आत्मा—सचाई को कहीं हम ...गठन की चार दीवारी—तथा अपनी निर्बलताओं से ... तो नहीं रहे। यदि हम संस्थाओं—के लिये—...त्मा का खून कर रहे हैं तो हम केवल मात्र शरीर ...ा—मूर्ति पूजा द्वारा आत्मा को भुला रहे हैं। जिस ...र पौराणिक भाई—मूर्ति बना कर—उसकी पूजा में इतने लवलीन हो जाते हैं—कि उन्हें वह मूर्ति ही परमात्मा प्रतीत होने लगती है—उसी प्रकार यदि आज हम आर्य समाजियों को संस्थाएं—और शिक्षणालय ही—ऋषि दयानन्द की आत्मा प्रतीत हो रही है—इन संस्थाओं की विजय दुन्दभि को ही हम दयानन्द की विजय दुन्दभि समझ रहे हैं तो हम भी मूर्ति पूजा के अन्धकार मय मार्ग के राही बन रहे हैं।

इस समय मैं ऐसा महसूस कर रहा हूं कि आर्य समाज की वर्तमान प्रचार प्रणाली—आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द की आत्मा का शोषण कर रही है—गृहस्थी—गृहस्थाश्रम धर्म के कर्तव्यों की उपेक्षा कर—संन्यास, वानप्रस्थ तथा ब्रह्मचर्य के कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। यह आश्रम संकर—इस समय आर्य समाज के लिये वर्ण संकर से भी बढ़ कर घातक सिद्ध हो रहा है। जिस समय तक यह शिक्षणालय तथा संस्थाएं ऋषि दयानन्द की आत्मा—सचाई तथा न्याय—के गुणों को प्रकट करते रहे लोग—युवक-वृद्ध—विदेशी, स्वदेशी इधर स्वयं आकृष्ट होते रहे—संस्थाओं में रह कर उनकी आत्मा—सचाई तथा न्याय की बिजली से और भी चमक उठी वह आर्य समाज के प्रेमी बन गये। परन्तु आज यह शिक्षणालय—ऋषि दयानन्द की आत्मा—सचाई—तथा—न्याय के स्थान पर व्यावहारिक—उपयोगिता के—कार्य कर्ता—व्यक्तियों के—नाम पर लोक संग्रह—लोक प्रदर्शन तथा विज्ञापन के साधन बन रहे हैं—परिणामतः आत्म हीन सिनेमा की भांति इनकी चमक—दूर बैठे को क्षणिक काल के लिये आकृष्ट करती है—अन्दर घुसते ही वह सिनेमा के प्रोफैशनल कार्यकर्ता—व्यक्तियों को आवश्यकतानुसार स्त्री के रूप में रंगमंच पर आया देखकर हैरान हो जाते और वह उसे केवल मनोरंजन, दिल बहलाव तथा शुगल का साधन समझने लगते हैं।

इसी प्रकार से अनेक आर्य समाजें—अपने वार्षिकोत्सवों पर ऋषि दयानन्द की आत्मा को भुला कर शरीर की उपासना अर्चना में लग जाते हैं। उस अर्चना में यह भी भूल जाते हैं कि दिन है या रात—वह रात को भी उपस्थिति बढ़ाने तथा उनका मनोरंजन करने के लिये संगीत—चिमटा, भजन मंडलियों की योजना करते हैं—इसी लिये उत्सव आत्मिक शान्ति के स्थान पर शारीरिक थकान—पैदा करते हैं—प्रदर्शन—विज्ञापन द्वारा जनता को खींचना चाहते हैं जनता आती है भजन सुनती है भड़कीले व्याख्यान सुनकर चली जाती है परन्तु ऋषि दयानन्द की आत्मा की ओर आकृष्ट नहीं होती क्योंकि वहां तो रात ... जागरण—चिमटा भजन मंडलियों की खनखनाहट संध्या हवन—बेमतलब हो जाते हैं—ऋषि दयानन्द की विजय दुन्दभि बजाने वालो! ऋषि दयानन्द शरीर—की पूजा में—उनकी आत्मा को मत भू... तभी आर्य समाज—और उसके उत्सव तुम्हारे हृ... में अध्यात्म सुधा बरसा सकेंगे।

—भीमसेन

आर्य समाजों के लिये विशेष सूच...

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित समाजों को सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य प्रा... प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्वर्ण जयन्ती १७ ... अक्तूबर तक मनाई जा रही है। आर्य समा... चाहिये कि वह उनके उत्सव में सम्मिलि... की कृपा करें। उत्सव का समय विभाग उस... की ओर से प्रकाशित होगा।

भीम सेन
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आहुति-रूप अग्नि

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥४॥

(समिद्धः) खूब प्रज्वलित हुई (शुक्रः) चमक रही (आहुतः) [विश्व-याग की आग में] आहुति बन कर पड़ी (अग्निः) [मेरी जीवन-] अग्नि (द्रविणस्युः) मेरा धन-धान्य धरा देने के लिये (विपन्यया) विशेष-विशेष, विविध स्तुतियों से (वृत्राणि) इस यज्ञ के आवरक—अवरोधक भावों को (जङ्घनत्) नष्ट भ्रष्ट कर दे ।

व्यक्तियों के जीवन यज्ञ का रूप तभी धारण करते हैं जब वे विश्व-याग की आग में आहुति बना कर डाल दिये जाएँ । व्यष्टि, समिष्टि का अंग होती है । छोटे-छोटे यज्ञ विशाल यज्ञ के अवयव हैं । इसी अनुभूति से व्यक्तियों के जीवन में तेज आता है । वे चमकने लगते हैं । जीवन-अग्नि भड़कती तभी है जब उसका संबन्ध विश्व-याग की आग से हो । चिनगारी आग में पड़ी जलती रहती है । आग से अलग कर दी गई, शीघ्र बुझ जाती है । यही अवस्था हमारे वैयक्तिक जीवन की है । यह छोटी-सी आग ब्रह्माण्ड की महान् आग का शाकल्य बनकर ही जल सकती है । शाकल्य आग में पड़ कर स्वयं ज्वाला बन जाता है ।

मेरी जीवनाग्नि भूखी है । उसे अन्न चाहिये । (द्रव्य) द्रव्य चाहिये । वह मेरे तन को, मन को, [illegible] को धरा लेना चाहती है । मेरा सर्वस्व इस जीवनाग्नि का ग्रास-रूप है । तो क्या मैं यह ग्रास इस भूखी आग के मुख में डाल दूँ ? मेरे जीवन की सफलता तभी होगी जब मैं अपने शरीर की आहुति परिश्रम की वेदी पर दे दूँगा । मेरी ज्ञानाग्नि तभी चमक उठेगी जब मैं अपने मन को अध्ययन तथा ध्यान की तपस्या से बचाऊँगा नहीं—उसे भट्टी में डाल दूँग ! धन को जोखिम में डालूँगा, तभी तो वह बढ़ेगा । ये सब कार्य साहस के हैं, उत्साह के । साहस आग है, उत्साह अग्नि है, यज्ञ है । इन यज्ञों पर वृत्रों ने घेरा डाल रखा है । यह बात आज की नहीं, यज्ञ के रास्ते में रावसों ने हमेशा विघ्न उपस्थित किये हैं । साहस तथा उत्साह के मार्ग में आलस्य विघ्न है । वह वृत्र-रूप है । हमें ज्ञानोपार्जन में संकोच होता है, अनुचित लज्जा की अनुभूति होती है । अपना अज्ञान कैसे प्रकट करें ? गुरुजनों के सम्मुख भी अपनी अल्पज्ञता का प्रकाश करते झिझक होती है । अपने सहपाठियों से ईर्ष्या का व्यवहार कर हम उनके साथ वास्तविक सह-पाठ नहीं करते । यह सब ज्ञान-यज्ञ के वृत्र है । क्षत्रिय का वृत्र युद्ध का तथा मृत्यु का डर है । वैश्य के लिये घाटे का भय वृत्र है । इन भावों के विपरीत निर्भयता, उत्साह आदि - ये सब भाव अग्नि के विविध रूप हैं । ये उन वृत्रों का समूल नाश कर देते हैं ।

संकुचित दृष्टि हमें अपने जीवन को विश्व के यज्ञ का अंग बनाने से रोकती है । हमारा घरबार, हमारे व्यक्तिक स्वार्थ, धन-लोभ, जन-लोभ, यशो-लोभ हमारे आत्मोत्सर्ग के रास्ते में बाधक हैं । इन वृत्रों का उपाय है—यज्ञाग्नि का अधिक प्रज्वलित होना । उसकी ज्वालाओं में वह तेज हो कि उसे देखते ही सभी प्रलोभन, सभी भय तथा संकोच भस्म होकर रह जाएँ । यदि वृत्र अपनी मनोमोहक माया का प्रसार करता है तो अग्नि की भी एक सुन्दर मनोहारी दिव्य माया है । उसका रूप है—अन्तरात्मा की प्रेरणा । हमारे हृदय में बैठा कोई सत्कार्य की स्तुति-सी बखानता रहता है । चुपके-चुपके शाबासी देता रहता है । परिश्रम का, तपस्या का, ज्ञानोपार्जन का, लोकोपकार का, अपनी जीवनाग्नि को विश्व-याग की आहुति बना डालने का अलौकिक श्रेय हमारी आंखों के सामने लाता रहता है, लाता रहता है । अपने आत्म-त्याग का फल हमने आज न भी पाया तो क्या हुआ ? कभी तो इस सुकृत का फल मिलेगा ही । हमें न मिला, हमारे पड़ोसियों को, देश-भाइयों को, मानव सहोदरों को, आज की न सही कल की पीढ़ी को मिल कर रहेगा । हमें इसका दृष्ट नहीं तो अदृष्ट फल अवश्य प्राप्त होगा । इस लोक में नहीं तो पर-लोक में । किसी न किसी जन्म में हम सफल होकर रहेंगे । कोई भी सत्कार्य करते हुए यह धीमी-धीमी गुञ्जार हमारे हृदय की तन्त्री से हमेशा उठती है । इस गुञ्जार की उठानेवाली शक्ति प्रज्वलित समिद्ध—यज्ञाग्नि ही है । यह अग्नि जितनी अधिक तेज होगी, उसकी प्रेरणा में—आत्मोत्सर्ग के इस महिमा-गान में—उतना ही अधिक बल होगा । विश्व-याग की उसकी स्तुति विशेष प्रभाव रखती है । उसके यज्ञ-भाव के गौरव-गीत के अनेक प्रकार हैं । कभी घर की आन के नाम पर, कभी कुल की शान के नाम पर, कभी पूर्वजों की बान के नाम पर, कभी पुंस्त्व—मर्दानगी—की क़सम दे देकर, कभी वीरता का वास्ता डाल-डाल कर यज्ञ की आग हमारी संपूर्ण विभूति झट धरा ही तो लेती है । उसकी "वि-पन्या" में—अनेक प्रकार के स्तुति-स्तोमों में—एक जादू है । धन हर लेने का जादू है । आत्मोत्सर्ग के रास्ते को घेर कर खड़े हो जाने वाली वृत्र-भावनाओं को नष्ट-भ्रष्ट कर देने का जादू है ।

हे मेरे जीवन की आग ! भड़क, भड़क ! आत्मोत्सर्ग के तेज से जाज्वल्यमान हो-होकर, विश्व-याग की एक उज्ज्वल ज्वाला सी बनती जा, बनती जा ! विश्व-याग में पवित्र स्तोत्र मेरे हृदय के कानों में डाल-डाल कर मेरा सर्वस्व इस आग के लिये धराती जा, धराती जा । इस अपने लपलपा रहे स्तोत्र की लपट में सम्पूर्ण हिचकिचाहटों, सम्पूर्ण संकोचों, भीरुताओं, लज्जाओं, राग-द्वेष, लोभ-मोह, मत्सरादि रिपु-सेनाओं को राख की मुट्ठि बना-बना कर गिराती जा, गिराती जा । हे मेरी जीवनाग्नि ! तू विश्व-याग की आहुति बन ।

आवश्यकता है

राजपूताना में राजपूत बालकों के लिए गुरुकुल के ढंग पर एक छात्रालय खोला जा रहा है। उस के संचालन के लिए एक प्रबन्धकर्ता की ज़रूरत है, जो स्नातक भाई इस कार्य्य में रुचि रखते हों वे ठा० रामसिंह चौहान नो० ए० कालिका रोड बांसवाड़ा (राजपूताना) से पत्र-व्यवहार करें, राजपूत जाति के स्नातक को विशेषता दी जायेगी । —आचार्य्य गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल में विजय दशमी

गत ८ अक्तूबर को गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में समारोह के साथ विजय दशमी मनाया गया । ब्रह्मचारियों, कर्मचारियों एवं सब कुलवासियों ने इस त्यौहार पर होने वाले शारीरिक प्रदर्शनों, खेलों तथा विविध प्रतियोगिताओं में सोत्साह-भाग लिया । आचार्य श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति के सभापतित्व में एक विराट् सभा हुई जिसमें विद्वान् वक्ताओं ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के जीवन के विविध पहलुओं पर ओजस्विनीवाणी में प्रकाश डाला । अन्त में आचार्य जी का सार-गर्भित भाषण हुआ ।

स्वास्थ्य समाचार

श्रेणी	नाम ब्रह्मचारी	नाम रोग
१३	ओमप्रकाश	ज्वर
१३	जगदीश	,,
५	रामचन्द्र	,,
५	हरिप्रकाश	,,
४	रूप लाल	चोट
३	राम प्रताप	ज्वर
३	हेमचन्द्र	,,
३	धर्मवीर	,,
२	जयवीर	,,
२	जयदेव	,,
२	सुखदेव	,,
२	यशोधन	,,
२	जयकिशोर	,,
१	भूपेन्द्र	खुजली
१	राजपाल	,,

गत सप्ताह उपरोक्त जो रोगी हुए थे अब स्वस्थ हैं ।

गु० कु० म० वि० रायकोट के समाचार

(१) सर्दी प्रारम्भ हो गई है । छात्रों का स्वास्थ्य उत्तम है । दो नवीन छात्रों को मलेरिया ज्वर शिकायत है । एक को रक्त विकार है ।

(२) ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया है विद्यालय खुल गया है । षाण्मासिक परीक्षा की तय्यारी प्रारम्भ है ।

(३) दशहरे का त्योहार बड़े समारोह के साथ मनाया गया है । ४ दिन तक विभिन्न खेल हुए । छात्रों ने अच्छा उत्साह दिखाया । विजयी छात्रों को इनाम बांटा गया ।

(४) गु० कु० का जन्मोत्सव इस वर्ष भी बड़ी शान के साथ मनाया गया । सभा की गई, घृत तोलन का दृश्य देखते ही बनता था । छात्रों व अध्यापकों की कविताएं व भाषण श्रोतव्य थे । आचार्य जी महाराज का मधुर उपदेश बड़ा हृदयद्रावक था । सभा के पश्चात् प्रीति भोज हुआ । शारदा देवी व छात्रों का संगीत सराहनीय था ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य
रविवार १ कार्तिक
वि० सं० २०००

बहावलपुर आर्य सम्मेलन

३० सितम्बर को बहावलपुर में, बहावलपुर आर्य सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में रियासत बहावलपुर के आर्य अमाजों तथा आस पास के अन्य आर्य समाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। पंडाल में खुले अधिवेशन से पहले आर्य प्रतिनिधियों की विषय निर्वाचन समिति हुई। इसमें सम्मेलन के खुले अधिवेशन में प्रस्तुत किये जाने के लिये प्रस्ताव विचार किये गये। सम्मेलन के सभापति का कार्य चुने सौंपा गया। बहावलपुर रियासत में धर्म-प्रचार के रास्ते में कई प्रकार की असुविधाएं हैं। बाहर से आने वाले धर्मप्रचारकों के व्याख्यानों की स्वीकृति प्राप्त करने में बहुत देर लगती है। आर्य समाज तथा आर्य संस्कृति के प्रचार की दृष्टि से यहां का वातावरण अनुकूल नहीं है। मुझे इससे पूर्व भी एक दो ज़िला आर्य सम्मेलनों में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे इस बात के कहने में संकोच नहीं कि बहावलपुर रियासत के आर्यों तथा आर्य समाजों ने इस सम्मेलन में जिस उत्साह से भाग लिया है वैसा अन्य ज़िला आर्य सम्मेलनों में के आर्य भाइयों ने नहीं लिया। इन आर्य सम्मेलनों में प्रायः रीति को पूरा करने के लिये प्रस्ताव स्वीकार किये जाते हैं। इनमें आर्य समाज के आन्दोलन के सम्बन्ध में विविध विषयों पर जिनका सम्बन्ध आर्य समाज जगत् से होता है—प्रस्ताव स्वीकार किये जाते हैं। उक्त जिलों में आर्य समाज की स्थिति पर प्रकाश डालने वाले विषयों पर विशेष प्रकाश डालने वाले प्रस्ताव स्वीकार करने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। परन्तु इस आर्य सम्मेलन में बहावलपुर के वातावरण को आर्यसमाज और उसके अनुकूल बनाने के लिये निश्चय रूप से विचार किया गया। रियासत में प्रचार कार्य को उन्नत करने के लिये एक उपदेशक और भजनीक रखने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। केवल प्रस्ताव ही स्वीकार नहीं किया गया अपितु इसके लिये वहीं धन एकत्र किया गया। बहावलपुर रियासत के आर्य पुरुषों तथा आर्य देवियों में प्रशंसनीय उत्साह दिखाई देता है। विशेषतया बहावलपुर के नवयुवक आर्य समाज के काम को आगे ले जाने के लिये अत्यन्त उत्कंठित प्रतीत होते हैं। यहां यह देख कर प्रसन्नता हुई कि वृद्ध और युवक एक दूसरे के साथ मिल कर काम कर रहे हैं। इन दिनों बहावलपुर में सनातनधर्म के शास्त्रार्थी पं० माधवाचार्य और श्री कृष्ण शास्त्री आए हुए थे। इन्होंने ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के सम्बन्ध में उत्तेजित करने वाले भाषण किये। युवकों में इससे बहुत बेचैनी थी। वह इन सनातनधर्मी शास्त्रार्थी पंडितों का उन्हीं के ढंग पर उत्तर देना चाहते थे—इसके लिये खुला शास्त्रार्थ कराना चाहते थे। परन्तु आर्य समाज के अनुभवी कार्यकर्त्ताओं के परामर्श अनुसार शास्त्रार्थ नहीं किये गये हों व्याख्यानों द्वारा उक्त पंडितों के व्याख्यानों में कहीं गई अनर्गल बातों का यथाशक्ति सप्रमाण उत्तर दिया गया। गाली तथा अपशब्दों का उत्तर अपशब्दों से न देकर शान्तिपूर्वक युक्तियों द्वारा दिया गया। आर्य समाज के इस व्यवहार का बहावलपुर की जनता पर अत्युत्तम प्रभाव पड़ा। सनातनधर्मी पंडितों को निराश होकर - जनता के प्रतिकूल लोकमत को देखते हुए वहां से जाना पड़ा। इस सम्बन्ध में हम पंजाब के आर्य समाजों का ध्यान खींचना चाहते हैं। पंडित माधवाचार्य जैसे पंडितों की उपेक्षा करनी चाहिए। इन दिनों मौखिक शास्त्रार्थों के स्थान पर लेखबद्ध शास्त्रार्थ करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए इससे कोई भी वक्ता अनर्गल—अपशब्द कहने से रुकता है। ऋषि दयानन्द ने भी लिखा है कि विद्वान् पंडितों के साथ ही शास्त्रार्थ करना चाहिए। अविद्वान् लोगों के साथ नहीं।

इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव द्वारा आर्य भाइयों को अपने वैयक्तिक जीवन को उन्नत करने पर बल दिया गया। भाषण करने वालों ने भी इस पर विशेष बल दिया। मेरी सम्मति में इस समय आर्य समाज में जो शिथिलिता दिखाई देता है उसका मुख्य कारण यह है कि हमारे जीवन आर्य धर्म तथा वैदिक आदर्श के जीते जागते संदेश नहीं है। यदि हम सचमुच आर्य संस्कृति का प्रचार करना चाहते हैं, वैदिक देश भक्ति का प्रचार करना चाहते हैं तो हमें स्वयं तथा अपनी समाजों को इसी प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए। परन्तु हम लोग कर क्या रहे हैं—हम लोग—उर्दू अंग्रेजी पढ़कर आर्य संस्कृति का प्रचार करना चाहते हैं विदेशी वस्त्र तथा विदेशी देश का पहरावा स्वीकार कर वैदिक देश भक्ति का प्रचार करना चाहते हैं। यह असम्भव है। बहावलपुर के आर्य भाइयों को चाहिए कि यदि वह रियासत बहावलपुर में आर्य धर्म का प्रचार करना चाहते हैं तो वहां के आर्य पुरुषों को अपने घरों में आर्य भाषा और आर्य धर्म के प्रचार की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि बहावलपुर के आर्य भाई वर्ष भर सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्तावों के अनुसार व्यक्तिगत जीवन तथा सामाजिक जीवन को ढालने का यत्न करेंगे। विरोधियों को मतभेद रखने वालों को उपेक्षा पूर्ण तथा आवश्यकतानुसार प्रेम पूर्ण व्यवहार से अपनाने का यत्न करेंगे तभी उनका यह सम्मेलन सम्पन्न सम्मेलन कहला सकेगा और अन्यों के लिये अनुकरणीय उदाहरण के रूप में उपस्थित किया जा सकेगा।

स्वर्गीय श्री रामानन्द जी चैटर्जी—

३० सितम्बर १९४३ को कलकत्तामें माडर्न रिव्यू और प्रवासी के सम्पादक श्री रामानन्द जी चैटर्जी का देहान्त हो गया है। श्री रामानन्द जी चैटर्जी द्वारा सम्पादित माडर्न रिव्यू ने भारतीय स्वाधीनता के प्रश्न से विश्व के सभ्य राष्ट्रों के सामने ज्वलन्त रूप में उपस्थित करने में जो प्रशंसनीय यत्न किया उसे कोई भूल नहीं सकता। वर्तमान बंगाल की नवशिक्षित जनता में—वंगीय साहित्य तथा भारतीय साहित्य और प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रचार कर उनमें आत्म सम्मान का भाव पैदा करने में माडर्न रिव्यू ने विशेष भाग लिया। श्रीयुत रामानन्द जी चैटर्जी विचार स्वातन्त्र्य के लिये विशेष रूप से यत्न करते थे। राजशक्ति—से स्वतन्त्र होकर - अपने विचारों को प्रकट करते थे। इनके विषय में प्रसिद्ध है कि एक बार राष्ट्रसंघ, (League of nations)के संचालकों ने संसार के प्रसिद्ध २ समाचार पत्रों के संचालकों को राष्ट्रसंघ के खर्च पर राष्ट्रसंघ का कार्य देखने के लिये निमंत्रित किया। श्री रामानन्द जी चैटर्जी उसमें सम्मिलित हुए—परन्तु उन्होंने समुद्र यात्रा—तथा आने जाने का मार्ग व्यय राष्ट्रसंघ से नहीं लिया। राष्ट्रसंघ से लौट कर उन्होंने अपने पत्र माडर्न रिव्यू में राष्ट्रसंघ की निर्भीक समालोचना की। अपनी इस निर्भयता तथा स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिये ही उन्होंने राष्ट्रसंघ से व्यय नहीं लिया। माडर्न रिव्यू के साथ २ वह बंगला भाषा में प्रवासी नाम की मासिक पत्रिका का भी सम्पादन करते थे। प्रवासी पत्रिका बंगाली जनता में विशेष चाव से पढ़ी जाती थीं। श्री रामानन्द जी चैटर्जी ब्रह्मसमाजी थे—इनके व्यक्तित्व तथा मासिक पत्रों के द्वारा ब्रह्मसमाज को भी पर्याप्त सहायता पहुँची। इनका माडर्न रिव्यू—भारतीय विद्वानों में विशेष रूप से पढ़ा जाता था भारत का कोई बिरला विद्वान् होगा जिसके लेख इसमें प्रकाशित न होते हों। माडर्न रिव्यू ने शान्ति निकेतन, कलकत्ता युनिवर्सिटी तथा बंगाल की चित्र कला को समुन्नत करने में विशेष भाग लिया। श्री रामानन्द जी चैटर्जी राष्ट्रवादी होते हुए भी हिन्दू संगठन के समर्थक थे। आप जन्ममूलक जातपात के घोर विरोधी थे। हिन्दू महासभा के नेता तथा कांग्रेसी नेता आपके विचारों को विशेष मान की दृष्टि से देखते थे। आपकी मृत्यु से भारतीय जर्नलिज्म भारतीय सम्पादक कला को भारी धक्का पहुँचा है। आशा करते हैं कि उनके उत्तराधिकारी चैटर्जी द्वारा संस्थापित मर्यादा को कायम रखते हुए माडर्न रिव्यू और प्रवासी को उनका सच्चा स्मारक बनाएंगे।

आर्यजाति के अपव्यय की पराकाष्ठा :—

लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि हिन्दू अपनी सम्पत्ति का अधिक भाग विवाह पर व्यय कर देता है।

शेष पृष्ठ ७ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चरित्र लेखन की कठिनाइयाँ

(स्ना० शंकरदेव जी विद्यालंकार गु० कु० कांगड़ी)

जीवन कथा लिखने की कला इस युग की एक श्रेष्ठ कला मानी गई है। यहां तक कि उपन्यास और कहानी लेखन की अपेक्षा भी वह कठिन मानी गई है। कहानीकार या उपन्यास प्रणेता को इच्छानुसार अपने पात्रों का आलेखन करने में स्वाधीनता है, परन्तु चरित्रकार के पास तो मर्यादित तथ्य और विधान प्रस्तुत होते हैं। उन्हीं तथ्यों को उसे अपनी न्याय बुद्धि और विवेक दृष्टि द्वारा नाप तोल कर प्रस्तुत करना होता है। चरित्र-नायक की जीवन दृष्टि के प्रति तथा उसके कार्य के मूल्याङ्कन में कहीं भी जाने अन-जाने अन्याय न हो जाय इसका इसे अतिशय ध्यान रखना पड़ता है। जहां उसे अति रंजन से बचना है, वहां अल्प रंजन या अरंजन से भी अपने को बचाना है। उसे अपनी कृति को अनेक विध अपस्थानों से बचा कर तैयार करना होता है। और यदि चरित्रनायक अपने से विरोधी देश का अग्रनायक या विरोधी विचार-प्रणाली का प्रणेता हो, तब तो यह कठिनता और भी अधिक हो जाती है। ऐसे पात्रों के आलेखन में ही चरित्रकार की सच्ची कला का आभास मिल सकता है, और उसकी कसौटी भी हो सकती है। चरित्र-लेखक कोई स्तुतिपाठक का भाट-चारण नहीं, न ही वह छिद्र-दर्शी गुप्तचर है। वह तो व्यक्तियों और राष्ट्रों की जीवन-प्रक्रियाओं, अरोह-अवरोहों और प्रवृत्तियों का तटस्थ द्रष्टा और निष्पक्ष अलोचक है। उसे तो अपनी लेखनी को समतुलित रखकर चरित्रलेखन करना है इस दृष्टि से इतिहासकार का कार्य तो सब से अधिक कठिन और उत्तरदायित्व-पूर्ण है। चरित्रकार को तो प्रधान तथा एक ही व्यक्ति की जीवनचर्या का निरूपण करना होता है, जब कि इतिहास-लेखक को राष्ट्र या जाति की अनेक व्यक्तियों के चरित्र के प्रति अपनी दृष्टि न्याय-पूर्ण रखनी होती है।

हिंदी-भाषा में उच्च कोटि के जीवन-चरित्रों की कमी है। पूरे प्रेम, न्याय और निर्भयपने के साथ तथा संयम और सहिष्णुता का विचार रखकर लिखी हुई प्रमाणिक चरित्र-कथाएं हिंदी में अति अल्प हैं। मराठी-भाषा में श्रीयुत नरसिंह चिंतामणि केलकर (मराठी-भाषा के उच्च कोटि के पत्रकार, इतिहासकार, समीक्षक और निबंध-लेखक) द्वारा लिखित 'तिलक-चरित्र' का मुकाबला करने वाला चरित्र-ग्रंथ तो अपने यहां एक भी नहीं। इंगलिस्तान में डाक्टर जानसन एक बड़े विद्वान् हो गए हैं। उनकी जीवन-कथा उनके मनीषी मित्र बासवेल महाशय ने लिखी है। वह जीवन-चरित्र अपनी उत्कृष्टता के लिये समस्त संसार में प्रसिद्ध है। भारत के एक विज्ञ विवेचक ने केलकर-कृत 'तिलक-चरित्र' की तुलना बासवेल के जानसन चरित्र से करते हुए उसकी बहुत प्रशंसा की है। आनंद का विषय है, मराठी तिलक चरित्र के प्रथम खंड की प्रतीक्षा है। मराठी तिलक-चरित्र का अंगरेज़ी अनुवाद भी प्रकट हो चुका है।

हिंदी-भाषा में चरित्रांकन के लिये कलम उठाने वाले कृतिकारों में हमें प्रो० इंद्र विद्यावाचस्पति, पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री वेंकटेश नारायण तिवारी, श्रीयुत राम नाथ लाल "सुमन" और श्रीयुत सत्यदेव विद्यालंकार बहुत पसंद आए। श्री इंद्र जी की लेखनी में तो एक सर्व-श्रेष्ठ चरित्रकार और इतिहास-लेखक की खूबियां निहित हैं। उन के लिखे निपोलियन, बिस्मार्क और गेरीबाल्डी के जीवन-चरित्र उच्च कक्षा के चरित्र-ग्रंथ हैं। आलोचक-दृष्टि से लिखा हुआ उनका 'मुगल साम्राज्य का क्षय और उसका कारण' नामक ग्रंथ हिंदी साहित्य में अपने विषय का सर्वोत्तम ग्रंथ है। श्रीयुत 'सुमन' जी का चरित्रालेखन और रेखाचित्रण कमाल का होता है। भारतीय नेताओं के शब्द-चित्र और रेखाचित्रों के आलेखन में उन्होंने बड़ी कृतहस्तता प्राप्त की है। पात्रों की आलोचना भी वह बहुत अच्छी लिखते हैं। श्रीयुत बनारसीदास जी चतुर्वेदी हमारी भाषा के एक श्रेष्ठ चरित्र-लेखक हैं। उनके लिखे हुए परिचय-चित्र अपने ढंग के अनूठे हैं। चतुर्वेदी जी जब सहानुभूति के साथ चरित्रालेखन करते हैं, तब कमाल कर देते हैं। हिंदी-जगत् चतुर्वेदी जी से द्विवेदी-चरित्र, शंकर-चरित्र और दीनबंधु ऐंड्यूज़-चरित्र की आशा लगाए हुए हैं। श्रीयुत वेंकटेश नारायण तिवारी की लेखनी ने अपने साहित्य में बहुत अच्छे-अच्छे शब्द-चित्र उपजाए हैं। जब वह "भारत" (इलाहाबाद) के संपादक थे, तब भारतीय नेताओं और साहित्यकारों के चरित्रों का चित्रण करते थे। उनका संचय लीडर प्रेस, इलाहाबाद से "चारु चरितावली" नाम से प्रकाशित हुआ है। उन शब्द-चित्रों में तुलनात्मक दृष्टि विद्यमान है, और साथ ही पूर्ण प्रेम के साथ पात्रों का चरित्रांकन हुआ है। श्री० तिवारी जी से हिंदी-संसार "चारु चरितावली" के दूसरे भाग की आशा रखता है। दिल्ली के दैनिक 'हिंदुस्तान' के संपादक श्री० सत्यदेव जी विद्यालंकार की कलम में भी चरित्रकार की पूरी क्षमता विद्यमान है। "श्रद्धानंद-चरित्र" लिखकर उन्होंने हिन्दी के चरित्र-साहित्य को एक उत्कृष्ट जीवन-कहानी प्रदान की है। इसी प्रकार "लाला देवराज-चरित्र" और "हमारे राष्ट्रपति" नामक ग्रंथों में भी अपने पात्रालेखन में अच्छा कौशल प्रदर्शित किया है। अन्य भी कई अच्छे चरित्रकार हिंदी-जगत् में विद्यमान हैं। फिर भी हमारा जीवनी-साहित्य बहुत दरिद्र है। सब से बड़ी कमी तो यह है कि हमारे साहित्य में भारतवर्ष वा इस युग के विधाताओं के प्रामाणिक और विशद जीवन-चरित्र नहीं लिखे गए। महामना मो देशबंधु चित्तरंजन दास, पंजाब-केसरी ला लाजपतराय, पंडित मोतीलाल नेहरू, महामना मा जी, कवींद्र रवींद्रनाथ ठाकुर और महात्मा की प्रामाणिक और विशद जीवन-कथाओं से चरित्र साहित्य अभी तक—इस प्रगति के युग शून्य है। बालोपयोगी और किशोरोपयोगी चरि लियां तो हिंदी में अच्छी-अच्छी लिखी ग लिखी जा रही हैं, परन्तु विशद, प्रामाणिक तुलनात्मक जीवन-चरित्रों से हमारा सा शून्य है।

× × × ×

दूसरों की जीवन-कथा लिखना कुछ सहज विशेषत: महान् पुरुषों की। महापुरुषों के जीव समग्र रूप देखे-जाने बिना हम उनके जीवन से न्याय नहीं कर सकते। इस विषय में लुडविग के विचार जानने योग्य हैं। एमिल लु महोदय संसार के माने हुए चरित्रकार हैं। मातृ भूमि जर्मनी है। चरित्रालेखन की क इन्होंने कमाल की कीर्ति पाई है। उनके चरित्रों का संसार की सभी सभ्य भाषा भाषांतर हो गया है। हिंदी-भाषा में उनके ग्रंथ का भाषांतर नहीं हुआ है। महापुरुषों के उन्होंने मिस्र देश की पालक-माता "नील-नद इतिहास बहुत सुन्दर लिखा है।

चरित्रालेखन की कठिनाई के विषय में श्री लुडविग के विचार जानने योग्य हैं। एक स्थ वह स्वयं लिखते हैं

"जर्मन साहित्यकार गेटे, संगीताचार्य बि प्रिंस बिस्माके, नेपोलियन बोनापार्ट और लिंकन आदि महान् व्यक्तियों की चरित्र लिखने से पूर्व मैंने इन व्यक्तियों की प्रतिकृ वर्षों तक अनुशीलन किया था। ऐसे एक महापुरुष की तस्वीर मेरी मेज़ पर सर्वदा रहती थी। उसकी दृष्टि मानो सदा मुझ रहती थी। मैं उसके साथ बातचीत भी क तथा उसके प्रति विविध प्रकार के प्रश्न था।

इसके सिवा ऐसी व्यक्तियों की गुप्त का परिशीलन भी मैं करता रहा हूं। ऐसे द्वारा मैं अपने चरित्रनायक के साथ क करने को प्रयत्नवान् रहा हूँ। अपने समय जो वार्तालाप किया था, दूसरी कणिकाएँ पास जा कर प्राप्त करता रहा हूँ। ऐसी क से ही उस व्यक्ति के आन्तर जीवन को सच्च मिल सकती है। अपनी प्रेयसी अथवा मित्र किए गए उसके निर्दोष विचारों में से ही आशाएं, आकांक्षाएँ, महत्वाकांक्षाएं औ विदित हो सकती हैं।

शेष पृष्ठ ६ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विश्व के प्रांगण में देवों और असुरों का संग्राम होता होता रहता है। कभी देवता विजयी होते हैं कभी असुरों की विजय पताका फहराने लगती है। मनुष्य जाति के इतिहास में भी दैवी और आसुरी मण्डलियां अपना अपना जोर आजमाया करती हैं। मनुष्य स्वभावतः दिव्यपथ का यात्री बनना पसन्द करता है; परन्तु उस दिव्यपथ को प्राप्त करना सरल नहीं है। वह प्रायः भटक जाता है। उसको अपनी सच्ची गन्तव्य-दिशा का विस्मरण हो जाता है और आसुरी भावनाएं दब जाती हैं और आसुरी भावनाओं का प्रभुत्व हो जाता है। पर, सच्ची राह बताने के लिये दिव्य इच्छाएं सदा प्रयास करती रहती हैं। सत्य को ग्रहण करने वाले किसी किसी को इनसे आश्वासन मिलता है, प्रोत्साहन प्राप्त होता है, प्रेरणा और प्राण मिलता है। इस विद्वान् और विभूति का संसार में अवतरण इसी लिये होता है कि वे पथभ्रष्ट मानव को उनका मार्ग प्रदर्शन करें। उनको सच्ची राह और ध्येय बताएं।

आखिर, दैवीयशक्तियों के प्रयास से इन्हीं महात्माओं में से किसी किसी को शिष्य भी प्राप्त हो जाते हैं और दैवीयशक्तियों के वे स्रोत शिष्य रूपी प्रवाहों में प्रवाहित हो जाते हैं। लोग उस स्वच्छ जल का पान करते हैं, और वाग वाग हो जाते हैं। इस असुर स्वभाव संसार में, जिसमें कि चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है। वे प्रकाशताल विरहित टार्चें शिष्यरूपी बत्तियों के सम्पर्क से प्रकाश समूह को चारों ओर, दिशा दिशा में बिछा देती हैं। गुरु रूप में पुञ्जीभूत प्रकाश दया की अन्धकार विनाशिनी शक्ति को प्राप्त कर संसार के कोने कोने में फैल जाता है।

स्वामी विरजानन्द भी उन्हीं महापुरुषों में से हैं जिनके कि मानस मराल पर विराजिता सरस्वती नित्य वीणा की झंकारों से सार्वभौम सत्य का सन्देश दे रही थी।

(२)

दानवों का दलन! कल्पना ही दिल को दहला देती है। महापुरुषों को इनका शिकार होना पड़ता है। करतपुर के समीप गङ्गापुर नामी ग्राम में जन्म लेने के पश्चात अपने चचा नारायणदत्त नामी भारद्वाजगोत्रीय सारस्वत ब्राह्मण के हाथों से अपनी जीवन नौका को खे रहे थे। पर उन पर तो आपत्तियां आनी थी। आठ साल की उमर में ही नारायणदत्त को उन से छीन लिया गया। लगभग ५ साल की उमर में चेचक के द्वारा उनकी आंखें भी अपहरण कर ली गई थीं। इस समय भाई अवरोध था, उसने भी साथ न दिया। आठ साल का बच्चा इस संसार में अकेला भटकने के लिये छोड़ दिया गया और वह भी अन्धा बना कर। कैसी असहाय अवस्था थी। एक बार दिल आह भर उठता है। दानव ने समझा वह विजयी हो गया।

दैवीय भावों के स्रोत

दण्डी गुरु विरजानन्द जी का जीवन संदेश

(ब्र० वेदप्रकाश—१३ श श्रेणी, गुरुकुल कांगड़ी)

पर यह चिन्ताशील पुरुष, यह अपनी धुन में मस्त इनकी तनिक भी परवाह न करता था। असुर को क्या मालूम था कि मैं एक विद्यामृत से दिव्य आत्मा पर अपना वार कर रहा हूं। आसुरी माया के पास शक्ति होती है, पर दिमाग नहीं होता, तभी तो लोगों को भटकाता फिरता है। कितनी बार देखा है कि शराबी आपस में सिरफुटौव्वल करने पर भी कुछ अनुभव नहीं करते। भंग के नशे में चूर को चोटों का अनुभव भी नहीं होता। खिलाड़ी को खेल की मस्ती में लगी चोटें पता ही नहीं लगतीं। यह सब मस्ती का परिणाम है, और वह सरस्वती की वीणा को सुनने में मस्त था।

सत्यपथ के राही ने आठ साल में ही अपना गृह त्याग दिया और ऋषिकेश की ओर प्रस्थान किया। वह इस कलुषित वायुमण्डल में जिसमें कि असुरों का इतना प्रकोप था न रह सका; शान्त वायुमण्डल में जहां कि सदा दिव्यता का ही राज है, आसुर समूह भी दिव्यता की ही छाया में रहता है उन्होंने अपनी तपस्या को फलीभूत करना चाहा। वे ऋषिकेश नामी तत्कालीन तीर्थ में जाकर तपस्या करने लगे।

उन्होंने अभी तक गायत्री के महत्व के सिवाय और कुछ तपस्या के विषय में न पढ़ा था। गायत्री को ही इन्होंने अपना लक्ष्य बना लिया और रोज प्रातःकाल शीतल पानी में आधा शरीर खड़ा होकर तपस्या करने लगे। इसी समय इनकी अन्तरात्मा में सरस्वती की वाणी सुनाई दी "तुमने जो कुछ करना था कर चुके अब यहां से चल दो"। वह असहाय तो इस समय उसी के सन्देशों का पालन कर रहा था। वहां से हरिद्वार आ गये और गुरुवर पूर्णाश्रम के पास विद्याध्ययन किया। आंखों की कमी को वे पढ़े हुए पाठ को दूसरों को पढ़ा कर पूरा कर लिया करते थे। षड्लिङ्ग और कौमुदी का अध्ययन उन्होंने यहीं पर समाप्त कर लिया। हरिद्वार के उपरान्त "काशी" और वहां से "गया" चले। रास्ते में पुनः असुरों ने अपना दाव चलाना चाहा। जब वह जा रहे थे उनको डाकुओं ने घेर लिया। उन्होंने असहाय होकर जोर जोर से शोर मचाना शुरू किया। पास में ही ग्वालियर नरेश के सर्दार ठहरे हुए थे। उन्होंने कातर आवाज को सुन कर अपने नौकर को भेजा। वह जब घटनास्थल पर पहुंचा डाकू भाग गये और वे बच गये। वाग्देवी का पुत्र प्राणहीन न हुआ "गया" के उपरान्त स्वामी विरजानन्द जी भागीरथी के किनारे किनारे चल कर सोरोंक्षेत्र में पहुंचे। उनके जीवन का यह अन्तिम स्थान है। दैवीय आवरण में रहने वाले असुरों का उन्होंने यहीं पर अन्तिम दर्शन किया। यहां से वे मथुरा चले गये।

मथुरा में उन्होंने एक पाठशाला खोली। यही पाठशाला है, जहां से सरस्वती के युद्ध की तुमुल दुन्दुभि का नाद भारत को जगाने के लिये निनादित हुआ। अभी तक विरजानन्द के जीवन की अलौकिकता ने कोई नया अस्त्र ग्रहण न किया था। करते भी किस तरह जब तक कि प्रतिपक्षी के अस्त्र का ज्ञान न हो। सहसा भेद खुलता है।

मथुरा में विरजानन्द जी की धाक थी। लोग उनको अद्वितीय पण्डित समझते थे। इसी समय यहां पर तत्कालीन वैष्णव सम्प्रदाय के अध्यक्ष रङ्गाचार्य के गुरु कृष्णदेव शास्त्री का आगमन हुआ। कुछ समय बाद वहां पर एक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ कि विरजानन्द और कृष्णदेव शास्त्री का शास्त्रार्थ होगा। शास्त्रार्थ का विषय व्याकरणात्मक था "अजाद्युक्तिः" पद के समास के विषय में विमतियां थीं। विरजानन्द कहते थे कि इसमें षष्ठी समास है और कृष्णदेव शास्त्री सप्तमी समास बताते थे।

शास्त्रार्थ तो न हुआ। राधाकृष्ण, जो कि रंगाचार्य के शिष्य थे, उन्होंने गोलमाल करके विरजानन्द की पराजयता घोषित कर दी। इतना ही नहीं, काशी में अपना एक आदमी भेज कर वहां के पण्डितों से भी उन्होंने यह लिखवा लिया कि 'अजाद्युक्तिः' पद में षष्ठी समास है। विरजानन्द को बहुत आश्चर्य और चिन्ता हुई उन्होंने काशी विद्वन्मण्डली से व्यक्तिगत रूप से पूछा कि आप ने किस आधार पर उक्त अभिमत प्रकट किया है। काशी विद्वन्मण्डली सच्ची होती तो उत्तर देती। वह सकपका गई। उसने अपने असली रूप को खोल दिया, अपने कुल का रूप प्रकट कर दिया। सिद्ध हो गया कि नवीन विद्वान् किसके शिकार हैं।

उन्होंने लिखा कि समास तो षष्ठी तत्पुरुष ही है पर अब क्या हो सकता है। हम तो लक्ष्मण देव शास्त्री के पक्ष में अभिमत प्रकट कर चुके।

❀ ❀ ❀

विरजानन्द विरोधियों के प्रतिकार के लिये जिस अस्त्र की प्रतीक्षा कर रहे थे वह उन्हें आज सहसा प्राप्त हो गया। ओह! कितना अन्धकार, कितना पाखण्ड और धूर्तता—जो विद्वान् आत्मा की आवाज पर चलते थे, जिन्हें सचाई प्यारी थी, जिनका जीवन सचाई के लिये अर्पित था, वे भी अर्थ लाभ में आकर आज सत्य से विचलित होगये।

विरजानन्द ने दृढ़ संकल्प कर लिया कि वे आज से इसका विरोध करेंगे। भारत में लोभियों और स्वार्थियों द्वारा रचित ग्रन्थों का समूलोन्मूलन करेंगे

शेष पृष्ठ ६ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

५ पृष्ठ का शेष

और भारत में स्वार्थ से परिपूर्ण जो अध्ययन की प्रवृत्ति है उसका विनाश करेंगे। उन्होंने आर्ष ग्रन्थों का प्रचार करना प्रारम्भ किया। यही ग्रन्थ ऐसे थे जिनको कि सम्पूर्ण भारत सत्य स्वीकार करता था। वह सार्वभौमिकता की भावना जो कि किसी व्यक्तिगत शास्त्र को लेकर न उठ सकती थी, उन्होंने इन्हीं सार्वभौमिक ग्रन्थों द्वारा उस सार्वभौमिक भावना को प्रस्फुरित करने की कोशिश की. नवीन सुधारकों की तरह ग्रन्थों का सहारा न लेना भी उन्हें एक अत्याचार प्रतीत हुआ। आर्य जाति जो कि सदा शास्त्रानुरागी रही है किस प्रकार उनसे वियुक्त की जासकती थी। मान लीजिये आप चाहते हैं कि भारतीय मिठाई खाना छोड़दें। इसके लिये आपके पास सरल उपाय यह है कि आप उनको अच्छी मिठाइयाँ खाने की अनुमति दें। और साथ में यह भी बता दें कि वे क्यों अच्छी हैं। समय आयगा कि अच्छी मिठाई को इसलिये नहीं खायेगा कि वह मिठाई है, अपितु क्योंकि वह अच्छी है। और यदि वह खराब होजायगी तो उसको छोड़ने में हिचकिचाहट भी न करेगा।

स्वामी विरजानन्द ने भारतोद्धार के लिये इसी उपाय को श्रेयस्कर समझा। इसमें मानव को क्रान्ति और विद्रोह नहीं करना पड़ता वह क्रमिक विकास की निश्रेणी पर चढ़ता चला जाता है। नरक से स्वर्ग को जाने के लिए किसी खाई के कूदने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मध्यवर्ती नदी में आराम से बहकर स्वर्ग में आजाता है।

उक्त ध्येय को सफल बनाने के लिये आपने आगरा में केनिंग के दरबार में समागत भारतीय नरेशों में से जयपुर पति रामसिंह से सार्वभौम सभा के स्थापित करने का अनुरोध किया था। इसका मुख्यतः आर्ष ग्रन्थों का प्रचार और अनार्ष ग्रन्थों का निवारण ही उद्देश्य था। रामसिंह मान गये थे और उत्साह पूर्ण भी थे। पर उनके साथियों ने उन्हें इस विचार को कार्यरूप में परिणत न करने दिया। उनके मन्त्री और अन्य राजाश्रित विद्वन्मण्डली यही कहती रही कि सार्वभौम सभा के स्थापन से धर्म विनष्ट होजायगा रामसिंह भी चुप होगये। स्वामी जी ने जिस विचार धारा को सार्वभौम सभा में झुकाया था वही कालान्तर में थियोडोर गोल्डस्टकर ने भी कही थी।

ऐसा कहा जाता है कि आप अपने कार्य को पूर्ण करने में इतने व्यग्र थे और सोत्साह अपनी शक्तियों को व्यय कर रहे थे कि आपने मथुरा के तत्कालीन डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि. हार्डिंग से आर्ष ग्रन्थों के प्रचार के लिए अनुरोध किया। हार्डिंग साहब ने इस विषय में यह कह दिया था कि हमें इस विषय का प्रबन्ध करने का अधिकार नहीं है।

विरजानन्द अपनी पाठशाला में अभ्यागत विद्वानों को सदा आर्ष ग्रन्थों की महत्ता और निस्सारता बता कर उनके पढ़ने का अनुरोध किया करते थे। उक्त प्रकार के विद्वानों में आदित्य गिरि और गङ्गाराम नामी सर्यूपारीण ब्राह्मण विख्यात हैं। पर अभी तक उनको सफलता प्राप्त न हुई थी। दैवयोग से सरस्वती देवी की कृपा हुई। स्वामी दयानन्द भी इन्हीं दिनों इनके विद्यालय में पधारे। यह समय लगभग १८वीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध का है। इस समय स्वामी दयानन्द की उमर ३५ साल की थी। आपने पहले भी कुछ ग्रन्थ पढ़े हुए थे। स्वामी विरजानन्द ने पाठशाला के नियम के अनुसार उनको सम्पूर्ण अनार्ष ग्रन्थों को भूल जाने के लिये कहा और पुनः अपने तरीके से व्याकरण पढ़ाया। वेद आदि सब शास्त्रों को यद्यपि उन्होंने शास्त्रीय ढंग से नहीं पढ़ाया, पर वे सदा उनमें "आर्ष ग्रन्थ भारत का कल्याण करेंगे और अनार्ष नाश कर रहे हैं" इस भावना को उद्दीप्त करते रहते थे। समय आया, दयानन्द जी का विद्याध्ययन समाप्त हुआ। उनके पास गुरुदक्षिणा भेंट करने के लिये कुछ न था। उन्होंने गुरुवर के सम्मुख श्रद्धाञ्जलि होकर कहा "गुरुदेव! मेरा अध्ययन काल समाप्त होगया है पर मेरे पास कुछ नहीं है।

मान्य गुरु की तो तपस्या ही अभी सफल हुई थी। वह धनलोलुप तो था नहीं। उन्होंने तो सत्य का प्रसार करना था। वह दिव्यशक्तियों का स्रोत जो कि विरजानन्द के रूप में मूर्तिमान् रूप से विद्यमान था दयानन्द के द्वारा प्रवाहित होजाना चाहता था। गुरु देव ने गम्भीर वाणी में उत्तर दिया "दयानन्द! तुम्हारे पास सब कुछ है। तुम्हारे पास वह है जो किसी के पास नहीं है। सौम्य, जाओ, अन्धकार से परिपीड़ित भारत में जाओ; उसको आर्ष ग्रन्थों के प्रचार द्वारा सन्मार्ग पर चलाओ।

गङ्गा का जल जिस प्रकार मूल में पवित्र है उसी प्रकार, इस साक्षात् आर्य समाज के रूप में वर्तमान प्रवाह के स्रोत स्वामी विरजानन्द भी सत्य के अधिष्ठान हैं। भगवान् से प्रार्थना है कि वह हमको अन्धकार से बचाने के लिए, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् में ओतप्रोत सार्वभौमिक भावना के उदय के लिये आर्य जाति के एक २ वीर को दैवीय भावनाओं का स्रोत बनादे। हमने महान् पुरुष विरजानन्द की आत्मा का अवतरण हो।

आर्य समाज देहरादून को दान

श्री पी० सी० हरी हैयर कम्पनी व मैसर्ज आर-एस चिरञ्जीलाल ने समाज को क्रमशः ३००) व ४६५) रु० का दान दिया—दान प्राप्त कराने में श्री काशीनाथ जी सीनियर वाइस चेयरमैन म्युनिसपल बोर्ड वा ठा० कुन्दनसिंह जी ने मुझे विशेष सहयोग दिया।

—आर्यसमाज सन्तनगर लाहौर का वार्षिकोत्सव २२ से २४ अक्तूबर को बड़ी धूमधाम से हो रहा है। उत्सव के सम्बन्ध में श्री माथुर शर्म्मा जी १६ अक्तूबर से मैसिज के सन्तमण्डल द्वारा कार्यक्रम पर भी योग्य २ उपदेशक महानुभाव पधार रहे हैं।

४ पृष्ठ का शेष

इस के पश्चात् मैं चरित्रनायक गुप्त के पत्र-को निहारता हूँ। ऐसे पत्र-व्यवहार में से सच्चे व्यक्तित्व का दर्शन होता है। ऐसे दर्शन के बाद ही मैं व्यक्ति के प्रामाणिक को ओर ध्यान देता हूँ।

भूतकालीन व्यक्तियों की अपेक्षा जीवित की जीवनी लिखना अधिक कठिन है। लिये मुसोलिनी के प्रेम-पत्र तथा राष्ट्रपति के अपने बालकों के प्रति लिखे हुए पत्रों करना मेरे लिये शक्य नहीं।

रोम में मैंने मुसोलिनो के साथ समर पर लंबी बातचीत की थी। इस वार्तालाप मुसोलिनो के हाव-भावों का निरीक्षण सुयोग मिला था। मुसोलिनी जब आप अकेला बातचीत करता हो, तब वह बड़ी स रीति से बात करता है, परंतु तीसरे के आने गंभीर मुद्रा बना लेता है। एक बार हम दो थे कि कार्यवशात् एक पुरुष एकाएक वहां आ उसके वहां से चले जाने तक मुसोलिनी हाव-भाव धारण किए हुए बैठा रहा।

रूस के अधिनायक को आदत है कि करते समय वह अपने सामने पड़े हुए काग भिन्न भिन्न आकृतियां बनाता रहता है!

मेरे संपर्क में आने वाले महा पुरुषों में रूज़वेल्ट मुझे बहुत स्वाभाविक तथा मानसि से समतुलित रहने वाले व्यक्ति प्रतीत हुए।

भविष्य में चरित्रकारों को सिनेमा और फोन का अविष्कार बहुत लाभकर सिद्ध होगा मैं ड्यूक आफ विंडसर और डचेस आफ विं वार्तालाप करता हुआ सुन सकता हूँ, उस यदि जुलीयस सीज़र और क्लियोपेट्रा को बा हुआ सुन सकूँ, तो उनके जीवन के रह समझने में समर्थ हो सकता हूँ।

इसके सिवा जीवित व्यक्तियों पर मि शत्रुओं की टीकाएँ सदा ही होती रहती टीकाओं के कारण भी जीवनकथा लिखना हो जाता है। क्योंकि इन टीकाओं की या पता लगाए बिना कुछ लिखना ठीक नहीं

जीवित व्यक्तियों के स्वभाव के अन्वेष मैं उनके साथ इस प्रकार के विषयों की करता हूँ, जिनसे वे अपरिचित हों। मु शिल्प शास्त्र की बात करता हूँ। संगीतक डिक्टटेर शाही के विषय में और डिक्टेट न्याय के सम्बन्ध में बात निकालता परिस्थिति में वे घबरा जाते हैं, और उनके सच्चे स्वभाव के दर्शन हमें हो जाते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Digitized by S3 Foundation USA

३ पृष्ठ का शेष

ही करता इस समय दिखावे के लिये वह
मारोह के लिये कर्जा तक लेने में संकोच
। आर्यसमाज ने भारतीय समाज की जहां
ाजिक कुरीतियों को दूर करने का यत्न किया
ह सम्बन्धी कुरीतियों को दूर करने के लिये
आन्दोलन किया। बाल-विवाह रोके गये।
पर वेश्या-नाच बन्द कराए गये। जूआ
का गया। अनेक प्रकार के रूढ़ि वादों को
। जन्म की जात पात के बन्धनों को तोड़
ंतर विवाह की प्रथा जारी करने का यत्न
ा। युरोपियन सभ्यता के संघर्ष से इनमें से
र बिगाड़ के रूप में परिवर्तित हो गये।
यह है कि आज भी यह विवाह–हिन्दु जाति
ने आपको आर्य कहने वालों के लिये भारी
तथा अनुचित प्रदर्शन के साधन बन रहे हैं।
क्तूबर से लेकर १२ अक्तूबर तक हमें अनेक
ाजी भाइयों द्वारा रचाए जा रहे विवाह
में सम्मिलित होने का अवसर मिला।
ईं जिन मूहूर्तों को नहीं मानते–उन्हीं में
रूप से विवाह रचाने पर बलदेना
समाज की सामाजिक रीतिनीति
ूलत हैं। आर्य समाजी भाई रीति रिवाजों
ा विवाह संस्कार पर बल देना विशेष लाभ-
समझते हैं। परन्तु हमें यह देख कर शोक
कि अनेक आर्य भाई बाह्य प्रदर्शन–मिलनी-
आदि की प्रथाओं को ही मुख्य समझते हैं।
आर्य समाजी भी हिन्दुओं की भांति इस
पार अनावश्यक–प्रदर्शन व्यय करते हैं।
वरातों का जमघट करते हैं आर्य समाजी
जन्म मूलक बिरादरी में ही विवाह करते हैं।
समाजी भाई आर्य-समाज के आन्दोलन को
लीी और प्रगतिशील बनाना चाहते हैं उन्हें
क सुधारों की ओर विशेष बल देना चाहिए।
यां सामाजिक कुरीतियों को दूर कर सामा-
ार नहीं करतीं, वह राजनीतिक और आध्या-
ष्टि से उन्नत नहीं हो सकतीं। सामाजिक कुरी-
दूर करने वाला व्यक्ति ही यथार्थ में मनुष्य
परमात्मा की सन्तान समझ सकता है। हम
ाज के युवकों – तथा आर्य समाज के वृद्धों
र्वक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि वह
ाज को आगे ले जाना चाहते हैं तो उन्हें
भ्यता तथा अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के सम्पर्क
ने वाली बुराइयों से आर्य समाज को बचाना
आर्य समाज के प्रारम्भ युग के नेताओं ने
रीति रिवाजों के शक्तिनाशक प्रभाव से
ा को बचाया था–आज पाश्चात्य सभ्यता की
से आर्य घरों तथा आर्य परिवारों को बचाने
ाकना है। इसी चकाचौंध के कारण आर्य
समाज के युवक तथा आर्य समाज उन्नति पथ पर अग्रसर नहीं हो रहे। इस समय नए ढंग के अपव्यय–विवाह—समारोहों को आर्य जाति की तबाही का कारण बना रहे हैं। क्या आर्य देवियां और आर्य नेता इस तरफ़ ध्यान न देंगे!

नूरपुर में गो हत्या का लाइसैन्स—

नूरपुर जिला कांगड़ा के जिलाधीश ने पूर्व प्रचलित प्रथाओं के विपरीत नूरपुर में गो हत्या का लाइसैन्स जारी कया है। नूरपुर के प्रदेश में इससे पहले कभी गो हत्या नहीं हुई। यह पहाड़ो प्रदेश मुसलमानी शासन काल में भी इस बुराई से अछूता रहा है। परन्तु अब अंग्रेज़ी शासन काल में यह नई बात शुरु हुई है। सर सिकन्दर ने कई बार घोषणा की थी कि वह धार्मिक मामलों में 'स्टेसको' के पक्षपाती हैं परन्तु पता नहीं—उनके उत्तराधिकारी युनियनस्टपार्टी के संचालक इस नीति में क्यों परिवर्तन कर रहे हैं। १० अक्तूबर को पंजाब के आर्य समाजों ने इसके प्रतिवाद रूप में सभाएं की हैं। अपने प्रतिवाद पंजाब के गवर्नर और प्राइममिनिस्टर के पास भी भेजे हैं। जब तक पंजाब की सरकार जिलाधीश की गो लाइसैन्स देने वाली आज्ञा को रद्द नहीं करती तब तक यह प्रतिवाद सभाएं होनी चाहिएं। सरकार को भी चाहिए कि वह जनता की भावनाओं को व्यर्थ में ठेस न पहुंचाए। गो रक्षा का प्रश्न केवल धार्मिक प्रश्न नहीं है—इस प्रश्न के आर्थिक महत्व ने ही इसे धार्मिक महत्व दिया है। भारतीय देहाती के लिये गौ –कामधेनु है—उसका सर्वस्व है। उसकी खेती—उसके परिवार का दारमदार इसी पर है। इस महत्व को सामने रखते हुए ही बादशाह बाबर, अकबर तथा जहांगीर ने गो हत्या को सख्ती से रोका था। इस प्रश्न की विशेषता को समझते हुए ही ऋषि दयानन्द ने जीवन काल के अन्तिम दिनों में गो रक्षा पर विशेष बल दिया था। आज गो रक्षा के न होने से पंजाब निवासी दूध घी की कमी से कितने तंग हो रहे हैं। आर्य समाजों ने अपनी अधिकांश शक्ति अंग्रेज़ी शिक्षा प्रधान—शिक्षणालय में लगा दी। युवकों को सरकारी नौकरी का मुंहताज तथा अपाहिज बन दिया। हमारी सम्मति में–आर्य समाज के नेताओं ने—अंग्रेज़ी शिक्षा के लिये डी० ए० वी० स्कूल कालेज तथा आर्य स्कूल खोल कर आर्य जाति के धन का अपव्यय तथा सरकार द्वारा खोले गये शिक्षणालयों को गैर हिन्दुओं की संस्था बनाने में सहयोग दिया। आज भी आर्य भाइयों को चेतना चाहिए–यदि आर्य समाजें—इन अंग्रेज़ी शिक्षा देनी वाली पाठशालाओं और स्कूलों को बन्द करके—इनके स्थान पर वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार चलाई जाने वाली गौशालाएं कायम करें तो यह कार्य ज्यादः उपयोगी होगा। प्राचीन आर्य—गौं को केन्द्र बना कर अपने शिष्यों को शिक्षा देते थे इससे उनकी आर्थिक स्थिति उन्नत होती थी और उनकी विद्या भी अर्थकरी होती थी। हम आर्य समाजों के अधिकारियों तथा आर्य पुरुषों से कहना चाहते हैं कि उन्हें प्रतिवाद—सभाएं तो करनी चाहिए परन्तु साथ ही साथ क्रियात्मक रूप में गो रक्षा के लिये विशेष यत्न करना चाहिए। इसके लिये गुलाम बनाने वाली शिक्षा संस्थाओं को बन्द करना पड़े तो बन्द कर देना चाहिए। आर्य समाजों को अपने २ शहर की आर्थिक—शारीरिक और सामाजिक–अवस्था सुधारने का भी यत्न करना चाहिए—इसके लिये गो रक्षा—आन्दोलन से ज्यादा उपयोगी और कोई साधन नहीं है।

देश विदेश की खबरें

—बंगाल में अभी तक भूख के कारण होने वाली मौतों की संख्या घटी नहीं। २१६ व्यक्ति भिन्न हस्पतालों में दाखिल किये गये। ८३ मौतें हुईं। भूख के अतिरिक्त हैज़ा, मलेरिया और अन्य बीमारियों के कारण मौतों की संख्या बढ़ रही है। मि० धीरेन्द्रदत्त कहते हैं त्रिपुरा में चावल मिलना कठिन हो गया है। बर्दवान में हैज़ा उग्ररूप धारण कर रहा है। एक परिवार—मुखिया, तीन बच्चे एक लड़की, माता और अन्य तीन व्यक्ति सारा का सारा परिवार हैज़े की भेंट हो गया।

—मार्शल बोडोगिल्यो ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। मित्र सेनाओं ने इटली में जर्मन सेनाओं पर बम बारी की। रोम का समाचार है कि वहां खाद्य पदार्थों की दुकाने बन्द पड़ी हैं क्योंकि स्टाक समाप्त होगया है। एक बिल्ली भी बाकी नहीं बची—जर्मन सिपाही सब सफा कर गये।

—कांगड़ा में डी. सी. ने गौ-बध की आज्ञा दे दी है—इससे वहां असन्तोष फैल रहा है। लाहौर के आर्य भाइयों ने अपनी सभा में प्रतिवाद का प्रस्ताव पास किया।

—जोधपुर में आर्यसमाज रजिस्टरी के लिए आर्यसमाजियों को जो नोटिस मिला है परन्तु उन्होंने अभी रजिस्टरी नहीं पहुँचाई उनका कहना है कि राजनीतिक संस्थाओं की रजिस्टरी होती है धार्मिक संस्थाओं की रजिस्टरी की आवश्यकता नहीं। अधिकारियों ने न माना तो शायद सत्याग्रह करना पड़े।

—बुध बार की रात को रायल एयर फोर्स के जहाज़ों ने बर्मा के मोनीका स्टेशन के इलाके में बम बरसाये। जापानियों द्वारा अधिकृत मकानों पर भी बम पड़े।

—चर्चिल ने कामन्स में कहा कि इटली के बेड़े का मुख्य भाग मित्रों के हाथ आ गया है। १०० जंगी जहाज़ मित्र सेनाओं के अधिकार में हैं। १५०००० टन के व्यापारी जहाज भी हमारे हाथ में है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

श्री पं० यशपाल जी सिद्धान्तालङ्कार अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग]

१. आर्यसमाज बहावलपुर का उत्सव बड़ी सफलता पूर्वक समाप्त हो गया है। यह उत्सव कई वर्षों के पश्चात् हुआ है। इस उत्सव पर रियासत की समाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। श्री पं० भीमसेन जी सभा मन्त्री के प्रधानत्व में आर्य सम्मेलन बड़ी सफलता पूर्वक हुआ और कई उपयोगी प्रस्ताव स्वीकार किये गये। इस सम्मेलन में निश्चय किया गया कि रियासत में विशेष प्रचार के लिये सभा से एक योग्य महानुभाव की सेवाएं प्राप्त की जायें जिनका सारा व्यय रियासत की समाजें उठायेंगी।

२. बिजवाड़ा जिला होशियारपुर में श्री ला० धनीराम जी भल्ला ने अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति में एक साधु आश्रम की स्थापना की है। दसहरा के दिनों में प्रति वर्ष एक सप्ताह के लिये भल्ला जी की तरफ से वहां सत्सङ्ग होता है। सभा की तरफ से इस वर्ष श्री पं० यशपाल जी, श्री पं० पूर्णचन्द जी श्री पं० सदाशिव जी, श्रीमती पं० द्रौपदी देवी जी श्री पं० भक्तराम जी श्री पं० देवकीनन्द जी तथा श्री पं० मेहरचन्द जी इसमें सम्मिलित हुए। बिजवाड़ा के साधु आश्रम में सत्संग होते रहे भल्ला जी का धर्म प्रेम सराहनीय है। इस अवसर पर भल्ला जी ने आचार्य रामदेव स्मारक वेद प्रचार निधि के लिये ५००) दान दिया है। भल्ला जी का विचार है श्री आचार्य रामदेव जी की स्मृति में बिजवाड़ा में प्रतिवर्ष मेला किया जाया करे।

३. १ से ३ अक्तूबर को तिथियों में फगवाड़ा, बहावलपुर सरगोधा, राजपुर, थानेसर, बस्ती टैंकावाली फीरोजपुर के उत्सव बड़ी धूम धाम से हुए। आर्यसमाज सरगोधा का उत्सव विशेष धूम धाम से हुआ। यहाँ के आर्य पुरुषों का उत्साह सराहनीय है। सरगोधा समाज में जीवन तथा उत्साह दोनों हैं। सरगोधा आर्यसमाज ने ५००) वेद प्रचार सहायता की है। और इसके अतिरिक्त ५००) आचार्य रामदेव स्मारक निधि के लिये देने का निश्चय किया है।

४. श्री स्वामी निर्भयानन्द जी बेयड़क के प्रयत्न से राजसूतदी डा० गनौर जिला रोहतक में नियमपूर्वक समाज की स्थापना हो गई है। इसके प्रधान चौ० रामसिंह जी तथा मन्त्री चौ० रतीराम जी चुने गये हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन लगभट ८०० समाजें हैं। परन्तु मुझे खेद से लिखना पड़ता है कि कम आर्यसमाजों में आर्य जाता है। सब आर्य समाजों का कर्त्तव्य है कि आर्य अवश्य मंगवायें।

६. आर्यसमाजों की सेवा में कई बार लिखा गया है कि वे प्राइवेट प्रबन्ध न कराया करें प्राइवेट प्रबन्ध करने से जनता के धन का नाश होता है आर्य समाज सभा से भी पूर्ण प्रबन्ध कर लेती हैं और प्राइवेट भी प्रबन्ध कर लेती हैं। इस वर्ष कई आर्य समाजों ने ऐसा किया है। फीस वाले उपदेशकों का मंगवाना बिल्कुल बन्द हो जाना चाहिये। एक आर्यसमाज ने अपने उत्सव बड़ी कठिनता से ५०) वेदप्रचार के लिये दिये और एक प्राइवेट भजनीक को ५०) दिये। यह प्रवृत्ति सभा संगठन के लिये हानि कारक होगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का बंगाल अकाल पीड़ित सहायता कार्य

अनाथ संरक्षण विषयक प्रयत्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, बंगाल के अकाल पीड़ितों की सहायता के कार्य में पूर्ण रूप से तत्पर है। अपने कार्यकर्ताओं के तीन दल सभा बंगाल भेज चुकी है। और चौथे दल को अपने सुप्रसिद्ध उत्साही कार्यकर्ता श्री शिवचन्द्र जी के नेतृत्व में भेज रही है। सब आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य समाज रिलीफ सोसाइटी को आर्थिक सहायता भी सभा की ओर से पहुँचाई जा रही है। सभा ने बंगाल सरकार और डा० श्याम प्रसाद जी मुकुर्जी को तार दिया था कि वह आर्य समाज की संस्थाओं में १००० अनाथों और निराश्रित महिलाओं का प्रबन्ध करने को तैयार हैं जिस पर बंगाल सरकार ने सभा को हार्दिक धन्यवाद देते हुये सभा से पूछा है कि वह इन अनाथों का प्रबन्ध बंगाल में करेगी वा अन्यत्र। सभा ने उत्तर दे दिया है कि उत्तर भारत के अनाथालयों में सभा के द्वारा ऐसा प्रबन्ध कर लिया जायेगा जिसकी सूची तैयार कर ली गई है। सभा के पूर्ण सहयोग से आर्य समाज रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता अकाल पीड़ितों की सहायता अनेक निशुल्क भोजनालय तथा निराश्रितों के लिये आश्रम गृहों की स्थापना द्वारा बड़ी उत्तमता से कर रही है। १० हजार के लगभग अकाल पीड़ित व्यक्तियों की भोजनादि की सहायता के अतिरिक्त वस्त्र तथा चर्खों की सहायता भी दी जा रही है। आर्य समाज रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री जी ने अपने कार्य विस्तार का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये हमें १ लाख की तुरन्त जरूरत है। सभा सब सहानुभूतिपूर्ण नर नारियों से सानुरोध निवेदन करती है कि वे इस पवित्र सेवा यज्ञ में अपनी उदार आहुति तुरन्त देकर पुण्य के भागी बनें। जो स्वयं सेवक रूप में बंगाल जाने को उद्यत हों वे भी कार्यालय में सूचना दे दें। सब प्रकार की सहायता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय बलिदान भवन, देहली में आनी चाहिये।

सितम्बर मास में प्रकाशित सूची के आगे सभा में जो दान बंगाल पीड़ित सहायता निधि में प्राप्त हुआ है उसकी उल्लेखनीय राशियां निम्न

५० रु० श्री पन्नालाल जी मारवी।
१०० रु० श्री राधा कृष्ण ओंप्रकाश जी
१३० रु० आर्यसमाज उच्चशरीफ बहावल
५० रु० श्री मुंशीराम जी थापर।
७७ रु० आर्य समाज करौलबाग
५० रु० श्री जगन्नाथप्रसाद जी गुप्त,
२०० रु० आर्यसमाज नयाबांस, देहली
७७० रु० लोहा व्यापार समिति

निम्न सज्जनों ने दिया—

१०१ रु० ला० रघुचन्दन प्रसाद मूल
१०१ रु० ला० प्यारेलाल हरवल्लभदास
५१ रु० जे० पी० डो० देव
५१ रु० जानकी प्रसाद गंगा प्रसाद
५१ रु० कन्हैया लाल प्यारे लाल
५१ रु० रामचरन जी कसेरे।
५१ रु० केवल राम जी गुप्त
५१ रु० यू० पी० आयरन ट्रेडिंग कम्पनी
५१ रु० चिरंजीलाल लक्ष्मणदास
१५२ रु० आर्य युवक समाज कराची।
२०० रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद
१५० रु० आर्य समाज, सागर (सी०
२०० रु० ट्रस्ट सेवक जमुनादास जी

राम कुमार जी आर्य धामपुर, बिजनौर।

१०० रु० ब्र० चन्द्रशेखर तथा अक्षय सुपौत्र श्री पं० बद्रीप्रसाद जी रईस मु० मुरादाबाद।

१०० रु० आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

८३ रु० गुप्त दान।

इन सब दानियों को सभा की ओर धन्यवाद देते हुए हम अन्य सज्जनों और भी इस सेवा यज्ञ में उदार सहायता करते हैं।

दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय ल

नये आचार्य

आर्य जगत इस समाचार को सुन क कि वेदों के अद्वितीय विद्वान् श्री स्वामी महाराज ने आर्य प्रतिनिधि सभा के मा रियों की प्रार्थना को स्वीकार करके द महाविद्यालय के आचार्य पद को सुशोभित की है। सभा के मान्य सञ्चालकों के सा लय में पधारे। विद्यालय की ओर से अ स्वागत किया गया। सभा के मान्य नेत उपलक्ष्य में समयोचित भाषण दिये औ की ओर से आपकी पुनीत सेवा में ए पत्र समर्पित किया गया। आपके संक्षि गर्भित व्याख्यानान्तर कार्यवाही समाप्त

हमें आशा है कि आप सरीखे अनुभवी की छत्रछाया में विद्यालयखूब

शिवदत्त—अध्यापक दयानन्दोपदे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Regd. No. 500

USED AND

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए पक्का ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४,
वार्षिक मू
८ कार्तिक २००
२४ अक्तूबर १

२००२ पुस्तकाश्रय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

MAHARISHI DAYANAND SARASWATI NATIONAL PARK

अध्यात्म सुधा

अनागसो अदितये स्याम

[ले० श्री स्वामी अभय देव जी सम्पादक अदिति]

यह वेद-वचन वेद के एक प्रसिद्ध मन्त्र का अन्तिम है। यह वेदमन्त्र चारों वेदों में, यजुः में, साम और अथर्व में आया है; अथर्ववेद में तो दो बार है। इन चारों मूल वेदों के अतिरिक्त यह मन्त्र ाध्य संहिता में दो बार आया है। इन चारों मूल के अतिरिक्त यह मन्त्र तैत्तिरीय संहिता में दो बार है तथा निरुक्त में भी व्याख्यात है। इससे यह है कि यह मन्त्र वैदिक वाङ्मय में कितना महत्पूर्ण है। इस लेख में हम इस मन्त्र के उपयुक्त तम चरण के, जो हमारी इस पत्रिका का ध्येय हो गया है, विचार तक ही अपने आपको मित रखेंगे। पहिले तीन चरणों पर या संपूर्ण मन्त्र हमा अगली बार ही विचार कर सकेंगे।

इस वेद-वचन का शब्दार्थ है—(अदितये) अदिति लिये हम (अनागसः) निष्पाप (स्याम) होवें। दिति के लिये, अदीना दिव्य माता के लिये, देव-ी शक्ति के लिये हम निष्पाप, निरपराध, निर्मल, राहित, अपूर्णता-रहित, छिद्रहीन बनें, होवें, रहें। दिति के सामने हम निष्कलंक रहें। अदिति को — नतता, उपक्षय-हीनता, अखण्डता को पाने के हम सब प्रकार की कमियों से रहित बनें। उस दिति अवस्था को प्राप्त करने के लिये या उस अदिति ा का बन जाने के लिये हमें निष्पाप, शुद्ध, विमल, हित ज़रा सी भी विकलता से रहित होना ये। ये सब भाव हैं जो कि इस वेद वचन का समझ जाने पर इस वचन द्वारा पाठकों के अन्दर चाहियें और उठते होंगे। पर ज़रा हम इस वेद-ा के एक एक शब्द पर जुदा जुदा भी कुछ थोड़ा अधिक विचार करें।

अदितये

"अदिति' इस प्राचीन वैदिक शब्द की व्याख्या कई प्रकार से कर सकते हैं। संस्कृत व्याकरण ातुओं की दृष्टि से देखें तो 'दो अवखण्डने' से दिति बना है। खण्ड खण्ड वाली या उपक्षययुक्त जो है वह दिति है, उससे दैत्य उत्पन्न हुवे हैं। खण्डितावस्था से रहित एवं उपक्षय तथा विनाश से रहित है अदिति। इसलिये निरुक्तकार यास्क मुनि ने 'अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता ... इत्यादि अदिति की महिमा प्रकट करने वाले वेदमन्त्र को प्रस्तुत करते हुए अदिति का अर्थ 'अदीना देव माता' किया है अर्थात् वह देवमाता जिसमें उपक्षय या अवखण्डन की दीनता नहीं है। वह अमर, अखण्ड, असीम की देवता है। सब पाप, बुराई खराबी, नीचे दर्जे के भाव, असुर वृत्तियां और असुरत्व दिति से उत्पन्न होते हैं; सीमितता, खण्डितावस्था, विनश्वरता, दीनता की उपज हैं। और सब पुण्य, अच्छाई उत्तमता, ऊँची कोटि के भाव अर्थात सब दैवी वृत्तियाँ और देवत्व अदिति से जन्मते हैं; असीमता, अखण्डता, सनातनता और अदीनता के गर्भ से उत्पन्न होते। अथवा अदिति की व्युत्पत्ति दिति के निषेध में न करके स्वतन्त्र 'अद्' धातु से मानी जा सकती है। व्याकरण की दृष्टि से व्युत्पत्ति किसी तरह की जाय 'अदिति' शब्द की व्याख्या में भेद नहीं पड़ता। अपने अपने सर्वोच्च रूप में अदिति अनन्त, असीम, आद्या सत्ता है जिस रूप में वह सब देवों की जननी है। पर साथ ही वह असीम अनन्त चेतना भी है जिस रूप में वह सब ज्ञान प्रकाशकों को दुहने वाली "गौ" कहाती है। वैदिक निघण्टु में गोवाचक नामों में भी अदिति पढ़ा है, तथा वेद में 'गौ' कहाती है। वैदिक निघण्टु में गोवाचक नामों में भी अदिति पढ़ा है, तथा वेदमें गौ रूप में अनेक अदिति की सुन्दर वर्णन है। कई जगह चित्रा 'गौ' नाना प्रकार का प्रकाश देने वाली गौ कही गयी है। सो सब कुछ देने वाली 'गौ' रूप से भी हम अदिति की उपासना कर सकते हैं। फिर अदिति 'वाक्' है। 'वाक्' नामों में तथा 'पृथिवी' के नामों में भी वैदिक निघण्टु में अदिति शब्द पढ़ा गया है। वाक् अर्थात् अभिव्यक्त करने वाली शक्ति अदिति है। ऋग्वेद के दशम मण्डल [illegible] आम्भृणी वाक् का सूक्त है जिसमें वह कहती है कि मैं ही रुद्र वसु आदित्यों के साथ चलती हूँ, मैं ही सब देवों को धारण करती हूँ इत्यादि···' वह सब जगत्संचालिका और जगत्प्रकाशिका अदिति माता ही कह रही है। और फिर अदिति के पृथिवी होने का मतलब यह कि सब स्थूल अभिव्यक्ति तक की शक्ति भी दिव्य शक्ति है। इसलिये उपनिर्दिष्ट १-८९-१० ऋचा में ठीक ही कहा है कि 'द्यौ अदिति है, अन्तरिक्ष अदिति है, माता अदिति है, पिता पुत्र भी वही है, सब देव अदिति हैं, पंचजन अदिति है जो कुछ हुआ है और जो कुछ होगा वह सब अदिति है।' पंचजन अदिति है जो कुछ हुआ है और जो कुछ होगा वह सब अदिति है।' सो इस महामहिमामयी अदिति जगदम्बा के प्रति हम क्या करें, कैसे बर्तें ?

अनागसः

हम 'अनागस्' होवें। 'आगस्' शब्द का सामान्य संस्कृत में अर्थ है 'अपराध', 'दोष', या 'त्रुटि'। तो 'अन्-आगस्' का अर्थ हुआ अपराध न करने वाला, निर्दोष, त्रुटि रहित। यदि हम अनागस् होंगे तभी दिव्यमाता हमारे अन्दर अपना काम कर सकेगी। उनका कार्य हमारे अन्दर ठीक तरह से होने में रुकावट ये हमारे विविध प्रकार के आगस् ही होते हैं इन्हें हमें अवश्य दूर करना होगा। वेद में 'आगस्' आदि पापवाचक शब्द उस अर्थ में ही प्रयुक्त न किये जाते जिसमें हम नैतिक 'पाप' को समझते हैं वैदिक ज्ञान के अनुसार मिथ्यात्व या मिथ्यागति

[शेष पृष्ठ २ पर]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुलतान आर्य सम्मेलन

आर्यों का अपूर्व जमघट

मुलतान १७ अक्टूबर। मुलतान छावनी आर्य-समाज के उत्सव के अवसर पर होने वाले 'मुलतान आर्यसम्मेलन' व 'सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन' बड़ी धूमधाम से समाप्त हो गया। १५ अक्तूबर की शाम को कराची मेल से श्री आचार्य प्रियव्रत जी व पं० यशपाल जी (मनोनीत सभापति) यहां पधारे। स्टेशन पर उनके स्वागत के लिए आठों आर्य समाजों के प्रधान व मंत्री उपस्थित थे। वहां से उनका शानदार जलूस निकाला गया।

रात्रि में चाहबोहड़ वाला समाज की ओर से रायसाहिब मोहनलाल जी व उनके सुपुत्र ने पुष्प-मालाओं से उनका स्वागत किया। छावनी का सदर बाजार विशेष तौर पर सजाया गया था। ४ दरवाजे भी बनाए गए थे।

स्थानीय आठों आर्यसमाजों की ओर से कविराज पुरुषोत्तम देव ने आचार्य जी की सेवा में अभिनन्दन पत्र भेंट किया जिस में उनके द्वारा की गई आर्यसमाज की सेवा का विशेष उल्लेख किया गया था। और गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बनने पर उन्हें बधाई दी गई थी।

आर्यसम्मेलन के सभापति पद से भाषण देते हुए श्री आचार्य जी ने सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन पर शेष प्रकाश डाला और विधर्मियों से भी आर्यों के दृष्टिकोण को समझने की प्रार्थना की साथ ही आर्यों को सावधान किया और कहा कि पहले तो गवर्नमैंट इसे बन्द करने की मूर्खता नहीं करेगी और यदि करे भी तो हमें उसके लिये अभी से तैयारी शुरू कर देनी चाहिए।

सम्मेलन में ग्रामप्रचार, हिन्दीप्रचार, नूरपुर में गोवध के सम्बन्ध में तथा चौथे प्रस्ताव में मुलतान के आर्य भाईयों से अपने बच्चों को गुरुकुल मुलतान में प्रविष्ट कराने की प्रेरणा की गई।

सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन के सभापति पद से दिया गया श्री पं० यशपाल जी का भाषण बहुत ही विद्वत्ता पूर्ण तथा सारगर्भित था जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया। मुख्य प्रस्ताव कविराज पुरुषोत्तमदेव ने पेश किया जिस पर कई महानुभावों ने बड़ी उत्तमता से प्रकाश डाला और अन्त में सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसके अतिरिक्त श्री पं० जयदेव जी वेदालंकार आचार्य गुरुकुल मुलतान, श्री पं० गुरुदत्त जी श्री स्वा० स्वरूपानंद जी, श्री पं० बालकृष्ण जी व पं० जयप्रकाश जी के भजनोपदेश भी बहुत पसन्द किए गए।

इस बार का उत्सव धन, जन दोनों की दृष्टि से अत्यन्त सफल रहा।

पुरुषोत्तम आयुर्वेदालङ्कार, उपमन्त्री आर्यसमाज मुलतान

पृष्ठ १ का शेष

सिवाय पाप या 'आगस्' और कुछ चीज़ नहीं है। इसी लिये वैदिक परिपाटी में प्रत्येक पापवाचक शब्द (जैसे अघ रपस्, अंहस, कल्व आदि) स्वयमेव रोगवाचक भी माना जाता है। क्योंकि रोग भी शरीर में हुआ मिथ्यात्व या मिथ्यागति ही तो है। एवं हमारे मन में या प्राण में या शरीर में जो कुछ भी मिथ्यागति होती है वह उस-उस जगह का हमारा 'आगस्' है। हम जानते हैं कि अश्रद्धा, भ्रम, संशय, अज्ञान, निराशा ये सब मन की मिथ्या गतियाँ हैं; मन के 'आगस्' हैं। इनके होते हुए माता हमारे मन में अपना दिव्य कार्य कदापि नहीं कर सकती इसी तरह राग द्वेष, काम क्रोध लोभ आदि प्राण की ज़बर-दस्त मिथ्या गतियाँ हैं। जब तक हमारे प्राण इनसे शुद्ध नहीं हों, अनागस् नहीं हो जाँय तब तक माता कैसे हमारे प्राणों द्वारा अपना दिव्य कार्य कर सकती है। फिर इसी तरह शरीर को अनागस् बनाने के लिये हमें रोग, व्याधि, आलस्य, कुचेष्टा आदि को शरीर से बिलकुल निकाल देना होगा तभी हमारा शरीर माता के योग्य बनेगा। दूसरे शब्दों में सब बेसुरापन ही आगस है। माता के दिव्य छन्द स्वर से जब हम ज़रा भी अपने मन में, प्राण से या शरीर से विपरीत स्वर निकालते हैं या अपने अदिव्य स्वर को ही चलते देना चाहते हैं, वहीं 'आगस्' हो जाता है। हम अशुद्ध, विकृत, बेसुरे हो जाते हैं। यदि हम सच-मुच अदिति के उपासक हों, सचमुच माता के होना चाहते हों तब तो हमें यह अनुभव होना चाहिये कि सभी जगह और सभी कालों में माता हमारे सामने हैं और हम जहां ज़रा भी मन की क्रिया में या प्राणों के व्यापार में या शरीर की चेष्टा में कुछ भी विकृत स्वर निकालने लगें, मिथ्यागति करने लगें तो माता की स्मृति हमें सावधान कर दे; बचा ले। जो हो, यदि हम माता के सच्चे पुत्र बनना चाहते हैं तो यह ज़रूरी है कि हम अपने सब अंगों में सर्वथा शुद्ध, निर्दोष, निर्मल, त्रुटिहीन, विकलता रहित होवें, हों जांय।

स्याम

हो जांय। हम ऐसे हो जांय। ऐसे हो जाना, यही हमारा काम है। यदि हम अनागस् हो जांय—बल्कि ऐसे होने का सच्चे भाव से यत्न ही करें—तो बाकी सब तो माता कर देगी। तो बस, सचमुच ऐसे हो जाना, हो जाने का सचमुच यत्न करना यही मनुष्य का भाग है, माता के पुत्र का काम है, उसका उद्योग है, पुरुषार्थ है। यह पुरुषार्थ हम करें। इसके लिये हम, इस सत्य को जानने वाले हम, आज से ज्ञान-पूर्वक यह संकल्प करें,—हम अदिति के लिये अवश्य 'अनागस्' होंगे, सर्वथा शुद्ध और निर्दोष बनेंगे, और आज से अटमरूप से इसी विश्वास में रहें भी। क्या क्या देखते नहीं कि, गहराई के अन्दर, इस पृथ्वी के सभी मानव प्राणी, चाहे वे इसे जानते हों या न हों, अपनी गुहानिहित अन्तरात्माओं में विश्वास के साथ, ऊर्ध्वमुखी पवित्र यज्ञाग्नि की यही एक पवित्र अभीप्सा उठा रहे हैं, अदिति अनागस् हो जाने की निरन्तर प्रार्थना कर रहे हैं, वैदिक पावन वाणी में वे सतत् जाप ही कर रहे 'अनागसो अदितहे स्याम। तो हम ज्ञानपूर्वक क्यों न करें? (अदिति से

कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

पिछले दिनों समाचार पत्रों में सभा की कन्या गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के सम्बन्ध में प्रकाशित हुई थी कि यह उत्सव विजय दशमी दिनों में मनाया जायगा। परन्तु कई अनिवार्य से यह उत्सव उन दिनों नहीं मनाया जा सका। सभा ने निश्चय किया है कि गत वर्ष की भाँ उत्सव दिसम्बर १९४३ के बड़े दिनों की छुट्टी मनाया जायगा। कन्या गुरुकुल बड़ी आर्थिक को ठीक करने के लिये कई वर्षों से यत्न कि रहा था—अभी तक कन्या गुरुकुल के लिये स्थिर कार्यकर्त्ता नहीं मिल सका था—जो मुख्यतया कन्या गुरुकुल के लिये ही अपनी लगा दें।

कन्या गुरुकुल के प्रेमियों को यह सुनकर होगी कि सभा ने इस कमी को पूरा कर पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार भू० पू० स० मुख्या कन्या गुरुकुल तथा स० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल के कन्या कन्या गुरुकुल का स० मुख्याधिष्ठा किया गया है। श्री ला० नारायणदत्त किंग रोड न्यू दिल्ली इसके अध्यक्ष मुख्याधिष्ठा किये गये हैं। पं० सोमदत्त जी पिछले कई गुरुकुलों में कार्य करते रहे हैं—आपको गुरुकु संस्थाओं के प्रबन्ध का काफी अनुभव है। प्रेमी आर्य जनता से भी आपका काफी परि ला० नारायणदत्तजी भी आर्य जगत् के प्रसिद्ध शाली ज्ञानी कवि हैं। हमें आशा है कि इस से कन्या गुरुकुल दिन प्रति दिन उन्नति के अग्रसर होगा। आर्य जनता को चाहिए कि पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार को पूर्ण सह वार्षिकोत्सव से पूर्व कन्या गुरुकुल के लि संग्रहार्थ वह जनता के पास आ रहे हैं। आ तथा आर्य जनता को चाहिए कि वह उनको देकर कन्या गुरुकुल के प्रति अपने कर्त्तव्य क करें।

इसके साथ साथ हम आर्य भाइयों गुरुकुल में स्थापित किये जाने वाले आचा स्मारक की ओर भी ध्यान खींचना चाहते ने कन्या गुरुकुल देहरादून में एक लाख आचार्य रामदेव स्मारक बनाने का निश्चय

शेष पृष्ठ ६ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य रविवार ८ कार्तिक वि०सं० २०००

व में आर्य समाज का कार्यक्रम

हिन्दी प्रचार तथा गोशाला

ाब में आर्य समाज के आन्दोलन को जीवित और आकर्षक बनाने के लिये कई प्रकार के ये जा रहे हैं। परन्तु परिस्थितियों के बदल कारण आर्य समाज के पुराने साधन, कार्य-ाता के लिये वह आकर्षण पैदा नहीं करते जो म जनता का प्रिय वस्तु बना सके। प्रारम्भ पाठशालाएं तथा स्कूल खोलना ऐसे प्रोग्राम के कारण आर्य समाज सब का प्रिय बन गया ब और सोसायटियां भी इस कार्य क्षेत्र में हैं। सनातनी, हिन्दू, मुसलमान सब शिक्षा एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहते हैं। अब इस अकेला आर्य समाज ही नहीं रहा। इस प्रकार सुधार तथा सामाजिक कुरितियों को दूर करना समाज का कार्यक्रम था अब अनेक संस्थाओं कार्य संभाल लिया है। विशेष तया पंजाब में हिन्दू स्वतन्त्र विचारक तथा सरकारी हलकोंमें ाले स्वयमेव पुरानी सामाजिक कुरीतियों को आगे बढ़ रहे हैं। इसमें भी अब आय ी साथी कई संस्थाएं बन गई हैं। और समाज ी विशेषता ब्रह्मचर्य तथा वेद का प्रचार आज सनातनी हिन्दू समाज की सांझी बात होगई हैं। भी ब्रह्मचर्य प्रचार पर बल देते हैं—बाल को छोड़ रहे हैं वेद के अध्ययन के लिये भी यत्नशील हो रहे हैं। अभी लाहौर में राम मूलचन्द ट्रस्ट ने सनातन धर्म की दृष्टि से न्वेषण के लिये संस्कृत विद्यापीठ स्थापित । इस विद्यापीठ का उद्घाटन समारोह करते ० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने वेद मंत्र के पाठ भाषण प्रारम्भ किया। व्याख्यान में वैदिक नपर बल दिया। कहने का अभिप्राय यह कि ब्रह्मचर्य प्रचारके लिये अब सनातन धर्मी भी हैं। इस समय आर्य समाज को चाहिए कि ा के सामने ऐसा कार्यक्रम रखे—जो पंजाब की मांग को पूरा करता हो। हमारी सम्मति मय पंजाब में आर्य संस्कृति-अभिमानी व्य-हिन्दी प्रचार और गोरक्षण के कार्यक्रम पर ाहिए। इस समय अंग्रेजी, उर्दू, के संग्र-ोलन के कारण पंजाब के शिक्षणालयों में की सत्ता धीरे २ लुप्त हो रही है। परिणामता दुओं में से भी हिन्दी का लोप हो रहा है। श्वास है कि पंजाब में यदि हम आर्य संस्कृति तथा वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते हैं तो इसके लिये हमें हिन्दी प्रचार पर विशेष बल देना चाहिए। स्कूलों तथा शिक्षणालयों द्वारा हिन्दी प्रचार की आशा नहीं करनी चाहिए। इनमें शिक्षा का क्रम इस ढंग से है कि पढ़ने वाला विद्यार्थी प्रारम्भ में हिन्दी सीखता है, १० वीं तक पढ़ता है—परन्तु कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करते २ बी. ए. बनने तक हिन्दी को भूल जाता है। अंग्रेजी में पत्र व्यवहार का शौकीन हो जाता है। इसलिये शिक्षणालयों से पृथक् हिन्दी प्रचार के साधन जुटाने की आवश्यकता है—

जिसके द्वारा साधारण कारोबार करने वाले भी हिन्दी पढ़ सके। इसके लिये आर्य समाजों को विशेष रूप से यत्न करना चाहिए। आर्य समाज के अधिकारियों तथा सभासदों के लिये हिन्दी जानना आवश्यक हो जाना चाहिए। केवल जानना ही नहीं है, अपितु इस बात पर बल देना चाहिये कि वह अपना सारा कारोबार हिन्दी में करें आर्य समाज के प्रचारकों तथा उपदेशकों को भी अपने व्याख्यानों में इस बात पर विशेष बल देना चाहिए। सारे पंजाब में हिन्दी के लिए ऐसा वातावरण पैदा करना चाहिए जिसमें हरेक पंजाबी के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य और आवश्यक हो जाए। उस समय ही हम पंजाब में आर्य समाज तथा आर्य धर्म का फिर स्थायी प्रचार कर सकते हैं।

इसके साथ २ पंजाब के आर्य हिन्दुओं को अब गोरक्षण तथा गोपालन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस समय से पूर्व अधिकांश आर्य समाजी जीविकानिर्वाह तथा धनोपार्जन के लिए सरकारी नौकरी, सूद तथा व्यापार द्वारा धनोपार्जन करते थे। कृषि तथा गोपालन आदि कर्मों से दूर रहते थे। परन्तु अब अवस्थाएं बदल गई है। नौकरियां पहले की भांति और नहीं मिल सकतीं नए २ कानूनों तथा प्रतिबन्धों के के कारण लेन, देन, सूद तथा व्यापार भी पहले की भांति नहीं हो सकते। इस समय पंजाब के आर्य हिन्दुओं के लिए शिल्प और कृषि अथवा गोपालन ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा वह आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र स्वावलम्बी बन सकते हैं। दूर दर्शी ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में शिल्प पर बहुत बल दिया है। गोरक्षा तथा गोपालन के महत्व को समझते हुए गोकरुणा निधि तथा गो रक्षा के लिए आवेदन पत्र तैय्यार कराने के प्रयत्न किये थे। आर्थिक दृष्टि से पंजाबी मात्र-विशेषतया-आर्य हिन्दुओं के लिए शिल्प गोपालन ही ऐसे उपाय हैं जो हिंदुओंको स्वावलम्बी बना सकते हैं। कुछेक व्यक्तियों को यथावसर—अन्य धंधे भी करने चाहिए परन्तु अधिकांश आर्य हिन्दुओं को चाहिए कि अपने घरों तथा शिक्षणालयों का वातावरण ऐसा बनाएं जहां युवक शिल्प और गोपालन कृषि की ओर प्रवृत्त हों। आर्य जाति की मानसिक स्वतंत्रता—तथा पूर्ण विकास के लिये हिन्दी प्रचार का आन्दोलन आवश्यक है वहां पंजाब में रहने वाली आर्य जाति की आर्थिक स्वाधीनता—के लिये शिल्प तथा गोपालन—आवश्यक हैं। पंजाब के आर्यों तथा आर्य समाजों को इस दिशा में अपनी शक्ति लगानी चाहिए। दैनिक अग्नि होत्र—बेकार है—यदि हम अपने घरों में शिल्य की आग प्रदीप्त नहीं करते—यदि हम अग्नि होत्र में डाले जाने वाले घी को शुद्ध-पवित्र अवस्था में लेने का प्रबन्ध नहीं करते। वेद पढ़ने के लिये हिन्दी पढ़ना आवश्यक है यज्ञ, अग्नि होत्र बलि वैश्वदेव तथा अतिथि यज्ञ के लिये गोपालन गोरक्षण तथा कृषि आवश्यक है। कोरी किताबी शिक्षा इस समय आर्य्य तथा हिन्दुओं को दूसरों का परावलम्बी बना रही है। आर्य समाज को पंजाब में इस समय इस दिशा में—अपनी शक्ति लगानी चाहिए तभी हम अछूतोद्धार—तथा शुद्धि आन्दोलनों को कामयाब बना सकेंगे। तभी हम पंजाब को आर्य सभ्यता का केन्द्र-स्रोत स्थान बना सकेंगे।

भीमसेन

रोमां रोला का स्वर्गवास—

जर्मनी से समाचार आया है कि प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान् रोमां रोला का जर्मनी में देहान्त हो गया है। मृत्यु के समय इसकी आयु ७६ वर्ष की थी। रोमां रोला स्वतंत्र विचारक और भारतीय आर्य संस्कृति के प्रेमी थे। मि. रोमां रोला और मि. पाल रिचर्ड ने फ्रांस और युरोप के दूसरे देशों में भारतीय संस्कृति तथा भारतीय अध्यात्मवाद का संदेश पहुंचाया था। भारतीय स्वाधीनता के प्रश्न में आपकी सहानुभूति कांग्रेसी नेताओं के साथ थी। आपने अपने लेखों में स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के आन्दोलन की सचाई को स्वीकार कर युरोप निवासियों को उनसे परिचित कराया था। आपकी मृत्यु—जर्मनी के कन्सेंएट्रेशन कैम्प में हुई थी। जर्मनी जैसा तानाशाह राष्ट्र आपको स्वाधीन और स्वतंत्र नहीं देख सकता था। इनकी मृत्यु जर्मनी की तानाशाही और असहिष्णुता का जीता जागता उदाहरण है। रोमां रोला की मृत्यु से विश्व में स्वतंत्र विचारों की लहर को भारी धक्का पहुंचा है।

लार्ड लिनलिथगो की विदाई और लार्ड वावेल की अगवाई

भारत के वायसराय लार्ड लिनलिथगो ७½ वर्ष तक भारत में शासन कर विलायत के लिये बिदा हो रहे हैं। उनके उत्तराधिकारी लार्ड बावेल आ रहे हैं। लार्ड बावेल भारतवर्ष में कमांडर-इन-चीफ़ के पद पर भी कार्य कर चुके हैं। लार्ड लिनलिथगो भारतवर्ष को गोपालन द्वारा—कृषि—तथा दूध आदि की वृद्धि कराकर समृद्ध कराने के उद्देश्य से आए थे—परन्तु बिदाई के समय विश्वव्यापी युद्ध के कारण भारतीय जनता—भूख, और दूध की कमी से कराह रही है। लार्ड लिनलिथगो—असफल वायसराय—के रूप में बिदा हो रहे हैं। लार्ड बावेल के सामने सुनहरी अवसर है। यदि वह चाहें तो अपनी दूरदर्शिता से ब्रिटिश और भारत को एक दूसरे का सहायक बना सकते हैं

भारत के वर्तमान राजनैतिक वातावरण के सजीव करने के लिये उन्हें महात्मा गांधी और राजनैतिक कांग्रेसी नेताओं को रिहा करना चाहिए। इस से राष्ट्र के वातावरण में क्रान्तिकारी चेतना पैदा होगी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१२ कार्तिक २००० वि०
११६ दयानन्दाब्द

ऋषि उत्सव

२८ अक्तूबर १६४३

आर्यसमाजों से निवेदन

(१) महापुरुषों के जीवन हमें सिखलाते हैं कि हम अपने जीवन को कैसे उच्च बना सकते हैं। यही कारण है कि सभ्य जातियां अपने महापुरुषों के जन्म और मृत्यु के दिनों को बड़े उत्साह से मनाती हैं। इस नियम के अनुसार आर्य समाज प्रतिवर्ष अपने प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द का निर्वाण-दिवस (दिवाली) विशेष उत्साह से मनाता है।

(२) प्रत्येक आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि वह इस वर्ष भी पूर्व वर्षों की भांति **ऋषि-उत्सव** पूर्ण उत्साह से मनायें। आर्यसमाज में जीवन, जागृति और उत्साह पैदा करने की आवश्यकता है। यह उत्सव इस वर्ष दिवाली के दिन १२ कार्तिक २००० तदनुसार २८ अक्तूबर १६४३ वीरवार को होगा। आर्यसमाजें २२ अक्तूबरसे एक सप्ताह का कार्यक्रम रखें। २८ अक्तूबर तक प्रतिदिन रात्रि के समय ऋषि के जीवन की कथा रखें—इसके लिये "सभा का इतिहास" पुस्तक से "पंजाब में ऋषि का पदार्पण" भाग से भी लाभ उठाया जावे। विशेष उपदेश की आवश्यकता नहीं, कोई योग्य आर्य सभासद् कथा कर दिया करें। दिवाली के दिन २८ अक्तूबर को विशेष उत्सव किया जावे। उस दिन प्रातःकाल अपने अपने ग्राम और नगर में आर्य्य भाई मिलकर बड़े समारोह से संकीर्तन करते हुए जलूस निकालें, बड़े पैमाने पर यज्ञ किये जावें और अछूतपन का भाव मिटा कर सब आर्य्य नर-नारी इस उत्सव में भाग लें तथा सब आर्य्य भाई उस दिन अपने जीवन को उन्नत करने के लिये कोई व्रत धारण करें।

(३) आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से इस अवसर के लिये **चार आना मिशन फ़ण्ड** क़ायम है। उसके लिये धन एकत्र किया जाय। इस फ़ण्ड का आशय यह है कि **इस शुभ अवसर पर प्रत्येक आर्य नर-नारी कम से कम चार आना की राशि ऋषि के मिशन के लिये दान करें!** पंजाब प्रान्त के आर्य्य तथा आर्य्यसमाजों को चाहिए कि इस पवित्र अवसर पर कम-से-कम चार आना।) प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से धन एकत्र कर इस सभा को भेजें।

(४) पंजाब-प्रान्त में आर्यों की संख्या कई लाख है। प्रत्येक आर्य्य भाई बहिन अपने परिवार के प्रति व्यक्ति के।) दें तो कई सहस्र रुपया इस निधि में जमा हो सकता है। स्थिति यह है कि पूर्व इस निधि में कई सहस्र रुपया आता था अब गत वर्ष १३७॥।–)। आया है। इससे स्पष्ट है कि आर्य्य भाई इस निधि से कितने उदासीन हैं! आशा है आप इस वर्ष इस निधि के लिये भरसक प्रयत्न करके एक पुष्कल राशि भेजेंगे।

गुरुदत्त भवन, लाहौर
ति० ३०–६–२०००

भीमसेन
मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर

बंगाल अकाल-अवस्था–

बैस्टमनिस्टर, रूटर का समाचार है कि इन व्यक्तियों का एक डेपूटेशन जिसमें स्त्रियां भी सम्मिलित हैं, डेपूटेशन में भाग लेने वाले प्रायः ट्रेडयूनियन तथा कोआपरेटिव सोसाइटियों के सदस्य हैं २० अक्तूबर को वह कामन्स में गये और पार्लियामैंट के मैम्बर पर दबाव डाला कि बंगाल की दशा को सुधारने के लिए आवश्यक पग उठाए। उन्होंने ६० सदस्यों से मुलाकात की। उन्होंने इस बात की मांग से अनुरोध किया कि अन्न के जहाज और दवा दारू द्वारा सहायता पहुंचाई जाय। यह आशा की जाती है कि इस पर बहस निकट भविष्य में होगी।

क्या तुम और को जगा कर स्वयं सो
[श्री ला० लब्भूराम जी नैयड़ आनन्द आश्रम

यह बात किसी से छिपी नहीं कि आ
ने अपने उद्योग से भारत निवासियों की
सामाजिक, और मानसिक सेवा जो की है
हिस्सा भी इस देश की किसी दूसरी सभ
सभा सोसाइटी ने नहीं की। जिस उत्साह,
प्रेम और दिली लगन से आर्य पुरुष वैदि
प्रचार और अपने पिछड़े हुये और पतित
सुधार और उद्धार के लिये यत्न कर रहे हैं
कट्टर विरोधी भी उसकी प्रशंसा करते हैं
हिम्मत और दृढ़ता से कड़ी से कड़ी रुका
निर्भयता से मुकाबिला आर्य समाज काता
जिसका गर्व केवल आर्य समाज को ही प्राप्त
वीर श्री पं० लेखराम जी, अमर शहीद स्वा
नन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, रा
पं० गंगाप्रसाद जी चीफ़ जज, पं० गंगाप्रसाद
ए. उपाध्याय आदि वीरों ने अपनी ज़बरद
विद्वत्त पूर्ण व्याख्यानों से संसार भर के मता
में एक तहलका मचा दिया है। जिसको अन्
लम्बियों और विद्या अभिमानी नास्तिकों
छातियां भड़क गईं कि यह नई अग्नी धोड़े
में हमारे पांखंडों को भस्मी भूत कर देगी।
सबने बल पूर्वक जो कुछ न करना था वह
दिखाया मगर बाल ब्रह्मचारी महर्षि दया
प्रज्वलित की हुई वैदिक धर्म प्रचार रूपी
शान्त करने में सामर्थ न हो सके। सदियों
हुये भी और हज़ारों वर्षों की मूर्छित आर्य म
होश में आने लगी। चारों ओर धर्म उन्नति
उन्नति की चर्चा आरम्भ हुई। तरह २
सोसाइटियें कायम होने लगीं। सब को
सुधार की चिन्ता पड़ी। जहां कोई सभा,
नाम तक न जानता था वहां ग्राम २ तथ
कई प्रकार की सोसाइटियां जन्म धारण
यह अनेक सभायें जो हम देखते हैं यह
दयानन्द के वेदप्रचार तथा आर्य पुरुषों के
ही फल है। सब सभाओं में प्रायः उत्सा
करने वाले आपको केवल आर्य पुरुष ही मि

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि भा
को इस समय जमाने का अभिमान आर्य
ही प्राप्त है परन्तु शोक! महा शोक!
औरों को जगाकर स्वयं कुंभकरण की नीं
हैं। उनके अन्दर न वह उत्साह दिख
और नाहीं वह धर्म प्रेम। इसलिये आर्य
आभूषणों तथा आर्य पुरुषों से इस ऋषि
प्रेम पूर्वक निवेदन किया जाता है कि वह
को अनुभव कर सामाजिक उन्नति की
ध्यान देकर उत्साह से वैदिक धर्म प्रचार
हो जावे। इसी में हमारा कल्याण है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपर्युक्त शीर्षक से श्री पण्डित सातवलेकर जी ने पुस्तिका यत्र तत्र समाजों में तथा विद्वानों के पास लोचनार्थ भेजी है। पुस्तिका का विषय देर से विद्वानों की समालोचना का विषय रहा है। ऐसा होता है कि श्री पूज्य पण्डित जी, जिन्होंने कि से पहिले इस विषय की तरफ विद्वानों का ध्यान र्षित किया था, उनका अपना सन्तोष अब तक गई समालोचना से भली प्रकार नहीं हुआ है, और से एक व्यापक चर्चा का विषय बनाना चाहते हैं। भावना से भावित होकर हम अपने कुछ तुच्छ ारों को इस लेख द्वारा लिखने का साहस करने हैं, ताकि इस विषय में कुछ और अधिक विचार सके।

श्री पण्डित सातवलेकर जी का मत यह है कि वेद में 'देवकामा' ही युक्त पाठ है 'देवृकामा' नहीं। के लिए उन्होंने अनेक प्रमाण उपस्थित किए हैं, र कतिपय विद्वानों से व्यवस्थाएं भी प्राप्त की हैं। स्तव में श्री पण्डित जी का परिश्रम अत्यन्त सराह- य है और उन्होंने एक आवश्यक विषय की तरफ विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया है।

हमारी सम्मति में पण्डित जी जैसे अनुसंधान मी सज्जन से यह आशा करना कि उन्हें वेद की किसी भी प्रति में 'देवृकामा' पाठ नहीं मिला, एक र्थ का आरोपमात्र ही होगा। श्री पण्डित जी ने अपने पत्र 'वैदिक धर्म' में इस विषय के सर्वप्रथम लेख विवेचना करते हुए 'सेन्टपीटर्सबर्ग डिक्शनरी' नामक दिक कोश में देवृकामा' इस पाठ को स्वयं स्वीकार किया है। इसके पश्चात् आर्य विद्वानों द्वारा इस विषय बहुत कुछ लिखा गया और इस सब आन्दोलन के रिणाम स्वरूप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ख पत्र 'सार्वदेशिक' में एक लेख प्रकाशित हुआ समें कि अनेक प्रमाणों के आधार पर व्यवस्था दी ई कि ऋग्वेद में 'देवृकामा' भी एक पाठ अवश्य है। ह हो सकता है कि श्री पण्डित जी को किन्हीं विशेष ारणों से 'देवकामा' पाठ ही रुचि हो। परन्तु अपनी ावना को दूसरों की भावना पर लादना कदापि न्याय गत नहीं हुआ करता। वेदाध्यायियों से यह बात पी हुई नहीं कि शाखाभेद से अनेक पाठ भेद वेदों में द्यमान् हैं और प्रत्येक शाखाध्यायी को अपनी खा के अनुसार ही पाठ करने की स्वाधीनता भी रकाल से प्राप्त है। यह स्पष्ट है कि श्री स्वामी ानन्द जी को 'देवृकामा' पाठ ही अभिमत था। न्यथा वे संस्कार विधि के 'शुद्धाशुद्धि-पत्र' में देव- मा' की जगह 'देवृकामा' इस पाठ को शुद्ध पाठ के में उपस्थित न करते।

विवाह-संस्कार में पठित देवृकामा' इस पद का नियोग परक अर्थ से भिन्न भी हो सकता है, फिर पण्डित जी को 'देवृकामा' इस पद के लिए ही ना आग्रह क्यों है। श्री पण्डित जी ने स्वयं अपने

विवाह-संस्कार में नियोग की प्रतिज्ञा

लेखों में स्वीकार किया है कि कुछ आर्य विद्वानों ने 'देवृकामा' इस पद का अर्थ विवाह-प्रकरण में 'पुत्रकामा' पशुकामा इत्यादि पदों के अनुसार ही पति के कुल में देवरों की कामना करने वाली अर्थात् उनका भी भरण-पोषण करने की इच्छावाली इत्यादि किया है। यह अर्थ विवाह के अवसर पर पत्नी को गृहस्थ धर्म का उपदेश देते हुए तथा उसके पतिकुल के हित की दृष्टि से भी बिल्कुल ही समीचीन है। इस साक्षी के होते हुए श्री पण्डित जी का ऋग्वेद में 'देवृकामा' इस पद के लिए ही आग्रह करना व्यर्थ है। वास्तव में जब तक ऋग्वेद की एक भी हस्त लिखित प्राचीन प्रति में 'देवृकामा' यह पाठ मौजूद है तब तक इस पाठ का अपलाप कदापि नहीं किया जा सकता।

अब रहा संस्कार-विधि में विवाह-संस्कार के समय पठित 'अघोरचक्षुः' इत्यादि मन्त्र की नियोग परक व्याख्या का प्रश्न। यह प्रश्न वास्तव में अत्यन्त महत्व का है और इस पर व्यापक विचार भी होना चाहिए। संस्कार विधि को देखने से यह स्पष्ट है कि इस मन्त्र का अर्थ ग्रन्थ भाग में न दिया जाकर टिप्पणी के रूप में ही दिया हुआ है। जब कि संस्कार-विधि में अनेक मन्त्रों के अर्थ ग्रन्थ भाग में ही दिये गए हैं तो इस 'अघोरचक्षुः' इत्यादि मन्त्र का ही अर्थ टिप्पणी के रूप में दिया जाना किसी विशेष कारण से होना चाहिए। स्पष्ट है कि इस मन्त्र का अर्थ ग्रन्थ लिखे जाने के पश्चात् ही टिप्पणी के रूप में जोड़ा गया है।

हमारी सम्मति में श्री स्वामी जी के ग्रन्थों में मन्त्रों के हिन्दी अर्थों का अधिकांश भाग पण्डितों द्वारा ही संकलित हुआ है। इसके लिए श्री स्वामी जी के वेद-भाष्य को प्रमाण रूप से उपस्थित किया जा सकता है। उसमें यह बात स्पष्ट की गई है कि वेदभाष्य की हिन्दी रचना श्री स्वामी जी के अनुजीवी पण्डितों द्वारा ही हुई है। स्वामी जी के पत्र-व्यवहार में भी काफी निर्देश मौजूद हैं जिनमें कि उन्होंने पण्डितों के कार्य से असन्तोष प्रकट किया है और वे उनकी शिकायतों से बार बार उद्विग्न हो उठे हैं। उन्होंने जगह जगह पण्डितों की भूलों का जिक्र किया है और उनकी मूर्खता तथा प्रमाद के लिए खेद भी प्रकट किया है। हमारे विचार में 'अघोरचक्षुः' इत्यादि मन्त्र का नियोगपरक अर्थ भी पण्डितों को इसी प्रकार की असावधानता तथा प्रमाद का एक विचित्र नमूना है। यह हो सकता है कि इस मन्त्र का नियोगपरक अर्थ श्री स्वामी जी के निर्देशों के अनुसार ही पण्डितों ने किया हो। परन्तु इसमें भाषा तथा रचना इतनी अशुद्ध है और प्रकरण इतना विपरीत है कि द्रोहियों को नियोग के विषय में श्री स्वामी जी के अर्थ का अनर्थ करने क अवसर मिलता रहा है। विवाह के प्रकरण में नियोग-परक अर्थ अत्यन्त अप्रासंगिक, अमंगल तथा अशास्त्रीय है। मनु ने स्पष्ट लिखा है कि 'नोद्वाहिकेषु मन्त्रेषु नियोगः कीर्त्यते क्वचित्'। अर्थात् विवाह के प्रकरण में नियोगपरक अर्थ कहीं भी शास्त्र में नहीं किया गया। तात्पर्य स्पष्ट है कि नियोग के प्रकरण में मन्त्रों का नियोगपरक अर्थ भी होता है। परन्तु उस अर्थ को अप्रासंगिक तथा अमंगल होने से विवाह के प्रकरण में न कहना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक मन्त्रों के अनेकार्थ बोधक होने से श्री स्वामी जी ने पण्डितों को 'अघोरचक्षुः' इत्यादि मन्त्र का नियोग-परक अर्थ भी बताया था। परन्तु उन्होंने श्री स्वामी जी के आशय को भली प्रकार न समझ कर मूर्खता-वश विवाह के प्रकरण में ही उस अर्थ को टिप्पणी के रूप में दे दिया। वास्तव में मन्त्र का नियोगपरक अर्थ नियोग के प्रकरण में ही होना चाहिए। अथवा टिप्पणी के वर्त्तमान् स्थान में यह बात स्पष्ट हो जानी चाहि कि वह अर्थ नियोग के प्रकरण में टिप्पणी के अनुसा भी हो सकता है।

हमारे विचार में जिस प्रकार स्वामी जी के ग्रन्थ में उद्धरणों के पते अशुद्ध होने की अवस्था में उन शुद्ध करने का अधिकार परोपकारिणी सभा को स्वत सिद्ध प्राप्त है उसी प्रकार किसी टिप्पणी आदि के अस्थान में होने अथवा उसके ग्रन्थ के आशय विपरीत होने की अवस्था में उसके संशोधन का अधि कार भी उसी प्रकार परोपकारिणी सभा को स्वत सिद्ध ही प्राप्त है। अवश्य ही इस प्रकार का परिवर्त्त सुयोग्य पण्डितों की समिति अथवा किसी निर्वाचि विद्यासभा द्वारा ही होना चाहिए। ऐसा न हो कि पी से पछताना पड़े।

आर्य जनता से अपील

इस वर्ष वस्तुओं के अधिकाधिक महँगी होने कारण गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वार्षिक बज में २६०००) रु० का घाटा पड़ रहा है। भविष्य वस्तुओं का मूल्य और भी अधिक बढ़ जाने के कार यह राशि बढ़ जायगी। अतः आर्य संस्कृति प्रे जनता से हमारा निवेदन है कि अभी से इस ध्यान न दिया गया तो यह कठिनाई उत्तरोत्तर बढ़ जायगी। हर्ष की बात है कि बहुत से संरक्षकों पुरुषार्थ-निधि की रसीदबुकें मंगा कर गुरुकुल के चन्दा एकत्र कर भेजना प्रारम्भ कर दिया है। अ संरक्षकों तथा आर्य जनता से भी हमारा साग्रह नि है कि वे शीघ्र ही गुरुकुल कार्यालय से रसी मँगा कर गुरुकुल के लिए धन एकत्रित करने का प्रारम्भ कर दें ताकि उनकी प्रिय संस्था को वर्षा किसी प्रकार का घाटा न उठाना पड़े। आशा है जनता इस कार्य के लिये शीघ्र ही कटिब जावेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

नवीन सत्रारम्भ

गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी में नवीन सत्र प्रारम्भ हो चुका है। १८ अक्टूबर से वेद, साहित्य तथा आयुर्वेद तीनों महाविद्यालय खुल गए हैं और पढ़ाई नियमपूर्वक हो रही है। विद्यालय विभाग भी खुल चुका है।

डा० प्राणनाथ विद्यालंकार का भाषण

गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक तथा हिन्दू विश्व-विद्यालय काशी के प्रोफेसर श्री डा० प्राणनाथ विद्यालंकार इस सप्ताह कुलभूमि में पधारे। कुलवासियों की एक बड़ी सभा में आपने 'मोहेन्जोदारों की सभ्यता और तत्कालीन लिपि' विषय पर विद्वत्तापूर्ण तथा मनोरंजक व्याख्यान दिया। ऐतिहासिकों के प्रचलित मत का खण्डन करते हुए आपने भारत में आर्यों का अस्तित्व कई सहस्र वर्ष पूर्व प्रतिपादित किया।

वेद-मन्दिर में वैदिक अनुसन्धान विभाग की स्थापना

कुछ वर्षों से गुरुकुल में वैदिक अनुसन्धान विभाग कार्य कर रहा है। अब तक वैदिक अनुसंधान ने वाले विद्वान पुस्तकालय-भवन में तत्व-चिन्तन का कार्य करते थे किन्तु १८ अक्टूबर से यह विभाग स्थिर रूप से श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिरला द्वारा गुरुकुल-भूमि में बनवाए गए भव्य वेद-मन्दिर में आ गया है। अब से अनुसन्धान का सारा कार्य यहीं पर हुआ करेगा, श्री पं० प्रियव्रत जो आचार्य ने वृहद् यज्ञ के उपरान्त स्थापना-विधि सम्पन्न की। विद्याप्रेमी सज्जनों से इस शुभकार्य के लिए योग्य सहायता की शीघ्र ही आवश्यकता है।

आचार्य जी का प्रचार कार्य

आर्यसमाज मुलतान छावनी के विशेष आग्रह तथा निमन्त्रण पर गुरुकुल के आचार्य पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति उत्सव में सम्मिलित हुए। निकटवर्ती जिलों के आर्यकुमारों ने आपकी व्याख्यान-मालाओं से प्रभावित होकर आपके स्वागतार्थ एक विशेष सम्मेलन किया जिसमें भावमयी भाषा में आपको एक अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया। आचार्य जी ने अभिनन्दन का उत्तर देते हुए प्रभावोत्पादक वाणी में आर्य नरनारों को उत्थान की दिशा बतलाई।

बंगाल-पीड़ितों के लिए ब्रह्मचारियों का उद्योग

गुरुकुल विश्वविद्यालय का मुख्य मार्ग 'श्री श्रद्धानन्द-मार्ग' इस वर्ष वर्षा तथा यातायात की अधिकता के कारण टूट गया था जिसे सुधारने तथा पक्का करने का कार्य गुरुकुल के महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने अपने हाथ में लिया है। मार्ग-सुधार का सारा कार्य ब्रह्मचारी-गण स्वयं करेंगे तथा इस प्रगाढ़-परिश्रम द्वारा उपार्जित धन को बंगाल-पीड़ितों की सहायतार्थ भेजेंगे। इस पुण्य कार्य के लिए ब्रह्मचारियों में पर्याप्त उत्साह नज़र आता है।

———

पृष्ठ २ का शेष

इसके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पंजाब के प्रत्येक आर्य समाज के नाम धनराशि नियत की है। आर्य समाजों को चाहिए कि वह नियत धनराशि भिजवाने की व्यवस्था की है। कन्या गुरुकुल के महत्व तथा आवश्यकता के विषय में—इतना कहना ही पर्य्याप्त है कि उत्तर भारत—क्या सारे भारत वर्ष में यह संस्था अद्वितीय है। आर्य संस्कृति का स्त्रीजाति में प्रचार करने के लिये और कोई साधन इस समय भारतवर्ष में नहीं हैं। भारतीय आर्य कन्या पाठशालाएं तथा महिला विद्यालय भारतीय घरों में पाश्चात्य सभ्यता का प्रवेश करने के साधन बन रहे हैं। केवल मात्र कन्या गुरुकुल ही ऐसी अखिल भारतीय संस्था है जहां आर्य संस्कृति के अनुकूल शिक्षण तथा रहन-सहन के वातावरण में कन्याओं को शिक्षित किया जाता है।

भीमसेन

—सुप्रसिद्ध फ्रैंच लेखक रोम्यां रोलां का देहान्त हो गया।

वायसराय वावेल—

लार्ड वावेल हवाई जहाज द्वारा नई दिल्ली आ गये हैं और बीस अक्तूबर को प्रातः उन्होंने शपथ ली। कार्यवाही बहुत ही संक्षिप्त थी। लगभग ४०० प्रतिष्ठित सदस्य विद्यमान थे। जिनमें हिन्दुस्तानी ब्रिटिश, अमरीकन, नैपलज़, तथा चीनी सैनिक अफसर मौजूद थे। लार्ड माँउट बटन और महाराजा जयपुर, राणा धौलपुर, जामसाहिब, नाभा तथा दवांग्रा महाराजा उपस्थित थे। वायसराय दरबार हाल में एक छोटे से जलूस की शक्ल में आये।

विशेष समाचार है कि वायसराय के भारत आगमन को बहुत गुप्त रखा गया। हवाई अड्डे पर केवल १५ आदमी उपस्थित थे। वहां से वे काली कार में वायसराय भवन पहुँचे। यह भी समाचार है कि लार्ड लिनलिथगो भारत से चल पड़े हैं।

लार्ड वावेल ने भारत भ्रमण का कार्य क्रम बना लिया है—नवम्बर में वे शायद लाहौर आवें—यहां दरबार लगेगा।

आर्य समाज को आर्य का ग्राहक बनना चाहिये

देश विदेश की खबरें

महत्त्वपूर्ण वाक्य-समाचार—

"पश्चिम में शत्रु आमने-सामने आ गया है। पहल मित्रराष्ट्रों के हाथ में है। पूर्व में भी यही स्थिति उत्पन्न हो रही है और वह दिन दूर नहीं जब जापानी भी, जर्मनों की भांति चकित होकर यह सोचने में व्यस्त होंगे कि मित्रराष्ट्रों का दूसरा प्रहार कब होगा और इसका सामना कैसे किया जाय।"—

हिज़ हाईनेस महाराज जोधपुर

"इटली पददलित और पंगु होकर युद्ध से अलग जा गिरा है। हिटलर का जर्मनी लड़खड़ा रहा है, किन्तु जापानी साम्राज्य की दशा अभी ऐसी नहीं है। किन्तु स्मरण रखिये कि जापानी साम्राज्य को अभी मित्रराष्ट्रों की संगठित शक्ति का सामना नहीं करना पड़ा है। चीन ने अभी तक जो कुछ किया है वह, जो कुछ हम कर रहे हैं, उसके सामने नहीं के बराबर है लेकिन हम इससे हतोत्साह न होंगे। हम अपना उद्देश्य अवश्य पूरा करेंगे।"

—भारतस्थ वायुसेनाओं के एयर आफिसर कमांडिंग-इन-चीफ एयर चीफ मार्शल सर रिचर्ड पीयर्स

"छोटे छोटे शत्रु बड़ी शीघ्रता से हताश और निशक्त होते जा रहे हैं। इटली ने अभी ही आत्म समर्पण कर दिया है किन्तु हमारे प्रधान शत्रु जर्मनी और जापान—यद्यपि हिल चुके हैं, फिर भी, इनके साधन अब भी विशाल हैं और शक्ति प्रचंड है।" इन्हें पूर्ण रूप से पराजित करने के लिए मित्रराष्ट्रों को समर भूमि और स्वदेश भूमि में पहले से कहीं अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है।"—श्री कार्डेल हल

"मुझे विश्वास है कि आप सब इस बातको अच्छी तरह समझते हैं कि यह युद्ध तब तक समाप्त न होगा और पूर्व के देशों लिए, हमारे लिए अथवा अन्य विश्व के लिए तब तक सैनिक अथवा आर्थिक सुरक्षा की व्यवस्था नहीं हो सकती, जब तक जापान को ठीक जर्मनी की तरह पराजित नहीं कर दिया जाय।

वाइसराय फील्ड मार्शल वावेल।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २।।) Immortal Sayings ofDayanand
जीवन ज्योति १।।) दयानन्द रत्न माला
स्वाध्याय संग्रह ।।।) वैदिक धर्म की जय
वैदिक स्वर्ग ।।।) यास्क युग
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास
देव यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand
पीयूषबिन्दु =) त्रिदेव निर्णय
निरुक्त का मूल वेद में
Hindu America ५) Light of Truth

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद प्रचार विभाग

[लेखक—श्री यशःपाल सिद्धान्तालङ्कार]

इस वर्ष आर्य समाज मुलतान छावनी का १५ से १७ अक्तूबर को बड़ी धूम धाम से गया। आर्य भाइयों का कहना था कि इतनी ते गत बहुत से वर्षों के पश्चात् हुई श्री पं० जी आचार्य गुरुकुल विश्व विद्यालय मनोनीत ते आर्य सम्मेलन तथा पं० यशपाल जी मनोनीत ते सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का जलूस सायंकाल स्टेशन से प्रारंभ होकर छावनी के मुख्य २ से निकाला गया। जलूस के पश्चात् बड़ी धूम- नगर कीर्तन सफलता पूर्वक समाप्त हुआ। की भारी उपस्थिति में श्री आचार्य प्रियव्रत जी लतान की आठों आर्य समाजों की ओर से गुरु- आचार्य नियत होने की बधाई दी गई और र्य नियत होने के पश्चात् प्रथम बार मुलतान में नों के उपलक्ष्य में उनकी सेवा में अभिनन्दन ट किया गया उसके पश्चात् श्री आचार्य जी का प्राभाव शाली व्याख्यान हुआ, आर्य सम्मेलन में प्रचार गुरुकुल प्रचार नूरपुर में खुलने वाले रर हौस इत्यादि के संबन्ध में प्रस्ताव पास किये सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन में श्री म० देवीदास जी पं० रामदयालु जी श्री डा० रामलुभाया जी श्री लक रामचन्द्र जी खन्ना एडवोकेट इत्यादि के रण हुए मुलतान कि आर्य समाजियों ने आर्य प्रति- धि सभा के अधिकारियों को विश्वास दिलाया है वो सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिये बड़े से बड़े लिदान के लिये उद्यत हैं, उत्सव में श्री स्वामी स्व- ानन्द जी महाराज पं० गुरुदत्त की स्नातक के व्या- न्न बहुत पसन्द किये गये। म० बाल कृष्ण जी, जयप्रकाश जी के भजनों ने जनता पर विशेष ाव पैदा किया, इस वर्ष आर्य समाज मुलतान नी ने वेदप्रचार को २००) की सहायता दी है। देवी दास जी सुप्रिंटेडेण्ट लोकल आडिट आफ़िस ऋषि भक्ति तथा व्याख्यान शैली विशेष सराहनीय उनके व्याख्यानों से एक विशेष प्रभाव होता है मेरी ना पर उन्होंने सभा के साथ पूर्ण सहयोग करना कार किया है।

२. आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी सभा ने अपने बढ़ते हुए कार्य को दृष्टि में रखकर य उपदेशकों तथा आनरेरी कार्य कर्ताओं से सह- ग प्राप्त करने का यत्न किया श्री पं० लोकनाथ श्री पं० बिहारी लाल जी प्रधान जात पात तोड़क डल श्री पं० रामदयालु जी शास्त्री श्री पं० विश्व- थ जी सभा उपप्रधान श्री म० सत्यपाल जी वान- थ श्री प्रो० जगन्नाथ जी M. A. सभा के साथ ोष सहयोग कर रहे हैं। श्री म० चिरञ्जीलाल जी श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज श्री म० चिरञ्जी- ल जी वानप्रस्थी अपना पूरा समय सभा के कार्य लिये दे रहे हैं। श्री पं० माथुर शर्म्मा जी की श्री म वेदालङ्कार तथा म० आतूराम जी मंत्री आर्य- समाज खानगढ़ ने सभा के साथ सहयोग देने का वचन दिया है।

३. श्री० म० कृष्ण जी ने अपने स्वास्थ की चिन्ता न करते हुए आचार्य रामदेव स्मारक के लिये धन संग्रह करने का निश्चय किया है। वह शीघ्र ही इस कार्य के लिये दौरा करेंगे आर्य सज्जनों तथा आर्य समाजों का कर्तव्य है कि वे अपने माननीय स्वर्गीय नेता की स्मृति में दो लाख रुपये की अपील को शीघ्र पूरा कर देंगे।

४. ५ से ७ होने वाले उत्सवों का प्रबन्ध—

भिवानी—पं० समरसिंह जी पं० हरदयालु जी पं० इन्द्र भानु जी पं० पूर्णचन्द्र जी म० बालमकुन्द जी म० दुलीचन्द जी।

अम्बाला सदर—श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, सभा उप- प्रधान श्री पं० यशपाल जी श्री पं० रामस्वरूप जी पाराशरी श्री आचार्य प्रियव्रत जी, म० जय- प्रकाश जी म० शमशेर सिंह जी।

भटिण्डा—श्री पं० शान्त प्रकाश जी श्री पं० लोकनाथ जी श्री पं० क्षितीश कुमार जी श्री पं० द्रौपदी देवी जी म० देशराज जी म० भद्रपाल जी म० हरिश्चन्द्र जी म० हंसराज जी।

धरौंडा—श्री पं० मुनीश्वरदेव जी श्री पं० वीरेन्द्र जी पं० हरीशरण जी म० दुलीचन्द जी उदयसिंह जी

नवां शहर—श्री पं० हरपाल जी श्री पं० यशपाल जी श्री पं० शिवदत्त जी म० बाल कृष्ण जी म० मेहरचन्द जी।

दीपालपुर—श्री पं० तीर्थराम जी श्री पं० विश्वनाथ जी M. A. श्री पं० सत्यदेव जी आशानन्द जी म० हजारी लाल जी।

गाशाला कैथल—श्री पं० खेमचन्द्र जी निर्भयानन्द जी म० शिवनारायण जी।

८ व ९ नवम्बर

कच्चा बाज़ार अम्बाला छावनी—श्री पं० रामस्वरूप जी शान्त श्री पं० यशपाल जी म० जयप्रकाश जी म० शमशेरसिंह जी।८ से १०

गंगोह—श्री पं० रामस्वरूप जी पाराशरी श्री म० शमशेरसिंह जी।९ से ११

खानगढ़—श्री पं० क्षितीश कुमार जी पं० जयदेव जी मुलतान श्री पं० तीर्थराम जी पं० द्रौपदी देवी जी म० बालकृष्ण जी म० हंसराज जी म० देशराज जी

नालागढ़ - श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी पं० रामस्वरूप जा श्री पं० हरपाल जी श्री पं० यशपाल जी म० जय प्रकाश जी म० बलराज जी।

❀ पैसे के लोभ से राज्य दूसरों को सौंपा है और "यज्ञं गच्छ स्वाहा" (य० ६-२१) के अनुसार राज्य सुधार के यज्ञ पालने से इन्कार किया है। ऐसी ही दशा वैश्य धर्म की है। वेद में आज्ञा है "द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा" (य० ६-३१) अर्थात् तीव्र गतिवाले यान बनाकर देश-देशान्तर जाके मेघ जैसा धन कमाओ, हुनर बढ़ाओ, और राज्य कमाओ, खैर वेदों के प्रकाश करने के ठेकेदार तो सोना चाहते हैं। परन्तु वेद सिर्फ इन्हीं लोगों के नहीं। जो वेदाज्ञा पर चलेगा वह उसका फल पावेगा।

वैदिक धर्म की विशालता

(ले० – तेजूमल मु० कनल)

हम गाते रहते हैं कि जगत में वेदों का डंका बजाएगें "वैदिक धर्म" आर्यों का इष्ट है। जो चीज़ प्यारी हो उसके विषय में विचारना अपना कर्त्तव्य है। आओ विचार करें। हमने वैदिक धर्म को अच्छी तरह नहीं जाना है। वेद कहता है "न तं विदाथ य इमा जजान, अन्यद्यंयुष्माकं अन्तरं बभूव" [ऋ. १०-८२-७] यह ही वेद मन्त्र इसके तीन कारण बताता है। "(१) अज्ञान के पर्दे (२) स्वार्थ कामना (३) बहूभाषी भटकते हैं सत्यशोध बिना"। गीता में भी लिखा है "काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः महाशनो महापाप्मा विध्येनमिह वैरिणम्"। स्वार्थ वश तीनों उच्च वर्णों ने जगत का अपना आर्य्य-राज्य खोया और उसके साथ वैदिक धर्म भी लोप होगया। महर्षि ने इसे प्रकाश करने का काम आर्य्य समाज पर रखा। पर आर्य्य समाज क्या कर रही है। कई भाई कहते हैं, वेदों पर चलने को नियमों में कहा है"। दूसरे कहते हैं कि वेदार्थ भी तो एक कहां हैं। बुद्धि हीनता और पुरुषार्थ हीनता की यह हद्द है ऐसी हालत में समाज वेद-प्रकाश से गिर रही है। उपदेशक बहुभाषी बनकर अपने मालिक पदाधिकारियों के कहे अनुसार वैदिक धर्म को संप्रदाय रूप में चला रहे हैं। आर्य संन्यासी भी लकीर के फकीर हैं। वे कहते हैं यह धार्मिक संस्था है, ज्ञान (संप्रदायी) सिवाय दूसरी बातों से हमारा क्या ? वैदिक धर्म को समझा ही नहीं। आर्य समाज के संगठन में भी वेद प्रचार को ढोंग पर चलाया जा रहा। वेदाज्ञा है "अग्नो त्वग्निः समिधा हवमे....." (यजु० ६-२६) अर्थात् ईश्वर वाणी तुमको समिधा अग्नि समान खींचे परन्तु यहां लोक- सत्ता (Democracy) की आड़ में बहुमत सत्ता के बहाने वेदाज्ञा को ठोकर लगाई जाती है। अधिकार जनों को मनमानी बात करने के लिये "यच्छास्ती विधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारितः न च सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्" नीति के वचन भी भूलने पड़ते हैं, आर्य समाज सब वेदाज्ञा पर चलने क्या, पर वेद पर उनका विचार करना भी नहीं चाहती। फिर कह कैसे वेदों का डंका बजाएगी। वेदाज्ञा है "तू उन्नति क है गुरू महान, तुझे व्यापक कर लेना है। जहान अपनी दीप्ति से अन्तरिक्ष को भर, अपनी ज्योति दैवी शक्तियां धर। सब दिशाओं में अपना तेज पस साधना से सबको साथ धसार" (यजु० १७-७२ "उन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि...द्यामग्रेणास्पृक्ष आन्त म्मध्येनाप्राः (य. ६-२)" अर्थात् समाज ! सब प्र की उन्नति कराना तुम्हारा कर्त्तव्य है यह ठीक ज राजनीति का प्रचार कर और उसके बताये मार लोगों को चलाओ (जिस में तुम्हारा यश है) आर्य्य समाज के पदाधिकारियों को राजनीति का खाता है। निकम्मा डर है। दुकानदारों ने तो प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बंगाल के अकाल में आर्य समाज का प्रशंसनीय सेवा कार्य

आर्य जनता को यह जानने की उत्कण्ठा होगी कि बंगाल के दुर्भिक्ष पीड़ितों के प्रति आर्य समाज अपनी सेवा रूपी परम्परा के अनुसार क्या कर रहा है। आर्य समाज का दुखी दीनों के संकट की सेवा का इतिहास १८५६ सम्बत् विक्रमी के बीकानेर के अकाल से प्रारम्भ होता है। तब से लेकर जब कभी भी देश के किसी भी भाग में संकट आया आर्य समाज ने अपने साधनों द्वारा प्रशंसनीय सेवा की। कांगड़ा भूकम्प, मालाबार उपद्रव, उड़ीसा दुर्भिक्ष तथा सिंध बाढ़ में हर समय तन, मन, धन द्वारा आर्य समाज ने पीड़ितों के प्रति सच्ची क्रियात्मक सहानुभूति दर्शाई।

गत वर्ष बंगाल में जब तूफ़ान और बाढ़ से अपूर्व क्षति हुई थी तब भी आर्य जगत ने आर्य समाज रिलीफ़ सोसाइटी कलकत्ता को सहयोग दिया था। यह बड़े ही हर्ष की बात है कि बंगाल के वर्तमान दुर्भिक्ष में भी आर्य-समाज तत्परता से सेवा कार्य कर रहा है। विशेष रूप से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उत्साह वर्द्धक सहयोग और सहायता दी है। प्रादेशिक सभा की ओर से सोसाइटी के पास १६००० अनाज भेजा जा चुका है. जो उन केन्द्रों में पहुंच है जहां हमारा सेवा क्षेत्र है। ३०००० रु० नक़द सभा यहां भेज चुकी है। प्रादेशिक सभा के प्रधान लाला खुशहालचन्द्र जी द्वारा चार लाख रुपया का अनाज बंगाल के अकाल पीड़ितों के लिये पंजाब में प्राप्त हुआ है, जो धड़ाधड़ कलकत्ता पहुंच रहा है। सभा को बाबा प्रयाग्रिह ऐण्ड संस ट्रस्ट से ५०० जोड़ा साड़ियां दी गई थीं, जो आर्य समाज रिलीफ़ सोसाइटी को मिल चुकी हैं और बांटी जा रही हैं। डेढ़ दर्जन कार्यकर्त्ता भी सभा की ओर से सोसाइटी के काम में संलग्नता से कार्य कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज रिलीफ़ सोसाइटी के सेवा कार्य आरम्भ करने की खबर पाते ही आर्य वीर दल के सहायक सेनापति ओमप्रकाश जी त्यागी के नेतृत्व में ४ सेवकों का जत्था तथा ५००) रुपया नक़द भेज दिया था। उसके बाद सार्वदेशिक की ओर से १००० रु० का दूसरा चेक भी मिल चुका है और रुपया भी सभा ने भेजने को लिखा है तथा स्वयं सेवकों का दूसरा जत्था भी आ रहा है। मंत्री सार्वदेशिक सभा ने लिखा है कि श्रीयुत शिवचन्द्र जी बंगाल के कार्य और स्थिति को समझ कर लौटेंगे तो वह देशाटन करके सोसाइटी को सहायता दिलायेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से अनाज भी इकट्ठा हुआ है रुपया भी। सभा ने पंजाब सरकार से गल्ला भेजने की आज्ञा भी ले ली है। इस सभा का प्रभाव भी विस्तृत है और हमें आशा है कि सोसाइटी के पास शीघ्र ही आर्य प्रतिनिधि द्वारा भेजा अनाज भी पहुंच जायेगा। सभा नक़द रुपया जैसे आ रहा है क्रमशः भेजती जावेगी। सोसाइटी ने कार्यकर्ताओं के लिये भी सभा को तार दिया है। आशा है कि शीघ्र ही उसके स्वयं सेवक पहुंचेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी० भी सोसाइटी को सहयोग दे रही है। संयुक्त-प्रान्त में भी गल्ला जमा हुआ है। डी० ए० वी० कालेज कानपुर का १०००) रु० का चेक मिल चुका है। भिन्न-भिन्न देश व्यापी आर्य सामाजिक संस्थाओं ने अनाथ रक्षा आदि उचित सहयोग का आश्वासन दिया है। यह प्रसन्नता की बात है कि देश भर के आर्यों में बंगाल के पीड़ितों के प्रति पूरी सहानुभूति है और वह क्रियात्मक रूप में आर्य समाज रिलीफ़ सोसाइटी द्वारा प्रकाशित हो रही है। बंगाल का संकट इतना महान है कि इसके निवारण के वास्ते जो भी बन पड़े प्रयत्न करना चाहिये। आगामी दो महीने तो बहुत ही भयानक हैं। जहां जहां जो सहायता की सामग्री अनाज आदि जमा है वह शीघ्र से शीघ्र यहां भेज देना चाहिये। विलम्ब का अर्थ है कि जिन लोगों के पास हम वह सहायता जल्द नहीं पहुंचा सकेंगे, यह अभाव के कारण मृत्यु का ग्रास बनेंगे।

एक प्रार्थना और है कि शीतकाल सिर पर आ रहा है, लोग भूखे भी हैं और वस्त्रहीन भी—कपड़ा नया हो या पुराना जो कुछ भी बन पड़े भेजना चाहिये। पुराना कपड़ा धुला हुआ हो, सब काम में आ जायेगा। औषधियों की भी जरूरत है—विशेष कर मलेरिया, हैज़ा, टाइफ़ाईड ज्वर दूर करने की दवा दरकार है।

आर्य जगत के भरोसे सार्वदेशिक और प्रान्तीय सभाओं ने सहयोग का पूरा आश्वासन पाकर सोसाइटी ने जिला मेदिनापुर में ७००० पीड़ितों की सेवा के अतिरिक्त अब नवाखाली, टिपरा, फरीदपुर, हावड़ा में १३००० पीड़ितों की सहायता के लिये नये केन्द्र खोलने का कार्य आरम्भ कर दिया है। अनाज भेजा जा रहा है, कार्यकर्त्ता जा रहे हैं। मेरा आर्य जगत से नम्र निवेदन है कि वह आर्य समाज के गौरव को समक्ष रखते हुए सहायता का स्रोत जारी रक्खें, जिससे सोसाइटी पर जो दायित्व आ पड़ा है, उसे भली-भांति निभा सके। धन आदि सब प्रकार की सहायता प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के पास अथवा सीधे मन्त्री आर्य समाज रिलीफ़ सोसाइटी १६ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता के पता से भेजें।

रघुनन्दनलाल
मन्त्री

बंगाल पीड़ित सहायता

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का अनुकरणीय

बंगाल के अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ [illegible] शिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अपील पर [illegible] से आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। गुरुकुल [illegible] और सूपा के ब्रह्मचारियों और कर्मचारियों [illegible] विषय में एक अनुकरणीय कार्य किया है। [illegible] धर्मवीर जी वेदालंकार मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल [illegible] की प्रेरणा पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों [illegible] चारियां ने १५०) संग्रह करके बंगाल पीड़ित सह[illegible] सार्वदेशिक सभा कार्यालय में भेजा है। गुरुकु[illegible] गुजरात के ब्रह्मचारियों ने ७ दिन १ समय [illegible] वास करके १२५ रु० तथा अन्य कर्मचारियों [illegible] रु० इस प्रकार २१६ रु१ इस निधि में बम्बई [illegible] प्रतिनिधि सभा द्वारा भिजवायें है। अन्य जो [illegible] ५० रु० से ऊपर की १ से १३ अक्तूबर के [illegible] प्राप्त हुई हैं उनमें से निम्न लिखित उल्लेखनीय [illegible]

१७५ रु० आर्य समाज सक्खर। १००) [illegible] प्रतिनिधि सभा बम्बई। ८३) ३ पाई पर्वतीय स[illegible] रायण मंडली, देहली। १००) आर्य समाज को[illegible] ६१७॥) आर्य समाज गाजियाबाद। १००) [illegible] समाज गाजियाबाद। ५७३॥) आर्य समाज स[illegible] १०१) पब्लिशर्स ऐसोशियेशन, देहली।

(दूसरी किस्त) इन सब को सार्वदेशिक [illegible] की ओर से हार्दिक धन्यवाद!

अन्य दानियों को भी इस पुण्य कार्यार्थ दान [illegible] देशिक सभा बलिदान भवन देहली के पते पर [illegible] भेज कर पुण्यभागी बनाना चाहिये।

आज ही आर्य रिलीफ सोसाइटी का स[illegible] नाम तार आया है कि धन और कार्यकर्ता[illegible] तुरन्त आवश्यकता है।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० म[illegible]
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दे[illegible]

—दीवानचन्द आर्य हाकी टूर्नामेंट के "[illegible] में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के छोटे ब्रह्मचारियों [illegible] टीम ने भाग लिया था, जिसमें इस टीम की [illegible] जीत हुई। टूर्नामेंट की ओर से इस टाम को र[illegible] तथा प्रत्येक खिलाड़ी को एक-एक रजत-पदक [illegible] गया।

—गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों तथा [illegible] रियों ने भोजनादि से बचाकर तथा एकत्रि[illegible] बंगाल रिलीफ फण्ड को १५०) आर्य सा[illegible] सभा द्वारा भेजा है।

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्तभवन लाहौर से प्रकाशित हु[illegible]

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 5004

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक

वार्षिक मूल्य ५

१५ कार्तिक २०००

३१ अक्तूबर १९४

२००२ पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी (Gurukul Kangri, Hardwar)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

मनुष्य बन

तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्।
तुल्वणं वयतः जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ऋ० १०।५३।६॥

(रजसः) संसार का (तन्तुम्) ताना बाना (तन्वन्) तनता बुनता हुआ [भी] (भानुम्) प्रकाके (अनु+इहि) पीछे जा। (धिया) बुद्धि से (कृतान्) बनाए हुए परिष्कृत किए हुए (ज्योतिष्मतः) ोतिर्मय, प्रकाशयुक्त पथः रक्ष) मार्गों की रक्षा कर, (जोगुवाम्) निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान नेवालों के (अनुल्वणम्) उलझन रहित (अपः) कर्म को (वयत) विस्तृत करो। [इन उपायों से] (मनुः ॥) मनुष्य बन। [और] (दैव्यम्) देवों के हितकारी (जनम्) जनको, सन्तान को (जनय) उत्पन्न कर।

संसार को जिसकी आवश्यकता रही है और रहेगी, और इस समय भी जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है, उस तत्त्व का उपदेश इस मन्त्र में किया गया है। वेद में यदि और उपदेश न होता, केवल ही मन्त्र होता, तब भी वेद का आसन संसार के सभी मतों और संप्रदायों से उच्च रहता।

वेद कहता है—मनुर्भव—मनुष्य बन।

आज का संसार ईसाई बनने पर बल देता है अर्थात् ईसा का अनुकरण करने के लिए यत्नवान । संसार का एक बड़ा भाग बौद्ध बनने में लगा हुआ है अर्थात् बुद्ध के चरण चिह्नों पर चलता हुआ द्धं शरणं गच्छामि' का नाद गुंजा रहा है। इसी प्रकार संसार का एक भाग श्री मुहम्मद का अनुगमन ने में तत्पर है। महापुरुषों का अनुगमन प्रशंसनीय है। किन्तु थोड़ा-सा विचार करें तो एक विचित्र य सामने आता है, अद्भुत तमाशा देखने को मिलता है। ईसाई ने ईसा का नाम लेकर जो कुछ मने भाईयों के साथ किया, उसकी स्मृति ही मनुष्य को कंपा देती है।

बिल्ली के बच्चे तक की रक्षा करने वाले मुहम्मद साहेब की उम्मत का इतिहास भी भाइयों के रक्त से जित है। आः ! जिसे मनुष्य कहते हैं, वह मनुष्यता का वैरी हो रहा है। हमने संकीर्णता के कारण ुचित दल बना डाले, एक दल दूसरे दल को दलने मसलने कुचलने पर तत्पर है। आज मनुष्य ुष्य का वैरी हो रहा है। अतः वेद कहता है—मनुर्भव—मनुष्य बन। ईसाई या बौद्ध या मुसलमान ने या किसी दूसरे सम्प्रदाय में सम्मिलित होने में वह रस कहां ? जो 'मनुष्य' बनने में है। ईसाई ने में केवल ईसाईयों को ममत्व से देखूंगा बौद्ध बनने से अन्य सबको असद्धर्मी मानूंगा। मुसलमान कर मोमिनों को ही अपने प्यार का अधिकारी मानूंगा किन्तु मनुष्य बनने पर तो विश्व संसार मेरा वार होगा, सब पर मेरा एक समान प्यार होगा वसुधा को कुटुम्ब माना तो सारे कुटुम्ब पर प्यार ना चाहिये। कुटुम्ब में ममता का साम्राज्य होता है। विषमता का व्यवहार कुटुम्ब की एकतानता वज्र प्रहार है। ममता स्थिर रखने के वे लिए स्नेही का व्यवहार करना होता है, तभी तो वेद ने ा—'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' ॥य० ३६।१८॥

सबको मित्र की स्नेह सनी आंख से हम देखें। यहां वेद मनुष्य सीमा से भी आगे निकल गया है। प्यार का अधिकारी केवल मनष्य नहीं रहा, वरन् सब भूत=प्राणी होगये। यह उचित भी है, क्योंकि 'मनुष्य' शब्द का अर्थ है—मत्वा कर्माणि सीव्यति (निरु० ३।७) जो विचार कर कर्म्म करे। कर्म्म करने से पूर्व जो भली प्रकार विचारे कि मेरे इस कर्म्म का क्या फल होगा ? किस किस पर इसका क्या क्या प्रभाव होगा ? यह कर्म्म भूतों के दुःख=प्राणियों की पीड़ा का कारण बनेगा, या भूतहित साधेगा ?

मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य बन जाए। देखिए, थोड़ा विचारिए थोड़ा सा मनुष्यत्व काम में लाइए। वेद के इस उपदेश के महत्त्व को हृदयङ्गम कीजिए ! धार्मिक दृष्टि से विचारें तो मनुष्य समाज के दो बड़े विभाग बन सकते हैं एक ईश्वरवादी, दूसरा अनीश्वरवादी। सभी ईश्वरवादी ईश्वर को 'पिता' मानते हैं। वेद इससे भी आगे जाता है वह ईश्वर को पिता के साथ माता भी मानता है। यथा—

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥ऋ. ८।९८।११॥

अर्थात् सबको ठिकाना देने वाले ! सचमुच तू हमारा पिता है जीवों की उत्पत्ति आदि नाना विध कर्म्म करने वाले परमात्मन् ! तू हमारी माता है, अतः हम तेरा उत्तम हृदय (Good wishes) चाहते हैं।

माता पिता की शुभाशीः, शुभकामना सन्तान का कितना कल्याण करती है ? पर पिता दिव्य माता की भव्य भावना हमारा कितना इष्ट कर सकती है इसकी पूरी कल्पना कौन कर सकता है ? प्रभु हमारे मात पिता। हम उनकी सन्तान। किन्तु कुसन्तान जघन्य सन्तान, अयोग्य सन्तान, विद्रोही सन्तान। हम आपस में लड़ते हैं। भाई भाई की लड़ाई ! भगवान् ने कहा था—सगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ऋ. १०।१९१।२॥ तुम्हारी चाल एक हो, तुम्हारा बल एक हो, तुम्हारा ख्याल एक हो। हमारी चाल आज भिन्न भिन्न ही नहीं, परस्पर विरुद्ध भी है। आज

[शेष पृष्ठ २ पर]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[पृष्ठ १ का शेष]

हम संवादी नही, विवादी होगये हैं। आज हम संवाच नहीं 'विवाचः' हो गये हैं। इसका कारण मारा 'वैमनस्य' मनोभेद=मतभेद=विचार भेद है। एक चाल=संगति, एक बोल= संउक्ति के लिए 'सौमनस्य'= मनकी एकता= मत की अभिन्नता=विचार की समता की आवश्यकता है।

पिता का आदेश है, माता का संदेश है='संगच्छध्वम्' हम उसके विपरीत चलकर पिता का अधिकार, माता का प्यार, कैसे पा सकते हैं! मानव! ठहर! सोच तू कहां चला गया? कहां बिदक गया?

मैं बिदक गया। बहक गया! वज्र भ्रान्ति! ईश्वर ईश्वर कह रहे हो। कहां है ईश्वर? जब ईश्वर ही नहीं, तब उसका मातापिता होना कैसे? और हम सब मनुष्य 'भाई भाई' कैसे? सति कुड्ये चित्रम्। आधार होगा, तो चित्र बनेगा?

अच्छा! ईश्वर को ही जवाब! जाने दो, तुम्हारा मन ईश्वर को नहीं मानता, ना सही। भगवान् का मानना बड़े भाग्य की बात है। किन्तु भगवान् को न मानकर भी मानव मानव का भाई है।

कैसे?

सुनो! सावधान होकर सुनो। तुम दो की संतान हो ना। घबराने क्यों लगे? इसमें अचम्भे की बात ही क्या? माता और पिता के संयोग से ही मनुष्य उत्पत्ति होती है। अकेली स्त्री से संतान नहीं हो सकती। अकेले पुरुष से कुछ नहीं बनता। सृष्टि चलाने के लिए स्त्री पुरुष का रयि प्राण का संयोग आवश्यक है। अर्थात् दो मिले, तो तुम एक आए। अर्थात् तुम में दो का रुधिर आया। और ये दो भी तो दो दो के सन्तान हैं। अर्थात् हम में चार का रुधिर आया। उन चार के जो और सन्तान हुए। उनमें भी उनका रुधिर आया। कहो, वे और तुम सब सपिण्ड हुए या न? तनिक और आगे चलो, वे चार आठ के सन्तान, वे आठ सोलह की, इस प्रकार ज्यों ज्यों ऊपर को जाओगे। अपन खून का सम्बन्ध बढ़ता हुआ पाओगे।

कहो? हुए न हम भाई भाई।

बताओ। भाई भाई का व्यवहार कैसा होना चाहिए? क्या भाई भाई का गला काटे, यह अच्छा है अथवा भाई के पसीने के बदले अपना खून बहादे यह अच्छा है? भाई को भाई से भय नहीं होता। भाई को अपने से अभिन्न माना जाता है। डर होता है दूसरे से द्वितीयाद्वै भयं भवति भाई को देखते ही हृदय हर्षित हो उठता है आ! विश्व संसार को भाई बना। भय को भगा। सर्वत्र निर्भय निष्कण्टक आ और जा।

कहो, वेद का 'मनुर्भव' कहना कल्याण साधक है या नहीं? निस्सन्देह मनुष्य बनना संसार में शान्ति स्थापन करने का एक मात्र साधन है। सभी मनुष्य 'मनुष्य बन जायें' तो यह मार काट, यह लूट खसूट उसी क्षण समाप्त हो जाए।

निस्सन्देह मनुष्यत्व प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। शङ्कराचार्य्य जी ने कहा—,जन्तूनां नरजन्म दुर्लभम्।' सचमुच नरतन पाना दुस्साध्य। किन्तु असाध्य नहीं। वेद इससे आगे जाता है। वेद कहता है – मनुष्य जन्म, नरतन तो तूने प्राप्त कर लिया 'मनुष्य भी बन'। केवल नरतन धारी ही न रह, नरमन धारी भी बन। इसी वास्ते वेद ने कहा—'मनुर्भव'।

यद्यपि 'मनुर्भव' कहने से ही सब बात आ गई किन्तु भगवती श्रुति उसके उपाय भी बता देती है। वैसे तो सारा वेद ही नरतन धारी को मनुष्य बनाने के लिए है, किन्तु इस मन्त्र में जो कुछ कहा है, उस पर भी यदि आचरण किया जाए तो अभीष्ट सिद्ध हो जाए।

मनुष्य बनने का पहला साधन—तन्तु तन्वन् रजसो भानमन्वि हि।' संसार का ताना बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर अर्थात् तेरे समस्त कर्म्म ज्ञानमूलक होने चाहियें। अज्ञान, अंधकार तो मृत्यु के प्रतिनिधि हैं। अन्धकार से उल्लू को प्रीति हो सकती है, मनुष्य को नहीं। मनुष्य बनने के लिए अन्धकार से परे हटना होगा। ऋषि ठीक ही कहते हैं—

तमसो मा ज्योतिर्गमय। शत० १४।३।१।३०

अन्धकार से हटा कर मुझे प्रकाश प्राप्त कर। अन्धकार में कुछ नहीं सूझता, सब क्रियायें, चेष्टायें रुक जाती हैं। अतः वेद कहता है—भानुमन्विहि। प्रकाश के पीछे चल।

प्रकाश का अनुसरण करनामात्र ही पर्य्याप्त नहीं है। कुछ और भी आवश्यक होता है। प्रकाश के पीछे तभी चला जा सकता है, जब प्रकाश स्थिर हो। यदि प्रकाश विद्युच्छटा के समान चंचल हो तो उसका अनुसरण कैसे हो सकता है। इस आशय को लेकर वेद ने दूसरा उपाय बतलाया—

ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

प्रकाश के मार्गों की रक्षाकर उनमें अपनी बुद्धि से परिष्कार कर।

संसार के सभी देशों में रौशनी बुझाने वालों लिए दण्ड का विधान है। किन्तु संसार की विचित्र है। संसार में ऐसे भी हुवे हैं, और कदाचि आज भी ऐसे मनुष्याकारधारी प्राणी हैं, जो प्रका का नाश करते रहे और कर रहे हैं। उन्हें क्या कहोगे, जिसने सिकन्दरिया का विशाल पुस्तकाल जला दिया। उन्हें क्या कहोगे, जो वर्षों भारत ज्ञान भण्डार से हमाम=स्नानागार गरम करते रहे उनका क्या नाम धरोगे, जिन्होंने चित्रकूट का करो रुपयों का पुस्तकालय अग्निदेव की भेंट कर डाला ये सभी नरतनधारी थे, किन्तु क्या ये मनुष्य नाम भी अधिकारी थे, इसमें सन्देह है। मनुष्य बनाने साधन नष्ट करने वाले मनुष्य कैसे? वे कोई मनुष्य के वैरी थे। उनको क्या कहोगे, जो आज भी ज्ञा भण्डार को जल देवता के अर्पण कर रहे हैं? उन्हें क्या कहोगे, जो प्रकाश को दूसरों तक नहीं जाने दे अपने तक रोक रखते हैं? ये सब.....। लाखों ज्ञानी ज्ञान अपने साथ ले जाते हैं। वह ज्ञान किस काम का? वेद कहता है—ज्योतिष्मतः पथो रक्ष-। ज्ञा मार्गों की रक्षा कर। पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान राशि की रक्ष कर।

मानव! तू वायुयान में बैठकर आकाश की ओर उड़ जाता है, अन्तरिक्ष की सैर करता है। ज्ञात है यह कैसे संभव हो सका। वेद के 'अन्तरिक्षे रजसो विमानः की बात नहीं कहूंगा। और नाहीं, कहूंगा रामायण पुष्पक विमान की बात' आज के विमान का बयान सुनाऊंगा। किसी भद्र के चित्त में पक्षी को उड़ता देख उड़ने की समाई। उसने कृत्रिम पंख लगाकर उड़ने की ठानी। बेचारा गिर पड़ा, अङ्ग भङ्ग हो गया। अगले ने उसकी चेष्टा को स्मरण रखा, उसके यत्न को मूल धार बनाया, साथ ही उसमें अपना मस्तष्क लगाया अब सोच मानव? यदि उस प्रथम त्यागी के ज्ञान भुला दिया जाता; तो नये सिरे से यत्न करना पड़ फल क्या होता, वायुयान न बन पाता।

अतः वेद का यह कहना 'ज्योतिष्मतः पथोरक्ष' ब ही सारगर्भित है।

हां! यदि उस पहिले उड़ने वाले ने जितना कया था। उतने की ही रक्षा की जाती, उसमें अप भाग न डाला जाता, 'अपना दिमाग न लड़ाया जात तो भी वायुयान न बन पाता। अतः वेद ने ठीक कहा—'धियाकृतान्' प्रकाश की रक्षा अवश्यकर' कि उसमें अपना भाग भी डाल। अन्यथा दीपक जाएगा।

वैदिकों ने इस तत्व को समझकर प्रथम संस वेद तथा उसके अङ्गोपाङ्गों की रक्षा करने में प्रण से यत्न किया है। अतः वेद के शब्दों में कहो—

'नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः'।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्य रविवार १५कार्तिक
वि०सं० २०००

तेरी इच्छा पूर्ण हो

ऋषि निर्वाण का सन्देश

ऋषि निर्वाण-उत्सव है। आज के दिन दयानन्द ने देह लीला संवरण करते हुए, का स्मरण "तेरी इच्छा पूर्ण हो" मंत्र से ॥ शिवरात्रि के अवसर पर प्रभु की सच्चे खोज में घर से निकले थे। भारी साधना— बुद्ध तपोनिष्ठा से—परमात्मा के दर्शन किये। ात्म दर्शन ने–उनके हृदय में दिव्य आलोक किया। इस दिव्य आलोक के कारण मृत्यु कर घटना में भी वह परमात्मा का साक्षात् र सके और तेरी इच्छा पूर्ण हो–का मंत्र पाठ है। ऋषि दयानन्द द्वारा उच्चारित किया मंत्र दय का उद्गार था—उनकी जीवन यात्रा—की का मूल कारण था। उन्होंने जीवन भर म भावना से सब कुछ परमात्मा को अर्पित कर ग का जीवन बिताया। उन्हें परमात्म दर्शन के ोई वस्तु प्राप्त कर नहीं रही थी। 'प्राप्त प्राप्तव्यम्' र्थाति को वह प्राप्तव्य चुके थे। परन्तु फिर भी में सतत कर्म योग में रत रहे—किस लिये— लिये–नहीं–जनता के लिये–दूसरों के लिये– ों को सन्मार्ग का प्रदर्शन कराने के लिये, उन्हें ागर से निकाल कर आलोक में लाने के लिये, की–परमात्मा की इच्छा पूर्ति के लिए थे। समाज की सेवा की—किस लिये अपनी ाकांक्षा या लोकैषणा को पूर्ण करने के लिये अपितु परमात्मा की इच्छा पूर्ण करने के लिये— ा की मांग पूरा करने के लिये।

रन्तु सोचिये—अपने हृदय को टटोलिये और ये कि आप आर्य समाज की सेवा किस लिये हे हैं–वैदिक धर्म प्रचार–किस लिये कर रहे हैं? समाज सेवा और लोक सेवा करने से पहले अपने आपको सांसारिक तथा आत्मिक दृष्टि ात्म सन्तुष्ट कर चुके हैं—क्या आपकी धनाभि- –यशोभिलाषा - शान्त हो चुकी है—आप अपने ा की आवाज तथा भूख को शान्त कर चुके हैं– नहीं तो समझिए–तो आपको समाज सेवा और सेवा के क्षेत्र से मंत्रोपदेष्ट बनकर, आने का कार नहीं—यदि आप आगे बढ़ने की कोशिश ी तो निस्सन्देह कुछ समय के लिये आप जनता साधुवाद के मदमस्त करने वाले नारों से मंत्र- होकर अपने आपको कृत कृत्य समझेंगे– परन्तु समय बाद आपकी त्रुटियां आपकी सुप्त ऐश्वर्य- ाषा, यशोभिलाषा दूसरों के हृदय में ईर्ष्या-द्वेष के भावों को पैदा करेंगी—और आप भी अप्रत्यक्ष रूप से अपनी यशोभिलाषा और धनाभिलाषा के पूर्ण होने तक लोक सेवा, समाज सेवा में लगे रहेंगे–ज्योंही आपकी इन भावनाओं को ठेस पहुंचेगी—आप समाज से पृथक्—अलग्-थलग् हो जायेंगे और इस समय आप–तेरी इच्छा पूर्ण हो के स्थान पर अप्रत्यक्ष रूप से 'मेरी इच्छा पूर्ण हो" के सकाम मंत्र का पाठ करेंगे। आज आर्य समाज तथा आर्यजाति में जो अशान्ति। असन्तोष, वैमनस्य दिखाई देता है—उसका मुख्य कारण यह है कि हम "तेरी इच्छा पूर्ण हो" के स्थान पर मेरी इच्छा पूर्ण हो का मंत्र पाठ करने लगे हैं। आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री जब तक अपनी इच्छा को पूर्ण होता देखते हैं—मंत्री, प्रधान रहते हैं–अधिकार-पद पर आरूढ़ रहते हैं, समाज में आते जाते हैं—ज्योंही अपनी इच्छा का घात होता देखते हैं– समाज से पराङ्मुख–उपरत हो जाते हैं। संगठन के बहुमत को–जनता की इच्छा को अपनी इच्छा से टकराता देखकर, अलग हो जाते हैं–कोशिश करते हैं कि संगठन और इच्छा को कुचला जाय—अपनी तानाशाही चलाई जाय। चल जाय तो टिके रहते हैं—बहुमत को निस्तेज बनाकर समाज के साथ द्रोह करते हैं। सामाजिक जीवन में–आर्यसमाज के संगठन सम्बन्धी आन्दोलनों तथा कार्यों में–मेरी इच्छा पूर्ण हो' के आसुरी मंत्र ने उथल पुथल मचाई हुई है। ऋषि दयानन्द ने इस विषय में स्पष्ट आदेश दिया था कि बहुमत का मान करो—संघ को कहो—तेरी इच्छा पूर्ण हो। आज आर्य भाइयों को अपने सामाजिक संगठन में—इस मंत्र का पाठ करना चाहिए।

व्यक्तिगत जीवन में—ऋषि दयानन्द ने—तेरी इच्छा पूर्ण हो– मंत्र का जिस तरह आचरण तथा अनुष्ठान किया—उसके विषय में हरेक आर्य को अपने कर्त्तव्य का निश्चय करना चाहिए। मेरी–अहंकार भरी अभिमान भरी, इन्द्रिय तथा विषयों के सम्पर्क से पैदा होने वाली कामना, लोभ वाली इच्छा को पूर्ण करने के लिये लवलीन होते ही–तेरी–शरीर से पृथक् सभा वाले आत्मा की इच्छा प्रसुप्त हो जाती है मन्द पड़ जाती है। मन–इन्द्रियों की इच्छाएं–केनोपनिषद् के अग्नि वायु देवताओं की तरह "मैं मैं" करने लगती हैं। अभिमानवश संसार को जला देना चाहती हैं, हवा में उड़ा देना चाहती हैं—परन्तु परीक्षा के समय उनसे अपना आपा भी नहीं हिलता। अपना आप भी नहीं संभलता। परन्तु जिस समय आत्मा की इच्छा तृप्त होती है उस समय आत्मा कहता है कि यह सब कुछ जनता का है, ब्रह्म का है–मेरी शक्तियों का स्रोत मनुष्य समाज है–या परमात्मा–तब उसकी इच्छा परमात्मा की इच्छा में परिणत हो जाती है अभिन्न हो जाती है दोनों निष्काम भावना और परोपकार भावना में लीन हो जाती है। अपने आपको साधना द्वारा सम्पन्न बनाकर ही त्याग और परोपकार करना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से कमज़ोर व्यक्ति की लोक सेवा निर्बल की क्षमा की भांति निस्तेज होती है।

ऋषि दयानन्द ने अपनी इच्छा शक्ति-को प्रबल बनाया—उसके सामने सांसारिकशक्तिधारियों को झुकना पड़ा तब कहीं वह समाज और परमात्मा की इच्छापूर्ण कर सके। आज दिवाली के शुभ समय पर हमें ऋषिदयानन्द द्वारा उच्छवस्ति तेरी इच्छा पूर्ण हो के मंत्र का पाठ करना चाहिए। यही ऋषि निर्माण का संदेश है अपनी-या मेरी सकाम इच्छाओं का दमन करना चाहिए तभी हम ऋषिदयानन्द के पद चिह्नों पर चल सकेंगे।

आर्य समाज बच्छोवाली का वार्षिकोत्सव—

२७, २८ नवम्बर को आर्य समाज बच्छोवाली का वार्षिकोत्सव। होगा यह उत्सव पंजाब के आर्यों का धार्मिक उत्सव होता है। इस उत्सव पर आर्य समाज जगत की आत्मिक भूख को शान्त करने के लिये संन्यासी महात्माओं के उपदेश कराये जाते हैं। आर्य समाज के संगठन को बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के संगठन किये जाते हैं। पंचाब की आर्य समाजों को इस उत्सव में सम्मिबित होने के लिए तैय्यारियां शरू कर देनी चाहिएं। अपने २ समाजों की ओर से स्वयं सेवक मंडलियां, कीर्तन मंडलियां बनाकर लानी चाहिएं। इस वर्ष उत्सव पर आर्य भाइयों के पारस्परिक सम्बन्धों को प्रीति पूर्ण बनाने के लिये विशेष सम्मेलन किये जायेंगे। यह भी व्यवस्था की जा रही है कि आर्य भाई इस अवसर पर अपनी आत्मिक तथा धार्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए संन्यासी महात्माओं तथा विद्वान् व्याख्याताओं के सत्संग से लाभ उठा सकें।

उर्दू-सत्यार्थ प्रकाश की ५ हज़ार प्रतियां—

आर्य प्रतिनिधि सभा को ओर से स्वर्गीय पंडित चमूपति जी द्वारा उर्दू भाषा में अनुवादित सत्यार्थ प्रकाश की ५००० प्रतियां छपरही हैं। आर्य समाज का कर्तव्य है कि वह सत्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ५००० प्रतियां कागज़ की तंगी के होने पर भी मुश्किल से कागज़ का प्रबन्ध करके छपाई जारही है। एक प्रति का मूल्य २) रखा गया है। जो आर्य समाजें उर्दू सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां मंगाना चाहती हैं उन्हें सभा कार्यालय में पत्र द्वारा सूचना दे देनी चाहिए। आर्य समाजों को अपनी अन्तरंग सभाओं में सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार के लिए विशेष धन स्वीकार करना चाहिए इस समय कुछेक अदूरदर्शी सिक्ख तथा मुसलमान सत्यार्थ प्रकाश को ज़ब्त कराना चाहते हैं—उनके आन्दोलन का असली उत्तर यही है कि हम अधिक से अधिक संख्या में इसका प्रचार करें।

—भीमसेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"आर्य चक्रवर्ती साम्राज्य —

[लेखक—आचार्य पं० चन्द्रकान्त

मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने अनार्यों को हरा कर आर्यावर्त को आर्य-विजय से अलंकृत किया। योगेश्वर कृष्ण ने अपने चातुर्य से कंस, जरासंध तथा दुर्योधन जैसे शत्रुओं को नष्ट करके भारतवर्ष के अखंड साम्राज्य की नींव डाली "एतदूढ़ गुरुभार! भारतं वर्षमद्य मम वर्तते वशे" बुद्धदेव ने राजपाट को छोड़ कर मार-पराजय से आत्म विजय किया। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने भारत की लूटी हुई-नष्ट हुई संस्कृति को लौटा कर इस शताब्दि में आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य का स्वप्न देखा और दिखाया। इनके एक एक ग्रन्थ में जगह जगह पर यह स्वप्न खड़ा किया गया है। (१) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के राजा, प्रजा और धर्म में "राजा में प्रार्णो अमृत ँ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्" य. अ. २०।३।६ की व्याख्या में ये लिखते हैं—अमृत स्वरूप जो ब्रह्म और मोक्ष सुख है वही मेरा चक्रवर्ती राजा है। इससे स्पष्ट हैं कि महर्षि की दृष्टि में चक्रवर्तिता मोक्ष सुख के समान अन्तिम ध्येय है।

(२) आगे इसी प्रकरण में लिखते हैं—परमेश्वर कृपा से मनुष्य के राजकर्म, चक्रवर्ती राज्य-भोग राज्य-अपना राज्य-विविध राज्य ... और अपने को राज्य इत्यादि उत्तम उत्तम सुख बढ़ते हैं। इसलिये उस परमात्मा को मेरा बारम्बार नमस्कार है। जिसका नाम इन्द्र अर्थात् परमैश्वर्ययुक्त है वही हमारा सम्राट् अर्थात् चक्रवर्ती राजा और वही हमको भी चक्रवर्ती राज्य देने वाला है।

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में यह भावना इतने उत्कृष्ट रूप में प्रकट हुई हैं कि भावावेश में ऋषि प्रकरण का भी विस्मरण कर गये प्रतीत होते हैं। इनके रोम रोम में भारत के प्राचीन सांस्कृतिक विजय की विद्युत् संचार कर रही थी। अष्टम समुल्लास में आर्य-दस्यु के विषय के स्पष्टीकरण में लिख गये हैं—"इक्ष्वाकु से लेकर कौरव पांडव तक सर्व भूगोल में आर्यों का राज्य और वेदों का थोड़ा थोड़ा प्रचार आर्यावर्त से भिन्न २ देशों में भी रहता था। इसमें यह प्रमाण है कि ब्रह्मा का पुत्र विराट्, विराट् का मनु, मनु के मरिच्यादि दश इनके स्वायंभवादि सात राजा और उनके संतान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्यावर्त के प्रथम राजा हुवे जिन्होंने यह आर्यावर्त बसाया है। अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा हीं क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के नीचे पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राजा होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने पराये के पक्षपात से शून्य, प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय, और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायी नहीं है। परन्तु भिन्न २ भाषा, पृथक् २ शिक्षा अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है।

दशम समुल्लास में गौ रक्षा के बारे में स्पष्टीकरण करते हुए लिखते हैं कि—देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। सभी आर्यावर्त का अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे क्योंकि दूध घी, बोल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।

दशम ससुल्लास में ही आगे लिखते हैं कि "देखो महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भूगोल के राजा, ऋषि, महर्षि आये थे, एक ही पाकशाला से भोजन किया करते थे। देखो, काबुल, कांधार, ईरान, अमेरिका, यूरोप आदि देशों की राजघरानों की कन्यायें गांधारी, माद्री, उलोपी आदि के साथ आर्यावर्त देशीय राजा लोग विवाह आदि व्यवहार करते थे। शकुनि आदि कौरव, पांडवों के साथ खाते पीते थे। कुछ विरोध नहीं करते थे। क्योंकि उस समय सर्व भूगोल में वेदोक्त एक मत था। उसी में सबकी निष्ठा थी। और एक दूसरे का सुख, दुःख, हानि, लाभ, आपस में अपने समान समझते थे। तभी भूगोल में सुख था।

तृतीय समुल्लास में स्त्री शिक्षा के बारे में विचार करते हुए लिखा है "देखो, आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्था। युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी क्योंकि जो न जानतीं होती तो केकयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकतीं? और युद्ध कर सकतीं? इसी समुल्लास में दृष्टान्त रूप में "पठन पाठन विधि" का वर्णन करते हुवे लिखते हैं—जैसे चक्रवर्ती राजा के राज्य में मांडलिक और भूमि वालों की प्रवृत्ति होती है। वैसे माण्डलिक राजादि के राज्य में चक्रवर्त्ती की प्रवृत्ति नहीं होती इसी प्रकार पाणिनी महर्षि ने सहस्र श्लोकों के बीच में अखिल शब्द, अर्थ और सम्बन्धों की विद्या प्रतिपादित कर दी है। उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि स्वामी जी की आंखों के सामने हर समय चक्रवर्ती साम्राज्य की भावना ही खड़ी रहती थी।

दशम समुल्लास में पूर्व पक्षी के "विदेश यात्रा करने पर आचार नष्ट होता है वा नहीं" इस प्रश्न के उत्तर में स्वामी जी ने अनेक ऐतिहासिक प्रमाण दे यह साबित किया है कि देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में जाकर व्यापार वाणिज्य तथा धर्म प्रचार वृद्धि अवश्य करनी चाहिये। उदाहरण के लिये लिखते हैं "माद्री पाण्डु की "ईरान" के राजा की थी और अर्जुन का विवाह पाताल में जिसको अमेरिका कहते हैं वहां के राजा की लड़की उलोपी साथ हुआ था। जो देश देशान्तर, द्वीप द्वीपान्तर न जाते होते तो ये सब बातें क्यों कर हो सकतीं मनुस्मृति में जो समुद्र में जाने वाली नौका पर लेना लिखा है वह भी आर्यावर्त से द्वीप द्वीपान्तर जाने के कारण है। और जब महाराजा युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ किया था उसमें सब भूगोल के राजा को बुलाने को निमंत्रण देने के लिये भीम, अर्जुन नकुल और सहदेव चारों दिशाओं में गये थे, जो मानते होते तो कभी न जाते। सो प्रथम आर्यावर्त लोग व्यापार राजकार्य और भ्रमण के लिये सब भू में घूमते थे।" जो मनुष्य देश देशान्तर और द्वीपान्तर में जाने वाले थे वे देश देशान्तर में स गम, रीति भांति देखने, अपना राज्य और व्य बढ़ाने से निर्भय, शूरवीर होने लगते और अच्छे वहार का ग्रहण, बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।

"क्या देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में या व्यापार किये बिना स्वदेश की उन्नति कभी सकती है? जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्य करते और परदेशी स्वदेश में व्यापार वा राज्य तो बिना दारिद्रय और दुःख के दूसरा कुछ भी हो सकता। पाखण्डी लोग यह समझते हैं कि हम इनको विद्या पढ़ावेंगे और देश देशान्तर में की आज्ञा देवेंगे तो ये बुद्धिमान होकर हमारे पा जाल में न फंसने से हमारी प्रतिष्ठा और जीविक हो जावेगी। इस लिये भोजन छादन में बखेड़ा हैं कि वे दूसरे देश में न जा सकें।

उपर्युक्त उद्धरणों में स्वामी दयानन्द जी म के हृदय की आग दिखाई देती है। वे आर्यों के वर्ती साम्राज्य के उपासक थे। मध्य काल में प ने प्रजा को अंधकार में रख कर विदेश य पराङ्मुख रक्खा था। परन्तु स्वामी जी ने साहित्य की आत्मा को हमारे सम्मुख खोल कर और बताया कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का गुंजाने वाले आर्य "वसुधैव कुटुम्बकम्" का हैं। वे विश्व को अमर संस्कृति परिवार समझ "सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा "आर्य इस दु नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में शान्ति फैलाने वा "द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः ... शांतिरेव श स्वामी जी कूप मण्डूक न थे परन्तु विश्व विश्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

— और ऋषि दयानन्द

वाचस्पति 'गुरुकुल सूपा' (नवसारी)] —

थे। उन्होंने वेदों में से संपूर्ण विज्ञानों ने बीज हमें प्रकृति विजय सिखाया है। 'समुद्रं गच्छ "दिवं गच्छ स्वाहा" "सूर्यं गच्छ स्वाहा" हम सब लोकों के यात्री हैं। आर्यों की सेना की ना रोक टोक के हर जगह के लिये है। मनु ने कहा है—"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रज- स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः" लोग समस्त संसार पर संस्कृति विजय किया ॥ वह विजय "अग्रतः चतुरो वेदान् पृष्ठत धनुः, इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शास्त्रादि शरादपि" के र ब्रह्म तथा क्षात्र शक्ति दोनों में हुआ करता है। धर्म के सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक धर्म ह ते कहना होगा कि जब भारतवर्ष वैदिक धर्म के का केन्द्र था और यहां से विद्वान प्रचारक देशों में जाया करते थे, तब भारत एक व्यापी राष्ट्र संघ का भी केन्द्र स्थान था। तब के सम्राट् बलुचिस्तान तिब्बत, अफगानिस्तान फारिस के स्थानीय राजाओं को सम्मति प्रदान करते थे। उन दिनों भारतीय लोग कम्बोडिया, लंका फिलिपाइन्स, रोम, यूनान, मिश्र आस्ट्रे- द्वीप, पेरू, मेक्सिको, न्यूज़ीलेन्ड, पूर्व तथा अफ्रिका में Colonisation (उपनिवेश) थे। ये आधुनिक यूरोपियन, अमेरिकन, अफ- आदि सभी हमारे पुरखाओं के वंशज हैं। इस को ऐतिहासिक लोगों ने प्रमाणित किया है। र रिवर्स ने "संस्कृति प्रसार" का सिद्धान्त स्था- किया था। परम्परा के आधार पर यह विश्वास जाता है कि इजिप्त, मिश्र तथा अन्य प्राचीन में संस्कृति का प्रसार सूर्य पुत्रों ने किया जिनकी वंशावली को पुराने भारत में ही ढूंढा जा है। थोड़े अरसे पूर्व अमेरिका में बुद्ध या भारतीय सन्त की मूर्तियां भारतीय वेश में ही मुद्रा में मग्न पैर पर पैर रक्खे हुए पाई गई है। यूरोपियन लोग पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहां सीता उत्सव मनाया जाता है। अमेरिका में एक की मिट्टी की मूर्ति खोदी गई है कि मेक्सिको में का प्रचार कहने वाला पूर्व से, लंका से आया जिसका नाम सालक टन्कट था। यह बात ण से मिलती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य संस्कृति का सारे संसार पर हुआ है। इस शताब्दि में यह स्वामी दयानन्द ने हमें बताया। और हमें अमर ा। वर्तमान युग में भी सार का विचार जगत् और भारतीय संस्कृ का ऋ ा है। देखिये—

(१) प्रो० मेक्समूलर "In lia what can it ch us" नामक ग्रंथ में ऋषि के बौद्धिक उत्कर्ष प्रशंसा करते हैं। इन्होंने "ऋग्वेदादिभाष्य का को पढ़कर अपने विचार बनाये हैं। क्योंकि एक वक्त इन्होंने ही वेदों को बा कों की ाड़ कहा था।

(२) Six System of India Philosophy नामक पुस्तक में इन्होंने लिखा है कि इन्द्र अग्नि, मातरिश्वा, प्रजापति, आदि एक ईश्वर के ही नाम हैं।

(३) सर एडवर्ड कार्पेन्टर अपनी "Art of creahion" पुस्तक में वेद के ऋषियों के विचारों को शोपनहार तथा विटमैन जैसे दर्शन एवं धर्म के विद्वानों के ऊँचे से ऊँचे विचारों के आदि स्रोत बताते हैं।

(४) बेल्जियम के प्रसिद्ध विद्वान् मेटरलिंक ने अपनी "The great secret" नामक पुस्तक के अग्रिम भाग में महर्षि को निर्दिष्ट करके वेद के भारत के प्राचीन गुरुओं के उच्च विचारों की पुस्तक प्रतिपा- दित किया है और मन्त्रों को अगाध बुद्धि का भंडार बताया है। बताने वाली ऋचा पर तो आश्चर्यमग्न हैं।

(५) सन् १९२३ में ग्लासगो यूनिवर्सिटी में गिल्फर्ड लेक्चर्स देते हुए अंग्रेज दार्शनिक अर्ल बाल- फोर ने विकासवाद के सिद्धान्त की आलोचना की है। "Thusm and Thought" नाम पुस्तक के २-२८ पृष्ठों में यह विषय आया है। आगे चलकर १०८, २०२, २३५ पृष्ठों में अर्ल बालफोर ने त्रैतवाद के स्वीकार की तरफ कदम उठाया है।

(६) डॉ. वार्ड "Pluralist" अनेक सत्तावादी दार्शनिक ने १९०७ से १९१० तक सेंट एण्ड्रूक यूनीव- र्सिटी में गिल्फर्ड लेक्चर्स देते हुए पुनर्जन्म के सिद्धांत की सत्यता स्वीकार की है। "Realm of and" नामक अपनी पुस्तक के २०४ पृष्ठ में लिखते हैं कि—

According to the pluralistic, as ac- cording to the leibnizion view, all the individuals there are, have existed from the first and will continue to exist indefinitely.

At any rate "Matempsychosis" in some form seems an unavoidable corollary thorough going panpsy- chiem 2/3 page.

अर्थात् 'लीबनीज़' के विचार की तरह अनेक सत्तावादी विचार भी यही है कि जो व्यक्ति अब विद्य- मान हैं वे सब पूर्व से विद्यमान हैं। और अनिश्चित समय तक विद्यमान रहेंगे। सर्वात्मवाद को उसके पूर्ण रूप में स्वीकार करने का एक अनिवार्य परिणाम यह कि किसी न किसी रूप में पुनर्जन्म के सिद्धान्त को अंगीकार करना होगा।

(७) अंग्रेज तात्विक जे. एस. मिल ऋषि दयानन्द का समकालीन था। वह अपनी "Liberty" पुस्तक में लिखते हैं—"To Individualty should belong the part of life in which it is chiefly the individual that is interested to society the part which chiefly in- terests society.

अर्थ—व्यक्ति के आधीन उसके जीवन का वह भाग होना चाहिये जिसमें व्यक्ति का अपना हित है और समाज के आधीन वह भाग जिसमें समाज का हित है। क्या यह आर्यसमाज के दसवें नियम से नहीं मिलता है?

उक्त महानुभाव धर्म की ओर विशेष रुचि न देखते हुए भी अपने "Three essays on Religion" के २४३ पृष्ठ में परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करते हुए प्रभु के सर्व शक्तिमान् होने के विषय में स्वामी दयानन्द के विचारों के साथ पूर्ण सहमत हैं। यह बात ठीक है कि मिल ने अपने को त्रैतवादी नहीं घोषित किया परन्तु उनकी प्रवृत्ति इसी ओर थी।

यह तो हुई विदेशी विद्वानों के विचारों में क्रान्ति, हिन्दुस्तान के बड़े २ धर्माचार्यों के विभाग महर्षि के विचारों को मानने लगे हैं। महात्मा गांधी, पं० मद- नमोहन मालवीय, पं० शिवशंकर जी जैसे हिन्दु नेताओं के वर्णाश्रम सम्बन्धी विचारों पर शनैः शनैः स्वामी जी का ही प्रभाव पड़ता रहा है। बुद्ध गया के महन्त ने १९२७ में Universal religion पुस्तक प्रकाशित कराई है। उसके विज्ञापन में दरभंगा और बनारस के महाराजाओं की सम्मतियाँ इस विषय में प्रमाण रूप में दी गई हैं। उसमें प्रकाशित सिद्धान्त सनातन धर्मानुकूल है। उसमें कहा गया है कि—मूर्तिपूजा वेद में नहीं, वैदिक धर्म हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सबके लिये है। वैदिक यज्ञ में पशुवध निषिद्ध है। यज्ञ का सबको हक है। वेद विरुद्ध त्याज्य है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि महर्षि ने हमें आर्यों के साम्राज्य का स्वप्न लेना ही नहीं सिखाया अपितु अपने आर्ष विचारों से संसार के विचारकों के मस्ति- ष्क को हिलाकर आर्य संस्कृति का साम्राज्य फैलाया है। रोमांरोलां ने कहा था कि भारत की शुष्क नाड़ियोंमें दयानन्द ने शेर का खून बहाया है। रूस के ऋषि टालस्टाय ने "सत्यार्थप्रकाश" को पढ़कर वैदिक धर्म पर उत्तम पुस्तक लिखते २ दिव्य मृत्यु को पाया है। जर्मन दार्शनिक नीट्शे ने पाठकों को उपदेश किया था कि—close thy Bible and open thy Manu" बम्बई के India Soceal Refor- mer ने घण्टाघोष किया था कि चूमने वाले पश्चिम और चूसे गये पूर्व की सभ्यताओं का जो संग्राम भारतवर्ष में चल रहा है, इसमें भारत ने आत्म-समर्पण करने की जगह पर राममोहनराय, दयानन्द तथा गांधी के रूप में अपना अटल झण्डा खड़ा किया है। और विश्व में साम्राज्य की नींव डाली है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ७ का शेष]

गुरुकुल जगत् में बड़े खेद के साथ अनुभव की जायगी परमात्मा उन्हें शांति दें। कुलवासियों ने यह प्रस्ताव पास किया है—

शोक प्रस्ताव

गुरुकुल माता के प्यारे और सुयोग स्नातक बन्धु श्रीयुत् देवराज जी विद्यालङ्कार (अमृतसरी) के असामयिक निधन पर समस्त कुलवासी अपना खेद प्रकट करते हुए उनके आत्मीय जनों के प्रति सम-वेदना और सहानुभूति का भाव प्रदर्शित करते हैं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह स्वर्गीय आत्मा को सद्गति और शांति प्रदान करे।

स्वास्थ्य समाचार

श्रेणी	नाम ब्र०	नाम रोग
१३	ओमप्रकाश	ज्वर
१२	जगदीश	,,
११	सत्यकाम	,,
११	जयदेव	,,
५	ईश्वरचन्द्र	,,
५	योगेन्द्र	,,
५	राजेन्द्रनाथ	,,
	वीरेन्द्र	,,
	चन्द्रकिशोर	,,
	वेदप्रकाश	,,
	रणवीर	,,
५	विश्वबन्धु	,,
५	दिलीप	,,
५	सुरेन्द्र	,,
५	सत्यप्रिय	,,
५	राजकिशोर	,,
५	रूपनारायण	,,
५	धर्मदत्त	,,
५	कर्मेन्द्र	,,
४	महीपाल	,,
४	श्रीकृष्ण	,,
४	भुवनमोहन	,,
४	रमेश	,,
४	महेन्द्रकुमार	,,
४	सहदेव	,,
४	राजेन्द्र मानपुर	,,
४	जगदीश नारायण	,,
४	कृष्णकुमार	,,
४	महीपाल	,,
४	मदन	,,
४	गोपालशंकर	,,
४	ओम् प्रकाश	,,
४	मनमोहन	,,
४	हरिदत्त	,,
३	सत्यपाल	,,
३	अशोक	,,
३	राघवेन्द्र	,,
२	जयदेव	,,
२	मुखदेव	,,
२	अनन्तकुमार	ज्वर
२	देवेन्द्र	,,
२	सत्यकेतु	,,
१	चन्द्रकान्त	,,
१	शरद्कुमार	,,
१	राजपाल	,,
१	भूपेन्द्र	,,
१	महेश	,,
१	विजय कुमार	,,
१	बलराम	,,
१	प्रभाकान्त	,,
१	धर्मवीर	,,
१	देवेन्द्र	,,
१	सुरेन्द्र	,,
१	ओम्प्रकाश	,,

गत सप्ताह मलेरिया से उपरोक्त रोगी हुए थे। अब सब स्वस्थ हैं। मलेरिया इन दिनों अधिक हुआ। उसके लिए उचित चिकित्सा की जा रही है।

कन्या गुरुकुल देहरादून समाचार

१. कन्या गुरुकुल देहरादून का १६ वां वार्षिकोत्सव बड़े दिनों की छुट्टियों में होगा। उत्सव को कामयाब बनाने के लिये अभी से प्रयत्न आरम्भ कर दिया गया है।

२. कन्या-गुरुकुल के प्रेमियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार को कन्या गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत किया है। पं० जी इससे पूर्व १७-१८ वर्ष तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता का कार्य सफलता पूर्वक करते रहे हैं और अब पिछले २ वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी में स० मुख्याधिष्ठा (व्यवसायाध्यक्ष) के तौर पर कार्य कर रहे हैं। सभा के आदेशानुसार पं० जी १६ अक्टूबर को कन्या गुरुकुल में पधार गये हैं और उत्साह से कार्य प्रारम्भ कर दिया है। पंडित सोमदत्त जी के पधारने से कन्या गुरुकुल को एक योग्य कार्यकर्त्ता मिल गया है। आप कन्या गुरुकुल की आर्थिक तथा प्रबन्ध सम्बन्धी कठिनाइयों का उचित प्रतिकार करने में समर्थ होंगे।

३. छात्राओं को शुद्ध तथा ताज़ा दूध पर्याप्त मात्रा में मिल सके इसलिये मौन्टगुमरी (साहीवाल) नसल की १२ गौएं जो औसतन १०-११ सेर दूध देने वाली हैं मंगा ली गई हैं, इनसे प्रतिदिन लगभग २। मन ताजा दूध छात्राओं को मिलने लग गया है। हमारा विचार शीघ्र ही और भी गाएं खरीदने का है, कन्याओं की शिक्षा से प्रेम रखने वाले तथा गोरक्षा के प्रेमी आर्य दानियों से प्रार्थना है कि वे इस कार्य के लिये दान देकर कन्या गुरुकुल की सहायता करें गोशाला के लिये भवन बनाने पर लगभग ५०००) व्यय होगा, जो महानुभाव मकान बनवायेंगे उनके नाम का शिलालेख मकान पर लगवा दिया जावेगा।

४. कन्याओं का स्वास्थ्य उत्तम है। चिकित्सालय में कुछ मलेरिया के बीमारों तथा आंखों के बीमारों को छोड़ कर कोई ब्रह्मचारिणी विशेष रोगी नहीं है।

———

(पृष्ठ २ का शेष)

ज्ञान का पर्य्यवसान कर्म में होता है। ज्ञान का अनुसरण करने के लिए ज्ञान के रक्षण और विवर्धन की नितान्त आवश्यकता है। किन्तु ज्ञान का प्रयोजन ? 'ज्ञान ज्ञान के लिए' यह सिद्धान्त प्रमादि का है। ज्ञान की सफलता कर्म्म में है। अतः कहता है—

'अनुल्बणं वयत जोगुवामपः'

ज्ञानानुसार कर्म्म करने वालों के उलझन कर्म्मों को करो। लोकोक्ति है—'लोकोऽयं कर्म्म बन्ध कर्म्म बन्धन का कारण हैं। वेद कहता है कर्म्म अनिवार्य्य है उनसे छूट नहीं सकते। अतः ऐसे करो जो उलझन को मिटाने वाले हों। न कि उल के बढ़ाने वाले। जो कर्म्म ज्ञानविरहित होंगे, ज्ञान विपरीत होंगे, वे अवश्य उलझन पैदा करेंगे। ऐसा न कर जिससे संसार की उलझनें और बढ़ें। तो पहले ही बहुत उलझा हुआ है। तुझे सूझता कि कौन सा अनुल्बण है और कौनसा उल्बण ? कोई अंगुलि पकड़ कर बताये। अच्छा, जहां तू है, वहां कोई ब्रह्मनिष्ठ भी। है या नहीं ? उन ब्रह्मनि का व्यवहार देखना, जो सत्यप्रिय, मधुरभाषी, निस सर्वहितकारी हों, देख, वे कैसे करते है ? उनका सरणकर, किन्तु ज्ञान को हाथ से न जाने देना, साधनों के अनुष्ठान से निस्सन्देह मनुष्यता सुल जाती है। किन्तु मनुष्यत्व के साथ वेद ने एक भी लगा दिया है।

जनया दैव्यं जनम् =दव्य जन पैदा कर।

मनुष्य को मनुष्यता की सारी सामग्री समा मिलती है, अतः उसे चाहिये कि वह भी समा कुछ दे जाये। समाज का सारा कार्य्य भार दे सहारे चलता है। प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। ऐसे सर्वहितकारी देवों का कुछ न कुछ प्रत्यु अवश्य करे। इस भाव को लेकर वेद ने कहा—

जनया दैव्यं जनम्।

दैव्य=देवहितकारी जन को कौन पैदा क क्या राक्षस, दस्यु ? कभी नहीं। अतः देवज कारी सन्तान उत्पन्न करने के लिये मनुष्य को स बनना पड़ेगा। अर्थात् मनुष्य बन कर जब उत्पन्न करने में प्रवृत्त होने लगे, तब उसके हृ कुकाम की कुवासना न हो, वरन् जन समाज, दे देवसमाज के हित की भावना हो।

वेद मनुष्य बना कर चुपके से देवत्व के मा ला खड़ा करता है।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज जगत्

आर्यसमाज गुरुकुल विभाग झेलम

र्षिक उत्सव १५, १६, १७ को बड़ी सफलता
ा गया—सभा की ओर से बड़े योग्य उपदे-
भाजनीक पधारे थे—स्वामी सुरक्षिता नन्द जी
चन्द्र जी व पं० मुनीश्वर देव जी के बड़े
ली व्याख्यान हुए। पं० पूर्णचन्द्र जी के
नों का मुसल्मान जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा
उन्होंने पं० जी से मिल कर अपनी
निवारण करके बहुत प्रसन्नता प्रकट की। म०
जी व म० गुल्शनलाल जी के बड़े प्रभाव
भजन व उपदेश हुए। म० देशराज जी के
जनों को जनता ने विशेष रूप से पसन्द
-१८ अक्तूबर को स्त्री समाज का उत्सव हुआ
स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, म० देशराज जी
गुल्शन लाल जी ने बहुत प्रभावशाली उपदेश
उत्सव हर प्रकार से सफल रहा। सभा का
है कि अधिष्ठाता वेदप्रचार जी ने बहुत
प्रबन्ध किया था। निम्नलिखित धन दिया

-वेदप्रचार विभाग १२५)
-दलितोद्धार विभाग २५)
-उपदेशक विद्यालय ५)
-विर्जानन्द पाठशाला ५)

राजारामसिंह मन्त्री

कन्या की आवश्यकता

२८ वर्षीय, आर्य्य समाजी, सुयोग्य वकील,
००० मासिक आय वाले युवक के लिए योग्य
आवश्यकता है पत्रव्यवहार श्री प० देवव्रत
न्द्र, आर्य्य मिशनरी दरियागंज देहली के पते
॥

समाज मिठा टिवाना के समाचार

क्करण संस्कार—महा सूर्यनारायण बतरा के
नाम-कर्ण संस्कार श्रीयुत डाक्टर ओ३म
जी प्रधान आर्य समाज ने वैदिक रीतिनुसार
महाशय जी ने उपस्थित नर नारियों में
बांटा और आर्यसमाज तथा पुत्री पाठशाला
दान दिये धन्यवाद (१) ला० शंकर दास
समपुत्र के पैदा होने पर अपने गृह पर हवन-
या सब स्त्री पुरुषों का हलवा से सत्कार किया
) दान दिया (३) आर्य समाज तथा वैदिक
ठशाला मिठाटिवाना जिला शाहपुर का वार्षिक
२२ से १४ अक्तूबर ४३ तक समारोहपूर्वक
गया जिसमें श्री स्वामी ज्ञानानन्द, स्वामी
न्द कंवर सुखलाल आर्य मसाफर पं० शान्ति-
पं० मनीश्वरदेव, पं० शान्तिस्वरूप वीर,
प्रेमदेवी उपदेशका, ठाकुर प्रतापसिंह जी,
म० देशराज, भद्रपाल, ब्रजलाल जी पधारे पं०
शान्ति प्रकाश, स्वामी ज्ञानानन्द तथा कुँवर सुखलाल
जी के भाषणों को विशेष पसन्द किया और उपस्थिति
इतनी होती थी कि जनता को पिंडाल में बैठने को
स्थान नहीं मिलता था अपील पर १८००) रुपये नकद
तथा वायदे के आर्य समाज तथा पुत्री पाठशाला
के लिये प्राप्त हुआ। उत्सव की सफलता के लिये
जहां आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का
धन्यवाद है वहां डाक्टर ओ३म् प्रकाश जी प्रधान
मास्टर धर्मचन्द मैनेजर पुत्री पाठशाला विशेष
धन्यवाद के पात्र हैं। (मंत्री)

—समाज का वार्षिक चुनाव २०-१०-४३ को आर्य
समाज मन्दिर में रात्रि के ६ बजे हुआ। उस समय
के प्रधान म० मुन्शीराम जी थे—चुनाव शान्ति पूर्वक
हुआ और नीचे लिखे अधिकारी चुने गये।

प्रधान—मलिक सूरज प्रकाश जी आनन्द। उप-
प्रधान—मास्टर मुलक राज जी। मन्त्री—रवीन्द्रनाथ
उपमन्त्री—म० प्रीतम जी। कोषाध्यक्ष—बिशनदास
जी। पुस्तकाध्यक्ष—म० सर्वदयाल जी। सभासद—
म० चमन लाल जी, म० रवीश चन्द्र जी।

रवीन्द्रनाथ मन्त्री

अकालियों की धमकी—

मालूम हुआ है कि अमृतसर के अकालियों ने
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को इस बात का
नोटिस दिया है कि आर्य समाज के मान्य ग्रन्थ
सत्यार्थप्रकाश में सिख मत के विरुद्ध जो जो बातें
लिखी हुई हैं अथवा खण्डन है उसको भाग को निकाल
दिया जाय। यदि उसे न निकाला गया तो एक भारी
आन्दोलन खड़ा कर दिया जायगा। पाठकों को विदित
होगा कि कुछ समय पहले सिन्ध के कुछ लीगियों ने
भी ऐसा ही शोशा छोड़ा था परन्तु कुछ दिन बाद ही
उसका कहीं पता न चला। सिन्ध गवर्नमैण्ट की ओर
से जब्ती आदि का प्रतिवाद कर दिया गया था—

———

आर्य जनता से निवेदन

इस वर्ष वस्तुओं के अधिक मँहगी हो जाने के
कारण गुरुकुल के वार्षिक बजट में २६०००) के घाटे
का अनुमान किया जा रहा है। बस्तुओं के भाव में
उत्तरोत्तर और भी वृद्धि होते जाने के कारण इस घाटे
की रकम के बढ़ जाने की भी पूरी संभावना है। अतः
आर्य जनता से निवेदन है कि वह इस पर पूरा ध्यान
देकर अभी से धन एकत्र करने के कार्य में कटिबद्ध हो
जायँ ताकि उनकी प्रिय संस्था को किसी प्रकार से
घाटे की सम्भावना न रहे। हर्ष का विषय है कि
अनेक संरक्षक महानुभावों तथा आर्य सज्जनों ने गुरु-
कुल-कार्यालय से पुरुषार्थ निधि की रसीदबुकें मँगवा
कर चन्दा एकत्र कर भेजना प्रारम्भ कर दिया है।
अन्य भाइयों को भी धन एकत्र कर शीघ्र ही भेजना
प्रारम्भ कर देना चाहए।

गुरुकुल समाचार

ऋतु-समाचार

गुरुकुल कांगड़ी में इन दिनों शीघ्रता से ऋतु परिवर्तित हो रही है। दिन में धूप की अधिकता के कारण कुछ गर्मी अनुभव होती है; रात्रि के समय पर्याप्त सर्दी पड़ती है। इस ऋतु-वैषम्य का प्रभाव कुल वासियों पर थोड़ी-बहुत मात्रा में पड़ा है। ऋतु के उलट-फेर के कारण आजकल मलेरिया ज्वर की शिकायत अधिक अंश में सुनी जा रही है। गुरुकुल का स्वास्थ्य विभाग इस बीमारी को दूर करने में प्रयत्नशील है।

श्री श्रद्धानन्द सेवाश्रम का कार्य

गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय से संलग्न श्री श्रद्धानन्द सेवाश्रम आज कल निकट-वर्ती ग्राम निवासियों की अच्छी सेवा कर रहा है। प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में मलेरिया, टायफायड, निमोनिया आदि के बीमार श्री श्रद्धानन्द-सेवाश्रम से धर्मार्थ औषधियाँ लेकर आशातीत लाभ उठा रहे हैं। गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय में गरीब तथा असहाय रोगियों के लिए ५० सीटों का प्रबन्ध है जिन पर रोगियों को मुफ्त दवा-दारू, भोजन, बिस्तर तथा वस्त्रादि की व्यवस्था की गई है। दुष्काल के इन दिनों में श्री श्रद्धानन्द-सेवाश्रम पहिले से भी अधिक उत्साह और तत्परता से रोगियों की सेवा करना चाहता है किन्तु अर्थाभाव इसके मार्ग में बाधक हो रहा है। धनी-मानी उदार दानियों को इस शुभ-कार्य में शीघ्र सहायता भेजनी चाहिए।

नवीन आचार्य

आयुर्वेद महाविद्यालय के नवीन आचार्य श्रीयुत राम रक्ष जी पाठक गुरुकुल में उपस्थित हो गए हैं। प्रथम कार्तिक से आयुर्वेद महाविद्यालय की बागडोर आपने अपने हाथ में ले ली है। आप साधु स्वभाव के अनुभवी तथा विद्वान् चिकित्सक हैं। आपके द्वारा आयुर्वेद महाविद्यालय को पर्याप्त लाभ पहुंचने की आशा है।

स्वर्गीय स्नातक देवराज जी अमृतसरी

गुरुकुल कांगड़ी के लोकप्रिय और योग्य स्नातक श्री देवराज जी विद्यालंकार (अमृतसर निवासी) का हृदय की गति बन्द हो जाने से अवसान हो गया है। यह समाचार जानकर कुलवासियों को बहुत खेद हुआ है। उनके सम्मान और शोक में कुलवासियों ने निम्न लिखित प्रस्ताव भरे हुए दिलों के साथ पास किया है। श्री स्नातक देवराज जी गुरुकुल जीवन में एक अति उत्तम खिलाड़ी और वक्ता थे। वे बड़े मिलनसार प्रसन्न वृत्ति के व्यक्ति थे। गुरुकुल से बाहर जाकर भी अपने व्यवसाय आदि में वे बहुत सच्चे और चोखे माने जाते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया था और अपनी सेनाओं व त्याग के कारण वे जन-प्रिय बन सके थे। एक ऐसे लोक सेवक स्नातक की क्षति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[शेष पृष्ठ ६ पर]

हिन्दी की अवस्था--उन्नति के उपाय

श्री ला० बृजलाल जी बी. ए. एल, एल, बी

१९३१ में पञ्जाब की संख्या २८४९०८५७ थी, जिस में से १५५६११९४ पुरुष और १२९२९६२३ स्त्रियां थीं। कुल जन संख्या में ५६.५४ प्रतिशत मुसलमान, २६.८३ प्रतिशत हिन्दु और १२.८८ प्रतिशत सिक्ख। पढ़े लिखों की कुल संख्या ११३३०२२ थी, जिन में ९९०१८० पुरुष और १४२८४२ स्त्रियां थीं। उर्दू भाषा जानने वालों की कुल संख्या ८३९२५२, हिन्दी भाषा जानने वालों की कुल संख्या २७३१९२ और गुरमुखी जानने वालों की कुल संख्या १६७१११ थी। हिन्दुओं में से ३१२०२४ पुरुष और १४५२६ स्त्रियां उर्दू भाषा जानती थीं। हिन्दी जानने वाले हिन्दु पुरुषों की संख्या १२६२२८ और स्त्रियों की संख्या ३२८३२ थी। मुसलमानों में जहां ३३६०४५ पुरुष और ३८४४९ स्त्रियां उर्दू जानती थीं, वहां केवल ११९० मुसलमान पुरुष और ५१ मुसलमान स्त्रियां हिन्दी जानती थीं। उपर्युक्त संख्याओं से यह स्पष्ट है कि जहां एक ओर बहुत कम मुसलमान पुरुष और स्त्रियां हिन्दी पढ़ी हुई थीं वहां बहुत अधिक संख्या में हिन्दु पुरुष और स्त्रियां उर्दू पढ़े हुए थे। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इस का क्या कारण है कि इतनी संख्या में हिन्दु पुरुष और स्त्रियां पंजाब में उर्दू जानती हैं जब कि हिन्दी जानने वाले मुसलमान पुरुष और स्त्रियों की संख्या बहुत कम है। इसका कारण यह है कि जहां दूसरे प्रान्तों मे बोलचाल की भाषा अदालती भाषा होती है, वहां पंजाब में ऐसा नहीं। पंजाब की बोलचाल की भाषा पंजाबी है। परन्तु अदालती भाषा उर्दू है। सन् १९३१ की जनसंख्या के अनुसार पंजाब में १४५१५०९० मनुष्य पंजाबी बोलते थे, अर्थात् ५०९ प्रति सहस्र पंजाबी बोलने वाले थे इसके मुकाबले में हिन्दुस्तानी अर्थात् उर्दू तथा हिन्दी बोलने वालों की संख्या ३९८८००० थी। जिनमें से अम्बाला कमिश्नरी की संख्या ३१८२००० थी। जैसा कि स्पष्ट है कि अम्बाला कमिश्नरी की भाषा हिन्दी है न कि उर्दू। यदि अम्बाला कमिश्नरी की संख्या को कुल संख्या में से निकाल दें, तो उर्दू बोलने वालों की जन संख्या ८०६००० रह जाती है। यह एक विचित्र बात है कि जहां दो करोड़ पचासी लाख के लगभग लोग निवास करते हों और उनमें से ५० प्रतिशत की भाषा पंजाबी हो और केवल ३ प्रतिशत से भी कम की भाषा उर्दू हो, वहां उर्दू को राजनीतिक भाषा के उच्चसिंहासन पर स्थापित कर दिया जाय। उर्दू भाषा के प्रचार का यह एक कारण है।

दूसरा कारण यह हैं कि यदि शिक्षाविभाग की ओर से प्रकाशित शिक्षाक्रम के अनसार पंजाब के अन्दर उर्दू, हिन्दी और पंजाबी को समता प्राप्त है, परन्तु क्रियात्मक रूप में ऐसा नहीं। १९३९-४० की शिक्षाविभाग की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब प्रान्त में लड़कों के लिए गवर्नमेंट के आधीन १२ प्राइमरी, १० मिडल और ८३ हाई स्कूल थे। इनमें से एक भी ऐसा स्कूल नहीं था कि जहां हिन्दी भाषा माध्यम हो,इसी प्रकार एक भी ऐसा लड़कों का हाई स्कूल डिस्ट्रिक्ट बोर्डों और म्युनिसिपल कमेटियों के आधीन नहीं था जिसमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो और केवल—मिडल स्कूलों और ५१५१ प्राइमरी स्कूलों ऐसे ६ मिडल स्कूल और ४३ ऐसे प्राइमरी स्कूल थे जिनमें माध्यम केवल हिन्दी था और ४० ऐसे मिडल स्कूल और ८३ ऐसे प्राइमरी स्कूल थे जिनमें उर्दू तथा हिन्दी माध्यम थे। इससे स्पष्ट है कि पंजाब प्रान्तीय सरकार की नीति के अनुसार हिन्दी भाषा के पढ़ने के लिए वे सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं जो कि उर्दू के लिए है। जहां दूसरे प्रान्तों की सरकारें जिन में हिन्दुओं की जन संख्या अधिक है, उदाहरणस्वरूप यू..पी, सी. पी. और बिहार, मुसलमानों के लिए साधारण स्कूलों के अन्दर भी उर्दू माध्यम का प्रबन्ध करती है और विशेष स्कूल भी खोलती हैं पंजाब, प्रान्तीय सरकार कोई ऐसी सुविधा हिन्दुओं को नहीं दे रही। हिन्दू बच्चों को विवश होकर उर्दू पढ़नी पड़ती है।

(१) मैट्रिकुलेशन परीक्षा में हिन्दी के मुकबले में उर्दू पढ़ने वालों की जनसंख्या बहुत अधिक है यद्यपि हिन्दू विद्यार्थियों की संख्या दूसरी जातियों के विद्यार्थियों की संख्या से कुछ अधिक है।

(२ विकल्प में हिन्दी लेने वालों की संख्या १९३९ में ४४१७ थी, किन्तु भूगोल इतिहास में हिन्दी माध्यम रखने वालों की संख्या १८३१ थी। इससे स्पष्ट है कि उन विद्यार्थियों की बहुसंख्या भी जो हिन्दी को विकल्प में लेते हैं भूगोल-इतिहास का माध्यम हिन्दी नहीं रखती।

(३) वर्नेकुलर फाइनल में जहाँ उर्दू को प्रथम भाषा के रूप में लेने वालों की संख्या बहुत अधिक है और द्वितीय भाषा के रूप में उर्दू को पढ़ने वालों की संख्या बहुत कम है, वहाँ हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ने वाले बालकों की संख्या हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में पढ़ने वालों की संख्या से अधिक है।

(४) हिन्दी को प्रथम तथा द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या उर्दू को प्रथम तथा द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या से बहुत अधिक है।

उपर्युक्त परिणामों से यह स्पष्ट है कि उर्दू अदालती भाषा होने के कारण हिन्दू बालकों की रुचि हिन्दीकी अपेक्षा उर्दू की ओर अधिक है, किन्तु कन्याओं की दशा में ऐसा नहीं। प्रान्तीय सरकार की से जहाँ सरकारी तथा लोकलबाडीज़ के आधीन कन्या पाठशालाओं में हिन्दू कन्याओं के लिए हिन्दी माध्यम का पर्याप्त प्रबंध है वहाँ बालकों के स्कूलों में ऐसा नहीं।

तीसरा कारण यह भी है कि जो अध्यापक गवर्नमैण्ट तथा लोकलबाड़ी के स्कूलों में काम करते हैं, वे केवल उर्दू भाषा ही जानते हैं और इसलिए वे हिन्दी लेने वाले विद्यार्थियों के उत्साह को भंग करने का भरसक प्रयत्न करते रहते हैं। शिक्षा विभाग के आधीन अध्यापकों की शिक्षा के लिए जो स्कूल खुले हुए हैं उनमें से किसी में भी हिन्दी माध्यम नहीं।

अब मैं हिन्दी प्रचार के कुछ साधनों का वर्णन करना चाहता हूँ, जिनको कार्यरूप में लाकर हम हिन्दी भाषा की उन्नति कर सकते हैं।

(१) प्रत्येक संरक्षक का यह कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी भाषा के द्वारा करावे।

(२) प्राइवेट स्कूलों के अधिकारी अपकारी अपने स्कूलों के अन्दर हिन्दी भाषा को ही प्रारम्भिक भाषा का स्थान दें।

(३) हिन्दू बहुसंख्या वाले ज़िलों के अन्दर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्कूलों में हिन्दी पढ़ाने का पर्याप्त प्रबन्ध किया जावे।

(४) सरकारी अध्यापकों शिक्षालायों में हिन्दी को यथोचित स्थान दिया जावे। और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कम से कम दो भाषाओं का जानना आवश्यक हो।

(५) जो अध्यापक इस समय कार्य कर रहे हैं उन सब के लिए नियत समय में हिन्दी या गुरमुखी का जानना आवश्यक कर दिया जाय।

(६) युवकों को हिन्दी सिखाने के लिए धार्मिक संस्थाओं की ओर से रात्रि पाठशालाएँ खोली जावें।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबन्ध लोकल बाडीज़ के आधीन है यदि हिन्दू अधिक संख्या वाले ज़िलों के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्यों पर ज़ोर डाला जाय तो बहुत रूप से हिन्दी माध्यम वाले स्कूलों की संख्या बढ़ा जा सकती है।

(शोक प्रस्ताव)

"गुरुकुल रायकोट की यह सभा गुरुकुल के सहायक तथा संरक्षक दानवीर सेठ खेमचन्द जालन्धर वालों के आकस्मिक निधन पर हार्दिक प्रकट करती है और प्रभु से प्रार्थना करती है मृत की आत्मा को सद्गति प्राप्त हो तथा दुःखी वार में शांति लाभ हो।

—परमानन्द

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...ी विद्याव्रत एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

Regd L. N. 3004

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ५०
वार्षिक मूल्य ४)
२२ कार्तिक २००० विक्रमी
७ नवम्बर १९४३ ई०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

(Saharupur कांगड़ी

अध्यात्म सुधा

[श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज]

फ़सादियों को नीचा दिखा

इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
अधमं गमया तमो यो अस्मां अभि दासति ॥
अ. १ २१।२

(इन्द्र) राजन् ! सेनापते ! (नः) हमें (मृध) हिंसालों को (वि) विशेष रूप से (जहि) मार दे । (पृतन्यतः) फ़साद की कामना करने को (नीचा) नीचे दबा दे । (यः) जो (अस्मान्) हमको (दासति) दबाना चाहता है बाँधना चाहता है, (अधमं) घोर (तमः) अन्धकार में (नय)

वर्णानां वैचित्र्यात्' मनुष्य समाज में भले बुरे प्रकार के मनुष्य होते हैं । राष्ट्र का हित इसी में स्थिर शान्ति रहे । अशान्ति और उपद्रव के विद्या, शिल्प, व्यवसाय आदि देशोन्नतिकारक योगों का ह्रास होता है, वृद्धि नहीं होती । राष्ट्र का कर्त्तव्य है कि वह प्राणपण से देश में स्थापित रखे । राष्ट्रवासीजन राष्ट्रपति से कह —

वेन इन्द्र मृधो जहि । इन्द्र राजन् । हमारे मसलने वालों को मार दे ।

ा का कर्त्तव्य है कि प्रजा पीड़कों को, चाहे वे थ ही क्यों न हों, मार दे । प्रजा राज्य का मूल स प्रकार किसी वृक्ष का मूल मसल देने से उस बाढ़ रुक जाती है, और वह क्रमशः सूखकर आ गिरता है, इसी प्रकार यदि प्रजा को र्मचारी, अथवा चोर डाकू व अन्य आततायी दि मसलते रहें, पीड़ित करते रहें, और उसका प्रतीकार न किया जाये, तो उसके सूख जाने ही अन्त में सूखेगा । राज्य के साथ राजा, ति भी समाप्त । अतः राष्ट्रवासियों की यह मांग कि 'विन इन्द्र मृधो जहि' सर्वथा उचित और मान्य है । अ. १।२१।३ में मानों इस मांग का विस्तार है —'विरक्षो विमृधो जहि विवृत्रस्य हनू रुज राक्षसों को, प्रजोत्पीड़कों को मार दे और प्रजा शोषक के हनु तोड़ दे । अर्थात् प्रजाघाती दुष्टों को कठोर से कठोर दण्ड देना चाहिये । प्रजा की दूसरी मांग है—'नीचा यच्छ पृतन्यतः फ़सादियों को नीचा दिखा, दबा दे ।

फ़साद, फ़ितना=उपद्रव के कारण प्रजा में विह्वलता तथा विकलता बढ़ी रहती है, इससे प्रजा कोई भी सत्कार्य्य नहीं कर सकती । जिन देशों में राष्ट्र प्रबन्ध की अव्यवस्था के कारण सदा पृतना=फ़ितना=फ़साद=उपद्रव झगड़े होते रहते हैं, वे देश जीवोपयोगी सामग्री के लिये सदा परमुखापेक्षी ही रहते हैं । राष्ट्रपति का यह एक प्रधान कर्त्तव्य है कि देश की अन्तरङ्ग शान्ति स्थिर रखे । ऋ. १०।१५२।२ में इन्द्र=राजा के संबन्ध में कहा गया है—

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी । वृषेन्द्रः पुरएतु नः सोमपा अभयंकरः ॥

राजा स्वस्तिदा=कल्याणदाता, शान्तिप्रदाता, प्रजापालक, पापनाशक, प्रजोत्पीड़कों का नियन्त्रणकारी, सुखवर्षक, ऐश्वर्यरक्षक, और अभयङ्कर=भयरहित करने वाला हमारा नेता हो ।

राजा का काम है कि प्रजा में स्वस्ति स्थापन कर और प्रजा के ऐश्वर्य्य की रक्षा द्वारा उनको निर्भय करता हो । अन्तरङ्गशान्ति के साथ बाह्य आक्रमणों से भी रक्षा करना राजा का धर्म्म है—

"अधमं गमया तमो यो अस्माँ अभिदासति"

उन्हें घोर अन्धकार में पहुंचा, जो हमें बांधना चाहता है ।

राजा यदि परराज्यापहारी से प्रजा की रक्षा न करेगा, तो अपना राज्य नष्ट कर बैठेगा ।

स्वाध्याय सन्दोह से उद्धृत

यदङ्ग दाशुषे

[श्री स्वामी व्रतानन्द जी महाराज]

ओ३म् यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि ।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ।

ओ३म् तभी करता कल्याण । हम जब करते हैं शुभदान ॥
ध्रुवपद

जो सृष्टि को रचने हारा ।
वह सब सुख को देने हारा ॥
भद्र दुर्गति का उसको ज्ञान ॥१॥ ओ३म्०

ओम् दुर्गति को दूर करेगा ।
भद्र शीघ्र ही पूर करेगा ।
देख हमें सच्चे दानवान् ॥२॥ ओ३म्०

क्रतु तब ही रंग में जेता हो ।
ओ३म् शतक्रतु जब नेता हो ।
दान करेंगे सब सामान ॥३॥ ओ३म्०

धर्म देश हित देंगे जीवन ।
श्रोत्र चक्षु वाणी तन मन धन ।
अपना प्राण और सन्मान ॥४॥ ओ३म्०

हम बदले में कुछ नहीं लेंगे ।
कष्ट मिलेगा सब सह लेंगे ।
नित्य करेंगे दान महान् ॥५॥ ओ३म्०

निन्दक का उपकार करेंगे ।
दुःखद के घर सौख्य भरेंगे ।
दानी का प्रभु को है ध्यान ॥६॥ ओ३म्०

दानी चर्वर भू सम होता ।
पाता याचक जैसा बोता ॥
दान रहित ऊसर दुःख खान ॥७॥

ओ३म् तभी करता कल्याण ।
हम जब करते हैं शुभदान ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक चमत्कार

[ले०—श्री बा० पूर्णचन्द जी एडवोकेट आगरा]

ओ३म्—सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे सं नो वसून्या भर ॥

ऋ० १०.१९१.१

अन्वय (हे) वृषन् अर्य अग्ने! विश्वानि ईत सं समिद्युवसे (च) ईळः पदे समि ईध्यसे—सः नो वसूनि आ भर।

अर्थ—हे परमात्मन् आप महान बलयुक्त हैं आप परम पूजनीय हैं आप संसार के सब पदार्थों में समत्व स्थापित करते हैं-आपका चमत्कार सारे विश्व में व्यापक व अमर है। इस सारी पृथिवी पर भी और वाणी द्वारा भी—हम आप से प्रार्थना करते हैं कि आप सब पदार्थ हमें प्रदान करो।

यह सारा विश्व 'ज्ञानि' जगत एक चमत्कार है। इस में एक सुन्दर समन्वय है। सब चीज विधि पूर्वक मिलाई हुई है। युवा अवस्था में है। जीवन की प्रत्येक दशा में महान आकर्षण होता है चाहे मनुष्य जगत हो। चाहे पशु जगत चाहे वृक्ष जगत है। इस जीवन में प्रत्येक प्रकार की शक्तियां का समन्वय होता है। एक विधि विधान होता है। कुछ नियम काम करते हुये दिखाई देते हैं। यौवन या युवा अवस्था तक पहुंचने में जो नियम काम करते हैं उनका ज्ञान प्राप्त करना पदार्थ विज्ञान का कार्य है। परन्तु यदि केवल उन नियमोंका पता लगाकर रह जाना अधूरा ज्ञान है। अपूर्ण ज्ञान है। यह भी तो जानना है कि यह सब नियम किस के आधार पर किस के सहारे काम कर रहे हैं। यह जानते ही अनुभव होता है कि इस युवा अवस्था में जो कुछ चमत्कार है वह उस महान बल शाली ईश्वर का है। यह युवक उसके चमत्कार को प्रकाशित करता है। इस मंत्र म दो शब्द बहुत विचारणीय ('युवसे-' व 'सम-ईध्यसे) यज्ञ में समिधा डालने से प्रकाश बढ़ाता है। ज्वाला उत्पन्न होती है। इस संसार रूपी यज्ञ में जो कुछ विचित्र व आकर्शक रचना है वह इस यज्ञ के प्रकाश को बढ़ाती है। अर्थात यह संगतिकरण युवा अवस्था देव पूजा का आवश्यक अंग है देव पूजा के भाव उत्पन्न होते हैं। इस संसार में जो समन्वय है उस के दो आवश्यक अंग हैं। ज्ञाता एक, ज्ञान एक। Knower एक Known ज्ञाता के लिये ज्ञान की आवश्यकता Thypets and speech दोनों की जरुरत है। 'जीव आत्मा' में ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है। 'ज्ञान' उसका स्वभाव है परन्तु उस में ज्ञान निमित्त के ही उत्पन्न होता है वह निमित ज्ञान का आदि मूल ईश्वर है, इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने के लिये ज्ञान जगत की आवश्यकता है। इस ज्ञान जगत में जो ज्ञान प्राप्त करने योग्य पदार्थ हैं। इस ओर ध्यान देंगे।

उन्होंने किसी निमित्त के आधार पर हो तो ऐसा धारणा किया है। अर्थात उनमें सुन्दरता-सत्यता-आकर्षण किसी महाशक्ति के आधार पर ही उत्पन्न हुआ है इस लिये हमारे ज्ञान से और ज्ञान प्राप्त युक्त जगत के देखने पर ईश्वर की सत्ता और चमत्कार प्रगट होती है।

भौतिक पदार्थ विज्ञान इतनी उन्नति करले कि इस ज्ञान जगत पर विचार करते करते उस महान शक्ति निमित कारण तक पहुंच जावे तो पदार्थ विज्ञान अपूर्व कोण और धर्म का सहायक व पुष्टि करने वाला होगा—धर्म और विज्ञान में जो विषमता है वह स्वमेव मिट जायेगी।

ऐसे चमत्कार को देख कर हमारा कर्तव्य है कि हम (१) ईश्वर को ही पूजनीय मानकर उस के पूजने के लिये तत्पर रहें। उसके अतिरिक्त दूसरी शक्ति को न पूजे (२) इस विषय में प्राणी मात्र से से हमारे अन्दर संगति कर्ण व प्रेम व संगठन के भाव हो। हम दूसरों के सुख व उपकार में अपना उपकार जाने हो (३) चमत्कार के प्रकाश हमारे प्रत्येक कर्तव्य में हो-हम संसार के सब पदार्थों को अपने सच्चे उद्योग से प्राप्त करते हैं। प्रार्थना करे व प्राप्त करे परन्तु प्राप्त करके दान' के भावों का प्रभाव में अर्थात धन उपार्जन में उदासीनता न हो परन्तु दान व पर उपकार में संकोच न होना चाहिये।

इस प्रकार यदि हम इस वेद मन्त्र पर यत्न करे तो हमारे धार्मिक जीवन के लिये बड़ा सुन्दर शिक्षा प्राप्त होता है। हमारे अन्दर ईश्वर की सत्ता के भाव उत्पन्न होते हैं। सार्वजनिक संगठन उत्पन्न होता है। और हमारा जीवन ज्ञान व कर्म दोनों की दृष्टि से पूर्ण उन्नति प्राप्त किया हुआ हो जाता है महर्षि दयानन्द इस सत्य को अनुभव करते हैं। इस लिये उन्होंने आर्य समाज के पहले नियम मे ही यह शिक्षा दी है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।

इस एक नियम से ही आस्तिक भाव प्रकट करने की शिक्षा मिलती है।

कई बार उनसे कहा है कि आप लोगों को जेबों को तो टटालते हैं लकिन उन्हें हितोपदेश नहीं करते। आप लोगों का चाहिए कि अपना चारित्र-निर्माण कर तीर्थ पर आने वाले यात्रियों के जीवनमार्ग का पथ प्रदर्शक बनें। मेरे विचार में यह एक उपादेय सम्मति होगी। मुलतान के इलाकों में विशेष प्रचार किया जाए, उनके मिथ्या विश्वासों को तोड़ा जाय—क्योंकि मुलतान के लोग बारहमासी यात्रा करते हैं। उन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि वे तो सर्वथा अशिक्षित हैं। किसी विश्व विद्यालय का स्नातक (Graduate) यदि पुराने विश्वासों को सच्चा मानकर मन्दिरों का चक्कर लगाये तो विस्मय होता है। शिक्षा के प्रचार से हम इस सुधार की योजना में अवश्य सफलीभूत होंगे। यह कुछ विचार मैंने हरिद्वार की सुधार-योजना के विषय में प्रस्तुत किये हैं। आशा है जाति के नेता

हरिद्वार और सुधार-योजना

[श्रीयुत—सहदेव चक्रवर्ती गुरुकुल काँगड़ी]

पुराण पन्थी हिन्दुओं की दृष्टि में तीर्थ अत्यन्त महत्व है। तीर्थ-पद्धति चिरकाल से आती है। तीर्थों का उपक्रम सभ्यता के विक साथ ही हुआ था। संसार के विख्यात ऐति श्रीयुत एच. जी. वेल्स के मतानुसार प्रारंभ में में रहने वाले पण्डित और पुरोहित विचारों के (Leaders of Thoughts) समझे जाते थे के भिन्न २ कर्तव्य थे—जिनमें तिथिक्रम तथा क्रम का निर्देश एवं विचारों की सुरक्षा इत्यादि माने जाते हैं? कहते हैं कि योरोप का ऐति पिता हेरोडोटस जिस समय इतिहास लिखने मिस्र, मेसोपोटामिया के इतिहास-लेखन में पण्डितों (पण्डों) से उसे पर्याप्त सहयोग नह यता मिली थी। किन्तु तीर्थों के वर्तमान स्व देखते हुए हमें अत्यन्त निराशा अनुभव हो हिन्दुओं के भारत में नाना तीर्थ पाये जाते हैं के चारों कोनों में तीर्थों का बोल बाला है। अमरनाथ, रामेश्वर, गया, काशी यह प्रसिद्ध और हरिद्वार तीर्थों का राजा है। यहां केवल पर ही विचार करेंगे।

वर्तमान युग संगठन का युग है। एक होने से ही जातियां संगठित हुआ करती हैं जाति को संगठन की अत्यन्त आवश्यकता स्थान पर लोगों का जमघट हो, वहां संगठ पर्याप्त सुविधा रहती है किन्तु वह जमघट किस काम का जो निरर्थक एवं आपद्ग्रस्त हो पर हरिद्वार में हज़ारों की संख्या में लोग ए हैं—उन्हें देख कर एक ज्ञानी व्यक्ति उन्हें मूर्ख भेगा यदि लोग हरिद्वार की किसी उद्देश्य करें तो जाति का अत्यन्त कल्याण होगा। पाखण्ड तथा प्रपंच की महिमा है। इस प और लोगों की प्रवृत्ति न होने देने का एक शिक्षा-प्रचार है। अभी तक हमारे देश में अत्यन्त अभाव है। जिस प्रान्त के लोग अधिक संख्या में आते हों वहां लोगों को शिक्षा' अवश्य देनी चाहिए। आलोचना तर्क-वितर्क वर्तमान शिक्षा—पद्धति की विशेषताएं हैं। आर्यसमाजी अन्ध विश्व विश्वास-विश्वासी नहीं है और सनातनी लो रोक्त दोषों का अधिकार है—इसका एक यह है कि आर्यसमाजी लोग पुरातन औ शिक्षाओं का समन्वय करते हुए उन निहित क्रियान्वित करते हैं। मेरे विचार में गुरु प्रणाली ही इस कार्य के लिए उपादेय ह हिन्दू जनता को चाहिए कि वह इस शिक्ष सर्वप्रिय बनाने का प्रयत्न करे।

लोग हरिद्वार में जाते हैं और जाते इस तीर्थ यात्रा में कोई भी व्यक्ति अव सकता। हम तो चाहते हैं कि लोग ए एकत्र होकर देश और जाति के भविष्य करें। हरिद्वार के कई पण्डित लोग मेरे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य
रविवार २२ कार्तिक
वि० सं० २०००

समाज वच्छोवाली लाहौर का वार्षिकोत्सव—
२७ २८ नवम्बर को मनाया जायगा। इस
र पर पंजाब में आर्यसमाज आन्दोलन की
ा पर विचार किया जायगा। उसे उन्नत करने के
ों पर विचार किया जायगा। इस समय विश्व-
ी युद्ध के कारण मानव समाज के सामने नई २
स्याएँ उपस्थित हो रही हैं। इन समस्याओं के
ण मानव समाज के संगठन में भारी परिवर्तन
हे हैं। इस समय आवश्यकता इस बात की है
इन परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए कार्य संचालन
ति में परिवर्तन किये जांय। संसार में मानवजाति
परमात्मा-आत्मा का संदेश सुनाने वाले धर्म
ब्बा मजहब—इस समय शक्ति हीन और बेबस
रहे हैं। उनकी बात को कोई नहीं सुनता। स्वतन्त्र
ों में भी इन धर्म—संस्थाओं के संचालकों को
ई नहीं पूछता—भारतवर्ष जैसे राजनैतिक दृष्टि से
धीन, सामाजिक दृष्टि से निर्बल देश में तो उनका
सर ही नहीं। ऐसे विषम समय में आर्य समाज को
या करना चाहिए। विशेषता पंजाब के आर्यसमाजों
था आर्य भाइयों को क्या करना चाहिए। इस प्रश्न
म्भीर-विचार करने के लिये आर्यसमाज लाहौर
च्छोवाली का वार्षिकोत्सव अनुकूल समय है। आर्य-
माज के उच्चकोटि के विद्वान्—संन्यासी महात्माओं
ो निमन्त्रण किया जा चुका है। वर्तमान समय की
चीदी समस्याओं पर विचार करने के लिये विशेष
म्मेलनों की योजना की जा रही है। इस समय ऋषि
यानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश पर कई प्रकार की
मालोचनाएं की जा रही हैं। विविध सम्प्रदायों के
छेक अदूरदर्शी प्रचारक और संस्थाएं उसके कुछेक
गों को पुस्तक में से निकालने की मांगें पेश कर
हे हैं।

इस यथोचित उत्तर देने के लिये इस अवसर
'सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सम्मेलन' अर्थात्
त्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार करने के
यों पर विचार किया जायगा। इस विषय में
आर्यसमाजों तथा आर्यभाइयों को चाहिए कि वह
पने प्रस्ताव तथा विचार मन्त्री आर्यसमाज वच्छो-
ली के पास भेजें, इस समय इस बात की आवश्यकता
कि सत्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार
या जाय। इस समय तक आर्य जनता तथा आर्य
माज के रुपये तथा दान से संचालित संस्थाओं में
ी सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ाने का नाम मात्र का प्रबन्ध
। आर्य कन्यापाठशालाओं, आर्य हाई स्कूलों तथा
. ए. वी. कालेजों में इसकी शिक्षा अनिवार्य होनी
चाहिए। आर्यसमाजों के अधिकारियों के लिये आवश्यक होना चाहिए कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं अनुशीलन व अध्ययन न किया हो—ऐसे व्यक्तियों को समाज में कोई पद न दिया जाय जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन न किया हो। हरेक आर्य समाज को वर्ष में एक बार सत्यार्थ प्रकाश की कथा—अवश्य करानी चाहिए। यह प्रचार ही सत्यार्थ प्रकाश की दशा का उत्तम और अचूक साधन है। इसी उद्देश्य से इस सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सम्मेलन में विचार किये जायेंगे। इसी प्रकार से उस समय आर्यों के सामने सामाजिक दिक्कतें—पारिवारिक अड़चनें—विवाह आदि अवसरों पर आती हैं—उन पर भी इस अवसर पर विचार किया जायगा।

इस उत्सव पर पंजाब के आर्य वीर दलों की Rally की भी योजना की जा रही है पंजाब के आर्य वीर दलों को इस अवसर पर पहुंचना चाहिए। आर्य समाजों को चाहिए कि इस अवसर पर अपने २ शहर से कीर्तन मंडलियां बना कर लायें—उनकी सहायता तथा सहयोग से—नगरकीर्तन तथा संकीर्तन किया जायगा।

पिछले कई महीनों से आर्य जनता यह मांग पेश कर रही थी कि पंजाब के आर्य भाइयों तथा आर्य समाजों में जो परस्पर वैमनस्य तथा मतभेद विद्यमान हैं, या समय समय पर झगड़े पैदा हो जाते हैं—उनको दूर करने के लिये गोलमेज कान्फ्रैंस—अथवा आर्य-सम्मेलन किया जाना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने आर्य समाज लाहौर वच्छोवाली के अवसर पर इस प्रकार की कान्फ्रैंस बुलाने का निश्चय किया है। इस विषय में आवश्यक निमन्त्रण-पत्र सम्बद्ध व्यक्तियों तथा समाजों के पास भेजे जायेंगे, परन्तु जो भाई इस विषय में कोई प्रस्ताव पर विचार पेश करना चाहते हों वह शीघ्र मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पास भेज दें।

इस उत्सव पर एक विशेष योजना यह भी की गई है कि व्याख्यानों तथा सम्मेलनों के साथ २ जो भाई प्राणायाम, योगाभ्यास तथा आत्मिक-उन्नति के लिये साधना आदि के विषय में अनुभवी व्यक्तियों से लाभ उठाना चाहते हैं उनकी जिज्ञासा को भी शान्त किया जाय। समाज की प्रार्थना पर श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस वर्ष २२ नवम्बर से सात दिन तक लाहौर रहने की कृपा की है। इसी प्रकार से अन्य अनुभवी महानुभावों की सेवा में भी निवेदन किया जा रहा है। इस लिये जो भाई प्राणायाम आदि के विषय में परामर्श तथा सहायता लेना चाहते हैं उनको भी इस अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

आर्य भाइयों को अभी से आर्य समाज वच्छोवाली के वार्षिकोत्सव पर आने की तैयारियां शुरू कर देनी चाहिएं।

आर्य प्रादेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती—

२६, ३०, ३१ अक्तूबर को डी. ए. वी हाई स्कूल में आर्य प्रादेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती समारोह के साथ मनाई गई। पंजाब के आर्य भाई इसमें उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए। वेद सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, हिन्दी सम्मेलन, भक्ति सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलन रखे गये। श्री सर उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश भी इस अवसर पर विशेष रूप से पधारे। इन तीन चार दिनों लाहौर शहर में विशेष रौनक तथा समारोह रहा। सत्यार्थ प्रकाश रक्षा सम्मेलन श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के सभापतित्व में हुआ। बंगाल की दुर्भिक्ष परिस्थिति, तथा युद्ध कालीन परिस्थितियों और श्री ला० खुशहाल चन्द जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा के मिलनसार स्वभाव के कारण इस अवसर पर लाख रुपया एकत्र हुआ। जहां तक उत्साह प्रदर्शन तथा मेले के बाहरी प्रदर्शन का सम्बन्ध है स्वर्ण जयन्ती महोत्सव लाहौर की जनता के लिये आकर्षण का केन्द्र बना रहा। विशेष कर संगीत तथा भजनों की अत्यन्त रौनक रही। स्वर्णजयन्ती महोत्सव से पूर्व महायज्ञ भी रचा गया। आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा कार्यक्रम की दृष्टि से इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का क्या प्रभाव पड़ता है, यह समय बतायेगा। हम आशा करते हैं कि आर्य प्रादेशिक सभा के अधिकारी इस अवसर के उपलक्ष्य में भावी कार्यक्रम निश्चित करते हुए अपनी शिक्षण-संस्थाओं को आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के लिये अधिक से अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने के लिये भरसक यत्न करें।

रोमां रोलां का स्वर्गवास और पुनर्जन्म—

गत सप्ताह हमने समाचार प्रकाशित किया था कि प्रसिद्ध फ्रांसीसी स्वतंत्र विचारक का जर्मनी में देहान्त हो गया है। और उस समय हमने उनके जीवन पर उनके विचारों के विषय में सम्पादकीय कालमों में विचार भी प्रकट किये थे। परन्तु अब समाचार प्राप्त हुआ है कि यह समाचार सत्य नहीं है वह अभी जीवित हैं। यह समाचार जानकर—समाचार पत्र जगत् में उनके पुनर्जन्म की बात सुन कर हरेक स्वतंत्रताभिमानी को प्रसन्नता होगी। इस समय संसार में जो अशान्ति और मारकाट दिखाई दे रही है—उसके कारण पैदा होने वाली समस्याओं को शान्ति पूर्वक हल करने में श्री रोमां रोला जैसे निर्भीक सूक्ष्म दर्शी विचारकों की आवश्यकता है। हम इस अवसर पर मृत्यु समाचार के असत्य होने पर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करते हैं। भारतीय स्वतंत्रता तथा सभ्यताभिमानियों के लिये भी यह प्रसन्नता का अवसर है। सौभाग्य—विरलों को ही प्राप्त होता है जो मृत्यु बाद किये जाने वाले—जनता के सम्मति प्रकाशन

शेष पृष्ठ ६ पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भौतिक पदार्थों में शान्ति — शान्ति अन्दर से प्राप्त होती—

—[श्री स्वामी ओमानन्द जी

ऐसे विकट समय में जब सारा मनुष्य समाज हिंसा असत्य स्तेय, परिग्रह, काम, क्रोध, लोभ, मोह भय, और अहंकार आदि आसुरी वृत्तियों से प्रेरित हुआ अधर्म अत्याचार और जनसंहार में प्रवृत हो रहा है। सब ओर अधर्म और अज्ञान का अन्धकार छाया हुआ है, केवल परमात्मा के ज्ञान के प्रकाश का ही सहारा हो सकता है। इस लिये मनुष्यों की प्रवृत्ति को ईश्वर भक्ति की ओर लगाने का यत्न करना अति कल्याणकारी है।

शान्ति की खोज:—

एक कंगाल भिखारी से लेकर बड़े २ सम्राट तक सब शान्ति की खोज में लगे हुए हैं। हमारे जितने भी कार्य होते हैं उनमें केवल मात्र शान्ति की प्राप्ति का ही ध्येय होता है। किन्तु परिणाम में अशान्ति ही अशान्ति सामने आती है। पाश्चात्य देशों ने आधुनिक काल में जितनी भौतिक वैज्ञानिक उन्नति की हैं उसका उदाहरण पृथिवी के इतिहास में बहुत कम मिलेगा, किन्तु उसका फलरूप संसार में प्राणी मात्र के लिए अत्यन्त घोर दुःख ही दुःख दिखलाई देता है। नाना प्रकार के अद्भुत् अविष्कार मनुष्यों के सुख और शान्ति को नष्ट करने के काम में ही आ रहे हैं। पाश्चात्य देश के वह विद्वान् जिनको अपने भौतिक वैज्ञानिक अविष्कारों पर बड़ा घमण्ड था व स्वयं वह अपने मुख से कह रहे हैं कि यह सारी आत्म ज्ञान से शून्य भौतिक उन्नति ही इतनी भयंकर फैली हुई अशान्ति का कारण हुई है।

शान्ति अन्दर से प्राप्त होती है न कि बाहर से:—

वास्तव में शान्ति तो अन्दर से ही प्राप्त होती है बाहर से नहीं। जिस चेतन तत्व से सारी प्रकृति और भौतिक पदार्थों में ज्ञान नियम और व्यवस्था पूर्वक क्रिया हो रही है। जो परमात्मा सब के अन्दर रहते हुए सब को जीवन प्रदान कर रहे हैं वहाँ शान्ति की खोज करनी चाहिये। मोती सागर की तली में होते हैं उसके किनारे पर केवल कूड़ा कर्कट ही होता है। जिनको मोती की चाह है वह डुबकी लगा कर अन्दर से प्राप्त करें। किनारे पर इनको प्राप्ति का यत्न करना वायु में गढ़ बनाने के समान है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥ ईश० १५

अर्थ:—आदित्यमण्डलस्थ ब्रह्म का मुख ज्योतिर्मय पात्र से ढका हुआ है। हे पूषन्! मुझ सत्यधर्मा को आत्मा की उपलब्धि कराने के लिए उसे उघाड़ दे।

परमात्मा के निर्गुण शुद्ध स्वरूप का मुख त्रिगुणमयी प्रकृति की चमकीली चकाचौंध करने वाली चादर में छिपा हुआ है। इस चादर को हटा कर ही उसके वास्तविक स्वरूप को देख सकते हैं।

सांख्य और योग:—

सांख्य और योग में उसके देखने तथा जानने के साधन विशेष रूप से बतलाये गये हैं। इस लिये सांख्य और योग ही प्राचीन वेदान्त फिलासफी है। यथा—

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः॥ श्वेता० ६।१३

अर्थ:—नित्यों का नित्य, चेतनों का चेतन, जो अकेला ही बहुतों की कामनाओं को रचता है, उस देव को जो कारण है, और सांख्य और योग से जानने योग्य है, जान कर सारी फांसों से छूट जाता है।

योग और सांख्य के सिद्धान्तों के अनुसार सारे बन्धनों के कारण पांच क्लेश हैं। यथा—

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः २।३

अर्थ:—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिविवेश यह पांच क्लेश हैं जो सब बन्धनों और दुःखों के मूल कारण हैं। जिनके द्वारा हम बहिर्मुख होकर संसार चक्र में घूम रहे हैं।

अविद्याक्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्॥ २।४

अर्थ:—पांचों क्लेश चार प्रकार के होते हैं।

(१) प्रसुप्त—वह क्लेश है जो अपने विषय आदि के अभाव काल में अपने कार्य को आरम्भ नहीं कर सकते जैसे बाल अवस्था में विषय भोग की वासनायें दबी रहती हैं।

(२) तनु—वह क्लेश है जो ज्ञान वैराग्य तप आदि द्वारा शिथिल कर दिये गये हों किन्तु उनकी वासनायें सूक्ष्म रूप से चित्त भूमि में बनी रहती हों।

३) विच्छिन्न—वह क्लेश जो किसी दूसरे बलवान क्लेश से दबे हुए शक्ति रूप से हों। जैसे द्वेष अवस्था में राग और राग अवस्था में द्वेष।

(४) उदार—वह क्लेश है जो विषय को पाकर अपने कार्य में प्रवृत हो रहे हों जैसे व्युत्थान अवस्था में साधारण मनुष्यों में होते हैं। जिस प्रकार पृथिवी में रहकर बीज उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार अविद्या के क्षेत्र में रहकर ही यह चार अवस्था वाले क्लेश बन्धन रूपी फल देते हैं। अविद्या ही इन सब क्लेशों का मूल कारण है। अविद्या का लक्षण—

अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या॥ २।५

अर्थ:—अनित्य में नित्य, अपवित्र में पवित्र, दुःख में सुख और अनात्मा में आत्मा का ज्ञान अविद्या है। अर्थात् जिसमें जो धर्म नहीं हैं उसमें उसका भान होना अविद्या का सामान्य लक्षण है।

इस अविद्या के कारण सब से प्रथम जड़ चित्त और चेतन्य आत्मा में विवेक जाता रहता है तब जड़ चित्त में आत्मा का भाव आरोप हो जाने से उसमें और आत्मा में अभिन्नता प्रकट होने लगती है। इससे अस्मिता क्लेश उत्पन्न होता है, जिसका लक्षण इस प्रकार है

दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता॥ २।६

अर्थ:—दृष्टृशक्ति और दर्शनशक्ति का एक स्वरूप जैसे भान होना अस्मिता क्लेश है।

पुरुष दृष्टा है, चित्त दिखाने वाला उसका एक करण है। पुरुष चेतन्य है, चित्त जड़ है पुरुष क्रिया रहित है, चित्त प्रसव धर्मी अर्थात् क्रिया वाला है। पुरुष निर्गुण और केवल है, चित्त त्रिगुणमय है। पुरुष अपरिणामी है, चित्त परिणामशील है। पुरुष स्वामी और चित्त उसकी सम्पत्ति मिलकियत है। इस प्रकार यह दोनों अत्यन्त भिन्न हैं। पर अविद्या के कारण दोनों में भेद की प्रतीति जाती रहती है। इस अविद्या क्लेश के कारण मन इन्द्रियों और शरीर में आत्म भाव अर्थात् ममत्व और अहमत्व पैदा हो जाता है और उसके सुख पहुंचाने वाले विषयों और वस्तुओं में राग उत्पन्न हो जाता है जिसका लक्षण इस प्रकार है।

सुखानुशयी रागः॥ २।७

अर्थ:—सुख के पीछे जो चित्त में उसके भोग की इच्छा रहती है वह राग है। अर्थात् शरीर इन्द्रियों और मन में आत्म-अध्यास हो जाने पर जिन वस्तुओं और विषयों से उन में सुख प्राप्त होता है उन में और उनके प्राप्त करने के साधनों में जो इच्छा रूप तृष्णा और लोभ पैदा हो जा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...की खोज करना व्यर्थ है
...है न कि बाहर से

...नगराज, बिहार]—

...सके जो संस्कार चित्त में पड़ जाते हैं उसी का नाम राग क्लेश है।

यह राग ही द्वेष का कारण है, क्योंकि चित्त में राग का संस्कार जम जाने पर जिन वस्तुओं शरीर इन्द्रियों और मन में दुःख प्रतीत हो अथवा जिन से सुख के साधनों में विघ्न पड़े उनसे द्वेष ...लगता है जिसका लक्षण इस प्रकार है।

दुःखानुशयी द्वेषः ॥ २८॥

अर्थः—दुःख के अनुभव के पीछे जो घृणा की वासना चित्त में रहती है उस को द्वेष कहते हैं। ...त्त जिन वस्तुओं अथवा जिन साधनों से दुःख प्रतीत होता हो उनसे जो घृणा और क्रोध हो ...के जो संस्कार चित्त में पड़ें उस को द्वेष क्लेश कहते हैं।

द्वेष क्लेश ही अर्थात् शरीर इन्द्रियों आदि को दुःखों से बचाने के संस्कार ही अभिनिवेश ...कारण हैं। जिसका लक्षण इस प्रकार है।

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा रूढ़ोऽभिनिवेशः ॥२९॥

अर्थः—(जो मरने का भय हरेक प्राणी में) स्वभावतः बह रहा है और विद्वानों के लिये भी ...ा ही प्रसिद्ध है (जैसा कि मूर्खों के लिये) वह अभिनिवेश क्लेश है।

अभिनिवेश के अर्थ हैं 'मा न भूवं भूया समिति' ऐसा न हो कि मैं न होऊं किन्तु मैं बना रहूं। ...शरीर विषयादिभिर्मम् वियोगो मा भूदिति'। शरीर और विषय आदि से मेरा वियोग न हो। आत्मा ...रूर अमर है। यथाः—

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ गी०।
न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। गीता।२।१९.२०

अर्थः—जो इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इस को मरने वाला समझता ...वे दोनों ही नहीं जानते हैं। यह आत्मा न मरता है न मारा जाता है। १९।

यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है, न मरता है अथवा न यह होकर फिर, न होने ...ला है, क्योंकि यह अजन्मा नित्य शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नाश होने पर भी इस का ...श नहीं होता है।

फिर भी राग द्वेष के कारण शरीर में आत्म ध्यास हो जाता है और मूर्ख से लेकर विद्वान ...क अपने वास्तविक आत्म स्वरूप को भूलकर भौतिक शरीर की रक्षा में लगे रहते हैं और उसके नाश ...घबराते हैं। इस मृत्यु के भय के जो संस्कार चित्त में पड़ जाते हैं उन्हीं को अभिनिवेश कहते हैं। ...अभिनिवेश क्लेश ही सकाम कर्मों का कारण हैं, जिनकी वासनायें चित्तभूमि में बैठकर वर्तमान ...था अगले जन्मों को देने वाली होती है। यथाः—

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्म वेदनीयः ॥२॥१२

अर्थ—क्लेश जिनकी जड़ है ऐसे कर्मों की वासनायें वर्तमान और अगले जन्मों में भोगने ...योग्य हैं। इन्हीं कर्माशयों के अनुसार ही इनका जाति, आयु और भोग होता है। यथाः—

सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः ॥ २।१३॥

अर्थ—अविद्यादि क्लेशों को जड़ के होते हुए उस कर्माशय का फल जाति, आयु और ...ोग होता है।

जन्म आयु और भोग में पाप और पुण्य के अनुसार सुख दुःख मिलता है यथा—

ते ह्लादपरिताफलाः पुण्यापुण्य हेतुत्वात् ॥२।१४।

अर्थ—वे जन्म आयु और भोग सुख दुःख देने वाले होते हैं क्योंकि उनके कारण पुण्य और ...पाप हैं।

पुण्य अर्थात् अहिंसात्मक दूसरों को सुख पहुंचाने वाले कर्मों से जन्म, आयु और भोग में ...सुख मिलता है। पाप अर्थात् हिंसात्मक दूसरों को दुःख पहुंचाने वाले कर्मों से दुःख मिलता है।

इस प्रकार क्लेशों द्वारा क्रमानुसार बहिर्मुख होते हुए संसार चक्र में घूमते हुए इन नाना प्रकार के दुःखों को प्राप्त होते हैं।

अष्टाङ्ग योग अन्तर्मुख होने का उपाय

इसी क्रम से अन्तर्मुख होते हुए इन क्लेशों की निवृत्ति का उपाय अष्टाङ्ग योग है।

यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यान, समाधयोऽष्टावंगानि ॥२।२९॥

अर्थ—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि यह आठ योग के अंग हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार यह पांच सम्प्रज्ञात समाधि के बहिरंग साधन हैं और धारणा, ध्यान और समाधि ये तीनों अन्तरंग साधन हैं किन्तु ये तीनों असम्प्रज्ञात समाधि के बहिरंग साधन हैं। असम्प्रज्ञात समाधि का अन्तरंग साधन "नेति २" रूप पर वैराग्य है के द्वारा चित्त से अलग आत्मा के साक्षात्कार करने वाली विवेक ख्याति रूप सात्विक वृत्ति का भी निरोध होकर स्वरूप अवस्थिति प्राप्त होती है। अविद्या और अस्मिता आदि क्लेश धारणा ध्यान और समाधि में तनु होकर विवेक ख्याति रूप अग्नि में दग्ध बीज हो जाते हैं और असम्प्रज्ञात समाधि द्वारा अपने धर्मी चित्त के अपने कारण में लीन होने से उन का भी लय हो जाता है।

सांख्य फिलासफी—

योग और सांख्य दोनों में अन्तर्मुख होने के लिये अष्टाङ्ग योग के यम नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार पाँच बहिरंग साधन समान हैं, किन्तु जहाँ योग में सालम्बन अर्थात् धारणा, ध्यान, और समाधि द्वारा किसी विषय को आलंम्बन अर्थात् सहारा=ध्येय बनाकर अन्तर्मुख होते हैं, वहां सांख्य में निरालम्बन अर्थात् बिना किसी विषय को आलंबन=सहारा ध्येय बनाकर अन्तर्मुख होते हैं। उस में धारणा ध्यान और समाधि के स्थान में "चित्त और उसकी वृत्तियें दोनों ही त्रिगुणात्मक हैं, इसलिये गुण ही गुणों में वर्त रहे हैं" इस भावना से आत्मा को चित्त से पृथक्, अकर्त्ता और केवल रूप में देखना होता है। 'यह आत्म साक्षात्कार कराने वाली विवेक ख्याति रूप एक गुणों की ही सात्विक वृत्ति है, इस प्रकार वैराग्य द्वारा इस वृत्ति के विरुद्ध हो जाने पर परमात्मा प्राप्ति स्वरूप अवस्थिती को प्राप्त होते हैं।

उत्तम अधिकारियों के लिये शीघ्रतम असम्प्रज्ञात समाधि-लाभ का उपाय 'ईश्वर प्रणिधान।'

ईश्वर प्रणिधानाद्वा ॥ २ ॥ २३ ॥

अर्थ—अथवा ईश्वर प्रणिधान से (उत्तम अधिकारियों को) शीघ्रतम समाधि लाभ होता है।

ईश्वर का लक्षण—

क्लेशकर्म विपरकाशयैरपरा मृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ॥ २ ॥ २४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[शेष ६ पृष्ठ पर]

[५ पृष्ठ का शेष]

अर्थ—क्लेश, कर्म, कर्मों के फल और वासनाओं से असंबध अन्य पुरुषों से विशेष (विभिन्न उत्कृष्ट) चेतन ईश्वर है । ईश्वर की सर्वज्ञता—

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञ बीजम् ॥ २ ॥ २५ ॥

उस पूर्वोक्त ईश्वर में सर्वज्ञाता का बीज बढ़ती रहित है ।

पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥ २ ॥ २६ ॥

अर्थ—वह ईश्वर पूर्व उत्पन्न हुये ब्रह्मादिकों का भी गुरु है क्योंकि वह काल से परिच्छिन्न नहीं है ।

ईश्वर का नाम—

तस्य वाचकः प्रणवः ॥ २ ॥ २७ ॥

अर्थः—उस ईश्वर का बोधक शब्द ओ३म् है ।

ईश्वर प्रणिधान का लक्षण

तदजपस्तदर्थ भावनम् ॥ २ ॥ २८ ॥

उस ओ३म् शब्द का जप और उसके अर्थ भूत ईश्वर का ध्यान करना ईश्वर प्रणिधान है ।

जिस उपासना में उपासक का ध्येय उपास्य के गुणों को धारण करना अर्थात उसके तद्रूप होना होता है । ईश्वर के अनंत गुण हैं किन्तु योगियों को अविद्यादि क्लेश और सकाम कर्मों से जो सारे बन्धनों का कारण हैं मुक्त हो कर परमात्मा स्वरूप में अवस्थित होना है इस लिये उन को अपनी उपासना में इतने ही ईश्वर के लक्षण पर्याप्त हैं ।

ओ३म् की मात्राओं से उपासना

ओम् में अकार, उकार और मकार तीन मात्रा में हैं और चौथा अमात्र विराम हैं । ओ३म् के अर्थों की भावना करते हुए वाणी से जप करना एक मात्रा वाले अकार की उपासना है । इस प्रकार की उपासना में स्थूल शरीर का अभिमान रहता है इस लिये स्थूल शरीर के सम्बन्ध से जो आत्मा की संज्ञा विश्व है वह उपासक होता है और स्थूल जगत के संबंध से जो परमात्मा की संज्ञा विराट है वह उपास्य होता है । ओ३म् के मानसिक जाप में २ मात्रा वाले अकार उकार की उपासना होती है इस उपासना में सूक्ष्म शरीर का अभिमान रहता है इस लिये सूक्ष्म शरीर के सम्बन्ध से जो आत्मा की संज्ञा तैजस है वह उपासक होता है और सूक्ष्म जगत के सम्बन्ध से जो परमात्मा की संज्ञा हिरण्यगर्भ है वह उपास्य होता है ।

जब मानसिक जाप भी सूक्ष्म होकर केवल ओ३म् का ध्यान ही रह जाये तो यह तीन मात्रा वाले पूरे ओ३म् की उपासना है इस में कारण शरीर का अभिमान बना रहता है इस लिये कारण शरीर के संबंध से आत्मा की जो संज्ञा प्राज्ञ है वह उपासक होता है और कारण जगत के संबंध से जो परमात्मा की संज्ञा ईश्वर है वह उपास्य होता है । जब यह तीन मात्रा वाली ध्यान रूप वृत्ति भी निरुद्ध हो जावे तो मात्रा का विराम रह जाता है । यह अणु शरीर और कारण जगत दोनों से परे केवल शुद्ध परमात्मा प्राप्ति रूप स्वरूप अवस्थिति है जो प्राणी मात्र का अन्तिम ध्येय है ।

कार्य क्षेत्र में योगियों का व्यवहार

कर्म, आसक्ति, फलों की इच्छा और वासना से बन्धन का कारण बनता है किन्तु योगी जन आसक्ति और लगाव को छोड़ कर कर्म और उसके फल को ईश्वर समर्पण करके अपने को केवल उसका एक समझ एक कारण उसकी इच्छा को पालन करते हुए आप ने कर्तव्य रूप कर्मों को करते हैं । इस लिये वे उसके बंधन का कारण नहीं बनते ।

कर्मशुक्ला कृष्णां योगिनस्त्रिविधमितरेषान् ॥४।७॥

योगी का कर्म न पुण्य वाला होता है न पाप वाला क्योंकि योगी पाप कर्म हिंसा आदि तो कर ही नहीं सकता क्योंकि वह उस के लिये सर्वदा त्याज्य हैं और पुण्य कर्म परोपकारादि निष्काम भाव से ईश्वर समर्पण करके करता है इसलिये कर्ता पने का अभिमान न होने से उसके सब कर्म अकर्म रूप ही हैं । दूसरे साधारण लोगों के पाप पुण्य और पाप पुण्य से मिश्रित तीन प्रकार के कर्म होते हैं । कार्य क्षेत्रमें योगियों के व्यवहार रूप कर्तव्य को गीता कर्म विस्तार पूर्वक दर्शाया है । यथा:—

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोतियः
लिप्यते न स पापेन पद्म पत्र मिवाम्भसा ॥१०॥
कायेन मनसा बुद्ध्या केवलै रिन्द्रियैरपि
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संङ्ग त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥११॥
युक्तःकर्मफलं त्यक्त्वा शान्ति माप्नोति नैष्ठिकीम्
अयुक्ता कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥१२।गी०५

अर्थ—जो पुरुष सब कर्मों को परमात्मा में अर्पण करके और आसक्ति को त्याग कर करता है वह पुरुष जल से कमल के पत्ते के सदृश पाप से लिप्त नहीं होता ॥ १० ।

योगी केवल इन्द्रिय, मन, बुद्धि और शरीर द्वारा भी आसक्ति को त्याग कर अन्तःकरण की शुद्धि के लिये कर्म करते है ।११।

योगी कर्मों के फल को परमेश्वर के अर्पण करके परमात्मा प्राप्ति रूप शान्ति को प्राप्त होता है और अयोगी फल से आसक्त हुआ कामना के द्वारा बंधता है ।

[पृष्ठ ३ का शेष]

जीवनकाल में ही सुन सकें—मृत्यु समाचार प्रकाशित होने के बाद—अपने मृत्यु सम्बन्धी लेखों को पढ़कर—या उस सम्बन्ध में जनता द्वारा प्रकट किये गये भावों को जानकर श्रीयुत रोमां रोला के हृदय में क्या २ भावनाएं पैदा हुई होंगी—इसका अनुभव वह स्वयं ही कर सकते हैं परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उन भावनाओं को पढ़कर उनके हृदय से अपने जीवन को अधिक से अधिक लोकोपयोगी बनाने की भावना पैदा हुई होगी ।

दीपक से

[ब्रह्मचारी श्री विश्वनाथ द्वादश श्रेणी गुरुकुल

दीपक ! एकाकी रजनी में
क्या गुपचुप गाया करते हो ?
तुम ने रघुपति का मान किय
ऋषि को तुमने निर्वाण दि
तुम क्यों भूली सी स्मृतियों
फिर याद दिलाया करते हो
तुम तेजस्वी कहलाने को
रवि सदृश दिवस मनाने को
क्यों व्यर्थ गगन में चढ़ने की
योजना बनाया करते हो ?
अब भी श्रम पर विश्वास कि
जीवन में उज्ज्वल हास लि
क्या नभ में हँसते तारों
संगीत सिखाया करते हो
तुम असफलता में सफल हुए
तुम निर्बलता में सबल हुए
तुम किस विरही के नयन-
युगल के अश्रु उठाया करते हो ?
तुम उन्नत आशा की वि
तुम धन्य धन्य गौरव प्र
निर्जीव हुए तुम जीवों
सन्मार्ग दिखाया करते हो
दीपक ! एकाकी रजनी में
क्या गुप चुप गाया करते हो ?

मुझ को देख रहा है कोई

[ब्रह्मचारी श्री विश्वनाथ द्वादश श्रेणी गुरुकुल

सभी ओर मैं दृष्टि घुमाऊँ
सभी ओर ही निर्जन पाऊँ
नहीं जानता मम कृत्यों को
छिप कर देख रहा है कोई ।
मुझ को देख रहा है
नहीं दृष्टि से मिलता कोई
कैसे मिले बताये कोई
शायद आँख मूँद कर देखें
छिपा हुआ मिल आये कोई ।
मुझ को देख रहा है
बहुत ध्यान से दीख रहा है
अन्दर छिप कर देख रहा है
ध्यान लगाकर देखो छिप कर
सब कुछ देख रहा है कोई ।
मुझ को देख रहा है
बैठा हृदय यज्ञ शाला में
यह मेरी अन्तर्ज्वाला में
सत्य सरलता विश्व प्रेम की
आहुति डाल रहा है कोई ।
मुझ को देख रहा है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

या समाजों के उत्सव तथा प्रबन्ध

पुरा (करनाल)—१२ से १४ नवम्बर-प्रबन्धक पं० खेमचन्द, पं० महेन्द्रसिंह, पं० शम्भुनाथ जी, स्वामी वेदव्रत जी, म० दुर्गा चन्द जी।

नौ १२ से १४ नवम्बर—स्वामी योगानन्द जी, पं० तीर्थराम जी, प० सदाशिव जी, पं० शान्ति स्वरूप जी, म० गुलशन जी, म० ब्रज लाल जी,

लायलपुर १२ से १४ नवम्बर—श्री स्वामी वेदानन्द जी, पं० पूर्णचन्द जी, पं० द्रौपदी देवी जी, पं० वीरेन्द्रकुमार जी, म० रामनाथ जी, म० शामशेर जी, म० जयप्रकाश जी।

रावलपिण्डी १२ से १४ नवम्बर—पं० राम स्वरूप जी पाराशरी, पं० शान्ति प्रकाश जी, पं० क्षितीशकुमार जी, पं० शिवदत्त जी, म० हरिश्चन्द्र जी, म० भक्तराम जी, म० मेहरचन्द जी।

घरौंडा १२ से १४ नवम्बर—पं० समरसिंह जी, पं० हरपाल जी, हज़ारी लाल जी, सेवाराम जी।

जड़ांवाला १६ से २१ नवम्बर—चिरंजीत लाल जी वानप्रस्थी, श्री म० वेदानन्द जी महाराज, पं० रामस्वरूप जी पाराशरी, प० पं० शिवनारायण जी, म० देशराज जी, म० भद्रपाल जी.

बन्नू १६ से २१ नवम्बर—स्वामी योगानन्द जी, पं० गुरुदत्त जी, श्री स्वामी वेदानन्द जी, म० गुलशन जी, म० हरिश्चन्द्र जी,

जण्डयाला १६ से २१ नवम्बर—पं० मुनीश्वर देव जी, पं० हरपाल जी, प० शिवदत्त जी, म० हज़ारी लाल जी, म० सेवाराम जी,

डेरागाज़ीखां १६ से २१ नवम्बर—पं० शान्ति प्रकाश जी, पं० तीर्थराम जी, प० लोकनाथ जी, पं० द्रौपदी देवी जी, म० तेजभान जी, म० बालकृष्ण जी, म० जयप्रकाश जी,

मीरपुर १६ से २१ नवम्बर—पं० सदाशिव जी, प० हरदयालु जी, पं० सत्यदेव जी, पं० रामस्वरूप जी शर्मा, म० रामनाथ जी, म० बलराम जी, म० भक्तराम जी,

रावलपिण्डी सदर १६ से २१ नवम्बर-पं० क्षितीशकुमार जी, पं० गुरुदत्त जी, पं० समरसिंह जी, म० मेहरचन्द जी, म० शमशेरसिंह जी।

विद्यालय-प्रवेश-सूचना

श्री दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, वैदिकाश्रम, कृष्णानगर लाहौर में शास्त्री तथा विद्यारत्न की श्रेणियां पुनर्वत खुल गई हैं। सुयोग्य अध्यापक नियुक्त किए गए हैं। इस वर्ष पञ्जाब यूनिवर्सिटी की शास्त्री परीक्षा

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल में दीपावलि

गत २८ अक्तूबर को गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में अपूर्व समारोह के साथ दीपोत्सव मनाया गया। विविध शारीरिक प्रदर्शनों और प्रतियोगिताओं के साथ-साथ ब्रह्मचारियों ने हाकी, फुटबाल, कुश्ती, कबड्डी आदि खेलों में भी पूरे उत्साह से भाग लिया। बंगाल की संकटापन्न अवस्था को देखते हुए कुल-वासियों ने इस वर्ष का दीपमालिकोत्सव कुछ भिन्न रूप में मनाया। सबका सम्मिलित प्रीतिभोज ब्रह्मचारियों ने बन्द रखा तथा पटाखे एवं आतिशबाज़ी आदि पर प्रतिवर्ष व्यय होने वाला रुपया पूर्ण रूप से बंगाल-पीड़ितों की सहायतार्थ सुरक्षित रखा। इस प्रकार अनेक भावनाओं के एक स्थान पर मिल जाने के कारण दीप-मालिका विशेष आकर्षक रही। सायंकाल ४ बजे वेद-मन्दिर में समस्त गुरुकुल निवासियों की एक विराट् सभा श्री पं० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति आचार्य के सभापतित्व में हुई जिसमें महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के व्याख्यान ओजस्वी वाणी में हुए। संगीत के कारण सभा की शोभा विशेष बढ़ी। दूसरे दिन विद्यालय विभाग के सभा भवन में श्री मद्दयानन्द-वर्षारम्भ की सभा हुई जिसमें ऋषि के दिव्य जीवन विषयक प्रभावशाली तथा उच्च कोटि के भाषण हुए। अन्त में आचार्य जी का सारगर्भित भाषण हुआ।

अध्ययन-सत्र

दीपावलि के बाद से पढ़ाइयां अत्यन्त व्यवस्थित रूप से प्रारम्भ हो गई हैं। तीनों विद्यालयों के ब्रह्मचारी पढ़ाई के साथ-साथ वाद-विवाद, संस्कृत-भाषण, व्याख्यान, कविता आदि में उन्नति कर रहे हैं। इन सभी विषयों में महाविद्यालय आश्रय के अध्यक्ष श्री पो० शंकर देव जी विद्यालंकार ब्रह्मचारियों को विशेष प्रोत्साहन दे रहे हैं। गत ३१ अक्तूबर को हरिद्वार में पंचपुरी कवि सम्मेलन हुआ जिसमें ब्रह्मचारियों ने उत्तमोत्तम कवितएं सुनाईं। ब० प्रताप को सुन्दर कविता के लिए जनता की ओर से अनेक मैडल तथा पुस्तकें पारितोषिक में मिलीं। अन्त में सम्मेलन के सभापति प्रो० शंकर देव जी ने कवियों के प्रयत्न की प्रशंसा की तथा उचित समालोचना करते हुए पथ निर्देश किया।

देने वाले अथवा संस्कृत प्रेमी छात्र उक्त संस्था के आचार्यवर से नियमावली मंगाएं। अधिकारी विद्यार्थियों को १०) मासिक छात्रवृत्ति मिलेगी। भोजन निवास का सुन्दर प्रबन्ध विद्यालय के आश्रम में है। शीघ्र पत्र व्यवहार कीजिए। —आचार्य

आर्य जगत

आवश्यकता

कुछेक गुरुकुल के स्नातकों की जो आर्य संस्था में दशम श्रेणी तक पढ़ा सकें। वेतन योग्यतानुसार दी जायगी विशेष जानकारी के लिये नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें।

श्रीमती तारा डुनेजा,
२, सी मौडल टाऊन (लाहौर)।

—आर्य समाज गुरुकुल विभाग लायलपुर के सदस्यों की सभा में इस बात का विरोध किया गया और प्रस्ताव पास किया गया कि कांगड़ा के डी० सी० ने नूरपुर में जो गो हत्या के लाइसैन्स दे दिये हैं वे अनुचित हैं। इस नब्बे फी सदी हिन्दू आबादी वाले भाग में कभी गो हत्या नहीं हुई। आर्य भाई इस बात का सख्त विरोध करते हैं और मांग करते हैं कि हिन्दू भावनाओं का सम्मान करते हुए इस लाइसैन्स को रद्द कर दिया जाय।

उक्त प्रस्ताव की नकल गवर्नर पंजाब, डी० सी० कांगड़ा और सरदार बलदेवसिंह मन्त्री पंजाब को भेजी गई हैं।

—भिक्षु मंडल की साधारण बैठक २० अक्टूबर सन १९४३ को वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें मंडल का नाम सार्वदेशिक दयानन्द भिक्षु मंडल के स्थान पर सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मंडल रक्खा गया। अधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—महात्मा नारायण स्वामी जी, मंत्री—स्वामी जीवन मुनि जी; उप-मंत्री—पं० ज्ञानेन्द्र जी शिक्षित; कोषाध्यक्ष—ला० नारायण दत्त जी; पुस्तकाध्यक्ष—प० गंगाप्रसाद जी एम० ए०।

इस ही अवसर पर श्रीमान रायबहादुर चुन्नीलाल जी की सुपुत्री, श्रीमती सत्यवती जी ने संन्यास आश्रम की दीक्षा महात्मा नारायण स्वामी जी से ली

—आर्य समाज जड़ांवाला में ऋषि उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातः काल प्रभात फेरी की गई हवन यज्ञ के पश्चात् पं० विश्वनाथ जी की रामायण की कथा हुई और दीवाली और जुआ पर आप शास्त्रोक्त तथा ऐतिहासिक प्रकाश डाला तत्पश्चात् ला० शिवनाथ जी का ऋषि जीवन पर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। चार आना फंड के २८) एकत्र हुए।

— प्रत्येक आर्य समाज को —

आर्य का ग्राहक

बनना चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक की डाक—

देवृकामा—देवकामा का अर्थ

श्रीमान् जी नमस्ते !

आपके पत्र तिथि २७ भाद्रपद २००० के सम्पादकीय स्तम्भ में 'विवाह-संस्कार में नियोग की प्रतिज्ञा' इस शीर्षक के नीचे निम्न वाक्य पढ़कर कुछ भ्रम उत्पन्न हो सकता है । आशा है कि आप निवारण करने का कष्ट करेंगे । वाक्य यह है—

'हमारी सम्मति में वैदिक शब्दों को यौगिक मानने वालों को 'देवृ' और 'देव' शब्द के भेद पर इतना अधिक बल न देना चाहिये' । यदि आपका भाव यह है कि वेद में वर्ण और मात्रा की दृष्टि से शब्दों में कोई विशेष भेद उत्पन्न नहीं होता, तो वास्तव में आपकी यह धारणा अत्यन्त अद्भुत तथा भ्रामक है । इसका तो स्पष्ट अर्थ यही है कि वैदिक शब्दों तथा वैदिक अर्थों में जो मनमानी तथा धींगा-धांगी कुछ काल से चलती आ रही है, उसी को प्रोत्साहन दिया जाए । तब तो यास्क आदि ऋषि कृत निघण्टु तथा तथा अन्य कोशों को एकदम ताक पर रख देना होगा और वैदिक वाङ्मय में हर एक को मनमाने अर्थ करने की पूरी पूरी स्वच्छन्दता तथा स्वतन्त्रता हो जाएगी । वास्तव में यह धारणा वेद अपौरुषेय निर्भ्रान्त तथा सर्वविद्याय मानने वालों लिए अत्यन्त घातक है । इससे बढ़ कर वैदिक में अनवस्था को उत्पन्न करने वाली और कोई दूसरी बात हो ही नहीं सकती । जब कि शब्दों में अपने अर्थ को बतलाने वाली कोई विशेष स्वतन्त्र शक्ति ही नहीं और वे अर्थकर्त्ता को अपनी 'समझ' या कइयों की 'सनक' के अनुसार ही तोड़े मरोड़े या लचकाए जा सकते हैं तो इस कच्चे आधार पर वेदों के वास्तविक अर्थों को कहां तक जाना जा सकता है अथवा तदनुसार उनका प्रचार किया जा सकता है । वास्तव में प्राचीन आचार्यों का ऐसा मत कदापि न था । उन्होंने शब्द शास्त्र का सूक्ष्म अध्ययन करके कतिपय उन आधारों का पता लगाया था, जिनसे कि शब्द के अर्थ का निर्णय हो सकता है । वे शब्द में अर्थ को बतलाने वाली एक शक्ति मानते थे, जिसका कि बोध निम्न आधारों पर सूत्र-रूप में बतलाया गया है ।

'शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्यात् व्यवहारतश्च' (न्यायमुक्तावली)

अर्थात् किस शब्द की किस अर्थ में शक्ति है, इसका निर्णय व्याकरण, उपमान, कोश, आप्त वाक्य तथा व्यवहार द्वारा होता है । इससे स्पष्ट है कि जिस शब्द की जिस अर्थ में शक्ति हो तदनुसार ही उस शब्द का अर्थ होना चाहिए । अन्यथा व्याकरण आदि से गृहीत न होने पर किया गया अर्थ बिल्कुल अप्रामाणिक तथा अशास्त्रीय होगा ।

शब्दों के थोड़े से भी अन्तर से किस प्रकार अर्थ में महान् अन्तर उपस्थित होता है, इसे महर्षि पतञ्जलि जी ने अपने ग्रन्थ महाभाष्य में निम्न शब्दों में प्रकट किया है । 'एकः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह, स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्र शत्रु स्वरतोपराधात्' ।

अर्थात् वेदों में यदि किसी शब्द का स्वर तथा वर्ण की दृष्टि से अशुद्ध प्रयोग होगा, तो वह वाग्वज्र बन कर यजमान का ही नाश कर डालेगा । इसके लिए उन्होंने स्वर के अशुद्ध उच्चारण होने पर इन्द्रशत्रु (वृत्र) का बध हो गया; इस गाथा का भी प्रमाण उपस्थित है । वर्ण के अशुद्ध उच्चारण या भेद होने पर क्या क्या अनर्थ उपस्थित होते हैं इसे किसी ने सुन्दर ढंग से निम्न श्लोक में दिखाया है ।

'यद्यपि बहु नाधीषे,
तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।
सकलः शकलो माभूत्,
सकृत् शकृत् शिवः शवः ॥

कोई अपने पुत्र को सम्बोधन करके कह रहा है हे बच्चे ! यद्यपि तेरा बहुत पढ़ने में मन नहीं है, तो भी तू कम से कम व्याकरण तो पढ़ ले; ताकि 'सकल' (सारा) की जगह 'शकल' (टुकड़ा) तथा 'सुकृत' (एक बार) की जगह 'शकल' (प्राणियों का भला और 'शिव' (मुर्दा) का प्रयोग करने से हंसी का पात्र न हो । श्लोक में आए 'शिव' और 'शव' इन दो शब्दों में सिर्फ यात्रा के छोटे से क्या अनर्थ उपस्थित होता है, इसे 'देवृ' तथा 'देव' शब्दों में विशेष भेद मानने वाले को विशेष ध्यान देना चाहिए । इसके सिवाय उनकी दृष्टि में 'भ्राता' और 'भर्त्ता' तथा 'पिता' और 'पति' इन शब्दों के अर्थ में भी विशेष अन्तर न होना चाहिए, क्योंकि इन शब्दों के धात्वर्थ तो समान हैं, सिर्फ प्रयोग में ही भेद है । परन्तु इस प्रकार शब्द और अर्थ का व्यत्यय होने पर कितने भारी अनर्थ की सम्भावना है, इसे विद्वान् लोग स्वयं ही विचार सकते हैं । इसलिए प्रकरण तथा प्रत्यय आदि से अर्थ में भेद उत्पन्न होता है, यह सर्वसम्मत तथा स्पष्ट सिद्धान्त है ।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये ।

वेदामृत	२॥)	Immortal Sayings ofDayanand	।)
जीवन ज्योति	१॥)	दयानन्द रत्न माला	')
स्वाध्याय संग्रह	।॥)	वैदिक धर्म की जय	॥।)
वैदिक स्वर्ग	।॥)	यास्क युग	॥।)
स्वर्ग	।=)	सभा इतिहास	२)
देव यज्ञ	।)	GlimpsesofDayanand	१।)
पीयूषबिन्दु	।—)	त्रिदेव निर्णय	॥।)
		निरुक्त का मूल वेद में	।—)
Hindu America	५)	Light of Truth	३)

आर्य समाज देहरादून—

देहरादून समाज का ६४ वां उत्सव २४ से २ अक्तूबर तक बड़े समारोह से मनाया गया २२-१ से महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की प्रारम्भ हो गई थी २४-१० को नगर कीर्तन हु पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार मन्त्री हिन्दू महास का अखण्ड भारत विषय पर बड़ा प्रभावशा व्याख्यान हुआ इसके अतिरिक्त पण्डित बुद्धदेव विद्यालंकार पण्डित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय प्र प्रतिनिधि सभा देहली यू. पी. आदि विद्वानों के सु भाषण हुए—श्री जगदीश जी मन्त्री ने समाज ओर से श्री प्रधान जी सभा को १११) रु० की भेंट की । सहस्रों की संख्या में स्त्री पुरुष रहते थे ।

कन्या गुरुकुल गौशाला की स्थाप गोरक्षा के प्रेमियों से अपील—

कन्या गुरुकुल देहरादून में सम्प्रति ३०० कन्य शिक्षा प्राप्त कर रही हैं । अभी तक कन्या गुरुकु अपनी गोशाला न होने से हमें बाहर से दूध लेकर कार्य चलाना पड़ रहा था जिसके लिये ॥) दाम देकर भी शुद्ध दूध प्राप्त करना कठिन हो था । इस कठिनाई को दूर करने के लिये क गुरुकुल के अधिकारियों ने गुरुकुल में गोशाला स्थापना कर दी है । साहीवाल नसल की ११ गौ पहला बैच गुरुकुल में पहुँच गया है । इन गौओं प्रत्येक औसतन १०, ११ सेर दूध देने वाली है । गौओं के आजाने से प्रतिदिन लगभग २ मन दूध कन्याओं को मिलने लग गया है । इन को अभी टेम्परेरी टीन शैड में रखा जा रहा है । शीघ्र ही इन गौओं के लिये आवश्यक भवनादि होंगे । आशा है धर्म के प्रेमी उदार दानी हमारी आवश्यकता को पूरी कर देंगे । गोशाला के आ भवन पर कम से कम ५०००) व्यय आयेगा । महानुभाव अपने किसी सम्बन्धी की यादग भवन बनाना चाहेंगे उनके नाम का शिलालेख दिया जायेगा । कन्याओं को निर्धारित स्के अनुसार दूध दिया जा सके इसके लिये कम १५ गायें और खरीदनी आवश्यक हैं । प्रत्ये पर लगभग ३००) मूल्य आयेगा । जो म अपनी ओर से गुरुकुल को गोधन करना चाहें ३००) कार्यालय में भेज देना चाहिए उनके गाय क्रय करली जायेगी ।

—केन्द्रीय असेम्बली के भूतपूर्व सदस्य तथा पत्रकार श्री के सन्तानम ने, जो आजकल दुर्भिक्ष पीड़ित इलाकों का दौरा कर रहे हैं, अ लेख में बतलाया है कि नदियों के प्रांत बंगाल सप्ताह भूखों व बीमारी से एक लाख रहे हैं ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रैस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हु

सम्पादक—भीमसेन विद्यालंकार

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Regd L 500

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ५१
वार्षिक मूल्य ४)
२६ कार्तिक २००० विक्रमी
१४ नवम्बर १९४३ ई०

२००१ मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी (Saharanpur)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

ऋषि दयानन्द के दर्शन

१५० वर्ष के वृद्ध योगी द्वारा ।

लेखक—श्री अलखधारी मुरादाबाद प्रधान आर्य-समाज पटियाला

र्च १९४३ में मुझे एक वयोवृद्ध योगी का ात् दर्शन हुआ। आपका शुभ नाम श्री सुखानन्द स्वती है। आप अपनी अवस्था लगभग १५० वतलाते हैं। सुखानन्द (योगी) जी का कथन जाब स्वामी विरजानन्द जी से उनका प्रथम हुआ उस समय दण्डी जी की अवस्था र्ष के लगभग थी। दण्डी जी २१, २२ वर्ष की में प्रज्ञाचक्षु हुये थे। अष्टाध्यायी तथा चारों मन्त्र दण्डी जी को कण्ठस्थ थे। देहावसान या दण्डीजी की अवस्था लगभग १०० वर्ष थी। न्द जी उस समय हिमालय में विचरा करते थे।

युवावस्था

ोगी जी को जब ऋषि का प्रथमदर्शन हुआ तो न्दयानन्द जी की आयु लगभग २५ वर्ष की थी। न्चौड़ा बलिष्ठ शरीर था। मुख पर चेचक के स्नेह अंकित थे। आठों याम लंगोट बाँधे रहते। र एक अंगोछा मात्र लपेट लेते थे। शान्त-डल संयम तथा सहनशीलता की आभा से न् रहता था। दयानन्द और विरजानन्द जी मिलन अभी नहीं हुआ था।

वेदाध्ययन

ली बार जब योगी जी का दयानन्द जी से हुआ तो वे स्वामी विरजानन्द जी के पास यन कर रहे थे। सुखानन्द जी ने ऋषि के यों में से कुछ के नाम इस प्रकार बताये:— व, बन्ना चौबे, पं० वेशवदेव, पं० मणिराम, पण्डितादि। विद्याध्ययन काल में सुखानन्द जी दयानन्द जी से मिले। युवक ऋषि की व उनका तपोबल चित्ताकर्षक था। उनकी क्ति विलक्षण एवम् प्रशंसनीय थी। एक बार दण्डी जी से तर्क वितर्क करते। विरजानन्द जी इस वार्तालाप से प्रसन्न होते थे और कह उठते "दयानन्द"। "तूने बहुत धक्का कोटि पर" जाना है। वैदिक धर्म को पुनः स्थापित करना है। संसार की सोई हुई जातियों को जगाने का गुरुतर कार्य करना है। जिस वेदमत को संसार भूल गया है उस ईश्वरीय ज्ञान को "पुनः प्रकाशित करना है।"

विरजानन्द जी दयानन्द जी से सदैव प्रसन्न रहते और स्नेह करते थे।

दयानन्द के सहपाठी उदयप्रकाश अर्वाचीन मत के अनुयायी थे। उदयप्रकाश और दयानन्द में कभी कभी शास्त्रार्थ हो जाता था। दयानन्द जी को उदय-प्रकाश के विचारों से ग्लानि होगई थी।

पुरुषोत्तमदास जी वल्लभाचार्य मत के गुसाईं मथुरा में निवास करते थे। उन्होंने अपने आश्रम में एक पाठशाला खोल रक्खी थी। इस पाठशाला में विद्यार्थियों को संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी। विरजानन्द जी कभी कभी अष्टाध्यायी की शिक्षा देने के लिये पुरुषोत्तमदास जी के स्थान पर जाया करते थे। एक दिन शिक्षा देते समय अकस्मात् गुंसाईं जी के शरीर से उनका करस्पर्श होगया। विद्यार्थियों ने हाहाकार मचाया। गुंसाईं जी छिवगये (छू गये), स्नान करना होगा।

विरजानन्द जी ने कहा कि जो मांस, मज्जा, अस्थि, रुधिर आदि मेरे शरीर में है, जो दिव्य ज्योति मेरे अन्तःकरण में प्रकाशित है, वही गुसाईं जी के हृदय में विद्यमान है, फिर छूत किससे, किसमें क्यों और किस प्रकार लगी?

पुरुषोत्तमदास जी के तर्क करने पर विरजानन्द जी ने उन्हें फटकारा और उनके आश्रम में जाना बन्द कर दिया।

दयानन्द जी इस दृश्य को देख रहे थे विरजानन्द जी ने उनसे कहा "इस अज्ञान एवम् छूत अछूत के पाखण्ड को नष्ट करने का भार तुम पर छोड़ते हैं। देववाणी के प्रकाश से संसार को आलोकित करने की आवश्यकता है। इसी महान् कार्य को पूरा करने के लिये संसार में तुमने अवतार लिया है"

दयानन्द जी की अवस्था इस समय लगभग ४० वर्ष की थी। सदैव प्रफुल्लचित्त अभय और ईश्वराराधना में लीन रहते थे। परमात्मा का उनको साक्षात्कार था।

विशुद्धानन्द जी महाराष्ट्रीय ब्राह्मण वेद विद्या एवम् कर्मकांड के धुरन्धर विद्वान् थे। दयानन्द जी ने उनसे निरुक्त समेत वेदाध्ययन किया और अल्पकाल में ही वेद वेदांगादि समस्त ग्रन्थों को सम्पूर्णतया समाप्त कर लिया। दयानन्द के हृदय में यही तीव्र अभिलाषा थी कि मैं वेदों का अनुवाद ऐसी उत्तम आर्यभाषा में करूं कि साधारण जनता भी सरलता-पूर्वक समझ सके और लाभ उठावे।

योगाभ्यास

सुखानन्द जी ने दयानन्द जी को यमुना तट पर समाधि लगाकर योगाभ्यास करते देखा। दयानन्द की समाधि भीषण समाधि होती थी और ऋषि उसमें ऐसे तल्लीन हो जाते कि यदि उस समय कोई उन्हें जल में डुबा देता अथवा उनका शरीर प्रज्वलित चिता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में रख देता तो भी उनकी समाधि नहीं टूटती। दयानन्द प्रति दिन ५—६ घटे समाधि लगाते थे—रात्रि को दो बजे तक नित्य नियम शौच स्नानादि से निवृत्त होकर निश्चेष्टभाव से समाधिस्थ हो जाते थे। शीतकाल माघ और पौष के महीनों में सर्दी के प्रकोप से जब लोगों के दाँत से दाँत कट कटाते मनुष्य पशु पक्षी सभी तीव्र शीत के कारण त्राहि २ पुकारते, उस समय आकाश के साये. व खुले मैदान, में कमर पर एक कौपीन तथा नीचे एक सादा लट्ठे का अंगोछा बिछाये रात्रि के दो बजे दयानन्द समाधि में मग्न रहते थे।

वेदभाष्य

दयानन्द ने वेदांगादि समस्त विद्याओं को अल्प-काल में ही ग्रहण कर लिया तथा उनके गूढ़ तत्वों का ऋषि को पूर्ण अनुभव होगया।

ऋषि ने मिथ्या क्रिया—कीर्ति को त्याग वैदिक धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों का प्रचार किया—एवम् उन्हीं सिद्धान्तों पर ग्रंथनिर्माण किये।

वेदभाष्यानुवाद काल में भी सुखानन्द जी दयानन्द जी से मिले और अनुभव किया कि दयानन्द जी प्रति क्षण वेद चिन्तन में ही लीन रहते थे। उनके मस्तिष्क में केवल एक ही विचार था और वह था वेदभाष्य का।

नियोग

एक वार सुखानन्द जी ने नियोग के विषय में ामो से वार्तालाप किया। ऋषि ने उत्तर दिया कि वर्तमान काल की हीनावस्था एवम् आर्यजाति के पतन पर दृष्टि रखते हुये गुरु महाराज ने इस सिद्धान्त के प्रचार करने की आज्ञा दी है। इसी कारण मैंने नियोग विषय का अपने ग्रन्थों में प्रतिपादन किया है।

कर्म की प्रधानता

कर्मकांड पर दयानन्द जी ने विशेष रूप से ज़ोर दिया। उनका विचार था कि जब तक आर्यावर्त की समस्त जनता के आचरण शुद्ध व उच्च न होंगे उनकी मानसिक तथा आत्मिक उन्नति दुष्कर है। इसी मन्तव्य पर दृष्टिपात करते हुये ऋषि ने इस विषय का विस्तृत रूप से उल्लेख किया और प्रचार भी किया। ज्ञान एवम् उपासना के विषय में भी उनके ग्रन्थों में उल्लेख है किन्तु सूक्ष्म कर्मकांड विषय की भाँति विस्तारपूर्वक नहीं।

मुक्तजीव

स्वामी जी वास्तविक मुक्तात्मा थे उनके दर्शन एवम् सत्संग से चित्त में आनन्द और उल्लास का प्रादुर्भाव होता था मनोगति स्वतः विलक्षण रूप से आध्यर्पित हो जाती ऐसा बोध होता कि आत्मा किसी श्रेष्ठ व पवित्र वायुमंडल में विचरण कर रहा है।

ईश्वर प्रधान

ऋषि के सत्संग से स्पष्ट होता था कि वे ईश्वर के अनन्य भक्त हैं। उनका अटल विश्वास था कि आर्य जाति एवम् वैदिक धर्म के पुनरुद्धार में वे केवल ईश्वराज्ञा का ही पालन कर रहे हैं। उनके कार्यक्षेत्र में प्रभुरक्षा का हाथ सदैव विद्यमान रहता है। जिस कल्पतरु का बीज उन्होंने आर्यावर्त में बोया है तथा तन मन व आत्मसमर्पण द्वारा सिंचन किया है वह वृक्ष दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति को प्राप्त होगा। शीघ्र ही वह दिन आवेगा जब संसार के कोने २ में वैदिकधर्म का झंडा फहराता हुआ दृष्टिगोचर होगा।

'स्व. विक्रम जी की स्मृति में"

तारो! क्या नीचे झांक रहे!

पावन रवि किरणों के धन से,
जिसकी छाती पुलकित होती।
जिसके नङ्गे पैरों को छू,
रजनी में यह अवनी रोती।
सिर के शुभ केशों में जिसके,
चन्द्रिका सदा छिप २ सोती।
भीषण दुःख में, गुरुतम सुख में,
लाये न नयन जिसके मोती।
—उसकी अब केवल राख शेष—
तारो! क्या नीचे झांक रहे!!

प्रतिपल जिसके मृदु अधरों पर,
मुस्कान मधुर थी शरमाती।
प्यारी प्यारी बातें करते—,
जिसकी दाढ़ी थी लहराती।
अध्यापन करते हुए समय,
जिसकी अंगुली चढ़ती जाती।
बच्चों के तन मन, प्राणों में,
श्रद्धा जिसकी बढ़ती जाती।
—उसकी ये स्मृतियाँ रहीं शेष—
तारो! क्या नीचे झाँक रहे।

जिनके चमकीले दाँत सरल—
उसमें दो दांत चुभे कैसे?
जिनके अन्दर बाहर, मधु था—
विष के थे असर कैसे?
जो सब को औषधि देते थे—
अपने को औषधि दे न सके?
जो स्वयं कहानी कहते थे—
हो गये कहानी वे कैसे?
—ये करुणा प्रश्न मेरे अशेष—
तारो! क्या नीचे झांक रहे!

"ब्र० जगदीश चन्द्रसिंह" गुरुकुल कांगड़ी

— प्रत्येक आर्य समाज को —

आर्य का ग्राहक

बनना चाहिये

पृष्ठ ३ का शेष

से मालूम पड़ता है कि अब जर्मनी का शीघ्र ही मर्दन तथा पतन होने वाला है। साधारणतया समझा जाता था कि रूसी सेनाएं गर्मी के मौसम में स्थल में शत्रु को हरा नहीं सकती। केवलमात्र सर्दी में कड़कती सर्दी की सहायता से ही वह शत्रु को पराजय कर सकती है। परन्तु इस वर्ष गर्मी की में भी रूसी फौजों ने जर्मनी को रण क्षेत्र में कर उसे रूस के विजित प्रदेश छोड़ने पर किया। अब रूस की फौजें बिजली के वेगन रही है और जर्मन की फौजें मैदान छोड़कर भा है। इस परिवर्तन ने रूसी जनता में आशावाद उत्साह की लहर पैदा कर रही है। श्री स्टैलि अपनी घोषणा में इस बात पर भी बल दिया अभी तक युरोप में मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ दूसरा फ्रंट कायम नहीं किया। जो हमले इटली जर्मनी पर हो रहे हैं उन्हें दूसरा फ्रंट नहीं कह सकता है। हम आशा करते हैं कि मित्र राष्ट्र शी युरोप में अपनी फौजें उतार कर युरोप की जर्मन लर शाही से पादाक्रान्त जनता को मुक्त करेंगे समय मानव समाज इस युद्ध के लम्बा होने से दिन अन्न कष्ट, वस्त्र कष्ट तथा अन्य अनेक प्र कष्टों से पीड़ित होकर कराह है। इन कष्टों का युद्ध समाप्ति से ही हो सकता है। इस समय हार रहा है, जापान वहीं का वहीं खड़ा है। प भांति उसकी श्येन गति मंद पड़ गई है। स्टैलि घोषणा के परिणाम रूप फ्रांस में आक्रम संभावना की जा रही है।

आर्य समाज लोअर बाज़ार शिमला का

१. प्रधान श्री ला० बिहारीलाल जी म्युनिसिपल
२. उपप्रधान श्री ला० शंकरनाथ जी एडवोकेट
३. ,, श्री ला० जैसीराम जी एडवोकेट
४. मन्त्री श्री पं० बिहारीलाल जी
५. सयुक्तमन्त्री श्री म० शिवनारायण जी
६. उपमन्त्री श्री म० बलवन्तराय जी खन्ना
७. कोषाध्यक्ष श्री शान्तिनाथ जी भल्ला
८. पुस्तकाध्यक्ष श्री जगदीशमित्र जी

आवश्यकता

"एक पढ़ी लिखी घर के काम काज औ पढ़ाई में होशियार, स्वस्थ, सुन्दर और जन्म जाति की सन्तान हीन विधवा के लिए दुका मुलाज़िम पेशा २५-२६ वर्षीय सदाचारी, सुन्दर और मधुर-स्वभाव के वर की आवश्य विधुर हो तो उसके कोई सन्तान न हो। अम्बाला, सहारनपुर, शिमला अथवा लुधिय में से हो तो उत्तम है।"

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि स गुरुदत्त भव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य
रविवार २६ कार्तिक
वि०सं० २०००

आर्य समाज का आन्दोलन शिथिल क्यों है ?

आर्य समाज के सिद्धान्त– वैदिक धर्म द्वारा प्रतिआदर्श वर्तमान युग की समस्याओं के अचूक ।। आर्यसमाज वर्तमान युग की आत्मा–Demoyy प्रजातंत्रवाद का मानवीय जीवन के हरेक में विनियोग करना चाहता है। मनुष्य के पारिक जीवन में वह 'स्त्री' और 'पुरुष' को, आदम हौवा को, भाई और बहन को, पति और पत्नी माता और पिता को, गुरु और गुरु पत्नी को पुत्र पुत्री को बराबर के अधिकार और आत्मिक र्मिक और मानसिक उन्नति के अवसर देना चाहता इसीलिये आर्यसमाज कन्या पाठशालाएं, स्त्री र्यसमाजें–तथा आर्यसमाजों में भी पुरुषों की ति स्त्रियों को सदस्य बनाने का पक्षपाती है।

सामाजिक जीवन में, राष्ट्रीय संगठन में काले रे, तथा कथित छोटी जातियों और बड़ी जातियों न्नियम और कानून की दृष्टि में भी समान अधिकार लाने के लिये दलितोद्धार आन्दोलनों को संचालित र रहा है। राजनीति और व्यापारी क्षेत्रों में तो जातन्त्रवाद स्वयं समय की लहर, वर्तमान युग की रक शक्ति के रूप फैल रहा है।

धर्मिक क्षेत्र में, परमात्मा–आत्मा–प्रकृति के रस्स–अथवा सूक्ष्म-बुद्धि और परलोक तथा परोक्ष र्चाओं से भर पूर कार्यक्षेत्र में प्रजासत्तावाद को ख्यता दिलाने का कार्य वर्तमान समय में केवल वा आर्य समाज ही कर रहा है। मंदिर के पुरोहितों पदेशकों और गुरुओं को परमात्मा का प्रतिनिधि ाने के स्थान पर, आर्य जनता तथा मानव समाज प्रतिनिधि तथा मार्गदर्शक बनाना आर्य समाज का क्ष्य सुधार है इस सुधार की योजना से आर्यसमाज में ई जीवनशक्ति आई है और आ सकती है। आर्य माज के आन्दोलन में इस जीवन संचारिणी शक्ति होते हुए, उसमें उसके सभासदों तथा कार्यों में थिलता क्यों दिखाई देती है। इसके अनेक कारणों से हम यहां पर दो मुख्य कारणों पर ही प्रकाश लेंगे और आशा करेंगे कि आर्य भाई इन कारणों चर्चा करेंगे और इन कारणों को दूर करने का न करेंगे।

(१) आर्य समाज के काम को फुर्सत का शुग्ल काम समझना। साधारणतया यह देखा जाता है क आर्य समाज संगठन के मुख्य २ व्यक्ति आर्य माज के काम, फुर्सत के समयमें ही करते हैं। समाजों के प्रधान और मंत्री दिन भर अपने धंधों में अपनी शक्ति का व्यय करके शेष समय में आर्य समाज का काम करते हैं। थके हुए व्यक्ति किसी-आन्दोलन में जीवन शक्ति का संचार कैसे कर सकते हैं ? समाजों के प्रधान और मंत्री के पद शोभा तथा सन्मान के स्थान समझे जाते हैं, कार्य करने के नहीं। यदि इस कमी को दूर करना चाहते हैं तो हमें समाजों के अधिकारियों में दो तीन व्यक्ति ऐसे रखने चाहिए जो कम से कम चलते साल में आर्य समाज के कार्य को मुख्य समझें। इसके लिये यदि किसी कार्यकर्त्ता को जीविकानिर्वाह के लिये कुछ मासिक पुरस्कार भी देना पड़े, तो देना चाहिए। आर्यसमाज में लोक सेवा के लिये पुरस्कार लेनेवालों को पसन्द नहीं किया जाता। अवैतनिक तथा कुछ न लेकर काम करने वालों को प्रतिष्ठित माना जाता है, चाहे वह समाज के लिये दिन में नाम मात्र का ही समय दे सकें।

आर्य समाज की शिथिलता को दूर करने के लिये इस प्रवृत्ति को बदलना चाहिए। या तो वानप्रस्थियों को समाज संचालन का काम अपने हाथों में लेना चाहिए अथवा निर्वाचित अधिकारियों में से किसी एक को सारा समय देना चाहिए। इसके लिये या तो वह स्वयं अपने निर्वाह की व्यवस्था करे, समाज द्वारा उसके निर्वाह की व्यवस्था की जाय या अपने मित्रों द्वारा इसकी व्यवस्था करें। अथवा

(२) आर्य समाज के कार्य क्षेत्र को विस्तृत किया जाय। समय तक प्रायः यह समझा जाता है कि आर्य समाज का कार्यक्षेत्र मुख्यतया आत्मा परमात्मा की चर्चा करके मनुष्यों में परलोक सम्बन्धी विचारों तथा वैदिकसिद्धान्तों का प्रचार करना है वर्तमान समय की जीती जागती, आए दिन के व्यवहार में आनेवाली समस्याओं का हल करना समाज के क्षेत्र से बाहर की वस्तु समझा जाता है। जनता की राजनैतिक तकलीफों, आर्थिक कष्टों तथा अन्न-कष्ट की समस्याओं को दूर करना भी आर्य समाज का कर्तव्य होना चाहिए। वर्तमान समय में, भारत केवल मात्र भारत नहीं, सारा संसार जिन तकलीफों में से गुजर रहा है उनको दूर करना भी आर्य समाज का कार्य होना चाहिए। यदि आर्य समाज इन समस्याओं से पृथक् रहेगा तो वह संसार के जीवित जागृत आन्दोलनों से पृथक् पिछड़ा हुआ रह जायेगा। इसलिए इन दिनों आर्य समाजों को भारतवर्ष की राजनैतिक समस्याओं का हल करने के लिये जनता के लोकमत को जगाना चाहिए। ऋषि दयानन्दके इस स्वर्णीय संदेशको कोई कितना ही कहे विदेशी राज्य स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं हो सकता "——" का प्रचार करना चाहिए। वर्तमान समय में भारत में विशेषतया बंगाल में जो अन्न क दिखाई दे रहा है—इसका मुख्य कारण विदेशी शासन है—इसको दूर करने के लिये भी आर्य समाजों को अपनी आवाज उठानी चाहिए। ब्रिटिश पार्लमैण्ट तथा अंग्रेज़ी जाति के नेताओं का अनुभव कराना चाहिए कि भारत की सब सोसायटियों-सब अन्दोलनः-भारत में स्वदेशी राज्य स्थापित करने के लिये सब कुछ करने की तैयार हैं। इसके लिये आर्य समाज को अपने प्लैटफार्मों पर भी आन्दोलन करना चाहिए यदि आर्य समाज इन दो दिशाओं में काम करेगा तो आर्य समाज का आन्दोलन जीवित जागृत—समय का प्रबल आकर्षक आन्दोलन बन सकेगा। मैं आशा करता हूं कि आर्य भाई अपने २ शहरों तथा समाजों में इन दो विचार धाराओं का प्रचार करेंगे।

विदेशों में भारत का प्रतिनिधि मंडलः—

दिल्ली की सैण्ट्रल एसम्बली में भारतीय सरकार ने विदेशों में भारत की आनशान बढ़ाने तथा भारत द्वारा किये जाने वाले, युद्ध विषयक परिश्रमों का परिचय कराने के लिये प्रतिनिधि मंडल भेजने का प्रस्ताव पेश किया। कांग्रेस, मुसलिम लीग और दूसरे गैर सरकारी राजनैतिक दलों ने बहुसम्मति से सरकार के इस प्रस्ताव को अस्वीकार दिया।

यह उचित ही हुआ। क्योंकि जब तक भारत परतन्त्र हैं—विदेशीशासन के आधीन है—तब तक भारत सरकार द्वारा भेजे जाने वाले प्रतिनिधि भारत के प्रतिनिधि न होंगे अपितु विदेशों में भारतीय पराधीनता के समर्थक प्रचारक समझे जावेंगे। यदि सरकार यथार्थ में भारतीयों के प्रतिनिधि भेजना चाहती हैं तो उसे जेलों में बन्द भारत के महात्मा गांधी जैसे नेताओं को रिहाकर देना चाहिए। बड़े से बड़े प्रतिनिधि मंडल-महात्मा गांधी आदि नेताओं को कैद करने के कारण—भारतीय सरकार के मस्तक पर लगी कालिमा को नहीं धो सकते। यदि ब्रिटिश सरकार यथार्थ में विश्व में स्वतन्त्रता तथा प्रजा सत्तावाद स्थापित करना चाहती है, उसको जर्मन हिटलर शाही राक्षसी पंजे से रक्षा करना चाहती है तो उसे इस सिद्धान्त का अमल प्रचार भारतमें करना चाहिए। इस प्रकार का प्रतिनिधि मंडल जनता के धन का अपव्यय है। हम आशा करते हैं कि भारतीय सरकार भारत के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सम्मति को ठुकराएगी नहीं।

रूस के राष्ट्रपति स्टैलिन की घोषणा—

मास्को में अमरीका इंगलैण्ड और रूस के प्रतिनिधियों ने वर्तमान युद्ध को जल्दी से जल्दी समाप्त करने के उपायों पर विचार किया। परिणाम स्वरूप तीनों राष्ट्रों की ओर से सम्मिलित घोषणाएं भी प्रकाशित की गई है। इन्हीं दिनों सोवियत रूस स्थापना के समारोह के अवसर पर श्री स्टलिन ने भी घोषणा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सन्ध्योपासना (ब्रह्मयज्ञ)

(ले० ब्र० भास्करानन्द, सार्वदेशिक दयानन्द भिक्षु मण्डल, हरिद्वार)

हमारे प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये प्रतिदिन करने के लिये पांच यज्ञ निश्चित किये थे। उनमें से सन्ध्या सबसे प्रथम है। सन्ध्या आत्मिक भूमिका में उन्नति प्राप्त करने का प्रधान साधन है। या यों कहना चाहिये आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करने का सन्ध्या मुख्य द्वार है।

सन्ध्या का अर्थ—सन्ध्या यह दो शब्दों के मेल से बना है। एक 'सं' दूसरा 'ध्यैङ्'। 'सं' उपसर्ग है ध्यैङ् धातु है। 'सं' उपसर्ग का अर्थ है अच्छी प्रकार से और 'ध्यैङ्' धातु का अर्थ ध्यान करना दोनों को मिला करके बना अच्छे प्रकार से ध्यान करना। सन्ध्या शब्द का दूसरा अर्थ सन्धि, मेल वा योग है। सन्ध्या के समय साधक का प्रभु के साथ जो सम्बन्ध मेल वा योग होता है इस आशय का प्रकाश यह दूसरा अर्थ बतला रहा है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सन्ध्या का यह अर्थ किया है कि:—

'सन्ध्यायन्ति सन्ध्यायते वा परब्रह्म-
यस्यां सा सन्ध्या।' (पंचमहायज्ञ विधि)

भली भांति ध्यान करते हैं या ध्यान किया जाता है परमेश्वर का जिसमें वह सन्ध्या है। सन्ध्या का मुख्य उद्देश्य परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान है। यह तो सन्ध्या का अर्थ और उसकी व्युत्पत्ति ऋषि के शब्दों द्वारा बतलाई गई।

सन्ध्या क्यों करनी चाहिये, इससे क्या २ लाभ हैं:—

संसार में यह देखा जाता है और मनुष्य का स्वभाव है, वह किसी वस्तु के लाभ को सोच और विचार कर फिर उसमें प्रवृत होता है। अगर उसको उसके लाभ का पता नहीं और उस में लग जाता तो उल्टा हानि (नुकसान) उठाता है और पीछे पछताता है। इस लिये हम को भी यहां यह देखना है कि सन्ध्योपासना से क्या क्या लाभ होता है। अगर हम को यही नहीं पता है तो उसमें प्रवृत ही कैसे होंगे। और जब प्रवृत ही नहीं होंगे तब उस के उत्तम फल जो महान आनन्द उसकी प्राप्ति कैसे करेंगे? इससे हम को इससे होने वाले जो लाभ हैं उनको समझ लेना चाहिये। कई लोग सुख और आनन्द एक ही स्थान अथवा एक ही अर्थ में प्रयोग करते रहते हैं। मगर मेरे विचार में यह बात नहीं। सांसारिक सुख जिसको हम आनन्द मान बैठते हैं वास्तव में वह आनन्द नहीं। सांसारिक जो सुख है उसके साथ दुःख भी मिला हुआ है। जहां सुख होता है वहां दुःख भी होता है। लेकिन जब आनन्द की प्राप्ति होती है वहां सांसारिक सुख दुःख नहीं होता बल्कि तीसरी एक विशेष वस्तु की प्राप्ति होती है जिसका नाम आनन्द है। उसमें दुःख का लवलेशमात्र भी नहीं होता है। यह आनन्द न प्राकृतिक किसी पदार्थ के अन्दर होता है न जीवात्मा के अन्दर होता। वह तो केवल परम पिता परमात्मा के ही अन्दर होता है। इसी कारण परमात्मा को सत्-चित्-आनन्द कहा गया और उनका नाम सच्चिदानन्द हुआ। जीवात्मा इसके पास आनन्द नहीं है अगर इसके पास अपना स्वाभाविक गुण विद्यमान होता तो जीवात्मा को भी हम सच्चिदानन्द कह सकते थे मगर यह बात नहीं। आगे शेष रह जाती है प्रकृति जिसके दो भेद हैं एक कारण प्रकृति दूसरा कार्य प्रकृति। इस दोनों प्रकार की प्रकृति इसमें आनन्द दूर की बात रही चेतना भी नहीं है इसी कारण इसको सत्-सत्तावाला कहा गया। अब बातें साफ हो गईं। प्रकृति सत् स्वरूपा है। जीवात्मा सत् और चित् इस से युक्त है और परम पिता परमात्मा सत् चित् आनन्द इन तीनों गुणों से युक्त हैं।

अब हमको अगर आनन्द की प्राप्ति करनी है तो हमको उस आनन्द का स्रोत जो परमात्मा है उसकी तरफ़ जाना होगा। प्रकृति के रंग बिरंगे चमकीले पदार्थों को देख कर अथवा उसको प्राप्त करके उसी में आनन्द मान बैठना जो केवल क्षणिक सुख है और जिसके पीछे दुःख भी साथ-साथ लगा हुआ है इसी को आनन्द समझ बैठना केवल अज्ञानता ही है और कुछ नहीं। अगर हमको आनन्द प्राप्त करना है अथवा उस आनन्द के स्रोत तक पहुंचना है तो सन्ध्या उपासना ही जो उस आनन्द के स्रोत का प्रथम द्वार है पहले उसको खोलने का प्रयत्न करना होगा। वह ऐसा द्वार अथवा दरवाजा नहीं है कि जरा सा प्रयत्न किया और खुल गया। उसके खोलने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति, भावना, विचार सब का सब केन्द्रित करना पड़ता है और अत्यन्त पुरुषार्थ और प्रयत्न के पश्चात् वह दरवाजा खुलता है। संसार में हम देखते हैं एक माता है वह घर में बैठी हुई चक्की से आटे पीसने का अथवा किसी सीने पिरोने के काम में लगी हुई हैं। उसका आठ अथवा ९ मास का बच्चा उसके काम को बिगाड़ा करता है। माता दरवाजा अन्दर से बन्द कर लेती है अब बालक पहले इधर उधर प्रयत्न करता है कुछ दरवाजों में हाथ पैर मार के खट पट करके रह जाता है मगर माता दरवाजा नहीं खोलती वह जानती है जब मेरा बच्चा भूख से अत्यन्त व्याकुल होगा, दूध की तलाश और मेरे पाने में अपना सारा प्रयत्न लगा देगा, रो रो कर सिर पटक पटक कर चिल्ला चिल्ला कर जमीन आसमान एक कर देगा तब मैं दरवाजा खोलूंगी। अन्त तक वह माता ऐसा ही करती है वह दरवाजा नहीं खोलती, बच्चा ऐसे चिल्ला चिल्ला कर गला बैठा लेता है दूध पीने की इच्छा और माता के पाने में जब अत्यन्त आकुल और व्याकुल हो उठता है बच्चे को अत्यन्त विह्वल हुआ हुआ देख कर माता का कोमल हृदय पिघल जाता है दरवाजा खोल देती है और प्यारे पुत्र को गोद में उठा लेती है उसके आंसू पोछंती है अपने अंचल से उसके शरीर में लगे धूल को झाड़ती है और अत्यन्त प्रेम से पुचकारती हुई अपने हृदय से लगा लेती है और अपने स्नेहमय दूध को पिला कर बच्चे को प्रसन्न करती है। यह तो एक सांसारिक माता की बात, लेकिन वह है जगत् जननी, जगत् की ही जननी नहीं जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के बच्चों की जननी (माता) है जिसके पास से कभी आनन्द रूपी दुग्ध का स्रोत प्रवाहित हो रहा है। माता को क्या हम ऐसे ही बातों ही बातों से प्राप्त कर लेंगे अथवा उस आनन्द को बिना किसी प्रयत्न प्राप्त कर लेंगे? इसके लिये महान् प्रयत्न करना पड़ेगा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि इस अष्टाङ्ग योग का जो ऋषियों ने किया वह क्यों? इसी लिये तो कि आनन्द का मुख्य केन्द्र जो परमात्मा है उसको कर सकें। सन्ध्या, ईश्वरोपासना पर ऋषियों ने अत्यन्त जोर दिया है। मनु जी महाराज कहते हैं उसके लाभ बतलाते हैं:—

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति।
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवा कृतम्॥

(१) प्रातः काल की सन्ध्या से रात्री भर के सायंकाल की सन्ध्या से दिन भर के कुसंस्कार मैल नष्ट होते है।

(२) सन्ध्या में बैठा हुआ साधक आत्मनिरी द्वारा अपने प्रत्येक अङ्ग के दोषों को खोजता है पश्चात्ताप के आंसू बहा कर अपने हृदय को शुद्ध है तथा निर्मल, शान्त, तपोमय, विद्या विज्ञान सूर्यादि सब जगत् प्रकाशक, सच्चिदानन्द स्वरूप पिता परमेश्वर के गुणों के चिन्तन से पाप रूपी का प्रक्षालन करता है।

(३) सन्ध्या अथवा भगवत भजन से अ पापों के लिये उठने वाली प्रवृत्ति का दलन और उत्तम विचारों की वृद्धी होती जाती है।

(४) परमेश्वर की स्तुति गुण कीर्तन से निर्मल तथा विनम्र होता है।

(५) महापुरुषों के जीवन पर दृष्टि डा देखिये भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध, शंकर औ वान दयानन्द इत्यादि जगतवंद्य महापुरुष अपने महान् कार्यों से मानव मस्तिष्क तथा हृ सदा के लिये प्रभुत्व प्राप्त किया है। शक्ति के समीप पहुंच कर ही अपरमित शक्ति प्राप्त कर

(६) इससे अदीनता और निर्भयता के की प्राप्ति होती है। महर्षि दयानन्द जी को का यही रहस्य था जिसे सर्वत्र प्रभु का साक्षा गोचर होता हो—वह गद्दियों और राज्यों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ता और पराधीनता क्यों स्वीकार करेगा। जिसे ता परमात्मा के सहाय पर पूर्ण विश्वास है वह लिये समूचे संसार के विरोध में अकेले खड़े क्यों भय खायेगा ? वह मृत्यु के पर पड़े हैं परन्तु मुख पर मन्द ना अटखेलियां खेल रही है। प्राण लेने को भी क्षमा दे रहे हैं। वेद मन्त्रों की मधुर से दर्शक श्रोत्र पवित्र कर रहे हैं। ईश्वर तेरी पूर्ण हो' यह कहता हुआ भक्त भगवान की मय गोद में विश्राम लेने को लालायित हो रहा सा दिव्य दृश्य है। निर्भयता इसी का नाम है। र पूर्ण विजय इसी को कहते हैं। यह निर्भयता मृत्यु पर पूर्ण विजय ऋषि को कहां से प्राप्त ? परमात्मा की उपासना एवं भगवद्भक्ति से। मनु हैं।

मुख्यो दीर्घसन्ध्यात्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
ज्ञानं यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च॥
मनु० अ० ४—९४

सन्ध्या न करने वाले द्विज को दण्ड:—
सन्ध्या येनाविज्ञाता सन्ध्या येनानुपासिता।
स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः॥
दे० भा० अ० ११। १६

जी ने पुनः कहा है:—
न तिष्ठति यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।
स साधुभिर्बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः॥
मनु० अ० २ श्लोक १०३

ब पुराण में भी लिखा है:—
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सन्ध्योपासां चरेद्द्विजः।
अन्यथा शूद्रवद् भूयात् सर्वकार्येषु निन्दितः॥
गरुण पुराण

त स्मृति में भी यह आया है।
तस्मान्न लंघयेत सन्ध्यां सायं प्रातः समाहितः।
उल्लङ्घयति यो मोहात् स याति नरकं ध्रुवम्॥
लिङ्ग पुराण में भी इस बात की पुष्टी की है:—
यान्मोहाद्व्यात्क्रमेत् सन्ध्यां नाति क्रमेद् द्विजः।
व्यतिक्रमणाद्विप्रो ब्रह्मण्यात्पतते यतः॥
लिङ्ग पुराण

इसी प्रकार से और बहुत से ग्रन्थों में इसके बारे बहुत कुछ लिखा है। हमारा यहां इतने ग्रन्थों का रण देने का प्रयोजन केवल इतना ही है कि हम या के महत्व को भली प्रकार से समझ लें। हमारे महर्षि सन्ध्योपासना पर इतना जोर क्यों देते इसका कारण क्या है ? वे जानते थे और पूर्ण से समझ गये थे कि परमात्मा ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ायक है, अविद्या अन्धकार निर्मूलक विद्या अर्क ाक है। वह अनन्त बल, विद्या, बुद्धि और ज्ञान ण है। वह न्यायकारी और सर्व व्यापक होते हुये बलों का बल है जो उस महान प्रभु का सहारा है उसके समीप बैठता है वह भी महान, शुद्ध, गुणों से युक्त हो जाता है। यहां मुझे एक उदा- (दृष्टान्त) की स्मृति आ गई वह दृष्टान्त :—

एक नगर में एक ब्राह्मण रहता था वह एक बार घर से कहीं बाहर विदेश में जाने लगा उसके पास १०० अशर्फियां थी, उसने उन अशर्फियों को अपने एक मित्र जो उस समय के अच्छे सेठ थे, उन को देकर कहा, सेठ जी इन अशर्फियों को आप अपने पास रक्खें, जब मैं विदेश से आऊंगा और जब मुझे आवश्यकता होगी मैं इनको आप से ले लूंगा। सेठ जी ने कहा अच्छी बात है अगर आप इसको अमानत के तौर पर रखना चाहते हैं तो रख दीजिये। जब आप को कभी भी आवश्यकता हो ले लीजियेगा। यह घर तो आप ही का है। वह ब्राह्मण उन अशर्फियों को सेठ जी के यहां रख कर निःशंक होकर विदेश चला गया। कई वर्षों के पश्चात जब विदेश से अपने घर आया और जब उसको रुपये की आवश्यकता महसूस होने लगी वह सेठ जी के पास गया। और कहा 'सेठ जी आप ने जिन मेरी १०० अशर्फियों को अमानत के तौर पर रक्खा था उनको दे दीजिये मुझ को इस समय अत्यन्त आवश्यकता है। सेठ अक्ल-मन्द होते ही हैं वह सोचने लगे कि इस ब्राह्मण ने अशर्फियां मुझको रखने के लिये दी थीं, वह बात ठीक है और मैंने लिया भी हैं लेकिन न इसके पास कोई प्रमाण है न कोई गवाह ऐसी अवस्था में यह मेरा कर ही क्या सकता है। उस सेठ ने लोभ में आकर ब्राह्मण देवता को अशर्फियों के देने से बिल्कुल इन्कार कर दिया। ब्राह्मण देवता बड़े दुखी और चिन्तित हुए वह न्याय कराने के लिये राजा के पास गये और राजा से सारी की सारी बात कह सुनाई। राजा ने कहा आप के पास कोई प्रमाणपत्र है, ब्राह्मण देवता बोले नहीं। फिर राजा ने कहा प्रमाण पत्र न सही कोई गवाह है, फिर भी ब्राह्मण देवता ने नहीं के शब्दों में जवाब दिया। राजा बड़े विचार में पड़ा लेकिन था बुद्धिमान और न्यायकारी। उसको एक सूझ निकल आई। वे ब्राह्मण देव से बोले अच्छा आप जाइये कल शाम को ६ बजे उसी सेठ की दुकान पर रहना मैं हाथी पर बैठकर शहर देखने के लिये आऊंगा। जब मैं आपको बुलाऊँगा उस समय आप मेरे पास आ जाइयेगा। राजा दूसरे दिन शाम को ६ बजे परि-भ्रमण करने के लिये हाथी पर बैठ कर निकला। सारा का सारा शहर सजा दिया गया था क्योंकि आज राजा शहर देखने के लिये आ रहे हैं। राजा हाथी पर बैठे निर्धारित समय पर उस सेठ की दुकान के सामने पहुचे, ब्राह्मण देवता को देख कर बहुत आग्रह और प्रेम से बुलाने लगे। ब्राह्मण देवता जी यहां आइये, यहां आइये। आपके दर्शन बहुत समय के पश्चात हुए। आप कहां थे. आप को कोई कष्ट तो नहीं ऐसे सुन्दर सुन्दर पांच सात वाक्य कह कर और हाथी को बैठवा कर ब्राह्मण जी के हाथ प्रेम से पकड़ कर हाथी पर अपने पास बैठा लिये और वहां से चल दिये। शहर का परिभ्रमण करके वह अपने स्थान पर चले आये। ब्राह्मण देव से बोले अच्छा आप इस समय जायें और कल ६ बजे शाम को मेरे पास आकर मुझ से फिर मिलें मैं आपके मुकदमे को फिर सुनूंगा। वह ब्राह्मण देव अपने घर चले गये। वह सम्पूर्ण दृश्य जो शाम को ६ बजे घटा था उसको सेठ जी और सेठ जी के जितने कर्मचारी थे सब ने देखा था। अब सेठ जी विचार करने लगे कि यह ब्राह्मण बहुत बड़ा आदमी है यह तो राजा के बगल में बैठने वाला है अगर यह इन १०० अशर्फियों की बात कही राजा से कह देगा तो राजा हमारे घर कोठी और दुकान को तोपों से भी उड़वा सकता है और हम को इस अपराध पर देश निकाला की भी आज्ञा दे सकता है। और हमारा सर्वस्व ले सकता है तो अब पहले उस ब्राह्मण देवता को बुला कर प्रसन्न करना चाहिये और उसकी ली हुई अशर्फियों को दे देना चाहिये नहीं तो महा अनर्थ होगा। सेठ जी अपने नौकर से कहते हैं भाई जाइये आप उस ब्राह्मण देवता को बड़े आदर से बुला लाइये। नौकर जाता है और ब्राह्मण जी से कहता है देव! चलिये सेठ जी आप को याद कर रहे हैं आप से मिलने के लिये अत्यन्त व्याकुल हो रहे हैं। आप को चलने में कष्ट होगा लेकिन क्षमा करें। ब्राह्मण जी सेठ के यहां जाते हैं। अब सेठ जी बड़े आदर के साथ उनको बैठाते हैं फूल फल आदि से सत्कार करते हैं और कहते हैं पंडित जी! आपने जो १०० अशर्फियां दी थीं उसको मैं बही में लिखना भूल गया था अब मुझको याद आ गया है इस लिये यह १०० अशर्फियां लीजिये, मुझ सेवक से जो गलती हुई हैं उसको क्षमा कीजिये।

इस कथानक से हमको यह शिक्षा मिलती है कि वह एक तुच्छ ब्राह्मण थोड़े समय तक छोटे से भूभाग के राजा के पास बैठने पर उपरोक्त कही हुई अवस्था को प्राप्त हुआ और उसकी दूसरे के हाथ में गई सम्पति भी मिल गई और महान-कीर्ति और यश को प्राप्त कर लिया लेकिन जो ऐसे करोड़ों अरबों असंख्यों राजाओं का भी राजा, महाराजा है और जो असंख्य लोक लोकान्तरों और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का मालिक, शासनकर्त्ता है, उस परमपिता परमात्मा के पास नित्य प्रति सुबह शाम एक अथवा दो घण्टा बैठता है, और जो उस प्रभु के कहे हुए पर आचरण करता है वह किस महानता को प्राप्त होगा उसकी धवल कीर्ति विश्व में कितनी फैलेगी वह कितने महान आनन्द को प्राप्त करेगा कहा नहीं जा सकता। इस लिये हम सबों को उचित है कि हम उस परम पिता के समीप बैठ कर सुबह शाम पवित्र सन्ध्या के द्वारा अपने आचरण को शुद्ध करें और अपने अन्दर शुभ गुणों को धारण करते हुए जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। इस लेख के लिखने का हमारा केवल इतना ही प्रयोजन है कि हम सन्ध्या के वास्तविक महत्व एवं रहस्य को समझ कर उस परम पिता प्रभु के पास पहुंचने के सच्चे अधिकारी और भक्त बन सकें।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्या गुरुकुल देहरादून के समाचार

१—वार्षिकोत्सव ३०-३१ दिसम्बर तथा १-२ जनवरी को होना निश्चित हुआ है। गुरुकुल के लिये धन संग्रह का कार्य करने के लिये पं० सोमदत्त जी मुख्याधिष्ठाता पंजाब के विविध शहरों में भ्रमण कर रहे हैं। आशा है आर्य भाई उदारतापूर्वक गुरुकुल की सहायता करेंगे।

२—ब्रह्मचारिणियों की षाण्मासिक परीक्षायें २२ नवम्बर से प्रारंभ होगीं। अध्यापिकायें तथा छात्रायें परीक्षा की तय्यारी में जोर शोर से संलग्न हैं।

३—पिछले सप्ताह कन्या गुरुकुल में गोशाला की स्थापना की तथा अच्छी नसल की ११ गायें क्रय करने की सूचना दी गई थी उसके बाद ३-४ दूध देने वाले पशु और भी खरीदे गये हैं। कैथल के एक आर्य सज्जन ने अच्छी नसल की एक गाय खरीदकर शीघ्र भेजने का वचन दिया है आशा है, अन्य आर्य्य पुरुष भी गौओं के लिये धन भेजकर तथा गोशाला भवन निर्माण के लिये सहायता धन भेजकर पुण्य के भागी होंगे।

४—ऋतु सामान्यतया उत्तम है। १ नवम्बर से ७ नवम्बर तक कुछ ब्रह्मचारिणियों को ऋतुज्वर हो गया था अब वे रोगमुक्त हो चुकी हैं। ८ नवम्बर को निम्न छात्रायें मलेरिया ज्वर से रोगी हैं। वृजरानी (मथुरा) सावित्री (सरायसिद्ध) उमा (कानपुर) सुलोचना (पंचमढ़ी) सुदर्शना (करांची) बिमला (कांगड़ा) इनके अलावा सीना (पंचमढ़ी) खुजली से तथा कु. अमृतलता (लाहौर) तथा विद्योत्तमा (गोंडा) काली खांसी से पीड़ित हैं दोनों की दशा पहले से बहुत अच्छी है।

कन्या गुरुकुल देहरादून

नई कन्याओं का प्रवेश

कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव ३०-३१ दिसम्बर तथा १-२ जनवरी को होना निश्चित हुआ है। इसी अवसर नवीन प्रविष्ट होने वाली कन्याओं का वेदारंभ संस्कार होगा। जो महानुभाव अपनी कन्याओं को प्रविष्ट कराना चाहते हैं वे अभी से प्रवेश फार्म मंगाकर भरकर भेज दें। स्थानाभाव के कारण श्चित संख्या में ही कन्यायें प्रविष्ट की जा सकेंगी—

धिष्ठाता—कन्या गुरुकुल ६० राजपुर रोड, देहरादून

कन्या गुरुकुल की आवश्यकतायें

१. विद्यालय तथा महाविद्यालय भवनों के लिये	६० हज़ार
२. आश्रम भवन के लिये	२० हज़ार
३. हस्पताल के लिये	५ हज़ार
४. भोजनशाला के लिये	४ हज़ार
५. स्थान रहने के लिये	५ हज़ार
६. धर्मशाला के लिये	४ हज़ार

जो महानुभाव अपने किसी सम्बन्धी की यादगार में कमरा बनवाना चाहेंगे उनके नाम का पत्थर कमरे पर लगा दिया जायगा।

कन्या गुरुकुल देहरादून की सहायता कीजिये

(ले०—पं० सोमदत्त विद्यालंकार मुख्याधिष्ठाता कन्या-गुरुकुल देहरादून)

आज से लगभग २१ वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी के २१वें वार्षिकोत्सव पर प्रसिद्ध दानवीर सेठ रघुमल जी लोहिया ने यह घोषणा की थी कि यदि गुरुकुल कांगड़ी की तरह कन्याओं के लिथे गुरुकुल खोला जाय तो मैं उसके लिये १ लाख रुपया देने को तय्यार हूँ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा आर्य पुरुषों के मन में पहले ही कन्या गुरुकुल खोलने का विचार उठ रहा था। श्री सेठ जी की इस उदार घोषणा का यह परिणाम हुआ कि शिरोमणि सभा ने सं० १९८० की दिवाली के दिन देहली में एक विशाल कोठी किराये पर लेकर कन्या गुरुकुल की स्थापना कर दी। विचार था कि शीघ्र ही कोई उचित स्थान देखकर कन्या गुरुकुल को अपने स्थान पर ले जाया जायगा। दुर्भाग्य से श्री सेठ रघुमल जी का सं० १९८३ में देहावसान होगया, वे जब तक जीवित रहे अपने प्रतिज्ञान धन १ लाख का मासिक सूद ५०० गुरुकुल को देते रहे। ऐसी अवस्था में अपना अन्त निकट जान उन्होंने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को तार देकर कलकत्ता बुलाया पर श्री स्वामी जी के कलकत्ता पहुँचने से पूर्व ही सेठ जी का स्वर्गवास होगया। सेठ जी ने अपने दान के धन का सदुपयोग करने के लिये एक ट्रस्ट कायम कर दिया था। पर इस ट्रस्ट से गुरुकुल को अभी तक वह प्रतिज्ञान सहायता का धन नहीं प्राप्त हो सका है।

सेठ जी से १ लाख रुपया मिलने की आशा पर ही गुरुकुल की स्थापना की गई थी यद्यपि दैवीय कारणों से वह सहायता धन प्राप्त नहीं हो सका पर कन्या गुरुकुल को बन्द करना अब ठीक न था। आर्य पुरुषों ने तथा शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संचालकों ने येन केन प्रकारेण इस संस्था को जारी रखने का ही निश्चय किया। सं० १९८४ में, कन्या-गुरुकुल को देहली से उठाकर देहरादून लाया गया और वर्तमान स्थान पर २ कोठियें किराये पर लेकर कार्य प्रारंभ किया गया। इस निश्चयानुसार आस-पास की तीन कोठियें जिनके साथ लगभग ६२ बीघा जमीन है खरीद ली गई और कन्याओं के निवास तथा पढ़ने के लिये आवश्यक मकानात बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया।

स्वर्गीय सेठ रघुमल जी के दान के १ लाख रुपये प्राप्त न होने पर भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य जनता की सहायता की आशा पर ही इस गुरुकुल को जारी रखने का निश्चय किया था पर दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि आर्य जनता ने पर्याप्त रूप में इस संस्था की सहायता नहीं की। आज इस गुरुकुल को स्थापित हुए लगभग २० वर्ष तथा देहरादून में इसे स्थिर रूप में चलाने का निश्चय हुए लगभग १२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं पर अभी तक छात्राओं के निवास पठन पाठन भोजनादि के लिये आवश्यक मकानात नहीं बन सके हैं।

संप्रति ने इस गुरुकुल में लगभग ३०० शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। लगभग २५० कन्या निवास के लिये उपयुक्त आश्रम बन चुका है प बहुतसी कन्याओं को बरामदे में ही रहना प कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव १॥ मास बाद हो है इस अवसर पर और भी कन्यायें प्रविष्ट हों

आश्रम के अतिरिक्त भोजन भंडार, विद्यालय तथा महाविद्यालय के भवन, चिकि स्नानगृह आदि के लिये भी आवश्यक भवन के लिये धन की सख्त आवश्यकता है।

जब तक स्वर्गीय श्री आचार्य रामदेव जी हाथ इस कन्या गुरुकुल पर रहा यह गुरुकु प्रति दिन उन्नति करता गया उनके निधन के इसकी आर्थिक अवस्था शोचनीय होगई। उप कर्ता के अभाव में इस संस्था के लिये पर्याप्त में प्राप्त न हो सका। आचार्य रामदेव जी के पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने २ लाख अपील उनकी यादगार कायम करने के लिये जिसमें प्रथम एक लाख रुपया कन्या गुरुकुल व्यय करना निश्चय किया गया था। पूज्य गांधी जी ने भी रामदेव स्मारक निधि के लिये रुपया एकत्रित करने की अपील की थी। पर साथ लिखना पड़ता है कि इस निधि में केवल ३० हजार रुपया ही एकत्रित हो सक यह आर्य जनता की शिथिलता का द्योतक गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के प्रेमियों तथा विशे कन्या शिक्षा के प्रेमी आर्य पुरुषों से हमारी प्रार्थना है कि वे उदारता पूर्वक इस उपयोगी लय की सहायता करें। क्या धनी आर्यसज्जन को गवारा कर सकते हैं कि वे स्वयं तो कोठियों में रहें और उनकी पुत्रियां ग्रीष्म कड़ी धूप में तपती हुई टीन के टैम्परेरी नीचे निवास कर दुःख उठाया करें। आशा शील आर्य जनता कन्याओं को सर्वोत्तम वाली एकमात्र राष्ट्रीय संस्था की ओर ध्यान ही इसकी आवश्यकताओं को पूर्ण कर देगी।

खोई हुई रसीद बहियों की सूचना—

सर्वसाधारण को सूचना के लिए सू जाता है कि सभा की निम्न रसीद ब सज्जनों को दी गई थीं उनसे कहीं हैं। अतः अब ये प्रामाणिक न सम रसीद बही १५५१ से १६०० तक। सार्वदे " " १ से २५ तक। तथा २४ तक।

मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किसी मानवी संस्था के जीवित होने का सब से
प्रमाण यह है कि मानव जाति के शरीर में कहीं
घाव होने पर यह संस्था हाथ की तरह उस
पर मरहम लगाने के लिये पहुंच जाये। इस
दृष्टि पर कसा जाये तो निर्विवाद रूप से कहा जा
सकता है कि आर्य समाज एक जीवित संस्था है।
आर्य समाज ने बंगाल के आर्तनाद को सुना और
बिना किसी विलम्ब के सेवा के लिये पहुंच गया।
आश्चर्य मात्र के लिये सन्तोष की बात है। गत वर्ष
मिदनापुर में बाढ़ ने प्रलय मचा कर प्रजा को
में डाल दिया था तब भी बंगाल की प्रान्तिक
निधि सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
सहायता से सेवा का प्रशंसनीय कार्य किया था।
में जल का उत्पात होने पर पंजाब की आर्य
निधि सभा ने जो कार्य किया, उससे भी आर्य
ज का सिर ऊंचा हुआ। परन्तु इस वर्ष बंगाल
जो आपत्ति आई है और जो धीरे धीरे उड़ीसा
बिहार से होती हुई शेष भारत में फैलने के
ख दिखा रही है, वह गत वर्ष की आपत्तियों से
अधिक भयंकर है। अंग्रेजी राज्य के प्रारम्भिक
नी के समय के दुर्भिक्षों को वर्तमान दुर्भिक्ष और
मारी ने भयंकरता में मात कर दिया है। गत युद्ध
छोड़े इंफ्लुयेंजा के रूप में जो घोर संकट भारत पर
तीर्ण हुआ था, उससे कहीं अधिक घोर संकट
वर्ष युद्ध के बीच में ही भारत पर उतर आया है।
समय केवल रोग का हमला था, इस बार रोग
भूख दोनों का हमला है। जाति के इस अपूर्व
ट के समय में यदि आर्य समाज कुछ न करता तो
उसकी मृत्यु का सूचक होता, परन्तु हर्ष की बात
कि कर्तव्य की पुकार आते ही आर्य समाज ने
सुना और कर्तव्य पालन के मैदान में उतर आया।
गत तीन चार महीनों में आर्य समाज की ओर
बंगाल में सेवा की जो विशाल योजना काम में
ी गयी है, उसके समाचार अखबारों में प्रकाशित
ांहे हैं। बंगाल की प्रान्तिक प्रतिनिधि सभा और
कता आर्य समाज की ओर से प्रान्त में गत वर्ष
ी सेवा का कार्य हो रहा था, नया संकट आते ही
कार्य को एकदम फैला दिया गया और शहर
ग्रामों में अन्न वस्त्र बांटने तथा दवा देने का कार्य
ी कर दिया गया। लाहौर की प्रादेशिक आर्य
निधि सभा ने जिस तत्परता और शीघ्रता से सेवा
मैदान में कदम रखा उसकी जितनी प्रशंसा की
कम है। प्रादेशिक सभा की ओर से भेजे हुये
अन्न और कार्यकर्ताओं से प्रान्तिक कार्यकर्ताओं
बहुत भारी सहायता मिली। सार्वदेशिक आर्य
निधि सभा ने आर्य जगत् से धन और जन की
अभ्यर्थना की थी, उसका भी काफी अच्छा उत्तर
हो रहा है। सितम्बर मास में सार्वदेशिक सभा
प्रमुख कार्यकर्ता पं० ओमप्रकाश त्यागी को स्वयं
कों के साथ बंगाल भेज दिया गया था। उनके

बंगाल का आर्त्तनाद

श्री० पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्य के सम्बन्ध प्रान्त से जो समाचार आ रहे हैं, वह सराहनीय हैं। सार्वदेशिक सभा में प्रान्तिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों और आर्य-नर-नारियों से जो आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है, वह बंगाल भेजी जा रही है।

बंगाल में आर्यसमाज की ओर से जो कार्य हो रहा है, वह एक ही केन्द्र में संगठित होता है। वह केन्द्र प्रान्त में सेवा कार्य करने वाली हिन्दू सभा, मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी और पंजाबी रिलीफ सोसायटी आदि संस्थाओं के साथ मिलकर डाक्टर श्यामप्रसाद मुकर्जी के परामर्श से अपना कार्य कर रहा है। यह तो मैंने कार्य के सम्बन्ध में सन्तोष की बातें सुनायीं, परन्तु इससे सन्तुष्ट होकर बैठने का कोई अधिकार नहीं है। ज्यों ज्यों समय गुजरता जाता है, बंगाल का आर्तनाद अधिक ही अधिक ऊंचा होता जा रहा है। धन और जन की जितनी सहायता भेजी गई है, वह आवश्यकता के समुद्र में बूंद के समान है। भूखों की संख्या दिन बदिन बढ़ रही है और बीमारों की भी। परिणाम यह है कि अनेक यत्नों के होते हुए भी मरने वालों की संख्या बढ़ रही है। आर्य समाज ने सेवा का जो कार्य आरम्भ किया है, उसे न केवल इतना ही कि उसे जारी रखने की आवश्यकता है प्रत्युत इसे निरन्तर बढ़ाना आवश्यक है। इस समय बंगाल से निम्न-लिखित वस्तुओं की मांग विशेष रूप से आ रही है:—

(१) धन—चलते हुए सेवा कार्य को जारी रखने और आवश्यक क्षेत्रोंको बढ़ाने के लिए अभी कुछ धन की आवश्यकता है। केवल आर्य समाज द्वारा चलाये गये केन्द्रों के लिए ही कम से कम एक लाख रुपये की तत्काल जरूरत है। आर्य समाज में न दानियों की कमी है और न दान देने की इच्छा की। उन्हें केवल अनुभव कराने की आवश्यकता है इसी विश्वास पर मैंने कलकत्ते के कार्यकर्त्ताओं को आश्वासन दे दिया है कि आवश्यक धन इन्हें शीघ्र ही भेज दिया जायेगा। मेरी आर्य नर नारियों तथा समाजों से प्रार्थना है कि वह रुपया में विलम्ब न करें। "का वर्षा जब कृषि सुखाने"। यदि भेजने में देर हुई तो उस धन से क्या लाभ होगा।

(२) कपड़े—रुपये की सूरत में सहायता भेजने के अतिरिक्त कपड़े की सूरत में भी भेजना बहुत लाभ-दायक है। सभी चीजें बंगाल में दुर्लभ हो रही हैं। धोती, कुड़ता, चादर, कम्बल—जो भी कुछ भेजा जा सके आर्य रिलीफ़ सोसायटी के मन्त्री के नाम आर्य-समाज, कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ते के पते से सीधा भेज देना चाहिए। उसकी सूचना सार्वदेशिक सभा, दिल्ली के कार्यालय में भी भेजने की कृपा करें।

(३) स्वय सेवक—मैंने ऊपर लिखा हैं कि सार्व-देशिक सभा के प्रमुख कार्यकर्ता पं० ओमप्रकाश त्यागी, डाक्टर सुखदेव जी और पं० शिवचन्द्रजी अनेक स्वयंसेवकों के साथ सेवा करने के लिये बंगाल भेजे गये हैं और वह बहुत परिश्रमपूर्वक सेवा कर रहे हैं। आर्यसमाज की ओर से लगभग २४ केन्द्र चलाये जा रहे हैं जिनसे कई सहस्र मनुष्यों को प्रतिदिन अन्न मिल रहा है। अभी कल सार्वदेशिक सभा की अन्त-रङ्ग सभा के सदस्य श्री मिहिरचन्द्रजी धीमान् कलकत्ते से आकर मुझे मिले थे। आप प्रान्तिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री हैं और आर्यसमाज की ओर से किये जाने वाले सेवा-कार्य के जीवन प्राण हैं। आपने पं० ओमप्रकाशजी के इस संदेश की पुष्टि की कि त्यागभाव से सेवा करने वाले स्वयंसेवकों की बहुत भारी आव-श्यकता है। जो सज्जन या देवियां सेवा कार्य के लिए बंगाल जाना चाहें वह सार्वदेशिक सभा को सूचित करें। आवश्यकतानुसार उन्हें यहाँ से निर्देश भेजा जायेगा और उस समय उन्हें तत्काल ही बंगाल के लिए रवाना हो जाना चाहिये।

निवेदक:— इन्द्र विद्यावाचस्पति
मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

आवश्यकता

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के लिए एक योग्य अनुभवी जो आयुर्वेदिक फार्मेसी के कार्यों से परि-चित हों व्यवसायध्यक्ष की आवश्यकता है। वेतन ७५) से १००) तक होगा। प्रार्थनापत्र प्रमाणपत्र की प्रति सहित मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन लाहौर के पास भेजें।

मन्त्री—सभा

—समस्त आर्य समाजों व आर्यों को सूचित किया जाता है कि स्वामी शिवानन्द (डाढी वाले को) २४—१०—४३ से आर्य प्रतिनिधि सभा से पृथक् कर दिया गया है।

अधिष्ठाता वेदप्रचार
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्यसमाज जामपुर समाचार—

आर्यसमाज जामपुर में ऋषि उत्सव समारोह से मनाया गया, सभापति का आसन श्री. म. गणेशदत्त जी ने ग्रहण किया। कई वक्तृताएं हुईं। म० ज्ञानचन्द और श्रीमती सुशीला देवी प्रभाकर के भाषण उत्तम थे। चार आना निधि के लिए १६।—) दान एकत्र हुआ। अन्त में सभापति जी के ओजस्वी भाषण के साथ कार्यवाई समाप्त हुई।

१५ दिन से ऋषि जीवन कथा भी श्री म० गणेश दत्त जी कर रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुरुकुल समाचार

ऋतु और स्वास्थ्य

गुरुकुल में ऋतु उत्तम है। वातावरण में शीतलता बढ़ती जा रही है। पिछले पक्ष में गुरुकुल में मलेरिया की शिकायत अधिक रही। स्वास्थ्य-रक्षा विभाग की सतर्कता और क्रिया शीलता के कारण अब इस रोग का प्रभाव जाता रहा। अस्पताल में रोगियों की संख्या घटती जा रही है। शीतऋतु के आजाने के कारण विद्यालय तथा महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों को रजाई, तोषक, वरडी, गर्म कुर्त्ता आदि दे दिए गए हे। भोजन की शुद्धता, सात्विकता और पौष्टिकता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। ब्रह्मचारियों को गोशाला का ताजा दूध पर्याप्त मात्रा में दिया जा रहा है।

वैदिक-अनुसन्धान विभाग

गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी में अनेक वर्षों से वैदिक अनुसन्धान विभाग अच्छा कार्य कर रहा है। गत शताब्दि में पश्चात्य विद्वानों द्वारा वेदों के सम्बन्ध में जो व्याख्याएँ प्रकाशित हुई और उनसे वैदिक-साहित्य की जो दुर्गति हुई उसे प्रत्येक भारतवासी जानता है। आर्यसंस्कृति तथा आर्य-साहित्य के प्रति सहानुभूति-हीन मस्तिष्कों से वेदों के जैसे भाष्य प्रकाशित होने चाहिए थे, पाश्चात्य विद्वानों के किए हुए भाष्य उसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अपने पवित्र वैदिक-साहित्य की छीछालेदर से क्षुब्ध आर्य जनता ने जो आवाज़ उठाई उसी से आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने अपने यहाँ आर्य-संस्कृति प्रेमी विद्वानों की देखरेख में वैदिक अनुसन्धान विभाग की स्थापना की। यही विभाग आजकल गुरुकुल कांगड़ी में सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। समुद्र के समान गहन और गम्भीर इस विशाल वैदिकवाङ्मय से रत्नों को निकालना जितना कठिन और दुस्तर कार्य हैं उसे भुक्त भोगी भली प्रकार जानते हैं। इस गुरुतर कार्य को करने के लिए अधिक साधन श्रम, तपस्या और लगन की आवश्यकता है। अर्थाभाव भी इसमें बहुत कुछ बाधक है। इस प्रकार यह महान कार्य एक दो नहीं बीसियों-प्रतिभा-सम्पन्न विद्वानों की अपेक्षा रखता है। इस कार्य के लिए कम से कम एक लाख राशि की शीघ्र आवश्यकता है। आर्यसंस्कृति प्रेमी-धनी सज्जन इस गुरुतर कार्य में सहायता देते हुए यदि आर्थिक कठिनाई सम्बन्धी अपने अंश को पूर्ण कर दें तो अवशिष्ट कार्य विद्वज्जन परिश्रम पूर्वक पूर्ण कर सकेंगे। इस प्रकार भविष्य में अपने वैदिक अनुसंधान विभाग द्वारा जहाँ गुरुकुल उत्तरोत्तर आर्य जाति की अधिकाधिक सेवा कर सकेगा वहाँ भारतीय राष्ट्रोत्थान के दुर्वह कार्य में भी उचित सहयोग दे सकेगा—इसमें सन्देह नहीं।

स्वास्थ्य समाचार "आर्य"

श्रेणी	नाम ब्रह्मचारी	नामरोग
१४	सच्चिदानन्द	ज्वर
१४	जगदीश	ज्वर ३ मास
१५	जगदीश	निर्बलता
५	सुरेन्द्र	ज्वर
५	झाकचन्द	,,
५	रणवीर	ज्वर २ मास
५	सुर्णकुमार	ज्वर
४	चन्द्रसेन	,,
४	राजेन्द्र	,,
४	गोपाल	,,
४	रमेश	,,
५	लक्ष्मण	चोट
३	सन्तोष	ज्वर
३	धर्मवीर	,,
३	नरेन्द्र	,,
३	सुमतकुमार	,,
२	योगेश्वर	,,
१२	जगदीश	ज्वर
१२	प्रताप	अतिसार
५	योगेन्द्र	ज्वर
४	दयानन्द	,,
४	जगदीश नारायण	,,
४	महेन्द्र	,,
४	गोपालशंकर	,,
३	अशोक	,,
१	मदन	,,
१	सत्यनारायण	,,
१	भूपेन्द्र	,, व कास्

उपरोक्त ब्र० गत सप्ताह रोगी हुए थे। अब सब स्वस्थ हैं। ६ ब्र० Tonsil के operation के लिये लाहौर श्री रोशनलाल जी खेड़ा के वहाँ भेजे गये थे। सब का ओपरेशन बड़ी सफलता पूर्वक हुआ और किसी ब्र० को कष्ट नहीं हुआ। डाक्टर साहब की इस अमूल्य सहायता के लिये हम उनके कृतज्ञ हैं।

—सत्यपाल

—:०:—

—गुरुकुल में दीपावली—

गुरुकुल में दीपमालिकोत्सव बड़े प्रेम और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। देश में सर्वत्र फैली हुई अपूर्व महँगाई और बंगाल के दुर्भिक्ष को दृष्टि में रखते हुए कुलवासियों ने इस पर्व को पर्याप्त सादगी और अल्प व्यय से ही मनाया है। ब्रह्मचारियों ने स्वेच्छा से ही कंडील गुब्बारे और आनन्द भोज का कार्यक्रम बन्द कर दिया था। उनके स्थान पर क्रीड़ा सान्मुख्यों का आयोजन किया था। यह सान्मुख्यों का कार्य बड़ा मनोरंजक और उपयोगी रहा। हाँकी फुट-बाँल, और वौलीबाँल आदि के मैचों में ब्रह्मच आमोद पूर्वक भाग लेते रहे।

दीपावली के दिन वेदमन्दिर में समवेत हो समस्त कुलवासियों ने आचार्य श्री प्रियव्रत जी वाचस्पति की अधिनायकता में दीपोत्सव मनाय सर्व प्रथम वृहद् यज्ञ किया गया। उसके बाद की गई। जिसमें ब्रह्मचारियों तथा अन्य वक्ताओं दीपावली पर्व के विविध अंगों पर अपने विचार प्र किए। अन्त में आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द स्वती के ब्रह्मचर्य तेज और पुरुषार्थ पर बड़ा मनमो और प्रभाव पूर्ण प्रवचन किया। इसी समय सांम छाया घनी हो चली थी, अतः वेदमन्दिर को पंक्तियों से अलंकृत किया गया। वेद मंदिर में दी के कारण बड़ा शान्त प्रकाश फैल रहा था। तीव्रता न होकर सुहावनापन अधिक था। दीप पं की सज्जा हो जाने पर यह सभा विसर्जित की गई

श्री मद्दयानन्दाब्द की सभा

दूसरे दिन विद्यालय के सभाभवन में गुरु साहित्य परिषद् की ओर से कुलवासियों की एक श्रीमद्दयानन्दाब्द के उपलक्ष्य में आयोजित हुई इस सभा के व्याख्यान और प्रवचन अधिक म और विचारोत्तेजक होते हैं। ऐसा रिवाज है। इस दिन केवल महर्षि दयानन्द जी के जीवन उनकी शिक्षाओं पर ही विचार किया जाता है। महाविद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों और गु ने महर्षि के जीवन कार्य पर विविध दृष्टि से अच्छा दृष्टिपात किया। प्रो० सुखदेव जी ने दार्शनिक मौलिक दृष्टि पर प्रकाश डाला। प्रो० जी ने उनके सामाजिक और राजनेतिक पहल विचार प्रगट किये। प्रो० भवानीप्रसाद जी ने की महिमा पर काव्य पाठ किय.। अन्त में श्री जी ने सभापति पदसे महर्षि की सत्यनिष्ठा और परायणता पर विशद विवेचन करते हुए अनेक घ से यह सिद्ध किया महर्षि के जीवन का सर्वस्व परायणता और ब्रह्मचर्य इन दो शब्दों में हुआ है। आचार्य जी ने एक मुसलमान स लेख का अवत रण देते हुए महर्षि की सत्यप्रि प्रतिपादन करते हुए श्रोताओं को मनोमुग्ध क था। इस प्रकार पूरे चार घण्टे की विशद बाद दीपावली का वह अन्तिम उपक्रम समाप्त हु

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ

सम्पादक भीमसेन विद्यालङ्कार

Regd L. N. 5004

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक,
मानसिक तथा आत्मिक
उन्नति के लिये इसका
ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २४, अंक ५२
वार्षिक मूल्य ४)
६ मार्गशीर्ष २०००
२१नवम्बर १९

२००१ मुख्याधिष्ठाता जी
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

अध्यात्म सुधा

जल और अग्नि का स्पर्श
शान्ति और क्रान्ति के प्रतिनिधि हैं
ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ के मूलतत्व

संध्या हवन, को केवल मात्र आध्यात्मिक उन्नति का साधन नहीं समझा गया। मानव समाज की शारीरिक मानसिक और अध्यात्मिक उन्नति की साधना के लिये संध्या हवन अथवा व्यावहारिक भाषा में—जल स्पर्श और अग्नि का स्पर्श करना आवश्यक है। जल स्पर्श तथा आचमन से कफ़ निवृत्त तथा शारीरिक शुद्धि तो होती है परन्तु आचमन से जल पीने से क्रोधी मन और काम वासनाएं भी शान्त होती हैं। स्नान करने के बाद-स्नान करते करते सहसा मनुष्य मन को शान्त करने वाले मंत्रों तथा स्तत्रों का पाठ करने लगता है—या करना चाहता है। इसी प्रकार से सब जगह व्यापक परमात्मा की सत्ता को अनुभव क ना—इस भावना से प्राणिमात्र को 'अपना' समझना —मनुष्य की आत्मा को उत्तर और प्रसन्न करता है। इस प्रकार हमें संध्या में आचमन मंत्र पढ़ते हुए, पानी को देखकर अपने शरीरों, मनों और आत्माओं को शुद्ध शीतल और प्रसन्न बनाने की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। हरेक व्यक्ति को अपने निवास स्थान में शुद्ध निर्मल पानी रखने का प्रबन्ध करना चाहिए जिन घरों तथा स्थानों में शुद्ध पानी रखने का प्रबन्ध नहीं वहां कितना कष्ट होता है—यह हरेक व्यक्ति के अनुभव की बात है।

इसी प्रकार—अग्नि—आग—जड़ चेतन सब में अति प्रकाश और जीवन-प्राण को पैदा करता है।

अंधेरे में आग की मशाल ही मनुष्य को आगे ले जाती हैं। चूल्हों में प्रदीप्त आग मनुष्य को अन्न द्वारा प्राण शक्ति देती है। यह दिखाई दे रही रेलगाड़ियां—मोटर लारियां इसी आग की गति से चल रही हैं। इस आग की आंच से ही शरीर मन तथा आत्मा के मल-दूर होते हैं। यह आग ही मनुष्य को ज्ञान-प्रकृति तत्वों को ज्ञान से आलोकित मनुष्य को पूर्णता की ओर ले ज

सन्ध्या हवन करते हुए जल और आग के गुणों का इस प्रकार मनन करना चाहिए। इसके प्राकृतिक मानसिक और आध्यात्मिक अर्थों का चिन्तन करना चाहिए। ऐसा करने से संध्या से जल और अग्नि होत्र की आग हमें शान्ति और क्रान्ति की ओर ले जा सकेंगे।

जल शान्ति की ओर मनुष्य को ले जाता है, आग क्रान्ति परिवर्तन रूपान्तर की ओर मानव सेवा को ले जा रहा है। प्राचीन आर्यों ने दोनों शक्तियों के संलग्न द्वारा—मानव समाज को उन्नति पथ का राही बनाने के लिये ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ करने का निश्चय किया है। यह दोनों यज्ञ हमारे आत्मा को निर्मल चेतन और प्रकाशित करने वाले हैं। भीमसेन

आर्य का अगला अङ्क

आर्य का अगला अङ्क २८ नवम्बर के स्थान पर ४ दिसम्बर को प्रकाशित होगा। अगले सप्ताह में २२-२८ तक लाहौर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के के समय अनेक सम्मेलन तथा व्याख्यान होंगे। उन का विस्तृत विवरण देने के लिये दो अङ्क इकट्ठे प्रकाशित होंगे। इसकी पृष्ठ संख्या दुगनी होगी। ग्राहक महानुभाव अङ्कित कर लें।

आचार्य रामदेव स्मारक
क्वेटा से १००००) का दान

वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता पं० यशःपाल जी सिद्धान्त लंकार क्वेटा आचार्य रामदेव स्मारक में वेदचार स्थिर स्थिर निधि के लिये धन संग्रह करने गये थे। आर्य भाइयों की उदारता तथा पण्डित यशःपाल जी के उद्योग से १००००) इकट्ठा हो गया है। इसके लिये हम दोनों को साधुवाद देते हैं। अन्य आर्य समाजों को भी चाहिए कि आचार्य रामदेव स्मारक के लिये सभा की दो लाख अपील को शीघ्र पूरा करें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज

और

आर्य समाज के नियम (२)

पाठक वृन्द! गत लेख में मैंने आर्य समाज के पहले तीन नियमों के विषय में अपने विचारानुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की इच्छाओं का कुछ दिग्दर्शन कराने का साहस किया था। क्रमानुसार आगे चौथे, पाँचवें और छटे नियमों का वर्णन करता हूँ। प्रत्येक आर्य तब ही नियमों को अपने आपको आर्य कहलाने का अधिकारी हो सकता है, जबकि वह इन नियमों को अपने जीवन का मुख्य साधन बनाकर इनके अनुसार आचरण करे। आर्य समाज को स्थापित हुए लग भग साठ वर्ष होते हैं। परन्तु आर्य समाज ने अपने सभासदों और सहायकों में इस व्यवहार को लाने और अपने सभासदों और सहायकों को सच्चे आर्य बनाने का किंचित भी यत्न नहीं किया। वेद के पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने से मनुष्य में सत्य और असत्य का निर्णय करने का सामर्थ्य हो जाता है। इसी लिए महर्षि जी ने चौथे नियम में "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।" लिखा है। इस नियम के बनाने में महर्षि जी का तात्पर्य स्पष्ट दिखाई देता है, कि प्रत्येक आर्य सभासद् व आर्य को सत्य के ग्रहण करने में असत्य के प्रति किसी प्रकार का हठ नहीं करना चाहिए। असत्य से यदि लाभ किसी प्रकार सम्भव भी दिखाई देता हो, तो भी असत्य को अवश्य ही छोड़ देना चाहिए। सत्य के ग्रहण करने में यदि हानि का सम्भव भी हो, तो भी सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए अर्थात् सत्य को अवश्य ग्रहण करना चाहिए।

उपरोक्त नियमों का पालन करने वालों में सत्य और असत्य को विचार कर कार्य करने की योग्यता हो जाती है। इसी लिए महर्षि जी ने पांचवें नियम में "सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।" लिखा है। इस नियम के अन्दर महर्षि जी ने धर्म का अर्थ सत्य और असत्य को विचार कर कार्य करना ही कहा है। इस नियम के अनुसार प्रत्येक आर्य सभासद् और सहायक को सदा सत्य का ही आचरण अपने व्यवहार में अवश्य ग्रहण करना चाहिए। उक्त तीसरे, चौथे और पाँचवें नियमानुसार आचरण करने से मनुष्य अपने जीवन का पूरा सुधार कर सकता है, और वह इस योग्य हो जाता है, कि वह औरों का भी सुधार कर सके। इसी प्रकार मनुष्य में परोपकार की वृत्तियों के जागृत होने का शुभ अवसर आ जाता है। ऐसे ही व्यक्ति समाज का अंग बनकर संसार का उपकार करने में समाज को पूरा पूरा सहयोग दे सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों के सहयोग से समाज अपने छटे नियम "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" में लिखे उद्देश्य को पूर्ण रूप से चरितार्थ कर और करा सकते हैं।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने के लिए ऊपर लिखे आचरण वाले व्यक्तियों का समाज में होना अत्यन्तावश्यक है। जो व्यक्ति उपरोक्त नियमों पर आचरण नहीं करते, वे उक्त कार्य को अर्थात् समाज के इस उद्देश्य को पूरा करने में कदाचित् सफल नहीं हो सकते। ऐसे व्यक्तियों के सहयोग से समाज सदा उल्टे पथ पर चल निकला करता है। संसार का उपकार तो क्या समाज अपना ही उपकार करने में असमर्थ हो जाया करता है। जैसाकि आज साठ वर्ष से आर्य समाज उल्टे पथ पर चलता हुआ इस अधोगति को प्राप्त हुआ है कि भारतवर्ष में ही आर्यसमाज के वर्त्तमान कार्यों की सराहना करने वाले कुछ अंगुलियों पर गिने जाने योग्य व्यक्ति रह गए हैं। तात्पर्य यह कि आर्य समाज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की इच्छाओं पर पानी ही फेर दिया है।

आर्य समाज के उद्देश्य और नियम संसार भर में अद्वितीय माने जाते हैं। परन्तु आज तक आर्यसमाज जिन हाथों में रहा है, वे उसे पूर्णतया प्रकाशित करने में कुछ असमर्थ रहे हैं। इसका मूलकारण प्रबन्धकर्त्ताओं की स्वार्थपरायणता है। समाज ने देखने को तो आज तक बहुत विस्तार पाया, परन्तु अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के कार्यक्षेत्र में नहीं अपितु, उसके विपरीत पाश्चात्य साहित्य, सभ्यता और संस्कृति के प्रचार में सब से आगे रहा।

आर्यसमाज को वास्तविक रूप में आर्यसमाज बनाने के लिए भारतवासी आर्यसज्जनों को विशेषतया और हिन्दूमात्र को साधारणतया अपने साहित्य, सभ्यता और संस्कृति की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। भारतीय साहित्य, सभ्यता और संस्कृति आज भी इस गए बीते युग में समस्त संसार में सर्वमान्य, सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है॥ क्रमशः॥

करोड़ी लाल सेठ "स्कन्द"

१ दिसम्बर को याद रखिये

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों को सूचनार्थ निवेदन है कि परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र शुल्क सहित कार्यालय में भेजने की अन्तिम तिथि १ दिसम्बर १९४३ है। अतः सब परीक्षार्थियों को यह तिथि स्मरण रखनी चाहिश और उस दिन से पूर्व ही अपने आवेदन पत्रों को भरकर कार्यालय में भिजवा देना चाहिए जिससे तिथि निकल जाने एर परीक्षार्थियों को पीछे पछताना न पड़े। परीक्षा मंत्री—

भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद्, दीवानहाल देहली

आर्य्य गोल मेज़ कान्फ्रेंस

आर्य्य समाज लाहौर वच्छोवाली के उत्सव २६ से २८ नवम्बर पर अवश्य पधारिये

आर्य्य समाज वच्छोवाली लाहौर का प्रान्तीय उत्सव समझा जाता है। इसलिये समाजों को अपने २ प्रतिनिधि इस उत्सव पर चाहिये ताकि वे २६ नवम्बर शनिवार को होने महत्व पूर्ण आर्य सम्मेलन में भाग ले सकें। में कई आवश्यक विषयों के अतिरिक्त आ दलबन्दी को दूर करने और सभा के संगठन बढ़ाने पर भी विचार होगा। आशा है सब अपने प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भेज कर कृतार्थ

(२) यदि कोई आर्य्य समाज इस सम्मे लिये प्रस्ताव व विचार भेजना चाहे तो वह शी आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पास भेजें।

(३) इस सम्मेलन के सभापति श्री नारायण स्वामी जी होंगी।

(४) समय का निश्चय पंडाल में सुना जावेगा या लिख कर रख दिया जावेगा।

आचार्य रामदेव स्मारक ९ दिसम्बर को याद रखिये

स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी आर्य्य समा स्मरणीय विभूति हैं। आपने आर्य्य समाज, कन्यागुरुकुल के लिये अपने आप को सर्व यज्ञ द्वारा अर्पित किया हुआ था। आप को स समाजों को ९ दिसम्बर का दिन स्मृति दिवस च हिये। आप के गुणों का गान तथा स्मर हुए आप के जीवन की अन्तिम इच्छा कन्या को स्थिर बनाने के लिये हरेक आर्य भाई तथ समाज को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनी च कन्या गुरुकुल को जारी रखना ही उन की जागती स्मृति है।

प्रान्तीय सभा की आज्ञा मानें

आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन ७५० से समाजें हैं जिन्हें सभा अपनी सूचनाएं तथा देती हैं। यदि कोई सूचना देनी होती है। डाक व्यय करना पड़ता है इसलिये पंजाब ऐसी समाज नहीं रहनी चाहिये जहां सभा "आर्य" न पहुँचता हो। सब उपदेशक म की सेवा में सूचित किया जाता है कि वह पधारें सर्व प्रथम पता करें कि उस समाज में पत्र आता है या नहीं। शोक की बात है कि १५० समाजों में आर्य जाता है। आर्य में सामाजिक, गम्भीर तथा शिक्षा प्र होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य
रविवार ६ मार्गशीर्ष
वि०सं० २०००

के कष्ट और राजशक्ति का दायित्व

कालो वा कारणं राज्ञः।
राजा वा काल कारणम्।
इति ते संशयो माभूत्।
राजा कालस्य कारणम्॥

भारत में तथा प्राचीन राजनीति ग्रन्थों में इस विषय पर अनेकवार विचर हो चुका है कि संसार में राज शक्ति सामयिक स्थितियों का म रूप होती है अथवा राजशक्ति समय विशेष स्थितियों को पैदा करती है। इस विषय पर रहा के पक्ष विपक्ष हैं। शुक्राचार्य मनु तथा भीष्म ह जैसे सूक्ष्म दर्शियों ने अन्त में यही सार ा है कि राजशक्ति ही समय तथा युग को बनाने है। यदि राजशक्ति कमज़ोर निर्बल और पथ है तो जनता अन्यायों अत्याचारों तथा मुसीबतों री रहेगी। इस समय हमारे देश में, जो संकट ई दे रहा है, उसको नग्न रूप में उत्कट रूप में र प्रश्न होता है कि इसका दायित्व किस पर है। में भारतीय सैण्ट्रल एसम्बली में बंगाल तथा के विविध प्रान्तों के अन्न कष्ट तथा दुर्भिक्ष जैसी स्थिति पर जो वाद विवाद व विचार विनियम है, इस में भी उपरिलिखित प्रश्न उपस्थित हुआ रकारी मैम्बर तो यह कह रहे हैं कि वर्तमान थिति का मुख्य कारण जनता के मुख्य व्यापा- को नफ़ा उठाने की प्रवृत्ति है। वह लोग इन टिब्यरस को ही ज़िम्मेवार ठहराते हैं। दूसरी जनता के प्रतिनिधि गैर सरकारी मैम्बरों का है कि क्यों कि भारत में राष्ट्रीय सरकार कायम ॥ राष्ट्रीयनेता जेलों में पड़े हैं। मि० अमेरी से भारत पर शासन तंत्र चला रहे हैं, इसलिये में उत्साह और उमंग पैदा नहीं होती। हरेक य विदेशी राजशक्ति को विदेशी समझता हुआ साथ अपने आपको Identify) एक रूप करने त नहीं होता। वह सरकारी आज्ञाओं का पालन है, भय से उनका नाम मात्र (nominal) करता है। इसीलिये हम देखते हैं कि अन्न कष्ट त स्थानों पर अन्न पहुंचाने में दिक्कत हो रही ट्रल एसम्बली में भाषण करते हुए सर जिया- अहमद ने कहा कि व्यापारियों ने उन्हें बताया उन्हें सप्लाई डिपार्ट मैण्ट के साथ लेन देन करते करोड़ तक की रिश्वत कई शकलों में देनी पड़ी रिश्वत ही राष्ट्रों को नष्ट भ्रष्ट कर देती है। विदेशी सरकार द्वारा की गई जांच इसको रोक नहीं सकती। इसको रोकने के अनेक उपायों में से एक मुख्य उपाय स्वदेशी राज्य का स्थापित करना है।

वर्तमान समय में भारत में धर्म संस्थाएं, तृपित आत्माओं को शान्ति प्रदान नहीं कर रहीं। राजनैतिक सोसायटियां—जनता के राजनैतिक कष्टों को दूर नहीं कर रही। आर्थिक संगठन तथा व्यावसायिक धंधे—भारत की जनता की रोटी की समस्या को हल नहीं कर रही। बंगाल की सस्य श्यामला उपजाऊ भूमि जनता की भूख पीड़ित जनता की करा हों से दग्ध हो रहीं है।

गेहूं चावल अनाज को पैदा करने वाले भारत-वासी दूसरे देशों से आने वाले जहाजों के अन्न भरे जहाजों की और प्राण रक्षा के लिये देख रहे हैं—अन्न पूर्ण आज हाथ में भीख का पात्र लिये अमरीका इंगलैण्ड और आस्ट्रेलिया के आगे हाथ पसार रही है—इस परिस्थिति को बदलने के लिये धर्म समाजें—व्यापारी तथा व्यवसायिक कारखाने बेकार साबित हो रहे हैं—इसका अचूक उपाय यही है—कि है कि हम राजशक्ति को स्वदेशी बनाने का यत्न करें। स्वदेशी का यह अभिप्राय नहीं कि गोरे व्यक्तियों के स्थान पर काले शासक आजाएं। इससे समस्या हल न होगी। समस्या का असली हल यही है कि जनता अपनी राजशक्ति का निर्माण करे भारत में जनता का राज्य स्थापित हो। जनता का हरेक सदस्य रूस की सोवियत सरकार की प्रजा की भांति अपने आप को भारतीय सरकार का अंग समझे। तभी सच्ची, जनता की रक्षा करने वाली, राजशक्ति, विकसित हो सकेगी। तभी अकाल दुर्भिक्ष, अन्न संकट रिश्वत आदि की मुसीबतें मिट सकेंगी। भारत की हरेक संस्था को इस दिशा में यत्न करके राजशक्ति के सुधार का यत्न करना चाहिए।

लाहौर का शीतला मन्दिर

पिछले तीन सालों से लाहौर के शीतला मंदिर के महन्त के विरुद्ध, इसके दुर्व्यवहार तथा अप्रबन्ध के कारण मुकद्दमा चल रहा था।

महन्त बलदेवगिर ने वैयक्तिक स्वार्थों के लिये मंदिर की सम्पत्ति का प्रयोग किया। निरंजनी अखाड़ा तथा जनता ने महन्त बलदेवगिरि को महन्त की गद्दी से पृथक् करने का आन्दोलन चलाया। सत्याग्रह भी किया गया। मुकद्दमा किया गया। कचहरी ने इस विषय में, अपना निर्णय सुना दिया है। महन्त बलदेवगिरि को महन्त की गद्दी से हटा दिया गया है। उसके स्थान पर निरंजनी-अखाड़ा के के निश्चयानुसार प्रकाशानन्द जी को महन्त बनाया गया है। मंदिर की सम्पत्ति तथा प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये एक कमेटी भी बना दी गई है।

इस फैसले से जनता को सन्तोष हुआ है। हम उम्मीद करते हैं कि दूसरे मंदिरों के महन्त भी अपने २ मंदिरों के प्रबन्ध में सुधार करेंगे और जनता को चाहिए कि मंदिरों तथा मठों को जांच तथा समालोचना द्वारा सावधान करते रहें।

स्वर्गीय लाला लाजपतराय की स्मृति में

१७ नवम्बर को ऋषि दयानन्द के भक्त, आर्य-समाज और आर्य जाति के नेता स्वर्गीय लाला लाज पतराय जी का स्मृति दिवस मनाया गया। स्वर्गीय लाजपतराय ने आर्यसमाज के प्लैटफार्म से समाज-सुधार और विचार स्वातंत्र्य की आवाज़ उठ ई। राष्ट्र के वातावरण को निर्भयता और स्वतंत्रता की जीवन संचारिणी लहरों से अनुप्राणित किया। और जीवन के अन्तिम दिनों में, धर्म और राजनीति के सुनहरे मेल के स्थापित करने का शुभ कार्य किया। आज हमारा राजनैतिक आन्दोलन और धार्मिक सुधार-आन्दोलन पंगु हो गये हैं। आज देश को स्वर्गीय ला० लाजपत-राय जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता अनुभव हो रही है। ऐसे अवसरों पर हमें उनके द्वारा चलाए गये आन्दोलनों का अनुशीलन करना चाहिए। उनके लेखों तथा व्या-ख्यानों का मनन करना चाहिए। ला० लाजपतराय ने भारत को किस रूप में देखा—इसका विवरण उनकी 'अनहैपी इंडिया "unhappy India" पुस्तक में अङ्कित उपलब्ध होता है। भारत की दयनीय दशा का मुख्य कारण वह विदेशी शासन को समझते थे—इसीलिये वह धार्मिक क्षेत्र और शिक्षा क्षेत्र को छोड़ कर राजनैतिक क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। आज हरेक भारतीय को उनका स्मरण कर उनकी सेवा में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनी चाहिए। इस समय आर्य देश आर्य जाति अनेक प्रकार की मुसीबतों में उलझे पड़े हैं। यदि हम ला० लाजपतराय जी की भांति मातृ सेवा को वेदि पर आत्म बलिदान करने का संकल्प करेंगे तभी हम भारत को स्वतंत्र और सन्तुष्ट बना सकेंगे—और सच्चे अर्थों में लाला लाजपतराय के प्रति श्रद्धा-जलि अर्पित करेंगे।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत	२॥)	Immortal Sayings ofDayanand	।)
जीवन ज्योति	१॥)	दयानन्द रत्न माला	।)
स्वाध्याय संग्रह	॥।)	वैदिक धर्म की जय	॥।)
वैदिक स्वर्ग	॥।)	यास्क युग	॥।)
स्वर्ग	।=)	सभा इतिहास	२)
देव यज्ञ	।)	GlimpsesofDayanand	१।)
पीयूषबिन्दु	।-)	त्रिदेव निर्णय	॥।)
		निरुक्त का मूल वेद में	।-)
Hindu America	४)	Light of Truth	३)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक स्वाध्याय—

अहंकारः कर्त्ता न पुरुषः

कर्मों को कौन करता है ? जीव या प्रकृति

श्री हर्षनारायण.....

शीर्षकस्थ वाक्य सांख्यदर्शन के षष्ठाध्याय का ५४वाँ सूत्र है। इसके रहस्योद्घाटनार्थ ही इस लेख की प्रवृत्ति है। मैं इस भेद से भलीभाँति अवगत हूँ कि बहुसंख्यक पाठकवर्ग का मस्तिष्क एतत्प्रतिपाद्य-सिद्धान्त विषयक अनेकानेक भ्रमपूर्ण धारणाओं की उद्गमस्थली बनेगा; अतएव जिज्ञासु विपक्षियों से साग्रह निवेदन है कि वे लेख का पाठ आद्योपान्त कर जाने के पश्चात् ही तद्विषयक कोई विचार स्थिर करें, अन्यथा मेरे दृष्टिकोण का सम्यक्रूपेण बोध होना अशक्य है। यदि शंका निरसन फिर भी न हो सके तो वे "आर्य" द्वारा अपने विचार प्रकट कर सकते हैं। मेरा तो यह ध्रुव निश्चय है कि एतन्निबंधप्रतिपाद्य विषय को हृदयङ्गम किए बिना वैदिक कर्म सिद्धान्त का तत्वज्ञान एकान्ततः असम्भव है।

विहंगमदृष्ट्या सूत्रार्थ इस प्रकार है :—

"यावत्कर्मों का, जिनके कर्तृत्व का आरोप जीवात्मा में किया जाता है वास्तविक कर्त्ता प्रकृति का विकार अहंकार है।"

इसी सिद्धान्त का उपबृंहण गीताकार ने निम्न-लिखित श्लोकों में किया है :—

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्त्ताऽहमिति मन्यते ॥१॥ (३।२७)
नैव किञ्चित्करोमीति युक्तोमन्येत तत्त्ववित्।
पश्यन्शृण्वन्स्पृशन्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपन्श्वसन् ॥२॥
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥३॥
सर्वकर्माणि मनसा सन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारेपुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥४॥
प्रकृत्येव च कर्माणि क्रियामाणानि सर्वशः।
यः पश्यति तथात्मानं अकर्त्तारंस पश्यति ॥५॥
यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैव व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति ॥६॥
स्वभावजेन कौन्तेय ! निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्त्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपितत् ॥७॥
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ॥८॥

अर्थ—समस्त कर्म तो प्रकृति के गुणों द्वारा किए जाते हैं, किन्तु अहंकार के वशीभूत होकर अविद्याग्रस्त आत्मा स्वसत्ता में कर्तृत्व का आरोप करता है ॥१॥ तत्ववेत्ता योगी देखते हुए, श्वास लेते हुए, आते हुए, 'मैं कुछ नहीं करता' ऐसा माने ॥ २-३ ॥ जितेन्द्रिय जीवात्मा न कुछ करता हुआ और न कहता हुआ समस्त कर्मों को मन से त्याग कर नवद्वार वाले शरीर रूपी नगर में सुख पूर्वक बैठता है ॥४॥ जो कर्मों को सब प्रकार से प्रकृति से किए जाते हुए देखता है और आत्मा को अकर्त्ता देखता है, वह देखना है ॥५॥ अहंकार का आश्रय करके जो तू ऐसा मानता है कि मैं युद्ध नहीं करूँगा तो तेरा यह निश्चय मिथ्या ही है। प्रकृति तुझे नियुक्त करेगी ॥६॥ हे कौन्तेय ! मोह से जिसको तू नहीं करना चाहता उसको स्वभाविक कर्मों से बाध्य होकर अवश्यमेव करेगा ॥७। हे अर्जुन ! ईश्वर यंत्रारूढ सब भूतों को प्रकृति से घुमाते हुए सब भूतों के हृदय में स्थित है ॥ ८ ॥

वादी—यहां तुम 'मीठा २ हड़प, कड़ुवा २ थू' वाली लोकोक्ति चरितार्थ करते हुए प्रतीत हो रहे हो। सांख्यदर्शन तथा गीता में पुरुषाकर्तृत्वादि-विधायक अनुशासन यत्र तत्र अवश्य प्राप्य हैं, किन्तु तन्निषेधक वाक्यों की तो सर्वत्र ही भरमार है। यथा—

१. चिदवसानो भोगः (सां० द० १।१०४) अर्थात् भोग (कर्मफल) जीवात्मा पर्यन्त होता है। इससे भी यही अर्थापत्ति सिद्ध होती है कि जीवात्मा ही कर्त्ता है, कारण कि यदि यह कर्त्ता न होता तो इसमें भोक्तृत्वापति कैसे हो पाती ?

२. चिदवसाना भुक्तिस्तत्कर्माजितत्वात् (सां० द० ६।५५) अर्थात् जिसका अन्त जीव में हो उसको भोग कहते हैं। वे भोग जीव के कर्मों से होते हैं, इस कारण भोगों का अन्त जीव में मानना चाहिए।

३. पंचैतानि महाबाहो ! कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणां ॥
अधिष्ठानं तथा कर्त्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पंचम ॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पंचैते तस्य हेतवः ॥
तत्रैवं सति कर्त्तारं आत्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न सं पश्यति दुर्मतिः ॥
(गीता १८।१३-१६)

अर्थ—हे महाबाहो ! समस्त कर्मों की सिद्धि के निमित्त सांख्य सिद्धान्त में कथन किए गए इन पाँच कारणों को मुझ से सुन। अधिष्ठान, कर्त्ता, नानाविध करण, चेष्टा तथा प्रारब्ध। शरीर, वाणी तथा मन से जो शुभाशुभ कर्म मनुष्य करता है उसके पाँच हेतु होते हैं। उसमें ऐसा होने पर जो केवल आत्मा को कर्त्ता देखता है वह मन्दबुद्धि पुरुष अपनी मूर्खता से यथार्थ नहीं देखता है।

इस उद्धरण में आत्मा को विस्पष्ट रूप से कर्त्ता कथन किया है। हाँ यहाँ यह अवश्य कहा है कि वह एकमात्र (independent) कर्त्ता नहीं है। अन्य शास्त्रों से भी कर्तृत्ववाद की ही सम्पुष्टि होती है। यथा—

४. ओं क्रतो ! स्मर (ईशोपनिषद् मंत्र १७) अर्थात् हे कर्त्ता (जीवत्मन्) ओं का स्मरण कर।

५. आत्मेन्द्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥
(कठो० ३।४)

अर्थात् आत्मा, मन तथा इन्द्रियों से युक्त होकर हुआ करता है। अर्थापत्ति से यहाँ भी आत्मा का कर्तृत्व सिद्ध है।

कविराज पुरुषोत्तम देव आयुर्वेदालङ्कार भारतीय आयुर्वेद महामण्डल ने इन्हें स्वर्ण-प्रदान किया है।

६. आत्मेन्द्रियमनोऽर्थ सन्निकर्षात्सुखदुःखे (५।२।१५) अर्थात् जब जीवात्मा, इन्द्रिय तथा किसी अर्थ में प्रवृत्त होते हैं तो सुख दुःख की हुआ करती है।

७. आत्मसंयोगप्रयत्नाभ्यां हस्ते कर्म। (१।१।१) अर्थात् आत्मा के संयोग तथा प्रयत्न कर्म करता है।

८. कर्त्ता शास्त्रार्थवत्वात् (वेदान्त २।३।३३) शास्त्र के सार्थक होने से जीव कर्त्ता है।

९ विहार उपदेशात् (वे० २।३।३४) अर्थात् के उपदेश से भी जीव कर्त्ता है।

सिद्धान्ती—प्रमाण (१) तथा (५) के पर वादी ने जो शंकाएँ उठाई हैं उनका स सांख्यकार ने प्रथमोऽध्याय के १०५ वें सूत्र कर दिया है। सूत्र इस प्रकार है—अकर्तुरपि भोगो ऽन्नाद्यवत्। अर्थात् यद्यपि जीव अ तथापि यथा स्वामी के निमित्त पाचक भो बनाता है तथा भोग स्वामी को ही होता है प्रकार पुरुषेतर सत्ताओं के सम्बन्ध से जो कर्म होते हैं उनका भोग भी पुरुष (जीव) को ही प्रमाण (२) के ठीक पूर्व 'अहंकारः कर्त्ता सूत्र आया है। सूत्रद्वय की स्थिति से पता कि जब अविद्या के कारण अहंकार का जीवात्मा स्वसत्ता के साथ कर लेता है तब का अभिमानी हो जाता हैं। प्रथम अध्याय क सूत्र इस वाद को अधिक विस्पष्ट कर देता इस प्रकार है—अविवेकाद्धा तत्सिद्धेः कर्तु गमः ॥ अर्थात् अविवेक जीवात्मा में कर्तृत्व से उसको फल की प्राप्ति होती है। प्रम भी यही व्यवस्था है। इसका विशेष आल निबंध में अन्यत्र किया गया है। प्रमाण यही भाव है। इतर प्रमाणों में भी यह व्य

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आर्य जगत

...समाज चक नं० २५७ जि० लायलपुर के समाचार

...गरोक्त ग्राम में कतिपय आर्य हरिजनों की जन ...हैं, जिनमें श्री म० महंगाराम जी दृढ़ आर्य ...शील हैं। उनके सहयोगी श्री मलिक साहिब-...जी के सुपुत्र मलिक गणेशदत्त जी जिज्ञासु (जो ...जेहलम में आरम्भ काल से अध्यापन कार्य ...नाक रूपेण कर रहे हैं) के उद्योग से २४ आश्विन ...र की रात्रि को लायलपुर की आर्य समाज गुरु-...भाग के पुरोहित श्री प० दीनानाथ जी खानक ...काङ्गड़ी तथा आर्य समाज कालिज विभाग ...रोहित श्री पं० सोमदेव जी और म० गिरधारीलाल ...डिचकोट वाले उपरोक्त ग्राम में पधारे और उन्होंने ...शाली उपदेशों तथा भजनों द्वारा बहुसंख्या में ...ग्राम जनता को कृतार्थ किया।

उपरोक्त ग्राम में नियम पूर्वक सत्संग लगाने के ...कोई अपना मन्दिर नहीं, इस न्यूनता की पूर्ति ...ये आर्य जनता से सविनय प्रार्थना है कि इस ...कार्य में यथा शक्ति भरसक आर्थिक सहायता ...करके पुण्य के भागी बनें। जो सज्जन जिस ...ार की भी सहायता देना चाहें इस विभाग में ...o IP. O. Dichkot Ditt Lyallpur, भेज ...यश लाभ करें।

मन्त्री प्रकाशन विभाग

...आर्य समाज लुधियाना रोड फ़ीरोज़पुर छावनी ...र्षिकोत्सव २२ से २६ अक्तूबर तक बड़ी धूम ...से मनाया गया। श्री स्वामी रुद्रानन्द जी की ...कथा ने नव जीवन का संचार कर दिया। श्री ...मी वेदानन्द जी के वेदानुसधान सम्बन्धी व्याख्यानों ...जनता ने बड़े प्रेम श्रद्धा से श्रवण किया।

...श्रीमती पंडिता बहन द्रौपदा देवी जी के व्या-...नों से जनता ऐसी प्रभावित हुई कि देवी जी को ...दो व्याख्यान देने पड़े। फलतः उत्सव उपस्थिति ...पदेशों की दृष्टि से सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

...सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बंगाल पीड़ित सहायता निधि में प्राप्त दान सूची ता० १।११।४३ से १२।११।४३

सार्वदेशिक सभा की अपील पर दानी महानुभाव ...तार दान भेज कर बंगाल पीड़ित सहायता निधि ...बढ़ा रहे हैं। इस सप्ताह में विशेष उल्लेखनीय दान ...ी निम्न प्रकार है। आशा है अन्य दानी महानुभाव इस निधि में अपनी अधिक से अधिक धन राशि ...कर पुण्य के भागी बनेंने। धन के अतिरिक्त वस्त्रों ...भी विशेष आवश्यकता है। हर प्रकार की सहायता मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली द्वारा हार्दिक धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जावेगी।

प्राप्त दान सूची

आर्य समाज जगाधरी १००) रु० श्री मन्त्री जी, आर्य समाज भिवानी ३००) आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई २५०) श्री पं० जनकदेव जी विद्यालंकार देहली १०१) श्री मन्त्रिणी जी स्त्री आर्य समाज २५०) तीसरी किश्त)। मेरठ शहर (वस्त्रार्थ)। इस प्राप्त दान राशि के लिये दानी महानुभावों की हार्दिक धन्यवाद।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति सं० मन्त्री

वेद

शत नमस्कार, शत नमस्कार
है सब विद्याओं के कुठार!
शत नमस्कार

१.

तुम आदि ग्रन्थ, तुम आदि ज्ञान,
तुम आर्य धर्म के महा प्राण,
तुम ईश्वर रूपी उलझन को—
सुन्दर सुलझन, तुम हो महान्-
ओ! ऋषियों की अनुपमतम कृति!!
तुम पर न काल का है प्रहार!!!
शत नमस्कार, शत नमस्कार,
हे सब विद्याओं के कुठार!
शत नमस्कार

२.

साहित्य तुम्हारा सर्वोन्नत,
विज्ञान तुम्हारा ऋणी रहा
संसृति में सर्वोत्कृष्ट मनुज—
का ज्ञान तुम्हारा ऋणी रहा,
तुम सदा सत्य, तुम शिव, सुन्दर
इस लिये तुम्हें हैं बार बार
शत नमस्कार शत नमस्कार
हे सब विद्याओं के कुठार!

शत नकस्कार प्रताप 'मिर्जापुरी'
(गुरुकुल काँगड़ी

(पृष्ठ ६ का शेष)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

(क) Case of Arya Samaj in Hyderabad State

(ख) Achievment of Arya Satyagraha in Hyderabad State

(ग) Nizam defence examined & exposed

हंसराज

(क) Vedas as interpretted by Swami Dayanand Saraswati

हर बिलास शारदा

(क) Dayanand Commemoration volume.

(ख) Works of Maharshi Dayanand

गुरुकुल समाचार

उन्नति की ओर प्रगति

दीक्षान्त प्रकाश के बाद से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने विद्योपार्जन के साथ २ शारीरिक और मानसिक उन्नति की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया है तथा सन्तोष-जनक प्रगति की है। विद्यार्थियों ने आश्रम की सभाओं में संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में भाषण देने का अभ्यास करके अपनी वक्तृत्व शक्ति का प्रशंसनीय विकास किया है। कविता, गल्प, प्रहसन, शिष्ट-परिहास तथा नाटक लेखन में भी अच्छी उन्नति हो रही है।

देहरादून वाद-विवाद प्रतियोगिता

देहरादून में प्रतिवर्ष होने वाली अखिल भारतीय वाद-विवाद-प्रतियोगिता में इस वर्ष गुरुकुल विश्व-विद्यालय के दो प्रतिनिधि ब्र० सहदेव तथा ब्र० सत्य प्रकाश सम्मिलित हुए हैं। वाद-विवाद का विषय है:- "क्या धार्मिक भावना समाज के लिए हितकर है?" आशा है इस प्रतियोगिता में गुरुकुल के ब्रह्मचारी विजयी होकर लौटेंगे।

हाकी टूर्नामेन्ट ग्वालियर

ग्वालियर के प्रसिद्ध हाकी टूर्नामेन्ट में इस वर्ष गुरुकुल का दल भी सम्मिलित हो रहा है। पिछले दिनों ब्रह्मचारी लगन के साथ इनकी तैयारी में अभ्यास करते रहे। आशा है यह दल भी अवश्य विजयी बन कर लौटेगा।

कन्या गुरुकुल समाचार—

कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव बड़े दिन की छुटियों में मनाया जायगा। उत्सव ता० ३० दिसम्बर से आरम्भ होगा और २ जनवरी को समाप्त होगा। श्रीमान् स्वामी केवलानन्द जी महाराज, श्री पं० रामचन्द जी देहलवी, श्री पं० धर्मेन्द्रनाथ जी तर्क शिरोमणि, श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा श्रीमान् पं० प्रियव्रत जी को निमन्त्रित किया गया है। अमृतसर की सेठानी श्रीमती चन्द्रकुमारी जी ने उत्सव पर पधारना स्वीकार कर लिया है कन्या गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता, श्रीमान् पं० सोमदत्त जी विद्यालङ्कार धन सग्रह के लिये पंजाब का दौरा कर रहे हैं। स्वामिनी सभा धन एकत्रित करने के लिए इस वर्ष विशेष प्रबन्ध कर रही है। कन्याओं का स्वास्थ्य उत्तम है। ६ कन्याएं इस समय चिकित्सालय में रोगी हैं, किन्तु उनकी देखरेख तथा चिकित्सा ध्यान पूर्वक हो रही है। रोगी कन्याओं की अवस्था सन्तोषजनक है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्यसमाज का अंग्रेज़ी साहित्य

(ले०—विश्वनाथ शास्त्री, एम. ए. पुस्तकालयाध्यक्ष, पंजाब वैदिक पुस्तकालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर)

आर्य समाज सिद्धान्त रूप में हिन्दी को ही महत्व देता है और उसी के प्रचार में तल्लीन रहा है। आर्य विद्वानों ने प्रायः हिन्दी में ही पुस्तकें लिखी हैं। यही कारण है कि आर्य समाज का अंग्रेजी में साहित्य कम है। अंग्रेजी की जितनी पुस्तकों का नाम मुझे प्राप्त हो सका है उन का उल्लेख लेखक से नीचे दिया जाता है।

अरविन्द घोष

(क) Dayanand, the man and his work.

अर्जुन सिंह (अनुवादक)

(क) Aryoddesha Ratnamala

(ख) Vedanta Dhwanti Niwaran or neo-Vedantism refuted.

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(क) Mahatma Gandhi and the Arya Samaj

कश्चित

(क) Crucifixion

गंगाप्रसाद (मेरठ वासी)

Fountain head of religion

गंगाप्रसाद उपाध्याय

(क) Swami Dayanand's Contribution to Hindu solidarity.

(ख) Origin, scope & mission of the Arya Samaj.

गुरुदत्त विद्यार्थी

(क) Terminology of the Vedas

(ख) Commentary on Ish & mandukya upnishads

(ग) Philosophic

(घ) Indian Wisdom

गोकुलचन्द

(क) Luther of India

घासीराम (अनुवादक)

(क) Introduction to the Commentary of the Vedas by Swami Dayanand Saraswati

चमूपति

(क) Glimpses of Dayanand

(ख) Ten Commandments of Dayanand

(ग) Dialogue between yama & Yami

चिरंजीव भारद्वाज (अनुवादक)

(क) Light of truth

छज्जूसिंह

(क) Life and teachings of Swami Dayanand Saraswati

(ख) Word with the non-believers in revelation

जमिनी

(क) Vedic mission in British East Africa.

(ख) India, the world teacher and coloniser

वासवानी, टी. एल.

(क) Torch bearer

(ख) Voice of Arya Varta

ठाकुरदत्त धवन

(क) Truth, bed rock of aryan culture

(ख) Truth & Vedas

(ग) Public spirit

दीवानचन्द (प्रिन्सिपल)

(क) Arya Samaj; what it is and what it stands for.

दीवानचन्द शर्मा

(क) Swami Shraddhanand and Mahatma Hans Raj

(ख) Pt. Gurudatta and Pt. Lekh Ram

(ग) Swami Dayanand Saraswati

(ग) Hindu Sangathan

दुर्गाप्रसाद

(क) Maharshi Swami Dayanand Saraswati.

(ख) Principles of religion

(ग) Sandhya & Prayer

(घ) 7 Vedic readers

(ङ) Sacred Songs

(च) Satyarth Prakash, an English translation

(छ) Vedas made easy

दौलतराम देव

(क) Licht der Wahrheit (German translation of Satyarth Prakash)

द्वारकादास

(क) A Problem; or a few stray thougots about the indifferentism of our Youngmen.

धर्मदेव

(क) Catechism on the Vedci Dharma and Arya Samaj.

नन्दकिशोर (संगृहीता)

(क) General survey of the life & teachings of Swami Dayanand

नैटसन एंड कम्पनी

(क) Swami Dayanand Saraswati

बी. आर. चैटरजी

(क) Devotion and work

(ख) Formation of character

(ग) An ideal aryan life

(घ) Lectures and notes

(ङ) Our duty and work

भूमानन्द सरस्वती

(क) Anthology of Vedic hymns दो भाग

(ख) Ecclesia Divina

(ग) Scientific gleanings from Vedic mythology.

मंगलानन्दपुरी

(क) Vedic tenets according to Dayanand

मदन मोहन सेठ

(क) Sayings and Precepts

(ख) Arya Samaj a political body

(ग) High Government official & Arya Samaj & its work.

मुंशीराम

(क) Gurukul Through Europe eyes.

(ख) Arya Samaj and its detractors

(ग) Hindu Sangathan

रमेशचन्द्र चक्रवर्त्ती

(क) Brahmacharya

राजकंवर

(क) Beauties of Vedic Dharma

राजेन्द्र कृष्ण कुमार

(क) Light of the Vedas

लाजपतराय

(क) Arya Samaj

विश्वनाथ

(क) Immortal sayings of Dayanand

विष्णुलाल शर्मा

(क) Hand book of the Arya Samaj

शिवनन्दन प्रसाद कुल्यर

(क) Swami Dayanand Saraswati his life and teachings

श्रीराम शर्मा

(क) Conversion & reconversion

(ख) Mahatma Hansraj

सत्यव्रत

(क) Is Rigveda a Sumerian document

(शेष पृष्ठ ५ पर)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...र्य्यसमाज अम्बाला छावनी

— का —

उत्सव

...आर्य्यसमाज का वार्षिक उत्सव ५, ६, ७ नवम्बर ...नियत हुआ था। उसके उपलक्ष्य में श्री पूज्य ...केवलानंद जी महाराज ३१-१०-४३ से ४-११-४३ ...रात्रि तक उपनिषद की मनोहर कथा करते रहे, ...को जनता ने बहुत ही पसंद किया और हाल ...रुषों से भरा रहता था। ६-११-४३ व ७-११-४३ ...त्सव की कारवाई बड़ी धूम धाम से शुरू हुई। ...ज में श्री आचार्य पं० प्रियव्रत जी तथा श्री प्रो० ...देव जी दर्शनाचार्य्य गुरुकुल कांगड़ी पधारे हुए थे। ...ने बहुत ही मनोहर वेद उपदेश और प्रभावशाली ...दान्त हुए जिसको जनता ने बहुत ही पसंद ...और प्रो० सेवाराम जी रेड्यो सिंगर के भजनों ...नता को बहुत ही आनन्दित किया।

...-११-४३ की दोपहर को श्री पूज्य आचार्य प्रिय- ...जी। प्रधान की अध्यक्षता में "सत्यार्थ प्रकाश ...लना" बड़े समारोह से हुआ, जिसमें श्री पूज्य रा० ...ला० अमृतराए जी, श्री पं० सत्यदेव जी उपदेशक, ...लालचंद जी, श्री आचार्य जी ने अपने भाषणों ...सत्यार्थ प्रकाश पर रोशनी डाली और उस ...लना में निम्न प्रस्ताव स्वीकार हुआ। आर्य समाज ...म्बाला छावनी का यह सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन कुछ ...मानों और कुछ अकालियों के आन्दोलन को जो ...सनातन समाज की धर्मपुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के खिलाफ ...ा जा रहा है, घृणा की दृष्टि से देखता है।

...इसके पश्चात् नये भवन रविदत्त स्मारक भवन ...व आर्य्य समाज मन्दिर में श्री डा० दीवानचंद ...तथा श्री पूज्य रा० स० ला० अमृतराए जी ने ...) में तैयार किया है और गेट नया ४००) श्री ...वनवारी लाल जी साईकल मर्चेंट ने त्यार करवाया ...र रविदत्त स्मारक भवन के ऊपर अतिथि भवन ...समाजी सज्जनों ने २२००) में तैयार किया है ...४२००) की नई बिल्डिंग तैयार हुई है उसका ...न श्री दीवान अलखधारी जी ex-minister ...arr State और बानी आर्य्य समाज अम्बाला ...के कर कमलों द्वारा हुआ और कार्यवाई बड़ी ...पूर्वक समाप्त हुई। वार्षिकोत्सव हर प्रकार से ...हाजरी तथा उपदेशों द्वारा बहुत ही सफल ...

आर्य्य समाज श्री पूज्य स्वामी केवलानंद जी आर्य्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री दीवान अलख- ...जी॥ का हार्दिक धन्यवाद करती है।

सदानंद आर्य्य
मंत्री

— प्रत्येक आर्य समाज को —

आर्य का ग्राहक

बनना चाहिये

स्व० ला० मंगल सेन का शोक दिवस

१०-११-४३ को स्व० ला० मंगलसेन आनन्द के मकान पर ५ बजे सायंकाल बृहद् हवन व प्रार्थना के पश्चात् म० रामलाल जी ने स्व० के जीवन संबन्धी घटनाएं बिस्तार पूर्वक बयान करते हुए उनकी आत्माकी सद्गति की प्रार्थना की। श्री ला० काशीराम चावला ने संसार की निःसारता पर एक शान्ति दायक भाषण दिया। पं० सोमकीर्त्ति तथा पं० किशोरीलाल जी ने स्व० के जीवन पर रोशनी डाली और उनके परिवार को धैर्य्य का उपदेश दिया।

स्व० के सुपुत्र सत्यपाल चन्द्रप्रकाश तथा दिलबागराय ने अपने पिता की पुण्य स्मृति में २०१) सामाजिक संस्थाओं को दान कीं। परमात्मा उन्हें इस दुःख को सहन करने की सामर्थ दे और धैर्य्य प्रधान करे।

लब्भूराम नैय्यड़ लुधियाना

सात्विक दान

अपने नाम की ख्याति के लिये तो बहुधा दान दिया जाता है कोई अपने नाम का पत्थर लगवाता है कोई अखबारों में मोटे २ अक्षरों में दानी महाशय का नाम और प्रशंसा प्रकाशित है परन्तु निष्काम भाव से सात्विक दान देने वाले थोड़े ही होते हैं।

मैं भिवानी उत्सव पर सभा की ओर से प्रचारार्थ गया उत्सव की समाप्ति के दिन एक सज्जन ने श्री सूबेदार लाल सिंह जी खरवा निवासी को अस्वस्थ बतलाया। सूबेदार उस प्रान्त के माने हुए आर्य समाजी हैं। उन्होंने अपने ग्राम में अनेक उत्सव व शास्त्रार्थ भी कराये। इतने साल से कि उनके द्वार से कोई दानी खाली हाथ कभी नहीं लौटता। मैंने और भी पण्डित समर सिंह जी ने उनसे मिलने का विचार किया और उनके यहां पहुंचे। वह रुग्ण और अत्यन्त निर्बल थे बातों बातोंमें पता चला कि उन्होंने अनेक संस्थाओं को दान दिया हुआ है। हमने देखा कि आर्य प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचार के लिये शायद वह भूलगये। प्रेरणा की तो उत्तर कुछ न था बल्कि जेब में हाथ था और ५००) के नोट निकाल कर हमारे हाथ पर रख दिये, उनकी सराहना के लिए हमारे पास शब्द नहीं। भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्र नीरोग और स्वस्थ कर दें। हम सभा की ओर से उनको अनेक धन्यवाद देते हैं और उनसे प्रार्थना है कि सूबेदार साहेब हमें और हमारी सभा को न भूलेंगे।

सूबेदार जी के दान की सूची

१०००) सन्ध्या वितीर्ण करने के लिये प्रदेशिक सभा को
५००) वेद प्रचारार्थ प्रादेशिक सभा को
५००) आर्य प्रचारार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा को
५००) सार्वदेशिक सभा दिल्ली
५००) गुरुकुल कांगड़ी (सहारन पुर)
५००) आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी०
१००) आर्य समाज भिवानी (हिसार)
१००) अनाथालय भिवानी
१००) आर्य समाज बामला (रोहतक)

आर्य पत्र

आर्य समाजों से निवेदन

...की सेवा में आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के नियम ...या ८ के अनुसार इस कार्यालय से एक छपा हुआ फार्म आर्य सभासदों की सूची भेजने के लिये तिथि ३० सितम्बर १९४३ को (Under Postal Certificate) पोस्टल सर्टिफ़िकेट द्वारा भेजा गया था। उसमें निवेदन किया गया था कि मास भाद्रपद २००० के अन्त तक अपनी समाज के आर्य सभासदों की सूची भेजने की कृपा करें। और जो महानुभाप इस समय तक इस समाज के सहायक या मैम्बरों की सूची में अंकित हों चैत २००० के अन्त तक नियमानुसार आर्य सभासद बनने के अधिकारी हो सकते हों उनकी सूची भी फ़ार्म में वर्णन कोष्टक के ससुसार बना कर भेजने की कृपा करें। यह दोनों सूचियां तिथि १५ कार्तिक २००० तदनुसार ३१ अक्टोबर १९४३ तक सभा कार्यालय में पहुंच जानी जानी चाहिये थी। परन्तु आपने अभी तक भेजने की कृपा नहीं की अब पुनः आपकी सेवा में निवेदन है कि यह सूची तिथि १५ दिसम्बर १९४३ तदनुसार ३० मघर २००० कि अन्त तक सभा कार्यालय में भेज कर कृतार्थ करें। सभा का जो यह नियम हैं उसे पालन करना आप का पालन करना आप का कर्तव्य है।

निवेदक—
भीमसेन विद्यालंकार
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

आदर्श विवाह

आर्य जगत के प्रसिद्ध प्रचारक व कवि कुंवर जोरावर सिंह जी का विवाह आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ोदा की संगीत की प्रोफेसर श्रीमती प्रभावती कुमारी भारती समलकृना के साथ गत वृहस्पतिवार कार्तिक शुक्ला सप्तमी को बड़ोदा में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। विवाह की विशेषता यह थी कि यह जातपांत व प्रान्तीयता के बन्धनों को दो संगीतज्ञ कवि, लेखक, व प्रचारकों का मिलाप कह सकते हैं। और आशा है यह आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। प्रतिभाशाली व साहसी नव दम्पति ने इस महत्व पूर्ण अवसर पर वेद प्रचार के लिये २ लाख रुपया संग्रह करने व आजीवन वाणी व लेखनी द्वारा आर्य समाज का प्रचार करने का व्रत लिया। इस अवसर देश के कोने कोने से आर्यनेताओं व विद्वानों ने अपने शुभ संदेश व बधाईयां भेजकर इस सम्बन्ध में सहमति व हर्ष प्रकट किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज वच्छोवाली लाहौर
का
६६वां वार्षिकोत्सव
१ मार्गशीर्ष से १५ मार्गशीर्ष २००० वि० तदनुसार ता० १५ नवम्बर से ३० नवम्बर १९४३ ई० तक

सत्संग-विभाग
आर्य समाज मन्दिर वच्छोवाली में

सत्यार्थप्रकाश की कथा—१५ से २२ नवम्बर, १९४३ ई०—श्री पण्डित अखिलानन्द जी सत्यार्थ-प्रकाश की कथा प्रतिदिन रात्रि के ८½ बजे से १० बजे तक करते हैं।

प्रभातफेरी—पुरुषों की एक मण्डली और स्त्रियों की दो मण्डलियां प्रतिदिन प्रभातफेरी कर रही हैं, जो २२ नवम्बर तक चालू रहेगी।

यज्ञ—२३ से २६ नवम्बर तक चारों वेदों के मन्त्रों से ४ दिन तक प्रातः ७ से ९ बजे तक प्रभु कीर्तन के पश्चात् वृहद् यज्ञ हुआ करेगा। २३ नवम्बर को श्री पं० हीरानन्द जी शर्मा, २४ नवम्बर को श्री रूपलाल जी कपूर, २५ नवम्बर को श्री पं० भीमसेन जी विद्यालंकार, और २६ नवम्बर को श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य यजमान होंगे, उसी दिन पूर्णाहुति होगी।

अमृतधारा भवन में

सत्संग—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी २२ नवम्बर को लाहौर आ जावेंगे। उनके सत्संग से जो भाई लाभ उठाना चाहें, अमृतधारा भवन में उनसे मिल सकते हैं।

गुरुदत्त भवन हाल में—सम्मेलन

२३ से २५ नवम्बर तक प्रतिदिन रात्रि को ८ बजे से १० बजे तक ३ सम्मेलन निम्नाङ्कित होंगे—

(१) २३ नवम्बर—विषय—'कौन से सिद्धान्त संसार की उन्नति और शान्ति के कारण हैं? सभापति—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज होंगे। श्री पं० विश्वनाथ जी वेदोपध्याय विषयोद्घाटन करेंगे। पीछे प्रसिद्ध व्यक्तियों के भाषण होंगे।

(२) २४ नवम्बर—कवि सम्मेलन। सभापति—श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार। प्रारम्भिक भाषण—श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'। श्री सत्यपाल विद्यालंकार, श्री उदयशङ्कर भट्ट, श्री 'चंचल' जी श्री बृज-नारायण जी, श्री 'दिनेश' जी, श्री धनपतराय जी, तथा अन्य प्रसिद्ध कवि अपनी रचनाएं पढ़ेंगे।

(३) २५ नवम्बर—विषय—क्यों सब धर्ममतों में गोरक्षा की पुष्टि की गई है और गोरक्षा क्यों आवश्यक है और उसके उपाय क्या हैं?" सभापति—श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज होंगे और श्री पं० शान्तिप्रकाश जी विषयोद्घाटन करेंगे। प्रसिद्ध महानुभावों के भाषण होंगे।

(४) स्त्री सम्मेलन—शुक्रवार २६ नवम्बर को दिन के १२ बजे से ४ बजे तक केवल स्त्रियों के लिये स्त्री सम्मेलन होगा। जिसमें विवाह सम्बन्धी कष्टों पर विचार होगा। इसकी सभा नेत्री श्रीमती डा० दमयन्ती बाली जी होंगी। उद्घाटन श्रीमती पूर्णदेवी जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज वच्छोवाली करेंगी।

नगर कीर्तन

शुक्रवार २६ नवम्बर को ४ बजे गुरुदत्त भवन में श्री रायबहादुर दीवान बदरीदास जी एम. . प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ध्वजारोहण करेंगे। तत्पश्चात् नगर कीर्तन मण्डलियां डी. ए. वी. मिडिल स्कूल तक पहुंच जावेंगी। और वहां से दोनों समाजों की भजन मण्डलियां मिलकर अनारकली, लोहारी दरवाज़ा, चौकमती, शाहालमी बाज़ार, मच्छीहट्टा, बजाज़ हट्टा से होती हुई तालाब वाटर वर्क्स पर पहुंचेगी।

गुरुदत्त भवन पंडाल में
२७–२८ नवम्बर, १९४३ ई० का कार्यक्रम
शनिवार—१२ मार्गशीर्ष, २००० वि०
२७ नवम्बर, १९४३ ई०

प्रातः—

८ से ९ बजे तक सम्मिलित सन्ध्या, हवन, प्रार्थना, भजन श्री विश्वपाल जी

९ से ९॥ बजे तक श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महा० का सन्देश या उपदेश

९॥ से १०। बजे तक उपदेश श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ आचार्य दयानन्दोपदेशक विद्यालय, लाहौर विषय—"ईश्वरभक्ति"

१०½ से ११ बजे तक—व्याख्यान श्री ला० शादीराम जी एम० ए० संस्कृत प्रोफेसर दोआबा कालेज जालंधर

दोपहर पश्चात्—

१ से २½ बजे तक—आर्य युवक संघ की ओर से आर्य युवक सम्मेलन। सभापति—श्री भगवानदास एम. ए. हेडमास्टर डी. ए. वी. हाई स्कूल

२½ से २¾ बजे तक भजन श्री देशराज जी

२¾ से ३½ बजे तक व्याख्यान श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी आचार्य गुरुकुल चितौड़गढ़ विषय—"ब्रह्मचर्य और उसका साधन।"

३½ से ४ बजे तक—भजन श्री हंसराज जी, श्री भद्रपाल जी श्री जोरावरसिंह जी

४ से ४¾ बजे तक व्याख्यान श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार। विषय—ऋषि दयानन्द की अन्य मतों की समालोचना और उसका प्रभाव।

रात्रि—

८ से ८½ बजे तक भजन—श्री हंसराज जी, देशराज जी।

८½ से ९½ बजे तक व्याख्यान—श्री पं० गंगाप्र जी उपाध्याय प्रयाग। विषय—वैदिक संध्या

९½ से १०½ बजे तक—व्याख्यान राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री जी। विषय—'मित्र कैसा

१०½ से भजन राजपाल चिमटा मंडली व भजन मं आर्य समाज कटरा सुफ़ैद अमृतसर य सिद्धगोपाल जी।

रविवार—२८ नवम्बर १९४३

प्रातः—

८½ से १० बजे तक—सामाजिक सत्संग हो आर्यसमाज वच्छोवाली के प्रधान श्री ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य इस सत्संग संचालन करेंगे। यह दिखाने के लि किस प्रकार समाजों में साप्ताहिक स होने चाहिएं। सन्ध्या, हवन, भजन, प्र सम्मिलित होंगे। बाहर से आये हुए आर्य भाई परिवार सहित अवश्य पधा

१० से ११ बजे तक—उपदेश—श्री स्वामी आ नन्द जी (श्री पं० मुक्तिराम जी उपाध्य आचार्य गुरुकुल पोठोहार रावलपिंडी विषय—

११ से ११½ बजे तक भजन—श्री स्वराज्य जी व चिमटा मण्डली।

११½ से १२½ बजे तक—व्याख्यान व अपील प्रचार फंड श्री पं० प्रियव्रत जी वेद स्पति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी।

दोपहर पश्चात्—

१½ से २ बजे तक—आर्य पुत्री पाठशाला व वाली की कन्याओं के भजन।

२ से ४ बजे तक—"सत्यार्थप्रकाश प्रचार सम्मे इसके सभापति के लिए एक प्रसिद्ध व का प्रबन्ध हो रहा है। श्री गंगाप्रसाद जी उपा एम. ए. उपप्रधान सार्वदेशिक सभा उद्घाटन करेंगे

४ से ४½ बजे तक भजन श्री चक्रवर्ती जी, श्री पाल जी।

४½ से ५ बजे तक व्याख्यान श्री पं० लोकनाथ तर्क शिरोमणि। विषय—"धर्म के उपहास" मत करो।

५ से ६ बजे तक व्याख्यान श्री पं० बुद्धदेव विद्यालङ्कार। विषय—'ऋषि दयानन्द पठन पाठन प्रणाली"।

रात्रि—

८½ से ८¾ बजे तक भजन—श्री पद्मकिशोर सभासद आर्य समाज वच्छोवाली।

८¾ से ९½ बजे तक—व्याख्यान श्री स्वामी नन्द जी महाराज प्रधान विहार प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा।

९¾ से १०½ बजे तक—व्याख्यान श्री स्वामी नारायण स्वामी जी। विषय—"आत्मा परमात्मा"।

१०¾ से भजन—भजन मंडली आर्य समाज सफेद अमृतसर व राजपाल चिमटा मंड श्री सिद्धगोपाल जी। शान्तिपाठ इत्यादि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक भीमसेन विद्यालङ्कार

ॐ
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Regd L. N. 5004.

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिये इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या २५, अंक १
वार्षिक मूल्य ४)
२० मार्गशीर्ष
५ दिसम्ब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

२००२ पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
(Saharanpur)

आर्य समाज बच्छोवाली के ६६ वें वार्षिकोत्सव पर
श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का—
संदेश और उपदेश

मैंने सरकार से २०. ११. ४३—१०. १२. ४३ तक का अवकाश था उसके कारण लाहौर आर्यसमाज उत्सव में सम्मिलित होना, केन्द्रीय कार्यालय की मीटिंग में उपस्थित होना तथा प्रांत भरवाना था। परंतु किसी विशेष कारण वश मुझे अवकाश नहीं मिला। अतः पं० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा की सेवा में यह शब्द लिखकर भेज रहा हूं।

किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव।
तेभिः कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः। ऋग्वेद १. १७०. २

आध्यात्म इन्द्र मरुत तेरे भ्राता हैं उनका हनन क्यों करता है। उनके साथ उत्तम कर्म करने वाला हो, संग्राम में हम को मत नष्ट कर।

इन्द्र, जीव के साथी भ्राता प्राण उपलालित प्राण इन्द्रिय शरीरादि हैं इनका हनन नहीं करना चाहिये। अर्थात् जीवन इस प्रकार व्यतीत करना चाहिये जिस प्रकार प्राणादि का नाश न हो, इनकी सहायता से उत्तम कर्म करने चाहियें तमोगुण युक्त तप आदि से इनका वध करना उचित नहीं है। कई लोग तप के नाम पर ऐसे कर्म करते हैं, जो शरीर आदि के घातक हैं। बुद्ध भगवान के जीवन की घटना है। वह किसी वृक्ष के नीचे बैठे तप कर रहे थे, तप की मात्रा बढ़ चुकी थी एक दिन एक रागी उनके पास आया अपनी सितार बजाने के लिये ठीक करने लगा, ठीक करते समय एक तार अधिक चढ़ गई, जब चढ़ी हुई तार का शब्द हुआ, तो उस मार्ग से एक देवी जा रही थी, उस शब्द को सुन कर उसने कहा, 'तार इतनी मत खैंच, कि टूट जाय' वह शब्द बुद्ध भगवान के कानों में भी पड़े, उन्होंने इसका यह अर्थ समझा, इतना तप मत कर कि शरीर रूपी तार ही नष्ट हो जाय। अतः वह तप से विरत होकर प्रचार कार्य में लगे। गीताके १७वें अध्याय में पाठ है।

मूढ़ ग्राहेणात्मनो यत् पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्॥

मूर्खता से जो तप करता हुआ आत्मा (शरीर) को पीड़ा देता है दूसरे को उत्सादनार्थ तप करता है वह तामस तप है।

तामस तप वा तमो गुण के अन्य कार्य शास्त्र में प्रशंसित नहीं माने तप करते हुए भी शरीर की रक्षा आवश्यक है। जो तप के नाम से शरीर, इन्द्रिय आदि का ध्यान न करके इनको कष्ट देते हैं वह वेद की न समझते ही नहीं। न समझने पर करने की चरचा तो व्यर्थ है अतः मनुष्य को इसका पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिये। अब इसी मन्त्र को की दृष्टि से देखें—

इन्द्र, सभापति आदि बहुपक्ष वालो, मरुत् अल्प पक्ष वाले भी आपके उनका हनन क्यों करते हो। उनको साथ लेकर समाज के कल्याणी उत्तम कार्य करो, संग्राम में उनका वध मत करो।

समाज सेवा की जाय और काल्पनिक संग्राम रचकर उन ।

इस समय हम वेद की आज्ञा की अवहेलना कर का फल हमें मिल रहा है। अब भी समय है हम वेदाज्ञा का

ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है—

"आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा, वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन, गोत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चल कर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय।"

संदेश

उत्तिष्ठत संनह्यध्वमुदारा केतुभिः सह।

आर्यो उठो कमर कस कर, ओ३म् की विजयी पताका हाथ में लेकर वैदिक धर्म प्रचार के लिये निकल पड़ो। महर्षि के सच्चे अनुगामी बनो।

———

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सम्मेलन के लिये
श्री स्वातन्त्रवीर सावरकर का—
"संदेश"

I have learnt that the Governmeut of Sind is thinking of referring the matter of proscribing the Satyarth Parkash, the holy book of the Arya Samajists, to the India Government In case this step is taken the stand point of the Hindu Mahasabha also should be fully kept in view and as it is reasonable and just to all parties concerned, should be accepted by the Central Government & the Satyarth Prakash or a part of it should never be proscribed Mahasabha's attitude is to the following effect:-

Every gospel or religious book that aims to support the truth or body of opinion which it thinks absolutely fundamental and true has in some part or other controverted and proved false or unreliable the beliefs of other sects and religions which run counter to it. If the Satyarth Prakash which is the holy book of the Arya Samajists and highly revered by the Hindus in general is proscribed because it tries to cantrovert even emphatically some views and belief contained in the holy Koran, to satisfy the Moslems, then in that case large parts of the Koran Shariff, the holy book of the Moslems, itself will have to be proscribed in as much as it can be shown beyond cavil or criticism that the Koran Shariff contains highly dennnciatory passages against image-worship and several other religious beliefs and maintains above all that the Koran alone is the last word of God and all other religious books are thereby cancelled and neither the old nor nay new gospel should be looked upon as true which rnns counter to the Koran, being the last revelation of God. The same difficulty would arise in any controversy between the Ghristians and the Muslems or the Parsees and the Jews and thousand and one other sects which flourish on the earth.

The best way therefore to meet such difficulty can never be to proscribe a partieular religious book which has come to be worshipped as a holy or religious book by large section of mankind, but to teach mutual tolerance and through reasonable scrutiny. Every person should be quite free to accept that part of the book which appeals to his reason or

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन उद्घाटन भाषण

[श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए. प्रधान आ. प्र. सभा यू० पी० और उपप्रधान सार्वदेशिक सभा]

सत्यार्थ प्रकाश आर्य्य समाज का धार्मिक ग्रन्थ है, ह आर्य्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द रस्वती का मुख्य ग्रंथ है। इस में ऋषि [illegible] जी सत्या ८½ बजे तद्धान्तों की व्याख्या की है जिन पर आर्य साधारित है। यद्यपि आर्य्य समाज वेदों व न और सत्यार्थ प्रकाश को ऋषि-कृत मानता है थापि वैदिक सिद्धान्तों का यथार्थ निरूपण सत्यार्थ काश से ही होता है। ऋषि के आगमन से पूर्व वेदों क विषय में वेदानुयायियों तथा अन्य लोगों में अनेक कार के भ्रम फैले हुये थे। मध्य काल में वेदों के जो भाष्य हुये वह भी अनार्ष तथा भ्रम मूलक थे, इसलिये भारतवर्ष में तथा अन्यत्र वैदिक धर्म का लोप हो गया उस के स्थान में अनेक मतान्तर फैल गये। ऋषि दयानन्द ने निरुक्त, निघण्टु आदि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों की सहायता से वेदों के यथार्थ सिद्धान्त खोज निकाले और वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करने के लिये आर्य्य समाज की स्थापना की, एवं आर्य्य सिद्धान्तों के स्पष्टीकरण के रूप में सत्यार्थ प्रकाश लिखा।

सत्यार्थप्रकाश का पहला संस्करण सन् १८७५ ई० में छपा। आर्य्य समाज की स्थापना भी उसी वर्ष हुई थी। आर्य्य समाज की उस समय यही दशा थी जो जन्म काल में एक बच्चे की होती है, इसलिये सत्यार्थ प्रकाश में भी अनेक त्रुटियाँ रह गई थीं। ऋषि दयानन्द ने उस का संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण सितम्बर, १८८२ ई० (भाद्रपद शुक्ल पक्ष संवत् १९३९ वि०) में तैय्यार किया (देखिये सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका), परन्तु स्वामी जी उदयपुर में थे और सत्यार्थ प्रकाश प्रयाग में छपता था। इसलिये उनके जीवन काल में पूरा ग्रंथ न छप सका। उन का शरीरान्त ३० अक्तूबर १८८३ ई० को हुआ और सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन १८८४ ई० में।

कुछ लोग कहने लगे हैं कि सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द के पीछे प्रकाशित हुआ है अतः उनका बनाया नहीं है। यह सरासर ग़लत है क्योंकि प्रथम तो उस का बहुत सा भाग उनके ही सामने छप चुका था और उनके पत्रों से प्रकट होता है कि वह प्रेस को शीघ्रता करने के लिये बार बार आग्रह करते थे। दूसरे ६०६ पृष्ठों का बारीक टायप का इतना बृहत् ग्रंथ सन् १८८३ ई० में जब छपाई के साधन बहुत कम [illegible] सकता

१८७५ ई० के संस्करण में तेरहवें और चौदहवें दो समुल्लास तथा स्वमंतव्यामंतव्य छपने से रह गये थे। परन्तु इस का कारण यह था कि उस समय जल्दी बहुत थी। अन्यथा मैटर तो तैय्यार ही था। इस का प्रमाण नीचे के पत्र से होता है:—

"सत्यार्थ प्रकाश कितने अध्याय तक छपा ? जितना छपा हो तितना राजा जय किशन दास के पास भेज दो। जल्दी छापो। यहाँ बहुत से लोग लेने को कहते हैं। इस के बिना बहुत हरकत है और शिक्षा की पुस्तक छपी कि नहीं आगे शुभ-हो।

संवत् १८३१ मिती माघ २ बदी शनिवार अर्थात् २३ जनवरी सन् १८७५ ई०

आगे मुरादाबाद में कुरान के खण्डन का अध्याय शोधने के वास्ते गया रहा सो शोध के आप के पास आया कि नहीं, जो न आया हो तो राजा जय किशन दास जी को खत लिखो जल्दी छापने के वास्ते भेज देवें और बाइबिल का अध्याय सब शोध कर के छाप दो। दो महीने में सब पुस्तक छाप दो, शुद्ध कर के अशुद्ध न होने पावे"।

(महर्षि दयानन्द-उर्दू-प्रकाशित १८९७ ई०)

यदि बहुत से अन्य धर्म-संस्थापकों के ग्रंथ उन की मृत्यु के बहुत दिनों पश्चात् तक संकलित भी न होने पाये फिर भी उनके लिखे समझे जाते हैं तो इतने प्रमाणों के होते हुये सत्यार्थ प्रकाश के विषय में शंका करना सर्वथा निर्मूल है। कुरान शरीफ़ का संकलन हज़रत मुहम्मद साहब के शरीरान्त के बहुत दिनों पीछे हुआ और अब भी उस का क्रम वही नहीं है जो उस के नुज़ूल का बताया जाता है। बाइबिल के लेखकों का प्रमाण करण भी नहीं हो रहा है।

एक प्रश्न और है ? क्या आर्य्य समाज का धर्म ग्रन्थ वेद है या सत्यार्थ प्रकाश या दोनों ? प्रथम तो धर्म ग्रन्थ चुनने का अधिकार उस धर्म के अनुयायियों को है अन्य को नहीं। सिख जिस ग्रंथ साहेब को अपना धर्म ग्रंथ मानते हैं उसके विषय में दूसरों का क्या मत है ? वह ईश्वरकृत है या मनुष्यकृत यह प्रश्न गौण है इसी प्रकार मुसलमानों के कुरान और ईसाइयों की बाइबिल है। जैनी तथा बौद्ध ईश्वर को ही नहीं मानते परन्तु अपने संस्थापकों की वाणी को धर्म ग्रन्थ मानते हैं। इस प्रकार आर्य्य समाज के धर्म ग्रन्थों का निर्णय भी आर्य्य समाज के लोग ही कर सकते हैं। इस पर प्रश्न उठाने का अधिकार दूसरों का नहीं। आर्य्य समाज आरम्भ से ही इसको धर्म ग्रन्थ मानता रहा है। प्रत्येक समाज में सत्यार्थ प्रकाश

हैं। जिस प्रकार यूनीवर्सिटियों के ग्रेजुएटों को डाक्टर बिलें दी जाती थीं उसी प्रकार आर्य्य समाज की ओर से कई बार सत्यार्थ प्रकाश भेंट में दिये जा चुके हैं। दान दाताओं ने लोक और परलोक के यश के लिये सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के लिये कई बार बड़ी बड़ी रक़में दान की हैं। चूंकि वेदों को समझने वाले बहुत कम हैं अतः साधारण आर्य्य समाजी सत्यार्थ-प्रकाश के पाठ से ही अपनी धार्मिक पिपासा को शान्त करता है। इस प्रकार आर्य्य समाजियों के दैनिक व्यवहार से पता चलता है कि सत्यार्थ प्रकाश उनका धर्म ग्रंथ है। औपरुषेय न सही फिर भी आर्ष ग्रंथ है।

इस लगभग साठ वर्ष के भीतर सत्यार्थ प्रकाश के उर्दू, गुरुमुखी, संस्कृत, मराठी, बंगाली, गुजराती, सिंधी, उड़िया, तामील, तिलगू, कन्नड़, मलयालम भारतीय तथा अँगरेज़ी, फ्रेंच और जर्मन विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं और हिन्दी में वैदिक ग्रंथालय से २५ संस्करणों में दो लाख तीस हजार कापियाँ, और गोविन्दराम हासानन्द द्वारा पाँच संस्करणों में १५२००, आर्य्य साहित्य मण्डल अजमेर द्वारा दो संस्करणों में ४५ हजार, सार्वदेशिक सभा द्वारा एक संस्करण १० हजार कुल तीन लाख दो हजार छप चुकी हैं। यह सत्यार्थ प्रकाश की सर्व प्रियता का उज्वल प्रमाण है।

अफ्रीका, अमेरिका आदि बाहरी देशों के आर्य समाजी भी सत्यार्थ प्रकाश का ही पाठ करते हैं और उसे अपना पवित्र पुस्तक मानते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश में खण्डन और मण्डन दोनों हैं। पहले अपने सिद्धान्तों का मंडन है फिर उन सिद्धान्तों पर जो आक्षेप किये गये हैं उनका खंडन है। यह भी उसी प्रकार से है जैसे संसार के अन्य धर्म ग्रंथों में। बाइबिल और क़ुरान में अन्य धर्म वालों तथा बुत-परस्तों को बड़ी कड़ी भाषा में लिखा गया है और उन को दैवी कोप की धमकियाँ दी गई हैं। सत्यार्थ प्रकाश में केवल युक्तियाँ दी गई हैं और उनका हेत्वाभास दिखाया गया है। दैवी कोप या शाप या किसी जन समुदाय को उन के विरुद्ध भड़काने का नाम तक नहीं है। जिन लोगों ने अन्य धर्मिक ग्रंथों का अध्ययन नहीं किया या धार्मिक वादानुवाद की शैली को नहीं देखा उनको कभी कभी कटु भाषा की कड़ाई की शिकायत हो जाती है। जब वे तुलनात्मक दृष्टि डालेंगे तो पता चलेगा ऋषि की भाषा बहुत ही शिष्ट और नरम है। इस के लिये हम कुरान शरीफ़ से कुछ स्थल देते हैं:—

(१) अबूलहब के हाथ टूटें और वह हिल न तो उस का माल ही उस के कुछ काम आ न वह जो उसने कमाया। वह जल्द भड़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज वच्छोवाली का ६६वां वार्षिकोत्सव समारो

प्रभात फेरी

७ नवम्बर से आर्यसमाज वच्छोवाली की भजन मण्डलियों ने प्रभात फेरी द्वारा नगरनिवासियों को [illegible] का संदेश और आर्यसमाज वच्छोवाली के वार्षिकोत्सव के लिये निमन्त्रित किया।

भजन मण्डलियां पुरुषों की पृथक् थीं, देवियों की पृथक्। प्रातःकाल ७ बजे आर्य समाज मंदिर वच्छोवाली में पुरुषों की भी कीर्तन मण्डली इकट्ठी होकर शहर के मुख्य मुख्य भागों में प्रचार करती हुई। सभा की ओर से पं० देवकीनन्दन जी और पं० देशराज जी भी इसमें सम्मिलित होकर भजन कीर्तन करते रहे। ला० गोपालदास जी, अनाथालय वाली रोड ने भी उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ विशेष सहयोग दिया।

देवियों की भजन मण्डलियों ने भी रवालमण्डी लक्ष्मी आदि भागों में प्रातःकाल छः बजे भजन कीर्तन किया। २२ नवम्बर सोमवार को आर्यसमाज मन्दिर वच्छोवाली में प्रभात फेरियों का सम्मिलन हुआ। ओं पताका लहराई गई और एकत्रित सज्जनों का मिलाप से स्वागत किया गया।

सत्यार्थप्रकाश की कथा

१५ नवम्बर से रात को साढ़े ७ बजे से आर्यसमाज मन्दिर वच्छोवाली में सत्यार्थप्रकाश की कथा शुरू की गई। बनारस के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० अखिलानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के महत्व को मनोरंजक और विद्वत्तापूर्ण ढंग से प्रकट किया।

यह कथा २२ नवम्बर तक जारी रही। पं० जी की कथाओं में विद्वत्ता के साथ व्यावहारिक बातों का भी वर्णन होता था। विशेष रूप से महाभारत और रामायण की प्रासंगिक कथाओं ने सोने पर सुहागा का दिया।

बृहद् यज्ञ

२३, २४, २५, २६ नवम्बर को प्रातः काल ६ बजे से ६ बजे तक आर्य समाज मन्दिर वच्छोवाली में बृहद् यज्ञ रचा गया। २६ को इस यज्ञ की पूर्णाहुति की गई।

गुरुदत्त भवन में सम्मेलनों की धूमधाम

२३, २४, २५ नवम्बर को रात को ८ बजे गुरुदत्त भवन हाल में सर्व धर्म सम्मेलन, कविता सम्मेलन और गो रक्षा सम्मेलन किये गये।

सर्व धर्म सम्मेलन

२३ नवम्बर रात को ८॥ बजे सम्मेलन हुआ। सम्मेलन के सभापति महात्मा नारायण स्वामी जी सकते हैं।

प्रारम्भिक भाषण श्री प्रो० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय ने किया। आपने आध घंटे के लगभग वेद मन्त्रों के आधार पर संसार में शान्ति और उन्नति स्थापित करने के उपायों का प्रतिपादन किया। आपने दिखाई दे रही अशान्ति के, तथा उन्नति को रोकने वाले निम्न कारण बताये।

(१) बलवान शक्तियों की निर्बल शक्तियों को नष्ट करने की प्रवृत्ति।

(२) जन्म गत, जाति गत भेद-भाव Racial Discrimination)

(३) Inequal distribution of wealth धन सम्पत्ति का वैषम्य पैदा करने वाला बटवारा।

(४) धर्मों तथा मज़हबों के पारस्परिक झगड़े।

वेद तथा भारतीय आर्य संस्कृति के इतिहास का संकेत करते हुए आपने इन बाधाओं को दूर करने का साधन वर्णाश्रम व्यवस्था को बताया। प्रथम कारण को दूर करने के लिए क्षत्रिय वर्ग निर्बलों की रक्षा करेगा। ब्राह्मण संन्यासी जन्मगत जाति गत भेद भावों को दूर करते हैं। आर्य संस्कृति के अनुसार हरेक मनुष्य आर्य जाति में प्रविष्ट हो सकता है। यहूदियों के साथ जर्मनों द्वारा किये गये अन्याय काले गोरे के भेद भाव तभी हट सकते हैं यदि आर्य जाति की सभ्यता के अनुसार मनुष्य मनुष्य को भाई समझे। सम्पत्ति के विषम बटवारे का उपाय बताया गया कि सम्पत्ति खूब कमाये परन्तु उसका उपभोग सब मिलकर परोपकार वृत्ति से करो। केवलादो भवति केवलाघो—अकेला उपभोग करने वाला पाप को खाता है। इस वैदिक आदर्श से ही आर्थिक विषमता के कारण पैदा होने वाली बुराइयाँ दूर हो सकती है।

धर्मों के पारस्परिक झगड़ों को दूर करने के लिये "नानाधर्माणां-विवाचसे" के अनुसार सब मनुष्यों को विविध धर्मों तथा विविध वाणियों का प्रयोग करते हुए भी भूमि को माता और ईश्वर को पिता समझ कर जीवन निर्वाह करना चाहिए। तभी संसार में शान्ति और उन्नति कायम हो सकती है।

तदनन्तर देवसमाज के प्रतिनिधि श्री पी० बी० कमल ने आत्म-सुधार, आत्मोद्धार पर विशेष ध्यान देने को शान्ति और उन्नति लाने वाला बताया। आत्म-बोध और सम्यक् बोध ही मनुष्य को शान्ति दिलाने वाले हैं।

इसके बाद प्रो० हमीद इस्लामिया कालेज लाहौर ने भाषण देते हुए कहा कि अशान्ति के [illegible] ना चाहिए। ह[illegible] जैक (Docial [illegible] और [illegible] मलों में न्या[illegible] के साथ बर्तना चाहिए। हम [illegible] टी जातियों के सा[illegible] प्रेम न्याय के साथ बर्तना चाहिए तभी हम संसा[illegible] में शान्ति उन्नति कायम कर सकेंगे।

इसके बाद रा० सा० रघुनाथ सहाय जी ने ब्र[illegible] की ओर से भाषण करते हुए कहा कि हरेक [illegible] हरेक पैगम्बर की प्रशंसा और इज्ज़त कर[illegible] वि[illegible] पर [illegible] वश्यकता पर बल दिया। तदनन्तर दीवा[illegible] रामचन्द मनचन्दा ने व्यावहारिक उन्नति के लि[illegible] वर्तमान विज्ञान की उन्नति का जिकर किया। इसके बाद श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने भाषणों का सिंहावलोकन करते हुए कहा कि हमें देव ऋण, पि[illegible] ऋण आदि ऋण को उतारने का यत्न करना चाहिए ऐसा लोग करते ही हैं। परन्तु इन ऋणों के इलाव एक और ऋण का वर्णन करना है। वह ऋण मनुष्य ऋण हरेक मनुष्य को मनुष्य और प्राण को अपना भाई तथा परमात्मा का पुत्र समझ कर व्यवहार करना चाहिए। यदि हम इस ऋण व उतारने का यत्न करेंगे, तभी संसार में शान्ति औ उन्नति कायम हो सकती है।

कवि सम्मेलन

२४ नवम्बर सायंकाल को श्री हरिशंकर [illegible] प्रेमी के सभापतित्व में हुआ। अनेक कवियों ने [illegible] हिन्दी बंगाली में आर्य संस्कृति, सेवा भक्ति सत्यार्थप्रकाश, ऋषि दयानन्द पर कविताएं पढ़ीं। जनता में इन कविताओं ने मनोरंजन और उत्सा[illegible] का संचार किया।

गो रक्षा सम्मेलन

२५ नवम्बर रात को श्री स्वामी सत्यानन्द [illegible] महाराज के सभापतित्व में हुआ। प्रारम्भिक भाष[illegible] में श्री स्वामी जी ने ओजस्वी, स्फूर्तिदायिनी वाणी में भारतनिवासियों को मुख्यतया आर्थिक दृष्टि से गो रक्षा करने के लिये प्रेरित किया। विशेष रूप से डी. ए. वी. आर्य स्कूलों, हिन्दू स्कूलों के सञ्चालकों को प्रबल आन्दोलन से गोशालाएं बनाने को प्रेरणा की। विद्यार्थियों को यह भी कहा कि यदि उनके सञ्चालक यह न मानें तो उन्हें यथावसर उन्हें इस लिये प्रबल आन्दोलन करने में भी संकोच न करना चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में स्थापित शाला का ज़िकर करते हुए आपने उपस्थित भाइ[illegible] का इस विषय में गुरुकुल कांगड़ी का अनुक[illegible] करते हुए [illegible] देने के साथ विद्यार्थियों शारीरिक स्वास्थ्य को उन्नत करने के लिये गो[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

प्रतिनिधि सभा पंजाब इसके सभापति चुने गये। श्री गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने प्रारम्भिक भाषण (जो इसी अङ्क में प्रकाशित है) पढ़ा। तदनन्तर श्री सभापति जी ने प्रारम्भिक कथन में धार्मिक मामलों मेंसहिष्णुता की नीति स्वीकार करने का परामर्श दिया और इस अवसर के लिए श्री वीर सावरकर का संदेश पढ़कर सुनाया। तदनन्तर नि[illegible]चित प्रस्ताव भी महात्मा नारायण स्वामी जी [illegible] किया।

इस देश
जी सत्या[illegible]त
८½ बजे

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सम्मेलन

इस सम्मेलन को यह मालूम करके हैरानी और दुःख हुआ है कि आल इण्डिया मुस्लिम लीग ने जो कि एक पुलिटिकल संस्था है अपनी सीमा से बाहर जाकर अपनी १४—११—४३ तक की मीटिंग में ऐसा प्रस्ताव पास किया है कि भारत सरकार से प्रार्थना की जावे कि वह आर्यों की धार्मिक और माननीय पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के ऐसे भाग जब्त करे जिनमें अन्य प्रवर्तकों पर कोई आक्षेप किया हो। सत्यार्थप्रकाश को छपे हुए ७० वर्ष के [illegible]ने को आये, भारत की प्रायः सब भाषाओं [illegible]प की मुख्य भाषाओं में अनुवाद होकर [illegible] संख्या में छपा और हर सम्प्रदाय के [illegible] प्रकार के लोग इसको पढ़ते आये हैं। इसके [illegible]रुद्ध और अनकूल कई पुस्तकें भी लिखी गई हैं। [illegible]स्त्रार्थ भी होते आए हैं परन्तु ऐसी अनुचित [illegible]ंग कभी नहीं की गई कि आर्यों की इस धार्मिक [illegible]स्तक का कोई भाग जब्त किया जावे जो कि [illegible]र्यों को उतनी ही प्यारी है जितनी कि दूसरे मत [illegible]लों को अपनी धार्मिक और इलहामी पुस्तकें [illegible]री हैं और वह यह सहन नहीं कर सकते कि [illegible]र्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की [illegible]र्मिक पुस्तक से एक शब्द भी जब्त किया जावे। [illegible]ोड़ों हिन्दू आर्यों की इस आवाज़ में शामिल हैं। [illegible]र्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने जैसा कि भूमिका स्पष्ट लिख दिया है सत्य अर्थ बतलाने के लिये [illegible]दोलन किया है और इसी वास्ते जहां मुसलमान [illegible] सिख मत की छानबीन की है वहां हिन्दू जैनी [illegible] ईसाई इत्यादि मतों पर भी उसी भाव से पूरी [illegible]बीन की है जैसा कि सच्चे रिफार्मर का कर्तव्य [illegible] ऐसा आन्दोलन और छानबीन सब मत मता[illegible] की पुस्तकों जैसे गुरु ग्रंथ साहिब, कुरानशरीफ [illegible]दीसों आदि में लिखी मौजूद हैं। किसी धर्म [illegible]र्मिक पुस्तक के किसी भाग को जब्त कराने [illegible]तलब यह होगा कि सब ही मतों की धार्मिक [illegible]ों के ऐसे भागों को भी जब्त किया जावे, [illegible] अन्दर दूसरे मतों पर आक्षेप किए गए हैं। [illegible]म्मेलन को विश्वास है कि भारत सरकार [illegible]ई कार्यवाही नहीं करेगी जिससे कि देश का

और यह कहा कि जो लोग सत्यार्थ प्रकाश का अपमान करते हैं वह अपने मजहब का अपमान करते हैं। आर्य भाईयों को इसके प्रचार के लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये।

पं० बुद्धदेव जी, पं० ज्ञानचन्द जी, श्री सत्यार्थी जी और श्रीमती द्रौपदी देवी जी ने आर्य भाइयों को सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिये सब प्रकार की कुर्बानी करने के लिये तैयार रहने की चेतावनी दी। इसी अवसर पर इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए श्री सर बख्शी टेकचन्द जी ने भाषण करते हुए कहा कि मुसलिम लीग ने सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव स्वीकार किया है यह Political stunt राजनैतिक चाल है। इसके द्वारा मुसलिम लीगी मुसलमानों में लोकप्रिय होना चाहते हैं। परन्तु इनकी यह चाल बेकार रहेगी। हमें सत्यार्थ प्रकाश को अखण्ड (indivisible) रूप में धर्मपुस्तक के रूप में अपनाना चाहिए। हमारी धार्मिक पुस्तक का कोई अन्त नहीं कर सकता। हमें धैर्य के साथ इसका प्रचार करना चाहिए। इसके बाद पं० लोकनाथ जी का भाषण हुआ। आपने जनता को प्रेरणा की कि धर्म के साथ उपहास मत करो। धर्म का पालन करो।

तदनन्तर ५ बजे पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार का ऋषि दयानंद की पाठविधि पर व्याख्यान हुआ। आर्यसमाज की वर्तमान प्रबन्ध सम्बन्धी नीति रीतियों से अपने आपको पृथक् करने की घोषणा की और जनवरी से ३ सप्ताह प्रभाताश्रम में बैठकर वेद—शतपथ भाष्य करने का संकल्प पुनः दृढ़ किया। एक महीने में केवल एक बार एक सप्ताह के लिये समाजों में जाया करेंगे। वहां भी एक सप्ताह तक लगातार ठहर कर अपने ढंग का काम करेंगे।

गुरुकुल कांगड़ी की पाठविधि को व्याख्या करते हुए आर्य जनता को उसके अनुसार कम से कम उसी एक विषय का पंडित होने की प्रेरणा की।

रात को

८॥ बजे भजन संकीर्तन के बाद श्री शितीश कुमार जो का (Phychals Jicul Alridy of Riligions) धर्मों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन विषय पर व्याख्यान दिया। गंगा के गंगोत्तरी से कलकत्ता तक पहुंचने पर उनकी नाम परिवर्तन करने की और संकेत करते हुए शुद्ध पानी पीने के लिये हुवली तथा कलकत्ता की ओर जाने के स्थान पर, वेद की मंगोत्तरी की तीर्थ यात्रा करने की प्रेरणा की।

श्री क्षितीशकुमार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक हैं। आपका यह भाषण लाहौर की जनता के लिये प्रथम भाषण है। इस भाषण से अंधेर गर्दी ने उनको स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति क्षीण और सुस्त न किया तो निश्चय रूप से क्षितीश कुमार आर्यसमाज के लिये अत्यन्त उपयो साबित होंगे। श्री क्षितीशकुमार जी की विषय प्रति पादन शैली युक्तियुक्त व्याख्यान देने का ढंग संतुलि और प्रभाव जनक है।

इसके बाद श्री महात्मा नारायण स्वामी जी आत्मा—परमात्मा पर आश्रित आस्तिकवाद प प्रभावशाली व्याख्यान व उपदेश हुआ। श्री स्वामी जी ने अनेक पाश्चात्य विद्वानों के मतों का विवेच करते हुए वैदिक—आस्तिकवाद की महता को प्रमाणि किया।

इसके बाद भजन कीर्तन तथा धन्यवाद शान्ति पाठ के साथ उत्सव समाप्त हुआ—

पिपरौला मंदिर के लिये अपील—

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के व्याख्यान से पहले पिपरौला आर्य समाज मंदिर निर्माण के लिये अपील की गई। श्री सन्तराम जी वानप्रस्थी ने दो दिन से मंदिर के लिये २०००) इकट्ठा करने के लिये अनशन मौन व्रत किया हुआ था। उनके इस आश्वासन देने पर कि वह आगे से सभा की अनुमति के बिना अनशन मौन न करेंगे पंडाल में मंदिर निर्माण के लिये अपील की गई। तत्काल अपील पर १५००) के लगभग नकद वायदा इकट्ठे हो गये—शेष राशि की पूर्ति करने की जिम्मेवारी अधिष्ठाता वेद प्रचार म० यशःपाल जी ने लेने की घोषणा की। इस पर वानप्रस्थी जी ने अनशन व्रत छोड़ा। और पंडाल वैदिक धर्म की जय नारों से गूंज गया।

आर्य समाज बच्छोवाली का यह उत्सव धन व्याख्यान उत्साह सब दृष्टियों से सफल रहा। इसके लिये आर्य समाज बच्छोवाली के सभासद् तथा प्रेमी बधाई पात्र हैं।

"सम्वाद दाता"

—श्री स्वामी वेदानन्द जी का उपदेश और म० कृष्ण जी का भाषण अगले अंक में प्रकाशित किया जायगा।

श्री चमूपति साहित्य विभाग के प्रकाशन

किसी भी आर्य सज्जन को इन पुस्तकों के स्वाध्याय से वंचित नहीं रहना चाहिये।

वेदामृत २॥) Immortal Sayings ofDayanand ।)
जीवन ज्योति १॥) दयानन्द रत्न माला ।)
स्वाध्याय संग्रह ॥।) वैदिक धर्म की जय ॥।)
वैदिक स्वर्ग ॥।) यास्क युग ॥।)
स्वर्ग ।=) सभा इतिहास २)
देव यज्ञ ।) GlimpsesofDayanand१।)
पीयूषबिन्दु ।—) त्रिदेव निर्णय ॥।)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

आर्य जगत्

सरकार का विवेकपूर्ण निश्चय

आर्यसमाज रजिस्ट्रेशन से मुक्त

...ो समाचार पत्रों द्वारा ज्ञात होगा कि ... जोधपुर सरकार इस बात पर बल दे ...पुर सिटी आर्य समाज को सन् १९४० ...ब्लिक सोसाइटीज़ एक्ट के अनुसार ...र्ड करा लिया जाये। ३।९।४३ को ...फ मिनिस्टर सर डी० एम० फील्ड ने ...माज जोधपुर सिटी के नाम इस विषय ...हुये लिखा था कि २०।१०।४२ के पत्र ...सूचित किया जा चुका है कि आर्य ...स्ट्रेशन के विषय में आप शीघ्र प्रार्थना ...आपने अब तक उसे नहीं भेजा अब ...१९४३ तक आप इस का उत्तर भेजें ...समाज के सब कार्य बन्द करा दिये ...जो उनमें भाग लेंगे उनके विरुद्ध उपर्युक्त ...७ के अनुसार कार्यवाही की जायेगी।

...आर्य समाज मन्त्री सार्वदेशिक आर्य ...से इस सारे विषय में परामर्श लेते ...कथन यथार्थ था कि जब शैव, वैष्णव, ..., मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा, जैन मन्दिर ...जिस्ट्री सरकार अनावश्यक समझती है ...र्मों मन्दिर हैं फिर आर्य समाज मन्दिर ...लागू करना कैसे न्याययुक्त हो सकता ...३ के पत्र में श्री सदानन्द जी अवस्थी ...माज जोधपुर सिटी ने जयपुर राज्य के ...होम मिनिस्टर का प्रधान आर्य समाज ...मा २१।३।३९ को लिखा पत्र भी उद्धृत ...र्में उन्होंने लिखा था—

...e Arya Samaj is concerned ...propagation of religion, it ...ecessary to have it registered ...e public Societies Act.

...क्योंकि आर्य समाज धर्म का प्रचार ...संस्था है इसको रजिस्टर्ड कराना ...है। सार्वदेशिक सभा जोधपुर समाज ...से सर्वथा सहमत था और इस पर ...उसने समाज को आदेश दिया था। ...जोधपुर के चीफ मिनिस्टर साहेब के ...लिटिकल सैक्रेटरी पं० हृदयनाथ कुंजरु ...के अधिकारियों की मुलाकात के लिये ...स मुलाकात में श्री पं० कन्हैयालाल जी ...देशक भी सम्मिलित थे। आर्य नहीं है। जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि ९ नवम्बर को चीफ मिनिस्टर सर डोनाल्ड फील्ड ने यह प्रकाशित किया है।

His Highness the Maharaja ji Sahib Bahadur has been pleased to order that the Arya Samaj Jodhpur city be exempted from registration under Marwar Societies Registration Act 1939 as a special case.

अर्थात् महाराज साहेब बहादुर ने यह आज्ञा देने की कृपा की है कि आर्य समाज जोधपुर सिटी की १९४० के जोधपुर पब्लिक सोसाइटीज़ ऐक्ट और १९३९ के मारवाड सोसाइटीज़ ऐक्ट के द्वारा रजिस्ट्रेशन से विशेष अवस्था मान कर मुक्त किया जाये।

जोधपुर समाज के मन्त्री जी ने सार्वदेशिक सभा को उचित परामर्शार्थ धन्यवाद देते हुये लिखा है कि आप हमारे लिये विशेष लगन और तत्परता से परामर्श प्रदान करने में तथा सर्व प्रकार की सहायता समयानुसार देने की कटिबद्धता पर दृढ रहे इसलिये हम आपके हृदय से आभारी हैं। हम जोधपुर सरकार के अधिकारियों को इस विवेकपूर्ण निश्चय के लिये धन्यवाद और बधाई देते हैं कि उन्होंने सारे आर्य जगत् में असन्तोष की ज्वाला को प्रज्वलित होने से बचा दिया।

बंगाल अकाल पीड़ित सहायता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब बंगाल के कहतज़दा इलाकों के अनाथ बच्चों को पंजाब में लाकर उनके पालनपोषण और शिक्षा का प्रबन्ध कर रही है। इस समय ऐसे ५१ अनाथ बच्चों को वहां से लाया गया है, और उन्हें पंजाब केन्द्रीय अनाथ आलय, रावी रोड, लाहौर में प्रविष्ट किया गया है। उनके लिये चारपाइयों, दरी, कम्बल, रज़ाई, चादर, गरम कपड़ों आदि बनाने के लिए सभा की ओर से उपरोक्त अनाथालय को ढाई हज़ार रुपया दिया गया है। इस कार्य पर और भी धन व्यय किया जावेगा। जैसे जैसे अनाथ बच्चे आवेंगे उनके लिये कपड़े आदि बनाने पर सभा व्यय करेगी।

भीमसेन विद्यालंकार
मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब,
गुरुदत्त भवन, लाहौर।

आर्यसमाज मिट्ठा टिवाणा

आर्य समाज मिठा टिवाना की अधिवेशन ति० २१-११-४३ सत्यार्थ प्रकाश धर्म ग्रन्थ के विरुद्ध रखता है कि वे इसके विरुद्ध किसी प्रकार का कदम न उठायेंगे। इस अधिवेशन का प्रत्येक व्यक्ति महर्षि स्वामी दयानन्द कृत धर्म ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा करने के लिये अपना तन मन और धन बलिदान करने की प्रतिज्ञा करता है।

(२) पंजाब सरकार के अधिकारियों की दृष्टि इस ओर दि... है कि वे डिपटी कमिश्नर नूरपुर ज़िला क... को वहां हिन्दुओं की आबादी है वूचडखाना... लाइसेन्स दे दिया है। इससे हिन्दुओं को... पहुँची है। यह अधिवेशन दरखास्त करता है कि वे वूचड़खाना खोलने की आज्ञा वापिस ले ली जावे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का महत्वपूर्ण निश्चय

बलिदान किया जायेगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (इन्टर नैशनल आर्यन लोग) देहली की अन्तरंग सभा को आश्चर्य है कि मुस्लिम लीग ने जिसमें मुसलमानों का केवल एक भाग सम्मिलित है और जो एक राजनैतिक संस्था होने का दावा करती है अपने कार्य क्षेत्र से बाहर जाकर अपनी अन्तरंग सभा में जो देहली में ता० १४।११।४३ को हुई थी यह प्रस्ताव पास करना उचित समझा कि भारत सरकार सत्यार्थ प्रकाश के कुछ भागों को जब्त कर देवे क्योंकि उनमें अन्य धर्म संस्थाओं विशेषत: इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध आक्षेप योग्य और अपमानजनक बातें लिखी हुई हैं।

सत्यार्थ प्रकाश लाखों आर्यों की धर्म पुस्तक है और इसने करोड़ों हिन्दुओं के लिये ही नहीं वरन् भारत तथा विदेशों के निवासियों के लिये भी प्रकाश स्रोत का कार्य किया है। लगभग ६० वर्ष से सत्यार्थप्रकाश संसार के सामने है और भारत की समस्त भाषाओं और योरोप की कई मुख्य २ भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और कहीं से भी कभी इसके किसी भाग को जब्ती का प्रश्न गम्भीरतापूर्वक उपस्थित नहीं किया गया।

जिन आर्यों और अन्य व्यक्तियों ने सत्यार्थप्रकाश से प्रकाश ग्रहण किया है वे सब मतान्ध मुसलमानों द्वारा उत्तेजित होने पर भी इस लम्बे समय में अहिंसात्मक रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ के मान्य लेखक जिस उदार भावना से प्रेरित थे और जो उनके अनुयायियों को प्रेरित करती रहती है वह यह है कि संसार में शान्तिपूर्वक धार्मिक और सामाजिक सुधार का कार्य किया जाये।

सत्यार्थप्रकाश के मान्य लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ग्रन्थ की भूमिका में और अन्य मतों की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की भावनाओं को ठेस पहुंचाना है अपितु उनका उद्देश्य सत्य की खोज करना कराना है जो मानव जीवन का उच्चतम उद्देश्य है।

सभा का यह भी विश्वास है कि इस्लाम और अन्य मतों के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश में प्रकट की हुई सम्मति उचित आलोचना की सीमा का अतिक्रमण नहीं करती। इसके विपरीत कुरान और हदीसों में कई ऐसे वाक्य हैं जो काफिरों अथवा सत्यास्लिमों के विरुद्ध हिंसा का स्पष्ट रूप से प्रचार ८½ बजे जिसके परिणाम स्वरूप, आर्य समाज के [illegible]द्ध नेता मुसलमानों की मतान्धता की बलि चढ़ चुके हैं। इस पर भी आर्य समाज ने कुरान और हदीसों के ऊपर वर्णित वाक्यों के निकाले जाने की मांग करने का कभी विचार तक नहीं किया।

सभा का पूर्ण विश्वास है कि मुस्लिम लीग कौंसिल के प्रस्ताव में जिस अनुचित और सर्वथा अनावश्यक कार्यवाही का निर्देश किया गया है भारत सरकार उस कार्यवाही के करने की भूल नहीं करेगी।

अन्त में यह सभा अपनी पूर्व घोषणा को बलपूर्वक पुनः दुहराना चाहती है कि यदि दुर्भाग्यवश भारत सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध कोई निश्चय किया तो आर्य और करोड़ों हिन्दू जिनमें सेना की सेवा में लगे हुये जाट और अन्य सम्मिलित हैं अपने इस पवित्र धर्म ग्रन्थ के प्रत्येक शब्द की रक्षा के लिये सब प्रकार के त्याग और बलिदान पूर्वक उसका विरोध करने में विवश होंगे।

धर्म देव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन, देहली में

ता० १, २ जनवरी १९४४ को देहली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के २१।११।४३ के अधिवेशन के निश्चयानुसार १, २ जनवरी १९४४ को देहली में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का पंचम अधिवेशन किया जायेगा जिसमें साधारणतया आर्य जाति और विशेषतया आर्य समाज की धार्मिक राजनैतिक और नागरिक अधिकारों की रक्षा और उन्नति से सम्बन्ध रखने वाले सब विषयों पर विचार किया जायेगा। इसको सफल बनाने के लिये प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये गये हैं। समस्त आर्य जनता को इसमें पूर्ण सहयोग देना चाहिये।

धर्म देव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश और आर्य जाटों का निश्चय

महासुख

उपप्रधान गौरक्षाकमेटी, हरियाणा प्रान्त, मटिंडू लिखते हैं

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में सिन्ध सरकार ने जो कार्यवाही करके केन्द्रीय सरकार को भेजी बताई जाती है उस पर सरकार क्या विचार कर रही है उसे कहा नहीं जा सकता। आर्य सार्वदेशिक सभा इस धार्मिक ग्रन्थ को बचाने के लिये हर प्रकार की तैयारी आवश्यक समझता हूं। हैदराबाद के आन्दोलन ने सिद्ध कर दिया था कि हरयाणा के प्रान्त के जाट आर्य समाज के साथ कितनी सहानुभूति रखते हैं। हरयाणा के जाटों का बहुमत आर्य है। यद्यपि वे सरकार से सहयोग ही नहीं अपितु अधिक संख्या में सरकार की नौकरियों में भी हैं। परन्तु कुछ समय पहले जब यज्ञोपवीत खंडित किये जाने के विरुद्ध आवाज उठी थी उस समय भी सरकार को वह कार्य बन्द करना पड़ा था और आर्यों की फौज में भरती होने लगी थी।

इस समय जब कि सरकार के सभी सहयोगी उसकी सफलता के यत्न कर रहे हैं सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में इस प्रकार का आन्दोलन आर्य जाटों के दिलों को ठेस लगाये बिना नहीं रह सकता। जिले रोहतक, हिसार, करनाल, गुडगांवां, मेरठ और आगरा में जो संस्था जाटों की शिक्षादि के लिये खुली हुई है उसके कार्यकर्ताओं से मुझे अक्सर मिलना होता है और उन सब की आवाज आर्य समाज के साथ है। सरकार को ज्ञात हो कि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इस प्रान्त में पचास पचास हजार की हाजरी कराके आर्य समाज का बीज बोया हुआ है जिसका असर दूर होना असम्भव है। इसलिये मैं सरकार परस्त लोगों को कहना चाहता हूं कि युद्ध के समय में इस धार्मिक मामले को उठा कर सरकार को किसी प्रकार की कठिनाई में न डालें।

धर्म देव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री

आर्य समाज जामपुर के समाचार

१. आर्य समाज मन्दिर में सायंकाल को प्रतिदिन बालकों को सन्ध्या कंठ कराई जाती है।

२. आर्य समाज की ओर से पं० विश्वम्भरदत्त जी ने संस्कारविधि पढ़ाना आरम्भ कर दिया है जिसमें कुछ युवक संस्कार कराना सीख रहे है।

३. प्रातः काल की कथा श्री म० गणेशदत्त जी ऋषि जीवन से कर रहे हैं। यह रोचक कथा महीना भर से जारी है। स्त्री और पुरुष भी लाभ उठा रहे हैं।

४. रात्रि को आर्य समाज मन्दिर में सत्यार्थ-प्रकाश क्लास जारी होगई है। वीर उदयभानु जी स्वाध्याय करा रहे हैं। युवक रात्रि को काफी संख्या में आरहे हैं आज कल छठा समुल्लास चल रहा है।

आर्यसमाज रावलपिण्डी

"सन्यास दीक्षा"

आर्यसमाज मन्दिर गुरुकुल विभाग में २१-११-४३ रविवार के सत्संग में श्री म० कालीदास जी ने श्री पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। महाशय जी शुरू से ही सदाचारी व त्यागी थे। आपने आर्य समाज की सेवाहित १००) की सरकारी नौकरी को छोड़ वानप्रस्थ ग्रहण किया था। गुरुकुल पीठोहार व गायकोट आदि में आपने काफी कार्य किया है। आपने सारी आयु शाही न की थी। आपके सन्तोष, तप और त्याग को देख [illegible] श्री स्वा० सन्तोषानंद ही रक्खा गया।

समाज के अन्य वयोवृद्ध सज्जनों को भी इस दीक्षा से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। भवदीय
ओंप्रकाश

आर्यसमाज खानगढ़

यहाँ का वार्षिक उत्सव ६ से १२ नवंबर समारोह से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा का इस बार अच्छा प्रबंध था। अच्छे अच्छे भजनीक और उपदेशक पधार कर अमृतवर्षा की १००) रु० वेद प्रचार ६।) बंगाल पीड़ित सहायतार्थ और ६१) रु० मिशनफंड उपदेशक विद्यालय को दिये गये। आसूरा

[१० पृष्ठ का शेष]

मज़हब को बचाने के लिये किताबें। सत्यार्थ दूसरे जुमरे की कुतुब में से है। इसे स्वामी जी ने उस वक्त लिखा जब कि हिन्दू मज़हब तरह के इलज़ामात लगाये जा रहे थे। उन्हों मज़हब को बचाने और करदा इलज़ामात दे देने के लिये यह किताब लिखी, इस किताब यत डिफेंसिव लिट्रेचर की है। हर एक फिर्के हक़ पहुँचता है कि वह अपने मज़हब को सच करने के लिये इस किस्म की किताबें शा चुनांचि अहरारियों ने मिर्ज़ाइयों के फिर किताबें लिखीं इन में उन्हें अच्छी तरह रगेद मिर्ज़ाइयों ने अहरारियों के खिलाफ़ जो किता इन में उन पर खूब कीचड़ उछाला गया किताबें शाया होती रहेंगी जब तक आज़ाद व तकरीर है। कोई इस किस्म की किताबों रोक सकता। मुसलमानों में हिम्मत थी। उ के जवाब में किताबें लिखीं। फिर सोचिये से पहले कभी इस की ज़रूरी का सवाल हुआ। अगर कोई तहरीक शुरू की गई थी वक्त उसे क्यों गैर मुकम्मिल छोड़ दिया गय हज़रत! इस वक्त इस किस्म की गैर ज़रूरी छोड़िये। मुल्क की अहम ज़रूरत पर अप कलम सर्फ कीजिये।

सालेह मुहम्मद

(देखो प्रताप, ३० सितम्बर १९४३

कुछ लोगों का कहना है कि यह एक चाल है। मुस्लिम लीग ने सर्व साधारण बनने के लिये यह प्रस्ताव पास किया है। ऐसा ही हो। परन्तु क्या मुस्लिम लीग की शोचनीय हो गई है कि विना ऐसे ओछे उसका जीवन अपत्ति में है? मैं मुस्लिम ली कुछ कहना नह चाहता। परन्तु यदि समाज किसी सम्प्रदाय के विरुद्ध ऐसा अवश्य समझता कि आर्य समाज के ना निकट हैं। परमात्मा की इस सृष्टि में "त्याग" और दूसरों के लिये "न्याय" य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन उद्घाटन भाषण

[पृष्ठ २ का शेष]

र उठाये फिरती है उसके गले में मूंज की ।"" (सूरा लहब)

को जहाँ पाओ कत्ल करो और जहाँ तुम को निकाला है वहाँ से तुम भी उनको और फ़िसाद कत्ल और खूंरेज़ी से कहीं (सूरा बकर)

जो मौमिन हैं वह तो खुदा के लिये लड़ते हैं काफ़िर हैं वह बुतों के लिये लड़ते हैं सो तुम मल्ददगारों से लड़ो क्योंकि शैतान का दाव है। (सूरा निसा)

(उर्दू तर्जमा ताज कम्पनी लाहौर)

इस्स प्रकार के शाप, दैवी कोप या वैमनस्य-कोई पंक्ति सत्यार्थ प्रकाश से दिखाई जा ? १४वें समुल्लास में स्वामी जी लिखते हैं—विचार करके देखते हैं तो सब मतवालों में ा जाता है और जो सच है सो सब में एक सब्ब लड़ाइयाँ मूर्खता की हैं।"

स समय ऋषि दयानन्द ने आर्य्य समाज का ारंभ किया उसी समय पुराने विचार के लोग सी प्रकार विरुद्ध हो गये थे जैसे मुहम्मद ा ईसा मसीह के। हज़रत ईसा को सूली मिली और हज़रत मुहम्मद को हिजरत इसी नी पड़ी। यह स्वाभाविक था और सभी धर्म-कों के संबन्ध में ऐसा हो चुका है। इसका मर्मान्धता है'। यों तो नैतिक या सामाजिक ुधारकों को अनेकों कष्ट दिये जाते हैं परन्तु ुधारकों को तो प्रत्येक युग और देश में बड़ी नायें दी जा चुकी हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द र्य शैली ऐसी रोचक और प्रभावजक थी कि भाव विरोधियों के मध्य में भी कुछ कम न र सय्यद अहमद साहेब के वह महमान रहा और उन से धार्मिक विषयों में निरन्तर वार्ता-ता था। सर सय्यद के लेखों में ऋषि दयानन्द कोण और युक्तियों का बड़ा प्रभाव प्रतीत होता ी लिये उस समय के मुसलमान उनका काफ़िर ते थे। परन्तु जिस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश ने ं का दृष्टकोण बदला है और आर्य्य समाज के न्दुओं को प्रेम और श्रद्धा है इसी प्रकार नों को सर सय्यद के प्रति भी श्रद्धा बढ़ गई सब सत्यार्थ प्रकाश के कारण हुआ है। प्रकाश का विरोध करते हुये भी प्रायः सभी ारकों ने ऋषि की युक्तियों को अपनाया है। सी न किसी रूप में उनके सिद्धान्तों का अव-किया है। अब पौराणिकों की पुराणों या मूर्ति

यह बात तो उन शास्त्रार्थों को देखने से भली भांति प्रकट हो जाती है जो ऋषि दयानन्द और अन्य धर्मावलम्बी विद्वानों के बीच में हुये थे। फिर भी स्वार्थियों का विरोध स्वाभाविक था और रहेगा। प्रश्न यह है कि क्या बुद्धिमान और मानव जाति के हितैषी भी उसमें शामिल हों। अभी तक तो ऐसा नहीं हुआ परन्तु यदि हुआ तो इससे मानव जाति को बहुत बड़ी हानि होगी।

आर्य्य समाज की युक्तियों का उत्तर न दे सकने पर प्रथम तो विरोधियों ने यह कहना आरंभ किया था कि सत्यार्थ प्रकाश में ब्रिटिश गवर्मेंट का विरोध है और गवर्मेंट को इसको ज़ब्त कर लेना चाहिये। सन् १९०२ ई० में आल्हाराम सागर पर प्रयाग में मुक़दमा सरकार की ओर से चल गया। उसमें मजिस्ट्रेट ने *स्पष्ट निर्णय दिया कि स्वराज्य या देश हितैषिता की बातों से सरकार का विरोध प्रतीत नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश में वही लिखा है जो किसी सुधारक को लिखना चाहिये।

ब्रिटिश गवर्नमेंट का यह सिद्धान्त है कि किसी के धार्मिक मामले में हस्तक्षेप न करे और सब को अपने २ धर्म के प्रचार की और दूसरे धर्मों की आलोचना की पूरी २ स्वतंत्रता है। आर्य्य समाज ने इसी अधिकार का उपभोग किया है और यद्यपि सत्यार्थ प्रकाश के खण्डन में तथा वैदिक धर्म के विरुद्ध ईसाई या मुसलमानों की ओर से सैकड़ों पुस्तकें निकली हैं तथापि सिवाय उचित उत्तर देने के आर्य्य समाज ने आज तक कभी क़ानूनी दरवाज़ा नहीं खटखटाया। बल्कि मुसलमानों की ओर से प्रायः ऐसे आक्रमण होते रहे। पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द तथा महाशय राजपाल के कत्ल तथा अन्य घटनायें ऐसी हैं जिनसे सिद्ध होता है कि कुछ मुसलमान धार्मिक स्वतंत्रता का सिद्धान्त नहीं मानते और वह यह चाहते हैं कि वे स्वयं तो अन्य धर्मों का मनमाना खण्डन करते रहें परन्तु उनके सिद्धान्तों की कोई आलोचना न करे। वे तो अपने मजहब में हर एक को मिलाते रहें परन्तु मुसलमानों को अपने धर्म में मिलाने का अधिकार किसी को न हो।

ऐसी धींगा-धींगी की स्पिरिट पहले तो कुछ मुसलमान व्यक्तियों या समुदायों तक ही सीमित थी और समय समय पर यह धर्मान्धता फूट निकलती थी। परन्तु अब कुछ दिनों से मुसलमानों के राजनीतिक क्षेत्र में भी इसका प्रवेश हो गया है। अभी मोस्लि[illegible] अपने इजलास ता: १५-१६ नवम्बर १९४३ [illegible] में भारत सरकार से यह मांग पेश की है कि [illegible]र्थ प्रकाश को जब्त कर लेना चाहिय क्योंकि इसमें इस्लाम और मुहम्मद साहेब की तौहीन की गई है। यह एक सयासी चाल है और पाकिस्तान की तरह मुसलमानों को भड़काने के लिये की गई है। अन्यथा जो मुसलमान हिन्दू धर्म के विरुद्ध प्रति दिन ज़हर उगलते रहते हैं उनको क्या अधिकार है कि सत्यार्थ प्रकाश की उचित आलोचना को तौहीन कहें।

स्वामी दयानन्द को ईसाई और मुसलमानों के धर्मों की आलोचना क्यों करनी पड़ी? प्रथम तो उन्होंने भारतीय धर्मों की भी आलोचना की है। वह भूमिका में लिखते हैं:—

"यद्यपि मैं आर्य्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ मतोन्नति वालों के साथ बर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी बर्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने में तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।" चौदहवें समुल्लास की अनुभूमिका में लिखा है:—

"यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिये सब मतों के विषयों का थोड़ा थोड़ा ज्ञान होवे इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले, और एक दूसरे के दोषों का खंडन कर गुणों का ग्रहण करें"।

इससे स्पष्ट है कि ऋषि का उद्देश्य बड़ा उच्च है वह मनुष्य मात्र का कल्याण चाहते हैं। यदि महात्मा बुद्ध ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये अपने सहयोगी दुष्ट विचारों का विरोध किया, यदि हज़रत ईसा ने मनुष्यमात्र के लिये अपने समय के धार्मिक विचारों की कड़ी आलोचना की; यदि हज़रत मुहम्मद साहब ने अपने समय के प्रचलित मूर्तियों का खंडन किया और अरब के देवी देवताओं का निरादर किया, तो स्वामी दयानन्द के लिये भी आवश्यक था कि मनुष्य

*The general tenor of Dayananda's teaching seems to me to be rather an exhortation to reform, with perhaps a view to the ultimate restoration of the Government to native hands .....His exhortation and prayers are not for the immediate overthrow of the foreign rule, but for such reformation, as may perhaps enable the Hindus in the future, to govern themselves.....There is no call to arms and no war cry. (Extract from the judgment delivered by Mr. Harison

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थे। यदि मुसलमानों को यह अधिकार था कि हिन्दू धर्म का खंडन करके हिन्दुओं को मुसलमान होने की तरगीब दें यदि ईसाईयों का यह अधिकार था कि हिन्दू धर्म के विरुद्ध सैकड़ों को ईसाई होने के लिये निमंत्रण दें तो स्वामी दयानन्द का भी कई गुणा अधिकार था कि हिन्दुओं को विशेषत: और मनुष्य मात्र को सामान्यत: यह बता दें कि ईसाई और मुसलमान धर्म भी दूध के धोये नहीं हैं अपितु जिन [illegible]जी सत्यो वह पौराणिक मत में बताते हैं वे दोष उ[illegible] ८½ बजे और धार्मिक पुस्तकों में स्वयं पाये जाते [illegible]मी जी सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास में लिखते हैं—

"जैसे तुम्हारे लिये कुरान में हुक्म है वैसे इनके लिये पुराण में आज्ञा है। जैसे तुम कुरान को खुदा का कलाम समझते हो वैसे पुराणी पुराणों को खुदा के अवतार व्यास जी का वचन समझते हैं, तुममें और इनमें बुतपरस्ती का कुछ भिन्न भाव नहीं है। प्रत्युत तुम बड़े बुतपरस्त और यह छोटे हैं। क्योंकि जब तक कोई मनुष्य अपने घर में प्रविष्ट हुई बिल्ली को निकालने लगे तब तक उसके घर में ऊँट प्रविष्ट हो जाय वैसे ही मुहम्मद साहेब ने छोटे बुत को मुसलमानों के मत से निकाला परन्तु बड़े बुत जो कि पहाड़ सदृश मक्के की मस्जिद है वह सब मुसलमानों के मत में प्रविष्ट करा दी।

यदि अरब से आये हुये मुसलमान और इङ्गलैंड तथा अमेरिका से आये हुये ईसाई भारतवर्ष में हिन्दू धर्म का खण्डन कर सकते हैं तो भारत में रहने वाले स्वामी दयानन्द के लिये उन आगन्तुक धर्मों की आलोचना करके अपने देश वासियों को सचेत करना कैसे आक्षेपजनक गरदाना गया? यदि कृष्ण और राम के विरुद्ध गंदी से गंदी बातें लिखना हिन्दू धर्म की तौहीन नहीं तो हज़रत मुहम्मद या हज़रत ईसा की किसी बात की समुचित आलोचना तौहीन कैसे हो गई? कानून तो सब के लिये एक सा होना चाहिये। मूर्ति पूजकों के शिये कुरान में कितना बुरा कहा है। और मुसलमान लोग हिन्दुओं को भी उसी काफिर की कोटि में रखते तथा हिन्दू धर्म को कुफ्र समझते हैं। यदि हिन्दू लोग यह माँग पेश करें कि कुरान से वह सब शब्द निकाल देने चाहिये जो हिन्दुओं पर लागू होते हैं तो क्या मुसल्मान इसको पसन्द करेंगे? यदि इस प्रकार की प्रथा चल पड़ी तो भारतवर्ष में किसी को एक पग चलना भी कठिन हो जायगा। मुस्लिम लीग ने एक अनोखी मांग पेश करके एक अनोखी प्रथा सिखादी है। इससे साम्प्रदायिक झगड़े रोज़ बढ़ेंगे, घटेंगे नहीं और भारतवर्ष की स्वतंत्रता तथा एकता को घोर आघात पहुँचेगा।

हम को आशा नहीं कि भारत सरकार कभी इस प्रकार की अनर्गल मांगों पर कुछ भी ध्यान देगी। के समय जगत् में धार्मिक स्वतंत्रता का एक विशेष मूल्य है। आज वह युग नहीं कि सुकरात को सचाई के प्रचार के अपराध में विष पिला दिया जाय या पोंटियस पाइलेट ईसा को सच कहने के लिये सूली पर चढ़ा दे। भारत सरकार को भी सभ्य संसार के सामने अपना मुख उज्वल रखना है। वह यह तो कभी गवारा न करेंगे कि बीसवीं शताब्दी में १६ वीं शताब्दी के समय की शासन प्रणाली को काम में लावें और मेरी टूडर की नीति का अवलम्बन करें। मुझे यह भी विश्वास नहीं होता कि आज कल की भारत सरकार जो सौ प्रतिशतक समस्त शक्तियों को जर्मनी तथा जापान के विरुद्ध लगाना चाहती है, इन बातों को सहन करेगी कि भारतीय जनता सत्यार्थ प्रकाश और कुरान के ज़ब्त कराने के उद्योग में अपनी शक्ति का दुरुपयोग करती रहे। परन्तु यह आश्चर्य अवश्य है कि भारत सरकार ने पिछले कई मास के आन्दोलन को देखते हुये अपनी नीति की घोषणा कर के इस उलझन को सुलझा क्यों नहीं दिया। क्या ऐसे आन्दोलनों से युद्ध की विजय में सहायता मिलेगी?। लार्ड वेवित और एमरी साहब इस पर अवश्य विचार कर रहे होंगे, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि मुस्लिम लीग और उसके कायदे आज़म मिस्टर जिन्हा ने भारत के धार्मिक शान्त सागर में एक कंकड़ी फेंक कर समस्त सागर में क्षोभ पैदा कर दिया है उनके पाकिस्तान का यह पेशगी नमूना है।

अब प्रश्न यह है कि आर्य्य समाजियों को क्या करना चाहिये। मैं तो समझता हूँ कि प्रत्येक आर्य समाजी इस का उत्तर पहले से ही जानता है। उसके लिये यह नया प्रश्न नहीं है। धर्म के लिये मर मिटना उसके व्रतों में से एक व्रत है। मैं ने अपने भ्रमण में आर्य्य समाजियों के मनों को टटोला है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य्य नर नारी उस समय की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं जब वह अपने धर्म-प्रेम का परिचय दे सकें।

वक्ते कुश्तन मोजज़न होगा मिरा दरयाय खूँ।
खूब मछली बन के तैरगी छुरी जल्लाद की।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार की उमंग तो आर्य्यों के हृदय में पहिले से ही थी परन्तु मुसलमानों की वर्तमान मांग ने तो उन को और सचेत कर दिया है। और सत्यार्थ प्रकाश का पाठ घर घर में होने लगा है। जो पहले आलस्य या प्रमाद भी करते थे वह अब अधिक तत्पर होगये हैं। कुछ तो मुझ को ऐसे मिले जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश कंठ करना आरंभ कर दिया है। हमारा प्रस्ताव है कि प्रत्येक आर्य्य एक एक सत्यार्थ प्रकाश खरीद कर दूसरों तक पहुँचा दे, समस्त देश में एक बार तो सत्यार्थ प्रकाश गूंज जावे। एक बात याद रखनी चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाश का अमुक भाग मुख्य है अमुक गौण। समस्त सत्यार्थ प्रकाश को अपना धर्म ग्रंथ हैं और उस को खंडित करना सहन नहीं कर हम संसार को बतला देना चाहते हैं कि समस्त जनता हमारे साथ है। मुसलमान आर्य सम विरुद्ध हिन्दुओं को भड़का कर अपना उल्लू करना चाहते हैं उनको याद रखना चाहिये वह दिन गये जब खलील खाँ फ़ाख़्ता उड़ाया क हिन्दू अपना पराया समझने हैं। हैदराबाद स में समस्त हिन्दू जगत् हमारे साथ था। औ सब सनातन धर्म सभाओं की ओर से यह आ रही है कि हमारा और आर्य समाज का मतभेद है। हम किसी बाहर वाले को इसक उठाने नहीं देंगे। सिक्खों के अकाली दल और तारा सिंह पर मुसलमानों का कुछ जादू चल है। परन्तु इन सिक्खों ने इस दाव में फँस कर ही भाइयों द्वारा अपने को उपहास-पात्र बना है। गुरु गोविन्द सिंह की कीर्ति के गीत हर हि घर में उसी प्रकार से गाये जाते हैं जैसे महा प्रताप या शिवाजी के। यदि सिक्ख लोगों का सम्प्रदाय भी थोड़े से लोभ के लिये मुसलमान मिल गया तो हिन्दुओं में सिक्खों की वही पोज़ नहीं रहेगी जो अब तक थी। इस बात का अ बुद्धिमान सिक्खों को हो रहा है और आशा है कि आगे पग बढ़ाने में सावधानी करेंगे। हम यहाँ क के आज (ता० १६ नवम्बर १६४३ ई०) से उद्धृत करते हैं:—

"हमें इसमें संदेह है कि जिस आदेश का सिंध की लीगी सरकार के किये न हो सका, सरकार बिना 'चूंचरा' किये उसे शिरोधार्य कर सत्यार्थ प्रकाश देश के एक प्रमुख सम्प्रदाय कुरान जैसी ही पवित्र पुस्तक है। पढ़े लिखे स हिन्दू भी उसे आदर की दृष्टि से देखते हैं। उ की पुरानी हो जाने का गौरव भी उसे प्राप्त है कट्टर पंथी मुसलमानों की इस मांग ने आन्दो रूप लिया तो देश के साम्प्रायिक वायु मण और बिगाड़ देने वाले एक विवाद—सम्भवत: के भी उपस्थित हो जाने की आशंका है। अ आशा करते हैं कि लोग के कर्णधार अब भी दूरदर्शी से काम लेंगे।"

कुछ बुद्धिमान मुसलमानों को भी मुस्लि की यह हरकत पसन्द नहीं आई है। मौलव उल्ला साहब अमृतसरी जिनके आर्य्य समाज कई बार मुबाहिसे हो चुके हैं, इस हरकत क करते हैं। मौलाना सालेह मुहम्मद सिद्दीक़ ने लिखा है:—

जैसा कि नाज़रीन को मालूम है कि मज़ह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्पादक भीमसेन विद्यालङ्कार

Regd L. N. 5004

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिये इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

संख्या ५, वार्षिक ७ मार्गशी १२ दिसम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

ग्वेद ७।११।१ में आता है—

आध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते ।

ओ ! तू मार्ग प्रदर्शन का महान् ज्ञापक है। जीव
ा आनन्द नहीं पाते ।।

न वेदवचन से सिद्ध होता है कि आनन्द-लाभ
ा से ही संभव है। अर्थात् आनन्द-प्राप्ति के
रमात्मा के साथ संबन्ध जोड़ना पड़ेगा।

ी प्राणी सुख की तलाश में रहते हैं। एक भी
ैसा नहीं, जो दुःख चाहता हो। देशहित आदि
के निमित्त दिन-रात नाना विध संकटों की
ातना सहने वाले भी किसी सुख की प्राप्ति
वश्य से इस दुःख-परम्परा को सहर्ष स्वीकार
ते।

ेमात्र के भीतर विद्यमान यह नैसर्गिक सुख-
सिद्ध करती है कि कहीं न कहीं सुख का-
ा-अक्षय भंडार है। सन्तजन आनन्द के इस
रुद्वार को परमात्मा, परमेश्वर, ईश्वर आदि
ों से स्मरण और नमन करते हैं। दूसरे शब्दों
ों कह सकते हैं कि प्राणियों की यह सुख-
ाना ईश्वर-सत्ता में सब से प्रबल प्रमाण है।

वेदज्ञ का यह कथन कि

'ते त्वदमृता मादयन्ते'

समुचित है। परमात्मा को अथर्ववेद में
ृप्तः' 'न कुतश्चनोनः'

द से भरपूर तथा किसी प्रकार की न्यूनता
ा है। औपनिषद योगियों ने परमर्षि के
मिला कर कहा—

मः, रसं लब्ध्वा ह्येवानन्दी भवति
सचमुच आनन्द है।' मनुष्य उस
ान् को प्राप्त करके आनन्दी होता है।
मनुष्य को दुःख रहता है, चिन्ता रहती
ैसे सुख आनन्द मिलना असंभव है।
सामने रख कर दार्शनिक मुनियों ने
ी सब से श्रेष्ठ पुरुषार्थ बताया, यथा

ईश्वर-भक्ति

(स्वामी वेदानन्दतीर्थ का २७-११-४३ प्रातः को लाहौर आर्य्य समाज के वार्षिकोत्सव में किया उपदेश)

कपिल मुनि जी का सूत्र है—

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः ।

सां १।१

तीन प्रकार के दुःख की निवृत्ति सर्वोत्तम पुरुषार्थ है। आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा अधिभौतिक—ये तीन प्रकार के दुःख हैं।

परमात्मा ही से आनन्द मिलता है, इसके लिये आपका, हमारा, सब का जीवन चरित सब से प्रबल प्रमाण है। देखिये—

एक बालक, अत्यन्त नन्हा बालक जब किसी कारण से भयभीत होता है, तो वह अपनी माता की गोद से चिपक जाता है। क्यों ? माता की गोद उसे सर्वथा निरुपद्रव, भयरहित, पीडा से बचाने वाला निरापद स्थान प्रतीत होता है। कुछ काल के पश्चात् देखते हैं कि वही बालक, जो अब अपनी तोतली बोली से माता पिता बन्धु बान्धव का चित्त प्रसन्न करता रहता है, अपनी शान्तिदायिनी भयहारिणी शरण्या माता को अपने नन्हे नन्हे सुकोमल हाथों पूर्णबल के साथ पीटने के प्रयत्न में लगा हुआ है। क्यों ? पूछने पर ज्ञात हुआ कि माता से वह खिलौने मांग रहा है, माता कार्यान्तर में व्यस्त होने से विलम्ब कर रही है, अतः बच्चा-राजा कुपित हुआ है। समझे, बात क्या हुई, माता से खिलौना अधिक प्यारा लगने लगा है, उसमें अधिक आनन्द प्रतीत होने लगा है। तनिक आगे चलिये, अब बच्चा पढ़ने की अवस्था में हो गया है, [हम उसके मिट्टी में खेल खेलने के काल को अतिक्रमण कर उसका वर्णन नहीं करते।] चित्रमय पुस्तक उसके हाथ में है। एक एक अक्षर के साथ एक एक चित्र है। यथा 'अ' अनार, 'आ' आना 'क' कौवा इत्यादि। एक एक अक्षर का नाम लेता है, साथ ही चित्र का नाम भी। माता पिता को, बन्धु बांधवों को दिखाता तथा सुनाता है। माता की अपेक्षा, खिलौने की अपेक्षा अब पुस्तक अधिक सुखदायिनी है। आओ ! लम्बी छलांग लगायें। अब बालक बाल्यकाल को लांघ गया है। अब वह भरा पूरा जवान है। माता पिता भी समझदार हैं, उन्होंने भी 'प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्रं मित्र[illegible]वदाचरेत्' [सोलह वर्ष का होने पर पुत्र के साथ मित्र का बर्ताव करे] पर आचरण करते हैं। उस की आवश्यकताओं का विचार करते हुए उसे पृथक् कमरा दे रखा है। वह युवा उस एकान्त-कमरे में बैठा दिन रात एक करके अपनी किसी उच्च परीक्षा की सिद्धि की साधना में तल्लीन है। बच्चा [चाहे मनुष्य बूढ़ा भी हो जाये, माता पिता की दृष्टि में वह बालक ही है] बहुत पढ़ता है, अतीव परिश्रम करता है। अतः उसे रोकने के लिये ममता मूर्त्ति माता बच्चे के पास आई है। बेटे से प्यार कर रही है। किन्तु परीक्षा-चिन्ता से आतुर बालक को माता का इस समय का प्यार प्रहार लगता है। मां पर वह झुंझला उठता है। माता उसे अपनी गोद में लेने की लालसा प्रकट करती है, युवापुत्र को वह भला नहीं प्रतीत होता। माता उसके खिलौने आगे धरती है, पुत्र उन्हें भी दूर फेंकता है। अहह !! सुख की खोज में हम कहां से कहां आ पहुंचे। एक समय सब उपद्रवों से रक्षा करनेवाले मातृ-गोद में अब सुख की प्रतीति नहीं होता, खिलौनोंके खेल से भी दिल का मेल नहीं रहा। अब तो परीक्षा में उत्तीर्णता ही सब से प्यारी है, अतः जी जान से उसकी तय्यारी है। जवान भाग्यवान् है। परीक्षा में प्रतिष्ठा-पूर्वक सफलता प्राप्त कर सकता है। माता पिता के हर्ष के साथ उसका भी पारावार नहीं। कुछ दिनों के पश्चात् वह युवा उदास तथा खिन्न दिखाई देता है। क्यों भाई ? यह क्या हुआ ? इस जिज्ञासा का उत्तर मिलता है—माता पिता के कई सहस्र रुपये व्यय किये, अपना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ईश्वर-भक्ति

[शेष पृष्ठ ८ पर]

भाव यह कि भगवान् का गुण कीर्तन भगवान् के समान संग-शक्ति का हेतु बनेगा। उस गुणकार था कि लिये भी एक विशेष बन्धन है वह है के लिये को धारण करना. यथा—ऋग्वेद ५।१४।१ में कह अ—

अग्निः स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम् ॥

ज्ञानी होकर स्वयं उसके गुणों से प्रदीप्त होकर तू उस अविनाशी को स्तुति से चिता, रिझा। अर्थात् थोथी स्तुति से कुछ लाभ नहीं है। मानो, इसी मन्त्र का अनुवाद ही किसी ने किया है—

यद्यपि फलं कतकवृक्षस्याम्बुप्रसादकम्।
तथापि न नामगात्रग्रहणेन तस्य वारि प्रसीदति।

यदि निर्मली का फल जल को निर्मल करने का बल रखता है, किन्तु उसका केवल नाम लेने से जल विमल नहीं हो जाता।

इसी वास्ते ऋ० २।२ १ में कहा है—

यजध्वं हविषा तना गिरा

धन, तन, मन, वचन से यज्ञ करो, पूजा करो। यज्ञ से=त्याग से, आत्म समर्पण करने से महिमा बढ़ता है। वेद कहता है—

यज्ञेन वर्धत जातवेदसमग्निम्। ऋ०२ २।१

जातवेद अग्नि को—आत्मा को यज्ञ से—त्याग से बढ़ाओ, उन्नत करो।

इस यज्ञ या आत्मसमर्पण को योगशास्त्र में 'ईश्वर प्रणिधान' कहते हैं। ईश्वर प्रणिधान का फल योग-दर्शन में—

समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्।

समाधिसिद्धि बतलाया है।

चित्तवृत्तिनिरोध का नाम समाधि है। जब तक चित्त चंचल है, तभी तक भ्रान्ति, और क्लान्ति मनुष्य को घेरे रहती है। चित्त उपरत हुआ, और क्लान्ति के भाव विरत हुए। इस का कारण है। प्यासा प्यास से व्याकुल है। जलपान से उसकी प्यास के साथ व्याकुलता मिट जाती है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर भक्ति से चपल चित्त की व्याकुलता शान्त हो जाती है। भगवान् के सम्बन्ध में वेद (ऋ० १।१७५ ६) में कहा है—

यथा पूर्वेभ्यो जगितृभ्यः इन्द्र
मय इवापो न तृष्यते बभूथ।
तामनु त्वा निविदं जोहवीमि
विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्।

पूर्ण ज्ञानी भक्तों के लिये भगवान् ऐसा सुखदायी है, जैसे प्यासे के लिये पानी। मैं तुझे उस पुरानी तेरी बताई हुई पद्धति से पुकारता हूं।

वेद में बहुत ही स्पष्ट ईश्वर-भक्ति का फल कहा है—

स इज्जनेन विशा स जन्मना
देवानां यः पितरमाविवासति
श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम्।
ऋ० २।२६।३

जो देवों के—सृष्टिमात्र के पदार्थों के पालक भगवान् की मानसिक श्रद्धा से भक्ति करता है, उसे जन, धन, पुत्र, परिजन, परिवार के द्वारा अन्न, बल, ज्ञान का आधार करता है।

भाव यह कि भगवान् की भक्ति लौकिक पार-लौकिक सभी पदार्थों की दात्री है। हां, वह भक्ति हो। भगवान् के गुणों का गान करते हुए उनको अपने में आधान करने के लिये भी यतमान होना चाहिए। अन्यथा वह वाचोविग्लापनम्=वाणी की ग्लानि होगी।

यद्यपि हम वेद के शब्दों द्वारा पूर्व बतला चुके हैं कि ईश्वरोपासना कैसी होनी चाहिए, तथापि स्पष्टता के लिये पुनः वेद के शब्दों में कहना आवश्यक है कि—

यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानो
ऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।
ऋ० ५।४।१०

तुझे समझ कर, मैं विनाशी तुझ अविनाशी को स्तुति से भरपूर हृदय और मन से पुकारता हूं। वाणी की पुकार प्रायः बेकार होती है। पुकार में मन और हृदय का, दिल और दिमाग का सहकार होना चाहिये अर्थात् हृदय और मन तथा वाणी सब का योग हो। तब ईश्वर भक्ति पूरी होगी। यही हार्दिक भाव मनुष्य को भगवान् तक ले जाते हैं जैसा कि एक वेदानुयायी वेद के शब्दों में कहता है—

यनीवानो मम दूतास इन्द्रं
स्तोमाश्चरन्ति समतीरियानाः।
हृदिस्पृशो मनसा वच्यमाना
अस्मभ्यं चित्रं रयिं दाः॥
ऋ० १०।४०।७

मेरे भजन मेरे दूत बन कर भगवान् के पास जा रहे हैं। वे मेरे हृदय के उद्गार हैं, दिल की गहराइयों से निकले हैं। मन ने उनका मनन किया है। दूसरों के हृदयों को हिला देते हैं।

अर्थात् ईश्वर भक्ति ही भगवान् तक ले जाने के लिये दूत है। किसी अन्य माध्यम की आवश्यकता नहीं है।

आत्म त्याग और अनन्यभाव से भगवान् का भजन मुख्य धर्म है, इस तत्त्व को सदा स्मरण रखना चाहिए यथा—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्॥
(य० ३१।१६)

प्रभु! आप सबके अन्दर इस भक्ति भावना को भर दो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[५ पृष्ठ का शेष]

समाज को चार या पांच साल का प्रोग्राम चाहिए और उस प्रोग्राम को सफल बनाने के सक यत्न करना चाहिए। दो वर्षों में ऐसा आ रहा है जबकि आप अपनी मनोवृत्ति के वर्तन का परिचय दे सकते हैं। आर्य प्रतिनिधि पंजाब की ६० वर्षीय जयन्ती १९४५ में होगी। प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने इसे का निश्चय कर दिया है। आप चाहें तो इस स में आर्यसमाज के लिए चार या पांच साल का बना सकते हैं और यदि आप उस प्रोग्राम को बना दें तो आर्यसमाज की काया पलट हो है।

भाइयो! और भी बहुत कुछ कहा जा सक किन्तु मैं आपका अधिक समय लेना नहीं च अब आप जिस पवित्र कार्य के लिए एकत्रित उसके संपादन में लगिये। इस सम्बन्ध में मैं इतना करूंगा कि—

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि ले।

पर आचरण करते हुए अपने मनों को प से बिलकुल पाक करदें और जो भी विषय के सामने आये आप इस भाव से उस पर दें कि आर्यसमाज का हित किस में है। आर्य का हित हमारी दृष्टि में होना चाहिये। eg larger ego पर न्योछावर कर देना चाहिए आप का यह भाव होगा तो मुझे आशा विश्वास है कि आपका पुरुषार्थ सफल होगा मात्मा आप को आशीर्वाद दे कि आप निश्चय करें और जो भी पग उठायें आर्यस हित वा अहित को दृष्टि में रख कर करें।

आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव

शरद ऋतु के कारण दिसम्बर मास उत्सव कम होते हैं तथापि कोहगियाँ (लाहौर पिंडी सदर सालवन जालन्धर शहर लश्क छावनी नयाबास देहली महतपुर के उत्सव चुके हैं। इन में सबसे महत्व पूर्ण उत्स शहर समाज का होता है जनता की सेवा में जाती है कि सभा उसी समाज के उत्सव करेगी जिस समाज के प्रधान लाला चिम हैं। पंजाब की समस्त आर्य सभाओं को जाता है कि वे अपने अपने यहाँ के समा में प्रकाशनार्थ शीघ्रता से भेजा करें। क समाचार मिलते ही नहीं हैं और कितनी उत्सवों की सूचनाएं भी बहुत लेट भेजती यथा संभव के छाप दिये जाते हैं।

आर्य समाज बहावलपुर का

प्रधान डाक्टर गिरधारीलाल जी, सीताराम जी, उप प्रधान म० चन्द्रभान जयरामदास जी सरदाना, उप मन्त्री जी, मण्डारी म० ईश्वरचन्द जी।

आर्य
रविवार २७ मार्गशीर्ष
वि० सं० २०००

आचार्य रामदेव की स्मृति में

कन्या गुरुकुल देहरादून को याद रखो

दिसम्बर को आचार्य रामदेव जी का स्मृति है। आचार्य रामदेव जी ने अपना जीवन- आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के संदेश को समाज के अन्तस्तल तक पहुंचाने के लिये कर दिया था। युवावस्था की उमंगों और संचारिणी चेष्टाओं को सांसारिक ऐश्वर्यों से —वैदिक धर्म के लिये भेंट कर दिया था। रामदेव लगन, धुन, उत्साह और आशावाद लन्त प्रचारक थे। निराश आत्माएं उनके संपर्क कर आशावादी बन जाती थीं। प्रबल विरोध उत्साह को मंद करने के स्थान पर, अत्यधिक और अदम्य बना देता था। ऐसी आत्मा की स्थिति को आज प्रत्येक आर्य भाई अनुभव कर है। आचार्य रामदेव जी पंजाब तथा भारत के न्त प्रान्तों में दौरा लगा कर आर्य जाति को और सचेत करते रहते रहते थे। परन्तु विदेशों र्यसमाज के संदेश को लेख द्वारा पहुँचने वाले गुरुदत्त जी के बाद आप ही थे। अंग्रेजी या में वैदिक मैगजीन पत्र द्वारा आपने आर्य- तथा आर्य जाति के साहित्य के गौरव को करने का जो प्रशंसनीय तथा स्मरणीय कार्य किया कोई विद्वान् आंखों से ओझल नहीं कर सकता। हर समय अंग्रेजी साहित्य में आर्यसमाज द्धान्तों पर आक्षेप करने वालों का उत्तर देने की लगी रहती थी। शोक की बात है कि उनके आज इस दिशा में कोई विद्वान् आगे नहीं आया। शिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को ध्यान देना चाहिए।

आचार्य रामदेव की अनेक विभूतियों में से उन यानन्द भक्ति की विभूति को कोई भूल नहीं । वह हरेक क्षेत्र में ऋषि दयानन्द को मार्ग मानते थे। हरेक समस्या का हल वह ऋषि नन्द के ग्रन्थों से ढूंढते थे। एक बार श्रीयुत आदि कुछेक महानुभावों ने आर्यसमाज को दिया था कि वह सत्यार्थप्रकाश में से नात्मक समुल्लासों को निकाल दें। आचार्य जी श्रीयुत एण्ड्रूज के दोस्त थे, परन्तु उनके विचार को वह सह नहीं सके। उन्होंने इसका किया। इसी प्रकार से एक बार सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कराते समय, युरोप के अनुवाद के प्रकाशकों ने सत्यार्थ प्रकाश के नियोग का युरोप में प्रकाशन उचित नहीं समझा। विषय पर भारतीय आर्य विद्वानों की सम्मतियां । कई भाइयों ने इसे संक्षिप्त रूप में प्रकाशित कहा। परन्तु आचार्य रामदेव जी ने इस विषय और प्रबल सम्मति देते हुए ऋषि दयानन्द योग विषयक सम्मति को अविकल रूप में प्रकाशित करने पर बल दिया। आचार्य रामदेव सिद्धान्त की दृष्टि से किसी व्यक्ति को निभ्रान्त नहीं मानते थे। परन्तु व्यवहार में उनकी ऋषि दयानन्द-भक्ति उन्हें कई बार जनता के सामने इस रूप में प्रकट करती थी। मानो वह स्वामी दयानन्द को निभ्रान्त मानते हों। दयानन्द भक्ति ने उन्हें सार्वजनिक जीवन के उतार चढ़ावों में भी, वैदिक धर्म की सेवा और आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र से पृथक् नहीं होने दिया। जीवन की सांझ में, मृत्यु से पूर्व क्षण तक वह वैदिक धर्म और आर्य समाज की धुन में मस्त थे। उनका देहान्त उनकी अन्तिम आशा और इच्छा के केन्द्र-कन्या गुरुकुल देहरादून में हुआ। विपरीत परिस्थितियों में आज कन्या गुरुकुल जिस स्थिति तक पहुंचा है यह उन्हीं के दृढ़ निश्चय और अनवरत यत्न का परिणाम है। उनकी अन्तिम इच्छा कन्या गुरुकुल को आर्थिक दृष्टि से स्थिर बनाना था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इसके लिये १ लाख रुपये की अपील की थी। इसमें अभी तक ४० हजार के लगभग राशि प्राप्त हुई है। कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव बड़े दिनों की छुट्टियों में, दिसम्बर में हो रहा है। कन्या गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पं० सोमदत्त जी विद्यालंकार इस अपील को पूरा करने के लिये पंजाब के मुख्य २ शहरों का दौरा लगा रहे हैं। आर्य भाइयों को चाहिए कि उनका उत्साह पूर्वक स्वागत कर उन्हें इस अपील को पूरा करने में पूर्ण सहयोग दें। इस समय कन्या गुरुकुल में बोर्डिङ्ग हाउस, स्नानागार और भोजनशाला की पक्की बिल्डिङ्ग की आवश्यकता है। दानी महानुभाव इनमें से किसी एक के लिये धनराशि दे सकते हैं। सारी राशि एक दानी न दे सकें तो कम से कम एक २ कमरे के लिये दान दे सकते हैं। ६ दिसम्बर को आचार्य रामदेव स्मारक दिवस मनाते हुए आर्य समाजों को चाहिए कि कन्या गुरुकुल के लिये अपील करें, धनसंग्रह करें। इकट्ठा किया हुआ धन आचार्य रामदेव स्मारक के लिये कन्या गुरुकुल देहरादून में अथवा सभा कार्यालय में भेज दें। आचार्य रामदेव स्मारक दिवस मनाते हुए आचार्य रामदेव जी की भांति, आर्य समाज और ऋषि दयानन्द द्वारा पुनः प्रवर्तित वैदिक धर्म के लिये त्याग करने का संकल्प की जये और उनकी अन्तिम इच्छा पूर्ति के लिये कन्या गुरुकुल के लिये कुछ न कुछ भेंट अवश्य अर्पित कीजिये। मैं आशा करता हूं कि आर्य भाई इस ओर विशेष ध्यान देंगे—

—भीमसेन

अमृतसर हिन्दू महासभा का जुबली अधिवेशन—

अमृतसर में हिन्दु महासभा के जुबली अधिवेशन की तैय्यारियां शुरू हो गई हैं। नियत वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व पंडित मदन मोहन मालवीय जी के सभापतित्व में जुबली दिवस मनाया जायगा। इस दिन सब स्थानों की हिन्दु सभाओं में पं० मालवीय जी का भाषण पढ़ा जायगा। इस अधिवेशन के सभापति श्री वीर सावरकर निर्वाचित हुए हैं। पंजाब में होने वाले इस अधिवेशन के सामने अनेक महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। पंजाब में पाकिस्तान की समस्या तो थी ही, अब अकाली पार्टी की आजाद पंजाब की मांग ने इसे और अधिक जटिल बना दिया है। इसके इलावा हिन्दुओं के अन्दरूनी झगड़े—पंजाब के हिन्दुओं को दिन प्रति दिन कमजोर कर रहे हैं? जाट बनियों की समस्या तो थी ही कुछ समय से सनातनी (गोस्वामी गणेशदत्त जी) समाजी (डी. ए. वी कालेज) शिक्षणालयों के कारण पंजाब यूनिवर्सिटी में हिन्दु परस्पर एक [illegible] सहायक बनने के स्थान पर, विरोधी बन रहे [illegible]

[illegible] हिन्दु सभा स्वयं घरेलू झगड़ों और अन्तः कलह [illegible] शीर्ण शीर्ण हो रही है। इन झगड़ों का मूल कारण यह है कि हिन्दु महासभा के कर्णधार अपनी शक्ति का अधिकांश एण्टी-कांग्रेस और एण्टी-मुस्लिम आन्दोलनों में व्यय करते हैं। जनता के सामने कोई रचनात्मक संगठनात्मक कार्यक्रम नहीं रखते। जब तक हिन्दु महासभा के कर्णधार हिन्दु जनता के सामने रचनात्मक कार्यक्रम नहीं रखेंगे तब तक हिन्दु महासभा शक्तिशाली संस्था नहीं बन सकती। इस समय हिन्दुओं के सामने अनेक महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। विशेषतया पंजाब के हिन्दू उलझनों और मुसीबतों से घिरे हुए, सर्वनाश की ओर जा रहे हैं। युनियनिस्ट पार्टी के नए कानूनों के कारण हिन्दुओं की सम्पत्ति क्षीण हो रही है। आर्य हिन्दु सभ्यता-को स्वयं हिन्दू नेता-हिन्दू-संस्थाएं समाप्त कर रही हैं। हिन्दुओं के घर युरोपियन-वातावरण और अंग्रेजी सभ्यता के स्रोत बन रहे हैं। हिन्दू कन्याएं हिन्दू आर्य सभ्यता को छोड़कर युरोपियन सभ्यता को अपना रही हैं। सामाजिक ऊंच नीच, जन्म की विरादरियों की बेड़ियां अभी तक हिन्दु-समाज के संगठन को जकड़े हुए उसे विकसित नहीं होने देती। इस समय हिन्दू महासभा को हिन्दू जाति में जीवन संचार—और शक्ति-संचार करने के लिये क्रान्तिकारी कार्यक्रम स्वीकार करना चाहिए। इस सम्बन्ध में श्रीयुत डाक्टर जयकर ने मद्रास में हिन्दी प्रचार सभा में हिन्दु युवकों को निम्न लिखित संदेश दिया था उस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

Make Hinduism progressive and expansive in the same that its messoge will filterdown to the Lower Class.

"हिन्दू-संगठन आन्दोलन को उन्नतिशील और व्यापक बनाओ। इसका संदेश हिन्दुओं की छोटी से छोटी जाति तक पहुंचना चाहिए। साथ ही साथ आपने वैदिक सभ्यता के अनुशीलन पर विशेष बल देते हुए कहा कि मैंने वैदिक सभ्यता के सम्बन्ध में विद्यार्थी जीवन में जो कुछ पढ़ा था—उसे मैं विलायत में प्राप्त शिक्षा से ज्यादा महत्व देता हूं।" इस समय इस बात की आवश्यकता है हिन्दू महासभा के नेता विरोधी संगठनों का मुकाबला करने और अपने संगठन को बलवान् तथा व्यापक बनाने के लिये एकेश्वरवाद, वैदिक सभ्यता और हिन्दू-साम्यवाद के आधार पर हिन्दुओं और हिन्दु संस्थाओं को संगठित करें, तभी पंजाब पहले की भांति भारत के हिन्दुओं का रक्षक और सेवक बन सकेगा।

—भीमसेन

— प्रत्येक आर्य समाज को —

आर्य का ग्राहक

बनना चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य समाज बच्छोवाली लाहौर के वार्षिकोत्सव पर

गोल मेज़ कन्फ्रैंस (आर्यसम्मेलन) में

— श्री म० कृष्ण जी का भाषण —

मेरे आर्य भाइयो,

आपकी शिरोमणि सभा के मंत्री महाशय [illegible] मुझे इस सम्मेलन के प्रधान पद का आसन प्रदान किया है। उनकी आज्ञानुसार मैं आप की सेवा में उपस्थित हूं। मैं नहीं जानता कि उन्होंने मुझे इस सम्मेलन के प्रधान के लिये क्यों चुना है। शायद इस लिये कि जिस दोष के प्रतिकार के लिये यह सम्मेलन किया गया है उसका मैं सब से बड़ा अपराधी हूं। सरकारें कभी २ ऐसे मनुष्यों को जिन्हें वह अपने देश की शान्ति के लिये खतरनाक समझती हैं, उनकी जबान बन्द कर देती है। किन्तु मेरी ज़बान तो सरकार अंग्रेज़ी ने पहिले ही बन्द की हुई है। मंत्री महाराज ने यह कष्ट क्यों उठाया। मैं अपनी वाणी द्वारा तो इस समय कोई शरारत नहीं कर सकता। मैं उनका अनुगृहीत हूं कि उन्होंने मुझे एक ऐसे सम्मेलन के प्रधानपद का कार्य सौंपा है जो आर्य समाज की उन्नति के लिये अति उपयोगी और आवश्यक है।

इस सम्मेलन को आर्य सम्मेलन का नाम दिया गया है। किन्तु वास्तव में यह पारिवारिक सम्मेलन है। जिस तरह एक परिवार के सदस्य इकट्ठे होकर अपनी कठिनाइयों का हल सोचते हैं। इसी तरह हम आर्य लोग, आज भाई भाई की तरह यह सोचने के लिये एकत्रित हुए हैं कि आर्य समाज का रोग क्या है और उसका इलाज क्या है? इस किस्म के सम्मेलन अत्यावश्यक हैं और यदि आर्य समाज चाहता है कि उसकी उन्नति लगातार होती रहे और उसमें किसी प्रकार की बाधा न पड़े तो उसे इस प्रकार के सम्मेलन बार बार करने चाहियें। किन्तु इन सम्मेलनों से कुछ लाभ नहीं, जब तक हम दृढ़ संकल्प न कर लें कि इन के निश्चयों के आगे हम अपना सर झुका देंगे और उन्हें सफल बनाने का पूरा यत्न करेंगे। इसके लिये अपने Ego=अहंकार को आर्य समाज के Larger Ego=महत्तर आत्मा पर न्योछावर करना होगा। यदि हम गहरी दृष्टि से देखें तो हम इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि आर्य समाज की बहुत सी आपत्तियों के लिये हमारा Ego= वैयक्तिक अहंकार जिम्मेदार है। हम यह समझ लेते हैं कि जिस परिणाम पर हम पहुंचे हैं, इसके अतिरिक्त और कोई परिणाम नहीं हो सकता। जो सम्मति हमने स्थिर की है उसके अतिरिक्त और कोई सम्मति नहीं हो सकती। यह lack of understanding भ्रान्ति या Want of charity अनुदारता हमारी कठिनाइयों का मूल कारण है। कहने को तो हम अहिंसा के पुजारी हैं किन्तु यह हमने नहीं सोचा कि कोई व्यक्ति वास्तविक अर्थों में अहिंसक नहीं हो सकता जब तक कि उसमें दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णुता न हो। अपने समविचार वालों के साथ यदि हम अच्छी तरह पेश आयें तो उसमें क्या शेखी या क्या हिम्मत है। हिम्मत तो इस बात में है कि अपने से विभिन्न विचारों को सुनें, उनका मनन करें और यदि वह सत्य हों तो उनके मानने में संकोच न करें। अहिंसा के लिये जहां non-violence का शब्द प्रयुक्त किया जाता है वहां वह charity के अर्थों में भी आता है। मेरे विचार में charity के बिना अहिंसा कोई अर्थ नहीं रखती। पक्षी, पशुओं को तो हम अभय दान देने को तैयार हैं किन्तु अपने भाइयों के विचारों को सुनने और उन्हें अपनी सम्मति रखने का वह अधिकार देने को नहीं, जो हम अपना समझते हैं। तो हम अहिंसा के पुजारी नहीं हो सकते। आर्य समाज क्या प्रत्येक समाज में बहुत सी आफतें तो एक दूसरे को न समझने से आती हैं। यदि हम दूसरों को ग़लत न समझें और उनके विषय में अपनी सम्मति बनाने में पूरी सावधानता से काम लें तो इस समय जो झगड़े हमें आर्य समाज में नज़र आ रहे हैं उनमें से बहुत से दूर हो जायं। हमने झगड़ों की जांच की है और देखा है कि उनकी तह में निहायत ही मामूली बातें होती हैं जो थोड़ी सी understanding से दूर हो सकती हैं।

आपको यह बतलाने की ज़रूरत नहीं कि सर्व साधारण के बिना कोई समाज आगे बढ़ नहीं सकता। बढ़ने का क्या सवाल है वह जीवित भी नहीं रह सकता। दूसरे शब्दों में सर्वसाधारण समाज का प्राण हैं। किन्तु उनका दूसरा पहलू भी है और वह बहुत खतरनाक है। सर्वसाधारण आसानी से फुसलाये और बर्गलाये जा सकते हैं। परमात्मा न करे कि समाज के Leaders आपस में लड़ें फिर तो सर्व साधारण की खैर नहीं। इसी लिये परमात्मा से वेद में यह प्रार्थना की गई है कि परमेश्वर हमें देवों के पापों से बचाये। जिस समाज का ब्राह्मण भाग बिगड़ जाय उसका परमात्मा ही रक्षक है। समाज की सलामती के लिये सिर का सलामत होना ज़रूरी है। समाज में हमें एक Vicious Circle नज़र आता है। Leaders आपस में लड़ते हैं, सिद्धान्त का इख्तिलाफ हो तो वैयक्तिक बना लेते हैं और वैयक्तिक इख्तिलाफ हो तो सिद्धान्त को बीच में ले आते हैं। सारांश यह कि सिद्धान्त का वास्ता डाल कर सर्व-साधारण को अपने पीछे लगाते और लड़ाई में घसीट लेते हैं। और जब सर्व साधारण रणक्षेत्र में उतर पड़ते हैं तो फिर वह नेताओं को पीछे हटने आज्ञा नहीं देते। इस लिये यह समस्या उपस्थित जाती है कि समाज में शान्ति लाने के लिये नेता के सम्मेलन की ज़रूरत है या कि सर्व साधारण मुशकिल यह है कि न नेताओं के बिना काम सकता है न सर्वसाधारण के बिना। नेता अग हों तो सर्व साधारण एक ऐसी सेना बन जाती है का कोई सेनापति नहीं। उस अवस्था में अंधेर मच जाती है। सिख इतिहास में इसे हुच्छागर्दी नाम दिया गया है। और सर्व साधारण न हों नेता किस काम के? उनकी बात मानने वाला कोई न हो तो उनका प्रभाव क्या हो? यह प्रश्न विकट है कि आर्य समाज में नेता की कमी है सर्व साधारण की। और इसका उत्तर सरल नहीं यदि उत्तर देना ही हो तो मैं कहूंगा कि आर्य सम में सर्वसाधारण तो हैं किन्तु नेता नहीं। नेता के मैं यह लेता हूं कि जब वह हाथ उठा कर कह दे शान्त हो जाओ तो लड़ने वाले चुप हो जायें यदि कोई पक्ष इस आज्ञा की अवहेलना करे तो नेता का यह प्रभाव हो कि उस के मुँह से एक निकाले बिना प्रजा चुप न होने वाले पक्ष को दंड दे कि समाज की दृष्टि में उसका कोई मूल्य रहे। महात्मा मुन्शीराम के नेतृत्व में आर्यसमाज यह स्थिति थी कि वह जो कुछ भी कह देते आर्य चूँ चराँ बिना उसे स्वीकार कर लेती। अब यह कहा जा सकता कि आर्य समाज का कोई ऐसा है जिस के शब्द को सर्वसाधारण प्रमाण सम इसी लिये जिस समय आर्य समाज के दो मुख्य पुरुषों में मतभेद और और विवाद होता है सर्वसाधारण के लिये यह निश्चय करना कठिन है कि सच्चा कौन है। याद रखिये कि सर्व साध इतना युक्ति को नहीं देखते जितना इस बात कि किस पक्ष की तरफ कौन है। जिस पक्ष की उनका पूज्य व्यक्ति होगा वही पक्ष वह ग्रहण लेंगे। वह केवल यह देखेंगे कि उनका नेता है। नेताओं ने समाजों को बड़े २ संकटों से ब है। उनके दखल देने से कई घरेलू झगड़े मिट हैं। आज आर्य समाज इस बात पर गौरव नहीं सकता कि उस में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी सारा आर्य समाज सुनने और मानने को तैया और जिसे संसार के समक्ष, नेता के रूप में पेश जा सकता है। समाज नेताओं को उठाते हैं तो समाजों को भी उठाते हैं। कांग्रेस ने बेशक गांधी को उठाया है किन्तु गांधी जी भी कांग्रेस को आगे ले गये हैं। गांधी जैसे आप पुरुष तो संस विरले ही होते हैं। किन्तु आर्य समाज के काल में जिन महात्माओं के हाथ में इसका रहा उनका आचार व्यवहार और आत्मत्याग उच्च कोटि का था कि आर्यसमाज उस पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

...रख कर सकता है। आज आर्य समाज की ...था नहीं। आर्य समाज ऋषि दयानन्द का ...कारी है। इस नाते आर्य समाज भी एक ...है। हमारी प्राचीन संस्कृति में संन्यासी का ...न था कि यदि वह दो लड़ती हुई सेनाओं के ...खड़ा हो कर सफेद झण्डी खड़ी कर दे तो ...लड़ना बन्द कर देती थीं। किन्तु आर्य समाज ...लड़ता रहे तो दूसरे को लड़ने से क्या ...?

...कुछ मैंने ऊपर कहा है उस से आप यह न ...कि अब आर्य समाज के लिये कोई आशा ...यदि आर्य समाज में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं ...जो उसका नेतृत्व भार अपने ऊपर ले सके ...ण रहे कि नेता बनाये नहीं जाते वह आप ...। वह खुद पैदा होते हैं उन्हें कोई पैदा नहीं ...तो हम संघ को अपना नेता बना सकते हैं। ...समाज उस संघ का एक Unit है। प्रत्येक ...समाज का प्रधान उस स्थान के आर्यों का ...समझ लिया जाये, प्रांतीय प्रतिनिधि सभा का ...प्रान्त भर के आर्यों का नेता और सार्वदेशिक ...प्रधान भूगोल के आर्यों का नेता समझ लिया ...। यदि हम अपने आचरण से इसके लिये तैयार ...ायें तो नेता की कमी दूर हो सकती है। यह भी ...ण रहे कि हमारे पहिले नेताओं ने आत्म ...र्पण का आदर्श बहुत ऊचा रखा है जिससे ...हम में से कोई उनका स्थान लेने योग्य नहीं ...झा जाता वरना हमारे सामने ऐसे दृष्टान्त हैं कि ...रे समाजों ने साधारण योग्यता के पुरुषों को ...न्ना नेता मान लिया। उसके प्रति वैसा ही व्यवहार ...या जैसा कि नेता के प्रति करना चाहिये। संसार ...उसे नेता मान लिया उसे भी लाभ पहुंचा और ...के समाज को भी। आर्य समाज चाहे तो दूसरों ...मिसाल से सबक ले सकता है। किन्तु यदि बरात ...जना जना ठाकुर हो और प्रत्येक आर्य अपने को ...ता समझे तो आर्यसमाज का काम कैसे चल ...सकता है? मैं विस्तार में जाना नहीं चाहता और ...उसकी आवश्यकता भी नहीं क्योंकि जो कुछ मैं कहना ...चाहता हूं वह सब को मालूम है कि वर्तमान संसार ...का इतिहास हमें यह बताता है कि प्रत्येक देश और ...जाति का कोई न कोई नेता है। नेताओं के ...अधिकार बहुत बढ़ा दिये गये हैं। उन देशों को जाने ...दीजिये जहां dictatorship है। जिन देशों में ...प्रजातन्त्र राज्य है वहां भी नेता सर्व-अधिकारी या ...dictator बन रहे हैं।

भारत का वर्तमान इतिहास भी यही बतलाता है कि प्रत्येक जाति का अपना नेता है। उस नेता की देवता की भान्ति पूजा की जाती है और सारी जाति उस के शब्द को प्रमाण मानती है। ऐसी अवस्था में आर्य समाज स्वयं सोच ले कि उसके नेता के न होने या उसके नेतृत्व के कमज़ोर होने का क्या असर होगा। यह तो है नहीं कि भारत में संघर्ष न हो या कि आर्य समाज पर किसी ओर से आक्रमण न हो रहा हो। आक्रमण हो रहे हैं और पहिले से ज्यादा बल से। क्या कोई ऐसा आर्य है जिसे यह मालूम न हो कि सत्यार्थप्रकाश को ज़ब्त करने का यत्न हो रहा है। मुझे भय नहीं कि सरकार सत्यार्थ प्रकाश को ज़ब्त करेगी किन्तु यदि आर्य समाज को एक बार फिर तप और त्याग की भट्टी में से गुज़रना पड़े तो उसका नेतृत्व किस के हाथ में होगा? कहने की जरूरत नहीं कि फिर एक बार आकाश पर घने बादल छा रहे हैं। कह नहीं सकते कि किस समय फट पड़ें। अकाली और (लीगी) मुसलमान मिल कर आर्य समाज पर हल्ला बोलना चाहते हैं। क्या आर्य समाज उनके मुकाबले के लिये तैयार है। मैं विस्तार में जाना नहीं चाहता क्योंकि मेरी समझ में यह विषय इस सम्मेलन का इतना नहीं जितना कि उस सम्मेलन का है जो खुले पंडाल में हो रहा है। इस सम्मेलन के लिये तो यह प्रश्न है कि यदि आर्य समाज आपस में फटा हो तो क्या वह किसी भी हमले का मुकाबला कर सकता है। मेरी समझ में यह सम्मेलन इस प्रश्न के उत्तर के लिये किया गया है। १९१४ में England और Ireland में घोर संघर्ष हो रहा था। जर्मनी ने समझा कि यह समय है जब कि बर्तानिया पर आक्रमण करना चाहिये। इसी तरह १९४१ में जर्मनी ने रूस पर हमला किया और यह समझ कर किया कि Purge के द्वारा Stalin बहुत से जर्नैलों का सफाया कर चुका है। सेना के दिल पर यह ज़ख्म अभी ताज़ा है। ऐसी अवस्था में रूस पर चढ़ाई की जाये तो सफलता की प्रबल आशा है। यह दुरुस्त है कि जर्मनी के दोनों अन्दाज़े ग़लत निकले। किन्तु हमला भी इस लिये हुआ कि एक बार इंगलिस्तान को और दूसरी बार रूस को कमज़ोर समझा गया। यदि आर्य समाज घरेलू युद्ध के कारण कमज़ोर हो जाये तो कौन उस पर आक्रमण करने में संकोच करेगा। किसी ने दुरुस्त कहा है कि दुर्बल मनुष्य समाज के लिये एक खतरा है। उसकी दुर्बलता को देख कर बलवान् पुरुषों को उस पर हाथ उठाने का साहस होता है। सत्यार्थप्रकाश को प्रकाशित हुए ६०-६१ वर्ष हो गये। इतने लम्बे अरसे के बाद इस सवाल का उठाया जाना क्या इस बात का प्रमाण नहीं कि दूसरे लोग आर्य समाज को कमज़ोर समझते हैं। दुरुस्त कहा गया है कि फूट में मौत है और एकता में जीवन। यदि सत्य है कि Eternal Vigilence is the price of liberty (स्वतन्त्रता का मूल्य सर्वदा चौकस रहना है) तो यह भी सत्य है कि peace is the price of progress (शान्ति से ही उन्नति हो सकती है) struggle अर्थात् संघर्ष हो, किन्तु दूसरों के साथ, अपनों के साथ नहीं। संघर्ष हो किन्तु समाज को बल देने के लिये, उसे कमज़ोर करने के लिये नहीं। घरेलू युद्ध से न आज तक कभी बल मिला है न मिलेगा। घरेलू युद्ध के पश्चात् मनुष्य की वही अवस्था हो जाती है जो नशे के बाद खुमार की। इस लिये मैं अपने आर्य भाईयों से हाथ जोड़ कर बिनती करूंगा कि वे अपने घरेलू झगड़ों को खत्म करें। इसमें ही आर्य समाज की उन्नति और उसके जीवन ...य है। कभी २ मुझे यह ख्याल आता है कि ...जैसे तुच्छ जीव अपनी मन्दमति से उस ... आत्मा के जिस ने अपना तन मन और धन हमारे कल्याण के लिए न्योछावर कर दिया, सब किये कराये पर पानी फेर देंगे। और मैं समझता हूं हम फेर रहे हैं। किन्तु जब मैं निराश होने लगता हूं तो आशा की देवी मुझे अपनी उज्वल छवि दिखा कर खड़ा कर देती है। मेरे भाई मुझसे पूछेंगे कि आर्य समाज का घरेलू युद्ध कैसे बन्द हो। इसके कई ढंग बताये जा सकते हैं किन्तु जब तक मनोवृत्ति न बदले कोई भी ढंग काम न आयेगा।

change of heart and change of angle की ज़रूरत है। इसलिये अपने भाइयों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे तरीकों के झगड़ों में न पड़ कर अपनी मनोवृत्ति यह बनायें कि वे यथा शक्ति आर्य समाज में झगड़े पैदा न होने देंगे। हमारी मनोवृत्ति यह होनी चाहिए कि हम संघ की आज्ञा को शिरोधार्य मानें। प्रान्तीय सभाओं के प्रति आर्य समाजों की वही धारणा होनी चाहिए जो प्रान्तीय समाजों की सार्वदेशिक सभा के प्रति होनी चाहिए। किन्तु मैं जिम्मेदारी केवल एक पक्ष पर नहीं डालना चाहता। प्रान्तीय सभाओं के अधिकारी यदि अपने तईं झगड़ों से परे नहीं रखते तो उनका आर्यसमाजों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसी तरह सार्वदेशिक सभा का प्रान्तीय सभाओं पर कोई प्रभाव न होगा यदि उसके अधिकारी घरेलू झगड़ों में भाग लेते रहेंगे। इसलिये स्थानीय आर्य समाजों के अधिकारियों से ज्यादा प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों की और प्रान्तीय सभा के अधिकारियों से बढ़ कर सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की ज़िम्मेदारी है कि वह पक्षपात और तरफ़दारी अपने पास तक न भटकने दें। जिस भी घरेलू झगड़े आप को नज़र आते हैं इस लिये है कि आर्य समाज के पास ... का कोई विस्तृत प्रोग्राम नहीं। जिस पास काम हो वह लड़ झगड़ कर अपना समय शक्ति नाश करना गवारा नहीं कर सकता। ... लोग तो अपना समय तो नष्ट करते ही हैं ... दूसरों का भी करते हैं। यदि किसी समाज का ... काम में लगा हुआ हो तो बेकार लोगों की बातों में उलझना उसे अभीष्ट न होगा। इसलिये यह देखने की ज़रूरत है कि घरेलू युद्ध हो वहां

[शेष पृष्ठ २ पर]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ईश्वर-भक्ति

[शेष पृष्ठ १ का]

खून-पसीना एक किया, किन्तु फल कोई न मिला। 'भैया, तुम तो प्रतिष्ठा-पूर्वक परीक्षा में सफल हुए हो न?' 'किन्तु उस से क्या? कार्य्य तो कोई नहीं मिला'। [आज कल की शिक्षा तो सचमुच बेकारी की बड़ी मशीन है, कई युवाओं ने [illegible] था। मिलने के कारण प्राण दे दिये और दे देते [illegible] के लिये। हमारा चरितनायक सौभाग्यशाली है। उसे काम मिल गया है। अब दिन रात पैसा कमाता है, दिन रात धन की धुन है। न्याय, अन्याय, धर्म्म अधर्म्म, पुण्य पाप किसी का विचार नहीं। चिन्ता है तो केवल धनागम की। ऊपर की आमदनी की एक नयी शाखा भी उस ने खोज निकाली है। कुछ काल के पीछे वह फिर चिन्तातुर दीखता है। अब के उसे एक विचित्र चिन्ता ने घेरा है। हमें उस का अनुभव नहीं है और सर्व-हितकारी मंगलकारी भगवान् से अत्यन्त विनम्र भाव से प्रार्थना है कि इस चिन्ता का कभी अवसर न दे। अब वह पेचदार शैली से बात करता है। अपने मन के भावों को स्पष्ट करने की भावना से अस्पष्ट भाषा का प्रयोग करता है। घुमा फिरा कर कहता है Comrade of life=जीवसंगी चाहिये, धर्म्मपत्नी चाहिये, अकेले जी घबराता है। चलो हम उसे यह नहीं कहते कि किसी विश्रामशाला में जा रहो, वहां तीन दिन से अधिक ठहरने की इच्छा वाले को अनेकों की चिरौरी करना पड़ती है। जाने दो, इस बात को कि जीवनसंगी से नाता अब चहें टूट सकता है। और धर्म्मपत्नी सदा संग रह कर अधर्म्म से, पतन से बचाकर धर्म्मपथ पर लाने का पुरुषार्थ करती रहती है। इस जीवन गाथा—कथन काल में उसकी विवेचना से विशेष लाभ नहीं है।

हमारा चरितनायक भाग्यविधायक ही है। उसे रमनीया कान्ता मिल गयी है। पशु की भांति दिन भर कमाता है, और अपनी कमाई श्रीमती के चरणों में अर्पण कर देता है। ऐसा करते हुए उसे जो आनन्द आता है, उसे वही जान पाता है। केवल अर्पण ही नहीं करता, आवश्यकता पड़ने पर मांगता भी उसी से है और इसमें उसे अपमान या अप्रतिष्ठा की प्रतीति नहीं होती। स्त्री जाति का इतना मान, इतना गौरव और कहां है। पुरुष कमाकर लाता है और सब कुछ गृहिणी की मालकिन के हवाले कर देता है। हमारा चरितनायक दिन भर कार्य्यभार से क्लान्त भ्रान्त होकर घर आता है। पत्नी का मुख-चन्द्र देखकर सब थकान को भूल जाता है। यद्यपि वह योषा-शिष्य नहीं है किन्तु माता से यह अधिक प्यारी लगती है। कोई मूढ़ अज्ञानी कृतघ्न [जो योषा-शिष्य=स्त्री ले होते हैं] अपनी अर्धांगिनी की प्रसन्नता प्राप्ति के लिये माता का तिरस्कार आदि भी कर लेते हैं। हाय, हम कहां से कहां आ पहुंचे। सुख की तलाश में माता की गोद से हट कर पत्नी के उत्पात सहने लगे हैं।

माता पिता को भुलवा देने वाली पत्नी या जीवन-संगिनी का संग होने पर भी हमारा चरितनायक हमें फिर एक बार तंग दीखता है। हम ने अपने एक मिलने वाले सज्जन की इस दयनीय दशा को अत्यन्त समीप से देखा है। वे एक करोड़पति सज्जन थे। एक दिन कहने लगे, 'स्वामी जी! घर में अन्धकार है, मैंने कहा, श्रीमान् जी, आपका बिजली का अपना निज का प्रबन्ध है। इधर उधर की बातें करके कहने लगे, स्वामी जी, 'जिगर का टुकड़ा' चाहता हूं। श्रीमान् जी! इससे मृत्यु का भय है। इस पर कहा—इतनी धन संपत्ति है, इसका भोग कौन करेगा। हमने कहा—हमें दे दीजिये, सायंकाल से पूर्व वरन् एक घंटा के भीतर यह बिखर जायेगी। नहीं स्वामी जी! पुत्र चाहिये, पुत्र!

हमारे चरितनायक पर भाग्य कृपालु है। फिर उसकी कामना पूरी कर देता है। पुत्र रत्न से उसकी अंधियारी कुटिया उजियारी हो उठी है। अब पति-पत्नी का मन मुटाव नहीं रहा। अब दोनों की प्रीति बहुत बढ़ गई है। दोनों बालक पर प्यार करते हैं, कदाचित् अपने पर प्यार करते हैं, क्योंकि बालक तो बहुत बार इनके प्यार को प्रहार, मार समझ कर रो देता है किन्तु यह अपने प्रेमोन्माद में उन्मत्त उसकी असुविधा की चिन्ता करते हुए अपना प्रेम उस पर उंडेले जाते हैं।

विचारिये, अपने बालपन को, कहां से कहां आ पहुंचे। मां की गोद छोड़ी, खिलौने छोड़े, छोड़ा सब कुछ। आ अटके पुत्र पर।

हम ने एक बार एक दृश्य देखा, और दंग रह गये। एक मनुष्य ने एक बड़ा मकान बनाया। उसमें उसका एक पुत्र लेटा लेटा सिगरेट पी रहा था, पीते पीते उसे ऊब आ गई। सिगरेट उसके हाथ से गिर गया। पास पड़ी रुई ने उसे अपना लिया। रुई सुफ़ेद थी, किन्तु लाल हो गई, तेज पूर्ण हो उठी, अपना तेज उस मकान को दे डाला। लोगों ने गृहस्वामी को सूचित किया। वह आकर विलाप करने लगा। मकान को न रोता था। रोता था अपने पुत्र को। कह रहा था। संपूर्ण संपत्ति उसे दे दूंगा, अपनी कमाई का प्रधान भाग भी दे दिया करूंगा, जो मेरे इस पुत्र को सुरक्षित जीवित निकाल लाये। उसके विलाप में करुणा थी, वेदना था, तड़प थी, जो दूसरों को तड़पाये डालती थी, रुलाये जाती थी, दिलों को हिलाये जाती थी। हमारा बालकमन भी मचला। किन्तु अगले क्षण हमारे अबोध मन को वह रोदन पाखण्ड भासने लगा। हमारे मन ने कहा, यह स्वयं क्यों नहीं आग में घुसता? क्यों अपनी संपत्ति देकर कंगाल बनने की तय्यारी करना चाहता है। मन ने कहा—इसे अपने मरने का भय है, पुत्र इसे अपने लिये प्यारा है। यह यदि न रहे, तो इसकी बला से इसका पुत्र [illegible] रहे। उपनिषत् में ठीक ही कहा है—प्रेयान् प्रेयान् वित्तात्=अपना आपा पुत्र से प्यारा है, प्यारा है। तभी तो पुत्र को आग से घिरा संपत्ति खो देने को तो तय्यार है किन्तु स्वयं [illegible] नहीं कूदता। उसे निश्चय है, आप मरे जगत् प्रल

समस्त संसार के पदार्थ छक कर अपने आ आ गये। इसके सामने सब हेय हैं, किन्तु अभी अपना आप शरीर ही है। तनिक आगे चलिये, रोगी रोग की पीड़ा से बेचैन है, व्याकुल है। ए रगड़ रहा है छटपटा रहा है और चिल्ला कर क है, प्रभो! प्राण को निकाल, इस शरीर से छु क्यों, क्या हुआ, जिस शरीर के लिये न्याय-अन्य का विचार कभी न किया था, जिस शरीर की पा के लिये नाना उपद्रव किये, आज उस से तंग क्यों गये। प्रातः से लेकर दूसरी प्रातः तक की दिन च पर तनिक दृष्टिपात कीजिये। चौबीसों घंटे शरीर पूजा अर्चा में लगते हैं। हम सोते हैं तो शरीर सुख के लिये। नहाना, खाना, व्यायाम, मालिश, भ्र आदि आदि सब कार्य शरीर की सेवा के लिये हैं किन्तु अब ऐसी अवस्था आ गई है कि शरीर दू हो गया है। आ !!! यह भी दशा देखनी थी। बताओ कौन है, जो इस शरीर को छोड़ना चाह रहा है। स ही वह शरीर से भिन्न है। वेद शास्त्र तथा सन्त उसे जीव, आत्मा, प्रत्यगात्मा आदि नाम देते हैं।

यदि सुख आत्मा में होता, तो आत्मा बाहर पदार्थों में क्यों भटकता। बाहर के किसी पदार्थ सुख होता, तो उसे पकड़ कर फिर न छोड़ता। [प्र से यह बतला देते हैं कि योगदर्शन में सुख खोज इस यात्रा को भोग कहते हैं]

इस चरितचर्चा से प्रतीत होता है कि सुख बा के पदार्थों में नहीं है, सुख भीतर है। आत्मा के प है नहीं। होता, तो यह उसकी खोज में क्यों भटक सुख-अनुसन्धान में भटकना बतलाता है कि इसके पास नहीं, किन्तु सुख है अवश्य कहीं। जहां है, वह परमात्मा है।

उस सुख पाने के लिये परमात्मा का संग क होगा। परमात्मा के संग करने को भक्ति कहते संग कैसे करें—सुनिये—

कथो नु परिचरासि विद्वान्
वीर्या मघवन् या चकर्थ
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ
प्रेष्ठं ता ते विदथेषु ब्रवाम॥

प्रभो! मैं कैसे आप की सेवा-पूजा-परिच करूं? भगवन् तू महाबली है, तूने बड़े बड़े किये हैं, और नित्य नये नये करता रहता है। ज्ञान यज्ञों में तेरी गुणगाथा गाया करें।

[शेष पृष्ठ २ पर]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[illegible] विश्वनाथ एम. ए. प्रिण्टर तथा पब्लिशर द्वारा 'आर्य' प्रेस लिमिटेड १७, मोहनलालरोड लाहौर से मुद्रित होकर गुरुदत्त भवन लाहौर से प्रकाशित हुआ।

सम्पादक भीमसेन विद्यालङ्कार

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Regd L. N. 5004.

प्रत्येक आर्य को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिये इसका ग्राहक बनाना चाहिए

आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्य साप्ताहिक पत्र

...ामी श्रद्धानन्द का रोमांचकारी बलिदान

तुभ्यं बलिहृतः स्याम

२५ दिसम्बर १९४४ का दिन भारतवर्ष में ...नन्द बलिदान पर्व के रूप में मनाया जायगा। ...परिस्थितियों और अवस्थाओं में यह बलिदान ...था, उन्होंने इस बलिदान को, स्वामी श्रद्धानन्द ...हान्त को, मनुष्य जाति के लिये रोमांचकारी बना ...। उनके देहान्त का समाचार २४ घंटों में बिजली ...चमक की गति से एशिया से अमरीका तक ...चा। जिसने सुना—उसी ने स्तम्भित होकर—इस ...चार को सुना। यद्यपि स्वामी श्रद्धानन्द के चेहरे ...बुढ़ापे के चिह्न प्रकट हो चुके थे—शरीर अनेक ...ों का शिकार हो चुका था फिर भी उनकी आंखों ...चमकती-दमकती आत्मिक ज्योति को देख कर ...यह नहीं कह सकता था कि वह देह छोड़ने की ...री कर चुके हैं। लाहौर आर्य समाज वच्छोवाली ...र्षिकोत्सव पर अन्तिम व्याख्यान देकर "देने ...ले का भला हो, न देने वाले का भला हो" अलख ...ा कर दिल्ली के लिये विदा हुए थे।

...वहां जाकर बीमार हो गये। रोग शय्या पर एक ...ाह के लगभग लेटे रहे। २३ दिसम्बर को एक ...राह मुसलमान पिस्तौल छिपाए—स्वामी जी के ...ान पर आया—पाप की गर्मी उसे सता रही थी ...की जीभ सूख रही थी—वह स्वामी जी के कमरे ...गया। पीने को पानी मांगा। नौकर पानी लेने गया। ...ने वार कर दिया। पानी के स्थान पर स्वामी ...द्धानन्द के रक्त से अपनी प्यास को बुझाना चाहा। ...ती पर गोलियां लगीं। खून की धारा बह निकली। ...र मच गया। कातिल ने भाग निकलने की कोशिश ...की—परन्तु खून का दरिया भाग नहीं सकता, पकड़ा ...। कचहरियों में पेश हुआ—गुमराह करने वालों ...कई तरीकों से उसे बचाना चाहा—स्वामी जी तथा ...के निकटवर्ती भक्तों तथा सम्बन्धियों ने आचार्य ...नन्द की परम्परा का अनुकरण करते हुए उसे ...ा देने का भी संकल्प किया—परन्तु ऐसे कातिलों ...कोई नहीं बचा सकता। आचार्य दयानन्द का ...तिल जगन्नाथ भाग भी गया—मनुष्य के हाथ के, ...परन्तु हृदय की शूली पर ...दंड से ...

लग। लाचार वह स्वयं लौट कर आया और अन्तरात्मा और पश्चात्ताप की आग में झुलस कर जीता हुआ ही मर गया।

स्वामी श्रद्धानन्द का कातिल अब्दुल रशीद भी पागल होगया। दिमाग फिर गया। शहीद बनने गया था परन्तु त्यागी सन्यासी की हत्या ने उसके पशु हृदय में भी अन्तस्ताप और पश्चात्ताप पैदा कर दिया। अब्दुल रशीद भी मौत के घाट उतारा गया। राजदंड ने अपना कर्त्तव्य पालन किया। गुमराह को दण्ड दिया परन्तु उस मूर्ख को गुमराह करने वालों को कोई दंड न मिल सका। परमात्मा के दरबार में—उसके अटल नियम आज उनके हृदयों में भी अनुताप की ज्वाला को प्रदीप्त कर रहे होंगे। इस प्रकार के बलिदान—आत्म शुद्धि के साथ २ दूसरों के हृदयों को भी शुद्ध करते हैं। राजदण्ड, सांसारिक दण्ड शरीर और मन को सन्मार्ग पर लाने का साधन होता है परन्तु आत्मा को सन्मार्ग पर लाने वाले ऐसे बलिदान होते हैं।

परन्तु प्रश्न यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द के उस बलिदान का हम लोगों पर क्या असर है? स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को हुए आज कई वर्ष बीत गये हैं। हमने उनके बलिदान से क्या कोई शिक्षा ली है।

आज हमें इस पर विचार करना चाहिए। इसके लिये हमें उनके जीवन की घटनाओं पर दृष्टिपात कर उनकी विशेषताओं को अपने सामने रखना चाहिए।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में हम ... चते हैं कि इन्होंने जीवन के अन्तिम ... से नए आन्दोलन चल ने, नए से ... ने में संकोच नहीं किया। यह कभी ... में जीवन की सांझ है अतः जीवन भर ... का उपसंहार करूंपरन्तु वह तो नए कार्यों ... नए आन्दोलनों का प्रारम्भ अनुपम उत्साह तथा नई उमंगों से करते थे। इस मनोवृत्ति का मूल कारण यह था कि वह आत्मा को अमर और पुनर्जन्म में आने वाला मानते थे। पूर्वजन्म, इस जन्म, और आने वाले जन्म को वह पृथक २ नहीं समझते थे—वह अनुभव करते थे-यह सब सिलसिला एक है, आत्मा निरन्तर गति कर रहा है। जहां आज खड़े हैं अगले जन्म में उसके आगे चलना है। वह सूर्य भगवान की भांति प्रतिदिन नए उत्साह से काम करते थे। रात के अंधकार को दूर कर नए उत्साह से चलते थे। हमारी मनोवृत्ति अधिकांश की मनोवृत्ति इससे विपरीत होती है। वह जीवन की सांझ में ५०—६० की आयु पर अपने पिछले हिसाबों को संभाने में जुट जाते हैं। नया कार्य, नया आन्दोलन शुरु करने में घबराते हैं। इस से जीवनकी भाग-दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

व्यक्तियाँ और राष्ट्र भी इसी प्रकार से जीवन व्यतीत करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने जीवन द्वारा इस दिशा में इस विशेषता को अपनाने का संकेत किया है-परन्तु इस विशेषता को, इस गुण को धारण करने के लिये त्याग की आवश्यकता है धन, ऐश्वर्य सम्पति के त्याग की नहीं—वह तो स्वयं समय पर छुट जाता है—इसके लिये मन के पूर्वग्रह (Prechuyice) को छोड़ने की आवश्यकता है। अपने पूर्व संस्कारों—तथा पक्षपातों को सत्य की वेदि पर त्याग करने में संकोच न होना चाहिए सत्य सूर्य की रश्मियों का हर समय स्वागत करने के लिये तैयार होना चाहिए तभी हम पुराने पूर्वग्रह के अन्धकार को दूर कर सकते हैं। व्यक्तियों पक्षपात स्थान देश के पक्षपात—मनुष्य को ... को जाल में जकड़ना चाहते हैं—

महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य ऋषि दयानन्द, लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द ने इन बन्धनों का किया और परमात्मा के दर्शन किये। आज हमारे ... में महात्मा गांधी इसी बलिदान पथ पर चलकर अप... आत्मा की सचाई की वेदी पर प्रज्वलित—त्याग यज्ञ अर्पित कर रहे हैं। परमात्मा हमें भी इनका अनु...

आर्य के ग्राहकों को आवश्यक सूचना

इन दिनों सरकारी आज्ञा के कारण बिजली द्वारा चलाए जाने वाले छापाखानों में बिजली का प्रयोग बन्द कर दिया गया था। इसलिये प्रैस बिजली के स्थान पर मज़दूरों द्वारा चलाए जा रहे हैं इसी लिए पृष्ठ संख्या कम हो गई है। यह भी हो सकता है कि अगला अंक शायद प्रकाशित न हो सके। हमारी कोशिश तो यह है कि किसी न किसी तरह आर्य ग्राहकों के पास पहुंचता रहे यदि न पहुंचे तो यहीं समझें कि बिजली की कमी के कारण प्रैस पूरा काम नहीं करते इसलिये पत्र नहीं निकला। अब केवल रात को १० बजे से प्रातः ४ बजे तक बिजली से प्रैस चल सकने की आज्ञा मिली है। मैंने ज़र आर्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज आर्य्य समाज के एक नेता थे। उनके नाम और काम से आर्य्य जनता भली प्रकार परिचित है। आप अ[illegible] भर आर्य्य समाज के काम के लिये सोना ऊपर [illegible] तथा आर्य्य समाज के लिये ऐसे २ महा[illegible] गये जिन्होंने आर्य्य समाज के नाम को चार चान्द लगा दिये। यहां तक कि अपने प्राणों तक की आहुति आर्य्य समाज के लिये दे दी। इस महान व्यक्ति का बलिदान देहली नगर में ६ पौष के दिन हुआ था। यह तिथि इस वर्ष २४-१२-४३ शुक्रवार को है। आर्य्य समाजों को चाहिये कि उनके बलिदान दिवस को समारोह से मनावें। सार्वजनिक सभाएं की जावें जिन में उनके जीवन तथा काम गुरुकुल, दलितोद्धार, शुद्धि इत्यादि पर व्याख्यान कराए जावें। शुद्धि निधि के लिये अपील की जावे। और जो धन जमा हो वह तुरन्त आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन लाहौर को भेज दिया जावे।

मंत्री—
आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर

आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब की ओर से

बंगाल में मैडीकल रिलीफ़ कमेटी का कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन लाहौर ने बंगाल में भूख से पीड़तों की सहायता के कार्य के अतिरिक्त वहां मैडीकल रिलीफ का कार्य्य भी जारी कर दिया है। सारे इलाका में मलेरिया बड़े ज़ोर से फैल रहा है इसके अतिरिक्त बंगाल से जो ५१ लावारिस अनाथ बच्चे लाकर पंजाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में रखे गये हैं उनके मार्गव्यय बिस्तर, गरम वस्त्रों आदि के लिये सभाने दो हज़ार पांच सौ रुपया पंजाब केन्द्रीय अनाथालय को दिया है। बंगाल में मैडीकल रिलीफ़ व अन्य सहायता के कार्य्य को जारी रखने के लिये इस सभा को धन शीघ्र भेज कर पुण्य के भागी बनें।

भीमसेन
मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब
गुरुदत्त भवन, लाहौर

आर्य समाज बच्छोवाली के उत्सव पर आर्य-वीर-दल का प्रशंसनीय कार्य

(१) इस बार आर्य समाज बच्छोवाली के वार्षिकोत्सव की एक बड़ी भारी विशेषता यह थी कि इस में पंजाब आर्य वीर दल ने विशेष भाग लिया।

(२) ध्वज-आरोहण आर्य वीरों ने ध्वज गीत [illegible] त करना था।

(३) तत्पश्चात् जलूस नें एक बड़ी भारी भजन-एडली के रूप में आर्य वीर दल सम्मिलित हुआ। [illegible]र्य वीरों ने बड़े सुन्दर २ गानों से जनता को [illegible]नन्दित किया तथा जलूस की शोभा को बढ़ाया।

(४) जलूस का संचालन प्रबन्ध आर्य वीर दल [illegible]

आर्य जगत

(५) समाज के जलसे का कुल प्रबन्ध तथा रक्षा कार्य श्री. ला. तीर्थराम जी के निरीक्षण में आर्य वीर दल के हाथों में था।

(६) रविवार के दिन मध्यान्ह पश्चात् आर्य-वीर दल की एक महान् रेली हुई। सारी आर्य जनता ने आर्य वीर दल की महत्ता को अनुभव किया। यह भी महसूस किया कि आर्य समाज के लिए आर्य वीर दल अत्यन्त उपयोगी तथा अनिवार्य वस्तु है।

—आर्य युवक समाज साहोवाला जिला स्यालकोट का वार्षिक चुनाव इस सप्ताह को आर्य समाज मिन्दर में हुआ जिस में प्रधान म० मनोहर लाल जी उपप्रधान म० अमर नाथ बजाज़ मन्त्री म० सतीशचन्द्र जी उपमन्त्री म० प्यारे लाल जी बजाज़ खजानची म० अमृतलाल प्रापेगंडा मन्त्री म० जनक राज जी हुए। और इसी सप्ताह में म० राजेन्द्र पाल की कोशिशों से आर्य वीरदल स्थापित हुआ। और प्रति दिन सत्संग और वीर दल लगता है। मन्त्री आर्य युवक समाज

आर्यसमाज चक झुमरा का चुनाव

प्रधान—श्रीमान बा० मुलखराज जी। उप प्रधान—बा० कृष्ण चन्द जी। मन्त्री म० खुशहाल चन्द जी। उपमन्त्री ला० दीवानचन्द जी। खज़ांची म० पृथ्वी-राज जी।

अन्तरंग सभा के सभासद

म० बूड़ी राम जी। म० मय्यादास जी। म० दयालचन्द जी। म० रलाराम जी। म० हंसराज जी वैद्य। डा० महाराजकृष्ण जी।

आर्यसमाज गुरुकुल विभाग झेलम

(१) स्वर्गीय आचार्य रामदेव स्मारक दिवस बहुत उत्साह से मनाया गया। पूज्य आचार्य राम-देव जी गुरुकुल धाम झेलम, मेलाराम जी हैडमा-स्टर डी. ए. वी हाई स्कूल झेलम, शास्त्री भूदेव जी, व राजा रामसिंह जी मन्त्री के भाषण हुए जिनमें उन्होंने पूज्य आचार्य जी की जीवनी पर प्रकाश डाला। गुरुकुल धाम झेलम के आचार्य जी ने विशेष रूप से आचार्य रामदेव जी के जीवन पर बहुत प्रभाव-शाली प्रकाश डाला। उपस्थिति बहुत अच्छी थी।

(२) सर्व सम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ। आर्य समाज का यह अधिवेशन मंगलदास जो जो आ० स० गुरुकुल विभाग के बड़े उत्साही कार्य करते थे और जिनको आर्य समाज के लिये बहुत प्रेम है को उनकी तरक्की पर बधाई देता है। इसमें कोई शक नहीं कि उनकी रावलपिंडी तबदीली से हमें बहुत हानि हुई है लेकन उनकी वृद्धि होने की खुशी है। प्रभु उनको सुखी रखे ताकि वह आर्य समाज की अधिक सेवा कर सकें

राजाराम सिंह मन्त्री

श्रीयुत जयदेवजी आयुर्वेदालंकार स्वर्गवास

११ दिसम्बर १९४३ को सायंकाल ६ व[illegible] पं० जयदेव जी आयुर्वेदालङ्कार लम्बी बीमारी [illegible] इस लोक से चल बसे श्री पं० जयदेव जी [illegible] वेदालङ्कार गुरुकुल के योग्य स्नातकों में से थे। [illegible] वेद शास्त्र के आप विशेष पण्डित थे। वैद्य म[illegible] में आपकी विद्वत्ता का विशेष मान था। लाहौ[illegible] प्रसिद्ध बंगाली वैद्य मित्रा जी के आप प्रमुख [illegible] थे। आपके देहान्त से पंजाब में एक योग्य [illegible] वैद्य की भारी कमी हुई है। आपके पिता ज[illegible] मलिक इन्द्रमान जी तथा उनकी धर्मपत्नी [illegible] सम्बन्धियों को इस असामयिक मृत्यु से जो [illegible] हुआ है उसमें आर्य जगत् हार्दिक वेदना तथा स[illegible] भूति प्रकट करता है। परमात्मा उन्हें सद्गति दें [illegible] दुःखित सम्बन्धियों को शान्ति प्रदान करें।

आर्यसमाज जड़ांवाला का वार्षिकोत्सव

१९, २०, २१ नवम्बर को बड़ी धूम धाम [illegible] सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

सामवेदीय यज्ञ—उत्सव से १२ दिन पूर्व आ[illegible] हुआ। प्रत्येक दिन का यजमान सपत्नीक अलग २ [illegible] व्रतों का पालन सबने किया। यजमानों के अति[illegible] दूसरे स्त्री पुरुषों ने भी प्रचुर संख्या में इस य[illegible] भाग लिया। पं० विश्वनाथ जी यज्ञ के पश्चात् सा[illegible] की कथा करते रहे।

श्री महात्मा चिरञ्जीव लाल वानप्रस्थी जी [illegible] कथा १५ से २१ नवम्बर तक छांदोग्य उपनिष[illegible] हुई जिसमें आर्य स्त्री पुरुषों के अतिरिक्त न[illegible] विशिष्ट पुरुष भाग लेते रहे। कथा क्या थी श्रोत[illegible] पुण्यामृत का पान करते हुए अपने आत्माओं[illegible] तृप्त कर रहे थे।

पूज्यपाद स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ के व्याख[illegible] से उनकी विद्वत्ता की धाक बैठ गई और लोग [illegible] करने लगे कि आर्य समाज के पास भी ऐसे [illegible] कोटि के विद्वान, त्यागी, महात्मा हैं।

सत्यार्थ प्रकाश महत्व कांफ्रेंस में जो व[illegible] हुई उन्होंने लोगों के हृदय में सत्यार्थ प्रकाश [illegible] गौरव बढ़ा दिया। रात्रि को स्वामी जी ने सत्यार्थ [illegible] पर प्रभावशाली व्याख्यान भी दिया।

पं० क्षितीशकुमार तथा स्व० केवलानंद जी [illegible] राज के भी प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

पं० देशराज जी व पं० भद्रपाल जी भ[illegible] देशकों ने लोगों के हृदयों को आकर्षित कर [illegible] पं० रामनाथ जी व पं० चमनलाल जी के [illegible] उत्तम भजन हुए। उत्सव पर लगभग २ सहस्र [illegible] एकत्र हो गया जिसमें से साढ़े तीन सौ रुपया स[illegible] भिन्न २ निधियों के लिये दे दिया गया। इस उत्[illegible] सफलता की चर्चा जड़ांवाला में प्रत्येक की [illegible] हो रही है इसके लिये सभा का अति धन्यवाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

गुरुकुल की शानदार विजय

देहरादून वाक् प्रति योगिता

गत १४ नवम्बर को देहरादून में होने वाले वाक् में गुरुकुल विश्व विद्यालय के दो प्रतिनिधि श्री ब्र० देवा तथा ब्र सत्यप्रकाश सम्मिलित हुए थे। इस प्रतियोगिता में अनेक शिक्षा संस्थाओं एवं कालिजों ने भाग लिया जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी भाषण कला में उत्कृष्ट माने गए और इन्हें सर्व सम्मति से निर्णायकों ने रजत-राजहंस 'रमाहंस चल विजयोपहार' से सम्मानित व पुरस्कृत किया। इसके अतिरिक्त और अन्य पुरस्कार भी मिले। गुरुकुल पहुंचने पर गुरुकुलीय-वाद्य-दल ने बैण्ड बाजे तथा पुष्पमालाओं के साथ दोनों प्रतिनिधियों का स्वागत किया। समस्त कुलवासियों की सभा में विजयी बन्धुओं को बधाइयां दी गईं।

आचार्य रामदेव दिवस

गत ६ दिसम्बर को गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी आचार्य रामदेव मृत्यु-दिवस बड़ी तैयारी के साथ मनाया गया। समस्त कुलवासियों की एक विशाल सभा विद्यालय के सभाभवन में हुई जिस में विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारियों, उपाध्यायों तथा अन्य अनेक सज्जनों ने ओजस्विनी वाणी में स्वर्गीय आचार्य जी की गुण गरिमा का कीर्तन किया। सब वक्ताओं ने प्रो० रामदेव जी की सादगी, उच्च विचार-शीलता, अगाध-विद्वत्ता, स्वाध्याय प्रियता के साथ-साथ आर्यसमाज एवं गुरुकुल प्रणाली के प्रति उनकी लगन और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों में दृढ़ आस्था को विविध दृष्टान्तों के साथ बताया। ब्र० सहदेव, प्रो० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति, पं० विष्णुमित्र जी, तथा सभापति श्री पं० ब्रह्मदत्त जी आचार्य के भाषण विशेष भावपूर्ण, मार्मिक तथा सारगर्भित हुए।

आयुर्वेद-परिषद् का जन्मोत्सव

गत १२ दिसम्बर रविवार के दिन गुरुकुलीय आयुर्वेद परिषद् का जन्मोत्सव अपूर्व समारोह के साथ मनाया गया। सभापति का आसन आयुर्वेद विद्यालय के प्रिंसिपल श्री रामदास जी पाठक ने ग्रहण किया। इस सभा में डा० बालकृष्ण पाण्डुरंगी ने एम. डी. (बर्लिन) आदि विद्वज्जन निमन्त्रित होकर पधारे हुए थे। निबन्ध प्रतियोगिता में नगर के अतिरिक्त अन्य बाहर के आयुर्वेद के विद्यालयों एवं कालेजों के छात्रों ने भी सोत्साह भाग लिया। प्रथम पारितोषिक ३५) श्री रघुनन्दन, द्वितीय २५) ब्र० नरेन्द्र, तृतीय १०) ब्र० जगदीश को दिया गया। आयुर्वेद परिषद् का यह जन्मोत्सव सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

वाद-विवाद-प्रतियोगिता

दिसम्बर को

गुरुकुल समाचार

"निर्दोष द्रव्य है अथवा शक्ति" विषय पर गहरी प्रति द्वन्द्विता के साथ गुरुकुलीय वेद-मन्दिर में वाद-विवाद हुआ। मुख्य सभापति का आसन श्री गणेश दत्त जी सारस्वत ने ग्रहण किया। लगभग एक दर्जन वक्ताओं ने इस वाक्-संघर्ष में भाग लिया। जिनमें देहली तथा ऋषिकुल आयुर्वैदिक कालेज हरद्वार आदि संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित हुए थे। यद्यपि गुरुकुल के ब्रह्मचारी इस वाक्-प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ समझे गए तथापि विजयोपहार की ख्याति को बढ़ाने के लिये "अखिल भारतीय श्रद्धानन्द-चल विजयोपहार" ऋषिकुल आयुर्वैदिक कालिज को प्रदान किया गया।

कन्या गुरुकुल समाचार

कन्या गुरुकुल देहरादून का वार्षिकोत्सव बड़े दिन की छुट्टियों में ता० ३० दिसम्बर से २ जनवरी तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। श्रीमान् पं०सोमदत्त जी मुख्याधिष्ठाता धन एकत्रित करने के लिये पंजाब में दौरा कर रहे हैं। संरक्षक महोदयों की सेवा में भी पत्र प्रेषित किये जा रहे हैं कि वे कन्या गुरुकुल के लिये कम से कम २००, अपने पास से तथा अपने सम्बंधियों एवं इष्ट मित्रों से भेजने की कृपा करें ताकि उत्सव सफल हो सके। गुरुकुल की स्नातिकाओं को भी प्रेरणा की गई है कि वे कम से कम एक कमरा विद्यालय भवन में स्वर्गीय कुल-पिता आचार्य रामदेव जी की स्मृति में बनवायें। दीक्षान्त संस्कार ता० ३१ दिसम्बर को होगा और दीक्षान्त भाषण के लिये श्रीमती सर महाराज सिंह जी की सेवा में भी निमंत्रण पत्र भेजा जा चुका है। सभा के अधिकारियों की सेवा में भी पधारने के लिये निमंत्रण पत्र जा चुके हैं। आशा है कि वे पधारने की सब कृपा करेंगे। श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी, श्री पं० धर्मेन्द्रनाथ जी तर्क शिरोमणि, श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार तथा श्रीमान पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी की सेवा में निमंत्रण पत्र प्रेषित किये जा चुके हैं किन्तु अभी स्वीकृति नहीं मिली है। श्री बिडला जी, श्रीमान् म० कृष्णाजी तथा श्रीमान् बा० गंगा प्रसाद जी रिटायर्ड जज टेहरी स्टेट की सेवा में भी निमंत्रण पत्र भेजे जा चुके हैं।

कन्या गुरुकुल में ब्र० विद्योत्तमा गौंडा को काली खांसी हो गई थी किंतु अब ठीक है। ब्र० सीता पचमढ़ी और लज्जा बगदाद के खुजली हो गई थी अब वे स्वस्थ हैं। ब्र० चंचला डोईवाला को २१।११४३ से मलेरिया के कारण बुखार हो गया था, आज प्रातः ६८.४ टेम्प्रेचर हैं। ब्र० विजय होशियारपुर की आंखें ता० १८।११।४३ से दुखने आगई हैं, चिकित्सा ठीक हो रही है।

की छमाही परीक्षा ता० २२।१२।४३ से आरम्भ हैं कन्याओं का स्वास्थ्य उत्तम हैं। जिस संरक्षक महाशय ने शुल्क लेखा साफ नहीं किया वे वी. पी. शीघ्र छुड़ा लें और जिनको शुल्क संम्बधी वी. पी. नहीं गई और के[illegible]नायें शुल्क लेखा साफ करने को भेजी हैं वे तुरन्त भेज दें ताकि कन्याओं का छमाही परीक्षा का परिणाम शीघ्र भेजा जा सके। शुल्क लेखा साफ न होने की अवस्था में कन्याओं का परीक्षा परिणाम रोका भी जासकेगा। आचार्य

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

ऋतु सुहावनी है। सर्दी भी अच्छी पड़ने लगी है। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। चिकित्सालय में २—३ साधारण जुकाम खांसी वा ज्वर के रोगियों के अतिरिक्त अन्य कोई खास रोगी नहीं है।

पढ़ाई नियम-पूर्वक जोरों से चल रही है। ६ मार्च से वार्षिक परीक्षाएं आरम्भ हो जाएंगी। अतः सब ब्रह्मचारी तथा अध्यापक महोदय अपनी पढ़ाई पूरी करने तथा कराने में संलग्न हैं।

इस वर्ष गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव ११ मार्च तथा १—२ अप्रैल १९४४ को रामनवमी के पवित्र पर्व पर शुक्र, शनि तथा रविवार के दिन होना निश्चित हुआ है। गुरुकुल के प्रेमी महानुभाव तारीखें नोट कर लें और उत्सव पर आने के लिये अभी से दृढ़ संकल्प कर लें।

इस वर्ष उत्सव पर २५ ब्रह्मचारी प्रविष्ट [illegible] जाएंगे। जो सज्जन अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहें वह अभी से मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कुरुक्षेत्र जिला करनाल के पते से पत्र व्यवहार करें और प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र मँगाकर गुरुकुल कार्यालय में भर कर भेज दें। जिन जिन सज्जनों को प्रवेश कराने की आज्ञा मिल जावे वे अपने बालकों को गुरुकुल में ला सकते हैं।

इस समय गुरुकुल के अतिथियों के ठहरने के लिये दो धर्मशालाओं की जिसमें प्रत्येक में दो दो परिवार ठहर सकें अत्यधिक आवश्यकता है। दान महानुभाव इस पुण्य कार्य में अपना उदार दान देकर अवश्य पुण्य के भागी बनेंगे।

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव समीप आ रहा है। अतः गुरुकुल के प्रेमी उदार दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे गुरुकुल की तन, मन और धन से सहायता करें। विशेष कर ब्रह्मचारियों के संरक्षक महोदयों का खास कर्तव्य है कि इस भयंकर मँहगाई के समय गुरुकुल की विशेष सहायता करें तथा करावें।

प्रति वर्ष बहुत से संरक्षक महोदय गुरुकुल की सहायता के निमित्त यथा शक्ति अपना तथा अपने मित्रों से धन एकत्रित करके भेजा करते हैं। बहुत से संरक्षक ५००) तथा ८००) तक भी धन एकत्रित करके गुरुकुल की सहायतार्थ [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ARCHIVES DATA BASE 151489
2011 - 12

14,Arya
151489

पर लाते हैं अथवा भेज देते हैं।

गत वर्ष कुछ एक संरक्षक महोदयों को धन इकट्ठा करने के लिये पर्याप्त समय न मिलने की शिकायत रही थी। अतः इस वर्ष ऐसे सब ही संरक्षक महानुभावों की सेवा में निवेदन है। उत्सव में अभी चार मास शेष हैं। अतः अभी के लिये यत्न करना आरम्भ करदें ताकि गुरुकुल को अभी द्वारा इस भयंकर मँहगाई के समय अच्छी सहायता मिल सके।

सूपा गुरुकुल समाचार

१० हजार की अपूर्व सफलता

दिवाली के अरसे में गुरुकुल का डेपूटेशन आचार्य पं० चन्द्रकान्त जी की अध्यक्षता में शास्त्री श्रुतबन्धु जी और पं० दिनमणि जी सहित बम्बई गया था। वहां के मूल जी जेठा मार्कीट, दवा बाज़ार, लोखंड बाज़ार और शेर बाज़ार के श्रीमन्तों ने एक महीने में १० हज़ार रुपयों की सहायता प्रदान कर डेपूटेशन को सफल बनाया है। महागुजरात का एकमात्र यह गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति को कायम कर रहा है। स्टाफ़ में भी पं० सुरेशचन्द्र जी गुजरात विद्यापीठ वाले एवं पं० सत्यवीर जी वेदालंकार की नियुक्ति हुई है। चिकित्सालय को डा० वनमालीदास एल. सी. पी. एस. चला रहे हैं। आश्रम में मुनि श्री देवराज जी विद्यावाचस्पति अपने ज्ञान से वातावरण को विद्या और तपोमय बनाये हुए हैं।

दिवाली के दिनों में राजकोट धर्मेन्द्रसिंह जी कालेज के प्रिन्सिपल प्रो० रमणलाल याज्ञिक और आचार्य मेधाव्रत जी कविरत्न पधारे थे। संस्था की उन्नति से उन्होंने अत्यन्त संतोष व्यक्त किया था। राजपीपला स्टेट में से मास्तर मोसर जी कालीदास ओरणा वाले और शास्त्री विद्याव्रत जी ने २५० मन अन्न दान प्राप्त किया था। और अहमदाबाद तथा पेटलाद की तरफ़ स्नातक सुबोधचन्द्र जी ने गुरुकुल प्रचार एवं धन सहायता प्राप्त की थी।

गुरुकुल जेहलम समाचार

इस समय गुरुकुल में पचास ब्रह्मचारी शिक्षा पा रहे हैं। स्टाफ में आठ विद्वान्, स्नातक, शास्त्री, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ, व्याकरणतीर्थ, बी. ए. एल. एल. बी. आदि उपाधि प्राप्त हैं। जो अपने २ विषय के विशेषज्ञ एवं अनुभवी हैं। पाठ्यक्रम के दो भाग हैं, प्रथम भाग में गुरुकुल कांगड़ी के क्रमानुसार अष्टम श्रेणी तक। द्वितीय भाग में अष्टम श्रेणी के पश्चात् एक वर्ष में विशारद, दूसरे में मैट्रीकुलेशन तीसरे में शास्त्री। यह परीक्षाक्रम बड़ी आवश्यकता को अनुभव करके रखा गया है। हमारी संस्थाओं में ऐसी संस्थाओं का अभाव है कि जहां [illegible] वातावरण में रहते हुए अपने इस उद्देश्य की पूर्त्ति कर सकें। अच्छा तो यह [illegible] परीक्षा के झंझट में न पड़ा जाय। किन्तु पड़ते अवश्य हैं। अतः वे विशुद्ध वातावरण में रहते हुए परीक्षा दे सकें। इसलिए ही यह क्रम प्रारम्भ किया गया है। जो विद्यार्थी गणित अथवा व्याकरण में चलने में असमर्थ हैं। उन्हें भूषण प्रभाकर दिलाकर मैट्रिक दिला दी जाती है। चार वर्ष से ब्रह्मचारी उल्लिखित परीक्षाओं में बैठते रहते हैं। जिनका परिणाम बहुत अच्छा रहा है। गत वर्ष विशारद, मैट्रिक, भूषण, प्रभाकर परीक्षाओं के सभी परीक्षार्थी अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुए हैं।

गोशाला में लगभग २५ गौ भैंसे बैल बच्छे आदि हैं। ब्रह्मचारियों को विशुद्ध दुग्ध प्राप्त होता है। कृषि में शाकादि पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न किये जाते हैं। इस समय मूली, शलजम, मैथी, गोभी, पालक, बैंगन, टमाटर, धनियां आदि दस प्रकार की सब्ज़ी तैयार खड़ी हैं।

आश्रम में इस समय रोगी कोई नहीं है।

एक कमरा इस वर्ष नया तैयार हो गया है और गत वर्षों में भी गुरुकुल को १२ कमरों के वचन मिल चुके हैं। जो ६००) रु० से १०००) तक की लागत के हैं। इनमें से कुछ की राशि बैंक में जमा की जा चुके हैं। शेष की शीघ्र जमा कर दी जावेगी। युद्धोपरान्त सभी कमरे बनवा दिये जावेंगे।

मन्त्री प्रकाशन विभाग

गुरुकुल इंद्रप्रस्थ का समाचार

(१) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में श्री रामदेव स्मृति दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। श्री पं० विद्यानिधि जी सिद्धान्तालङ्कार देहली के सभापतित्व में श्रीमान मुख्याधिष्ठाता पं० धर्मवीर जी तथा पं० धर्मदेव जी के प्रभावशाली भाषणों के अतिरिक्त ब्रह्मचारियों के भी भाषण हुए।

(२) श्री स्वामी व्रतानन्द जी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़ ६ दिसम्बर को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पधारे। उन का गुरुकुल में ब्रह्मचारियों के लिये शिक्षाप्रद उपदेश हुआ।

स्नातकों की आवश्यकता

१. सिन्ध प्रान्त में प्रचारार्थ उपदेशक, पुरोहित तथा शिक्षक का कार्य करने वाले स्नातकों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। इस कार्य के लिए सेवा दे सकने वाले स्नातक महानुभाव आचार्य गुरुकुल कांगड़ी से पत्र व्यवहार करें।

२. अंग्रेज़ी भाषा तथा संस्कृत में विशेष योग्यता और रुचि रखने वाले एक परिश्रमी स्नातक की रिसर्च स्कालर के लिये आवश्यकता है। वेतन ६५) से ऊपर होगा। अन्वेषण कार्य में आनन्द लेने वाले स्नातक श्री आचार्य जी गुरुकुल कांगड़ी से पत्र व्यवहार करें।

[illegible] भा० हिन्दी पत्रकार संघ की कार्य[illegible] रिणी की ६ नवम्बर की बैठक में गुरुकुल कांग[illegible] की पत्रकार परीक्षा को संघ द्वारा स्वीकृत [illegible] लिया गया है। भविष्य में इस परीक्षा में उत्त[illegible] विद्यार्थियों को पत्रकार जगत् में स्थान प्राप्त [illegible] की सुविधा हो गई है जिसका परीक्षार्थियों को [illegible] उपयोग उठाना चाहिए।

२. परीक्षार्थियों की सुविधा के लिये प्रति[illegible] अनुभवी पत्रकारों के व्याख्यानों की भी व्यव[illegible] की जा रही है।

३. केन्द्र व्यवस्थापकों तथा परीक्षार्थियों [illegible] सुविधा को ध्यान में रखकर इस वर्ष गुरुकुल [illegible] छात्र परीक्षाओं की तिथि दिसम्बर के अन्तिम [illegible] में नियत की गई है। अब परीक्षार्थियों से आशा [illegible] जाती है कि वे नवम्बर के अन्त तक आवेदन [illegible] भर कर भेज दें। छात्र परीक्षाविभाग गुरुकुल कां[illegible]

एक आदर्श विवाह

गुरुकुल कांगड़ी के उपाध्याय श्री पं० धर्म[illegible] वेदालङ्कार के छोटे भाई डाक्टर सुरेन्द्रकुमार [illegible] वेदालंकार का शुभ विवाह लाला भगवतीशरण [illegible] सुपुत्री हाथरस गुरुकुल की स्नातिका आयु[illegible] सुलक्षणा देवी "विद्याविभूषिता" 'विदुषी' के [illegible] समारोह सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर [illegible] पक्ष की ओर से हरिद्वार से कुल सात [illegible] सम्मिलित हुए। अवैदिक रस्म रिवाज़ तथा [illegible] का सर्वथा परित्याग करते हुए प्रत्येक कार्य स[illegible] तथा सौष्ठव पूर्वक किया गया। शुरू में वर [illegible] की अल्प संख्या को कन्यापक्ष वाले अपने [illegible] लज्जा तथा चिन्ता का कारण समझ रहे थे परन्तु [illegible] में उन्होंने इसकी उपयुक्तता तथा सामयिक [illegible] अनुभव किया। ऐसी आशा की जाती है कि [illegible] आदर्श विवाह के प्रभाव से आस पास के [illegible] में अनावश्यक रीति रिवाज़ के छूटने में स[illegible] मिलेगी।

आवश्यकता

२७ वर्ष के क्षत्रिय नवयुवक के लिए गरीब [illegible] दान की कन्या की आवश्यकता है। जात पा[illegible] दहेज़ का कोई विचार न होगा। खर्चीले रस्म [illegible] के बिना आर्य सामाजिक रीति से विवाह [illegible] डेयरी फ़ार्म (गोपालन) से लड़का ७०-८० रुप[illegible] कमा लेता है। सम्बन्ध करने के इच्छुक नी[illegible] पते पर पत्र व्यवहार करें या स्वयं मिलें।

दुर्गादास
बादामी बाग़

— प्रत्येक आर्य समाज को —
आर्य का ग्राहक
बनना चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Digitized by S3 Foundation USA